

दिनांक	सदस्य संख्या	दिनांक	सदस्य संख्या

पुस्तक-विवरण की तिथि नीचे अंकित है । इस तिथि सहित ३० वे दिन तक यह पुस्तक पुस्तकालय में वापिस आ जानी चाहिए । अन्यथा ५० पैसे प्रति दिन के हिसाब से विलम्ब-दण्ड लगेगा ।







लाला शालिग्रामजी वैश्य.

मुरादाबादवास्तव्यः करुणातरुणान्तरः ।
आयुर्वेदसमुद्धर्ता शालिग्रामो जयत्ययम् ॥१॥

1953 सं० ...

...–औत्कली-
... सचरतां सर्वदेशीयानां
...विवेकनिपुणो, जनः ।

धन्यवादाः ।

भवन्तु भूयांसो भव्यभूतये विश्वकर्त्रे महीयसे परमेश्वराय प्रणामाः । येन भगवता विविधं जगत्सिसृक्षता प्रथमतः सृष्टिक्रमानुसारेण महदादिपृथिव्यन्तो महान्सर्गः स्वात्मनि विकाशमानीयत ।

अस्मिंश्च सर्गे तत्तद्भौतिकनिकायाः सर्वे प्राणिनस्तस्यैव परमेशितुः संकेतमनुवर्तमान यथावत्कल्पितवृत्तयो विचरन्तीति स्वाभाविकं सृष्टिसौन्दर्यमेतत् । तत्रापि सृष्टिक्रमपराकाष्ठाभूतायां पृथिव्यामस्मदादिजीवानां पुरोक्तपरमेश्वरेणैव पृथिवीनिकायत्वमाकलयता विशेषतः कौतुकेनैव विविधवृक्ष–लता–सस्य–जल रत्न–धातु–प्रभृतयः पदार्था असृज्यन्त तदनु प्राणिनः । इति सृष्ट्युपक्रमे पुराणेषु शोश्रूयते सर्वतः । अथ च प्रकृतं तत्र विमृश्यते ।

इह पृथिव्यां जन्यमानानां नानाजीवानां निजपारंपरीकानन्तजन्मोपार्जितविविधदुष्कृतपरिणतानेकव्याधिपरिपीडितकलेवराणां परित्राणैकार्थसमुद्भवानां नानाविधवृक्ष–लता–सस्य–जल–रत्न–धातु–प्रभृतीनां पदार्थानां यथोचितोपयोगार्थं परमकारुणिकैरात्रेय–दक्ष–शक्र–धन्वंतरि–दिवोदास–सुश्रुत–चरक–वाग्भट-प्रभृतिभिर्महानुभावैरायुर्वेदशास्त्रं स्वस्वानुभवानुगमानुसारेणोपबृंहितमासीत् । यतः परावरदृशां महर्षीणां बुद्धिवैभवेन प्रसिद्धिं गतेभ्य आयुर्वेदग्रन्थेभ्य औषधीनां गुणदोषान्विज्ञाय वैद्यजना रोगिणां रोगान्यथोचितौषधप्रयोगेण निर्मूल्योपकुर्वन्ति समन्ततः । तथापि तत्तन्महर्षिस्वस्वबुद्धिविनिर्मितानामनेकग्रन्थानामध्ययनाध्यापने कालातिक्रममन्वीक्षमाणैः परमकारुणिकैः श्रीमन्मुरादाबादनगरनिवासिभिः श्रीमन्माथुरवैश्यवंशावतंसश्रीलालाशालिग्रामसुगृहीतनामधेयैरस्मत्परममित्रैः केवलं परोपकाराय निजमतिमन्थानेनायुर्वेदमहोदधिं विनिर्मथ्य सकलौषधिगुणगणप्रतिमण्डितोऽयं "शालिग्रामनिघण्टुभूषण" नामा नवीनो ग्रन्थो विनिर्मितः ।

अस्मिन् "शालिग्रामनिघण्टुभूषण" ग्रन्थे प्रोक्तमहाशयैर्विविधदेशभाषाप्रचरिततत्तदौषधीनां नामानि–तत्तदौषधीनां गुणाश्च सविस्तरं प्रत्यपाद्यन्त । येन च कृत्वा प्रायश्चैष ग्रन्थः–संस्कृत–हिन्दी–बांगी–महाराष्ट्री–गौर्जरी–कार्णाटकी–द्राविडी–तामिली–औत्कली–इंग्लिश–लैटिन्–फारसी–आरबी–भाषानिबद्धौषधीनामतया सर्वतः संचरतां सर्वदेशीयानां जनानां परमोपयोगीति को नानुमन्येतनाम सहृदयः सारासारविवेकनिपुणो, जनः ।

अयं ग्रन्थश्च तैरुदारबुद्ध्या सर्वलोकोपकृत्यर्थं प्रकाशन. . . । स च मया तेभ्यः सादरं स्वीकृत्य स्वकीये "श्रीवेङ्कटेश्वर" मुद्रालये मु. . .त्वा प्रकाशमानीयत । तस्येयं तृतीयावृत्तिर्भूयसापरिश्रमेण सम्यक्परिशोध्य विदुषां मुदे पुनर्मुद्रिता ।

अतएतादृशग्रन्थनिर्माणपरिश्रमपरिक्लिष्टबुद्धिवैभवानां नानाविधग्रन्थनिर्माणजन्यातिनिर्मलयशोभासुरीकृतविबुधजनमनसां श्रीमतां श्रीलालाशालिग्रामनामधेयानां यावन्तो धन्यवादा देयास्ते सर्वथा रवेर्दीपदानमिवेति मन्ये ।

विबुधगणप्रेमाभिलाषी--

खेमराज-श्रीकृष्णदास,

"श्रीवेंकटेश्वर" (स्टीम्) यन्त्रालयाध्यक्षः -मुंबई.



भूमिका ।

देखो इस असारसंसारमें उस निराकार निर्विकार परब्रह्म परमेश्वरने साकार रूप धारण कर चार वेद, षट् शास्त्र और अष्टादश पुराण अपने हृदयसे प्रगट किये, उनमेंसे अथर्वणवेदका सार लेकर अत्यन्त अनुपम और अद्वितीय, प्राणियोंके कष्टका हरनेवाला और दीर्घायु करनेवाला आयुर्वेद निकाला, जिसमें एक लक्ष श्लोक और सहस्रअध्यायमें नियत करके आयुर्वेद-संहिता नाम रक्खा और प्रजाके रचनेसे पहिले ब्रह्माके हृदयमें उसका प्रकाश किया ब्रह्माने उसके आठ भाग किये, फिरभी कठिन समझ कर कोष और निघण्टुको मुख्य रक्खा; और सम्पूर्ण कर्म्मोंमें चतुर बुद्धिविशारद और अग्रगामी जानकर दक्षप्रजापतिको सर्वांगसहित आयुर्वेदका उपदेश किया, दक्षने स्वर्गीय वैद्य, मार्तण्डके समान प्रचण्ड शक्तिवाले महाविद्वान् देवताओंमें श्रेष्ठ अश्विनीकुमारोंको आयुर्वेदसंहिता विस्तारपूर्वक पढाई, जिसके प्रभावसे अश्विनीकुमार तैंतीसकोटि देवताओंके पूर्ण वैद्य हुए, ब्रह्माका मस्तक जोडा, देवताओंको अंग जोड व्रणरहित किया, इन्द्रकी भुजाका कष्ट हरा, चन्द्रमाको सुखी करा, इन्द्र अश्विनीकुमारोंके इन अद्भुत कर्मोको देख उत्साहपूर्वक आयुर्वेद पढनेके लिये अश्विनीकुमारोंसे प्रार्थना करनेलगा जब सत्यसिन्धु इन्द्रने इसप्रकार प्रार्थना की तब वैद्यशिरोमणि अश्विनीकुमारोंने जिसप्रकार आप पढाथा उसीप्रकार आयुर्वेदसंहिता विस्तारसहित देवराज इन्द्रको पढाई, इन्द्रने ऋषियोंमें प्रधान आत्रेयको पढाया उस समय लोग उत्तमरीतिसे आहार विहार करतेथे, इसलिये उनको कोई रोग नहीं होताथा, उनकी आयुभी पूर्ण होतीथी, और शरीरमें बलभी अधिकहोताथा, पश्चात् कुछ कालोपरान्त समयके हेरफेरसे मनुष्योंकी बुद्धिभी विपरीत होगई, उससे रोग और क्लेशादिक अधिक बढने लगे, उस समय करुणानिधान परोपकारी बडे बडे ऋषि मनुष्योंको रोगोंसे दुःखी देख मनमें अत्यन्त दुःखी हो हिमालयपर्वतकी ओरको चले, वहां दैवयोगसे बहुतसे ऋषिलोग एकत्र थे, भारद्वाज, अंगिरा, मरीचि, भृगु, भार्गव, पुलस्त्य, अगस्त्य, असित, वसिष्ठ,

पराशर, हारीत, गौतम, सांख्य, मैत्रेय, च्यवन, जमदग्नि, गर्ग, काश्यप, कश्यप, नारद, मार्कण्डेय, कपिञ्जल, वामदेव, कौण्डिन्य, शाण्डिल्य, शाकुनेय, शौनक, आश्वलायन, सांकृत्य, विश्वामित्र, परीक्षक, देवल, गालव, धौम्य, काण्य, कात्यायन, कांकायन, बैजवाप, कुशिक, बादरायण, हिरण्याक्ष, लौगाक्षी, शरलोमा, गोभिल वैखानस; और बालखिल्यादिक, अनेक महर्षि-लोगथे, वह ब्रह्मऋषि, ब्रह्मज्ञानी, यमनियमके समुद्र और होमाग्निके समान प्रकाशमान, तपस्तेजःपुंजः आनन्दपूर्वक सब मुनिपुंगव यह चर्चा कर रहेथे कि मनुष्यका धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इस चतुर्वर्गके साधनका मूल यह शरीरहै, यदि यह शरीर अच्छाहै तो यह चतुर्वर्ग साधसक्ताहै और जो यह शरीरही रोगग्रासित रहै तो कदापि नहीं साधसक्ता ।

रोगाःकार्श्यकराबलक्षयकरादेहस्यचेष्टाहराः ।
दृष्टयादीन्द्रियशक्तिसंक्षयकराःसर्वाङ्गपीडाकराः ॥
धर्मार्थाखिलकाममुक्तिषुमहाविघ्नस्वरूपाःबलात् ।
प्राणानाशुहरन्तिसन्तियादितेसौख्यंकुतःप्राणिनाम् ॥
तत्तेषांप्रशमायकश्चनविधिश्चिन्त्योभवद्भिर्बुधैः ।
योग्यरित्यभिधायसंसदिभरद्वाजमुनिस्त्वब्रुवन् ॥

अर्थ–रोग मनुष्योंके देहको दुर्बल करतेहैं, बलका क्षय करतेहैं, शरीरकी चेष्टाको विनाश करते हैं, नेत्रादिक इन्द्रियोंकी शक्तिको हरण करतेहैं, सब अंगोंमें पीडाको उत्पन्न करते हैं, धर्म, अर्थ, अखिल काम, और मोक्षके लिये तो महाविघ्नकारी हैं; अधिक बढनेपर बलात्कार शीघ्रही प्राणोंको हरलेतेहैं, जब इसप्रकारके रोग शरीरमें सदा विद्यमान हैं तो फिर प्राणियोंके प्राणोंकी कुशल कहां ? इसकारण तुम सब रोगोंके प्रयत्नमें तत्पर और पूर्ण विद्वान् एकात्रित हुए हो तो रोगोंके दूर करनेका कोई उपाय विचारो इसप्रकार भारद्वाजके वचनोंको सुनकर सब ऋषि अत्यन्त हर्षित होकर उच्चस्वरसे जयजय शब्दकर, तालध्वनि करने लगे और भारद्वाजजीसे बोले कि, हे भगवन् ! आपही इस कार्य करनेके योग्यहैं, इसकारण तुम परिश्रम करके इन्द्रके पास जाकर प्रार्थना करो, और विधिपूर्वक आयुर्वेदको पढो, जिससे प्रजाके लोग रोगरहित हों भयसे छूटें इसप्रकार जब सब मुनियोंने विनययुक्त प्रार्थना की, तब उनकी आज्ञानुसार मुनि पुङ्गव भारद्वाज इन्द्रलोकको गये, इन्द्रको आशीर्वाद दे स्तुति करी, और

सब ऋषियोंके वचन देवराजसे कहे, फिर कहा हे इन्द्र! सब प्राणियोंके प्राण रहनेके लिये महाभयानक रोग संसारमें उत्पन्न हुयेहैं, इनके दूर होनेका कोई उपाय बताओ, इन्द्रने परम चतुर भारद्वाजको आयुर्वेद पढाया, जिसके प्रभावसे रोगरहित हो प्राणी एक सहस्रवर्ष जीयें, भारद्वाजने थोडे ही दिनमें आयुर्वेद पढ़ उसके आशयको जानलिया, इसी आयुर्वेदके प्रभावसे भारद्वाज मुनि रोगोंसे छूट दीर्घायु हुए, और अनेक मुनियोंको रोगरहित कर पूर्णायु किया, पश्चात् आत्रेयमुनिनेभी इन्द्रहीसे आयुर्वेद पढ़ा और अपने नामकी आत्रेयसंहिता रच अग्निवेश, भेड, जातूकर्ण्य, पराशर, क्षीरपाणि और हारीतको पढाई, इन छहोंने अपने अपने नामकी संहिता निर्माण कीं, और अग्निवेशादिक छहों शिष्योंने अत्रिनन्दनको अपनी अपनी संहिता सुनाई, और आत्रेयने अत्यन्त आनन्दित होकर आशीर्वाद दिया,वह छहों संहिता आजतक संसारमें प्रसिद्ध हैं, और अत्यन्त उपयोगी हैं, परन्तु इनमें सबसे प्रधान अग्निवेशकृत तंत्र उत्कृष्टतासे सबके मनको आकर्षण करनेवाला हुआ, किसी समय चरकमुनिने उन सब तंत्रोंको एकत्र करके संस्कार किया और अपने नामसे नवीन संहिता रचकर प्रचार की, जो आजतक चरकके नामसे विख्यात है, अग्निवेशकृत तंत्र जो कि चरकका संस्कार किया हुआ है उसमें शल्यादिक अष्टांगमयी नवीन संहिता आठ भागोंमें विभाग कीगई, उस संहितामें खनिज, उद्भिज्ज, प्राणिवाची द्रव्योंको तीन भागोंमें, विभाग करके, फिर प्राणियोंके जरायुजादिकोंको चारभागोंमें विभाग करके,उद्भिज्जों को वनस्पतिवृक्ष वीरुध औषधियोंको चारभागोंमें विभाग किया, फिर उन उद्भिद द्रव्योंको जीवनादिक पंचांशगणोंमें विभाग किया, इसकी भाषा प्राकृत नहीं है, प्राचीन होनेसे विषयरचनाप्रणालीशोधन नहीं की गई है, इसलिये अत्यन्त गडबड है, इसके सिद्धकल्प दो स्थान सत्रह अध्यायोंसे संयोजना करके पञ्चनदपुरवासी दृढबलने सम्पूर्ण किया इस संहिताके सिद्धस्थानकी पहिली समाप्तिमें, लिखा है:—

“ अखण्डार्थंदृढबलोजातःपञ्चनदेपुरे ।
कृत्वाबहुभ्यस्तंत्रेभ्यो विशेषाच्चबलोच्चयम् ॥
सप्तदशौषधाध्यायैःसिद्धकल्पैरपूरयत् । ”

अर्थ–इस संहिताके सम्पूर्ण करनेकेलिये दृढबल पञ्चनदपुरमें उत्पन्न हुआ उसने अनेक ग्रन्थोंका अनुसन्धान करके सत्रह अध्यायोंमें सिद्धकल्पको पूर्ण

किया। सुश्रुतसंहिता–इसीप्रकार सुश्रुतसंहिता शल्यतंत्रके उपदेशसे प्रधान अष्टांगमयी धन्वन्तरिसम्प्रदायकी पहिली और चरकसंहितासे पिछली है इसमें काशीराजरूप धारणकिये हुये भगवान् धन्वन्तरि वक्ता, और विश्वामित्र महर्षिपुत्रसुश्रुत श्रोता, और परमरासायनिक सिद्धनागार्जुन संस्कारकर्त्ता है, सूत्रादिपञ्चस्थानात्मक पूर्व तंत्रमें चिकित्सा किये हुए रोग, रसायन वाजीकरणतंत्रोंके साथ चिकित्सक शल्यतंत्रको प्रधानतासे वर्णन किया है। कल्पमें चिकित्सक विषतंत्रको चिकित्सा स्थानमें रसायन, वाजीकरणतंत्र वर्णन किये हैं, उत्तरतंत्रमें शालाक्यकायचिकित्सा, कौमार, भृत्य, भूतविद्या वर्णन की है।

एक समय सुश्रुताचार्य पिता विश्वामित्रकी आज्ञा पाकर अपने सहगामी मुनिकुमारोंके साथ काशीको गये, जहां वानप्रस्थ आश्रममें स्थित, देवताओंमें श्रेष्ठ, अनेक मुनि जिनकी स्तुति कररहे, उन सर्वानन्ददायक धन्वतंरि काशीनरेश दिवोदासको विनयपूर्वक सुश्रुतादिक सब ऋषिपुत्रोंने नमस्कार किया। अनन्तकीर्तिस्वरूपद्रव्यवाले दिवोदास उन ऋषिपुत्रोंको समीप खडा देखकर बोले कि, हे ऋषियो! तुम कुशलपूर्वक हो? किसकारण आगमन हुआ, तब उन सब ऋषिकुमारोंने सुश्रुतद्वारा उत्तर दिया, कि हे भगवन्! रोगोंसे भयभीत हाहाकार करते और मरते हुए प्राणियोंको देखकर हमारे चित्तमें अत्यन्त खेद उत्पन्न हुआ है. इसलिये आपके पास रोगोंको दूर करनेका उपाय पूछनेको हम आये हैं, सो आप कृपा करके हम सबको आयुर्वेद अध्ययन कराओ. तब काशीनरेशने सुश्रुतादि ऋषिपुत्रोंके वचन स्वीकार कर उनको आयुर्वेद पढाना आरम्भ किया, उस व्याख्याको वह मुनिनन्दन परमानन्दपूर्वक पढने लगे अपने कार्यको सिद्ध करके चलते समय काशीराजको आशीर्वाद दिया कि, जयहो, जयहो, आपकी सदा जयहो, यह कह सब अपने अपने आश्रमपर आये और उन मुनिपुत्रादिकोंमें प्रथम सुश्रुतने अपना ऐसा स्फुट तंत्र रचा, जोकि एकसौ बीस १२० अध्यायमें सम्पूर्ण हुआ, और ऋषिपुत्रोंनभी पृथक् पृथक् अपने तंत्र रचे, सुश्रुतके रचे हुए तंत्रको बहुत लोगोंने सुना, इसीकारण उसका नाम सुश्रुत संसारमें प्रसिद्ध हुआ, परन्तु हमको यह बड़ा भारी सन्देह है कि सुश्रुत नामके दो आचार्य्य हुए हैं एक सुश्रुत, दूसरा वृद्धसुश्रुत, इनमें यह निश्चय नहीं होसक्ता कि प्रसिद्ध सुश्रुतसंहिताका कर्त्ता कौनहै? जब बौद्धोंने प्रबल होकर वाद विवादसे पण्डितोंका तिरस्कार करके वैदिक क्रियाका लोप

करनेका प्रारम्भ किया, उस बौद्धसंग्राम समयमेंही (विक्रमके संवत्से एक हजार १००० वर्ष पहिले) संसारमें प्रसिद्ध परम रासायनिक बौद्धपालक सिद्धनागार्ज्जुन सुश्रुतनाम तंत्रको संस्कारमुखसे सूत्रादि पञ्चकस्थानोंमें अर्थ-वशसे विभाग करके विस्तारपूर्वक स्पष्ट व्याख्या कर शेष उत्तर तंत्रमें शेष अर्थोंको प्रगट करके एक नवीन संहिताको रचा। वह सुश्रुतसंहिता संसारमें प्रचलितहै, यह डल्ल्हणाचार्य्यका मतहै. इसकी भाषा प्राचीनहै, रचनारीति यथाभागानुकूलहै, इसमें शरीरास्थिमालाकी प्रगटता, रोगोंका निश्चय; और व्रणचिकित्सादिके ज्ञानका वर्णन है, इस लिये श्रेष्ठकोटिकी अधिरूढताका अतिनिर्विकल्प स्वीकार करना चाहिये इसका मूढगर्भ अश्मरी प्रकरण अत्यन्त प्रशंसा करने योग्य है, अधिक क्या ? बडे बडे विदेशीय वद्योंने मूढ गर्भादिक प्रकरणकी समालोचना करके विस्मयपूर्वक प्रशंसा की है.

वाग्भटसंहिता-कुछ कालोपरान्त चिकित्सकोंमें परमोत्तम धन्वन्तरिके समान भूमण्डलमें वाग्भट भिषक् उत्पन्न हुआ, यह महाराजाधिपति सत्य-सिन्धु परमज्ञानी राजा युधिष्ठिर पाण्डुकुलभूषणकी सभामें सर्व रोगनाशक महाश्रेष्ठ एक वैद्य था उसने जगत्के उपकारार्थ आयुर्वेदके अनेक ग्रन्थ निर्माण किये, उनमें अष्टांगहृदयसंहिता सब संसारमें प्रसिद्ध हुई और वही वाग्भटाभिधानसे भूमण्डलमें सूर्यके समान प्रकाशमान है। चरकसुश्रुतादि अनेक ग्रन्थोंको मथकर संसारके हितार्थ बडे प्रयत्नसे इस सुखसञ्चारिणी संहिताका संग्रह किया। इस संहितामें और इसकी औषधियोंमें उन्होंने ऐसी अपूर्व चातुर्य्यता प्रगट कीहै। वह और ग्रन्थोंमें नहीं दिखाई देती, जो बात चरकसुश्रुतमें बीस पचीस श्लोकोंसे वर्णन की है वह बात इस संहिताके तीनही चार श्लोकोंमें दर्शा दीहै, सत्य तो यह है कि, इन्होंने सब संसारके उपकारके लिये आयुर्वेदका उद्धार किया इसीलिये इस वाग्भटसंहिताकी बृहत्त्रयीमें वैद्योंने गणना कर रक्खी है। यथा—

सुश्रुतो न श्रुतो येन वाग्भटो नैव वाग्भटः।
नाधीतश्चरको येन स वैद्यो यमकिङ्करः॥

अर्थ-जिस वैद्यने सुश्रुत सुना नहीं, वाग्भट कण्ठाग्र किया नहीं और चरक पढा नहीं वह वैद्य नहीं है, वह साक्षात् यमका दूत है। इसीलिये बृहत्त्रयी-पाठक वैद्योंका अत्यन्त गौरव और सत्कार होता है, और जो अठारह १८ संहिताहैं वह औरहीऔर युगोंके निमित्त हैं, परन्तु अष्टांगहृदयसंहिता केवल कलियुगहीके लिये निर्मित्त हुई है। यथा—

अत्रिः कृतयुगे चैव त्रेतायां चरको मतः ।
द्वापरे सुश्रुतः प्रोक्तः कलौ वाग्भटसंहिता ॥

अर्थ-सत्ययुगके लिये अत्रिसंहिता रचीगई थी, त्रेताके लिये चरकसंहिता निर्माण कीगई, द्वापरके लिये सुश्रुत; और कलियुगके लिये वाग्भटसंहिता बनीहै। और जो किसीके चित्तमें संदेह हो कि, वह अठारह संहिता कौनसी हैं जो और और युगोंके लिये निर्माण की गई हैं, इसलिये उनके नामभी लिखे देताहूं वह अठारह संहिताओंके नाम हारीतसंहितामें इसप्रकार हैं:—

हारीतसुश्रुतपराशरभोजभेडभृग्वग्निवेशचरकाश्च्यवनोऽप्यगस्तिः । वाराहवाग्भटनरायणनारसिंहाअत्रेयकात्रिशशिनःशिवभास्करौच ॥ सन्त्यष्टादशशिक्षाधन्वन्तरेर्वाग्भटंबहिष्कृत्य ॥

अर्थ-हारीत, सुश्रुत, पराशर, भोज, भेड, भृगु, अग्निवेश, चरक, च्यवन, अगस्ति, वाराह, वाग्भट, नारायण, नारसिंह, आत्रेय, अत्रि, चन्द्रमा, शिव और सूर्य इनमेंसे वाग्भटको छोडकर अठारह संहिता आयुर्वेदकी वर्णन कीहैं। इस संहिताका जिसप्रकार प्रचार हुआ सो विस्तारसहित लिखताहूं, अत्रिसंहिता पञ्चनदादि प्रदेशमें प्रसिद्धहै, अत्रिमुनिकृत चरकादिकके समान प्राचीनहै, यह संहिता न बहुत संक्षिप्त न बहुत विस्तृतहै,यही आदिमें प्रामाणिक और स्मृतिसंहिताकार थी, वाग्भटसंहिताका वृत्तान्त वाग्भटसंहितामें इसप्रकार लिखा है कि, वाग्भटसंहितादि आत्रेयसंप्रदाय और धन्वन्तरिसम्प्रदायके अनेक चिकित्सातंत्रोंसे आदिमही स्वयंसंगृहीत अष्टांगहृदयसंग्रहसे लेकर वाग्भटाचार्यने रचीहै। जैसा उसमें लिखाहै—

अष्टांगवैद्यकमहोदधिमन्थनेन
योऽष्टांगसंग्रहमहामृतराशिराप्तः ।
तस्मादनल्पफलमल्पसमुद्यमानां
प्रीत्यर्थमेतदुदितंपृथगेवतंत्रम् ॥ वा.उ.४०अ.

अर्थ-अष्टांगवैद्यक समुद्रके मथनेसे जो अष्टांगसंग्रह बडे अमृतकी राशि प्राप्त हुई, उससे अल्प उद्यम करनेवालोंके लिये यह अनल्प फल तंत्र पृथक् ही कहा

है,इसीप्रकार यह अलंकारादि सहित अपने नामसे अनेक शास्त्रोंको रचताहुआ ऐसा सुना जाताहै कि,यह आदिमें ब्राह्मणधर्मावलम्बी निरन्तर वैदिकाचारका अनुष्ठान करताथा, इसके उपरान्त किसीसमय इसने बौद्धधर्म्मके तत्त्वको जानने के लिये किसी बौद्धाचार्य्यको गुरु किया, इसप्रकार बहुतकालतक निश्चलचित्त होकर उसके अनुसार वर्त्ततारहा और उस धर्मके परम रहस्यको प्राप्तकरके उसमें बडी श्रद्धा करतारहा, फिर वह अपने गुरुके पास आया उस धर्म्मके अनुरागको धारणकरता हुआ उसके गुरुने देखकर उसे रसी धर्म्मके अवलम्ब के लिये उपदेश दिया, इसप्रकार दक्षिणके पण्डितोंका कथनहै. औरबहुतलोग इस वाग्भटको अमरसिंहकृत कहतेहैं, परन्तु काश्मीरराजतरंगिणीकी समालोचनासे यही विदित होताहैकि, सिंहगुप्तसुत परबौद्ध वाग्भटाचार्य्य काश्मीर नरपति जयसिंहके प्रजापालन समयमें (संवत् विक्रम १२५३ शके ११९८) में वर्त्तमान था, तथा विजयनगराधिपति बुक्कराजके समयमें माधवने अपने ग्रन्थमें वाग्भटका उद्धार कियाहै इसकोभी ९०० नौसौ वर्ष बीते इसके उपरान्त उसी समयमें वाग्भटने अपनी संहिता रची, बहुतसे वैद्योंका यह मत है, कोई वैद्यलोग यह कहतेहैं वाग्भटसंहिता बहुत प्राचीनहै. चरक, सुश्रुतसे पीछेकी रची अनुमान कीजातीहै, उसमें सब प्रकारकी चिकित्साओंके अंग समान हैं, इसके मुष्टियोग रोगलक्षणादिका और इसकी भाषाप्रणाली अत्यन्तशुद्ध और परम प्रशंसनीयहै, वाग्भटका जन्म लोग कईप्रकारसे कहते हैं, कोई उसको धन्वन्तरि बतलातेहैं, कोई उसको समुद्रके मथनेसे उत्पन्न हुआ एक रत्न कहतेहैं,कोई उसको कलियुगका प्रधान बुद्ध गौतमऋषि कहतेहैं, अपने रचेहुए अष्टांगहृदयसंग्रहमें उसने सिन्धुदेशमें अपना उत्पन्न होना लिखाहै, । जस कि—

"भिषग्वरोवाग्भटइत्यभून्मेपितामहोनामधरोऽस्मियस्य ।
सुतोऽभवत्तस्यचसिंहगुप्तस्तस्याप्यहंसिन्धुषुजातजन्मा ॥"

अर्थ—मेरे पितामह वाग्भट वैद्यवर हुए जिनका मैं नाम धारण कररहाहूं (मैंनेभी वही वाग्भट नाम अपना रक्खाहै) उनके पुत्र सिंहगुप्त हुए और मैंभी उसी अनुक्रम विद्यालयसिन्धुमें उत्पन्न हुआ ।

अरुणदत्त वैद्यवर मृगांकदत्तका पुत्र वैद्यवंशमें उत्पन्नहुआ, उसने सुप्रसिद्धा वाग्भटसंहिताकी सर्वाङ्गसुन्दरी नाम टीका निर्माण की ।

हेमाद्रि बडा प्रसिद्ध ग्रन्थकारहै,उसने वाग्भटसंहिताके सूत्रस्थानकी आयुर्वेदरसायनटीका रची,चतुर्वर्गचिन्तामणिनामक स्मृतिसंग्रह भी उसीकाकहलेहैं।

भावप्रकाश–वैद्यवर लटकमिश्रके पुत्र श्रीमान् भावमिश्रकृतहै, यह बहुत विस्तारयुक्त, रोगोंका निश्चय करनेवाला चिकित्साका संग्रह है, अनेक प्राचीन सहितासंग्रहकोष, निघण्टुकी समालोचना और अपनी कल्पनासे रोगोंके लक्षण, चिकित्सा, पथ्य, द्रव्यगुण, रसवीर्यविपाक,जारण, मारण, शोधनादिकोंका संग्रह करके लिखाहै,इन भावमिश्रने वैदेशिक पूर्तगीज व ईरानसे लायेहुए उपदंशरोग विशेष अन्तर लक्षण सम्पन्न फिरंग रोगको अपने ग्रंथमें चिकित्सासाहित वर्णन कियाहै और नवीन चोबचीनी- छुहारे इत्यादि बहुत वैदेशिक द्रव्य गुणसहित उसमें मिलायेहैं, उसमें उपदंशनाशक चोपचीनी मूल चीनदेशसे और भारतखण्डके गोवा प्रदेशमें तीनसौ ३०० वर्षसे अधिक पहिले संवत् १६९६ में लाया, यह बुइलसन् साहेबका मत है।

भावमिश्रका प्रादुर्भाव उस कालमें वा उसके उपरान्त हुआ, इस भावप्रकाशसंग्रहको वैद्यलोग सब देशोंमें अधिक मानतेहैं.और इसीको आयुर्वेदका मुख्य ग्रन्थ जानतेहैं, इसीसे यह भावप्रकाश सब संसारमें प्रसिद्ध है।

माधवनिदान–माधवकरका रचाहुआहै, इसमें माधवकरने अनेक प्रकारके प्राचीन तंत्र,वैद्यकसंहितादिकोंसे, कहीं आदर्शके उद्धारसे,कहीं अपनी रचीहुई भाषासे, कहीं सारसंग्रहसे औ कहीं पर्य्यायके अनुक्रमसे संग्रह करके अनेक रोगोंके निदानका लक्षण लिखकर भारतवासीचिकित्सकोंके पढनेके लिये बडा उपकार सिद्ध कियाहै यह ग्रन्थ माधवाचार्य्यकृत है,ऐसा बहुतविद्वानोंका मतहै. परन्तु वह ठीक नहीं जानपडता क्योंकि माधवकर ऐसी उपाधिवाला अत्यन्त प्राचीन वैद्यजातीय ग्रन्थकार था, संसारमें ऐसी प्रसिद्धि है, दूसरा चक्रपाणिदत्तने माधवनिदानके रोगोंकी अनुक्रमणिकाके अनुसारअपने ग्रन्थको निर्माणकिया यह माधवकर चक्रपाणिसे पहिले था ऐसा ज्ञात होता है, और यह चक्रपाणि बारहसौ १२०० संवत्में गौड राज्यकी पाठशालाके अध्यक्षहोनेको अपने ग्रथमें लिखताहै. और यहभी है कि माधवकर अपने ग्रन्थके उपसंहारमें जो वृद्ध भोज गोविंद पातञ्जलि वृत्तिकारके समयमें सातवीं शताब्दीमें वर्त्तमान था, उसके रचेहुए सूक्तिकरुणामृत नामक ग्रन्थके मुक्तावलिकार गोविन्दसे पीछे गुरुको स्वीकार करके अपने आपको उसके समाभ समयानुसार, वा उसके पीछे इस रसग्रन्थको अनुपम

प्रतिपादन करता है, उसका निदान आठवीं शताब्दीमें अरबी भाषामें अनुवाद हुआ और "एदान" नामरक्खा, यह ग्रन्थ अरबी भाषामें प्रसिद्ध है यह पहिले तत्त्वविद् डइलसनसाहेबका मत है ।

व्याख्यामधुकोष-माधवनिदानकी टीका-वैद्यवर श्रीविजयरक्षित श्रीकण्ठ दत्तने रचा है (श्रीकण्ठवृन्दकृत सिद्धयोगका टीकाकारभी है, वह टीका कुसुमावली नामसे प्रसिद्ध है) इसकी भाषा पं० दत्तराम चौबेने अच्छी की है ।

शार्ङ्गधरसंग्रह-प्रसिद्ध शार्ङ्गधरपद्धतिकार शार्ङ्गधरवैद्यकृत है, यह ग्रन्थ न अति संक्षिप्त न अति विस्तृत है, हमारे देशके विद्यार्थी लोग इस ग्रंथको अधिक पढते हैं, यह ग्रन्थकार विश्वप्रकाशकृत महेश्वरसे पीछे हुआ, इसकी प्रसिद्ध संस्कृतव्याख्या आढमल्ली है. और उसीके अनुसार इसका भाषानुवाद पण्डित दत्तराम चौबेने किया है ।

रसेन्द्रसारसंग्रह-प्रमाणिक रसग्रंथ गोपालभट्टने रचा है, इसमें रसोंका जारण मारण शोधनादिसहित रोगोंके संपूर्ण प्रकारके रसघटित योग संग्रह किये हैं, इस ग्रंथको देखकर हमारे देशके अनेक वैद्य अपने ग्रंथोंमें संग्रह करते हैं यह ग्रन्थकार विक्रमकी तेरहवीं शताब्दीमें वर्त्तमान था, इसकी भाषाटीका मुरादाबादनिवासी शंकरलाल जैनने की है ।

रसेन्द्रचिन्तामणि-राधाविनोदकाव्यके रचयिता रामचन्द्र कविवरका निर्माण किया हुआ यह रसग्रन्थ है, परन्तु यह ग्रन्थ सब रसग्रन्थोंसे प्राचीन है, ऐसा वैद्योंके मुखसे सुननेमें आया है, इस ग्रन्थमें रसोंका जारण मारणादिक विधिपूर्वक वर्णन किया है, रसपारिजात ग्रन्थभी रामचन्द्रकाही रचा हुआ है । और एक रसेन्द्रचिन्तामणि ढुण्ढनाथकृतभी है, इसमें भी रसोंके बनानेकी क्रिया अच्छी रीतिसे लिखी है, और प्राचीन भी है, परन्तु इस देशमें इसका प्रचार नहीं, वङ्गदेशमें अधिक प्रचार है ।

चक्रदत्तसंग्रह-चक्रपाणिदत्तविरचित रोगोंकी चिकित्साका संग्रह है, इसमें माधवकरप्रणीत रोगोंका निदान, ग्रन्थानुसार रोगोंका अनुक्रम और ज्वरादिक रोगोंकी चिकित्सा कही है, उसमें रोगोंके तत्प्रणीत सिद्ध योग हैं, वह परम दृष्ट फल हैं, इसप्रकार यह संग्रह सर्वत्र सत्कारपूर्वक ग्रहण कियाहुआ संसारके हितको सिद्ध करनेवाला है, चक्रपाणि वीरभूमि देशवासी प्रसिद्ध रोध्रबलनाम दत्तकुलमें उत्पन्न नारायणदत्तका पुत्र, और नरदत्तके

शिष्यथा वह विद्याकुलसम्पन्न. वैद्यभानुदत्तके अन्तरंगभावसे उसके पीछे गौडराज्य की पाकशालाका अध्यक्ष हुआ, उसका प्रादुर्भाव सातसौ पचास ७५० वर्षका अनुमान जान पडता है, यह भी सुननेमें आया कि, उसकी जन्मभूमिमें उसका स्थापन किया हुआ चक्रपाणीश्वर शिवालय है, इस कार्य्यसे उसका धर्म्म शैव जान पडता है ।

"गौडाधिनाथरसवत्यधिकारिपात्रं
नारायणस्यतनयःसुनयोऽन्तरङ्गात् ॥
भानोरनुप्रथितरोध्रवलीकुलीनः
श्रीचक्रपाणिरिहकर्तृपदाधिकारी ॥
यः सिद्धयोगलिखिताधिकसिद्धयोगान्
तत्रैवनिक्षिपतिकेवलमुद्धरेद्वा ॥"

अर्थ—गौडाधिनाथकी रसोईके अधिकारियोंमें पात्र नारायणका पुत्र नीतिमान् भानुदत्तके अन्तरंगसे प्रसिद्ध रोध्रवल्ली कुलीन श्रीचक्रपाणि कर्त्ता-पदका अधिकारी जो सिद्धयोग लिखित अधिक सिद्धि योगोंको उसमेंही केवल उद्धार कर्त्ता है.

सिद्धयोग--वृन्दकुण्डकृत अत्यन्त प्रमाणिक चिकित्सा ग्रन्थ है, उसकी कुसुमावली नाम टीका श्रीकण्ठकृत है, जिसे चक्रपाणिने अपने ग्रन्थमें इस ग्रन्थका समुल्लखन किया है, इससे यह चक्रपाणिसे पहिला समझना चाहिये ।

रसकौमुदी-वैद्य माधवकृत है, माधवने इसमें रसघटिक दृष्ट फल औषधि-योंको अनेक रस ग्रन्थोंसे लेकर अपने रचे हुए ग्रन्थमें समायोजना करके चिकित्सा ओषधसंग्रह किया, और बहुत रोगोंमें अनेक योग स्वयमेव स्थापना किये, यह ग्रन्थकार निदानकाकर्त्ता माधवकर नाम वृद्धपरम्परासे सुनाजाता है परंतु इस ग्रन्थको किसी और माधव नाम वैद्यने प्रसिद्ध किया यदि यह बात सत्यभी हो तो भी इसको कोई शीघ्र सिद्ध नही कर सक्ता, क्योंकि माधवकरके समयमें अहिफेन प्रयोग, रसादिकोंका जारण मारण आदिका प्रथम प्रचार न था ।

रसरत्नाकर-नित्यनाथकृत बडा रसोंका संग्रह है उसने रसोंका जारण मारणादिक इस ग्रन्थमें विस्तारपूर्वक दर्शाकर अपने रचे हुए और संग्रह किये हुए तैल औषधादिक बहुत सन्निवेश किये हैं, नित्यनाथ वङ्गदेशवासी न था, परंतु पश्चिम देशमें उत्पन्न हुआ, ऐसा अनुमान किया जाता है,

अलौकिक देखकर मैंने इसकी हिन्दीभाषामें टीका की जो जगत्में सर्वसाधारण मनुष्योंके लिये उपयोगी हो ।

योगचिन्तामणि--श्रीहर्षसूरिकृत है, इसमें सिद्ध चिकित्सा उपयोगी बहुतसे योग हैं उसका समय ग्यारहसौ ११००अथवा साढे ग्यारहसौ ११५०० संवत् विक्रममें रचा गया, यह राजतरंगिणीमें लिखा है, और इसकी भाषाटीका माथुरीमंजूषा नाम पंडित दत्तराम चौबेने निर्माण की है ।

योगतरंगिणी--वैद्यक रसोंका ग्रन्थ अत्यन्त प्रामाणिक त्रिमल्लभट्टकृत है, यह ग्रन्थ हमारे देशमें अधिक प्रचलित है, इसका भाषानुवाद पंडित ज्वालाप्रसादमिश्र मुरादाबादनिवासीने किया है, इनही त्रिमल्लभट्टके बनाये हुए वैद्यचन्द्रोदय, रसदर्पण, योगचन्द्रिका, द्रव्यगुणशतकादि और भी ग्रन्थ हैं, इसी द्रव्यगुणशतक की भाषाटीका मैंने लिखी है ।

वैद्यामृत और वैद्यवृन्द--भिषक् नारायणकृत रसग्रन्थ है, यह ग्रन्थ नवीन होनेके कारण अधिक प्रचलित नहीं है, यह ग्रन्थकार संवत १८५० में विद्यमान था ।

वैद्यजीवन--वैद्यवर लोलिम्बराजकृत है, परन्तु बहुत प्राचीन नहीं है, उसने इसमें काव्यकरणके छलसे चिकित्साके उपकारी औषध अनुपानादिका उपदेश किया है ।

सारकौमुदी- आनन्दवम्मकृत अर्वाचीन वैद्यकसंग्रह एक सौ पचास १५० वर्षके लगभगमें रचागया है. इस ग्रन्थका वङ्गदेशमें अधिक प्रचार है ।

भैषज्यरत्नावली--१०० सौ वर्षसे अधिक पहिले गोबिन्ददाससेनने रची है; हमारे देशमें इस ग्रन्थकी अधिक प्रतिष्ठा नहीं है.

वैद्यरहस्य--वैद्यवर विद्यापतिप्रणीत यह ग्रन्थ आज कलके सब नवीन ग्रन्थोंसे उत्तम है, इसमें अत्युत्तम प्रयोग हैं, इस कविके बनाये और भी चिकित्साञ्जनादि अच्छे अच्छे ग्रन्थ हैं ।

चिकित्सासारसंग्रह- भिषग्वर क्षेमशर्म्माआचार्य्यकृत सर्वोपयोगी है, इन्होंने सब रोगोंका उपाय बहुत अच्छी रीतिसे लिखा है ।

हारीतसंहिता--महर्षि आत्रेय और हारीत मुनिके संवादमें रची गई है, ऐसा प्राचीन वैद्योंने लिखा है परन्तु हमको यह वह ग्रन्थ निश्चय नहीं होता, क्योंकि इसमें बहुतसे प्रयोग और श्लोक अशुद्ध दिखाई देते हैं, हमारी समझमें तो किसी वैद्यने नवीन कल्पना की है ।

प्रयोगामृत-यह अत्यन्त विस्तृत चिकित्साग्रन्थ नृसिंहधन्वन्तरिशिष्य वैद्य चिन्तामणिकृत है,यह ग्रन्थकार श्रीखण्डसमाजके अन्तर्गत नीरोल ग्राममें १०० वर्षसे अधिक पहिले उत्पन्न हुआ ।

नाडीप्रकाश-नाडीके जाननेका ग्रन्थ क्षत्रियगोत्रज आनन्दसेनके वंशमें उत्पन्न शङ्करसेनने रचा है,वैद्यविनोद और रसशङ्कर ग्रंथभी इसी कविकृत हैं।

अर्कप्रकाश-यह चिकित्सासंग्रह रावणकृत है, परन्तु हमको रावणकृत होनेमें संदेह है क्योंकि, इस ग्रंथमें नवीन औषधि बहुत लिखी हैं जैसे कि, गुलदाउदी, गुलाब, इससे रावणकृत नहीं जानपडता, किसी नवीन वैद्यने अपना नाम रावण रखलिया अथवा रावणके नामसे रचदिया है, इसका भाषानुवाद मैंने किया है ।

चिकित्साक्रमवल्ली-यह अर्वाचीन ग्रंथ काशीनाथद्विवेदीप्रणीतहै,अभीतक विशेष प्रसिद्धि नहीं पाई, कविता और प्रयोग अत्यन्त उत्तम हैं ।

निघण्टुरत्नाकर- यह नवीन ग्रंथ विष्णु वासुदेव गोडबोलेकृत है, परन्तु गणेश रामचन्द्र शास्त्री दातार, भास्करानन्दशास्त्री तामनकर, कृष्णशास्त्री महाबल, तथा विश्वनाथ विनायक पाटीलकी सहायतासे रचा गया है और यह ग्रंथ एक लाख श्लोकोंमें समाप्त हुवा है, अकारादि कोष, द्रव्यगुण दोष, शारीरक अष्टविध परीक्षा निदानसहित चिकित्सा, धातुशोधनमारणविधि, यंत्राध्याय, पुटविधि; और अजीर्णमञ्जरी इत्यादि विषयोंसे परिपूर्ण है, इसमें अनेक औषधि द्वीपांतरकी लाई हुई लिखीगई हैं, तथा यूनानी औषधियोंका नाम गुणदोष,संस्कृत और मराठी भाषामें लिखे हैं,इसमें नाना प्रकारके विषय अंग्रेजी और फारसीसे लेकर सन्निवेशित किये हैं, आज कल इस ग्रंथके समान दूसरा ग्रंथ विदित नहीं होता, किसी ग्रन्थमें केवल चिकित्साही है, किसीमें रोगोंके लक्षण, किसीमें निदानसहित चिकित्सा, किसीमें धातुशोधन मारण, किसीमें परिभाषा, किसीमें निघण्टु, किसीमें मानपरिभाषा, किसीमें नाडीविज्ञान, किसीमें कोष, किसीमें पाकप्रणाली, किसीमें पथ्यापथ्य, किसीमें चर्य्या और किसीमें धात्रीचिकित्सा है परन्तु इसको तो सम्पूर्ण विषयोंसे विभूषित कर दिया है, जो विषय कहीं नहीं पाये जाते वह सब इस ग्रंथमें विद्यमान हैं इसलिये विष्णु वासुदेव गोडबोलेको हम वारंवार धन्यवाद देते हैं कि, जिसने अनेक ग्रंथोंको संग्रह करके यह निघण्टुरत्नाकर निर्माण किया, अब हम सूर्य्यवंशीय श्रीरघुराजभूषण रामचन्द्रसूनु लववंशचूडामणि सेठ हंसराज करमसीको धन्यवाद देते हैं कि, जिन्होंने अपनी

सहायतासे इस ग्रन्थको प्रकाशित किया, ग्रन्थकारने यह निघण्टुरत्नाकर संवत् १९२४ में रचाथा यह विष्णु वासुदेव गोडबोले पावसग्रामनिवासी जिले रत्नागिरिके थे।

अमरकोष-अमरसिंहकृतहै, अमरसिंह वा अमरदेव विक्रमादित्यके समयमें हुवा, ऐसा निश्चय होताहै, परन्तु विक्रमादित्य तीन हुए, न जानिये यह अमरसिंह किसके समयमें हुवा, इसमें अनेक मत दिखाई देतेहैं, उइल्फोर्ड साहिबके मतसे नौ ९ विक्रमादित्यहैं, उन सबने शालिवाहनादिकसे युद्ध किया, (विद्याकल्पद्रुममें) परमाधुनिक ऐतिहासिक रहस्यकी अनुसन्धि करनेवालोंने कारण प्रदर्शनपूर्वक किसी समय यह सन् ५६ ई० प्रथम विक्रमादित्य नरपतिकी सभामें नवरत्न थे।

धन्वंतरिःक्षपणकामरसिंहशंकुवेतालभट्टघटकर्परकालिदासाः। ख्यातोवराहामिहिरोनृपतेःसभायांरत्नानि वै वररुचिर्नवविक्रमस्य ॥

(काव्यसंग्रह)

अर्थ-धन्वन्तरि, क्षपणक, अमरसिंह, शंकु, वेतालभट्ट, घटकर्पर, कालिदास, वराहामिहिर और वररुचि राजा विक्रमकी सभामें यह नवरत्न थे।

धारानगराधिपति दूसरे वृद्ध भोजकी सभामें किसी समय सन् १००५ ई० में अन्यतम भोजकी सभामें उसी प्रकारके रत्नोंमें अन्यतम होनेसे स्थापन किया, परन्तु इन तीनों कल्पोंमें कौनसा कल्प मुख्यहै, यह निश्चय नहीं होसक्ता, हमें तो संवत् प्रवृत्तकरनेवाले विक्रमादित्यके संवत् तीनमें था, ऐसा विश्वासहै, अमरसिंह बौद्धमतावलम्बी था, यह बात सब संसारमें प्रसिद्धहै, उसका कोष प्राचीन रीतिसे छन्दोबद्ध सब कोषोंमें श्रेष्ठ होनेसे सब जगत्में आदर किया गयाहै, वह इसको स्वर्गादिक वर्गोंमें विभाग करके बीच बीचमें वर्णानुक्रमकी रीतिसे रचता हुआ।

अमरकोषके प्रचलित टीकाकारोंमें--

मथुरेश प्राचीनहै, शाकेशालिवाहनके ६०० वर्षमें उत्पन्न हुआ, वह किसी मुसलमान वीरकी सहायतासे सदा शास्त्रका आन्दोलन करताथा, यह उइल्सन्साहिबका मत है, वही कवि शब्दरत्नावलीका रचनेवाला था।

क्षीरस्वामी-काश्मीरपति ललितादित्यके राज्यसमयमें उत्पन्न हुआथा,

जयापीडनाम कोई राजा इसीसे शब्दविद्याको पढकर अन्तमें ललितादित्य पण्डित ऐसी प्रसिद्धिको प्राप्त हुआ सन् ७०५ । ७३१ राजतरंगिणी ।

रायमुकुट-(सन १४३०) में हुआथा, राजतरंगिणी ।

गौरांगमल्लिका पुत्र भरतमल्लिक बहुत प्राचीन ग्रन्थकार और टीकाकार है. यह वर्द्धमान देशके पातिल पल्लिग्राममें कुलीन वैद्यवंशमें एकसौ पचाश १५० वर्षके लगभग पहिले उत्पन्न हुवाथा, यह कवि प्रसिद्ध शाब्दिककार कोल्लासका रचनेवाला और रघुवंश आदि काव्य कुमारसंभवादिकोंका टीकाकार है, उसकी रची हुई अमरकोषकी टीकासे उसकी कीर्त्ति भारतमें चिरकालतक स्थित रहैगी.

धन्वन्तरिनिघण्टुभी-अमरसिंहकृत अमरकोषके सदृश प्रमाणोंसे वैसाही पायाजाताहै. वह ६०० छःसौ वर्ष पहिला है ।

हेमचन्द्राभिधान-अभिधानचिन्तामणिके नामसे प्रसिद्ध है, उत्तमरीतिसे विशेष करके दो भागोंमें विभाग करके हेमचन्द्राचार्य्यने रचा है, उसमें पहिला स्वर्गादिक छैः भागोंमें विभाग किया है, शब्दोंकी श्रेणीका विभाग अन्ततक क्रमसे किया है, दूसरा नानार्थघटित है, परन्तु, हेमचन्द्र अवतरणिकामें अपने अभिधानके केवल प्रथमभागकी शब्दरचनाप्रणालीको वर्णन करके दूसरेका कुछ वृत्तान्त नहीं लिखा और पहिलेके समान दूसरे भागकी टीका भी नहीं जान पडती,इससे दूसरे भागको हेमचन्द्रकृत होनेमें वैद्य लोग सन्देह करतेहैं कि, महेश्वरकृतनानार्थवर्ग इसमें मिलादियाहै, "विद्वान् लोग ऐसी तर्कना करते हैं"

हेमचन्द्र वा हेमाचार्य्ययति-प्राचीन जैनग्रन्थलेखक और जैनधर्म्मावलम्बी था, यह संवत् १२३० में हुवा. और पाटलीपुत्र नगरनिवासी था,इसने अपने जीवनके पहिलेभागको नानाशास्त्रकी रचनासे व्यतीतकरके अन्तिम अवस्थामें गुजरातदेशकी ओर जाकर वहां जैनधर्म्मकी समालोचनासे बडी प्रतिष्ठा पाई. और वहां प्रकृतिसहित राजत्व और जैनधर्म्मको ग्रहण किया सुनाजाताहै कि, जैनधर्म्मावलम्बी हेमाचार्य्य यतिने उसीसमयमें राजपूत नृपति गुणमरपालकोभी जैनधर्म्ममेंही दीक्षित करलिया, इसप्रकार प्रसिद्धि है जैसा कि यह हलायुध गुरु लक्ष्मणसेनकी सभामें था (संवत् १२३०) ऐसा उइल्सन् साहिबका मत है ।

शब्दमाला-रामेश्वरशर्म्माकृत अतिसंक्षिप्त अभिधानसंग्रहहै, अमरकोषका शेषभूत वंगभाषामें कहीगईहै, यह मेदिनीकोषसे पहिलीहै यह उइल्सन साहबका मत है ।

नाममाला--धनञ्जयकृत है, उसमें श्रेणीविभागके असद्भाव होनेसे यह प्राचीन अनुमान की जातीहै, महर्षि जैनधर्म्मावलम्बी मानतुंगाचार्य्यका शिष्य धनञ्जय विक्रमकी दशवीं शताब्दीमें वर्त्तमान था, वैद्यलोगोंने ऐसा लिखाहै।

भूरिप्रयोग--दामोदरदत्तके पुत्र प्रसिद्ध सुपद्म व्याकरणकार पद्मनाभदत्तने रची है और तीनभागोंमें विभाग की है, पद्मनाभ मेदिनीकारके पीछे हुआ, स्वयं अपने ग्रन्थमें मेदिनीके उल्लेखसे प्रमाण किया है।

शब्दरत्नावली--मूँसेखाँ नाम किसी मुसलमान वीरक आश्रयसे अमरटीकाकार मथुरेशने अमरकोषकी प्रणालीसे रचीहै, उसमें शब्दोंके भिन्न रूप पाठ किये गये हैं।

जटाधरकोष--चट्टग्रामनिवासी जटाधरने रचा है, जटाधरने अमरको विना देखे जटाधरकोष निर्माण किया, यह बहुत प्रचीन अनुमान नहीं कियाजाता।

अभिधानरत्नमाला-हलायुधकृत है, यह संक्षिप्त कोष स्वर्ग, भू, नरक, वारि, मिश्र नाम पाँचभागोंमें विभाग की गई है, हलायुध भट्ट भास्करका शिष्य केरलदेशीय ब्राह्मण अति प्राचीन बौद्ध धर्म्मका अवलम्बन करनेवाला विक्रमकी द्वादश शताब्दीमें वर्त्तमानथा, उसके कोषमें, उद्भिज्ज द्रव्य खनिजद्रव्योंकी मनोरमसूची वंग भाषासे व्याख्यान कीगई, ऐसा सुना जाता है कि, हलायुध लक्ष्मणनरेशकी सभामें पंडित था।

शब्दचन्द्रिका-नाम, द्रव्य, गुणादिके कोष यह चक्रपाणिदत्तका रचाहुआ प्रसिद्ध है, यह उद्भिज्ज, खनिज, प्राणी, पथ्यापथ्यादिकोंके कार्य्योपयोगी होनेक संग्रहसे सर्वत्र प्रशंसनीय है, इसके द्रव्योंके नाम वंग भाषामें कहे हैं, यह वंगदेशहीके रहनेवाले थे।

विश्वप्रकाश-यह कोष बहुत प्राचीन है, जब कान्यकुब्जमें विद्याके उत्साहका अत्यन्त समादर था, तब महेश्वरने संवत् १०६६ में संग्रह किया, उस समय शाके १०३२ थे, महेश्वर गाधिपुरनिवासी साहसांक नरपति चिकित्साधिकारी श्रीकृष्णके वंशमें उत्पन्न हुआ, ऐसा पहिले तत्त्वके जाननेवाले, उइल्सन् साहब का मत है।

अजयपालकृतसंग्रह-संक्षिप्त है, परंतु बहुत प्रमाणोंसे बडा है, अजयपाल मेदिनीकरसे पीछे हुआ और जैनमतावलम्बी था यहभी उइल्सन् साहबका मत है।

धरणीकोष-कान्यकुब्जदेशके ब्राह्मण धरणीधरने निर्माण किया है, यह मल्लिनाथसे पहिले हुआ, यह उइल्सन् साहबका मत है।

२

त्रिकाण्डशेष–परम जैन पुरुषोत्तम देवकृत तीन अध्यायमेंही यह ग्रन्थ अमरादिकोष परिशिष्टमात्र प्रसिद्धशब्दोंसे पूर्ण है ।

हारावलिकोष–संक्षिप्त प्रसिद्ध सामान्यशब्दोंसे ग्रन्थित दो भागोंमें विभाग किया हुआ है. उनमें पहिला भाग नामपर्य्यायसंग्रह, दूसरा भाग नानार्थसंग्रह है यह ग्रन्थकार नववीं वा दशवींशताब्दीमें हुआ, ऐसा उइल्सन साहबका मत है ।

मेदिनीकोष–प्राणकरके पुत्र मेदिनीकरका रचाहुआ है, और यह अभिधान रत्नमालाके नामसे संसारमें प्रसिद्ध है, मेदिनीकर महेश्वरसे पीछे चौदहवीं शताब्दीके अन्तमें और महेश्वर, रायमुकुट इन दोनोंके मध्यवर्ती समयमें हुआ. यह कोष अन्त्यादि क्रमसे सुलभ समझने योग्य और प्रशंसनीय है "कर" उपाधिसे अनुमान किया जाता है कि, यह वैद्य वङ्गवासी है ।

इत्यादि अनेक कोष देखनेमें आये और वनस्पतियों सम्बन्धक बहुधा प्राचीन ग्रन्थकारोंने अपने अपने ग्रन्थोंमें वर्णन किये हैं, इसके अतिरिक्त निघण्टु नामक स्वतंत्र ग्रन्थभी है, निघण्टु शब्दका अर्थ कोष वा संग्रह है, निघण्टु और निघण्ट इन दोनों शब्दोंका अर्थ एकही है, प्राचीन निघण्टुओंकी पुस्तकोंमें वनस्पतियोंके नाम, गुण, दोष, उपयोग, किस रोगपर कौन औषधि देनीचाहिये इत्यादि बातें लिखी हैं ।

आत्रेय, हारीत, चरक सुश्रुत, वाग्भट और भावप्रकाशादि अनेक ग्रन्थकारोंने अपने अपने ग्रन्थ में निघण्टुका वर्णन लिखा है, परंतु ज्यों ज्यों शास्त्रका विचार बढतागया त्यों त्यों एक एक विषयपर अनेक अनेक ग्रन्थ बनने लगे, और इसी वनस्पति शास्त्रपर बहुतसे निघण्टु नामक ग्रन्थ बनगये, जितने निघण्टु आजतक निर्माण हुए हैं, उनमें कुछ कुछ मतभेद है. एक गुडूच्यादि निघण्टु है उसको बहुत लोग धन्वंतरिनिघण्टु मानते हैं, परंतु यह बात निश्चय नहीं है, गुडूच्यादिनिघण्टु व धन्वन्तरिनिघण्टु दोनों धन्वन्तरिजीके बनाये हैं, गुडूच्यादिनिघण्टु बहुत दिन हुए कि, छपगया, परंतु वह दूसरा धन्वन्तरिनिघण्टु कहीं नहीं मिलता जहांतक मुझसे बनपडा मैंने बहुत अनुसंधान किया ।

एक राजनिघण्टु नरहरि पंडित प्रणीत है, जिसको छपे बहुत दिनहुए, इस निघण्टुका दूसरा नाम "चूडामणि" है, बहुतसे लोग कहते हैं कि, राजनिघण्टु एकही है, परंतु काशीराजप्रणीत भी एक निघण्टु है काशीराजका नाम दिवोदासभीथा, इसकोही धन्वंतरिका अवतार मानते हैं इसमें यह संशय होता है

कि, पहिला कहाहुआ धन्वंतरिनिघण्टुही कदाचित् काशीराजकृत 'राजनिघण्टु' हो, "धन्वंतरिः क्षपणकामरसिंहशंकु" इस श्लोकके आधारसे ज्ञात होताहै कि, विक्रमादित्यकी सभामें जो नव रत्नथे उनहींमें एक धन्वंतरिजी भी थे आश्चर्य नहीं कि जो इन्होंनेही धन्वंतरि नामक निघण्टु रचाहो विक्रमकी सभाके नौओं रत्न महाविद्वान् थे उनके रचे हुए ग्रन्थोंका आजतक अधिक प्रचारहै, इसलिये यहभी कहाजासक्ताहै कि, धन्वंतरिनिघण्टु इनहीं धन्वन्तरिजीका रचाहुआ है ।

धन्वंतरिके बनाये दो निघण्टु, तीसरा नरहरिपंडितकृत निघण्टुचूडामणि कि, जिसको राजनिघंटु भी कहते हैं; चौथा काशीराज (कि जिनको धन्वन्तरिका अवतार कहते हैं) कृत राजनिघण्टु है, नरहरिरचित निघण्टुको लोग अबतक नहीं जानते, पंडित शंकरदास शास्त्रीने लिखा है कि, एक जगह उसका भी पता लगता है परन्तु राजनिघण्टु नाम राजनिघण्टु नहीं है इस निघण्टुका कर्त्ता अपने मंगलाचरणमें लिखता है ।

आरम्भिभैषजहितायनिघण्टुराजः ।

और समाप्तिमें भी ऐसा लिखा है !

इति काश्मीरमण्डलप्रसिद्धवसतिश्रीमठसिद्धगुहाक्षास्थानस्थितश्रीनन्दिरफोटाप्रसिद्धमहिमानन्दश्रीसोमानन्दाचार्यवंशोद्भवचतुर्दशविद्याविनोदपरिणतसमागमद्विजवैराग्ययोग्यश्रीपरमहंसजगद्विज्ञानतिमिरमार्तण्डश्रीचण्डेश्वरापरनामधेयश्रीराजराजेन्द्रगिरिश्रीपादपद्मसर्वशास्त्रमकरन्दामोदमुदितसद्वैद्यविद्याविशारददासविशारदमानसंहतारिधुरन्धरनानाधनाद्रहणसत्त्वगुणसहजश्रीमदीश्वरसूरिसूनुश्रीमदमृतेशानन्दचरणारविन्दमकरन्दानन्दोदितश्रीनरहरिपण्डितविरचिते निघण्टुराजापरपर्यायवत्यभिधानचूडामणौ चैकार्थाद्यभिधानत्रयोविंशो वर्गः ॥

इससे ज्ञात हुआ कि, ग्रन्थकर्त्ताने इस निघण्टुके दो नाम रक्खे हैं, एक निघण्टुराज, और दूसरा चूडामणि, दो वास्तविक नामोंके रहते हुएभी न जानिये कि, फिर किसने इसका तीसरा नाम राजनिघण्टु रखदिया ?

इसप्रकार चार निघण्टु हुए. पाँचवाँ नाम निघण्टु ज्ञात होताहै निघण्टुप्रकाशमें लिखाहै कि, चन्द चन्दनकृत गणनिघण्टुहै जिसको मदनादिनिघण्टु भी कहते हैं, यह अभी कहीं छपा नहीं है, और मदनत्तिघण्टु मदनपाल राजाका बनाया हुआ छपगया है, इसका दूसरा नाम मदनादिनिघण्टुभी है, परन्तु गणनिघण्टु भोजराजनिघण्टु और शेषराजनिघण्टु दशवीं शताब्दीमें बच-

मानथे यह प्रमाण पायाजाता है इन तीनों निघण्टुओंका आजतक कहीं पता नहीं लगता,और मदनपालनिघण्टु तो सर्वत्र प्रसिद्ध विस्तृत और प्रशंसनीय है,यह निघण्टु मदनपालनरेशके विनोदार्थ किसी वैद्यने निर्माण किया था ऐसा निश्चय होता है,विद्यार्थियोंमें इसका अधिक प्रचार है,क्योंकि इसमें नाम द्रव्य, गुण विस्तारपूर्वक वर्णन कियेहैं ।

इसप्रकार सात निघण्टु प्रमाणित हुए आठवां बोपदेव "हृदयदीप" निघण्टु है, नवां मुद्गलकृत "द्रव्यरत्नाकर" दशवां केयदेवकृत "केयदेवरत्नाकर निघण्टु" ग्यारहवां "केशवकृत सिद्धमंत्र" यह चारों निघण्टु अभी कहीं छपे नहीं हैं,केवल विश्वनाथसेनकृत पथ्यापथ्यनिघण्टु छपाहै, और बडे खोजसे एक त्रिमल्लभट्टविरचित "द्रव्यगुणशतश्लोकी" निघण्टु मुझको मिला मैंने वैद्यजनोंके हितार्थ उसका भाषानुवाद कियाहै ।

राजवल्लभीयद्रव्यगुण-यह परमोत्तम ग्रन्थ वैद्यवर राजवल्लभकृतहै, परन्तु श्रीनारायणदास कविराजने विस्तारपूर्वक व्याख्या करके इस ग्रन्थका संस्कार कियाहै,राजवल्लभ वैद्य परम्परासे सुनते आतेहैं कि,सम्वत् १७६० सत्रहसै साठमें वर्त्तमानथा,यह ग्रन्थ छःपरिच्छेदोंमें अत्यन्त श्रेष्ठ श्रेणीसे विभाग किया हुआ वैद्योंको उपयोगीहै,इस ग्रन्थका नामही सुनाजाताथा परन्तु कहींदेखनेमें नहीं आताथा, मैंने अपने मित्रोंके पास देशदेशांतरोंमें राजवल्लभके लिये पत्र भेजे परंतु कहींसे प्राप्त न हुआ,बहुतदिन पश्चात् कलकत्तेसे एक मेरे मित्रने भलीभाँति खोज करके इसग्रन्थकी एक प्रति मेरे पास भेजी वास्तवमें यह संक्षिप्त ग्रन्थ जैसा सुना था वैसाही निकला,मैंने अत्यंत हर्षसहित भाषानुवाद करके वैश्यवंशअवतंस श्रेष्ठी खेमराज श्रीकृष्णदासको समर्पण किया ।

निघण्टुसंग्रह-जूनागढ निवासी वैद्यशिरोमणि रघुनाथजी इन्द्रजी उपनामकताभटरचितहै, अनेक ग्रन्थोंका संग्रह कियाहुआ तो है परन्तु आज कलके समयमें यह निघण्टु सब निघण्टुओंका शिरमौरहै इसकी प्रणाली धन्वन्तरिनिघण्टुके सदृशहै; यह शके १८१५ में रचागयाहै ।

वैद्यकशब्दसिंधु-बाबू उमेशचन्द्रकृत नवीन कोषोंमें बहुत उत्तमहै ।

जब इन प्राचीन ग्रन्थोंको मैंने देखा, तो विचार किया कि, देखो पृथ्वी पर कैसे कैसे विद्वान् और बुद्धिमान् हुए, कि जिन्होंने यह अनुपम ग्रन्थ निर्माण कियेहैं, परन्तु सब वैद्योंने वैद्यकमें कोष और निघण्टुहीको मुख्य समझा, कि वैद्यककी मूल यही दोहैं, उन वैद्योंको सर्वज्ञ और गुणज्ञ जानकर

बारम्बार धन्यवाद देताहूं, जो महादुस्तर रोगरूपी समुद्रसे तारनेके लिये यह अद्भुत नौका बनागये, परन्तु आजकल विद्याकी न्यूनतासे पठन पाठन कठिन होगया, लोगोंने भाषानुवाद कियाभी परन्तु उससे किसीका कार्य ठीक ठीक सिद्ध न हुआ और ठीक ठीक औषधियोंके नाम भी समझने दुर्लभ होगये, और संस्कृतनामोंका चालचलन छूट गया, पंसारियोंकी दूकानपर जो वह औषधि होतीभीहै तोभी कहदेतेहैं कि हमारी दूकानपर नहीं है, क्योंकि वह लोग उनकी भाषा तो जानतेही नहीं, लोग हार मान यूनानी और अंग्रेजी औषधि करने लगे उनकी यह दशा देख मेरे चित्तमें अत्यन्त खेद उत्पन्न हुआ कि, ऐसी ऐसी भारी नौका वृथा आलस्यरूपी वारिधिमें डूबीजाती हैं इनके बचानका कोई उपाय होना चाहिये।यह विचार मैंने उसीसमय ऊपर लिखे हुए ग्रन्थोंकी सहायतासे और अपनी बुद्धिसे "शालिग्रामौषधशब्दसागरनाम अकारादिक्रमसे एक नवीन, कोष रचा" जिसमें प्रथम संस्कृत नाम, उसके आगे हिन्दीभाषाका नाम, जब यह पूर्ण हो गया, तो फिर चित्तमें विचार किया कि, कोषका प्रचार तो होगया, परन्तु संसारके उपकारके लिये एक निघण्टु और निर्माण करना चाहिये, क्योंकि बिना निघण्टु औषधियोंके नाम, गुण, दोष, नहीं, जाने जाते यथा-

निघण्टुनाविनावैद्योविद्वान्व्याकरणंविना।
अनभ्यासेनधानुष्कस्त्रयोहास्यस्यभाजनम् ॥ १ ॥
वैद्येनपूर्वंज्ञातव्याद्रव्यनामगुणागुणाः।
तदायत्तंहिभैषज्यंयज्ज्ञानेस्यात्क्रियाक्रमः ॥ २ ॥

अर्थ-बिना निघण्टुके वैद्य, बिना व्याकरण विद्वान् (पण्डि) और बिना-अभ्यास धनुष चलानेवाला (तीरन्दाज) यह तीनों मनुष्य अपनी हँसी करानेवालेहैं ॥१॥ इसलिये प्रथम वैद्यको औषधियोंका गुण अवगुण विचार-ना चाहिये, क्योंकि उनही द्रव्योंके आधीन सब औषधादिकका बनाना है, और बुद्धिके आश्रयसे सम्पूर्ण क्रिया कर्म जाने जाते हैं ॥ २ ॥

ऐसा विचार करके मैंने यह "शालिग्रामनिघण्टुभूषण" नाम नवीन निघण्टु निर्माण किया है, इस निघण्टुमें सब निघण्टुओंका सार और नवीन नवीन औषधि जिनका आज कल अधिक प्रचार है, जैसे कि, अकरकरा, शोरा, सत्वगिलोय, सनाय, कालादाना, चाय, सालममिश्री, कलमीआम,

नासपाती, अनन्नास, पिस्ता, बादाम, छुहारा, आलूबुखारा, माजु, ब्रह्मदण्डी रेवटचीनी, तमाखू, ईसफलगोल, भिण्डी, फूट, अंडखरबूजा, शकरकन्दी, घुँइयाँ, सलजम, बेला, चँवेली, मोतिया, हारसिंगार, गुलाब, महँदी, समुद्रसोख, पोदीना, सफरी, विहारीनिम्बू, मक्का, बाजरा, महुआ और कालाजीरी इत्यादि अनुसन्धान करके उसमें लिखे। फिर उनके नाम, गुणा-गुणका विचार और लक्षण लिखे, पचीस वर्गोंमें यह ग्रन्थ पूर्णकिया है, प्रथम कर्पूरादि वर्गमें औषधियोंके नाम, और ब्राकट (कोष्ठ) में अनेक कोष निघण्टुओंसे उनके पर्य्याय, फिर प्रत्येक औषधिका प्रसिद्ध संस्कृत नाम, पश्चात् हिन्दी, बंगला, महाराष्ट्री, गुजराती, कणाटकी, तैलङ्गी, अंग्रेजी लैटिन, फारसी, अरबी, और कहीं कहीं औत्कली, द्राविडी, लुसाई, मह्ली, पंजाबी, तुरकी, फरहंगी, और यूनानी आदि भाषाओंमें नाम लिखेहैं, फिर अनेक ग्रन्थोंसे उसके गुण, दोष, लक्षण, भेद, परीक्षा, स्वरूप और विवरण लिखाहै, किसी किसी औषधकी मात्रा, व्यवहार, अनुपान, उत्पत्ति, शोधन और सेवन करनेकीभी विधि लिखीहै।

प्रथम कर्पूरादिवर्गमें सम्पूर्ण सुगन्धित द्रव्योंका विस्तारपूर्वक वर्णन ॥१॥

दूसरा हरीतक्यादिवर्गमें, हरडसे आदि लेकर चूकपर्यंत औषधियोंका वर्णन ॥ २ ॥

तीसरे गुडूच्यादिवर्गमें नागवल्ली, बिल्व, गम्भारी, पाटला, शालिपर्णी आदिका वर्णन ॥ ३ ॥

चौथे पुष्पवर्गमें चम्पा, चँबेली, मालती, माधवी और केतकी, इत्यादि पुष्पोंका धारण, सुगन्ध, शोभाका वर्णन ॥ ४ ॥

पञ्चम फलवर्गमें आम, जामुनप्रभृति फलोंका वर्णन ॥ ५ ॥

छठे वटादिवर्गमें वड, पीपल, पाकर इत्यादि बडे बडे शाखीवृक्षोंका विस्तारसहित वर्णन ॥ ६ ॥

सातवें धातूपधातुवर्गमें सुवर्ण, चांदी, ताँबे इत्यादिसे लेकर शिलाजीत-पर्य्यंतका वर्णन ॥ ७ ॥

आठवें रत्नोपरत्नवर्गमें वज्र, विद्रुम, वैदूर्य्य, नीलमणि आदिका वर्णन ॥ ८ ॥

नवम विषवर्गमें सबप्रकारके विषोंका विस्तारयुक्त वर्णन ॥ ९ ॥

दशवें धान्यवर्गमें शालिआदि अनेक प्रकारके उत्तमोत्तम धान्योंका वर्णन ॥ १० ॥

ग्यारहवें शाकवर्गमें बथुवा, कुलफा, चूका, मरसा, चौलाई, पालक आदिका वर्णन ॥ ११ ॥

बारहवें वारिवर्गमें नदी, कूप, तडाग, वर्षा आदि सब प्रकारके पानीका वर्णन ॥ १२ ॥

तेरहवें दुग्धवर्गमें गाय, भैंस, बकरी इत्यादि सब प्रकारके दूधका वर्णन ॥ १३ ॥

चौदहवें दधिवर्गमें सब प्रकारके दधिका विस्तारसहित वर्णन ॥ १४ ॥

पन्द्रहवें तक्रवर्गमें सब प्रकारकी छाँछ, मट्ठेका सम्पूर्ण वर्णन कियाहै ॥१५॥

सोलहवें नवनीतवर्गमें मक्खन (नैनीघी) का भलीभाँति वर्णनकियाहै ॥१६॥

सत्रहवें घृतवर्गमें सब प्रकारके घृतोंका भिन्न भिन्न वर्णन किया है ॥१७॥

अठारहवें मूत्रवर्गमें, मनुष्य, हाथी, घोडा, बकरी आदिके मूत्रोंका सम्पूर्ण वर्णन ॥ १८ ॥

उन्नीसवें तैलवर्गमें तिल, सरसों, लाही, इत्यादिके तेलका वर्णन ॥ १९ ॥

बीसवें अर्कवर्गमें सब औषधियोंके अर्कोंके गुण दोष ॥ २० ॥

इक्कीसवें इक्षुवर्गमें सब प्रकारकी ईखोंका वर्णन ॥ २१ ॥

बाईसवें सन्धानवर्गमें सब प्रकारकी काँजी, अचार, सिरका मदिरा (शराब) आसवप्रभृतिका वर्णन ॥ २२ ॥

तेईसवें संख्यावर्गमें त्रिफला, त्रिकुटा, पञ्चवर्गादि औषधियोंका वर्णन॥२३॥

॥ इति पूर्वार्द्ध ॥

अथ उत्तरार्द्ध ।

चौबीसव (प्रथम अनूपादि वर्ग) में अनूपदेश जांगल देश और साधारण देशके लक्षण,ब्राह्मणक्षेत्र,क्षत्रियक्षेत्र, वैश्यक्षेत्र, शूद्रक्षेत्र इन चार क्षेत्रोंमें उत्पन्न होनेवाली औषधियोंके गुण, उन चारों क्षेत्रोंके देवता, फिर पार्थिव, आप्य, तैजस, वायव्य, आन्तरिक्ष यह पांच प्रकारके क्षेत्रोंका वर्णन करके फिर उन पांचोंक्षेत्रोंमें उत्पन्नहोनेवाले द्रव्योंके गुण, फिर उन क्षेत्रोंके देवता, फिर वृक्षोंकी उत्पत्ति, और ब्राह्मणादिक भेद,उनके देनेकी विधि, चारप्रकारसे औषधियोंका निर्णय. जंगम, पार्थिव, औद्भिज्ज द्रव्योंके पांच भेद वृक्षोंकी स्त्री, पुरुष, नपुंसक जाति और उनके गुण, फिर वृक्षोंकी क्षुधा, पिपासा और निद्राका वर्णन, वृक्षादिकोंमें पञ्चमहाभूतात्मकत्व, फिर उन वृक्षोंके उपकारका वर्णन फिर उनके गर्भ और सन्तान होनेका वर्णन करके अश्विन्यादि सत्ताईस २७ नक्षत्रवाले वृक्ष और जन्मनक्षत्रके वृक्षका औषधमें त्यागना, फिर विंध्याचल और हिमालयकी ओषधियोंके गुण, ओषधियोंके लानेमें मुहूर्त्तका विचार, उनके उखाडनेकी विधि, मंत्र, और समय दुष्ट ओषधियोंका त्यागन; और श्रेष्ठ ओषधियोंके रखनेकी विधि, स्वभावमें हितकारी ओषधियोंका वर्णन, तनकी परीक्षा, उपयोगविरुद्ध ओषधि लेनेमें संकेत प्रतिनिधि द्रव्यान्तर्गत पदार्थ, फिर मधुरादि रसोंका वर्णन, वीर्य्य, विपाक, प्रभाव, शक्ति इत्यादिका वर्णन ।

पच्चीसवें (दूसरे मिश्रवर्गमें) उत्थानकालनिर्णयादि हाथ पांव और मलमार्गको स्वच्छ रखनेके गुण, सूर्य्योदयसे पहले जलपीनेके गुण, नासिकासे जल पीनेके गुण, दतौन करनेकी विधि, दतौनमें वृक्षोंका निषेध, दतौन करनेके समय दिशाका निर्णय, किन किन रोगियोंको दतौनका निषेध, जिह्वाको घिसनेके गुण, चक्षुधावनविधि, गण्डूष (कुल्ला) करनेका गुण, मुखप्रक्षालनगुण, अञ्जन लगानेका गुण, किस किस रोगीको अञ्जन न लगाना चाहिये, कंघीसे बालस्वच्छ करनेका गुण, पगडी शिरपर बांधनेके गुण, श्मश्रु (दाढी मूछ क्षौरकर्म और नख) कटवानेके गुण, नाकके बाल उखाडनेके दोष, प्रातःकाल उठकर क्या देखना चाहिये, अग्निसे तापनेके गुण, धुएँ और हिमको सेवनके गुण, ओसके गुण, कुहरके गुण, छत्री

लगानेके गुण, दृष्टिके गुण, आतपके गुण, छायाके गुण, लाठी धारणके गुण, व्यायाम (कसरत) करनेके गुण, अंगमर्दनके गुण, शरीर घिसनेके गुण, मार्ग चलनेके गुण, अत्यन्त भ्रमण करनेके गुण, पादुका धारण करनेके गुण, नंगे पांव फिरनेके दोष, हाथी इत्यादिपर बैठनेके गुण, पाँव धोनेके गुण, पूर्व दिशाकी पवन (पुर्वाई) के गुण, अग्निकोणके पवनके गुण, दक्षिण दिशाकी (दक्षिणी) पवनके गुण, नैर्ऋत कोणके पवनके गुण, पश्चिम दिशाकी(पछाहियां) पवनके गुण, वायव्यकोणके पवनके गुण, उत्तर दिशाके (पहाडी) पवनके गुण, ईशानकोणके पवनके गुण, नीहारादि संयुक्त पवनके गुण, बबूलेके गुण, खजूरके पंखेकी पवनके गुण, ताड, केला, बांस, खस, मोरपंख, बाल, वस्त्र, और फूलोंके पंखके पवनके गुण, ऋतुविशेषसे वायुके गुण, अभ्यंग (पाँवोंमें तेल) मलनेके गुण, अभ्यंग वर्जित मनुष्य अवगाहनयुक्त तेलके गुण, तैलमर्दनकी विधि, शिरसे तेल मलनेके गुण, कानमें तेल डालनेके गुण, उबटन करनेके गुण, मुखप्रलेपके गुण, स्नानके गुण, गरमजलसे स्नान करनेके गुण, आंवले आदि शरीरसे मलकर स्नानकरनेके गुण, स्नानवर्जित रोगी, किसरोगमें स्नान करना नहीं चाहिये, शरीरमार्जनके गुण, वस्त्रधारण करनेकी विधि, रत्नाभरण धारणके गुण, गुरु और देवतादिकके पूजनकी विधि, दर्पण देखनेके गुण, अनुलेपनके गुण, पुष्पादिधारण गुण, भोजनके आदिमें लवणादि पदार्थ भक्षणके गुण, क्रमसे अन्नादिकोंके गुणोंकी विशेषता, आहार करनेके गुण, आहार करनेके समय दिशाका निर्णय, भोजनादि करनेका परिमाण, आचमनके गुण, भोजनके अन्तमें कर्त्तव्यता, भोजनके अन्तमें शयनादिकके गुण, पान, सुपारी, इलायची आदि खानेके गुण, अध्ययनादिकक गुण, बुद्धिके गुण, तत्काल प्राणकारक षट्क, तत्काल प्राणहारक षट्क, आयुके भेदसे स्त्रियोंकी बाल्यादि संज्ञा, बालास्त्रीसंसर्गगुण, मैथुनकालनिर्णय, सन्तानोत्पत्तिनिर्णय, सुखपूर्वक सोने और उत्तम भोजनके गुण, पृथ्वी और खाटपर सोनेके गुण, चांदनीके गुण, अन्धकारके गुण, मैथुनके गुण, निद्राके गुण, रात्रिमें जागने और दिनमें सोनेके गुण, हेमन्त, शिशिरकृत्य, वसंतकृत्य, ग्रीष्मकृत्य, वर्षाकृत्य, शरत्कृत्य ॥

॥ इति उत्तरार्द्ध समाप्त ॥

परिशिष्टमें, माजूफल, समुद्रफल, रेवटचीनीसे आदि लेकर अण्ड खरबू जेतक नवीन नवीन ओषधियोंका विस्तारपूर्वक वर्णन लिखाहै ।

जिन जिन ग्रन्थोंसे यह निघण्टुभूषण संग्रह कियाहै उनके चिह्न एक एक अक्षरसे लिखेहैं, अब वैद्यजनोंके जाननेके लिये उन ग्रन्थोंके पूरे नामभी लिखताहूँ ।

नि० र०	निघण्टुरत्नाकर		भा० प्र०	भावप्रकाश
रा० नि०	राजनिघण्टु		वै० नि०	वैद्यकनिघण्टु
म० नि०	मदनपालनिघण्टु		ध० नि०	धन्वंतरिनिघण्टु
म० वि०	मदनविनोद		वि०ति०भा०	विकारतिमिरभास्कर
रा० व०	राजवल्लभ		क० दे०	कैयदेव
ग० नि०	गणनिघण्टु		नि० चू०	निघण्टुचूडामणि
सो० नि०	सोढलनिघण्टु		लंकेश०	अर्कप्रकाश
आ० सं०	आत्रेयसंहिता		ड० मि०	डल्लनमिश्र
चं० नि०	चंद्रिकानिघण्टु		र० चं०	रसचंद्रिका
भै० चि०	भैषज्यचिन्तामणि		र० सं०	रसेन्द्रसारसंग्रह
सु० सं०	सुश्रुतसंहिता		नि० सं०	निघण्टुसंग्रह
च० सं०	चरकसंहिता ।			

और जिस परिश्रमसे वृक्षोंके चित्र एकत्र किये मेराही जी जानताहै, मेरी इच्छा तो यहथी कि, जिस जिस पृष्ठमें द्रव्योंके नाम गुणहैं, वहीं २ वृक्षोंके चित्रभी होने चाहिये, परन्तु चित्रोंके बनानेमें विलम्ब होनेके कारण चित्र एकही जगह लगाये गये हैं ।

अब सब आयुर्वेदरसरसिकोंसे मेरी यह प्रार्थनाहै कि, इस परिश्रमका ध्यान करें कि, मने इस ग्रन्थके लिये कितना परिश्रम किया, इस बातको बधलोगही पहिचानेंगे, सैंकडों पुस्तकें देश देशान्तरोंसे संस्कृत, अंग्रेजी, अरबी, फारसी, गुजराती, महाराष्ट्री, बंगला इत्यादिकी मँगाई, उनमेंसे एक एक शब्द ढूँढ ढूँढकर निकाला तब यह ग्रन्थ रचागया, जब यह ग्रन्थ पूर्ण हुआ तो "शालिग्रामनिघण्टुभूषणे" इसका नाम रक्खा. और वैद्यजनोंके हितार्थ इस निघण्टुको श्रीमान् वैद्यकुलदिवाकर, सकलगुणभाण्डागार, परमोदार, गोब्राह्मणहितकारी, सत्यव्रतधारी, सर्वविद्याविभूषित, श्रीमद्रत्ना

करसन्निकट मुम्बईपत्तननिवासी श्रीयुतश्रेष्ठि खेमराज श्रीकृष्णदासजीको पूर्णप्रतापी जानकर मैंने यह "शालिग्रामनिघण्टुभूषण"उनको समर्पण किया, और उनको कोटिशः धन्यवाद हैं कि, जिन्होंने अपना धन व्यय करके इस "शालिग्रामनिघण्टुभूषण"को अपने जगद्विख्यात "श्रीवेंकटेश्वर" (स्टीम्) यंत्रालयमें मुद्रितकरके मेरा नाम प्रसिद्ध किया, मैरे परिश्रमको देखकर गुणीजन अवश्य मेरे गुणकी श्लाघा करेंगे, यह मुझको पूर्ण विश्वास है, और दुष्टजन अपना नीचपना प्रगट करेंहींगे, यहभी मुझे दृढ आशा है,जब सज्जनोंकी कृपादृष्टि मेरे ऊपरहै तो दुर्जन मेरा क्या करसक्ते ?

इति प्रथमावृत्ति भूमिका।

वि० संवत् १९५३
आषाढपूर्णिमायां भृगौ।

आपका कृपाभिलाषी—
आयुर्वेदोद्धारक-शालिग्रामवैश्य,
मुरादाबाद,

श्रीः ।

द्वितीयवारकी भूमिका.

औषधिशास्त्र आयुर्वेदका मुख्य अंग और वैद्यकका प्रथम आवश्यकीय विषय है क्योंकि सम्पूर्ण क्रियाक्रयोंकी मूल चिकित्साहै और चिकित्साकी मूल औषधिशास्त्र अर्थात् निघण्टु इसी कारण सर्वत्र लिखाहै कि—"विना निघण्टुके वैद्य नहीं होता है" जो वैद्य केवल रोगकेही ज्ञानको जानतेहैं औषधिकल्पको नहीं जानते उनकी संसारमें कदापि प्रतिष्ठा नहीं होती । और न वह वैद्यक योग्यही कहे जासक्ते हैं । हमारे पूर्वज महर्षियोंने संसारके उपकारके लिये अनेक प्रकारके औषधिशास्त्रके ग्रन्थ निर्म्माण किये । अनुमान आठसौ वर्ष पूर्व उन समस्त आर्षग्रन्थोंके पढनेका इस देशमें अधिकतासे प्रचार था पश्चात् वारंवार मुसल्मानबादशाहोंके चढनेपर सब विद्याओंकी अवनतिके साथ आयुर्वेदीय चिकित्साकी भी अवनति होती गई और आयुर्वेदीय चिकित्साकी अवनति होनेसे सम्पूर्ण औषधिशास्त्रके ग्रंथोंके पठन पाठन और औषधिशिक्षाका एकसाथ प्रचार उठसागया । यहांतक आयुर्वेदीय चिकित्साकी दुर्दशाहुई कि, आजतक भी हमारे देशकी उत्पन्न हुई और हमारी प्रकृतिके अनुकूल सुलभ औषधियें भी हमको ठीक ठीक प्राप्त नहीं होतीं । बडे कष्टका विषय है कि-यूनानी और डाक्टरी विदेशी औषधि होनेपर भी भारतके प्रत्येक प्रदेश, जिले, कसबे और गांवोंमें सुगमतासे प्राप्त होजातीहैं और आयुर्वेदीय औषधियें हमारी कहलानेपर भी हमको ठीक ठीक किसी स्थानपर भी नहीं मिलतीं । यदि किसी पसारीसे पूंछते हैं कि, तुम्हारे पास अमुक औषधि है ? तब प्रथम तो वह नाहीं कह देता है और जो कहीं विशेष खोज करनेसे एक दो मिल भी गईं तो गली, सडी वर्षोंकी पडीहुई होंगी ।

इत्यादि उपर्युक्तआयुर्वेदीय चिकित्साकी जो दुर्दशा हुई उसको वारंवार लिखनेकी यहां आवश्यकता नहींहै किंतु इतना अवश्य कहेंगे कि, आयुर्वेदीय चिकित्साकी इसप्रकार अवनति रहनेपर तुम्हारी कदापि उन्नति नहीं होगी । क्योंकि यह बात अच्छे प्रकारसे सिद्ध होचुकी है कि, हमारे लिये हमारेही देशकी औषधि सात्म्य होसक्ती है ।

उपर्युक्त सम्पूर्ण दुर्दशाका केवल अविद्याका प्रभाव देखपडता है यद्यपि इस नवीन शताब्दीके आविष्कारमें कुछ कुछ आयुर्वेदीय चिकित्सा और

औषधिशास्त्रकी उन्नति हुई है किन्तु जितनी उन्नतिकी आवश्यकताहै उसका सोलहवां भाग नहींहै। यद्यपि अनेक स्थानोंमें चरक, सुश्रुत, वाग्भट्ट, भावप्रकाश, हारीत, अत्रि, धन्वन्तारि आदि ग्रन्थोंमें निघण्टुखंड छपचुकाहै तथा मदनपाल, राजनिघण्टु, धन्वंतरिनिघण्टु, शोढलनिघण्टु, निघण्टुशिरोमणि आदि कितनेक निघण्टुके स्वतंत्र ग्रन्थ भी छपचुकेहैं किन्तु ऐसा ग्रंथ कहीं भी नहींछपा कि, जिस एकही ग्रन्थसे सम्पूर्ण औषधियोंके गुण दोष लक्षण परीक्षा विवरणादि पूरी पहचान मालूम होजाय। इसी अभावको दूर करनेके लिये प्रायः सम्पूर्ण अर्वाचीन और प्राचीन द्रव्य गुण, कोष और निघण्टुओंका सार लेकर लाला शालिग्रामजीने यह "शालिग्रामनिघण्टुभूषण" निर्माण कराहै। इस इकले ग्रन्थसेही समस्त आयुर्वेदीय औषधियोंका अच्छे प्रकारसे अनुभव हो सक्ताहै। यद्यपि लालाजीने इस ग्रन्थको सर्वांगसुन्दर और सम्पूर्ण विषयोंसे परिपूर्ण लिखाहै किन्तु उनकी इच्छानुसार इसमें कितनी एक त्रुटि रहगईथी सो अबकीबार लालाजीकी आज्ञानुसार वह सब त्रुटियां पूर्ण करदी गई हैं।

इस आवृत्तिमें बनप्सा, आलू, गोभी, फूलगोभी, पत्रगोभी, गांठगोभी, गुलबनप्सा, झाऊ, झिल्ल, देशीबादाम आदि अनुमान २०-२५ अर्वाचीन औषधियोंके गुण दोष, विवरण आदि संस्कृत श्लोक और भाषा बनाकर लिखदी गई हैं। पहली बारमें सम्पूर्ण औषधियोंके विवरण विस्तारपूर्वक नहीं लिखेगये थे सो अबकीबार अनुमान ३००-४०० औषधियोंके विशेष विवरण पारवर्द्धित करदिये गयेहैं। इसके अतिरिक्त २०० चित्र औषधियोंके बढादिये हैं। तथा अकारादि क्रमकी बंगला, मराठी और गुजराती यह तीन अनुक्रमणिका पाठकोंके सुभीतेके लिये विशेष लगादीगई हैं। इसमें प्रमादके वश अथवा अल्पज्ञतासे जो त्रुटि रहगई हों उनको पाठक महाशय क्षमा करें अथवा पत्रद्वारा लिखकर भेजदेंगे तो आगामी आवृत्तिमें ठीक करदी जायँगी।

इति द्वितीयावृत्तिभूमिका।

तारीख--४--४--१९०४.

भवदीय-कृपाकांक्षी-
वैद्य--शंकरलाल हरिशंकर,
"आयुर्वेदोद्धारक-कार्य्यालय"
मुरादाबाद.

॥ श्रीः ॥

तीसरीवारकी भूमिका.

पाठक महाशयोंकी गुणग्राहकतासे इसका तीसरा संस्करणभी शीघ्र हो गया । शीघ्रताके कारण अबकीबार कोई विशेष परिवर्त्तन नहीं किया जासका, तथापि ग्राहकोंके संतोषार्थ इस वार भी कुछ न कुछ अवश्य नवीन संशोधन कियागयाहै । पहले और दूसरे संस्करणोंमें वनौषधियोंके सब चित्र ग्रन्थके आदिमें एकत्र लगाये गयेथे, प्रत्येक औषधिक चित्रको अलग अलग ढूंढनेमें तब बहुत देरलगतीथी । अबकीबार इसी दिक्कतको दूर करनेके लिये प्रत्येक औषधिका चित्र उसके विवरणके साथ यथास्थान लगादियागयाहै तथा दूसरे संस्करणकी अशुद्धियोंकाभी यथासाध्य संशोधन कियागयाहै ।

तारीख १ मई सन् १९१२

भवदीय-कृपाकांक्षी-
वैद्य- शंकरलाल हरिशंकर.
"आयुर्वेदोद्धारक-कार्य्यालय"
मुरादाबाद. U. P.

श्रीः ।

शालिग्रामनिघण्टुकी-
विषयानुक्रमणिका ।



विषय.		पृष्ठ.
कर्पूरनामानि	...	१
कर्पूरगुणाः	...	२
कर्पूरलक्षणम्	...	३
पोतास–भीमसेनी–वरास--कर्पूरगुणाः		४
शंकरावासकर्पूरगुणाः	...	,,
हिमकर्पूरगुणाः	...	५
उदयभास्करकर्पूरगुणाः	...	,,
पर्णकर्पूरगुणाः	...	,,
चीनकर्पूरनामानि	...	,,
चीनकर्पूरगुणाः	...	६
कस्तूरीनामानि	...	,,
कस्तूरीभेदाः	...	७
कस्तूरीपंचभेदाः	...	,,
कस्तूरीपरीक्षा	...	८
कस्तूरिकामृगलक्षणम्	...	९
दुष्टकस्तूरीलक्षणम्	...	,,
दुष्टकस्तूरीपरीक्षा	...	,,
कस्तूरीगुणाः	...	१०
गन्धमार्जारवीर्यम्	...	११
लताकस्तूरीगुणाः	...	,,
कुंकुमनामानि	...	१२
कुंकुमभेदाः	...	१३
कुंकुमलक्षणम्	...	,,
कुंकुमगुणाः	...	१४
तृणकुंकुमनामानि	...	१५
तृणकुंकुमगुणाः	...	,,
चन्दननामानि	...	,,
चन्दनलक्षणम्	...	१६
चन्दनगुणाः	...	१६
चन्दनभेदाः	...	१८
वेट्टचन्दनगुणाः	...	,,
सुक्काडिचन्दनगुणाः	...	,,
शम्बरचन्दननामानि	...	,,
शम्बरचन्दनगुणाः	...	१९
पीतचन्दननामानि	...	,,
पीतचन्दनगुणाः	...	,,
रक्तचन्दननामानि	...	,,
रक्तचन्दनगुणाः	...	२०
पतंगनामानि	...	,,
पतंगगुणाः	...	२१
बर्बरनामानि	...	,,
बर्बरचन्दनगुणाः	...	२२
हरिचन्दननामानि	...	,,
हरिचन्दनगुणाः	...	,,
अगरुनामानि	...	२३
अगरुगुणाः	...	२४
कृष्णागरुनामानि	...	,,
कृष्णागरुगुणाः	...	,,
काष्ठागरुगुणाः	...	,,
दाहागरुनामानि	...	२५
दाहागरुगुणाः	...	,,
मङ्गलागरुनामानि	...	,,
मङ्गलागरुगुणाः	...	,,
देवदारुनामानि	...	,,
देवदारुगुणा,	...	२६
देवदारुभेदाः	...	२७

बिषय.	पृष्ठ.	विषय.	पृष्ठ.
नग्धदारुगुणाः ...	२६	जातीफलगुणाः ...	४
काष्ठदारुगुणाः ...	२७	जातीफलतैलगुणाः ...	४
चीडानामानि ...	"	जातीपत्रीनामानि ...	"
चीडागुणाः ...	"	जातीपत्रीगुणाः ...	४८
सरलनामानि ...	"	स्थूलैलानामानि ...	४
सरलगुणाः ...	२८	स्थूलैलागुणाः ...	"
तगरनामानि ...	२९	सूक्ष्मैलानामानि ...	५
तगरगुणाः ...	"	सूक्ष्मैलागुणाः ...	५
पद्मकनामानि ...	३०	द्विविधैलागुणाः ...	५
पद्मकगुणाः ...	३१	कङ्कोलनामानि ...	
गुग्गुलुनामानि ...	"	कंकोलगुणाः ...	
गुग्गुलोःप्रकारभेदलक्षणगुणाः	३२	नागकेशरनामानि ...	५
गुग्गुलुगुणाः ...	३३	नागरकेशरगुणाः ...	"
गुग्गुलोत्पत्तिः ...	३४	त्वचगुडत्वङ्कनामानि ---	५
गुग्गुलुपरीक्षा ...	"	दारुसितागुणाः ...	५
अस्यशोधनविधिः ...	"	त्वचतैलगुणाः ...	५
गन्धराजगुग्गुलुनामानि ...	३५	तेजपत्रनामानि ...	५
गन्धराजगुग्गुलुगुणाः ...	३६	तेजपत्रगुणाः ...	"
भूमिजगुग्गुलुनामानि ...	"	तालीसपत्रनामानि ...	५
भूमिजगुग्गुलुगुणाः ...	"	तालीसपत्रगुणाः ...	६
रालनामानि ...	"	जटामांसीनामानि ...	६
रालगुणाः ...	३७	गन्धमांसीनामानि ...	"
रालतैलगुणाः ...	३८	आकाशमांसीनामानि ...	"
कुन्दुरुनामानि ...	"	जटामांसीगुणाः ...	६
कुन्दुरुगुणाः ...	३९	गन्धमांसीगुणाः ...	६
श्रीवासनामानि ...	४०	आकाशमांसीगुणाः ...	"
श्रीवासगुणाः ...	४१	प्रियंगुनामानि ...	६
श्रीवाससारगुणाः ...	"	प्रियंगुगुणाः ...	६
सिह्लकनामानि ...	४२	अन्यसुगन्धप्रियंगुगुणाः ...	६
सिह्लकगुणाः ...	"	उशीरनामानि ...	
लवंगनामानि ...	४३	उशीरगुणाः ...	६
लवगगुणाः ...	४४	गोरोचनानामानि ...	"
लवंगतैलगुणाः ...	४५	गोरोचनागुणाः ...	
जातीफलनामानि ...	"	नखनामानि ...	६
जातीफललक्षणम् ...	४६	नखपञ्चभेदाः ...	७

विषय.	पृष्ठांक
नखशुद्धिः ...	७०
द्विविधनखगुणाः ...	७१
नखगुणाः ...	,,
व्याघ्रनखगुणाः ...	,,
द्विविधनखगुणाः ...	,,
वालकनामानि ...	७२
वालकगुणाः ...	,,
मुस्तकनामानि ...	७३
नागरमुस्तकनामानि ...	,,
भद्रमुस्तकनामानि ...	७४
श्रेष्ठमुस्तकलक्षणम् ...	,,
श्रेष्ठमुस्तकशुद्धिः ...	,,
भद्रमुस्तकगुणाः ...	७५
मुस्तकगुणाः ...	,,
नागरमुस्तकगुणाः ...	,,
भद्रमुस्तकगुणाः ...	,,
कैवर्तकमुस्तनामानि ...	७६
कैवर्त्तकमुस्तकगुणाः ...	,,
शैलेयनामानि ...	७७
शैलेयगुणाः ...	,,
रेणुकानामानि ...	७८
रेणुकागुणाः ...	,,
ग्रन्थिपर्णनामानि ...	,,
पर्णमक्षणमूत्रं ...	७९
ग्रन्थिपर्णगुणाः ...	,,
स्थौणेयकनामानि ...	८०
स्थौणेयकगुणाः ...	,,
चोरकनामानि ...	,,
चोरकगुणाः ...	८१
कुष्ठनामानि ...	८२
कुष्ठंगुणाः ...	,,
कर्चूरनामानि ...	८३
कर्चूरगुणाः ...	,,
गन्धपलाशीनामानि ...	८४
गन्धपलाशीगुणाः ...	८५
मुरानामानि ...	८६

विषय,	पृष्ठांक
मुरागुणाः ...	८६
लामज्जकनामानि ...	८७
श्रेष्ठलामज्जकलक्षणम् ...	८७
लामज्जकगुणाः ...	८७
स्पृक्कानामानि ...	८८
स्पृक्कागुणाः ...	८८
एलावालुकनामानि ...	८९
एलावालुकगुणाः ...	८९
प्रपौण्डरीकनामानि ...	९०
प्रपौण्डरीकगुणाः ...	९१
पर्पटीनामानि ...	९१
पर्पटीगुणाः ...	९२
नलिकानामानि ...	,,
नलिकागुणाः ...	९३
पुदिनानामानि ...	,,
पुदिनागुणाः ...	९४

हरीतक्यादिवर्गः ।

विषय	पृष्ठांक
हरीतकीनामानि ...	९५
हरीतकीसप्तधा ...	९७
सातोंकेपृथक्पृथकलक्षण ...	,,
जन्मस्थान ...	,,
सातोंकेभिन्नभिन्नप्रयोग ...	,,
दोप्रकारकीचेतकीहरड़कास्वरूप	९८
सर्वप्रकारकीहरदोंकेरेचनगुण	,,
चेतकीहरडोंकेरेचनगुण ...	,,
विजयाहरड़कीप्रशंसा ...	९९
हरीतकीगुणाः ...	,,
हरीतक्याःपंचरसावस्थितिनिर्णयः	१०१
श्रेष्ठहरीतकीलक्षणम् ...	,,
चर्वितादिहरीतकीगुणाः ...	,,
भक्तान्वितहरीतकीगुणाः ...	१०२
मुक्तोपरिसेवितहरीतकीगुणाः	,,
हरीतक्याविशेषगुणाः ...	,,
ऋतुहरीतकीगुणाः ...	,,
हरीतक्याःश्रेष्ठगुणत्वम् ...	,,

विषय.	पृष्ठांक
अन्यद्रव्ययुक्तहरीतकी ...	१०३
हरीतकीसेवननिषेध ...	”
हरीतकीशब्दस्यनिरुक्तिः ...	१०४
हरीतकीबीजगुणाः ...	”
बिभीतकीनामानि ...	”
बिभीतकीगुणाः ...	१०५
आमलकीनामानि ...	१०७
आमलकीगुणाः ...	१०८
शुष्कामलकीगुणाः ...	”
शुष्कामलकीमज्जागुणाः ...	१०९
शुण्ठीनामानि ...	”
शुण्ठीगुणाः ...	११०
आर्द्रकनामानि ...	१११
आर्द्रकगुणाः ...	११२
द्रव्यगुणाः ...	११३
निषेधः ...	”
मरिचनामानि ...	११४
सितमरिचनामानि ...	”
मरिचगुणाः ...	११५
सितमरिचगुणाः ...	”
अन्येचमरिचगुणाः ...	”
पिप्पलीनामानि ...	११६
पिप्पलीगुणाः ...	११७
पिप्पलीमूलनामानि ...	११८
पिप्पलीमूलगुणाः ...	११९
चविकानामानि ...	”
चविकागुणाः ...	१२०
गजपिप्पलीनामानि ...	१२१
गजपिप्पलीगुणाः ...	”
सैंहलीपिप्पलीनामानि ...	१२२
सैंहलीपिप्पलीगुणाः ...	”
वनपिप्पलीनामानि ...	”
वनपिप्पलीगुणाः ...	१२३
मर्कटीपिप्पलीगुणाः ...	”
चित्रकनामानि ...	”
रक्तचित्रकनामानि ...	”
चित्रकगुणाः ...	१२४
रक्तचित्रकगुणाः ...	१२५
कृष्णचित्रकगुणाः ...	”
शतपुष्पानामानि ...	१२६
शतपुष्पागुणाः ...	१२७
शतपुष्पाकृतिः ...	”
मधुरिकानामानि ...	”
मधुरिकागुणाः ...	१२८
मधुरिकाजलगुणाः ...	१२९
मेथिकानामानि ...	”
मेथिकागुणाः ...	१३०
चन्द्रशूरनामानि ...	१३१
चन्द्रशूरगुणाः ...	१३२
यवानीनामानि ...	”
यवानीगुणाः ...	१३३
अजमोदानामानि ...	१३४
अजमोदागुणाः ...	१३५
पारसीकाजमोदानामानि ...	१३६
पारसीकाजमोदागुणाः ...	”
खुरासानीयवानीनामानि ...	”
खुरासानीयवानीगुणाः ...	१३७
साधारणजीरकनामानि ...	१३८
गौरजीरकनामानि ...	१३९
सामान्यजीरकनामानि ...	”
श्वेतजीरकगुणाः ...	”
कृष्णजीरकनामानि ...	१४०
कृष्णजीरकगुणाः ...	१४१
पीतजीरकगुणाः ...	”
द्विविधजीरकगुणाः ...	”
स्थूलजीरकनामानि ...	१४२
स्थूलजीरकगुणाः ...	”
त्रिविधजीरकगुणाः ...	१४३
अरण्यजीरकनामानि ...	”
अरण्यजीरकगुणाः ...	”
धन्याकनामानि ...	१४४
धन्याकगुणाः ...	१४५
हिंगुनामानि ...	”
हिंगुगुणाः ...	१४६

विषयः	पृष्ठांकः
हिंगुशोधनविधिः ...	१४७
हिंगुपत्रीनामानि ...	१४८
हिंगुपत्रीगुणाः ...	”
नाडीहिंगुनामानि ...	”
नाडीहिंगुगुणाः ...	१४९
वचानामानि ...	”
पारसीकवचानामानि ...	१५०
वचागुणाः ...	”
शुक्लवचागुणाः ...	१५१
महाभरीवचागुणाः ...	”
वचाद्भुतगुणाः ...	”
कुलिञ्जननामानि ...	१५२
कुलिञ्जनगुणाः ...	”
चोपचीन्युत्पत्तिलक्षणम् ...	१५३
चोपचीनीगुणाः ...	१५४
निषेधः ...	१५५
चोपचीनीलक्षणम् ...	”
आकारकरभनामानि ...	”
आकारकरभगुणाः ...	१५६
हपुषानामानि ...	”
हपुषागुणाः ...	”
स्वल्पहपुषागुणाः ...	”
विडंगनामानि ...	१५७
विडंगगुणाः ...	”
तुम्बुरुनामानि ...	१५८
तुम्बुरुगुणाः ...	”
वंशलोचननामानि ...	१५९
वंशलोचनगुणाः ...	१६०
तवक्षीरनामानि ...	”
तवक्षीरगुणाः ...	१६१
समुद्रफेननामानि ...	१६२
समुद्रफेनगुणाः ...	”
अष्टवर्गः ।	
जीवकनामानि ...	१६३
जीवकगुणाः ...	”
जीवकस्वरूपम् ...	१६४
ऋषभकनामानि ...	१६४
ऋषभकगुणाः ...	”
जीवकर्षभकगुणाः ...	१६५
जीवकर्षभकस्वरूपम् ...	”
मेदानामानि ...	”
मेदागुणाः ...	”
मेदालक्षणम् ...	१६६
महामेदानामानि ...	”
महामेदागुणाः ...	”
महामेदामेदागुणाः ...	”
महामेदालक्षणम् ...	१६७
ऋद्धिनामानि ...	”
ऋद्धिगुणाः ...	”
वृद्धिनामानि ...	१६८
वृद्धिगुणाः ...	”
ऋद्धिवृद्ध्युत्पत्तिलक्षणम् ...	”
काकोलीनामानि ...	”
काकोलीगुणाः ...	”
क्षीरकाकोलीनामानि ...	१६९
क्षीरकाकोलीगुणाः ...	”
द्विविधकाकोलीगुणाः ...	”
काकोलीक्षीरकाकोल्योरुत्पत्तिलक्षणम्	१७०
अष्टवर्गनामानि ...	”
अष्टवर्गगुणाः ...	”
एतस्यप्रतिनिधीनाह ...	१७१
यष्टीमधुनामानि ...	”
यष्टीमधुगुणाः ...	१७२
जलयष्ट्यर्कगुणाः ...	१७३
कम्पिल्लनामानि ...	”
कम्पिल्लगुणाः ...	१७४
आरग्वधनामानि ...	१७५
आरग्वधगुणाः ...	१७६
आरग्वधफलगुणाः ...	”
अस्यपत्रगुणाः ...	”
आरग्वधपुष्पकगुणाः ...	”
आरग्वधमज्जागुणाः ...	१७७

विषयः	पृष्ठांकः
आरग्वधमूलगुणाः ...	१७७
कर्णिकारगुणाः ...	,,
कटुकानामानि ...	,,
कटुकागुणाः ...	१७९
कटुकाशोधनविधिः ...	,,
चिरतिक्तनामानि ...	,,
नेपालनिम्बनामानि ...	१८०
भूनिम्बगुणाः ...	,,
नेपालनिम्बगुणाः ...	१८१
कुटजनामानि ...	,,
कुटजगुणाः ...	१८२
श्वेतकुटजगुणाः ...	,,
कुटजपुष्पगुणाः ...	,,
कुटजशिम्बीशाकगुणाः ...	१८३
अन्यच्चत्वग्गुणाः ...	,,
इन्द्रयवनामानि ...	,,
इन्द्रयवगुणाः ...	,,
मदनफलनामानि ...	१८४
मदनफलगुणाः ...	१८५
रास्नानामानि ...	१८६
रास्नायाःप्रकारभेदाः ...	१८७
रास्नागुणाः ...	,,
बाकुलीनामानि ...	१८८
बाकुलीगुणाः ...	१८९
माचिकानामानि ...	१९०
माचिकागुणाः ...	,,
तेजोवतीनामानि ...	,,
तेजोवतीगुणाः ...	१९१
ज्योतिष्मतीनामानि ...	,,
महाज्योतिष्मतीनामानि ...	१९२
ज्योतिष्मतीगुणाः ...	,,
पुष्करमूलनामानि ...	१९३
पुष्करमूलगुणाः ...	१९४
स्वर्णक्षीरनामानि ...	,,
स्वर्णक्षीरीगुणाः ...	१९५
अस्याःस्वरूपम् ...	१९६
कर्कटशृङ्गीनामानि ...	,,
कर्कटशृङ्गीगुणाः ...	१९७

विषयः	पृष्ठांकः
कट्फलनामानि ...	१९७
कट्फलगुणाः ...	१९८
भार्गीनामानि ...	१९९
भार्गीगुणाः ...	,,
भार्गीपत्रगुणाः ...	२००
पाषाणभेदनामानि ...	,,
पाषाणभेदगुणाः ...	२०१
क्षुद्रपाषाणभेदगुणाः ...	,,
धातकीनामानि ...	,,
धातकीगुणाः ...	२०[illegible]
मञ्जिष्ठानामानि ...	२०[illegible]
मंजिष्ठागुणाः ...	२०[illegible]
मंजिष्ठाशाकगुणाः ...	२०[illegible]
कुसुम्भनामानि ...	,,
कुसुम्भगुणाः ...	२०[illegible]
कुसुम्भपुष्पगुणाः ...	,,
कुसुम्भपत्रशाकगुणाः ...	,,
कुसुम्भबीजगुणाः ...	२०[illegible]
कुसुम्भतैलगुणाः ...	,,
लाक्षानामानि ...	,,
लाक्षागुणाः ...	२०[illegible]
आलक्तकगुणाः ...	,,
हरिद्रानामानि ...	२०[illegible]
हरिद्रागुणाः ...	२१[illegible]
कर्पूरहरिद्रानामानि ...	,,
कर्पूरहरिद्रागुणाः ...	२१[illegible]
वनहरिद्रानामानि ...	,,
वनहरिद्रागुणाः ...	२१[illegible]
दारुहरिद्रानामानि ...	,,
दारुहरिद्रागुणाः ...	२१[illegible]
दार्वीक्वाथोद्भवरसांजननामानि ...	,,
अस्याःकषायः ...	२१[illegible]
अस्यागुणाः ...	,,
अस्याःशोधनविधिः ...	,,
बाकुचीनामानि ...	२१[illegible]
बाकुचीगुणाः ...	२१[illegible]
बाकुचीभेदवाकुचीगुणाः ...	,,
वाकुचीस्वरूपम् ...	

विषयः		पृष्ठांकः
चक्रमर्दनामानि	...	२१७
चक्रमर्दगुणाः	...	"
अतिविषानामानि	...	२१९
अतिविषागुणाः	...	"
अतिविषाप्रकारभेदाः	...	२२०
लोध्रनामानि	...	"
लोध्रगुणाः	...	२२१
भल्लातकनामानि	...	२२२
भल्लातकगुणाः	...	"
भल्लातकफलगुणाः	...	२२३
पक्वभल्लातकगुणाः	...	"
अस्थफलत्वग्गुणाः	...	"
अस्थमज्जागुणाः	...	२२४
अस्थवृन्तगुणाः	...	"
भल्लातकशोधनविधिः	...	"
नदीभल्लातकनामानि	...	"
नदीभल्लातकगुणाः	...	२२५
विजयानामानि	...	"
गञ्जानामानि	...	"
भङ्गागुणाः	...	"
गञ्जागुणाः	...	२२६
भंगोत्पत्ति	...	"
खाखसफलनामानि	...	२२९
खाखसफलगुणाः	...	२३०
अहिफेननामानि	...	२३१
अहिफेनगुणाः	...	"
खसखसनामानि	...	२३२
खसखसगुणाः	...	२३३
यवक्षारनामानि	...	"
यवक्षारगुणाः	...	२३४
स्वर्जिकाक्षारनामानि	...	"
स्वर्जिकाक्षारगुणाः	...	२३५
टङ्कणक्षारनामानि	...	"
टङ्कणक्षारगुणाः	...	२३६
श्वेतटङ्कणगुणाः	...	२३७
टंकणशोधनविधिः	...	"
सैन्धवनामानि	...	२३८

विषयः		पृष्ठांकः
सैन्धवगुणाः	...	२३९
साम्भारीलवणनामानि	...	"
साम्भारीलवणगुणाः	...	२४०
समुद्रलवणनामानि	...	"
समुद्रलवणगुणाः	...	"
विड्लवणनामानि	...	२४१
विड्लवणगुणाः	...	२४२
सौवर्चललवणनामानि	...	"
सौवर्चललवणगुणाः	...	२४३
कांचलवणनामानि	...	"
कांचलवणगुणाः	...	२४४
औद्भिदनामानि	...	"
औद्भिदगुणाः	...	"
औषरलवणनामानि	...	"
औषरलवणगुणाः	...	२४५
रोमकलवणगुणाः	...	"
द्रौणीलवणनामानि	...	"
द्रौणीलवणगुणाः	...	"
नरसारनामानि	...	"
नरसारगुणाः	...	२४६
अस्यप्रस्तुतकरणम्	...	"
अस्यशोधनविधिः	...	२४७
सूर्यक्षारनामानि	...	"
सूर्यक्षारगुणाः	...	"
सर्वक्षारगुणाः	...	२४८
लवणक्षारगुणाः	...	"
चणकाम्लगुणाः	...	"
चुक्रगुणाः	...	"

गुडूच्यादिवर्गः।

विषयः		पृष्ठांकः
गुडूच्या उत्पत्तिः	...	२४९
गुडूचीनामानि	...	२५०
कन्दगुडूचीनामानि	...	२५१
गुडूचीगुणाः	...	"
गुडूचीपत्रशाकगुणाः	...	२५२
गुडूचीसत्त्वगुणाः	...	"
कन्दगुडूचीगुणाः	...	२५३

विषयः	पृष्ठांकः
गिलोयकेसत्वबनानेकीविधि...	२५३
नागवल्लीनामानि ...	,,
ताम्बूलगुणाः ...	२५४
श्रीवाटीपर्णगुणाः ...	२५५
अम्लवाटीपर्णगुणाः ...	,,
सातसीपर्णगुणाः ...	,,
जीर्णपर्णगुणाः ...	,,
मालवोद्भवांगरापर्णगुणाः ...	,,
आंध्रदेशोद्भवपोटकुलीपर्णगुणाः	२५६
हैंसणीयापर्णगुणाः ...	,,
नवीनप्राचीनपर्णगुणाः ...	,,
कृष्णशुभ्रपर्णगुणाः ...	,,
पर्णस्यशिरादिगुणाः ...	२५७
पर्णस्यशिरादिफलगुणाः ...	,,
पर्णरहितपूगगुणाः ...	,,
पर्णभक्षणनिषेधः ...	२५८
बिल्वनामानि ...	२५९
बिल्वगुणाः ...	,,
अन्येचपत्रगुणाः ...	१६१
बिल्वपुष्पगुणाः ...	,,
बिल्वमज्जाभवतैलगुणाः ...	,,
बिल्वपेषिकागुणाः ...	,,
काञ्जिकंस्थितबिल्वगुणाः ...	,,
पक्वबिल्वस्यदोषोक्तिः ...	,,
गम्भारीनामानि ...	२६२
गम्भारीगुणाः ...	२६३
गम्भारीफलगुणाः ...	,,
अपिचगम्भारीगुणाः ...	,,
गम्भारीपुष्पगुणाः ...	,,
गम्भारीमूलगुणाः ...	२६४
पाटलानामानि ...	२६५
श्वेतपाटलाकाष्ठपाटलानामानि	,,
पाटलागुणाः ...	२६६
श्वेतपाटलागुणाः ...	२६७
भूमिपाटलागुणाः ...	,,
क्षुद्रपाटलागुणाः ...	,,
वल्लीपाटलागुणाः ...	,,

विषयः	पृष्ठांकः
अग्निमन्थनामानि ...	२६८
क्षुद्राग्निमन्थनामानि ...	,,
अग्निमन्थगुणाः ...	२६९
क्षुद्राग्निमन्थगुणाः ...	,,
तेजोमन्थगुणाः ...	२७०
श्योनाकनामानि ...	,,
श्योनाकभेदनामानि ...	,,
श्योनाकगुणाः ...	२७१
अस्यकोमलफलगुणाः ...	,,
श्योनाकतरुणफलगुणाः ...	२७२
द्विविधश्योनाकगुणाः ...	,,
शालिपर्णीनामानि ...	,,
शालिपर्णीगुणाः ...	२७३
पृश्निपर्णीनामानि ...	२७४
पृश्निपर्णीगुणाः ...	२७५
शालपर्णीपृश्निपर्ण्योर्गुणाः ...	,,
बृहतीनामानि ...	,,
बृहतीगुणाः ...	२७६
बृहतीफलगुणाः ...	२७७
क्षुद्रबृहतिकागुणाः ...	,,
श्वेतबृहतीगुणाः ...	,,
बृहतीभेदगुणाः ...	,,
कण्टकारीनामानि ...	,,
कण्टकारीगुणाः ...	२७८
कण्टकारीफलगुणाः ...	२७९
श्वेतकण्टकारीगुणाः ...	२८०
गोक्षुरनामानि ...	,,
क्षुद्रगोक्षुरनामानि ...	,,
द्विविधगोक्षुरगुणाः ...	२८१
गोक्षुरशाकगुणाः ...	२८२
गोक्षुरबीजगुणाः ...	,,
गोक्षुरक्षारगुणाः ...	,,
पंचमूलगुणाः ...	२८३
बृहत्पंचमूलगुणाः ...	,,
दशमूलगुणाः ...	,,
जीवन्तीनामानि ...	,,
जीवंतीगुणाः ...	२८४

विषयः		पृष्ठांकः
बृहज्जीवन्तीनामानि	...	२८५
बृहज्जीवन्तीगुणाः	...	,,
स्वर्णजीवन्तीनामानि	...	,,
स्वर्णजीवन्तीगुणाः	...	२८६
तिक्तजीवन्तीनामानि	...	,,
तिक्तजीवन्तीगुणाः	...	,,
विषमुष्टिगुणाः	...	२८७
मुद्गपर्णीनामानि	...	,,
मुद्गपर्णीगुणाः	...	,,
माषपर्णीनामानि	...	२८८
माषपर्णीगुणाः	...	२८९
एरण्डनामानि	...	२९०
रक्तैरण्डनामानि	...	,,
स्थूलैरण्डनामानि	...	२९१
द्विविधैरण्डगुणाः	...	,,
एरण्डपत्रगुणाः	...	,,
एरण्डफलगुणाः	...	२९२
एरण्डमज्जागुणाः	...	,,
एरण्डमूलगुणाः	...	,,
एरण्डपुष्पगुणाः	...	,,
श्वेतैरण्डगुणाः	...	,,
रक्तैरण्डगुणाः	...	२९३
एरण्डतैलगुणाः	...	२९४
अर्कनामानि	...	२९५
श्वेतार्कनामानि	...	२९६
अर्कगुणाः	...	,,
अर्कक्षीरगुणाः	...	२९७
अर्कमूलस्यत्वग्गुणाः	...	,,
द्विविधार्कगुणाः	...	,,
स्नुहीनामानि	...	२९८
स्नुहीगुणाः	...	२९९
स्नुहीदुग्धगुणाः	...	३००
स्नुहीपत्रगुणाः	...	,,
सातलानामानि	...	३०१
सातलागुणाः	...	३०२
अस्थिसंहारीनामानि	...	३०३

विषयः		पृष्ठांकः
अस्थिसंहारीगुणाः	...	३०३
कलिकारीनामानि	...	३०५
कलिकारीगुणाः	...	३०६
करवीरनामानि	...	३०७
श्वेतादिकरवीरगुणाः	...	३०८
रक्तकरवीरनामानि	...	,,
धत्तूरनामानि	...	३०९
धत्तूरगुणाः	...	३१०
कृष्णधत्तूरनामानि	...	३११
राजधत्तूरनामानि	...	,,
वासकनामानि	...	३१३
वासकगुणाः	...	३१४
पर्पटनामानि	...	,,
पर्पटगुणाः	...	३१५
निम्बनामानि	...	३१६
निम्बगुणाः	...	३१७
निम्बकोमलपल्लवगुणाः	...	३१८
निम्बसामान्यपत्रगुणाः	...	,,
निम्बजीर्णपत्रगुणाः	...	,,
निम्बपुष्पगुणाः	...	,,
निम्बसूक्ष्मशाखादिगुणाः	...	,,
निम्बपक्वफलगुणाः	...	३१९
निम्बबीजस्यमज्जागुणाः	...	,,
निम्बतैलगुणाः	...	,,
निम्बपंचांगगुणाः	...	,,
महानिम्बनामानि	...	३२०
महानिम्बगुणाः	...	,,
कैडर्यनामानि	...	३२१
कैडर्यगुणाः	...	,,
पारिभद्रनामानि	...	३२२
पारिभद्रगुणाः	...	,,
काञ्चनारनामानि	...	,,
कोविदारनामानि	...	३२३
काञ्चनारगुणाः	...	३२४
श्वेतकाञ्चनारगुणाः	...	,,
कोविदारगुणाः	...	३२५

विषयः		पृष्ठांकः
पीतकाञ्चनारगुणाः	...	३२५
काञ्चनीगुणाः	...	३२५
शोभांजननामानि	...	३२६
श्वेतशिग्रुना०	...	३२६
रक्तशिग्रुना०	...	३२६
शोभांजनगुणाः	...	३२६
श्वेतशिग्रुगुणाः	...	३२७
रक्तशिग्रुगुणाः	...	३२७
शिग्रुबीजगुणाः	...	३२८
शिग्रुशाकगुणाः	...	"
शिग्रुपुष्पगुणाः	...	"
शिग्रुफलगुणाः	...	"
अपराजितानामानि	...	३२९
नीलापराजितना०	...	"
अपराजितागुणाः	...	३३०
कृष्णगोकर्णिकागुणाः	...	"
सिन्दुवारनामानि	...	३३१
नीलसिन्दुवारना०	...	"
सिन्दुवारगुणाः	...	३३२
कर्त्तरीनिर्गुण्डीगुणाः	...	३३३
अरण्यनिर्गुण्डीगुणाः	...	"
कुटजनामानि	...	३३४
कुटजगुणाः	...	३३५
करञ्जनामानि	...	"
करञ्जगुणाः	...	३३७
करञ्जतैलगुणाः	...	३३८
महाकरञ्जगुणाः	...	"
घृतकरञ्जगुणाः	...	"
गुच्छकरञ्जगुणाः	...	"
पूतिकरञ्जगुणाः	...	३३९
पूतिकरञ्जपत्रगुणाः	...	"
कण्टकरञ्जनामानि	...	"
कण्टकरञ्जगुणाः	...	३४०
गुंजानामानि	...	"
श्वेतगुंजाना०	...	३४१
गुंजागुणाः	...	"
द्विविधगुंजागुणाः	...	३४२

विषयः		पृष्ठांकः
कपिकच्छुनामानि	...	३४
कपिकच्छुगुणाः	...	३४
कपिकच्छुबीजगुणाः	...	"
लघुकपिकच्छुगुणाः	...	"
मांसरोहिणीनामानि	...	
मांसरोहिणीगुणाः	...	
रोहिणीगुणाः	...	
द्विविधरोहिणीगुणाः	...	
चिल्हकगुणाः	...	
टंकारीगुणाः	...	
वेतसनामानि	...	
जलवेतसनामानि	...	
वेतसगुणाः	...	
जलवेतसगुणाः	...	
द्विविधवेतसगुणाः	...	
बृहद्वेत्रगुणाः	...	
बृहज्जलवेत्रगुणाः	...	
हिज्जलनामगुणाश्च	...	
अंकोटनामानि	...	
अङ्कोटगुणाः	...	
बलानामानि	...	
बलागुणाः	...	
बलाबीजगुणाः	...	
महाबलानामानि	...	
महाबलागुणाः	...	
अतिबलानामानि	...	
अतिबलागुणाः	...	
त्रिविधबलागुणाः	...	
नागबलानामानि	...	
नागबलागुणाः	...	
नागबलाफलगुणाः	...	
बृहन्नागबलागुणाः	...	
चतुर्विधबलागुणाः	...	
लक्ष्मणानामानि	...	
लक्ष्मणागुणाः	...	
स्वर्णवल्लीनामगुणाश्च	...	
कार्पासीनामानि	...	

विषयः	पृष्ठांकः
वनकार्पासीना० ...	३५९
कालाञ्जनीना० ...	"
कार्पासीगुणाः ...	३६०
वनकार्पासीगुणाः ...	"
कालांजनीगुणाः ...	"
वंशनामानि ...	३६१
वंशगुणाः ...	३६२
वंशकरीरगुणाः ...	"
वंशयवगुणाः ...	"
द्विविधवंशगुणाः ...	३६३
नलनामानि ...	"
देवनलनामानि ...	"
नलगुणाः ...	३६४
देवनलगुणाः ...	३६५
भद्रमुञ्जमुञ्जनामानि ...	"
द्विविधमुञ्जगुणाः ...	"
काशनामानि ...	३६६
काशगुणाः ...	३६७
गुन्द्रनामानि ...	"
गुन्द्रगुणाः ...	"
एरकानामानि ...	३६८
एरकागुणाः ...	"
कुशदर्भनामानि ...	"
द्विविधदर्भगुणाः ...	३६९
कतृणनामानि ...	"
कतृणगुणाः ...	३७०
दीर्घरोहिषनामानि ...	३७१
दीर्घरोहिषगुणाः ...	"
भूस्तृणनामानि ...	"
भूस्तृणगुणाः ...	"
सुगन्धभूस्तृणनामानि ...	३७२
सुगन्धभूस्तृणगुणाः ...	"
बल्वजातृणनामानि ...	३७३
बल्वजतृणगुणाः ...	"
ऊषणतृणनामानि ...	"
ऊषणतृणगुणाः ...	"
इक्षुदर्भानामानि ...	"
इक्षुदर्भागुणाः ...	३७३
गोमूत्रिकातृणनामानि ...	"
गोमूत्रिकातृणगुणाः ...	"
शिल्पिकातृणनामानि ...	३७४
शिल्पिकातृणगुणाः ...	"
निःश्रेणिकानामानि ...	"
निःश्रेणिकागुणाः ...	"
जरडीतृणनामानि ...	"
जरडीतृणगुणाः ...	"
मञ्जरतृणनामानि ...	"
मञ्जरतृणगुणाः ...	"
तृणाख्यनामानि ...	३७५
तृणाख्यगुणाः ...	"
वंशपत्रीतृणनामानि ...	"
वंशपत्रीतृणगुणाः ...	"
मन्थानकतृणनामानि ...	"
मन्थानकतृणगुणाः ...	"
पल्लिवाहतृणनामगुणाश्च ...	"
लवणतृणनामानि ...	"
लवणतृणगुणाः ...	३७६
पण्यन्धातृणनामानि ...	"
पण्यन्धातृणगुणाः ...	"
गुण्डतृणनामानि ...	"
वृत्तगुण्डनामानि ...	"
वृत्तगुण्डगुणाः ...	"
चण्डिकातृणनामानि ...	३७७
चण्डिकातृणगुणाः ...	"
गुण्डासिनीतृणनामानि ...	"
गुण्डासिनीतृणगुणाः ...	"
शूलीतृणनामानि ...	"
शूलीतृणगुणाः ...	"
नीलदूर्वानामानि ...	३७८
श्वेतदूर्वानामानि ...	"
गण्डदूर्वानामानि ...	"
सामान्यदूर्वागुणाः ...	३७९
नीलदूर्वागुणाः ...	"

विषयः		पृष्ठांकः
श्वेतदूर्वागुणाः	...	३८०
गण्डदूर्वागुणाः	...	,,
विदारीनामानि	...	३८१
क्षीरविदारीनामानि	...	,,
विदारीकन्दगुणाः	...	३८२
क्षीरविदारीगुणाः	...	३८३
मुसलीनामानि	...	३८४
मुसलीगुणाः	...	,,
शतावरीमहाशतावरीनामानि	...	३८५
शतावरीगुणाः	...	३८६
महाशतावरीगुणाः	...	३८७
द्विविधशतावरीगुणाः	...	३८८
शतावर्यङ्कुरगुणाः	...	,,
अश्वगन्धानामानि	...	,,
अश्वगन्धागुणाः	...	३८९
पाठानामानि	...	३९०
पाठागुणाः	...	३९१
लघुपाठागुणाः	...	,,
त्रिवृन्नामानि	...	३९२
कृष्णत्रिवृन्नामानि	...	३९३
श्वेतत्रिवृन्नामानि	...	,,
रक्तत्रिवृन्नामानि	...	,,
सामान्यत्रिवृद्गुणाः	...	,,
श्यामत्रिवृद्गुणाः	...	३९४
श्वेतत्रिवृद्गुणाः	...	,,
रक्तत्रिवृद्गुणाः	...	,,
दन्तीनामानि	...	३९५
दन्तीगुणाः	...	३९६
बृहद्दन्तीनामानि	...	३९७
बृहद्दन्तीगुणाः	...	,,
बृहद्दन्तीबीजगुणाः	...	३९८
भद्रदन्तीनामानि	...	,,
भद्रदन्तीगुणाः	...	,,
जयपालनामानि	...	,,
जयपालगुणाः	...	३९९
जयपालबीजशोधनविधिः	...	,,

विषयः		पृष्ठांकः
जयपालबीजतैलगुणाः	...	
इन्द्रवारुणीनामानि	...	
महेन्द्रवारुणीनामानि	...	
इन्द्रावारुणीगुणाः	...	
महेन्द्रवारुणीगुणाः	...	
स्वर्णपत्रीनामानि	...	
स्वर्णपत्रीगुणाः	...	
कृष्णबीजनामानि	...	
कृष्णबीजगुणाः	...	
नीलिकानामानि	...	
नीलिकागुणाः	...	
महानीलीनामानि	...	
महानीलीगुणाः	...	
शरपुंखानामानि	...	
श्वेतशरपुंखनामानि	...	
कण्ठपुंखनामानि	...	
शरपुंखागुणाः	...	
कण्ठपुंखागुणाः	...	
दुरालभानामानि	...	
दुरालभागुणाः	...	
यवासनामानि	...	
यवासगुणाः	...	
मुण्डीनामानि	...	
महामुण्डीनामानि	...	
मुण्डीगुणाः	...	
महाश्रवणिकागुणाः	...	
अपामार्गनामानि	...	
अपामार्गगुणाः	...	
रक्तापामार्गनामानि	...	
रक्तापामार्गगुणाः	...	
द्विविधापामार्गगुणाः	...	
कोकिलाक्षनामानि	...	
कोकिलाक्षगुणाः	...	
कोकिलाक्षपत्रगुणाः	...	
कोकिलाक्षबीजगुणाः	...	
घृतकुमारीनामानि	...	
घृतकुमारीगुणाः	...	

विषयः		पृष्ठांकः
अस्यदण्डादिगुणाः	...	४१९
एलीयकनामानि	...	४२०
एलीयकगुणाः	...	,,
क्षुद्रकेतकीनामानि	...	,,
क्षुद्रकेतकीगुणाः	...	४२१
पाण्डुफलीनामानि	...	,,
पाण्डुफलीगुणाः	...	,,
पनसीनामानि	...	४२२
पनसीगुणाः	...	,,
गंगाटीनामानि	...	,,
गंगाटीगुणाः	...	,,
श्वेतपुनर्नवानामानि	...	,,
रक्तपुनर्नवाना०	...	४२३
नीलपुनर्नवाना०	...	,,
श्वेतपुनर्नवागुणाः	...	४२४
रक्तपुनर्नवागुणाः	...	४२६
नीलपुनर्नवागुणाः	...	,,
पुनर्नवापत्रशाकगुणाः	...	,,
प्रसारणीनामानि	...	४२७
प्रसारणीगुणाः	...	,,
शारिवानामानि	...	४२९
कृष्णशारिवाना०	...	,,
श्वेतशारिवागुणाः	...	४३०
कृष्णशारिवागुणाः	...	
द्विविधशारिवागुणाः	...	,,
केशराज, भृङ्गराजनामानि	...	,,
पीतभृङ्गराजना०	...	४३१
नीलभृङ्गराजना०	...	,,
भृंगराजगुणाः	...	,,
द्रोणपुष्पीनामानि	...	४३२
द्रोणनामानि	...	४३३
द्रोणपुष्पीगुणाः	...	,,
क्षुद्रद्रोणपुष्पीगुणाः	...	४३४
महाश्वेतागुणाः	...	४३५
द्रोणगुणाः	...	,,
द्रोणबीजगुणाः	...	,,
त्रायमाणनामानि	...	,,
त्रायमाणगुणाः	...	४३६
यवतिक्तानामानि	...	,,
यवतिक्तागुणाः	...	४३७
लिंगिनीनामानि	...	४३८
लिंगिनीगुणाः	...	,,
मूर्वानामानि	...	४३९
मूर्वागुणाः	...	,,
काकमाचीनामानि	...	४४०
काकमाचीगुणाः	...	४४१
काकजंघानामानि	...	४४२
काकजंघागुणाः	...	४४३
काकनासानामानि	...	,,
काकनासागुणाः	...	४४४
नागपुष्पीनामानि	...	,,
नागपुष्पीगुणाः	...	४४५
मेषशृङ्गीनामानि	...	,,
मेषशृङ्गीगुणाः	...	,,
हंसपादीनामानि	...	४४६
हंसपादीगुणाः	...	४४७
सोमलतानामानि	...	,,
सोमलतागुणाः	...	,,
आकाशवल्लीनामानि	...	४४८
आकाशवल्लीगुणाः	...	४४९
पातालगरुडीनामानि	...	,,
पातालगरुडीगुणाः	...	४५०
वंदानामानि	...	,,
वंदागुणाः	...	४५१
वटपत्रीनामानि	...	४५२
वटपत्रीगुणाः	...	,,
मत्स्याक्षीनामानि	...	,,
मत्स्याक्षीगुणाः	...	,,
सर्पाक्षीनामानि	...	४५३
सर्पाक्षीगुणाः	...	,,
शंखपुष्पीनामानि	...	,,
शंखपुष्पीगुणाः	...	४५४
श्वेतशंखपुष्पीगुणाः	...	४५५
अर्कपुष्पीनामानि	...	,,

विषयः		पृष्ठांकः
अर्कपुष्पीगुणाः	...	४५६
लज्जालुनामानि	...	,,
लज्जालुगुणाः	...	४५७
विपरीतलज्जालुनामानि	...	,,
विपरीतलज्जालुगुणाः	...	,,
अलम्बुषानामानि	...	४५८
अलम्बुषागुणाः	...	,,
दुग्धिकानामानि	...	,,
दुग्धिफेनीना०	...	,,
नागार्जुनीना०	...	,,
दुग्धिकागुणाः	...	४५९
दुग्धफेनीगुणाः	...	,,
नागार्जुनीगुणाः	...	,,
भूम्यामलकीनामा	...	४६०
भूम्यामलकीगुणाः	...	४६१
ब्राह्मीनामानि	...	,,
मण्डूकपर्णीना०	...	४६२
ब्राह्मीगुणाः	...	,,
मण्डूकपर्णीगुणाः	...	४६४
मण्डूकपर्ण्यकगुणाः	...	,,
द्रोणपुष्पीनामानि	...	,,
द्रोणपुष्पीगुणाः	...	,,
द्रोणपुष्पीपत्रगुणाः	...	४६५
आदित्यभक्तानामानि	...	,,
आदित्यभक्तागुणाः	...	४६६
ब्रह्मसुवर्चलागुणाः	...	,,
आदित्यपत्रगुणाः	...	४६७
वन्ध्याकर्कोटकीनामानि	...	,,
वन्ध्याकर्कोटकीगुणाः	...	४६८
वन्ध्याकर्कोटकीकन्दगुणाः	...	४६९
मार्कण्डिकानामानि	...	,,
मार्कण्डिकागुणाः	...	,,
देवदालीनामानि	...	४७०
देवदालीगुणाः	...	,,
जलपिप्पलीनामानि	...	४७१
जलपिप्पलीगुणाः	...	४७२

विषयः		पृष्ठांकः
गोजिह्वानामानि	...	
गोजिह्वागुणाः	...	
नागदमनीनामानि	...	
नागदमनीगुणाः	...	
छिक्कनीनामानि	...	
छिक्कनीगुणाः	...	
कुकुन्दरनामानि	...	
कुकुन्दरगुणाः	...	
सुदर्शननामानि	...	
सुदर्शनगुणाः	...	
आखुकर्णीनामानि	...	
आखुकर्णीगुणाः	...	
बृहदाखुकर्णीगुणाः	...	
मयूरशिखानामानि	...	
मयूरशिखागुणाः	...	
पुष्पवर्गः ।		४८१
पुष्पनामानि	...	
पुष्परसाना०	...	
पुष्पधारणगुणाः	...	
पुष्पद्रवगुणाः	...	
जातीनामानि	...	
जातीगुणाः	...	
स्वर्णजातीगुणाः	...	
उपजातीनामानि	...	
उपजातीगुणाः	...	
वार्षिकीमल्लिकामुद्गरनामानि	...	
वार्षिकीगुणाः	...	
मल्लिकागुणाः	...	
मुद्गरगुणाः	...	
नेपालीवनमल्लिकानामानि	...	
नेपालीवनमल्लिकागुणाः	...	
यूथिकानामानि	...	
द्विविधयूथिकागुणाः	...	
माधवीनामानि	...	
माधवीगुणाः	...	
मालतीनामानि	...	

विषयः	पृष्ठांकः	विषयः	पृष्ठांकः
मालतीगुणाः ...	४९०	किंकिरातगुणाः ...	५०७
तरुणीशतपत्रीकुब्जकनामानि	”	केतकीनामानि ...	५०८
शतपत्रीगुणाः ...	४९२	सुवर्णकेतकीनामानि ...	”
तरुणीगुणाः ...	”	केतकीसुवर्णकेतकीगुणाः ...	५०९
रक्तकुब्जकगुणाः ...	”	अशोकनामानि ...	५१०
कुब्जकगुणाः ...	४९३	अशोकगुणाः ...	”
चम्पकनामानि ...	”	पुन्नागनामानि ...	५११
चम्पककलिकानामानि ...	४९४	पुन्नागगुणाः ...	५१२
चम्पकगुणाः ...	”	सैरेयकनामानि ...	५१३
चम्पकपुष्पगुणाः ...	”	कुरण्टनामानि ...	”
चम्पकभेदाः ...		नीलझिण्टी (आर्त्तगल)नामानि	”
श्वेतादिचम्पकगुणाः ...	४९६	कुरवकनामानि ...	”
बकुलनामानि ...	४९७	सैरेयकगुणाः ...	५१४
बकुलगुणाः ...	”	कुरण्टकगुणाः ...	५१५
बकुलपुष्पगुणाः ...	”	आर्तगलगुणाः ...	”
बकुलफलगुणाः ...	४९८	नीलझिण्टीगुणाः ...	”
वृद्धबकुलनामानि ...	”	कुरवकगुणाः ...	”
वृद्धबकुलगुणाः ...	४९९	बन्धूकनामानि ...	५१६
मुचुकुन्दनामानि ...	५००	बन्धूकगुणाः ...	”
मुचुकुन्दगुणाः ...	”	सिद्धेश्वरनामानि ...	५१७
कुन्दनामानि ...	५०१	सिद्धेश्वरगुणाः ...	”
कुन्दगुणाः ...	”	शंखोदरीनामानि	”
तिलकनामानि ...	५०२	शंखोदरीगुणाः ...	५१८
तिलकगुणाः ...	”	झण्डूकनामानि ...	”
कदम्बनामानि ...	५०३	झण्डूकगुणाः ...	”
धाराकदम्बना० ...	”	सिन्दूरपुष्पीनामानि ...	”
भूमिकदम्बना० ...	”	सिन्दूरपुष्पीगुणाः ...	”
कदम्बगुणाः ...	५०४	प्राजक्तनामानि ...	५२०
राजकदम्बगुणाः ...	”	हारशृङ्गारगुणाः ...	”
धाराकदम्बगुणाः ...	५०५	जपापुष्पनामानि	”
धूलिकदम्बगुणाः ...	”	जपापुष्पगुणाः ...	५२१
कदम्बिकागुणाः ...	”	घृतभर्जित जपापुष्पगुणाः ...	”
भूमिकदम्बगुणाः ...	”	अगस्त्यनामानि ...	५२२
द्विविधकदम्बगुणाः ...	५०६	अगस्त्यगुणाः ...	”
कर्णिकारनामानि ...	”	अगस्त्यपुष्पगुणाः ...	५२३
कर्णिकारगुणाः ...	”	अगस्त्यपत्रगुणाः ...	”
किंकिरातनामानि ...	”	अगस्त्यशिम्बीगुणाः ...	”

विषयः		पृष्ठांकः
तुलसीनामानि	...	५२४
कृष्णतुलसीनामानि	...	,,
तुलसीगुणाः	...	,,
मरुबकनामानि	...	५२५
मरुवकगुणाः	...	५२६
दमनकनामानि	...	५२७
दमनकगुणाः	...	५२८
वनदमनकगुणाः	...	,,
अग्निदमनकगुणाः	...	,,
अर्जकनामानि	...	५२९
सितार्जकनामानि	...	,,
कृष्णार्जकनामानि	...	,,
बर्बरीनामानि	...	,,
वनबर्बरीनामानि	...	,,
अर्जकसितार्जक-कृष्णार्जकगुणाः		५३०
वनबर्बरिकागुणाः	...	५३१
अथ पंकजनामानि	...	,,
श्वेतकमलनामानि	...	५३२
रक्तकमलनामानि	...	,,
नीलकमलनामानि	...	,,
नीलोत्पलनामानि	...	,,
कमलगुणाः	...	५३३
श्वेतकमलगुणाः	...	५३४
रक्तकमलगुणाः	...	,,
नीलकमलगुणाः	...	,,
नीलोत्पलगुणाः	...	,,
पद्मिनीनामानि	...	,,
पद्मिनीगुणाः	...	५३५
पद्मसंवर्तिकादिनामानि	...	,,
संवर्तिकागुणाः	...	५३६
कर्णिकागुणाः	...	,,
पद्मकेशरनामानि	...	,,
पद्मकेशरगुणाः	...	,,
पद्मबीजनामानि	...	५३७
पद्मबीजगुणाः	...	,,
मकरन्दपद्ममधुगुणाः	...	५३८

विषयः		पृष्ठांकः
कमलिनीपत्रगुणाः	...	
पद्मनालनामानि	...	
मृणालगुणाः	...	
पद्मकन्दनामानि	...	
शालूकगुणाः	...	
कुमुदनामानि	...	
कुमुदगुणाः	...	
कुमुदबीजगुणाः	...	
उत्पलनामानि	...	
उत्पलगुणाः	...	
रक्तकुमुदनामानि	...	
उत्पलिनीनामानि	...	
उत्पलिनीगुणाः	...	
स्थलपद्मिनीनामानि	...	
स्थलपद्मिनीगुणाः	...	
फलवर्गः ।		
आम्रनामानि	...	
आम्रपुष्पगुणाः	...	
बालतरुणाम्रगुणाः	...	
आम्रपेषीगुणाः	...	
पक्वाम्रगुणाः	...	
वृक्षपक्वाम्रगुणाः	...	
कृत्रिमपक्वाम्रगुणाः	...	
आम्ररसगुणाः	...	
चोषिताम्रगुणाः	...	
शस्त्रच्छिन्नाम्रगुणाः	...	
आम्रावर्त्तः	...	
आम्रवर्त्तगुणाः	...	
आम्रखण्डगुणाः	...	
अतिशयाम्रभक्षणगुणाः	...	
मधुयुताम्रगुणाः	...	
घृतयुक्ताम्रगुणाः	...	
दुग्धयुक्ताम्रगुणाः	...	
आम्रास्थिगुणाः	...	
आम्रास्थितैलगुणाः	...	
आम्रत्वचादिगुणाः	...	

विषयः	पृष्ठांकः
...ान्तस्त्वग्गुणाः	५४९
...मूलगुणाः	"
...पल्लवगुणाः	"
...म्रनामानि	"
...ातकनामानि	५५०
...तकफलगुणाः	५५१
...म्रनामानि	५५२
...म्रगुणाः	"
...म्राऽपक्वफलगुणाः	५५३
...म्रपक्वफलगुणाः	"
...म्रमज्जागुणाः	"
...म्रतैलगुणाः	"
...मनामानि	५५४
...मगुणाः	५५५
...मपुष्पादिगुणाः	५५७
...ीनामानि	"
...ीसाधारणफलगुणाः	५५८
...लकदलीफलगुणाः	५५९
...सकदलीफलगुणाः	"
...कदलीफलगुणाः	"
...कदलीफलगुणाः	"
...न्यकदलीफलगुणाः	५६०
...पुष्पगुणाः	५६१
...ीमोचकगुणाः	"
...ीजलगुणाः	"
...ीकन्दगुणाः	५६२
...ीसारगुणाः	"
...यकदलीगुणाः	"
...कदलीगुणाः	५६३
...कदलीगुणाः	"
...कदलीगुणाः	"

विषयः	पृष्ठांकः
कृष्णकदलीफलगुणाः	५६४
नारिकेलनामानि	"
नारिकेलसाधारणगुणाः	४६५
कोमलनारिकेलगुणाः	५६६
पक्वनारिकेलगुणाः	"
शुष्कनारिकेलगुणाः	"
नारिकेलजलगुणाः	५६७
नारिकेलपुष्पगुणाः	५६७
नारिकेलपुष्पजलगुणाः	५६८
नारिकेलताडीगुणाः	"
नारिकेलफलतैलगुणाः	"
मधुनारिकेलगुणाः	"
ग्राम्यखर्जूरीनामानि	५६९
पिण्डखर्जूरिकानामानि	"
छोहारानामानि	"
त्रिविधखर्जूरीगुणाः	५७०
खर्जूरीताडीगुणाः	५७१
खर्जूरादिमस्तकगुणाः	"
पिण्डखर्जूरीगुणाः	"
सुलेमानिखर्जूरीनामानि	५७२
सुलेमानिखर्जूरीगुणाः	"
बदामनामानि	"
बदामगुणाः	५७३
बदामतैलगुणाः	"
सेवफलनामानि	५७४
सेवफलगुणाः	"
अमृतफलगुणाः	"
पेरुकफलनामानि	५७५
पेरुकफलगुणाः	५७६
नागरंगनामानि	"
नागरंगफलगुणाः	५७७

विषयः		पृष्टांकः
बीजपूरनामानि	...	५७८
बीजपूरफलगुणाः	...	५७९
ऋतुपरत्वे अनुपानगुणाः	...	५८१
वनबीजपूरगुणाः	...	,,
मधुरमातुलुंगगुणाः	...	,,
निम्बूकनामानि	...	,,
जम्बीरनामानि	...	५८२
निम्बूरकगुणाः	...	५८३
जम्बीरगुणाः	...	५८४
लिम्पाकगुणाः	...	५८५
करुणगुणाः	...	,,
निम्बूकसाधारणगुणाः	...	,,
बृहज्जम्बीरगुणाः	...	,,
मधुकुक्कुटिकागुणाः	...	,,
मिष्टनिम्बूगुणाः	...	५८६
मधुकर्कटीगुणाः	...	,,
जम्बीरपत्रगुणाः	...	,,
तिन्तिडीनामानि	...	,,
तिन्तिडीफलगुणाः	...	५८७
आलूकनामानि	...	५८९
आलूकगुणाः	...	५९०
भव्यनामानि	...	५९१
भव्यगुणाः	...	,,
वृक्षाम्लनामानि	...	५९२
वृक्षाम्लगुणाः	...	,,
अम्लवेतसनामानि	...	५९३
अम्लवेतसफलगुणाः	...	,,
पनसनामानि	...	५९४
पनसफलगुणाः	...	५९५
लकुचनामानि	...	५९६
लकुचगुणाः	...	५९७
तिन्दुकनामानि	...	,,

विषयः		
तिन्दुकगुणाः	...	
काकतिन्दुकनामानि	...	
काकतिन्दुकगुणाः	...	
कारस्करनामानि	...	
कारस्करगुणाः	...	
मधूकनामानि	...	
मधूकगुणाः	...	
मधूकत्वग्गुणाः	...	
मधूकतैलगुणाः	...	
मधूकसारगुणाः	...	
जलमधूकगुणाः	...	
पीलुनामानि	...	
महापीलुनामानि	...	
पीलुगुणाः	...	
बृहत्पीलुगुणाः	...	
अखरोटनामानि	...	
अखरोटगुणाः	...	
गुवाकनामानि	...	
गुवाकगुणाः	...	
पक्वपूगफलगुणाः	...	
शुष्कफलगुणाः	...	
अपक्वपूगफलगुणाः	...	
पूगस्यबालमध्यादिभेदमाह	...	
तालनामानि	...	
श्रीतालनामानि	...	
हिन्तालनामानि	...	
हिन्तालफलगुणाः	...	
तालगुणाः	...	
अस्यामफलगुणाः	...	
अस्यपक्वफलगुणाः	...	
अस्यार्द्रफलबीजगुणाः	...	
अस्यफलमज्जागुणाः	...	

विषयः		पृष्ठांकः
तफलोद्भवजलगुणाः	...	"
तमण्डिकागुणाः	...	"
प्रलम्बगुणाः		६४४
तपंजरगुणाः	...	"
त्रूतवायुगुणाः	...	"
मूलगुणाः	...	"
तालगुणाः	...	"
तालगुणाः	...	६१५
त्थफलनामानि	...	"
त्थफलसाधारणगुणाः	...	६१६
क्वकपित्थफलगुणाः	...	"
कपित्थफलगुणाः	...	"
रंगनामानि	...	६१७
रंगगुणाः	...	६१८
लीफलनामानि	...	"
लीफलगुणाः	...	६१९
नीनामलकनामानि	...	"
वीनामलकगुणाः	...	६२०
मर्द्दकनामानि	...	"
मर्द्दकगुणाः	...	६२१
नीनामानि	...	६२३
फलनामानि	...	"
लक्षणानि गुणाश्च	...	६२३
तकोलिगुणाः	...	६२५
बदरगुणाः	...	"
दरीगुणाः	...	"
फलमज्जागुणाः	...	"
स्य पत्रगुणाः	...	६२६
ङ्कतनामानि	...	"
ङ्कतगुणाः	...	६२७
लनामानि	...	६२८
लगुणाः	...	"
लमूलादिगुणाः	...	६२९

विषयः		पृष्ठांकः
राजादननामानि	...	"
राजादनगुणाः	...	६३०
आतृप्यनामानि	...	६३१
आतृप्यगुणाः	...	"
लवनीफलनामानि	...	६३२
लवनीफलगुणाः	...	"
अनंनासनामानि	...	६३३
अनंनासगुणाः	...	"
निकोचकनामानि	...	६३४
निकोचकगुणाः	...	"
अंजिरनामानि	...	"
अंजिरगुणाः	...	"
परूषकनामानि	...	६३५
परूषकफलगुणाः	...	३६६
अस्य त्वग्गुणाः	...	६३७
तूतनामानि	...	"
तूतगुणाः	...	६३८
पारेवतनामानि	...	६३९
पारेवतगुणाः	...	"
महापारेवतगुणाः	...	"
श्लेष्मातकनामानि	...	६४०
भूकर्बुदारनामानि	...	"
श्लेष्मातकगुणाः	...	६४१
भूकर्बुदारगुणाः	...	"
कतकनामानि	...	६४२
कतकगुणाः	...	"
द्राक्षानामानि	...	६४३
कपिलद्राक्षाना०	...	"
काकलीद्राक्षाना०	...	"
काकलीद्राक्षागुणाः	...	६४४
गोस्तनीद्राक्षानामानि	...	६४६
लघुद्राक्षागुणाः	...	"
मण्डपीनामानि	...	६४७

विषयः		पृष्ठांकः	विषयः	
मण्डपीगुणाः	...	”	शिंशपानामानि	...
काजूनकनामानि	....	”	श्वेतशिंशपानामानि	...
काजूतकगुणाः	...	६४८	कपिलशिंशपाना०	...
जम्बूनामानि	...	”	शिंशपागुणाः	...
महाजम्बूना०	...	”	श्वेतशिंशपागुणाः	...
क्षुद्रजम्बूना०	...	६४९	कपिलशिंशपागुणाः	...
काकजम्बूना०	...	”	त्रिविधशिंशपागुणाः	...
भूमिजम्बूना०	...	”	सालनामानि	...
जम्बूगुणाः	...	”	सालगुणाः	...
राजजम्बूगुणाः	...	६५०	शालभेदः	...
जलजम्बूगुणाः	...	”	शालगुणाः	...
क्षुद्रजम्बूगुणाः	...	६५१	शल्लकीनामानि	...
जम्बूफलमज्जागुणाः	...	”	शल्लकीगुणाः	...
वटादिवर्गः ।			अर्जुननामानि	...
			अर्जुनगुणाः	...
वटनामानि	...	”	असननामानि	...
वटगुणाः	...	६५२	असनगुणाः	...
अश्वत्थनामानि	...	६५३	असनपुष्पगुणाः	...
अश्वत्थगुणाः	...	६५४	खदिरनामानि	...
पारिशपिप्पलनामानि	...	”	श्वेतखदिरना०	...
पारिशपिप्पलगुणाः	...	६५५	खदिरगुणाः	...
नन्दीवृक्षनामानि	...	६५६	श्वेतखदिरगुणाः	...
प्लक्षना०	...	”	खदिरनिर्यासादिगुणाः	...
प्लक्षगुणा	...	६५७	खदिरसारनामानि	...
उदुम्बरनामानि	...	”	खदिरसारगुणाः	...
उदुम्बरगुणाः	...	६५८	विटखदिरनामानि	...
मधुदुम्बरनामानि	...	६६९	विट्खदिरगुणाः	...
मधुदुम्बरगुणाः	...	”	अस्य निर्यासगुणाः	...
काकोदुम्बरिकानामानि	...	”	लघुखदिरगुणाः	...
काकोदुम्बरिकागुणाः	...	६६०	वल्लीखदिरगुणाः	...
शिरीषनामानि	....	६६१	रोहितकनामानि	...
शिरीषगुणाः	...	६६२	श्वेतरोहितकनामानि	...

विषयः	पृष्ठांकः	विषयः	पृष्ठांकः
रोहितकगुणाः ...	,,	धवनामानि ...	,,
रनामानि: ...	६७६	धवगुणाः ...	,,
रगुणाः ...	६७७	धन्वंगनामानि ...	६९२
रफलगुणाः ...	६७८	धन्वंगगुणाः ...	,,
रनिर्यासगुणाः ...	,,	धन्वननामानि ...	,,
रिष्टकगुणाः ...	,,	धन्वगुणाः ...	६९३
रिष्टकनामानि ...	६७९	करीरनामानि ...	६९४
जीवनामानि ...	,,	करीरगुणाः ...	,,
जीवगुणाः ...	६८०	शाखोटनामानि ...	६९६
दीनामानि ...	,,	शाखोटगुणाः ...	,,
दीगुणाः ...	६८१	शाकनामानि ...	,,
दीफलमज्जागुणाः ...	६८२	शाकगुणाः ...	६९७
ङ्गिनीनामानि ...	,,	वरुणनामानि ...	६९८
ङ्गिनीगुणाः ...	,,	वरुणगुणाः ...	,,
मालनामानि ...	६८३	कटभीनामानि ...	७००
नालगुणाः ...	,,	श्वेतकटभीनामानि ...	,,
गीनामानि ...	,,	कटभीगुणाः ...	,,
गीगुणाः ...	६८४	मुष्ककनामानि ...	७०१
पत्रनामानि ...	,,	मुष्ककगुणाः ...	,,
पत्रगुणाः ...	६८५	अम्बुशिरीषिकानामानि ...	७०२
लाशनामानि ...	,,	अम्बुशिरीषिकागुणाः ...	७०३
लाशगुणाः ...	६८६	शमीनामानि ...	,,
लासनिर्यासगुणाः ...	६८८	शमीगुणाः ...	७०४
स्तिकर्णपलाशनामानि ...	६८९	सप्तपर्णनामानि ...	,,
स्तिकर्णपलाशगुणाः ...	,,	सप्तपर्णगुणाः ...	७०५
ल्मलीनामानि ...	,,	तिनिशनामानि ...	,,
चरसनामानि ...	,,	तिनिशगुणाः ...	७०६
ल्मलीगुणाः ...	६९०	हरिद्रुनामानि ...	,,
ल्मलीपुष्पशाकगुणाः ...	६९१	हरिद्रुगुणाः ...	७०७
चरसगुणाः ...	,,	रुद्राक्षनामानि ...	,,
शाल्मलीनामानि ...	,,	रुद्राक्षगुणाः ...	,,
शाल्मलीगुणाः ...	६९२	माडनामानि ...	७०८

विषयः		पृष्ठांकः
माडगुणाः	...	,,
साजडनामानि	...	,,
साजडगुणाः	...	७०९
ढोलसमुद्रिकागुणाः	...	,,

धातूपधातुवर्गः ।

विषयः		पृष्ठांकः
सुवर्णनामानि	...	७०९
सुवर्णगुणाः	...	७१०
सुवर्णपरीक्षा	...	,,
असम्यङ्मारितस्वर्णगुणाः	...	७११
अशुद्धस्वर्णस्यदोषाः		७११
स्वर्णस्योत्पत्तिः	...	७१२
रूप्यकनामानि	...	,,
रौप्यपरीक्षा	...	७१३
रौप्यगुणाः	...	,,
अशोधितरौप्यगुणाः	...	७१४
रौप्यस्योत्पत्तिः	...	,,
ताम्रनामानि	...	,,
उत्कृष्टताम्रस्य लक्षणम्	...	७१५
दूषितताम्रस्य लक्षणम्	...	,,
ताम्रगुणाः	...	,,
असम्यङ्मारितताम्रस्य दोषाः		७१६
ताम्रोत्पत्तिः	...	,,
रंगनामानि	...	,,
रंगगुणाः	...	७१७
अशोधितवंगदोषाः	...	,,
वङ्गस्य प्रकारभेदाः	...	७१८
श्रेष्ठरंगस्य लक्षणम्	...	,,
सीसकनामानि	...	,,
सीसकगुणाः	...	७१९
नागस्य प्रकारभेदाः	...	,,
अशोधितवंगनागदोषाः	...	७२०
नागोत्पत्तिः	...	,,

विषयः	
जसदनामानि	...
जसदगुणाः	...
कान्तलोहनामानि	...
कृष्णलोहनामानि	...
कान्तलोहगुणाः	...
कान्तलोहस्य लक्षणम्	...
सर्वविधशुद्धलोहस्य गुणाः	...
अशोधितलोहस्य दोषाः	...
लोहस्य स्वाभाविकदोषाः	...
मुण्डलोहगुणाः	...
लोहस्योत्पत्तिः	...
लोहसेविनः कार्याणि	...
मण्डूरनामानि	...
मण्डूरलक्षणगुणाः	...
सर्वविधमण्डूरप्रकारभेदाः	...
कांस्यनामानि	...
कांस्यगुणाः	...
पित्तलनामानि	...
पित्तलगुणाः	...
पारदनामानि	...
पारदगुणाः	...
पारदे पथ्यानि	...
पारददोषाः	...
अशोधितपारददोषाः	...
पारदस्योत्पत्तिजातिलक्षणानि	
पारदप्रशंसा	...
हिंगुलनामानि	...
हिंगुलगुणाः	...
हिंगुलभेदलक्षणम्	...
हिंगुलोत्पत्तिः	...
स्रोतोञ्जननामानि	...
सोवीरांजननामानि	...

विषयः	पृष्ठांकः	विषयः	पृष्ठांकः
ोऽञ्जनगुणाः ...	७३३	सिन्दूरगुणाः ...	,,
स्रोतोञ्जनस्य लक्षणम् ...	,,	सिन्दूरस्य स्वरूपम् ...	,,
ीरांजनगुणाः ...	,,	मनःशिलानामानि ...	७४७
ांजननामानि ...	,,	मनःशिलागुणाः ...	,,
ांजनगुणाः ...	७३४	अशोधितमनःशिलादोषाः ...	,,
कनामानि ...	,,	हरितालमनःशिलयोर्भेदः ...	,,
कगुणाः ...	७३५	हरितालनामानि ...	,,
नामानि ...	७३६	हरितालगुणाः ...	७४८
गुणाः ...	,,	अशुद्धहरितालदोषाः ...	,,
ोधितखर्परदोषाः ...	७३७	हरितालस्य प्रकारभेदाः ...	७४९
ंमाक्षिकनामानि ...	,,	हरितालभस्मानुपानम् ...	७५०
माक्षिकनामानि ...	,,	हरितालभक्षणप्रमाणम् ...	,,
ंमाक्षिकगुणाः ...	,,	हरितालप्रयोज्य० ...	,,
द्धमाक्षिकदोषाः ...	७३८	हरितालादीनामुत्पत्तिः ...	७५१
माक्षिकगुणाः ...	७३९	कासीसनामानि ...	,,
ारनामानि ...	,,	पुष्पककासीसनामानि ...	,,
ारगुणाः ...	,,	कासीसगुणाः ...	७५२
ारोत्पत्तिलक्षणम् ...	७४०	कासीसलक्षणम् ...	,,
कनामानि ...	,,	गैरिकनामानि ...	७५३
ताभ्रकगुणाः ...	७४१	सुवर्णगैरिकनामानि ...	,,
स्य जातिवर्णभेदाः ...	,,	पाषाणगैरिकनामानि ...	,,
विधाभ्रस्य नामलक्षणगुणाः	७४२	गैरिकगुणाः ...	,,
ोधिताभ्रदोषाः ...	७४३	सुवर्णगैरिकगुणाः ...	७५४
कोत्पत्तिः ...	,,	द्विविधगैरिकगुणाः ...	,,
पथ्यम् ...	,,	खटीनामानि ...	७५४
कनामानि ...	,,	खटीगुणाः ...	७५५
कगुणाः ...	७४४	कपर्दकनामानि ...	,,
द्धगंधकदोषाः ...	,,	कपर्दकगुणाः ...	,,
कस्य प्रकारभेदाः ...	७४५	कपर्दकभेदाः ...	७५६
गन्धकलक्षणम् ...	,,	शुक्तिनामानि ...	,,
कस्योत्पत्तिः ...	७४६	जलशुक्तिनामानि ...	७५७
दूरनामानि ...	,,	शुक्तिगुणाः ...	,,

विषयः		पृष्ठांकः
जलशुक्तिगुणाः	...	७५८
शंखनामानि	...	,,
शंखस्य प्रकारभेदाः	...	७५९
श्रेष्ठशंखलक्षणम्	...	७६०
कृमिशंखनामगुणाश्च	...	,,
क्षुद्रशंखनामानि	...	,,
क्षुद्रशंखगुणाः	...	,,
कंकुष्ठनामानि	...	,,
कंकुष्ठगुणाः	...	७६१
कंकुष्ठोत्पत्तिलक्षणम्	...	,,
शंखजीरकनामानि	...	७६२
शंखजीरकगुणाः	...	,,
स्फटीनामानि	...	,,
स्फटीगुणाः	...	७६३
चुम्बकनामानि गुणाश्च	...	,,
राजावर्तगुणाः	...	,,
सौराष्ट्रीनामानि	...	७६४
सौराष्ट्रीयगुणाः	...	,,
वालुकानामानि	...	,,
बालुकागुणाः	...	७६५
कर्दमनामानि	...	,,
कृष्णमृत्तिकानामानि	...	,,
पंकगुणाः	...	७६६
कृष्णमृद्गुणाः	...	,,
बोलनामानि	...	७६७
बोलगुणाः	...	,,
शिलाजतुनामानि	...	७६८
अस्योत्पत्तिलक्षणं गुणाश्च	...	,,
श्रेष्ठशिलाजतुलक्षणम्	...	७६९
अन्यच्च शिलाजतुगुणाः	...	७७०
अशुद्धशिलाजतुदोषाः	...	,,

विषयः	

रत्नोपरत्नवर्गः ।

अथ रत्नस्य निरुक्तिः	...
रत्नानां निरूपणम्	...
रत्नगुणाः	...
हीरकनामानि	...
हीरकगुणाः	...
हीरकभेदलक्षणगुणाः	...
हीरकगुणाः	...
अशुद्धहीरकदोषाः	...
माणिक्यनामानि	...
माणिक्यगुणाः	...
माणिक्यभेदवर्णाश्च	...
बहुमूल्यमाणिक्यगुणाः	...
अथ तोलः	...
अथमूल्यम्	...
रत्नपरीक्षा	...
माणिक्यगुणाः	...
मौक्तिकनामानि	...
मौक्तिकगुणाः	...
मौक्तिकोत्पत्तिः	...
गजमौक्तिकम्	...
बराहमौक्तिकम्	...
वेणुमौक्तिकम्	...
मत्स्यमौक्तिकम्	...
दर्दुरमौक्तिकम्	...
शंखमौक्तिकम्	...
सर्पजमौक्तिकम्	...
लक्षणम्	...
शुक्तिमौक्तिकम्	...
मौक्तिकपरीक्षा	...
प्रवालनामानि	...
प्रवालगुणाः	...

विषयः		पृष्ठांकः
प्रवालमंजरीगुणाः	...	७८५
प्रवालोत्पत्तिलक्षणम्	...	"
मरकतनामानि	...	७८६
मरकतगुणाः	...	"
मरकतमणिप	...	"
पुष्परागनामानि	...	७८७
पुष्परागगुणाः	...	"
पुष्परागलक्षणम्	...	७८८
नीलमणिनामानि	...	"
नीलगुणाः	...	७८९
नीलस्य वर्णभेदाः	...	"
गोमेदनामानि	...	"
गोमेदकगुणाः	...	७९०
गोमेदपरीक्षा	...	"
वैदूर्य्यनामानि	...	७९१
वैदूर्य्यगुणाः	...	७९२
उत्तमवैदूर्य्यलक्षणम्	...	"
वैक्रान्तनामानि	...	"
वैक्रान्तगुणाः	...	७९३
सूर्यकान्तनामानि	...	"
सूर्यकान्तगुणाः	...	"
चन्द्रकान्तनामानि	...	७९४
चन्द्रकान्तोद्भवजलगुणाः	...	"
चन्द्रकान्तस्य स्वरूपम्	...	"
स्फटिकनामानि	...	७९५
स्फटिकगुणाः	...	"
पेरोजनामानि	...	"
पेरोजगुणाः	...	७९६
काचनामानि	...	"
काचगुणाः	...	"
दुग्धपाषाणनामानि	...	"
दुग्धपाषाणगुणाः	...	७९७

विषयः		पृष्ठांकः
विषवर्गः		७९७
विषनामानि	...	"
वत्सनाभविषगुणाः	...	७९८
विषस्यप्रकारभेदाः	...	७९९
अथ वत्सनाभस्य स्वरूपम्	...	"
अथ हारिद्रस्वरूपम्	...	"
अथ सक्तुकस्य स्वरूपम्	...	८००
अथ प्रदीपनस्य स्वरूपम्	...	८००
अथ सौराष्ट्रीकस्वरूपम्	...	"
अथशृङ्गिकस्य स्वरूपम्	...	"
अथ कालकूटस्य स्वरूप	...	"
अथ हालाहलस्य स्वरूपम्	...	"
अथ ब्रह्मपुत्रस्य स्वरूपम्	...	८०१
विषस्य वर्णभेदाः	...	"
स्थावरविषस्य दशप्रकाराः	...	"
स्थावरविषस्य भक्षणदोषाः	...	८०२
जंगमविषस्य स्वरूपम्	...	"
जंगमविषस्य षोडशप्रकाराः	...	"
जंगमविषस्य भक्षणदोषाः	...	"
शोधितविषगुणाः	...	"
अथ विषसेवनप्रकार	...	८०३
विषमात्राप्रमाणम्	...	"
विषसेवनमें पथ्यपदार्थ	...	८०४
मात्राधिकभक्षणस्य परीक्षा	...	"
विषको उतारना	...	८०५
आखुपाषाणनामानि	...	८०६
आखुपाषाणगुणाः	...	"
अथ उपविषनामानि	...	८०७
धान्यवर्गः।		"
धान्यनामानि	...	"
धान्यभेदाः	...	"
शालिधान्यनामानि	...	८०८
शालिधान्यलक्षणम्	...	८०९

विषयः	पृष्ठांकः
शालिधान्यगुणाः ...	८०९
रक्तशालिगुणाः ...	८१०
महाशालिधान्यगुणाः ...	,,
तेषां गुणाः ...	८११
व्रीहिधान्यलक्षणम् ...	८१२
षष्टिकलक्षणं नामानि च ...	८१३
षष्टिकगुणाः ...	८१४
यवनामानि ...	८१५
यवस्य प्रकारभेदाः ...	८१६
यवगुणाः ...	,,
गोधूमनामानि ...	८१७
गोधूमगुणाः ...	८१८
अपि च लक्षणगुणाः ...	,,
यावनालनामानि ...	८१९
धवलयावनालनामानि ...	,,
तुवरयावनालनामानि ...	,,
यावनालगुणाः ...	८२०
धवलयावनालगुणाः ...	८२१
शारदयावनालगुणाः ...	,,
साजकनामानि ...	,,
साजकगुणाः ...	,,
शमीधान्यनामानि ...	८२२
शमीधान्यगुणाः ...	,,
मुद्गनामानि ...	,,
मुद्गगुणाः ...	८२३
कृष्णमुद्गनामानि ...	८२४
कृष्णमुद्गगुणाः ...	,,
हरिन्मुद्गनामानि ...	८२५
हरिन्मुद्गगुणाः ...	,,
धूसरमुद्गगुणाः ...	,,
मकुष्ठनामानि ...	,,
मकुष्ठगुणाः ...	८२६

विषयः	पृष्ठांकः
अस्यसूपगुणाः ...	,,
माषनामानि ...	,,
माषगुणाः ...	८२७
राजमाषनामानि ...	८२८
राजमाषगुणाः ...	८२९
अस्य सूपगुणाः ...	८३०
निष्पावनामानि ...	,,
निष्पावगुणाः ...	८३१
रक्तनिष्पावगुणाः ...	८३२
नदीनिष्पावगुणाः ...	,,
मसूरनामानि ...	,,
मसूरगुणाः ...	८३३
चणकनामानि ...	८३४
चणकगुणाः ...	,,
भृष्टचणकगुणाः ...	८३६
कृष्णचणकगुणाः ...	,,
चिणकस्य पत्रशाकगुणाः ...	,,
आढकीनामानि ...	८३७
आढकीगुणाः ...	,,
श्वेताढकीगुणाः ...	८३८
रक्ताढकीगुणाः ...	,,
कृष्णाढकीगुणाः ...	८३९
कलायनामानि ...	,,
कलायगुणाः ...	८४०
त्रिपुटनामानि ...	,,
त्रिपुटगुणाः ...	८४१
कुलित्थनामानि ...	८४२
कुलित्थगुणाः ...	,,
तिलनामानि ...	८४३
तिलगुणाः ...	८४४
तिलपिण्याकगुणाः ...	८४५
अतसीनामानि ...	,,
अतसीगुणाः ...	८४६

विषयः		पृष्ठांकः
सर्षपनामानि	...	८४७
गौरसर्षपनामानि	...	,,
सर्षपगुणाः	...	८४८
सिद्धार्थगुणाः	...	८४९
सर्षपशाकगुणाः	...	,,
राजिकानामानि	...	,,
राजसर्षपनामानि	...	,,
राजिकागुणाः	...	८५०
राजसर्षपगुणाः	...	८५१
राजिकापत्रशाकगुणाः	...	,,
अथ तृणधान्यनामानि	...	,,
तृणधान्यगुणाः	...	,,
कंगुनामानि	...	८५२
कंगुनीगुणाः	...	,,
चीनकनामानि	...	८५३
चीनकगुणाः	...	,,
नीवारनामानि	...	८५४
नीवारगुणाः	...	,,
वरकनामानि	...	८५५
वरकगुणाः	...	,,
नर्त्तकनामानि	...	,,
नर्त्तकगुणाः	...	८५६
श्यामाकनामानि	...	,,
श्यामाकगुणाः	...	,,
कोद्रवनामानि	...	८५७
कोद्रवगुणाः	...	,,
कटिधान्यनामानि	...	८५८
कटिधान्यगुणाः	...	८५९
गवेधुकानामगुणाश्च	...	८६०
वरटानामानि	...	,,
वरटागुणाः	...	,,
चास्कनामगुणाश्च	...	,,

विषयः		पृष्ठांकः
वेणुयवगुणाः	...	८६०
यवनालगुणाः	...	८६१
नूतनपुरातनादिभेदेन धान्यगुणाः		,,
शाकवर्गः		८६१
शाकदोषाः	...	८६२
तत्रादौ वास्तूकशाकनामानि	...	,,
वास्तूकगुणाः	...	८६३
चिल्लीगुणाः	...	८६४
लोणीबृहल्लोणीनामानि	...	,,
लोणीगुणाः	...	८६५
घोलिकागुणाः	...	,,
क्षुद्रघोलिकागुणाः	...	८६६
चुक्रनामानि	...	,,
चुक्रगुणाः	...	८६७
मारिषनामानि	...	,,
मारिषगुणाः	...	८६८
तण्डुलीयनामानि	...	,,
कञ्जटनामानि	...	८६९
तण्डुलीयगुणाः	...	,,
अस्य पत्रगुणाः	...	८७०
तण्डुलीयमूलगुणाः	...	,,
कञ्जटगुणाः	...	८७०
पालंक्यनामानि	...	,,
पालंक्यगुणाः	...	८७१
कुणञ्जरनामानि	...	८७२
कुणञ्जरगुणाः	...	,,
उपोदकीनामानि	...	,,
उपोदकीगुणाः	...	८७३
सहस्रमूलीनामानि	...	८७४
सहस्रमूलीगुणाः	...	,,
चंचुनामानि	...	,,
महाचंचुनामानि	...	८७५

विषयः	पृष्ठांकः
क्षुद्रचंचुनामानि ...	,,
चंचुगुणाः ...	८७५
महाचंचुगुणाः ...	,,
क्षुद्रचंचुगुणाः ...	,,
चंचुबीजगुणाः ...	८७६
नाडीकनामानि ...	,,
नाडीकेगुणाः ...	,,
नाडीशाकपट्टशाकनामानि ...	,,
नाडीशाकगुणाः ...	८७७
कलम्बीनामानि ...	,,
कलम्बीगुणाः ...	८७८
हिलमोचिकानामानि ...	,,
हिलमोचिकागुणाः ...	,,
सुनिषण्णकनामानि ...	,,
सुनिषण्णकगुणाः ...	८७९
सुनिषण्णकबीजगुणाः ...	,,
मूलकस्य पत्रशाकगुणाः ...	८८०
चम्पकपत्रशाकगुणाः ...	,,
शुष्ककपत्रशाकगुणाः ...	,,
करलीनामानि ...	,,
करलीगुणाः ...	,,
शतपुष्पापत्रशाकगुणाः ...	८८१
मेथिकापत्रशाकगुणाः ...	,,
राजिकापत्रशाकगुणाः ...	,,
सर्षपपत्रशाकगुणाः ...	,,
शिग्रुपत्रशाकगुणाः ...	८८२
दद्रुघ्नपत्रशाकगुणाः ...	,,
कासमर्दनामानि ...	,,
कासमर्दपत्रगुणाः ...	८८३
कौसुम्भशाकगुणाः ...	,,
वर्षाभूशाकगुणाः ...	,,
गोजिह्वाशाकगुणाः ...	८८४

विषयः	पृष्ठांकः
पटोलपत्रगुणाः ...	८८
गुडूचीपत्रशाकगुणाः ...	,,
पर्पटशाकगुणाः ...	,,
सेहुण्डपत्रशाकगुणाः ...	,,
यवानीपत्रशाकगुणाः ...	,,
द्रोणपुष्पीपत्रशाकगुणाः ...	८८
चणकपत्रशाकगुणाः ...	,,
कलायपत्रशाकगुणाः ...	,,
पुष्पशाकम्	८८५
अगस्तिपुष्पगुणाः ...	,,
जीवन्तीपुष्पशाकगुणाः ...	,,
करलीपुष्पगुणाः ...	८८६
शिग्रुपुष्पगुणाः ...	,,
शाल्मलीपुष्पशाकगुणाः ...	,,
वरणपुष्पगुणाः ...	,,
मधुकपुष्पगुणाः ...	,,
कोविदारादिपुष्पशाकगुणाः ...	८८
फलशाकम्	८८
कूष्माण्डनामानि ...	,,
कूष्माण्डफलगुणाः ...	,,
पीतकूष्माण्डनामानि ...	८८
पीतकूष्माण्डगुणाः ...	८९
कूष्माण्डीनामगुणाश्च ...	,,
अलाबुनामानि ...	,,
अलाबुगुणाः ...	८९
कटुतुम्बीनामानि ...	,,
कटुतुम्बीगुणाः ...	८९
कटुतुम्बीपर्णगुणाः ...	,,
कर्कटीनामानि ...	८९
कर्कटीगुणाः ...	,,
अरण्यकर्कटीगुणाः ...	८९
तिक्तकर्कटीगुणाः ...	,,

विषयः		पृष्ठांकः	विषयः		पृष्ठांकः
चीनाकर्कटीगुणाः	...	,,	कारवेल्लनामानि	...	९१६
सर्वकर्कटीगुणाः	...	८९६	कारवेल्लीनामानि	...	९१७
त्रपुषनामानि	...	,,	कारवेल्लगुणाः	...	,,
त्रपुषगुणाः	...	८९७	डिण्डिशनामानिगुणाश्च	...	९१९
चिर्भिटनामानि	...	८९८	पिण्डारगुणाः	...	,,
मृगेर्वारुनामानि	...	,,	भिण्डानामानि	...	,,
चिर्भिटगुणाः	...	८९९	भिण्डागुणाः	...	९२०
चिर्भिटपुष्पगुणाः	...	,,	वार्त्ताकुनामानि	...	,,
मृगार्वीगुणाः	...	९००	वार्त्ताकुगुणाः	...	९२१
खर्बूजनामानि	...	,,	गोराणीनामानि	...	९२३
खर्बूजगुणाः	...	९०१	गोराणीगुणाः	...	,,
कालिङ्गनामानि	...	९०२	हरितनिष्पावीनामानि	...	९२४
कालिङ्गगुणाः	...	९०३	शुभ्रनिष्पावीनामानि	...	,,
कोशातकीनामानि	...	९०४	द्विविधनिष्पावीगुणाः	...	,,
कोशातकीगुणाः	...	९०५	शिम्बीनामानि	...	९२५
महाकोशातकीनामानि	...	,,	कोलशिम्बीनामानि	...	,,
महाकोशातकीगुणाः	...	९०६	द्विविधशिम्बीगुणाः	...	९२६
तिक्तकोशातकीनामानि	...	,,	कोलशिम्बीगुणाः	...	,,
तिक्तकोशातकीगुणाः	...	९०७	दधिपुष्पीनामानि	...	,,
चिचिण्डनामानि	...	९०८	दधिपुष्पीगुणाः	...	९२७
चिचिण्डगुणाः	...	९०९	सौभाञ्जनशिम्बीगुणाः	...	,,
पटोलनामानि	...	,,	डोडिकानामगुणाश्च	...	९२८
पटोलगुणाः	...	,,	मुनिशिम्बीगुणाः	...	,,
राजपटोलीनामानि	...	९१०	शृङ्गाटकनामानि	...	,,
तिक्तपटोलनामानि	...	,,	शृङ्गाटकगुणाः	...	९२९
तिक्तपटोलगुणाः	...	९११	अथ नालशाकम्		९३०
बिम्बीनामानि	...	९१२	सर्षपनालगुणाः	...	,,
बिम्बीगुणाः	...	९१३	सूरणनालगुणाः	...	,,
तिक्तबिम्बीनामानि	...	९१४	अथ कन्दशाकम्		,,
तिक्तबिम्बीगुणाः	...	,,	रसोननामानि	...	,,
कर्कोटकीनामानि	...	९१५	रसोनगुणाः	...	९३१
कर्कोटकीगुणाः	...	,,			

विषय.		पृष्ठ.
पलाण्डुनामानि	...	९३३
राजपलाण्डुनामानि	...	"
पलाण्डुगुणाः	...	९३४
राजपलांडुगुणाः	...	"
पलांडुबीजगुणाः	...	९३५
मूलकनामानि	...	"
चाणक्यमूलकनामानि	...	"
मूलकगुणाः	...	९३७
चाणक्यमूलकगुणाः	...	"
गर्जरनामानि	...	९३८
गृञ्जननामानि	...	९३९
पिण्डमूलनामानि	...	"
गर्जरगुणाः	...	"
गृञ्जनगुणाः	...	९४०
पिण्डमूलगुणाः	...	"
सूरणनामानि	...	"
सूरणगुणाः	...	९४१
वनसूरणनामानि	...	९४२
वनसूरणगुणाः	...	"
रक्तालुनामानि	...	"
पिण्डालुनामानि	...	"
रक्तालुगुणाः	...	९४३
आलुकीगुणाः	...	"
गजकर्णालुनामानि	...	"
गजकर्णालुगुणाः	...	९४४
मुखालुनामानि	...	"
मुखालुगुणाः	...	"
कासालुनामानि	...	९४५
कासालुगुणाः	...	"
फौडालुनामानि	...	"
फौडालुगुणाः	...	"
पानीयालुनामानि	...	"

विषयः		पृष्ठांकः
पानीयालुगुणाः	...	"
नीलालुनामानि	...	९४६
नीलालुगुणाः	...	"
शुभ्रालुनामानि	...	"
शुभ्रालुगुणाः	...	"
हस्तिकन्दनामानि	...	"
हस्तिकन्दगुणाः	...	"
कोलकन्दनामानि	...	९४७
कोलकन्दगुणाः	...	"
वाराहीकन्दनामानि	...	"
वाराहीकन्दगुणाः	...	९४८
विष्णुकन्दनामानि	...	९४९
विष्णुकन्दगुणाः	...	"
धरणीकन्दनामानि	...	९४९
धरणीकन्दगुणाः	...	९५०
नाकुलीकन्दनामानि	...	"
गन्धनाकुलीनामानि	...	"
द्विविधनाकुलीकन्दगुणाः	...	"
मालाकन्दनामानि	...	"
मालाकन्दगुणाः	...	९५१
विदारीकन्दनामानि	...	"
विदारीकन्दगुणाः	...	"
क्षीरविदारीनामानि	...	"
क्षीरविदारीगुणाः	...	"
चण्डालकन्दनामानि	...	९५२
चण्डालकन्दगुणाः	...	"
तैलकन्दनामानि	...	"
तैलकन्दगुणाः	...	"
त्रिपर्णीनामानि	...	९५३
त्रिपर्णीगुणाः	...	"
लक्ष्मणाकन्दनामानि	...	"
लक्ष्मणाकन्दगुणाः	...	

बिषयः	पृष्ठ:
हस्तजोडिनामगुणाः ...	,,
मुच्छकन्दनामानि ...	,,
गुच्छकन्दगुणाः ...	९५४
मानकन्दनामानि ...	,,
मानकन्दगुणाः ...	,,
शंखालुनामानि ...	,,
काष्ठालुनामानि ...	,,
सर्वविधआलुगुणाः ...	,,
राजाल्वादिगुणाः ...	९५५
कसेरुनामानि ...	,,
द्विविधकसेरुगुणाः ...	९५६
केमुकनामानि ...	,,
केमुकगुणाः ...	९५७
शाल्मलीकन्दनामानि ...	,,
शाल्मलीकन्दगुणाः ...	,,
कदलीकन्दगुणाः ...	,,
अथ संस्वेदजशाकनामानि...	९५८
संस्वेदजगुणाः ...	,,
अथ वारिवर्गः	९५९
जलनामानि ...	,,
जलगुणाः ...	९६०
धारकादिचतुर्विधजलस्य लक्षणम्	९६५
अथ करकाः ...	,,
गुणाः ...	,,
अथ तौषारलक्षणं गुणाश्च ...	९६६
अथ हिमजललक्षणम् ...	९६७
हिमजलगुणाः ...	,,
अथ भौमजलम् ...	९६८
अथाष्टविधं जलम् ...	,,
नदीजलम् ...	,,
अथ गंगाजलगुणाः ...	,,
यमुनाजलगुणाः ...	९७०

विषयः	पृष्ठांकः
नर्मदाजलगुणाः ...	,,
गोदावरीजलगुणाः ...	,,
कावेरीनदीजलगुणाः ...	,,
कृष्णावेणीजलगुणाः ...	,,
औद्भिदभूमिगुणाः ...	९७३
औद्भिदजललक्षणं गुणाश्च ...	९७४
अथ प्रस्रवणजलस्य लक्षणं गुणाश्च	,,
अथ चौण्ड्यस्य लक्षणं गुणाश्च	,,
अथ कौपास्यलक्षणं गुणाश्च...	९७५
तडागजलस्य लक्षणं गुणाश्च	,,
सारसलक्षणम् गुणाश्च ...	,,
वाप्यलक्षणं गुणाश्च ...	९७६
पाल्वलस्य लक्षणं गुणाश्च ...	,,
विकिरस्य लक्षणं गुणाश्च ...	,,
कैदारस्य लक्षणं गुणाश्च ...	,,
वृष्टिजललक्षणं ...	९७७
क्षारजलगुणाः ...	,,
समुद्रजलगुणाः ...	,,
सर्वऋतुसम्बन्धीयजलगुणाः ...	,,
वार्षिकजलगुणाः ...	,,
शारदीयजलगुणाः ...	,,
हैमन्तिकजलगुणाः ...	९७८
शैशिरजलगुणाः ...	,,
वासंतिकजलगुणाः ...	९७८
ग्रैष्मिकजलगुणाः ...	,,
अथ ऋतुपरत्वेजलगुणाः ...	,,
पापोदक० ...	९७९
रोगोदक० ...	९८०
अंशूदक० ...	,,
आरोग्योदक० ...	९८१
जलग्रहणकालः ...	,,
शीतलगुणाः ...	,,
उष्णोदकलक्षणं गुणाश्च ...	९८२

विषयः	पृष्ठांकः
ऋतुभेदे उष्णजलभेदः ...	९८३
पर्युषितजलगुणाः ...	,,
शृतशीतजलगुणाः ...	,,
उष्णजलनिषेधः ...	९८४
शीतलजलगुणाः ...	९८५
अथाल्पजलपानविषयाः ...	,,
अथ जलपानविधिः ...	,,
अथ जलपानावश्यकता ...	९८७
अथ प्रशस्तजलगुणाः ...	,,
अथ निन्दितजलम् ...	९८८
अथ दुष्टजलनिर्दोषीकरणम् ...	,,
सुवासितजलगुणाः ...	९८९
अथ पीतजलपाकविधिः ...	,,
अथ दुग्धवर्गः ।	९८९
दुग्धगुणाः ...	९९०
गोदुग्धगुणाः ...	९९१
अथ वर्णविशेषे गुणविशेषाः ...	९९२
अथ वकेनीगोदुग्धगुणाः ...	,,
अथ देशविशेषे गुणविशेषाः ...	,,
अथ आहारविशेषे गुणविशेषाः	,,
अथावस्थाविशेषगुणाः ...	९९३
गोदुग्धानां प्रशस्ताप्रशस्तभेदाः	,,
गोदुग्धग्रहणकालनिर्णयः ...	,,
महिषदुग्धगुणाः ...	९९४
छागीदुग्धगुणाः ...	९९५
मेषीदुग्धगुणाः ...	,,
मृगीदुग्धगुणाः ...	,,
अश्वीदुग्धगुणाः ...	९९६
उष्ट्रीदुग्धगुणाः ...	९९६
हस्तिनीदुग्धगुणाः ...	,,
गर्दभीदुग्धगुणाः ...	,,
स्त्रीदुग्धगुणाः ...	९९७
अथ दुग्धस्य सात्म्यासात्म्यविधिः	,,
अथ धारोष्णादिदुग्धगुणाः ...	९९८
प्रभातादिभवदुग्धगुणाः ...	,,
समयविशेषे दुग्धसेवनगुणाः ...	९९९
अथ निन्दितदुग्धम् ...	१०००
अथ क्षीरसात्म्यम् ...	,,
पर्युषितक्षीरगुणाः ...	१००१
अथ पीयूषकिलाटक्षीरशाकतक्रपिण्ड-मोरटानां लक्षणानि गुणाश्च ...	,,
क्षीरसन्तानिकागुणाः ...	,,
दण्डाहतक्षीरगुणाः ...	१००३
गोदुग्धाभिभवफेनगुणाः ...	,,
अथ दधिवर्गः	,,
साधारणदधिगुणाः ...	१००४
अथ दधिभेदाः ...	१००५
अथ मन्दादीनां लक्षणानि गुणाश्च	,,
गव्यदधिगुणाः ...	१००६
महिषीदधिगुणाः ...	१००७
छागदधिगुणाः ...	,,
आविकदधिगुणाः ...	१००८
हस्तिनीदधिगुणाः ...	,,
अश्वीदधिगुणाः ...	१००९
गर्दभीदधिगुणाः ...	,,
उष्ट्रीदधिगुणाः ...	,,
मानुषीदधिगुणाः ...	१०१०
वार्षिकदधिगुणाः ...	,,
शारदीयदधिगुणाः ...	,,
हैमन्तिकदधिगुणाः ...	,,
शैशिरदधिगुणाः ...	,,
वासन्तिकदधिगुणाः ...	,,
ग्रीष्मकदधिगुणाः ...	१०११

विषयः	पृष्ठांकः
पक्वदुग्धभवदधिगुणाः ...	१०११
निःसारदधिगुणाः ...	"
गालितदधिगुणाः ...	"
सितायुक्तदधिगुणाः ...	"
गुडयुक्तदधिगुणाः ...	१०१२
दधिभक्षणनिषिद्धता ...	"
अक्रमदधिभक्षणदोषाः ...	"
त्रिकट्वादियुक्तदधिगुणाः ...	"
सरस्यमस्तुनश्चलक्षणानिगुणाश्च	१०१३
दधिकूर्चिकलक्षणं गुणाश्च ...	"
तक्रवर्गः	**१०१३**
तक्रभेदः ...	१०१४
तेषां गुणाः ...	"
अथ पक्वापक्वतक्रगुणाः ...	१०१७
अथ दोषविशेषे व्याधिविशेषे च तक्रविशेषाः ...	"
अथ तक्रसेवननिमित्तानि ...	१०१८
अथ रोगविशेषे तक्रनिषेधः ...	"
अथ गव्यादीनां तक्राणां विशिष्टगुणाः ...	"
गोतक्रगुणाः ...	"
महिषीतक्रगुणाः ...	१०१९
छागीतक्रगुणाः ...	"
आविकतक्रगुणाः ...	"
हस्तिनीतक्रगुणाः ...	"
अश्वीतक्रगुणाः ...	"
उष्ट्रीतक्रगुणाः ...	१०२०
गर्दभीतक्रगुणाः ...	"
स्त्रीतक्रगुणाः ...	"
नवनीतवर्गः	**१०२०**
साधारणनवनीतगुणाः ...	१०२०

विषयः	पृष्ठांकः
गव्यनवनीतगुणाः ...	१०२२
माहिषीनवनीतगुणाः ...	"
छागीनवनीतगुणाः ...	१०२३
आविकनवनीतगुणाः ...	"
हस्तिनीनवनीतगुणाः ...	"
अश्वीनवनीतगुणाः ...	"
गर्दभीनवनीतगुणाः ...	"
उष्ट्रीनवनीतगुणाः ...	१०२४
स्त्रीनवनीतगुणाः ...	"
दुग्धजातनवनीतगुणाः ...	"
नवीननवनीतगुणाः ...	"
प्राचीननवनीतगुणाः ...	"
घृतवर्गः	**१०२५**
घृतगुणाः ...	"
गव्यघृतगुणाः ...	१०२७
माहिषघृतगुणाः ...	१०२८
छागीघृतगुणाः ...	"
मेषीघृतगुणाः ...	"
हस्तिनीघृतगुणाः ...	१०२९
अश्वीघृतगुणाः ...	"
गर्दभीघृतगुणाः ...	१०३०
एकशफपशुघृतगुणाः ...	"
उष्ट्रीघृतगुणाः ...	"
स्त्रीघृतगुणाः ...	"
हैयंगवीनघृतगुणाः ...	१०३१
दुग्धोद्भवघृतगुणाः ...	"
शतधौतघृतगुणाः ...	"
नूतनघृतगुणाः ...	"
पुराणघृतम् ...	"
नूतनघृतविषयाः ...	१०३२
मूत्रवर्गः	**१०३२**
गोमूत्रगुणाः ...	१०३३

विषयः	पृष्ठांकः
छागीमूत्रगुणाः ...	१०३४
आविकमूत्रगुणाः ...	,,
माहिषमूत्रगुणाः ...	,,
गजमूत्रगुणाः ...	,,
अश्वीमूत्रगुणाः ...	१०३५
गर्दभीमूत्रगुणाः ...	,,
औष्ट्रमूत्रगुणाः ...	,,
मानुषमूत्रगुणाः ...	,,
मूत्रविशेषगुणाः ...	१०३६
तैलवर्गः	१०३७
तिलतैलगुणाः ...	१०३८
सर्षपतैलगुणाः ...	१०४०
राजिकातैलगुणाः ...	१०४१
तुवरीतैलगुणाः ...	१०४१
अतसीतैलगुणाः ...	,,
कुसुम्भतैलगुणाः ...	१०४२
गोधूमादितैलगुणाः ...	१०४३
एरण्डतैलगुणाः ...	,,
करञ्जतैलगुणाः ...	१०४४
इंगुदीतैलगुणाः ...	१०४५
निम्बतैलगुणाः ...	,,
शिग्रुतैलगुणाः ...	,,
ज्योतिष्मतीतैलगुणाः ...	,,
बिभीतकतैलगुणाः ...	१०४६
हरीतकीतैलगुणाः ...	,,
कोशाम्रतैलगुणाः ...	,,
कर्पूरतैलगुणाः ...	,,
त्रपूषादितैलगुणाः ...	१०४७
भल्लातकतैलगुणाः ...	,,
त्रिवृतैलगुणाः ...	,,
देवदारुतैलगुणाः ...	,,
शालतैलगुणाः ...	,,

विषयः	पृष्ठांकः
आम्रतैलगुणाः ...	१०४८
मधूकतैलगुणाः ...	,,
वंदातैलगुणाः ...	,,
अंकोलतैलगुणाः ...	,,
दन्तीतैलगुणाः ...	,,
पुत्रजीवकतैलगुणाः ...	,,
त्रायमाणतैलगुणाः ...	१०४९
शंखिनीतैलगुणाः ...	,,
पुन्नागतैलगुणाः ...	,,
कपित्थतैलगुणाः ...	,,
खसखसतैलगुणाः ...	,,
नारिकेलतैलगुणाः ...	,,
पीलुतैलगुणाः ...	,,
शिंशपादितैलगुणाः ...	१०५[illegible]
पृथ्वीकादितैलगुणाः ...	,,
अवगाहनयुक्ततैलगुणाः ...	,,
शिरसितैलमर्द्दनगुणाः ...	१०५[illegible]
कर्णतैलपूरणगुणाः ...	,,
मर्द्दने तैलगुणाः ...	,,
अर्कवर्गः	१०५[illegible]
हरीतक्यर्कगुणाः ...	१०५[illegible]
बिभीतकार्कगुणाः ...	,,
आमलक्यर्कगुणाः ...	,,
नागरार्कगुणाः ...	,,
आर्द्रकार्कगुणाः ...	,,
पिप्पल्यर्कगुणाः ...	,,
मरीचार्कगुणाः ...	,,
पिप्पलीमूलार्कगुणाः ...	,,
चव्यार्कगुणाः ...	,,
गजपिप्पल्यर्कगुणाः ...	१०५[illegible]
चित्रकार्कगुणाः ...	,,
यवान्यर्कगुणाः ...	,,

विषयः	पृष्ठांकः
अजमोदार्कगुणाः ...	१०५३
पारसीकयवान्यर्कगुणाः ...	,,
जीरकार्कगुणाः ...	,,
कृष्णजीरकार्कगुणाः ...	,,
कारवीजीरकार्कगुणाः ...	,,
धान्यकार्कगुणाः ...	,,
शतपुष्पार्कगुणाः ...	१०५४
मिश्रेयार्कगुणाः ...	,,
ज्वालामरिचार्कगुणाः ...	,,
मेथिकार्कगुणाः ...	,,
वनमेथिकार्कगुणाः ...	,,
चन्द्रसूरार्कगुणाः ...	,,
हिंग्वर्कगुणाः ...	,,
वचार्कगुणाः ...	,,
पारसीकवचार्कगुणाः ...	,,
कुलिञ्जनार्कगुणाः ...	१०५५
स्थूलग्रन्थिवचार्कगुणाः ...	,,
द्वीपान्तरवचार्कगुणाः ...	,,
हपुषार्कगुणाः ...	,,
क्षुद्रहपुषार्कगुणाः ...	,,
विडंगार्कगुणाः ...	,,
तुम्बुरोरकगुणाः ...	,,
वंशलोचनार्कगुणाः ...	,,
समुद्रफेनार्कगुणाः ...	,,
जीवकार्कगुणाः ...	१०५६
ऋषभकार्कगुणाः ...	,,
मेदार्कगुणाः ...	,,
महामेदाकगुणाः ...	,,
काकोल्यर्कगुणाः ...	,,
क्षीरकाकोल्यर्कगुणाः ...	,,
ऋद्ध्यर्कगुणाः ...	,,
वृद्ध्यर्कगुणाः ...	१०५७
मधुकार्कगुणाः ...	१०५७
जलमधुयष्ट्यर्कगुणाः ...	,,
कांपिल्लार्कगुणाः ...	,,
आरग्वधार्कगुणाः ...	,,
भूनिम्बार्कगुणाः ...	,,
वत्सार्कगुणाः ...	,,
मदनफलाकगुणाः ...	,,
रास्नार्कगुणाः ...	,,
नागभिन्नार्कगुणाः ...	,,
माचिकार्कगुणाः ...	,,
तेजस्विन्यकगुणाः ...	१०५८
ज्योतिष्मत्यर्कगुणाः ...	,,
कुष्ठार्कगुणाः ...	,,
पौष्करार्कगुणाः ...	,,
क्षीरिण्यर्कगुणाः ...	,,
शृंग्यर्कगुणाः ...	,,
कट्फलार्कगुणाः ...	,,
भार्ग्यर्कगुणाः ...	,,
पाषाणभेद्यर्कगुणाः ...	१०५९
धातक्यर्कगुणाः ...	,,
समङ्गार्कगुणाः ...	,,
कुसुम्भार्कगुणा ...	,,
लाक्षार्कगुणाः ...	,,
हरिद्रार्कगुणाः ...	,,
आरण्यहरिद्रार्कगुणाः ...	,,
कर्पूरहरिद्रार्कगुणाः ...	,,
दारुहरिद्रार्कगुणाः ...	,,
रसाञ्जनार्कगुणाः ...	१०६०
अवल्गुजार्कगुणाः ...	,,
चक्रमर्दाकगुणाः ...	,,
अतिविषार्कगुणाः ...	,,
लोध्रार्कगुणा ...	,,

विषयः		पृष्ठांकः	विषयः		पृष्ठांकः
बृहत्पत्रार्कगुणाः	...	१०६०	कांचनारार्कगुणाः	...	१०६४
भल्लातकार्कगुणाः	...	,,	कोविदारार्कगुणाः	...	,,
गुडूच्यर्कगुणाः	...	,,	रक्तशोभांजनार्कगुणाः	...	,,
बिल्वार्कगुणाः	...	,,	श्वेतशोभांजनार्कगुणाः	...	,,
काश्मर्यर्कगुणाः	...	१०६१	शिग्रुजार्कगुणाः	...	,,
पाटलार्कगुणाः	...	,,	गिरिकर्ण्यर्कगुणाः	...	,,
अग्निमन्थार्कगुणाः	...	,,	सिन्धुवारार्कगुणाः	...	,,
श्योनाकार्कगुणाः	...	,,	निर्गुण्डयर्कगुणाः	...	,,
शालपर्ण्यर्कगुणाः	...	,,	कुटजार्कगुणाः	...	१०६[illegible]
पृश्निपर्ण्यर्कगुणाः	...	,,	करंजार्कगुणाः	...	,,
बृहत्यर्कगुणाः	...	,,	घृतकरंजार्कगुणाः	...	,,
श्वेतकण्टकार्यर्कगुणाः	...	,,	गुंजार्कगुणाः	...	,,
कण्टकार्यर्कगुणाः	...	१०६२	श्वेतगुञ्जार्कगुणाः	...	,,
गोक्षुरार्कगुणाः	...	,,	रक्तगुंजार्कगुणाः	...	,,
जीवन्त्यर्कगुणाः	...	,,	शूकशिम्ब्यर्कगुणाः	...	,,
मुद्गपर्ण्यर्कगुणाः	...	,,	मांसरोहिण्यर्कगुणाः	...	,,
माषपर्ण्यर्कगुणाः	...	,,	चिल्हकार्कगुणाः	...	,,
श्वेतैरण्डार्कगुणाः	...	,,	वेतसार्कगुणाः	...	१०६[illegible]
रक्तैरण्डार्कगुणाः	...	,,	जलवेतसार्कगुणाः	...	,,
मन्दारार्कगुणाः	...	,,	हिजलार्कगुणाः	...	,,
अर्क्यर्कगुणाः	...	,,	अंकोटार्कगुणाः	...	,,
वज्यर्कगुणाः	...	१०६३	बलार्कगुणाः	...	,,
सातलार्कगुणाः	...	,,	अतिबलार्कगुणाः	...	,,
लांगल्यर्कगुणाः	...	,,	लक्ष्मणामूलार्कगुणाः	...	,,
श्वेतकरवीरार्कगुणाः	...	,,	स्वर्णवल्ल्यर्कगुणाः	...	,,
रक्तकरवीरार्कगुणाः	...	,,	कार्पास्यर्कगुणाः	...	,,
धत्तूरबीजार्कगुणाः	...	,,	वंशार्कगुणाः	...	१०६[illegible]
वासार्कगुणाः	...	,,	नलार्कगुणाः	...	,,
पर्पटार्कगुणाः	...	,,	पाडयर्कगुणाः	...	,,
निम्बार्कगुणाः	...	,,	शरपुंखार्कगुणाः	...	,,
महानिम्बार्कगुणाः	...	१०६४	दुरालभार्कगुणाः	...	,,
वारिभद्रार्कगुणाः	...	,,	मुंडयर्कगुणाः	...	,,

विषयः		पृष्ठांकः
अपामार्गार्कगुणाः	...	१०६७
रक्तापामार्गार्कगुणाः	...	,,
कोकिलाक्षार्कगुणाः	...	,,
अस्थिसंहारिकार्कगुणाः	...	१०६८
कुमार्यर्कगुणाः	...	,,
पुनर्नवार्कगुणाः	...	,,
रक्तपुनर्नवार्कगुणाः	...	,,
प्रसारण्यर्कगुणाः	...	,,
शारिवार्कगुणाः	...	,,
भृङ्गराजार्कगुणाः	...	,,
शणपुष्पार्कगुणाः	...	,,
आवन्त्यर्कगुणाः	...	,,
मूर्वार्कगुणाः	...	,,
काकमाच्यर्कगुणाः	...	१०६९
काकनासार्कगुणाः	...	,,
काकजंघार्कगुणाः	...	,,
नागाह्वार्कगुणाः	...	,,
मेषशृङ्ग्यर्कगुणाः	...	,,
हंसपद्यर्कगुणाः	...	,,
सोमवल्ल्यर्कगुणाः	...	,,
आकाशवल्ल्यर्कगुणाः	...	,,
पातालगरुडार्कगुणाः	...	१०७०
वन्दाकार्कगुणाः	...	,,
वटपत्रार्कगुणाः	...	,,
हिंगुपत्र्यर्कगुणाः	...	,,
वंशपत्रार्कगुणाः	...	,,
मत्स्याक्ष्यर्कगुणाः	...	,,
सर्पाक्ष्यर्कगुणाः	...	,,
शंखपुष्प्यर्कगुणाः	...	,,
अर्कपुष्पार्कगुणाः	...	,,
लम्बालुकार्कगुणाः	...	१०७१
अलम्बुषार्कगुणाः	...	,,
दुग्धिकार्कगुणाः	...	१०७१
ब्राह्म्यर्कगुणाः	...	,,
ब्रह्ममण्डूक्यर्कगुणाः	...	,,
द्रोणपुष्प्यर्कगुणाः	...	,,
सूर्यमुख्यर्कगुणाः	...	,,
वन्ध्याकर्कोटक्यर्कगुणाः	...	,,
मार्कण्डिकार्कगुणाः	...	१०७२
देवदाल्यर्कगुणाः	...	,,
धत्तूरार्कगुणाः	...	,,
गोजिह्वार्कगुणाः	...	,,
नागपुष्प्यर्कगुणाः	...	,,
बिल्वतर्य्यर्कगुणाः	...	,,
छिक्किन्यर्कगुणाः	...	,,
कुकुन्दरार्कगुणा.	...	,,
सुदर्शनार्कगुणाः	...	१०७३
मधुवर्गः		१०७३
मधुनामानि	...	,,
मधुसामान्यगुणाः	...	,,
मधुजातिभेदाः	...	१०७५
नवपुराणमधुगुणाः	...	१०७६
पक्वापक्वमधुगुणाः	...	१०७७
मधुनःशीतस्यगुणाधिक्यम्	...	,,
सिक्थकनामानि	...	,,
सिक्थकगुणाः	...	,,
इक्षुवर्गः		१०७८
इक्षुनामानि	...	,,
इक्षुसाधारणगुणाः	...	१०७९
सितेक्षुगुणाः	...	,,
कृष्णेक्षुगुणाः	...	,,
रक्तेक्षुगुणाः	...	,,
पौण्ड्रकभीरुकयोर्गुणाः	...	१०८०
कोशकारगुणाः	...	,,

विषयः		पृष्ठांकः
कान्तारेक्षुगुणाः	...	१०८०
दीर्घपोरवंशकयोर्गुणाः	...	,,
शतपोरकगुणाः	...	,,
मनोगुप्तागुणाः	...	१०८१
तापसेक्षुगुणाः	...	,,
काण्डेक्षुगुणाः	...	,,
सूचीपत्रनैपालीदीर्घपत्रनीलपोराणांगुणाः	...	,,
इक्षुमूलादिगुणाः	...	,,
बालयुवावृद्धेक्षुगुणाः	...	,,
दन्तनिष्पीडितेक्षुगुणाः	...	१०८२
यन्त्रनिष्पीडितेक्षुरसगुणाः	...	,,
पर्युषितेक्षुरसगुणाः	...	१०८३
इक्षुपक्वरसगुणाः	...	,,
इक्षुविशेषगुणाः	...	,,
इक्षुरसविकाराणांगुणाः	...	,,
फाणितलक्षणंगुणाश्च	...	१०८४
मत्स्यंडीलक्षणंगुणाश्च	...	,,
गुड़नामानि	...	,,
गुडलक्षणम्	...	,,
पुरातनगुडगुणाः	...	,,
नूतनगुडगुणाः	...	१०८५
खण्डनामानि	...	१०८७
खण्डगुणाः	...	,,
गुडखण्डगुणाः	...	१०८८
शर्करानामानि	...	,,
शर्करागुणाः	...	१०८९
लसीकादीनामुत्तरोत्तरंनिर्मलादीनांगुडवत्त्वमाह	...	१०९०
यावनालशर्करानामानिगुणाश्च		,,
यवासशर्करागुणाः	...	१०९१
मधुशर्करागुणाः	...	,,

विषयः		पृष्ठांकः
पुष्पशर्करागुणाः	...	१०९
सन्धानवर्गः		१०९
कांजिकनामानि	...	१०९
कांजिकलक्षणंगुणाश्च	...	,,
कांजिकविशेषगुणाः	...	१०९
तुषोदकलक्षणंगुणाश्च	...	१०९
सौवीरनामानि	...	,,
सौवीरलक्षणंगुणाश्च	...	१०९
आरनाललक्षणंगुणाश्च	...	,,
आरनालकगुणाः	...	,,
धान्याम्ललक्षणंगुणाश्च	...	१०९
शिण्डाकीलक्षणंगुणाश्च	...	,,
शुक्तलक्षणंगुणाश्च	...	,,
सन्धानलक्षणंगुणाश्च	...	,,
मद्यनामानि	...	१०९
साधारणमदिरागुणाः	...	,,
अरिष्टलक्षणंगुणाश्च	...	१०९
सुरालक्षणगुणाश्च	...	,,
वारुणीलक्षणंगुणाश्च	...	,,
सीधुलक्षणंगुणाश्च	...	११
गौडीमदिरागुणाः	...	११
माध्वीकमद्यगुणाः	...	,,
पैष्टीमद्यगुणाः	...	११
इक्षुभवमद्यगुणाः	...	,,
सर्ववृक्षभवमद्यगुणाः	...	,,
द्राक्षामदिरागुणाः	...	११
खर्जूरमद्यगुणाः	...	,,
तालमद्यगुणाः	...	,,
आसवलक्षणं गुणाश्च	...	,,
सुरासवगुणाः	...	,,
गुडासवगुणाः	...	११
मध्वासवगुणाः	...	

विषयः		पृष्ठांकः
द्राक्षासवगुणाः	...	११०४
शर्करासवगुणाः	...	,,
जाम्बवासवगुणाः	...	,,
मैरेयमद्यगुणाः	...	११०५
नवीनमद्यगुणाः	...	,,
प्राचीनमद्यगुणाः	...	,,
विधियुक्तमद्यपानगुणाः	...	,,
सुराप्रयोगविधिः	...	११०६
अथ मद्यानां गन्धनाशनोपायः		,,
संख्यावर्गः		११०७
क्षारत्रयम्	...	,,
लवणत्रयम्	...	,,
त्रिकटु	...	११०८
कटूषणम्	...	,,
त्रिफला	...	,,
त्रिफलागुणाः	...	,,
मधुरत्रिफला	...	११०९
सुगंधत्रिफला	...	,,
सुगंधत्रिफलागुणाः	...	,,
त्रिसुगंधि	...	१११०
मधुरत्रयम	...	,,
त्रिसमम्	...	११११
त्रिकर्षिका	...	,,
त्रिसिता	...	१११२
त्रिकण्टकम्	...	,,
कण्टकत्रितयम्	...	,,
कण्टकारीत्रयम्	...	,,
त्रिलोहम्	...	१११३
अञ्जनत्रयम्	...	,,
अथोपविषात्रयम्	...	,,
चतुरूषणम्	...	,,
चतुर्जातकम्	...	,,
कटुचतुर्जातकम्	...	१११४
चातुर्भद्रकम्		,,
चतुर्बीजम्	...	,,
चातुर्थिकगणः	...	,,
बलाचतुष्टयम्	...	,,
कटुग्रंथिचतुष्कम्	...	१११५
पंचकोलम्	..	,,
द्वितीयपंचकोलम्	...	,,
पंचत्वक्	...	१११६
पंचपल्लवाः	...	,,
पंचांगम्	..	१११७
निम्बपंचांगम्	...	,,
अस्यगुणाः	...	,,
क्षारपंचकम्	...	१११८
लवणपंचकम्	...	,,
लघुपंचमूलम्	...	,,
महापंचमूलम्	...	,,
मध्यमपंचमूलम्	...	१११९
बालाख्यपंचमूलम्	...	,,
जीवनपंचमूलम्	...	,,
तृणपंचमूलम्	...	११२०
गोक्षीरादिपंचमूलम्	...	,,
पंचमहाविषाणि	...	११२१
पंचोपविषाणि	...	,,
पंचगव्यम्	...	,,
पंचमाहिषम्	...	,,
सुगन्धपंचकम्	...	११२२
अम्लपंचकम्	...	,,
द्वितीयफलाम्लपंचकम्	...	,,
पंचगठा	...	११२३
पंचसमम्	...	,,
द्वितीयपंचसमम्	...	,,

विषयः		पृष्ठांकः
पंचांगलेपः	...	११२३
पंचभृंगम्	...	"
पंचमूत्रम्	...	"
पंचवीजम्	...	११२४
पंचसिद्धौषधी	...	"
पंचरत्नानि	...	"
पंचसूरणाः	...	"
पंचपित्तानि	...	११२५
औषधीपंचामृतम्	...	"
पंचामृतम्	...	"
षड्रसाः	...	"
क्षारषट्कम्	...	"
षड्रूषणम्	...	११२६
सुगन्धषट्कम्	...	"
महासुगन्धषट्कम्	...	"
प्राणकरषट्कम्	...	"
सप्तोपविषाणि	...	११२७
प्राणहरषट्कम्	...	"
शरीरस्थसप्तधातवः	...	"
सुवर्णादिसप्तधातवः	...	"
शरीरस्थधातूद्भवधातवः	...	११२८
सप्तोपधातवः	...	"
सप्तसन्तर्पणम्	...	"
सप्तविधक्वाथः	...	"
सप्तोपरत्नानि	...	११२९
अष्टधातवः	...	"
अष्टविधचिकित्सा	...	११३०
अष्टगंधाः	...	"
अष्टवर्गाः	...	"
अष्टवर्गप्रतिनिधयः	...	११३१
अष्टमंगलघृतम	...	"
नवधातवः	...	"

विषयः		पृष्ठांकः
नवरत्नानि	...	११[illegible]
क्षारदशकम्	...	"
दशांगधूपः	...	११[illegible]
दशमूलम्	...	"
दशमूत्रम्	...	"

उत्तरार्द्धः ।

विषयः		पृष्ठांकः
मंगलाचरण	...	११[illegible]
अनूपादिवर्गः		११[illegible]
अनूपदेशकालक्षण	...	"
जांगलदेशकालक्षण	...	११[illegible]
साधारणदेशकालक्षण	...	११[illegible]
अथक्षेत्रभेदाः	...	"
ब्राह्मक्षेत्रकालक्षण	...	११[illegible]
क्षात्रक्षेत्र	...	"
वैश्यक्षेत्र	...	"
शूद्रक्षेत्र	...	"
चतुर्विधक्षेत्रोद्भवद्रव्यगुणाः	...	११[illegible]
पार्थिवक्षेत्र	...	"
आप्यक्षेत्र	...	"
तैजसक्षेत्र	...	११[illegible]
वायवीयक्षेत्र	...	"
आन्तरिक्षक्षेत्र	...	"
पंचविधक्षेत्रोद्भवद्रव्यगुणाः	...	"
पंचक्षेत्रोंके देवता	...	११[illegible]
वृक्षोत्पत्तिः	...	"
वृक्षोंके ब्राह्मणादि भेद	...	"
तल्लक्षणानि	...	"
ब्राह्मणादि वृक्षोंको योजनेकी विधिः		११[illegible]
अथौषधिविनिर्णयश्चतुर्विधः	...	"
तच्चतुर्विधं यथा	...	"
जंगमद्रव्य	...	"
पार्थिवद्रव्य	...	११[illegible]

विषयः	पृष्ठांकः
औद्भिदद्रव्यम् ...	११४१
अथ वृक्षादीनां पुंस्त्वादिकथनम्	११४२
वृक्षादीनांक्षुत्पिपासादिकथनम्	"
वृक्षादीनांपंचभूतात्मकत्वकथ०	११४३
वृक्षादीनांपरोपकारः ...	"
अथनक्षत्रवृक्षाः ...	११४५
औषधिकेलेनेमेंमुहूर्तविचार ...	११४६
औषधिलेनेकीविधि ...	"
औषधिग्रहणमंत्रः ...	११४७
औषधिउखाड़नेकी विधि...	११४७
दुष्टऔषधि ...	"
औषधसंग्रह अथवा रखनेकीविधि	११४८
द्रव्यलक्षण ...	११५०
स्वभावसेश्रेष्ठ ...	११५१
स्वभावसे अश्रेष्ठ ...	११५२
उपयोगविरुद्ध ...	"
औषधिलेनेमें सङ्केत ...	११५४
प्रतिनिधि ...	"
द्रव्यांतर्गतपदार्थ ...	११५७
मधुररसकावर्णन ...	११५९
अम्लरसकावर्णन ...	११६०
लवणरसकावर्णन ...	११६१
तिक्तरसकावर्णन ...	"
कटुरसकावर्णन ...	११६२
कषायरसकावर्णन ...	११६३
अथद्वन्द्वरस ...	११६४
मिश्रितरसके ६३ भेद ...	११६५
रसोंके ६३ भेदजाननेकेलियेयंत्र	११६६
मिश्ररस ...	११६७
परस्परविरुद्धरस ...	"
अथगुणाः ...	"
अथगुणप्रस्तावाद्दीपनादयोगुणाः	११६८
अथवीर्य ...	११७१
उष्णशीतवीर्ययोर्गुणमाह ...	"
रसानांवीर्यभेदमाह ...	११७२
अथविपाकः ...	"
प्रभाव ...	११७३
मिश्रवर्गः	**११७३**
पादमलमार्गाणांशौचगुणाः ...	११७४
उषःपानगुणाः ...	"
नासिकयाजलपानगुणाः ...	"
दन्तधावनविधिः ...	११७५
निषिद्धंयथा ...	"
दन्तधावनेदिङ्निर्णयः ...	"
दन्तकाष्ठव्यवहारनिषिद्धजनाः	"
जिह्वालेखनगुणाः ...	११७६
चक्षुर्धावनविधिः ...	"
गण्डूषगुणाः ...	"
मुखप्रक्षालनगुणाः ...	११७७
अंजनधारणगुणमाह ...	"
कंकतीगुणाः ...	"
उष्णीषधारणगुणाः ...	"
श्मश्रुनखादिच्छेदनगुणाः ...	११७८
प्रभातद्रष्टव्याः ...	"
अग्निसेवनगुणाः ...	"
धूमदिनगुणाः ...	"
शिशिरगुणाः ...	११७९
कुज्झटिगुणाः ...	"
छत्रगुणमाह ...	"
वृष्टिगुणमाह ...	"
आतपगुणमाह ...	"
छायागुणमाह ...	"
यष्टिधारणगुणमाह ...	११८०
व्यायामगुणाः ...	"

विषयः		पृष्ठांकः
अगमर्द्दनगुणानाह	...	११८२
शरीरघर्षणगुणानाह	...	,,
पथश्रमणगुणानाह	...	,,
अतिश्रमणगुणाः	...	११८३
पादुकाधारणगुणाः	...	,,
अधारणेदोषोयथा	...	,,
हस्त्यादिगमनगुणाः	...	,,
विश्रामगुणाः	...	११८४
पादप्रक्षालनगुणाः	...	,,
प्राग्वातगुणमाह	...	,,
आग्नेयपवनगुणाः	...	,,
दक्षिणमारुतगुणाः	...	११८५
नैर्ऋत्यमारुतगुणाः	...	,,
पश्चिमपवनगुणाः	...	,,
वायव्यपवनगुणाः	...	११८६
उत्तरवायुगुणाः	...	,,
ऐशानवायुगुणाः	...	,,
नीहारादिसंयुक्तवायुगुणाः	...	११८७
विष्वग्वायुगुणाः	...	११८७
व्यजनानिलगुणाः	...	,,
तालपत्रवायुगुणाः	...	,,
वंशव्यजनवायुगुणाः	...	,,
उशीरमूलादिव्यजनगुणाः	...	११८८
बालव्यजनवायुगुणाः	...	,,
मयूरपक्षादिनिर्मितव्यजनवायुगुणाः		,,
ऋतुविशेषे वायुगुणाः	...	,,
अभ्यंगगुणाः	...	११८९
पादाभ्यंगगुणाः	...	,,
अभ्यंगवर्जितजनाः	...	,,
अवगाहनयुक्ततैलगुणाः	...	,,
तैलमर्दनविधिः	...	११९०
शिरसितैलमर्दनगुणाः	...	,,

विषयः		पृष्ठांकः
कर्णातैलपूरणगुणाः	...	
उद्वर्त्तनगुणाः	...	
मुखप्रलेपगुणाः	...	
अथस्नानगुणमाह	...	
उष्णाम्बुनास्नानगुणमाह	...	
द्रव्यविशेषेणस्नानगुणमाह	...	
स्नानस्यविशेषगुणमाह	...	
स्नाननिषिद्धजनाः	...	
शरीरमार्जनगुणाः	...	
वस्त्रधारणगुणाः	...	
रत्नाभरणधारणगुणाः	...	
गुर्वादेरर्चनगुणाः	...	
दर्पणगुणाः	...	
अनुलेपनगुणाः	...	
पुष्पादिधारणगुणाः	...	
भोजनादौलवणार्द्रकादिभक्षणगुणाः		
क्रमादन्नादीनांगुणाधिक्यमाह		
आहारगुणाः	...	
आहारेदिङ्निर्णयः	...	
भक्षणविषयेअन्नादीनांपरिमाणमाह		
आचमनगुणाः	...	
भोजनांतेकर्त्तव्यता	...	
भोजनान्तेउपवेशनादिगुणाः	...	
ताम्बूलगुणाः	...	
पूगफलगुणाः	...	
ताम्बूलपत्रगुणाः	...	
पर्णमूलादिगुणाः	...	
चूर्णगुणाः	...	
शंखचूर्णगुणाः	...	
खदिरगुणाः	...	
एलागुणाः	...	
लवंगगुणाः	...	

विषयः	पृष्ठांकः
जातीफलगुणाः ...	११९८
जातीकोषगुणाः ...	
कर्पूरगुणाः ...	,,
पूगस्यबालमध्यादिभेदेन गुणमाह	,,
ताम्बूलभक्षणनिषिद्धता ...	११९९
ताम्बूलस्यानुपयोगगुणाः ...	,,
अध्ययनादिगुणाः ...	,,
बुद्धिगुणमाह ...	,,
वयोमांसादिगुणाः ...	,,
पूतिमांसादिगुणाः ...	१२००
वयोभेदेनारीणांबालादिकथनम्	,,
बालादिस्त्रीसंसर्गगुणाः ...	,,
बालादिभेदेमैथुनकालनिर्णयः	,,
मैथुननिषिद्धता ...	,,
मैथुनकालनिर्णयः ...	१२०१
प्रतिमैथुनगुणाः ...	,,
सन्तानोत्पत्तिकालनिर्दिशन्नाह	,,
सुखशय्यासनगुणाः ...	,,
भूमिशय्यागुणाः ...	,,
खट्वापटशय्ययोर्गुणमाह ...	१२०२
ज्योत्स्नागुणाः ...	,,
अन्धकारगुणाः ...	,,
मैथुनगुणाः ...	,,
अतिमैथुनगुणाः ...	,,
मैथुनाकरणगुणाः ...	,,
परिमितमैथुनगुणाः ...	,,
निद्रागुणाः ...	१२०२
रात्रिजागरणंदिवास्वप्नयोर्गुणाः	१२०३
हेमन्तशिशिरकृत्यानि ...	,,
वसन्तकृत्यम् ...	१२०५
ग्रीष्मकृत्यम् ...	१२०६
वर्षाकृत्य	,,

विषयः	पृष्ठांकः
शरत्कृत्यम् ...	१२०७
अथ ग्रन्थकर्तुर्वंशवर्णनम् ...	१२०८
परिशिष्टभागः	१२१२
मायाफलनामानि ...	,,
मायाफलगुणाः ...	,,
समुद्रफलनामानि ...	१२१३
समुद्रफलगुणाः ...	,,
ब्रह्मदंडीनामानि ...	१२१४
ब्रह्मदण्डीगुणाः ...	,,
रंवटचीनीनामानि ...	१२१५
रंवटचीनीगुणाः ...	,,
चाहनामानि ...	१२१६
चाहगुणाः ...	१२१७
तमाखुनामानि ...	,,
तमाखुगुणाः ...	१२१८
ईषद्गोलनामानि ...	,,
ईषद्गोलगुणाः ...	,,
सुधामूलीनामानि ...	१२१९
सुधामूलीगुणाः ...	,,
रक्तमरिचनामानि ...	,,
कट्वीरागुणाः ...	१२२१
वनकुलत्थनामानि ...	,,
वनकुलत्थगुणाः ...	,,
महाराष्ट्रीनामानि ...	१२२२
महाराष्ट्रीगुणाः ...	,,
कीटमारीनामानि ...	१२२३
कीटमारीगुणाः ...	,,
सर्पदंष्ट्रानामानि ...	,,
सर्पदंष्टागुणाः ...	१२२४
उष्ट्रकंटनामानि ...	,,
उष्ट्रकंटगुणाः ...	१२२५
नखरंजकनामानि ...	,,

विषयः		पृष्ठांकः
नखरंजकगुणाः	...	१२२६
अन्धपुष्पीनामानि	...	,,
अन्धपुष्पीगुणाः	...	१२२७
दण्डोत्पलनामानि	...	,,
त्रिविधदण्डोत्पलगुणाः	...	,,
रुदन्तीनामानि	...	१२२८
रुदन्तीगुणाः	...	,,
चिरपोटानामानि	...	,,
चिरपोटागुणाः	...	१२२९
कुण्डिकानामानि	...	,,
कुण्डिकागुणाः	...	,,
कुम्भिकानामानि	...	१२३०
कुम्भिकागुणाः	...	,,
शैवालनामानि	...	१२३१
शैवालगुणाः	...	,,
अत्यम्लपर्णीनामानि	...	,,
अत्यम्लपर्णीगुणाः	...	१२३२
मखान्ननामानि	...	,,
मखान्नगुणाः	...	,,
मर्यादवल्लीनामानि	...	१२३३
मर्यादवल्लीगुणाः	...	,,
झिल्लनामानि	...	१२३४
झिल्लगुणाः	...	,,
एकवीरनामानि	...	,,
एकवीरगुणाः	...	१२३५
कंथारीनामानि	...	,,
कंथारीगुणाः	...	,,
आरिनामानि	...	१२३६
आरिगुणाः	...	,,
अमरवल्लीनामानि	...	,,
अमरवल्लीगुणाः	...	१२३७
अजगंधानामानि	...	,,

विषयः		पृष्ठांकः
अजगंधागुणाः	...	
वृद्धदारुकनामानि	...	
जीर्णदारुनामानि	...	
द्विविधवृद्धदारुगुणाः	...	
समुद्रशोषणगुणाः	...	
समुद्रपुष्पगुणाः	...	
फंजिकानामगुणाश्च	...	
वेल्लतरुनामानि	...	
वेल्लतरुगुणाः	...	
कर्कटनामानि	...	
कर्कटगुणाः	...	
किंकिणीनामानि	...	
किंकिणीगुणाः	...	
गोरक्षीनामानि	...	
गोरक्षीगुणाः	...	
पातालतुम्बीनामानि	...	
भूतुम्बीगुणाः	...	
हेरंबनामानि	...	
हेरंबगुणाः	...	
वृश्चिकानामानि	...	
वृश्चिकागुणाः	...	
तुवरनामानि	...	
तुवरगुणाः	...	
एरण्डचिर्भिटनामानि	...	
एरण्डचिर्भिटगुणाः	...	
क्षुद्रवादामनामगुणाश्च	...	
काम्बोजीनामगुणाश्च	...	
निर्विषीनामानि	...	
अस्यागुणाः	...	
नागजिह्वानामगुणाश्च	...	
माकन्दीनामानि	...	

विषयः		पृष्ठांकः	विषयः		पृष्ठांकः
अस्यागुणाः	...	१२५१	वनप्सानामानि	...	१२५४
झुल्लपुष्पनामगुणाश्च	...	,,	अस्यागुणाः	...	,,
आखराणीनामगुणाश्च	...	१२५२	आलुकनामगुणाश्च	...	१२५५
आबुकनामगुणाश्च	...	,,	अस्यागुणाः	...	,,
राजाद्रिनामगुणाश्च	...	१२५३	पुष्पगोभीनामानि	...	,,
अस्यागुणाः	...	,,	अस्यागुणाः	...	,,
प्रसपुत्रीनामानि	...	,,	पुत्रगोभीगुणाः	...	१२५६
अस्यागुणाः	...	१२५४	ग्रन्थगोभीगुणाः	...	,,

इति।



श्रीः ।

शालिग्रामनिघण्टुभूषणकी अकारादिक्रम हिन्दी--अनुक्रमणिका ।

विषयः		पृष्ठांकः	विषयः		पृष्ठांकः
अकरकरा	...	१५५	अन्धाहुली	...	४५५-११
अखरोट	...	६०६	अन्धदेशकी सुपारी	...	
अगर	...	२३	अपराजिता	...	
अगस्तिया	...	५२२	अपामार्ग	...	
अगेथू	...	२६८	अफीम	...	
अग्निदमन	...	५२८	अभ्रक	...	
अङ्कोल	...	३५०	अमरवेल	...	
अंगरापन	...	२५५	अमरूद	...	
अंगूर	...	६४३	अमलतास	...	
अजकर्णशाल	...	६६६	अमलवेत	...	
अजवा (यन) यन	...	१३२	अमृतफल	...	
अजमोद	...	१३३	अम्बाडा	...	
अञ्जन	...	७३२	अम्लवाटीपान	...	
अंजीर	...	६३४	अरणी	...	
अडूसा	...	३१३	अरण्ड	...	
अडहर	...	८३७	अरलू	...	
अण्ड	...	२९२	अरहर	...	
अण्ड खरबूजा	...	१२४६	अरिमेद	...	
अतिबला	...	३५४	अरिष्टक	...	
अतीस	...	२१९	अर्कपुष्पी	...	
अत्यम्लपर्णी	...	१२३१	अर्कवर्ग	...	
अदरख	...	१११	अर्जक	...	
अनन्तमूल	...	४२९	अर्जुन	...	
अनन्नास	...	६३३	अलम्बुषा	...	
अनार	...	५५४	अलसी	...	
अनूपादिवर्ग	...	११३३	अलाबू	...	

विषयः		पृष्ठांकः	विषयः		पृष्ठांकः
वरक	...	७४०	इक्षुवर्ग	...	१०७८
शोक	...	५१०	इक्षुविकार	...	१०८३
श्वकर्ण	...	६६५	ईख	...	१०७८
सगंध	...	३८८	ईश्वरलिंगी	...	४३८
सन	...	६७०	ईसबगोल	...	१२१८
सवरग	...	८८	उटंगण	...	८७८
ष्टवर्ग	...	१७०	उडद	...	८२६
ाक	...	२९६	उदयभास्करकपूर	...	५
ाकाशवेल	...	४४८	उदुम्बर	...	६५७
ाकाशमांसी	...	६१	उपजाती	...	४८४
ाखूपाषाण	...	८०६	उपविष	...	८०७
ातसीसीसा	...	७९३	उपोदकी	...	८७२
ादित्यपत्रा	...	४६७	उशीर	...	६६
ादित्यभक्ता	...	४६५	ऊख	...	१०७८
ाम	...	५४३	ऊखल तृण	...	३७३
ामडा	...	५५०	ऊंटकटीरा	...	१२२४
ामला	...	१०७	ऋद्धि	...	१६७
म्बिया हलदी	...	२१०	ऋषभक	...	१६४
रग्वध	...	१७५	एकवीर	...	१२३४
री	...	१२३६	एकांगी	...	८६
लुकी	...	९४३	एनोना	...	६३२
लू	...	९४३	एस्कातृण	...	३६७
लू बुखारा	...	५८९	एरण्ड	...	२९१
सन	...	६७०	एरवारु	...	८९२
दी	...	७३०	एला	...	४९
जो	...	१८३	एलुआ	...	८९
ायन	...	४०२	एलुबा	...	४२०
ली	...	५८६	ओखराणी	...	१२५२
ायची	...	४९	ओंगा	...	४१३
ात	...	७२१	ओट	...	५९१
दम	...	३७३	ओडहुल	...	५२०
			ओल	...	९४०

विषयः	पृष्ठांकः	विषयः	पृष्ठांकः
औद्भिदनोन ...	२४४	कठिनी ...	
औंधाहुली ...	१२२६	कठूमर ...	
औषरनोन ...	२४४	कठैल ...	
कऊंच ...	३४३	कड़बीककडी ...	
ककडी ...	८९३	कड़वीकन्दूरी ...	
ककरोंदा ...	४७७	कड़वीजीवन्ती ...	
ककहिया ...	३५४	कड़वीतुम्बी ...	
ककोडा ...	९१५	कड़वीतोरई ...	
कंगुष्ठ ...	७६०	कडवेपरवल ...	
कङ्कोल ...	५२	कटसरैया ...	
कंगुनी ...	८५२	कण्टकारी ...	
कंघी ...	३५४	कण्टाई ...	
कचनार ...	३२२	कण्टाफल ...	
कचारया ...	८९९	कण्टालु ...	
कचियानोन ...	२४३	कणगूगल ...	
कचूर ...	८३	कतकफल ...	
कचुर भेद ...	२११	कत्तण ...	
कञ्ज ...	७९७	कत्था ...	
कञ्चट शाक ...	८६९	कदली ...	
कञ्जुआ ...	३३५	कदलीकन्द ...	
कटभी ...	७००	कद्दू ...	
कटसरैया ...	५१३	कदम ...	
कटहर ...	५९४	कनकधतूरा ...	
कटाई ...	२७५	कनेर ...	
कटीधान्य ...	८५८	कन्तार ईख ...	
कटीलानोन ...	२४१	कन्थारी ...	
कटुकी ...	१७७	कन्द ...	
कटेरी ...	२७८	कन्दगिलोय ...	
कटेल्या ...	२७८	कन्दूरी ...	
कट्फल ...	१९७	कन्नानींबू ...	
कटपाडर ...	२६५	कपर्दक ...	
कटपुखा ...	४०६	कपास ...	

विषयः		पृष्ठांकः
कपित्थ	...	६१८
कपिलद्राक्षा	...	६४३
कपिलशिंशपा	...	६६३
कपूर	...	४
कपूर कचरी	...	८४
कपूर हलदी	...	२१०
कमरख	...	६१७
कमल	...	७३१
मलकन्द	...	६३५
मलकी नाल	...	५३८
मलके नवीन पत्र	...	५३५
मलकेशर	...	५३६
मलगट्टा	...	५३७
मलगट्टेका घर	...	५३७
मलिनी	...	५३८
वोइ	...	१२४९
ली	...	८८०
न्दा	...	६२०
रियसेम	...	९२६
यासाक	...	४३०
ल	...	६९४
ला	...	९१६
ंदा	...	६२०
ज्ञ	...	३३५
ञ्जुवा	...	३३९
रिनिर्गुण्डी	...	३३३
म	...	७६५
टशिंगी	...	१९६
ाकार	...	१७७—५०६
र हलदी	...	२१०
ादि वर्ग	...	१
कर्र	...	८६०
कलई	...	७१६
कलगा	...	५०२
कलगाघास	...	१२५३
कलपत्ती हींग	...	१४८
कलमी आम	...	५५०
कलमी शांक	...	८७७
कसम्बक	...	१८
कलाय	...	८३८
कलिंग	...	९०२
कलिहारी	...	३०५
कह्लार	...	५४०
कवाबचीनि	...	५२
कवीली	...	१७३
कवैय्या	...	४४०
कसीस	...	७५२
कसूम	...	२०६
कसेरू	...	९५५
कसौदी	...	८८२
कस्तूरी	...	६
कह्सा	...	८४०
कांस	...	६७९
कांसी	...	७२४
काकजंघा	...	४४२
काकड़ाशिंगी	...	१९६
काकतेंदू	...	५९९
काकनासा	...	४४३
काकमाची	...	४४०
काकोली	...	१६८
कागजी नींबू	...	५८१
कांगुनी	...	८५२

४

विषयः		पृष्ठांकः
काचलवण	...	२४३
काजूतक	...	६४७
काञ्चनार	...	३२२
काञ्चनी	...	३२५
कांच	...	७९६
काठ आमला	...	१२४२
काण्डेक्षु	...	१०८०
कायफल	...	१९८
कालकूट	...	८००
कालाकेला	...	५६४
कालागन्ना	...	१०७९
काला गूलर	...	६५९
कालाचन्दन	...	१८
कालाचीता	...	१२५
कालाजीरा	...	१४०
कालाजीरी	...	१४३
कालाञ्जनी	...	३५९
कालाहाना	...	४०३
कालाधतूरा	...	३११
कालानिशोथ	...	३९३
कालानोंन	...	२४३
कालासीसम	...	६६३
कालासुरमा	...	७३२
कालासेमर	...	६९०
कालिंग	...	९०२
कालीअगर	...	२४
कालीकनेर	...	३०७
कालीकपास	...	३५८
कालीतुलसी	...	५२५
कालीदाख	...	६४३
कालीमट्टी	...	७६५
कालीमिरच	...	११४
कालीमुसली		२८४

विषयः		पृष्ठांकः
कालीमूंग	...	८
कालीसद	...	४
कालीहलदी	...	
कालेतिल	...	
कांस	...	
कांसा	...	
कासालु	...	
काशीफल	...	
काष्ठकदली	...	
काष्ठदेवदारु	...	
काष्ठागुरु	...	
काष्ठालू	...	
किंकिणी	...	
किंकिरात	...	
किन्दुरु	..	
किंवांच	...	
किरमानी अजवायन	...	
किरमाला	...	
किसमिस	...	
कीकर	...	
कीच	...	
कीडामारी	...	
कुकरौंदा	...	
कुकुरभांगरा	...	
कुचला	...	
कुटकी	...	
कुड़ा	...	
कुणञ्जर	...	
कुन्द	...	
कुन्दुरु	...	
कुब्जक	...	
कुमारी	...	

विषयः		पृष्ठांकः
सुद	...	५४०
मुदनी	...	५४२
म्मेर	...	२६२
हड़ा	...	८८७
रंड वृक्ष	...	१२२९
लथी	...	८४२
लफा	...	८६४
लींजन	...	१५२
शा	...	३६८
सुमाञ्जन	...	७३३
जा	...	४९०
ट	...	८२
ठशाल्मली	...	६९१
मिशंख	...	७६०
ष्णानिम्ब	...	३२१
ष्णमृत्तिका	...	७६५
ष्णबोल	...	४२०
ष्णशुक्रपान	...	२५६
ष्णव्रीही	...	८१३
ष्णमुद्ग	...	८२४
ष्णागुरु	...	२४
ष्णार्जक	...	५२९
ष्णेक्षु	...	१०७९
कुंभा	...	९५६
तकी	...	५०८
राव	...	८३९
ला	...	५५७
वड़ा	...	५०८
वटीमोथा	...	७६
सर	...	१२
मू	...	९५६
य	...	६९५

विषयः		पृष्ठांकः
कैंवरती पुस्तक	...	७६
कैरवलीफल	...	५४१
कैलैया	...	४१६
कोइली	...	३२९
कोईं	...	५४०
कोकम्ब	...	५९२
कोकरुन्दा	...	४७७
कोकिलाक्ष	...	४१६
कोदौ	...	८५७
कोरैया	...	१८१
कोयल	...	३२९
कोलकन्द	...	९४७
कोलसिम्बी	...	९२५
कोलेका शाक	...	८८७
कोशम्भ	...	५५२
कोशातकी	...	९०४
कोशाम्र	...	५५२
कोषकार इक्षु	...	१०८०
कोह	...	७०९-६६७
कोहडी	...	८८९
कौआठोडी	...	४४३
कौंच	...	३४३
कौडयाली	...	४५३
कौडी	...	७५५
कौरैया	...	३३३
कोहा	...	६६८
खखसा	...	९१५
खजूर	...	५६९
खडिया	...	७५४
खपरिया	...	७३६
खरबूजा	...	९००
खस	...	६६

विषयः		पृष्ठांकः
खसखस	...	२३२
खाँड	...	१०८७
खारी	...	२४४
खिरनी	...	६२९
खिरैंटी	...	३५
खिसारी	...	८४०
खीरा	...	८९६
खुरासानी अजवायन	...	९३६
खुरासानी अजमोद	...	१३५
खुरासानी वच	...	१५०
खेखसा	...	८१५
खेसारी	...	८४०
खैर	...	६७१
खैर सार	...	६७२
खोपडा	...	५६४
गङ्गत्रिया	...	७१
गङ्गेटी	...	४२२
गङ्गेरन	...	३५५
गंगेरुआ	...	१२४३
गजकरण आलू	...	९४३
गजपीपल	...	१२१
गजहन्दू	...	६३४
गठिवन	...	८०
गण्डनी	...	४५३
गधहपूर्णा	...	४२२
गनयारी	...	२६८
गंधक	...	७४३
गंधनाकुली	...	९५०
गन्धपलाशी	...	८४
गंधप्रसारणी	...	४२७
गंधप्रियंगु	...	६४
गन्धविरोज	...	४०

विषयः		पृष्ठांकः
गन्धमांसी	...	
गन्धमार्जारवीर्य्य	...	
गन्धराजगूगल	...	
गन्धेजघास	...	
गन्ना	...	
गरहेडुआ	...	
गवेधुका	...	
गाजर	...	
गाँक्षा (ज)	...	
गाँडर	...	
गाँडरदूब	...	
गारा	...	
गिलोय	...	
गिलोयका सत्त	...	
गुग्गुल	...	
गुच्छकरञ्ज	...	
गुच्छकन्द	...	
गुजराती इलायची	...	
गुञ्जा	...	
गुठवा	...	
	...	
गुडकी खाँड	...	
गुडहर (ल	...	
गुडूच्यादिवर्ग	...	
गुडेहर	...	
गुण्डतृण	...	
गुण्डासिनीतृण	...	
गुंदवरोसा	...	
गुन्द्रपटेर	...	
गुरभीहूँ	...	
गुलतुर्रा	...	
गुलतोरा	...	

विषयः	पृष्ठांकः
गुलदुपहरिया ...	,,
गुलपरी ...	,,
गुलबनपला ...	१२५४
गुलसकरी ...	३५५
गुलाब ...	४९०
गुहागरीसुपारी ...	६०८
गूगरी ...	४०
गूगल ...	३१
गूमा ...	४६४
गूलर ...	६५७
गोजुनिया ...	५१७
गोटी ...	९४७
गोरु ...	७३
गोहूँ ...	८१७
गोंदा ...	५४२
गोखरू ...	२८०
गोजिया ...	४७३
गोंदपटेर ...	३६७
गोंदी ...	३६७
गोधूम ...	८१७
गोपीचंदन ...	७६४
गोभी ...	४७३
गोमा ...	४६४
सत्रतृण ...	३७३
मेदमणि ...	७८९
रखइमली ...	१२४२
रखककडी ...	८९९
रखमुण्डी ...	४११
राणी ...	९२३
रोचन ...	६८
डकद्दू ...	८८९
लमिरच ...	११८
गोलमूली ...	९३५
गौरसर्षप ...	८४७
गौराशाख ...	११
गौरियावासाऊँ ...	४३०
गौरीसर ...	,,
गौलोचन ...	६८
गृञ्जन ...	९३९
ग्रन्थिपर्ण ...	७९
ग्वारपाठा ...	४१८
ग्वारकी फली ...	९२३
घनवहेडा ...	७७
घागर्ही ...	४३३
घियातोरई ...	९०४
घीकुवार ...	४१८
घुइयां ...	९४३
घूँघरूमोतिया ...	४८५
घुघुची ...	३४१
घृतकरञ्ज ...	३३५
घृतवर्ग ...	१०२५
घोघा ...	७६०
घोडाकरञ्ज ...	३३५
घोडावच ...	१५०
चकवड ...	२१७
चकोतरा ...	५८५
चचेंडा ...	९०८
चंचू ...	८७५
चण्डालकन्द ...	९५२
चणक ...	८३४
चणिकातृण ...	३७७
चनकबाव ...	५२
चने ...	८३४
चनेकाखार ...	७४८

विषयः		पृष्ठांकः
चनेकाशाक	...	८३६
चन्दनसफेद	...	१५
चन्दापुरीसुपारी	...	६०८
चन्द्रकान्तमणि	...	७९४
चन्द्रस	...	४०
चन्द्रसूर	...	१३१
चमरिखासेम	...	९२६
चम्पईकेला	...	५६४
चम्पा	...	४९३
चम्पापुरीसुपारी	...	६०८
चम्बेली	...	४८७--४८४
चरेली	...	४६२
चवरा	...	८२६
चव्य	...	११९
चाँदी	...	७१२
चावल	...	८०८
चाकसू	...	८६०
चाह	...	१२१२
चाबु	...	१२२१
चित्रक	...	१३३
चिरचिटा	...	४१३
चिरपोटन	...	१२२८
चिरमिटी	...	३४१
चिरायता	...	१७९
चिलक	...	३४६
चिल्लीशाक	...	८६४
चिरौंजी	...	६२८
चीड	...	२७
चीता	...	१२३
चीना	...	८५२
चीनाककड़ी	...	८९५
चीनामेद	...	८५५

विषयः	
चिनियाकपूर	...
चीनीकबाब	...
चुम्बक	...
चूक	...
चूका	...
चूर्णहार	...
चैना	...
चोक	...
चोरक	...
चोबचीनी	...
चौंटली	...
चौपतिया	...
चौरा	...
चौलाई	...
चौहाड़कोड़ा	...
छतिवन	...
छतौना	...
छरीला	...
छिकनी	...
छिरहटा	...
छिलहिण्ड	...
छुईमुई	...
छुबारीअजमोद	...
छुहारा	...
छोकरा	...
छोटाकचूर	...
छोटाकिरायता	...
छोटागोखरू	...
छोटाजवासा	...
छोटीअरणी	...
छोटीइलायची	...
छोटीकटाई	...

विषयः	पृष्ठांकः	विषयः	पृष्ठांकः
छोटीकाँच	३४४	जाफर	५२०
छोटीजामुन	६५१	जामुन	६४९
छोटीमुण्डी	४११	जायफल	४५
छोला	८३४	जावित्री	४७
जंगमविष	८०२	जिंगनी	६८२
जंगलीगाजर	९३७	जियापोता	६७९
जंगलीसूरण	९४२	जीरा	१३८
जंगलीहलदी	२११	जीवक	१६३
जटामांसी	६१	जीवन्ती	२८३
जतुका	९२	जुही	४८७
जमालगोटा	३९८	जेठीमधु	१७१
जमीकन्द	९४०	जौ	८१५
जम्भीरीनींबू	५८२	ज्वार	८१९
जवापुष्प	५२०	झड़बेर	६२५
जरडीतृण	३७४	झाऊवृक्ष	१२५२
जल	९५५	झिपनी	९०६
जलकुम्भी	१२३०	झिल	१२३४
जलचौंलाई	८६९	झुनझुनिया	४३३
जलजामुन	६५०	टङ्कारी	३४६
जलनीली	१२३०	टिण्टेका शाक	९१९
जलपीपल	४७१	टेंटू	२७०
जलपुष्प	१२५१	टेरा	३५०
जलमहुवा	६०४	टेसू	६८५
जलमुलेठी	१७३	डाभ	३६८
जलवेंत	३४७	डावड़ा	२७४
जलसिरस	७०२	डिकामाली	१४८
जलसीप	७५७	डोडी	२८३--२८६
जवादिकस्तूरी	५१	ढाक	६८५
जवाखार	२३३	ढाढोन	७०३
जवानी	१३६--२३५	ढेरा	३५०
जवासा	४०९	ढेंढस	९१९
जस्त	७२०	ढोलसमुद्र	७०३
जातीपुष्प	४८३		

विषयः	पृष्टांकः	विषयः	पृष्ठांक
तक्रवर्ग ...	१०१३	तुम्बुरु ...	
तगर ...	२९	तुम्बा ...	
तङ्कारी ...	३४६	तुरञ्जबीन ...	
तज ...	५५	तुलसी ...	
तमाखू ...	१२१७	तूत ...	
तमाल ...	६८३	तूतिया ...	
तरबूज ...	९०२	तृणधान ...	
तवरक ...	१२४५	तृणाख्य ...	
तवाखीर ...	६०	तेजपात ...	
ताल ...	६११	तेजवल ...	
तापसेख्यु ...	१०८१	तेजोमन्थ ...	
तांबा ...	७१४	तेंदू ...	
ताम्बूल ...	२५३	तैलकन्द ...	९५२
ताल ...	६११	तैलवर्ग ...	
तालमखाना ...	४१६	तौंबी ...	
तालीसपत्र ...	५९	तोर ...	
तितलौआ ...	८९१	तोरई ...	
तितलौंकी ...	८९१	तृणकेशर ...	
तिधारीकांडवेल ...	३०३	तृशाख्यतृण ...	
तिनस ...	७०५	त्रायमाण ...	
तिनसुना ...	७०४	त्रियपर्णीकन्द ...	९५३
तिरच्छ ...	६०५	थुनेर ...	
तिरीफल ...	३९५	थूहर ...	
तिल ...	८४३	दण्डोत्पल ...	
तिलक ...	५०२	दधियार ...	
तिलवन ...	१२३७	दधिवर्ग ...	
तिली ...	८४३	दन्ती ...	
तिसी ...	८४५	दवनपापड़ा ...	
तिनी ...	८५३	दवना ...	
तीसरीसनपुष्पी ...	४३३	दक्षिणीमिरच ...	
तुन ...	६८४	दाख ...	
तुवर ...	१२४५	दाड़िम ...	

विषयः	पृष्ठांकः
दाभ ...	३६८
दारुहलदी ...	२१२
दालचीनी ...	८५
दाहागरु ...	२५
दीर्घरोरिष ...	३६३
दुग्धफेनी ...	४५८
दुग्धवर्ग ...	९८१
दुद्धी ...	४५९
दुपहरिया ...	५१६
दुर्गन्धखैर ...	६७३
दुलाह ...	४०९
दूधविदारी ...	३८१--३७१
दूधिया ...	४५९
दूधी ...	४५९
दूधीकलव ...	४५९
दूब ...	३७८
दूसरा लज्जालु ...	४५७
दूसरा सौनाक ...	२७०
दूसरी सनपुष्पी ...	४३३
देवदारु ...	२५
देवदाली ...	४७०
देशीबादाम ...	१२४८
दोना ...	५२७
दोला ...	२७४
द्रौणीलवण ...	२४५
धतूरा ...	३०९
धनियाँ ...	१४४
धन्वङ्गवृक्ष ...	६९३
धन्वनवृक्ष ...	६९३
धमासा ...	४०८
धरणीकन्द ...	९४९
धव ...	६९२
धवाईके फूल ...	२०१
धातुउपधातुवर्ग ...	७०९
धान्य ...	८०७
धान्यवर्ग ...	,,
धामिन ...	६९२
धायकेफूल ...	२०१
धाराकदम्ब ...	५०३
धावाई ...	२०१
धूपसरल ...	२७
धूलिकदम्ब ...	५०५
धूसरमूँग ...	८२४
धौ ...	६९२
नकछिकनी ...	४७६
नकुलकन्द ...	१८८
नख ...	६९
नखी ...	६९
नदीगूलर ...	६४०-६५९
नदीजामन ...	६५०
नदीभल्लातक ...	२२५
नरकचूर ...	८३
नरसावाडी ...	३५८
नरसल ...	३६४
नरसार ...	२४५
नरियल ...	५६४
नर्त्तक ...	८५५
नल ...	३६३
नलिका ...	९३
नवडा ...	८६७
नवनीतवर्ग ...	१०२०
नवसादर ...	२४९
नवीन प्राचीन धान ...	८६१
नवीन प्राचीन पान ...	२५६

विषयः		पृष्ठांकः	विषयः		पृष्ठांकः
नाई	...	१८८	नीलीचम्पा	...	
नाकुछिकनी	...	९७०-४७३	नीलीदूब	...	
नाकुलीकन्द	...	१८८	नीलीसाँठ	...	
नागकेशर	...	५४	नीलेकुसुद	...	
नागचम्पा	...	४९५	नीलेफूलकी कटसरैया	...	
नागदौन	...	४७४	नीलोत्पल	...	
नागपुष्पी	...	४४४	नीवारधान	...	
नागरपान	...	२५३	नेत्रवाला	...	
नागरमोथा	...	७३	नेनुआ	...	
नागार्जुनी	...	४५९	नेपालनी	...	
नाडीकाशक	...	८७६	नेवारी	...	
नाडीहिंगु	...	१४८	नैलवत ग्रामकी सुपारी	...	
नारियल	...	५६४	नोनियाका शाक	...	
नारंगी	...	५७६	नोसादर	...	
नालशाक	...	९३०	पटसण	...	
नासपाती	...	५७४	पटुआशाक	...	
निर्गुण्डी	...	३३३	पटेर	...	
निर्विषी	...	१२४९	पठानीलोध	...	
निर्मलीफल	...	६४२	पण्यन्धातृण	...	
निष्पाव	...	८३१	पतंग	...	
निष्पावी	...	९२४	पतालआमरा	...	
निःश्रेणीतृण	...	३७४	पतिजिया	...	
निसोथ	...	३९२	पत्रज	...	
निसोरें	...	६४०	पत्थरका फूल	...	
नींबू	...	५८१	पनाख	...	
नीम	...	३१६	पनिड़ी	...	
नीलकमल	...	९३२	पनिखर	...	
नीलका वृक्ष	...	४०४	पनसी	...	
नीलमणि	...	७८८	पनिसिगा	...	
नीलसम्हालू	...	३३१	पन्ना	...	
नीलाथोथा	...	७३४	पपरियाकत्था	...	
नीलबड़	...	९४६	पपरी	...	
नीलीकोयल	...	३३०	पमार	...	

विषयः	पृष्ठांकः	विषयः	पृष्ठांकः
परवल ...	११०	पिठौनी ...	२७४
परूषा ...	६३५	पिण्डखजूर ...	५६९
कर्णकपूर ...	५	पिण्डमूल ...	१३९
पलाण्डु ...	१३३	पिण्डार ...	११९
पलास ...	६८५	पिण्डालू ...	१४२
पल्लिवाडतृण ...	३७५	पितौजिया ...	६७९
पवाड ...	२१७	पित्तपापडा ...	३१४
पवारी ...	१२	पियावाँसा ...	५१३
पसरन ...	४२७	पियासाल ...	६७०
पाखर ...	६५६	पिलखन ...	६५६
पाखानभेद ...	२००	पिस्ता ...	६३४
पाङ्गानोन ...	२४०	पीतचन्दन ...	१९
पाटली ...	४२१	पीतल ...	७२५
पाठा ...	३९०	पीपरामूल ...	११८
पाढ ...	३९०	पीपल ...	११६
पाढर ...	२६५	पीपलकावृक्ष ...	६५३
पाढल ...	२६५	पीलाकेला ...	५६३
पाण्डुफली ...	४२१	पीलागेरू ...	७५३
पातालगरुडी ...	४१९	पीलाचन्दन ...	१९
पातालतौंबी ...	१२४३	पीलाभांगरा ...	४३१
पान ...	२५३	पीलीकचनार ...	३२५
पानी ...	९५९	पीलीकनेर ...	३०७
पानीआमला ...	६१९	पीलीकेतकी ...	५०८
पानीयालू ...	९४७	पीलीचमेली ...	४८३
पाँयपसारी ...	६४२	पीलीजाती ...	४८३
पारसीकअजमोद ...	१३६	पीलीजीवन्ती ...	२८५
पारसीकवच ...	१५०	पीलीजुही ...	४८८
पारा ...	७२६	पीलेफूलका भांगरा ...	४३१
पारिसपीपल ...	६५४	पीलेफूलकी कटसरैया ...	५१३
पारेवत ...	६३९	पीलू ...	६०४
पालककाशाक ...	८७०	पुखराज ...	७८७
पिठवन ...	२७४	पुण्डरीक ...	१०

विषयः	पृष्ठांकः	विषयः	पृष्ठांकः
पुनर्नवा ...	४२३	फटकिरी ...	
पुनेरा ...	८६१	फटिकमणि ...	
पुन्नागपुष्प ...	५११	फणासी ...	
पुरानेपान ...	२५५	फरवेंदू ...	
पुरी ...	८८	फरवाह ...	
पुष्प ...	४८१	फरहद ...	
पुष्पकासीस ...	७७१	फरेन्द्र ...	
पुष्पवर्ग ...	४८१	फलवर्ग ...	
पुष्परस ...	४८१	फलशाक ...	
पुष्पशर्करा ...	१०९७	फाणित ...	
पुष्पशाक ...	८८८	फालसा ...	
पुष्पाञ्जन ...	७३३	फिरोजा ...	
पूतिकरञ्ज ...	७३३	फूट ...	
पूरबीइलायची ...	४९	फूलगोभी ...	
पृष्ठपर्णी ...	२७४	फूलप्रियंगू ...	
पेठा ...	८८७	फोण्डालू ...	
पैमदीबेर ...	६२३	फौलाद ...	
पोईकाशाक ...	८७२	वंशपत्रीतृण ...	
पोटकुलीपान ...	२५६	वंशलोचन ...	
पोदीना ...	९३	बक ...	
पोस्त ...	२३०	बकाइन ...	
पोस्तकेडोडे ...	२३०	बकुल ...	
पोहकरमूल ...	१९३	बघौला ...	
पौंढ़ा ...	१०७९	वंग ...	
पौंडेबेर ...	६२३	वच ...	
पौंडकईख ...	१०७९	वच्छनाभ ...	
प्याज ...	९३३	वज्रदन्ती ...	
प्रदीपन ...	८००	वज्रवल्ली ...	
प्रपौण्डरीक ...	९०	वटादिवर्ग ...	
प्रसारणी ...	४२७	वड ...	
प्रियंगू ...	६४	वटपत्री ...	
फञ्जी ...	१२४०	वडहर ...	

विषयः		पृष्ठांकः
डीअण्ड	...	२९२
ड़ीजम्भीरी	...	५८२
ड़ाजलवेंत	...	३४९
ड़ानस	...	३६३
ड़ानील	...	४०५
डापील्	...	६०४
डाबथुआ	...	८६२
डावेंत	...	३४९
डीइन्द्रायण	...	४०२
डीइलायची	...	४९
डीकटेरी	...	२७७
डीकदम्ब	...	५०३
डीगंगेन	...	३५३
डीजीवन्ती	...	२८५
डीदन्ती	...	३९८
डी नौनिया	...	८६४
डीमालकांगनी	...	१९२
डीमुण्डी	...	४११
डीमूली	...	९३५
डीमूषाकर्णी	...	४८०
डीमौलसिरी	...	४९९
डीशतावर	...	३८५
र	...	५९६
सरौ	...	४३३
नाभ	...	७९८
आ	...	८६३
म	...	५७२
डदी	...	२८८
ककड़ी	...	८९५
कदली	...	५६२
कपास	...	३५९
कुलथी	...	१२२१

विषयः		पृष्ठांकः
वनतुलसी	...	५२९
वनदौना	...	५२८
बंननिर्गुण्डी	...	३३३
बनपीपल	...	९२२
वनबथुआ	...	८६२
वनविजोरा	...	५८१
बनवेला	...	४८५
वनसोंगरा	...	४८५
वनसोतिया	...	४८५
वनहलदी	...	२११
बनहुला	...	४९८
वन्दा	...	४५०
वन्दाल	...	४७०--४५०
वन्धूक	...	५१६
बबूर	...	६७६
वमनेटी	...	१९९
बबूला	...	५४०
वरना	...	६९८
वरवरचन्दन	...	२१
बरबरी	...	५२९
बरवेल	...	१२४०
बरबेला	...	४८५
बरसंग	...	३२१
बरहण्टा	...	२७५
वरह्मी	...	४६२
बरियारी	...	३५२
बलगुलग्रामकी सुपारी	...	६०८
बलाचतुष्टय	...	३५७
वल्लीखदिर	...	६७४
बल्लीपाढल	...	२६७
बल्लीयष्टिमधु	...	१७१
वल्लिजातृण	...	३७३

विषयः	पृष्ठांकः	विषयः	पृष्ठांकः
बहवार ...	६४	विष ...	
बहेडा ...	१०३	विषखपरा ...	
बाकुची ...	२१५	विषवर्ग ...	
बाकुचीभेद ...	२१६	विषांविल ...	
बाजरा ...	८२१	विष्णुकन्द ...	
बांझककोडा ...	४६७	विहारीनींबू ...	
बांझखखसा ...	४६७	विजबन्द ...	
बादाम ...	५७२	विजाबोल ...	
बांदा ...	४५०	वीरण ...	
बायविडंग ...	१५७	वीरतरु ...	
बाराहीकन्द ...	९४७	वीह ...	
वारिवर्ग ...	९५९	बूरा ...	
वार्षिकी ...	४८५	वृत्तगुण्ड ...	
बालछड ...	६१	वृद्धि ...	
बालमखीरा ...	८९६	वृश्चिका ...	
वावची ...	२१५	बृहती ...	
बालू ...	७६४	बृहतीभेद ...	
बांस ...	३६१	वेट्टचन्दन ...	
बांसकेचावल ...	८६०	वेदअंजीर ...	
बासन्ती ...	४८७	बेर ...	
वांसा ...	३१३	बेरीकापेड ...	
बास्तुक ...	३१३	बेलफल ...	
विकंकत ...	६२६	वेलन्तर ...	
विछुवाघास ...	१२४५	वेलियापीपल ...	
विजयसार ...	६७०	वैक्रान्तमणि ...	
विजया ...	२२५	वैंगुन ...	९२०-
विजौरा ...	५७८	बैंत ...	
बिडियासंचरनोन ...	२४१	वैडूर्यमणि ...	
बिदारीकन्द ...	३८१	वोदार ...	
विधारा ...	१२३८	वोल ...	
विपरीतलज्जालू ...	४५७	वोलसिरी ...	
बिलारीकन्द ...	९५१–३८२	ब्रह्मदण्डी ...	

विषय:		पृष्ठांक:
ह्मनेठी	...	५९३
ह्मपुत्रविष	...	८०१
ह्ममण्डूकी	...	४६२
ह्मसोंचली	...	४६६
ह्मी	...	४६२
ह्यी	...	४६२
हिधान्न	...	८१२
ग	...	२२५
गरा	...	४३१
टकटैया	...	२७७
टवासू	...	८३१
टेउर	...	८३१
ण्टा	...	९२०
द्रदन्ती	...	३९८
द्रमोथा	...	७४
व्यफल	...	५९१
ल्लातक	...	२२२
सींडा	...	५३९
ांगरा	...	४३२
ारंगो	...	१९१
मेण्डी	...	९१९
ीरुकईख	...	१०८०
सेर्बोलीकन्द	...	९४७
मेलुय:कद्दू	...	८८९
भिलावे	...	२२२
ुईंआमला	...	४६०
ुईंकदम	...	५०५
ुईखखसा	...	४६९
ुइचम्पा	...	४९४
ुईंजामुन	...	६४९
ुईंपाढर	...	२३७
कुर	...	८९८

विषय:		पृष्ठांक:
भूमिजगूगल	...	३६
भूस्तृण	...	३७१
भूरिछरीला	...	७७
भेरवन्द	...	१८९
भैंसियागूगल	...	३१
भैंसियाकन्द	...	९४६
भोजपत्र	...	६८४
भ्रमछल्ली	...	१२३६
मकरन्द	...	५३८
मकरतेंदुआ	...	६००
मकोय	...	४५०
मक्का	...	८६०
मखमली	...	५१८
मखाने	...	१२३२
मगरेला	...	१४२
मंगलागुरु	...	२४
मछेछी	...	४५२
मज्जरतृण	...	३७४
मजीठ	...	२०३
मटर	...	८३८
मडुआ (चीनाभेद)	...	८५५
मण्डूर	...	७२३
मण्डूकपर्णी	...	४६२
मत्स्यण्डी	...	१०८४
मदिरा	...	१०९७
मधुककड़ी	...	५८६
मधुवर्ग	...	१०७३
मधुशर्करा	...	१०९०
मनोगुप्ता	...	१०८१
मन्थानकतृण	...	३७५
मन्दार	...	२५५
मयूरशिखा	...	४८०

विषयः	पृष्ठांकः	विषयः	पृष्ठांकः
मरसा	...८६७-८५[illegible]	मालाकन्द	...
मरिच	... ११४	माषपर्णी	...
मरुआ	... ५२५	मांसरोहिणी	...
मरेठी.	... १२२२	मिट्टी	...
मर्कटीपीपल	... १२३	मिरचकाली	...
मर्यादवेल	... १२३३	मिरचलाल	...
मल्लिका	... ४८६	मिरचियागन्ध	...
मषवन	... २८८	मिश्रवर्ग	...
मसी	... ४४२	मिश्री	...
मसीना	... ८४५	मीठाजम्भीरी	...
मसूर	... ८३२	मीठानींबू	...
महंदी	... १२२५	मीठानीम	...
महाकरंज	... ३२८	मीठाविजौरा	...
महाचंचु	... ८७५	मीठाविष	...
महापारेवत	... ६३९	मुक्ता	...
महाभरीवच	... १५१	मुखालू	...
महामुण्डी	... ५११	मुगवन	...
महामेदा	... १६६	मुगलाई अण्ड	...
महावर	... २०८	मुद्गपर्णी	...
महाशालिधान	... ९१०	मुचकुन्द	...
महासतावर	... ३८७	मुण्डलोह	...
महिषकन्द	... ९४६	मुण्डी	...
महुआ	... ६०२	मुरदासिंग	...
महेन्द्रकदली	... ५६३	मुरा	...
माइमूल	... १२५०	मुलैठी	...
माजूफल	... १२१२	मुस्कआँडी	...
मांड	... ७०८	मुस्कदाना	...
माणिक	... ७७४	मुस्तक	...
माधवी	... ४८९	मूंग	...
मानकन्द	... ९५४	मूंगफली	...
मालकांगनी	... १९१	मूंगा	...
मालती	... ४९०	मूंज	...

विषयः	पृष्ठांकः	विषयः	पृष्ठांकः
मूत्रवर्ग ...	१०३२	यावनाल ...	८१९
मूर्वा ...	४३९	यावनालशर्करा ...	१०९०
मूली ...	९३५	रक्तआक ...	२९६
मूषली ...	३८४	रक्तकनेर ...	३०८
मूषाकानी ...	४७८	रक्तचन्दन ...	१९
मृणाल ...	५३८	रक्तचिर्चिटा ...	४१५
ेऊडी ...	३३१	रक्तशालिधान ...	८१०
ेढाशिंगी ...	५४५	रक्तसरसों ...	८४९
थी ...	१७९	रक्तैरण्ड ...	२९३
दा ...	१६५	रतनजोत ...	३९८
हदी ...	१२२५	रताळू ...	९४३
नफल ...	१८४	रत्नोपरत्नवर्ग ...	७७०
नशिल ...	५४७	रन्ध्रवंश ...	३६१
इया ...	१९०	रसाञ्जन ...	२१३
रवा ...	७०१	रसौत ...	२१३
गरा ...	४८५	रहसनी ...	१८६
चरस ...	६९१	राई ...	८४९
ठ ...	८२५	राँग ...	७१६
तिया ...	४८६	राजकदम्ब ...	५०४
ती ...	७७९	राजजामन ...	६५०
तीकी सीप ...	७५६	राजधतूरा ...	३११
था ...	७३	राजपटोली ...	९१०
थीतृण ...	३५०	राजपलाण्डु ...	९३३
म ...	१०७७	राजाम्र ...	५४९
रशिखा ...	४८०	राजार्क ...	२९५
समीगुलाब ...	४९०	राजाळू ...	९४०
षा ...	७०१	रामचना ...	१२३१
आ ...	६०२	रामतोरई ...	८९०
लसिरी ...	४९७	रामबबूर ...	५०६
री ...	९३	रामवांस (न) ...	४२१
ासशर्करा ...	१०९०	रामसर ...	३६५
ष्टमधु ...	१७१	रायसन ...	१८६

विषयः	पृष्ठांकः	विषयः	पृष्ठांकः
राल ...	३६	लवण ...	
रासन ...	१८६	लवणतृण ...	
रास्ना ...	१८६	लवनीफल ...	
रीठा ...	६७८	लवलीफल ...	
रुई ...	३५८	लभेरा (ड़ा) ...	
रुदन्ती ...	१२२८	लसीका ...	
रुद्राक्ष ...	७०७	लेहसुन ...	
रूपा ...	७१२	लहसुनिया ...	
रूपामाँखी ...	७३९	लक्ष्मणा ...	३५०
रूसा ...	३१३	लाई ...	
रेंगणी ...	२७८	लाख ...	
रेणुका ...	७८	लामज्जक ...	
रेता ...	७६४	लाणा ...	
रेवटचीनी ...	१२१५	लाल ...	
रेवटी ...	७६४	लालअरण्ड ...	
रेहुगवाँ ...	२४४	लालआक ...	
रोटसुपारी ...	६०८	लालइलायची ...	
रोमकलवण ...	२४५	लालईख ...	
रोहिषतृण ...	३७१	लालओंगा	
रोहिषतृणबडे ...	३७१	लालकनेर ...	
रोहिषसौंधिया ...	३७१	लालकमल ...	
रोहिणी ...	३४६	लालकुमुद ...	
रोहितक ...	६७५	लालचन्दन ...	
रोहेड़ा ...	६७५	लाला चिचिंटा ...	
लघुकटाई ...	२७७	लालचीता ...	
लघुखैर ...	६७५	लालज्वार ...	
लघुपाठ ...	३९१	लालनिसोत	
लज्जावंती ...	४५६	लालपेठा ...	
लज्जालु ...	४५६	लालप्याज ...	
लटकण ...	५१८	लालकूलकी कटसरैया ...	
लटजीरा ...	४१३	लालविषखपरा ...	
लताकस्तूरी ...	१२	लालमरिच ...	

विषयः	पृष्ठांकः	विषयः	पृष्ठांकः
लालमुरगा ...	५१८	शम्बरचन्दन ...	१९
लाललज्जालु ...	४५७	शर्करा ...	१०८८
लालसहंजना ...	३२६	शर्मानी ...	४५७
लाही ...	२०७	शाक छै प्रकारका ...	८६१
लिसौडे ...	६४०	शाकवर्ग ...	८६१
लील ...	४०४	शाकवृक्ष ...	६९६
लेसवा ...	८७२	शातला ...	३०१
लोध ...	२२०	शारदयावनाल ...	८२१
लोनारखार ...	२४८	शाल ...	६६५
लोनीशाक ...	८६४	शालिधान ...	८०८
लोबिया ...	८२८	शाल्मलि ...	६९०
लोहा ...	७२१	शाल्मलिकन्द ...	९५७
लोहेका मैल ...	७२३	शिम्बीधान ...	८११
लोहेकी कीट ...	७२३	शिरगोला ...	७९६
लौआ ...	८९०	शिलाजीत ...	७६८
लौकी ...	८९०	शिलारस ...	४१
लौंग ...	४३	शिल्पिकातृण ...	३७४
लौनी ...	८६४	शिवलिंगी ...	४३८
शकरकन्द ...	९४३	शीतलचीनी ...	५२
शंकरावासकपूर ...	४	शीरेखिस्त ...	१०९१
शङ्ख ...	७५८	शुभ्रालु ...	९४
शङ्खजीरक ...	७६२	शुर्मा ...	७३३
शङ्खनी ...	४३७	शूलीतृण ...	३७७
शङ्खपुष्पी ...	४५३	शृङ्गकविष ...	८००
शङ्खालू ...	९५४	शैलेय ...	७७
शङ्खाहुली ...	४५३	शोमलखार ...	८०६
शंखिया ...	८०६	श्यामतमाल ...	६८२
शणई ...	४३३	श्यामपनिलर ...	३९२
शणपुष्पी ...	४३३	श्यामुसली ...	३८५--३७५
शणहुली ...	४३३	श्योनाक ...	२५०
शतपोरक ...	१०८०	श्रीखण्डचन्दन ...	१६
शमीधान ...	८११	श्रीताल ...	६११

विषय:		पृष्ठांक:	बिषय:		पृष्ठांक:
श्रीवाडीपान	...	२५५	सफेदकनेर	...	
श्रीवास	...	४०	सफेद कमल	...	
श्वेतकचनार	...	३२५	सफेदकीकर	...	
श्वेतकटभी	...	७००	सफेदकुडा	...	
श्वेतकनेर	...	३०८	सफेदकोयल	...	
श्वेतगुञ्जा	...	३४१	सफेदखैर	...	
श्वेतपनिकर	...	३९३	सफेदगन्ने	...	
श्वेतवच	...	१५१	सफेदचम्पा	...	
श्वेतमन्दार	...	१५१	सफेदचोंटली	...	
श्वेतमरिच	...	११४	सफेदजीरा	...	
षडग्रन्थ	...	३३५	सफेदज्वार	...	
संस्वेदजशाक	...	९५८	सफेददूब	...	
सक्तकविष	...	८००	सफेदनिसोत	...	
सखुआ	...	६६४	सफेदपाढल	...	
संख्यावर्ग	...	११०७	सफेदफूलकीकटसरैया	...	
संगजराहत	...	७६२	सफेदबृहती	...	
सज्जी	...	२३४	सफेदमरिच	...	
सतवन	...	७०४	सफेदमुसली	...	
सतपुतीतोरेई	...	१२५३	सफेदरुहेडा	...	६७५
सतावरि	...	३८६	सफेदशंखाहुली	...	
सतोना	...	७०४	सफेदसरसों	...	
सत्यानाशीकटेरी	...	१९४	सफेदसहँजना	...	
सदागुलाब	...	४९०	सफेहसारिवा	...	
सन	...	४३३	सफेदसीसम	...	
सनाय	...	४०३	सफेदसुरमा	...	
सन्धानवर्ग	...	१०९२	सफेदसुहागा	...	
सफरी	...	५७५	सफेदशरपुंखा	...	
सफरियाकूष्माण्ड	...	८८९	समा	...	
सफेदअरण्ड	...	२९२	समी	...	
सफेदआक	...	२९६	समुद्रदेशकेपान	...	
सफेदइलायची	...	५०	समुद्रफल	...	
सफेदकटेरी	...	२८०	समुद्रफूल	...	

विषयः	पृष्ठांकः	विषयः	पृष्ठांकः
मुद्रफेन ...	१६२	साँपकीछत्री ...	९५८
मुद्रलौन ...	२४०	सांभरलौन ...	२३९
मुद्रशोष ...	१२३९	साल ...	६६५
रपता ...	३६५	सालई ...	६६७
रफोंका ...	४०६	सालपर्णी ...	२७२
रबीज ...	८६०	सालममिश्री ...	१२१९
रल ...	२७	सालसा ...	४३०
रलकागोंद ...	४०	सावरलोध ...	२२०
रलकारस ...	४०	साबुन ...	२४७
रलनिर्यास ...	४०	सिंगरफ ...	७३०
रसों ...	८४७	सिङ्गियाविष ...	७६७
रहटी ...	४५३	सिंघाडे ...	९२८
रिवन ...	२७२	सिताव ...	१२२३
ीफा ...	६	सितारजक ...	७३०
र्ाक्षी ...	४५३	सिन्दूर ...	७४६
र्पणी ...	४५३	सिन्दूरिया ...	५१८
तगम ...	९३९	सिरयारी ...	८७८
स्रमुली ...	८७४	सिरस ...	६६१
जना ...	३२६	सिलारस ...	४१
तूत ...	६३७	सिल्पिंकातृण ...	३५४
देई ...	३५३	सिवार ...	१२३१
ीडा ...	६९६	सिंहरू ...	३३१
हालू ...	३३१	सिंहलीपीपल ...	९२२
ालूकेबीज ...	७८	सीताफल ...	६३१
लू ...	६६५	सीप ...	७५६
ावन ...	६९६	सीसम ...	६६२
ौन ...	६९६	सीसा ...	७२९
ाड ...	७०८	सुअरासैम ...	९२५
[illegible] ...	४२२	सुकड़िचन्दन ...	१८
ीवान ...	८१४	सुगन्धजटामांसी ...	६१
ला ...	३०१	सुगन्धप्रियंगु ...	६६
सीपान ...	२५५	सुगन्धभूतृण ...	३७२

विषयः	पृष्ठांकः
सुगन्धवाला	७२
सुदर्शन	४७८
सुपारी	६०७
सुवर्ण	७०९
सुलतानचम्पा	४९५
सुलेमानीखजूर	५७२
सुहागा	२३५
सूचीपत्रादिईख	१०८१
सूरन	९४०
सूर्यकान्तमणि	७९३
सूर्यखार	२४७
सेन्दुरिया	५१८
सेंध	८९९
सेम	९२४
सेमकी फली	९२४—९१०
सेमल	६९०
सेमलका गोंद	६९०
सेव	५७४
सेवती	४९०
सेहुण्ड	२९८
सैंधानोन	२३८
सोनामाखी	७३७
सोंचलनोन	२४२
सोंचली	४६५
सोंठ	१०८
सोंधियातृण	३७०
सोना	७१०
सोनापाठा	७१०
सोनैया	४७०
सोमवल्ली	४४७
सोमलता	४४७
सोया	१२७

विषयः	पृष्ठांकः
सोरठकीमट्टी	...
सोरा	...
सौनजुही	...
सौंफ	...
सौराष्ट्रिकविष	...
सौराष्ट्री	...
सौवीराञ्जन	...
स्थलकमलिनी	...
स्थावरविष	...
स्थौणेयक	...
स्निग्धदेवदारु	...
स्नेहद्वार	...
स्वर्णवल्ली	...
हड़जोड़ा	...
हड़फाडेवड़ी	...
हड़संहारी	...
हदगा	...
हरड	...
हरकाईचन्द्रा	...
हरिचन्दन	...
हरिताल	...
हरीतक्यादिवर्ग	...
हरीदूब	...
हलदियावृक्ष	...
हलद्द	...
हलदी	...
हंसपदी	...
हस्तजोडी	...
हस्तीकन्द	...
हस्तीकर्णपलास	...
हाऊबेर	...
हारशृङ्गार	...

विषयः	पृष्ठांकः	विषयः	पृष्ठांकः
रफारेवडी ...	६१८	हुलहुल ...	४६५
रिद्रकविष ...	७९९	हुलहुल ...	८७८
लाहल ...	८००	हेरम्ब ...	१२४४
लों ...	१३१	ह्वेसणियापान ...	२५६
हिंगु ...	१४५	क्षीरकाकोली ...	१७९
हिंगुणा ...	४०८	क्षीरविदारी ...	९५१
हिंगुपत्री ...	१४८	क्षीरा ...	८९६
हिंगुलू ...	७३१	क्षुद्रकेतकी ...	४२०
हिंगोट ...	६८०	क्षुद्रचंचु ...	८७५
ज्जल ...	३५०	क्षुद्रजम्बू ...	६५१
न्ताल ...	६११	क्षुद्रपाटल ...	२६७
मकपूर ...	५	क्षुद्रपाषाणभेद ...	२०१
रौंजी ...	७१३	क्षुद्रबादाम ...	१२४८
लमोचिक। ...	८७८	क्षुद्रबृहती ...	२७७
ग ...	१४५	क्षुद्रशंख ...	७६०
रा ...	७७२	क्षुल्लक ...	७६०
रावोल ...	७६७		

ति शालिग्रामनिघण्टुकीअकारादि हिन्दी अनुक्रमणिका समाप्ता ।



श्रीः ।

शालिग्रामनिघण्टुभूषणान्तर्गत-वंगभाषाकेशब्दोंकी अकारादि-अनुक्रमणिका ।

विषयः	पृष्ठांकः
अक्नादि -निमुक--आंखौंदि ...	३९०
अकोरकोरा ...	१५५
अगर ...	२३
अजकर्णशाल ...	६६६
अजगन्धा ...	१२३७
अर्जुनगाछ ...	६६८
अडहर, आडरि ...	८३७
अत्यम्लपर्णी ...	१२३१
अतिबला ...	३५४
अनन्तमूल, श्यामलता, कलघण्टि इत्यादि ...	४२९
अनन्नास ...	६३३
अनूपादिवर्ग ...	११३३
अपराजिता, नीलअपराजिता	३२८
अभ्र ...	७४०
अम्बुशिरीषका ...	७०३
अर्कपुष्पी ...	४५५
अर्कवर्ग ...	१०५१
अलम्बुषा ...	४५८
अश्वगन्धा ...	३८८
अश्वत्थ, आशोथगाछ ...	६५३
अस्पाल ...	५१०
आक, कुशिर ...	१०७९
आंकड, धोला आंकड, आंकोड	३५०
आकंद ...	२९६

विषयः	पृष्ठांकः
आकनादि ...	
आक्रोट ...	
आखुपाखाखा ...	
आंजीर, पेयारा ...	
आतइच ...	
आतशपाथर ...	
आता ...	
आदा ...	
आपाङ्ग ...	
आफिंग ...	
आम ...	
आमआदा ...	
आमडा ...	
आम्ला ...	
आरि ...	
आरुक ...	
आलकुशी, धुनारगुंड, दया, शूपाशिम्बी ...	
आलू ...	
आलोकलता, आकाशवेल ...	
इन्दुर कानीपाना ...	
इन्द्रजव ...	
इक्षुदर्भतृण ...	
ईषदगोल ...	
उडीधान ...	

विषयः	पृष्ठांकः
उदिरकानी पाना ...	४७९
ष्ठकंठ ...	१२२४
षलतृण ...	३७३
द्धि ...	१६७
षभक ...	१६४
कवीर ...	१२३४
कांगी ...	८३
लाइच, बडएलाइच ...	५०४९
लवालुका ...	८९
लियो ...	४२०
ोल ...	९४०
ोषड ...	१२५२
ट्की ...	१७७
द्रभी, श्वेतकद्रभी ...	७००
राश्मि ...	९२६
टतराइ, तितपल्ला तेत्केन्दुरुकी	९१४
ड़ि ...	७५६
टकारी ...	२७८
थारी ...	१२३५
दमगाछ, केलिकदम ...	५०३
दलीकन्द ...	९५७
मलगुंडि, गुण्डारोचनी ...	१७३
येद्राछ ...	६१५
रकचनुन ...	२४३
रमूचा ...	६२०
रवी लालकरवी ...	३०७
रली ...	८८०
रील, कचरा ...	६५४
पूर ...	१
लमी ...	८७८
ला ...	५५७
कड़ाशिंगी ...	१९६

विषयः	पृष्ठांकः
काकडुमर ...	६५९
काँकरोल ...	४७०
काँकरोलभेद ...	४७०
कांकला ...	५२
काकुड ...	८९१–८९९
कांकुड, वडकांकुड ...	८९२
काकोली ...	१६८
कागदीलेबु, जामीरलेबु, पातीलेबु कमलालेबु ...	५८१
कांगुनी, कांगनिधान ...	८५२
काच ...	८००
काचडाघास, पनिसिगा ...	४७१
काञ्चन, सफेदकांचन ...	३२२
काजूतक ...	६४७
काट आमला ...	१२४१
काटविष, अमृतविष ...	७९९
कांटाकरञ्ज ...	३३९
कांटाल ...	५९४
कांदा, माटी, कांलमाटी ...	७६६
कामराङ्गा ...	६१७
काम्बोइ ...	१२४८
कायफल, कायशाल ...	१९७
कार्पास, बनकार्पास, कालिकर्पाशिकिनी ...	३५९
कालकासुन्दा ...	८८२
कालतेउडी ...	३९३
कालालोण ...	२४३
कालेजीरे ...	१४०
कांसा ...	७२४
कांसालु ...	९४५
काष्टालु ...	९५४
किंकिणी ...	१२४२

विषयः	पृष्ठांकः
किंकिरात ...	५०६
किसमिस ...	६४३
कीटमारी ...	१२२३
कुंकुम ...	१२
कुकुरशोंका, कुकुरमुता ...	४१७
कुंच, सादाकुंच ...	३४१
कुंचुले ...	६००
कुड ...	८२
कुडचिगाछ ...	१८१
कुडचि, कुरचि ...	३३५
कुन्द ...	५०१
कुन्दरु खोटी ...	३९
कुमडागाछ ...	८८
कुरण्डिका ...	१२२९
कुलगाछ, कुलफज, कुगाछ, वरुइ, शियाकुल ...	६२३
कुलञ्जन ...	१५२
कुलथी, कलाय ...	८४२
कुलिया खाडा, कुलेकांटा, कुलकशूलमर्दन इत्यादि ...	४१६
कुलीचीभाजी ...	८८०
कुश ...	३६८
कुसुमफूल, फल ...	२०६
कृष्णचूड ...	५१७
केउंगाछ, केलूपयेंया ...	९५६
केउडा, जलपाइ ...	५५२
केउयाठुंठी ...	३
केउयाठेंडा ...	४४२
केंद, माकडागाब, माकडातेंदू ...	६००
केयागाछ, सोणाकेया ...	५०८
केशुर ...	९५५
केशेघास ...	३६६

विषयः	पृष्ठांकः
कोदोधान ...	
कोलकन्द ...	
खडियामाटी, चाखडि ...	
खयेर ...	
खयेरगाछ, पापरीखयेरगाछ ...	
खरपत्रक, पुथक, नालकुंकुमरागपुष्पी ...	
खरमुज, खरबुजा ...	
खांड ...	
खापर ...	
खारीनुन ...	
खुरचांफा ...	
खुरशाणीयोयान ...	
खेजूर, पिण्ड खेजूर, छोहारा	
खेसारि कलाय ...	
गजकर्णालु ...	
गजपिपुल ...	
गजशुंठी ...	
गठेला, ग्रन्थिपर्ण ...	
गणिर, आगगन्त, छोटीगणिणी	
गन्धक ...	
गन्धनाकुली ...	
गन्धवेणा ...	
गन्धमादला, गाँधाली, गन्धयादुलिया ...	
गन्धरस, बोल, हिराबोल, खुनखारापी ...	
गम ...	
गरमोटिकातृण ...	
गांगेटी ...	
गाजर ...	
गाव तेंदू ...	

विषयः	पृष्ठांकः
ाम्भारी, गांभर ...	२६२
गिरिमाटी ...	७५३
ुग्गुल ...	३१
ुच्छकन्द ...	९५३
ुड ...	१०८४
ुण्डतृण ...	३७७
ुण्डासिनी ...	३७७
ुन्द्र ...	३६७
ुयेवाब्ला, विट्खयेर ...	६७३
ुलंच ...	२४९
्रन्थिपणभेद ...	८०
ोपालेलता ...	१२५५
ोभी ...	१२५५
ोमूत्रिकातृण ...	३७३
ोमेद ...	७८९
ोयालेलता ...	४७९
ोरख, कुले, पानखाडां ...	३ ४
ोरक्षी ...	१२४३
ोराणी ...	९२३
ोरोचना ...	६८
ोखरि ...	२८०
ण्टापारुल ...	७०१
घ. घृत ...	१०२५
घृतकुमारी ...	४१८
घोडा निम विशेष ...	३२१
घोल ...	१०१४
घोषकलताविशेष ...	९०४
चड्गाछ ...	११९–४७०
चणिकातृण ...	३७७
चण्डालकन्द ...	९५२
चन्द्रकान्त ...	७९४
चन्दन ...	१६
चाकुन्दा, एडांचि ...	२१५
चाकुले, चाकुलिया ...	२७४
चांपा ...	४९४
चामालु, चुमडिआलु ...	९४७
चामिली ...	४८४
चालते ...	५९१
चाह ...	१२१६
चिचिङ्गा ...	९०८
चितेगाछ, राङ्ग, चिते, चिता,	१२३
चिनी, मिछरी ...	१०८७
चिने ...	८५२
चिरता, चिराता, नेपालेनिम्ब	१८०
चिरपोटा ...	१२२८
चिरौंजी, पियाल ...	६२८
चीढ ...	२७
चीना विशेष ...	८५३
चुका पालङ् ...	८६६
चेंचको ...	८७५
चोरक ...	८०
चोरहुली ...	१२२६
छागलंकुरी ...	१२३४
छागलदांडी, वामानदांडी ...	१२१४
छातकुड ...	९५७
छातिमगाछ ...	९५८
छोलारगाछ ...	८३४
जटामांसी ...	६१
जबाफूलेर गाछ ...	५२०
जरणी तृण ...	३७४
जल ...	९५९
जाती, चामिली, स्वर्णजाती	४८३
जामगाछ, वडजाम, क्षुद्रजाम, वनजाम ...	६४८

विषयः	पृष्ठांकः
जामफल ...	४५
जिंगिनी ...	६८२
जियापुता, पुतजिया ...	६७९
जीवई, जीवानी, जीवन्ती...	२८३
जीवक ...	१६३
जीरे, सादाजीरे ...	१३८
जुई, स्वर्ण जुई ...	४८८
जैपाल ...	३९८
जैत्री, जयित्री ...	४७
जोयार, जानार, श्वेतजनार, कालजनार, लालजनार	८१९
झण्डू, स्थूलपुष्पा, झण्डूक	५१८
झलइ ...	१२५१
झाऊगाछ ...	१२५२
झांटी, कुलझांटि, पीतझांटि, नील झांटि ...	५१३
झिंगा ...	९०६
झिनुक, शामुक ...	७५६
झिल्ल ...	१२३४
टार्पिनतेल, नवनीतखोटी, गन्ध विरोज़ा ...	४१
टावालेवु ...	५७८
डहरकरञ्ज, नाटा करञ्ज इत्यादि	३३५
डानिपोला, डानकुनी ...	१२२७
ढेओ, मान्दार ...	५९६
तगर पादुका ...	२९
तवक्षीर ...	१६०
तमाकू ...	१२१७
तरमुज चेलना ...	९०२
तामा ...	७१५
तामालगाछ ...	६८३
ताल, श्रीताल, हेन्ताल ...	६११

विषयः	पृष्ठांकः
तालमूली ...	
तालीसपत्र ...	
तित्काकरोल, तित्काकडो ...	
तितलाउ ...	
तिनाश, सादन, जारुलगाछ	
तिलक पुष्पवृक्ष ...	
तिलगाछ ...	
तुतिया ...	
तुवर ...	
तुम्बरु, नेपालेधने ...	
तुलसी ...	
तूत ...	
तृणाख्यतृण ...	
तेजपाता, तेजपत्र ...	
तेजबल ...	
तेउड़ी ...	
तेंतुल ...	
तेलाकुच ...	
तैल ...	
तैलकन्द ...	
तोपचीनी ...	
थैकड अमलवेंत ...	
दइ ...	
दन्तीगाछ ...	
दस्ता ...	
दाड़िम, दालिम ...	
दाडिशाक ...	
दारुचिनी ...	
दारुहरिद्रा ...	
दुध ...	
दुग्धि, दुधशा, दुदेल, चीरइ, खिरूइ	
दुरालभा ...	

विषयः	पृष्ठांकः	विषयः	पृष्ठांकः
दूर्वा, नीलदूर्वा, सादादूर्वा, गेंटेदूर्वा	३७८	निशादल	२४५
देवदारु	२५	निशिन्दा; नीलनिशिन्दा	३३१
देशवर्णन	११२३	निःश्रेणिकातृण	६७४
दोना, दना	५२७	नीलकलनी	४०४
द्रोणपुष्पी (घलघसे)	४६४	नीलगच्छी	४०४
द्रोणलवण	२४५	नीलमणि	७८८
ने	१४४	नीलालु	९४६
धरणीकन्द	९४९	नेपाली	४८७
धतुरा	३०९	नोना, लोना	६३२
धतुरा, कनकधतुरा	३११	पण्यन्धतृण	३७६
धाइफूल	२०२	पद्म, श्वेतपद्म, रक्तपद्म, नीलपद्म	५३९
धाउयागाछ	६९२	पद्मकाष्ट	३०
धातुकासीस	७५२	पद्मवीचि	५३७
धूनो	३७	पद्मेरगेंडो	५३९
नखीगन्धद्रव्य, छोटीनखी	३९	पद्मेरडांटा	५३८
नी, माखन	१०२१	पनसी	४२२
नन्दीवृक्ष	६५९	पर्पटी	९२
र्तक	८५६	पलताता	३१०
ल, वडनल	३६३--९३	पला, मुंगा	७८४
लिका	९३	पलाशगाछ	६८५
कुली, गन्धनाकुली	९५०	पल्लिवाहतृण	३७५
कुलीकन्द	१८८	पाकुडगाछ	६५६
गदना	४७४	पाठशाक, कोसटारशाक, नालेत	८७६
गजिह्वा	१२५०	पांडुफली	४२१
गपुष्पी	४४५	पाणीफल, शिंघाडे	९२८
गेश्वर	५३	पातालतुम्बी	१२४३
रंगालेवु	५७६	पाथरचुरी, हिमसागर, पाथरकुचा	२००
रिकेल	५६४	पान	२५३
मगाछ	३१६	पाना, टोकापाना	१२३०
र्विषी	१२४९	पान्ना	७८६
र्मलफल	६४२	पानीआंवला	६१९
		पानीयालु	९४५

विषयः		पृष्ठांकः
पारसी	...	१३६
पारा	...	७२६
पारुल, घण्टापारुल	...	२६५
पार्वतीमृत्तिकाविशेष	...	७६१
प्राजक्त, पारिजात, हारशिंगार		५२०
पारेवत	...	६३९
पालतेमान्दार	...	३२२
पालंशाक	...	८७०
पिडिंगशाक	...	८८
पितल, कांचपितल	...	७२५
पिपुल	...	११६
पिपुलमूल	...	११९
पियाशाल	...	८७०
प्रियंगू, गन्धप्रियगू	...	६४
पीतपुष्पतेडेला	...	३५३
पीलुगाछ	...	६०४
पुइशाक	...	८७२
पुदिना	...	९३
पुन्नागगाछ, राजचम्पक	...	५१२
पुष्करमूल	...	१९३
पुष्पांजन	...	७३३
पुष्पराग	...	७८७
पेयाज, लालपेयाज	...	९३३
पेयारा	...	६३४
पेरुक, अमृतफल	...	५७५
पेरोज	...	७९५
पेस्तागाछ	...	६३४
पोस्तदाना	...	२३२
पोस्तदानारगाछ, पोस्तटेंडिखाकसी	...	२२९
प्रपौण्डरीक	...	९०
फंजी, फंजिका, पद्मा, भ्रामांत्री,		

विषयः		पृष्ठांकः
अपराजिता	...	
फटकिरी	...	
फटिक्र	...	
फणशी	...	
फलसा	...	
फलशाकविशेष	...	
फुल, फूलेररस, गोलापजलप्रभृतिवामधु	...	
फोणाछ	...	
वइंचगाछ	...	
वक	...	
वकुलगाछ	...	
वच, खुरशाणीवच, श्वेतवच		
वट	...	
वडकरेला, उच्छे, छोटला उच्छे		
वडणुनी, क्षुदेणुनी, वनणुनी		
वडपाथरकुचि	...	
वडनील	...	
वनकुलथी	...	
वनजीरे	...	
वननील, सादवननील	...	
वनवेतुया	...	
वनमूंग	...	
वनयवानी	...	
वनशणइ, झनझन, शोणोरगाछ		
वनहलद	...	
वयडा, बहेडा।	...	
व्याकुड तितवैगुन	...	
व्याणारमूल, वेणारमूल, वीरणामूलखस	...	
वरवटीकलाय, वोरा	...	
वरुणागाछ	...	

विषयः	पृष्ठांकः
वर्जरी, साजक ...	८२१
वल्वजातृण ...	३७३
वलाइमुर, वला, वहुलावनभा-दुलिया इत्यादि ...	४३५
वंशपत्रीतृण ...	३७५
वशलोचन, वांसकाबर ...	१५९
बहुयार, चालतागाछ, वोहरी	६४०
वाकस, छोटवाकस ...	३१३
वाटुलाँमटर, महर, तेओडामटर	८३९
वातकुंभ ...	१२४६
वान्धुलिफूलेरगाछ ...	५१६
बादाम ...	५७२
वांद, परगाछा, मान्दडा ...	४५०
वानप्सा ...	१२५४
वावुइतुलसी ...	५२९
वाबलागाछ ...	६७६
वामुनहाटी ...	१९९
वाल्य, गन्धवाला ...	७२
वाली ...	७६४
बांश ...	३६१
विछुटी ...	१२४५
विद्रतुन ...	२४१
विडंग ...	१५७
विजतारक, वीजतारक, विद्धडक	१२३८
विदारीकन्द ...	९५१—३८१
विलाति कुमडा ...	८८९
विषमुष्टी, तिक्तजीवन्ती ...	२८६
विषलांगला ...	३०५
विष्णुकन्द ...	९४९
वृत्तगुण्ड ...	३७६
वृद्धि ...	१६८
वृहद्दन्ती ...	३९७
वेगुनगाछ ...	९२०
वेडेला ...	३५२
वेथ, वयसा, जलवेंत ...	३४७
वेतुया, वेतोशाक ...	८६३
वेलफुलगाछ, मल्लिकाफूलेर-गाछ ...	४८६
वेल, बिल्व ...	२५९
वेल्लतरु ...	१२४०
वैदूर्य ...	७५२
वोडानिम्ब, महानिम्ब ...	३२०
वोदार, नागसत्व ...	७३९
वोरा वरवटी ...	९४२
ब्रह्मीशाक ...	४६२
भडजीवइ ...	२८५
भिण्डा ...	९१९
भीमराजकेशुरे ...	४३२
भुइआंवला ...	४६०
भुइकुवडा, श्वेतभुइकुवडा, कालभुइकुमड ...	३८२
भूर्ज्जपत्र ...	६८४
भूतृण ...	३७१
भ्रमरछल्ली ...	१२३६
भेला ...	२२२
भेराण्डा, शादारेडी, वालभेराण्डा वडभेराण्डा ...	२९१
मकाय ...	८५८
मखाना ...	१२३२
मञ्जरतृण ...	३७४
मंजिष्ठा ...	१०३
मंडपी ...	६४७
मत्स्याक्षी ...	४५२
मदन, मधुनि गुडकामाइ ...	४४१
मद्य ...	१०९७
मधु, मौ ...	१०७३

विषयः	पृष्ठांकः
मन्थानकतृण ...	३७५
मनछाल ...	७४७
मनसागाछ, सिजवृक्ष ...	११८
मयनाकाँटा ...	१६४
मयूरशिखा ...	४६०
मरिच, गोलमरिच, सादामरिच	११४
मरुवा ...	५२५
मसिना, तिसी ...	८४५
महादा, अम्बकुटा (चुका)	५९२
महामेदा ...	१६६
महाराष्ट्री ...	१२२२
माइफल ...	१२१२
माखना ...	१०२१
माड ...	७०८
माणिक ...	७७४
माधवी ...	४८९
माधवीलता ...	४८९
मानकन्द ...	९५४
मालती ...	४८०
मालाकन्द ...	९५०
माषकलाय ...	८२६
माषाणी ...	२८८
मिश्रवर्ग ...	११७३
मुक्ता ...	७७९
मुखाछ ...	९४४
मुग ...	८२२
मुगानि ...	२८७
मुचकन्द ...	५००
मुंज, रामशर, सरपत ...	३६५
मुढिरी, मुण्डी, धुलकुडि वड-धूलकुडी ...	४११
मुत ...	१०३२

विषयः	पृष्ठांकः
मुता (था) नागरमुता, मादलामुता ...	
मुरामांसी ...	
मुला ...	
मुसुरिकलाय ...	
मूर्वा, मुर्गा, मुरहर, शोचमुखी वोडाचकइत्यादि ...	
मृगनाभि ...	
मेडाशिंगे, गाडलशिंगे, छाग, लबेंटे ...	
मेथी ...	
मेदा ...	
मेदी ...	
मोइया ...	
मोटा केलेजीरे ...	
मोम ...	
मौल, मैडल, मौया, जलमेडल	
मौरी ...	
यव ...	८१५
यवाक्षार ...	
यवानी, योयान् ...	
यवासा ...	
यवेची, श्वेतवेना ...	
यष्टिमधु ...	
यज्ञडुमुर ...	
रक्तचन्दन ...	
सवत ...	
रसुन ...	
राइसर्षे, कालसर्षे, राजसर्षा, राइसरिषा ...	
रांग, वँग ...	
राङ्गा आपांगु ...	

विषयः	पृष्ठांकः	विषयः	पृष्ठांकः
राजशाक ...	१२५३	शलइ, शालविशेष ...	६६७
राजशिम्बिका ...	८३१	शशा ...	८९६
रामकर्पूर ...	३७०	शाँइछुइवाला ...	७०३
रामवांस ...	४२०	शाँक, शंख ...	७५८
रास्ना ...	१८६	शामाधान ...	८५५
राखालशशा, राखालताड़, कुन्दरुकीवडमाकाल ...	४०२	शालगाछ, शाल ...	६५५
रिठेगाछ ...	६७८	शालपान, शालपानी ...	२७२
रुदन्ती ...	१२२८	शाल्मलीकन्द ...	९५७
रुद्राक्ष ...	७०७	शालीधान, चाउल ...	८०८
रूप ...	७१२	शिववल्ली, बृहद्वकुल ...	४९८
रेउचीनी ...	१२१५	शिवलिंगिनी ...	४३८
रेणुक ...	७८	शिमूल, शिमुलेरआठा ...	६९०
रोथा, रयना, नयना, काडर ..	६७५	शिरगोला ...	७९६
रोहिणी मांसरोहिणी ...	३४५	शिरीषगाछ ...	६६१
लंकामरिच, भाल ...	१२१९	शिल्पिकातृण ...	३७४
लताफटकी, वडलताफटकी ...	१९२	शिलाजतु ...	७६८
लक्ष्मणाकन्द ...	९५३	शिलारस ...	४१
लवंग ...	४२	शिलिन्दा ...	४५०
लवणतृण ...	३७७	शिशुगाछ, सादाशिशुंगाछ ...	६६३
लसुन ..	९३०	शुंठ ...	१०९
लाजुक लज्जावंती ...	४५६	सुपारी ...	६०७
लाड, कदु ...	८९०	शुभ्रालु ...	९४६
लालपिण्डालु, गोलआलु, चुबडिआलू ...	९४२	शुलफा ...	१२६
लाहा ...	२०७	शूलीतृण ...	६७७
लोधकाष्ठ, पाटियालोध ...	२२०	शेओडा, शांडा ...	६९६
लोह, तिरवा, इस्पात, कालालोह	७२०	शेओथाला ...	१२३१
शंखजीरक ...	७६२	शेगुनगाछ ...	६९६
शंखालु ...	९५४	शेमगाछ ...	९२५
शंखाहुली, डानकुनी ...	४५३	शैलज ...	७६
शंखोदरी ...	५१७	श्वेतकांटानेरशाक ...	८६७
शटी, आम, आदा, गन्धशटी	८४	श्वेतगांदावन्ने, श्वेतपुष्पा गादा	४२३
शतमूली ...	३८६	श्वेतचम्पक ...	४९६
		श्वेततेउडी ...	३९४

विषयः	पृष्ठांकः	विषयः	पृष्ठांकः
श्वेतसुरमा, नीलसुर्मा, नीलाञ्जन-कालसुर्मा ...	७३७	सोनामुखी, सोनापाता ...	
		सोमलता ...	
संख्यावर्ग ...	११०७	सोहागा ...	
सचललवण ...	२४७	सौराष्ट्रदेशीयमृत्तिकाविशेष ...	
सजिने ...	३२६	स्फटिक ...	
संधानवर्ग ...	१०९२	स्वर्णजीवन्ती ...	
समुद्रफल ...	१२१३	स्वर्णवल्ली ...	
समुद्रफेना ...	१६२	स्वर्णमाक्षिक,तारमाक्षिक,रौप्यमाक्षिक	
सरलगाछ ,तार्पिनतैलेरगाछ ...	२८	स्वर्णक्षीरी, शोणाखिरुइ (चोक)	
सरिषा सर्षे, श्वेतसर्षे ...	८४७	स्थलपद्म ...	
सर्वविधआलु ...	९५४	हपुषा ...	
षडंसष्ट्रा ...	१२२३	हलुद ...	
सर्पाक्षी ...	४५३	हरिताल ...	
सहस्रमूली ...	८७४	हरितकी ...	
साजड ...	८०८	हस्तिकन्द ...	
साजिखार, साज्जिमाटी ...	२३४	हस्तिघोषा ...	
सातपुती ...	१२५३	हस्तिजोर्डी ...	
सामरलुण ...	२४०	हाडभांगा ...	
सिजविशेष ...	३०१	हाकुच, सोमराज ...	
सिद्धि, भांग, गांजा ...	२२५	हांचुटी ...	
सिन्दूर ...	७४६	हालिम ...	
सिन्दूरपुष्पी ...	५१८	हिंगु ...	
सीसा ...	७१८	हिंगुविशेष ...	
सुगन्धभूतृण ...	३७२	हिंगुल ...	
सुदर्शन ...	४७८	हिंचेशाक ...	
सुधामूली ...	१२१९	हिरे ...	
सुषुणीशाक ...	९७८	हुडहुडे; वनशलते ...	
सूर्य्यखार ...	२४७	हेलाफुल, नालिफुल, श्वेतशुन्दि	
सेउ ...	५७४	हेरम्ब ...	
सेउती ...	४९०	क्षीरकाकोली ...	
सेतपापडा ...	३१४	क्षीरणी, राजणी ...	
सैंधवलवण ...	२३९	क्षीरविदारी ...	
सोनचाँफा ...	४९४	क्षुद्रेंनटे ...	
सोना ...	७१०	क्षेत्रपापड़ा ...	
सोना, सोनालु ...	१७५-२११	त्रिपर्णीकन्द ...	

श्रीः ।

शालिग्रामनिघण्टुभूषणांतील मराठीशब्दांची

अकारादि अनुक्रमणिका ।



विषयः	पृष्ठांकः
अक्कलकरा ...	१५५
अक्रोड़ ...	६०६
अगर ...	२३
अगस्ता, हदगा ...	५२२
अघाडा ...	४१३
अंकोलीवृक्ष ...	३५०
अजकर्णशाल ...	६६६
अजमोदा ...	१३४
अंजीर ...	६३४
अडूलसा ...	३१३
अतिविष ...	२१९
अननस ...	६३३
अनूपादिवर्ग ...	११३३
अफू, अपू, कडवी ...	२३१
अवलगुन्दर, सालइडीक ...	३९
अभ्रक ...	७४०
अर्क ...	१०५१
अलवाचाकांदा ...	९४३
अलम्बुषा ...	४५८
अशोक ...	५१०
असाणा ...	१२३४
आकाशवेल, अमरवेल ...	४४८
आग्या, विचवा ...	१२४५
आंबटचुका, लघु व थोर ...	८६६
आंवले ...	१०७
आंबा ...	५४३
आंबाडा, आँवचार ...	५५१
आंबेहलद ...	२१०
आमसोल, कोकम्बसोल ...	५९२
आयन ...	७०८
आरइ, वेल्याखेर ...	१२३६
आलू ...	१२५५
आल ...	१११
आसकन्द ...	३८८
आसन्ध ...	३८८
आहलींव ...	१३१
इसबगोल ...	१२१८
इक्षुदर्भ ...	३७३
उटकटारा ...	१२२४
उडीद ...	८२६
उदक, पाणी ...	९५९
उन्दरकनी ...	४७८
उन्हाली ...	४०६
उपरत्नविशेष ...	७९५
रउम्ब ...	६५७
उपलतृण ...	३७३
ऊंस ...	१०७८
ऋद्धि ...	१६७
ऋषभक ...	१६४
एकांगीमुरा, मोरमांखी ...	८६

विषयः	पृष्ठांकः
एरण्ड, एरंडोली ...	२९०
ओखराज्य ...	१२५२
ओटीचें झाड ...	५९१
ओवा ...	१३२
ओसारी ...	१२२७
कंकुष्ठ ...	७६०
कंकोळ ...	५९
कचरा, फुरडया ...	९५५
कचोरा, नरकचोरा काचरी ...	८३
कड़वेवाल, श्वेतपावटे, तांबडेपावटे ...	८३०
कडूभोपळा ...	८९१
कड़मड़वल्ली, आंवटवेल ...	१२३१
कज्यानिम्ब ...	३२१
कडर्या ...	८५९
कर्डीचेंफळ, कर्डया ...	७०६
कडूजिरें ...	१४३
कडूदोडकी, दीवाळी, कडूशिराळी ...	९०७
कडूतोंडली ...	९१४
कडूनिम्ब ...	३१६
कडूपडवळ ...	९१०
कहेर ...	३०७
कंथार ...	१२३५
कथील ...	७१६
कदलीकन्द ...	९५७
कपिला ...	१७३
कवडी ...	७५५
कविठ ...	६१४
कमल ...	५३१
कमलाक्ष ...	५३७
कमलाचेंडें (दें) ट (ठ) ...	५३८
करवंदी ...	६२०

विषयः	पृष्ठांकः
कर्मर ...	
करणी ...	
कलखापरी ...	
कलिंगड़ ...	
कलौंजीजीरे ...	
कसइ ...	
कस्तूरी ...	
काकटेंभुर्णी ...	
काकडाशिंगी ...	
कांकडी ...	
काकोली ...	
कांग ...	
कागदीलिंबु, ईडलिंबु, मीठाईड़ लिंबु साखरलिंबु ...	
कांगाचेंझाड ...	
कांच ...	
काजरा, कारस्कार, कुचला ...	
काजूचेंझाड ...	
कांटली, कर्टोली ...	
कांटेचुबुक, तांबडाधमासा ...	
कांटेधोत्रा ...	
कांडवेल ...	
कांदा, पातीचाकांदा ...	
कानफोडीं ...	
कापशी, कापूस, सरकी, काळीकापशी ...	
कापूर ...	
कापूरकचरी ...	
कारलें, क्षुद्रकरली ...	
काळाउम्बर, बोरवाडा ...	
काळाकुडा, सफेदकुडा ...	
काळावाळा ...	

विषयः	पृष्ठांकः	विषयः	पृष्ठांकः
काळाबोळ, एळयाबोळ ...	४२०	कोरल, काञ्चनवृक्ष ...	३२४
काळाशिसवा ...	६६३	कोलकन्द ...	९४७
काळासुरमा ...	७३२	कोळिञ्जन ...	१५२
काळीमुसली ...	३८४	कोशाम्र ...	५५२
काळेद्राक्ष ...	६४३	कोष्ठ ...	९१
कासाळु ...	९४५	कोहोंळा ...	८८७
कांसे ...	७२४	खडसांवळ, आबईचीशेंग ...	९२५
काष्टाळु ...	९५४	खडयानाग, चगमोडया ...	३०५
करमाणीओंवा, सुरवंदीचावेल	१३६	खडू ...	७५४
किराईत ...	१७९	खर्वूज ...	९००
किरगंजणी ...	३७०	खसखस ...	२३२
किडामार ...	१२२३	खारादिमीठा ...	३८
कुकुरवंदा ...	४७७	खिरडी ...	६२९
कुटकी ...	१७७	खुरचांफा, नागचांफा, सुलतान चांफा ...	४९४
कुड़काकाकडा ...	१२४१	खुरशाणीओंवा, खुरमाण ...	१३६
कुडा ...	३३४	खैर, पांढराखैर ...	६७१
कुडयाचेंबीज ...	१८३	खैराचासाड, तारकात, शेण्याखैर, गंधियाहिवर, धणिराखैर	६७३
कुणजीर ...	८७२	गठोना ...	३८
कुन्द ...	५०१	गन्धक ...	७४३
कुंभ्याचीसाल व फळ ...	१९७	गन्धनाकुली ...	९५०
कुम्भा, तुम्बा ...	४६४	गरमोटिकातृण ...	३७३
कुरडू ...	८७८	गहला ...	६४
कुरण्डिका ...	१२२९	गहूकाठेलालरङ्गाचे,, पोटेगुलधुने	८१७
कुलीची भाजी ...	३४४	गांगेटी गांडेवामण ...	३५५
कुळीथ ...	८४२	गाजर ...	९३८
कुहिलीचेंबीज ...	३४४	गुग्गुळ ...	३१
कृष्णत्रिवृा ...	३९३	गुच्छकन्द ...	९५३
कृष्णाबीज ...	४०३	गुञ्जा-माड़लवेल ...	३४१
केळ ...	५५७	गुण्डतृण ...	३७७
केशर ...	१२	गुण्डासिनीतृण ...	३७७
कोबी ...	९५६		
कोरफड, कोरफांटा ...	४१८		

विषयः	पृष्ठांकः
गुळवेल ...	२४९
गुलाबांचेंफूल, शेंवती, काटेशेंवती	४९०
गुळी, लघुनीली ...	४०४
गूळ ...	१०८४
गेळ ...	८४१
गोकर्णीकाळी ...	३२९
गोडतोंडली ...	९१२
गोडाकरवंदा ...	६२०
गोडासुरण ...	९४०
गोडी उडीद ...	५१२
गोडीकोहली ...	९२६
गोडेतगर ...	२९
गोडेबदाम ...	५९९
गोपीचन्दन ...	७६४
गोभी ...	१२५५
गोमुक फुटी ...	३७३
गोमूत्रिकातृण ...	३७३
गोमेदमणि ...	७८९
गोरखचिंच ...	१२४३
गोरोचन ...	६८
गोवारीच्या शेंगा (वांवच्या) ...	९२३
घेवडा ...	९२४
घेंटुळीपांढरी खरपच्या रक्तवसु	४२२
घोळ ...	८६५
चकाणी निम्ब, कडुनिम्ब ...	६२६
चण्डाकन्द ...	९५२
चणिकातृण ...	३७७
चन्द्रकान्तमणि ...	७९४
चन्दन ...	१६
चमेली ...	४८४
चवळया ...	९२६
चाकवत, चिविल, चाकवताचीभाजी	८६२

विषयः	पृष्ठांकः
चापड़ा करंज ...	
चाफा ...	
चारोळीं, चारवृक्षबीज ...	
चहा ...	
चिखलमाती गारा ...	
चिंच ...	
चिफळी ...	
चिबूड ...	
चिरपोटाणी ...	
चिरफळ ...	
चित्रक, चित्रकरच ...	
चीढ ...	
चुका ...	
चोपचीनी ...	
चोपडाकरंज, घाडेराकरंजवाळा	
चोरक ...	
जटाँमौसी ...	
जव, जौ ...	
जवाखार ...	
जवस, अळसी ...	
जरणी तृण ...	
जलपिप्पली ...	
जलमंडपी ...	
जलसिरसीं ...	
जस्त ...	
जायपत्री ...	
जायफळ ...	
जासवंद ...	
जीवक ...	
जीवन्ती ...	
जिरें, पांढरें जिरें ...	
जेष्ठमध ...	

विषयः	पृष्ठांकः	विषयः	पृष्ठांकः
जैपाल ...	३९८	तृणाख्यतृण ...	३७५
जाधळें, ज्वारी ...	८१९	तेजबल ...	१९०
झरेर ...	१२५१	तैलकन्द ...	९५२
झावू ...	१२५२	तेल्यादेवदारु ...	२५
झेंडू मखमाल ...	५१८	तैल ...	१०३८
रकांकडी ...	९१९	तौसें ...	८९६
ांकाळा, तरोटा ...	२१	थुवोर ...	७९
टेंट ...	२७०	थोरऐरण ...	२७१
ेंभुर्णी ...	५९७	थोळजाई, श्वेत, पिंवळी,जाई	४८३
ाळिंब ...	५५५	थोरजाम्भुळ, नदीजाम्भूळ ...	६४९
डिकेमाली ...	१४८	थोरडोरली ...	२९८
ेंकरकन्द ...	९०७	थोरताग ...	४३४
वकीर ...	१६०	थोरदन्ती ...	३९७
वसे ...	८९६	थोरनीली ...	४०५
मालपत्र ...	५८	थोर बकुळ ...	४९८
म्बाकू ...	१२१७	थोरबेत, वेत ...	३४७
ाक	१०१४– ४३४	थोरवेला, वेलदोडे ...	४९
ाड, कांटेताड, काळाताड ...	६११	थोरशमी, लघुशमी ...	७०३
ांदुळजा, चवळाई ...	८६८	थोरश्वेतकावळी ...	४४४
ानवडीचेंझाड ...	१२५०	थोर सोमवल्ली ...	४४७
ानीचावेल, भूप पाड ...	४५०	दगडीसोनामुखी, रौप्यमुखी ...	७३७
ांबडाभोपळा ...	८८९	दगडफूल ...	७६
ांबे ...	७१४	दवणा ...	५९७
िवस ...	७०६	दही ...	१००४
िलक वृक्ष ...	५०२	दारुहलद ...	६१२
िमर ...	१२४५	दालचीनी ...	५५
ीळ ...	८४३	दातूणी, हेरम्बवृक्ष ...	१२४४
ुरटी फटकी ...	७६२	दुध्याभोपळा ...	८९०
ुत ...	६३७	दुपारीचेंफूल ...	५१६
ुरी ...	८३७	दूध ...	९९०
ुळसी ...	५२४	दूर्वा, नील, श्वेत, हरळी, गंडूरदूर्वा	३७७
ूप ...	१०२५	देवदाली, देवडुंगराफळ ...	४७०

विषयः	पृष्ठांकः	विषयः	पृष्ठां
देवबाभूळ ...	५०६	निशोतर, तेड ...	
देवभात ...	८५४	निःश्रमणिकातृण ...	
द्रोणलवण ...	२४५	नीलमणि ...	
धने, कोथिंबीर ...	१४४	नीलालु ...	
धमासा ...	४०८	नेवती ...	
धरणीकन्द ...	९४९	नेत्राळी ...	
धावडा ...	६९२	पतंग ...	
धायटी ...	८०१	पण्यन्धतृण ...	
धोत्रा ...	३०९	पद्मकन्द, भिस्साण्ड ...	
धोत्रा, राताधोत्रा ...	३११	पद्मकाष्ठ ...	
नखला, वाघनख ...	६९	पनसी ...	
नन्दीवृक्ष ...	६५६	पर्पटी ...	
नवसागर ...	२४५	पळस ...	
नल, देवनल थोर देवनल ...	३६३	पल्लिबाहतृण ...	
नलिका ...	९२	पहाडमूळ ...	
नाकसिंकिणी ...	४७६	पाचूरत्न ...	
नाकुलीकन्द ...	९५०	पांढा,याफुलाचे निसोत्तर ...	
नागकेशर, तांबडा नागकेशर	५४	पांढरफळी ...	
नागतुम्बी ...	१२४३	पांडराकांदा ...	
नागदमणी ...	४७४	पांढरीलसूण ...	
नागपुष्पी ...	४४४	पांढरीलहानजुई ...	
नागवेल ...	२१३	पांढरेउत्पल ...	
नाचणी ...	८५५	पाणआंवळे ...	
नाडीशाक ...	८७६	पाणगवत, लव्हा ...	
नावलीच्यामुळया ...	१८६	पाणी ...	
नारिळी, नारळ ...	५६४	पाणीगवत, पाण्यानीललव्हा ...	
नारिंग ...	५७६	पाथरी ...	
निवडुंग, फणाचेनिवडुंग विकाडी	२९८	पादेलोण ...	
निवळीच्याबिया चिह्नार गजरा	६४२	पानरो, पारिङ्गा ...	
निर्विषी ...	१२४९	पानीयालु ...	
निवडुंगाचेभेद ...	३०१	पारसापिंपळ, भेड, मयूरवृक्ष ...	
निर्गुण्डी ...	३४२	पारा ...	

विषयः	पृष्ठांकः
ारेबत	६३९
ालख, पोइशाक	८७०
ाषाणभेद	२००
पठीसाखर, खडीसाखर	१०८८
पतळ, सोनपितळ	७२५
पतळेचेंकीट, पुष्पाञ्जन	७३३
पत्तपापडा	३१४
पपरीवृक्ष	६५६
पपळ	६५३
पपळमूळ	११८
पपळी	११६
पवळाकोरंटा, तांबडाकोरंटा	५१३
पस्ते	६३४
पठवण	२७४
ीतबेल	४८९
ुंडरीकवृत्त	९०
दिना	९३
्करमूल	१९३
्कराज	७८७
त्रजीवकवृक्ष	६७९
रूपांढरे, पेरूतांबडे	५७५
रोच	५७५
ोकळ्याचीभाजी, माठाचीभाजी	८६७
पया	१२४६
ोकळे	७८३
ोस्त	२२९
सारणी	४२७
ाजक्त, पारिजात	५२०
ाटिक	७८५
णशी	४२२
णस	५९४
कांजी	१२४०
ालसा	६३४

विषयः	पृष्ठांकः
फोंडालु	९४५
बकानिम्ब	३२०
बकुली, वगोले	४९७
वचनाग	७९८
बटारफल, इक्षुफणस	५९६
वड	६५१
बडबती	४५२
वडीसोफ	१२७
बदामगोडे, बदामकडु	५७३
बनप्सा	१२५४
बरसवोंडी, बोडथरा	४११
वरुथा	८५५
बल्वजातृण	३७३
वंशपत्रीतृण	३७५
वंशलोचन	१५९
बहुडा, धाटींगवृक्ष	१०४
बाकुंभा	७००
बागडखार	२४३
वांगे	९२०
वाघेटी	१२४२
बाजरी	८२२
वांभ्रुकंटोली	४६७
वाटाणे	८३९
वादांगुल, कामरुख	४५०
बाभूळ, बाबूळ, कीकर, बाभळीचा गोंद	६७६
वायवरणा	६९८
बाळंतशोप	१२७
वाळा	७२
वाळू	७६४
बावची	२१५
वायविडंग	१५७

विषयः	पृष्टांकः
वाहवा, वाहव्याच्या शेंगा ...	१७५
विकंकती, आककइ, कांसुली...	३५४
विखरा ...	१४६
विडलोण ...	२४१
विदारीकन्द ...	९५१
बिवळा, बिवळ्याचा गोंद ..	६७०
विषडोडी ...	२८६
विष्णुकन्द ...	९४९
वीरवृक्ष ..	५८९
वृतगुण्डतृण ...	३७६
वृद्धि ...	१६८
बृहज्जीवन्ती ...	२८५
वेखण्ड, पांढरें वेखण्ड ...	१५०
वेलची ...	५०
वेलवृक्ष ...	२५९
वेल्लतूर ...	१२४०
वेलचीभाजी ...	८७६
वेळु, पोकळूवेळ, भरीववेळ...	३६१
वेहण्याचेफळ ...	६२६
वैदूर्यरत्न ...	७९१
बोरीचेझाड, वोर, रायबोर, लघुबोर ...	६२३
वोळ ...	७६७
ब्रह्मदण्डी ...	१२१४
ब्राह्मी ...	४६१
भ्रमरशाली ...	१२२७
भांग, गांजा ...	२२५
भांबुर्डी ...	३५३
भारंगी ...	१९९
भुईकोहळा, वेन्द्रिचावेल ...	३८१
भुइफोड, अळंबी ...	९५८
भुइमुगाच्याशेंगा ...	६४७

विषयः	पृष्टांकः
भूतृण ...	
भुयआंवळी ...	
भूर्जपत्र ...	
भेंडे, रानभेंडे ...	
भोंकर, शेलबर्ट, भोंकरी, गोंधणी ...	
मका ...	
मखाणे ...	
मज्जरतृण ...	
मञ्जिष्ठ ...	
मटक्या ...	
मत्स्याची ...	
मद्य ...	
मध ...	
मनशील ...	
मन्थानकतृण ...	
मयूरशिखा ...	
मर्य्यादालता ...	
मराठी ...	
मसूरा ...	
महामेदा ...	
महाळुंग ...	
माका ...	
माड ...	
माणिक ...	
मादु ...	
मानककन्द ...	
मायफळ ...	
मायमूळे, माइनी ...	
मायळू ...	
मालकांगनी ...	
मालती ...	

विषयः	पृष्ठांकः	विषयः	पृष्ठांक.
लाकन्द ...	९५०	यवेची, टीटवी ...	४३६
रवेलीच मूळ, चवल ...	११९	रक्तचन्दन ...	२०
रें, पांढरी मिरें ...	११४	रक्तपाढळ ...	२६५
श्रवर्ग ...	११७३	रक्तरोहिणा ...	६७५
ठ ...	२४०	रताळें, गोडेंरताळें ...	९४२
खालु ...	९४४	रांसजन ...	२१३
गुसवेल, नार, सापसंद ...	१८८	रासजकदम्ब, धूलिकदम्ब, कलंबमूमि ...	५०२
वकन्द ...	५००	राजगिरा ...	१२५३
कुट ...	१२३४	रानउडीद ...	२८८
दारशिंग ...	७३९	रानकासविन्दा ...	८८२
ता ...	९३५	रानकुळीथ ...	१२२१
त, मूत्र ...	१०३३	रानतुळस ...	५२९
ण्डफली, केपडांच्याशेंगा ...	४४४	रानमूग ...	२८७
ण ...	१०७७	रामफल ...	६३२
धी ...	१२२	रामवांस ...	४२०
रा ...	१६५	राळे ...	३७
री ...	१२२६	राळयांचे झाड ...	६६५
डिया ...	१२२६	रिंगणी, भुईरिंगणी, लघुरिंगणी	२७७
इ, मोक ...	८८२	रिठा ...	६७८
कडी, मोखावृक्ष ...	७०१	रुई ...	२९५
गरी, रानमोगरी, साठइमोगरा ...	४८५	रुदंती ...	१२२८
ठेबेर ...	६२३	रुद्राक्ष ...	७०७
त्यांचीशिप, नदींतीलशिंप	७५६	रुपें ...	७१२
तीं ...	७७९	रेणुकबीज ...	७८
थे, नागरमोथे; भद्रमोथे ...	७३	रेवाचीनी ...	१२१५
रचूत ...	७३४	रोहिणी, मांसरोहिणी ...	३४५
रवेल ...	१२१	रोहिष, सुगन्धरोहिषतृण ...	३७०
ळ ...	३६५	लघुइडलिंबु, साखरलिंबु ...	५८१
हरी, रायी ...	८४९	लघुइन्द्रवण कवंडळ, थोरकवंडळ ...	४०१
हाचावृक्ष, मोहवृक्ष, जलमोहा ...	६०२	लघुकावळी, कामीनी ...	४४०

विषयः		पृष्ठांकः	विषयः	
लघुकुरण्डिका	...	१२२९	शाल्मली कन्द	...
लघुचंचु, थोरचंचु	...	८७४	शिंगाडे	...
लघुचिकणा, हिवरहटी, थोर-चिकणा	...	३५२	शिताफळ	...
			शिंदी, खजूरी	...
लघुतालीसपत्र	...	५८	शिवलिंगी, बाहुवल्ली	...
लघुदन्ती	...	३९५	शिरगोळा	...
लघुदर्भ, थोरदर्भ	...	३६८	शिरडोडी	...
लघुदुधी, थोरदुधी	...	४५८	शिरस, श्वेत शिरस	..
लघुपीलु, थोरपीलु, किकलेचा वृक्ष	...	६०४	शिरसी	...
			शिराळी	...
लघुसतावर, शतमूली, आल-वळी	...	३८५	शिल्पकातृण	...
			शिलाजीत	...
लवंग	...	४३	शिलारस	...
लवणतृण	...	३७५	शिसें	...
लक्ष्मणाकन्द	...	९५३	शीवणा गम्भारी	...
लाख	...	२०७	शुभ्राळ	...
लांग, लाक	...	८४७	शूलीतृण	...
लाजाळु, लाजरी, संकोरणी	...	४५६	शेंगट, शेवगा	...
लामज, पिंवळा वाळा	...	८७	शेण्याखैर, गंधियाहिंवर, घाणेरा खैर	...
लाल अघाडा	...	४१५		
लाल मिरची	...	१२११	शेंद्री	...
लाल रताळू	...	९४२	शेंदूर	...
लाल लाजाळू	...	४४६	शेवाळ	...
लोखंड, पोलाद, तिखें	...	७२०	शोली रान हळद	...
लोणी	...	१०७१	श्वेत उपलसरी, कृष्णाउपलसरी	
लोध	...	२२१	श्वेतकावळी	...
शंख	...	७५८	श्वेतकेवडा, केतकी	...
शखालु	...	८५४	श्वेतचम्पक	...
शंखासुर, धाकटीगुल	...	५१७	श्वेतवरधारा	...
शंखाहुली, शखोनी	...	४५३	संख्यावर्ग	...
शहाजिरें	...	१४०	सज्जीखार	...
शालइवृत्त, धूपसालइ	...	६६७	सताप	...

विषयः	पृष्ठांकः
वानवर्ग	१०९२
बजा, मर्वा	५२५
मुद्रफळ	१२९३
मुद्रफेन	१६२
रलदेवदार	२७
रलाडीक	३९
राटे, लहान गोखरू	२८०
र्पात्ती	४५३
र्व विधिश्राळ	९५४
होड	६९६
खर	१०८७
ग	६९६
गरगोटा	३३९
तपुती	१२५३
वरी, शेवरी, सांवरीचा डीक	६८९
वि, कथील	८५६
मर मीठ, साम्बर लोण	२३९
रडोल	६६
लवण	२७
लम्मिश्री	१२१९
ल्विण	७०४
ळी, भात	८००
न्दूर	७४६
द्धेश्वर, सिद्धाख्य, सिद्धनाथ	५१७
सरपटी	३१४
ताफळ	६३१
ठ	१०९
र्शन	४७८
पारी	६०७
र्यकान्तमणि	७९३
र्यफूल	४६५
दिलोण	२३८
नगेरु, तांबे गेरु हुर, मुंजो	७५३

विषयः	पृष्ठांकः
सोनवेल	३५८
सोनचांफा	४९४
सोनामुखी	४६९-४०३
सोनें	७०९
सोमल, शंखिया	८०६
सोमलता	४४७
सोरा	२४७
स्वागीखार	२२४
स्थलकमलिनी	५४२
स्पृक्का, गगौना, कापूरी शाक	८८
स्फटिक	७९५
ह्मशागुग्गुळ, गुग्गुळ	३१
हरताळ	७४७
हरवेली	२८५
हरभरे	८३४
हर्तकी, बाळ हरडी	८५
हरीक	८५७
हळद	२०९
हळदीचा वृक्ष	७०६
हस्तजोडी	९५३
हस्तिकन्द	९४६
हिंग	१४५
हिंगणवेट	६८०
हिंगुळ	७३०
हिरवा बदाम	१२४८
हिरवेमूग, पिंवळे मूग	८२३
हिरा	७७२
हिराकस श्वेतनीळी	७५१
हिलमोचिका	८७८
ह्रोश	१५६
क्षीरकाकोली	१६९
क्षीरविदारी	९५१
क्षुद्रबदाम	१२४८
त्रायमाण	४३५
त्रिपर्णी कन्द	९५३

शालिग्रामनिघण्टुभूषणने गुजराती शब्दोंनी अकारादि०

अनुक्रमणिका.

विषयः		पृष्ठांकः	विषयः	
अक्कलकरो	...	१५५	अरणी, ऐरण	...
अखोड	...	६०६	अरडुसो	..
अगथियो	...	५२२	अरडुसोमरमच्च	...
अगनचस्मानोकाच	...	७९३	अरिठा	...
अगर	...	२३	अर्क	...
अघेडी	...	४४२	अलवी	...
अघेडो	...	४१२	अलम्बुषा	...
अंकोल्य	...	३५०	अलसी	...
अजकर्णशाल	...	६६६	अशेलियो	...
अजमा	...	१३२	आकडो	...
अंजीर	...	६३४	आखराडच	...
अडदवेल्य	...	२८८	आखसंध	...
अडदवेल्यकाडोगलिया	...	९२६	आगियो	...
अडबाड	...	२८८	आतृप्य	...
अंडबाडमगवेल्य	...	२८७	आदु	...
अतलसनीकली	...	२१९	आंबो	...
अनन्नास	...	६३३	आंबला	...
अनूपादिवर्ग	...	११३३	आंबली	...
अफीण	...	२३१	आंबाहलदर	...
अफीणनाडोडवा	...	२२९	आम्रातक	...
अभरख	...	७४०	आलु	...
अंभेडा	...	५५०	आशुपालो	...
अभ्रशिरीषका	...	७०३	इन्गोरियो	...
अमरवेल्य	...	४४९	इन्दरजव	...
अमलवेंत	...	५९३	इन्दरवाणीयु, गावयुकणु	...

विषय.		पृष्टांक	विषयः		पृष्ठांकः
रेमेद	...	६५०	कडो	...	३८४
ुदर्भ	...	३७३	कणेस्करो	...	८७२
डद	...	८२६	कणेर	...	३०७
कंटो	...	१२२४	कंथार	...	१२३५
थमुंजीरु	...	१२१८	कदम्ब, कलम्ब	...	५०३
म्बरो	...	६५७	कपरीकाली वेल्य	...	४३०
न्दरकनी	...	४७९	कपीलो	...	१७३
मीभोरिंगणी	...	२७५	कपुर	...	१
धाहुली	...	१२२६	कपुरकाचरी	...	८४
षलतृण	...	३७३	कमरकरबांटामीठावेछे	...	६१७
द्धि	...	१६७	कमल	...	५३१
षभक	...	१६४	कमलकाकडी	...	५३७
कलकंटो	...	१२३५	करञ्ज, चरणसे	...	३२५
खरो	...	४१६	करपटां	...	१२४१
तचीकागदी	...	४९	करमदी, करमद्य	...	६२०
त्राळुक	...	८९	करलीनोभाजी	...	८८०
लियो, शकोतरिएलियो	...	४२०	करियातु	...	१७९
टफल, करमल	...	५९१	कलइ, कथीर, खरिपारी	...	७१६
टिंगण	...	८७८	कलथी	...	८४२
लिया	...	८३०	कलम्बी	...	८७७
षरलवण	...	२४४	कलौंजीजीरु	...	१४२
चूर	...	८३	कसांजण	...	७३३
चोरा	...	८३	कसेरु	...	९५५
ालोथोर	...	२९८	कस्तूरी	...	६
टुवीरा	...	१२२१	कांकच, तेनाफलकाकचिया	...	३३९
टोली	...	९१५	काकटिंवरवो	...	५९९
डवापटोल	...	९१०	काकडाशिंगी	...	१९६
डवीखरखोडी	...	२८३	काकड़ी	...	८९३
डवीधोली	...	९१४	काकनासा	...	४४३
डापो	...	६६८	काकोली	...	१३७
डीदुधला	...	१८१	कांग	...	८५२
डु	...	१७७	कागदीलिंबु	...	५८१

विषयः	पृष्ठांकः	विषयः	
काच ...	८००	केशर ...	
काजुकलिया ...	६४७	कोकम ...	
कांटा, अशेलियो ...	५१३	कोकरुंदा ...	
कारेला, कडवावेला	९१६	कोठ, कौठ, कोठवडी ...	
कासोंदरी ...	८८२	कोडी ...	
कायफल ...	१९८	कोदरो ...	
कालाजीरी, कडवीजीरी ...	१४३	कोवीं ...	
कालीपाट ...	३९०	कोलकन्द ...	
कालीमूसली, पांढरीमूसली ...	३८४	कोशम ...	
कालोवाली मोध्यतावालजितां-गीणमूल ...	६६	कौचो ..	
		खजुरी, खजूर, खारक ...	
कांसडो ...	६७९	खडी ...	
कांसालु ...	९४५	खपात्य ...	
कांसु ...	७२४	खरखोडी ...	
कष्टालु ...	९५४	खरखस ...	
किंदुरु, शेषगुन्दर ...	३८	खरणेर ...	
कीडामारी ...	१२२३	खाखरो ...	
कुकुडवेल्य ...	४७०	खाजवणी ...	
कुठ, उपलेट ...	८२	खाट, खट्वावेल्य ...	
कुन्द ...	५०३	खाटी आंवली ...	
कुबाधियो	२१७	खांड ...	
कुवार ...	४१८	खापरियुकालु ...	
कुत्रो ...	४६४	खारींजाल्य ...	
कुलिञ्जन ...	१५२	खिजडो ...	
कुसुम्बानावी ...	८६०	खुरसाणीअजमा ...	
कुसुम्बो, करड ...	२०६	खेडा, कम्बोइ ...	
कृष्णबीज ...	४०३	खेढियो, गोरड ...	
कृष्णत्रिवृता ...	३९३	खेरवेल्य ...	
केतकी ...	४२०	खैरसार काथी ...	
केवडो ...	५१८	गजपीपर ...	
केर ...	६९४	वन्धक ...	
केल्य ...	५५७	गरणी ...	

विषय.	पृष्ठांक.	विषय.	पृष्ठांक.
गरमर ...	१२५०	चन्द्रकान्त ...	७९४
गरमालो, गरमालोनो गोल ...	१७५	चन्द्रस, जनार्जन, गन्धवेरिजो	४०
गलका ...	९०६	चवक ...	११९
गली ...	४०४	चंवेली ...	४८२
गलो ...	२४९	चम्पाकाटी, चम्पोकाचनार ...	३२२
गाजर ...	९३९	चमेडथ आंखनु भरण ...	१२२१
गारो ...	७६६	चा ...	१२१६
गुगुल ...	३१	चसेली ...	६२८
गुच्छकन्द ...	९५४	चिभडो, राजगरां, कोठीवां...	८९९
गुण्डतृण ...	३७६	चित्रो ...	१२३
गुण्डासिनीतृण ...	३७६	चीणो ...	८५२
गुन्दो ...	६४०	चुकोखाटीभाजी ...	८६६
गुवार ...	९२३	चोपचीनी ...	१५३
गेरु ...	७५३	चोला ...	८२८
गोखरु ...	२८०	छास, घोलवं ...	१०१४
गोपीचन्दन ...	७६४	छिंगडियो, वछनाग ...	७९८
गोभी ...	१२५५	छुछराजगरीनी भाजी ...	८७५
गोमूत्रिकातृण ...	३७३	छुवारीअजमोद, करमाणी दीनेची	१३६
गोमेदगोमूत्रजेवुपीलारंगनु ...	७८९	जव ...	८१५
गोरोचन्दन, गोरोचन ...	६८	जवखार ...	२३३
गोल ...	१०८४	जवासी ...	४०९
[illegible]कुं ...	८१७	जरणीतृण ...	३७४
[illegible]डला ...	६४	जलकुम्भी ...	१२३०
[illegible]ी ...	९२५	जसत ...	७७०
[illegible]ोडोवच, खुरशाणीवच, वालवच ...	१५०	जाइफल ...	४५
[illegible]ोलामिठां ...	९१२	जाती, स्वर्णजाती ...	४८२
[illegible]ण्डालकन्द ...	९५२	जाविन्त्री ...	४७
[illegible]णकयाव ...	५२	जामफल ...	५७५
[illegible]णिकातृण ...	३७७	जायफल ...	४५
[illegible]णोठी ...	३४१	जारव्य ...	८१९
[illegible]ण्या ...	३३४	जासुस ...	५२०
		जीवक ...	१६३

विषय.	पृष्ठांक.
जुइजिगरी, पीलीजुइ ...	४८७
जेठीमधनोमूल, जेठीमधनोशीरो	१७१
झरेर ...	१२५१
झाबू ...	१२५२
झिपटो ...	४१५
झिरय ...	१२३३
झुमकडांकड़वाते कडवी घीसोडी	९०६
झुमखडा ...	१२५३
झेरकोचला ...	६००
टंकणपाडियो टंकणधुलियो ...	२३५
टांको, चील ...	८६२
टिंवरवो ...	५९७
ट्रेडउम्बरो ...	६५९
डमरो ...	५२७
डांभो ...	८६७
डिकामारी ...	१४८
डुंगली ...	९३३
डुधियो, वछनाग ...	३०५
ढोल ...	१८४
तगर ...	२९
तज ...	५५
तडबूज ...	९०२
तवखीर ...	१६०
तवरिया ...	१२४५
तमाकु ...	१२१७
तमाल ...	६८३
तमालपत्र ...	५८
तल ...	८४३
तलवणी ...	१२३७
तलिया, शकरटेटी ...	९००
तांजलजो ...	८६८
ताड़, श्रीताड, हेन्ताल ...	६११

विषय.	पृष्ठांक.
तालीसपत्र ...	
तांसलि ...	
तिलकवृक्ष ...	
तुम्बरु ...	
तुरदाम्य ...	
तुरीयाघीसोडी ...	९०४
तुलसी ...	
तृणाह्यतृण ...	
तेजबल ...	
तेल ...	
तेलकन्द ...	
थुणेर ...	
थोरदांडलियो, कटालो, हातलो, तरधारी ...	
दधि ...	
दरभ, डाभ ...	
दाड़म ...	
दांस एटले नेपालना मूल ...	
दारु ...	
दारुणी ...	
दारुहलदर ...	
दुध ...	
दुधियोपाणो ...	
दुधीयु ...	
दुधेली मोटी, थोरदुधी ...	
देवदारु ...	
द्रोणी लवण ...	
धतुरो ...	
धमासो ...	
धरणीकन्द ...	
धराख ...	
धाणा, कोथंबीर ...	

विषय.	पृष्टांक.
धावडो ...	६९२
धांवणी ...	२०१
धामण ...	६३५
धो, लीलीधो, धोलीधो, गंडूरधो	३७८
धोला फूलनो निसोतर ...	३९३
धोला मिठां ..	९१२
धोलो एरन्डो, रातो एरन्डो ...	२९०
धोलो चम्पो, नागचम्पो, सुलतान चम्पो ...	४९४
नखला, सावजातनां नख ...	६९
नन्दीवृक्ष ...	६५६
नवसार ...	२४५
नसोतर ...	३९२
नाक छीकणी ...	४७६
नाकुली, गन्धनाकुली ...	१८८-९५०
नागकेशर ...	५४
नागडमण ...	४७४
नागडच, नागडच नानी ...	३३१
नागपुष्पी ...	४४४
नागबला ...	३५५
नागह वेल्यपान ...	२५३
नागरमोथ ...	७३
नागली ...	८५५
नानों आगियो ...	१२२९
नारङ्गी लिंबु ...	५७६
नालानी भाजी ...	८७६
नाली ...	३६४
नालीयर ...	५६४
निर्मली ...	६४२
निर्विशी ...	१२४९
निःश्रेणिकातृण ...	३७४
नीलम, कालुनग ...	७८८
नीलाडू ...	९४६

विषय.	पृष्टांक.
नेतर ...	३४७
नेपालो ...	३९८
नेवरी ...	४८७
पंडोला ...	११०
पणस ...	५९४
पण्यन्ध तृण ...	३७६
पतकौलु, शाकरकोलु ...	८८९
पतङ्ग ...	२०
पत्थरमूल ...	७६
पद्मक तुलाकंडु ...	३१
पद्मकन्द ...	५३९
पनसी ...	४२२
पर्पोटी ...	१२२८
परचाला ...	७८४
परवो लिया, तरवारडी ...	९२५
पलियो ...	१२२८-९१
पल्लिवाह तृण ...	३७५
पस्तां ...	६३४
पांडेरवो ...	३२२
पाणी आंवला ...	६१९
पाणी ...	९५९
पाताल तुम्बडी ...	१२४३
पानीयालु ...	९४
पान्य धाडाडी ...	३८
पारस पीपलो ...	६५४
पारेवत ...	६३९
पारो ...	७२६
पालखनी भाजी ...	८७०
पाषाण भेद ...	२००
पीतपापडो, खडि सलियो ...	३१४
पीत मूली ...	१२१५
पीतल ...	७२५
पीपरी मूलना गंठोडा ...	११८

विषय.	पृष्ठांक.
पीपर्य ...	६५६
पीपलो ...	६५३
पीलियो ...	७६०
पीलुडी ...	४४०
पीरोजो ...	७९५
पुखराज ...	७८७
पुन्नाग, सरपुन्नाग ...	५११
पुत्रजीवक ...	६८०
पृष्टपर्णी ...	२७४
पोकर मूल ...	१९२
पोथी ...	८७२
पौपणा ...	५४०
पोपया ...	१२४६
प्रशारणी वेल (नारी) ...	४२७
फग वेलानो कन्द, भोकोलु ...	३८२
फांग्य ...	१२०१
फाटक मणि ...	७९५
फुग्यमीद डानीवली ...	९५७
फुल ...	४८१
फोडालु ...	९४५
फोदिनो ...	९३
बकान्य ...	३२०
बंगडीखार ...	२४३
बज्रदन्ती ...	१२४०
बटपत्री ...	४५२
बंटी ...	८५४
बड ...	६५१
बडागरु मीठ ...	२४०
बणरुकपास, हिरवड़ीक कपशिया	३५९
ब दाम मीठी, बदाम कड़वी ...	५७२
ब धारणी ...	१४५
ब नप्सा ...	१२५४
ब न हलदर ...	२११

विषय.	पृष्ठांक
वन्यो ...	
वपोरियो ...	
वरथा ...	
वरधारा ...	
वरशोली ...	
वरियालि ...	
वरुणो ...	
बलदाणा खिरेटा ...	
बल्वजतृण ...	
वंशपत्रीतृण ...	
वंशलोचन, वंशकपूर ...	
बाघाटी ...	
बाजरो ...	
वांझ कण्ठोलो ...	
बादाम नीली ...	
बांदो ...	
वापुंगा ...	
वावची ...	
वावची नावी ...	
वावढींग ...	
वावल ...	
वाराहीकन्द, सुअरिया, शालिवणावेल्य ...	
वालछड़ ...	
वालो ...	
वालोल ...	
वांश ...	
विकलो ...	
विडलवण ...	
विदारी कन्द ...	
विलो, विलु ...	
विष्णुकन्द ...	
बीजोरु लिंबु ...	

विषय.	पृष्ठांक.	विषय.	पृष्ठांक.
बीया, हीरादखण ...	६७०	मठ ...	८२५
वृद्धि ...	१६८	मडाशिंगी, आटर्डीनशींग ...	४४५
वृत्ततृण ...	३७६	मत्स्याक्षी ...	४५२
बेठीभोरिंगणी ...	२७८	मध ...	१०७३
वेडां ...	[illegible]०४	मन्थानकतृण ...	३७५
वेबडीओलप ...	४५०	मनःशिला ...	७४७
वेल्य, डोलर, जंगलीचिखलयो, रानमोगरो ...	४८५	मवेली, मालेडु ...	६८२
वेल्यतरु ...	१२४०	मरखो ...	७०१
बोडीअजमोद ...	१३४	मरजादवेल्य ...	१२३३
बोदारकांकरो ...	७३९	मरवो ...	५२५
बोलसरी ...	४९७	मरी तीखा, धोलामरी ...	११४
ब्रह्मदण्डी ...	१२१४	मरेटी ...	१२२२
ब्राह्मी ...	५६२	मसूर ...	८३२
भद्रमुञ्ज ...	३६५	महामेदा ...	१६६
भमर छाल्य ...	१२३७	महुडो, जलमहुडो ...	६०२
भांग्य, गांजो, चरस ...	२२५	माखण ...	१०२०
भांगरो ...	४३२	मांडवी ...	६४७
भारंगी ...	१९९	मांड, भेलिमाड ...	७०८
भिलामां ...	२२२	माण्यक, चुन्नी ...	७७४
भींढा ...	९१९	माधवीलता ...	४७९
भुँइआंवला ...	४६०	मानकक्न्द ...	९५४
भुँइकोलु ...	८८७	मामेजवो ...	१२५०
भूतृण ...	३७१	माया ...	१२१२
भोजपत्र ...	६८४	मालकांगणी ...	१९१
भोपाथरी ...	४६४	मालती ...	४९०
मकाइ ..	८६०	भालाकन्द ...	९९०
मखाना ...	१२३२	मिजरानी आंख्यजेवो लसनिया	७९०
मगलीला, कालाकच्छी ...	८२२	मिण ...	१०७७
मञ्जरतृण ...	३७४	मिश्रवर्ग ...	११७३
मजीठ ...	२०३	मीठीआल्य ...	४६९
मठर ...	८३८	मीठू ...	२४०
मटाणा ...	८३८	मुखमल ...	५१८
		मुखालु ...	९४४

विषय.	पृष्ठांक.
मुचकन्द ...	५८०
मुंडी, गोरखमुंडी, बोरियोकलारमृणाल ...	४११
मुतर ...	१०३२
मूर्वा ...	४३९
मूला, मूलाफली, मोगरी ...	९३५
मृणाल ...	५३८
मेथी ...	१२९
मेदा ...	१६५
मेंदी ...	१२२५
मोटीगली ...	४०५
मोटीखरखोडी तृणधारनी ...	२८५
मोटी बोरडी, नानीबोरडी ...	६२३
मोठीएलची, एलचा ...	४९
मोटो लीवडो ...	३२१
मोती ...	७८९
मोती सींप ...	७५६
मोरमांसी ...	८६
मोरशिखा ...	४८०
रमतरोहिणी ...	६७५
रतनजोत ...	३९८
रतवेलियो ...	४७१
रतांजली ...	१९
रतालु, शकरकन्द, श्वेतालु ...	९४३
रसवती ...	२१३
राई ...	८४९
राजगरो ...	१२५३
राजजांबु, राबणा, वेलवोया जांबु, डुङ्गरिया जांबु ...	६५०
राडारुडी, वाछंटी ...	२८३
रातफूलना पाडल श्वेतपांढर कांकच ...	२६५
रानतुलसी भेद ...	५२९

विषय.	पृष्ठांक.
रामफल ...	
रामबावल ...	
रायचम्पो ...	
रायण ...	
राल ...	
राशंगडी ...	
रासना ...	
रिङ्गना ...	
रिशामणि ...	
रुंपु ...	
रुद्राक्ष ...	
रुरवडो ...	
रेती, वेलु ...	
रोण्य ...	
रोहिषतृण ...	
लकुच ...	
लवणतृण ...	
लवींग ...	
लसण ...	
लक्ष्मणाकन्द ...	
लाख ...	
विडि पीपल ...	
लिंबडो ...	
लीलुपानु ...	
लुणीभिणी, लुणीमोटी ...	
लोलु, मोलु, गजवेल्य ...	
लोदर, पठाणी लोदर ...	
शङ्ख ...	
शङ्खजीरु ...	
शङ्खवेल्य-आल्युफुटामाणा भगलिंगी ...	
शङ्खावली ...	
शङ्खालु ...	

वि
शण
शतावरि
शवन्य
शरघवो
शरपुङ्खा
शरशेष
शाकतुञ्ज
शाकर
शाग
शाजीरु
शामो
शालपर्ण
शालेन्द्रु,
शाल्मलि
शाल्य,
शिगोड
शित्रलिं
शिरीष,
शिल्पिक
शिलाज
शिसम
शिषमूल
शीआली
शीशुं
शुण्ठ्य
शुवाणी
शुभ्रालु
शेतूत
शेदरणी
शेय
शेवती
शेवाल,

विषय.		पृष्ठांक.	विषय.		पृष्ठांक.
शरा	...	४३३	शेमलनोगुन्द, मोचरस	...	६९०
शतावरी, एकलकंठो, शाषवायुवा		३८६	शेरडी	...	१०७८
शवन्य	...	२६२	शोणरस	...	४१
शरघवो	...	३२६	शोणबी	...	४२१
शरपुङ्खा	...	४०६	सोपारी	...	६०७
शरशेष	...	८४७	शोमल, शोमलखार, शंखियो		८०६
शाकनुजीरु	...	१३८	संख्यावर्ग	...	११०७
शाकर	...	१०८८	संचल	...	२४२
शाग	...	६९६	सताव	...	१२२४
शाजीरु	...	१४०	सन्धानवर्ग	...	१०९२
शामो	...	८५६	सन्धेशरो	...	५१७
शालपर्णी	...	२७२	सप्तपर्ण	...	७०४
शालेन्डु, धूपेड़ो	...	६६७	समदरफीण	...	१६२
शाल्मलीकन्द	...	९५७	समर फल	...	१२१३
शाल्य, चोखा	...	८०८	सरलदेवदार	...	२७
शिगोडा	...	९२८	सहदेवी	...	३५३
शिवलिंगी	...	४३८	साजड़	...	७०८
शिरीष, शेरशडो	...	६६१	साजीखार	...	२३४
शिल्पिका तृण	...	३७४	सांटोड़ी	...	४२३
शिलाजीत	...	७६८	साथेर	...	३०१
शिसम	...	६६३	साल	...	६६५
शिषमूली	...	८७४	साहोडा	...	६९६
शीआली, हाण शणगार	...	५२०	सिन्दूर	...	७४६
शीशुं	...	७१९	सिन्दूरी	...	५१८
शुण्ठ्य	...	११०	सिंधालुण	...	२३८
शुवाणी भाजी, शुवादाणा	...	१२६	सुखड़प	...	१६
शुभ्रालु	...	९४६	सुगन्धपीलू	...	८७
शेतूत	...		सुगन्धतृण	...	३७२
शेदरणी	...	१२२७	सुदर्शन	...	४७८
शेय	...	५७४	सुधामूली	...	१२१९
शेवती गुलाब मोशमीगुलाब	...	४९०	सुरमो	...	७३३
शेवाल, लील	...	१२३१	सुरोखार	...	२४७

विषय.		पृष्ठांक.	विषय.		पृष्ठांक.
सुरजमुखी	...	४६५	हलदरवो	...	
सूरण	...	९४०	हस्तिकन्द	...	
सोनामाखी रूपामाखी	...	७३७	हस्ति जोढी	...	
सोनु	...	७१०	हंसराज, काली डांडलीनो	...	
सोमवल्ली	...	४४७-३५८	हाड साकला	...	
स्वर्णपत्री	...	४३०	हिंगलो	...	
स्थलपद्मिनी	...	५४२	हिराबोल	...	
स्पृक्का	...	८८	हिरो	...	
स्फटिक	...	७९५	हिलमोचिका	...	
हपुषा	...	१५६	हीराकसी	...	
हर्मो	...	७०५	क्षीरकाकोली	...	
हरडे, हिमज	...	९५	क्षीरविदारी	...	
हरिताल	...	७४७	त्रायमाण	...	
हरेणु	...	७८	त्रांबो	...	
हलदर	...	३०९	त्रिपर्णी कन्द	...	



A

cacia Catechu ... 671
cacia Arabic ... 676
cacia Peneta ... 1236
cacia tree ... 676
conitum ... 219
conite leaved Kidney bean 828
conit ... 798
cuteangled Cucumber ... 904
dhatoda vasica ... 313
lbizzia lebbeck ... 661
langium lamarchii ... 350
lhagimanrorum ... 420
loe Amricana ... 420
lexandrain sena ... 479
lstonia scholaris ... 704
lmond ... 1248
maranthus tricolor ... 867
maranthus polygo noides 872
marphophallus pamculatus 940
mmonim Chloridum ... 245
ndrographis pamculata 436
ndropagon Nordoides ... 368
ndropagon Citratus ... 371
ndropagon Muricatnm 66
ndropagon Muricatus 72
ndro-graphis Pamculata 436
nthocephalus Cadumba 503
nut which clears water 642
pium Gravcolens ... 134
pple ... 574
Racemosus ... 386
timisia Marituma ... 136
timisia Vulgaris ... 474
Artocarpus Intergrifolia 594
Artocarpus Lucoocha ... 596
Arrow Root ... 161
Asiatic Grewia ... 635
Avicimia tomentosa ... 1245

B

Babreng ... 157
Bamboo Cane ...
Banhenia Variegata ... 322
Banyan Tree ... 651
Banduc Nut ... 339
Barleria Prionilis ... 513
Barbedoesaloes ... 418
Baringtonia Acutangula 1213
Black Seeded dolichos ... 924
Black Pepper ... 114
Black Carway seed ... 140
Black Helebore ... 177
Black Jack ... 736
Black wood sisso Tree ... 663
Blepharis Edulies ... 878
Bladdered Dock ... 866
Bell Metal ... 724
Berberis Aristata ... 213
Betal leaf ... 253
Betal Nut Palm ... 485
Bishops weed seed ... 132
Bead Tree ... 341
Bitter Luffa ... 906
Blumea Odorate ... 477
Bitter Barley ... 815
Brisdelia Montana ... 1234
Bringle ... 920
Borax Baborate of soda... 235

Bottle Gourd ... 891
Boswelia Therifera ... 667
Brass ... 725
Bristly Luffa ... 470
Brijonia Lacimosa ... 438
Brovista speces ... 1243
Brackteateb Birthwort ... 1223
Bulp Onion ... 933
Buty Rum ... 802
Bushy Gardenia ... 185
Buchanania Latifolia ... 607
Butter Milk whey ... 1014
Byophtum Sensatioum ... 1251

C

Cabbage Rose ... 490
Camphor ... 2
Cane ... 347
Canavalia ... 924
Caper ... 694
Carbonate of Soda ... 234
Carbonate of Potash ... 233
Carbonate of Sodia ... 244
Carambola ... 618
Careya Arboria ... 197
Carey Tree ... 700
Carrot Root ... 939
Cashew Nut ... 647
Cas
Castor oil plant ... 291
Caesalpinia Pulcherrma... 517
Catechu ... 672
Catseye ... 792
Cattle Fish bone ... 162
Cauli Flower ... 1255

Cedrus Deodara ...
Celosia Crostata ...
Cephalandra Indica ...
Chavica Roxburghii ...
Cherry Plum pune ...
Cissampelos Pareira ...
Citrus Acida ...
China Roct ...
Chinese Dolicas ...
Chickling Vetch ...
Chirata ...
Cinnamon Bark ...
Clarified Butter ...
Claro-dendron Serrotium
Cletoria Ternatea ...
Clemates Trileba ...
Cloride of Sodium ...
Clorodendron Phlomodes
Cloves ...
Clustared Hiploge ...
Cocculus Villosur ...
Cocculus Cardiflious ...
Cocoanut Palm ...
Colens Bor Brutus ...
Common Cress ...
Common Soral ...
Common Flax seed ...
Common Rue ...
Colocynth ...
Copper ...
Coriender seed ...
Corcharus Acu langulares
Costus Root ...
Cotton Plant ...
Couch ...

ovries ... 755
owhage ... 343
ox berbata ... 366
arteva Roxburghii ... 696
ressa Critica ... 1238
reep Cynodon ... 378
roten seed ... 395
ubeb Pepper ... 52
ucumber ... 893
ucumber ... 896
uminin seed ... 139
urdled Milk ... 994
ustard apple ... 631
yamopses Psoralioides 923
yperus Rotundous ... 75

D

ate Palm ... 569
elil ... 680
elphineum Denudatum 1249
esmodium Gangeticum 272
ikamallegium ... 148
ill seed ... 126
owny Branch Butea ... 685
iamond ... 772
ioscorea Sativa ... 947
ryginger ... 190

E

agle wood ... 24
bony ... 597
chites Caryophyllata ... 490
lephant grass ... 367
lphantopus scabar ... 473
lloopa Tree ... 602
mblic Myrobalan ... 108
Emerald ... 786
Endian Dellium ... 32
Engenia Jambolan ... 649
Eneyeli Ferox ... 1232
Enpharbia Hirta ... 459
Epicarpus Orientalis ... 1244
Erythrina Indica ... 322
Esculent lacourtia ... 215
Evolvulvulus ... 453
Extract of Indian Berbery 214

F

Fegonia Arabisa ... 408
Fenel seed ... 128
Fenugreck ... 129
Ferula Narthex ... 145
Ficus Virance ... 656
Field pea ... 822
Fig Tree ... 616
Five leaved Chaste Tree 328
Flacourta Catappracta ... 602
Flax Hemp ... 422
Flower ... 467
French Mary Gold ... 502
Flugea Cencopyrus ... 427
Folia Malabathy ... 58
Four Leaved Cassia ... 1221

G

Gallant ... 1212
Gallstone Bijoor ... 68
Gamboge Thistle ... 194
Garlic Root ... 930
Garuga Pinnata ... 1241
Garcima ... 591
Ginger Root ... 111

Gmelina Arboria ... 262
Gold ... 710
Gigantic swallow wort ... 296
Glass ... 797
Grangea Madrass Patana 288
Grape Rasins ... 643
Grain ... 834
Great leaved Caledium ... 834
Great Milet ... 819
Ground Nut Pea Nut ... 649
Greater Galangal ... 151
Gumcopoal sandarack ... 40
Guatterera Longifolia ... 510
Guava white Guava red... 574
Gymmenia sylvestre ... 443
Gynandropsis Pentaphylla 1237
Gyrardinia Heterophylla 1244

H

Hairy Mordica ... 977
Hedychum Spicatum ... 84
Henbane ... 136
Hermaphrodite Amaranth 868
Henna ... 1225
Hibischus Escenlentus ... 919
Hibiscus ... 644
Hipion orientale ... 1250
Holarehena Antidy sentinia 184
Holastema Rheedu ... 455
Honey ... 1073
Hornbeam heart ... 352
Horse Readish Tree ... 326
Hymono-dictyon Excelsum 1236
Hypoxis Orchioides ... 384

I

Indian Sarsaparilla ... 430
Indian Hemp ... 225
Indian Mallow ... 354
Indian Tobaca ...
Indigo ...
Indigofera ...
India Peny Wort ...
Indian Kinotree ...
Indian Corn Maize ...
Indian Tobaco ...
Indigofera Pansiflora ...
Indian Teak Tree ...
Ionium Suffruticosum ...
Ipomoea Renefornus ...
Ipomoea Reptan ...
Ipomoea Biloba ...
Ipomoea Digitata ...
Iron Pyrites ...
Irissp ...
Isphagul Seed ...
Ixora Parinflora ...

J

Jaequemontii ...
Jasminum Flexeles ...
Jasminum Grandiflorium
Jasminum Sambac ...
Jasminum Aurieculatum
Jasmine flowered Carisa
Jujub ...
Justicia Procum bans ...

K

Kamila Rottlera ...
Keg Tree Ficus Glomirata
Keg Tree Ficus Opposilafelia
Kidney Bean ...
Kokum Butter Tree ...

L

ablab Vulgaris ...	830
arge Cardamom ...	48
arge Flowered Agita ...	522
ead ...	718
ea Hirta ...	442
emon ...	585
emonum Acidum ...	585
encas Cepholotus ...	464
entil ...	852
iquid Amber ...	42
iquorice Root ...	171
esser Cardamon ...	50
itharge ...	739
ong leaved Pine ...	27
ong leaved Barlaria ...	416
ong Pepper ...	116
ong zedoary ...	83
oranthus Longfolious ...	450
otus ...	531
uffa Pentandra ...	905

M

adder Root ...	204
aiden Hair ...	446
ango Ginger ...	211
ango Tree ...	543
arkine Nut ...	222
elia Azedarach ...	319
ilks Hedge Prickly Pear	298
illet ...	852
imosa Sensitiva ...	457
agnifying Glass ...	793
ollu Gohirsta ...	1252
omordica Dioica Male	467
Mucuna Monosperma ...	926
Mud Black Clay ...	766
Mercury ...	728
Mustard Seeds ...	81
Mustard Tree of Scripture	604
Mulberies ...	637
Musk Moscus ...	7
Murraya Kernigii ...	321
Muhelia Champaca ...	494
Myrha Bulsa ...	767
Myrobalous Black Myrouclaus	95
Myrovallon Bellirica ...	105
Myristica Fragrans ...	47

N

Narrow Caved Sepistan	640
Nabclea Cardifolia ...	706
Nettedcus Tard apple ...	632
Nimb Tree ...	816
Niter Saltpeter ...	247
Net Meg ...	46

O

Obtuse leaved Mimusops	629
Ocimum Gratissimum ...	529
Ochrocarpus Longifolium	511
Ochrocarpus Mesnaferrea	54
Odina Wodier ...	683
Oil ...	1038
Onix ...	790
Olibanum ...	38
Opium ...	231
Orange ...	576
Origanum Valgaris ...	301
Ornatt ...	518
Orocylum Indicum ...	266

Officinal Carthamu ... 206
Ougenia Dalbergia ... 705
Ouster Shell ... 751
Oval leaved Rose Bay ... 333
Oval leaved Capia ... 217
Oval leaved Rose Bay ... 181

P

Pallatory Root ... 155
Palmyra Palm ... 611
Pamcum Frumentaceum 856
Pamcum Italicum ... 843
Parderiafartida ... 427
Paudanus Odoratissimus 508
Parging Bistan ... 398
Parmelia Perforata ... 77
Panicum Milidceum ... 852
Papaw ... 215
Penlapetes Phoenicea ... 517
Pennus Padam ... 30
Penny Royal ... 1222
Phaseolus Trilobetus ... 287
Phylanthus Niruri ... 460
Physic Nut ... 395
Physalis Minima ... 1229
Pine Apple ... 633
Pipe Clay ... 754
Pigeon Pea ... 837
Piper Root ... 118
Pistacheo Nut ... 634
Pistacea Inlageirruna ... 196
Plantago Amplexicanlis 121
Paltain ... 557
Plumbago Rosea ... 123
Plumieria Acutifolia ...
Poplar leaved Fig Tree ...
Poison Nut ...
Poiceana Regina ...
Popy Seed ...
Poppy Capsules ...
Pomegranate ...
Potato ...
Pteros permum Suberifolium
Pubsceent Cucumber ...
Pudding Pipe Tree ...
Puntured Paspalum ...
Pump Kin ...
Putraywa Roxburgii ...
Purple Fleabane ...
Purple Lippia ...
Purslane ...
Purified sugar Candy ...
Purple Tephrosia ...
Predabum Murex ...

R

Radish ...
Ranwolfea serpentina ...
Red Sandal wood ...
Red wood Tree ...
Red Lumber Stone ...
Red Malabar Night Shade
Red Coral ...
Rice ...
Ruby ...
Round Poddad Cassia ...
Rough Chaif Tree ...
Rourea sautaloides ...

S

affire ... 188
affron Crasistiunata ... 13
alt ... 246
al Tree ... 665
and ... 764
andal wood ... 16
appan wood ... 20
arcastemma Brevisligma 447
assapralla ... 283
elastrus Montana ... 626
entipida Orbicularis ... 455
rratophyllum Submersum 1231
hell ... 70
hell lac ... 207
lver ... 712
lk Cotton Tree ... 690
nall fennel flower ... 142
noe flower ... 520
lamum Jequinnii ... 275
lamum Kanthocarpum 271
lanum Nigrum ... 440
ap Stone ... 762
das pinosa ... 350
da Rhombifolia ... 355
hrebera Swietenioides 701
ike Nard ... 62
ondias Mangefera ... 328
onge Tree ... 673
aff Tree ... 192
cotruse Aloes ... 420
rew Tree ... 445
ap Beiri Soap Nut ... 678
ang Tree ... 703
r pus Kysor ... 955
Sissamum Niger Seeds ... 843
Sinapif Alba ... 847
Snake Gourd ... 908
Smooth leaved Pongamia 325
Spider wort ... 874
Spiked Millet ... 821
Sphorranthus Indicus ... 411
Spreading Hogneed ... 411
Spanish Jasmine ... 482
Square Stalked ... 520
Striphus asper ... 696
Sugar ... 1087
Sugar Cane ... 1078
Sulphuret of Mercury ... 732
Sulphuret of Antimony... 730
Sulphate of Copper ... 734
Sulphate of Iron ... 751
Sun flower ... 465
Suriman Medda ... 497
Sweet Almona ... 572
Sweet Marjaran ... 525
Sweet Potato ... 942
Sweet Flag Root ... 149
Sweet Scented Oleander 307
Symploces Racemosa ... 211

T

Tale Glimmer ... 740
Tallredment ... 94
Tamarind Tree ... 361
Taxus Bacata ... 60
Tea ... 1217
Tecoma Undulata ... 675
Thalictrum Foliolosum ... 485
Thesiliceous Concretion... 159
Thevetia Nerifolia ... 156

The Gourd ... 889
Thistle ... 1224
Thorn Apple ... 309
Thorny Caper Brush ... 1243
Thrick Spiked Elusine ... 336
Tin ... 717
Traling Elispta ... 432
Tricosanthus Cucumerina 910
Treacle Molasses ... 1084
Trichodesma Indicum ... 1126
Tricolaps Glaberrina ... 1213
Tooth Ache Tree ... 190
Tepay ... 787
Turmera ... 210
Turbsthroat ... 393
Turkois ... 795
Torn leaved Cargota ... 708
Two flowered Dolicus ... 842

U

Unaqua Sodium Chloride 242
Uraria Lagopoides ... 274
Urine ... 1032

V

Vanda Roxburghii ... 136
Veleriana Hardivicka ... 29
Veronia Cineria ...
Vitis Quadragularis ...
Vitis Penlaphylla ...
Vittex Speciosa ...

W

Walnut Belgaum Walnut
Water Melon ...
Water Caltrop ...
Water ...
White Basil ...
Winter Cherry ...
Wheat ...
White goose foot ...
White gourd ...
Wolf Bane ...
Wood fardia ...
Wood Apple ..
Worm Wood ...
W ...

Y

Yellow Risin ...

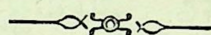
Z

Zinc Oxyde ...
Zinc .

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

शालिग्रामनिघण्टुभूषण ।

सप्तमअष्टमभाग ।



नत्वा सिद्धिविनायकं च विविधा भाषाः समालोच्य ताः
आयुर्वेदमहोदधिं विमलया बुद्ध्या विनिर्मथ्य वै ॥
शालिग्रामबुधेन केवलमिदं लोकोपकृत्यै कृतं
शलिग्रामनिघण्टुभूषणगतं सप्ताष्टमांशद्वयम् ॥ १ ॥

कर्पूरादिवर्गः ।

कर्पूरनामानि ।

ओषधीशश्चकर्पूरं सोमसंज्ञं सिताभ्रकम् ।
शिला हिमांशुः शीतांशुश्चंद्रभस्म निशापतिः ॥

अर्थ–ओषधीश, कर्पूर, सोमसंज्ञ, सिताभ्रक, शिला, हिमांशु, शीतांशु, द्रभस्म, निशापति, (तरुसार, भस्माह्वय, रेणुसार, हनु, हिमाह्वय, वेधक, शुसारक, शीतमरीचि, भस्मवेधक, विधु, शीतमयूख, घनसार, चन्द्रसंज्ञ, वातृक, ग्लौ, कुमुदबान्धव, सिताभ्र, हिमवालुका, इन्दु, द्विजराज, नक्षत्रेश, शीथिनीनाथ, यामिनीपति, शशधर, सोम, क्षपाकर, हिमाह्व, क्षपापति, ताभ, शीत, घनसारक, शीतकर, शशाङ्क, हिमवालुक, हिमकर, शीतप्रभ, म्भव, शुभ्रांशु, स्फटिकाभ्र, कारमिहिका, ताराभ्र, चन्द्रार्द्रक, चंद्र, नाकु-ार, गौर, कुमुद, शीतलरज, सिताह्व, स्फटिक, शशि और हिमोपल) ।

हिन्दीभाषामें	कपूर.
बंगभाषामें	कर्पूर.
महाराष्ट्रभाषामें	कापूर.
गुर्जरभाषामें	कपुर, कपूर.
कर्णाटकीभाषामें	कर्पूर.

तैलङ्गीभाषामें	कर्पूरामु.	
अँग्रजीभाषामें	कॅम्फर.	Camph
लैटिन्भाषामें	केम्फोरा.	Camph
फारसीभाषामें	कापूर.	
अरबीभाषामें	काफूर कहते हैं.	

कर्पूरभेद ।

पोतास, भीमसेन, सितकर, शङ्करावाससंज्ञ, पांशु, पिञ्ज, आ हिमवालुक, जूतिका, तुषार, हिम, शीतल, पत्रिकाख्य यह १३ भेद हैं

कर्पूरगुणाः ।

सतिक्तः सुरभिः शीतः कर्पूरो लघुलेखनः ।
तृष्णायां मुखशोषे च वैरस्ये चापि पूजितः ॥ (सुश्रुत)

अर्थ-कर्पूर,-कडुवा, सुगंधि, शीतल, हलका, लेखन तथा तृषा, मु और विरसताको दूर करनेवाला है ।

अन्यच्च ।

कर्पूरः शीतलोवृष्यश्चक्षुष्योलेखनोलघुः ।
सुरभिर्मधुरास्तिक्तःकफापित्तविषापहः ॥
दाहतृष्णास्यवैरस्यमेदोदौर्गन्ध्यनाशनः ।
आक्षेपशमनोनिद्राजननोधर्मवर्द्धनः ।
वेदनाहारकः कामशान्तिकृच्छुक्रमेहकृत् ॥
कर्पूरोद्विविधः प्रोक्तःपक्कापक्कप्रभेदतः ॥
पक्कात्कर्पूरतः प्राहुरपक्कंगुणवत्तरम् ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-कपूर- शीतल, वीर्यजनक, नेत्रोंको हितकारी, लेखन, सुगंधि, मधुर और कडुवा है तथा कफ, पित्त, विष, दाह, तृष्णा, बिरसता (स्वादबिगडजाना), मेदरोग और दुर्गन्धिका नाश करे है और अपक्क इन भेदोंसे कपूर दो प्रकारका है ।पक्क कपूरसे अपक्क कपूरके अधिक गुण हैं ॥

अपिच ।

कर्पूरोमधुरास्तिक्तः शीतलः सुरभिर्लघुः ।
नेत्र्योलेखनकृद्वृष्यः कटुःप्रीतिकरोमृदुः ॥

मदकारीचसंप्रोक्तःकफदाहतृषापहः ।
रक्तपित्तंकण्ठरोगं नेत्ररोगंविषंतथा ॥
पित्तंचमुखवैरस्यंदौर्गन्ध्यमुदरंतथा ।
मूत्रकृच्छ्रंप्रमेहञ्चमलगन्धंचनाशयेत् ॥
सएवनूतनःस्निग्धस्तिक्तश्चोष्णश्चदाहकृत् ।
सोपिजीर्णोदाहशोषनाशनःपरिकीर्त्तितः ॥
सोपिधौतोगुणैःश्रेष्ठःप्रोक्तोवैद्यैःपुरातनैः ॥ (निघण्टुरत्नाकर)

अर्थ-गुण । कपूर-मधुर, कडुवा, शीतल, सुगन्धि, हलका, नेत्रोंको हितकारी, लेखन, शुक्रको उत्पन्न करनेवाला, चरपरा, प्रीतिकारक, मृदु और मद (नसा) करनेवाला है तथा कफ, दाह, पियास, रक्तपित्त, कण्ठरोग, नेत्ररोग, विष, पित्त, मुखकी विरसता, दुर्गंध, उदररोग, मूत्रकृच्छ्र, प्रमेह और मलकी दुर्गंधको दूर करे है. वही नवीन कपूर, स्निग्ध, कडुवा, गरम और दाहजनक है । वही पुराना कपूर दाह और शोषनाशक है और धुला-हुआ कपूर गुणोंमें श्रेष्ठ है ॥

कर्पूरलक्षणम् ।

शिरोमध्यंतलंचेतिकर्पूरस्त्रिविधःस्मृतः ।
शिरस्तम्भाग्रजंमध्ये मध्यंपर्णतलेतलम् ॥
भास्वद्विदर्शपुलकंशिरोजातंतुमध्यमम् ।
सामान्यपुलकंस्वच्छंतलेचूर्णंतुगौरवम् ॥
स्तम्भगर्भस्थितंश्रेष्ठंस्तम्भबाह्येचमध्यमः ।
स्वच्छमीषद्धरिद्राभंशुभंतन्मध्यजंस्मृतम् ॥
सदृढंशुभ्ररूक्षञ्चपुलकंबाह्यजंवदेत् ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-शिर, मध्य और तल इन भेदोंसे कपूर तीन प्रकारके हैं, स्तम्भके अग्रभागमें होनेवाला कर्पूर शिरसंज्ञक है, मध्यमें होनेवाला मध्यम है और पत्तोंके तले होनेवाला तलसंज्ञक कहलाता है, प्रकाशवान् निर्मल फूलाहुआ शिर है, सामान्य फूला हुआ स्वच्छ मध्यम है और तलेमें होनेवाला चूर्ण

स्वरूप भारी है, स्तम्भके गर्भमें स्थित कपूर श्रेष्ठ है, स्तम्भके बाहर होने मध्यम है, निर्मल और कुछ हलदीके रंगके सदृश रंगवाला श्रेष्ठ कपूर होनेवाला है, कडा, सपेद, रूक्ष और फूला हुआ बाह्य कपूर कहलाता

अपिच ।

स्वच्छंभृङ्गारपत्रंलघुतरविशदंतोलनंसिक्तकंचे--
त्स्वादेशैत्यंसुहृद्यंबहलपरिमलामोदसौम्यत्वदायि ।
निःस्नेहंदार्ढ्यपत्रंशुभतरमितिचेद्राजयोग्यंप्रशस्तं
कर्पूरंचान्यथाचेद्बहुतरसमलस्फोटदायिव्रणाय ॥ (रा०नि०)

अर्थ-स्वच्छ भाँगरेके पत्तोंके समान, छोटे २ टुकडे बहुत हलके तोलमें वहुत चढे, स्वादमें तिक्त हो, ठण्ढा, हृदयको प्रिय, जो अत्यन्त न्धिका प्रवाह देनेवाला, तेलरहित, दृढ पत्रवाला ऐसा कपूर अत्यन्त राजाओंके योग्य है । इससे दूसरे प्रकारका कपूर विशेष करके फोडे घावको उत्पन्न करनेवाला है ॥

पोतास-भीमसेनी-वरास कपूरगुणाः ।

पोताश्रयःस्वादुशीतोवृष्यस्तिक्तःकटुःस्मृतः ।
तृड्दाहरक्तपित्तानांकफस्यचविनाशकः ॥
त्रयोप्येतेतुकर्पूराः पक्वापक्वविभेदतः ।
द्विप्रकारःसउद्दिष्टःपक्वोतिगुणदःस्मृतः ॥ (निघण्टुरत्नाकर)

अर्थ-(पोतास भीमसेनी और वरास कपूर) स्वादिष्ठ, शीतल, जनक, तिक्त, कटु तथा तृषा, दाह, रक्तपित्त और कफका नाश करे है तीनों कपूर पक्व और अपक्व इन भेदोंसे दो प्रकारके हैं, इनमें पक्व कपूर अधिक है ॥

शङ्करावासकर्पूरगुणाः ।

ईशावासश्चकर्पूरोभेदीवृष्योमदापहः ।
अतिशुभ्रोन्मादतृषाश्रमकासक्रमिक्षयान् ।
स्वेदंचैवांगदाहश्चनाशयेदितिकीर्त्तितः ॥ (नि०र०)

अर्थ-शंकरावास कपूर-दस्तावर, वृष्य, मदनाशक और अत्यन्त शुभ्र तथा उन्माद, पियास, श्रम, खांसी; कृमि, क्षईरोग, पसीना और अंगके हको दूर करेहै ॥

हिमकर्पूरगुणाः ।

हिमकर्पूरकःशुभ्रोवृष्यःशीतोरसेकटुः ।
तृड्दाहमोहस्वेदानांनाशकः परमोमतः ॥ (नि०र०)

अर्थ-हिमकपूर-शुभ्र, वीर्य्यजनक, शीतल, रसमें चरपरा, तथा तृषा, ह, मोह और पसीनेको दूर करेहै ॥

उदयभास्करकर्पूरगुणाः ।

कर्पूरोदयभास्करोनिगदितः पीतःसरःस्वच्छकः
सम्प्रोक्तःकठिनःकटुःसमुदितःस्याद्दीपकोग्नेर्लघुः ॥
श्रीदःपित्तकरःकफाक्रिमिविषान्वातश्चनासास्रुतिं
लालास्रावगलग्रहौचशमयेज्जिह्वाजडत्वापहः ॥ (नि०र०)

अर्थ-उदयभास्कर कपूर-(पक्व सदल निर्दल दोनों प्रकारका) पीत तावर, निर्मल, कठिन, चरपरा, अग्निको दीपन करनेवाला, हलका, मीदायक, पित्तकारक तथा कफ, कृमि. विष, वात, नाकसे पानी गिरना, से लार गिरनी, गलग्रह और जिह्वाकी जड़ता इनको दूर करेहै ॥

पर्णकर्पूरगुणाः ।

पर्णकर्पूरकास्तिक्तःशुद्धश्चुन्मादकरोमतः ।
मूत्रकृत्पीनसंदाहंनाशयेदितिकीर्त्तितः ॥ (नि०र०)

अर्थ-पानकपूर-कडवा, शोधक, उन्माद करनेवाला तथा मूत्र रोग, नस और दाहनिवारक हैं ॥

चीनकर्पूरनामानि ।

चीनकश्चीनकर्पूरःकृत्रिमोधवलःकटुः ।
मेघसारस्तुषारश्चद्वीपकर्पूरजःस्मृतः ॥

अर्थ-चीनक चीनकपूर, कृत्रिम, धवल, कटु, मेघसार, तुषार, द्वीप-रज ॥

चीनकर्पूरगुणाः ।

चीनकः कटुतिक्तोष्णईषच्छीतः कफापहः ।
कण्ठदोषहरोमेध्यः पाचनः कृमिनाशनः ॥ (रा०नि०)

अर्थ-चीनियाकपूर-चरपरा, कडवा, गरम, किंचित् शीतल, ... शक, कंठरोगनिवारक, मेधाजनक, पाचक और कृमिनाशक है ॥

अपिच ।

चीनाकसंज्ञः कर्पूरः कफक्षयकरः स्मृतः ।
कुष्ठकण्डूवमिहरस्तथातिक्तरसश्चसः ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-चीनियाकपूर कफ, कोढ, कण्डू और वमनको हरनेवाला ... तिक्तरसान्वित है ॥

विवरण ।

कपूरके वृक्ष चीन और जापानदेशमें होते हैं, यह वृक्ष तजकी ... ही गिने जाते हैं । इनकी शाखाओंकी छाल ऊपरसे खरदरी और ... चिकनी होती है, इस वृक्षके ऊपर मौर आता है, फल मटरके ... होते हैं फलके बीजोंमें कपूरके समान सुगंधि आती है और इस वृक्ष... गोदनेसे दूध निकालता है उस दूधका कपूर बनता है । कपूरकी अने... ह जैसे भीमसेनी, पिञ्ज, पोतास, हिम, सित, पांशु, शङ्करावाससंज्ञ, ... सार, जूतिका, तुषार, पत्रिकारूप, शीतल और पर्णकपूर इत्यादि ... चीनिया कपूर और कृत्रिम कपूर होते हैं ।

कस्तूरीनामानि ।

गन्धधूलिश्चकस्तूरीमदाह्वामृगनाभिजा ।
कस्तूरिकाण्डजानाभिर्मिश्रायोजनगन्धिका ॥ (रा०नि०)

अर्थ-गन्धधूलि, कस्तूरी, मदाह्वा, मृगनाभिजा, कस्तूरिका, अ... नाभि, मिश्रा, योजनगन्धिका, (गन्धशेखर, मृगनाभि, मृगमद, मृग... नाभि, मदलता, योजनगन्धा, मार्ग, गन्धबोधिका, कालाङ्गी, धूप... गन्धपिशाचिका, वातामोद, मदनी, गन्धकेलिका, वेधमुख्या, ... सुभगा, बहुगन्धदा, सहस्रवेधी, श्यामा, कामान्धा, मृगाण्डजा, कुरङ्ग... ललिता, श्यामला, मोदिनीसहस्रभित्) ॥

हिन्दीभाषामें	कस्तूरी.	
बङ्गभाषामें	मृगनाभी.	
महाराष्ट्रभाषामें	कस्तूरी.	
गुर्जरभाषामें	कस्तूरी.	
कर्णाटकीभाषामें	कस्तूरी.	
तैलङ्गभाषामें	कास्तूरी.	
अंग्रेजीभाषामें	मस्क.	Musk.
लैटिन्भाषामें	मोस्कम्	Moscus.
फारसीभाषामें	मुश्क	
अरबीभाषामें	मिस्क.	

कस्तूरीभेदाः ।

कपिलापिङ्गलाकृष्णाकस्तूरीत्रिविधाक्रमात् ।
नेपालिकाचकाश्मीरेकामरूपेचजायते ॥ (रा०नि०)
कामरूपोद्भवाश्रेष्ठानैपालीमध्यमाभवेत् ।
काश्मीरदेशसम्भूताकस्तूरीह्यधमाभवेत् ॥ (भावप्र०)

अर्थ-कस्तूरी वर्णके भेदकरके तीनप्रकारकी है। जैसे कपिल वर्ण, पिङ्गलवर्ण और कृष्णवर्ण, तहां नेपालमें उत्पन्न होनेवाली कपिलवर्ण अर्थात् भूरेरंगकी होती है, काश्मीरमें उत्पन्न होनेवाली पिङ्गलवर्णकी होती है और कामरूदेशमें उत्पन्न होनेवाली काले रंगकी होती हैं किन्तु भावमिश्रने नेपाल देशकी कस्तूरी नीले रंगकी और काश्मीरकी कपिलरंगकी लिखी है कामरू-देशमें उत्पन्न होनेवाली श्रेष्ठ है, नेपालदेशमें उत्पन्न होनेवाली मध्यम है और काश्मीरमें उत्पन्न होनेवाली कस्तूरी अधम होती है।

कस्तूरीपञ्चभेदाः ।

साप्येकाखरिकाततश्चातिलकाज्ञेयाकुलित्थापरा
पिंडान्यापिचनायिकेतिचपरायापंचभेदाभिधा ॥ (रा०नि०)

अर्थ-खरिका, तिलका, कुलित्था, पिण्डा और नायिका इस भांति पांच प्रकारकी है ॥

चूर्णाकृतिस्तुखरिकातिलकातिलाभा
कौलित्थबीजसदृशाचकुलत्थकाच ।
स्थूलाततःकियदियंकिलपिण्डकाख्या ॥
तस्याश्चकिंचिदधिकायदिनायिकाख्या ॥ (रा० नि०)

अर्थ–चूर्णके सदृश खरिका, तिलके सदृश तिलका, कुल्थीके बीज समान कुल्था, कुल्थाकस्तूरीसे कुछ मोटी पिण्डिका और पिण्डिकासे कि अधिक स्थूल नायिका कस्तूरी होती है ॥

कस्तूरीपरीक्षा ।

स्वादेतिक्तापिञ्जराकेतकीनांगन्धंधत्तेलाघवंतोलनेन ।
याप्सुन्यस्तानैववैवर्ण्यमीयात्कस्तूरीसाराजभोग्याप्रशस्ता
(रा० नि०)

अर्थ–स्वादमें कडवी, पीतवर्ण, केतकीके फूलके समान सुगंधि तोलमें हलकी और पानीमें गेरनेसे जिसका रंग न बदले, वह क राजाओंके सेवने योग्य है ॥

अपिच ।

यागन्धंकेतकीनांहरतिपरिमलैर्वर्णतःपिञ्जराभा
स्वादेतिक्ताकटुर्वालघुरथतुलितामर्दिताचिक्कणास्यात्
दाहंयानैतिवह्नौचिमिचिमिकुरुतेचर्मगन्धाहुताशे
साकस्तूरीप्रशस्तावरमृगतनुजाराजतेराजभोग्या ॥
(रा० नि०)

अर्थ–जो केतकीके फूलकी सदृश गंधवाली हो, रंगमें हाथियोंके मद हरै, स्वादमें कडवी तथा चरपरी हो, तोलमें हलकी, मलनेसे चिकनी हो जा आगमें डालनेसे नहीं जलै, परन्तु बहुत कालतक चिम चिम शब्द करै, चमडा जलनेके समान गंध आवे, वो मृगके तनसे उत्पन्न हुई कस्तूरी रा ओंके भोगने योग्य है ॥

कस्तूरिकागन्धभेदलक्षणः ।

बालेजरतिचहरिणेक्षीणेरोगिणिचमंदगन्धयुता ।

कामातुरेचतरुणेकस्तूरीबहलपरिमलाभवति ॥ (रा० नि०)

दुष्टकस्तूरीलक्षण ।

यास्निग्धाधूमगंधावहतिविनिहितापीततांयावसोंत--
निःशेषंयानिविष्टाभवतिहुतवहेभस्मासादेवसद्यः ।
याचन्यस्तातुलायांकलयतिगुरुतांमर्दितारूक्षणंच
ज्ञेयाकस्तूरिकेयंखलकृतमतिभिःकृत्रिमानैवसेव्या ॥
(रा० नि०)

अपिच ।

शुद्धोवामलिनोस्तुवामृगमदः किंजातमेतावता
कोप्यस्याऽनवधिश्चमत्कृतिनिधिःसौरभ्यएकोगुणः ।
येनासौस्मरमण्डनैकवसतिर्भालेकपोलेगले
दोर्मूलेकुचमण्डलेचकुरुतेसंगंकुरङ्गीदृशाम् ॥ (रा० नि०)

दुष्टकस्तूरीपरीक्षा ।

करतलजलमध्येस्थापनीयामहाद्भिः
पुनरपितदवस्थंचिंतनीयंमुहूर्त्तम् ।
यदिभवतिचरक्तंतज्जलंपीतवर्णं
नभवतिमृगनाभिःकृत्रिमोऽयंविकारः ॥ (का०)

अर्थ-बालक, वृद्ध, क्षीण और रोगी मृगकी कस्तूरी मंद गंधवाली है। कामातुर और तरुण मृगकी कस्तूरी बहुत उज्ज्वल और अत्यन्त गंधिवाली होती है। जो कस्तूरी छूनेमें चिकनी हो और धुयेंकेसी गंध आवै, जलमें रखनेसे वस्त्र पीतवर्ण होजाय, आगमें रखतेही तत्काल भस्म होजाय, तराजूमें रक्खी हुई भारी हो, अर्थात् कम चढै और मलनेसे रूखी होजाय, उस कस्तूरीको बनावटी समझकर सेवन करना नहीं चाहिये। शुद्ध व मलिन जातिकी कस्तूरी नपुंसक मृग और मृगी की होती है, इसके अतिरिक्त और दूसरीकी पहिचान नहीं, इसमें केवल एक सुगंधही बडा चमत्कृत गुण

है। जो कि यह कामका शृंगार मस्तक, कपोल, कण्ठ, भुजा और ण्डलमें स्त्रियोंके लगाई जाती है। हथेलीमें जल रखकर एक मुहूर्त उसमें कस्तूरी पडी रहने दे यदि उसका जल लाल व पीला होजाय तो कस्तूरी असल नहीं है कृत्रिम अर्थात् बनावटी विकार है ॥

कस्तूरीगुणाः ।

कस्तूरीछर्दिदौर्गन्ध्यरक्तपित्तकफापहा ॥ (रा०व०)

अर्थ-कस्तूरी छर्दि, दुर्गन्ध, रक्तपित्त और कफरोगकी नाशक है॥

अपिच ।

कस्तूरिकाकटुस्तिक्ताक्षारोष्णाशुक्रलागुरुः
कफवातविषच्छर्दिशीतदौर्गन्ध्यशोषहृत् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-कस्तूरी-चरपरी, कडवी, खारयुक्त, गरम, शुक्रकारक, तथा कफ, वात, विष, छर्दि, शीत, दुर्गन्धता और शोषनाशक है॥

अन्यच्च ।

कस्तूरिकातुचक्षुष्याकट्वीतिक्तासुगंधिका ।
उष्णाशुक्रप्रदागुर्वीवृष्याक्षारारसायनी ॥
किलासकुष्ठमुखरुक्कफदौर्गन्ध्यनाशिनी ।
अलक्ष्मीमलवाततृट्छर्दिशोषविषापहा ॥
शीतश्वकासरोगश्चनाशयेदितिकीर्तिता ॥ (नि० रत्ना०)

अर्थ-कस्तूरी--नेत्रोंको हितकारी, चरपरी, कडवी, सुगंधित, शुक्रजनक, भारी, वृष्य, क्षार, रसायन तथा किलास, कोढ़, मुखरोग, दुर्गन्ध, अलक्ष्मी, मल, वात, तृषा, छर्दि, शोष, विष, खांसी और नाश करे है ॥

विवरण। कस्तूरी हिरनकी नाभिमें होती है, उस हिरनको उसकी नाभिको काट लेते हैं, उसको कस्तूरीका नाभा कहते हैं, वह तोलमें तीन ३ तथा चार ४ तोलेका होता है और उसका आकार गोल उसके ऊपर छोटे छोटे बाल होते हैं, रंग भूरा होता है, एक ओरसे कटे चिह्न होता है, देखनेमें आडूके बराबर होता है, उस नाभेको चीरकर निकालते हैं, किसीमें मकाके चूनकी समान निकलती है, किसीमें समान निकलती है, किसीमें कुल्थीके बीजके समान निकलती है,

मटरके दानेके समान निकलती है, जिन हिरनोंकी नाभिसे कस्तूरी निकलती है, वह हिरन काश्मीर नेपाल और कामरूदेशमें होते हैं ।

गंधमार्जारवीर्य (जवादिकस्तूरी अर्थात् गौरासार व वेदअंजीर)

मार्जारीवान्तिमाद्यंतेचक्षुष्याकफवातजित् ॥ (मदनपालनि०)

अर्थ-गंधमार्जारवीर्य--वान्तिको उत्पन्न करे है, नेत्रोंको हितकारी है और कफ वातको जीते है ॥

अपिच ।

गन्धमार्जारवीर्यंतुवीर्यकृत्कफवातहृत् ।
कण्डूकुष्ठहरंनेत्र्यंसुगन्धिस्वेदगंधनुत् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ--गंधमार्जारवीर्य -बीर्यको उत्पन्न करे है, कफवातनाशक तथा कण्डू और कोढको दूर करेहै,नेत्रोंकोहितकारी,सुगंधित औरपसीनेकी वासकोहरेहै॥

अन्यच्च ।

ओतूद्भवाकस्तुरिकाचक्षुष्योष्णासुखावहा ॥
सुगंधिकाचसुस्निग्धावातेशस्ताचवान्तिदा ॥
शुक्रवृद्धिकरीवृष्याअंगकांतिकरीमता ॥
कण्डूकिटिभकुष्ठश्चघर्मगंधंविषंतथा ॥
कण्ठरोगश्चकुष्ठश्चनाशयेदितिकीर्तिता ॥ (निघण्टुरत्नाकर)

अर्थ--गंधमार्जारवीर्य--नेत्रोंको हितकारी, गरम, सुखजनक, सुगन्धित, वात रोगमें हितकारी, वान्तिदायक, वीर्यवर्द्धक, वृष्य, शरीरकी कान्ति बढानेवाली, तथा कण्डू, किटिभ, कुष्ठ, पसीना, दुर्गंध, विष, कण्ठरोग और कोढ़का नाश करनेवाली है ।

लताकस्तूरीगुणाः ।

लताकस्तूरिकास्वादुर्वृष्याशीतालघुःस्मृता ॥
नेत्र्यातिक्ताछेदनीचतीक्ष्णावस्तिविशोधिनी ॥
वस्तिरोगंकफंतृष्णांमुखरोगश्चनाशयेत् ।

लालास्रावंवमिंवातंदौर्गंध्यंचमदंजयेत् ॥
अलक्ष्मीनाशिनीप्रोक्ताभवेद्देशेचदक्षिणे ॥ (नि० र०)

अर्थ--लताकस्तूरी (मुष्कदाना) स्वादिष्ठ, वीर्यजनक, शीतल, ह नेत्रोंको हितकारी, कडवी, छेदक, तीक्ष्ण वस्तिशुद्धिकरनेवाली तथा वस्ति कफ, तृषा, मुखरोग, लालास्राव, वान्ति, वात, दुर्गंध, मद और अलक्ष्मी नाश करनेवाली है ॥

अपिच ।

लताकस्तूरिकातिक्ताहृद्याशीतास्यरोगनुत् ॥ (राजव

अर्थ--लताकस्तूरी--(मुष्कदाना) कडवी, हृदयको हितकारी, शी और मुखरोगनाशक है ॥

विवरण । लताकस्तूरीकी बेल दक्षिणदेशमें होती है, ऐसा निघण्टु क्ररमें लिखा है । किन्तु कहीं देखनेमें नहीं आती, संस्कृतमें लताकस्तूरी दक्षिणदेशजा कहते हैं । हिंदी भाषामें लताकस्तूरी और मुष्कदाना कहते बङ्ग, गुर्जर, महाराष्ट्र, कर्णाटकादि देशोंमें लताकस्तूरीही नामसे प्रसिद्ध तैलङ्ग देशमें तकोल कलमु कहते हैं । तामिलदेशमें कठेकस्तूरी कहते द्राविडदेशमें कस्तूरखेण्ड कहते हैं ।

व्यवहार--बीज मात्रा सात मासेकी ।

कुंकुमनामानि ।

काश्मीरजंकुंकुमञ्चबाह्लीकंशोणिताह्वयम् ॥
कुसुमात्मकसंकोचंपीतनंरक्तचंदनम् ॥ (केचित्

अर्थ--काश्मीरज, कुंकुम, बाह्लीक, शोणिताह्वय, कुसुमात्मक, सं पीतन, रक्तचन्दन, (पीतक, घस्र, रक्तसंज्ञ, सङ्कोचपिशुन, हरिचंदन, रज, दीपक लोहित, सौभर, चंदन, कश्मीरजन्म, अग्निशिख, वर, रक्त, वीर, लोहित, चंदन, चारु, कश्मीरजन्म, बाह्लीक, बरबाह्लील, अग्नि असृक्, काश्मीर, रुचिर, शठ, शोणित, घृसृण, वरेण्य, अरुण, का जागुड, कान्त, वह्निशिख, केशर, गौर, केशर, धीर, अस्र, रुधिर) ॥

हिन्दीभाषामें	केसर.
वङ्गभाषामें	कुंकुम--केशर.
मराठीमें	केशर.

गुजरातीमें	केसर.	
कर्णाटकीमें	कुंकुम.	
तैलङ्गीमें	कुंकुमपुवु.	
अँग्रेजीमें	सेफ्रन्	Saffron
लैटिन्में	क्रोकससेटिवसू	Crocusstivios.
द्राविडीमें	कुंकुमपूव	Cracistimata.
फारसीमें	लरकीमास.	
अरबीमें	जाफरान.	

कुङ्कुमभेदाः ।

काश्मीरदेशजक्षेत्रेकुंकुमंयद्भवेद्धितत् ।
सूक्ष्मकेशरमारक्तंपद्मगन्धितदुत्तमम् ॥
बाह्लीकदेशसञ्जातंकुङ्कुमंपाण्डुरंभवेत् ।
केतकीगन्धयुक्तंतन्मध्यमंसूक्ष्मकेशरम् ॥
कुङ्कुमंपारसीकेयंमधुगन्धितदीरितम् ।
ईषत्पाण्डुरवर्णंतदधमंस्थूलकेशरम् ॥ (भा० प्र०

अर्थ–केशर तीन प्रकारकी है, काश्मीर देशमें उत्पन्न होनेवाली ह्लीक (बुखारा) देशमें उत्पन्न होनेवाली और पारस (ईरान)देशमें उत्पन्न नेवाली। जो केशर काश्मीरके खेतोंमें उत्पन्न होती है, वह सूक्ष्म केशरसे क कुछेक ललाई लिये और कमलकी सदृश सुगंधियुक्त होती है, यह सब शरोंमें श्रेष्ठ है ॥ जो केशर बाह्लीक (बुखारा) देशमें उत्पन्न होती है, पीली और केतकीके पुष्पकी समान सुगंधीयुक्त होती है, और सूक्ष्मभी तीहै यह मध्यम है ॥ जो केशर पारस (ईरान) देशमें उत्पन्न होती है, मधुकी गन्धयुक्त, कुछेक पीली और बडे केशवाली होती है, उसको धमकेशर जानना ।

कुंङ्कुमलक्षणम् ।

अव्यक्तरक्तिमामोदिमर्दनात्कर्णिकात्मकम् ।
स्थिररागंकरेलग्नंभग्नंकुङ्कुममुत्तमम् ॥
हीनमेवाग्निकाश्मीरंगरंपाण्डुरकेशरम् ॥ (द्रव्यचिह्न)

अर्थ-जिसमें अप्रगट लाली हो, और सुगंधवाली हो, तथा कर्णिकाकी समान हाथमें लगकर उसका रंग स्थिर रहे, वह केशर है और जो केशर अग्निके रंगकी समान, विषयुक्त, पीले रंगकी केशरसे हो, वह हीन केशर समझनी ॥

कुंकुमगुणाः ।

कुङ्कुमंसुरभितिक्तकटूष्णंकासवातकफकण्ठरुजाघ्नम् ।
मूर्द्धशूलविषदोषनाशनंरोचनंचतनुकान्तिकारकम् ॥
(राजनिघण्टु)

अर्थ--केशर-सुगंधित-कडवी, चरपरी, गरम, रोचक, शरीरकी वढानेवाली, तथा कास, वात, कंठरोग, मस्तकपीडा और विषके वि[illegible] नाश करे है ॥

अपिच ।

कुङ्कुमंकटुकंस्निग्धंशिरोरुग्व्रणजन्तुजित् ।
तिक्तंवमिहरंवर्ण्यंव्यंगदोषत्रयापहम् ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-केशर-चरपरी है, स्निग्ध है, तथा शिरोरोग, व्रण और कृमि[illegible] है, कड़वी है, वमनको हरे है, शरीरके रंगको सुंदर करेहै, व्यङ्ग अर्थ[illegible] और त्रिदोषका नाश करे है ॥

अन्यच्च ।

कुङ्कुमं रेचकंप्रोक्तंकण्डूवैवर्ण्यनाशनम् ॥ (रा० व[illegible]

अर्थ-केशर-रेचक अर्थात् दस्त करानेवाली है, तथा खुजली[illegible] विवर्णताको दूरकरेहै ॥

अपिच ।

कुंकुमंकटुंसिध्मशिरोरुग्व्रणजन्तुजित् ।
उष्णंहास्यकरंबल्यंव्यंगदोषत्रयापहम् ॥ (मदनवि[illegible]

अर्थ-केशर-चरपरी, गरम, हसीको करनेवाली, बलको उत्पन्न क[illegible] तथा सिध्मरोग, शिरोरोग, व्रण, कृमि, व्यंग और त्रिदोषनाशक है ॥

अन्यच्च ।

कुंकुमंतीक्ष्णमुष्णञ्चाप्रियंवर्ण्यंसुगान्धिकम् ।
कटूष्णंकफवातघ्नंत्वग्दोषस्वेदपित्तजित् ॥ (केचि[illegible]

अर्थ-केशर-तीक्ष्ण, गरम, प्रिय, वर्णको उज्ज्वल करनेवाली, चरपरी, कफवातनाशक, त्वचाके रोग, पसीना और पित्तको दूर करे है ॥

सूखीहुई सुगन्धियुक्त गर्म केशर, देशी वैद्यक चिकित्साकी अपेक्षा ईरानी चिकित्सामें अधिक वर्त्तावमें आती है।

तैलादि सुगन्ध और रंगके लिये अधिकतासे काममें लीजाती है। ईरान देशमें इसका व्यवहार अनेकप्रकारसे होता है, आनन्दपूर्वक प्रसव करनेके लिये और प्रसवके उपरान्त जरायुकी पीडाके लिये ईरानदेशकी स्त्री केशरकी गोलियें अंचलमें बाँध रखती हैं।

होमियोपैथिकके मतसे रजसंबंधीय रोगोंमें इसका प्रयोग देखा जाता है।

मात्रा चार रत्तीकी।

तृणकुंकुमनामानि।

तृणकुंकुमंतृणास्रंगन्धितृणंशोणितश्चतृणपुष्पम्।
गन्धाधिकंतृणोत्थंतृणगौरंलोहितश्चनवसंज्ञम् ॥

अर्थ-तृणकुंकुम, तृणास्र, गन्धितृण, शोणित, तृणपुष्प, गन्धाधिक, तृणोत्थ, तृणगौर और लोहित ॥

अस्यगुणाः।

तृणकुंकुमंकटूष्णंकफमारुतशोफनुत्।
कण्डूतिपामाकुष्ठामदोषघ्नंभास्करंपरम् ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-तृणकेशर-चरपरी, गरम, तथा कफ, वात, सूजन, कण्डू, पामा, कोढ और आमको दूर करेहै और दीप्ति करेहै ॥

चन्दननामानि।

श्रीखंडंचन्द्रकांतश्चगोशीर्षभोगिवल्लभम्।
भद्रसारंमलयजंगन्धसारश्चचन्दनम् ॥

अर्थ-श्रीखण्ड, चन्द्रकान्त, गोशीर्ष, भोगिवल्लभ, भद्रसार, मलयज, गन्धसार, चन्दन, (भद्रश्री, एकांग, पटीर, वर्णक, भद्राश्रय, सेव्य, रौहिण, याम्य, सर्पेष्ट, पीतसार, महार्ह, श्वेतचन्दन, तिलपर्ण, मंगल्य, मलयोद्भव, गन्धराज, सुगन्ध, सर्पावास, शीतल, गन्धाढ्य, पावन, शीतगन्ध, तैलपर्णिक चन्द्रद्युति, भद्रश्रिय, सितहिम, सर्वप्रिय, राजयोग्य) ॥

(क) (ख)



चंदन



लालचंदन.

हिन्दीभाषामें द्राविडमें	चंदन.
बंगला-मराठी-तैलङ्गीमें	चंदन.
कर्णाटकीभाषामें	गन्ध.
गुजरातीभाषामें	सुखड.
अँग्रेजीभाषामें	सेंडलवुड Sandal wood
लेटिन्भाषामें	सेन्टलम्-आलबुम् Santalum al
फारसीभाषामें	संदल सुफेद.
अरबीभाषामें	संदले अवीयद.

चन्दनलक्षणम् ।

स्वादेतिक्तंकषेपीतंछेदेरक्ततनौसितम् ।
ग्रंथिकोटरसंयुक्तंचन्दनंश्रेष्ठमुच्यते ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-स्वादमें कडवा हो, घिसनेमें पीला हो, तोडनेमें लाल हो, नेमें श्वेत हो, और गांठ तथा कोटर करके संयुक्त हो; ऐसा चन्दन होता है ॥

चन्दनगुणाः ।

चन्दनंशीतलंरूक्षंतिक्तमाह्लादनंलघु ।
हृद्यंवर्ण्यंविषश्लेष्मतृष्णापित्तास्रदाहजित् ॥ (मदनपालनि

अर्थ-चंदन-शीतल, रूक्ष, कडुवा, आनन्दजनक, हलका, हृदयको
[हित]कारी, वर्णको उज्ज्वल करनेवाला तथा विष, कफ, तृषा, पित्तरक्त और
[दा]हको दूर करे है।

अपिच ।

श्रीखण्डोयंद्वितीयःस्यादतिशीतश्चातिक्तकः ।
दाहपित्तज्वरच्छर्दिमोहतृष्णाविनाशनः ॥
रक्तरुङ्मूत्रकृच्छ्रघ्नःकासांश्चैवविनाशयेत ॥ (गणनिघण्टु)

अर्थ-दूसरे प्रकारका श्रीखण्ड चंदन, अत्यन्तशीतल, कडुवा, तथा दाह, [पि]त्त, ज्वर, छर्दि, मोह और तृषाको दूर करे है ॥ तथा रक्तरोग, मूत्रकृच्छ्र, [औ]र खांसीका विनाश करे है ॥



चंदन. (सफेत)

अन्यच्च ।

श्रीखण्डःकटुकस्तिक्तोवृष्यःशीतकषायकः ।
कान्तिकृत्कामजनकोहृद्यश्चसुरभिर्मतः ॥
आह्लादनोलघूरुक्षःपित्तभ्रान्तिज्वरापहः ।
छर्दितट्कृमिसन्तापदाहश्रमविनाशनः ॥
मुखरोगंरक्तदोषंशोषश्चैवविनाशयेत् ॥ (निघण्टुरत्नाकर)

२

अर्थ-श्रीखण्ड चंदन-चरपरा, कड़वा, वीर्यजनक, शीतल, कान्तिदायक, कामको उत्पन्न करनेवाला, हृदयको हितकारी, सुआह्लादजनक, हलका, रूखा तथा पित्त, श्रम, ज्वर, वान्ति, पियास, सन्ताप, दाह, श्रम, मुखरोग, रुधिरविकार और शोषका नाश करे ॥

चन्दनभेदाः ।

चन्दनंद्विविधंप्रोक्तंवेट्टसुक्कडिसंज्ञिकम् ।
वेट्टन्तुसार्द्रंविस्फोटंस्वयंशुष्कंतुसुक्कडि ॥

अर्थ-चंदन, वेट्ट और सुक्कडि इन भेदोंसे दो प्रकारका है, तहां और छिद्ररहित वेट्ट चंदन है और स्वयं शुष्क सुक्कडि है ।

मलयाद्रिसमीपस्थाःपर्वतावेट्टसंज्ञिकाः ।
तज्जातंचंदनंयत्तुवेट्टवाच्यंक्वचिन्मतम् ॥(नि०र०)

अर्थ-मलयाचल पर्वतके निकट जो पर्वत हैं, उनको वेट्ट कहते हैं वेट्ट नामवाले पहाड़ोंमें चंदन उत्पन्न होता है, इसी कारण किसीके मतसे चंदन वेट्ट नामवाला कहलाता है ।

वेट्टचन्दनगुणाः ।

वेट्टचंदनमतीवशीतलंदाहपित्तशमनंज्वरापहम् ।
छर्दिमोहतृषिकुष्ठतैमिरोत्कासरक्तशमनंचातिक्तकम् ॥
(नि०

अर्थ-वेट्ट चन्दन-अत्यन्त शीतल है, तथा दाह, पित्त, ज्वर, वमन, तृषा, कुष्ठ, तिमिररोग, खांसी और रक्तरोगको दूर करे है, और कडवा

सुक्कडिचन्दनगुणाः ।

सुक्कडिश्चंदनंतिक्तंकृच्छ्रपित्तास्रदाहनुत् ।
शैत्यंसुगंधिदंचार्द्रंशुष्कंलेपेतदन्यथा ॥ नि० र०)

अर्थ-सुक्कडि चंदन-कडवा तथा मूत्रकृच्छ्र, पित्तरक्त और दाहको करे है शीतल और सुगन्धिदायक है । यह गुण गीले चंदनके हैं और चंदनके गुण और प्रकारके हैं ।

शम्बरचन्दननामानि ।

कैरातंबहलगन्धंबल्यंशम्बरचन्दनम् ॥

अर्थ-कैरात, बहलगन्ध, बल्य, शम्बर, चंदन, (गंधकाष्ठ, कैरातक, शैलगन्ध)।

शम्बरचन्दनगुणाः।

कैरातकंशीतलतिक्तकंचश्लेष्मानिलघ्नंश्रमपित्तहारि।
विस्फोटपामादिकनाशनंचतृषापहन्तापविमोहनाशनम् ॥
(रा० नि०)

अर्थ-शम्बरचंदन शीतल, कडवा, तथा कफ, वात, श्रम, पित्त, विस्फोटक, पामा, तृषा, ताप और मोहका नाश करे है।

पीतचन्दननामानि।

नारायणप्रियं पीतं पीताभं हरिचन्दनम्।
कालीयकं पीतकाष्ठं जायकं कांतिदायकम् ॥

अर्थ-नारायणप्रिय, पीत, पीताभ, हरिचन्दन, कालीयक, पीतकाष्ठ, जायक, कान्तिदायक, (कालानुसार्य, जाबक, कालेय, वर्णद, पीतगन्ध, पीतक, माधवप्रिय, कालेयक, कर्पूर, कालीय, हरिप्रिय, कालसार) हिं० कलम्बक, पीलाचंदन। बं० कलम्बा। लैटिन्में० सेन्टेलम् पूर्व।

अस्य गुणाः।

पीतश्चचंदनःशीतस्तिक्तःकांतिकरोमतः।
विचर्चिकाकुष्ठकण्डूकफदद्रुविषापहः॥ (नि० र०)

अर्थ-पीलाचंदन-शीतल, कडवा, कान्तिकारक तथा विचर्चिका, कुष्ठ, कण्डू, कफ, दद्रु, विष, रक्तपित्त, कृमि, व्यङ्ग, पित्त, तृषा, ज्वर और दाहको दूर करे है।

रक्तचन्दननामानि।

ताम्राभंताम्रसारंचरञ्जनंरक्तचन्दनम्।
रक्तसारंताम्रसारंरक्तबीजंकुचन्दनम्। (नि० र०)

अर्थ-ताम्राभ, ताम्रसार, रञ्जन, रक्तचंदन, रक्तसार, ताम्रसार, रक्तबीज, कुचन्दन, (क्षुद्रचन्दन, तिलपर्णी, पत्राङ्ग, कुमोद, रक्ताक्त, ताम्रवृक्ष चंदन, लोहित, लोहितचन्दन, ताम्रसारक, रक्ताङ्ग, क्षुद्रचंदन, अर्कचंदन, तिलपर्णिका, पत्तङ्ग, पत्रङ्ग, प्रवालफल, भास्करप्रिय, तिलपर्णं)

हिन्दीभाषामें	लाल चन्दन.
बंगभाषामें	रक्तचन्दन
मराठीभाषामें	रक्तचन्दन.
गुजरातीभाषामें	रतांजली.
कर्णाटकीभाषामें	रक्तचन्दन.
तैलङ्गीभाषामें	एर्रगन्धपुचेक्क-रक्तचन्दनम्
तामिलीभाषामें	सेन् शाण्डनम्
अँग्रेजीभाषामें	रेडसांडलवुड् Redsandal wood
लैटिन्भाषामें	टेरोकार्पससैंन्टेलम् Teracarpus Santal
फारसीभाषामें	संदले सुर्ख.
अरबीभाषामें	संदलअहमर.

अस्यगुणाः ।

रक्तचन्दनमतीवशीतलंतिक्तलक्षणगदास्रदोषनुत् ।
वातपित्तकफकाससंज्वरभ्रांतिजंतुवमथुतृषापहम् ॥ (रा० नि

अर्थ-लालचन्दन-अत्यन्त शीतल, कडवा, रक्तरोगनाशक, वात, कफ, कासज्वर, भ्रान्ति, कृमि, वमन और तृषाको शान्त करे है।

अपिच ।

रक्तपित्तहरंबल्यंचक्षुष्यंरक्तचन्दनम् ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-लालचंदन-रक्तपित्तनाशक,बलकारक, और नेत्रोंको हितकारी

अन्यच्च ।

रक्तंशीतंगुरुस्वादुच्छर्दितृष्णास्रपित्तहृत् ।
तिक्तंनेत्रहितंवृष्यंज्वरव्रणविषापहम् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-लाल चन्दन-शीतल, भारी, स्वादिष्ट, रक्तपित्तनाशक, निवारक, तृष्णाको शान्त करनेवाला, कड़वा, नेत्रोंको हितकारी, वीर्य तथा ज्वर, व्रण और विषको दूर करे है।

पतङ्गनामानि ।

पतङ्गंरक्तसारश्चसुरङ्गंरञ्जनंतथा ।
पट्टरञ्जकमाख्यातंपत्तूरश्चकुचन्दनम् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-पतङ्ग, रक्तसार, सुरङ्ग, रञ्जन, पट्टरञ्जक, पत्तूर, कुचन्दन, (प

काष्ठ, सुरङ्गद, पत्राण्य, पट्टरङ्ग, भार्यावृक्ष, रक्तक, लोहितरङ्गकाष्ठ, रोगकाष्ठ, पट्टरञ्जनक)

हिन्दी, कर्णाटकी, गुजराती, मराठी--पतङ्ग, पतङ्गवृक्ष ।

बंगला--	बकम् काष्ठ ।
तैलंगीमें--	औकनु कट्टु ।
तामिलीमें--	वट्टंगी ।
इंग्रेजीमें--	सेप्पनवुड । Sappan wood
लेटिनमें-	सिसालपिनियासेप्पन् । Coesalpinia Sappan
फारसी-अरबीमें-	बकम् ।

पतङ्गगुणाः ।

पत्रांगंकटुकंरूक्षंमालंशीतंतुगौल्यकम् ।
वातपित्तज्वरघ्नंचविस्फोटोन्मादभूतहृत् ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-पतंग-चरपरा, रूखा, खट्टा, शीतल, गौल्य, तथा वात, पित्त, ज्वर, विस्फोटक, उन्माद और भूतनाशक है ॥

अपिच ।

पत्राङ्गस्तिक्तकःशीतोरूक्षोऽम्लोमधुरःकटुः ।
व्रणशुद्धिकरोवर्ण्यःसुगन्धिर्वातपित्तहृत् ॥
उन्मादज्वरविस्फोटमूत्रकृच्छ्रव्रणाञ्जयेत् ।
कफाश्मरीरक्तदोषभूतबाधानिवारणः ॥ (निघण्टुरत्नाकर)

अर्थ-पतङ्ग-कडवा, शीतल, रूक्ष, अम्ल, मधुर, चरपरा, व्रणशोधक, वर्ण कारक, सुगंधि तथा वात, पित्त, उन्माद, ज्वर, विस्फोट, मूत्रकृच्छ्र, व्रण, कफ, पथरी, रुधिरविकार और भूतवाधाको दूर करे है ॥

अपिच ।

हरिचन्दनवद्वेद्यंविशेषाद्दाहनाशनम् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-पतंगके गुण और पीले चन्दनके गुण समान जानने किन्तु विशेष करके दाहको दूर करे है ।

बर्बरचन्दननामानि ।

बर्बरोत्थंबर्बरकंश्वेतबर्बरकंतथा ।
शीतंसुगन्धिपित्तारिःसुरभिश्चेतिसप्तधा ।

अर्थ-बर्बरोत्थ, बर्बरक, श्वेतबर्बरक, शीत, सुगंधि, पित्तारि, सु
बर्बरोद्भव)

बर्बरगुणाः ।

बर्बरंशीतलंतिक्तंकफमारुतपित्तजित् ।
कुष्ठकण्डूव्रणान्हन्तिविशेषाद्रक्तदोषजित् ॥ (राजनिघण्टु

अर्थ-बर्बरचन्दन शीतल, कडवा, तथा कफ, वात, पित्त, कुष्ठ,
और व्रणनाशक है। विशेषकरके रुधिर विकारको दूर करे है।

हरिचन्दननामानि ।

हरिचन्दनंसुरार्हं हरिगन्धंचन्द्रचंदनंदिव्यम् ।
दिविजंचमहागन्धंनन्दनजंलोहितजंनवसंज्ञम् ॥

अर्थ-हरिचन्दन-सुरार्ह, हरिगन्ध, चन्द्रचंदन, दिव्य, दिविज, महा
नन्दनज, लोहितज ।

हरिचन्दनगुणाः ।

हरिचन्दनंतुदिव्यंतिक्ताहिमंतदिहदुर्लभंमनुजैः ।
पित्ताटोपविलेपिचन्दनवच्छ्रमहरंचशोषहरम् ॥ (रा० नि

अर्थ-हरिचन्दन-दिव्य, कडवा, शीतल तथा पित्त, आटोप
[वमन, मन्दाग्नि, मेदोदोष] नाशक है ॥ और सामान्य चंदनके स
श्रम तथा शोषको दूरकरे है। यह चन्दन मनुष्योंको मिलना दुर्लभ है।

चन्दनानिसमानानिरसतोवीर्यतस्तथा ।
भिद्यन्तेकिन्तुगन्धेनतत्राद्यंगुणवत्तरम् ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-सर्वप्रकारके चन्दन रस और वीर्यमें समान हैं। किन्तु आ
अर्थात् श्रीखण्ड चंदन सब चंदनोंकी अपेक्षा सुगन्धिमें अधिक गुणवा

विवरण-चन्दनकी अनेक जाति हैं, सफेतचन्दन १ पीलाचन
शबरीचन्दन ३ लालचंदन ४ पतंगचन्दन ५ बर्बरचन्दन ६ और हरि
इन सात जातिके चंदनोंमें सफेद चंदन सर्वोत्कृष्ट है।

अगरुनामानि ।



अगरुक्रिमिजंलोहंराजार्हंवंशिकंलघु ।
लोहाख्यंजोङ्गकञ्चापिकृष्णंवर्णप्रसादनम् ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-अगरु, क्रृमिज, लोह, राजार्ह, वंशिक, लघु, लोहाख्य, जोङ्गक, कृष्ण, वर्णप्रसादन, (क्रृमिज, अगरु, वंशक, पिच्छिल, भृङ्गज, पातक, अनार्यक, अनार्यज असार, अग्निकाष्ठ, क्रृमिन्ध, काष्ठक, प्रवर, योगज) हिन्दी, बंगला, मराठी, गुजराती, कर्णाटकी, तामिली इत्यादि सब भाषाओंमें " अगर " नामसेही प्रसिद्ध है ।

तेलंगीभाषामें	हरुगुहचेट्टु ।	
इंग्रेजीभाषामें	इगलवुड ।	Eagle wood
लेटिन्भाषामें	एक्वीलेरिया । एगेलोका ।	Aquilaria Agallocha
अरबीभाषामें	ऊदगरकी ।	
फारसीभाषामें	कशवेववा ।	

अगुरुगुणाः ।

अगुरूष्णंकटुत्वच्यंतिक्तंतीक्ष्णंचपित्तलम् ।
लघुकर्णाक्षिरोगघ्नंशीतवातकफप्रणुत् ॥ (भावप्रकाश

अर्थ--अगर--गरम, चरपरी, त्वचाको हितकारक, कडवी, तीक्ष्ण, जनक, हलकी तथा कर्णरोग, नेत्ररोग, शीत, वात और कफनाशक है।

अपिच ।

अगुरुस्तुसुगंधिःस्यादुष्णस्तिक्तःकटुःस्मृतः ।
स्निग्धोमंगलदोरुच्योधूपयोग्यश्चपित्तलः ॥
तीक्ष्णोवातकफौहान्तिकर्णनेत्ररुजापहः ॥
कुष्ठनाशकरःप्रोक्तोलेपेचोद्वर्त्तने भः ॥ (नि० र०,

अर्थ--अगर--सुगंधि, गरम, तिक्त, कटु, स्निग्ध, मंगलदायक; रुचि धूपके योग्य, पित्तजनक, तीक्ष्ण तथा वात, कफ, कर्णरोग और कोढ करेहै। लेपमें और लगानेमें श्रेष्ठ है।

अगरुप्रभवःस्नेहःकृष्णागुरुसमः स्मृतः ।

अर्थ-अगरका तेल कृष्णागुरुके समान गुणवाला है।

कृष्णागरुनामानि ।

कृष्णागरुस्याद्वसुकंमंगल्यंविश्वरूपकम् ॥

अर्थ -कृष्णागरु--वसुक, मंगल्य, विश्वरूपक, (काकतुण्ड अगरु शीर्ष, कालागरु, केश्य, कृशाकाष्ठ, धूपार्ह, वल्लर, मिश्रवर्ण, गन्ध, शीतमलिन, जोंगक, कृमिजग्ध और अलक्तक)

कृष्णागरुगुणाः ।

कृष्णागरुकटुष्णश्चतिक्तंलेपेचशीतलम् ।
पानेपित्तहरंकैश्चित्रिदोषघ्नमुदाहतम् ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-कालागरु-कटु, उष्ण, कडवी, लेपमें शीतल, पीनेमें पित्त और किसीके मतसे त्रिदोषनाशक है।

काष्ठागरुगुणाः ।

काष्ठागरुकटुष्णश्चलेपेरूक्षंकफापहम् ॥ (रा०नि०)

अर्थ-काष्ठागरु, चरपरी, गरम, लेपमें रूखी और कफनाशक है।

दाहागरुनामानि ।

दाहागरुदहनागरुदाहककाष्ठञ्चवह्निकाष्ठञ्च ।
धूपागरुतैलागरुपुरञ्चपुरमथनवल्लभंचैव ॥

अर्थ-दाहागरु, दहनागरु, दाहककाष्ठ, वह्निकाष्ठ, धूपागरु, तैलागरु, पुर और पुरमथनवल्लभ ।

दाहागरुगुणाः ।

दाहागरुकटुकोष्णंकेशानांवर्द्धनञ्चवर्ण्यञ्च ।
अपनयतिकेशदोषानातनुतेसंततञ्चसौगन्ध्यम् ॥
(राजनिघण्टु)

अर्थ-दाहागरु, चरपरी; गरम, केशवर्द्धक, वण को उज्ज्वल करनेवाली, केशोंके दोषोंको हरनेवाली और निरन्तर सुगंधिदायक है ।

मङ्गलागरुनामानि ।

मङ्गल्यामल्लिकागन्धमङ्गलागरुवाचका ॥

अर्थ-मङ्गल्या, मल्लिका, गन्धमङ्गला और जितने अगरके नामहैं, सब इसके भी जानने ।

मङ्गलागरुगुणाः ।

मङ्गल्यागुरुशिशिरागन्धाढ्यायोगवाहिका ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-मङ्गलागरु-शीतल, गन्धवाली और योगवाही है ।

विवरण । आसामके पहाडी जंगल और प्रशांत सागरके टापुओंमें इसका वृक्ष होता है, शाखा कभी सीधी उत्पन्न नहीं होती ।

अगर अनेक प्रकारकी होती है, उनमें काली अगरही उत्तम और चिकमें कहीहुई औषधियोंके साथ व्यवहार कीजाती है, यह भारी होनेके कारण जलमें डूबजातीहै और नरम ऐसी होती है कि, दांतोंमें रखकर खानेसे चेपट जाती है, इसको पीसकर जलानेसे सुगन्धि निकलतीहै,काली अगरके समान और अगरोंमें ऐसी सुगन्धि नहीं आती ॥

व्यवहार । इसका झांदरा अनेक प्रकारके तलोंमें व्यवहार किया जाता है और इसके वृक्षका गोंद वातरोगमें लेप करनेके लिये विलायतके मनुष्य काम में लातेहैं ।

देवदारुनामानि ।

सुरदारुद्रुकिलिमंभद्रदारुसुराह्वयम् ।

देवकाष्ठश्चपित्तद्रुदेवदारुचभद्रवत् ॥

अर्थ- सुरदारु, द्रुकिलिम, भद्रदारु, सुराह्वय, देवकाष्ठ, पित्तद्रु, दे भद्रवत्, (शतपादप, पारिभद्रक, पीतदारु, दारु, पूतिकाष्ठ, कल किलिम, दारुक, स्निग्धदारु, अमरदारु, शिवदारु, शाम्भव, भूतहारि, भ शक्रद्रुम, इन्द्रवृक्ष, सुराह्वय, दारुभद्र, इन्द्रदारु, मस्तदारु, सुरभूरुह, से सुरद्रुम, सुरदारु और सुरकाष्ठ)

हिन्दीभाषामें	देवदारु ।
बङ्गभाषामें	देवदारु ।
मराठीभाषामें	तेल्यादेवदारु ।
गुजरातीभाषामें	देवदार ।
कर्णाटकीभाषामें	चोपडादेवदारु, काष्ठदेवदारु ।
तैलङ्गीभाषामें	देवदारुचेका
लैटिनभाषामें	सिड्सदेवडोरा Cedrus Deodar
फारसीभाषामें	देवदार ।
अरबीभाषामें	शजर तुलजीन ।
इंग्रजीभाषामें	पाइन्सडीपोदर ।

देवदारुगुणाः ।

देवदारुलघुस्निग्धंतिक्तोष्णंकटुपाकिच ।
विबन्धाध्मानशोथामतन्द्राहिक्काज्वरास्रजित् ॥
प्रमेहपीनसश्लेष्मकासकण्डूसमीरनुत् ॥ (भावप्रका

अर्थ–देवदारु-हलका, स्निग्ध, कडवा, गरम, पचनमें चरपरा विबन्ध, अफारा, शोथ, आम, तन्द्रा, हुचकी, ज्वर, रक्तविकार, प्रमेह, कफ, खांसी कण्डू और वातनाश करनेवालाहै ।

देवदारुभेदाः ।

देवदारुद्विधाज्ञेयंतत्राद्यंस्निग्धदारुकम् ।
द्वितीयंकाष्ठदारुस्याद्द्वयोर्नामान्यभेदतः ॥ (निरुक्तरत्ना

अर्थ--देवदारु दो प्रकारका है, पहिला स्निग्धदारु और दूसरा काष्ठ

स्निग्धदारुगुणाः ।

स्निग्धदारुःकटुःपाकेस्निग्धोष्णस्तिक्तकालघुः ।

कफवातप्रमेहार्शोमलस्तम्भामदोषहा ॥
ज्वराध्मानश्वासकासशोथकण्डूविनाशकः ।
हिक्कांतंद्रांरक्तदोषंपीनसंचैवनाशयेत् ॥ (निघण्टुरत्नाकर)

अर्थ-स्निग्धदेवदारु-पचनेमें चरपरा, चिकना, गरम, कडवा हलका था कफ, वात, प्रमेह, बवासीर, मलस्तम्भ, आमदोष, ज्वर, अफारा श्वास, ांसी, सूजन, खुजली, हिचकी, तन्द्रा, रुधिर विकार और पीनसको दूर रेहै।

काष्ठदारुगुणाः ।

देवकाष्ठंमतंचोष्णंतिक्तंरूक्षंकफापहम् ।
वातंचभूतबाधांचलेपाद्व्यङ्गविनाशनम् ॥ (रा. नि.)

अर्थ-काष्ठदारु-गरम, कडवा, रूखा, तथा कफ, वातरोग और भूत धाको दूर करेहै। इसका लेप करनेसे व्यङ्ग (झाई) दोष दूर होताहै।

विवरण-बडा वृक्ष होताहै, इसकी दो जाति हैं एकमें तेलके समान कनाईसी होतीहै, दूसरेमें रूखापन होताहै ॥ (व्यवहारपंचांग)

चीडानामानि ।

चीडाचदारुगन्धागन्धवधूर्गंधमादनीतरुणी ।
ताराचभूतमारीमङ्गल्याख्या कपाटिनीग्रहजित् ॥
(राजनिघंटु)

अर्थ-चीडा-दारुगन्धा, गन्धवधू, गन्धमादनी, तरुणी, तारा, भूतमारी, ङ्गल्या, कपाटिनी, ग्रहजित् ।

चीडागुणाः ।

चीडाकटूष्णाकासघ्नीकफजिद्दीपनीपरा ।
अत्यन्तंसेवितासातुपित्तदोषश्रमापहा ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-चीडा-गरम, कासनाशक, चरपरी कफको दूर करे, अग्निको दीपन रे, इसका अत्यन्त सेवन करनेसे पित्त और श्रम दूर होताहै ।

सरलनामानि ।

सरलःपूतिकाष्ठश्चमनोज्ञोधूपवृक्षकः ।

अर्थ-सरल, पूतिकाष्ठ, मनोज्ञ, धूपवृक्षक, (पितद्रु, धूपवृक्षक, पीतदारु

भद्रदारु, धूपवृक्ष, पीत, स्निग्धदारुसंज्ञक, स्निग्ध, मरिचपत्रक, सुरभिदारुक)

हिन्दीभाषामें	धूपसरल ।
वङ्गभाषामें	सरलगाछ, तार्पिनतैलेरगाछ, सरल
कर्णाटकीभाषामें	सरलीदेवदारुविशेष ।
तैलङ्गीभाषामें	सरलदेवदरि चेट्टु ।
तामिलभाषामें	सरलदेवदारी ।
गुजरातीभाषा	सरलदेवदार ।
मराठीभाषामें	सरलदेवदार ।
इंग्रेजीभाषामें	लोंग लिवु पाइन । Long leved
लैटिनभाषामें	पाइंनस्-लोंगि फोलिया Plinus lon

सरलगुणाः ।

सरलोमधुरास्तिक्तःकटुपाकरसोलघुः ।
स्निग्धोष्णःकर्णकण्ठाक्षिरोगरक्षोहरःस्मृतः ॥
कफानिलस्वेददाहकासमूर्छाव्रणापहः ॥ (भा. प्र.)

अर्थ-सरल-मधुर, तिक्त, पाक और रसमें कटु, हलका, स्निग्ध तथा कर्णरोग, कण्ठरोग, नेत्ररोग, कफ, वात, पसीना, दाह, कास और व्रणको दूर करेहै ।

अपिच ।

सरलःकटुतिक्तोष्णःकफवातविनाशनः ।
त्वग्दोषशोफकण्डूतिव्रणघ्नःकोष्ठशुद्धिदः ॥ (रा. नि.)

अर्थ-सरल-चरपरा, कडवा, गरम, कफ वात नाशक, तथा रोग, सूजन, कण्डु और व्रणका, नाश करेहै । और कोठको शुद्ध क

अन्यच्च ।

सरलःकटुतिक्तोष्णोरूक्षःश्लेष्मानिलापहः ।
भूतदोषापहोरक्तोलिप्तोङ्गेषुसुकांतिदः ॥ (क्वचित्)

अर्थ-सरल-चरपरा, कडवा, गरम, रूक्ष तथा कफ, वात, भूतबा रक्तविकारको दूर करेहै । इसका शरीरमें लेप करनेसे कांति बढतीहै

अपिच ।

सरलोमधुरस्तिक्तोरसेपाकेकटुर्लघुः ।
स्निग्धश्चोष्णःकर्णनेत्रकण्ठरोगविनाशनः ॥
कफंवातश्चयूकाश्चकासंस्वेदंव्रणंतथा ।
रक्षोबाधामलक्ष्मींचनाशयेदितिकीर्त्तितः ॥ (रा. नि.)

अर्थ-सरल-मधुर, कडवा, रसमें तथा पाकमें चरपरा, हलका, स्निग्ध, ...म तथा कर्णरोग, नेत्ररोग, कण्ठरोग, कफ, वात, जूएँ, खांसी, पसीना, ...व, राक्षसबाधा और अलक्ष्मीका नाश करेहै ।

विवरण । इसका बडा वृक्ष हिमालयमें होता है, उसके भीतरसे गोंदके ...ान रस निकलताहै, उसको चंद्ररस कहतेहैं ।

तगरनामानि ।

कालानुसार्यंतगरंकुटिलंलघुषंनतम् ।
अपरंपिण्डतगरंदण्डहस्तिचबर्हणम् ॥ भा० प्र०)

अर्थ-कालानुसार्य, तगर कुटिल, लघुष, नत । (जिह्म, दीपन, काला ...सारिवा, वक्र, कुञ्चिन, चक्र, शठ, महारोग, दीपन, तगर, पादिक, विनम्र, ...षाख्य, दीन) दूसरा पिण्डतगर होताहै, उसके नाम यह हैं । पिण्ड...र, दण्ड, हस्ति, बर्हण, (दण्डहस्त, पिण्डीतगरक, पार्थिव, राजहर्षण ...लानुसारक, क्षत्र)

हिन्दीभाषामें	तगर ।
वङ्गभाषामें	तगरपादुका ।
मराठीभाषामें	गोडेतगर ।
गुजरातीभाषामें	तगर ।
कर्णाटकीभाषामें	तगर ।
तिलंगी भाषामें	गंधितगरपु चेट्टु, नंदिवर्द्धनचेट्टु ।
...त	पाणिफलरा ।
नेपालीभाषामें	चम्मा ।
लटिनभाषामें वेलिरीआना। हार्डविकिआई	Vreleriana Hardwicitrii
अरबीभाषामें	अशारुंन ।

तगरगुणाः ।

तगरद्वयमुष्णंस्यात्स्वादुस्निग्धंलघुस्मृतम् ।

विषापस्मारमूर्द्धाक्षिरोगदोषत्रयापहम् ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ--दोनों प्रकारकी तगर-गरम, स्वादिष्ठ, स्निग्ध, हलकी त
अपस्मार, शिरोरोग, नेत्ररोग और त्रिदोषको दूर करे है ।

अपिच ।

तगरंशीतलंतिक्तंदृष्टिदोषविनाशनम् ।
विषार्तिशमनंपथ्यंभूतोन्मादभयापहम् ॥ (रा. नि.

अर्थ--तगर, शीतल, कडवी, दृष्टिके विकारको दूर करे, विषके
रकी शांति करे, पथ्य तथा भूतोन्माद और भयनाशक हैं ।

अन्यच्च ।

तगरंकुष्ठजित्प्रोक्तंदृक्छीर्षव्याधिजिल्लघु ॥ (शो. नि

अर्थ-तगर-कोढ, नेत्ररोग और मस्तकरोगको दूर करे, तथा ह

अपिच ।

तगरंशीतलंपथ्यंतिक्तंमधुलघुस्मृतम् ।
स्निग्धंपाकेचकटुकंतुवरंविषनाशकम् ॥
नेत्रमस्तकरोगंचरक्तदोषंत्रिदोषकम् ।
भूतोन्मादमपस्मारंभूतबाधांचनाशयेत् ॥ (निघण्टुरत्ना

अर्थ-तगर-शीतल, पथ्य, कडवी, मधुर, हलकी, स्निग्ध, पाक
परी कषेली, विषनाशक, तथा नेत्ररोग, मस्तकरोग, रुधिरविकार,
भूतोन्माद, मृगी और भूतबाधाको दूर करे है ।

पद्मकनामानि ।

पद्मकंमलयश्चारुःपीतरक्तश्चसुप्रभः । (मदनपालनिघण्टु

अर्थ-पद्मक, मलय, चारु, पीतरक्त, सुप्रभ, (पीत, पीतक,
शीतल, हिम, शुभ, केदारज, रक्त, पाटलापुत्रसन्निभ, पद्मवृक्ष,
पद्माह्वय, पद्मकाष्ठ, केदार, शीतवीर्य, पाटलापुष्पवर्णक)

हिन्दीभाषामें	पद्माक (ख)
वङ्गभाषामें	पद्मकाष्ठ ।
मराठीभाषामें	पद्मकाष्ठ ।
गुजरातीभाषामें	पद्मकतुलाकडुं ।
कर्णाटकीभाषामें	पद्मक ।

तैलंगीभाषामें पद्मपुचेका। (एणुगुसहदेवि)
लटिनभाषामें प्रनसपदम। (Prunus Padam)

पद्मकगुणाः।

पद्मकंशीतलंतिक्तंरक्तपित्तविनाशनम्।
मोहदाहज्वरभ्रांतिकुष्ठविस्फोटशांतिकृत्॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-पद्मक-शीतल, कडवा, रक्तपित्तनाशक तथा मोह, दाह, ज्वर
[भ्रा]न्ति कोढ और विस्फोटकको दूर करेहै॥

अपिच।

पद्मकंतुवरंतिक्तंशीतलंवातलंलघु।
विसर्पदाहविस्फोटकुष्ठश्लेष्मास्रपित्तहृत्।
गर्भसंस्थापनंरुच्यंवमिव्रणतृषाप्रणुत॥

अर्थ-पद्मक-कषेला, कडवा, शीतल, वादी, हलका, तथा विसर्प, दाह,
[वि]स्फोट, कुष्ठ, कफ और रक्तपित्तका नाश करे है, गर्भको स्थापन करे है,
[रु]चिको उत्पन्न करे है, वमन, घाव और पियासको दूर करे है।

विवरण। इसका वडा वृक्ष केदार और हिमालय पर्वतमें उत्पन्न होता है,
[इ]समें फल नहीं होते, इसकी लकडी औषधीमें लीजाती है इसको घिसकर
[पी]नेसे गर्भ न रहता हो तो गर्भ रहजाता है। और गर्भ गिरता हो तो स्थिर
[हो]जाता है।

गुग्गुलुनामानि।

गुग्गुलुःकालनिर्यासोमहिषाक्षःपलङ्कषः।
जटायुःकौशिको धूर्तोदेवधूपः शिवः पुरः॥ (मदनविनोद)

अर्थ-गुग्गुलु, कालनिर्यास, महिषाक्ष, पलङ्कष, जटायु, कौशिक, धूर्त्त,
[दे]वधूप, शिव, पुर, (कुम्भ, उलूखलक, कुम्भोलु, कुम्भोलूखलक, गुग्गुल,
[य]वसह, उष, उलूखलक, कुम्भी, कुन्ती, उद्दीप्र, पवनद्विष्ट, भवाभीष्ट, निशा-
[टक], जटाल, पुट, भूतहर, शाम्भव, दुर्ग) वायुघ्न, महिषाक्षक, देवेष्ट, मरु-
[द्वि]ष्ट, रक्षोहा, पलङ्कषा, रूक्षगन्धक, दिव्य।

[हि]न्दीभाषामें गूगल. (र.) भैंसागूगल।
[बंगा]भाषामें गुग्गुलु।
[गु]जरातीभाषामें गुगुल। भैंसो गुगुल।

मराठीभाषामें म्हशागुगुळ. गुगुळ ।
कर्णाटकीभाषामें इडबोल ।
तैलंगीभाषामें गुग्गिलमुचेट्टुमहिषाक्षी ।
इंग्रेजीभाषामें इंडियन् डेलियम् । Endian Dellum
लैटिन भाषामें वालसमेडिन्ड्रून एक्स बुर्छिआई । वालस मोडेड्रन
Walsams Raxburghii B. Makkul
फारसीभाषामें बोएजहुदान ।
अरबीभाषामें मुग्किलेअजक

गुग्गुलोःप्रकारभेदलक्षणगुणाः ।

महिषाक्षोमहानीलःकुमुदः पद्मइत्यपि ।
हिरण्यःपञ्चमोज्ञेयोगुग्गुलोःपञ्चजातयः ॥
भृङ्गाञ्जनसवर्णस्तुमहिषाक्षइतिस्मृतः ।
महानीलस्तुविज्ञेयः स्वनामसमलक्षणः ।
कुमुदःकुमुदाभःस्यात्पद्मोमाणिक्यसन्निभः ।
हिरण्याक्षस्तुहेमाभःपंचानांलिंगमीरितम् ॥
महिषाक्षोमहानीलोगजेन्द्राणांहितावुभौ ।
हयानांकुमुदःपद्मःस्वस्त्यारोग्यकरौपरौ ॥
विशेषेणमनुष्याणांकनकःपरिकीर्तितः ।
कदाचिन्महिषाक्षश्चमतःकश्चिन्नृणामपि ॥ भावप्रका०

अथ–महिषाक्ष, महानील, कुमुद, पद्म, और हिरण्य इन भेदोंसे पांच प्रकारका है। उनम महिषाक्ष गूगल–भौंरेके रंगकी समान कोयले अञ्जनके सदृश वर्णवाला होता है। महानीलगूगल–अत्यन्त नीले रंगका है। कुमुद गूगलकुमुदके फूलके समान वर्णवाला होता है. । पद्मगूगलमा रत्नके समान लाल रंगका होता है। हिरण्याक्षगूगल–हेमके समान रंग होताहै । महिषाक्ष और महानील गूगल हाथियोंके लिये हितकारी है, घो आरोग्य करनेवाला कुमुद और पद्मगूगल है और मनुष्योंके लिये हिर गूगल अत्यन्त उपकारी है। कोई कोई ऐसाभी कहते हैं कि, मनुष्योंके कहीं कहीं महिषाक्ष गूगलभी हितकारी है।

गुग्गुलुगुणाः ।

गुग्गुलुर्विशदस्तिक्तोवीर्य्योष्णः पित्तलःसरः ।
कषायःकटुकःपाकेकटूरूक्षोलघुःपरः ॥
भग्नसन्धानकृद्वृष्यःसूक्ष्मःस्वर्योरसायनः ।
दीपनःपिच्छिलोबल्यःकफवातव्रणापचीः ॥
मेदोमेहाश्मवातांश्चक्लेदकुष्ठाममारुतान् ।
पिडकाग्रन्थिशोफार्शोगण्डमालाकृमीञ्जयेत् ॥
माधुर्य्याच्छमयेद्वातंकषायत्वाच्चपित्तहा ।
तिक्तत्वात्कफजित्त्वेनगुग्गुलुःसर्वदोषहा ॥
सनवोबृंहणोवृष्यः पुराणस्त्वतिलेखनः ।
स्निग्धःकाञ्चनसंकाशःपक्वजम्बूफलोपमः ॥
नूतनोगुग्गुलुःप्रोक्तःसुगन्धिर्यस्तुपिच्छिलः ।
शुष्कोदुर्गन्धकश्चैवत्यक्तःप्रकृतिवर्णकः ॥
पुराणःसतुविज्ञेयोगुग्गुलुर्वीर्य्यवर्जितः ।
अम्लंतीक्ष्णाम्लजीर्णश्चव्यवायंश्रममातपम् ॥
मद्यंरोषंत्यजेत्सम्यग्गुणार्थीपुरसेवकः । (भा० प्र०)

अर्थ-गूगल-विशद, कडवा, उष्णवीर्य्य, पित्तजनक, दस्तावर, कषेला पाकमें चरपरा. चपरा, रूखा, हलका, भग्नास्थिसंयोजक, वीर्य्य उत्पन्न करनेवाला, सूक्ष्म, स्वरको शुद्ध करनेवाला, उत्तम रसायन, अग्निदीपक, पिच्छिल, बलकारक तथा कफ, वात, व्रण, अपची, मेदरोग, प्रमेह, पथरी, वातव्याधि, क्लेद, कोढ, आमवात, पिडका, ग्रन्थिरोग, सूजन, बवासीर, गण्डमाला और कृमिरोगका नाश करे है ।

यह मधुररसयुक्त होनेसे वातको, कषायरसान्वित होनेसे पित्तको और तिक्तरसयुक्त होनेसे कफको नष्ट करे है । इसकारण गूगल त्रिदोषनाशक है ।

नवीनगूगल-वीर्य्यजनक और बलकारक है । पुराना गूगल शरीरको अत्यन्त दुर्बलतादायक है । जो गूगल चिकना हो, सुवर्णके समान निर्मल हो,

सुगन्धित हो, पकी जामुनके समान रूपवाला हो और पीला हो, गूगल नवीन होता है। पुराना गूगल, सूखा, दुर्गन्धवाला, स्वाभाविक हीन और वीर्यवर्जित होता है । गुणाभिलाषी गूगलको सेवन करे मनुष्य अम्ल (खटाई) तीक्ष्ण (मिरचादि) अजीर्ण-कच्चे पदार्थ करना, परिश्रम करना, धूपमें फिरना, मदिरा पीना और क्रोधका इनको छोडदे ।

अस्योत्पत्तिः ।

जायन्तेपुरपादपामरुभुविग्रीष्मेऽर्कसंतापिताः
शीतर्त्तौशिशिरेपिगुग्गुलरसंमुश्चन्तितेपञ्चधा ।
हेमाभंमहिषाक्षितुल्यमपरंसत्पद्मरागोपमं
भृङ्गाभंकुमुदद्युतिंचविधिनाग्राह्यापरीक्षाततः (रा.

अर्थ-गूगलके वृक्ष मारवाडकी भूमिमें उत्पन्न होते हैं। ग्रीष्मऋतुमें गरमीसे संतापित हो, शीतऋतुमें सरदी पाकर उन वृक्षोंमेंसे पांच प्र रस निकलता है, १ सुवर्णवर्णवाला, दूसरा भैंसके नेत्रोंकी समान, पद्मरागकी समान, चौथा भौंरेके सदृश काला और पांचवाँ कुमुदके कान्ति के समान होता है, इसी रसका नाम गूगल है । इसको लेकर विधिसे परीक्षा करनी ।

अस्य परीक्षा ।

वह्नौज्वलंतितपनेविलयंप्रयान्तिक्षिप्ताःक्षिपंतिकोष्णसलिले पयसःसमानाः ॥ ग्राह्याःशुभाःपरिहरेच्चिरकालजाता न्सक्षारवर्णसमपूयविगन्धवर्णान् ॥ (प्रयोगामृत)

अर्थ-जो आगमें गिरनेसे जलजाय, गरमीमें रखनेसे पिघलजाय जलमें डालनेसे गलकर जलके समान होजाय, ऐसा गूगल श्रेष्ठ इसीको औषधीके काममें लेना । और जो क्षारके समान रंगवाला हो जिसमें राधके समान गन्ध आती हो, पुराना हो,ऐसा गूगल कभी भी नहीं करना, इसका पूर्ण वीर्य्य तीन मासपर्यन्त रहता है ।

अस्यशोधनविधिर्यथा ।

गुडूची त्रिफलाक्काथेक्षीरेचैवाविशेषतः ।
पक्त्वाचखण्डशःशुद्धंगृह्णीयान्मृदुगुग्गुलम् ॥

अर्थ-गिलोय और त्रिफलेके काढेमें और विशेष करके दूधमें टुकडे करके पकाना चाहिये वह गूगल मृदु और शुद्ध होताहै, उसे ग्रहण करना चाहिये ।

अपिच ।

क्काथेहिदशमूलस्यकोष्णेप्रक्षिप्यगुग्गुलुम् ।
आलोड्यवस्त्रपूतं तं चण्डातपविशोषितम् ॥
घृताक्तंपिण्डितंकुर्य्याच्छुद्धिमायातिगुग्गुलुः । (आ. सं)

अर्थ-किंचित् उष्ण दशमूलके काढेमें गूगल डालकर वस्त्रसे छानकर उसे मिलाकर तेज धूपमें सुखावै, फिर घीमें मिलाकर गोली करले तो गूगल शुद्ध होजाता है ।

अन्यच्च ।

अमृतायाःकषायेणशोषयित्वाऽथगुग्गुलुम् ।
गृह्णीयादातपेशुष्कंतथाऽवकरवर्जितम् ॥ (आत्रेयसंहिता)

अर्थ-गिलोयके रसमें गूगलको मिलाय धूपमें सुखाकर ग्रहण करले और धूलादिकसे रहित रक्खे ।

अन्यच्च ।

दुग्धेवात्रिफलाक्काथेदोलायन्त्रेविपाचितः ।
वाससागालितोग्राह्यःसर्वकर्म्मसुगुग्गुलुः ॥ (आत्रेयसंहिता)

अर्थ-दूधमें अथवा त्रिफलाके काढेमें रखकर दोलायन्त्रमें पचावे फिर कपडेसे छानकर ग्रहण करले, सर्व काममें इसप्रकार शोध करलेवे ।

विवरण-इसका वृक्ष रेतली और पर्वतीभूमिमें होता है, पत्ते अनीरहित छोटे छोटे नीमके पत्तीके समान होतेहैं. फूल लालरंगका अतिसूक्ष्म पांच पखडीवाला मंजरीके बीचमें निकलताहै, फल छोटे बेरके समान और तीन धारवाला होताहै, इसके फलोंको गूगलिया कहतेहैं, यह फल उदरकी पीडाको दूर करते हैं । इस वृक्षके गोंदकोही गूगल कहतेहैं । व्यवहारमें शुद्ध किया-हुआ गूगल लेना ।

गन्धराजगुग्गुलुनामानि ।

गन्धराजःस्वर्णकणःसुवर्णःकणगुग्गुलुः ।
कनकोवंशपीतश्चखुरभिश्चपलङ्कषः ॥

अर्थ-गन्धराज, स्वर्णकण, सुवर्ण, कणगुग्गुलु, कनक, वंशपीत, और पलङ्कष ।

गन्धराजगुग्गुलुगुणाः ।

कणगुग्गुलुःकटूष्णःसुरभिर्वातनाशनः ।
शूलगुल्मोदराध्मानकफघ्नश्चरसायनः ॥

अर्थ-कणगूगल, चरपरा, गरम, सुगन्धि, वातनाशक तथा गुल्म, रोग आध्मान और कफको दूर करेहै और रसायन है ।

भूमिजगुग्गुलुनामानि ।

गुग्गुलुश्चतृतीयोन्यो भूमिजो दैत्यमेदजः ।
दुर्गाह्वोदाइडाजात आशादिपुरसम्भवः ।
मज्जाजोमेदजश्चैवमहिषासुरसम्भवः ॥

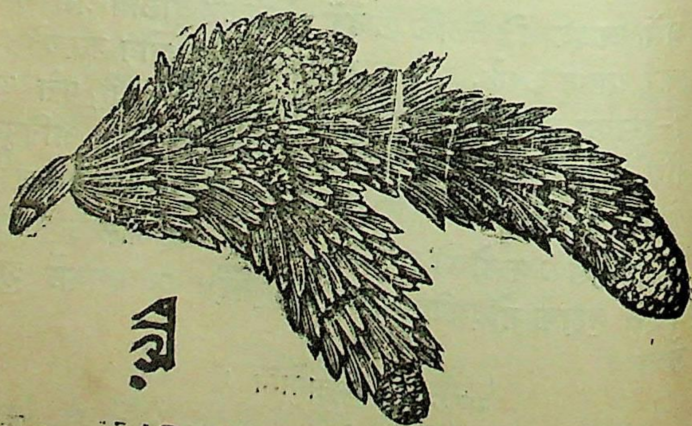
अर्थ-भूमिज गुग्गुलु, दैत्यमेदज, दुर्गाह्व, दाइडाजात, आशादिपुरसम्भव, मज्जाज, मेदज, महिषासुरसम्भव ।

अस्यगुणाः ।

गुग्गुलुर्भूमिजस्तिक्तःकटूष्णःकफवातजित् ।
उमाप्रियश्चभूतघ्नोमेध्यःसौरभ्यदःसदा ॥ (राजनिघ०

अर्थ-भूमिजगूगल-कडवा, चरपरा, गरम, कफवातनाशक, उमाको प्रिय, भूतका नाश करे, मेधाजनक और सदा सुगंधिदायक है ।

रालनामानि ।



रालस्तुसालनिर्यासस्तथासर्जरसःस्मृतः ।
देवधूपोयक्षधूपोविरूपोवह्निवल्लभः ॥

अर्थ-राल-सालनिर्यास, सर्जरस, देवधूप, यक्षधूप, विरूप, वह्निवल्लभ; कलकल, काल, कलयज, सर्वरस, बहुरूप, धूपन, सालज, शालनिर्यास, सर्ज्य, धूनक, शालसार, शाल, शालवेष्ट, सालवेष्ट, अग्निवल्लभ, सर्ज्जमणि, राल' कलकलोद्भव, ललत, देवेष्टशीतल, सालरस, सुरभि, सर्जनिर्यासक, सुरधूप, कलकलज, महारूप, चण और शालरस)

हिन्दीभाषामें	राल।
वङ्गभाषामें	धूना-धूनो।
मराठीभाषामें	राळ पिंवळी।
गुजरातीभाषामें	राल।
कर्णाटकीभाषामें	सर्ज्जरस।
तैलिङ्गीभाषामें	सर्ज्जरसमु-सर्ज्ज।
पंजाबीभाषामें	रालअर्लु।
इंग्रेजीभाषामें	यल्लेरिझिन्। Yollew Risin
लैटिन्भाषामें	रिफिमाफ्लेवा। Risina Flena
फिरङ्गीभाषामें	नारुस।
फारसीभाषामें	रालमगरेबी।
अरबीभाषामें	किकहर

रालगुणाः ।

रालोहिमोगुरुस्तिक्तःकषायोग्राहकोहरेत् ।
दोषास्रस्वेदवीसर्पज्वरव्रणविपादिकाः ।
ग्रहभग्नाग्निदग्धांश्चशूलातीसारनाशनः ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-राल-शीतल, भारी, कडवी, कषेली, ग्राही तथा रुधिरदोष. पसीना, विसर्परोग, ज्वर, व्रण. विपादिका, ग्रह; भग्नरोग, अग्निदग्ध, शूल और अतिसारको दूरकरेहै ।

अपिच ।

रालस्तुशिशिरःस्निग्धःकषायस्तिक्तसंग्रहः ।
वातपित्तहरःस्फोटकण्डूतिव्रणनाशनः ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-राल-शीतल, स्निग्ध, कषेली, कडवी, संग्राही तथा वात. पित्त, स्फोट, कण्डू और व्रणनाशक है ।

अन्यच्च ।

सर्जनिर्यासकःशीतःस्निग्धश्चतुवरोगुरुः ।
ग्राहकःस्तम्भनस्तिक्तःस्वादुश्चव्रणरोपणः ॥
भग्नसन्धानकरणोमधुरोवातपित्तहा ।
त्रिदोषरक्तरुक्कण्डूविस्फोटव्रणशूलनुत् ॥
स्वेदज्वरविसर्पाणांग्रहबाधाविनाशनः ।
विपादिकाग्निदग्धस्यभूतबाधाविषस्यच ।
अतिसारस्यशमनऋषिभिःपरिकीर्तितः ॥

(निघण्टुरत्ना

अर्थ–राल–शीतल, चिकनी, कषेली, भारी, मलरोधक, स्तम्भन, स्वादिष्ट, व्रणरोपण, टूटी अस्थिको जोडनेवाली, मधुर तथा वा त्रिदोष, रुधिरविकार, खुजली, विस्फोट, घाव, शूल, पसीना, ज्वर, ग्रहबाधा, विपादिका, अग्निदग्ध, भूतबाधा, विष और अतिसारको दू

विवरण–रालका बडा वृक्ष होता है, उसके गोंदको राल कहते हैं मिश्री मिलाकर खानेसे अतिसार दूर होता है, इसके लेपसे और पीनेसे प्रदररोग दूर होता है। मात्रा सात रत्तीकी है।

रालतैलगुणाः ।

तैलंसर्जरसोद्भूतंविस्फोटव्रणनाशनम् ।
कुष्ठपामाक्रिमिहरंवातश्लेष्मामयापहम् ॥ (आत्रेयसं

अर्थ--रालका तेल–(तार्पिनतेल) विस्फोट, घाव, कोढ, पामा, वात और कफका नाश करे है।

कुन्दुरुनामानि ।

पालङ्कयाकुन्दुरुःकुन्दुःसौराष्ट्रीशिखरीवली ।

अर्थ--पालंक्या, कुन्दुरु, कुन्दु, सौराष्ट्री, शिखरी, वली, (मुकुन्द, मुकुंद, कुन्दु, कुन्दुर, तीक्ष्णगन्ध, कुन्दुरुक, कुन्दक, तीक्ष्णगोपुरक, पालिन्द, भीषण, सुगन्ध, कुन्दारु, बिडालाक्ष; पालंक; खपुर, स्वाक्ष, धूप्रिय और शल्लकीनिर्य्यास)

हिन्दीभाषामें कुन्दुरु । गुदवरोसा ।

वङ्गभाषामें	कुन्दुरुखोटी ।
मराठीभाषामें	अवलगुन्दर। सालईडीक ।
गुजरातीभाषामें	किन्दुरु, शेषगुन्दर ।
कर्णाटकीभाषामें	इडवोल ।
अंग्रेजीभाषामें	ओलिबेनम् । Olibauum
लैटिनभाषामें	वोझवेलिया, थेरीफेरा, विस्टेशिया, टरैविथस्
फारसीभाषामें	कन्दुररूमी । खोटीमस्तकी ।
अरबीभाषामें	कुन्दुरेजकर । विस्तज ।
तैलिङ्गीभाषामें	कुन्दुरुमु ।

कुन्दुरुगुणाः ।

कुन्दुरुर्मधुरस्तिक्तस्तीक्ष्णस्त्वच्यः कटुर्हरेत्।
ज्वरस्वेदग्रहालक्ष्मीमुखरोगकफानिलान् (भावप्रकाश)

अर्थ-कुन्दुरु-मधुर, कडवा, तीक्ष्ण, त्वचाको हितकारी, चरपरा तथा ज्वर, पसीना, ग्रहबाधा, अलक्ष्मी, मुखरोग, कफ और वातको दूर करे है।

अन्यच्च ।

कुंदुरुर्मधुरस्तीक्ष्णस्तिक्तोरुच्यः कटुःस्मृतः ।
स्निग्धस्त्वच्यस्तथाचोष्णोज्वरस्वेदकफापहः ॥
रक्तरुक्प्रदरंवातमलक्ष्मींग्रहपीडनम् ।
रक्तातिसारंयूकाश्चनाशयेदितिकीर्तितः ॥ (नि. र.)

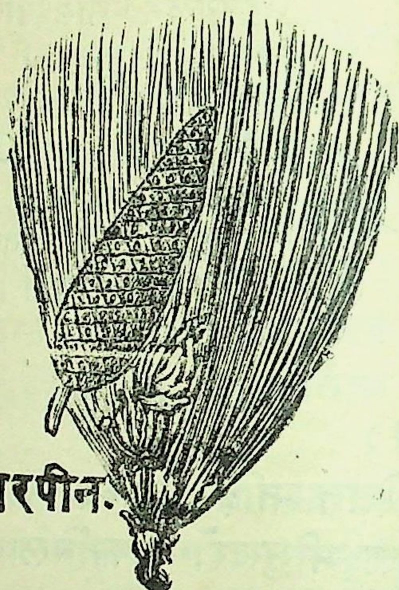
अर्थ--कुन्दुर--मधुर, तीक्ष्ण, कडवा, रुचिकारक, चरपरा, स्निग्ध, त्वचाको हितकारक, गरम तथा ज्वर, पसीना. कफ, रक्तविकार, प्रदर, वायु, अलक्ष्मी, ग्रहबाधा, रक्तातिसार और जूओंको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

शर्करासहितंमेहंवृषणस्यव्यथांहरेत् । (शोढलनिघंटु)

अर्थ-कुन्दुरु-शर्करायुक्त प्रमेहरोग और अण्डकोषोंकी पीडाको दूर करेहै।
विवरण-शल्लकीके गोंदको कुन्दुरु कहते हैं। इसका रंग सफेद और कुछ सुगंधियुक्त होता है। कुन्दुरुको घिसकर बदपै लगानेसे बद बैठ जाती है, इसके मरहमसे घावको आराम होता है ।

श्रीवासनामानि।



तारपीन.

श्रीवासःसरलस्रावः श्रीवेष्टोवृक्षधूपकः ।
वेष्टसारोरसावेष्टःश्रीपिष्टःपद्मदर्शनः ॥

अर्थ–श्रीवास, सरलस्राव, श्रीवेष्ट, वृक्षधूपक. वेष्टसार, रसावेष्ट, श्री पद्मदर्शन (पायस. वृकधूप, सरलद्रव, रक्तशीर्षक, रसाह्व; यास, घृताह्वय. दध्याह्वय; क्षीराह्वय, चीरश्री, वायस) (वृक्षधूप, चितागन्ध थक, श्रीरस, वेष्ट, लक्ष्मीवेष्ट; वेष्टक, क्षीरशीर्ष, सुधूपक, धूपांग, ति सरलांग, तैलपर्णी)

हिन्दीभाषामें–सरलका गोंद, सरलका रस. चन्द्रस, गन्धविरोजा।

वङ्गभाषामें	टार्पिनतेल-नवनीत; खोटी-गन्ध विरजा।
मराठीभाषामें	सरलाडीक, चन्दुस।
गुजरातीभाषामें	चन्द्रस। जनार्जन। गन्धवेरीजो।
कर्णाटकीभाषामें	श्रीवेष्टक।
तामिलीभाषामें	पिनैमारु।
अंग्रेजीभाषामें	गमकोपल। संडरेक Gomeopal Sanda
लैटिनभाषामें	ट्रेकिलोविअमहोर्निमनिएनम्कोलिट्रिसक्वेड्रि वालविस्। Trachiloam Horniman mon Coliitris Quapriawalvis

फारसीभाषामें संदरुस । काइरुवा ।
अरबीभाषामें संदरुस ।

श्रीवासगुणाः ।

श्रीवासोमधुरस्तिक्तःस्निग्धोष्णतुवरः सरः ।
पित्तलोवातमूर्द्धाक्षिस्वररोगकफापहः ॥
रक्षोघ्नःस्वेददौर्गन्ध्ययूकाकण्डूव्रणप्रणुत् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ--मधुर--कडवा, स्निग्ध, गरम; कषैला, दस्तावर, पित्तजनक तथा वायु, मस्तकरोग, नेत्ररोग, स्वरभंग, कफ, राक्षसबाधा, पसीना, दुर्गंध, जूएँ, खुजली और घावको दूर करे है ।

अपिच ।

श्रीवेष्टःकटुतिक्तश्चकषायःश्लेष्मपित्तजित् ।
योनिदोषरुजाजीर्णव्रणाध्मानप्रदोषजित् ॥ (रा० नि०)

अर्थ--कटु, तिक्त, कषाय, कफ पित्तनाशक तथा योनिरोग, अजीर्ण, व्रण और आध्मान रोगका नाश करे है ।

अपिच ।

चन्द्रसःकटुकःस्वादुःस्निग्धश्चोष्णश्चशुक्रलः ।
लघुर्वृष्यःकांतिकरःकंडूस्वेदज्वरापहः ॥
ग्रहपीडाकुष्ठदाहान्नाशयेदितिकीर्तितः । (नि०र०).

अर्थ--चंद्रुस--चरपरा, स्वादिष्ठ, स्निग्ध, उष्ण, शुक्रकारक, हलका, वृष्य, कान्तिको करनेवाला तथा खुजली पसीना, ज्वर, ग्रहकी पीडा. कोढ और दाहको दूर करे है ।

श्रीवाससारगुणाः ।

श्रीवाससारःकफनुन्मूत्रलोज्वरसंहरः ।
शोफविम्लापनोलेपात्क्रिमिहृद्वेदनापहः ॥ (आत्रेयसं०)

अर्थ--श्रीवाससार अर्थात् गन्धविरोजा कफनाशक, मूत्रवर्द्धक, ज्वरसंहारक और शोफको दूर करे है, इसका लेप करनेसे कृमिरोग और वेदनाकी शान्ति होती है ।

सिह्लकनामानि ।

कपिनामाकपितैलंकृत्रिमंकपिशश्चलः ।
तुरुष्कोमुक्तिमुक्तश्चपिण्डितःसैंहिकारसः ॥

अर्थ-कपिनामा; कपितैल, कृत्रिम, कपिश, चल, तुरुष्क, मुक्ति पिण्डित, सैंहिकारस (कपि, तैल, कपिल, चला, पिण्डातवर सिह्लपि सिद्ध, पावन, पवन, धूम्र, धूम्रवर्ण, सुगन्धिक, सिह्लक, सिह्लसार, पीत कपि, पिण्याक, कपिज, कल्क, पिण्डितैलक, करेवर, कृत्रिमक, लेपन, कीद्रव, पिष्टक, तैलपर्णी, वृकधूप, कपिचञ्चल यावल, तैलाख्य, पि याव, यावन, जाब, यवनदेशज, अश्मपुष्प और चञ्चलतैलक)

हिन्दीभाषामें	शिलारस ।
वङ्गभाषामें	शिलारस ।
मराठीभाषामें	शिलारस ।
गुजरातीभाषामें	शेलारस ।
कर्णाटकीभाषामें	पिण्डतैल ।
अंग्रेजीभाषामें	लिक्विड्एम्बर । Liquid amber
लैटिनभाषामें--	लिक्विडेम्बर ओरि एन्टेटिस् । Liquidambr One
फारसीभाषामें	सलारस ।
अरबीभाषामें	उसारेकमिया, मिथास साइला ।
दक्षिणीभाषामें	कपितैल ।

अस्यगुणाः ।

तुरुष्कःसुरभिस्तिक्तःकटुःस्निग्धश्चकुष्ठजित् ।
कफपित्ताश्मरीमूत्रघातभूतज्वरार्तिजित् ॥ (राजनिघ

अर्थ--शिलारस-सुगन्धि, कडवा, चरपरा, स्निग्ध तथा कोढ, कफ पथरी, मूत्राघात, भूत और ज्वरका नाश करे है ।

अपिच ।

सिह्लकःकटुकःस्वादुःस्निग्धोष्णःशुक्रकान्तिकृत् ।
वृष्यः कंडूस्वेदकुष्ठज्वरदाहग्रहापहः ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-शिलारस-,स्वादु, चरपरा, स्निग्ध, गरम, शुक्रजनक, कान्ति वृष्य तथा कण्डू, पसीना, कोढ, ज्वर दाह और ग्रहकी पीडाको दूर क

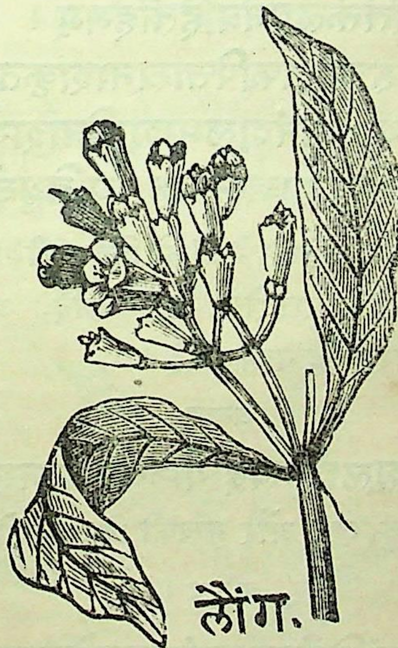
अन्यच्च

तुरुष्कःकांतिकरोवृष्योष्णःस्वादुशुक्रलः ।
वर्ण्यःसुगन्धिःकटुकास्तिक्तःस्निग्धश्चकुष्ठहा ॥
कफपित्ताश्मरीभूतबाधाज्वरविनाशनः ।
मूत्राघातस्वेदकण्डूदाहहाचात्रिदोषजित् ॥

(निघण्टुरत्नाकर)

अर्थ--शिलारस--कान्तिकारक, वीर्य्यवर्द्धक, स्वादिष्ठ, शुक्रजनक, वर्णको सुंदरतादायक, सुगन्धि, चरपरा, कडवा, चिकना तथा कोढ, कफ, पित्त, पथरी, भूतबाधा, ज्वर, मूत्राघात, पसीना, खुजली, दाह और त्रिदोषका नाश करेहै.

लवङ्गनामानि ।



लवङ्गंदेवकुसुमंश्रीसंज्ञंकलिकोत्तमम् ।
भृङ्गारंसुषिरंतीक्ष्णंवारिजंशेखरंलवम् ॥

अर्थ--लवङ्ग, देवकुसुम, श्रीसंज्ञ, कलिकोत्तम, भृङ्गार, सुषिर, तीक्ष्ण, वारिज, शेखर, लव (प्रसून, लवङ्गक, लवङ्गकलिका, दिव्य,श्रीपुष्प, रुचिर, ग्रहणीहर, तोयाधिप्रिय, वारिपुष्प, तीक्ष्णपुष्प, गीर्वाणकुसुम, चंदनपुष्प, दिव्यगन्ध, श्रीप्रसूनक)

हिन्दीभाषामें	लौंग ।
वङ्गभाषामें	लवङ्ग ।

मराठीभाषामें	लवंग ।
गुजरातीभाषामें	लवींग ।
कर्णाटकीभाषामें	लवङ्गकलिका ।
तैलिंगीभाषामें	लवंगलु ।
तामिलीभाषामें	किरम् वेर ।
द्रा०	लवंग ।
अंग्रेजीभाषामें	क्लोवस् । Cloves
लैटिन्भाषामें	करियो फाइलस, एरोमेटिकस्
फारसीभाषामें	मेहक् ।
अरबीभाषामें	करनफूल (फूल)

अस्यगुणाः ।

लवङ्गंकटुकंतिक्तंलघुनेत्रहितंहिमम् ।
दीपनंपाचनंरुच्यंकफपित्तास्रनाशकृत् ॥
तृष्णांछर्दितथाध्मानंशूलमाशुविनाशयेत् ।
कासंश्वासञ्चहिक्काञ्चक्षयंक्षपयतिध्रुवम् ॥ (भा०प्र०

अर्थ--लौंग--चरपरी, कडवी, नेत्रोंको हितकारी, शीतल, दीपन, रुचिकारक तथा कफ, पित्त, रक्तरोग, तृषा, छर्दि, आध्मान, शूल, श्वास, हुचकी और क्षयरोगका नाश करेहै ।

अन्यच्च ।

आनाहवातशूलघ्नंमुखदौर्गन्ध्यनाशनम् ।

अर्थ--आनाह, वायु, शूल और मुखकी विरसताको दूर करेहै ।

अपिच ।

लवङ्गंशीतलंतिक्तंचक्षुष्यंभुक्तरोचनम् ।
वातपित्तकफघ्नंचतीक्ष्णंमूर्द्धरुजापहम् ॥ (क्वचित्)

अर्थ--लौंग, शीतल, तिक्त, नेत्रोंको हितकारी, भुक्तरोचन, तथा पित्त, कफनाशक, तीक्ष्ण और मस्तकरोगको दूर करेहै ।

अन्यच्च ।

लवङ्गंसोष्णकंतीक्ष्णंविपाकेमधुरंहिमम् ।
वातपित्तकफामघ्नंक्षयकासस्यदोषनुत् ॥ (राजनिघण्टु

अर्थ--लौंग--गरम, तीक्ष्ण, पाकके समय मधुर, शीतवीर्य्य, तथा त्रिदोष वात, पित्त, कफ,) आम, क्षय और कासरोगका नाश करे ।

अन्यच्च ।

लवङ्गंविशदंतीक्ष्णंचक्षुष्यंभुक्तपाचनम् ।
वातपित्तहरंहृद्यंस्निग्धंमूर्द्धरुजापहम् ॥ (गणनिघण्टु)

अर्थ -लौंग -विशद, तीक्ष्ण, नेत्रोंको हितकारी, भुक्तपाचक, वातपित्तनाशक, हृदयको हितकारी, स्निग्ध और शिरोरोगको हरे है ।

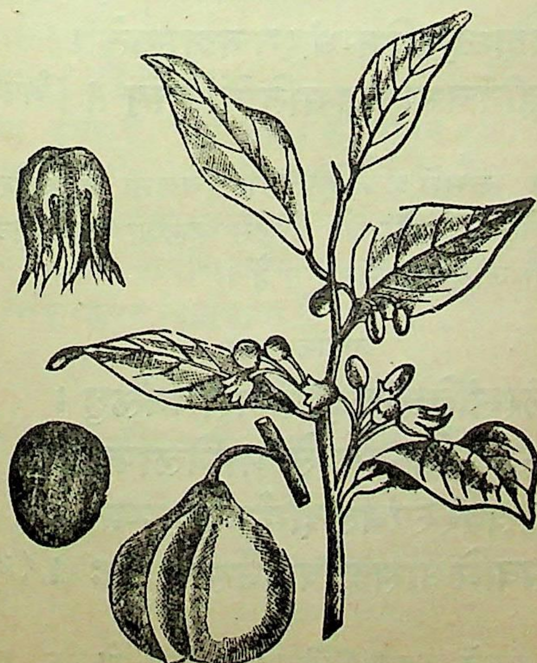
लवंगतैलगुणाः ।

देवपुष्पोद्भवंतैलमग्निकृद्वातनाशनम् ।
दन्तवेष्टकफार्तिघ्नंगर्भिण्यावमनापहम् ॥ (आत्रेयसंहिता)

अर्थ--लौंगका तेल -अग्निजनक, वातनाशक तथा दन्तवेष्ट, कफ और गर्भिणीकी वमननाशक है ।

विवरण-- इसके वृक्ष जंगवारमें अधिक उत्पन्न होते हैं देखनेमें सुन्दर और इसके पत्तोंमें अत्यन्त सुगन्ध आता है, इसके फूलकी कली लौंग है, लौंग मलवारमेंभी होतीहै, यह मुखकी दुर्गन्धको दूर करतीहै और मसालेमेंभी पडतीहै । मात्रा तीन ३ मासेकी हैं ।

जातीफलनामानि ।



जातीफलंफलंजातिःकोषकंसुमनःफलम् ।

अर्थ--जातीफल; फलजाती, कोषक, सुमनःफल, (जातीकोष, जाती, कोश, कोष, जातीकोष, राजभोग्य जातीकोश, जातिफल, शस्य, शाल्कक, मालतीफल, मज्जसार जातिसार; पुट और मदशौंड)

हिन्दीभाषामें	जायफल।
वंगभाषामें	जायफल।
मराठीभाषामें	जायफळ।
गुजरातीभाषामें	जाईफल।
कर्णाटकीभाषामें	जाईफल।
तैलंगीभाषामें	जाजिकाया।
तामिलीभाषामें	जोदिकराय।
ब्रह्मीभाषामें	जादिक्षु।
अंग्रेजीभाषामें	नट्मेग। Nutmeg
लैटिन्भाषामें	मिरिस्टिका ओफिसिनेलिस मिरि- स्केटा Myristica Officinalis M. Mas
फारसीभाषामें	जोभोवुवा।
अरबीभाषामें	जोझउतलीव।

जातीफललक्षणम्।

जातीफलंसशब्दश्चस्निग्धंगुरुचशस्यते।
लघुकंशब्दहीनंचरूक्षाङ्गमतिनिंदितम्॥ (भैषज्यचिकि

अर्थ-जातीफल--जिसमें शब्द होताहो, चिकना हो और भारी हो जायफल उत्तम होताहै। और जो तौलमें हलका हो, शब्दहीन हो अंगवाला हो, ऐसा जायफल निंदनीय है।

जातीफलगुणाः।

जातीफलंरसंतिक्तंतीक्ष्णोष्णंरोचनंलघु।
कटुकंदीपनंग्राहिस्वर्यंश्लेष्मानिलापहम्॥
निहन्तिमुखवैरस्यंमलदौर्गन्ध्यकृष्णताम्।
कृमिकासवमिश्वासशोषपीनसहृद्रुजः। (भावप्रका

अर्थ--जायफल-रसमें कडवा, तीक्ष्ण, गरम, रोचक, हलका, च अग्निको दीपनकरनेवाला, मलरोधक, स्वरको सँभालनेवाला तथा कफ

मुखकी विरसता, मलकी दुर्गन्ध और कालापन, कृमि, खांसी, वमन, शोष, पीनस और हृदयरोगका नाश करे है ।

अपिच ।

जातीफलंजातिकोशंतृष्णाशूलविनाशनम् । (केचित्)

अर्थ–जायफल–तृषा और शूलका नाश करेहै ।

अन्यच्च ।

जातीफलंकषायोष्णंकटुकण्ठामयार्त्तिहृत् ।
वातातीसारमेहघ्नंवृष्यं दीपनदं लघु ॥ (राज)

अर्थ–जायफल–कषैला, गरम, चरपरा, कण्ठरोगहारक, वातातिसारनिवारक, प्रमेहनाशक, वीर्य्यजनक, जठराग्निको दीपन करनेवाला और हलका है।

अस्यतैलगुणाः ।

तैलंजातीफलोद्भूतंसमुत्तेजनमग्निदम् ।
जीर्णातिसारशमनमाध्मानाक्षेपशूलत्हृत् ॥
आमवातहरंबल्यंदन्तवेष्टव्रणार्त्तिनुत् । (आत्रेयसंहिता)

अर्थ–जायफलका तेल–उत्तेजक, अग्निजनक,जीर्णातिसारनिवारक, आध्मानहर्ता, आक्षेपनाशकर्त्ता, शूलनाशक, आमवातहारक, बलकारक तथा दन्तवेष्ट और व्रण रोगको दूर करे है ।

विवरण–गुल्म होता है, फल जामुनके समान होता है, इसकी छालके भीतर लाल गुच्छा होता है । उसको जावित्री कहते हैं; कुछ कालमें उसका वर्ण पीला पडजाता है, उसके भीतर कठिन वल्कलका बीज होता है, तोडनेसे जायफल कहते हैं, इसकी उत्पत्ति जावा बताविया और पिनाङ्गके टापुओंमें होती है इसका चित्र ऊपर दिखलाया है ।

जातीपत्री नामानि ।

जातीकोषाजातिपत्रीसुमनःपत्रिकापिच ।

अर्थ–जातीकोषा, जातिपत्री, सुमनःपत्रिका जातीकोषी, सुरमनःपत्री, मालती, पत्रिका, सौमनसायिनी और जातीफलत्वक्)

हिन्दीभाषामें	जावित्री ।
वंगभाषामें	जैत्री, जयित्री ।
मराठीभाषामें	जायपत्री ।

गुजराती भाषामें	जावंत्री ।
कर्णाटकी भाषामें	जायपत्री ।
तैलंगी भाषामें	जाजिपत्री ।
इंग्रेजी भाषामें	मेस Mace
लैटिनभाषामें	मिरिष्टिका फ्रेग्रन्स Myristica Frag
फारसी भाषामें	जवित्री । बजवार ।
अरबी भाषामें	विसवासा ।

अस्या गुणाः ।

जातीफलस्यत्वक्प्रोक्ताजातीपत्रीभिषग्वरैः ।
जातीपत्रीलघुःस्वादुःकटूष्णारुचिवर्णकृत् ॥
कफकासवमिश्वासतृष्णाकृमिविषापहा ॥ (भावप्रक

अर्थ-वैद्यलोक जायफलकी त्वचाको जावित्री कहते हैं । गुण । जावित्री हलकी, स्वादिष्ठ, चरपरी, गरम, रुचिजनक, वर्ण तथा कफ, खांसी, वमन, श्वास, तृष्णा, कृमि और विषनाशक है ।

अपिच ।

जातीपत्रीकटुस्तिक्तासुरभिःकफनाशिनी ।
वक्रवैशद्यजननीजाड्यदोषनिकृन्तनी ॥ (राजनिघण्

अर्थ-जावित्री--चरपरी, कडवी, सुगन्धि, कफनाशक वक्त्रवैशद्य अर्थात् मुखको स्वच्छ करनेवाली और जडताको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

जातिपत्रीकटुःस्निग्धाग्निकृद्दुर्गन्धनाशिनी । (कैचि

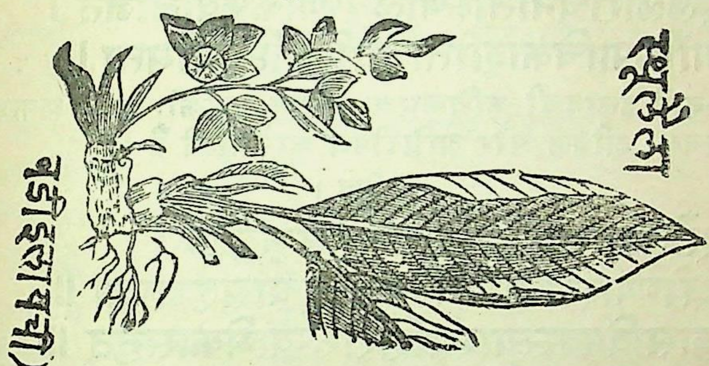
अर्थ--जावित्री, चरपरी, स्निग्ध, अग्निजनक और दुर्गंधनाशक है ।

विवरण--जावित्री और जायफल एकही वृक्षसे होतेहैं । सुमात्रा पिनांगआदि देश और हिन्दुस्तानी महासमुद्रके टापुओंमें जायफल अ तासे होताहै । देखनेमें सुंदर हरे रंगका होताहै । आजकल दक्षिण भी इसकी कापन् होती है, जायफलके ऊपर की छाल फटकर जो कुछ लाल नाजसा निकलता है, उसीको जावित्री कहते हैं । इस लक बी जायफल कहते है ! सुगन्धिवाली होनेसे जावित्री पानके साथ खाई है । बीजसे तेल निकलता है ।

जायफलको पकाकर अर्क निकाल लिया जाता है इस अर्कसे हैजेकी प्यास दूर होती है।

जावित्रीकी मात्रा साढेतीन ३॥ मासेकी है।

स्थूलैलानामानि ।



एकास्थूलैलाबहुलामालेयाताडकीफलम् ।

अर्थ-एला, स्थूलैला, बहुला, मालेया, ताडकीफल, (स्थूला, बृहदेला, त्रिपुटा, त्रिदिवोद्भवा, सुरभित्वक्, महिला, कन्या-कुमारी, कुमारिका, पृथ्वी, त्रिपुटा, कायस्था, कान्ता, घृताची, भद्रैला, गर्भसम्भवा, इन्द्राणी, ऐन्द्री, हव्यगन्धा, निष्कुटी, निष्कुटि, चर्मसम्भवा, बाला, बलवती, एलीका सागरगामिनी, गन्धालीगर्भ और महैला)

हिन्दीभाषामें	बड़ी इलायची, इलायची, पूर्वी इलायची, लाल इलायची।
वंगभाषामें	एलाइच । बड एलाइच ।
मराठीभाषामें	थोरवेला । वेलदोडे ।
गुजरातीभाषामें	मोठी एलची । एलचा ।
कर्णाटकीभाषामें	परङ्गूलक्की ।
तैलिङ्गीभाषामें	पेद्द एलक्कुलु । एलुक्कचेट्टु ।
तामिलीभाषामें	एलम् ।
इंग्रेजीभाषामें	लार्ज-कोर्डामोम । Large Cardamom
लैटिन्भाषामें	एमोमं सुव्युलेटम् Amomum Sukhulatum
फारसीभाषामें	हलै कलां ।
अरबीभाषामें	काकले किवार ।

स्थूलैलागुणाः ।

स्थूलैलारक्तपित्तघ्नीवमिशुक्राश्मजिद्धिमा ।
तृष्णाहृल्लासकण्डूघ्नीपित्तश्लेष्मामयापहा ॥ (ग. नि.)

अर्थ-बडीइलायची-रक्तपित्तनाशक, वमननिवारक, शुक्रनाशक रीको दूर करनेवाली, शीतल तथा तृषा, हृल्लास, कण्डू, पित्त और रोगको हरनेवाली है।

अन्यच्च।

स्थूलैलारोचनीतीक्ष्णालघूष्णाकफवातजित्।
सुगंधिःपाचिकाशीताचाग्निदीप्तिकरीमता॥

अर्थ-बडी इलायची-रुचिकारक, तीक्ष्ण, हलकी, गरम, कफवात सुगन्धि; पाचक; शीतल और अग्निदीपन करनेवाली है।

अपिच।

स्थूलैलाकटुकापाकेरसेचानलकृल्लघुः।
रूक्षोष्णाश्लेष्मपित्तास्रकण्डूश्वासतृषापहा॥
हृल्लासविषवस्त्यास्यशिरोरुग्वामिकासनुत्॥ (भा.

अर्थ-बडीइलायची-पाक और रसमें चरपरी है। अग्निजनक है है, रूखी और गरम है तथा कफ, रक्त, पित्त, कण्डू, श्वास, तृषा, विष, वस्तिरोग, मुखरोग, शिरोरोग, वमन और कासका नाश करे है।

अन्यच।

स्थूलैलाकटुकारूक्षाकोष्ठबन्धतृट्शूलनुत्। (कचित्

अर्थ-बड़ी इलायची-चरपरी, रूखी तथा कोष्ठबद्धता, पियास शूलको निर्मूल करे है।

सूक्ष्मैलानामानि।



वयःस्थातीक्ष्णगंधाचसूक्ष्मैलाद्राविडित्रुटिः।

अर्थ-वयःस्था, तीक्ष्णगन्धा, सूक्ष्मैला, द्राविडि, त्रुटि, (उपकु

गौरांगी, भृंगपर्णिका, उपकुञ्चिका, तुत्था, त्रिपुटा, क्षुद्रैला, त्रिपुटी, छर्दिका-रिपु, त्वचिसुगन्धा, पुटिका, चन्द्रसम्भवा, कपोतवर्णी, दिवोद्भवा, चन्द्र-बाला, बहुला, निष्कुटि, कुनटी, गौरांगी, गर्भारा, गन्धफलिका, सुगन्धि-चन्द्रिका और श्वेतैला)

हिन्दीभाषामें	छोटी इलायची, गुजराती इलायची, सफेद-इलायची ।
वंगभाषामें	छोटएलाच-गुजराती एलाइच ।
मराठीभाषामें	वेलची ।
गुजरातीभाषामें	एलचीकागदी ।
तैलिंगीभाषामें	एलाकु, चिह्नयालकुलु-एह्लकप ।
द्राविड़ीभाषामें	एलोकुह्लकापु ।
इंग्रेजीभाषामें	शिलिसर, कार्डामोम । Sheleser, Cardamo
लैटिन्भाषामें	इलेटिरिया कार्डामोम् Eleteria, Cardamomam
फारसीभाषामें	हैल, हिल, हाल ।
अरबीभाषामें	काकिलेसिगार ।

अस्यागुणाः ।

एलासूक्ष्माकफश्वासकासार्शोमूत्रकृच्छ्रहृत ।
रसेतुकटुकाशीतालघ्वीवातहरामता ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-छोटी इलायची- कफ. कास, श्वास, बवासीर, और मूत्रकृच्छ्र रोगका नाश करे है, रसमें चरपरी है, शीतल है, हलकी है और वातविना-शक है ।

अन्यच्च ।

त्रुटिस्तिक्ताचशीताचरसेकट्वीलघुःस्मृता ।
सुगंधिःपित्तलाचैवमुखमस्तकशोधिनी ॥
गर्भपातकरीरूक्षावातश्वासकफापहा ।
कासार्शःक्षयविषरुग्वस्तिकंठरुजंहरेत् ।
मूत्राश्मरींव्रणंकण्डूंनाशयेदितिकीर्तिता ॥ (नि० र०)

अर्थ-गुजराती इलायची-कडवी, शीतल, रसमें चरपरी, हलकी, सुगन्धी, पित्तजनक, मुख और मस्तकको शोधनेवाली है, गर्भको गिराने-वाली है, रूखी है तथा वात, श्वास, खांसी, बवासीर, क्षयरोग, विषविकार, वस्तिरोग, कण्ठरोग, सूत्रकृच्छ्र, पथरी, घाव और खुजलीका नाश करे है ।

द्विविधा एलागुणाः ।

एलाद्वयंशीतलतिक्तमुष्णंसुगंधिपित्तार्त्तिकफापहारि। करोतित्हृद्रोगमलार्तिवस्तिपुंस्त्वघ्नमत्रस्थविरोगुणाढ्य॥

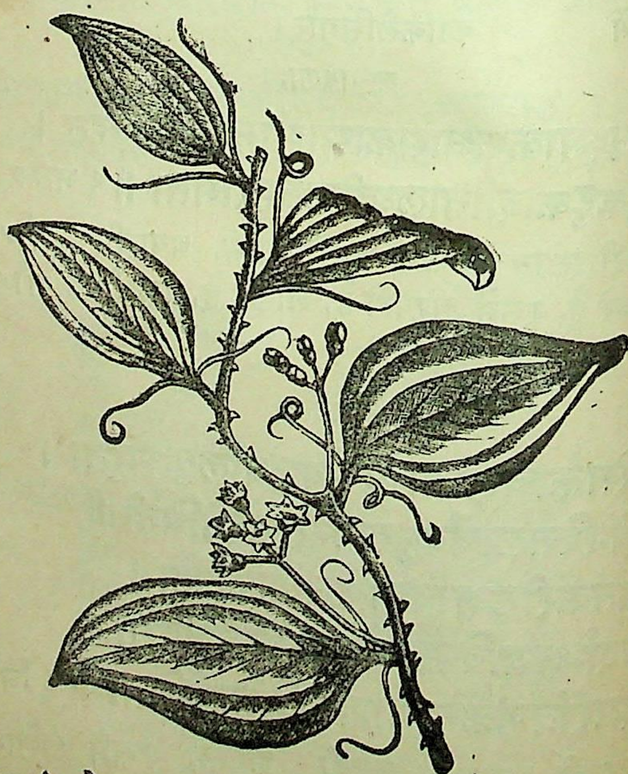
(रा.

अर्थ-दोनों प्रकारकी इलायची-शीतल, चरपरी, गरम, सुगंधि, रोगको शांति करै, कफका नाश करै, हृदयरोगको उत्पन्न करै, तथा वस्तिरोग, पुंस्त्व (पुरुषता) नाशक है । इन दोनोंमें बड़ी इलायची गुणवाली है ।

विवरण-छोटी इलायचीका क्षुप अदरखके समान होता है, सफेद, और लाल इलायचीके सुगन्धके समान होते हैं । इसके बीज और रसभरे होते हैं ।

मात्रा बड़ी इलायची १।। मासे, छोटी इलायचीकी १ मासे।

कंकोलनामानि ।



कंकोलकंकोषफलंकोलकंतैलसाधनम् ।

अथ-कङ्कोलक, कोषफल, कोलक, तैलसाधन, (कङ्कोल, फल, कोरक, काकोल, गन्धव्याकुल, कृतफल, कटुकफल, द्रेष्य, स्थूल

कंकोल, माधवोचित, कट्फल, काली मरिच, कटुक, कोल, मारिच, मागधोषित, कृतफल, द्वीपसम्भव और सुगन्धिफल)

हिन्दीभाषामें	शीतलचीनी-कवावचीनी, चिनीकवाव, कंकोला।
वंगभाषामें	कांकला।
मराठीभाषामें	कंकोळ, कापुरचीनी।
गुजरातीभाषामें	चणकबाव।
कर्णाटकीभाषामें	कक्कोलद्वय।
तैलिंगीभाषामें	कवाकचीनी।
इंग्रेजीभाषामें	क्युबेब पैपर। Cubeb Pepper
लैटिनभाषामें	क्यूबेबाऑफिसिनेलिस। Cubeba Officinalis
फारसीभाषामें	कबाबह।
अरबीभाषामें	कवास, हेबुल, ऊरस, कबाबा।

अस्य गुणाः ।

कंकोलंलघुतीक्ष्णोष्णंतिक्तंहृद्यंरुचिप्रदम् ।
आस्यदौर्गन्ध्यहृद्रोगकफवातामयांध्यहृत् ॥ (भा. प्र.)

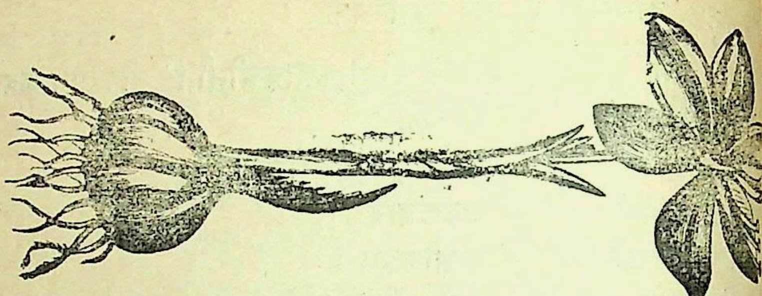
अर्थ--शीतलचीनी--हलकी, तीक्ष्ण, गरम, चरपरी, हृदयको, हितकारी, रुचिदायक तथा मुखकी दुर्गन्धता, हृदयरोग, कफ, वात और नेत्ररोगको दूर करे है।

अपिच ।

कंकोलंकटुकंतिक्तमुष्णंदीपनपाचकम् ।
रुच्यंसुगन्धिहृद्यंचलघुचकफनाशकम् ॥
मुखजाड्यंवातरोगंहृद्रोगंचकृमींस्तथा ।
अन्धत्वंमुखदौर्गन्ध्यमामंचैवाग्निमांद्यकम् ॥
नाशयेदितिचप्रोक्तमृषिभिःसूक्ष्मदर्शिभिः ।
एतेगुणास्तुसुबृहत्कंकोलस्यसमीरिताः ॥

अर्थ-शीतलचीनी--चरपरी कडवी, गरम, दीपन, पाचन, रुचिकारी सुगन्धि, हृदयको हितकारी, हलकी, कफनाशक तथा मुखकी जडता, वातरोग, हृदयरोग, कृमि, अन्धापन, मुखकी दुर्गन्धता और मंदाग्निको नाश करेहै, बडी शीतलचीनीकेगुण इसीके समान जानने।

नागकेशरनामानि ।



चाम्पेयःकेसरोनागकेशरःकनकाह्वयः ।
महौषधंराजपुष्पःफलकःस्वरघातनः ॥

अर्थ- चाम्पेय, केशर, नागकेशर, कनकाह्वय, महौषध, राजपुष्प, स्वरघातन (केसर, काञ्चनाह्वय, सुवर्णाख्य, भुजंगाख्य, षट्पदप्रिय, पुष्परेचन, नागाख्य, सुवर्णाख्य, नागकेशर, केसरी, किञ्जल्क, नागि नागीय, काञ्चन सुवर्ण, हेमकिञ्जल्क, रुक्म, हेम, पिञ्जर, फणिकेश केशर, नागपुष्प, नाग)

हिन्दीभाषामें	नागकेशर ।
वंग भाषामें	नागेश्वर ।
मराठी भाषामें	नागकेशर तांबडा नागकेशर ।
गुजराती भाषामें	नागकेशर ।
कर्णाटकीभाषामें	नागकेशर ।
तैलिंगीभाषामें	नागकेशरालु ।
तामिली भाषामें	नांगल ।
वम्०	नागचम्प ।
लैटिनभाषामें	ओक्रोकार्पसलींगिफोलियम्मेसू Ocrocorpuslingifolium Mesu
अरबीभारामें	नारमुष्क ।

अस्यगुणाः ।

नागपुष्पंकषायोष्णंरूक्षंलघ्वामपाचनम् ।
ज्वरकण्डूतृषास्वेदच्छर्दिहृल्लासनाशनम् ॥
दौर्गन्ध्यकुष्ठवीसर्पकफपित्तविषापहम् । (भावप्रका

अर्थ--नागकेशर--कषैली, गरम, रूखी, हलकी, आमपाचक त खुजली, पियास, पसीना, वमन, उबकाई, दुर्गन्ध; कोढ, विसर्प, और विषको दूर करे है ।

अपिच ।

नागकेशरकंतिक्तंकषायंचामपाचकम् ।
किञ्चिदुष्णंलघुरूक्षंपित्तच्छर्दिकफापहम् ॥
खुडवातंरक्तरुजंवातंकण्डूंचहृद्व्यथाम् ।
स्वेददौर्गन्ध्यविषतृट्कुष्ठवीसर्पनाशनम् ॥
वस्तिपीडावातरक्तकण्ठमस्तकशूलनुत् । (नि. र.)

अर्थ-नागकेशर-कडवी, कषेली, आमपाचक, किञ्चित् गरम, रूखी, हलकी तथा पित्त, वान्ति कफ, खुडवात, रुधिररोग, वात, कण्डू, हृदयकी पीडा, पसीना, दुर्गन्ध, विष, तृषा, कोढ, विसर्प, वस्तिपीडा, वातरक्त, कण्ठरोग और मस्तकशूलका नाश करे है ।

अन्यच्च ।

केसरंविषवीसर्परक्तार्शोवमिकुष्ठहृत् ।
हृल्लासखुडदौर्गन्ध्यतृष्णापित्तबलासजित् ॥ (ग. नि.)

अर्थ--नागकेशर-विष, विसर्प, रक्तरोग, अर्श वमन, कुष्ठ, हृल्लास, वातरक्त, दुर्गन्ध, तृषा, पित्त और कफको दूर करे है ।

पुन्नागवृक्षकी केशरको और नागचंपाकी कलीको नागकेशर कहते हैं इसकी दो जाति हैं, कोकण, गोवाकी ओरसे आतीहै ।

त्वचगुडत्वङ्नामानि ।



भृङ्गंवरांगंरामेष्टंविज्जुलंत्वचमुत्कटम् ।
चोलंगुडत्वचंपत्रंचोचंसुरभिवल्कलम् ॥

अर्थ--भृंग वरांग, रामेष्ट विज्जुल, त्वच, उत्कट, चोल, गुडत्वच, चोच, सुरभिवल्कल (सूतकट, त्वक्पत्र, वरांगक, त्वचा, हृद्य, वल्कल, मुखशोधन, शकल, सिंहल, बल्य, सुरस, कामवल्लभ, बहु वनप्रिय, लटपर्ण, गन्धवल्कल, तर, शीत, त्वक्पत्र, सैंहल, रामवल्लभ त्वक्. दारुसिता)

हिन्दीभाषामें	तज-दालचीनी ।
वंगभाषामें	दारुचिनी ।
मराठीभाषमें	दालचीनी ।
गुजरातीभाषामें	तज ।
कर्णाटकीभाषामें	तज ।
तैलिंगीभाषामें	सनलिंगृ । डालचीनी, सनाल लींगु
तामिलीभाषामें	कारुवा करु उपट्टाई ।
अंग्रेजीभाषामें	सिन्नामल वार्क Cinnamom Bark
लैटिनभाषामें	सिन्नामोमी कोर्टेक्स । [छाल]
	सिनामोमं । ओफि सिलिस । [वृक्ष]

Cunnamomi Cartex C. officina is Cinnomomuw Cylnr

फारसीभाषामें	दार्चिनी ।
अरबीभाषामें	सालीखा ।
ब्रह्मीभाषामें	मिट्ठूख्यावो ।
लुसाईभाषामें	थ्वाक, थ्विन ।

दारुसितागुणाः ।

उक्तादारुसितास्वाद्वीतिक्ताचानिलपित्तहृत् ।
सुरभिःशुक्रलावण्यामुखशोषतृषापहा ॥ (भा. प्र.)

अर्थ- दालचीनी-स्वादिष्ठ, कडवी, वात पित्तनाशक, सुगन्धित, शुक्र शरीरको सुंदर करनेवाली तथा मुखशोथ और तृषाको हरनेवाली है ।

अपिच ।

त्वचंतुकटुकंशीतंकफकासविनाशनम् ।
शुक्रामशमनंचैवकण्ठशुद्धिकरंलघु ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ--तज चरपरी, शीतल, तथा कफ और खांसीको दूर करे शुक्र और आमको शान्ति करे हलकी है ।

अपिच ।

त्वचंलघूष्णंकटुकंस्वादुतिक्तंचरूक्षकम् ।
पित्तलंकफवातघ्नंकण्डूवामरुचिनाशनम् ॥
हृद्बस्तिरोगवातार्शःकृमिपीनसशुक्रहृत् । (भा. प्र.)

अर्थ--तज--हलकी, गरम, चरपरी, स्वादिष्ट, कडवी, रूखी, पित्तवर्द्धक, कफवातनाशक, तथा कण्डू, आम, अरुचि, वस्तिरोग, हृदयरोग, वातार्श, कृमि, पीनस और शुक्रको हरे है ॥

अन्यच्च ।

त्वक्कट्वीपित्तलास्वाद्वीकण्ठशुद्धिकरीलघुः ।
रूक्षातिक्तावस्तिशुद्धिकारिणीचोष्णदामता ॥
कफहिक्कावातकासकण्डूहृद्रोगनाशिनी ।
आमंचवस्तिरोगश्चपीनसंचविषंतथा ॥
शुक्रंचार्शःकृमींश्चैवनाशयेदितिकीर्तिता ।
तनुत्वक्सुरभिस्तिक्तास्वाद्वीबलकरीमता ॥
धातुवृद्धिकरीवातपित्ततृण्मुखदोषनुत् ।

अर्थ--तज-चरपरी, पित्तको उत्पन्न करनेवाली, स्वादिष्ट, कण्ठकी शुद्धि करनेवाली, हलकी, रूखी, कडवी, वस्तिशोधक, गरम तथा कफ, हुचकी, वात, खांसी, खुजली, हृदयरोग, आम, वस्तिरोग, पीनस, विष, शुक्र, बवासीर और कृमिरोगका नाश करेहै । दालचीनी-सुगन्धि, कडवी, स्वादिष्ट बलकारक, धातुवर्धक, तथा वात, पित्त, तृषा और मुखरोगको दूर करेहै ।

त्वचतैलगुणाः ।

वह्निमान्द्यानिलहरमाध्मानाक्षेपनाशनम् ।
वान्त्युत्क्लेशप्रशमनंसंग्राहिदशनार्तिहृत् ॥
त्वाचंतैलंरजःस्त्रावितोयेक्षिप्तंनिमज्जति । (आ० सं०)

अर्थ-तजका तेल-मंदाग्नि, वात, अफरा और आक्षेपका विनाशक है,

तथा वान्ति और उत्क्लेशको शान्ति करे है, संग्राहीहै, दन्तरोगको दूर रक्तस्राव अर्थात् रुधिरके गिरनेसे इसको पानीमें डालकर लगाना चा

विवरण-छोटा पेड होता है। सिंहल, मलबार, कोचीन, चीन, बजाभा आदि देशोंमें अधिकतासे होती है, इसके पत्ते तमालपत्रके होतेहैं, पत्तोंको सुखानेपर उनमेंसे लौंगकी समान सुगन्धि आती है। डंडीके ऊपर सफेद फूल आताहै; फूलमें गुलाबकी समान सुगन्धि फल करोंदेके समान होतेहैं, इनमेंसे तेल निकलताहै, इसके फूलोंका और इत्र बनातेहैं। सिंहलद्वीपकी दालचीनी बहुत उत्तम होतीहै। पतली छालकोही दालचीनी कहते हैं।

तेजपत्रनामानि।

तेजपत्रं गन्धजातं पत्रकं पाकरञ्जनम्।

अर्थ-तेजपत्र, गन्धजात, पत्रक, पाकरञ्जन, (पत्र, दलाह्वय, राम, वसनाह्वय, गोमेदक, पत्राख्य, छदन, दल, पालाश, अंकुश, वास, सुकुमारक, वस्त्र, तमालक, गोपन, वसन, तमाल, सुरनिर्गन्ध, तमा हृष्टगन्ध, शीतरस, सुरस और रोमश)

हिन्दी भाषामें	तेजपात।
वङ्ग भाषामें	तेजपाता। तेजपत्र।
मराठी भाषामें	तमालपत्र। संभारपान।
गुजराती भाषामें	तमालपत्र।
कर्णाटकी भाषामें	पत्रक।
तैलङ्गी भाषामें	आकुपत्री।
अंग्रेजी भाषामें	फोलिया मालाबाथी। Folia Malab
लैटिन् भाषामें	सितामोमं टमाला।Cuinamodmam Ta
फारसी भाषामें	सादरसू।
अरबी भाषामें	साजिज।

अस्यगुणाः।

पत्रमुष्णंलघुश्लेष्महृल्लासार्शोनिलापहम्।
हृद्रोगंपीनसंचापित्रिदोषंचैवनाशयेत्॥ (नि० र०

अर्थ-तेजपात-गरम, हलका तथा कफ, उबकाई, बवासीर, वात, रोग, पीनस और त्रिदोषनाशक है।

अपिच।

पत्रकंलघुतिक्तोष्णंकफवातविषापहम्।
वस्तिकण्डूत्रिदोषघ्नंमुखमस्तकशोधनम्॥ (राजनि

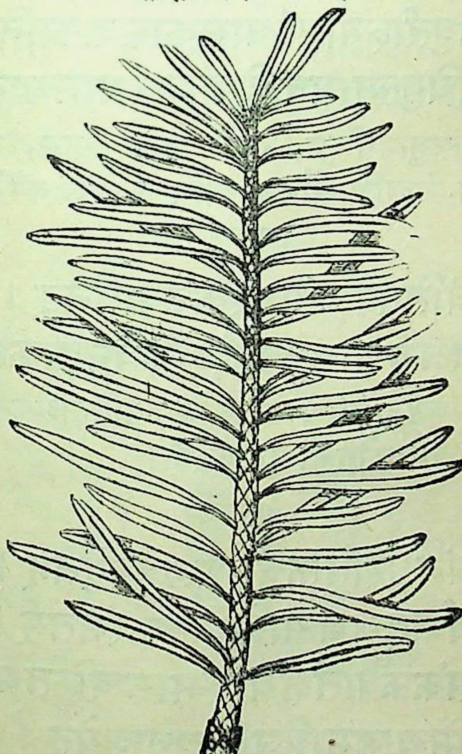
अर्थ-तेजपात-हलका, कडवा, गरम, वात, विष, वस्तिरोग, खुजली और त्रिदोषनाशकहै, मुख और मस्तकशोधक है ।

अन्यच्च ।

पत्रकंमधुरंकिञ्चित्तीक्ष्णोष्णंपिच्छिलंलघु ।
निहंतिकफवातार्शोहल्लासारुचिपीनसान् ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-तमालपत्र (तेजपात)-मधुर, कुछेक तीक्ष्ण, गरम, पिच्छिल, हलका तथा कफ, वात, बवासीर, हल्लास, अरुचि और पीनस रोगका नाशक है। तेजपत्र तजके पत्तोंके समान होतेहैं, सुगन्धिके लिये मसालेमें डाले जातेहैं । मात्रा तीन ३ मासेकी है ।

तालीसपत्रनामानि ।



तालीसपत्रंतालीसंधात्रीपत्रंशुकोदरम् ।
अपरंग्रंथिकापत्रंपत्राढ्यंतुलसीछदम् ॥ (मदनविनोद)

अर्थ-तालीसपत्र-तालीस; धात्रीपत्र, शुकोदर, ग्रंथिकापत्र, पत्राढ्य, तुलसीछद, (पत्राख्य, अर्कबंध, करिपत्र, करिच्छद, नील, नीलाम्बर; ताल, तालीपत्र, तमाह्वय, तालीसपत्रक, तामलकीदल, मुखरोगहर, हृद्य, सुपत्र, अर्कवाह, करीपत्र, आमलकीपत्र और घनच्छद)

हिन्दीभाषामें तालीसपत्र-तालिशपत्र ।
वंगभाषामें तालीशपत्र ।

मराठीभाषामें	लघुतालीसपत्र ।
कर्नाटकीभाषामें	तालीसपत्र ।
तैलिङ्गीभाषामें	तालीशपत्री ।
गुजरातीभाषामें	तालीसपत्र ।
बम्०	ताम्बठ ।
द्राविडीभाषामें	पनिअल ।
लैटिन्भाषामें	टेकसस् बेकेटा । Taxus bacata
फारसीभाषामें	जस्नब ।
अरबीभाषामें	तालीसफर ।

तालीसपत्रगुणाः ।

तालीसंलघुतीक्ष्णोष्णंश्वासकासकफानिलान् ।
निहंत्यरुचिगुल्मामवह्निमांद्यक्षयामयान् ॥ (भावप्र०

अर्थ--तालीसपत्र--लघु, तीक्ष्ण, गरम तथा श्वास, खाँसी, कफ, अरुचि, गुल्म, आम, मंदाग्नि और क्षयरोगका नाश करेहै ।

अपिच ।

तालीसपत्रंतिक्तोष्णंमधुरंकफवातनुत् ।
कासहिक्काक्षयश्वासच्छर्दिदोषविनाशकृत् ॥ (राजनि०

अर्थ--तालीसपत्र--कडवे, गरम, मधुर, कफवातनाशक तथा खांसी, हि० क्षयरोग, श्वास और वमनरोगको दूर करेहै ।

अन्यच्च ।

तालीसपत्रंमधुरंतिक्तंचोष्णलघुस्मृतम् ॥
तीक्ष्णंस्वर्यञ्चहृद्यञ्चअग्निदीप्तिकरंमतम् ॥
श्वासंकासंकफंवातंक्षयगुल्मारुचीस्तथा ।
रक्तदोषंवमिंचाममग्निमांद्यंचनाशयेत् ।
मुखरोगश्चापित्तञ्चनाशयेदितिकीर्तितम् ॥ (नि० र०)

अर्थ--तालीसपत्र, मधुर, कडवे, गरम, हलके, तीक्ष्ण, स्वरको सँभा० वाले, हृदयको हितकारी, अग्नि दीपन करनेवाले तथा श्वास, खांसी, क० वात, क्षय, गुल्म, अरुचि, रुधिरविकार, वान्ति, आमदोष, अग्निमान्द्य, मुख० रोग और पित्तका नाश करेहै ।

विवरण--वृक्ष अत्यन्त बडा होताहै, देखनेमें अधिक तरफाऊसे मिल० है, इसके लट्ठके लखते चीरकर चैकी बक्तोंमें लगाये जातेहैं । व्यवहारप०

जटामांसीनामानि ।

जटामांसीजटीपेषीलोमशाजटिलामिसिः ।
मांसीतपस्विनीहिंस्रामिषिकाचक्रवर्तिनी ॥

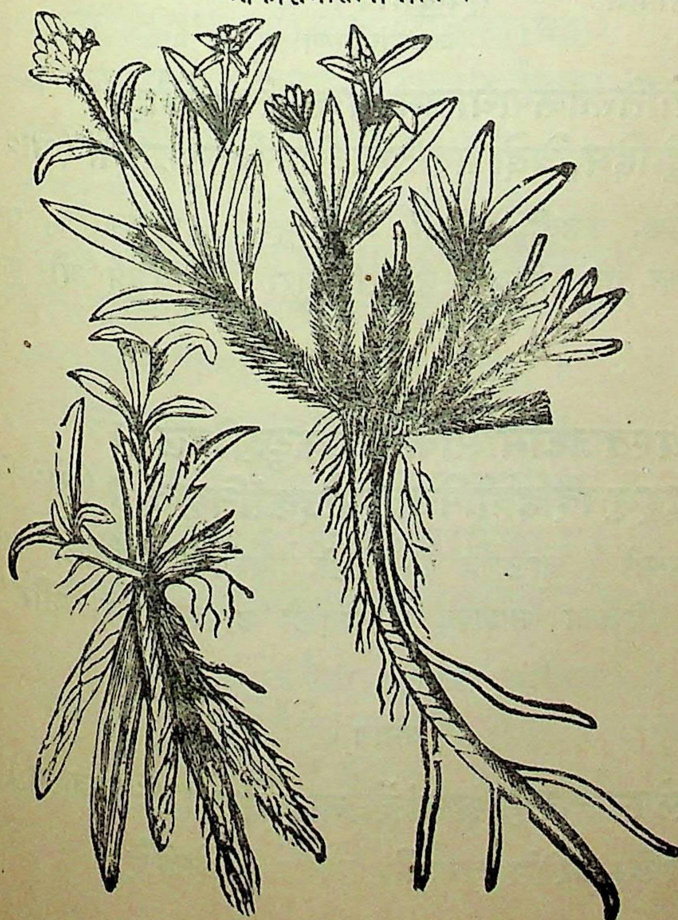
अर्थ--जटामांसी, जूटी, पेषी, लोमशा, जटिला, मिसि, मांसी, तपस्विनी, हिंस्रा, मिषिका, चक्रवर्तिनी, (नलद, वहिनी, कृष्णजटा, किरातिनी, भूतजटा, क्रव्यादी, पिशिता, पिशी, पेशी, पेशिनी, जटा, मांसिनी, जटाला, नलदा, मेषी, तामसी, माता, अमृतजटा, जननी, जटावती, मृगभक्षा, जडामांसी, मिसि, मिसी, मिसिका, मिषि)

गन्धमांसीनामानि ।

द्वितीयागन्धमांसीचकेशीभूतजटास्मृता ।
पिशाचीपूतनाचैवभूतकेशीच लोमशा ॥
जटालालघुमांसीचख्याताअंकाभिधाह्वया ।

अर्थ--गन्धमांसी, केशी, भूतजटा, पिशाची, पूतना, भूतकेशी, लोमशा, जटाला, लघुमांसी, (पिशाचिका और श्वेतकेशी)

आकाशमांसीनामानि ।



आकाशमांसीसूक्ष्मान्यानिरालम्बाखसम्भवा।
सेवालीसूक्ष्मपत्रीचगौरीपर्वतवासिनी ॥ (राजनिघण्टु

अर्थ--आकाशमांसी, सूक्ष्मजटामांसी, निरालम्बा, खसम्भवा, सेवा सूक्ष्मपत्री, गौरी, पर्वतवासिनी ।

हिंदीभाषामें	जटामांसी, बालछड, कनुचर ।
वंगभाषामें	जटामांसी ।
मराठीभाषामें	जटामांसी ।
गुजरातीभाषामें	वालछड ।
कर्नाटकीभाषामें	वहुलगन्धजटामांसी आकाशजटामांसी ।
तैलिंगीभाषामें	जटामांसी ।
अंग्रेजीभाषामें	स्पिकनार्ड Spikenard
लैटिन्भाषामें	नार्डोस्टेकिस् जटामांसी । Nordastock
फारसीभाषामें	सुबूल् ।
अरबीभाषामें	सूवलुत्तीव ।

जटामांसीगुणाः ।

मांसीतिक्ताकषायाचमेध्याकांतिबलप्रदा ।
स्वाद्वीहिमात्रिदोषास्रदाहवीसर्पकुष्ठनुत् ॥ (भा० प्र०

अर्थ--बालछड, कडवी, कषेली, मेधाजनक, कान्तिकारक, बलदा स्वादिष्ठ, शीतल, तथा त्रिदोष, रुधिरविकार, दाह, विसर्प और कुष्ठरो नष्ट करेहै ।

अपिच ।

सुरभिस्तुजटामांसीकषायाकटुशीतला ।
कफहृद्भूतदाहघ्नीपित्तघ्नीमोदकांतिकृत् ॥ (रा० नि०)

अर्थ--जटामांसी (बालछड)--कषेली, चरपरी, शीतल, कफना भूतदाह और पित्तका नाशक, आनन्दको उत्पन्न करे, और कां बढानेवाली है ।

अन्यच ।

अनुलेपनज्वरहृद्रूक्षतांचैवनाशयेत् । (राजवल्लभ)

अर्थ--इसका लेप करनेसे ज्वर और रूक्षता दूर होती है ।

गन्धमांसीगुणाः।

गन्धमांसीतिक्तशीताकफकण्ठामयापहा।
रक्तपित्तहरावर्ण्याविषभूतज्वरापहा॥

अर्थ--गन्धमांसी, कडवी, शीतल, तथा कफ, कण्ठरोग, रक्त, पित्त, विष, भूत और ज्वरको दूर करेहै तथा वर्णको उज्ज्वल करेहै॥

आकाशमांसीगुणाः।

अभ्रमांसीहिमाशोफव्रणनाडीरुजापहा।
लूतागर्दभजालादिहारिणीवर्णकारिणी॥ (राजनि.)

अर्थ--आकाशमांसी--शीतल तथा सूजन और नाडीरोगनाशक है, लूता, गर्दभक, जालादिनिवारक और शरीरके रंगको उज्ज्वल करेहै।

अन्यच्च।

जटामांसीतुतुवराशीतलाकांतिकारका।
बल्य कटूवीस्वाद्वितिक्ताकफांतर्दाहपित्तहा॥
विसर्पकुष्ठत्वग्दोषभूतबाधाजरापहा।
दाहंत्रिदोषंवातंचरक्तदोषंविषंहरेत्॥
कृष्ण सुगंधामांसीतुकेश्यासुरभितिक्तका।
वर्ण्याचशीतलाप्रोक्ताकफकण्ठरुजाहरा॥
भूतबाधारक्तपित्तरक्षोबाधाज्वरापहा।
विषवातहराचान्येगुणामांसीवदीरिताः॥
आकाशमांसीवर्ण्यातुशीतलाव्रणशोथहा।
जालगर्दभकंलूताविस्फोटंचमसूरिकाम्॥
नाडीव्रणंविसर्पादिनाशयेदितिकीर्त्तिता॥

अर्थ--जटामांसी (बालछड)--कषेली, शीतल, कान्तिकारक, बलकारक, चरपरी, स्वादिष्ठ, कडवी, तथा कफ, अन्तर्दाह, पित्त, विसर्प,कोढ, त्वचाके रोग, जरा, दाह, त्रिदोष, वात, रक्तविकार और विषका विनाश करेहै। सुगन्धजटामांसी--केशोंको उज्ज्वल करनेवाली, सुगन्धि, कडवी, वर्णको सुन्दर करनेवाली, शीतल तथा कफ, कण्ठरोग, भूतबाधा, रक्तपित्त, राक्षस-

बाधा, ज्वर, विष और बादीका नाश करेहै ॥ आकाशजटामांसी--श रंगको शोभायमान करनेवाली, शीतल तथा व्रण, शोथ, जालगर्द लूता, विस्फोटक, मसूरिका (शीतलामाता) नाडीव्रण (नासूर) विसर्पादि अनेक रोगोंको दूर करेहै ।

विवरण--जटामांसी गुल्मजातिकी वनस्पति है, इसके पत्ते सरजी समान होतेहैं, यह हिमालयके जंगलमें उत्पन्न होतीहै । इसकी जडपर रंगके रुँएँ जमे रहतेहैं, फूल गुलावी आमा और गुच्छोंमें लगतेहैं ॥

व्यवहार--रुँवोंसे ढकी हुई जड बाजारमें जो जटामांसी अर्थात् बा बिकतीहै वह कृत्रिम बनीहुई होतीहै इस कारण देख भालके काममें उचित है । मात्रा चार ४ मासेकीहै ।

बहुतदिनोंसे जटामांसीका व्यवहार सुगन्धित तैलादिकके बनानेमें हो और सागनेसि आदि अंग्रेज डाक्टरलोग इसको भेलिरिन नामक औषधिकी तुल्य गुणवाली समझतेहैं, स्नाय्वादिकी दुर्वलतामें विशेष कारी होनेसे यह बहुत औषधियोंके अनुपानमें दीजातीहै, वैद्यलोक, उदर श्वास, खांसी मूर्च्छादिरोगमें उसका व्यवहार करतेहैं । दक्षिणदेशमें ज सीसे एक प्रकारका तेल निकालकर केशोंमें लगाया जाताहै ।

प्रियंगुनामानि ।

प्रियंगुःफलिनीश्यामागन्धफलागोवन्दनी ।
विष्वक्सेनाकृष्णपुष्पीकृशाङ्गीमहिलाह्वया ॥

अर्थ-प्रियंगु, फलिनी, श्यामा, गन्धफला गोवन्दनी, विष्वक् कृष्णपुष्पी, कृशांगी महिलाह्वया, लता (कान्ता, गुन्द्रा, कारम्भा, प्रि कटु, गोवर्णा, भेदनी, मिथवल्ली, फलप्रिया, गौरी, वृत्ता, कङ्गु, कंगु भंगुरा, गौरवल्ली, सुभंगा, पर्णभेदनी, शुभा, पीता, मंगल्या, प्रेय अङ्गनाप्रिया, वनिता नारिवल्लभा)

संस्कृतभाषामें	प्रियंगुः ।
हिन्दीभाषामें	फूलप्रियंगू प्रियंगु, फूलफेन,
वंगभाषामें	प्रियंगु, गन्धप्रियंगुः ।
मराठीभाषामें	गव्हला ।
गुजरातीभाषामें	घडला ।
कर्णाटकीभाषामें	नेर्पिलगु ।

तैलिङ्गीभाषामें	प्रेंकणपुचेट्टु ।
तामिलीभाषामें	प्रियंगु ।
बम	गहुली ।
लैटिनभाषामें	प्सुनस्म्--महालिब् । Psunesma hdleb

अस्यगुणाः ।

प्रियंगुःशीतलातिक्तातुवरानिलपित्तहृत् ।
रक्तातिसारदौर्गन्ध्यस्वेददाहज्वरापहा ॥
गुल्मतृड्विषमेहघ्नीतद्वद्गन्धप्रियंगुका ।
तत्फलंमधुरंरूक्षंकषायंशीतलंगुरु ॥
विबन्धाध्मानबलकृत्संग्राहीकफपित्तजित् । (भा. प्र.)

अर्थ--प्रियंगू-शीतल, कडवा, कषेला तथा वात, पित्त, रक्तातिसार, दुर्गन्ध, पसीना, दाह, ज्वर, गुल्म, तृषा और प्रमेहको दूर करेहै इसीके सदृश गन्धप्रियंगुके गुण हैं ।

प्रियंगुका फल- मधुर, कषाय, भारी, शीतल तथा विबन्ध, आध्मान और बलकारक है, मलरोधक तथा कफपित्तनाशक है ।

अपिच ।

प्रियंगुःशीतलोवांतिदाहपित्तज्वरास्रजित् ।
मुखकांतिप्रजननोगात्रदौर्गन्ध्यनाशनः ॥ (मदनविनोद)

अर्थ-प्रियंगु-शीतल है वान्ति, दाह, पित्त, ज्वर और रुधिरविकारको दूर करेहै तथा मुखकी शोभाको बढावेहै और शरीरकी दुर्गन्धको हरेहै ।

अन्यच्च ।

गन्धप्रियंगुस्तुवरस्तिक्तोवृष्यश्चशीतलः ।
केश्योवांतिभ्रांतिदाहपित्तरक्तरुजस्तथा ॥
ज्वरमोहस्वेदकुष्ठमुखजाड्यतृषा हरेत् ।
वातंगुल्मंविषंमोहंमेदंचैवविनाशयेत् ॥
रक्तपित्तंनाशयतिबीजमस्यकषायकम् ।
मधुरंशीतलंरूक्षं तुवरं ग्राहकं गुरु ॥

मलस्तम्भकरंबल्यंपित्तघ्नंकफनाशनम् ।
आध्मानकारकंचैवमुनिभिःपरिकीर्तितम् ॥

अन्यसुगन्धप्रियंगुः ।

सुगन्धफलिनीशीतासुगन्धिःकुष्ठदाहनुत् ।
ज्वररक्तविकारञ्चनाशयेदितिकीर्त्तिता ॥ (रा. नि.)

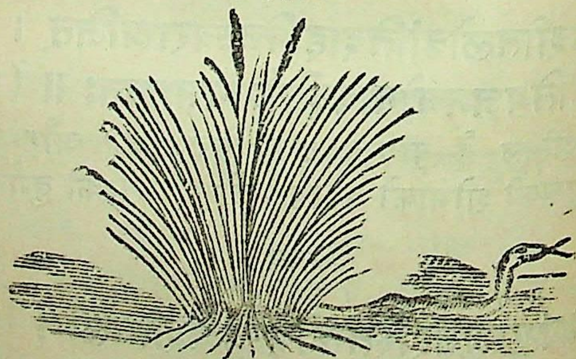
अर्थ--प्रियंगु--कषेला, कडवा, वीर्यजनक, शीतल, केशोंको करनेवाला तथा वमन, वान्ति, दाह, पित्त, रक्तरोग, ज्वर, मोह, कोढ, मुखकी जडता, पियास, वात गुल्म, विष, प्रमेह, मेदरोग और पित्तका नाश करेहै ॥

इसके बीज--कषेले, मधुर, शीतल, रूखे, ग्राही, मलको स्तम्भन वाले, बलकारक, पित्तका नाश करनेवाले, कफको दूर करने वाले अफारेको करनेवाले हैं।

सुगन्धप्रियंगु [दूसरे प्रकारका प्रियंगु अर्थात् फूलप्रियंगु] सुगन्धि तथा कोढ, दाह, ज्वर और रुधिरके विकारोंको दूर करे है।

उशीरनामानि ।

खस.



वीरणस्यतुमूलंस्यादुशीरंनलदंचतत् ।
अमृणालंचसेव्यश्चसमगन्धिकमित्यपि ॥

अर्थ--वीरण (गाँडर) घासकी जडको उशीर अर्थात् खस क संo उशीर, नलद, अमृणाल, सेव्य, समगन्धिक, (अभय, अवदाह, लामज्जक, लघुभय, अवदाह, इष्टकापथ, उशीर, मृणाल, लघुलय, अवदाहेष्टकापत्र, इन्द्रगुप्त-उशीरक, जलवास, हरिप्रिय, वीर

णप्रिय, वीरतरु, शिशिर, शीतमूलक, वितानमूलक, दाहहरण, जलामोद, न्धाढ्य, सुगन्धिक, सुगन्धिमूलक, सुगन्धिमूल, कम्बु वीरण, कटाशन, रितर, वीरभद्र, वीर और बहुमूलक)

हिन्दी भाषामें	खस, वीरन, गाँडर ।
वंगभाषामें	व्याणारमूल, वेणारमूल, वीरणमूल--खस
मराठीभाषामें	काळावाळा ।
गुजरातीभाषामें	कालोवालो. मोव्यतावालाजिनांगीणमूल
कर्णाटकीभाषामें	वालदेवस ।
तैलिंगीभाषामें	अवरुगट्टि; नझ वट्टिवेर्लु ।
तामिलीभाषामें	वेत्तवेर ।
वम्	खसखस ।
उत्	विणा, गन्दविणा, वाधिवेरु ।

लैटिनभाषामें अन्ड्रोपागन मूरिकेटम् । Andropagon Muricatum.

उशीरगुणाः ।

उशीरंशीतलंतिक्तंदाहश्रमहरंपरम् ।
पित्तज्वरार्तिशमनंजलसौगंध्यदायकम् ॥ (रा. नि.)

अर्थ-खस-शीतल, कडवी तथा दाह, परिश्रम और पित्तज्वरकी शान्ति करे तथा जलको सुगन्धि करेहै ।

अपिच ।

उशीरंस्वेददौर्गन्ध्यदाहपित्तास्रगोगजित् । (रा. व.)

अर्थ-खस--पसीना, दुर्गन्ध, दाह और रक्तपित्तको हरे है ।

अन्यच्च ।

उशीरंस्वेदपित्तास्रदाहदौर्गन्ध्यनाशनम् ।
क्लमतृष्णाविषध्वंसिसतिक्तंमधुरंहिमम् ॥

अर्थ--खस--स्वेद, पित्त, रक्तविकार, दाह, दुर्गन्ध क्लम, तृष्णा और विषको दूर करे तथा कडवी, मधुर और शीतल है ।

अपिच ।

उशीरंपाचनंशीतंस्तम्भनंलघुतिक्तकम् ।
मधुरंज्वरहृद्वान्तिमदनुत्कफपित्तहृत् ॥
तृष्णास्रविषवीसर्पदाहकृच्छ्रव्रणापहम् । (भावप्रकाश)

अर्थ--खस--पाचक, शीतल, स्तम्भन, हलकी, कडवी, मीठी तथा वमन, मद, कफ, पित्त, तृषा रुधिरदोष, विष, वीसर्प, दाह, मूत्रकृच्छ्र व्रणरोगका नाश करेहै।

गांडरके भी गुण इसीके समान हैं।

विवरण--यह गांडर घासकी जड है।

गोरोचननामानि।

गोरोचनातुगोपित्तंवन्दनीयामनोरमा।

अर्थ- गोरोचना--गोपित्त, वन्दनीया, मनोरमा (वन्द्या, रोचना, शोभा, रुचिरा, शोभना, शुभा, गौरी, रोचनी, पिङ्गा, मङ्गल्या, मङ्गला, पीता, गौतमी, गव्या, चन्दनीया, काञ्चनी, मेध्या, श्यामा रामा, भूविणी, गोपित्तसम्भवा, पिंगला, नंदिनी, पाविनी, गोरुचि)

हिन्दीभाषामें	गोरोचन, गोलोचन।
वंगभाषामें	गोरोचना।
मराठीभाषामें	गोरोचन।
गुजरातीभाषामें	गोरोचन्दन, गोरोचन।
कर्णाटकीभाषामें	गोरोचन।
तैलिङ्गीभाषामें	गोरोचनमु।
अंग्रेजीभाषामें	गोलस्टोन बिझोर Gollstone B
लैटिनभाषामें	बोस्टोरस। Bastarous
फारसीभाषामे	गयरोहन।
अरबीभाषामें	हजरुलवक्कर।

गोरोचनागुणाः।

गोरोचनाहिमातिक्तावश्यामङ्गलकांतिदा।
विषालक्ष्मीग्रहोन्मादगर्भस्त्रावक्षतास्त्रहृत्॥ (भा.

अर्थ-गोरोचना-शीतल, कडवी, वशीकरण, मङ्गलजनक, कांतिदायक तथा विष, अलक्ष्मी, ग्रह, उन्माद, गर्भस्राव, क्षत और रक्तदोषनाशक है।

अपिच।

गोरोचनाचशिशिराविषदोषहन्त्रीरुच्याचपाचनकरीकृमिकुष्ठहन्त्री। भूतग्रहोपशमनंकुरुते च पथ्या श्रृङ्गारमङ्गलकरीजनमोहिनीच॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-गोरोचन-शीतल, विषदोषनाशक, रुचिकारी, पाचक, कृमि और को नष्ट करनेवाला, भूतग्रहको शांति करनेवाला, पथ्य, शृंगार औ लको करनेवाला तथा मनुष्योंको मोह करनेवाला है।

अपिच ।

गोरोचनंचातिशीतंरुच्यंमंगलदायकम् ।
वशीकरंकांतिकरंवृष्यंतिक्तंसमीरितम् ॥
पिशाचग्रहपीडाघ्नंविषंकुष्ठंकृमींस्तथा ।
अलक्ष्म्युन्मादशमनंगर्भस्रावहरंपरम् ॥
क्षतंरक्तविकारञ्चनेत्ररोगञ्चनाशयेत्

(निघण्टुरत्नाकर)

अर्थ—गोरोचन—अत्यन्त शीतल, रुचिकारक, मंगलदायक, वश करने- ला, कांतिकारक, वीर्यजनक, कडवा तथा पिशाचबाधा, ग्रहकी पीडा, विकार, कोढ, कृमि, अलक्ष्मी, उन्माद, गर्भस्राव, क्षत, रक्तविकार और रोगका नाश करे है।

गोरोचन—गायके मस्तकका पित्त होता है, इसका रंग पीला होता है यह धिक व्यवहारमें आता है, औषधिप्रयोगमें भी अधिकतासे लिया जाता है का मस्तकमें तिलक लगानेसे वशीकरण होता है। मात्रा दोरत्ती की।

नखनामानि ।

नखंव्याघ्रनखंव्याघ्रायुधंतच्चक्रकारकम् ।
नखंस्वल्पंनखीप्रोक्ताहनुर्हट्टविलासिनी ॥ (भा. प्र.)

अर्थ—नख, व्याघ्रनख, व्याघ्रायुध, चक्रकारक, (व्याडायुध, करज, स्थ, नखाङ्क, नख्य, व्याघ्रनखी, चक्रनायक, चक्री, चक्रनख, त्र्यस्रफल, पनख, खपुर, व्यालपाणिज, व्यालायुध, व्यालबल, व्यासखड्ग) दूसरा नख जिसको नखी कहते हैं, उसके पर्य्याय यह हैं हनु, हट्टविलासिनी शुक्ति, शंख, खुर, कोलदल, व्यालायुध, शंखनख, नखरी, करजाख्य, चखुर, नख, व्याघ्रनख, कररुह, शिम्बी, शफ, चलकोशी. करज, हनु, हनु, पाणिज, बदरीत्वच, रूप्य, पण्यविलासिनी, सन्धिनाल, पाणिरुह) नाम साधारण नखके हैं।

हिन्दीभाषामें दोनों नख, नख, नखी ।
वंगभाषामें नखी, गन्धद्रव्य, छोटनखी ।

मराठीभाषामें	नखला, वाघनख ।
गुजरातीभाषामें	नखला सावजना नख ।
कर्णाटकीभाषामें	नख, वाघनख ।
उत्	नख, वाघनख ।
इंग्रेजीभाषामें	शेल । Shell
लैटिनभाषामें	हेलिकासस्पेरा ।
फारसीभाषामें	ताखुनपर्या; ग्राहकसर ।
अरबीभाषामें	अजफारुतिव, इकलिलुलमुलक

नखपञ्चभेदाः ।

नखीपञ्चविधाज्ञेयागन्धार्थागन्धवत्परैः
क्वचिद्बदरपत्राभा तथोत्पलदलामता ॥
काचिदश्वखुराकारागजकर्णसमापरा ।
वराहकर्णसंकाशापञ्चमेपरिकीर्तिता ॥ (च. चि.

अर्थ—गन्ध अर्थवाली और गन्धयुक्त नखी पांच प्रकारकी होती है कोई बेरीके पत्तोंकी समान, कोई कमलके पत्तेकी समान, कोई घोडेके खुरके आकारवाली, कोई हाथीके कानके समान और पांचवी सूअरके कानके समान होती है ।

अस्याःशुद्धिर्यथा ।

पञ्चपल्लवतोयेनगन्धानांक्षालनंतथा ।
शोधनंचापिसंस्कारोविशेषश्चात्रवक्ष्यते ॥
चण्डीगोमयतोयेनयद्वातिन्तिडीजलैः ॥
नखंसंस्कारयेदेभिरलाभेमृण्मयेनतु ॥
पुनरुद्धृत्यप्रक्षाल्यभर्जयित्वानिषेचयेत् ।
गुडपथ्याम्बुनाह्येवंशुध्यतेनात्रसंशयः ॥ (च.)

अर्थ–पञ्चपल्लव (आमके पत्ते, जामुनके पत्ते, बेजोरेके पत्ते, कैथके पत्ते, बेलके पत्ते) के जलसे तथा गन्धोंक पुटसे इसका शोधन और संस्कार यहाँ कहते हैं भैंसके गोबरके जलसे अथवा इमलीके पानीमें नख और संस्कार करे और यदि उपरोक्त द्रव्य न मिलें तो मट्टीसेही शोधे, फिर लकर और धोकर गुड और हरडके जलसे सींचे, इसप्रकार शुद्ध होती इसमें संशय नहीं है ।

द्विविधनखगुणाः ।

नखद्वयंग्रहश्लेष्मवातास्रज्वरकुष्ठहृत् ।
लघूष्णंशुक्रलंवर्ण्यंस्वादुव्रणविषापहम् ॥
अलक्ष्मीमुखदौर्गन्ध्यहृत्पाकरसयोःकटु । (भा. प्र.)

अर्थ-दोनों प्रकारके नख-ग्रहकी पीडाको दूर करे हैं तथा कफ, वातरक्त, ज्वर, कोढ, व्रण, विष, अलक्ष्मी और मुखकी दुर्गन्धताको नाश करेहै, हलके, गरम, शुक्रजनक, वर्णको उज्ज्वल करनेवाले, स्वादिष्ठ तथा पाकमें और रसमें चरपरी है।

नखगुणाः ।

नखःस्वादूष्णकटुकोविषंहन्तिप्रयोजितः ।
कुष्ठकण्डूव्रणघ्नश्चभूतविद्रावणःपरः ॥

अर्थ-नख-स्वादिष्ठ, गरम, चरपरा तथा कोढ, कण्डू और व्रणको दूर करे है, तथा भूतविद्रावक है।

व्याघ्रनखगुणाः ।

व्याघ्रनखस्तुतिक्तोष्णःकषायःकफवातजित् ।
कुष्ठकण्डूव्रणघ्नश्चवर्ण्यःसौगन्ध्यदःपरः ॥ (रा. नि.)

अर्थ-व्याघ्रनख-कडवा, गरम, कषेला, कफ, वातनाशक तथा कोढ, खुजली और घावको दूर करेहै, शरीरके रंगको उज्ज्वल करेहै और सुगन्धिदायक है।

अपिच--द्विविधनखगुणाः ।

नखंसुगन्धिचोष्णंचकटुमेध्यञ्चशुक्रलम् ।
लघुवर्ण्यस्वादुहृद्यंकफवातविषप्रणुत् ।
दौर्गन्ध्यस्वेदकुष्ठादिज्वरालक्ष्मीव्रणापहम् ॥
मुखदौर्गन्ध्यकण्डूघ्नंभूतग्रहनिवारणम् ॥
व्याघ्रस्यचनखास्तिक्तोवर्ण्यश्चोष्णःकषायकः ।
सुगन्धिःकुष्ठकण्डूतिकफवातग्रहाञ्जयेत् ॥
गुणास्त्वन्येतुनखवन्मुनिभिःपरिकीर्तिताः । (नि॰ र.)

अर्थ-नख-गरम, सुगन्धि, चरपरा, मेधाकारक, शुक्रजनक, वर्णकारक, स्वादिष्ट, हृदयको हितकारी तथा कफ, बादी, विष, पसीना, कोढ, ज्वर, अलक्ष्मी, घाव, मुखकी दुर्गन्धि, खुजली, भूत ग्रहकी पीडा वातरक्त और पित्तका नाश करेहै। व्याघ्रनख-कडवा, सुंदर करनेवाला, उष्ण, कषेला, सुगन्धि तथा कोढ, खुजली, कफ और ग्रहकी पीडाको दूर करेहै। शेष गुण नखके समान जानने।

विवरण-नखद्रव्य नदीके जीवोंका नख होताहै, यह सुगंधि पदार्थ धूपमें और सुगंधि तैलादिकके बनानेमें पडताहै। घोडे हाथियोंके अनेक औषधियोंके प्रयोगमें लियेजातेहैं ऐसा चरकाचार्यने लिखा है।

बालकनामानि ।

वालकंवारिदंवालंह्रीबेरंकेशनामकम् ।
कचामादवरंपिङ्गंकुन्तलोवारिनामकम् ॥

अर्थ-वालक, वारिद, वाल, हीबेर, केशनामक, कचामोद, वर कुन्तल, वारिनामक, (बर्हिष्ठ, उदीच्य, केशनामा, अम्बुनामक, बर्हिष्ठ, केश, केश्य, वज्र, ललनाप्रिय, कुन्तलोशीर, हीबेरक, वारि, जल) और जितने नाम पानीके तथा केशोंकेहैं सो सब इसके भी जानने।

हिन्दीभाषामें	सुगन्धवाला ।
वंगभाषामें	वाल्य, गन्धवाला ।
मराठीभाषामें	वाळा ।
गुजरातीभाषामें	वालो ।
कणाटकीभाषामें	बालदबेरु, खसमुष्टिवाल ।
तलिंगीभाषामें	वाट्टिवेलु ।
दक्षिणीभाषामें	करंवाल ।
वम्	वाला ।
लैटिनभाषामें	एन्डोगमोगन् । Andro Pogon म्यूरिकेटस् (Mnr'catus)
फारसीभाषामें	असारुं ।

बालकगुणाः ।

वालकंशीतलंरूक्षंलघुदीपनपाचनम् ।
हृल्लासारुचिवीसर्पहृद्रोगामातिसारजित् ॥ (भा. प्र.)

अर्थ—सुगन्धवाला—शीतल, रूखा, हलका, दीपन और पाचक है तथा हल्लास (उबकाई), अरुचि, वीसर्प, हृदयरोग और आमातिसारको दूर करे है।

अपिच।

वालकः शीतलस्तिक्तः केश्यः पाचनकृन्मधुः ।
दीपनो लघुरूक्षश्च कफपित्तवमीहरः ॥
तृषाकुष्ठातिसारघ्नो ज्वरश्वासारुचीहरः ।
व्रणवीसर्पहृद्रोगलालास्रावहरो मतः ॥
रक्तदोषं रक्तपित्तं कण्डूं दाहं च नाशयेत् ॥ (नि. रत्ना.)

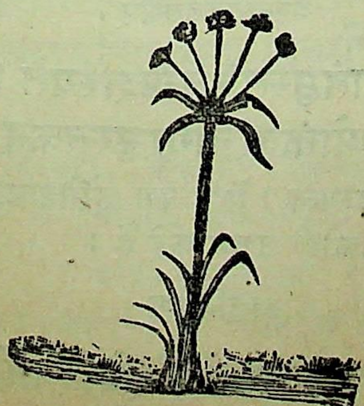
अर्थ—सुगन्धवाला, कडवा, केशोंको सुन्दर करनेवाला, पाचक, मधुर, दीपन, हलका, रूखा तथा कफ, पित्त, वांति, तृषा, कोढ, अतिसार, ज्वर, श्वास, अरुचि, व्रण, विसर्प, हृदयरोग, लालास्राव, रक्तविकार रक्तपित्त, कण्डू और दाहका नाश करे है। मात्रा एक मासेको ।

मुस्तकनामानि ।

मेघाख्यं मुस्तकं मुस्तं वालेयं परिपेलवम् ।

अर्थ—मेघाख्य, मुस्तक, वालेय, परिपेलव, [कुरुविन्द, मेघनामा, मुस्त, अम्बुवाह, अम्बुभृत, तडित्वान्, वारिवाह, बलाहक, स्तनयित्नु, तोयद, तोयधर, अभ्रनामक, गाङ्गेय, भद्रमुस्तक, श्रीभद्रा भद्रक, भद्रा, राजकसेरु, कसेरुक, कुरुविन्द)

नागरमुस्तकनामानि ।



नागरमोथा.

नागरमुस्तानादेयीवृषध्मांक्षीकच्छरुहा ।
चूडालापिण्डमुस्ताचनागरोत्थाकलापिनी ॥

अर्थ—नागरमुस्ता नादेयी, वृषध्मांक्षी, कच्छरुहा, चूडाला, पिण्ड नागरोत्था, कलापिनी, (नागरादि घनसंज्ञका, चक्रांक्षा, शिशिरा स सरा, उच्चटा पूर्णकोष्ठसंज्ञा)

भद्रमुस्तकनामानि ।

गांगेयंकुरुबिल्वंचभद्रमुस्तंकुटन्नटम् ।

अर्थ-गांगेय, कुरुबिल्व, भद्रमुस्त, कुटन्नट, (भद्रमुस्ता, भद्र गुन्द्रा, कक्षोत्था, वराही, ग्रंथि, भद्रकाशी, कशेरु, क्रोडेष्टा, कुरुविन्दा सुगंधिग्रंथिला, हिमा, बल्या, कच्छोला, अर्णोद, बारिद, अब्द,)

हिन्दीभाषामें	मोथा, नागरमोथा, भद्रमोथा ।
वंगभाषामें	मुताथा, नागरमुता, मादलामुथा ।
मराठीभाषामें	मोथे, नागरमोथे, भद्रमोथें ।
गुजरातीभाषामें	मोथ्य, नागरमोथ्य, भद्रमोथ्य ।
कर्णाटकीभाषामें	मुस्ता, नागरमुस्ता, भद्रमुस्ता ।
तैलिंगीभाषामें	तुंगमुस्त (स्ता) सकहतुंग, विरु, तुंगगहुल
तामिलीभाषामें	कोरय, मुदहकाच ।
द्राविडीभाषामें	गरमोटा ।
लैटिनभाषामें	साइपरस् रोटंडस्, साइपरसपरटेन्यूइटिस् । Cyprusrotondous Cypruspertenui
फारसीभाषामें	शादकफी ।
अरबीभाषामें	मुष्कजमीन ।

श्रेष्ठमुस्तकलक्षणम् ।

अनूपदेशेयज्जातंमुस्तकंतत्प्रशस्यते ।
तत्रापिमुनिभिःप्रोक्तंवरंनागरमुस्तकम् ॥ (भा. प्र

अर्थ-अनूपदेश (सजलस्थान) में उत्पन्न होनेवाला मोथा श्रेष्ठ है तोभी मुनियोंने नागरमोथेकोही उत्तम कहे हैं ।

तच्छुद्धिर्यथा ।

मुस्तकंतुमनाक्क्षुण्णंकाञ्जिकेत्रिदिनोषितम् ।
पञ्चपल्लवतोयेनस्विन्नमातपशोषितम् ॥

गुडाम्बुनासिच्यमानंभर्जयेच्चूर्णयेत्ततः।
आजक्षीराञ्जनजलैर्भावयेच्चेतिशुद्ध्यति॥

अथ-मोथेको लेकर तीन दिन कांजीमें डाले, फिर [illegible] जलमें भिजोकर धूपमें सुखावे, फिर गुडके जलसे सींचकर भूनकर उसका चूर्ण करे, बकरीका दूध और सैंजिनके जलकी भावना देनेसे [illegible] होताहै॥

भद्रमुस्तकगुणाः।

मुस्तंकटुहिमंग्राहितिक्तंदीपनपाचनम्।
कषायंकफपित्तास्रतृड्ज्वरारुचिजन्तुनुत्॥ (भा. प्र.)

अर्थ-भद्रमोथा-चरपरा, शीतल, ग्राही, कडवा, दीपन, पाचक, कषेला तथा कफ, रक्तपित्त, तृषा ज्वर, अरुचि और कृमिरोगका नाशकरेहै।

मुस्तकगुणाः।

क्षुद्रमुस्तातुकटुकामेध्याकान्तिप्रदाहिमा।
सुगन्धिकातुतुवराकट्वीरक्तरुजापहा॥
कफपित्तज्वरकृमिवाय्वतीसारनाशिनी।
रक्तरुग्व्रणदाहघ्नीकण्डूआमशूलघर्महा॥ (निवण्टुरत्नाकर)

अर्थ-मोथा-चरपरा, मेध्य, कांतिदायक, शीतल, सुगन्धि, कषेला तथा रुधिरविकार, कफ, पित्तज्वर, कृमि, वात, अतिसार, रक्तरोग, व्रण, दाह, कण्डू, आम, शूल और पसीनेको दूर करे है।

नागरमुस्तकगुणाः।

तिक्तानागरमुस्ताकटुःकषायाचशीतलाकफनुत्॥
पित्तज्वरातिसारारुचितृष्णादाहनाशिनीश्रमहृत्॥
(राजनिघण्टु)

अर्थ-नागरमोथा-चरपरा, कषेला, शीतल, कफनाशक तथा पित्त, ज्वर, अतिसार, अरुचि, तृषा दाह और श्रमका नाश करेहै।

अपिच भद्रमुस्तागुणाः।

भद्रमुस्तातुतुवराशीतातिक्ताचपाचका।
कट्वग्निदीपनीग्राहीचाम्लपित्तकफापहा॥
अतिसारंरक्तदोषंज्वरंचैवविनाशयेत्।

अरुचिंचतृषांचैवकृमीनपिविनाशयेत् ॥ (नि. र.)

अर्थ--भद्रमोथा-कषेला, शीतल, कडवा, पाचक, चरपरा, अग्निदी... ग्राही, अम्ल तथा पित्त, कफ, अतिसार, रुधिरदोष, ज्वर, अरुचि, पि... और कृमिरोगका नाश करे है।

मोथेकी अनेक जाति हैं, कोई पानीमें होताहै, कोई मोटीडण्डी... और कोई छोटी डण्डीका होता है। किन्तु सर्वप्रकारके मोथोंमें नागर... उत्तम होताहै।

व्यवहार-जड। मात्रा साढे तीन ३॥ मासेकी।

कैवर्तमुस्तकनामानि।

कैवर्त्तीमुस्तकंवन्यंकुटंनटंकुटन्नटम्।
सितपुष्पंदासपूरंवालेयंपरिपेलवम्॥

अर्थ-कैवर्त्तीमुस्तक, वन्य, कुट, नट, कुटन्नट सितपुष्प, दासपूर, वाले... परिपेलव, (कैवर्त्तमुस्त, दशपूर, प्लव गोपुर, गोनर्द, कैवर्त्ती दा... दशपुर, परिऐल, पारिपेल कैवर्तिमुस्तक कैवर्त्तमुस्तक, वनसम्भव, धा... शीतपुष्प, जीर्णबुध्नक)

अस्यगुणाः।

वितुन्नकंहिमंतिक्तंकषायंकटुकांतिदम्।
कफपित्तास्रवीसर्पकुष्ठकण्डूविषप्रणुत् ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-केवटीमोथा-शीतल, कडुवा, कषेला, चरपरा, कान्तिदायक... कफ, रक्त, पित्त, वीसर्प, कोढ, खुजली और विषविकारको दूर करेहै।

अपिच!

परिपेलंकटूष्णंचकफमारुतनाशनम्।
व्रणदाहामशूलघ्नंरक्तदोषहरंपरम्॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-केवटीमोथा-चरपरा, गरम, कफवातनाशक तथा व्रण, दाह, आ... शूल, और रक्तविकारको हरेहै।

विवरण-इसकी तृणजातिहै, इसकी जडमें सुगन्धि आतीहै, संस्कृ... इसको कैवर्त्तीमुस्तक कहते हैं, हिन्दीमें केवटीमोथा, बंगलेमें केउदग... केशुरीआमुथा, मराठीमें, कवडीमोथा, गुजरातीमें, केवर्त्तमोथा कहते हैं।

व्यवहार-जड। मात्रा एक मासेकी।

शैलेयनामानि।

शैलाख्यंशैलेयंवृद्धंसुभगंगिरिपुष्पकम्।

अर्थ–शैलाख्य, शैलेय, वृद्ध, सुभग, गिरिपुष्पक (शीतशिव, शिलासन, शैलज, शीतल, शैल, कालानुसार्य, शिलेय, शैलक, कालानुसारिवा, अश्मपुष्प, गृह, शिलाभव, शिलापुष्प, शिलोद्भव, स्थविर, पलित, जीर्ण, कालानुसार्यक, शिलोत्थ, शिलद्रु, शिलाप्रसून, शिलापुष्प)

हिन्दीभाषामें	भूरिछरीला, पत्थरका फूल।
वङ्गभाषामें	शैलज।
मराठीभाषामें	दगडफूल।
गुजरातीभाषामें	पत्थरफूल
कर्णाटकीभाषामें	कलहू, कलडू।
तैलिङ्गीभाषामें	शैलेयमने द्रव्यमु।
लैटिनभाषामें	पारमेलिया परलेटा। परमेलिया वरकोरेट। Parmaliar perleta P. perforatas
फारसीभाषामें	दहाल।
अरबीभाषामें	आशीना।

अस्यगुणाः।

शैलेयंशीतलंहृद्यंकफपित्तहरंलघु।
कण्डूकुष्ठाश्मरीदाहविषहृद्गुदरक्तहृत्॥ (भावप्रकाश)

अर्थ–छरीला शीतल, हृदयको हितकारी, कफपित्तनाशक, हलका तथा कण्डु (खुजली), कुष्ठ, पथरी, दाह, विष और गुदासे रक्त गिरनेको दूर करै है।

अपिच।

शैलेयंशिशिरंतिक्तंसुगन्धिकफपित्तजित्।
दाहतृष्णावमिश्वासव्रणदोषविनाशनम्। (रा. नि.)

अर्थ–छरीला–शीतल, कडवा, सुगन्धि तथा कफ, पित्त, तृषा, वमन, श्वास और व्रणदोषनाशक है।

अन्यच्च।

शैलेयंकटुकंशीतंसुगंधिलघुहृद्यकम्।
रुच्यंचकफपित्तघ्नंदाहतृष्णावमिप्रणुत्॥

श्वासंव्रणंचकण्डूंचकुष्ठाश्मरीविषज्वरान् ।
रक्तदोषंवातरोगंरक्तार्शंचैवनाशयेत् ॥ (निघण्टुरत्नाकर)

अर्थ-भूरिछरीला-चरपरा, शीतल, सुगन्धि, हलका, हृदयको हित, रुचिकारी तथा कफ, पित्त, दाह, तृषा, वमन, श्वास, घाव, खुजली, पथरी, विष, ज्वर, रुधिरविकार, वातरोग और रक्त, बवासीरका करे है।

मात्रा छै ६ मासे की।

रेणुकाकपिलाकौन्तीहरेणुर्भस्मगन्धिका ।
कृतान्ताराजपुत्रीचनन्दिनीखरनादिनी ॥

अर्थ-रेणुका, कपिला, कौन्ती, हरेणु, भस्मगन्धिका, कृतान्ता, राजपुत्री, नन्दिनी, खरनादिनी, (द्विजा, अभीष्टा, वरत्करी, वरमुखी, वरा, महिला, हिमा, रेणु, हरेणुका, सुपर्णिका, पाण्डुपुत्री, शिशिरा, शान्ता, हेमगन्धिनी, धर्म्मिणी, कपिलोमा, हैमवती, पाण्डुपत्नी)

हिन्दीभाषामें	संभालूके बीज, रेणुका ।
वंगभाषामें	रेणुक ।
मराठीभाषामें	रेणुकबीज ।
गुजरातीभाषामें	हरेणु ।
कर्णाटकीभाषामें	रेणुका ।
तामिलीभाषामें	येट्टी ।
लैटिन्‌भाषामें	विटेक्सस्पेश्योझा Vitex Speciosa

अस्यगुणाः ।

रेणुकाकटुकापाकेतिक्तानुष्णाकटुर्लघुः ।
पित्तलादीपनीमेध्यापाचनीगर्भपातिनी ॥
बलासवातवैक्लव्यतृट्कण्डूविषदाहनुत् । (भा. प्र.)

अर्थ-रेणुका पचनेमें चरपरी, कडवी, किञ्चित् उष्ण, चरपरी, हलकी, पित्तवर्धक, अग्निप्रदीपक, मेधाजनक, पाचक, गर्भको गिरानेवाली तथा कफ, वात, विकलता तथा कण्डू, विष और दाहका नाश करे है।

अपिच ।

रेणुकातुकटुःशीताखर्जूकण्डूतिहारिणी ।
तृष्णादाहविषघ्नीचमुख वैमल्यकारिणी । (रा. नि.)

अर्थ-रेणुका-चरपरी, शीतल तथा खर्जू, कण्डु, तृषा, दाह और विषनाशक है और मुखको विमल करैहै ।

अन्यच्च ।

रेणुकाकटुकाशीतामुखवैमल्यकारका ।
तिक्ताचपित्तलालघ्वीचाग्निमेधाकरीमता ॥
पाचनीगर्भपातस्यकारिणीदद्रुकण्डुहा ।
तृष्णादाहविषक्लैब्यकफवातविनाशिनी ॥ (नि. र.)

अर्थ-रेणुका-चरपरी, शीतल, मुखको स्वच्छ करनेवाली, कडवी, हलकी, पित्तजनक तथा अग्नि और मेधा इनको उत्पन्न करनेवाली, पाचक, गर्भको पतन करनेवाली तथा दाद, खुजली, तृषा, दाह विष, नपुंसकता, कफ और वातका विनाश करनेवाली है ।

अन्यच्च ।

रेणुकाकफवातघ्नीदीपनीपित्तलालघुः । (रा. व.)

अर्थ-रेणुका-कफ वातनाशक, अग्निप्रदीपक, पित्तकारक और हलकी है । रेणुकाको कोई वैद्य निर्गुण्डी अर्थात् संभालुके बीज कहते हैं और कोई मेंहदीके बीज कहते हैं । सो मेंहदीके बीजोंसे रेणुकामें बहुत अंतर है ।

ग्रंथिपर्णनामानि ।

ग्रन्थिपर्णबर्हिपुष्पंस्थौणेयंग्रन्थिपर्णकम् ।

अर्थ-ग्रंथिपर्ण, बर्हिपुष्प, स्थौणेय, ग्रंथिपर्णक (शुक, कुकुर, बर्हिपुष्प, बर्ह, शुकबर्ह, त्रिशीर्णाख्य, स्वारामगुच्छक, बर्हि, शुकपुच्छ, शुकच्छद, गुत्थक, बर्हिकुसुम, ग्रंथिक, काकपुष्प, गुच्छक, नीलपुष्प, सुगन्ध, तैलपर्णक)

ग्रंथिपर्णलक्षणम् ।

ग्रंथिकःपाण्डुरःकिञ्चित्कनिष्ठःसर्वसम्मतः ।
उत्तमःकृष्णवर्णोयःस्थूलोऽतीवचानिन्दितः ॥ (ड. मि.)

अर्थ-कुछ पाण्डुरंगका गठिवन कनिष्ठ होता है, काले रंगका उत्तम होता है और स्थूल अत्यन्त निंदित है ।

ग्रंथिपर्णगुणाः ।

ग्रंथिपर्णतिक्ततीक्ष्णंकटूष्णंदीपनंलघु ।
कफवातविषश्वासकण्डूदौर्गन्ध्यनाशनम् ॥ (भा. प्र.)

अर्थ-गठिवन-कडवा, तीक्ष्ण, चरपरा, गरम, अग्निको दीपन करने हलका तथा कफ, वात, विष, श्वास, कण्डु और दुर्गन्धका नाश करे है, सुगंधिपदार्थ है, यह शरीरपर लेप करनेसे रूक्षता उत्पन्न करे है, अलक्ष्मी, ज्वर और राक्षसबाधाको हरे है इसको हिन्दीभाषामें गठि कहते हैं, वंगभाषामें गेंटेला, मराठीभाषामें गठोना और कर्णाटकी गाठिवन कहते हैं।

स्थौणेयकनामानि ।

स्थौणेयंविकीर्णसंज्ञंहरितंशुकपुच्छकम् ।

अर्थ-स्थौणेय, विकीर्णसंज्ञ, हरित, शुकपुच्छक, (स्थौणेयक, बर्हि शुकच्छद, मयूरचूड, विकीर्णरोम, कीरवर्णक, बर्हिचूड, शुकपिच्छ, शु विकच, शीणरोमक, बर्हिवर्ह, कुक्कुर, शीणरोम ।

स्थौणेयकगुणाः ।

स्थौणेयंकफपित्तघ्नंसुगंधिकटुतिक्तकम् ।
सित्तप्रकोपशमनंबलपुष्टिविवर्द्धनम् ॥ (भा. नि.)

अर्थ-थुनेर-कफ, पित्तनाशक, सुगंधि, चरपरा, कडवा, पित्तके शान्त करनेवाला तथा बल और पुष्टिवर्द्धक है।

अपिच ।

स्थौणेयकंकटुस्वादुतिक्तंस्निग्धंत्रिदोषनुत ।
मेधाशुक्रकरंरुच्यंरक्षोघ्नंज्वरजन्तुजित् ॥
हंतिकुष्ठास्रतृड्दाहदौर्गन्ध्यतिलकालकान् । (भा. प्र.)

अर्थ-थुनेर-चरपरा, स्वादिष्ठ, कडवा, स्निग्ध, त्रिदोषनाशक, मेधाज शुक्रकारक, रुचिकारी तथा राक्षसबाधा, ज्वर, कृमि, कोढ रुधिरवि पियास, दाह, दुर्गंध और शरीरके तिलोंको दूर करनेवाला है।

इसके अधिक गुण देखनेकी अभिलाषा हो तो भारतभैषज्यभास्क देखो। यह सुगंधि द्रव्य है, इसको हिन्दीभाषामें थुनेर कहते हैं वंगभा ग्रन्थिपर्णभेद कहते हैं, मराठीभाषामें थुणोर, कर्णाटकी भाषामें स्थौणज लेटिन्भाषामें क्लेरोडेन्ड्रम् कहते हैं।

चोरकनामानि ।

तस्करश्चोरकश्चण्डाकितवःक्रोधमूर्च्छितः ।

अर्थ-तस्कर, चोरक, चण्डा, कितव, क्रोधमूर्छित (दुष्कुलीन, विरोध, चोरक, धनहरी, क्षेम, राक्षसी, गणहासक, शङ्कित, खड्ग, दुष्पत्र, क्षेमक, रिपु, चपल, धूर्त, पट्ट, नीच, निशाचर, गणहास, कोपनक, चोर, फलचोरक, दुष्कुल, ग्रंथिल, सुगन्धि, पर्णचोरक, ग्रंथिपर्ण, ग्रन्थिदल ग्रन्थिपत्र धनहर)

अस्य गुणा।

चोरकस्तीव्रगन्धोष्णस्तिक्तोवातकफावहः।
नासामुखरुजाजीर्णकृमिदोषविनाशनः॥

अर्थ-चोरक, सुगन्धद्रव्य, तीव्रगन्ध, कडवा तथा वात, कफ, नासारोग, मुखरोग, अजीर्ण और कृमिदोषनाशक है।

अपिच।

चोरकोमधुरस्तिक्तःकटुःपाकेकटुर्लघुः।
तीक्ष्णोहृद्योहिमोहंतिकुष्ठकण्डूकफानिलान्॥
रक्षोश्रीस्वेदमेदाऽस्रज्वरगन्धविषव्रणान्। (भा. प्र.)

अर्थ-चोरक-मधुर, तिक्तरसयुक्त, पचनेमें चरपरा, चरपरा, हलका, तीक्ष्ण, हृदयको हितकारी, शीतल तथा कोढ, खुजली, कफ, वात, राक्षस, अलक्ष्मी, पसीना, रुधिरविकार, मेदरोग, ज्वर, गन्ध, विष और व्रणका नाश करेहै।

अन्यच्च।

चोरकस्तीव्रगन्धोष्णोमधुस्तिक्तोलघुःस्मृतः।
पाकेकटुश्चतीक्ष्णश्चहृद्योवातविकारहा॥
कण्डूकुष्ठकफस्वेदत्वग्दोषविषनाशनः।
व्रणंमेदंरक्तदोषंमुखनासारुजंजयेत॥
कृमीनजीर्णदौर्गन्ध्यमलक्ष्मीनाशनंविदुः।
क्रव्यादबाधांशमयेदितिवैद्यैर्निरूपितः॥

अर्थ-चोरक-तीव्रगन्ध, उष्ण, मधुर, तिक्त, लघु, पाकके समय चरपरा, तीक्ष्ण, हृदयको हितकारी तथा वात, कण्डू, कोढ, कफ, मेद, त्वचाके विकार, विष, घाव, रुधिरविकार, मुखरोग, नासारोग, कृमि, अजीर्ण, दुर्गन्ध, अलक्ष्मी और राक्षसबाधाको दूर करे है।

यह सुगन्धि द्रव्य गठिवनहीका भेद है। इसको नैपाल देशमें भटेउ पार्वती देशादिकोंमें चोरा कहतेहैं। मात्रा २ मासेकी।

कुष्ठनामानि।

कुष्ठंव्याधिःपारिभाव्यंव्याप्यंपाकलमुत्पलम्।

अर्थ--कुष्ठ, व्याधि, पारिभाव्य, व्याप्य, पाकल, उत्पल (कदाख्य, व्याप्य, गदाख्य, आप्य, जरण, कौबेर, भासुर, गदाह्व, गदाह्वय, काकल, नीरुज, आमय, रुजा, गद, वाणीराज, पारिभद्रक, राम, पावन, पद्मक, रोग, रोगाह्वय, किञ्जल्क, हरिभद्रक।

हिन्दी भाषामें	कूठ
वंग भाषामें	कुड
मराठी भाषामें	कोष्ठ
गुजराती भाषामें	कुठ, उपलेट।
कर्णाटकी भाषामें	कोष्ठ।
तैलंगी भाषामें	चंगल कुष्ठ। चैंगलिकोष्ठ।
अंग्रेजी भाषामें	कोस्टसूरूट् Cosutusroot
लैटिनभाषामें	सौसुरीआलेप्पा Sausurelap ओकलैंडियाकोस्टस
फारसीभाषामें	कोश्नह।
अरबीभाषामें	कुस्तबेहेरी

अस्यगुणाः।

कुष्ठंकटूष्णातिक्तंस्यात्कफमारुतकुष्ठजित्।
विसर्पविषकण्डूतिखर्जूदद्रुघ्नकान्तिकृत्॥ (रा. नि.)

अर्थ--कूट--चरपरा, गरम, कडवा तथा कफ, वात, कोढ, विसर्प, खुजली, खजू और दादोंको दूर करेहै और कांति करेहै।

अपिच।

कुष्ठंश्वासंकासकुष्ठंज्वरंहिक्कांचनाशयेत्।

अर्थ--कूठ--गरम, चरपरा, स्वादिष्ठ, शुक्रजनक, कडवा, हलका, वावरक्त, वीसर्प, खांसी, कोढ और वात, कफका नाश करेहै।

अपिच।

कोष्ठमुष्णंकटुस्तिक्तंस्वादुवृष्यंचशुक्रलम्।

रसायनं कान्तिकरं लघुवातकफापहम् ॥
कुष्ठंविषंविसर्पञ्च कण्डूं दद्रूं त्रिदोषकम् ।
पामारक्तविकारं च कासं वान्तितृषांतथा ॥
नाशयेदितिचप्रोक्तंलेपनाद्वातव्याधिजित् । (नि. र.)

अर्थ–कूठ–उष्ण, कटु, तिक्त, स्वादु, वृष्य, शुक्रजनक, रसायन, कांतिजनक, लघु, वातकफनाशक तथा कुष्ठ, विसर्प, कण्डू, दद्रू, त्रिदोष, पामा, रुधिरदोष, खाँसी और वान्तिको दूर करेहै, इसका लेप करनेसे वातव्याधि दूर होती है, यह वृक्षकी सुगंधियुक्त जड है, इसकी उत्पत्ति सिन्धु नदीके तीरपै है. मात्रा ६ रत्तीकी ।

कर्चूरनामानि ।

कर्चूरोवेधमुख्यश्चद्राविडःकल्पकःशठी ।

अर्थ–कर्चूर वेध्य, मुख्य, द्राविड, कल्पक, शठी; (कार्श्य, दुर्लभ, गन्धमूलक, गन्धसार, जटाल)

हिन्दी भाषामें	कचूर, काली हलदी ।
वंग भाषामें	एकांगी ।
मराठी भाषामें	कचोरा । नरकचोरा । काचरी ।
गुजराती भाषामें	कचूरी ।
कर्णाटकी भाषामें	कचोरा ।
तैलिंगी भाषामें	काचोरालु । ओकातो कचेट्टा ।
अंग्रेजी भाषामें	लोंग झेडीआरो Longzedearo
लैटिन् भाषामें	कर्क्यूमाझरंबेट् Curcumazerumbat
फारसी भाषामें	जरंबाद ।
अरबी भाषामें	एरकुलकाफुर ।

कर्चूरगुणाः ।

कर्चूरो दीपनो रुच्यः कटुकस्तिक्त एव च ।
सुगन्धिःकटुपाकःस्यात्कुष्ठाशोंव्रणकासनुत् ॥
उष्णोलघुर्हरेच्छ्वासं गुल्मवातकफाक्रिमीन् । (भा. प्र.)

अर्थ–कचूर–अग्निको दीपन करनेवाला, रुचिको उत्पन्न करनेवाला, चरपरा, कडवा, सुगन्धि, कटुपाकी तथा कोढ, बवासीर, घाव और खांसीको

दूर करेहै। गरम, हलका और श्वास, गुल्म, वात, कफ तथा कृमिरो[illegible] नाश करेहै।

अपिच।

कर्चूरःकटुतिक्तोष्णःकफकासविनाशनः।
मुखवैशद्यजननोगलगण्डादिदोषनुत् ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ--कचूर--चरपरा, कडवा, गरम, मुखको स्वच्छ करनेवाला तथा [illegible] खांसी और गलगण्डादि रोगोंका नाश करे है।

अन्यच्च।

शठीतिक्ताचकटुकाचोष्णातीक्ष्णोऽग्निदीपनी।
सुगन्धिरुचिरालघ्वी मुखस्वच्छकरी मता॥
कोपनी रक्तपित्तस्य गलगण्डादिरोगहा।
कुष्ठार्शोव्रणकासघ्नी श्वासगुल्मकफापहा॥
त्रिदोषक्रिमिवातानांज्वरप्लीहादिनाशकृत्। (नि. र.)

अर्थ--कचूर--कडवा, चरपरा, गरम, तीक्ष्ण, अग्निमें प्रदीपक, सु[illegible] रुचिकारक, हलका, मुखको स्वच्छ करनेवाला, रक्तपित्तको कुपित क[illegible] वाला तथा गलगण्ड, मंडलादिकोढ, बवासीर, घाव, खांसी, श्वास, गो[illegible] कफ, त्रिदोष, कृमि, वात, ज्वर और प्लीहा इत्यादि रोगोंका नाश कर[illegible] वाला है।

अपिच।

"कर्चूरोमरुदामघ्नोदीपनोरक्तपित्तकृत्।
अजीर्णजरणश्वासेऽपस्मारेपिपूजितः॥"

अर्थ--कचूर--वात तथा आमनाशक है, दीपन है, रक्त, पित्त, रोग[illegible] उत्पन्न करनेवाला है, अजीर्ण रोगको दूर करनेवाला है. तथा मृगीरोग[illegible] और श्वास रोगमेंभी इसको प्रयोगमें लेतेहैं।

विवरण--कचूरका क्षुप होता है, पत्ते हलदीके समान होते हैं, इसके [illegible] आंबिया हलदीके समान गांठ होतीहै। उस गांठको सुखालेतेहैं और उ[illegible] गांठको कचूर कहतेहैं. मात्रा ४ मासेकी।

गन्धपलाशीनामानि।

शठीपलाशीषड्ग्रन्थासुव्रतागन्धमूलिका।
गन्धारिकागन्धवधूर्वधूःपृथुपलाशिका॥ (भा. प्र.)

अर्थ-शठी, पलाशी, षड्ग्रंथा, सुव्रता, गन्धमूलिका, गन्धारका, गन्धवधू, वधू, पृथुपलाशिका, (गन्धमूली, ग्रंथिका, कर्पूर, पलाशसटी, शठी, षटी, गन्धशटी, कर्बुर, कर्चुर, सुगन्धासटी, गन्धमूला, गन्धोलि, गन्धमूलक, सुगन्धा, गन्धसटी, गन्धमूल गन्धपलाशी, जीमूतमूल कच्छोरा, हिमजा, हैमी, षड्ग्रंथि, गन्धोलि, पलाशा, हिमाग्रन्था, अम्लनिशा, सुगन्धमूला, गन्धोरी, शठिका, पलाशिका, समुद्रा, तूणी, दूर्वा, गन्धा, पृथुपलाशिका, सठी, अम्लहरिद्रा, सौम्या, हिमोद्भवा, गन्धवधू.)

हिन्दीभाषामें	गन्धपलाशी, कचूरभेद, कपूरकचरी।
बङ्गभाषामें	शटी, आस, आदा, गन्धशठी।
मराठीभाषामें	कापूरकचरी
गुजरातीभाषामें	कपूरकाचरी।
कर्णाटकीभाषामें	गन्धशटी।
तैलङ्गभाषामें	किचलिरागड्डल।
लैटिन्भाषामें	हिडिक्यम् स्पिकेटम्। Hedyehum Specatum
अरबीभाषामें	जरंवाद्।
वम्	आंबेहलद्।

अस्यगुणाः।

भवेद्गन्धपलाशी तु कषायाग्राहिणीलघुः।
तिक्तातीक्ष्णाचकटुकानुष्णास्यमलनाशिनी॥
शोथकासव्रणश्वासशूलहिध्मग्रहापहा। (भा. प्र.)

अर्थ-गन्धपलाशी-कषेली, ग्राही, हलकी, कडवी, तीक्ष्ण, चरपरी किञ्चित् उष्णा, मुखके मलका नाश करनेवाली तथा सूजन, खांसी, घाव, श्वास, शूल, हिध्म और ग्रहनाशक है।

अपिच।

ससुगन्धः कर्चुरकस्तीक्ष्णोदाहीकटुःस्मृतः।
तिक्तश्चतुवरश्चैव शीतवीर्यो लघुःस्मृतः॥
किञ्चित्पित्तंकोपयतिकासश्वासज्वरापहः।
शूलहिक्कागुल्मरक्तरुजंवातंत्रिदोषकम्॥
मुखवैरस्यदौर्गन्ध्यव्रणामच्छर्दिहिध्महा। (नि. र.)

अर्थ-कपूरकचरी-(छोटाकचूर) तीक्ष्ण, दाहजनक, चरपरी, कषेली, शीतवीर्य्य, हलकी, किंचित् पित्तकारक तथा खांसी, श्वास, शूल, हुचकी, गोला, रुधिररोग, बादि, त्रिदोष, मुखकी विरसता, घाव, आम, वमन और हिध्मरोगको नष्ट करेहै।

विवरण। बेल होतीहै ,इसकी, जड सुगन्धियुक्त कन्दकी समान उसके टुकडे कर सुखालेतेहैं, उसीको गन्धपलाशी अर्थात् कपूरकचरी

मुरानामानि ।

गंधिनीतालपर्णीतुदैत्यागन्धकुटीमुरा ।

अर्थ-गन्धिनी, तालपर्णी, दैत्या, गन्धकुटी मुरा, (पुरागन्धवती, गन्धाढ्या, गन्धमादिनी, सुरभि, भूरिगन्धा, कुटी, गन्धिनी, तालपर्णिका और मुरामांसी)

हिन्दीभाषामें	एकांगी मुरा
वंगभाषामें	मुरामांसी ।
मराठीभाषामें	एकांगीमुरा । मोरमांसी ।
कर्णाटकी भाषामें	मुरे ।
गुजराती भाषामें	मोरमांसी ।

अस्यागुणाः ।

मुरातिक्ताहिमास्वाद्वीलघ्वीपित्तानिलापहा ।
ज्वरासृग्भूतरक्षोघ्नीकुष्ठकासविनाशिनी॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-एकाङ्गी-कडवी, शीतल, स्वादिष्ट, लघु तथा पित्त, वात, रुधिरदोष, भूत, राक्षस, कोढ और कासरोगका नाश करेहै।

अपिच ।

एकांगीकटुकातिक्ता तुवराशीतला मता ।
लघुस्वादुसुगन्धास्यादिंद्रियाणांचहर्षदा ॥
कफपित्तश्वासवातरक्तदोषाविषापहा ॥
दाहभ्रमतृषामूर्च्छाज्वरकुष्ठविनाशिनी ॥
पिशाचराक्षसालक्ष्मीबाधानाशकरीमता । (नि.)

अर्थ-एकाङ्गी-चरपरी, कडवी,कषेली, शीतल, हलकी, स्वादिष्ट, इंद्रियोंको तृप्त करनेवाली तथा कफ पित्त, श्वास, वात, रुधिरविकार,

कार, दाह, भ्रम, तृषा, मूर्च्छा, ज्वर, कोढ, पिशाचबाधा, राक्षसबाधा और अलक्ष्मीका नाश करे है।

लामज्जकनामानि।

लामज्जकंसुनालंस्यादमृणालंलयंलघु।
इष्टकापथिकंसेव्यंनलदंचावदातकम्॥

अर्थ-लामज्जक, सुनाल, अमृणाल, लय लघु, इष्टकापथिक, सेव्य, नलद, अवदातक, (सुनील, शीघ्र, दीर्घमूल, जलाशय और अब्रदाहक)

हिन्दी भाषामें	लामज्जक।
वंगभाषामें	गन्धवेणा।
मराठी भाषामें	लावज, पिंवलावाला।
गुजराती भाषामें	सुगंधिपीलु, खडजल, जलवालो।
तैलंगी भाषामें	तेल्लवट्टिवेरु।

श्रेष्ठलामज्जकलक्षणम्।

दीर्घमूलंदृढंसूक्ष्मसुत्तमंगन्धसंयुतम्।
देशेसाधारणेजातंलामज्जंभद्रकंभवेत्॥ (भै. चि.)

अर्थ-जिसकी बडी जड हो, दृढ़ हो, सूक्ष्म हो, सुगन्धियुक्त हो, साधारण देशमें उत्पन्न हुआ हो, ऐसा लामज्जक श्रेष्ठ होता है।

अस्य गुणाः।

लामज्जकंहिमंतिक्तंलघुदोषत्रयास्रजित्।
त्वगामयस्वेदकृच्छ्रदाहपित्तास्ररोगनुत्॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-लामज्जक-शीतल, कडवा, हलका, त्रिदोषनाशक तथा रक्तदोष, त्वचाके रोग, पसीना, मूत्रकृच्छ्र, दाह और रक्तपित्त रोगको दूर करे है।

अपिच।

लामज्जकंहिमं तिक्तंमधुरं वातपित्तजित्।
तृड्दाहश्रममूर्च्छार्त्तिरक्तपित्तज्वरापहम्॥ (रा. नि.)

अर्थ-लामज्जक-शीतल, कडवा, मधुर, वातपित्तनाशक तथा तृषा, दाह, भ्रम, मूर्च्छा, रक्तपित्त और ज्वरको नष्ट करे है।

अन्यच्च।

लामज्जकन्तुमधुरंतिक्तं शीतञ्चपाचकम्।

स्तम्भनंलघुपित्तघ्नंवाततृड्दाहनाशनम् ॥
त्रिदोषश्रममूर्च्छास्रशूलवांतिविनाशनम् ।
ज्वरञ्च रक्तदोषञ्च स्वेदकृच्छ्रं मदंकफम् ॥
व्रणंविषंविसर्पञ्चनाशयेदितिकीर्त्तितम् (निघण्टुरत्ना

अर्थ-लामज्जक-मधुर, तिक्त (कडवा), शीतल, पाचन, स्त हलका, पित्तनाशक तथा वात, तृषा, दाह, त्रिदोष, श्रम, मूर्च्छा, रक्त, वमन, ज्वर, रुधिरविकार, पसीना, मूत्रकृच्छ्र, मद, कफ, घाव, विष विसर्प इनको दूर करे है ।

यह एक प्रकारका सुगन्धि तृण नदीके तीर वंगदेशमें होता है।

मात्रा २ मासेकी ।

स्पृक्कानामानि ।

स्पृक्कालताकोटिवर्षामरुन्माला लतामरुत् ।
लंकारिकासमुद्रान्ता कुटिला देवपुत्रिका ॥

अर्थ-स्पृक्का-लता, कोटिवर्षा, मरुन्माला, लतामरुत्, लङ्कारिका, द्रान्ता, कुटिला, देवपुत्रिका, (देवपुत्री, देवी, पृक्का, पिशुना, लघु, लङ्कायिका, लंकापिका, ब्राह्मणी, सनु, मालालिका, मालानी, लध्वी, सिरसा, समुद्रकान्ता, मरुत्, माला, कोटी, वर्षा, लङ्कोपिका, वर्षालङ्का तस्कर, चोरक, चण्ड, असृक्क्)

हिन्दी भाषामें	असवरग, अस्परक पुरी ।
वङ्गभाषामें	पिडिङ शाक ।
मराठीभाषामें	स्पृक्का, गगौना कापूरी, शाक ।
कर्नाटकी भाषामें	हिक्के ।
तैलिङ्गी भाषामें	स्पृक्कुथनेड्डद्रव्यमु ।
उत्	फिरिकिशाक ।

अस्या गुणाः ।

स्पृक्कास्वाद्वीहिमावृष्यातिक्तानिखिलदोषनुत् ।
कुष्ठकण्डूविषस्वेददाहास्रज्वररक्तहृत् ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-असवरग--स्वादिष्ठ, शीतल, वीर्यजनक, कडवा, सम्पूर्ण दोषनाशक तथा कोढ, खुजली, विष, पसीना, दाह, रक्त, ज्वर, और रक्तविकारको हरे

अपिच ।

स्पृक्काकटुःकषायाचतिक्ताश्लेष्मार्तिकासजित् ।
श्लेष्ममेहाश्मरीकृच्छ्रनाशिनीचसुगंधिदा ॥ (रा. नि.)

अर्थ-असवरग-चरपरा, कषेला, कडवा तथा कफसे उत्पन्न हुई पीडा, खांसी, कफ, प्रमेह, पथरी और मूत्रकृच्छ्ररोगको दूर करे है और सुगन्धि-दायक है ।

अन्यच्च ।

स्पृक्कातुमधुरापाकेहृद्याचकफपित्तनुत् । (रा. व.)

अर्थ-असवरग-पचनेमें मधुर, हृदयको हितकारी और कफपित्तनाशक है)

अपिच ।

गगौनाकटुकातिक्तातुवरास्वादुशीतला ।
वृष्याचैवसुगंधिश्चकासतृण्मेहनाशिनी ॥
कण्डूंत्रिदोषंकुष्ठंचविषदोषंज्वरं कफम् ।
स्वेदंदाहंरक्तदोषंदौर्गन्ध्यश्चतथाश्मरीम् ॥
मूत्रकृच्छ्रं च शूलञ्च नाशयेदितिकीर्तिता । (नि. र.)

अर्थ-असवरग-चरपरा, कडवा, कषेला, स्वादिष्ठ, शीतल, वीर्यजनक, सुगन्धि तथा खांसी, पियास, प्रमेह, खुजली, त्रिदोष (वात, पित्त, कफ । कोढ, विषविकार, ज्वर, कफ, पसीना, दाह, रुधिरविकार, दुर्गन्ध, पथरी, मूत्रकृच्छ्र और शूलको निर्मूल करेहै ।

एलावालुकनामानि ।

एलावालुकमैलेयंसुगन्धिहरिवालुकम् ।

अर्थ-एलावालुक-ऐलेय, सुगन्धि, हरिवालुक, (वालु, वालुक, एलवा-लुक, एलवालु, आलुक, एलववालुक, कपित्थत्वक्, गन्धत्वक्, कुष्ठगन्धी, कपित्थ, गन्धात्वक्, एलालु, एलवालु)

अस्य गुणाः ।

एलालु कटुकंपाके कषायंशीतलं लघु ।
हन्तिकण्डूव्रणच्छर्दितृट्कासारुचिहृद्रुजः ॥
बलासविषपित्तास्रकुष्ठमूत्रगदाक्रिमीन् । (भा. प्र.)

अर्थ-एलुआ-पचनेमें चरपरा, कषेला, शीतल, हलका तथा खुजली, छर्दि, पियास, खांसी, अरुची, हृदयरोग, कफ, विष, रक्त, पित्त, मूत्ररोग और कृमिरोगको नष्ट करैहै।

अपिच।

एलावालुकमत्युग्रंकषायंकफवातनुत्।
मूर्च्छार्तिज्वरदाहांश्चनाशयेद्रोचनंपरम्॥ (राजनि०)

अर्थ-एलुआ-अतिउग्र, कषेला, कफवातनाशक तथा मूर्च्छा, ज्वर, दाहको दूर करैहै, और अत्यन्त रुचिको उत्पन्न करैहै।

अन्यच्च।

ऐलेयंतुवरं रुच्यमत्युग्रं शीतलं लघु।
पाकेकटुसुगन्धिस्यात्तिक्तंशुद्धिकरंमतम्॥
कफमूर्च्छावातदाहज्वरकण्डूविषव्रणान्।
छर्दितृट्कासहृद्रोगपित्तरक्तरुजस्तथा॥
वध्मरुक्कृमिकुष्ठानिह्यरुचिंचविनाशयेत्। (नि०र०)

अर्थ--एलुवा--कषेला, रुचिकारक, अति उग्र, शीतल, हलका, चरपरा, सुगन्धि, कडवा, शुद्धिकारक तथा कफ, मूर्च्छा, वात, दाह, खुजली, विष, व्रण, वमन, तृषा, खांसी, हृद्रोग, रक्तपित्तरोग, व[ध्म], कृमि, कोढ और अरुचिको दूर करैहै।

एलुआ-- सुगन्धि पदार्थ है, इसमें कूठकी समान सुगंधि आती है।

संस्कृतमें	एलावालुक।
हिन्दीमें	एलुवा।
बङ्गलेमें	एलवालुका।
तैलिङ्गीमें	कुतुखुडम।
मराठीमें	वेलची।

प्रपौण्डरीकनामानि।

श्रीपुष्पंपुण्डरीशीतंपौण्डर्यंपुण्डरीयकम्।
प्रपौण्डरीकंचक्षुष्यंपुण्डर्यंपौण्डरीयकम्॥

अर्थ--श्रीपुष्प--पुण्डरी, शीत, पौण्डर्य, पुण्डरीयक, प्रपौण्डरीक च[क्षुष्य], पुण्डर्य पौण्डरीयक, (पुण्डरीक, पौण्डरीक, पौण्डर्य्य, तालपुष्पक, सा[नुज], दृष्टिकृत्, स्थलपद्म, सुपुष्प, सानुज, अनुज)

अस्यगुणाः ।

प्रपौण्डरीकंचक्षुष्यंमधुरंतिक्तशीतलम् ।
पित्तरक्तव्रणान्हान्तिज्वरदाहतृषापहम् ॥ (रा. नि.)

अर्थ-पुण्डरिया-नेत्रोंको हितकारी, मधुर, तिक्त, शीतल तथा रक्त, पित्त, व्रण, ज्वर, दाह और तृष्णाकी शांति करेहै ।

अपिच ।

पौण्डर्यंमधुरंतिक्तंकषायंशुक्रलंहिमम् ।
चक्षुष्यंमधुरंपाकेवर्ण्यंपित्तकफास्रनुत् ॥ (भा. प्र.)

अर्थ-पुण्डरिया-मीठा, कडवा, कषेला, वीर्यवर्द्धक, शीतल, नेत्रोंको हितकारी, पचनेमेंभी मीठा, शरीरके वर्णको सुंदर करनेवाला, तथा पित्त कफ और रक्तदोषनिवारक है ।

प्रपौण्डरीक सुगंधि वृक्ष है, इसके रसको आंखमें लगानेसे आंखके रोग दूर होतेहैं, इसको हिन्दीभाषामें पुण्डेरी, पुण्डरिया वंगभाषामें पुण्डरिया । मराठीमें पुण्डरीक वृक्ष । तैलिङ्गीमें पुंडरीक मनगे विध्मानमु । गुजरातीमें पाण्डेरवा । कर्नाटकी भाषामें पुंडरीक कहते हैं ।

पर्पटिनामानि ।



जतुकारञ्जनीकृष्णापर्पटीचक्रवर्तिनी ।
जतुकृञ्जनिसंस्पर्शाजनेष्टाजननीतथा ॥

अर्थ-जतुका, रञ्जनी, कृष्णा, पर्पटी, चक्रवर्तिनी, जतुकृत्, जनेष्टा, जननी, (जतुकारी, तिर्यक्फला, निशान्धा, सुपत्रिका, राजवृक्षा, कपिकच्छु, फलोपमा, सूक्ष्मवल्ली, भ्रमरी, कृष्णवल्लिका, लिका, कृष्णरुहा, ग्रंथिपर्णा, सुवर्चिका, तरुवल्ली, दीर्घफला, रजनी, जनिजन्तुका)

अस्या गुणाः ।

पर्पटीतुवरातिक्ताशिशिरावर्णकृल्लघुः ।
विषव्रणहरीकण्डूकफपित्तास्रकुष्ठनुत् ॥ (भावप्रकाश

अर्थ-पर्पटी-कषेली, कडवी, शीतल, वर्णकारक, लघु तथा वि खुजली, कफ और कुष्ठको नष्ट करे है ।

अपिच ।

जन्तुकाशिशिरातिक्तारक्तपित्तकफापहा ।
दाहतृष्णावमिघ्नीचरुचिकृद्दीपनीपरा ॥ (रा. नि.)

अर्थ-जनी-शीतल, कडवी तथा रक्तपित्त, कफ, दाह, तृषा औ निवारक है तथा रुचिकारक और अग्निदीपक है ।

अपिच ।

पर्पटीशीतलावर्ण्या तुवरातिक्तका लघुः ।
अग्निदीप्तिकरीरुच्यारक्तपित्तकफाञ्जयेत् ॥
पित्तं च रक्तदोषं च कुष्ठं दाहं वमिं तृषाम् ।
कुष्ठरोगंकण्डुरोगंव्रणंचैवविनाशयेत् ॥ (निघण्टुरत्ना

अर्थ-पर्पटी-शीतल, वर्णकारक, कषेली, कडवी, हलकी, अग्नि रुचिकारक तथा रक्तपित्त, कफ, पित्त, रुधिरविकार, कोढ, दाह, तृषा, कोढ, विष, खुजली और व्रणका विनाश करे है । यह माल प्रसिद्ध है ।

नलिकानामानि ।

नलिकाविद्रुमलता कपोतचरणानटी ।
धमन्यंजनकेशीचनिर्मध्याशुषिरानली ॥

अर्थ-नलिका-विद्रुमलता, कपोतचरणा, नटी, धमनी, अञ्जनकेशी, मध्या, शुषिरा, नली (कपोताङ्घ्रि, विद्रुमलतिका, कपोतवाणा, नलिनी, मानी, स्तुत्या, रक्तदला, नर्त्तकी)

अस्यागुणाः ।

नलिकाशीतलालघ्वीचक्षुष्याकफपित्तहृत् ।
कृच्छ्राश्मवाततृष्णास्रकुष्ठकण्डूज्वरापहा ॥

अर्थ-नलिका-शीतल, हलकी, नेत्रोंको हितकारी तथा कफ, पित्त, मूत्रकृच्छ्र, पथरी, पियास, रुधिरविकार, कोढ, कण्डू और ज्वरको नष्ट करेहै ।

अपिच ।

नलिकाकटुकातिक्तातीक्ष्णा च मधुरासरा ।
लघ्वीशीताचसंप्रोक्ताचक्षुष्यावातपित्तहा ॥
रक्तपित्तक्रिमिविषकफवातोदरापहा ।
शूलाश्मरीमूत्रकृच्छ्ररक्तदोषतृषाहरा ॥
कण्डूकुष्ठज्वरव्रणदुर्नामानं चनाशयेत् । (नि. र.)

अर्थ-नलिका-चरपरी, कडवी, तीक्ष्ण, मधुर, दस्तावर, हलकी, शीतल, नेत्रोंको हितकारी तथा वातपित्त, रक्तपित्त, कृमि, विष, कफ, वातोदर, शूल, पथरी, मूत्रकृच्छ्र, रुधिरविकार, तृषा, खुजली, कोढ, ज्वर, घाव और बवासीरको दूर करे है ।

यह सुगंधिद्रव्य उत्तरखण्डमें नलीनामसे प्रसिद्ध है इसका स्वरुप मूँगेके समान होता है, कहीं कहीं पवारी और प्रवाली, नामसे प्रसिद्ध है । कर्णाटकमें नलिके कहते हैं । और तैलिङ्ग देशमें पकेमुक सुगंधि द्रव्यमु कहते हैं ।

पुदिनानामानि ।

व्यञ्जनोवान्तिहारीचरुचिश्यः शाकशोभनः ।

अर्थ-व्यञ्जन-वांतिहारी, रुचिश्य, शाकशोभन, (सुगन्धिपत्र, अजीर्णहर)

हिन्दी भाषामें	पोदीना ।
बङ्ग भाषामें	पुदिना ।
मराठी भाषामें	पुदिना ।
गुजराती	फोदिनो
अंग्रेजी भाषामें	टोल् रेड्नमिंट । Tallrednment

लटिन्भाषामें	मेन्थासिल्‌ वेसट्रिस । Mentha Sy
फिरंगीभाषामें	ओड टोलाव ।
फारसीभाषामें	नोअना ।
अरबीभाषामें	हवा ।

अस्य गुणाः ।

पुदिनस्तुगुरुः स्वादूरुच्योहृद्यः सुखावहः ।
मलमूत्रस्तम्भकरः कफकासमदापहः ॥
अग्निमांद्यविसूचिघ्नः संग्रहण्यतिसारहा ।
जीर्णज्वरंकृमींश्चैवनाशयेदितिकीर्त्तितम् ॥ (नि०

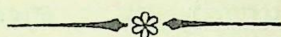
अर्थ-पोदीना-भारी, स्वादिष्ट, रुचिकारक, हृदयको हितकारी, सु (सुखका देनेवाला), मल और मूत्रको रोकनेवाला तथा कफ, मंदाग्नि, विसूचिका, संग्रहणी, अतिसार जीर्णज्वर और कृमिरोग करे है ।

विवरण-इसका छोटा क्षुप होता है, मनुष्य घर और बागोंमें ल पोदीना प्राचीन नहीं है, कारण यह है कि, अतिरिक्त निघण्टु (जो कि थोडे दिनोंसे बनाहै) और किसी ग्रन्थमें नहीं देखा जाव नेका अर्क निकालते हैं, वह अर्क वमनादिक अनेक रोगोंको दूर क पोदीनेकी चटनी खानेसे अत्यन्त भूंख लगती है ।

इति श्रीशालिग्रामनिघण्टुभूषणे कर्पूरादिवर्गः ।



हरीतक्यादिवर्गः ।



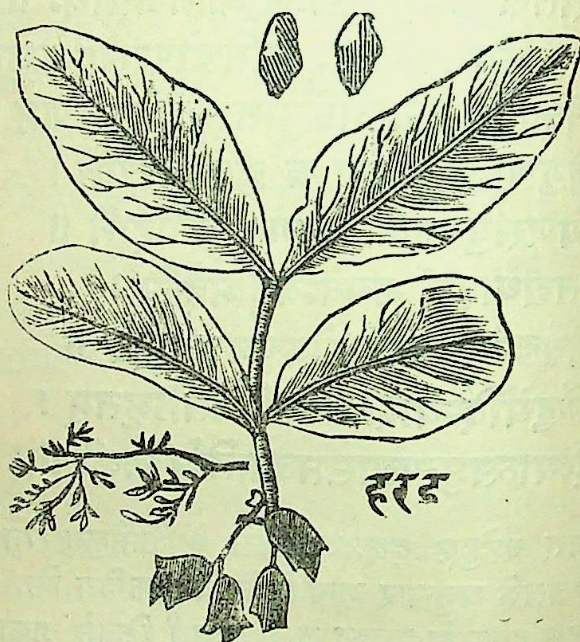
दक्षंप्रजापतिंस्वस्थमश्विनौवाक्यमूचतुः ।
कुतोहरीतकीजातातस्यास्तुकतिजातयः ॥
रसाः कतिसमाख्याताः कतिचोपरसाः स्मृताः ।
नामानिकतिचोक्तानिकिंवातासांचलक्षणम् ॥
केचवर्णगुणाःके च का च कुत्रप्रयुज्यते ।
केनद्रव्येणसंयुक्ताकांश्चरोगान्व्यपोहति ॥
प्रश्नमेतद्यथापृष्टं भगवन्वक्तुमर्हसि ।
अश्विनोर्वचनंश्रुत्वादक्षोवचनमब्रवीत् ॥
पपातबिंदुर्मेदिन्यांशक्रस्यपिबतोऽमृतम् ।
ततोदिव्यात्समुत्पन्नासप्तजातिर्हरीतकी ॥

अर्थ-प्रसन्नचित्त बैठेहुए दक्षप्रजापतिसे अश्विनीकुमारोंने पूछा कि, हे भगवन् ! हमारे प्रश्नके अनुसार आप विधिपूर्वक कहिये कि, हरीतकी कहाँ उत्पन्न हुई ? किस प्रकारसे इसका जन्म हुआ ? कितने प्रकारकी है ? इसमें कितने रस और उपरस रहते हैं. सर्व प्रकारकी हरीतकीके नाम क्या हैं ? उनके लक्षण क्या हैं ? उनके रंग और गुण क्या क्या हैं ? और कौनसी हरीतकी किसकिस प्रयोगमें आसकतीहै ? और हरीतकी किसकिस द्रव्यके योगसे कौन कौनसे रोगोंका नाश करती है; इस प्रकार उन अश्विनीकुमारोंका वचन सुनकर दक्षप्रजापतिने उत्तर दिया कि, जिस समय देवराज इन्द्रने अमृतपान किया, तब उसमेंसे एक बूंद पृथ्वीपर गिरपडी, उस अमृतकी बूंदसे सातप्रकारसे हरीतकी उत्पन्न हुई ।

हरीतकीनामानि ।

हरीतक्यभयापथ्याकायस्थापूतनामृता ।
हैमवत्यव्यथाचापिचेतकीश्रेयसीशिवा ॥
वयस्थाविजयाचापिजीवन्तीरोहिणीति च ।

अर्थ-हरीतकी--अभया, पथ्या, कायस्था, पूतना, अमृता, है अव्यथा, चेतकी, श्रेयसी, शिवा, वयस्था, विजया, जीवन्ती, रो (सुधा, बल्या, रसायनफला, पाचनी, प्रमथा, शाका, रुद्रप्रिया, व शक्रसृष्टा, सुधोद्भवा, जया, चेतनकी, प्रपथ्या, जीवप्रिया, जीवनिका, ज्वरा, भिषक्प्रिया, जीवन्ती, प्राणदा, जीव्या, देवी, दिव्या, हिमजा,



संस्कृतभाषामें	हरीतकी, बालहरीतकी ।
हिन्दीभाषामें	हरड, हर्र, हर्ड ।
वंगभाषामें	हरीतकी ।
मराठीभाषामें	हर्तकी । बाळहरडी ।
गुजरातीभाषामें	हरडे । हिमज ।
कर्नाटकीभाषामें	अणिलेय, प्रशसे ।
तैलिङ्गीभाषामें	करक्कायि, करकचेट्टु ।
तामिलीभाषामें	कडकै ।
उत्	हरीडा । करेडा ।
द्रा०	कल्दरा ।
अंग्रेजीभाषामें	मेरोवेलन्स् । Myrobalons [हिम
	ब्लाकमाइरोनेलन्स । Black Myronela
लैटिन्भाषामें	टरमिनेलिया, केबुला । Terminalia cheb

फारसी भाषामें — हलैले कलांजोरेजवी अस्फर हलैले जर्द ।
अरबी भाषामें — एहलीलज, कावली, अहलीजअस्फर, अहलीज असवद ।

हरीतकी सप्तधा यथा ।

विजया रोहिणी चैवपूतना चामृताभया ।
जीवन्तीचेतकी चेति विज्ञेयाः सप्त जातयः ॥

अर्थ-विजया, रोहिणी, पूतना, अमृता, अभया, जीवन्ती और चेतकी, न भेदोंसे हर्ड सात जातिकी है ।

सातोंके पृथक् २ लक्षण ।

अलाबुवृत्ताविजयावृत्तासारोहिणी स्मृता ।
पूतनास्थिमतीसूक्ष्मा कथितामांसलाऽमृता ॥
पंचरेखाभयाप्रोक्ताजीवन्तीस्वर्णवर्णिनी ।
त्रिरेखाचेतकीज्ञेया सप्तानामियमाकृतिः ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-विजयाहरड- तोमडीके समान गोल और लम्बी होती है, रोहिणी रड गोल होती है, पूतना हरड छोटीगुठलीवाली होती है, अमृतानामवाली रड मोटी होती है, पांचरेखावाली अभया हरड होती है,जीवन्ती हरड स्वर्णके मान पीलेरङ्गकी होती है, और चेतकी हरड तीनरेखावाली होती है ।

जन्मस्थानम् ।

विंध्याद्रौविजया हिमाचलभवास्याच्चेतकीपूतना
सिंधौस्यादथरोहिणीतु[illegible]जाताप्रातिस्थानके ।
चम्पायाममृताभया च जनितादेशे सुराष्ट्राह्वये
जीवन्तीतिहरीतकीनिगदितासप्तप्रभेदा बुधैः ॥(नि०र०)

अर्थ-विजयाहरड विंध्याचल पर्वतमें उत्पन्न होती है । पूतना और चेतकी ड हिमालय पर्वतपै होती है । रोहिणी हरड सिंधु नदीके तीरपै होती है । र विजया हरड प्रतिस्थानमें होती है, अमृता और अभया हरड चम्पादेशमें त्पन्न होती है । और जीवन्ती हरड सौराष्ट्र देशमें उत्पन्न होती है ।

सप्तानां प्रयोगभेदाः ।

विजयासर्वरोगेषु रोहिणीव्रणरोहिणी ।

प्रलेपेपूतनायोज्याशोधनार्थेऽमृताहिता ॥
अक्षिरोगेऽभयाशस्ताजीवन्तीसर्वरोगहृत् ।
चूर्णार्थेचेतकीशस्तायथायुक्तंप्रयोजयेत् ॥

अर्थ- सर्व प्रकारके रोगोंमें विजया हरड देनी चाहिये, व्रणको लिये रोहिणी हरड उत्तम है, लेपमें पूतना लेनी चाहिये, विरेचनमें अमृता हरड हितकारी है, नेत्ररोगमें अभया हरड श्रेष्ठ है, जीवन्ती हरड रोगोंको हरनेवाली है और चूर्णमें चेतकी हरड डालनी चाहिये।

दोप्रकारकी चेतकी हरडका स्वरूप ।

चेतकीद्विविधाप्रोक्तासिताकृष्णाचवर्णतः ।
षडंगुलायताशुक्लाकृष्णात्वेकांगुलास्मृता ॥

अर्थ चेतकी हरड -सफेद और काली इन भेदोंसे दोप्रकारकी है सफेद रङ्गकी हरड छै अंगुल परिमाण लम्बी होती है और काले रङ्गकी हरड एक अंगुल परिमाण लम्बी होती है ।

सर्वप्रकारकी हरडोंके रेचनगुण ।

काचिदास्वादमात्रेणकाचिद्गन्धेनभेदयेत् ।
काचित्स्पर्शेनदृष्टान्याचतुर्धाभेदयेच्छिवा ॥

अर्थ--कोई हरड खानेसे, कोई सूंघनेसे, कोई स्पर्श करनेसे, और दर्शनमात्रसेही दस्त लाती है, ऐसे चार प्रकारकी होती है।

चेतकी हरडके रेचनगुण ।

चेतकीपादपच्छायामुपसर्पन्तियेनराः ।
भिद्यन्तेतत्क्षणादेवपशुपक्षिमृगादयः ॥
चेतकीतुधृताहस्तेयावत्तिष्ठतिदेहिनः ।
तावद्भिद्येतवेगैस्तुप्रभावान्नात्रसंशयः ॥
नधार्यसुकुमाराणांकृशानांभेषजद्विषाम् ।
चेतकीपरमाशस्ताहितासुखविरेचनी ॥

अर्थ चेतकी हरडके वृक्षकी छायामें जो मनुष्य, पशु, पक्षी, गमन करते हैं,उन जीवोंको उसी समय दस्त होने लगते हैं जबतक

तकी हरडको हाथमें धारण किये रहेगा, तबतक उस प्राणीको उस हर- के प्रभावसे निश्चय दस्त होते रहेंगे, चेतकी हरडको सुकुमार दुर्बल और मनुष्य औषधिसे शत्रुता रखते हैं, उनको कभीभी धारण नहीं करना हिये। चेतकी हरड अत्यन्त उत्कृष्ट हितकारी और सुखसहित दस्त रानेवाली है।

विजयाहरडकी प्रशंसा।

सप्तानामपिजातीनांप्रधानाविजयास्मृता।
सुखप्रयोगा सुलभासर्वरोगेषु शस्यते ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ–सातप्रकारकी हरडोंमें विजया नामवाली हरड सर्वमें प्रधान है। योगभी सुखकारक है। सुलभ अर्थात् सब स्थानोंमें मिलती है और सर्व गोंमें दी जाती है।

हरीतकीगुणाः

कषायाम्लाचमधुरातिक्ताकटुरसान्विता।
इति पंचरसा पथ्या लवणेनविवर्जिता ॥

अर्थ–कषाय, अम्ल, मधुर, तिक्त और कटु इस प्रकार हरड लवणरसके तिरिक्त पांच रसवाली है।

रूक्षोष्णादीपनीमेध्यास्वादुपाकारसायनी।
चक्षुष्यालघुरायुष्याबृंहणीचानुलोमनी ॥
श्वासकासप्रमेहार्शःकुष्ठशोथोदरक्रिमीन्।
वैस्वर्यग्रहणीरोगविबन्धविषमज्वरान् ॥
गुल्माध्मानतृषाच्छर्दिहिक्काकण्डूहृदामयान्।
कामलांशूलमानाहंप्लीहानंचयकृत्तथा ॥
अश्मरींमूत्रकृच्छ्रंचमूत्राघातंचनाशयेत् ॥

अर्थ-हरड--रूखी, उष्णवीर्य्य, अग्निको दीपन करनेवाली, मेधाजनक, कमें स्वादिष्ठ, नेत्रोंको हितकारी, हलकी आयुर्वर्धक, बृंहण, (बलका-) और वायुको अनुलोमन करनेवाली है तथा श्वास, खांसी, प्रमेह, बवा- र, कोढ, सूजन, उदररोग, कृमि, स्वरभंग, संग्रहणी, विबन्ध, विषमज्वर, स, आध्मान (अफारा), तृषा, वमन, हुचकी, कण्डू, हृदयरोग, कामला,

शूल, आनाह, यकृत् , अश्मरी, मूत्रकृच्छ्र और मूत्राघातका नाश क

अम्लभावाज्जयेद्वातंपित्तंमधुरतिक्ततः ।
कफंरूक्षकषायत्वात्त्रिदोषघ्नीतितोभया ॥

अर्थ--हरड--अम्लरससंयुक्त होनेसे वातका नाश करती है, मधु तिक्तरसयुक्त होनेसे पित्तका नाश करती है और कषाय तथा कफका नाश करती है, इसप्रकार हरड त्रिदोषनाशक है।

अन्यच्च ।

स्वादुतिक्तकषायत्वात्पित्तहत्कफहृच्चसा ।
कटुतिक्तकषायत्वादम्लत्वाद्वातहृच्छिवा ॥

अर्थ-हरड-स्वादु, तिक्त, कषेलेपनसे पित्तको हरती है, कटु, ति कषेलेपनसे कफको हरती है और अम्लपनसे वातका नाश करती है।

अन्यच्च ।

हरीतकीतुसंप्रोक्तापंचभिस्तुरसैर्युता ।
लवणेनचसाहीनायोगवाहीरसायनी ॥
अग्निदीप्तिकरीलघ्वीसरामेध्याचलेखना ।
वातानुलोमनीहृद्याचक्षुष्यास्मृतिकारका ॥
वयसःस्थापनीबल्याबुद्धिदाकुष्ठनाशिनी ।
विवर्णतानाशिनीचेंद्रियाणांप्रसादनी ॥
शिरोरोगंनेत्ररोगंवैस्वर्यंविषमज्वरम् ।
पुराणंचज्वरंपाण्डुंहृद्रोगंकामलांतथा ॥
शोषंशोथंमूत्रघातंग्रहणींचातिसारकम् ।
अश्मरींचज्वरंमेहंकृमिंश्वासंविषोदरम् ॥
कासंचर्ममलस्तम्भमानाहंकर्णरोगकम् ।
अर्शःप्लीहांत्रिदोषञ्चगुल्मंहिक्कांव्रणंतथा ॥
ऊरुस्तम्भञ्चशूलञ्चनाशयेदरुचिंतथा ॥ (निघण्टुर

अर्थ-हरड-पांच रसोंसे युक्त है और लवणरसकरके वर्जितहै । योगवाही
ायन, अग्निप्रदीपक, हलकी, दस्तावर, मेधाजनक, लेखन, वातको अनु-
मन करनेवाली, हृदयको हितकारी, नेत्रोंको हितकारी, स्मृतिकारक,
वस्थास्थापक, बलकारक, कोढका नाशकरनेवाली, विवर्णतानाशक, इन्द्रियो
प्रसन्न करनेवाली, तथा मस्तकरोग, नेत्ररोग, स्वरभंग, विषमज्वर, पुराना
र, पाण्डु, हृदयरोग, कामला, शोष, सूजन, मूत्राघात, संग्रहणी, अतिसार,
री, वमन, प्रमेह, कृमि, श्वास, विष, उदररोग. खाँसी, पसीना, मल
म्भ, आनाह, कर्णरोग, बवासीर, प्लीहा, त्रिदोष, गुल्म, हुचकी, व्रण,
स्तम्भ, शूल और अरुचिका नाश करेहै ।

हरीतक्याः पञ्चरसावस्थितिनिर्णयः ।

पथ्यायामज्जनिस्वादुःस्नाय्वामम्लोव्यवस्थितः ।
वृन्तेतिक्तस्त्वचि कटुरस्थिस्थस्तुवरो रसः ॥

अर्थ-हरडकी मज्जामें मधुर रस, नसोंमें अम्लरस, डंठलमें तिक्तरस,
लमें कटुरस और अस्थियोंमें कषेला रस रहताहै ।

श्रेष्ठहरीतकीलक्षणम् ।

नवास्निग्धाघनावृत्तागुर्वीक्षिप्ताचयांभसि ।
निमज्जेत्साप्रशस्ताचकथितातिगुणप्रदा ॥
नवादिगुणयुक्तत्वंतथैकत्रद्विकर्षता ।
हरीतक्याःफलेयत्रद्वयंतच्छ्रेष्ठमुच्यते ॥

अर्थ-जो हरड नूतन, स्निग्ध, धन, गोल, भारी और पानीमें डालनेसे
जावे, तो हरड अत्यन्त गुणवाली और श्रेष्ठ होतीहै अथवा जो हरड
क गुणयुक्तहो और चार तोले परिमाण भारी हो, उसको सर्वगुण-
ली जानना ।

चर्वितादिहरीतकीगुणाः ।

चर्वितावर्द्धयत्यग्निंपेषितामलशोधिनी ।
स्विन्नासंग्राहिणीपथ्याभृष्टाप्रोक्तात्रिदोषनुत ।

अर्थ-हरड दातोंसे चबाकर खानेसे अग्निको बढातीहै, पीसकर खानेसे
को शोधन करेहै, अर्थात् मलको निकालकर उदरकी शुद्धि करतीहै
ईहुई खानेसे मलको रोकतीहै और भुनी हुई हर्डे त्रिदोषका नाश करेहै ।

भुक्तान्वितहरीतकीगुणाः ।

उन्मीलिनीबुद्धिबलेंद्रियाणांनिर्मूलिनी पित्तकफानिलानां विस्त्रंसिनीमूत्रशकृन्मलानां हरीतकीस्यात्सहभोजनेन।

अर्थ-हरड भोजनके साथ भक्षणकीहुई बुद्धि और बलको बढाती इन्द्रियोंको प्रकाशित करती है और पित्त, कफ, वातका नाश करती मल, मूत्र, और मलोंको निकालतीहै ।

भुक्तोपरिसेवितहरीतकीगुणाः ।

अन्नपानशतान्दोषान्वातपित्तकफोद्भवान् ।
हरीतकीहरत्याशुभुक्तस्योपरियोजिता ॥

अर्थ-भोजनके पीछे भक्षण कीहुई हरड अन्नपानके दोष और वात कफसे उत्पन्न हुये दोषोंको दूर करती है ।

हरीतक्या विशेषगुणाः ।

लवणेनकफंहन्तिपित्तंहन्तिसशर्करा ॥
घृतेनवातजान्रोगान्सर्वरोगान्गुडान्विता ॥

अर्थ-हरड-लवणके साथ कफको, मिश्रीके साथ पित्तको घीके वातसे उत्पन्न हुए रोगोंको और गुडके साथ खानेसे संपूर्ण रोगोंको करती है ।

ऋतुहरीतकीगुणाः ।

सिन्धूत्थशर्कराशुण्ठीकणामधुगुडैः क्रमात् ।
+ वर्षादिष्वभयाप्राश्यारसायनगुणैषिणा ॥ (भा०

अर्थ-हरड-वर्षाऋतुमें सैन्धव लवणके साथ, शरद्ऋतुमें पीपल वसन्तऋतुमें मधुके साथ और ग्रीष्मऋतुमें गुडके साथ रसायन चाहनावालोंको सेवन करनी चाहिये ।

हरीतक्याः श्रेष्ठगुणत्वम् ।

हरीतकीमनुष्याणांमातेवहितकारिणी ।
कदाचित्कुप्यतेमातानोदरस्थाहरीतकी ॥ (राज०

+ चैत्र वैशाख-वसन्तऋतु ॥ ज्येष्ठ आषाढ -ग्रीष्मऋतु ॥ श्रावण भाद्रपद-वर्षा आश्विन कार्तिक-शरदृतु ॥ मार्गशिर पौष--हेमन्तऋतु ॥ माघ फाल्गुन-शिशिर

अर्थ-हरड मनुष्योंको माताकी समान हित करनेवाली है, माता तो भी २ कुपितभी हो जाती है, परन्तु उदरमें स्थित अर्थात् खाईहुई हरड कभी अपकारी नहीं होती ।

अन्यद्रव्ययुक्तहरीतकीगुणाः ।

द्राक्षांनियोज्यविधिनाद्विगुणंशिवायाः
संचूर्ण्यचाक्षफलमानमितांप्रभाते ।
कल्याणिकाञ्चसुकृतांगुटिकामिमांयः
संसेवतेभवतितस्यहिपित्तनाशः ॥
हृद्रोगरक्तविषमज्वरपाण्डुवान्ति-
कुष्ठानिकासकमलारुचिमेहमुख्याः ।
आनाहगुल्मपिटिकाप्रभवाविकाराः
सर्वेचतेविलयमाशुसुखेनयान्ति ॥

अर्थ-हरडसे दूनी दाख लेकर विधिपूर्वक चूर्ण करके बहेडेके फलकी समान गोली बनावै उस कल्याणकारी-गोलीका प्रातःकालमें जो मनुष्य सेवन करता है, उसके पित्त, हृदयरोग, रक्तदोष, विषमज्वर, पाण्डुरोग, वमन, कुष्ठ, खांसी, कामला, अरुचि, प्रमेह, आनाह, गुल्म और पिडिका इत्यादि रोग नाश होते हैं ।

१

भुक्तेपथ्याऽभुक्तेपथ्याभुक्ताभुक्तेपथ्यापथ्या ।
जीर्णेपथ्याऽजीर्णेपथ्याजीर्णाजीर्णेपथ्यापथ्या ॥

अर्थ-हरड भोजनके उपरान्त और भोजनसे प्रथम दोनों समयमें पथ्य है, तथा जीर्णमें और अजीर्णमें भी पथ्य है ।

हरीतकीसेवननिषेधः ।

"अध्वातिखिन्नोबलवर्जितश्च रूक्षः कृशोलंघनकर्षितश्च ।
पित्ताधिकोगर्भवती च नारी विमुक्तरक्तस्त्वभयांनखादेत्" ॥

अर्थ-मार्गमें चलनेसे थका हुआ, बलहीन, रूक्ष, कृश, लंघन करनेसे दुर्बल हुआ, अधिक पित्तवाला, गर्भवती स्त्री और जिसका रुधिर निकाला गया हो अर्थात् फस्त खुली होय, नवीनज्वरवाला, हनुस्तम्भरोगवाला और शोषयुक्त इत्यादि कहे हुये मनुष्योंको हर्ड खानी निषेध है ।

हरीतकीशब्दस्य निरुक्तिः ।

हरस्यभवनेजाताहरिताचस्वभावतः ।
हरेत्तुसर्वरोगांश्चतेनप्रोक्ताहरीतकी ॥ (मदनपाल)

अर्थ--हर (महादेव) के भवनमें उत्पन्न हुई स्वभावसे हरे और सर्व रोगोंको हरती है. इसीकारण इसका नाम हरीतकी है।

अस्य बीजगुणाः ।

हरीतक्याः स्मृतंबीजंचक्षुष्यंगुरुवातनुत् ।
पित्तनाशकरंचैवमुनिभिः परिकीर्तितम् ॥ (नि०)

अर्थ--हरडके बीज नेत्रोंको हितकारी, भारी तथा वातपित्तहारी

विवरण--इसका बडा वृक्ष होता है पञ्जाब, शरद और काबुल अधिकतासे उत्पन्न होता है। इसके पत्ते अडूसकी समान होते हैं, इस महीन आमके मौरकी समान होता है, इस वृक्षको संस्कृतमें "ना कहते हैं। हरडकी अनेक जाति हैं। व्यवहार--हरडके फलकी छाल ६ मासेकी।

बिभीतकीनामानि । (बहेडेके नाम)



कालिद्रुमः कल्पवृक्षः संवर्ताक्षोबिभीतकी ।

अर्थ-कलिद्रुम, कल्पवृक्ष, संवर्त, अक्ष, बिभीतकी, (विभीतक विभीत, तुष, कर्षफल, भूतवास, कलि, कुशिक, बहुवीर्य्य, तैलफल, भूतावास, संवर्तक, वासन्त, कलिवृक्ष, बहेडुक, हार्य, विषघ्न, कलिन्द, अनिलघ्नक, कासघ्न, कलियुगालय, तोलफल और तिलपुष्पक)

संस्कृतभाषामें	बिभीतक ।
हिन्दी भाषामें	बहेडा ।
बंग भाषामें	बयडा-वहेडा ।
मराठी भाषामें	बेहेडा-धार्टिगवृक्ष ।
गुजराती भाषामें	वेडां ।
कर्नाटकीभाषामें	तोरे ।
तैलिङ्गी भाषामें	वल्ला-तांडेचेट्टु ।
तामिली भाषामें	तनि, तण्डि तोअण्डि ।
अंग्रेजीभाषामें	मेरोवेलन्-बेलिरिक Myrovallan Bellirki
लैटिन भाषामें	टरमिनेलिया-बेलिरिका Terumalia Bellirica
फारसी भाषामें	वलेले ।
अरबी भाषामें	वलेलज ।

अस्यगुणाः ।

बिभीतकःकटुस्तिक्तोकषायोष्णःकफापहः ।
चक्षुष्यःपलितघ्नश्चविपाकेमधुरोलघुः ॥ (रा० नि०)

अर्थ--बहेडा--कटु, तिक्त, कषेला, कफनाशक, नेत्रोंको हितकारी, पलितरोगविनाशक, पाकमें मधुर और हलका है ।

अपिच ।

बिभीतकंस्वादुपाकंकषायंकफपित्तनुत् ।
उष्णवीर्य्यंहिमस्पर्शंभेदनंकासनाशनम् ॥
रूक्षंनेत्रहितंकेश्यंकृमिवैस्वर्यनाशनम् ।
बिभीतमज्जातृट्छर्दिकफवातहरोलघु ॥
कषायोमदकृच्चाथधात्रीमज्जापितद्गुणः । (भावप्रकाश)

अर्थ-बहेडा--स्वादुपाकी, कषेला, कफपित्तनाशक, उष्णवीर्य्य, स्पर्शमें

शीतल, भेदक, कासनाशक, रूखा, नेत्रोंको हितकारी, केशोंको सुंदरा यक, कृमि और स्वरभंगको नष्ट करैहै ।

बहेडेकी मींग-तृषा, वमन, कफ और वातनाशकहै । हलकी, कषेली मदकारकहै । आमलेकी मज्जाके गुण भी इसकी समान जानने।

अन्यच्च ।

बिभीतकःकटुस्तिक्तस्तुवरोष्णोलघुःसरः ।
पाकेचमधुरोरूक्षश्चक्षुष्यःकेशवृद्धिकृत् ॥
हिमस्पर्शोभेदकश्चपलितस्वरभङ्गजित् ।
नासारोगंरक्तदोषंकण्ठरोगंचनेत्ररुक् ॥
जन्तूनांकासहृद्रोगनाशकोमुनिभिःस्मृतः (नि० र०)

अर्थ--बहेडा--चरपरा, कडवा, कषेला हलका दस्तावर, पाकके मधुर, रूखा, नेत्रोंको हितकारी, केशवर्द्धक, शीतस्पर्श, भेदक तथा स्वरभंग, नासारोग, रुधिरदोष. कण्ठरोग, नेत्ररोग, खांसी, हृदयरोग कृमिका नाश करैहै।

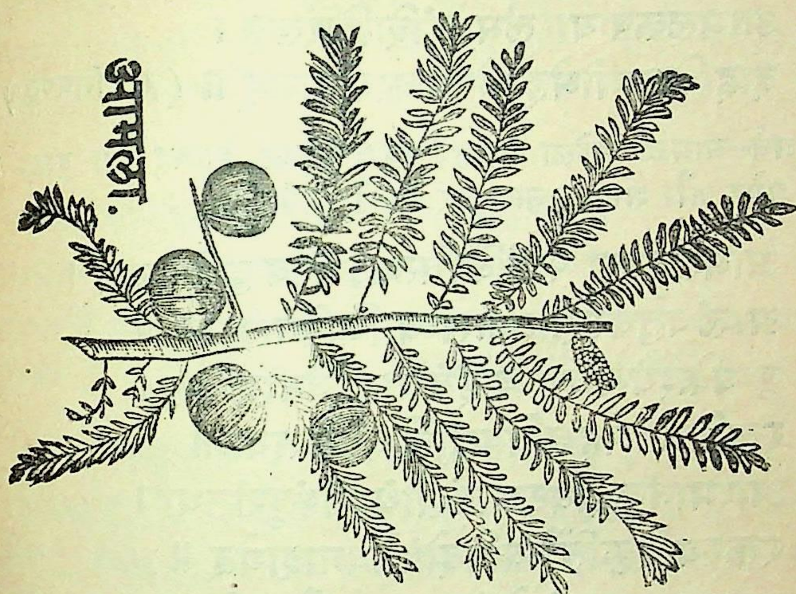
अपिच ।

"बिभीतकोलघुःशीतःपाकेस्वादुःकफास्रजित् ।
कासहृत्क्षयकुष्ठघ्नःकेशवृद्धिकरःपरः ॥
परंकेश्यस्तुतन्मज्जानेत्रपुष्पहरोंजनात् ।
नासारोगनेत्ररोगकृमिशुक्रहरोलघुः ॥
अक्षवृक्षभवःकल्कश्चित्रपाण्डुगदापहः ।"

अर्थ-बहेडा--हलका, शीतल, तथा पाकमें स्वादिष्ठ, कफ रुधिरवि खांसी, क्षयीरोग और कुष्ठको नष्ट करैहै, केशवर्द्धक, नासारोग, नेत्र कृमि और शुक्रको हरैहै, हलका और केशोंको हितकारीहै, इसकी नेत्रके फूलको दूर करैहै, इसके वृक्षकी छालका काढा, चित्रकोढ और रोगको दूर करैहै ।

विवरण--इसका बडा वृक्ष जंगल और पर्वतोंमें उत्पन्न होताहै पत्ते पत्तोंके समान होतेहैं, फूल अत्यन्त सूक्ष्म होताहै, फल वरनाके समान और झुमकोंमें आतेहैं । व्यवहार-फलकी छाल । मात्रा २ मासे

आमलकी नामानि ।



आमलकीपंचरसाश्रीफलीधात्रिकाशिवा ।
अकरामृतावयस्थाचवृष्यातिष्यफलातथा ॥

अर्थ--आमलकी, पंचरसा, श्रीफली, धात्रिका, शिवा, अकरा, अमृता-वयस्था, वृष्या, तिष्यफला, (वयःस्था, कायस्था, बहुफली, शान्ता, धात्री, अमृतफला. वृत्तफला रोचनी, कर्षफला, तिष्या, धात्रीफल, श्रीफल, अमृतफल, शिव, आमलक, जातीफल)

संस्कृतभाषामें	आमलकी ।
हिन्दीभाषामें	आमला ।
वङ्गभाषामें	आम्ला ।
मराठीभाषामें	आंवळा ।
गुजरातीभाषामें	आंवला ।
कर्नाटकीभाषामें	नेल्लि ।
तैलिङ्गीभाषामें	उसर काय ।
उत्	अण्डा ।
अंग्रेजीभाषामें	एंब्लि कमिरो वेलन् । Emblie myrobalan
लैटिनभाषामें	फिलेखस एंबलका Phylakhus Amblica
फारसीभाषामें	आम्लझं ।
अरबीभाषामें	अमलज् ।

अस्यागुणाः ।

आमलंकषायाम्लंमधुरंशिशिरंलघु ।
दाहपित्तवमीमेहशोषघ्नंचरसायनम् ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ--आमला -कषेला, अम्ल, मधुर, शीतल, हलका तथा दाह, पि- वमन, प्रमेह और शोषका नाश करे है और रसायन है ।

आमलक्याः फलंकिंचित्कटुकंस्वादुतिक्तकम् ।
अम्लंचतुवरंशीतंजराव्याधिविनाशनम् ॥
वृष्यंकेश्यंसारकश्चाहितंचारुचिनाशकम् ।
रक्तपित्तप्रमेहश्चविषज्वर्ति वमिं तथा ॥
आध्मानंबद्धविट्कत्वंशोथंशोषंतृषांतथा ।
रक्तस्यविकृतिंचैवत्रिदोषंचैवनाशयेत् ॥
अम्लत्वाद्वातहंप्रोक्तंमाधुर्याच्चैवशीततः ।
पित्तनाशकरंचोक्तंरूक्षत्वाच्चकषायतः ॥
कफनाशकरंप्रोक्तंपूर्वैर्विद्याविशारदैः ।

अर्थ आमला किंचित् कटु, स्वादिष्ठ, कडवा, अम्ल, कषेला, शीत- जरा व्याधिनाशक, वीर्यजनक, केशोंको हितकारी, दस्तावर, हितकारी अरुचिनाशक, तथा रक्तपित्त, प्रमेह, विष, ज्वर, वमन, आध्मा- (अफारा) मलबद्धता, सूजन, शोष, पियास, रक्तविकार और त्रिदोष- नाश करे है ।

आमला खट्टेपनसे वातका, मधुरपन और शीतलतासे पित्तका और क- षेपनसे तथा रूक्षतासे कफका नाशकरे है इस प्रकार आमला त्रिदोषनाशक है।

शुष्कामलकगुणाः ।

आमलस्यफलंशुष्कंतिक्तमम्लंकटुस्मृतम् ।
मधुरंतुवरंकेश्यं भग्नसन्धानकारकम् ॥
धातुवृद्धिकरंनेत्र्यंलेपनात्कांतिकारकम् ।
पित्तंकफंतृषांघर्ममेदोरोगंविषंतथा ॥
त्रिदोषंनाशयत्येवंपूर्वाचार्यैर्निरूपितम् । (नि. र.)

अर्थ-सूखा आमला-कडवा, खट्टा, चरपरा, मीठा, कषेला, केशोंको हितकारी, भग्नसन्धानकारक, धातुवर्द्धक और नेत्रोंको हितकारी है। इसका लेप करनेसे देहकी कांति बढती है; तथा पित्त, कफ, तृषा, पसीना, मेद, विष और त्रिदोषनाशक है।

अस्य मज्जागुणाः।

तन्मज्जाप्रदरच्छर्दिवातपित्तज्वरापहा।
कषायामधुरावृष्याश्वासकासनिबर्हणा॥

अर्थ-इसकी मींग प्रदररोग, वमन, वात, पित्त, और ज्वरको दूर करेहै। तथा कषेली, मधुर, वीर्यजनक, श्वास और खांसीको नष्ट करेहै।

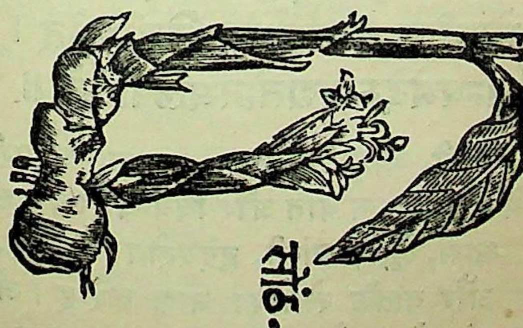
यस्ययस्यफलस्येहवीर्यंभवतियादृशम्।
तस्यतस्यैववीर्य्येणमज्जानमपिनिर्दिशेत्॥ (भा. प्र.)

अर्थ-जिस जिस वृक्षके फलमें जैसा जैसा वीर्य होताहै, वैसाही उसकी मींगमेंभी जानना।

विवरण-इसका बडा वृक्ष बाग और जंगलमें होताहै, पत्ते छोटे छोटे इमलीके समान होतेहैं, इसकी शाखाओंपै छोटी छोटी लडीके दानकी समान पीले फूल होतेहैं, फल तेंदूकी समान गोल और झुमकोंमें लगते हैं। फलके ऊपर छः रेखा अत्यन्त सूक्ष्म होती हैं।

व्यवहार-फलकी छाल। मात्रा ४ मासकी।

शुण्ठीनामानि।



शुण्ठीमहौषधीविश्वाशुष्कार्द्रविश्वभेषजम्।
भेषजंशृङ्गबेरञ्चविश्वंकफारिनागरम्॥

अर्थ-शुण्ठी, महौषधी, विश्वा, शुष्कार्द्र, विश्वभेषज, भेषज, शृंगबेर,

विश्व, कफारि, नागर (महौषध शुण्ठी, इन्द्रभेषज विश्वौषध, कटु॰ कटुभद्र, शुण्ठ्य, कटूत्कटक, कटूषण, सौवर्ण, आर्द्रक, शोषण, नाग॰ आर्द्रज, औषध)

संस्कृत भाषामें	शुंठी।
हिन्दी भाषामें	सौंठ, शुंठी।
वङ्गभाषामें	शुंट--ठ।
मराठीभाषामें	सुंठ।
गुजरातीभाषामें	शुण्ठय।
कर्णाटकीभाषामें	शुंठि।
तैलिङ्गीभाषामें	शोंठी।
इंग्रेजीभाषामें	डाइजञ्जर। Dyginger
फारसीभाषामें	जंजवील।

अस्यागुणाः।

शुण्ठीरुच्यामवातघ्नीपाचनीकटुकालघुः।
स्निग्धोष्णामधुरापाकेकफवातविबन्धहृत्॥
वृष्यासर्पावमिश्वासशूलकासहृदामयान्।
हन्तिश्लीपदशीतार्शआनाहोदरमारुतान्॥
आग्नेयगुणभूयिष्ठंतोयांशपरिशोषियत्।
संगृह्णातिमलंतत्तुग्राहिशुण्ठ्यादयोयथा॥
विबन्धभेदनीयातुसाकथंग्राहिणीभवेत्।
शक्तिर्विबन्धभेदेस्याद्यतोनमलपातने॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-सौंठ-रुचिकारी, आमवातनाशक, पाचक, चरपरी, हलकी, स्नि॰ उष्णवीर्य्य, पाकमें मधुर, कफ वात और विबन्धको दूर करैहै। वीर्य्यव॰ सारक तथा वमन, श्वास, शूल, खांसी, हृदयरोग श्लीपद, शोक, बवा॰ अफारा, उदररोग और वातके रोगोंका नाश करै है। जो द्रव्य आग्ने॰ विशिष्ट है और जलांशशोषक है, मलका ग्रहण करताहै जिसप्रकार ॰ आदि पदार्थ ग्राही हैं, कोई कहै कि जो विबन्धको भेदन करनेवाली है कैसे ग्राही होसकती है तो कहतेहैं कि सौंठमें विबन्धभेदकी शक्ति है, ॰ मलपातकी नहीं।

अन्यच्च ।

नागरं कफवातघ्नंविपाकेमधुरं कटु ।
वृष्योष्णंरोचनंहृद्यंसस्नेहंलघुदीपनम् ॥
पाण्डुंसंग्रहणींपित्तंनाशयेदितिकीर्त्तितम् ।

अर्थ--सोंठ--कफ वातनाशक, पचनेमें मधुर, चरपरी, वीर्यवर्द्धक गरम, रोचक, हृदयको हितकारी, स्नेहयुक्त, हलकी और दीपन है तथा पाण्डुरोग, संग्रहणी और पित्तका नाश करे है ।

आर्द्रकनामानि ।



आर्द्रकंशृङ्गवेरंस्यात्कटुभद्रंकटूत्कटम् ।

अर्थ-आर्द्रक, शृङ्गबेर, कटुभद्र, कटूत्कट, (गुलमूल, मूलज, कन्दर, वर, महीज, सैकतेष्ट, अनूपम, अपाकृष्णक, चन्द्राख्य, राहुच्छन्न, सुशाकक, शार्ङ्ग, आर्द्रशाक, मच्छाक, आर्द्रिका

संस्कृतभाषामें	आर्द्रक ।
हिन्दीभाषामें	अदरख--क ।
बंगभाषामें	आदा ।
मराठीभाषामें	आलें ।
गुजरातीभाषामें	आदु ।
कर्णाटकीभाषामें	अल्ल ।
तैलङ्गीभाषामें	अल्लं ।
अंग्रेजीभाषामें	जिंजिरूट । Gingerroot
अरबीभाषामें	जिंजिविलतर ।

लैटिन्भाषामें जिंजिबर ओफिसिनेली Gingiber Offic
फारसीभाषामें जिंजिबिलरतब ।

अस्यगुणाः ।

आर्द्रिकाभेदनीगुर्वीतीक्ष्णोष्णादीपनीमता ।
कटुकामधुरापाकेरूक्षावातकफापहा ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ--अदरख--भेदक, भारी, तीक्ष्ण, उष्ण, दीपन, चरपरा, पाकमें, रूक्ष, वात और कफनाशक है ।

अपिच ।

शृंगवेररसेपाकेशीतलंमधुरंलघु ।
कटुकोष्णञ्चहृद्यञ्चभेदकंचाग्निदीपकम् ॥
रूक्षंरुचिप्रदंवृष्यंपाचकंसारकंमतम् ।
कण्ठ्यमग्नेर्मांद्यहरंशोथारुचिकफापहम् ॥
वातंकण्ठरुजंकासंश्वासमानाहवातकम् ।
मलबंधंवमिंशूलंनाशयेदितिकीर्तितम् ॥
तस्यांकुरारसाभावात्कफवातकरामताः ।
रक्तदोषस्यशमनास्तेवृद्धाःकफनाशकाः ॥
काञ्जिकासैन्धवंचार्द्रपाचकंचाग्निदीपनम् ।
मलबाधामवातानांकफवातविनाशकम् ॥
केवलंलवणेनाथमिश्रितंचाग्निदीपनम् ।
रुच्यंप्रियंसरंप्रोक्तंशोथवातकफापहम् ॥
भोजनात्पूर्वपश्चाच्चकण्ठजिह्वाविशोधकम् ।
जम्बीरसैन्धवयुतंरुचिदंमुखशुद्धिकृत् ॥
मूत्रकृच्छ्रंपाण्डुरोगंरक्तपित्तंव्रणंतथा ।
मूत्राश्मरींज्वरंदाहंपित्तंग्रीष्मेशरद्यपि ॥
नाशयेदितिचप्रोक्तंशेषाविश्वासमागुणाः ।

अर्थ--अदरख रसमें और पाकमें शीतल, मधुर, चरपरा, गरम, हृद्य

हितकारी, भेदक (दस्तावर) अग्निको दीपनकरनेवाला, रूखा, रुचिको उत्पन्न करनेवाला, वीर्य्यजनक, पाचक, सारक, कण्ठको हितकारक तथा मंदाग्नि, सूजन, अरुचि, कफ, वात, कण्ठरोग, खाँसी, श्वास, आनाह, वात, मलबन्ध, वमन और शूलका नाश करे है ।

कांजी -और सैन्धवलवणयुक्त अदरख--पाचक, अग्निप्रदीपक तथा मलबन्ध और आमवातका नाश करे है ।

केवल लवणमिश्रित अदरख--अग्निको दीपन करे, रुचिको उत्पन्न करे, प्रिय, सारक तथा सूजन, वात और कफका नाशक है ।

भोजनके प्रथम भक्षण किया हुआ अदरख -कण्ठ और जिह्वाको शुद्ध करे है । जंभीरी नींबू और सेंधानोनके साथ अदरख मुखको शुद्धि करे है तथा मूत्रकृच्छ्र, पाण्डुरोग, रक्तपित्त, घाव, मूत्ररोग, पथरी, ज्वर, दाह और पित्तको शरदृऋतुमें तथा ग्रीष्मऋतुमें नष्ट करे है, शेष गुण सोंठके समान जानने ।

द्रव्यगुणाः ।

वातपित्तकफेभानांशरीरवनचारिणाम् ।
एकएवनिहंत्यत्रलवणार्द्रककेसरी ॥

अर्थ--वात, पित्त, कफरूपी हाथी जो वनरूपी शरीरमें विचरण करते हैं इनके मारनेको एकही महापराक्रमी लवण और अदरखरूपी सिंह है ।

भोजनाग्रेसदापथ्यंलवणार्द्रकभक्षणम् ॥

अर्थ -भोजनके आदिमें अर्थात् प्रथम लवणसहित अदरखका सेवन करना सदा पथ्य है ।

निषेधः ।

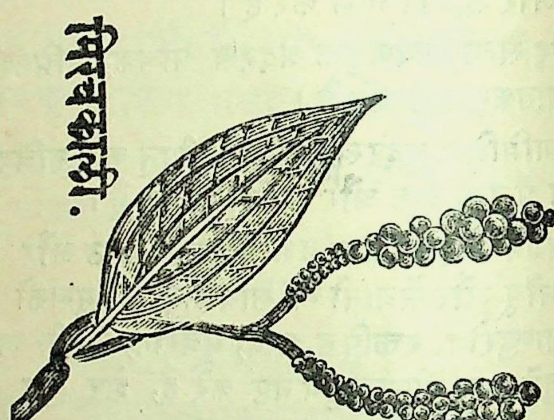
कुष्ठपाण्ड्वामयेकृच्छ्रेरक्तपित्तव्रणज्वरे ।
दाहेनिदाघेशरदिनैवपूजितमार्द्रकम् ॥

अर्थ--अदरख--कोढमें, पाण्डुरोगमें, मूत्रकृच्छ्रमें, रक्तपित्तमें, व्रणरोगमें, ज्वरमें, दाहरोगमें, ग्रीष्मऋतुमें और शरदृऋतुमें अपथ्य है । ऐसा भावमिश्रने लिखा है

विवरण । अदरखका गुल्म होता है, रेतली भूमि और सजल स्थानमें अधिकतासे उत्पन्न होता है, पत्ते छोटी इलायचीके समान होते हैं, इसके

कन्दकोही अदरख कहते हैं । उसी कन्दको सुखाकर सोंठ बनाते हैं, से अनेक जाती हैं ।

मरिचनामानि ।



मरिचंपवितंश्यामंवेणुजंयवनप्रियम् ।
वल्लीजंवेल्लजंशुद्धंकोलकंधर्मपत्तनम् ॥

अर्थ मरिच–पवित, श्याम, वेणुज, यवनप्रिय, वल्लीज, वेल्लज, कोलक, धर्मपत्तन, कोल, (ऊषण, वरिष्ठ, यवनेष्ट, वृत्तफल, शाकाङ्ग, कटुक, शिरोवृत्त, वार, कफविरोधि, मृष्ट, सर्वहित, कृष्ण)

सितमरिचनामानि ।

सितमरिचंशीतोत्थंसितवल्लीजंचवालकंबहुलम् ।
धवलंचन्द्रकमतन्मुनिनामगुणाधिकंचवश्यकरम् ॥

अर्थ- सितमिरच -शीतोत्थ, सितवल्लीज, वालक, बहुल, धवल, सिताख्य)

संस्कृतभाषामें	मरिच, सितमरिच ।
हिन्दीभाषामें	कालीमिरच, सफेद मिरच । दक्षिणी मिरच
वङ्गभाषामें	मरिच, गौलमरिच, सादामरिच ।
मराठीभाषामें	मिरें-पांढरें, मिरीं ।
गुजरातीभाषामें	मरी, तीखा, धोलांमरी ।
कर्णाटकीभाषामें	मेणसु, विलेयमेणसु ।
तैलिङ्गीभाषामें	मरिया, मिरियन ॥
तामिलीभाषामें	मिलगु, मिलाओ ।

अँग्रेजीभाषामें ब्लाकूपेपर Black Pepper
लैटिन्भाषामें पाईपर नैग्रम्। Piper Nigrum
फारसीभाषामें पिल पिले अस्वद हब पिलगिर्द।
अरबीभाषामें फिल फिलअवीद।

अस्यगुणाः।

मरिचंकटुकंतीक्ष्णंदीपनंकफवातजित्।
उष्णंपित्तकरंरूक्षंश्वासंशूलकृमीन्हरेत्।
तथार्द्रं मधुरंपाके नात्युष्णं कटुकंगुरु।
किञ्चित्तीक्ष्णगुणंश्लेष्मप्रसेकि स्यादपित्तलम्॥ (भा. प्र.)

अन्यच्च।

अर्थ--कालीमिरच--चरपरी, तीक्ष्ण, अग्निको दीपन करनेवाली, कफ-वातनाशक, गरम, पित्तजनक, रूखी, तथा श्वास, शूल और कृमिको नष्ट करेहै। कच्ची कालीमिरच--पाकमें मधुर, किंचित् उष्ण, चरपरी, भारी, ईषत् तीक्ष्ण, कफको निकालनेवाली और पित्तकारक नहींहै।

सितमरिचगुणाः।

कटूष्णंलघुतच्छुष्कमवृष्यंकफवातजित्।
नात्युष्णंनातिशीतश्चवीर्यतोमरिचंसितम्॥
गुणवन्मरिचेभ्यश्चचक्षुष्यश्चविशेषतः॥ (सुश्रुतसंहिता)

अर्थ--सफेद मिरच--चरपरी, गरम, हलकी, अवृष्य, कफ वातनाशक इसका वीर्य न अत्यन्त गरमहै और न अत्यन्त शीतलहै, इसके गुण काली मिरचके समान हैं, परन्तु विशेषकरके नेत्रोंको हितकारी है।

अपिच।

कटूष्णंश्वेतमरिचंविषघ्नंभूतनाशनम्।
अवृष्यंदृष्टिरोगघ्नंयुक्तंचैवरसायनम्॥ (रा. नि.)

अर्थ--सफेद मिरच--चरपरी, गरम, विषनाशक, भूतनाशक, अवृष्य, दृष्टिरोगविनाशक और किसीके साथ रसायनहै।

अन्यच्चमरिचगुणाः।

मरिचंकटुकंतिक्तंलघुचोष्णंरुचिप्रदम्।
अग्निदीप्तिकरंतीक्ष्णमवृष्यंछेदिशोषकम्॥

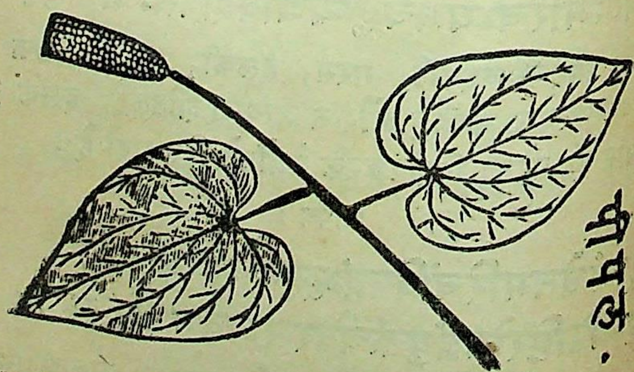
रूक्षंपित्तकरश्चैवकफवातंकृमीञ्जयेत् ।
श्वासंकासंचहृद्रोगंशूलंचैवविनाशयेत् ॥
प्रमेहंचार्शरोगश्चपथ्यंप्रोक्तंपुराविदैः । (निघण्टुरत्ना

अर्थ-कालीमिरच -कडवी, चरपरी, हलकी, गरम, रुचिदायक, दीपक, तीक्ष्ण, अवृष्य, छेदक, शोषक, रूक्ष, पित्तकारक, तथा कफ कृमि, श्वास, खाँसी, हृदयरोग, शूल, प्रमेह और बवासीरका नाश क

कच्चीमिरचका सेक करनेसे सूजन दूर होतीहै, गायकेघीके साथ हुई मिरचका व्यवहार करनेसे अर्शरोगका वियोग होताहै । एक मि सुईके नोंकपर वेधकर उसको अग्नि अथवा दीपकी लोइपै जलावे, धुआँ सूघनेसे हिचकी और शिरकी पीडा शान्त होतीहै ॥ मिरच मिश्रितकर खानेसे अनेक प्रकारके नेत्ररोग वध्वंस होतेहैं ।

विवरण । मिरच लता दक्षिणदेशके त्रिवांकुर मलबारादिकी खाद बाऊ भूमिमें अधिकतासे उत्पन्न होतीहै, वहाँके रहनेवाले इसलताके छोटे टुकडे करके बडे बडे वृक्षोंकी जडमें लगादेतेहैं, तीनवर्षमें लता जाताहै फल पककर लाल होजाते हैं, परन्तु सूखजानेपर कालारंग आज शाक इत्यादिमें कालीमिरच मसाला होगईहै । लाल मिरचके पर्याय लिखे हैं ।

पिप्पली नामानि ।



पिप्पलीमागधीकृष्णाचपलाचञ्चलाकणा ।
उपकुल्याचकोल्याचवैदेहीतिक्ततण्डुला ॥

अर्थ-पिप्पली-मागधी, कृष्णा, चपला, चञ्चला, कणा, उपकुल्या, को वैदेही, तिक्ततण्डुला (उष्णा, शौण्डी, कोला, कटी; एरण्डा,

षणा, पिप्पली, कृकला, कटुबीजा, कोरङ्गी, तिक्ततण्डुला, श्यामा, सूक्ष्मतण्डुला, दन्तकफा, मगधोद्भवा)

संस्कृतभाषामें	पिप्पली ।
हिन्दीभाषामें	पीपल, (र)
वंगभाषामें	पिपुल ।
मराठीभाषामें	पिंपळी ।
गुजरातीभाषामें	लिंडिपीपल ।
कर्णाटकीभाषामें	पिप्पली ।
तैलिंगीभाषामें	पिप्पलु ।
तामिलीभाषामें	पिंपिलि ।
वम्	बङ्गालिपिम्परि ।
अंग्रेजीभाषामें	लाँगपीप्पर । Long pepper
लैटिन्भाषामें	पाइपर लाँग । Piper Louguw
फारशीभाषामें	पिल्पिल् दराज ।
अरबीभाषामें	डारफिल, फिल्ल् ।

अस्या गुणाः ।

पिप्पलीदीपनीवृष्यास्वादुपाकारसायनी ।
अनुष्णाकटुकास्निग्धावातश्लेष्महरीलघुः ॥
पिप्पलीरेचनीहन्तिश्वासकासोदरज्वरान् ।
कुष्ठप्रमेहगुल्मार्शःप्लीहशूलाममारुतान् ॥
आर्द्राकफप्रदास्निग्धाशीतलामधुरागुरुः ।
पित्तप्रशमनीसातुशुष्कापित्तप्रकोपिनी ॥
पिप्पलीमधुसंयुक्तामेदःकफविनाशिनी ।
श्वासकासज्वरहरावृष्यामेध्याग्निवर्धिनी ॥
जीर्णज्वरेऽग्निमान्द्येचशस्यतेगुडपिप्पली ।
कासाजीर्णारुचिश्वासहृत्पाण्डुकृमिरोगनुत् ॥
द्विगुणःपिप्पलीचूर्णाद्गुडोऽत्रभिषजामतः । (भा. प्र.)

अर्थ--पीपल अग्निको दीपन करनेवाली, वीर्यको उत्पन्न करनेवाली, कर्मे स्वादिष्ठ, रसायन, किञ्चित् उष्ण, चरपरी, स्निग्ध, वात-कफ, हलकी, दस्त लानेवाली तथा श्वास, कास, उदररोग, ज्वर, कुष्ठ, प्रमेह, (क्षयरोग) बवासीर, प्लीहा, शूल और आमवातका नाश करेहै।

कच्ची पीपल--कफको उत्पन्न करनेवाली, स्निग्ध, शीतल, मधुर, पित्तको शान्त करनेवाली, और सूखी पीपल, पित्तको कुपित करनेवाली

मधुयुक्त पीपल--मेदरोग, कफ, श्वास, खाँसी और ज्वरनाशकहै, वृद्धक, मेधाजनक और अग्निवर्द्धक है, गुड़मिश्रित पीपल जीर्णज्वर, रोग, मंदाग्नि खाँसी, अजीर्ण अरुचि श्वास, पाण्डुरोग और कृमि नाश करेहै।

पीपलका चूर्ण और सोंठका चूर्ण गुड़ मिलाकर खानेसे आम, शूल, और सूजन दूर होती है।

पीपलको नीमके रसमें उबालकर नास देनेसे अपस्माररोग होता है।

पीपलके काढेमें सहत मिलाकर खानेसे बातज्वर और कफज्वर होता है।

सहतमें पीपलका चूर्ण मिलाकर चाटनेसे मूर्च्छारोग दूर होताहै।

विवरण-पीपलकी बेल जंगवार और मगधदेशमें अधिकतासे होतीहै, इसके पत्ते नागवल्ली अर्थात् पानके समान होतेहैं।

पिप्पलीमूलनामानि।

मूलंतुपिप्पलीमूलंग्रन्थिकंचटकाशिरः।
कणामूलंकोलमूलंचटिकासर्वग्रन्थिकम्॥

अर्थ–मूल-पिप्पलीमूल, ग्रन्थिक, चटकाशिर, कणामूल, कोलमूल, का, सर्वग्रन्थिक, (ग्रंथीक, षड्ग्रन्थि, शिर, कटुग्रन्थि, कटुमूल, सर्वग्रन्थि, पत्राढय, विरूप, शोषसम्भव, सुगन्धि, ग्रंथिल, ऊषण, मागधीजटा)

संस्कृतभाषामें	पिप्पली।
हिन्दीभाषामें	पीपरा (ला) मूल।
वंगभाषामें	पिपुलमूल।
मराठीभाषामें	पिंपळ्मूल।

गुजरातीभाषामें	पीपरीमूलना गंठोडा।
कर्णाटकीभाषामें	पिप्पलियबेरु।
तैलिङ्गीभाषामें	पिप्पली वेरुपिप्पलीदुम्प।
इंग्रेजी भाषामें	पाईपररूट Piper root
लैटिन्भाषामें	पाइपर ओफिसिनेरं Piper officinarum
फारसीभाषामें	फिल्फिल् नोया।
अरबीभाषामें	असलुल् फिलाफल।

अस्यगुणाः।

दीपनंपिप्पलीमूलंकटूष्णं पाचनंलघु।
रूक्षंपित्तकरंभेदिकफवातोदरापहम् ॥
आनाहप्लीहगुल्मघ्नंकृमिश्वासक्षयापहम्। (भा. प्र.)

अर्थ-पीपरामूल-जठराग्निको दीपन करे, चरपरा, गरम, पाचक, हलका, रूखा, पित्तकारक, भेदक तथा कफ, वात, उदररोग, आनाह, प्लीहा, गुल्म, कृमि, श्वास और क्षयरोगका नाश करे है।

अपिच।

भेदनंपिप्पलीमूलंकासामशूलनाशनम्।
पित्तप्रकोपितीक्ष्णोष्णंरूक्षंपाचनरोचनम् ॥

अर्थ-पीपरामूल-दस्तावर, खांसी, आम और शूलनाशक है। पित्तको कुपित करे, तीक्ष्ण, उष्ण, रूक्ष, पाचक और रोचक है।

चविकानामानि।

चव्यंचवणमुच्छिष्टंचविकाकोलवल्लिका।

अर्थ-चव्य, चवण, उच्छिष्ट, चविका, कोलवल्लिका, (चव्या, चविक, चवी, चवि, पुरन्दर, तेजोवती, कोला, नाकुली, उषणा. चव्यक, वशिर, गन्धनाकुली, वल्ली, कोलवल्लि, कोल, कुक्कुटमस्तक, तीक्ष्णकरिकणावल्ली, कुकर, कुटिलसप्तक, कटुका, कटुपाकिनी)

संस्कृतभाषामें	चविका, चव्य।
हिन्दीभाषामें	चव्य।

वंगभाषामें	चई गाच्छ ।
मराठीभाषामें	मिरवेलीचे मूळ, चवळ ।
गुजरातीभाषामें	चवक ।
कर्णाटकीभाषामें	चव्य ।
तैलिंगीभाषामें	सेवासु, चैकार्ण ।
लैटिन्भा०	चविका, एक्स वर्धी आई पाइपरचव।
	Chavica Ezwhrdhi Ayc Piper Ch

अस्यागुणाः ।

चव्यं स्यादुष्णकटुकंलघुरोचनदीपनम् ।
जन्तूद्रेकापहंकासश्वासशूलार्तिकृन्तनम् ॥ (राजनि०

अर्थ-चव्य-गरम, चरपरी, हलकी, रोचक, जठराग्निदीपक तथा कृमि, खांसी, श्वास और शूलविनाशक है ।

अपिच ।

पिप्पलीमूलवत्तस्याविशेषाद्गुदजापहम् ।
चव्यपुष्पंगरश्वासकासक्षयविनाशनम् ॥ (म. नि.)

अर्थ-चव्यके गुण पिपलामूलके समान हैं, विशेषकरके गुदाके रोग दूर करे है ।

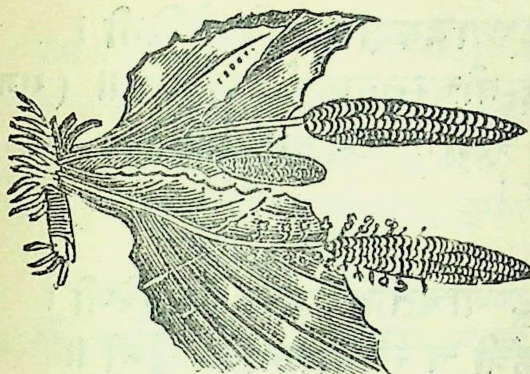
इसका फूल-विष, श्वास, खाँसी और क्षय रोगनाशक है ।

अन्यच्च ।

चवकंकटुकंचोष्णं रुच्यंचाग्नेश्चदीपनम् ।
लघूक्तंचकृमिश्वासकासवातकफापहम् ॥
ज्वरार्शःशूलशमनमृषिभिःपरिकीर्तितम् ।
अन्येगुणास्तुविज्ञेयाःपिप्पलीमूलवद्बुधैः ॥

अर्थ-चव्य-चरपरी, गरम, रुचिकारक, जठराग्निदीपक, हलकी तथा कृमि, श्वास, खाँसी, वादी, कफ, ज्वर, बवासीर और शूलका नाश करे शेष गुण पीपलामूलकी समान जानने. चव्यकी वेल मलवारमें होतीहै, इसके फलको गजपीपर कहते हैं ।

गजपिप्पलीनामानि ।



चविकायाः फलंप्राज्ञैः कथितागजपिप्पली ।
कपिवल्लीकोलवल्ली श्रेयसीवशिरश्चसा ॥

अर्थ-चव्यके फलकोही भिषक् लोक गजपीपल कहते हैं। कपिवल्ली, कोलवल्ली, श्रेयसी, वशिर, गजकृष्णा, (करिपिप्पली, इभकणा, कपिल्ली, कपिल्लिका, कपिवल्लिका, वसिर, गजाह्वा, इभोषणा, कुञ्जरपिप्पली, गजोषणा, चव्यफल, चव्यजा, छिद्रवैदेही, दीर्घग्रन्थि, तेजसी, वर्तुली, स्थूलवैदेही)

संस्कृतभाषामें	गजपिप्पली ।
हिन्दीभाषामें	गजपीपल ।
वङ्गभाषामें	गजपिपुल ।
मराठीभाषामें	मोरवेलीला पिंपळ्या येतात ती ।
कर्नाटकीभाषामें	गजहिप्पली ।
गुजरातीभाषामें	गजपीपर ।
तैलगीभाषामें	पैद्दापिप्पलु ।
लैटिन्भाषामें	प्लैंटगोऍम्प्लक्सि कोलिस् सिन्डाप्सस् जोफिसीनेलिस् Plantago Amplexicaulis Seaubapans Officinalis

अस्यागुणाः ।

गजकृष्णाकटुर्वातश्लेष्महृद्वह्निवर्द्धिनी ।
उष्णानिहंत्यतीसारंश्वासकण्ठामयक्रिमीन् ॥

अर्थ-गजपीपल-चरपरी, वातकफनाशक, अग्निवर्द्धक, गरम तथा अतिसार, श्वास, कण्ठरोग और कृमीका नाश करे है ।

अपिच ।

गजोषणाकटूष्णाचरूक्षामलविशोधिनी ।
बलासवातहन्त्रीचस्तनकर्णविवर्द्धिनी ॥ (राजनि०)

अर्थ-गजपीपल--चरपरी, गरम, रूखी, मलशोधक, कफ वातना[illegible] स्तन और कर्णवर्द्धक है ।

अन्यच्च ।

गजोषणाकटूष्णाचतीक्ष्णामलविशोषिणी ।
बलासवातहंत्री च स्तनलिंगविवर्द्धिनी ॥

अर्थ-गजपीपर--चरपरी, गरम, तीक्ष्ण, मलशोषक तथा कफ, [illegible] शक स्तन और लिंगवर्द्धक है ।

सैंहलीपिप्पलीनामानि ।

सैंहलीसर्पदण्डाचसर्पाङ्गीब्रह्मभूमिजा ।
पार्वतीशैलजामूलंलम्बबीजातथोत्कटा ।
अद्रिजासिंहलस्थाचलम्बदन्ताचजीवला ।
जीवालाजीवनेत्राचकुरवीषोडशाह्वया ॥

अर्थ--सैंहली, सर्पदण्डा, सर्पांगी, ब्रह्मभूमिजा, पार्वती, शैलज[illegible] लम्बबीजा, उत्कटा, अद्रिजा, सिंहलस्था, लम्बदन्ता, जीवला, जी[illegible] जीवनेत्रा, कुरवी ।

अस्या गुणाः ।

सैंहलीकटुरुष्णाचजन्तुघ्नीदीपनीपरा ।
कफश्वाससमीरार्त्तिशमनीकोष्ठशोधिनी ॥(राजनि[illegible]

अर्थ--सिंहलीपीपल--चरपरी, गरम, कृमिनाशक, जठराग्निको [illegible] करनेवाली तथा कफ, श्वास और वातकी पीडाको शान्ति करनेवाली [illegible] कोठेको शुद्ध करे है ।

वनपिप्पलीनामानि ।

वनादिपिप्पल्यभिधानयुक्तं सूक्ष्मादिपिप्पल्यभिधानमेत[illegible]
क्षुद्राचपिप्पल्यभिधानयोग्यं वनाभिधापूर्वकणाभिधान[illegible]

अर्थ- वनपिप्पली, सूक्ष्मपिप्पली, क्षुद्रपिप्पली, वनकणा ।

अस्य गुणाः।

वनपिप्पलिकाचोष्णातीक्ष्णारुच्याचदीपनी।
आमाभवेद्गुणाढ्याचातुशुष्कास्वल्पगुणास्मृता॥ (राजनिघण्टु)

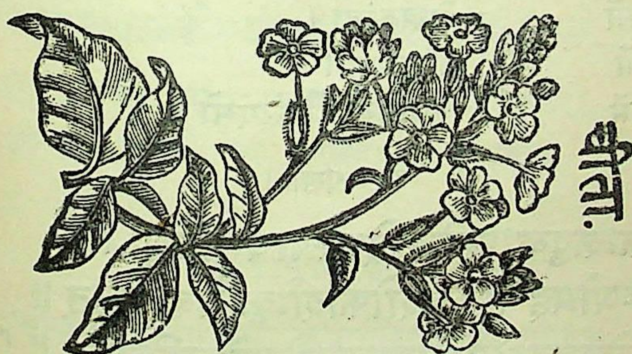
अर्थ-वनपीपल-गरम, तीक्ष्ण, रुचिकारक और अग्निप्रदीपक है, कची वनपीपल अधिक गुणवाली है और सूखी स्वल्प गुणवाली है।

मर्कटीपिप्पलीगुणाः।

मर्कटीपिप्पलीतिक्तातुवराम्रुरसास्मृता।
मूत्रकृच्छ्राश्मरीयोनिशूलविस्फोटकाञ्जयेत्॥ (नि. र.)

अर्थ-वानरीपीपल-कडवी, कषैली स्वादिष्ठ तथा मूत्रकृच्छ्र, पथरी, योनिशूल और विस्फोटकका नाश करेहै।

चित्रकनामानि।



चीता.

चित्रकोऽनलनामाचपाठीव्यालस्तथोषणः।

अर्थ-चित्रक, अनलनामा, पाठी, व्याल, ऊषण, कृष्णवर्मा, जातवेदा, बर्हि, विभाकर, विभावसु, बृहद्भानु, वैश्वानर, शिखावान् शुचि, शुष्मा, सप्तार्चि, हिमाराति, हिरण्यरेता, अग्नि, शार्दूल, चित्र, पाठी, कुट, शिखी, कृशानु, दहन, व्याल, ज्योतिष्क, पालक, अनल, दारुण, वह्नि, पावक, शम्बर, द्वीपी, चित्राङ्ग, दाहक, शूर, पाठीन, दारुण, अग्निक, वल्लरी, पाली, कुट, शिखी, लोहिताङ्ग, हुतभुक्, माली, वह्नि, पाची, वह्निनामा)

रक्तचित्रकनामानि।

कालोव्यालःकालमूलोतिदीप्योमार्जारोग्निर्दाहकःपावकश्च।
चित्रांगोयंरक्तचित्रोमहांगःस्याद्रुद्राह्वश्चित्रकोन्योगुणाढ्यः॥

अर्थ--काल, व्याल, कालमूल, अतिदीप्य, मार्जार, अग्नि, दाहक, पा[illegible] चित्राङ्ग, रक्तचित्र, महाङ्ग, (रक्तचित्रक, उषर्बुधाह्वय, द्वयाग्नि, [illegible] ह्रस्वाग्नि)

संस्कृतभाषामें	चित्रक रक्तचित्रक ।
हिन्दीभाषामें	चीता, लालचीता ।
वंगभाषामें	चितेगाछ, एङचिते, चिता ।
मराठीभाषामें	चित्रक, रक्तचित्रक ।
कर्णाटकीभाषामें	चित्रमूल, केपिनचित्रमूल ।
तैलङ्गीभाषामें	चित्रमूलमु एरचित्र ।
तामिलीभाषामें	शिवपु, चित्रिर ।
उर्दू	ध्रुवचिता, रक्तचिता ।
गुजरातीभाषामें	चित्रो ।
लैटिन्भाषामें	प्लंबिगोरोझियया--प्लंबेगोझिलेनिका । Plumbago rosea Plumbago Zeylan[illegible]
फारसीभाषामें	बेखवरंदा ।
अरबीभाषामें	शितरझ ।
अंग्रेजीभाषामें	पलंविगोकौरुलेऐसो ।

अस्य गुणाः ।

चित्रकःकटुकःपाकेवह्निकृत्पाचनोलघुः ।
रूक्षोष्णोग्रहणीकुष्ठशोफार्शःकृमिकासनुत् ॥
वातश्लेष्महरोग्राहीवातार्शःश्लेष्मपित्तहृत् ॥ (भा. प्र.)

अर्थ--चीता--पाकमें चरपरा है, अग्निकारक, पाचक, हलका, [illegible] गरम तथा संग्रहणी, कोढ, सूजन, बवासीर, कृमि, खाँसी और [illegible] कफका नाश करेहै । ग्राही है तथा वादीकी बवासीर, और कफपित्त[illegible] दूर करेहै ।

अन्यच्च ।

चित्रकःपाचकोरूक्षोलघुश्चाग्निप्रदीपनः ।
पाकेकटुर्ग्राहकश्चतिक्तोष्णोरुचिदोमतः ॥
रसायनोऽग्निसदृशःशोथकुष्ठार्शकासहा ।
कृमीन्वातोदरंकण्डूंयकृतंग्रहणींतथा ॥

आमंक्षयंचोदरंचनाशयेदितिकीर्तितः।
कटुत्वात्कफहाप्रोक्तस्तिक्तत्वात्पित्तनाशकः॥
उष्णत्वाद्वातहाप्रोक्तोमुनिभिस्तत्त्वदर्शिभिः॥ (नि० र०)

अर्थ-चीता-पाचक, रूखा, हलका, अग्निदीपक, पाकके समय चरपरा, ग्राही, कडुवा, गरम, रुचिदायक, रसायन, अग्निके समान पराक्रमी तथा सूजन कोढ, बवासीर, खांसी, कृमि, वातोदर, कण्डू, यकृत्, संग्रहणी, आम, क्षय और उदररोगका नाश करे है।

यह चरपरेपनसे कफका, कडवेपनसे पित्तका और उष्णतासे वातका नाश करेहै, इसप्रकार चीता त्रिदोषनाशक है।

रक्तचित्रकगुणाः।

स्थूलकायकरोरुच्यःकुष्ठघ्नोरक्तचित्रकः।
रसेनियामकोलोहेवेधकश्चरसायनः॥ (रा० नि०)

अर्थ-लालचीता-देहको स्थूल करनेवाला, रुचिकारी, कुष्ठनाशक, पारेको बांधनेवाला, लोहेमें वेध करनेवाला, रसायन, और शरीरको नूतन करेहै।

कृष्णचित्रकगुणाः।

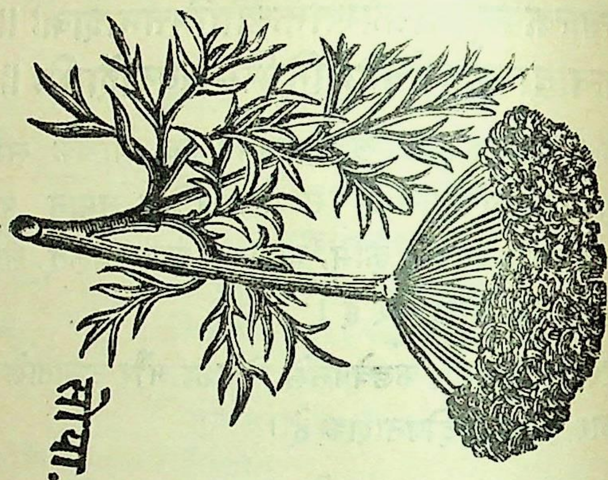
केशाःकृष्णाःप्रजायन्तेकृष्णचित्रकभक्षणात्।
कृष्णकृष्णंसमुत्पाटचगोभिराघ्रातमेववा॥
क्षीरमध्येक्षिपेद्वापिक्षीरंकृष्णंप्रजायते।

अर्थ-कालेचीतेको भक्षण करनेसे केश काले होजातेहैं, गायके सुंघे हुए काले चीतेको लाकर दूधमें डालनेसे दूध काला होजाता है।

विवरण। क्षुप होताहै, चीतेकी अनेक जातीहैं सफेद फूलका, लाल फूलका, काले फूलका, पीले फूलका, इनमें सफेद फूलका सर्वस्थानोंमें होताहै और लालफूलवाले तथा और फूलके चीते देखनेमें बहुत कम आते हैं।

व्यवहार-मूल, मूलकी छाल, छाल मात्रा ४ मासेकी।

शतपुष्पानामानि ।



शताह्वाशतपुष्पाचशताक्षीशतपुष्पिका ।
कारवीतालपर्णीचमाधवीशोफकामिसिः ॥

अर्थ–शताह्वा, शतपुष्पा, शताक्षी, शतपुष्पिका, कारवी, ता[illegible] माधवी, शोफका, मिसि (शोया, शिफा, अतिच्छत्रा, अत्राक्पुष्पी, [illegible] संघातपत्रिका, वज्रपुष्पी, सुपुष्पिका, शतप्रसूना, बहला, पुष्पाह्वा, [illegible] त्रिका, शालेय, मिशी, सालेय, मिसी, पोति, अहिच्छत्रा, संघातप[illegible] छत्रा, तालपर्णी, मिषी, शालेया, शीतशिवा, शालीना, वजना [illegible] अतिच्छत्रा)

संस्कृतभाषामें	शतपुष्पा ।
हिन्दीभाषामें	सोया--सोयेके बीज ।
वंगभाषामें	शुलफा ।
मराठीभाषामें	बाळंतशोप ।
गुजरातीभाषामें	शुवानी भाजी–शूवादाणा ।
कर्णाटकीभाषामें	सब्जसिगे ।
तैलिङ्गीभाषामें	पेद्दसदापचेट्टु--सदापा ।
अग्रजीभाषामें	डिलसीड् Dillseed
लैटिनभाषामें	एनिथं ग्रेवीयोलेन्स Aurthum Graveo[illegible]
फारसीभाषामें	शुत-तुख्मेशूत ।
अरबीभाषामें	शीतव्वत वजरुल सीव्वत ।

शतपुष्पागुणाः ।

शतपुष्पालघुस्तीक्ष्णापित्तकृद्दीपनीकटुः ।
उष्णाज्वरानिलश्लेष्मव्रणशूलाक्षिरोगहृत् ॥ (भा. प्र.)

अर्थ--सोया हलका, तीक्ष्ण, पित्तजनक, जठराग्निको दीपन करनेवाला, चरपरा, गरम तथा ज्वर, वात, कफ, व्रण, शूल और नेत्ररोगोंको हरेहै ।

अपिच ।

शतपुष्पाकटुस्तिक्तातीक्ष्णोष्णादीपनीलघुः ।
पित्तलाकफवातघ्नीविशेषाद्योनिशूलहृत् ॥ (ग. नि.)

अर्थ-सोया--चरपरा, कडवा, तीक्ष्ण, गरम, अग्निप्रदीपक, हलका, पित्तकारक, कफ वातनाशक और विशेष करके योनिशूलका नाश करेहै ।

अन्यच्च ।

शताह्वापित्तलालघ्वीतिक्ताकट्वग्निदीपनी ।
उष्णामेध्यावस्तिकर्मप्रशस्ताकफनाशिनी ॥
वातंज्वरश्चशूलश्चयोनिशूलश्चनाशयेत् ।
आध्मानंचक्षूरोगश्चव्रणंचैवविनाशयेत् ॥

अर्थ--सोया--पित्तजनक, हलका, कडवा, चरपरा, अग्निदीपक, गरम मेधाजनक, वस्तिकर्ममें प्रशस्त तथा कफ, वात, ज्वर, शूल, योनिशूल, आध्मान, नेत्ररोग, व्रण और कृमिका नाश करेहै ।

अस्या आकृतिः ।

शतपुष्पासूक्ष्मपत्रापीतपुष्पातिछत्रका ।
प्रसिद्धाक्षेत्रविख्यातादीपनोक्तामहर्षिभिः ॥

अर्थ--सोयेके पत्ते सूक्ष्म होतेहैं, फूल पीला होताहै, छत्र बहुत होतेहैं, खेतमें उत्पन्न होतीहै और प्रसिद्ध है तथा दीपन है ।

मधुरिकानामानि ।

सितामधुरिकाचापिमाधुरीतापसप्रिया ।
गन्धाधिकाघोषवतीसुगन्धाचतृषाहरा ॥

अर्थ--सिता मधुरिका, माधुरी, तापसप्रिया, गन्धाधिका, घोषवती, गन्धा, तृषाहरा, (छत्रा, शालेय, शालीन, मिश्रेया, मधुरा, मिसी,

शीतशिवा, सुपुष्पिका, शतप्रसूना, पुष्पाह्वा, मिशी, घोषा, पोतिका, छत्रा, माधवी, कारवी, संघातपत्रिका, अवाक्पुष्पी, तालपर्णी, म शतपत्रिका, वनपुष्पा, भूरिपुष्पा, मधुरी और शतपुष्पा)

संस्कृतभाषामें	मधुरिका, शतपुष्पा, मिश्रया ।
हिन्दीभाषामें	सौंफ ।
वंगभाषामें	मौरी ।
मराठीभाषामें	बडीशोफ ।
गुजरातीभाषामें	वरियाली ।
कर्णाटकीभाषामें	कासंछसिगे ।
तैलिङ्गीभाषामें	पेद्दजिल कुरह, सौंफ ।
तामिलीभाषामें	सोहि किरे ।
अंग्रेजीभाषामें	फेनल्सीड़ । Feual seed
लैटीन्भाषामें	फेनिक्युलं बल्गोरी ।Fornieulum Vu
फारसीभाषामें	बादियान ।
अरबी भाषामें	एजियानज, असलुल् एजियानज ।

अस्या गुणाः ।

शतपुष्पातुमधुरावातपित्तहरागुरुः । (राजवल्लभ)

अर्थ--सौंफ, मधुर, वात--पित्तनाशक और भारीहै ।

अपिच ।

शतपुष्पात्रिदोषघ्नीमेध्यापथ्यारुचिप्रदा । (आत्रेयसंहि

अर्थ--सौंफ--त्रिदोषनाशक, मेधाजनक, पथ्य और रुचिको उत्पन्न क

अन्यच्च ।

माधुरीकटुकापाकेक्षीणांगर्भप्रदासरा ।
तिक्ताकट्वीचमधुरावृष्याचाग्निप्रदीपनी ॥
वातंज्वरंचशूलंचदाहंनेत्ररुजंतृषाम् ।
व्रणंवान्तिमतीसारमामंचैवविनाशयेत् ॥ (व. नि.)

अर्थ--मधुरिका अर्थात् सौंफ पचनेमें चरपरी, गर्भदायक, सारक, क चरपरी, मधुर, वीर्य्यजनक, अग्निप्रदीपक तथा वात, ज्वर, शूल, दाह रोग, पियास, घाव, अतिसार और आमका नाश करेहै ।

अन्यच्च ।

मिश्रेयामधुरास्निग्धाकटुःकफहरापरा ।
वातपित्तोत्थदोषघ्नीप्लीहजन्तुविनाशिनी ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-सौंफ-मधुर, स्निग्ध, चरपरी, कफनाशक तथा वातपित्तके दोष, प्लीहा और कृमिको दूर करे है ।

अपिच ।

मिश्रेयारोचनीवृष्यादाहपित्तास्रनाशिका ।

अर्थ-सौंफ-रुचिकारी, वीर्यजनक, तथा दाह और रक्तपित्तका नाश करे है ।



अस्या जलगुणाः ।

तज्जलंशीतलंरुच्यंकटुदीपनपाचनम् ।
मधुरंतृड्हृद्भ्रान्तिपित्तंदाहंचनाशयेत् ॥ (वि० ति० भा०)

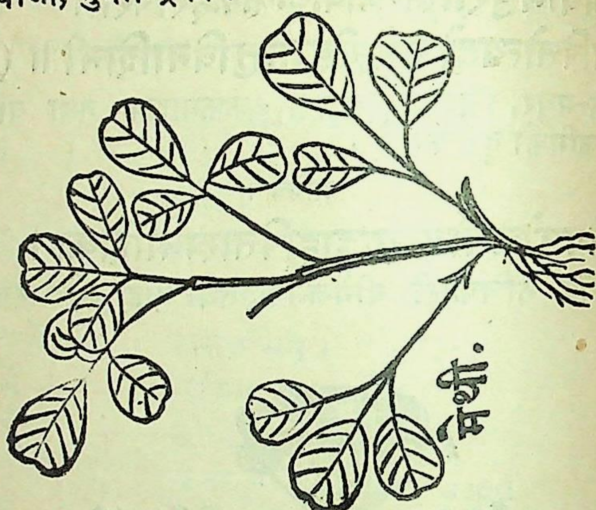
अर्थ-सौंफका अर्क -शीतल, रुचिकारक, चरपरा, अग्निको दीपन करने वाला, पाचक, मधुर तथा तृष्णा, वमन, पित्त और दाहको दूर करे है । इसके क्षुप सोयेकी समान खेत और बागोंमें होते हैं ।

मेथिकानामानि ।

मेथिकामेथिनीमेथीदीपनीबहुपत्रिका ।
वेधनीगन्धबीजाचज्योतिर्गन्धफलातथा ।
वल्लरीचन्द्रिकामन्थामिश्रपुष्पाचकैरवी ।
कुञ्चिकाबहुपर्णीचपीतबीजामुनीन्द्रिका ॥

अर्थ-मेथिका, मेथिनी, मेथी, दीपनी, बहुपत्रिका, वेधनी, गन्धबीजा

ज्योति, गन्धफला, वल्लरी, चन्द्रिका, मन्था, मिश्रपुष्पा, कैरवी, बहुपर्णी, पीतबीजा, मुनीन्द्रिका ।



संस्कृतभाषामें	मेथिका ।
हिन्दीभाषामें	मेथी ।
वंगभाषामें	मेथी ।
मराठीभाषामें	मेथी ।
गुजरातीभाषामें	मेथी ।
कर्णाटकीभाषामें	मेथपक ।
तैलिङ्गीभाषामें	मेतुलु ।
तामिलीभाषामें	वेन्ड्यम् ।
इंग्रेजीभाषामें	फेनुग्रीक् । Fenugreek
लैटिन्भाषामें	ट्रायगोनेला फेनंग्रिक Trigonella Falnum gr
फारसीभाषामें	तुख्मे शमपीत ।
अरबीभाषामें	वजरुल् हुल्बा ।

अस्यागुणाः ।

मेथिकावातशमनीश्लेष्मघ्नीज्वरनाशिनी ।
ततःस्वल्पगुणाबल्यावाजिनां सातुपूजिता ॥ (भा०

अर्थ-मेथी-वातको शांति करै, कफ, और ज्वरका नाश करैहै, इसकी अपेक्षा स्वल्प गुणवाली है और घोडोंकेलिये अत्यन्त हितकारी

अपिच ।

मेथिकाकटुरुष्णाचरक्तपित्तप्रकोपिनी ।
अरोचकहरादीतिकरीवातघ्नदीपिनी ॥ (राजनिघण्टु

अर्थ-मेथी--चरपरी, गरम, रक्तपित्तनाशक, अरुचिहारक, दीप्तिकारक, वातविनाशक और अग्निको दीपन करे है ।

अन्यच्च ।

मेथिकाकटुकाचोष्णारक्तपित्तप्रकोपनी ।
दीपनीचरसेतिक्तामलावष्टम्भिकालघुः ॥
रूक्षाहृद्याबलकरीज्वरारोचकवान्तिहा ।
वातरक्तंकफंकासंवातमर्शांकृमीन्क्षयम् ॥
शुक्रंचनाशयत्येषाप्रोक्तापूर्वाचिकित्सकैः । (नि. र.)

अर्थ--मेथी-चरपरी, गरम, रक्तपित्तको कुपित करनेवाली, दीपन रसमें कडवी, मलावष्टम्भक, हलकी, रूखी, हृदयको हितकारी. बलकारक तथा ज्वर, अरोचक, वमन, वातरक्त, कफ, खाँसी, वादी, बवासीर, कृमि और शुक्रका नाश करे है ।

अन्यच्च ।

मेथिकावातशमनीवोजिकावातलामता ।

अर्थ-मेथी-वातको शान्त करे है और वनमेथी वातको उत्पन्न करे है मेथी खेतोंमें बोइजाती है, फूल पीला होता है और कली आती हैं ।

चन्द्रशूरनामानि ।

चन्द्रिकाचर्महन्त्रीचपशुमेहनकारिका ।
नंदिनीकारवीभद्रावासुपुष्पासुवासरा ॥

अर्थ-चन्द्रिका, चर्महन्त्री, पशुमेहनकारिका, नंदिनी, कारवी, भद्रा, वासुपुष्पा, सुवासरा, (अशालिक, कालमेषा, दरकृष्ण, दीर्घबीज, रक्तरामी, सद्धप्रयोजना)

संस्कृत भाषामें	चन्द्रशूर, अहालिम ।
हिन्दी भाषामें	हालो हालिम ।
मराठी भाषामें	आहाळींव ।
गुजराती भाषामें	अशेलियो ।
बंग भाषामें	हालिम ।
इंग्रेजी भाषामें	कामन, क्रेस् । Common crcss
लेटिन् भाषामें	लेपिडियं, सटीवं । Lepibnm Sativum

फारसी भाषामें हालमतुख्मतरातेजक ।
अरबी भाषामें हवुररशाद, हाकम, बजरुलजिरजिर।

अस्यागुणाः ।

चन्द्रशूरंहितंहिक्कावातश्लेष्मातिसारिणाम् ।
असृग्वातगदद्वेषिबलपुष्टिविवर्द्धनम् ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-हालो-वात, कफ, अतिसार और वातरोगका नाश करे बल और पुष्टिबर्द्धक है। अपिच ।

दरकृष्णोवातशूलगुल्मघ्नःस्तन्यपुष्टिकृत् ।
बल्योवाजिकरःपानाल्लेपाच्छोणितशूलनुत् ॥ (शो

अर्थ-हालो-वात, शूल और गुलमनाशक है, स्तनोंमें दूध बढाने बलकारक, वाजीकरणकारक, इसको पानीमें पीसकर पीनेसे तथा इ करनेसे रुधिरविकार और शूल नष्ट होता है ।

अन्यच्च ।

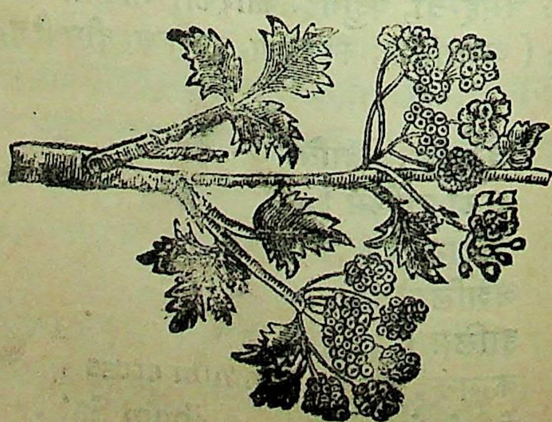
अहालिमंमतंचोष्णंतिक्तंत्वग्दोषनाशनम् ।
वातंगुल्मंनाशयतीत्येवंप्रोक्तंचिकित्सकैः ॥ (नि.

अर्थ-हालो-गरम, कडवा, त्वचाके दोषोंका नाश करै तथा वा गुल्मनाशक है। अपिच ।

अभिघातरुजंहन्तिसदुग्धोहरकृष्णकः ।
त्वग्दोषान्वातरोगांश्चनेत्ररोगान्सशोणितान् ॥ (वै

अर्थ-दुग्धयुक्तहालो-अभिघातरोग, त्वचाके रोग, वातरोग, और रुधिरविकारोंको दूर करे है इसका सरसोंकी समान क्षुप होता नीले रङ्गका होता है। मात्रा ६ मासेकी ।

यवानीनामानि ।



यवानीदीप्यकोदीप्योभूतिकश्चयवानिका।
यवाग्रजोग्रगन्धाचयवाह्वाभूकदंबकः॥

अर्थ-यवानी, दीप्यक, दीप्य, भूतिक, यवानिका, यवाग्रज, उग्रगन्धा, [ह्वा], भूकदम्बक (ब्रह्मदर्भा, क्षेत्रयवानिका, यवसाह्व, दीपनी, दीपिनी, [ा]रि, यवजदीपनीय, शूलहंत्री, यमानिका, उग्रा, तीव्रगन्धा, अजमोदिका, [ग]णगन्धा, ह्वा, अग्निवर्धिनी, भूमिकदम्बक और अजमोदा)

संस्कृतभाषामें	यवानी।
हिन्दीभाषामें	अजवाइन। अजमान।
वङ्गभाषामें	यमानी योयान्।
मराठीभाषामें	ओंवा
गुजरातीभाषामें	अजमा।
कर्णाटकीभाषामें	ओड, उंडु।
तैलिंगीभाषामें	वाम्रु। ओममी।
तामिलीभाषामें	अमन।
इंग्रेजीभाषामें	बिशप्स विडसीड Bishopa Weed Secd
लैटिन्भाषामें	केरं कोपटिकम् टेकोटिस्अजवान्। Carurn Copticum Plychotis
फारसीभाषामें	नानुखा।
अरबीभाषामें	कमूनमुल्की।

यवानीगुणाः।

यवानीपाचनीरुच्यातीक्ष्णोष्णाकटुकालघुः।
दीपनी च तथा तिक्तापित्तलाशुक्रशूलहृत्॥
वातश्लेष्मोदरानाहगुल्मप्लीहकृमिप्रणुत्। (भावप्रकाश)

अर्थ-अजवायन-पाचक, रुचिकारक, तीक्ष्ण, उष्ण, चरपरी, हलकी, [दीप]न, कडवी, पित्तवर्धक तथा शुक्र, शूल, वात, कफ, उदररोग, आनाह, [गुल्म], प्लीहा और कृमिका नाश करे है।

अपिच।

यवानीकटुतिक्तोष्णावातार्शःश्लेष्मनाशिनी।
शूलाध्मानकृमिच्छर्दिमर्दिनीदीपनीपरा॥ (रा. नि.)

अर्थ-अजवायन-चरपरी, कडवी, गरम तथा वातकी बवासीर, शूल, आध्मान, कृमि और वमनको दूर करे है और परम दीपन है।

अन्यच्च ।

यवानीकुष्ठशूलघ्नीहृद्यापित्ताग्निवर्द्धिनी ।

अर्थ-अजवायन-कोढ और शूलनाशक है, हृदयको हितकारी है, तथा अग्निवर्द्धक हैं ।

अपिच ।

यवानीकटुकातिक्तारुच्याचोष्णाग्निदीपनी ।
पाचनीपित्तलातीक्ष्णालघुहृद्याचसारिका ॥
वृष्यावातार्शकफरुक्शूलाध्मानवमिकृमीन् ।
शुक्रदोषोदरानाहहृद्रोगप्लीहगुल्मकान् ॥
द्वंद्वरोगामवातांश्च नाशयेदितिकीर्तिता । (नि. र.

अर्थ-अजवायन-चरपरी, कडवी, रुचिकारक, गरम अग्नि पाचक, पित्तजनक, तीक्ष्ण, हलकी, हृदयको हितकारी, सारक, वी तथा बादीकी बवासीर, कफ, शूल, अफारा, वमन, कृमि, शु उदररोग, आनाह, हृदयरोग, प्लीहा, गुल्म, द्वन्द्वजरोग, और आम नाश करे है ।

अजमोदानामानि ।

अजमोदाखराश्वाचमयूरोदीप्यकस्तथा ।
तथाब्रह्मकुशाप्रोक्ताकारवीलोचमस्तकः ॥

अर्थ-अजमोदा, खराश्वा, मयूर, दीप्यक, ब्रह्मकुशा, कारवी, लो स्तक, (खराह्वा, वस्तमोदा, उग्रगन्धा, मर्कटी, मोदा, गन्धदला, कावेरी, अन्धपत्रिका, मायूरी, शिखिमोदा, मोदाढ्या, वह्निदीपिका, कोशी, विशाली, हयगन्धा, उग्रगंधिका, मोदिनी, फलमुख्या, विशल्या)

संस्कृतभाषामें	अजमोदा ।
हिन्दीभाषामें	अजमोद ।
वंगभाषामें	वनयमानी, वनयुयान, वनयोयान्, वनजैन ।
मराठीभाषामें	अजमोदा ।

गुजरातीभाषामें	बोडीअजमोद ।
कर्णाटकीभाषामें	अजमोदा ।
तैलिङ्गीभाषामें	आजमोदा, वामं ।
लैटिन्भाषामें	एप्यंग्रेत्रियोलेन्स Apium Graveolens
अग्रेजीभाषामें	सेलेरीसीड Celery seed
फारसीभाषामें	करपस ।
अरबीभाषामें	हबुलकबुकेरफस ।

अस्यागुणाः ।

अजमोदाकटुस्तीक्ष्णादीपनीकफवातहृत् ।
उष्णाविदाहिनीहृद्यावृष्याबलकरीलघुः ॥
नेत्रामयकफच्छर्दिहिक्कावास्तिरुजोहरेत् (भा० प्र०)

अर्थ-अजमोद-चरपरा, तीक्ष्ण, जठराग्निप्रदीपक, कफवातनाशक, गरम, दाहजनक, हृदयको हितकारी, वीर्यवर्द्धक, बलकारक, हलका तथा नेत्ररोग, कफ, वमन, हिचकी, और वस्तिरोगका नाश करेहै ।

अपिच ।

अजमोदाकटुरुष्णारूक्षाकफवातहारिणीरुचिकृत् ।
शूलाध्मानारोचकजठरामयनाशिनीचैव ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-अजमोद-चरपरा, गरम, रूखा, कफवातनाशक, रुचिकारक तथा शूल, अफरा, अरोचक और उदररोगका नाश करेहै ।

अन्यच्च ।

अजमोदोरुचिकरोदीपकःकटुरूक्षकः ।
उष्णोविदाहीहृद्यश्चवृष्योबलकरोलघुः ॥
तिक्तोमलस्तम्भकरग्राहकःपाचकःस्मृतः ।
आध्मानशूलकफहृद्वातारोचकनाशनः ॥
उदराणिकृमींश्चैववान्तिनेत्ररुजंजयेत् ।
वस्तिशूलंदन्तरोगंगुल्मशुक्ररुजंतथा ॥ (नि० र०)

अर्थ-अजमोद-रुचिकारक, दीपन, चरपरा, रूखा, कडवा, मलस्तम्भक,

उदरके रोग, कृमि, वमन. नेत्ररोग, वस्ति, शूल; दन्तरोग, गुल्म (वीर्यके विकारको दूर करेहै ।)

पारसीकाजमोदानामानि ।

यवानीयायवानीस्याच्चौहारोजन्तुनाशनः ।
पारसीयावनीगन्धा छारश्चखरपुष्पिका ॥

अर्थ-यवानीया, यवानी, चौहार, जन्तुनाशन, पारसी, यावनी, छार, खरपुष्पिका ।

संस्कृतभाषामें	पारसी ।
हिन्दींभाषामें	छुहरी अजवाइन, छुहारी अजमोद ।
मराठीभाषामें	किरमाणीओंवा, सूरबंदीचें फूल ।
गुजरातीभाषामें	छुवारी अजमोद करमाणी दीनेची ।
लैटिन्भाषामें	आर्टिमिस्या, मेरिटिमा Artiच्चisia Marit
फारसीभाषामें	तुख्मइप्स ।

अस्या गुणाः ।

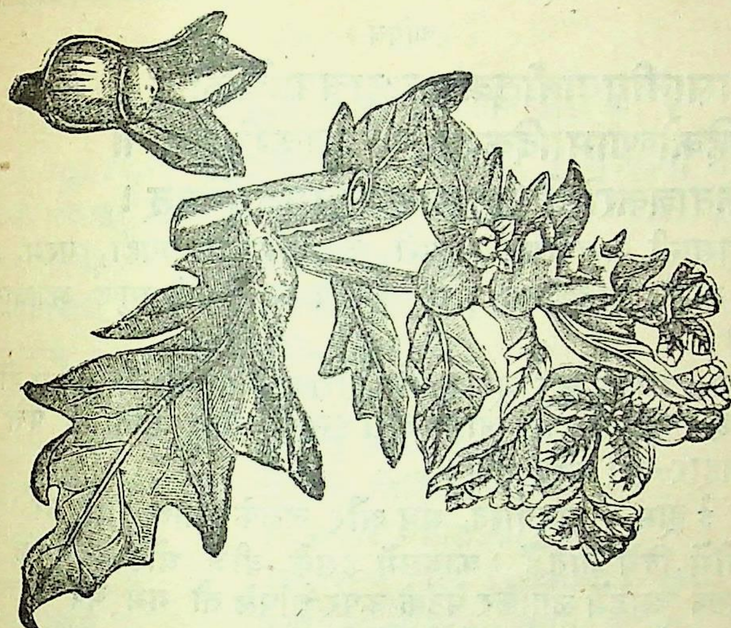
पारसीकयवानीतुतिक्तोष्णाकटुतीक्ष्णा ।
अग्निदीप्तिकरीवृष्यालघ्वीचैवप्रकीर्त्तिता ॥
त्रिदोषाजीर्णकृमिनुच्छूलामस्यचनाशिनी ।
विशेषात्तुगुणास्त्वन्येयवानीवप्रकीर्त्तिताः ॥ (नि० र०)

अर्थ-छुहारी-अजवायन, कडवी, गरम, चरपरी, तीक्ष्ण, अग्निको दीप्त करनेवाली, वीर्य्यजनक, हलकी, तथा त्रिदोष, अजीर्ण, कृमि, शूल आमको नष्ट करे है, शेषगुण अजवायनकी समान हैं। इसका वृक्ष होता पत्ते गुलदाउदीकी समान होतेहैं । फूल बारीक होताहै ।

खुरासानी यवानीनामानि ।

यवानीयावनीतीव्रातुरुष्कामदकारिणी ।
दीप्यःश्यामःकुबेराख्योमादकोमदकारकः ॥

अर्थ-यवानी, यावनी, तीव्रा, तुरुष्का, मदकारिणी, दीप्य, श्याम, कुबेराख्य, मादक, मदकारक ।



संस्कृतभाषामें	खुरसानी, पारसीक यवानी ।
हिन्दीभाषामें	खुरासानी, अजवायन ।
वंगभाषामें	खुराशानी, योयान (यमानी)
मराठीभाषामें	खुरासाणी, ओवा, खुरसाण ।
गुजरातीभाषामें	खुरसाणी, अजमा ।
तैलिङ्गीभाषामें	खुरसाण वामु ।
वो०	खोरसनी, उभा ।
तामिलीभाषामें	खोरसनी, ओनाम शिट्टामुट्टि ।
अंग्रेजीभाषामें	हेनबेन । Henbane.
लैटिन्भाषामें	हायो स्यामस, नाईजर Hyoscyamus Niger
फारसीभाषामें	वंज, तुख्मवंजे ।
अरबीभाषामें	वजरुल वंज, अवीद शीकरान् ।

अस्यागुणाः ।

खुरासानीयवानीतुयवानीसदृशागुणैः ॥
विशेषात्पाचनीरुच्याग्राहिणीमादिनीगुरुः ॥ (भा० प्र०)

अर्थ- खुरासानी अजवायनके गुण अजवायनके समान हैं; किन्तु विशेष करके पाचकहै, रुचिकारीहै, ग्राही मदकारक और भारी है ।

अपिच ।

खुरासानीयवानीतुकटुरूक्षाचपाचिका ।
ग्राहिकोष्णामादिकाचगुर्वीवातकरीमता ॥
कफनाशकरीप्रोक्तागुणास्त्वन्येयवानिवत् ।

अर्थ-खुरासानी अजवायन-चरपरी, रूखी, पाचक, ग्राही, गरम, [illegible] करनेवाली, भारी, वातकारक और कफनाशक है, शेषगुण अजवा[illegible] समान हैं ।

विवरण । इसका क्षुप यूरोप और ऐशियाके महादशोंमें उत्पन्न हो[illegible] आजकल सहारनपुरकी ओर अधिकतासे इसकी खेती होती है पत्ते[illegible] होतेहैं । व्यवहार--पत्ते और बीज ।

यह बीज ½ ड्राम १ ड्राम्पोस्त, मधु और जलके साथ मिलाकर [illegible] वातादि रोगोंमें दिये जाते हैं । काबुलमें इसके बीज घोड़ीके दूधके [illegible] पीसकर भैंसके चमडेमें लगाकर पेटके ऊपर बांधले तो गर्भ बंद होजा[illegible] यह कहावत यहांपर बराबर चली आती है ।

इसके पत्तोंका अर्क जौके आटेमें मिलाकर उसकी पुटली करे तो [illegible] तथा उसकी पीडा दूर होजायगी । एक बूंद इसको आँखमें लगानेसे आँ[illegible] पीडा जाती रहती है ।

साधारणजीरकनामानि ।



अजाजीजीरकोजीरोदीप्यकोजरणाकणा ।

अर्थ-अजाजी, जीरक, जीर, दीप्यक, जरणा, कणा (जीर्ण [illegible] जीरण, अजाजिका वह्निसख, मागध, दीपक)

गौरजीरकनामानि ।

शुक्लाजाजीकणाख्यातादीर्घकःकणजीरकः ।

अर्थ-शुक्लाजाजी, कणा, दीर्घक, कणजीरक, (अजाजी, गौरजीरक, श्वेतजीरक, कणाह्वा, कणजीर, सितदीप्य, दीर्घकणा, सिताजाजी, गौराजाजी)

संस्कृतभाषामें	जीरक, सितजीरक ।
हिन्दीभाषामें	जीरा, सफेदजीरा ।
वङ्गभाषामें	जीरे, सादाजीरे ।
मराठीभाषामें	जिरें, पांढरें जिरें ।
गुजरातीभाषामें	शाकनु जीरुं । सादुजीरुं ।
कर्नाटकीभाषामें	जिरिगे, विलियजीरिगे ।
तैलिंगीभाषामें	जिलकारा, जील करर ।
अंग्रेजीभाषामें	क्युम्मिन्, सीड । Cummin seed
लैटिन्भाषामें	क्युमिनम् सेमिनम् Cumminum Cyminum
फारसीभाषामें	जीरा ।
अरबीभाषामें	कमुन् ।
यूनानीभाषामें	खामुन् ।

सामान्यजीरकगुणाः ।

जीरकःकटुरुष्णश्चवातहृद्दीपनःपरः ।
गुल्माध्मानोतिसारघ्नोग्रहणीकृमिहृत्परः (रा. नि. र.

अर्थ-साधारणजीरा-चरपरा, गरम, वातनाशक, दीपन तथा गुल्म, अफारा, अतिसार, संग्रहणी और कृमिको दूर करे है ।

श्वेतजीरकगुणाः ।

गौराजाजीहिमारुच्याकटुर्मधुरदीपनी ।
कृमिघ्नीविषहन्त्रीचचक्षुष्याधातुनाशिनी ॥ (नि. र.)

अर्थ-सफेदजीरा-शीतल, रुचिकारक, चरपरा, मधुर, अग्निको दीपन करनेवाला, विषनाशक, नेत्रोंको हितकारी और अफारेको दूर करे है ।

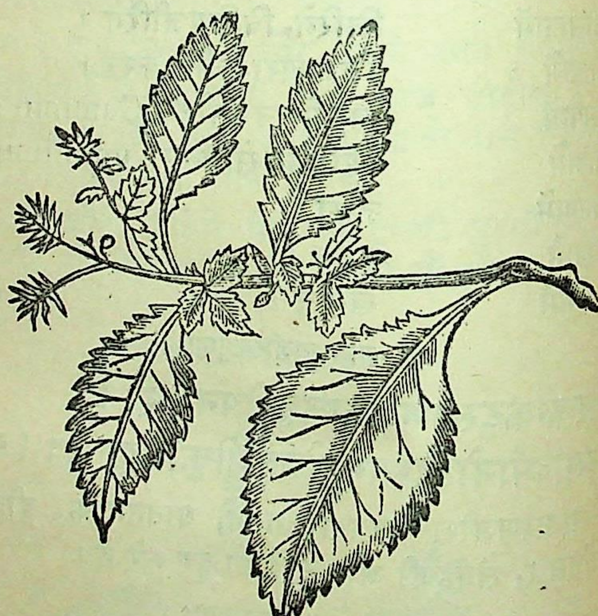
अपिच ।

शुभ्रजीरंकटुग्राहिपाचनंदीपनंलघु ।
किञ्चिदुष्णंचमधुरंचक्षुष्यंरुचिकृन्मतम् ॥
गर्भाशयशुद्धिकरंरूक्षंबल्यंसुगन्धिकम् ।

तिक्तंवमिक्षयाध्मानवातंकुष्ठंविषंज्वरम् ॥
अरोचकंरक्तदोषमतीसारंकृमींस्तथा ।
पित्तश्चगुल्मरोगश्चनाशयेदितिकीर्तितम् ॥ (नि. र.)

अर्थ-सफेदजीरा--चरपरा, मलरोधक, पाचक, जठराग्निका दी करनेवाला, हलका, किंचित् उष्ण, मधुर, नेत्रोंको हितकारक, रुचिकर गर्भाशयको शुद्ध करनेवाला, रूखा, बलकारक, सुगन्ध, कडवा तथा छ क्षय, आध्मान, वात, कोढ़, विषविकार, ज्वर, अरुचि, रक्तविकार, अति कृमि, पित्त और गुल्मरोगका नाश करे है ।

कृष्णजीरकनामानि ।



कृष्णाजाजीतुजरणासुगन्धाकालजरिकः ।
वर्षाकालीचहृद्याचतथाचोद्गारशोधिनी ॥ (धन्वंतरि)

अर्थ--कृष्णाजाजी, जरणा, सुगन्धा, कालजीरक, वर्षाकाली, हृ उद्गारशोधिनी, (कृष्णा, जरणा, बहुगन्धा, भेदिनी, पटु, भेदनिका, ह नीला, नीलकणा, काश्मीरजीरका, वांतिशोधिनी, कालमेषी, सुगन्धा, सुग कृष्णजीर, कृष्णजीरक और उद्गारशोधक.)

संस्कृतभाषामें	कृष्णजीरक ।
हिन्दीभाषामें	कालाजीरा ।
वङ्गभाषामें	कालजीरे ।

मराठीभाषामें	शहाजिरें ।
गुजरातीभाषामें	शाजीरु ।
कर्णाटकीभाषामें	करिजीरके ।
तैलिङ्गीभाषामें	नल्लजीर ।
अंग्रेजीभाषामें	ब्लाक्कारावे सीड्ड । Black Caravay seed
लैटिन्भाषामें	केरंनैग्रम । Carum Nigrum
फारसीभाषामें	जीरेस्याह ।
अरबीभाषामें	कमुन् किरमानी ।

अस्यगुणाः ।

जरणाकटुरुष्णाचकफशोफनिकृन्तनी ।
रुच्याजीर्णज्वरघ्नीचचक्षुष्याग्रहणीपरा ॥ (रा० नि०)

अर्थ--कालाजीरा--चरपरा, गरम, कफ, और शोफनाशक, रुचिकारक, जीर्णज्वरहारक; नेत्रोंको हितकारक और ग्राहक है ।

अपिच ।

कृष्णजीरञ्चचक्षुष्यंरुच्यंसोष्णंसुगन्धिकम् ।
ग्राहकंकटुकंरूक्षं दीपकंजीर्णजूर्तिनुत् ॥
कफंशोथंशिरोरोगंकुष्ठंचैवविनाशयेत् ॥ (नि० र०)

अर्थ--कालाजीरा--नेत्रोंको हितकारी, रुचिकारी, गरम, सुगन्धि, ग्राही (भारी), चरपरा, रूखा, दीपन तथा जीर्णज्वर, कफ, सूजन, मस्तकरोग और कुष्ठको दूर करेहै ।

पीतजीरकगुणाः ।

पीताजाजीदीपनीचकट्वीचोष्णातिसारहा ।
आध्मानवातगुल्मंचग्रहणींचकृमीञ्जयेत् ॥ (नि० र०)

अर्थ--पीलाजीरा--जठराग्निको दीपन करै, चरपरा, गरम तथा अतिसार, आध्मान, वायु, गुल्म, संग्रहणी और कृमिका नाश करेहै ।

द्विविधजीरकगुणाः ।

तीक्ष्णोष्णंकटुकंपाकेरुच्यंपित्ताग्निवर्धनम् ।
कटुश्लेष्मानिलहंरगन्धाढ्यंजीरकद्वयम् (सुश्रुतसंहिता)

अर्थ-दोनों प्रकारकेजीरे-तीक्ष्णोष्ण, पचनेमें चरपरे, रुचिको उत्पन्न करनेवाले, तथा जठराग्निको बढानेवाले, चरपरे, कफ, वातनाशक और अ-गन्धवाले हैं।

स्थूलजीरकनामानि।

कालाजाजीपृथिवीचपृथ्वीचपृथुकापृथुः
कुञ्जिकाकुञ्चिकाकुञ्चीकारवीस्थूलजीरकः॥

अर्थ--कालाजाजी, पृथिवी, पृथ्वी, पृथुका, पृथु, कुञ्जिका, कुञ्चि-कुञ्ची, कारवी, स्थूलजीरक, (दिव्या, उपकुञ्चिका, काला, स्थूल-मनोज्ञा, जारिणी, जीर्णा, तरुणी, सुषवी, पृथ्वीका, पतिंवरा, सुषवा, कुञ्ची, सुषवी, भेषज, कृष्णा, जरणा, शाली, बहुगन्धा, कालिका, उ-लिका, उपकुञ्ची, बृहज्जीरक.)

संस्कृतभाषामें	स्थूलजीरक, कालाजाजी।
हिन्दीभाषामें	कलौंजी, मगरेला।
वंगभाषामें	मोटाकेलेजीरें।
मराठीभाषामें	कलौंजीजिरें।
गुजरातीभाषामें	कलौंजी जीरुं।
कर्णाटकीभाषामें	करिदोड्डुजीरिगे।
तैलिङ्गीभाषामें	नल्लाजीरा कारा।
अंग्रेजीभाषामें	स्मॉल फेनल, फ्लॉवर। Small Fenel Fower
लैटिन्भाषामें	निगेल्लासेटिवा। Nigella Satva
फारसीभाषामें	शोनिझ, स्यादाने।
अरबीभाषामें	हब्तुसूसोदा।

अस्य गुणाः।

उक्तोपकुञ्चिकातिक्ताकट्वीचोष्णाचदीपनी।
वृष्याचाजीर्णशमनीगर्भाशयविशोधिनी॥
आध्मानवातगुल्मज्वरक्तपित्तंकृमींस्तथा।
कफंपित्तंचामदोषंवातंशूलञ्चनाशयेत्॥

अर्थ--कलौंजी--कडवी, चरपरी, गरम, जठराग्निदीपक, वीर्यवर्धक, अ-

अनाशक, गर्भाशयको शुद्ध करनेवाली तथा आध्मान, वात, गुल्म, रक्तपित्त, कृमि, कफ, पित्त, आमदोष, बादी और शूलको नष्ट करे है ।

त्रिविधजीरगुणाः ।

जीरकत्रितयंरूक्षंकटूष्णंदीपनंलघु ।
संग्राहिपित्तलंमेध्यंगर्भाशयविशुद्धिकृत् ॥
ज्वरघ्नंपाचनंबल्यंवृष्यंरुच्यंकफापहम् ।
चक्षुष्यंपवनाध्मानगुल्मच्छर्द्यतिसारजित् ॥ (भा, प्र.)

अर्थ-तीनोंप्रकारके जीरे-(सफेद जीरा, काला जीरा, कलौंजी) रूखे, चरपरे, गरम, दीपन, हलके, मलरोधक, पित्तजनक, मेधाजनक, गर्भाशयशोधक, ज्वरनाशक, पाचक, बलकारक, वीर्यवर्धक, रुचिकारक, कफनाशक, नेत्रोंको हितकारी तथा वात, आध्मान, गुल्म, वमन और अतिसारका नाश करे है ।

अरण्यजीरकनामानि ।

बृहन्यालीक्षुद्रपत्रोऽरण्यजीरकणौ तथा ।

अर्थ-बृहन्याली-क्षुद्रपत्र, अरण्यजीर, कण ।

संस्कृतभाषामें	वनजीरक ।
हिन्दीभाषामें	कालाजीरी ।
वंगभाषामें	वनजीरे ।
मराठीभाषामें	कड्डजिरें ।
कर्णाटकीभाषामें	काजीरगे ।
गुजरातीभाषामें	कालीजिरी । कडवीजीरी ।
अंग्रेजीभाषामें	परपल फ्लीबेन Purpalo Eleadne
लैटिन्भाषामें	वरनोनिया एंथेल मेंटिका । Veruonia Anthe lmentica
अरबीभाषामें	कमून वहरी कमून रुमी ।

अस्यागुणाः ।

वनजीरःकटुःशीतोव्रणहापञ्चनामकः ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-कालाजीरी-चरपरी, शीतल और व्रणनाशक है ।

अपिच ।

अरण्यजीरकंचोष्णंतुवरंकटुकंमतम् ।

स्तम्भंवातंकफंचैवव्रणंचैवविनाशयेत् ॥ (नि. र.)

अर्थ—कालजीरी-गरम, कषली, चरपरी तथा स्तम्भक, वात, और घावको दूर करे है ।

इसका क्षुप होता है, इसके ऊपरके भागमें रुंआ और बीचमें जीरी होती है, यह घोड़ीके मसालेमें पड़ती है ।

धन्याकनामानि ।



धन्याकंधनिकंधन्यंधान्यकञ्चधनीयकम् ।
कुस्तुम्बुरीछत्राधन्यातुम्बुरुंचावितुन्नकम् ॥

अर्थ—धन्याक, धनिक, धन्य, धान्यक, धनीयक, कुस्तुम्बुरी, छत्रा, धन्या, तुम्बुरु, वितुन्नक, (कुस्तुम्बरु, धान्याक, धनेयक, धानक, धानेय, धनिका, छत्रा, धान्य, सुगन्धि, शाकयोग्य, सूक्ष्मपत्र, जनप्रिय, धान्यबीज, बीजधान्य, अबबिका, वेधक, धाना, कुनटी, धेन्निका, अल्लका, हृद्यगन्धा, वेशण, धानी और निःसार) ।

संस्कृतभाषामें	धन्याक ।
हिन्दीभाषामें	धनिया ।
वंगभाषामें	धने ।
मराठीभाषामें	धने, कोथिंबीर ।
गुजरातीभाषामें	धाणा, कोथमीर ।
कर्णाटकीभाषामें	कोथुंबुरी ।
तैलिङ्गीभाषामें	कोथमिलु, धाणीपापु ।
तामिलीभाषामें	कोतमल्लि ।

अंग्रेजीभाषामें कोर्यांडिर्सीड् । Coriander seed
लैटिन्भाषामें कोरीराङ्गम् सेटाईवम् । Corianbrnm Sativum
फारसीभाषमें तुख्में कस्नीज्ञ ।
अरबीभाषामें कजबुरा ।

धन्याकगुणाः ।

धान्यकंमधुरंशीतंकषायंपित्तनाशनम् ।
ज्वरकासतृषाछर्दिकफहारि च दीपनम् ॥ (रा. नि.)

अर्थ-धनिया-मधुर, शीतल, कषेला, पित्तनाशक तथा ज्वर, खांसी, तृषा वमन, और कफका नाश करेहै, तथा अग्निको दीपन करेहै ।

अपिच ।

धान्यकंतुवरंस्निग्धमवृष्यंमूत्रलंलघु ।
तिक्तंकटुष्णवीर्य्यश्चदीपनंपाचकंस्मृतम् ॥
ज्वरघ्नंरोचकंग्राहिस्वादुपाकात्रिदोषनुत् ।
आर्द्रन्तुतद्गुणंस्वादुविशेषात्पित्तनाशितत् ॥
तृष्णादाहवमिश्वासकासकार्श्यकृमिप्रणुत् ।

अर्थ-धनिया--कषेला, स्निग्ध, अवृष्य, मूत्रजनक, हलका कडवा, चरपरा, उष्णवीर्य्य, जठराग्निको दीपन करनेवाला, पाचक, ज्वरनाशक, रोचक, पाकके समय स्वादिष्ठ है, तथा त्रिदोष, तृषा, दाह, वमन, श्वास, खांसी, कृशता और कृमिरोगका नाश करे है ।

कच्चे धनियेके भी धनियोंके समान गुण हैं, स्वादिष्ठ है और विशेष करके पित्तका नाश करेहै ।

अन्यच्च ।

आर्द्राकुस्तुम्बरीकुर्य्यात्स्वादुसौगन्ध्यहृद्यताम् ।
भक्ष्यव्यञ्जनभोज्येषुविविधेष्ववचारिता ॥ (शोडलनि.)

हिंगु नामानि ।

हिंगुशूलद्विड्रमठंबाह्लीकंजतुकंजतु ।
सहस्रवेधिजन्तुघ्नंसूपाङ्गंसूपधूपनम् ॥

अर्थ-हिंगु-शूलद्विड्, रमठ, बाह्लीक, जतुक, जतु, सहस्रवेधि, जन्तुघ्न,

सूपाङ्ग, सूपधूपन (हिंगुक, रामठ, बाह्लीक, पिण्याक, बाह्वी, गृहिणी, केसर, जातुक, रमठध्वनि, शूलहृन्, उग्रगन्ध, भूतारि, जन्तुनाशन, उग्रवीर्य, अगूढगन्ध, जरण, भेदन, दीप्त, शूलनाशक) ।



संस्कृतभाषामें	हिंगु ।
हिन्दीभाषामें	हींग ।
वंगभाषामें	हिंगु ।
मराठीभाषामें	हिंग ।
गुजरातीभाषामें	वघारणी ।
कर्नाटकीभाषामें	लेंपु ।
तैलिङ्गीभाषामें	इंगुरा ।
लैटिन्भाषामें	फरुलानर्थिक्स, नार्येक्स, आस्सा, फिटि Ferula Narthex rssafoetida
फारसीभाषामें	अंगुज्ञ दरख्ते अगझु खालीरू ।
अंग्रेजीभाषामें	अस्साफेटीड़ा ।
अरबीभाषामें	हिलसीत ।

हिंगुगुणाः ।

लघूष्णंपाचनंहिंगुदीपनंकफवातजित् ।
कटुस्निग्धसरंतीक्ष्णंशूलाजीर्णविबन्धनुत् (सु. सं.)

अर्थ–हींग–हलकी, गरम, पाचक, दीपन, कफवातनाशक, चरपरी, सारक, तीक्ष्ण तथा, शूल, अजीर्ण और विबन्धको दूर करे है ।

अपिच ।

हृद्यंहिंगुकटूष्णंचक्रिमिवातकफापहम् ।
विबन्धाध्मानशूलघ्नंचक्षुष्यंगुल्मनाशनम् ॥ (रा.

अर्थ--हींग--हृदयको हितकारी, चरपरी, गरम तथा क्रिमि, वात, कफ, विबन्ध, आध्मान, शूल और गुल्मका नाश करेहै और नेत्रोंको हितकारीहै ।

अन्यच्च ।

हिंगूष्णंपाचनंरुच्यंतीक्ष्णंवातबलासहृत् ।
शूलगुल्मोदरानाहकृमिघ्नंपित्तवर्द्धनम् ॥ (भा. प्र.)

अर्थ--हींग--गरम, रुचिकारी, तीक्ष्ण, वात कफनाशक तथा शूल, गुल्म, उदररोग, आनाह (अफारा) और कृमिको दूर करे है तथा पित्तवर्धक है ।

अपिच ।

हिंगूष्णंवह्निमांद्यघ्नंपाचनंकफवातजित् ।
कटुस्निग्धरसंतीक्ष्णंभूतघ्नंपित्तकोपनम् ॥

अर्थ--हींग--गरम, मंदाग्निनाशक, पाचक, कफवातविनाशक, चरपरी, स्निग्ध, तीक्ष्णरसवाली, भूतको दूर करे है और पित्तको कुपित करे है ।

अन्यच्च ।

बाह्लीकंपित्तलंचोष्णंहृद्यंतिक्तंपरंकटु ।
लघुतीक्ष्णंरुचिकरंपाचकंचाग्निदीपकम् ॥
स्निग्धंमलस्तम्भकरंश्वासकासकफापहम् ।
आनाहाध्मानगुल्मघ्नंशूलहृद्रोगनाशनम् ॥
वातश्चाजीर्णकंजन्तूनुदरंचैवनाशयेत् । (नि. र.)

अर्थ--हिंग--पित्तजनक, गरम, हृदयको हितकारी, कडवी, सारक, चरपरी, हलकी, तीक्ष्ण, रुचिकारक, पाचक, अग्निदीपन, स्निग्ध, मलस्तम्भक तथा श्वास, खांसी, कफ, आनाह, अर्थात् (अफारा) आध्मान, गुल्म, शूल, हृदयरोग, वादी, अजीर्ण, कृमि और उदररोगका नाश करे है । हींग, इरान तथा पंजाबमें होती है ।

अस्य शोधनविधिः ।

अङ्गारस्थेलोहपात्रेसघृतेरामठंक्षिपेत ।
चालयेत्किञ्चिदारक्तवर्णेयोगेषुयोजयेत ॥ (आत्रेयसंहिता)

अर्थ--घृतसहित हींगको लोहके पात्रमें कर अंगारेके ऊपर रखदे; फिर चलावे, जब कुछेक लाल होआय, तब उतारकर औषधीके काममें लावै ।

हिंगुपत्रीनामानि ।

त्वक्पत्रीहिंगुपत्री च कर्बरीपृथुलापृथुः ।
बाष्पीकाबाष्पिकाबाष्पीदीर्घिकादारुपत्रिका ॥

अर्थ--त्वक्पत्री--हिंगुपत्री, करबरी, पृथुला, पृथु, बाष्पीका, बाष्पी, दीर्घिका, दारुपत्रिका, (कारवी, करबी, पृथ्वी, पृथ्वीका; बाष्पा, पत्री, तन्वी, दारुपत्री, बिल्वा और पृथुका)

अस्यागुणाः।

हिंगुपत्रीभवेद्रुच्यातीक्ष्णोष्णापाचनीकटुः ।
हृद्वस्तिरुग्विबन्धार्शःश्लेष्मगुल्मानिलापहा ॥ (भा.

अर्थ--हिंगुपत्री--रुचिकारक, तीक्ष्ण, गरम, पाचक, चरपरी, तथा रोग, वस्तिरोग, विबन्ध, बवासीर, कफ, गुल्म और वातका नाश करे

अपिच ।

हिंगुपत्रीकटुस्तीक्ष्णातिक्तोष्णापाचिकामता ।
रुच्यापथ्यादीपनीचहृद्यासौगन्धकारिणी ॥
तुवराकफवातामवस्तिपीडांचनाशयेत् ।
बद्धाविट्कार्शगुल्मादिप्लीहामेदोपचीविषान् ॥ (नि. र

अर्थ--हिंगुपत्री--चरपरी, तीक्ष्ण, कड़वी, गरम, पाचक, रुचिकारक, दीपन, हृदयको हितकारी, सुगंधि, कषेली तथा कफ, वात, आमदोष स्तिकी पीडा, मलबद्धता, बवासीर, गुल्म, प्लीहा, मेद, अपची और वि नाश करेहै ।

इसके पत्तोंके गुण और नाम हींगके पत्तोंसे मिलतेहैं । जैसे हिंगुके को संस्कृतमें कवरी और कर्वरी कहतेहैं, सो इसकोभी कर्वरी कबरी तेहैं और गुणभी हींगसे मिलतेहैं । निघण्टुरत्नाकरकी मराठी भाषामें फली" लिखीहै सो " वाफली " अक्कलकरके शाकक्रूं कहते हैं ।

नाडीहिंगुनामानि ।

नाडीहिंगुपलाशाख्याजन्तुकारामठीचसा।
वंशपत्रीचपिण्डाह्वाशुवीर्याहिंगुनाडिका ॥

अर्थ-नाडीहिंगु, पलाशाख्य, जंतुका, रामठी, वंशपत्री, पिण्डाह्वा, वीर्या, हिंगुनाडिका (वेणुपत्री, पिण्डा, हिंगु, शिवादिका) ।

संस्कृतभाषामें	नाडीहिंगु ।
हिन्दीभाषामें	कलः पतिहीङ्ग, डिकामाली ।
वंगभाषामें	हिंगुविशेष ।
मराठीभाषामें	डिकेमाली ।
गुजरातीभाषामें	डिकामाली ।
कर्णाटकीभाषामें	कलहन्ति ।
तैलिंगीभाषामें	चिभहिंगवा कारु इंगवा ।
अंग्रेजीभाषामें	डिकेमालीगम् गम्भीगार्डिनिया । Dikamalleum Gummy Gardinia
लैटिन्भाषामें	गार्डित्यायुसिडा गार्धिन्यागम्मिफेरा । Gardniu Ceeda Gardiuua Gunimefera
अरबीभाषामें	कनखाभ

अस्या गुणाः ।

नाडीहिंगुःकटुष्णाचकफवातार्त्तिशान्तिकृत् ।
विष्ठाविबन्धदोषघ्नीचानाहामापहारिणी । (राजनिघण्टु)

अर्थ—नाडीहिंगु-चरपरी, गरम, कफ और वातकी वेदनाको शान्ति करनेवाली तथा विष्ठा, विबन्ध और आनाह रोगनाशक है ।

अन्यच्च ।

नाडीहिंगुस्तुकटुकस्तीक्ष्णश्चोष्णश्चदीपकः ।
कफवातमलस्तम्भमनोमोहामनाशनः ॥(निघण्टुरत्नाकर),

अर्थ—नाडीहिंगु-चरपरी, तीक्ष्ण, उष्ण, अग्निप्रदीपक तथा कफ, वात मलबन्ध, मनका मोह और आमको दूर करे है ।

विवरण । बड़ा वृक्ष होता है, फूल सफेद होता है, फस पोसतके डोरेकी समान होते हैं, पत्ते बटमोगराके समान होते हैं इसको नाडीहिंगु कहते हैं ।

वचानामानि ।

वचोग्रगन्धाषड्ग्रन्थागोलोमीशतपर्विका ।
मंगल्याजटिलातीक्ष्णागालिनीलोमशातथा ॥

अर्थ-वचा, उग्रगन्धा, षड्ग्रन्था, गोलोमी, शतपर्विका, मङ्गल्या, जटिल, तीक्ष्णा, गालिनी, लोमशा (विजया, उग्रा, रक्षोघ्नी, वच्या, काङ्गा, भद्रा,

क्षुद्रपत्री, इक्षुपर्णी, स्मारणी, बोधनीया, भूतनाशिनी, श्लेष्मघ्नी, तीक्ष्ण, जलजा, इच्छुपत्रिका)

पारसीकवचानामानि ।

पारसीकवचाशुक्लाप्रोक्ताहैमवतीतिसा ।

अर्थ—खुरासानी वच सफेद होती है, उसको संस्कृतमें हैमवती (पर्वा, मेध्या, शुक्ला, भोगवती, दीर्घपत्रा, कर्बिणी) कहते हैं ।

संस्कृत भाषामें	वचा, पारसीकवचा, श्वेतवचा ।
हिन्दीभाषामें	वच, खुरासानी वच, सफेदवच ।
बंगभाषामें	वच, खोरासानी वच, श्वेतवच ।
मराठीभाषामें	वेखंड, पांढरें वेखण्ड ।
गुजरातीभाषामें	घोडावज, खुरसाणीवच, बालावज ।
कर्णाटकीभाषामें	वच बिलीयवजे ।
तैलिंगीभाषामें	वासा, वडज, नल्लवस ।
तामिलीभाषामें	वशम्बु ।
अंग्रेजीभाषामें	स्वीट्फ्लारूट् (sweet Elogroot
लैटिन्भाषामें	एकोरस, केलेमस् । Aehoras Calumus
पारसीभाषामें	सोमन जर्द अगर तुरकी ।
अरबीभाषामें	उदलब्रुज ।

वचःगुणाः ।

वचोग्रगन्धाकटुकातिक्तोष्णावान्तिवह्निकृत ।
दीपनीवाक्प्रदाकण्ठ्याशकृन्मूत्रविशोधिनी ॥
विबन्धाध्मानशूलघ्नीशोफवातज्वरापहा ।
अपस्मारकफोन्मादभूतजन्त्वनिलान्हरेत् ॥ (ग. नि.)

अर्थ—वच—उग्रगन्धयुक्त, चरपरी, कडवी, गरम, वमनकारक, अग्निकारक, दीपन, वाणीदायक, कण्ठको हितकारी, मलमूत्रशोधक तथा विबन्ध, आध्मान, शूल, शोफ, वातज्वर, अपस्मार, कफ, उन्माद, भूत, कृमि, वातका नाश करे है ।

अपिच ।

वातातीक्ष्णाकटूष्णाचकफामग्रान्थिशोफहृत ।

वातज्वरातिसारघ्नीवान्तिकृन्मादभूतहृत् ॥

अर्थ--वच--तीक्ष्ण, चरपरी, गरम तथा कफ, आम, ग्रन्थि, सूजन, वातज्वर और अतिसारको हरे है । वमनकारक, उन्माद और भूतनाशक है ।

अन्यच्च ।

वचायुष्यावातकफतृष्णाघ्नीस्मृतिवर्द्धिनी । (रा. ब.)

अर्थ--वच--अवस्थास्थापक, वातकफनाशक,तृष्णानिवारक, और स्मरणशक्तिवर्द्धक है ।

शुक्लवचागुणाः ।

वचाश्वेतामातिर्मेधाचाग्निदीप्तिकरीमता ।
आयुष्यदागुणाढ्याचवृष्याकफविनाशिनी ॥
वातभूतकृमिहरातिवतरेपूर्ववद्गुणाः ।

अर्थ--सफेदवच मति और मेधादायकहै,जठराग्निप्रदीपक है,आयुर्वर्द्धक, अधिकगुणवाली, वीर्यजनक तथा कफ, वादी, भूतबाधा और कृमिको दूर करे है । शेषगुण वचाके समान जानने ।

महाभरीवचागुणाः ।

सुगन्धाप्युग्रगन्धाचविशेषात्कफकासनुत् ।
सुस्वरत्वकरीरुच्याहृत्कण्ठमुखशोधिनी ॥ (भा. प्र.)

अर्थ--महाभरीवच--सुगन्ध और उग्रगन्धयुक्त है । विशेषकरके कफ तथा खांसीको दूर करे है स्वरको उत्तम करनेवाली,रुचिको उत्पन्न करनेवाली तथा हृदय, कण्ठ और मुखको शुद्ध करनेवाली है ।

वचाद्भुतगुणाः ।

अद्भिर्वापयसाज्येनमासमेकन्तुसेविता ।
वाचाकुर्य्यान्नरंप्राज्ञंश्रुतिधारणसंयुतम् ॥
चन्द्रसूर्यग्रहेपीतंपलमेकंपयोन्वितम् ।
वचायास्तत्क्षणंकुर्य्यान्महाप्रज्ञान्वितंनरम् ॥

अर्थ--वचके चूर्णको जलके साथ अथवा दूधके साथ एक मासपर्यन्त सेवन करनेसे मनुष्य बुद्धिमान् और ज्ञानी होता है तथा चन्द्रग्रहणके समय

अथवा सूर्यग्रहणके समय एक पल वचके चूर्णको दूधके साथ भक्षण क… उसी समय मनुष्यको अत्यन्त बुद्धियुक्त करती है। वच सजल स्थान… रेतली भूमिमें उत्पन्न होती है।

कुलिञ्जननामानि।

कुलञ्जोगन्धमूलश्च तीक्ष्णमूलः कुलञ्जनः।

अर्थ--कुलञ्ज, गन्धमूल, तीक्ष्णमूल, कुलञ्जन।

संस्कृतभाषामें	कुलञ्जन।
हिन्दीभाषामें	कुलींजन।
वंगभाषामें	कुलञ्जन।
मराठीभाषामें	कोलिञ्जन। थोर कोळिञ्जन।
गुजरातीभाषामें	कुलिञ्जन नानु। कुलिञ्जन मोटे।
अंग्रेजीभाषामें	ग्रेटर गैलं गाल। Greater Galangal
लैटिन्भाषामें	आल्पिनिया,आफिसिनेरं। Alpinia offici…
फारसीभाषामें	खिरदारु।
अरबीभाषामें	इक खोलिञ्जान्।

अस्य गुणाः।

कुलञ्जःकटुतिष्णोदीपनोमुखदोषनुत्। (रा. नि.)

अर्थ- कुलींजन-चरपरा, कडवा, गरम, दीपन और मुखदोषनाश…

अन्यच्च।

कुलिञ्जनंकटुस्तिक्तमुष्णंचाग्निप्रदीपनम्।
रुच्यंस्वर्य्यंचहृद्यंचमुखकण्ठविशुद्धिकृत्॥
मुखदोषंकफंचैवकासंवातंकफंहरेत्। (नि. र.)

अर्थ--कुलींजन-चरपरा, कडवा, गरम, अग्निदीपक, रुचिकारक,… सुधारनेवाला, हृदयको हितकारी, मुख और कण्ठको शुद्ध करनेवाला… मुखदोष, कफ, खांसी, वात और कफको नष्ट करे है।

बड़े कुलींजनका बडावृक्ष होता है, देखनेमें दाखकी वेलके सदृश… है,इसकी जडको कुलींजन कहते हैं। कितनेंही मनुष्य पानकी जडको कु… कहते हैं, सो पानकी जड नहीं है।

चोपचीन्युत्पत्तिलक्षणम् ।



फिरंगदेशसम्भूताचीनदेशेथाविश्रुता ।
नामतश्चोपचीनीस्यादश्वगन्धसमाभवेत् । (शि. प्र.)

अथ--फिरंग देशमें उत्पन्न होती है, चीन देशसे आती है और इसका नाम चोपचीनी है और असगन्धकी समान होती है ।

संस्कृतभाषामें	द्वीपान्तरवचा, अमृतोपहिता ।
हिन्दीभाषामें	चोवचीनी ।
वंगभाषामें	तोपचीनी ।
मराठीभाषामें	चोपचीनी ।
गुजरातीभाषामें	चोपचीनी ।
अंग्रेजीभाषामें	चाईनारूट्। China root
लैटिनभाषामें	स्माइलाक्स चाइना । Smilax China
फारसीभाषामें	एवन ।
अरबीभाषामें	एवन ।
फिरंगीभाषामें	चक्का ।
यूनानीभाषामें	खसिलियर आशसिनी ।

अस्य गुणाः ।

द्वीपान्तरवचाकट्वीतिक्तोष्णाच ह्निदीप्तिकृत् ।
विबन्धाध्मानशूलघ्नीशकृन्मूत्रविशोधिनी ॥
वातव्याधीनपस्मारमुन्मदंतनुवेदनाम् ।
व्यपोहतिविशेषेणफिरंगामयनाशिनी ॥ (भावप्रकाश

अर्थ-द्वीपान्तरवचा अर्थात् चोबचीनी,चरपरी, मधुर) कडवी, मलमूत्रकी शोधन करनेवाली तथा विबन्ध, आध्मान, शूल, वात अपस्मार, उन्माद और अङ्गकी वेदनाको दूर करे है और विशेष करके गरोगका नाश करनेवाली है ।

अपिच ।

द्वीपान्तरवचातिक्ताचोष्णाचाग्निप्रदीपिनी ।
धातुवृद्धिकरीबल्यामलमूत्रविशोधिनी ॥
तारुण्यदापौष्टिकीचवृष्याचैवरसायनी ।
गर्भप्रदाबद्धविट्कमाध्मानोन्मादनाशिनी ॥
वातंशूलमपस्मारधातुक्षयविनाशिनी ।
अङ्गग्रहंफिरंगोपदंशंमांद्यंकटिग्रहम् ॥
पक्षाघातमुरुस्तम्भंराजयक्ष्मव्रणौतथा ।
गण्डमालांनेत्ररोगंशुक्रशोणितदोषकम् ॥
सर्वांगकम्पवातञ्चकुब्जवातञ्चनाशयेत् । (नि. र.)

अर्थ-चोपचीनी-कडवी, गरम, अग्निप्रदीपक, धातुवर्धक, बलकारक और मूत्रकी शोधन करनेवाली, तारुण्यदायक, पुष्टिकारक, वीर्य रसायन, गर्भदायक तथा बद्धविट्क, आध्मान, उन्माद, वात, शूल, अपस्मार, धातुक्षय, अंगग्रह, फिरंग,उपदंश, मांद्य, कटिग्रह,पक्षाघात, ऊरु क्षय, व्रण, गण्डमाला, नेत्ररोग, शुक्ररोग, रक्तविकार, सर्वांगवात, और कुब्जवातका नाश करे है ।

अपिच ।

फिरंगरोगान्कुष्ठांश्चविसर्पांश्चविनाशयेत् ।

क्षीणानांपुष्टिकरिणींचाग्निमान्द्यंनियच्छति ॥ (द्रव्यनि.)

अर्थ-चोपचीनी-फिरंगरोग, कोढ और विसर्परोगका नाश करे है, क्षीण मनुष्योंको पुष्ट करनेवाली और मंदाग्निका नाश करने वाली है ।

निषेधः ।

मद्यंत्यजेत्तथातैलंकाञ्जिकंशाकमेवच ।
क्षारमम्लरसंचैवलवणंतिक्तभोजनम् ॥ (अनंगतिमिरभा.)

अर्थ—चोपचीनीके सेवन करनेवाले मनुष्य मदिरा, तेल, कांजी शाक, क्षाररसवाले पदार्थ, अम्लरसवाले पदार्थ, लवण और तिक्त भोजन त्याग दे ।

अस्यालक्षणम् ।

अश्वगन्धासमंपत्रमौषधीग्रन्थिसंयुता ।
वर्णतःपाटलाभाचदृढाचमधुरारसे ॥ (शिवनिघण्टु)

अर्थ—इसके पत्ते असगन्धकी समान होते हैं, औषधी गांठे युक्त होती है, इसका रंग किञ्चित् पीला और सफेद होता है, दृढ होती है और रस मीठा होता है ।

प्राचीन वैद्यकके ग्रन्थोंमें इसका प्रयोग नहीं देखनेमें आता, सबसे प्रथम महात्मा भावमिश्रने अपने ग्रन्थमें इसका वृत्तांत लिखा और इसका द्वीपान्तरीय नाम रक्खा । ऐसा अनुमान होता है कि, बिदेशीय लताका मूलविशेष समझकर इसका चोपचीनी नाम रक्खा गया है । व्यवहार-मूल ।

आकारकरभनामानि ।

आकारकरभश्चैवाकल्लकोथहयकल्लकः ।

अर्थ-आकारकरभ आकल्लक, अकल्लक (आकरकरा)

संस्कृतभाषामें	आकारकरभ ।
हिन्दीभाषामें	अकरकरा ।
बंगभाषामें	अकोरकोरा ।
मराठीभाषामें	अक्कलकरा ।
गुजरातीभाषामें	अक्कलकरो ।
कर्नाटकीभाषामें	अक्कलकरा ।
अंग्रेजीभाषामें	पेलेटरी रूट् Palltory root
लैटिन्भाषामें	एनेसाई क्लसपेरेथ्रम् Anacy clus Pere thrum
अरबीभाषामें	आकरकरहा ।

अस्य गुणाः ।

अक्कलकरोष्णोवीर्येणबलकृत्कटुकोमतः ।
प्रतिश्यायश्चशोथश्चवातश्चैवविनाशयेत् ॥ (नि. र.)

अर्थ-अकरकरा-उष्णवीर्य, बलकारक, चरपरा तथा प्रतिश्याय, सूजन और वातका विनाश करे है ।

हपुषानामानि ।

हपुषावपुषाविस्रापराश्वत्थफलास्मृता ।
मत्स्यगन्धाप्लीहहन्त्रीविषघ्नीध्मांक्षनाशिनी ॥

अर्थ-हपुषा, वपुषा, विस्रा, (हवुषा, विस्रगंगा, विगन्धिका, यह प्रथम प्रकारके हाउबेरके हैं) अश्वत्थफला, मत्स्यगन्धा, प्लीहहन्त्री, विषघ्नी, ध्मांक्षनाशिनी, (स्वल्पफला, कच्छुघ्ना, प्लीहशत्रु, कफघ्नी, अपराजिता)

संस्कृतभाषामें	हपुषा ।
हिन्दीभाषामें	हाऊबेर ।
वंगभाषामें	हवूषा ।
मराठीभाषामें	होश ।
कर्नाटकीभाषामें	परडुहव्वे ।
लैटिन्भाषामें	थेबेटियानेरिफोलिया । Thevetia nerif...

हाऊबेर दो प्रकारका है, तिसमें प्रथम फल मछलीके समान और ... सदृश गन्धवाला होता है ।

हपुषा गुणाः ।

हपुषाकटुकातिक्तागुरूष्णादीपनीमता ।
तुवराग्रहणीशूलगुल्माशोंवातनाशिनी ॥
गुल्मोदरकफामाग्निमांद्यक्रमिकपीनसान् ।
मलावष्टम्भकंचैवप्रदरंचैवनाशयेत् ॥

अर्थ-हाऊबेर-चरपरा, कडवा, भारी, गरम, दीपन, कषेला तथा ग्रहणी, शूल, गुल्म, बवासीर, वात, उदररोग, कफ, आम, मन्दाग्नि, ... पीनस, मलावष्टंभ और प्रदररोगका नाश करे है ।

स्वल्पहपुषागुणाः ।

स्वल्पफलामूत्रकृच्छ्रप्लीहाविषकफाञ्जयेत् ।

गुणाढ्यस्याःपूर्ववच्चज्ञेयाः सुज्ञैश्चिकित्सकैः ॥ (नि. र.)

अर्थ-दूसरेप्रकारका हाऊबेर, मूत्रकृच्छ्र, प्लीहा, विष और कफको नष्ट करेहै । शेष गुण प्रथमकी समान जानने ।

विडंगनामानि ।

क्रिमिघ्नंभस्मकंमोघाविडंगकृमिकण्टकम् ।
कैरालंकेवलंवेल्लंतण्डुलंजित्रतण्डुला ॥

अर्थ-क्रिमिघ्न, भस्मक, मोघा, बिडङ्ग, कृमिकण्टक, कैराल, केवल, वेल्ल, तण्डुल, चित्रतण्डुला (विडङ्गा, अमोघा, तंडुला, जन्तुनाशक, क्रिमिकंटक, रसायन, पावक, तंडुल, क्रिमिरिपु, जन्तुघ्न, चित्रतण्डुल, क्रिमिशत्रु, गर्दभ, क्रिमिहा, चित्रा, तण्डुला, तण्डुलीयका, वातारि, जन्तुघ्नी, मृगगामिनी, कैराली, गहरा, कापाली, वरा, सुचित्रबीजा, वृषणाशन, जन्तुहन्त्री, कृष्णतण्डुला, शूद्रतन्दुला, चित्रबीजा और घोषा)

संस्कृत भाषामें	विडङ्ग ।
हिन्दीभाषामें	वायविडङ्ग ।
वंग भाषामें	विडङ्ग ।
मराठी भाषामें	वावडिंग ।
गुजराती भाषामें	वाबढींग ।
कर्णाटकी भाषामें	वायुविडङ्ग ।
तैलिङ्गी भाषामें	वायु विडंघमु ।
तामिली भाषामें	वायबिलं ।
अंग्रेजी भाषामें	बेब्रेंगू Babreng
लैटिन् भाषामें	एँबेलिया रिबीस् । Embrelia ribes
फारसी भाषामें	वरंगकावली ।
अरबी भाषामें	बरंज कावली ।

अस्य गुणाः ।

विडंगंकटुतिक्तोष्णंरूक्षवह्निकरंलघु ।
गुल्माध्मानोदरश्लेष्मकृमिवातविबन्धनुत ॥ (मद. नि.)

अर्थ-वायविडङ्ग-चरपरी, कडवी, गरम, रूखी, अग्निकारक, हलकी तथा गुल्म, आध्मान, उदररोग, कफ, कृमि, वात और विबन्धको दूर करे है ।

अपिच।

विडंगकटुकंपाकेलघुवातकफापहम्।
तिक्तमीषद्विषंहान्तिरूक्षोष्णंकृमिनाशनम्। (शोढल)

अर्थ-वायविडंग-पाकमें चरपरी, हलकी, वात कफनाशक, किंचित् विषनाशक, रूखी, गरम और कृमिको दूर करे है।

अन्यच्च।

विडंगंकटुकंतिक्तमुष्णंरुच्यंलघुस्मृतम्।
दीपनंवातकफहृदग्निमांद्याऽरुचीर्जयेत्॥
भ्रान्तिंकृमिश्चशूलंचआध्मानमुदरंतथा।
प्लीहाजीर्णश्वासकासौहृद्रोगंविषदोषकम्॥
आमंमलावष्टम्भश्चमेदोमेहश्चनाशयेत्। (नि. र.)

अर्थ-वायविडंग-चरपरी, कडवी, गरम, रुचिकारी, हलकी, जठराग्नि दीपन करनेवाली तथा वात, कफ, मंदाग्नि, अरुचि, भ्रान्ति, कृमि, अफारा, उदररोग, प्लीहा, अजीर्ण, श्वास, खाँसी, हृदयरोग, विषविकार, आम, मलस्तम्भ, मेदरोग और प्रमेह रोगको दूर करे है। मात्रा २ मा०

तुम्बुरुनामानि।

तुम्बुरुःसौरभःसौरवनजःसानुजोद्रिजः।
तीक्ष्णवल्कस्तीक्ष्णफलस्तीक्ष्णपत्रोमहामुनिः॥

अर्थ-तुम्बरु, सौरभ, सौरवनज, सानुज, द्विज, तीक्ष्णवल्क, तीक्ष्णफल, तीक्ष्णपत्र, महामुनि, (स्फुटल, सुगन्धि, शूलघ्न, सौरज, अन्धक, स्फुटितफल)

अस्य गुणाः।

तुम्बुरुर्मधुरस्तिक्तःकटुष्णःकफवातनुत्।
शूलगुल्मोदराध्मानकृमिघ्नोवह्निदीपनः॥ (राजनि०)

अर्थ-तुम्बरु-मधुर, कडवा, चरपरा, गरम, कफ वातनाशक तथा शूल, गुल्म, उदररोग, अफारा और कृमिका नाश करे है तथा अग्निको दीपन करे है।

अन्यच्च।

तुम्बुरुग्रथितंतिक्तंकटुपाकेपित्तकटु।

रूक्षोष्णंदीपनंतीक्ष्णंरुच्यंलघुविदाहिच ॥
वातश्लेष्माक्षिकर्णौष्ठशिरोरुग्गुरुताक्रिमीन् ।
कुष्ठशूलारुचिश्वासप्लीहकृच्छ्राणिनाशयेत् ॥

अर्थ-तुम्बुरु-कडवा, पाकमें चरपरा रूखा, गरम, दीपन, तीक्ष्ण, रुचिकारक, हलका, विदाही तथा वात, कफ, नेत्ररोग, कर्णरोग, ओष्ठरोग, शिरोरोग, शरीरका भारीपन, कृमि, कुष्ठ, शूल, अरुचि, श्वास, प्लीहा और मूत्रकृच्छ्र रोगका नाश करेहै ।

संस्कृतभाषामें	तुम्बुरु ।
हिन्दीभाषामें	तुम्बुरू ।
वंगभाषामें	नेपालिधने, तुम्बुरु ।
मराठीभाषामें	चिरफळ ।
कोंकणीभाषामें	तिरफळ ।

वंशलोचननामानि ।

तुगाक्षीरीशुभावांशीत्वक्क्षारीवंशलोचना ।

अर्थ-तुगाक्षीरी, शुभा, वांशी, त्वक्क्षीरी, वंशलोचना, (त्वक्क्षीरा, वंशजाक्षीरिका, तुगा, शुभ्रा, वंशक्षीरी, वैणवी, त्वक्सारा, कर्म्मरी, श्वेता, कर्पूररोचना, तुङ्गा, रोचनिका, पिङ्गा, वंशशर्करा, वंशरोचना, वंशकर्पूर)

संस्कृतभाषामें	वंशलोचना ।
हिन्दीभाषामें	वंशलोचन ।
वङ्गभाषामें	वंशलोचन, वाँशकावर ।
मराठीभाषामें	वंशलोचन ।
गुजरातीभाषामें	वंशलोचन, वंशकपूर ।
कर्णाटकीभाषामें	वंशलोचना ।
तैलिङ्गीभाषामें	वंशलोचना ।
अंग्रेजीभाषामें	थीसिलिस्यस् कंक्रिशन् । Thesiliceous Concretion
लैटिन्भाषामें	बबुणाए रंडिनेश्या । Bambusaatundineoeca
फारसीभाषामें	तवाशीर ।
अरबीभाषामें	तवाशीर ।

अस्यागुणाः ।

वंशजाबृंहणीवृष्याबल्यास्वाद्वीचशीतला ।
तृष्णाकासज्वरश्वासक्षयपित्तास्रकामलाः ॥
हरेत्कुष्ठंव्रणंपाण्डुंकषायोवातकृच्छ्रजित् । (भा. प्र.)

अर्थ-वंशलोचन-पुष्टिकारक, वीर्य्यवर्द्धक, बलकारी, स्वादिष्ठ, तथा तृषा, खाँसी, ज्वर, श्वास, क्षय, रक्त, पित्त, कामला, कुष्ठ और रोगको दूर करेहै, कषायरसयुक्त है, वात तथा मूत्रकृच्छ्र रोगका नाश

अपिच ।

वांशीस्वाद्वीहिमारूक्षाशोषकासक्षयापहा ।
भ्रमश्वासहराचैवतवक्षीरश्चतद्गुणम् ॥ (शोडलनिघण्टु

अर्थ-वंशलोचन-स्वादिष्ठ, शीतल, रूखा, तथा शोष, खाँसी, क्षय और श्वासको दूर करेहै । तवक्षीरके भी इसीके समान गुण जानने ।

अन्यच्च ।

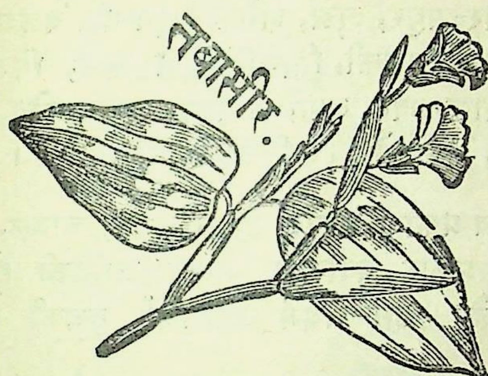
तुगारूक्षातुतुवरामधुरारक्तशुद्धिकृत् ।
शीताशुभावहाग्राहीवृष्याधातुविवर्धिनी ॥
बल्याक्षयश्वासकासरक्तदोषारुचिप्रणुत् ।
रक्तपित्तंज्वरंकुष्ठंकामलांपाण्डुरोगकम् ॥
दाहंतृषांव्रणंमूत्रकृच्छ्रंदाहञ्चनाशयेत् ।
वातघ्नीचैवविज्ञेयावैद्यशास्त्रविशारदैः ॥ (निघण्टुरत्नाकर

अर्थ-वंशलोचन-रूखा, कषेला, मधुर, रक्तको शुद्ध करनेवाला, शुभावह, ग्राही, वीर्य्यवर्द्धक, धातुवर्द्धक, बलकारक तथा क्षय, श्वास, रुधिरविकार, अपची, रक्तपित्त, ज्वर, कुष्ठ, कामला, पाण्डुरोग, दाह, व्रण, मूत्रकृच्छ्र, दाह और वातका विनाश करेहै ।

तवक्षीरनामानि ।

तवक्षीरंपयःक्षीरंयवजंगवयोद्भवम् ।
अन्यद्गोधूमजंचान्यत्पिष्टिकातण्डुलोद्भवम् ॥
अन्यच्चतालसम्भूतंतालक्षीरादिनामकम् ।

अर्थ-तवक्षीर, पयःक्षीर, यवज, गवयोद्भव, गोधूमज, पिष्टिका, तण्डुलोद्भव, तालसम्भूत, तालक्षीर ।



संस्कृतभाषामें	तवक्षीर ।
हिन्दीभाषामें	तवाखीर ।
बंगभाषामें	तवक्षीर ।
मराठीभाषामें	तवकील ।
गुजरातीभाषामें	तवखार ।
अंग्रेजीभाषामें	आरारोट । Arrotwrot
कर्नाटकीभाषामें	तवक्षीर ।
लैटिनभाषामें	कर्क्यमाणास्टिफोलिया । Curcuma-angustifolia
फारसीभाषामें	तवाशीर ।

अस्य गुणाः ।

तवक्षीरन्तुमधुरंशिशिरंदाहपित्तनुत ।
क्षयकासकफश्वासनाशनंचास्रदोषनुत ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-तवाखीर-मधुर, शीतल, तथा दाह, पित्त, क्षय रुधिरविकार, खांसी, कफ और श्वासको दूर करे है ।

अपिच ।

तवक्षीरन्तुमधुरंशुभ्रंशीतंसुगन्धिकम ।
बल्यंवृष्यंपौष्टिकश्चधातुवृद्धिकरं लघु ॥
सुस्निग्धक्षयपित्तास्रपित्तदाहारुचीहरम् ।
कासश्वासज्वरतृष्णाकामलापाण्डुकुष्ठहम् ॥

११

मूत्राश्मरीमूत्रकृच्छ्रमेहव्रणकफापहम् ।
रक्तदोषहरंचान्यंजातंस्वल्पगुणंमतम् ॥ (निघण्टुर०

अर्थ-तवाखीर-मधुर, शुभ्र, शीतल, सुगन्धी, बलकारक, वी० पुष्टिकारक, धातुवर्धक, हलकी, स्निग्ध, तथा क्षय, पित्त, रक्तपित्त अरुचि, खांसी, श्वास, ज्वर, तृषा, कामला, पाण्डु, कोढ़, मूत्राश्मरी कृच्छ्र , प्रमेह, व्रण, कफ और रक्तविकारको दूर करे है।

तवाखीर पांच प्रकारकी होती है, जौ, गेहूं, चावल, तालवृक्ष औ० गायके दूधकी, इसप्रकार तवाखीर अनेक जातिकी होती है, चूनकी भी बनती है । इन सबमें वनगायके दूधकी और जौकी होती है।

समुद्रफेननामानि ।

समुद्रफेनःफेनाश्चडिण्डिरोब्धिकफस्तथा ।

अर्थ-समुद्रफेन, फेन, डिण्डिर, अब्धिकफ, (अर्णवजमल, सिन्धुकफ, डिण्डिर, डिण्डीर, समुद्रकफ, जलहास, फेनक, उदधिमल धामा, लवणोदधिसम्भव, वार्द्धिफेन, पयोधिजसुफेन, अब्धिडिण्डीर, शुष्काशुष्क, विंध्याह्व, दधिफेन, सारमल)

संस्कृतभाषामें	समुद्रफेन ।
हिन्दीभाषामें	समुद्रफेन ।
वंगभाषामें	समुद्रफेना ।
मराठीभाषामें	समुद्रफेण ।
गुजरातीभाषामें	समदर फीण ।
कर्णाटकीभाषामें	कडल नागले ।
तैलिङ्गीभाषामें	सामुद्रनालिके ।
अंग्रेजीभाषामें	कटल फीशबोन । Cattlefishbone
लेटिनभाषामें	सेपिया ओपिसिनेलीस्त । Sepia offici
फारशीभाषामें	कफेदरिया ।
अरबीभाषामें	जुवदुल्लेहेर ।

अस्य गुणाः ।

समुद्रफेनश्चक्षुष्योलेखनःशीतलस्तथा ।
कषायोविषपित्तघ्नःकर्णरुक्कफहल्लघुः ॥ (भा. प्र.)

अर्थ-समुद्रफेन-नेत्रोंको हितकारी, लेखन, शीतल, कषेले तथा विष, पित्त, कर्णरोग और कफको दूर करे है। और हलका है।

अपिच ।

समुद्रफेनांशिशिरंकषायंनेत्ररोगनुत् ।
कफकण्ठामयघ्नश्चरुचिकृत्कर्णरोगहृत् ॥ (राजनि.)

अर्थ-समुद्रफेन-शीतल, कषेला तथा नेत्ररोग, कफ, कण्ठरोग और कर्णरोगका नाश करे है और रुचिको उत्पन्न करे है।

अन्यच्च ।

अब्धिफेनोरुचिकरोलेखनस्तुवरोलघुः ।
चक्षुष्यःशीतलश्चैवपटलादिरुजाहरः ॥
सारश्चविषदोषघ्नःकर्णशूलहरःपरः ॥
कफश्चकण्ठरोगंचपित्तंचैवविनाशयेत् । (नि. र.)

अर्थ-समुद्रफेन-रुचिकारक, लेखन, कषेले, हलके, नेत्रोंको हितकारी शीतल, पटलादिरोगनाशक, सारक, विषनाशक तथा कर्णशूल, कफ, कण्ठरोग और पित्तको दूर करे है।

अन्यच्च ।

समुद्रफेनंशिशिरंतुवरंवान्तिकृत्परम् ।

अर्थ—समुद्रफेन-शीतल, कषेला और अत्यन्त वान्तिकारक है। मात्रा पेकी।

इति श्रीशालिग्रामनिघण्टुभूषणे हरीतक्यादिवर्गः ॥ २ ॥

अथ अष्टवर्गः ।

जीवकनामानि ।

जीवकःक्ष्वेडहृस्वांगौ दीर्घायुःशृंगकःप्रियः ।

अर्थ—जीवक, क्ष्वेड, ह्रस्वाङ्ग, दीर्घायुः शृङ्गक, प्रिय, (शृङ्गकूच, शीर्ष, मधुरक, मधुर, कूर्चशीर्षक, चिरजीवक, जीवन, प्राणद, जीव्य, शृङ्गाह्व, चिरंजीव, मधुर, मङ्गल्य, वृद्धिद, आयुष्मान्, जीवद, बलद)

अस्य गुणाः ।

जीवकोमधुरःशीतोरक्तपित्तानिलार्तिजित् ।

मूत्राश्मरीमूत्रकृच्छ्रमेहव्रणकफापहम् ।
रक्तदोषहरंचान्यंजातंस्वल्पगुणंमतम् ॥ (निघण्टुर०

अर्थ-तवाखीर-मधुर, शुभ्र, शीतल, सुगन्धी, बलकारक, वी० पुष्टिकारक, धातुवर्धक, हलकी, स्निग्ध, तथा क्षय, पित्त, रक्तपि० अरुचि, खांसी, श्वास, ज्वर, तृषा, कामला, पाण्डु, कोढ़, मूत्राश्मरी कृच्छ्र, प्रमेह, व्रण, कफ और रक्तविकारको दूर करे है।

दीर्घायुः श्रृंगकः प्रियः

...ल, ...
..., उदधिम...
...ब्धिडिण्डीर...

वंगभाषामें	समुद्रफेना ।
मराठीभाषामें	समुद्रफेण ।
गुजरातीभाषामें	समदर फीण ।
कर्णाटकीभाषामें	कडल नागले ।
तैलिङ्गीभाषामें	सामुद्रनालिके ।
अंग्रेजीभाषामें	कटल फीशबोन । Cattlefishbone
लैटिनभाषामें	सेपिया ओपिसिनेलीस्त । Sepia offici...
फारशीभाषामें	कफेदरिया ।
अरबीभाषामें	जुवदुल्लेहेर ।

अस्य गुणाः ।

समुद्रफेनश्चक्षुष्योलेखनःशीतलस्तथा ।
कषायोविषपित्तघ्नःकर्णरुक्कफहल्लघुः ॥ (भा. प्र.)

अर्थ-समुद्रफेन-नेत्रोंको हितकारी, लेखन, शीतल, कषैले तथा विष, पित्त, कर्णरोग और कफको दूर करे है। और हलका है।

अपिच।

समुद्रफेनांशिशिरंकषायंनेत्ररोगनुत्।
कफकण्ठामयघ्नश्चरुचिकृत्कर्णरोगहृत्॥ (राजनि.)

[अ]र्थ-समुद्रफेन-शीतल, कषेला तथा नेत्ररोग, कफ, कण्ठरोग और [कर्णरोग]का नाश करे है और रुचिको उत्पन्न करे है।

[illegible]
चक्षुष[illegible]
सार[illegible]
कफ[illegible]

अर्थ-स[illegible]
शीतल, पटला[illegible]
और पित्तको[illegible]

जीवक: क्ष्वेड ह्रस्वांगौ

समुद्र[illegible]

अर्थ—समुद्रफेन—शीतल, कषेला और अत्यन्त [illegible]रक है। मात्रा [illegible]मासेकी।

इति श्रीशालिग्रामनिघण्टुभूषणे हरीतक्यादिवर्गः॥ २॥

अथ अष्टवर्गः।

जीवकनामानि।

जीवकःक्ष्वेडह्रस्वांगौ दीर्घायुःशृंगकःप्रियः।

अर्थ—जीवक, क्ष्वेड, ह्रस्वाङ्ग, दीर्घायुः शृङ्गक, प्रिय, (शृङ्गकूच, शीर्ष, मधुरक, मधुर, कूर्चशीर्षक, चिरजीवक, जीवन, प्राणद, जीव्य, भृङ्गाह्व, चिरंजीव, मधुर, मङ्गल्य, वृद्धिद, आयुष्मान्, जीवद, बलद)

अस्य गुणाः।

जीवकोमधुरःशीतोरक्तपित्तानिलार्तिजित्।

क्षयदाहज्वरान्हन्तिशुक्रश्लेष्मविवर्द्धनः ॥ (गणनि॰)

अर्थ—जीवक-मधुर, शीतल तथा रक्त, पित्त, वात, क्षय, दाह, ज्वरको दूर करे है। शुक्र (वीर्य) और कफको बढ़ावे है।

अपिच ।

जीवकोमधुरःशीतःशुक्रलःकफकृन्मतः ।
रक्तपित्तहरोबल्योवातपित्तज्वरापहः ॥
कृशताक्षयदाहानांरक्तदोषस्यनाशकः । (नि. र.)

अर्थ-जीवक-मधुर, शीतल, शुक्रजनक, कफकारक, रक्तपित्त, बलकारक तथा वात, पित्त, ज्वर, कृशता, क्षय, दाह और रुधिरविकार दूर करे है।

अस्य स्वरूपं यथा ।

जीवन्तीसदृशैःपत्रैर्जीवकोगुल्मकःस्मृतः ।
कण्टीक्षीरीतथानूपेभवतीत्यब्रवीन्मुनिः ॥ (इतिकैयदेवः)

अर्थ-जीवक औषधिका गुल्म अनूप देशमें उत्पन्न होता है, पत्ते जीवन्तीके समान होते हैं, कांटे सूक्ष्म होते हैं और इसमें दूध होता है।

अपिच ।

जीवकोह्रस्वविटपःकूर्चशीर्षश्चदक्षिणे ।
देशेसंजायतेकन्दोनिःसारःसूक्ष्मपत्रकः ॥ (शिवनिघण्टुः)

अर्थ-विटप छोटा है इसका आकार बुरारीके समान होता है, कन्दकी उत्पत्ति दक्षिण देशमें होती है। पत्ते सूक्ष्म सारहीन होते हैं। व्यवहार-कन्द।

ऋषभकनामानि ।

ऋषभोदुर्द्धरोद्राक्षामातृकोवल्लुरोनृपः ॥

अर्थ-ऋषभ, दुर्द्धर, द्राक्षा, मातृक, वल्लुर, नृप, (ऋषभक, वृषभ, वीर, पृथिवीपति, गोपति, धीर, विषाणी, ककुद्मान्, पुङ्गव, बोढी, धुर्य्य, भूपति, कामी, रूक्षप्रिय, उक्षा, लाङ्गली, गौ, बन्धुर, बन्धूर, बनवासी, ऋषिप्रिय, मधुर, शीतल, कामद)

अस्य गुणाः ।

ऋषभकोमधुःशीतोगर्भसन्धानकारकः ।

शुक्रधातुकफानाञ्चकारकोबलदायकः ॥
वृष्यःपुष्टिकरःप्रोक्तःपित्तरक्तातिसारजित् ।
रक्तरुक्कृशतावातज्वरदाहक्षयापहः ॥ (नि. र.)

अर्थ-ऋषभक-मधुर, शीतल, गर्भसन्धानकारक, शुक्रवर्द्धक, कफकारक, बलदायक, वीर्यजनक, पुष्टिकारक तथा पित्त, रक्तातिसार, रक्तरोग, कृशता, वातज्वर, दाह और क्षयका नाश करे है ।

जीवकर्षभकगुणाः ।

जीवकर्षभकौबल्यौशीतौशुक्रकफप्रदौ ।
मधुरौपित्तदाहास्रकार्श्यवातक्षयापहौ ॥ (भा. प्र.)

अर्थ-जीवक और ऋषभक-बलकारक, शीतल, वीर्यवर्द्धक, कफकारक, मधुर, पित्त, दाह, रुधिरविकार, वायु और क्षयरोगको नाश करेहै ।

ऋषभोजीवकगुणोकामदःसविशेषतः । (शोडलनिघण्टु)

अर्थ-ऋषभक औषधीके गुण जीवककेही समान हैं । विशेषतः यह कामको उत्पन्न करे है ।

जीवकर्षभकस्वरूपम् ।

जीवकर्षभकौज्ञेयौहिमाद्रिशिखरोद्भवौ ।
रसोनकन्दवत्कन्दौनिःसारौसूक्ष्मपत्रकौ ॥ (भा. प्र.)

अर्थ-जीवक और ऋषभक यह दोनों औषधि हिमालय पर्वतके शिखर उत्पन्न होतीहैं, इनका कद लहसनके कंदकी समान होता है साररहित बारीक पत्ते होते ह ।

जीवक-बुहरीके आकार और ऋषभक वृषभ (बैल) शिंगके आकार होता है ।

मेदानामानि ।

मेदाधीरामणिच्छिद्रामधुराजीवनीरसा ।

अर्थ-मेदा, धीरा, मणिच्छिद्रा, मधुरा, जीवनी, रसा (मेदोद्भवा, श्रेष्ठा, स्नावरी, वसा, शल्यपर्णिका, मेदसारा, स्नेहवती, मेदिनी, स्निग्धा, मेदा, ..., साध्वी, शल्यदा, बहुरन्ध्रिका, मेदोवती, पुरुषदन्तिका, शल्यपर्णी छिद्रबहुला, भव्या, जीवनिका, अध्वरा, स्वल्पपर्णी)

मेदागुणाः ।

मेदातुमधुराशीतापित्तदाहार्त्तिकासनुत् ।

राजयक्ष्मज्वरहरावातदोषकरीचसा ॥ (निघण्टुचूडा०)

अर्थ-मेदा-मधुर, शीतल तथा पित्त, दाह, खांसी, राजयक्ष्मा और ज्वरको नाश करेह और वातको उत्पन्न करे है।

अपिच।

मेदातुमधुराशीतावृष्यास्वाद्वीगुरुःस्मृता।
शुक्रवृद्धिकरीस्तन्यास्निग्धाचश्लेष्मलास्मृता॥
वातंपित्तंरक्तदोषंक्षयश्चैवविनाशयेत्।
ज्वरंदाहश्चकासंचनाशयेदितिकीर्तितम्॥ (नि. र.)

अर्थ-मेदा-मधुर, शीतल, वीर्यजनक, स्वादु, भारी, धातुवर्द्धक, दूध उत्पन्न करनेवाली, स्निग्ध, कफकारक तथा वात, पित्त, रक्तविकार, ज्वर, दाह और खांसीको दूर करे है।

मेदालक्षणम्।

शुभ्रकन्दोनखच्छेद्योमेदधातुरिवस्त्रवेत्।
यःसमेदेतिविज्ञेयोजिज्ञासातत्परैर्जनैः॥

अर्थ--जिसका सफेद कन्द हो और जिसमें नखके छेदनेसे मेदा के समान एकप्रकारका रस टपके, उसको मेदा जानना।

महामेदनामानि।

महामेदादेवमणिर्वसुच्छिद्राविपाण्डुरा।

अर्थ--महामेदा, देवमणी, वसुच्छिद्रा, विपाण्डुरा (जीवनी, पांशुरो, महामेद, पुरोद्भवा, देवेष्ट, सुरमेदा, दिव्या, देवगन्धा, वृक्षाहा, देवतामणि, सोमा, देवेष्टा, सुरामेदा और मेदोद्भवा)

महामेदागुणाः।

महामेदाहिमारुच्याकफशुक्रप्रवृद्धिकृत।
हन्तिदाहास्रपित्तानिक्षयंवातंज्वरंचसा॥ (राजनिघ०)

अर्थ--महामेदा--शीतल, रुचिकारक, कफ और शुक्रको बढानेवाली, दाह, रक्तपित्त, क्षय, वात और ज्वरका नाश करनेवाली है।

महामेदा--मेदागुणाः।

मेदायुग्मंपरंस्निग्धंशुक्रमेदःप्रवर्द्धनम्।
मधुरंरसपाकाभ्यांजीवनंवातपित्तजित॥

अर्थ--मेदा और महामेदा--स्निग्ध, शुक्रजनक, मेदोवर्द्धक, रस और पाकमें मधुर, जीवन तथा वातपित्तको दूर करे है ।

महामेदालक्षणम् ।

महामेदाभिधःकन्दोमोरंगादौप्रजायते ।
शुभ्रार्द्रकनिभःकन्दोलताजातःसुपाण्डुरः ॥

अर्थ-महामेदा--नामवाला कन्द मोरंगादि देशोंमें उत्पन्न होता है यह कन्द देखनेमें सफेद अदरखकी समान होता है, इसकी बेल चलती है और पाण्डुरंगका होता है ।

ऋद्धिनामानि ।

ऋद्धिःप्राणप्रियावृष्याप्राणदासम्पदाह्वया ।

अर्थ--ऋद्धि, प्राणप्रिया, वृष्या, प्राणदा, सम्पदाह्वया, (योग्य, सिद्धि, लक्ष्मी, प्राणप्रदा, जीवदात्री, सिद्धा, योग्या, चेतनीया, रथाङ्गी, मङ्गल्या, लोककान्ता, जीवश्रेष्ठा, यशस्या)

अस्यागुणाः ।

ऋद्धिर्बल्यात्रिदोषघ्नीशुक्रलामधुरागुरुः ।
प्राणैश्वर्यकरीमूर्च्छारक्तपित्तविनाशिनी ॥ (भा. प्र.)

अर्थ-ऋद्धि-बलकारक, त्रिदोषनाशक, शुक्रजनक, मधुर, भारी, प्राणप्रद, ऐश्वर्यजनक तथा मूर्च्छा और रक्तपित्तनाशक है ।

अन्यच्च ।

ऋद्धिस्तुमधुरास्निग्धामेधाकृच्छीतलास्मृता ।
कफंशुक्रंवर्धयन्तीप्राणैश्वर्यबलप्रदा ॥
रक्तशुद्धिकरीरुच्यागुर्वीकुष्ठापहामता ।
क्रिमित्रिदोषमूर्च्छास्रपित्ततृट्क्षयपित्तहा ॥
वातंरक्तरुजंजूर्तिंनाशयेदितिकीर्तिता । (निघण्टुरत्नाकर)

अर्थ-ऋद्धि-मधुर, स्निग्ध, मेधाजनक, शीतल, कफकारक, शुक्रवर्द्धक प्राणदायक, ऐश्वर्यजनक, बलकारक, रक्तशोधक, रुचिकारक, भारी तथा कोढ, कृमिदोष, मूर्च्छा, रक्तपित्त, तृषा, क्षय, पित्त, वातरक्त और ज्वरको नाश करेहै ।

वृद्धिनामानि ।

वृद्धिर्बोधनिकाचैवप्रियासिद्धिःसुरोत्तमा ।

अर्थ-वृद्धि, बोधनिका, प्रिया, सिद्धि, सुरोत्तमा, (योग्या, लक्ष्मी, पुष्टिदा, वृद्धिदात्री, मंगल्या, श्री, सम्पत्, आशी, जनेष्टा, भूति, सुख जीवभद्रा)

वृद्धिगुणाः ।

वृद्धिर्गर्भप्रदाशीताबृंहणीमधुरास्मृता ।
वृष्यापित्तास्रशमनीक्षतकासक्षयापहा ॥

अर्थ-वृद्धि-गर्भजनक, शीतल, पुष्टिकारक, मधुर, वीर्य्यवर्द्धक, रक्तकी शान्ति करनेवाली तथा उरःक्षत, खांसी और क्षयरोगका नाश क

ऋद्धिवृद्धयुत्पत्तिलक्षणम् ।

ऋद्धिर्वृद्धिश्चकन्दौचभवतःकोशलेऽचले ।
श्वेतलोमान्वितःकन्दोलताजातःसरन्ध्रकः ॥
सएवऋद्धिर्वृद्धिश्चभेदमप्येतयोर्ब्रुवे ।
तूलग्रंथिसमाऋद्धिर्वामावर्त्तफलाचसा ॥
वृद्धिस्तुदक्षिणावर्त्तफलाप्रोक्तामहर्षिभिः ।

अर्थ-ऋद्धि और वृद्धि दोनों कन्द कोशलपर्वतमें उत्पन्न होतेहैं, दोनोंही कन्द लताजातिके होतेहैं और इनके ऊपर सफेद रोम होतेहैं छिद्रयुक्त होतेहैं ।

ऋद्धि और वृद्धिमें केवल इतनाही अंतर है कि, ऋद्धि कपासकी, समान आकृतिवाली बांएभागमें आवर्तशील फलयुक्त होतीहै, वृद्धि भागमें आवर्तमय फलसहित होतीहै ।

काकोलीनामानि ।

काकोलीशीतपाकीचपयस्यावायसोलिका ।

अर्थ-काकोली, शीतपाकी, पयस्या, वायसोलिका, (वायसोली, वीरा, क्षीरा, शुक्ला, मेदुरा, ध्मांक्षोली, ध्मांक्षिका स्वादुमांसी, वयस्था, जीवंती, शुक्लक्षीरा, पयस्विनी, कायस्थिका, जोवनीया)

काकोलीगुणाः ।

काकोलीमधुरास्निग्धाक्षयपित्तानिलार्त्तिनुत् ।

रक्तदाहज्वरघ्नीचकफशुक्रविवर्द्धिनी ॥ (रा. नि.)

अर्थ--काकोली-मधुर, स्निग्ध तथा क्षय, पित्त, वातकी पीडा, रक्तदोष, दाह और ज्वरको नाशकरे है, कफ और शुक्रको बढाव है ।

अन्यच्च ।

काकोलीशीतलावृष्यामधुराशुक्रकारिणी ।
तिक्ताकफकरीगुर्वीक्षयपित्ततृषाहरा ॥
रक्तदोषंरक्तपित्तंदाहंज्वरंविषम् ।
वातंपित्तरुजंचैवनाशयादितिकीर्तिता ॥

अर्थ-काकोली-शीतल, वीर्य्यवर्द्धक, मधुर, धातुवर्द्धक, कडवी, कफकारक, भारी तथा क्षय, पित्त, तृषा, रुधिरविकार, रक्तपित्त, दाह, ज्वर, विष-वायु और पित्तरोगको दूर करे है ।

क्षीरकाकोलीनामानि ।

पयस्याक्षीरकाकोलीमहावीरापयस्विनी ।

अर्थ-पयस्या, क्षीरकाकोली, महावीरा, पयस्विनी (क्षीरकाकोलिका, क्षीरशुक्ला, सुकोली, अष्टमी, क्षीरविषाणिका, जीववल्ली, जीवशुक्ला, क्षीरा, क्षीरवल्ली, वयस्था, क्षीरमधुरा, दुग्धाढ्या)

क्षीरकाकोलीगुणाः ।

क्षीरकाकोलिकावृष्यास्तन्यवृद्धिकरीलघुः ।
रसवीर्य्यविपाकेषुकाकोलीसदृशाचसा ॥ (ग. नि.)

अर्थ-क्षीरकाकोली-वीर्य्यजनक, स्तनोंमें दूधबढानेवाली, हलकी और रस, वीर्य्य और विपाकमें काकोलीकी समान है ।

द्विविधकाकोलीगुणाः

काकोलीयुगलंशीतंशुक्रलंमधुरंगुरु ।
बृंहणंवातदाहास्रपित्तशोषज्वरापहम् ॥

अर्थ-काकोली और क्षीरकाकोली-शीतल, वीर्यजनक, मधुर, भारी, पुष्टिकारक तथा वात, दाह, रक्तपित्त, शोष और ज्वरको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

काकोलिकाद्वयंवृष्यमवस्थास्थापनंपरम् ।
स्वादुपाकरसंबल्यंशीतवीर्य्यञ्चजीवनम् ॥ (शो. नि.)

अर्थ-काकोली और क्षीरकाकोली-वृष्य, अवस्थास्थापक, पाक रसमें स्वादिष्ठ, बलकारक, शीतवर्य्य और जीवन है ।

काकोलीक्षीरकाकोल्योरुत्पत्तिलक्षम् ।

जायते क्षीरकाकोली महामेदोद्भवस्थले ।
यत्रस्यात्क्षीरकाकोलीकाकोलीतत्रजायते ॥
पीवरीसदृशःकन्दःक्षीरंस्रवतिगन्धवान् ।
सप्रोक्तःक्षीरकाकोलीकाकोलीलिंगमुच्यते ॥
यथास्यात्क्षीरकाकोलीकाकोल्यपितथाभवेत् ।
एषाकाचिद्भवेत्कृष्णाभेदोऽयमुभयोरपि ॥

अर्थ-जिस स्थानमें महामेदा उत्पन्न होती है, उसीस्थानमें काकोली क्षीरकाकोली उत्पन्न होती है । क्षीरकाकोलीका कन्द सतावरके समान है और इसमें एक प्रकारका सुगन्धि युक्त दूध निकलता है । जैसी क्षीरकाकोली होती है, वसेही काकोली होतीहै, इन दोनोंमें केवल इतनाही अंतर है कि क्षीरकाकोलीकी अपेक्षा काकोली किंचित् कृष्णवर्ण होती है।

अष्टवर्गनामानि ।

जीवकर्षभकौमेदेकाकोल्यौवृद्धिऋद्धिके ।
अष्टवर्गोऽष्टभिर्द्रव्यैःकथितश्चरकादिभिः ॥

अर्थ-जीवक, ऋषभक, मेदा, महामेदा, वृद्धि, ऋद्धि, काकोली क्षीरकाकोली इन एकत्र मिलेहुए आठ द्रव्योंको अष्टवर्ग कहते हैं।

अष्टवर्गगुणाः ।

अष्टवर्गोहिमःस्वादुर्बृंहणःशुक्रलोगुरुः ।
भग्नसन्धानकृद्बल्यःशरीरकफवर्द्धनः ॥
वातपित्तास्रतृड्दाहज्वरमेहक्षयप्रणुत् ।

अर्थ-अष्टवर्ग-शीतल, स्वादिष्ठ, पुष्टिजनक, बलकारी, शरीर और कफ वर्द्धकहै । वीर्यजनक, भारी, भग्नसन्धानकारक तथा वात, पित्त, रक्त, दाह, ज्वर, प्रमेह और क्षय रोगका नाश करे है ।

राज्ञामप्यष्टवर्गस्तुयतोऽयमतिदुर्लभः ।
तस्मादस्यप्रतिनिधिंगृह्णीयात्तद्गुणंभिषक् ॥

अर्थ-यह अष्टवर्ग राजाओंकोभी अत्यन्त दुर्लभ है इसकारण अष्टवर्गके बदले इन्हीके सदृश गुणवाली औषधी लेनी ।

एतस्य प्रतिनिधीनाह ।

मेदाजीवककाकोलीऋद्धिद्वन्द्वेपिचासति ।
वरीविदार्यश्वगन्धावाराहीश्चक्रमात्क्षिपेत् ।

अर्थ-मेदा और महामेदाके अभावमें सतावर लेनी, जीवक और ऋषभकके अभावमें विदारीकन्द लेना, काकोली और क्षीरकाकोलीके अभावमें असगन्ध लेनी, ऋद्धि और वृद्धिके अभावमें वाराहीकन्द लेना चाहिये ।

जीवक १ ऋषभक, २ काकोली, ३ क्षीरकाकोली ४ मेदा ५ महामेदा ६ ऋद्धि ७ और वृद्धि ८ यह आठ कन्द हैं । इनके नाम गुण, उत्पत्ति और लक्षण प्राचीन ग्रन्थोंमें लिखे हैं, परन्तु उनका ठीक निश्चय नहीं होता कि, उनका कैसा रूप है, वह कैसी हैं सो 'भावमिश्र' के लिखे अनुसार हम प्रथमही लिख चुके हैं कि " यह अष्टवर्ग राजाओंकोभी दुर्लभ है, इनके नाम संस्कृतके अतिरिक्त और किसी भाषामें आजपर्यन्त नहीं सुने, किन्तु किसी-किसी ग्रन्थकारने बंगाला, कर्णाटकी, तेलंगी, तामिली और लैटिन्-भाषामें इनके नाम लिखे हैं, सो उन देशोंमें प्रचलित न होनेके कारण अशुद्धसे जान पडते हैं " ।

मधुयष्टिनामानि ।



मधुयष्टी यष्टिमधूर्यष्ट्याह्वाक्लीतका स्मृता ।
मधुकंयष्टिमधुकंयष्टिकामधुयष्टिका ॥

अर्थ-मधुयष्टी, यष्टिमधू, यष्ट्याह्वा, क्लीतका, मधुक, यष्टिमधुक, यष्टिका,

मधुयष्टिका, (यष्टिमधु, यष्टिमधुका, यष्टीक, यष्टिमधुका, यष्टयाह्व, यष्टि, क्लीतक, यष्टि, मधुस्रवा, मधुयष्टिक)

(क्लीतन, क्लीतनीयक, मधुम, मधुवली, मधूली, मधुररसा, अति मधुरनाम, शोषापहा, सौम्या)

संस्कृतभाषामें	यष्टीमधु, जलयष्टी, स्थलयष्टी, यष्टिरसक्रिया।
हिन्दीभाषामें	मुलहटी, मीठीलकरी, मुलैठिका।
वङ्गभाषामें	यष्टीमधु।
मराठीभाषामें	ज्येष्ठमध।
गुजरातीभाषामें	जेठोमधनो मूल, जेठीमधनो शीरो।
कर्णाटकीभाषामें	यष्टिमधु, वल्लियष्टिमधु।
तैलिंगीभाषामें	यष्टीमधुकमु।
अंग्रेजीभाषामें	लिकरिसुरूट्। Lipuorice root कामन् लिकरिस् Lipuorice Fxtract
लैटिनभाषामें	ग्लिसिरिझारेदिक्सग्लिसिरिझाग्लेब्रा। Glycyrrhizaglabra
फारसीभाषामें	वेखमेहेकू नझु।
अरबीभाषामें	असलुस्सूसमुकस्सररुब्यसूस।

अस्यगुणाः।

मधुरंयष्टिमधुकंकिञ्चित्तिक्तञ्चशीतलम्।
चक्षुष्यंपित्तहृद्रुच्यं शोषतृष्णाव्रणापहम्॥ (रा. नि.)

अर्थ-मुलठी-मधुर. किंचित् कड़वी, शीतल, नेत्रों को हितकारी, पित्तनाशक, रुचिकारी तथा शोथ, तृषा और व्रणको दूर करे है।

अन्यच्च।

यष्टिर्हिमागुरुःस्वाद्वीचक्षुष्याबलवर्णकृत।
सुस्निग्धाशुक्रलाकेश्यास्वर्य्यापित्तानिलास्रजित्।
व्रणशोथविषच्छर्दितृष्णाग्लानिक्षयापहा।
तस्यारसक्रियास्वाद्वीयष्टेःसातुगुणाधिका॥

अर्थ--मुलैठी-शीतल, भारी, मधुर, नत्रोंको हितकारी, बलकारक, वर्णको सुन्दर करनेवाली, स्निग्ध, वीर्यजनक, केशोंको सुशोभित करनेवाली, स्वरको सुधारनेवाली तथा पित्त, वात, रक्त, घाव, सूजन, विष, वमन, तृषा,

ग्लानि और क्षयरोगका नाश करे है। इसका सत्त (रुब्बसूस) मीठा है और मुलैठीकी अपेक्षा अधिक गुणवाला है।

अन्यच्च।

मधुवल्लीद्विप्रकाराजलजाचस्थलोद्भवा।
सावृष्यामधुरारुच्याबल्यागुर्व्वीचशीतला॥
चक्षुष्यावर्णदास्वर्य्यास्निग्धाकेशहितामता।
शुक्रलारक्तपित्तघ्नीव्रणशुद्धिकरीमता॥
शोथंविषंवातरक्तंव्रणंवान्तितृषांतथा।
ग्लानिंक्षयंरक्तदोषंरक्तपित्तश्चपित्तकम्॥
सद्योव्रणंवातपित्तंनाशयेदितिकीर्तितम्। (नि. र.)

अर्थ—दोनों प्रकारकी मुलैठी–[एक जलमें उत्पन्न होनेवाली, दूसरी स्थलमें उत्पन्न होनेवाली] वीर्यवर्द्धक, मधुर, रुचिकारी, बलकारक, भारी शीतल, नेत्रोंको हितकारी, वर्णको सुंदर करनेवाली, स्वरको निर्मल करनेवाली, स्निग्ध, केशोंको हितकारी, शुक्रजनक, [पुष्टिकारक, गौल्य, मूत्रवर्द्धक] रक्तपित्तनाशक, व्रणको शुद्धि करनेवाली तथा सूजन, विष, वातरक्त घाव, वमन, तृषा, ग्लानि, क्षई, रक्तविकार, रक्तपित्त, पित्त, सद्योव्रण और वातपित्तको दूर करे है।

जलयष्ट्यर्कगुणाः।

वार्यष्टयर्कोविषच्छर्दितृष्णाग्लानिक्षयापहः। (लंकेश)

अर्थ–जलमें उत्पन्न होनेवाली मुलैठीका अर्क–विष, वमन, तृषा, ग्लानि और क्षई रोगको दूर करे है।

विवरण—मुलैठीका क्षुप होता है, इसके पत्ते छोटे छोटे गोल होते हैं इसमें छोटी और बारीक फली लगती हैं, फूल लाल आता है, इसकी जड़ प्रयोगमें लीजाती है। दूसरी वेलवाली मुलैठी होती है।

कम्पिल्लनामानि।

कम्पिल्लःकर्कशश्चन्द्रोरक्ताङ्गोरोचनोऽपिच।

अर्थ–कम्पिल्ल, कर्कश, चन्द्र, रक्ताङ्ग, रोचन, (कम्पिल्लक, कपिल, काम्पील, काम्पिल्य, कम्पिल्य, रेचनी, काम्पिल्लका, रेचना, पिकाक्ष,

रोचनी, लघुपत्रक, कम्पीलक, रेची, रेचन, रञ्जक, लोहिताङ्ग, रक्त-रक्तफल, नदीव'प्र. बहुपुष्प और बहुफल)

संस्कृतभाषामें	काम्पिल्ल, कम्पिल्लक ।
हिन्दीभाषामें	कबी (म्बी) ला ।
बंगभाषामें	कमलागुंडि, गुण्डारोचनी ।
मराठी भाषामें	कपिला ।
गुजरातीभाषामें	कपीलो ।
कर्णाटकीभाषामें	कम्पिल्लकं ।
अंग्रेजीभाषामें	केमिला राटलीरा । Kamila Rottlera
लैटिन्भाषामें	मल्लोटस्फिलिपाइनसिस् । (वृक्ष) Mellotusphilippinesis Rottleratin
फारसीभाषामें	कन्बिलाय ।
अरबीभाषामें	किन्वीर ।

अस्य गुणाः ।

कम्पिल्लकोविरेचीस्यात्कटूष्णोव्रणनाशनः ।
कफकासार्तिहारीचजन्तुकृमिहरोलघुः ॥ (राजनि॰)

अर्थ-कवीला-दस्तावर, चरपरा, गरम, व्रणनाशक तथा कफ, जन्तु और कृमिको दूर करे है । और हलका है ।

अपिच ।

काम्पिल्लःकफपित्तास्रकृमिगुल्मोदरव्रणान् ।
हन्तिरेचीकटूष्णंचमेहानाहविषाश्मनुत् ॥

अर्थ-कवीला-कफ, रक्तपित्त, कृमि, गुल्म, उदररोग और घाव करे है, दस्त करानेवाला है, चरपरा है, गरम है और आनाह, विष पथरीका नाश करे है ।

अन्यच्च ।

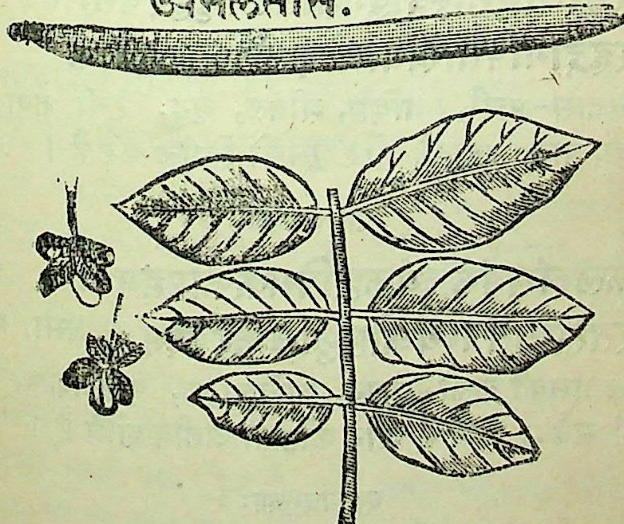
काम्पिल्लकः सरश्चाग्निदीपकःकटुकःस्मृतः ।
व्रणस्यरोपणश्चोष्णोलघुर्भेदीकफापहः ॥
व्रणगुल्मोदराध्मानकासपित्तप्रमेहहा ।
आनाहश्चविषश्चैवमूत्राश्मरिरुजापहः ॥

कृमिंचरक्तदोषञ्चनाशयेदितिकीर्तितः ।
तच्छाकंशीतलंतिक्तंवातलंग्राहिद्दीपनम् ॥

अर्थ-कबीला-सारक, अग्निदीपक, चरपरा, व्रणको भरनेवाला, गरम, हलका, दस्तावर, कफनाशक तथा व्रण, गुल्म, उदररोग, आध्मान, खाँसी, पित्तप्रमेह, आनाह विष, मूत्राश्मरी, कृमि और रक्तविकारको नाश करेहै । इसके पत्तोंका शाक, शीतल, कडवा, वादी. मलरोधक और जठराग्निको दीपन करेहै ।

विवरण । इसके वृक्ष पर्वतोंपर अधिकतासे उत्पन्न होतेहैं पत्ते गूलरकी समानहैं, इसके फल छोटेबेरकी समान होतेहैं । उनके ऊपर लाललाल रजसी जमी होती है, पहाडी लोग उन फलोंको तोड टोकरियोंमें डाल पैरोंसे मलतेह, जो रज छूटकर नीचे झड जाती है उसीको कबीला कहतेहैं । मात्रा ६ रत्तीकी ।

आरग्वधनामानि ।



आरग्वधोराजवृक्षोव्याधिघातोजठरनुत ।

अर्थ-आरग्वध, राजवृक्ष, व्याधिघात, जठरनुत् (चक्रपरिव्याध, सम्यक्, चतुरंगुल, शम्याक, आरेवत, कृतमाल, सुवर्णक, मन्थान, रोचन, दीर्घफल नृपद्रुम. प्रमेह, हिमपुष्प, राजतरु, कण्डूघ्न, महाकर्णिकार, ज्वरान्तक, अरुज, स्वर्णपुष्प, स्वर्णद्रु, कुष्ठसूदन, कर्णाभरणक, महाराजद्रुम, कर्णिकार स्वर्णाङ्ग, दीर्घफल, स्वर्णभूषण, आरोग्यशिम्बी, शम्याक, व्यथान्तक, आमघ्न,

स्वर्णस्थाली, रेचन, कुण्डली, हेमपुष्प, शेफालिका, नक्तमाल, स्व सारफल, कुष्ठघ्न, द्रुमोत्पल)

संस्कृतभाषामें	आरग्वध ।
हिन्दीभाषामें	अमलतास, घनबहेडा ।
वंगभाषामें	सोनालु, शोंदाल, एखालनडी, वानरनाडी।
मराठीभाषामें	बाहवा, बाव्याच्याशेंगांतीलगर ।
गुजरातीभाषामें	गरमालो । गरमालोनो गोंल ।
कर्णाटकीभाषामें	हेगाके ।
तैलङ्गीभाषामें	रेल्लकाया ।
अंग्रेजीभाषामें	पुडिंगपाईपाट्री, पर्जिङ्गकाश्या,

काश्यापल्य Pudding pipetree, Purgingcassia Cassia

लैटिन्भाषामें	केश्याकिसचुला । Cassiafistula
अरबीभाषामें	ख्यारेशम्बर ।

आरग्वधगुणाः ।

आरग्वधोगुरुःस्वादुःशीतलोमृदुरेचनः ।
ज्वरहृद्रोगपित्तास्रवातोदावर्तशूलनुत ॥

अर्थ-अमलतास-भारी, स्वादिष्ठ, शीतल, मृदु, रेची तथा ज्वर, हृद्रोग, रक्तपित्त, वात, उदावर्त और शूलको निर्मूल करे है ।

एतत्फलगुणाः ।

तत्फलंस्रंसनंरुच्यंकुष्ठपित्तकफापहम् ।
ज्वरेतत्सततंपथ्यंकोष्ठशुद्धिकरंपरम् ॥ (भा. प्र.)

अर्थ-अमलतासकी कली-स्रंसन, रुचिकारक, कुष्ठनाशक, पित्तनिवा कफघ्न, ज्वरमें सर्वदा पथ्य है और कोठेको अतीव शोधे है ।

एतत्पत्रगुणाः ।

पत्रमारग्वधस्यापिकफमेदोविशोषणम् ।
ज्वरेचसततंपथ्यंमलदोषसमन्विते ॥

अर्थ-अमलतासके पत्ते-कफ और मेदाशोषक हैं, ज्वरमें सदा पथ्य और मलको ढीला करे हैं ।

एतत्पुष्पगुणाः ।

पुष्पाणिस्वादुशीतानितिक्तानिग्राहकाणिच ।

तुवराणिवातलानिकफपित्तहराणिच ॥

अर्थ-अमलतासके फूल-स्वादिष्ठ, शीतल, कडुवे, ग्राहक, कषेले, वातवर्द्धक, कफ और पित्तको दूर करे हैं।

एतन्मज्जागुणाः ।

मज्जातुमधुरापाकेस्निग्धाचाग्निविवर्द्धिनी ।
रेचिकापित्तवातानांनाशिकासमुदाहृता ॥

अर्थ-अमलतासकी मज्जा-पाकमें मधुर, स्निग्ध, जठराग्निको वर्धक. रेचक तथा पित्त और बादीका नाश करे है

एतन्मूलगुणाः ।

कृतमालस्यमूलन्तुदुग्धेनसहपाचयेत् ।
वातरक्तंनिहंत्याशुदद्रुमण्डलकान्यपि ॥

अर्थ-अमलतासकी जड-दूधमें औटाई हुई-वातरक्तनाशक, दाह और मण्डलकुष्ठको नष्ट करे है ।

कर्णिकारगुणाः ।

कर्णिकारःसरस्तिक्तःकटूष्णःकफशूलहा ।
उदरक्रिमिमेहघ्नोव्रणगुल्महरोनृप ॥ (नि. र.)

अर्थ-कर्णिकार-(दूसरे प्रकारका अमलतास) सारक, कडवा, चरपरा, गरम तथाकफ,शूल, उदररोग, क्रिमि, प्रमेह, व्रण और गुल्मका नाश करे है। गजकर्ण, कुष्ठ, दद्रु, खुजली, विचर्चिकादि रोगोंपर अमलतासके पत्तोंको पीस उसमें कांजी मिलाकर लेप करते हैं।

गण्डमाला रोगमें अमलतासकी जडको चावलोंके पानीमें पीसकर नास (नाकके द्वारा पीना) देते हैं ।

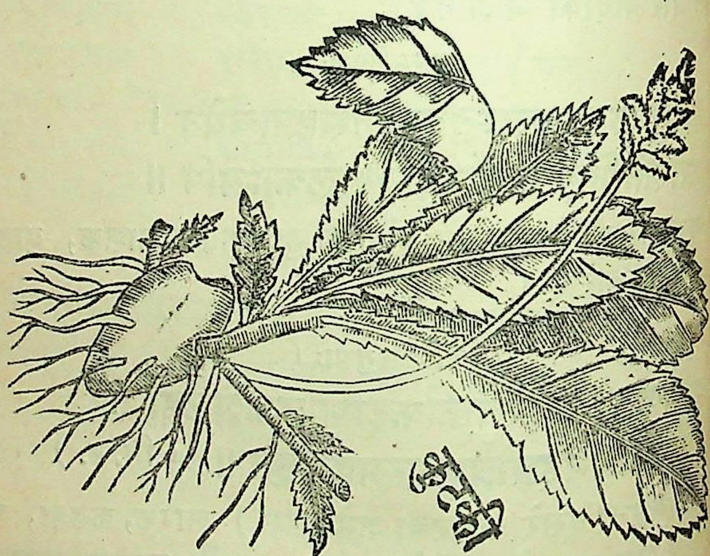
विवरण। इसका बडा वृक्ष होता है, पत्ते लाल चंदनके पत्तोंके समान होते हैं, फूल पीले, तरवट आमलेकी सदृश होते हैं। फली गोल और १-१॥ हाथ लम्बी होती है, उसमेंसे गूदा निकलताहै, उस गूदेका जुलाब लगताहै। व्यवहार-गूदा, पत्ते, फूल, मूल। मात्रा गूदेकी ३ मासेसे लेकर १॥ तोलेतक है।

कटुकानामानि ।

तिक्ताकाण्डेरुहारिष्टाचक्रांगीशकुलादनी ।

तिक्तारोहणिकाचैवकटुकाकटुरोहिणी ॥

अर्थ-तिक्ता-काण्डेरुहा, अरिष्टा, चक्राङ्गी, शकुलादनी, तिक्तरो कटुका, कटुरोहिणी, (जननी, तिक्ता, तिक्तरोहिणी, मत्स्यपित्ता, सादनी, शतपर्वा, द्विजाङ्गी, मलभेदिनी, अशोकरोहिणी, कृष्णा, कृ कृष्णभेदी, महौषधी, कट्वी, अंजनी, कटु, केदारकटुका, वामघ्नी, रिग्रंथा, वान्तिदा, कटंवरा, कटुम्भरा, अशोका, काण्डरुहा, चित्रांगी, मत्स्यशकला)



संस्कृतभाषाम	कटुका ।
हिन्दीभाषामें	कुटकी ।
वंगभाषामें	कट्की ।
मराठीभाषामें	कुटकी, काळी कुटकी ।
गुजरातीभाषामें	कडु ।
कणाटकीभाषामें	केदार कटुकी ।
तैलिङ्गीभाषामें	काटकरोहिणी, नल्लकोलकर ।
अंग्रेजीभाषामें	ब्लाक्हल्लोबोरलीस् । Black Hellebo
लैटिन्भाषामें	हेल्लोवोरी नेग्रीरै दिक्स पिक्रोर्हिजा कुरो Picrorrihiza Kurroa
फारसीभाषामें	खर्वके सियाह ।
अरबीभाषामें	खर्वक अस्वद खर्वके अवीयद ।

अस्या गुणाः ।

कटीतुकटुकापाकेतिक्तारूक्षाहिमालघुः
भेदिनीदीपनीहृद्याकफपित्तज्वरापहा ॥
प्रमेहश्वासकासास्त्रदाहकुष्ठक्रिमिप्रणुत् । (भा. प्र.)

अर्थ-कुटकी-पाकमें कटु, तिक्त, रूक्ष, शीतल, हलकी, भेदन, दीपन, हृदयको हितकारी तथा कफ, पित्त, ज्वर, प्रमेह, श्वास, कास, रुधिरदोष, दाह, कोढ और क्रिमिका नाश करे है ।

अन्यच्च ।

कटुकीशीतलातिक्ताकटीचाग्निप्रदीपनी ।
भेदिकाचसरारूक्षालघ्वीरक्तरुजापहा ॥
शीतपित्तश्वासकफदाहारुचिज्वराञ्जयेत् ।
प्रमेहकुष्ठविषमज्वरकासक्षयापहा ॥
कामलाविषहृद्रोगनाशिनीतिप्रकाशिता ।

अर्थ-कुटकी-शीतल, तीखी, कडवी, अग्निदीपक, भेदक, (दस्तावर) सारक, रूखी, हलकी तथा रक्तरोग, शीतपित्त, श्वास, कफ, दाह, अरुचि, ज्वर, प्रमेह, कोढ, विषमज्वर, खांसी, क्षई, कामला, विष और हृदयरोगको दूर करे है ।

अस्याः शोधनविधिः ।

कटुकीमुष्णदुग्धेनप्रक्षाल्यग्राहयेदपि ।

अर्थ-कुटकीको गरम दूधसे धोकर औषधिके काममें लवे ।

विवरण । बडी जडवाली गुल्म है, झाझरा छोटा, पत्ते अण्डेके समान आकारवाले, जिनके नीचेका भाग बडा और बगल खण्डित होती है, फूल नीला और गुच्छोंमें होता है, हिमालयके निकट पर्वतोंके जङ्गलमें उत्पन्न होती है । कुटकी कृष्णा और पीत इनभेदोंसे दो प्रकारकी है इनमें पीले रंगकी कुटकी नेत्ररोगोंको दूर करती है । व्यवहार मूल । मात्रा ६ रत्तीसे लेकर ७ मासेतक है ।

चिरतिक्तनामानि ।

चिरातिक्तश्चभूनिम्बःकिरातंरामसेनकः ।

अर्थ-चिरतिक्त, भूनिम्ब, किरात, रामसेनक (अनार्यतिक्त, कि चिरातिक्त, तिक्तक, सुतिक्तक, चिराटिका, कटुतिक्ता, कैरात, काण्डी हैम, काण्डतिक्त)

नेपालनिम्बनामानि ।

नेपालनिम्बोनैपालस्तृणनिम्बोज्वरान्तकः ।
नाडीतिक्तोर्धतिक्तश्चनिद्रारिःसान्निपातहा ॥

अर्थ-नेपालनिम्ब, नैपाल, तृणनिम्ब, ज्वरान्तक, नाडीतिक्त, अ निद्रारि, सन्निपातहा ।

संस्कृतभाषामें	चिरतिक्त ।
हिन्दी भाषामें	चिरायता ।
वंगभाषामें	चिरता, चिराता, नेपाले निम्ब ।
मराठीभाषामें	किराईत, काडेकिराईत, फूलकिराईत,
गुजरातीभाषामें	करियातु ।
कर्णाटकीभाषामें	नेलबंउचु ।
तैलंगीभाषामें	नेलानेमु ।
लैटिन्भाषामें	स्विर्टियाचिरेटा । Sovirtia Chirata Aphelia Chirata
अंग्रेजीभाषामें	चिरेटा ।
फारसीभाषामें	नेनिहाद ।
अरबीभाषामें	कस्बुझ़, झारिरा ।

भूनिम्बगुणाः ।

भूनिम्बोवातलस्तिक्तोव्रणरोपणकारकः ॥
सरःशीतःपथ्यकरोलघूरूक्षस्तृषापहः ।
कफंपित्तंज्वरंकुष्ठंकण्डूंशोथंक्रमींस्तथा ॥
सन्निपातज्वरंदाहंशूलंमेहंव्रणंतथा ।
श्वासंकासंचप्रदरंशोषंचाशोंरुचिंजयेत् ॥ (नि. र.)

अर्थ-चिरायता-वातकारक, कडवा, व्रणरोपक, दस्तावर, शीतल, प हलका, रूखा तथा तृषा, कफ, पित्त, ज्वर, कोढ़, कण्डु, सूजन, कृ सन्निपातज्वर, दाह, शूल, प्रमेह, व्रण, श्वास, खांसी, प्रदर, शोष, बवा और अरुचिको दूर करे है ।

नेपालनिम्बगुणाः ।

नेपालतिक्तंकिञ्चिदुष्णयोगवहंलघु ।
तिक्तंपित्तंकफंशोथंरक्तरुक्तृड्ज्वराञ्जयेत् ॥

अर्थ--नेपालीनीम--किंचित् गरम, योगवाही, हलका, कडवा, तथा पित्त, कफ, सूजन, रुधिररोग, पियास और ज्वरका नाश करे हैं। शेष गुण चिरायतेके समान जानने ।

अपिच ।

नैपालःसन्निपातारिर्ज्वरनिद्रापहस्तथा । (शो. नि.)

अर्थ--नेपालीनीम--सन्निपात, ज्वर और निद्राको दूरकरे हैं। चिरायतेका रूप होवाहै । मात्रा २ मासेकी ।

कुटजनामानि ।

कुटजःशक्रपर्य्यायोवत्सकोगिरिमल्लिका ॥

अर्थ--कुटज, शक्रपर्य्याय, वत्सक, गिरिमल्लिका, (शक्र, वरतिक्त, पाण्डुर, कटुक, कुटक, शक्राशन, कौटज, तिक्तक, रक्तनाशक, वृक्षक, शक्राह्वय, कूटज, ग्राही, कालिङ्ग, मल्लिकापुष्प प्रावृष्य, शक्रपादप, यवफल, संग्राही, पाण्डुर, द्रुम, प्रावृषेण्य, महागन्ध, इन्द्रद्रु, कौट, शक्रशाखी, इन्द्रयवफल)

संस्कृतभाषामें	कुटज, श्वेतकुटज ।
हिन्दीभाषामें	कुडा, कौरेया ।
वंगभाषामें	कुडचिगाछ, कुटराज ।
मराठीभाषामें	काळा कुडा, सफेद कुडा ।
गुजरातीभाषामें	कडी--दुधला ।
कर्णाटकीभाषामें	कोड़सिगेयमरनु ।
तैलिङ्गीभाषामें	अंकुडुचेट्टु अगिशचेट्टु, तुम्भिकचेट्टु, अंकेलु, चराल कुष्ठ ।
औत्क०भाषामें	कुडिया ।
अंग्रेजीभाषामें	ओबल्लिवडरोझबे । Ovalleaved Rose Bay
लैटिन्भाषामें	राइटियाएंडिसेनटेरिका । Wlightia antidysenterica
अरबीभाषामें	तिवाज ।

कुटजगुणाः ।

कुटजःकटुकोरूक्षोदीपनस्तुवरोहिमः ।
अर्शोऽतिसारपित्तास्रकफतृष्णामकुष्ठनुत् ॥ (भा. प्र.)

अर्थ-कुडा-कटु, रूक्ष, दीपन, कषाय, शीतल तथा बवासीर, अ[तिसार] रक्त- पित्त, कफ, तृषा, आम और कुष्ठको नष्ट करे है।

अपिच ।

कुटजःकटुकःप्लीहकफपित्तातिसारनुत् ॥ (शो. नि.)

अर्थ-कुडा-कटु, प्लीहा, कफ, पित्त और अतिसारका नाशकरे है।

अन्यच्च ।

कुटजःकटुतिक्तोष्णःकषायश्चातिसाराजित् ।
तत्रासितश्चपित्तघ्नस्त्वग्दोषार्शोनिकृन्तनः ॥ (रा. नि.)

अर्थ--कुडा--कटु, तिक्त, गरम, कषाय और अतिसारनाशक है, और [काला] कुडा पित्त, त्वचाके दोष और बवासीरको दूर करे है।

श्वेतकुटजगुणाः ।

श्वेतस्तुकुटजस्तिक्तःकटुश्चोष्णोग्निदीपकः ।
पाचकस्तुवरोरूक्षोग्राहकोरक्तदोषहा ॥
कुष्ठातिसारपित्तार्शःकफतृट्कृमिहामतः ।
ज्वरंचामश्चदाहंचनाशयेदितिकीर्तितः ॥ (नि. र.)

अर्थ--सफेद कुडा--कडवा, तीखा, गरम, अग्निप्रदीपक, पाचक, [कषाय] रूखा, मलरोधक तथा रक्तविकार, कोढ़, अतिसार, पित्त, बवासीर, [कफ] तृषा, कृमि, ज्वर, आम और दाहको दूर करे है।

अस्यपुष्पगुणाः ।

पुष्पंतुवत्सकस्योक्तंतुवरंचाग्निदीपकम् ।
तिक्तंशीतंवातलंचलघुपित्तातिसारनुत् ॥
रक्तदोषंकफंपित्तंकुष्ठंचैवातिसारकम् ।
कृमींश्चैवहरेदेतदुक्तंपूर्वैश्चसूरिभिः ॥ (नि. र.)

अर्थ--कुडेके फूल--कषेले, जठराग्निको दीपन करनेवाले कडवे, [शीतल] वातकारक, हलके तथा पित्तातिसार, रुधिरविकार, कफ, पित्त, कुष्ठ, [अति-] सार और कृमिका नाश करे हैं।

अस्य शिम्बीशाकगुणाः ।

तस्याशिम्बीभवं शाकंव्यंजनंचामवातजित् ।
रुच्यंकफघ्नंरक्तातीसारकुष्ठकृमीञ्जयेत् ॥

अर्थ-कुडेकी फलियोंका शाक-आमवातनाशक, रुचिकारक तथा रक्तातिसार, कोढ़ कृमिको दूर करे है ।

त्वग्गुणाः ।

कुटजस्यत्वचा तिक्तासर्वातीसारनाशिनी ।

अर्थ-कुडेकी छाल-कडवी और सर्वातिसारनाशक है ।

विवरण । बडा वृक्ष होताहै, पत्ते रामफलके पत्तोंकी समान बडे बडे होते, फूल सफेद होता है, इसमें फली होती हैं ।

सफेद कुडेके दूधमें विष होताहै, उस दूधको खानेसे मनुष्य मरजाते हैं ।

इन्द्रयवनामानि ।

उक्तंकुटजबीजन्तुयवमिंद्रयवंतथा ।
कलिंगंचापिकालिंगंतथा भद्रयवंस्मृतम् ॥

अर्थ-कुटजबीज, यव, इन्द्रयव, कलिंग, कालिंग, भद्रयव, (कलिंगक, शक्राह्व, शक्रबीज, वत्सक, वत्सकबीज, कलिंगबीज, कुटज, भद्रज)

संस्कृतभाषामें	इन्द्रयव ।
हिन्दीभाषामें	इन्द्रजौ ।
गुजरातीभाषामें	इंदरजव ।
बंगलेमें	इन्द्रयव ।
मराठीभाषामें	कुडयाचें बीज, इन्द्रजव ।
कर्णाटकीभाषामें	कोडसिगेय बीज ।
फारसीभाषामें	जवान कुञ्चिस्क ।
अरबीभाषामें	लेसानुत् असाकीर ।
लैटिन्भाषामें	होलरहेनाएंटिडिसेंटेरिका । Holarrhena antidysenterica

अस्यगुणाः ।

इन्द्रयवाकटुतिक्ताशीताकफवातरक्तपित्तहरा ।
दाहातिसारशमनीनानात्वग्दोषशूलमूलघ्नी ॥ (र० नि०)

अर्थ-इन्द्रजौ, कटु, तिक्त, शीतल तथा कफ, वात, रक्तपित्त, दाह, अतिसार, नाना प्रकारके त्वचाविकार और शूलको निर्मूल करेहै ।

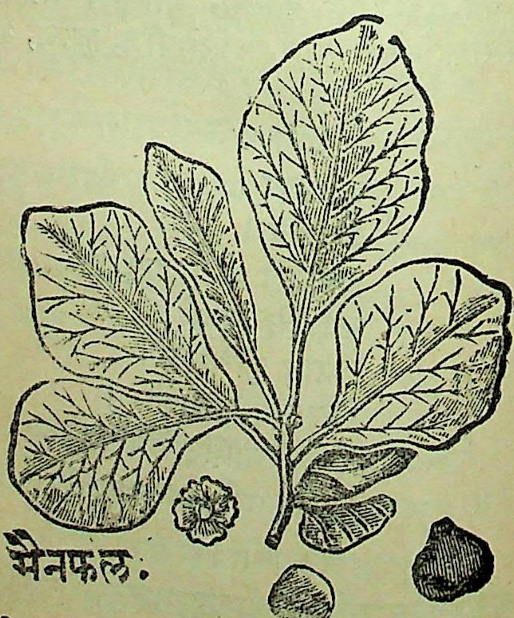
अपिच ।

वत्सकस्य तु बीजं च कटु तिक्तं च शीतलम् ।
ग्राहकं पाचनं चोष्णं चाग्निदीप्तिकरं परम् ॥
वातरक्तं कफं दाहं पित्तं नानाज्वरांस्तथा ।
शूलमर्शश्चातिसारं त्रिदोषं गुदकीलकम् ॥
कुष्ठं कृमि विसर्पामरक्तार्शोस्रुजभ्रमान् ।
श्रमं चैव निहंत्याशु कथितं मुनिपुंगवैः ॥ (नि. र.)

अर्थ—इन्द्रजौ-तीखे, कडवे, शीतल, मलरोधक, पाचक, गरम, अग्नि... पक तथा वातरक्त, कफ, दाह, पित्तज अनेक प्रकारके ज्वर, शूल, बवासीर, अतिसार, त्रिदोष, गुदकील, कोढ, कृमि, विसर्प, आम, रक्तार्श, रक्तरोग... और श्रमको दूर करेहैं ।

विवरण । कुडेके बीजोंको इन्द्रजौ कहतेहैं । इन्द्रजौ दोप्रकारके होतेहैं... मीठे दूसरे कडवे, इसमें सफेद कुडेके इन्द्रजौ मीठे होतेहैं और काले... इन्द्रजौ कडवे होते हैं । मात्रा ३ मासेको ।

मदनफलनामानि ।



मैनफल.

मदनश्छर्दनः पिण्डीनटः पिण्डीतकस्तथा ।
करहाटो मरुबकः शल्यको विषपुष्पकः ॥

अर्थ-मदन, छर्द्दन, पिण्डीनट, पिण्डीतक, करहाट, मरुबक, शल्यक, विषपुष्पक, (पिचुक, मुचुकुन्द, कण्टकी, करहाटक, शल्य, कण्ठ, रामच्छनक, रामाच्छर्दनक, कैटर्य्य, धाराफल,तगर, राठ, गाल्ल, ग्रन्थिफल, घण्टाल, वस्तिशोधन)

संस्कृतभाषामें	मदन ।
हिन्दीभाषामें	मैनफल, करहर ।
वंगभाषामें	मयनाकांटा ।
मराठीभाषामें	गेळ ।
गुजरातीभाषामें	ढोल ।
कर्णाटकीभाषामें	वोनगरे रणय वोनगरे एरंडु ।
तैलिंगीभाषामें	वसन्तकडिम्भिचेट्टु ।
तामिलीभाषामें	मडुककूरय ।
औत्क०	पातर ।
नेपालीभाषामें	मैदल ।
प०	मिण्डकोल्ल ।
दक्षिणीभाषामें	मेणाहल ।
अंग्रेजीभाषामें	बुशीगार्डिनीया । Bushy garbenia
लैटिन्भाषामें	रेन्डियाडयुमेटोरम् । Ranbiabumetorum
अरबीभाषामें	जोजुल्कै ।

अस्य गुणाः ।

मदनोमधुरस्तिक्तोवीर्योष्णोलेखनोलघुः ।
वान्तिकृद्विद्रधिहरःप्रतिश्यायव्रणान्तकः ॥
रूक्षकुष्ठकफानाहशोथगुल्मव्रणापहः । (भावप्रकाश)

अर्थ-मैनफल--मधुर, कडवा, उष्णवीर्य्य, लेखन, हलका, वमनकारक, विद्रधिहारक, प्रतिश्याय (जुकाम) और व्रणविनाशक है, रूखा तथा कफ, आनाह, सूजन, गुल्म और घावको दूर करे है ।

अपिच ।

राठोवमनकृद्भेदीपक्वामाशयशुद्धिकृत् ।
त्वग्दोषमारुतश्लेष्मविषप्रशमनःस्मृतः ॥ (शो. नि.)

अर्थ--मैनफल--वमनकारक, भेदक, पक्वाशय और आमाशयशोधक, त्वचाके रोग, वात, कफ और विषविकारको दूर करे हैं।

अपिच।

मदनः कटुकस्तिक्तोमधुश्चोष्णश्चलेखनः।
लघूरूक्षोवान्तिकारीवस्तिकर्म्मणिचोत्तमः॥
कफंवातंव्रणंशोथमानाहंविद्रधींस्तथा।
गुल्मंकुष्ठंप्रतिश्यायंविषंचार्शोज्वरंजयेत्॥

अर्थ--मैनफल--कटुरसयुक्त, तिक्तरसान्वित, मधुर, उष्ण, लेखन, वमनकारक, वस्तिकर्ममें उत्तम तथा कफ, वात, घाव, सूजन, आनाह, विद्रधि, गुल्म, प्रतिश्याय, (जुकाम) विष, बवासीर और ज्वरको हरे है।

कृष्णःश्वेतश्चमदनःशीतलोमधुरःस्मृतः।
कटुस्तिक्तश्चतुवरोवान्तिकृत्कफनाशनः॥
पक्वामाशयशुद्धेश्चकारकःपित्तनाशकः।
हृद्रोगनाशकश्चैवपूर्वस्माद्उत्तमोगुणैः॥ (नि. र.)

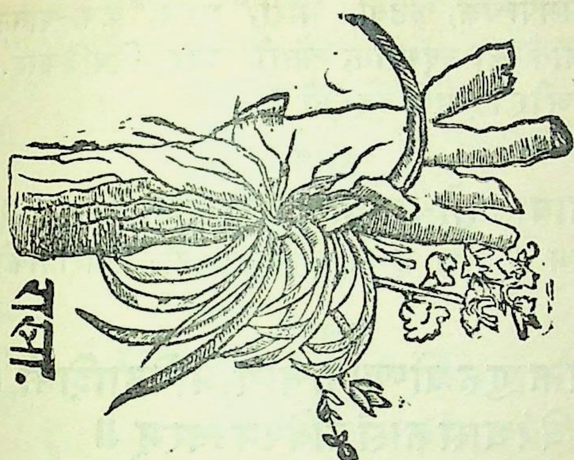
अर्थ--दूसरे प्रकारके दोनोंमैनफल (एक काले रंगका दूसरा सफेद रंगका) शीतल, मधुर, कटु, तिक्त, कषेले, वान्तिकारक, कफनाशक, पक्वाशय और आमाशयको शोधनेवाले तथा पित्त और हृदयरोगका नाश करनेवाले हैं, यह पहले मैनफलकी अपेक्षा अधिक गुणवाले हैं।

विवरण। मैनफलका वृक्ष होता है, पत्ते चिरचिटेकी समान होते हैं, फूल सफेद पांच पखडीके कुछेक पीलापन लिये होते हैं, फल अखरोटके आकार होते हैं, यह वमन करानेमें एकही औषधी है।

रास्नानामानि।

नाकुलीसुरसारास्नासर्पगन्धापलङ्कषा।

अर्थ–नाकुली, सुरसा, रास्ना, सर्पगन्धा, पलंकषा (द्रोणगन्धिका, सुगन्धा, गन्धनाकुली, नकुलेष्टा, भुंजगाक्षी, छत्राकी, सुवहा, रस्या, श्रेयसी, रसना, एलापर्णी, रसा, सुगन्धिमूला, रसाढ्या, अतिरसा, मुक्तरसा, युक्तरसा)



संस्कृतभाषामें रास्ना।
हिन्दीभाषामें रासन, रायसन, रहसनी, रास्ना।
वंगभाषामें रास्ना।
मराठीभाषामें नावळीच्या मुळ्या।
गुजरातीभाषामें रासना।
कर्णाटकीभाषामें रसनाकेदारे प्रसिद्धा।
तैलिंगीभाषामें रासनापुडका, किरम्मिचक्क अन्तर दामर।
लैटिन्भाषामें वेडा रोक्स बुर्धि आई। Vanda roxburghie
अंग्रेजीभाषामें प्लुचियालेन्सिओलेटा। Pluehialanceolata
फारसीभाषामें, रासुन।
अरबीभाषामें, जंजवील शामी।

रास्नाभेदाः।

रास्नातुत्रिविधाप्रोक्तामूलंपत्रंतृणंतथा।
ज्ञेयौमूलदलौश्रेष्ठौतृणरास्नातुमध्यमा॥ (रा. नि.)

अर्थ-रास्ना-जड, पत्ते और तृण इन भेदोंसे तीन प्रकारकी है। तिनमे, जड़ रास्ना और पत्र रास्ना श्रेष्ठ होती है और तृण रास्ना अधम गिनी जाती है।

रास्नागुणाः।

रास्नाऽऽमपाचनीतिक्तागुरूष्णाकफवातजित्।
शोथश्वाससमीरास्रवातशूलोदरापहा॥
कासज्वरविषाशीतिवातिकामयहिध्मजित्। (भा. प्र.)

अर्थ--रास्ना--आमपाचक, कडवी, भारी, गरम, कफ-वातनाशक, सूजन, रक्तवात, वातशूल, उदररोग, खांसी, ज्वर, विषविकार, ८० प्रकारके वातरोग और हिध्मको दूर करे है ।

अपिच ।

रास्नोष्णावातशोथामवातवातामयाञ्जयेत् ॥ (शो०

अर्थ-रास्ना-गरम है, वात, सूजन, आमवात और वातरोगोंको नष्ट

अन्यच्च ।

रास्नातिक्तागुरुश्चोष्णापाचन्यामविनाशिनी ।
वातरक्तंविषंश्वासंकासंचविषमज्वरम् ॥
शोथंहिक्कांचामवातंकफंशूलंविनाशयेत् ।
ज्वरंकम्पंचोदरञ्चसर्वान्वातांश्चनाशयेत् ॥

अर्थ-रास्ना-कडवी, भारी, गरम, पाचक, आमनाशक तथा वात, विष, श्वास, खांसी, विषमज्वर, सूजन, हिचकी, आमवात, कफ, शूल, कम्प, उदररोग, और सर्व प्रकारके वातका विनाश करे है ।

विवरण । बंगदेशके प्राचीन आम्रादि वृक्षोंपर उत्पन्न होती है, इसकी वृक्षकी छालके ऊपर जमी रहती है, फूल पीला बेंगनी छींटेदार होता है सहित रास्नाका क्षुप लायकर सुन्दरी काष्ठके ऊपर नारियलकी टट्टीकी छ रखकर पानी दे, वृक्ष बढ़ेगा और फूलेगा । व्यवहार-जड । मात्रा २ तोले

नाकुलीनामानि ।

नाकुलीसुरसानागसुगन्धागन्धनाकुली ।
नकुलेष्टाभुजंगाक्षीसर्पांगीविषनाशिनी ॥

अर्थ-नाकुली, सुरसा, नागसुगन्धा, गन्धनाकुली, नकुलेष्टा, भुजंगाक्षी, सर्पांगी, विषनाशिनी, (सर्वगन्धा, सुगन्धा, रक्तपत्रिका, ईश्वरी, नाग- अहिभुक्, सुरसा, सर्पादिनी, व्यालगन्धा)

गन्धनाकुलीनामानि ।

अन्यामहासुगन्धाचसुवहागन्धनाकुली ।
सर्पाक्षीफणिहंत्रीचनकुलाढ्याहिभुक्चसा ॥
विषमर्दिनिकाचाहिमर्दनीविषमर्दनी ।
महाहिगन्धाहिलताज्ञेयास्याद्द्वादशाह्वया ॥

अर्थ-महासुगन्धा, सुवहा, गन्धनाकुली, सर्पाक्षी, फणिहंत्री, नकुलाढया, अहिमुक्, विषमर्दनिका, अहिमर्दनी, विषमर्दनी, महाहिगन्धा, अहिलता)

संस्कृतभाषामें	नाकुली, गन्धनाकुली।
हिन्दीभाषा,,	नाई, नाकुलीकन्द, नकुलकन्द, हरकाईचन्दा
बंगभाषा,,	नाकुली, सुगन्धनाकुली।
मराठीभाषा,,	मुंगुसवेल, नाई सापसंद।
कर्णाटकी,,	विषमुंगरीद्वय।
तैलिङ्गीभाषा,,	पद्मपुचेट्ट।
लैटिन्भाषा,,	रोवोल्फिया सर्वेंटिना। Rauwolha Serpentina
फारसीभाषा,,	छोटा चांदा

नाकुलीगुणाः।

नाकुलीकटुकातिक्तातथोष्णाकृमिरोगहृत्
वृश्चिकोन्दुरसर्पादिविषंनाशयतिक्षणात् ॥
तुवराचात्रिदोषघ्नीकन्देप्येतेगुणाःस्मृताः । (ग. नि.)

अर्थ-नाकुली--चरपरी, कडवी, गरम, कृमिरोगनाशक, विच्छू, मूषा और सर्पादिके विषको तत्क्षण दूर करनेवाली, कषेली और त्रिदोषनाशक है, इसके कन्दके गुणभी इसीके समान जानने।

अन्यच्च।

नाकुलीतुवरातिक्ताकटुकोष्णाविनाशयेत् ॥
भोगिलूतावृश्चिकाखुविषज्वरकृमिव्रणान् । (भा. प्र.)

अर्थ--नाकुली, कषेली, कडवी, चरपरी, गरम तथा साँप, मकरी, विच्छू और मूषा इनका विष, ज्वर, कृमि और व्रणको दूर करे है।

अन्यच्च।

नाकुलीयुगलंतिक्तंकटूष्णंचात्रिदोषनुत्।
अनेकविषविध्वंसिकिञ्चिच्छ्रेष्ठंद्वितीयकम् ॥ (रा. नि.)

अर्थ-दोनों प्रकारकी नाकुली--(नाकुली, सुगन्धानाकुली) कडवी, चरपरी, गरम, त्रिदोषनाशक, अनेक प्रकारके विषविनाशक और गन्धनाकुली नाकुलीकी अपेक्षा किंचित् श्रेष्ठ है।

नाकुलीकी वेल जंगलमें होती है, पत्ते पानकी समान होते हैं, नीचे कन्द होता है।

माचिकानामानि ।

माचिकाप्रस्थिकाम्बष्ठातथाचाम्बालिकाम्बिका।
मयूरविदलाकेशीसहस्रावातमूलिका ॥ (भा. प्र.)

अर्थ- माचिका, प्रस्थिका, अम्बष्ठा, अम्बालिका, अम्बिका, मयूर॰ केशी, सहस्रवातमूलिका, (बालिका, बाला, शठाम्बा, अम्बाष्ठ॰ मयूरिका, गन्धपत्री, चित्रपुष्पी, श्रेयसी, मुखवाचिका, ॰ भूरिमल्ली)

अस्या गुणाः ।

अम्बष्ठासाकषायाम्लाकफकृच्चरुजापहा ।
वातामयबलासघ्नीरुचिकृद्दीपनीपरा ॥ (राजनि.)

अर्थ--मोईया--कषेला, खट्टा तथा कफरोग, कर्णरोग, वातरोग और नाशक है, रुचिको उत्पन्न करे है और जठराग्निप्रदीपक है।

अन्यच्च ।

माचिकाम्लारसेपाकेकषायाशीतलालघुः ।
पक्वातिसारपित्तास्रकफकण्ठामयापहा ॥ (भा. प्र.)

अर्थ-मोईया-अम्लरसान्वित, पचनेमें कषेला, शीतल, हलका तथा तिसार, रक्त, पित्त, कफ और कण्ठ रोगका नाश करे है ।

तेजोवतीनामानि ।

तेजस्विनीतेजवतीतेजन्यालघुवल्कला ।
महौजसीपारिजाताशीतातिक्तातितेजनी ॥

अर्थ--तेजस्विनी, तेजवती, तेजन्या, लघुवल्कला, महौजसी, पारि॰ शीता, तिक्ता, अतितेजनी (तेजोह्वा, तेजनी, अश्वघा, वल्कली, ॰ कुली, बिडालघ्नी, सुतेजसी)

संस्कृतभाषामें	तेजोवती।
हिन्दीभाषामें	तेजबल ।
वंगभाषामें	तेजबल ।
मराठीभाषामें	तेजबल, तिर्पानी ।
गुजरातीभाषामें	तेजबल ।
दक्षिणीभाषामें	जलघरी ।

अंग्रेजीभाषामें टुथएकट्री । Toothaehetree
लैटिनभाषामें झैंथोक् सिलोन होसटिली । zanthozylon Hostile

अस्यागुणाः ।

तेजनीकफहृद्रोगमुखदंतादिरोगजित् ।
हिक्काग्निमांद्यमर्शांसिकण्ठरोगस्यनाशिनी ॥ (शो. नि.)

अर्थ-तेजबल-कफ, हृदयरोग, मुखरोग, दन्तादिरोग,हिचकी, मंदाग्नि, बवासीर और कण्ठरोगका नाशकरनेवाला है ।

अन्यच्च ।

तेजस्विनीकफश्वासकासशूलामवातजित् ।
पाचन्युष्णाकटुस्तिक्तारुचिवह्निप्रदीपनी ॥ (म. नि.)

अर्थ-तेजबल-कफ, श्वास, खांसी, शूल और आमवातविनाशक है । पाचक, गरम, चरपरा, कडवा, रुचि और जठराग्निको दीपन करे है ।

अन्यच्च ।

तेजोवतीकटूष्णाचतिक्ताचाग्निप्रदीपनी ।
पाचकारुचिदाकण्ठ्याकफवातविनाशिनी ॥
कण्ठशुद्धिकरीपित्तकासश्वासविषापहा ।
हिक्काग्निमांद्यमर्शांसिमुखरोगस्यनाशिनी ॥ (नि. र.)

अर्थ-तेजबल-चरपरा, गरम, कडवा, अग्निप्रदीपक,पाचक, रुचिकारक, कण्ठको हितकारी, कफ वात नाशक, कण्ठशोधक, तथा पित्त, खांसी, श्वास, विष, हिचकी, मंदाग्नि, बवासीर, और मुखरोगका नाश करे है ।

विवरण । तेजबलके वृक्ष हरिद्वार बद्रीनाथके ओर वनोंमें उत्पन्न होते हैं, इस वृक्षकी छाल लालमिर्चकी समान चरपरी है, कहीं कहीं इसकी जडको लालमिर्चकी जगह डालते हैं । व्यवहार छाल, मूल । मात्रा २ मासेकी ।

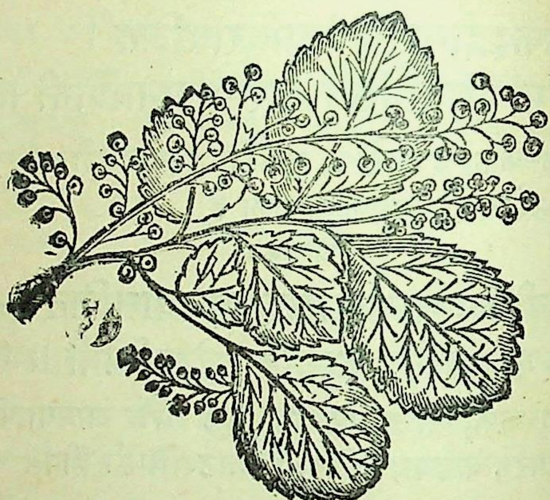
ज्योतिष्मतीनामानि ।

ज्योतिष्मतीपूतितैलालगणास्फुटबन्धनी ।
पारावतपदीपिण्यापीततैलाचकंगुणी ॥

अर्थ-ज्योतिष्मती, पूतितैला, लगणा, स्फुटबन्धनी, पारावतपदी, पिण्या, पीततैला, कंगुणी (परावतांघ्रि, कटभी, ज्योतिष्का, निष्फला, इंगुदी, स्वर्ण-लता, अनलप्रभा, ज्योतिर्लता, सुपिंगला, दीप्ता, मेध्या, गतिदा, दुर्जरा

सरस्वती, अमृता, कंगुनी, सुवर्णलतिका, अग्निभाषा, दुर्मदा, लवणा, आवेगा, काकाण्डी, त्रिपर्णी, पीड्या)

महाज्योतिष्मतीनामानि ।



मालकांगनी.

महाज्योतिष्मतीतीक्ष्णाकंगुनीबृहत्कंगुनी ।

अर्थ-महाज्योतिष्मती, तीक्ष्णा, कंगुनी, बृहत्कंगुनी (तेजोवती, कनकप्रभा, सुवर्णनकुली, लवणा, अग्निदीप्ता, तेजस्विनी, सुरलता, अग्निगर्भा, शैलसुता, सुतैला, सुवेगा, वायसी, तीव्रा, काकाण्डी, गीर्लता, श्रीलता, सौम्या, ब्राह्मी, लवणकिंशुका, पारावतपदी, पीततैला, यशस्विनी, मेध्या, मेधावती, धीरा)

संस्कृतभाषामें	ज्योतिष्मती, महाज्योतिष्मती ।
हिन्दीभाषामें	मालकांगुनी, बडीमालकांगुनी, उग्निजिनी ।
वङ्गभाषामें	लताफट्की, वडलताफट्की ।
गुजरातीभाषामें	मालकांगणी ।
मराठीभाषामें	मालकांगोणी (को०) पिंगवी ।
कर्नाटकीभाषामें	कौगुएरडु ।
तैलिङ्गीभाषामें	वावजी (वेक्रुकुडुतोगे)
अंग्रेजीभाषामें	स्टाफ्ट्री । Sfaffftree
लैटिनभाषामें	सिलेस्ट्रसपेनिकयुलेटा । Calastruspanic
फारसीभाषामें	काल ।

ज्योतिष्मतीगुणाः ।

ज्योतिष्मतीतिक्तरसाचरूक्षाकिञ्चित्कटुर्वातकफापहा

दाहप्रदादीपनकृच्चमेध्याप्रज्ञांचपुष्णातितथाद्वितीया॥ रा. नि.

अर्थ-मालकांगुनी-चरपरी, कडवी, रूखी, किंचित् चरपरी, वातकफनाशक, दाहजनक, अग्निप्रदीपक और मेधा तथा प्रज्ञाकारकहै, दूसरीके भी इसीके समान गुण जानने ।

अपिच ।

ज्योतिष्मतीकटुस्तिक्तासराकफसमीरजित् ।
अत्युष्णावामनीतीक्ष्णावह्निबुद्धिस्मृतिप्रदा ॥ (म. नि.)

अर्थ-मालकाङ्गुनी-चरपरी, कडवी, सारक, कफवातनाशक, अत्यन्त गरम, वमनजनक, तीक्ष्ण तथा जठराग्नि, बुद्धि और स्मरणशक्तिको देनेवालीहै ।

अन्यच्च ।

ज्योतिष्मतीतुकटुकातिक्ताचाग्निप्रदीपनी ।
अत्युष्णादाहकामेध्याप्रज्ञापुष्टिकरीमता ॥
वृष्यावान्तिकरीतीक्ष्णावर्ण्याचतुवरामता ।
उदरस्य हरेत्पीडांव्रणपाण्डुविसर्पहा ॥ (गणनि)

अर्थ-मालकांगुनी-चरपरी, कडवी, अग्निदीपक, अत्यन्त उष्ण, दाहकारक, मेधाजनक, प्रज्ञाकारक, पुष्टिदायक, वीर्यवर्धक, वमनकारक, तीक्ष्ण, शरीरके रंगको उज्ज्वल करनेवाली, कषली तथा उदरकी पीडाको हरतीहै घाव, पाण्डुरोग और विसर्प रोगको दूर करेहै ।

विवरण । इसकी बेल होतीहै, पत्ते गोल कुछ अनीदार होतेहैं । फलोंका झुमका होताहै, कच्चे फल नीले होतेहैं और पकनेपर पीले पडजातेहैं उनमेंसे लाल बीज निकलताहै, उन बीजोंमेंसे पीला तेल निकलताहै, वह तेल अनेक प्रकारके वातरोगोंको और खुजलीको दूर करताहै ।

पुष्करमूलनामानि ।

पौष्करंपुष्करमूलंपुष्करंपद्मवर्णकम् ॥

अर्थ-पौष्कर, पुष्करमूल, पुष्कर, पद्मवर्णक, (पद्मकर्ण, पद्मपत्रमूल, सुवर्णक, पुष्करिणी, वीरपुष्कराह्वया, काश्मीर, ब्रह्मतीर्थ, श्वासारि, मूलपुष्कर, पुष्करजटा, पुष्करशिफा, वीर, पद्मपत्रक, पद्मपुण्य, सागर, शूर, सुरुह, सुमूलक, शूलघ्न, कुष्ठभेद)

संस्कृत भाषामें पुष्करमूल ।

हिन्दीभाषामें	पोहकरमूल ।
वंग भाषामें	कुष्ठविशेष, पुष्करमूल ।
गुजरातीभाषामें	पोकरमूल ।
मराठीभाषामें	पुष्करमूल
कर्णाटकीभाषामें	पुष्करमूल ।

अस्यगुणाः ।

पुष्करंकटुतिक्तोष्णंकफवातज्वरापहम् ।
श्वासारोचककासघ्नंशोफघ्नंपाण्डुनाशनम् ॥ (रा. नि.)

अर्थ-पोहकरमूल -चरपरा, कडवा, तथा कफ, बात, ज्वर, श्वास, अरोचक, खाँसी, सूजन और पाण्डुरोगका नाश करे है ।

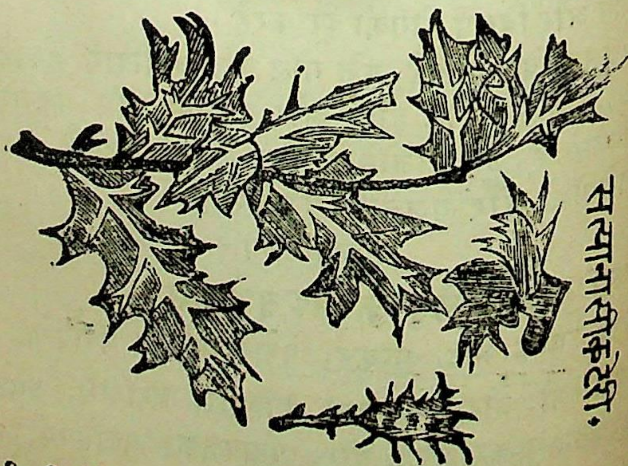
अपिच ।

पुष्करंपार्श्वरुग्वातकासशोथज्वरापहम् ।
श्वासोर्ध्ववातपाण्डुघ्नंहिक्कादोषानिवारणम् ॥

अर्थ- पोहकरमूल- पार्श्ववेदना, वात, खांसी, सूजन, ज्वर, श्वास, ऊर्ध्ववात, पाण्डुरोग और हिक्कारोगनिवारक है ।

पोहकरमूल उत्तम कहीं नहीं मिलता, इसलिये इसके बदलेमें कूट है।

स्वर्णक्षीरी नामानि ।



स्वर्णक्षीरीहेमशिखापटुपर्णीहिमावती ॥
हैमवतीपीतपुष्पातन्मूलंचोकउच्यते ॥

अर्थ--स्वर्णक्षीरी, हेमशिखा, पटुपर्णी, हिमावती, हैमवती, पीत

(स्वर्णदुग्धा, स्वर्णाह्वा, रुक्मिणी, सुवर्णा, हेमदुग्धा, हेमक्षीरी, काञ्चनी, कटुपर्णी, हेमाह्वा, क्षीरिणी, काञ्चनक्षीरी, कर्बिणी, तिक्तदुग्धा, हिमाद्रिजा, यवचिंचा, हिमोद्भवा, हैमी, हिमजा) इसकी जडको चोक कहते हैं ॥

संस्कृतभाषामें	कटुपर्णी, स्वर्णक्षीरी, क्षीरिणी ।
हिन्दीभाषामें	सत्यानासी, कटेरी (चौक) भरेंबंद पिसोला ।
वंगभाषामें	स्वर्णक्षीरी, शोणाखिरुई-(चोक)।
मराठीभाषामें	कांटेधोत्रा, फिरंगीधोत्रा ।
गुजरातीभाषामें	दारुडी ।
कर्णाटकीभाषामें	चिक्कणिकेयभेद ।
तामिलभाषामें	ब्रह्मदण्डुत्तिरइ ।
अंग्रेजीभाषामें	गैंबोज्ञ थिसल । Gambogr Thistld मेकसिकन् आर्गिमोन् । Maxican Argemon.
लैटिन्भाषामें	आर्गिमनीमेक्सी केना ।

अस्या गुणाः ।

हेमाह्वारेचनीतिक्ताभेदिन्युत्क्लेशकारणी ।
कृमिकण्डूविषानाहकफपित्तास्रकुष्ठनुत् । (भा. प्र.)

अर्थ-स्वर्णक्षीरी-रेचक, कडवी, भेदक, उत्क्लेशकारक तथा कृमि, कण्डू, विष, आनाह, कफ, रक्तपित्त और कुष्ठको नष्ट करे है ।

अन्यच्च ।

क्षीरिणीकटुकातिक्तारेचनीशोफतापनुत् ।
कृमीदोषकफघ्नीचपित्तज्वरहराचसा ॥

अर्थ-काञ्चनक्षीरी चरपरी, कडवी, रेचक तथा सूजन, ताप, कृमि, कफ और पित्तज्वरविनाशक है ।

अपिच ।

स्वर्णक्षीरीहिमातिक्ताकृमिपित्तकफापहा ।
मूत्रकृच्छ्राश्मरीशोफदाहज्वरहरापरा ॥ (रा. नि.)

अर्थ--स्वर्णक्षीरी--शीतल है और कृमि, पित्त, कफ, मूत्रकृच्छ्र, पथरी, सूजन तथा दाहज्जवरको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

स्वर्णक्षीरीहिमातिक्तास.. कण्डूविनाशिका

वातरक्तंकृमीन्पित्तंकफंकृच्छ्रंश्चनाशयेत् ॥
मूत्रयश्मरीशोफदाहज्वरकुष्ठविनाशिनी ।
मूलंचास्यचोकइतिगुणाःपूर्वोक्तवत्स्मृताः ॥ (राजनि०)

अर्थ-स्वर्णक्षीरी-शीतल, कडवी, दस्तावर तथा खुजली, वात रक्त, पित्त, कफ, मूत्रकृच्छ्र, ज्वर, अश्मरी (पथरी) सूजन, दाह, ज्वर और इनका नाश करेहै, इसकी जडको चोक कहते हैं, उसके गुणभी समान जानने ।

अपिच ।

तस्याःक्षीरंबिन्दुमात्रंनेत्रेक्षिप्तंघृतप्लुतम् ।
शुक्लाश्चह्यधिमांसंचनेत्रांध्यश्चैवनाशयेत् ॥ (ग. नि)

अर्थ-इसके दूधकी एक बूंद घीके साथ आंखमें लगानेसे शुक्ल अधिमांसनेत्ररोग और नेत्रांध्यरोग दूर होते हैं ।

अस्याः स्वरूपम् ।

कण्टकीकण्टपत्राचपीतपुष्पाक्षुपाभवेत् ।
स्वर्णक्षीरीकण्टफलाकृष्णबीजाचसुस्थिरा ॥ (शिवनि०)

अर्थ--इसका क्षुप कांटोंवाला होता है, पत्तोंके ऊपर कांटे होते हैं, पीला होता है, दूधका रंग सुवर्णके समान वर्णवाला होता है; फलोंपर होतेहै, उनमेंसे काले रंगके बीज निकलते हैं । उन बीजोंका तेल निकलता वह तेल अनेक प्रकारके त्वचा रोगोंको हरता है ।

कर्कटशृङ्गीनामानि ।



(काकडासिंगी)

कर्कटशृंगिकाशृंगीकुलिंगीकासनाशिनी।
महाघोषाचचक्रांगीकर्कटीवनमूर्द्धजा॥

अर्थ-कर्कटशृंगिका, शृंगी, कासविनाशिनी, कुलिंगी, महाघोषा चक्रांगी, कर्कटी, वनमूर्द्धजा (कर्कटाख्या, कुलीरशृंगी, घोषा, चक्रा, शिखरी कर्कटाख्या, कौलिरा, विषाणिका, चन्द्रास्पदा, नवांगा, कुलीरविषाणिका, नतांगी, वक्रा, अजशृंगी, कर्कटशृंगी)

संस्कृतभाषामें	कर्कटशृंगी।
हिन्दीभाषामें	काकडाशिंगी।
वंगभाषामें	कांकडाशृंगी।
मराठीभाषामें	कांकडशिंगी।
गुजरातीभाषामें	काकडाशिंगी।
कर्णाटकीभाषामें	कर्कटिशृङ्गी।
तैलिंगीभाषामें	कर्कटाशृङ्गी।
लैटिन्भाषामें	पस्टाशिया इंटिग्रेरिवा। Pistaciaintagrirriwa

अस्यागुणाः।

कर्कटशृङ्गीकातिक्ताचोष्णाचतुवरागुरुः।
वातहिक्कातिसारघ्नीबालानांचहितावहा॥
कासंश्वासंरक्तदोषंपित्तंजूर्तिकफंक्षयम्।
वान्तिंहिध्मांचोर्ध्ववातंकृमितृष्णाक्षतक्षयान्॥
अरुचिंनाशयत्येवंऋाषिभिःपरिकीर्तिता। (निघण्टु.)

अर्थ-काकडासिंगी-कड़वी, गरम, कषेली, भारी तथा वात, हुचकी और अतिसारको हरे है, बालकोंको हितकारी और खांसी, श्वास, रुधिरविकार, पित्त, ज्वर, कफ, क्षय, वमन, हिध्म, ऊर्ध्ववात, कृमि, तृषा, क्षतक्षय तथा अरुचिको दूर करे है।

कट्फलनामानि।

कट्फलंत्वक्फलंकुम्भीकुमुदिकाश्रीपर्णिका॥

अर्थ- कट्फल, त्वक्फल, कुम्भी, कुमुदिका, श्रीपर्णिका, (कैटर्य, काफल, कुम्भिपाकी, पुरुष, कुमुदी, सोमवल्क, सोमवृक्ष, रोहिणी, नासानु, अरण्य,

कृष्णगर्भ, प्रचेतसी, भद्रावती, महाकुम्भी, रामसेनक, कुमुदा, भद्राञ्जनक, लघुकाश्मर्य्य, श्रीपर्णी, भद्रा, कायफल)

संस्कृतभाषामें	कट्फल ।
हिन्दीभाषामें	कायफल ।
बंगभाषामें	कायफल, कायशाल ।
मराठीभाषामें	कुंभ्याची शाल, वा फळ ।
गुजरातीभाषामें	कायफल ।
कर्णाटकीभाषामें	किरुसिवन्नि ।
तैलिंगीभाषामें	पापर वुडम ।
लैटिन्भाषामें	मिरिका सापिडा, (छाल) । केरिया आबोरिया Creya arboria मेरिस्टिका मेलबेरिका (फल) Myristica Myricasapida Malbarice
अरबीभाषामें	दार शीशवान ।
फारसीभाषामें	उदुलबर्क ।

अस्या गुणाः ।

कट्फलंतुवरंतिक्तंकटुवातकफज्वरान् ।
हन्तिश्वासंप्रमेहार्शःकासकण्ठामयारुचीः ॥
उग्रदाहहरंरुच्यंमुखरोगशमप्रदम् ।
तीक्ष्णंक्षुतकरंचोष्णंहन्तिगुल्मामयानपि ॥

अर्थ–कायफल–कषेला, कडवा, चरपरा तथा वात, कफ, ज्वर, श्वास, प्रमेह, बवासीर, खांसी, कण्ठरोग, अरुचि और उग्रदाहको दूर करे है, और रुचिकारक, मुखरोगको शमन करे, तीक्ष्ण, छीक लानेवाला, गरम और गुल्मरोगविनाशक है।

अन्यच्च ।

कट्फलंरुचिदंचोष्णंतुवरंकटुतिक्तकम् ।
कासंश्वासंचोग्रदाहंमुखरोगंज्वरंतथा ॥
कफवातप्रमेहार्शोरुचिगुल्मगलामयान् ।
अग्निमांद्यंपाण्डुरोगंग्रहणींचैवनाशयेत् ॥

अर्थ--कायफल रुचिदायक, गरम, कषेला, चरपरा, कडवा तथा खांसी, श्वास, उग्रदाह, मुखरोग, ज्वर, कफ, वात, प्रमेह, बवासीर, गुल्म, कण्ठरोग, अग्निमांद्य, पाण्डुरोग, और संग्रहणी इनका नाश करे है । व्यवहार-छाल । मात्रा १ मासेकी ।

भार्ङ्गीनामानि ।

भारंगीब्राह्मणीपद्माभृंगजांगारवल्लरी ।
मुखधौतादूर्वाफञ्जीभार्ङ्गीब्राह्मणयष्टिका ॥

अर्थ-भारङ्गी, ब्राह्मणी, पद्मा, भृङ्गजा, अङ्गारवल्लरी, मुखधौता, वर्द्रू, फञ्जी, भार्ङ्गी, ब्राह्मणयष्टिका, । गर्दभशाक, गर्दभशाका, फञ्जिका, बर्ब्बर, वालेयशाक, वर्द्धक ब्रह्मयष्टि, यष्टि, ब्रह्मयष्टिका, शाकवालेय, अङ्गारवल्लि, बालेय, ब्राह्मिका, गर्दभशाखी, ब्राह्मी, ब्राह्मणयष्टी, वान्तारि, वातारि, कासजित्, स्वरूपा, भ्रमरेष्टा, शक्रमाता, भृगुभवा, खरशाका, हञ्जिका, कासघ्नी, भृगुजा, भार्गवी, कालिंगवल्ली ।

संस्कृतभाषामें	भार्ङ्गी ।
हिन्दीभाषामें	भारङ्गी, ब्रह्मनेटी ।
वंगभाषामें	वामुनहाटी ।
मराठीभाषामें	भारंगी ।
गुजरातीभाषामें	भारंगी ।
कर्णाटकीभाषामें	किर्हिदेगु ।
तैलिंगीभाषामें	भण्टभारङ्गी ।
नेपालीभाषामें	चूया ।
लैटिन्भाषामें	क्लेरोडेण्ड्रान्सारटम Clerordendronserratnm
	क्लेरोडेंड्रन् सिफोन्याथस् : Clerodendron siphonauthus

भार्ङ्गीगुणाः ।

भार्ङ्गीरूक्षाकटुस्तिक्तारुच्योष्णापाचनीलघुः ।
दीपनीतुवरागुल्मरक्तमुन्नाशयेद्ध्रुवम् ।
शोथकासकफश्वासपीनसज्वरमारुतान् ।

अर्थ भारंगी रूखी, चरपरी, कडवी, रुचिकारी, गरम, पाचक, हलकी अग्निको दीपन करनेवाली, कषेली, तथा रक्त, गुल्म, सूजन, खांसी, श्वास, पीनस, ज्वर और वातको नाश करेहै ।

अन्यच्च ।

भार्ङ्गीतुकटुतिक्तोष्णाकासश्वासविनाशिनी ।
शोफव्रणक्रिमिघ्नाचदाहज्वरनिवारिणी ॥ (रा. नि.)

अर्थ-भारंगी-चरपरी; कडवी, गरम, तथा खांसी, श्वास, सूजन, क्रिमि, दाह और ज्वरको दूर करैहै ।

अपिच ।

वातवज्रप्रहन्त्रीचगुणेहिक्काविनाशिनी ।
गुल्मज्वरासृग्वातघ्नीक्षयपीनसनाशिनी ॥

अर्थ- भारंगी-वातज्वर, हिक्का, गुल्म, ज्वर, वातरक्त, क्षय, और पीनसका नाश करैहै ।

अस्याःपत्रगुणाः ।

पर्णमस्यज्वरंदाहंहिक्कांदोषत्रयंहरेत् ॥ (नि. र.)

अर्थ--इसके पत्ते ज्वर, दाह, हुचकी और त्रिदोषनाशकहैं । इसका मनुष्यके समान ऊँचा होताहै. पत्ते महुवेके पत्तोंकी समान, होतेहैं सफेद होताहै, इसके कोमलपत्तोंका शाक बनाते हैं । व्यवहार-मूल मात्रा १॥ मासेकी ।

पाषाणभेदनामानि ।

पाषाणभेदकोश्मघ्नःशिलाभेदोश्मभेदकः ।
सचैवोपलभेदश्चनगभिच्छैलगर्भजः ॥

अर्थ-पाषाणभेद-अश्मघ्न, शिलाभेद, अश्मभेदक, उपलभेद, नगभित्, शैलगर्भज, (अश्मभित्, अश्मभेदक, पाषाणभेदक पाषाणभेदन, पाषाणभेदन) श्वेत; उपलभेदी, उपलभित्, शिलागर्भज, गिरिभित्, भिन्नयोजनी

संस्कृतभाषामें	पाषाणभेद ।
हिन्दीभाषामें	पाखानभेद ।
वंगभाषामें	पाथरचुरी, हिमसागर, पाथरकुचा ।
मराठीभाषामें	पाषाणभेद ।
गुजरातीभाषामें	पाखाणभेद ।
कर्णाटकीभाषामें	आलेलगया, पाषाणभदी ।
तैलिङ्गीभाषामें	तैलनुरुपिण्डी ।
अंग्रजीभाषामें	आइरिसूस्प । Irissp

लैटिन्भाषामें कोसियस एरोमेटिकम् Cociusaromaticum
फारसीभाषामें गोशाद ।
अरबीभाषामें जितियाना ।

पाषाणभेदगुणाः ।

अश्मभिद्बस्तिरुङ्मूत्रकृच्छ्रतोदाहवातनुत् ।
शीतवीर्यो गुरुः स्निग्धस्तथातीसारनाशनः ॥ (शो. नि.)

अर्थ-पाखानभेद--वस्तिरोग मूत्रकच्छ्र दाह, वात और अतिसारको दूर-करे है, शीतवीर्य्य है, भारी और चिकना है ।

अन्यच्च ।

अश्मभेदो हिमस्तिक्तः कषायो वस्तिशोधनः ।
भेदं हन्ति त्रिदोषार्शोगुल्मकृच्छ्राश्महृद्रुजः ।
योनिरोगान्प्रमेहांश्च प्लीहशूलव्रणानि च ॥

अर्थ- पाखानभेद- शीतल, कडवा, कषेला, वस्तिशोधक, भेदक तथा त्रिदोष, ववासीर, गुल्म, मूत्रकृच्छ्र, पथरी, हृदयरोग, प्रमेह, प्लीहा, शूल और व्रणरोगका विनाश करे है ।

क्षुद्रपाषाणभेदगुणाः ।

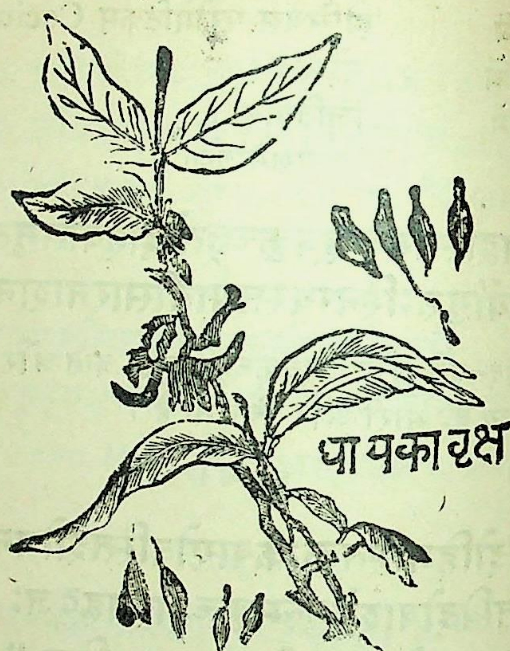
क्षुद्रपाषाणभेदश्च व्रणकृच्छ्राश्मरीहरः ॥ (रा. नि.)

अर्थ-क्षुद्रपाषाणभेद-व्रण, मूत्रकृच्छ्र और पथरीको दूरकरे है । पाखान-भेदवाली लकडी, परदेशसे आती है, वह क्याहै यह कोई नहीं जानता। इसको सर्वप्रकारके प्रमेह मूत्रकृच्छ्रादि रोगी लेते हैं और देशी पाषाणभेदके गुण इस पाषाणभेदसे सब मिलते हैं । मात्रा १ मासेकी ।

धातकीनामानि ।

धातकी ताम्रपुष्पी च धात्री च धातृपुष्पिका ॥

अर्थ-धातकी, ताम्रपुष्पी, धात्री, धातृपुष्पिका, (धातृपुष्पी, धातुपुष्पी, धातुपुष्पिका, वह्निपुष्पी, धावनी, अग्निज्वाला, सुभिक्षा, पार्वती, बहुपुष्पिका, कुमुदा, सीधुपुष्पी, कुञ्जरा, मघवासिनी, गुच्छपुष्पी, संघपुष्पी, रोध्रपुष्पिणी, तीव्रज्वाला, वह्निशिखा, मद्यपुष्पा)



संस्कृतभाषामें	धातकी ।
हिन्दीभाषामें	धायके फूल, धवईके फूल ।
वङ्गभाषामें	धाइफूल ।
मराठीभाषामें	धायटी ।
गुजरातीभाषामें	धावणी ।
कर्णाटकीभाषामें	धायिफूल ।
तैलिङ्गीभाषामें	धातुकी पुड, और पुव्वु, जाजि ।
उ०	जातिको ।
लैटिनभाषामें	वुडफोर्डिया, फ्लोरिबंडा ।
	Woobfordia floribunda
अंग्रेजीभाषामें	गीसलीआटोमेण्ठोजा ।

धातकीगुणाः ।

धातकीकटुकाशीतामदकृत्तुवरालघुः ।
तृष्णातिसारपित्तास्रविषक्रिमिविसर्पजित् ॥ (भा. प्र.)

अर्थ-धातकी-चरपरी, शीतल, मदकारक, कषेली, हलकी, तथा अतिसार, रक्तपित्त, विष, कृमि और विसर्परोगोंको जीते है ।

अन्यच्च ।

धातकीकटुकाशीतातुवरामदकारिणी ।
तिक्तालघ्वीचसंप्रोक्तागर्भस्थापनकारिणी ॥

रक्तप्रवाहिकापित्तनृड्विसर्पव्रणापहा ।
कृम्यतीसारहननीरक्तदोषरुजापहा ॥
पुष्पमस्याःस्वादुरूक्षंरक्तपित्तातिसारजित् ।
विषनाशकरंचोक्तंमुनिभिस्तत्त्वदर्शिभिः ॥ (नि० र०)

अर्थ-धातकी -चरपरी, शीतल, कषेली, मदकारक, कडवी, हलकी, गर्भस्थापक तथा रक्तप्रवाहिका, पित्त, तृषा, विसर्प, व्रण, कृमि, अतिसार और रुधिरदोषको दूर करे है ।

धायकेफूल-स्वादिष्ठ, रूखे, तथा रक्तपित्त, अतिसार और विषका विनाश करे हैं । धायके वृक्षकी अपेक्षा धायके फूलोंके अधिक गुण हैं ।

विवरण । इसका वृक्ष होता है पत्ते अनारके समान होते है, अनारके पत्ते अधिक नीले होते हैं, धायके पत्ते कुछ पिलाई लिये खरखरे होते हैं । फूल लाल होते हैं, इस फूलमें कली नहीं होती । धायके फूलोंका काढा तीन दिन दिनसे प्रदररोग दूर होता है ।

दन्तरोगोंमें धायके फूल अत्यन्त हितकारी हैं । व्यवहार -फूल, छाल । मात्रा २ मासेकी ॥

मञ्जिष्ठानामानि ।



मञ्जिष्ठाविकसाजिङ्गीसमङ्गाकालमेषिका ।
मण्डूकपर्णीभण्डीरीकालयोजनवल्लिका ॥
योजनवल्लीमण्डूकाकाण्डीरावस्त्ररञ्जनी ।
रक्ताङ्गीरक्तयष्टिश्चरक्तायोजनपर्णिका ॥

अर्थ--मञ्जिष्ठा, विकसा, जिंगी, समंगा, कालमेषिका, मण्डूकपर्णी,

भण्डीरी, काला, योजनवल्लिका, योजनवल्ली, मण्डूकी, काण्डारा, वस्त्र रक्तांगी, रक्तयष्टि, रक्ता, योजनपर्णिका, (भण्डी, लतायष्टि, हं भिण्डीरी, काण्डीरी, जिंगी, भण्डिल, भण्डिरी, भण्डिका, भंडि, भं रसायनी, गण्डीरी, हरिणी, गौरी, वप्रा, रोहिणी, चित्रलता, चित्रा, वि जननी, विजया, मंजूषा, रक्तयष्टिका, क्षत्रिणी, रागाढ्या, कालमे अरुणा, ज्वरहन्त्री, छत्रा, नागकुमारिका, भण्डीरलतिका, रागांगी, भूषणा, क्षेत्रिणी, ताम्रमूली, ताम्रिका, लोहितलता और ताम्रवल्ली)

संस्कृतभाषामें	मञ्जिष्ठा ।
हिन्दीभाषामें	मजीठ
बंगभाषामें	मञ्जिष्ठा ।
मराठीभाषामें	मंजिष्ठ ।
गुजरातीभाषामें	मजीठ ।
कर्णाटकीभाषामें	मंजिष्ठा ।
तैलिङ्गीभाषामें	मंजिष्ठतीठी, ताम्रवल्ली ।
तामिलीभाषामें	मञ्जिट्टी ।
अंग्रेजीभाषामें	मेडररूट्। Maddertroot
लैटिन्भाषामें	रुबिआ कोर्डि फोलिया । Rubia-cor
फारसीभाषामें	रूनास ।
अरबी भाषामें	फुत्रहतु सिवग उरु कुस्सु बागीत ।

मञ्जिष्ठागुणाः ।

मञ्जिष्ठामधुरातिक्ताकषायास्वरवर्णकृत् ।
गुर्वीचोष्णाविषश्लेष्मशोथयोन्यक्षिकर्णरुक् ॥
रक्तातिसारकुष्ठास्रविसर्पव्रणमेहनुत् । (भा० प्र०)

अर्थ-मजीठ-मधुर, कड़वा, कषेला, स्वरको श्रेष्ठ करनेवाला, उज्ज्वल करनेवाला. भारी, गरम तथा विष, कफ, सूजन, योनिरोग, नेत्र कर्णरोग, रक्तातिसार, कुष्ठ, रुधिरविकार, विसर्प, व्रण और प्रमेह नाश करनेवाली है ।

अन्यच्च ।

मञ्जिष्ठातुवराचोष्णावर्ण्यास्वर्य्यागुरुःस्मृता ॥
तिक्तालघ्वीचमधुराव्रणमेहकफापहा ।

विषंनेत्ररुजंशोफंयोनिदोषंज्वरंतथा ॥
शूलंकर्णरुजंचैवकुष्ठंचार्शःकृमीञ्जयेत् ।
रक्तातिसारवीसर्पनाशिनीचप्रकीर्तिता ॥

अर्थ-मजीठ-कषेला, गरम, वर्णको सुन्दर करनेवाला, स्वरको उत्तम करनेवाला, भारी, कडवा, हलका, मधुर तथा वात, प्रमेह, कफ, विष, नेत्र-रोग, सूजन, योनिदोष, ज्वर, (कामला पक्षाघात) शूल, कर्णरोग, कुष्ठ, बवासीर, कृमि, रक्तातिसार और विसर्परोगको नष्ट करे है ।

अस्याः शाकगुणाः ।

शाकेस्यान्मधुरालघ्वीस्निग्धादीप्तिकरीमता ।
वातपित्तहरीचोक्ताऋषिभिःसत्यवादिभिः ॥ (नि० र०)

अर्थ-मजीठके पत्तोंका शाक-मधुर, हलका, स्निग्ध, जठराग्निको दीपन करनेवाला, तथा वात और पित्तको हरनेवाला है ।

फलंयकृद्दोषहरंमूलंचर्म्मविवर्णताहरंतिलकालकघ्नञ्च (का० नि०)

अर्थ-मजीठका फल-प्लीहाको नाश करनेवाला है, मजीठकी जड-चर्मरोग और तिलकालक (शरीरके तिल) को दूर करे है ।

कुसुम्भानामानि ।



स्यात्कुसुम्भंवह्निशिखंलोहितंग्राम्यकुंकुमम् ॥

अर्थ-कुसुम्भ-वह्निशिख, लोहित, ग्राम्यकुंकुम (कमलोत्तम, महारजन, कुक्कुटशिख, पापक, पीत, पद्मोत्तर, रक्त, वस्त्ररञ्जन, अग्निशिख)

संस्कृतभाषामें कुसुम्भ, कुसुम्भबीज ।
हिन्दीभाषामें कसुम (कर्र)

बंगलामें	कुसुमफूल । कुसुमफल ।
मराठीभाषामें	करडीचेफळ, कडया ।
गुजरातीभाषामें	कुसुम्बो, करड, कुसुंबाना बी ।
कर्नाटकीभाषामें	कुसुम्भ ।
तैलिंगीभाषामें	लत्तुक, लक्क वंगारसु ।
अंग्रेजीभाषामें	ऑफिसिनल कार्थेमस । Officinal Carthamus
लैटिन् भाषामें	कार्थेमस टिङ्क्टोरियस Carthamustinctorius
फारसीभाषामें	गुलेमास्कर । (तुख्मकायशा)
अरबीभाषामें	अखरीज, हबुलअस्फर ।

कुसुम्भगुणाः ।

कुसुम्भंवातलंकृच्छ्ररक्तपित्तकफापहम् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-कसूम-वातकारक, तथा मूत्रकृच्छ्र, रक्तपित्त और कफनाशक है।

कुसुम्भपुष्पकगुणाः ।

कुसुम्भपुष्पंसुस्वादुत्रिदोषघ्नञ्चभेदकम् ।
रूक्षमुष्णंपित्तलञ्चकेशरंजनकारकम् ॥
कफनाशकरंचैवलघुप्रोक्तंमनीषिभिः ।

अर्थ-कसूमके फूल-स्वादिष्ट, त्रिदोषनाशक, भेदक, रूखे, गरम, पित्तजनक, केशरंजक, कफनाशक और हलके हैं।

कुसुम्भपत्रशाकगुणाः ।

कुसुम्भपत्रंमधुरंनेत्र्यमुष्णंकटुस्मृतम् ।
अग्निदीप्तिकरंचातिरुच्यंरूक्षंगुरुस्मृतम् ॥
सरंपित्तकरंचाम्लंगुदरोगकरंमतम् ।
कफविण्मूत्रमेदानांनाशकंपरमंमतम् ॥ (नि० र०)

अर्थ-कसूमके पत्तोंका शाक--मधुर, नेत्रोंको हितकारी, गरम, कटु, अग्निदीपक, अत्यन्त रुचिकारक, रूखा, भारी, सारक, पित्तजनक, खट्टा, गुदाके रोगोंको उत्पन्न करनेवाला, तथा कफ, मल, मूत्र और मेदाको नाश करनेवाला है।

इसके शाकके अधिक गुण शाकवर्गमें देखो।

कुसुम्भबीजगुणाः ।

कुसुम्भबीजमधुरंस्निग्धंशीतंकषायकम् ।
अवृष्यंगुरुचप्रोक्तंकफवातास्रपित्तनुत् ॥

अर्थ-कसूमके बीज-(करं) मधुर, स्निग्ध, शीतल, कषेले, भारी तथा कफ, वात और रक्तपित्त इनका नाश करेहै ।
इसके अधिकगुण धान्यवर्गमें देखो ।

कुसुम्भतैल गुणाः ।

कुसुंभतैलमुष्णंतुविपाकेकटुकंगुरु ।
विदाहकंविशेषेणसर्वदोषप्रकोपनम् ॥ (आत्रेयसंहिता)

अर्थ-कसूमका तैल-गरम, पाकमें चरपरा, भारी, दाहजनक और विशेष करके त्रिदोषको कुपित करेहै ।

इसके अधिक गुण तैलवर्गमें, देखो ।

विवरण । कसूमका क्षुप होताहै, इसके कांटे कटाईके कांटोंके समान होते हैं, पत्तेभी कटाईके समान होते हैं, इसके फूलोंकोही कसूम कहतेहैं । व्यवहार-पत्ते फल, बीज, तैल, झांदरा ।

लाक्षानामानि ।

लाक्षातुकीटजाराक्षाशतघ्नीरक्तमातृका ।

अर्थ-लाक्षा, कीटजा, राक्षा, क्षतघ्नी, रक्तमातृका (जतु, याव, अलक्त, द्रुमामय, गराषिका, खदिरका, रक्ता, रङ्गमाता, पलङ्कषा, क्रिमिहा, द्रुमव्याधि, अलक्तक, पलाशा, मुद्रिणी, दीप्ति, जन्तुका, गन्धमादिनी, नीला, द्रवरसा, पित्तारि, कृमिजा, क्रिमिजा, जतुका, ऋमिजा, गर्णधका, क्षतघ्नी)

संस्कृतभाषामें	लाक्षा ।
हिन्दीभाषामें	लाख, लाही ।
वङ्गभाषामें	लाहा ।
मराठीभाषामें	लाख ।
गुजरातीभाषामें	लाख ।
कर्णाटकीभाषामें	अरगु ।
तैलङ्गीभाषामें	लाका ।
अंग्रेजीभाषामें	शेललाक । Shell lac
लैटिन्भाषामें	कोकसलाका । Cocuslaeca

फारसीभाषमें — लाक।
अरबीभाषामें — लुक घोएल लाखलुकमसुल।

लाक्षागुणाः।

लाक्षावर्ण्याहिमाबल्यास्निग्धाचतुवरालघुः।
अनुष्णाकफपित्तास्रहिक्काकासज्वरप्रणुत्॥
व्रणोरःक्षतवीसर्पकृमिकुष्ठगदापहा।
विषरक्तप्रशमनीविषमज्वरनाशिनी। (निघण्टुसंग्रह)

अर्थ-लाख-शरीरके वर्णको उज्ज्वल करनेवाली, शीतल, बलक स्निग्ध, कषेली, हलकी, अनुष्ण तथा कफ, रक्तपित्त, हिचकी, ख ज्वर, व्रण, उरःक्षत, विसर्प, क्रिमि, कुष्ठ, विष, रक्तदोष और विषमज्व हरनेवाली है।

अन्यच्च।

लाक्षातुतिक्तातुवराभग्नसन्धानकारिका।
स्निग्धालघ्वीवबल्याचशीतावर्णप्रदामता॥
कफंपित्तश्वशोषश्वविषंरक्तविकारकम्।
हिक्कांकासंज्वरंचैवविषमश्वविनाशयेत्॥
उरःक्षतंचवीसर्पनासारोगकृमींस्तथा॥
कुष्ठव्रणञ्चत्वग्दोषंदाहश्चैवविनाशयेत्॥ (नि. र.)

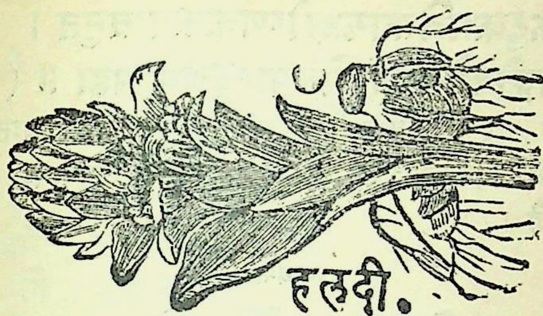
अर्थ-लाख-कडवी, कषेली, भग्नसन्धानकारक, स्निग्ध, हलकी, ब रक, शीतल, वर्णकारक तथा कफ, पित्त, शोष, विष, रक्तविकार, हि खांसी, ज्वर, विषमज्वर, उरःक्षत, विसर्प, नासारोग, कृमि, कोढ, त्वग्दोष और दाहको दूर करनेवाली है।

अलक्तकगुणाः।

अलक्तकोरजोरोधीरक्तपित्तक्षयापहः।
प्रदरश्चाप्यतीसारंसरक्तंक्षपयेद्ध्रुवम्॥ (आत्रेयसंहिता)

अर्थ-महावर-रजोरोधक, रक्तपित्त, क्षय, प्रदर और रक्तातिसारको करनेवाली है, इसके अधिक गुण आगे लिखे हैं। पीपल, बेरी, इत्यादि अनेक वृक्षोंमें होतीहै, सबमें श्रेष्ठ पीपलकी लाख गिनीजाती है

हरिद्रानामानि।



हरिद्रानिशाह्वापीतायुवतीहेमरागिणी।
काञ्चनीक्षणदागौरीमेहघ्नीवरवर्णिनी॥

अर्थ-हरिद्रा, निशाह्वा, पीता, युवती, हेमरागिणी, काञ्चनी, क्षणदा, गौरी, मेदघ्नी, वरवर्णिनी, (यामिनी, क्षपा, तमसिनी, गन्धपलाशिका सुवर्णवर्णा, युवती, मङ्गलप्रदा, कावेरी, उमा, वर्णवती, पिञ्जा, पीतवालुका हेमरागी, रभङ्गवासा, घर्षणी, पीतिका, रंजनी, निशा, वहुला, वर्णिनी रात्रिनामिका, हरित्, रंजनी, सुवर्णवर्णा, सुवर्णा, शिवा, दीर्घरागा, हलदी, गौरांगी, अनेष्टा, वरा, वर्णदात्री, पवित्रा, हरिता, विषघ्नी, पिंगा, मंगल्या, मंगला, लक्ष्मी, भद्रा, शिफा, शोभा, शोभना, सुभगाह्वया, श्यामा, ज्वरान्तिका, योषित्प्रिया कृमिघ्नी, हृद्विलासिनी, निशाख्या, जयन्ती, दीर्घरागा, वर्णविलासिनी और हलदी)

संस्कृतभाषामें	हरिद्रा।
हिन्दीभाषामें	हलदी।
वंगभाषामें	हलुट।
मराठीभाषामें	हलद।
गुजरातीभाषामें	हलदर।
कर्णाटकीभाषामें	अर्शिना।
तैलिङ्गीभाषामें द्रा०	पसुपु।
अंग्रेजीभाषामें	हलद।
लैटिन्भाषामें	टर्मेरिक। Turmeric
फारसीभाषामें	करक्युमालोंगा। Curcumalonga
अरबीभाषामें	जरदचोव।
	उरुकुस्सुफर।

अस्या गुणाः ।

हरिद्राकटुकातिक्तारूक्षोष्णकफवातनुत् ।
वर्ण्यात्वग्दोषमेहास्रशोथपाण्डुव्रणापहा ॥ (भा० प्र०

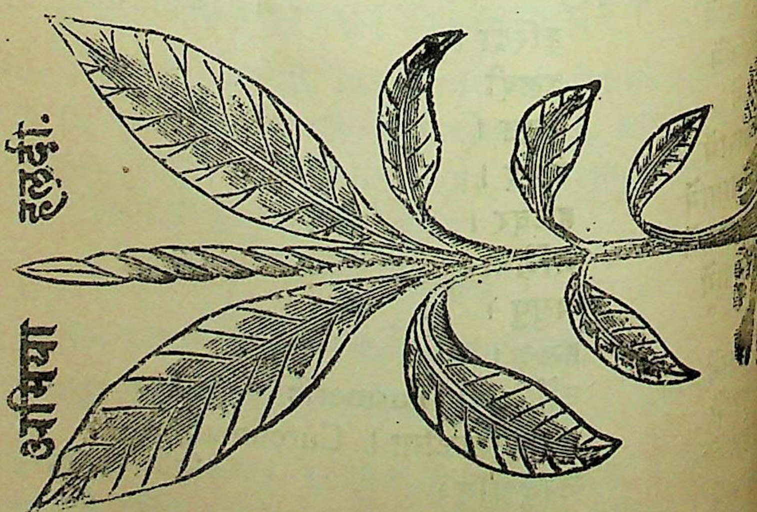
अर्थ-हलदी-चरपरी, कडवी, रूखी, गरम, कफ, वातनाशक, सुंदरतादायक, तथा त्वचाके रोग, प्रमेह, रक्तदोष, सूजन, पाण्डुरोग, व्रणको नाश करे है ।

अन्यच्च ।

हरिद्राकटुकातिक्तादेहवर्णविधायिका ।
उष्णारूक्षाशोधनीचस्त्रीणांवैभूषणंमता ॥
कफंवातंरक्तदोषंकुष्ठंकण्डूंप्रमेहकम् ।
त्वग्दोषंचव्रणंशोफंपाण्डुरोगंकृमीन्विषम् ॥
पीनसंचारुचिंपित्तमपचींचैवनाशयेत् । (नि० र०)

अर्थ-हलदी-चरपरी, कडवी, देहके रंगको करनेवाली, उष्ण, शोधक और स्त्रियोंका भूषण है, तथा कफ, वात, रुधिरदोष, कोढ, खुजली, प्रमेह, त्वचाके दोष, घाव, सूजन, पाण्डुरोग, कृमि, विष, पीनस, अरुचि, पित्त और अपचीका नाश करनेवाली है ।

कर्पूरहरिद्रानामानि ।



दार्वीमेदाम्रगन्धाचसुरभीदारुदारुच ।
कर्पूरापद्मपत्रास्यात्सुरभिःसुरनायिका ॥

अर्थ-दार्वीभेद, आम्रगन्धा, सुरभीदारु, दारु, कर्पूरा, पद्मपत्रा, सुरभी सुरनायिका ।

संस्कृतभाषामें	कर्पूरहरिद्रा, आम्रगन्धहरिद्रा ।
हिन्दीभाषामें	कपूरहलदी. आम्बीयाहलदी ।
बंगलामें	आमआदा ।
मराठीभाषामें	आंबेहळद ।
गुजरातीभाषामें	आंबाहलदर ।
कर्नाटकीभाषामें	हुलीअर्शिना ।
तैलिंगीभाषामें	कारुपसुपु ।
अंग्रेजीमें	मैंगोजिंजर । Maugojinger
लैटिन्में	कर्क्यूमाएरोमेटिका । Curcuma-aromatica

अस्यागुणाः ।

आम्रगन्धिहरिद्रायासाशीतावातलामता ।
पित्तहन्मधुरातिक्तासर्वकण्डुविनाशिनी ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ--आम्बियाहलदी--(कपूरहलदी) शीतल, वातकारक, पित्तनाशक, मधुर, कडवी और सर्वप्रकारके कण्डुकानाशक है ।

अपिच ।

अम्लारुचिप्रदालध्वीदीपनीचवरासरा ।
कफंचोग्रव्रणंकासंश्वासंहिक्कांज्वरंजयेत् ॥
अभिघातभवंशोथंलेपाच्छीघ्रंविनाशयेत् ॥ (केचित्)

अर्थ--कपूरहलदी--(अम्बिया हलदी, वात, रक्त और, विषनाशक है, वीर्य वर्द्धक, सन्निपातनाशक, अम्ल, रुचिदायक, हलकी, अग्निको दीपन करनेवाली, सारक तथा कफ, उग्रव्रण, खाँसी, श्वास, हुचकी, ज्वर और अभिघातसे उत्पन्न हुई सूजनको दूर करेहै ।

वनहरिद्रानामानि ।

शोलीवनहरिद्रास्याद्वनारिष्टाचशोलिका ।

अर्थ--शोली, वनहरिद्रा, वनारिष्टा, शोलिका, (अरण्यहरिद्रा, वनहलदी)

संस्कृतभाषामें	वनहरिद्रा ।
हिन्दीभाषामें	वनहलदी, जंगलीहलदी ।

वंगभाषामें	बनहलुद ।
मराठीमें	शोली, रानहलद ।
गुजरातीभाषामें	वनहलदर ।
तैलिङ्गीमें	अडविपसुपु ।
तामिलीमें	कस्तूरि मंजल ।
अंग्रेजी भाषामें	W
लैटिनभाषामें	O

अस्यागुणाः ।

शोलिकाकटुकागौल्यारुच्यातिक्ताग्निदीपिनी॥ (रा०)

अर्थ-वनहलदी-गौल्य, रुचिकारक, कडवी और जठराग्निदीपक है।

अपिच ।

अरण्यहलदीकन्दःकुष्ठवातास्रनाशनः ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-जंगली हलदी-कोढ और रक्तवातनाशक है।

दारुहरिद्रानामानि ।

दार्वीदारुहरिद्राचद्वितीयाभाकपीतकम् ।

अर्थ-दार्वी, दारुहरिद्रा, द्वितीयाभा, कपीतक, (पीतद्रु, कलियक, पचम्पचा, पर्जनी, हरिद्रा, काष्ठा, मर्म्मरी, पीतिका, पीतदारु, शिथिरा, कामिनी, कटङ्कटेरी, पर्ज्जन्या, पीता, दारुनिशा, कालीयक, कामवती, काष्ठपीता, कर्कटिनी, हेमकान्ती, पीतत्वक्, पीतचंदन, निर्दिष्टा, काष्ठ, हैमवती, हेमकान्ता)

संस्कृतभाषामें	दारुहरिद्रा
हिंदीभाषामें	दारुहलदी ।
वंगभाषामें	दारुदरिद्रा ।
मराठीभाषामें	दारुहळद ।
गुजरातीभाषामें	दारुहलदर ।
कर्नाटकीभाषामें	मरदर्शिना ।
तैलिङ्गीभाषामें	मनिपसुपु ।
तामिलीभाषामें	मरमञ्जिल ।
लैटिन्भाषामें	बरबेरीस एरीसूटेटा । Berberis arist

फारसीभाषामें दारचोव ।
अरबीभाषामें दारहलद ।

अस्या गुणाः ।

तिक्तादारुहरिद्रातुकटूष्णाव्रणमेहनुत् ।
कण्डूविसर्पत्वग्दोषविषकर्णाक्षदोषहा ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ -दारुहलदी--कडवी, चरपरी, गरम तथा व्रण, प्रमेह, कण्डू, विसर्प, त्वचाके दोष, विष, कर्णरोग और नेत्ररोगको दूर करे है ।

अपिच ।

दार्वीतद्वद्विशेषेणकफाभिष्यन्दनाशिनी ॥ (रा. व.)

अर्थ--दारुहलदीके गुण हलदीके समान हैं विशेषकरके कफ और अभिष्यन्दको हरनेवाली है ।

अन्यच्च ।

दार्वीनिशागुणाकिन्तुनेत्रकर्णास्यरोगनुत् ॥ (भा. प्र.)

अर्थ--दारुहलदीके गुण हलदीकेही समान हैं, तोभी विशेषकरके, नेत्ररोग कर्णरोग और मुखरोगनाशक है ।

दार्विकाथोद्भवरसाञ्जननामानि ।

रसाञ्जनंतार्क्ष्यशैलंरसगर्भश्चतार्क्ष्यजम् ।

अर्थ-रसाञ्जन, तार्क्ष्यशैल, रसगर्भ, तार्क्ष्यज [दार्वीकाथोद्भव, बालभैषज्य, तार्क्ष्य, रसोद्भूत, रसाग्रज, कृतक, रसराज [?] वीर्याञ्जन, रसनाभ, अग्निसार]

संस्कृतभाषामें रसाञ्जन ।
हिन्दीभाषामें रसोत ।
मराठीभाषामें रसांजन ।
वंगभाषामें रसबत ।
गुजरातीभाषामें रसवती ।
कर्णाटकीभाषामें रसांजन ।
तैलिङ्गीभाषामें रसाञ्जनमु ।
इंग्रेजीभाषामें एक्स्ट्राक्ट आफ् इंडियन बर्बेरि ।
Extract of Indian Berberv
लैटिन्भाषामें एक्स्ट्राक्टबर्बेरिस् । Axtracum Berberis
अरबीभाषामें हुजुज ।

अस्याः कषायः

दार्वीक्काथसमंक्षीरंपादंपक्त्वायथाघनम् ।
तदारसाञ्जनाख्यंतन्नेत्रयोःपरमंहितम् ॥

अर्थ-दारुहलदीका काढा बनाकर उस काढेमें उसकी बराबर मिलाकर औटावें, जब औटकर काढा होजावे तो उतारले, उसको कहते हैं। और वह रसोत नेत्रोंको अत्यन्त हितकारी है।

अस्या गुणाः ।

रसाञ्जनंकटुश्लेष्माविषनेत्रविकारनुत् ।
उष्णंरसायनंतिक्तंछेदनंव्रणदोषहृत् ॥ (भा, प्र.)

अर्थ- रसोत, चरपरा, गरम, रसायन, कडवा छेदक तथा कफ, नेत्रविकार और व्रणको दूर करे है।

अन्यच्च ।

रसाञ्जनंहिमंतिक्तंहिक्काशोंविषनाशनम् ।
कर्णनेत्रभवान्रोगान्योजितंसाधुसाधयेत् ॥ (रा. नि.)

अर्थ--रसोत--शीतल, कडवा तथा हुचकी, बवासीर, विष, और नेत्ररोगोंको हर है।

अपिच ।

दार्वीक्काथोद्भवंतीक्ष्णंकटुकञ्चरसायनम् ।
छेदनंचरसेचोष्णंचक्षुष्यंकफनाशनम् ।
वृष्यंविषंरक्तपित्तच्छर्दिहिक्काविनाशनम् ।
श्वासघ्नंमुखरोगघ्नंपूर्वाचार्यैर्निरूपितम् ॥ (नि. र.)

अर्थ--रसोत--तीक्ष्ण, कटु, रसायन, छेदक, रसमें गरम, नेत्रोंको कारी, कफनाशक, वीर्य्यजनक तथा रक्तपित्त, वमन, हुचकी, श्वास मुखरोगका नाश करे है।

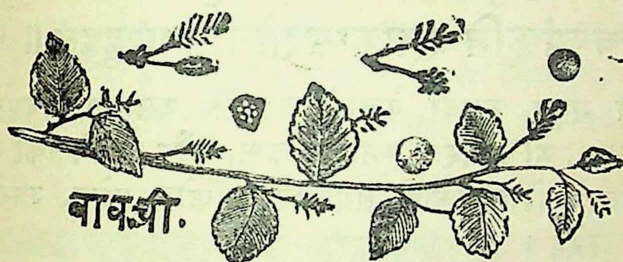
अस्यशोधनविधिः ।

तोयेत्युष्णेपरिक्षिप्यद्रवीकुर्याद्रसांजनम् ।
वाससास्रावयित्वाचशोधनंभानुरश्मिना ॥
एवंविशोधितंसर्वकर्मसुपरियोजयेत् ।

विशुद्धंनाशयेद्व्याधीन्नाविशुद्धंकदाचन ॥

अर्थ-रसोतको अत्यन्त उष्ण जलमें घोलदे, फिर वस्त्रमें छानकर धूपमें सुखादे, इसप्रकार शोधा हुआ रसोत सर्वकामोंमें ले शोधन कियाहुआ रसोत व्याधिको नाश करताहै और अशुद्ध रसोत कदापि नहीं। मात्रा १॥ मासेकी।

बाकुचीनामानि।



सोमराजीकृष्णफलाबाकुचीकुष्ठनाशिनी।
सोमवल्लीपूतिफलीवेजानीकालमेषिका ॥

अर्थ--सोमराजी, कृष्णफला, बाकुची, कुष्ठनाशिनी, सोमवल्ली, पूतिफली, बेजानी, कालमेषिका (अवल्गुज, सुवल्ली, सोमवल्लिका, कालमेषी, चन्द्रलेखा, कृष्णा, पूतिफला, सुवल्ली, कालमेषी, वांगुजी, बाकुजी, सोमराजिका, ऐन्दवी, शूलोत्खा, क्रिमिघ्नी, सुवल्लिका, सिता, सितावरी, चन्द्री, सुप्रभा. कुष्ठहन्त्री, काम्बोजी, पूतिगन्धा, वल्गुजा, चन्द्रराजी, कालमेषी, त्वग्दोषापहा, कान्तिदा, अवल्गुजा, चन्द्रप्रभा, पूतिगंधिका, सुपर्णिका, शशिलेखा, सोमा; कुष्ठघ्नी, कण्डूघ्नी, और असितत्वचा)।

संस्कृतभाषामें	बाकुची, सोमराजी।
हिन्दीभाषामें	वायची; वावची, बकुची, (बाकुचीके दाने)
वंगभाषामें	हाकुच. सोमराल (ज)।
मराठीभाषामें	बावची।
गुजरातीभाषामें	बावची, वावचीनावी।
कर्णाटकीभाषामें	वाउचिगे।
तेलिङ्गीभाषामें	तिप्पतीगे, नेलबयलिये।
तामिलीभाषामें	वोगिविट्टलु।
अंग्रजीभाषामें	एसक्यूलेंटूलफाकुर्शा। Escnlent Flacourtia

लैटिनमें सोरेलिया--कोरेलिफोलिया, सोरेलिया, स्पाईके। Psoralia Corylifolia P. Spicata

बाकुचीगुणाः ।

बाकुचीमधुरातिक्ताकटुपाकारसायनी ।
विष्टम्भहृद्धिमारुच्यासराश्लेष्मास्रपित्तनुत् ॥
रूक्षाहृद्याश्वासकुष्ठमेहज्वरक्रिमिप्रणुत् ।
तत्फलंपित्तलंकुष्ठकफानिलहरंकटु ॥
केश्यंत्वच्यंकृमिश्वासकासशोथामपाण्डुहृत् ॥ (भा

अर्थ-बावची--मधुर, कडवी, पचनेमें चरपरी, रसायन, विष्टम्भ करनेवाली, शीतल, रुचिकारक, सारक, कफ, और रक्तपित्तका नाश वाली, रूखी, हृदयको हितकारी तथा श्वास, कोढ, प्रमेह, ज्वर और मिका, विनाश करेह ।

बावचीका फल--पित्तजनक,कुष्ठनाशक, कफघ्न, वातविनाशक, कटु को उत्तम करनेवाला, त्वचाको सुंदरतादायक तथा वमन, श्वास कृच्छ्र, बवासीर, खांसी, सूजन, आम और पाण्डुरोगका नाश करेहै

अन्यच्च ।

बाकुचीपाकेकटुकातिक्ताशीतारसायनी ।
मधुरारुचिदारूक्षाहृद्याग्राह्यग्निदीपनी ॥
बल्याचतुदरालक्ष्वीमध्यावैरक्तपित्तजित् ।
कफकुष्ठकृमिश्वासकासमेहज्वरव्रणान् ॥
त्रिदोषवातत्वग्दोषविषकण्डूश्चनाशयेत् ॥

अर्थ--बावची--पाकमें चरपरी, कडवी, शीतल, रसायन, मधुर, रुचि कारक, रूखी, हृदयको हितकारी; ग्राही, अग्निप्रदीपक, बलकारक, कफ की, मेधाजनक तथा रक्त, पित्त, कफ, कोढ, कृमि, श्वास, खांसी, प्रमेह ज्वर, व्रण, त्रिदोष, वात, त्वचाके विकार, विष कण्डू और खज्जू खुजलीका नाश करेहै ।

बाकुचीभेदबाकुचीगुणाः ।

श्वित्रारिर्बाकुचीभेदःकुष्ठदोषत्रयास्रजित् ।
वातरक्तहरोलेपात्सिध्मश्वित्रविनाशनः ॥ (आ. सं.)

अथ-श्वित्रारि यह बाकुचीका भेद है, यह कोढ, त्रिदोष रक्तविकार, वातरक्त, सिध्मरोग और श्वित्र कोढको दूर करे है ।

बाकुचीस्वरूपम् ।

क्षुपोबाकुचिकायाश्च गोवारीसदृशोभवेत् ।
कृष्णपुष्पोगुच्छफलोदुर्गंधःकृष्णबीजकः ॥ (शो० नि०)

अर्थ-बाकुचीका क्षुप होता है, पत्ते ग्वारकी समान होतेहैं, फूल काला होता है, फल गुच्छोंमें आतेहैं, उनमेंसे काले बीज निकलते हैं और इसमें दुर्गन्ध आतीहै । व्यवहार-बीज, लकडी । मात्रा १॥ मासेकी ।

चक्रमर्दनामानि ।

चक्रमर्दःप्रपुन्नाटोदद्रुघ्नोमेषलोचनः ।
पद्माटःस्यादेडगजश्चक्रीपुन्नाटइत्यपि ॥

अर्थ-चक्रमर्द, प्रपुन्नाट, दद्रुघ्न, मेषलोचन, पद्माट, एडगज, चक्री, पुन्नाट, (तर्किण, तर्किल, प्रपुन्नड, मेषाक्षि, कुसुम, प्रपुन्नाल, अडगज, गजाख्य, मेषाह्वय, एडहस्ती, व्यावर्त्तक, चक्रगज, पुन्नाड, विमर्दक, तर्वट, चक्राह्व, शुकनाशन, दृढबीज, प्रपुन्नाड, खर्जूघ्न, चक्रमर्दक, उरणाख्यक, प्रपुन्नड, प्रपुन्नाड, उरणाक्ष, उरणाक्षक, चक्रपद्माड, दृढबीज)

संस्कृतभाषामें	चक्रमर्द,
हिन्दीभाषामें	चकवड, पवाड, पमाड, (र)
बंगभाषामें	चाकुन्दा, एडांचि ।
मराठीभाषामें	टांकाळा, तरोटा ।
गुजरातीभाषामें	कुवाधियो ।
कर्नाटकीभाषामें	चगचे ।
तैलिङ्गीभाषामें	तांत्यमु ।
अंग्रेजीभाषामें	ओवललीव्ड केशिया । Ovalleaved Cassia
लैटिन्भाषामें	केशिया टोरा । Cassia Tora
फारसीभाषामें	संजीस वोया ।

अस्य गुणाः ।

चक्रमर्दोलघुःस्वादूरूक्षःपित्तानिलापहः ।
हृद्योहिमःकफश्वासकुष्ठदद्रुकृमीन्हरेत् ॥

हन्त्युष्णंतत्फलंकुष्ठकण्डूदद्रुविषानिलान् ।
गुल्मकासक्रमिश्वासनाशनंकटुकंस्मृतम् ॥ (भा० प्र०

अर्थ-चकवड-हलका, स्वादिष्ठ, रूखा, पित्तवातनाशक, हृदयको हितकारी, शीतल तथा कफ, श्वास, कुष्ठ, दद्रु और कृमिको नाश करनेवाला है।

चकवडका फल-गरम है और कुष्ठ, कण्डू, दाद, विष, वात, गुल्म, खांसी, कृमि तथा श्वासको दूर करनेवाला है और कटु-रसान्वित है।

अन्यच्च ।

प्रपुन्नाटःस्वादुरूक्षोलघुस्तिक्तःकटुःस्मृतः ।
हृद्यःशीतःपटुश्चैववातपित्तकफापहः ॥
दद्रुकुष्ठकृमिश्वासाशिरोरुग्व्रणनाशनः ।
मेदोरोगंचपामांचत्रिदोषंचारुचिंज्वरम् ॥
मलमूत्रस्तम्भनञ्चमेहंकासञ्चनाशयेत् ।
प्रपुन्नाटस्यबीजंतुग्राहिचोष्णंकटुस्मृतम् ॥
कफकुष्ठश्वासकासदद्रुकण्डुविषापहम् ।
शोथंगुल्मंवातरक्तंनाशयेदितिकीर्त्तितम् ॥
चक्रमर्द्दकपर्णानांशाकालघ्वीचपित्तला ।
अम्लोष्णाकफवातघ्नीदद्रुकुष्ठापहामता ॥
पामांकण्डूंचकासंचश्वासञ्चैवविनाशयेत् । (नि० र०)

अर्थ-पमार-(चकवड), स्वादिष्ठ, रूखा, हलका, कडवा, चरपरा, हृदयको हितकारी, शीतल, खारी तथा वात, पित्त, कफ, दाद, कोढ, कृमि, शिरोरोग (बवासीर) घाव, मेदोरोग, पामा, त्रिदोष, अरुचि, ज्वर, मल और मूत्रका रुकजाना, प्रमेह और खांसीको दूर करे है । पमाडके बीज मलरोधक, गरम, चरपरे तथा कफ, कोढ, श्वास, खांसी, दाह, खुजली, विष, सूजन, गुल्म और वातरक्तका नाश करनेवाले हैं ।

पमाड (चकवड) के पत्तोंका शाक-हलका, पित्तजनक, अम्ल, गरम तथा कफ, वात, दाद, कोढ.पामा, कण्डू, खांसी और श्वासको हरनेवाला है।

इस शाकके अधिक गुण शाकवर्गमें देखो ।

पमाडकी फली टूटकर पृथ्वीमें गिर पडतीहै जो बीज उपज निकलतेहैं ।

विवरण । पमाडका क्षुप होता है, पत्ते गोल और एक २ डंडीमें पांच पांच होते हैं, फूल पीला होता है, उसपै फली लगती हैं । व्यवहार—बीज, मूल, छाल, पत्ते ।

अतिविषानामानि ।

काश्मीरातिविषाश्वेताविषाप्रतिविषारुणा ॥

अर्थ-कश्मीरा, अतिविषा, श्वेता, विषा, प्रतिविषा, अरुणा, (प्रविषा, उपविषा, घुणवल्लभा, शृङ्गीका, विश्वा, शृङ्गी, महौषध, श्वेतकन्दा, भृङ्गी, विरूपा, श्यामकन्दा, विषरूपा, वीरा, माद्री, अमृता, श्वेतवचा, शुक्लकन्द, भंगुरा, मृद्वी, शिशुभैषज्य, शोकापहा, अतिसारघ्नी)

संस्कृतभाषामें	अतिविषा ।
हिन्दीभाषामें	अतीस ।
वङ्गभाषामें	आतइच ।
मराठीभाषामें	अतिविष ।
गुजरातीभाषामें	अतलसनी कली ।
कर्णाटकीभाषामें	अतिविषा ।
तैलिंगीभाषामें	अतिवासा ।
लैटिन्भाषामें	एकोनैटम् हिटरोफाइलम् । Acconitum Heterophyllum

अस्यागुणाः ।

विषासोष्णाकटुस्तिक्तापाचनीदीपनीहरेत् ।
कफपित्तातिसारामविषकासवमिक्रिमीन् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-अतीस-गरम, चरपरा, कडवा, पाचक, जठराग्निको दीपन करनेवाला तथा कफ, पित्त, अतिसार, आम, विष, खांसी, वमि और कृमिरोगको दूर करनेवाला है ।

अन्यच्च ।

विषात्रयंचदोषघ्नंपाचनंग्राहितिक्तकम् ।
बालानांसर्वदापथ्यंवमिशोफविमर्दनम् ॥ (शो० नि०)

अर्थस-तीनों प्रकारके अती-त्रिदोषनाशक, पाचक, मलरोधक, कडवे, बालकौको सर्वकालमें पथ्य हैं और वमन तथा सूजनको दूर करे हैं ।

अपिच ।

त्रिप्रकारंचातिविषांकिञ्चिदुष्णंचतिक्तकम् ।
अग्निदीप्तिकरंग्राहित्रिदोषाणांचपाचकम् ॥
कफपित्तज्वरामातिसारकासविषापहम् ।
यकृद्वान्तितृषांचैवकृमिनर्शांश्चपीनसम् ॥
पित्तोदरंचातिसारंहर्षव्याधिहरंमतम् । (निघण्टुरत्नाकर)

अर्थ-तीनों प्रकारके अतीस-कुछेक उष्ण, कडवे, अग्निप्रदीपक, ग्रा‌ही, त्रिदोषपाचक तथा कफ, पित्त, ज्वर, आमातिसार, कास, विष, य‌कृत्, वमन, तृषा, कृमि, बवासीर, पीनस, पित्तोदर और सर्व प्रकारकी व्याधिके विनाशक है ।

अतिविषाभेदाः ।

अतिविषात्रिधाज्ञेयाशुक्लाकृष्णातथारुणा ।
रसेवीर्य्यविपाकेषुनिर्विंषेवगुणाधिका ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ—अतीस-श्वेत, कृष्ण और रक्त इन भेदोंसे, तीन प्रकारका है, तीनों रस, वीर्य्य और विपाकमें समान हैं, किन्तु सफेद गुणोंमें अधिक मात्रा ३ मासेकी ।

लोध्रनामानि ।

लोध्रस्तिरीटकंचैवशाबरोगालवस्तथा ।
द्वितीयःपट्टिकालोध्रःक्रमुकःस्थूलवल्कलः ॥
जीर्णपत्रोबृहत्पत्रःपट्टीलाक्षाप्रसादनः ।

अर्थ-लोध्र, तिरीटक, शाबर, गालव, (लोध्र, लोध्रक, लोध्रवृक्ष, मार्जन, तिन्दुक, लक्तकर्म्मा, शुक्ल, शबरलोध्र, महालोध्र, मार्ज्जन, बलिप्रिय, वा... घात, बलभद्र, रोध्र, भिल्लतरु, तिल्लक, काण्डकीलक, शम्बर, हस्तिलो... तिलक, काण्डनील, हेमपुष्पक, भिल्ली, शावरक, तिरीट, यह नाम सा... लोधके हैं । दूसरा पठानी लोध होताहै, उसकी पर्य्याय यह है पट्टिका... क्रमुक, स्थूलवल्कल, जीर्णपत्र; बृहत्पत्र, पट्टी, लाक्षाप्रसादन, पट्टिका... पट्टिका, पट्टिलोध्र पट्टिलोध्रक, वल्कलोध्र, बृहद्दल, जीर्णबुध्न, बृहद्वल्क, शी... अक्षिभेषज, शाबर, श्वेतलोध्र, गालव, बहुलत्वच, लाक्षाप्रसाद, ...

संस्कृतभाषामें	लोध्र, पट्टिकालोध्र ।
हिन्दीभाषामें	लोथ, पठानीलोध ।
वंगभाषामें	लोधकाष्ठ, पाटियालोध ।
मराठीभाषामें	लोध ।
गुजरातीभाषामें	लोदर, पठाणीलोदर ।
कर्णाटकीभाषामें	लोध ।
तैलिङ्गीभाषामें	तेल्ललोद्दुगचेट्टुग ।
लैटिन्भाषामें	सिंप्लोकोसरेसिमोसा (वृक्ष) सिंप्लोकोसूक्रेटिगोइडिस् (छाल) SyJmplocosracemosa, S. Cratacgoides
अरबीभाषामें	मुगास् ।

लोध्रगुणाः ।

लोध्रोग्राहीलघुःशीतश्चक्षुष्यःकफपित्तनुत् ।
कषायोरक्तपित्तासृग्रक्तातीसारशोथहृत् (भा. प्र.)

अर्थ—लोध-मलरोधक, हलका, शीतल, नेत्रोंको हितकारी, कफपित्त-नाशक, कषेला तथा रक्तपित्त, रुधिरविकार, रक्तातिसार और शोथ (सूजन) को दूर करे है ।

अन्यच्च ।

रोध्रद्वयंकषायंस्याच्छीतंवातकफास्रनुत् ।
चक्षुष्यंविषहृत्तत्रविशिष्टोवल्करोध्रकः ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ—दोनों प्रकारके लोध-कषेले, शीतल, वातकफनाशक, रुधिरके विकारको दूर करनेवाले, नेत्रोंको हितकारी, विषके विकारोंके हरनेवाले इन दोनोंमें पठानी लोध श्रेष्ठ है ।

अन्यच्च ।

लोध्रद्वयंतुतुवरंचक्षुष्यंशीतलंलघु ।
ग्राहकंवातकफनुद्रक्तरुक्छोफपित्तनुत् ॥
अतिसारारुचिविषप्रदराणिविनाशयेत् ।
रक्तपित्तहरंप्रोक्तंपुष्पंपाकेकटुस्मृतम् ॥
तुवरंमधुरंशीतंतिक्तश्चग्राहकंमतम् ।
कफपित्तहरंचैवऋषिभिःपरिकीर्तितम् ॥ (निघण्टुरत्ना.)

अर्थ—दोनों प्रकारके लोध-कषेले, नेत्रोंको हितकारी, शीतल, ग्राही तथा वात, कफ, रक्तदोष, शोफ, पित्त, अतिसार, अरुचि, विष, और रक्तपित्तका नाश करने वाले हैं।

लोधका फूल-पचनेमें चरपरा, कषेला, मधुर, शीतल, कडवा, और कफपित्तनाशक है।

भल्लातकनामानि।

भल्लातकोऽरुष्करश्चभल्लातःशोथहृत्तथा।
वह्निनामावीरतरुर्व्रणकृद्भूतनाशनः॥

अर्थ—भल्लातक, अरुष्कर, भल्लात, शोथहृत्, वह्निनामा, वीरतरु, व्रणकृत्, भूतनाशन. (भल्लातकी, अग्निमुखी, वीरवृक्ष, अह्वला; अन्तःधूम, भल्लिका, अर्शोहिता, भल्ली, निर्दहन, तपन, अनल, कृमिघ्न, शैलबीज, वातारि, स्फोटबीजक, पृथग्बीज, धनुर्वृक्ष, बीजपादप, वह्नि, महातीक्ष्णा, अग्नि, स्फोटहेतु, शोफकृत्, स्नेहबीज, रक्तहर)

संस्कृतभाषामें	भल्लातक।
हिन्दीभाषामें	भिलावा।
वंगलाभाषामें	भेला।
मराठीभाषामें	बिब्बवा, बिब्बा, बिब्बे।
गुजरातीभाषामें	भिलामां।
कर्णाटकीभाषामें	केरबीज।
तैलिङ्गीभाषामें	नाल्लानीडी, जीडीविट्टलु।
औत्कलीभाषामें	भल्लिप।
तामिलीभाषामें	शनकोट्टइ।
द्रा०	भिलवना।
अंग्रेजीभाषामें	मार्किंगनट्। Markinguut मलकाबिन Malabean
लैटिन्भाषामें	सेमिकार्पसूएनेकार्डियम्। Semecarpus anacardi...
फारसीभाषामें	विलादुर।
अरबीभाषामें	हबुल्करत्र।

भल्लातकगुणाः।

भल्लातकःकषायोष्णःशुक्रलोमधुरोलघुः।

वातश्लेष्मोदरानाहकुष्ठार्शोग्रहणीमदान् ॥
हन्तिगुल्मज्वराश्वित्रवाह्निमांद्यक्रुमिव्रणान् । (भा. प्र.)

अर्थ-भिलावा-कषेला, गरम, शुक्रजनक, मधुर, हलका तथा वात, कफ, उदररोग, आनाह, कुष्ठ, बवासीर, संग्रहणी, गुल्म, ज्वर, श्वित्रकुष्ठ, अग्निमांद्य (प्रमेह) कृमि और व्रणरोगका नाश करे है ।

भल्लातकफलगुणाः ।

भल्लातकफलंस्निग्धंक्रिमिदुर्नामनाशनम् ।
दन्तस्थैर्यकरंग्राहिकषायंमधुरश्चतत् ॥ (राजवल्लभ)

अर्थ-भिलावेंका फल-स्निग्ध, क्रिमि तथा बवासीरका नाश करनेवाला, दांतोंको स्थिर करनेवाला, ग्राही, कषेला और मधुर है ।

पक्वभल्लातकगुणाः ।

भल्लातकफलंपक्वंस्वादुपाकरसंलघु ।
कषायंपाचनंस्निग्धंतीक्ष्णोष्णंछेदिभेदनम् ॥
मेध्यंवह्निकरंहंतिकफवातव्रणोदरम् ।
कुष्ठार्शोग्रहणीगुल्मशोफानाहज्वराक्रिमीन् (भावप्रकाश)

अर्थ-भिलावेंका पक्का फल-मधुर, पाकमें मधुर, हलका, कषेला, पाचक, स्निग्ध, तीक्ष्ण, गरम, छेदन, भेदक, मेधाजनक, अग्निदीपक, तथा कफ, वात, व्रण, उदररोग, कुष्ठ, अर्श, संग्रहणी, गुल्म, सूजन, आनाह, ज्वर और कृमि-रोगोंको दूर करे है ।

अपिच ।

भल्लातस्यफलंकषायमधुरंकोष्णंकफार्तिभ्रम—
श्वासानाहविबन्धशूलजठराध्मानक्रिमिध्वंसनम् ॥ (रा. नि.)

अर्थ-भिलावेंका फल-कषेला, मधुर, गरम तथा कफ, भ्रम, श्वास, आनाह, विबन्ध, शूल, उदररोग, आध्मान और क्रिमिको नाश करनेवाला है ।

अस्य फलत्वग्गुणाः ।

फलत्वचासुमधुरास्निग्धालघुकषायका ।
रसेकटुर्पाचिकाचलघुतीक्ष्णाचभेदिका ॥
उष्णाछेदनकर्त्रीचदीपनीकफनाशिनी ।

मेध्यावातश्चकुष्ठश्च व्रणं चोदरमेवच ॥
अर्शःसंग्रहणीगुल्मशोफानाहज्वरक्रिमीन् ।
नाशयेदितिसंप्रोक्तामुनिभिःसत्यवादिभिः ॥ (नि॰

अर्थ-भिलावेंके फलकी छाल-मधुर, स्निग्ध, हलकी, कषेली, चरपरी, पाचक, तीक्ष्ण, भेदक, गरम, छेदक, दीपन, कफनाशक, मेधा तथा, वात, कुष्ठ, व्रण, उदररोग, बवासीर, संग्रहणी, गुल्म, सूजन, अ ज्वर और कृमिरोगको नष्ट करे है।

अस्य मज्जागुणाः ।

तथास्यफलजामज्जामधुराबृंहणीस्मृता ।
वृष्यादीपनकर्त्रीचतर्पणीशोकनाशिनी ॥
अरोचकश्चदाहश्चपित्तंवातश्चनाशयेत् । (नि॰ र॰

अर्थ--इसके फलकी मज्जा--मधुर, बृंहण, वीर्यजनक, जठराग्नि तर्पण, शोकनाशक तथा अरुचि, दाह, पित्त और वातकोदूर करनेवा

अस्य वृन्तगुणाः ।

भल्लातवृन्तंमधुरंकषायंवातकोपनम् ॥ (राजवल्लभ)

अर्थ- भिलावेंका डंठल--मधुर, कषेला और वातको कुपित करे है।

अन्यच्च ।

वृन्तमारुष्करंस्वादुपित्तघ्नंकेश्यमाग्निकृत् ॥ (भा. प्र.

अर्थ--भिलावेंका डंठल--स्वादिष्ठ, पित्तनाशक, बालोंको हितकारी जठराग्निदीपक है।

भल्लातकशोधनविधिः ।

भल्लातकानिपक्वानिसमानिप्रक्षिपेज्जले ।
मज्जन्तियानितैत्रवशुद्धचर्थंतानियोजयेत् ॥
इष्टकाचूर्णनिचयैर्घर्षणान्निर्विषं भवेत् । (भा. सं.)

अर्थ--पके भिलावें लेकर जलमें छोडदे, जितने भिलावें जलमें डूबें उनको, शुद्ध करनेके लिये उतनेही जलमें भिगोदे, फिर इष्टका अर्थात् चूर्णसे उनको घिसे तो वोह शुद्ध हो।

नदीभल्लातकनामानि ।

वृषांकःस्याद्गोजनकोनदीभल्लातकःस्मृतः ॥

अर्थ-वृषांक, गोजनक, नदीभल्लातक ।

अस्य गुणाः ।

वृषांकस्तुभवेत्तिक्तःकषायोमधुरोहिमः ।
संग्राहीवातलश्चैवकफरक्तादिपित्तहा ॥
व्रणहेतिभिषक्श्रेष्ठैःप्रोक्तःकैयनिघण्टके । (नि. र.)

अर्थ- नदीभिलावा-कडवा, कषेला, मधुर, शीतल, ग्राही, वातकारक तथा कफपित्त, रक्तपित्त, और व्रणविनाशक है ।

इसका वृक्ष बडा होताहै, पत्ते गूमाके समान होतेहैं, फल लाल होता है ।

विजयानामानि ।

शक्राशनन्तुविजयात्रैलोक्यविजयाजया ॥

अर्थ-शक्राशन, बिजया, त्रैलोक्यविजया, जया (मत्कुणारि, भङ्गा, इन्द्राशन, वीरपत्रा, चपला, अजया, आनन्दा, हर्षिणी, मोहिनी, भृंगी धूर्तवधू, मातुलानी, मातुली, नीली, मनोहरा, हरा, उन्मत्तिनी, योगिनी, धूर्तपत्नी, कामाग्नि, तन्द्रारुचिवर्द्धिनी, वीरपत्री, शिवा, माया, शिवप्रिया, मत्ता, ज्ञानवल्लिका)

संविदामञ्जरीगञ्जामादिनीहर्षिणीतथा ॥

अर्थ-संविदामञ्जरी, गञ्जा, मादिनी, हर्षिणी ।

संस्कृतभाषामें	भङ्गा, बिजया, गंजा, चरस ।
हिन्दीभाषामें	भाँग, भंग, गाँजा ।
वङ्गभाषामें	सिद्धि, भाङ्ग, गांजा ।
मराठीभाषामें	भांग, गांजा ।
ब्रह्मीभाषामें	बिन ।
गुजरातीभाषामें	भांग्य, गांजो, चरस ।
तैलिंगीभाषामें	जनपरितुल गांजाई ।
अंग्रेजीभाषामें	इण्डियनहेंप । Indian Hemp
लेटिन्भाषामें	केनाबिस् सेटाईवा । Cannabis Sativa
फारसीभाषामें	किन्नाबिष बरकुलख्याल शवनबंग ।
अरबीभाषामें	किन्नवकेन वुर्वारिरु रुहुल्लूवंज ।

भङ्गागुणाः ।

भङ्गाकफहरीतिक्ताग्राहिणीपाचनीलघुः ।

तीक्ष्णोष्णापित्तलामोहमन्दवाग्वह्निवर्द्धिनी ॥ (

अर्थ-भंग-कफनाशक, कडवी, ग्राहक, पाचक, हलकी, तीक्ष्ण पित्तजनक तथा मोह, मद, वाणी और अग्निको बढानेवाली है।

अन्यच्च ।

शक्राशनन्तुतीक्ष्णोष्णंमोहकृत्कुष्ठनाशनम् ।
बलमेध्याग्निकृच्छ्लेष्मदोषहारिरसायनम् ॥

अर्थ-भाँग--तीक्ष्ण, उष्ण, मोहकारक, कुष्ठनाशक, बलवर्द्धकक, मे अग्निकारक, कफनाशक और रसायन है ।

अपिच ।

भृंगीतुदीपनीरुच्याग्राहिणीपाचनीलघुः ।
निद्रापित्तप्रदोष्णाचकामदाकफवाताजित् ॥

अर्थ-भंग-अग्निको दीपन करनेवाली, रुचिको उत्पन्न करनेवाली रोकनेवाली, पाचक, हलकी, निद्राजनक, पित्तकारक, कामजनक, तथा वातको जीतनेवाली हैं ।

गञ्जा गुणाः ।

आग्नेयीतर्षिणीबल्यामन्मथोद्दीपनीचला ।
निद्रासंजननीगर्भपातिनीचविकाशिनी ॥
वेदनाक्षेपहरिणीज्ञेयाचमदकारिणी । (आत्रेयसं

अर्थ-गांजा-पाचक, तृष्णाकारक, बलकारक, मन्मथोद्दीपक, चलायमान करनेवाला, निद्राजनक, गर्भको गिरानेवाला, विकाशी, हरनेवाला, आक्षेपको दूर करनेवाला और मदकारक है ।

भंगोत्पत्तिः ।

जातामन्दरमन्थनाज्जलनिधौपीयूषरूपापुरा ।
त्रैलोक्येविजयप्रदेतिविजयाश्रीदेवराजप्रिया ॥
लोकानांहितकाम्ययाक्षितितलेप्राप्तानरैःकामदा ।
सर्वातङ्कविनाशहर्षजननी वै सेवितासर्वदा ॥

अर्थ-पहिले समयमें जब मंदराचल पर्वतसे समुद्र मथागया था, समय अमृतरूपसे भंगकी उत्पत्ति हुई । त्रिलोककी विजय देनेवाली

सका नाम विजया हुता, यह देवराज इन्द्रको प्यारी है। हितकी अभिलाष रनेसे पृथ्वीपर मनुष्योंको प्राप्त होती है, इसको जलके साथ मिलाकर नेसे काम अत्यन्त प्रबल होता है, सर्व प्रकारके रोग शोक दूर होते हैं और तुल आनन्द प्राप्त होता है।

विवरण--यह एक प्रकारका क्षुप है, इसके फूल हरे गुच्छेदार होते हैं, सके पत्ते नीमके पत्तेके समान लम्बे और कंगूरदार होते हैं; परन्तु नीमके त्तोंसे कुछ छोटे होते हैं, प्रति दंडीपर तीन पांच अथवा सात पत्ते होते हैं, रुष और स्त्रीके नामसे भंग दो प्रकारकी होती है, पुरुष जातिके क्षुपसे पत्ते ये जाते हैं और स्त्री जातिके क्षुपसे गांजेकी उत्पत्ति होती है, वंगदेशके जशाही जिलेमें गांजेकी खेती होती है। दोनों जातिके क्षुप एक जगह रहनेसे टा नहीं बांधी जासकती, वह यही कारण है कि भंगकी खेती हरेक थानमें नहीं होती। वहां पर जो पुरुष जातिके वृक्ष उत्पन्न होते हैं, उन बको वहुत छोटे छोटेपनसे उखाड डालते हैं मुंगेर पञ्जाब और रामपूरके जेलेकी भंग उत्तम होती है। क्षुप छैः फुटसे ऊंचा नहीं होता पत्ते एक इंच म्बे होते हैं।

हिन्दुओंको भंग अत्यन्त प्यारी है विनाविघ्नके कार्य सिद्ध करनेको व उत्सवोंमें यह प्रथमही पीजाती है। पश्चिमोत्तर देशमें इसका अधिक यवहार है।

हमारे देशके कोई कोई भंगेडी कहते हैं, कि भंगही इस संसारमें सत्पावन और परमपावन है इसी कारण भगवान् भूतनाथने इसको ग्रहण किया है भी कहते हैं कि–

सवैया।

भीजत ही सब रीझत हैं जब धोय धरी शिवके मनमानी।
मिर्च मसालो मिलाय दियो तब घोटकरी वाकी रस धानी॥
साफी सुरपतिरायबनी यह ब्रह्म कमण्डलुके जल छानी।
गंगते दूनी तरंग उठैं जब अंगमें आवत भंग भवानी॥ १॥

कोई बोला यह ठीक नहीं वरन यों है—

साधुनके अरु सिद्धनके अरु भट्ट सुभट्टनके मनमानी।
कामिनिके अरु दूतनके रजपूतनघोटम घोटके छानी॥
याहिके बीच अनेकन तीरथ याहिमें गंग तरंगके पानी।
कोटिन रंग दिखावति है जब अंगमें आवति भंग भवानी॥ २॥

एकने कहा भाई यह भी नहीं ऐसे है—

खायेते ज्ञानकि कान खुले बिन खाये गमन नहीं होत है या
चाहत हैं सब योगी यती अरु देवनमें महादेवहु माने
याके समान न और कछू इमें जान परी यह मुक्तिनिसानी
कोटिन रंग दिखावति है जब अंगमें आवति भंग भवानी ॥ ३

किसीने कहा भाई ऐसे कहो। कवित्त—

देखत हरी है गुण अमित भरी है सिद्ध साधन धरी है ज्ञान
शेषकी। ध्यानकी पुरी है कवितान ईश्वरी है मति देवत खरी है गुरु
गणेशकी ॥ जिन्होंने गही है ताव प्रभुता करी है कविलाल व
निकाई परदेशकी। सुरईश्वरी है नरनागधीश्वरी हैं जल थलमें भो
लाडिली महेशकी ॥ ४ ॥

मिरच मसाला सौंफ कासनी मिलाये भंग खायेते अनेक
उबारती। जारती जलोदर कठोदर भंगंदरको सन्निपात बवासी
विदारती ॥ सुकवि शिवराम दाद खाजको खराब करैं क्षयी छी
नसूरको निकारती। पीनस प्रमेह बीस बावन तरहकी पीर कमर
गरद कर डालती ॥ ५ ॥ इत्यादि.

व्यवहार—वद्यक शास्त्रोंमें भङ्ग और भङ्गके बीजोंके अति
और किसी अंशका व्यवहार नहीं देखा जाता; परन्तु गांजाभी कि
प्रयोगमें किया जाता है।

समुद्र मथनेके समय अमृतके साथ यह उत्पन्न हुई थी, देवेंद्र
साथ इसका सेवन करता है। संग्राममें जानेके समय संपूर्ण देवसे
पी निडर हो दैत्योंके साथ युद्ध करती। बस इसी कारणसे इ
विजया हुआ है। फिर देवराजने अत्यन्त प्रसन्न होकर मनुष्योंको
दूर करनेके लिये इसे मृत्युलोकमें भेजा।

आयुर्वेद शास्त्रमें दो प्रकारके रोगोंकी औषधियोंमें इसका
किया जाता है। उदरामय परिपाक और रतिशक्ति बढानेके लिये
बनाई जाती हैं उनमें भंग अधिक डाली जाती है। आजकल भी
नेसे भंगका एक अद्भुत गुण प्रगट हुआ है धनुस्तम्भ रोगमें
पिलानेसे शनैः शनैः आक्षेप कम हो जाता है। और रोगीको
दुबलता नहीं होती, बार बार भंगका धुंआ पीनेसे रोग छूट जाता है

जिस प्रकार डाक्टर कास्तगिरने भंगका धुंआ पिलाकर धनु

गियोंको आरोग्य किया है उसका वृत्तान्त नीचे लिखते ह, उन्होंने छ गियोंको धुंवापिलाकर आराम किया। सात रत्ती भंग तमाखूके साधारण तोमें एक नई चिलम तमाखूके समान सजाकर हुक्केके द्वारा रोगीको लाया था आक्षेप होनेका पहला लक्षण देखतेही रोगीको धूमपान कराया या। धुंआ पीतेही रोगी आक्षेपसे छूट नेत्र वन्दकर साधारण रीतिसे गया। आक्षेप होनेका ध्यान होतेही इस प्रकारसे बार बार धुंआ पिला- र उन सब रोगियोंको आराम किया गया।

बम्बई देशके डाक्टर जि. सि. (G. C) लूकसने परीक्षा करके देखा कि धुंआ पीनेसे (१) आक्षेप थोड़ी देरतक ठहरता है (२) धीरे धीरे आक्षेप बहुत समयके पीछे हुआ करता है (३) आक्षेपका तेजभी धीरे रे कम होजाता है (४) आक्षेपके किंये रोगीको अत्यन्त कृश (दुबला) ना नहीं पड़ता (५) वारवार व्यवहार करनेसे फिर आक्षेप एक साथ ड जाता है।

डाक्टर ओसाग्नसीने अनेक प्रकारक रोगोंमें भंगका प्रयोग करके रीक्षा की थी। उनकी राय है। धनुःस्तम्भ, जलान्तक; वातरस, तडका र विषूचिका रोगीकी यह औषधी है, उनके पीछे अंगरेज डाक्टर लोग को धनुस्तम्भ और विषूचिकाकी श्रेष्ठ औषधी समझते हैं।

डाक्टर डाईमक (Dymac) ने धनुःस्तम्भके बहुत रोगियोंको केवल से आराम किया और निश्चय करदिया है कि धनुःस्तम्भके लिये उत्तम षधी है यह विषूचिका रोगमें अफीमके समान काम करनेवाली है, रोग- सम्प्राप्तिके समय काममें लानेसे अत्यन्त लाभ होता ह। इन रोगोंके तिरिक्त यूनानी मतसे प्रमेह और अंत्रवृद्धिक रोगमें भंगका प्रयोग होता है में भंग पीसकर लेप करनेस बवासीरको आराम होता ह। भुनी हुई भंग चूर्ण सहतके साथ खानेसे अतिसार, संग्रहणी और मंदाग्नि दूर होती ह का पूरा क्षुप पीसकर नवीन घावमें लगानेसे शीघ्र आराम होता है। और टकी पीड़ा निवारण करनेको लेप देनेसे विशेष उपकार होता है।

मात्रा २-४ रत्ती व्यवहार--बीज, पत्ते, जड़।

खाखसफलनामानि।

खसफलेखाखसफलसुल्लसत्फलमित्यापि।





संस्कृतभाषामें	खसफल, खाखसफल, उल्लसत्फल।
हिन्दीभाषामें	पोस्त, खसखसका फल, पोस्तके डोरे।
बंगलाभाषामें	पोस्तदानारगाच्छ, पोरलटेंडि, खाकसी।
मराठीभाषामें	पोस्त, अफूचीं बोंडें।
गुजरातीभाषामें	अफीणना डोडवां।
अंग्रेजीभाषामें	पोपिकाप्स्युलस्। Popyvcapsulea
लैटिन्भाषामें	पापावरीसूकायस्युली। Pabavcris Ca
फारसीभाषामें	कोकनार।
अरबीभाषामें	अबुनास।

अस्य गुणाः।

स्याद्वाखसफलोद्भूतंवल्कलंशीतलंलघु।
ग्राहितिक्तंकषायञ्चवातकृत्कफकासहृत्॥
धातूनांशोषकंरूक्षंमदकृद्वाग्विवर्द्धनम्।
मुहुर्मोहकरंरुच्यंसेवनात्पुंस्त्वनाशनम्॥ (भावप्र

अर्थ—पोस्तका डोरा-शीतल, मलरोधक, कडवा; कषेला, वा कफनाशक, कासनिवारक, धातुशोषक, रूखा, मदको करनेवाला, बढ़ानेवाला, वारंवार मोहको उत्पन्न करनेवाला, रुचिको करनेवाला इसको बहुत सेवन करनेसे पुरुषता नाश होती है।

अपिच ।

खसखसंग्राहकंबल्यंगुरुवृष्यंकफप्रदम् ।
पाकेचमधुरंवीर्य्यंकान्तिदंबलदंमतम् ॥
वातपित्तंनाशयतिफलंरूक्षश्चग्राहकम् ।
रक्तशोषकरंप्रोक्तंमुनिभिस्तत्त्वदर्शिभिः (नि० र०)

अर्थ-पोस्तका वृक्ष-ग्राही, बलकारक, भारी, वृष्य, कफकारक, पाकमें, मधुर, वीर्यदायक, कान्तिजनक, बलदायक, वातपित्तको शमन करनेवाला इसका फल रूखा, ग्राही, रक्तशोषक है ।

अफेननामानि ।

अफेनंखसखसरसंनिफेनंचाहिफेनकम् ॥

अर्थ-अफेन, खसखसरस, निफेन, अहिफेनक (खसफलक्षीर, आफूक, नागफेन, पोस्तोद्भव, पोस्तरस, भुजंगफेन)

संस्कृतभाषामें	अहिफेन ।
हिन्दीभाषामें	अफीम ।
बंगभाषामें	आफिंग ।
मराठीभाषामें	अफू, अपू, कडवी, ।
गुजरातीभाषामें	अफेण ।
कर्णाटकीभाषामें	अफेन ।
तैलिंगीभाषामें	नाल्लामंदु ।
अंग्रजीभाषामें	ओपियम् । Opium
लैटिन्भाषामें	आप्पम् । Opium
फारसीभाषामें	अफयून तिर्य्याक ।
अरबीभाषामें	लवनुल खसखास ।

अस्यगुणाः ।

जारणोमारणश्चैवधारणःसारणस्तथा ।
अहिफेनश्चतुर्धोक्तोगुणांस्तस्यब्रवीमिते ।
वृष्योबलकरोग्राहीसप्तधातुविशोषकः ॥
वातपित्तकृदानंदकारकोनेत्रमादकः ।
वीर्य्यस्तम्भकरास्तिक्तोमधुरश्चप्रकीर्तितः ॥

सन्निपातकृमिकफपाण्डुक्षयविनाशकः ।
मेहादीञ्छासकासौचप्लीहांधातुक्षयंतथा ॥
नाशयेदितिचप्रोक्तोविशेषस्तस्यकथ्यते ।
श्वेतवर्णोजारणःस्याद्भुक्तमन्नंचजारयेत् ॥
मृतिप्रदःकृष्णवर्णोमारणस्तुप्रकीर्तितः ।
जरानाशकरःपीतोधारणःसंप्रकीर्तितः ॥
चित्रवर्णःसारणःस्यान्मलसारणकार्यतः । (नि. र.)

अर्थ-अफीम-जारण, मारण, और सारण, इन भेदोंसे चारप्रकारकी गुण-वीर्य्यवर्द्धक, बलकारक, ग्राही, सप्तधातुशोषक, वातपित्त आनंदकारक, नशेको करनेवाली, वीर्यको स्तम्भनकरनेवाली, कडवी, तथा सन्निपात, कृमि, कफ, पाण्डुरोग, क्षय, प्रमेह, श्वास, खांसी, और धातुक्षयको क्षय करेहै । सफेदरंगकी अफीम अन्नको जारण (करे है, इसकारण इसको जारण कहते हैं

काले रंगकी अफीम मृत्युकारक है इसकारण इसको मारण पीले रंगकी जरानाशकहै इसको धारण कहतेहैं । चित्र वर्णकी अफीम सारण करतीहै, इसको सारण कहतेहैं ।

खसखसनामानि ।

उच्यन्तेखसबीजानितेखाखसतिलाअपि ॥

अर्थ-खसबीज, खाखसतिल, (सूक्ष्मतण्डुल, सूक्ष्मबीज, सुबीज, भेद, खसतिल)

संस्कृतभाषामें	खसबीज, खसतिल ।
हिन्दीभाषामें	खसखस, खसखसके दाने ।
वंगलामें	पोस्तदाना ।
तै० ता०	गसगस ।
मराठीभाषामें	खसखस ।
गुजरातीभाषामें	खरखस ।
अंग्रेजीभाषामें	पोपीसीड्स् Poppy seeds
लैटिन्भाषामें	पापावरसोम्निफरम् । Papavar somnifer
नु०	कसकसे ।

मला० कशकश ।
फारसीभाषामें तुख्मेकोकनार ।
अरबीभाषामें हबुलकोकनार ।

अस्य गुणाः ।

खसबीजानिबल्यानिवृष्याणिमधुराणिच ।
जनयन्तिकफंतानिशमयन्तिसमीरणम् ॥ (भा. प्र.)

अर्थ-खसखस-बलकारक, विर्य्यवर्द्धक, भारी, मधुर, ग्राहक, और वात-विनाशक है ।

विवरण । पोस्तकी खेती पूर्व, दक्षिण और रुहेलखण्डमें अधिकतासे होती है। इसका क्षुप चारफूटका होता है, फूल सफेद, लाल, और काले रंगके अतीव सुन्दर गुल्लालेकी समान आते हैं, उसपे डोडे लगते हैं उन डोडोंको छूरीकी नोकसे गोद देतेहैं, उनमेंसे जो दूध निकलताहै, उस दूधको इकट्ठा करलेतेहैं उसको पकाकर अफीम बनातेहैं और डोडेके भीतर जो बीज होतेहैं उनको खसखस कहतेहैं ।

यवक्षारनामानि ।

पाक्यंक्षारोयावशूकोयवक्षारोयवाग्रजः ।

अर्थ- पाक्य, क्षार, यावशूक, यवक्षार, यवाग्रज, (यवल्लास, यवशूक क्षारक, रेचक, यवनालक, तिर्य्य, तीक्ष्णरस, यवनालज, यवज, यवशूकज यवाह्व, यवापत्य)

संस्कृतभाषामें यवक्षार ।
हिन्दीभाषामें जवाखार ।
वंगभाषामें यवक्षार, सोरा ।
मराठीभाषामें जबखार ।
गुजरातीभाषामें जवखार ।
कर्नाटकीभाषामें यवखार ।
तैलिंगीभाषामें यवक्षारं ।
अंग्रेजीभाषामें कार्बोनेट ऑफ पोटाश । Carbonate of Potass.
लैटिन्भाषामें पोटाश्यं कार्बोनास् । Potassium Carbonass
अरबीभाषामें नुतरुन् ।

अस्य गुणाः ।

यवक्षारोलघुःस्निग्धःससूक्ष्मोवह्निदीपनः ।
निहन्तिशूलवातामश्लेष्मश्वासगलामयान् ॥
पाण्ड्वर्शोग्रहणीगुल्मानाहप्लीहहृदामयान् । (भा. प्र.)

अर्थ-जवाखार-हलका, स्निग्ध, सूक्ष्म, अग्निप्रदीपक तथा शूल, वा[illegible] आम, कफ, श्वास, गलरोग, पाण्डुरोग, बवासीर, संग्रहणी, गुल्म, आना[illegible] प्लीहा और हृदयरोगको हरे है ।

अन्यच्च ।

यवक्षारोहिमःश्रेष्ठःशर्कराश्मरिकृच्छ्रजित् ।
निहन्तिशूलवातामपुंस्त्वगुल्मादिजन्तुजित् ॥ (राजनि.)

अर्थ-जवाखार-शीतल, श्रेष्ठ तथा शर्करा, अश्मरोग, शूल, वात, आ[illegible] पुरुषता, गुल्मादिरोग और क्रिमिको दूर करेहै ।

अपिच ।

यवक्षारःसरश्चोष्णःकटुरग्निप्रदीपकः ।
सूक्ष्मोलघुर्वातकफशूलाश्मरिरुजापहः ॥
वातरोगंकण्ठरोगमामशूलाश्मरीहरः ।
यकृत्प्लीहामूत्रकृच्छ्रगुल्मश्वासार्शनाशनः ॥
आनाहवातंहृद्रोगमामंपण्डुरुजंतथा ।
ग्रहणींनाशयत्येवंपूर्वाचार्यनिरूपितम् (नि. र.)

अर्थ-जवाखार-सारक, उष्ण, चरपरा, अग्निदीपक, सूक्ष्म, लघु, त[illegible] वात, कफ, शूल, अश्मरी, वातरोग, कण्ठरोग, आमशूल, यकृत्, प्ली[illegible] मूत्रकृच्छ्र, गुल्म, श्वास, अर्श, आनाह, वात, हृदयरोग, आम, पाण्डुरो[illegible] और संग्रहणीका नाश करनेवाला है ।

विवरण । कच्चे जौओंके पञ्चांगको अग्निमें जलाकर राख करलेवे फिर [illegible] राखकी कशूमकी भांति रैनी टपकालेवे फिर उसको अग्निपर कढाईमें [illegible] कर उसका पानी जलादेवे जब वह जमजाय तो उसको कढाईमेंसे खुर[illegible] एक कांचके पात्रमें रखदेवे इसको जवाखार कहते हैं ।

स्वर्जिकाक्षारनामानि ।

कपोतस्वर्जिकास्वार्जिःशूलघ्नीसुखवर्चकः ॥

अर्थ-कपोत, स्वर्जिका, स्वर्जि, शूलघ्नी, सुखवर्चक (सौवर्चल, रुचक, सृजिकाक्षार, सर्जिका, क्षार, सुनर्चिक, सुघ्नी, योगवाही, स्वर्जका, सुखर्चक सृग्रिका, सर्जि, सर्जिक्षार, स्वर्जिक,सुखोर्जिक, सुवर्जिक, स्वर्जिक्षार, सुवर्चि, सुवर्चा, स्वर्जिकाक्षार)

संस्कृतभाषामें	स्वर्जिक्षार ।
हिन्दीभाषामें	सज्जी ।
वंगभाषामें	साजिखार, साजिमाटि ।
मराठीभाषामें	सज्जीखार ।
गुजरातीभाषामें	साजीखार ।
कर्णाटकीभाषामें	साजीखारु ।
अंग्रेजीभाषामें	कार्बोनेट ऑफ सोडा ।Carbonate of soda
लैटिन्भाषामें	आर्थोक्नेमम्इंडिकम् , केरोक्सीलन्फिटिडं । Arthrocnemcm Indicum Caroxylon foetidum
फारसीभाषामें	संजारकलीया ।
अरबीभाषामें	कलीवशव्वुलअसफर ।

अस्य गुणाः ।

स्वर्जिक्षारःकटुश्चोष्णस्तीक्ष्णोगुल्मविनाशकः ।
शूलंवातंकफंचैवकृमीनाध्मानवातकम् ॥
उदरस्यचवातंचनाशयेदितिकीर्त्तितः । (नि. र.)

अर्थ-सज्जी-चरपरी, गरम, तीक्ष्ण, गुल्मनाशक तथा शूल, वात, कफ, कृमि, आध्मान, वायु और उदरकी वातको दूर करनेवाली है ।

विवरण । वृक्षोंके पञ्चांगके तुकडे करके मलवार प्रांतकी ओर बडी बडी खाईं बनाकर उनमें भर देते हैं और उसमें आग लगाते हैं पीछे वह अपने आप जलकर जम जाते हैं इसको खारी कहते हैं। यह खारी जमीनमें बनाई जाती है।

टङ्कणक्षारनामानि ।

लोहद्रावीटङ्कणश्चसुभगोधातुवल्लभः ॥

अर्थ-लोहद्रावी, टङ्कण, सुभग, धातुवल्लभ, (पाचनक, मालतीतीरज, लोहश्लेषण, रसशोधन, रसाधिक, लोहद्रावी,रसघ्न, वर्त्तुल, कनकक्षार,मलिन, टङ्कण, मालतीतीरसम्भव, द्रावक, लोहशुद्धिकारक, रङ्गद, स्वर्णपाचक, टंग, धातुसन्धिकर, सौभाग्य, श्वेतटङ्कण)

संस्कृतभाषामें	टङ्कणक्षार ।
हिन्दीभाषामें	सुहागा ।
वङ्गभाषामें	सौहागा ।
मराठीभाषामें	खागीखार, टांकणखार ।
गुजरातीभाषामें	टंकणपाढियो, टंकनफूलियो ।
कर्णाटकीभाषामें	टंकणखारु, विलीयटंकणु ।
तैलिंगीभाषामें	एलिगारम् ।
अंग्रेजीभाषामें	वोराक्स, बायबोरेट् ऑफ् सोडा । Borax Boborate of soda
लैटिन्भाषामें	सोडास्बाइंबोरास् । Sodas Biboras
फारसीभाषामें	तीगार ।
अरबीभाषामें	बुरग ।

अस्य गुणाः ।

कथितष्टंकणक्षारःकटूष्णःकफनाशनः ।
स्थावरादिविषघ्नश्चकासश्वासापहारकः ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-सुहागा-कटु,उष्ण तथा कफ,स्थावरादि विष,खांसी और श्वासको हरनेवाला है ।

अपिच ।

टंकणंवह्निकृद्रूक्षंकफहृद्वातपित्तकृत् ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-सुहागा-अग्निजनक,रूखा,कफनाशक और वातपित्तकोकरनवाला

अन्यच्च ।

टंकणोद्रावणोभेदीविषहारीज्वरापहः ।
गुल्मामशूलशमनोवातश्लेष्महरःपरः ॥ (ग. नि.)

अर्थ-सुहागा--द्रावण, धातुको पतला करनेवाला, भेदक तथा विष, ज्वर, गुल्म, आम, शूल, वात और कफका नाश करे है ।

अपिच ।

मालतीतीरजःक्षारस्तीक्ष्णोवह्निप्रदीपकृत् ।
विरूक्षणोनिलकरःश्लेष्मघ्नःपित्तदूषकः ॥

अर्थ -सुहागा--तीक्ष्ण, जठराग्निको दीपन करनेवाला,विरूक्ष,वातकारक, कफनाशक और पित्तको दूषित करे है ।

अन्यच्च ।

टङ्कणोऽग्निकरो रूक्षः कफघ्नो रोचनो लघुः ॥ (रसचन्द्रिका)

अर्थ-सुहागा-अग्निकारक, कफनाशक, रोचक और हलका है ।

अपिच ।

टङ्कणो भेदको रूक्षः कटुश्चाग्निप्रदीपनः ।
पित्तलोष्णो वातकरस्तिक्तस्तीक्ष्णः पटुः स्मृतः ॥
धातुद्रावी ज्वरं वातं कफं जंगमजं विषम् ।
स्थावरश्च विषं वान्तिं वातरक्तश्च नाशयेत् ॥
कासं श्वासं नाशयतीत्येवमाहुर्मनीषिणः ।

अर्थ-सुहागा-भेदक, रूक्ष, कटु, अग्निदीपक, पित्तजनक, उष्ण, वातवर्द्धक, तिक्त, तीक्ष्ण, खारी, धातुको पतला करनेवाला तथा ज्वर, वात, कफ, जंगमविष, स्थावरविष, वमन, वातरक्त, खांसी, और श्वासको हरनेवाला है ।

अन्यच्च ।

लोहद्रावी तीक्ष्णोष्णश्च बलवह्निविवर्द्धनः ॥ (शोडलनि.)

अर्थ-सुहागा--तीक्ष्ण, गरम और बल तथा जठराग्निको बढानेवाला है ।

श्वेतटंकणगुणाः ।

सुश्वेतं टंकणं स्निग्धं कटूष्णं कफवातनुत् ।
आमक्षयापहृच्छ्वासविषकासमलापहम् ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ--सफेद सुहागा--स्निग्ध, कटु, उष्ण, कफवातनाशक तथा आम, क्षय, श्वास, विष, खांसी और मलको हरनेवाला है ।

टंकणशोधनविधिः ।

आदौ टंकणमादाय काञ्जिकाम्ले विनिक्षिपेत् ।
एकरात्रात्समुद्धृत्य रौद्रयन्त्रे विभावयेत् ॥
नरमूत्रगतं टंकं गवां मूत्रगतं तथा ।
दिनान्ते तत्समुद्धृत्य जम्बीराम्लगतं कुरु ॥
जम्बीराम्लात्समुद्धृत्य नारिकेलस्य पात्रके ।

मरीचचूर्णसंयुक्तंक्षालयेच्छीतलाम्बुना ॥
एवंटंकणमादाय सर्वरोगेषु योजयेत् ।

अन्यच्च ।

टंकणंवह्नियोगेनस्फुटितंशुद्धतांव्रजेत् ॥ (रसेंद्रसारसं०)

अर्थ-प्रथम सुहागको लेकर कांजीमें छोड दे, एक रात्रि पीछे निक-कर रौद्रयन्त्रमें पचावे, फिर मनुष्यके मूत्रमें डालकर गोमूत्रमें डाले फि-सायंकालको निकालकर जम्भीरीनींबूके रसमें डाले, उसमेंसे निकाल-नारियलके पांत्रमें गेरकर कालीमिर्चके चूर्णयुक्त शीतल जलसे धोवे, इ-प्रकार सुहागेको शोधकर सर्व रोगोंमें दे । सुहागा अग्निके संयोगसे खि-कर शुद्ध होता है ।

विवरण । सुहागेकी खान विशेष करके उत्तरखण्डमें पाई जाती है प्र-भोटानदेशसे भोटिये लोग इसको खोद खोदकर बकरोंमें भरलातेहैं । इस-कहीं कहीं पकातेहैं ।

सैन्धव नामानि ।

सिन्धूद्भवंमाणिमन्थंनादेयंलवणोत्तमम् ॥

अर्थ-सिन्धूद्भव, माणिमन्थ, नादेय, लवणोत्तम (सितशिव, सीतशि-शिवशिव, शीतसिव, सिन्धूज, सिन्धूपल, वशिर, सिन्धूरराज, माणिब-सिन्धुमन्थज, सिन्धुलवण, सिन्धुभव, सिन्धुसम्भव, नादय, शिव, हि-शिवात्मज, पथ्य, माणिमन्थ, शुद्ध, शीतशिव)

(संस्कृतभाषामें	सैन्धव ।
हिन्दीभाषामें	सैंधानोंन ।
वङ्गभाषामें	सैन्धवलवण ।
मराठीभाषामें	सधलोण ।
गुजरातीभाषामें	सिंधालुण ।
कर्नाटकीभाषामें	सैंधवं ।
तैलिङ्गी भाषामें	सिंधुउपु ।
अंग्रजी भाषामें	क्लोराइड्अँफ्सोडियं Chloride of sodi-
लैटिभाषामें	सोडियाइक्लोरिड । Sodii Chloridum
फारसीभाषामें	नमकेसंग, बिलोरी, नमकेलाहौर ।
अरबीभाषामें	मिलहेहिन्दी ।

अस्य गुणाः ।

सैन्धवंलवणंस्वादुदीपनंपाचनंलघु ।
स्निग्धंरुच्यंहिमंवृष्यंसूक्ष्मंनेत्र्यंत्रिदोषहृत् ॥ (भा. प्र.)

अर्थ-सैंधानोंन-स्वादिष्ठ, दीपन, पाचक, हलका, स्निग्ध, रुचिकारक, शीतल, वीर्य्यवर्द्धक, सूक्ष्म, नेत्रोंको हितकारी और त्रिदोषनाशक हैं ।

अन्यच्च ।

सैन्धवंरुचिदंवृष्यंचक्षुष्यंचाग्निदीपनम् ॥
शुद्धंस्वादुलघुस्निग्धंपाचनंशीतलंमतम् ॥
अविदाहितुसूक्ष्मञ्चहृद्यञ्चैवात्रिदोषहम् ।
व्रणदोषंमलस्तम्भंहृद्रोगंचैवनाशयेत् ॥ (निघण्टुरत्नाकर)

अर्थ-सैंधानोंन-रुचिदायक, वीर्य्यवर्द्धक, नेत्रोंको हितकारी अग्निप्रदीपक, शुद्ध, स्वादिष्ठ, हलका, स्निग्ध पाचक, शीतल, अविदाही, सूक्ष्म, हृदयको हितकारी, त्रिदोषनाशक तथा व्रणदोष, मलस्तम्भ और हृदयरोगका नाश करे है ।

सैंधानोंन-सिंधकी ओरसे आता है, सेंधानोंन आंखके लिये अत्यन्त हितकारी है, जिसमनुष्यका मल सूखगयाहो और दस्त न आताहो, उसको घीके साथ सैंधानोंन देनेसे तुरन्त दस्त आवेगा, सैधानोंन तेलके साथ लगानेसे अनेकप्रकारके त्वचाके रोगोंको दूर करताहै हाथमें धारण करनेसे बंधीहुई नसोंको छुड़ादेताहै । सब प्रकारके नमकोंमें श्रेष्ठ है ।

शाकम्भरीलवणनामानि ।

शाकम्भरीयंवसुकंरौमलवणंरौमकम् ॥

अर्थ-शाकम्भरीय, वसुक, रौमलवण, रौमक, (रोमक, गडाख्य, गडलवण, शुभ्र, पृथ्वीज, गडदेशज, गडोत्थ, महारम्भ, साम्भर, सम्बरोद्भव)

संस्कृतभाषामें	शाकम्भरीय ।
हिन्दीभाषामें	साँभरनोंन ।
बंगभाषामें	सामरलुण ।
मराठीभाषामें	साम्बरलोण, साम्भरमीठ ।
गुजरातीभाषामें	वडागरुंमीठ ।
कर्णाटकीभाषामें	गाढलवण, सम्भरदेशज ।
फारसीभाषामें	मिलहेअब्रकीर ।

अस्यगुणाः ।

शाम्भरंदीपनंचोष्णंकोष्ठशुद्धिकरंलघु ।
किञ्चिदम्लमभिष्यंदिपाकेचकटुकंमतम् ॥
तीक्ष्णंपित्तकरंभेदिव्यवायिकफनाशकम् ।
सूक्ष्मंचार्शःकफानाहमलवातांश्चनाशयेत् ॥ (रा. नि.

अर्थ-सामर-दीपन, गरम, कोष्ठशोधक, हलकी, किञ्चितअम्ल, अभिष्यन्दि, पाकमें कटु, तीक्ष्ण, पित्तकारक, भेदक, व्यवापि, कफनाशक, सूक्ष्म तथा बवासीर, कफ, आनाह, मल और वातको दूर करेहै । सामरलवण मारवाड देशके प्रसिद्ध सामर सरोवरमें उत्पन्न होता है ।

समुद्रलवणनामानि ।

सामुद्रिकंत्रिकूटश्चवाशिरंलवणाब्धिजम् ।

अर्थ-सामुद्रिक त्रिकूट, वशिर, लवणाब्धिज (वासर, कटक, सागरज, अक्षीर, सामुद्रन, लवणोदधिसम्भव, सामुद्रिक)

संस्कृत भाषामें	समुद्रलवण ।
हिन्दीभाषामें	समुद्रनोंन, पांगा ।
वंगभाषामें	करकचनुन ।
मराठीभाषामें	मीठ ।
गुजरातीभाषामें	मीठूं ।
कर्णाटकीभाषामें	वडागर लवण ।
तैलिंगीभाषामें	उपुं ।
अंग्रेजीभाषामें	साल्ट् । Salt
लैटिन्भाषामें	सोडिआ इम्पुर्रास् । Sodii Muras
फारसीभाषामें	नमक ।
अरबीभाषामें	मिल्ह शोरी ।

अस्यगुणाः ।

सामुद्रंलवणंपाकेनात्युष्णमविदाहिच
भेदनंमधुरंस्निग्धंशूलघ्नंनातिपित्तलम् ॥ (रा. नि.)

अर्थ-समुद्रनोंन-किंचित् उष्ण, अविदाहि, भेदक, मधुर, स्निग्ध, शूलनाशक और अत्यन्त पित्तकारक नहीं है ।

अन्यच्च ।

सामुद्रंमधुरंपाकेसतिक्तंमधुरंगुरु ।
नात्युष्णंदीपनंभेदिसक्षारमविदाहिच ॥
श्लेष्मलंवातनुत्तिक्तंसरूक्षंनातिशीतलम् । (भा. प्र.)

अर्थ--समुद्रनोंन -पचनेमें मधुर, तिक्त, मधुर, भारी, किंचित् उष्ण, दीपन, भेदक, क्षाररसयुक्त, अविदाही, कफकारक, वातनाशक, कडवा, रूखा और अत्यन्त शीतलभी नहीं है ।

अन्यच्च ।

सामुद्रंरुचिदंहृद्यमाग्निदीप्तिकरंमतम् ।
केशशौक्ल्यकरंभेदिह्यविदाहिबलासकृत् ॥
पाकेतुमधुरंप्रोक्तंकटुतिक्तंगुरुस्मृतम् ।
किंचिदुष्णंपित्तलञ्चक्षारंस्निग्धंचशूलनुत् ॥
वातनाशकरंस्वादुऋषिभिःपरिकीर्त्तितम् ।

अर्थ--समुद्रनोंन--रुचिदायक, हृदयको हितकारी, बालोंको धवल करनेवाला, भेदक, अविदाहि, कफकारक, पचनेमें मधुर, कटु, तिक्त, भारी, किंचित् उष्ण, पित्तजनक, खारी, स्निग्ध, शूलनाशक, वातविनाशक और स्वादिष्ट है ।

विवरण । समुद्रके जलको जमाकर समुद्रनोंन बनाते हैं ।

विड्लवणनामानि ।

विडंविड्लवणंधूर्तविड्गन्धंकृतकंतथा ॥

अर्थ--विड, विड्लवण, धूर्त, विड्गन्ध, कृतक, (काललवण, द्राविडक, खण्ड, क्षार, आसुर, सुपाक्य, खण्डलवण, कृत्रिमक, द्राविडक, पाक्य, विट) ।

संस्कृतभाषामें	विड्लवण ।
हिन्दीभाषामें	विरियासंचरनोंन, कटीलानोंन ।
बंगलाभाषामें	विट्नुन, ।
मराठीभाषामें	विड्लोण ।
गुजरातीभाषामें	विड्लवण ।

अस्य गुणाः ।

विडंलवणमुत्क्लेदिवह्नेर्बलविवर्द्धनम् ।
मलवातामविष्टम्भशूलाटोपविबन्धनुत् (राजवल्लभ)

अर्थ--विरियासंचरनोंन--उत्क्लेदक, जठराग्निवर्द्धक, बलवर्द्धक तथा वात, आम, विष्टम्भ, शूल, आटोप और विबन्धको दूर करे है।

अन्यच्च ।

विडंक्षारोलघुश्चोष्णोरुच्यस्तीक्ष्णोग्निदीपनः ।
वातानुलोमनोरूक्षोव्यवायीशूलनाशनः ।
वातनाशकरोमेहगुल्माजीर्णविनाशनः ॥
मलावष्टम्भकानाहवातहृद्रोगनाशनः ॥
जाड्यंकफञ्चदद्रूंचनाशयेदितिकीर्तितम् । (नि, र.)

अर्थ--विरियासंचर--हलका, गरम, रुचिकारक, तीक्ष्ण, अग्नि... वातानुलोमन, रूक्ष, व्यवायि तथा शूल, वात, प्रमेह, गुल्म, अजीर्ण, मलाव... आनाह, वात, हृदयरोग, जडता, कफ और दादको दूर करनेवाला है।

विवरण । विड्लवण प्रसारणीके क्षारका बनाया जाता है।

सौवर्चललवणनामानि ।

अक्षंसौवर्चलंरुच्यंदुर्गन्धंशूलनाशनम् ॥

अर्थ--अक्ष, सौवर्चल, रुच्य, दुर्गन्ध, शूलनाशन, (रुचक, कृष्ण... तिलक, हृद्यगन्ध, कोद्रविक, पाक्य, मेचक और मन्थपाक)

संस्कृतभाषामें	सौवचल ।
हिन्दीभाषामें	कालानोंन, चौहार सोडा, सोंचरनोंन ।
बंगलाभाषामें	सचल लवण ।
मराठीभाषामें	पादलोण ।
गुजरातीभाषामें	संचल ।
कर्णाटकीभाषामें	सौवर्चल ।
तैलिंगीभाषामें	नालुउपु ।
अंग्रेजीभाषामें	अन्नाकासोडि अंक्लोराईड । Unaqua Sodium Ch...
लैटिन्भाषा	अनाका सोडिआई क्लोरेइडम् Unaqua sodii Chlor...
फारसीभाषामें	नमक शिया ।
अरबीभाषामें	मला अस्वद ।

अस्यगुणाः ।

कृष्णलवणंवीर्योष्णंरुचिदंनिर्मलंकटु ।
गुल्मशूलविबन्धघ्नंकिंचित्पित्तकरंलघु ॥ (वि० ति० भा०)

अर्थ--कालानोंन--उष्णवीर्य्य, रुचिदायक, निमल, कटु तथा गुल्म, शूल और विबन्धका नाश करे है । किंचित् पित्तजनक और हलकाहै ।

अन्यच्च ।

सौवर्चलंकटुक्षारंवीर्य्योष्णंविशदंलघु ।
गुल्मशूलविबन्धघ्नंहृद्यंसुरभिरेचनम् ॥
आनाहारोचकंजन्तूनूर्द्धवातंचनाशयेत् । (ध. नि.)

अर्थ--कालानोंन–कटुरसयुक्त क्षाररसान्वित, उष्णवीर्य, विशद, हलका हृदयको हितकारी, सुगन्धित, दस्तावर तथा गुल्म, शूल, विबन्ध, अफारा, अरुचि, कृमि और ऊर्ध्ववातका नाश करेहै ।

अन्यच्च ।

रुचकंरोचनंभेदिदीपनंपाचनंपरम् ।
सस्नेहंवातनुन्नातिपित्तलंविशदंलघु ॥
उद्गारशुद्धिदंसूक्ष्मंविबन्धानाहशूलहृत् । (भा० प्र०)

अर्थ--कालानोंन--रोचक, भेदक, दीपन, पाचक, स्नेहयुक्त, वातनाशक, अत्यन्त पित्तजनक, विशद, हलका, डकारको, शुद्ध करनेवाला, सूक्ष्म तथा विबन्ध, आनाह और शूलको निर्मूल करे है ।

विवरण । यह सज्जी और मीठे नोंनसे बनाया जाता है ।

काचलवणनामानि ।

काचत्रिकूटंपाक्याह्वंलवणंकाचसम्भवम् ॥

अर्थ--काच, त्रिकूट, पाक्याह्व, लवण, काचसंभव (काचलवण, नील, काचोद्भव, काचसौवर्चल, नीलक, कृष्णवलण, पाकजकाचोत्थ, हयगन्ध, कालवण, कुरुविन्दकाचमल, कृत्रिम, नीककाचोद्भव)

संस्कृतभाषामें — काचलवण ।
हिन्दीभाषामें — कचियानोंन ।
बंग भाषामें — कालालोण ।
मराठीभाषामें — बांगडखार ।
गुजरातीभाषामें — बंगडीखार ।

अस्यगुणाः ।

काचंदीपनमत्युष्णंरक्तपित्तविवर्द्धनम् ॥

अर्थ--कचियानोंन--अग्निको दीपन करनेवाला, अत्यन्त उष्ण रक्तपित्तवर्द्धक है ।

अन्यच्च ।

काचादिलवणंरुच्यंकिञ्चित्क्षारंचपित्तलम् ।
दाहकंकफवातघ्नंदीपनंगुल्मशूलहृत् ॥ (राजनि०)

अर्थ--कचियानोंन--रुचिकारी, कुछेक खारी, पित्तजनक तथा दाह, वात, गुल्म और शूलका नाश करैहै और दीपन है ।

विवरण । काचलवण काँचसे बनाया जाताहै ।

औद्भिदनामानि ।

औद्भिदंपांशुलवणंयज्जातंभूमितःस्वयम् ।

अर्थ--औद्भिद, पांशुलवण यह उसके नाम हैं, जो स्वयं (आपही) पृथ्वीमें उत्पन्न होताहै ।

हिन्दीभाषामें रेहगवानोंन ।

अस्यगुणाः ।

क्षारंगुरुकटुस्निग्धंशीतलंवातनाशनम् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ--रेहगवानोंन--खारी, भारी, कटु, स्निग्ध, शीतल और वातनाशक

अन्यच्च ।

औद्भिदंतीक्ष्णमुत्क्लेदिसक्षारंकटुतिक्तकम् ॥ (राजव०)

अर्थ-रेहगवा--तीक्ष्ण, उत्क्लेदी, क्षारगुणयुक्त, चरपरा और कडवा है ।

विवरण । रेहगवां नमक प्रायः जंगलदेशकी खारी जमीनमें उत्पन्न है इसको रेह भी कहतेहैं ।

औषरलवणनामानि ।

औषरकंसार्वगुणंसार्वसंसर्गलवणमूषरजम् ।
साम्भारंबहुलगुणंचमिश्रकंनवधा (?) ॥

अर्थ--औषरक, सार्वगुण, सार्वसंसर्गलवण, ऊषरज, साम्भार, बहुलगुण, मिश्रक ।

संस्कृतभाषामें औषरलवण ।
हिन्दीभाषामें खारीनोंन ।

बंगभाषामें खारीनुन ।
मराठीभाषामें खारादिमीठ, उषर भूमीवर पिकतं तें ।
अंग्रेजीभाषामें कार्बोनेट आफ सोडा । Carbonate of soda
लैटिनभाषामें सोडीयंकार्बोनास् Sodium carbonas
फारसीभाषामें बोरे अर्मनी ।
अरबीभाषामें वोदकवहलोज ।

अस्य गुणाः ।

औषरंतुपटुक्षारंतिक्तंवातकफापहम् ।
विदाहिपित्तकृद्ग्राहिमूत्रसंशोषकारिच ॥ (रा० नि०)

अर्थ-खारीनोन-पटु, क्षार, कडवा, वातकफनाशक, दाहजनक, पित्तकारक, ग्राही और मूत्रको सुखावे है ।

विवरण । खारी नमक स्वयं खारी पृथ्वीमे उत्पन्न होता है ।

रोमकलवणगुणाः ।

रोमकंतीक्ष्णमत्युष्णंपटुतिक्तश्चदीपनम् ।
दाहशोषकरंग्राहिपित्तकोपकरंपरम् ॥

अर्थ-रोमकलवण-तीक्ष्ण, अत्यन्त उष्ण, पटु, कडवा, दीपन, दाहजनक, शोषकारक, ग्राही और पित्तको कुपित करे है ।

द्रोणीलवणनामानि ।

द्रौणेयंवार्द्धेयंद्रोणीजवारिजंचवार्द्धिभवम् ।
द्रौणीलवणंद्रौणंत्रिकटुलवणंचवसुसंज्ञम् ॥

अर्थ-द्रौणेय, वार्द्धेय, द्रोणीज, वारिज, वार्द्धिभव, द्रौणीलवण, द्रौण, त्रिकुट लवण ।

अस्य गुणाः ।

द्रौणेयलवणंपाकेनात्युष्णमविदाहिच ।
भेदनंस्निग्धमीषच्चशूलघ्नंचाल्पपित्तलम् ॥ (रा. नि.)

अर्थ-द्रोणीलवण-पचनेमें किञ्चित् उष्ण, अविदाही. भेदक, कुछेक स्निग्ध, शूलनाशक और अल्पपित्तजनक है ।

नरसारनामानि ।

क्षारश्रेष्ठोऽमृतक्षारश्चूलिकालवणाभिधः ।
सादरोनरसारश्चवज्रक्षारोविदारणः ॥

अर्थ-क्षारश्रेष्ठ, अमृतसार, चूलिकालवण, सादर, नरसार, वज्रविदारण ।

संस्कृतभाषामें	नरसार ।
हिन्दीभाषामें	नवसादर ।
बंगभाषामें	निशादल ।
मराठीभाषामें	नवसागर ।
गुजरातीभाषामें	नवसार ।
अंग्रेजीभाषामें	आमोन्यं, क्लोरिडम् । Ammonium Chloride
लैटिन्भाषामें	आमोन्यम्मूरिआस । Ammoninm Msriaus
अरबीभाषामें	नवसादर खुराशानी ।

अस्यगुणाः ।

पटुप्रवृत्तिशालीनां (?) स्त्रावणःशोथहृद्धिमः ।
यकृद्दोषज्वरेप्लीहेशिरःशूलेऽर्बुदादिषु ॥
स्तनरोगेरक्तपित्तेकासेभग्नामयेतथा ।
योनिव्यापत्सुचज्ञेयोनरसारःसुखावहः ॥

अर्थ-नवसादर-शोथनाशक, शीतल तथा यकृत् रोगमें, प्लीहारोग, ज्वरमें, शिरके शूलमें, अर्वुदादिकमें, स्तनरोगमे, रक्तपित्तमे, खांसीमें, भग्नरोगमें और योनिव्यापद्रोगमें सुखदायक है ।

अन्यच्च ।

नरसागरकस्तीक्ष्णःसरोव्रणविदारणः ।
रसजारणकारीस्यादतिचोष्णश्चगुल्मनुत् ॥
मलस्तम्भंचोदरंचशूलंप्लीहाश्चनाशयेत् ।

अर्थ-नवसादर-तीक्ष्ण, सारक, व्रणविदारक, रसजारणकारक, अत्युष्ण, गुल्मनाशक तथा मलस्तम्भ, उदररोग, शूल और प्लीहाका नाश करनेवाला है ।

अस्य प्रस्तुतकरणंयथा ।

औष्ट्रंवामाहिषंगव्यंपुरीषंभस्मतांगतम् ।
क्षारपाकविधानेननृसारःसिद्धउच्यते (भा. प्र.)

अर्थ-ऊंट, भैंस और गायके गोवरकी क्षार पाकविधिसे भस्म करके नरसार सिद्ध होता है ।

अस्य शोधनविधिर्यथा।

नरसारोभवेच्छुष्कश्चूर्णतोयेविपाचितः।
दोलायन्त्रेणयत्नेनभिषग्भिर्योगसिद्धये॥ (आत्रेयसंहिता)

अर्थ-सूखेनौसादरका चूर्ण दोलायन्त्र करके जलमें पचावे, इस प्रकार वैद्योंने इसकी शुद्धि कही है।

विवरण। नवसादर कृत्रिम और अकृत्रिम इन भेदोंसे दोप्रकारका है जो मनुष्यके मूत्र, पुरीष अथवा पशुओंके पुरीषके क्षारका बनाया जाता है उसको अकृत्रिम कहते हैं, दूसरा नकली खारोंसे बनाया जाता है उसको कृत्रिम कहते हैं।

सूर्यक्षारनामानि।

सूर्यक्षारोऽर्कक्षारश्चतार्क्ष्यस्तीक्ष्णरसस्तथा।
सुवर्च्चिकासर्वसहोह्यौरिणश्चशिलाजतुः॥

अर्थ-सूर्यक्षार, अर्कक्षार, तार्क्ष्य, तीक्ष्णरस, सुवर्चिका, सर्वसह, औरिण, शिलाजतु।

संस्कृतभाषामें	सूर्यक्षार।
हिन्दीभाषामें	सोरा सूर्याखार, वाजी।
मराठीभाषामें	सोरा।
गुजरातीभाषामें	सुरोखार।
तैलिंगीभाषामें	चिट्लुभस्ममु।
अंग्रेजीभाषामें	नाइटर Nitre साल्ट पिटर Saltper
लैटिन्भाषामें	पोटेश्यंनैट्रास् Potaossum Nitras
फारसीभाषामें	शोरा।
अरबीभाषामें	अबकेर।

अस्य गुणाः।

औद्भिदंलवणंतीक्ष्णमत्युष्णंरेचकंकटु।
तिक्तमग्नेर्दीप्तिकरंसूक्ष्मंक्षारंलघुस्मृतम्॥
दाहकृच्छोषकृद्ग्राहिवातनुत्पित्तकोपनम्।
प्लीहमूर्च्छामूत्रकृच्छ्रनेत्ररुग्वातरक्तनुत॥

कुम्भकामलतुत्कासनासापाकश्चपीटिकाम् ।
शिरःपाकंचशूलंचआध्मानंचैवनाशयेत् ॥ (नि० र०)

अर्थ-सूर्यक्षार-तीक्ष्ण, अत्यन्त उष्ण, रेचक, कटु, अग्निप्रदीपक, क्षार, लघु, दाहजनक, शोषक, ग्राहक, वातनाशक, पित्तकारक तथा मूर्च्छा, मूत्रकृच्छ्र, नेत्ररोग, वातरक्त, कुम्भकामला, श्वास, नासापाक, पिटिका, शिरःपाक, शूल और आध्मानको दूर करे है।

विवरण। सोराक्षार सज्जीका बनाया जाता है।

सर्वक्षारगुणाः।

सवक्षारोवस्तिशुद्धिकारकोमलशोधनः।
वस्त्रशुद्धिकरश्चैवचक्षुःकृमिनाशकः॥
उदावर्त्तहरश्चैवमुनिभिः परिकीर्त्तितः॥ (नि० र०)

अर्थ-स्नेहक्षार-(साबुन) वस्तिशोधक, मलशोधक, वस्त्रोंको निर्मल करनेवाला, नेत्रोंको हितकारी, कृमिनाशक और उदावर्त्तरोगका नाश करे। सावुन समस्त संसारमें प्रसिद्ध है।

लवणक्षारगुणाः।

लोणारक्षारमत्युष्णंतीक्ष्णंपित्तप्रवृद्धिदम्।
क्षारलवणमीषच्चवातगुल्मादिदोषनुत्॥ (रा० नि०)

अर्थ-लोणारक्षार-अत्यन्त गरम, तीक्ष्ण, पित्तवर्धक, क्षारसंयुक्त, किंचित् लवणरससंयुक्त तथा वात और गुल्मादि दोषविनाशक है।

चणकाम्लगुणाः।

चणकाम्लकमत्यम्लंदीपनंदन्तहर्षणम्।
लवणानुरसंरुच्यंशूलाजीर्णविबन्धनुत्॥ (रा. नि.)

अर्थ-चनाखार-अत्यन्त अम्लरसान्वित, दीपन, दन्तहर्षक, कुछ लवणरसयुक्त, रुचिकारी तथा शूल, अजीर्ण और विबन्धको दूर करे है।

विवरण। चनेखारके बनानेकी विधि सब ग्रन्थोंमें लिखी है।

चुक्रगुणाः।

चुक्रमत्यम्लमुष्णञ्चदीपनंपाचनंपरम्।
शूलगुल्मविबन्धामवातश्लेष्महरंपरम्॥
वमितृष्णास्यवैरस्यहृत्पीडावह्निमांद्यहृत्।

अर्थ-चूक-अत्यन्त खट्टा, गरम, दीपन, पाचक, तथा शूल, गुल्म, विबन्ध, आम, वात, कफ, वमन, तृषा, मुखकी विरसता, हृदयकी पीडा औ मंदाग्निको दूर करेहै । चूक-खट्टे अनार, नींबु, इमली, आमले आदि कितनेक पदार्थोंके रसका बनाया जाताहै ।

इति श्रीआयुर्वेदोद्धारकशालिग्रामवैश्यकृतशालिग्रामनिघण्टुभूषणे भाषानुवादविभूषिते अष्टवर्गः समाप्तः ॥ ३ ॥

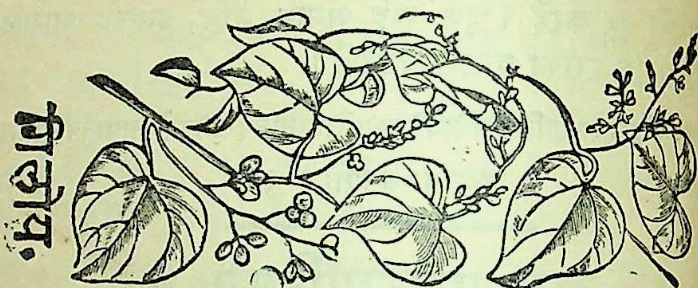
अथ गुडूच्यादिवर्गः ॥

अथ गुडूच्या उत्पत्तिः ।

अथलंकेश्वरोमानीरावणोराक्षसाधिपः ।
रामपत्नींबलात्सीतांजहारमदनातुरः ॥
ततस्तंबलवान्रामोरिपुंजायापहारिणम् ।
युतोवानरसैन्येनजघानरणमूर्द्धनि ॥
हतेतस्मिन्सुरारातौरावणेबलगर्विते ।
देवराजःसहस्राक्षःपरितुष्टस्तुराघवे ॥
तत्रयेवानराःकेचिद्राक्षसैर्निहतारणे ।
तानिन्द्रोजीवयामाससिंचित्वामृतवृष्टिभिः ॥
ततोयेषुप्रदेशेषुकपिगात्रात्परिच्युताः ।
पीयूषबिन्दवःपेतुस्तेभ्योजातागुडूचिका ॥

अर्थ-एक समय राक्षसाधिप लंकेश्वर अभिमानी मदोन्मत्त रावण रामचन्द्रकी पत्नी सीताको बलात्कारसे हर लेगया तब बलवान् रामचन्द्रजी निज स्त्रीके हरनेवाले अपने रिपु रावणको वानरोंके सेनाके द्वारा रणस्थलमें जीतताभया जब वह बलगर्वित देवताओंका वैरी रावण मारागया; तब देवराज इन्द्र अत्यन्त परितुष्ट हुए और उस रणस्थलमें जो बंदर असुरोंके हाथसे मारेगयेथे उनको अमृत वर्षाकर, जिलाया उस समय उन वानरोंके शरीरसे उछलकर अमृत जिसजिस स्थानमें गिरा, वहीं वहीं यह गिलोय, उत्पन्न हुई ।इस कारण इसका नाम अमृता हुआ ।

गुडूचीनामानि ।



गुडूच्यमृतवल्लीचकुण्डलीचक्रलक्षणा ।
मधुपर्णीसोमवल्लीविशल्यातंत्रीनिर्जरा ॥

अर्थ-गुडूची-अमृतवल्ली, कुण्डली, चक्रलक्षणा, मधुपर्णी, सोमवल्ली, विशल्या, तन्त्री, निर्जरा (वत्सादनी, छिन्नरुहा, तन्त्रिका, अमृता, जीवन्ति-का, गुडूची, वातरक्तारि, पामरोद्धारा, पित्तघ्नी, उद्धारा, गुडूची, वारा, ज्वरा-रि, श्यामा, सुरकृता, मधुपर्णिका, छिन्नोद्भवा, अमृतलता, रसायनी, छिन्ना, सोमलतिका, भिषक्प्रिया, कुण्डलिनी, वयस्था, नागकुमारिका, छिन्नरु-चन्द्रहासा, अमृतसम्भवा, अमृतवल्लरी, जीवन्ती, सोमा, चक्रलक्षणि-धीरा, नागकन्या, देवनिर्मिता, चक्राङ्गी)

संस्कृतभाषामें	गुडूची ।
हिन्दीभाषामें	गिलोय ।
बंगलाभाषामें	गुलंच ।
मराठीभाषामें	गुळवेल ।
गुजरातीभाषामें	गलो ।
कर्णाटकीभाषामें	अमरदवल्ली ।
तैलिङ्गीभाषामें	तिप्पतेगा, तियातिज, गोधूचि ।
तामिलीभाषामें	सिन्दी, लकोदि ।
वो०	गिरुली ।
मा०	गिलवे ।
प०	गलाह्व ।
कान्यकुब्ज	गुरूची ।
अंग्रेजीभाषामें	गुलांचा ।

लैटिन्भाषामें काक्युलस कार्ड फीलयिस । Coculuscardifolious
टिनोस्पोरा कार्डि फोलिया । Tisuosporad Corifolia
फारसीभाषामें गिलाई ।
अरवीभाषामें गिलोई ।

कन्दगुडूचीनामानि ।

अन्याकन्दोद्भवाकन्दामृतापिण्डगुडूचिका ।
बहुच्छिन्नाबहुरुहापिण्डालुःकन्दरोहिणी ॥

अर्थ-कन्दोद्भवा, कन्दामृता, पिण्डगुडूचिका, बहुच्छिन्ना, बहुरुहा और कन्दरोहिणी ।

गुडूचीगुणाः ।

ज्ञेयागुडूचीगुरुरुष्णवीर्य्यातिक्ताकषायाज्वरनाशिनीच ।
दाहार्त्तितृष्णावमिरक्तवातप्रमेहपाण्डुभ्रमहारिणीच॥ (रा.नि.)

अर्थ-गिलोय-भारी, उष्णवीर्य्य, कडवी, कषेली तथा ज्वर, दाह, तृषा, वमन, रक्त, वात, प्रमेह, पाण्डु और भ्रमको हरनेवालीहै ।

अन्यच्च ।

गुडूचीग्राहिणीबल्यात्रिदोषघ्नीरसायनी ।
दीपनीज्वरतृट्छर्दिकामलावातपित्तनुत् ॥

अर्थ-गिलोय-मलरोधक, बलकारक, त्रिदोषनाशक, रसायन, अग्निदीपक तथा ज्वर, तृष्णा, वमन, कामला और वातपित्तका नाश करे है।

अन्यच्च ।

गुडूचीतुवरातिक्तावीर्येचोष्णाचऊषणा ।
ग्राहीरसायनीबल्यामधुराचाग्निदीपनी ॥
लघ्वीहृद्यायुःप्रदाचज्वरदाहतृषाहरी ।
रक्तदोषंवमिंवातंभ्रमंपाण्डुंप्रमेहकम् ॥
त्रिदोषंकामलांचामंकासंकुष्ठंतथाकृमीन् ।
रक्तार्शवातरक्तंचकण्डूंमेदांविसर्पकम् ॥
पित्तंकफंनाशयतिघृतेनसहवातहा ।
गुडेनबद्धविट्कत्वंसितयापित्तनाशिका ॥

मधुनाकफहाप्रोक्तावातवातारितैलके ।
शुंठ्यामवातशमनीमुनिभिःपरिकीर्तिता ॥

अर्थ-गिलोय-कषेली. कडवी, उष्णवीर्य्य, उष्ण, मलरोधक, रसा- बलकारक, मधुर, अग्निप्रदीपक, हलकी, हृदयको हितकारी, आयुप्रद ज्वर, दाह, तृषा, रक्तदोष, वमन. वात, भ्रम, पाण्डुरोग, प्रमेह, त्रिदो कामला, आम, खांसी, कोढ, कृमि, रक्तार्श (खूनीबवासीर) वात कण्डू, मेद, विसर्प,पित्त,और कफको दूर करैहै । गिलोय घृतके साथ वात गुडके साथ मलबद्धताको, खांडके साथ पित्तको, मधुके साथ कफको आम तेलके साथ वायुको और सोंठके साथ आमवातको दूर करैहै ।

अपिच ।

गुडूचीमधुरातिक्ताकृच्छ्रहृद्रोगवातनुत् ॥

अर्थ-गिलोय-मधुर, कडवी, मूत्रकृच्छ्र, हृदयरोग और वातविनाशक है

अस्याः पत्रशाकगुणाः ।

गुडूचीपर्णशाकातुतुवरोष्णालघुस्मृता ।
कटुस्तिक्तापाककालेमधुराचरसायनी ॥
अग्निदीप्तिकरीबल्याग्राहिणीचत्रिदोषहा ।
वातरक्तंतृषांदाहंमेहंकुष्ठंचकामलाम् ॥
पांडुरोगंनाशयतीत्येवमाचार्यभाषितम् । (नि. र.)

अर्थ-गिलोयके पत्तोंका शाक-कषेला, गरम, हलका, चरपरा, कडवा पचनेके समय मीठा, रसायन, अग्निको दीपन करनेवाला,बलकारक, मलरो- धक, त्रिदोषनाशक तथा वातरक्त, तृषा, दाह, प्रमेह, कुष्ठ, कामला पाण्डुरोगका नाश करनेवाला है ऐसा आचार्योंनें कहाहै, इसके अधिक शाकवर्गमें देखो ।

गुडूचीसत्त्वगुणाः ।

गुडूचिसत्त्वंसुस्वादुपथ्यंलघुचदीपनम् ।
चक्षुष्यंधातुकृन्मेध्यंवयःस्थापनकारकम् ॥
वातरक्तंत्रिदोषञ्चपाण्डुंतीव्रज्वरंतथा ।
वमिंजीर्णज्वरंपित्तंकामलांचप्रमेहकम् ॥

अरुचिंश्वासकासौचहिक्कांचार्शांक्षतथा ।
सदाहंमूत्रकृच्छ्रंचप्रदरंसोमरोगकम् ॥
नाशयेदितिसंप्रोक्तंपित्तंमेहंसशर्करम् । (रा. र.)

अर्थ-गिलोयका सत्त्व-स्वादिष्ठ, पथ्य, हलका, दीपन, नेत्रोंको हितकारी धातुवर्द्धक, मेधाजनक, अवस्थास्थापक तथा वातरक्त, त्रिदोष, पाण्डुरोग, तीव्रज्वर, वमन, जीर्णज्वर, पित्त, कामला, प्रमेह, अरुचि, श्वास, खांसी, हिचकी, ववासीर, क्षय, दाह, मूत्रकृच्छ्र, प्रदर, सोमरोग, पित्त, प्रमेह और शर्करारोगको दूर करेहै ।

कन्दगुडूचीगुणाः ।

कन्दोद्भवागुडूचीचकटूष्णासन्निपातहा ।
विषघ्नीज्वरभूतघ्नीवलीपलितनाशिनी ॥

अर्थ-कन्दगिलोय--कटु, उष्ण, सन्निपातनाशक तथा विष, ज्वर, भूत और वलीपलितविनाशक है ।

गिलोयके सत्त्व बनानेकी विधि ।

गिलोयके छोटे छोटे टुकडे करके कूट डाले और पानीमें दोदिनतक भिगोये रक्खे फिर चलनीसे छानले । दूसरे दिन उसके ऊपरका पानी सावधानीके साथ नितारदे फिर नीचेका जो गाढा जल रहजाय, उसको धूपमें सुखाले । वह सत्त्व बनजायगा ।

विवरण । गिलोयकी वेल होती है और वृक्षोंपर फैलजाती है । गाठोंसे दो दो भाग निकलतेहैं । धीरेधीरे उनकी झांदरी और उनकीही जड होजातीहै । पत्ते कुछ कुछ पानके समान और अधिक नीले होतेहैं. फूल छोटा गुच्छोंमे आताहै, फल मटरके समान होतेहैं और पकनेके समय लाल पड जातेहैं । व्यवहार-पत्ते, झांदरा । मात्रा २ तोले ।

नागवल्लीनामानि ।

ताम्बूलीनागवल्लीचनागिनीनागवल्लिक ।
दिवाभीष्टापर्णलताताम्बूलिर्नागवल्लरी ॥

अर्थ-ताम्बूली, नागवल्ली, नागिनी, नागवल्लिका, दिवाभीष्टा, पर्णलता, ताम्बूलि, नागवल्लरी (नागवल्ली, ताम्बूलवल्ली, सप्तशिरा, सप्तलता, फणिवल्ली, भुजंगलता, भक्ष्यपत्रा, ताम्बूलवल्लिका, पर्णगृहाशया, मुखभूषण, ताम्बूल)

संस्कृतभाषामें	ताम्बूलवल्ली, ताम्बूल ।
हिन्दीभाषामें	नागरवेल, पान ।
वङ्गभाषामें	पान ।
मराठीभाषामें	नागवेल ।
कोकणीभाषामें	पानवेल ।
गुजरातीभाषामें	नागरवेल्य, पान ।
कर्णाटकीभाषामें	नागरवल्ली, पर्ण ।
तैलङ्गीभाषामें	तामलपाकु ।
तामिलीमें	वेट्टिली ।
अंग्रेजीभाषामें	बिटल्लीफ । Betel leaf
लैटिनभाषामें	पाईपरबिटल् । Pipcr Betel
फारसीभाषामें	वर्गतबोल ।
अरबीभाषामें	कान ।

ताम्बूलगुणाः ।

ताम्बूलंकटुतिक्तमुष्णमधुरंक्षारंकषायान्वितं
वातघ्नंकृमिनाशनंकफहरंदुःखस्यविच्छेदनम् ।
स्त्रीसंभाषणभूषणंधृतिकरंकामाग्निसंदीपनं
ताम्बूलेनिहितास्त्रयोदशगुणाःस्वर्गेपितेदुर्लभाः ॥

अर्थ-पान-चरपरा, कडवा, गरम, मधुर, क्षारगुणयुक्त, कषायरस तथा वात, कृमि, कफ और दुःखको हरनेवाला है । स्त्रीसम्भाषणके लि अलंकारके समान है तथा धारणशक्ति और कामाग्निवर्द्धक है । पानमें जो तेरह गुण विद्यमान हैं, सो स्वर्गमें भी दुर्लभ हैं ।

अन्यच्च ।

ताम्बूलंविशदंरुच्यंतीक्ष्णोष्णंतुवरंसरम् ।
वश्यंतिक्तंकटुक्षारंरक्तपित्तकरंलघु ॥
बल्यं श्लेष्मास्यदौर्गन्ध्यमलवातश्रमापहम् । (भा. प्र.)

अर्थ-पान-विशद, रुचिकारी, तीक्ष्ण, गरम, कषेला, सारक, वशी कडवा, चरपरा, क्षार, रक्तपित्तकारक, हलका, बलकारक तथा कफ, दुर्गन्ध, मल, वात और श्रमको दूर करेहै ।

अन्यच्च ।

नागवल्लीकटुस्तीक्ष्णातिक्तापीनसवातजित् ।
कफकासहरारुच्यादाहकृद्दीपनीपरा ॥ (रा. नि.)

अर्थ-पान-चरपरा, तीक्ष्ण, कडवा तथा पीनस, वात, कफ और खांसीको दूर करे है, दाहजनक और अग्निप्रदीपक है।

श्रीवाटीपर्णगुणाः ।

श्रीवाटीमधुरातीक्ष्णावातपित्तकफापहा ।
रसाढ्यासुरसारुच्याविपाकेशिशिरास्मृता ॥

अर्थ-श्रीवाटीपान-मधुर, तीक्ष्ण, वातपित्तकफनाशक, रसाढ्य, सुरस युक्त, रुचिकारक और पचनेके समय शीतल है।

अम्लवाटीपर्णगुणाः ।

स्यादम्लवाटीकटुकाम्लतिक्तातीक्ष्णातथोष्णासुखपाककर्त्री ।
विदाहपित्तास्रविकोपनीचविष्टम्भदावातनिबर्हिणीच ॥

अर्थ-अम्लवाटीपान-चरपरा, खट्टा, कडवा, तीक्ष्ण, गरम, मुखको पकानेवाला, दाहको उत्पन्न करनेवाला, विष्टम्भदायक और वातनिवारक है

सातसीपर्णगुणाः ।

सातसीमधुरातीक्ष्णाकटुरुष्णाचपाचनी ।
गुल्मोदराध्मानहरारुचिकृद्दीपनीपरा ॥

अर्थ-सातसीपान-मधुर, तीक्ष्ण, कटु, उष्ण, पाचक तथा गुल्म, उदररोग और आध्मानको दूर करनेवाला है, रुचिकारक और जठराग्निको दीपन करनेवाला है।

जीर्णपर्णगुणाः ।

तत्पर्णजूर्णातिरसातिरुच्यासुगन्धितीक्ष्णामधुरातिहृद्या ।
संदीपनापुंस्त्वकरातिबल्याविरेचनीवक्त्रसुगन्धिकारिणी ॥

अर्थ-पुरानापान--अत्यन्त रसपूरित, रुचिकारक, सुगन्धित, तीक्ष्ण, मधुर, हृदयको हितकारी, जठराग्निको दीपन करनेवाला, पुंस्त्वदायक, बलकारक, दस्तावर और मुखको शुद्ध करनेवाला है।

मालवोद्भवांगरपर्णगुणाः ।

नागनान्याम्लसरासुतीक्ष्णमधुरारुच्याहिमादाहनु-

त्पित्तोद्रेकहराग्निदीपनकरीबल्यामुखामोदिनी।
स्त्रीसौभाग्यविवर्द्धनीमदकरीराज्ञांसदावल्लभा
गुल्माध्मानविबन्धजिच्चकथितासामालवेतुस्थिता।

अर्थ–मालवेका अङ्गरापान--अम्ल, सारक, तीक्ष्ण, मधुर, रुचिक शीतल, दाहनाशक, पित्तनाशक, अग्निको दीपन करनेवाला, बलको देनेवा मुखमें सुगन्ध करनेवाला स्त्रियोंके सौभाग्यको बढानेवाला, नशा करनेवा राजाओंको सदा वल्लभ तथा गुल्म, आध्मान और विबन्धको दूर करनेवा

अन्ध्रदेशोद्भवपोटकुलीपर्णगुणाः।

अन्ध्रेपटुलिकानामकषायोष्णाकटुस्तथा।
मलापकर्षाकण्ठस्यापित्तकृद्वातनाशिनी॥

अर्थ--अन्ध्रदेशका पोटकुली पान--कषेला, गरम, चरपरा, कण्ठके म निकालनेवाला, पित्तकारक और वातनाशक है।

ह्वेसणीयापर्णगुणाः।

ह्वेसणीयाकटुस्तीक्ष्णाहृद्यादीर्घदलाचसा।
कफवातहरारुच्याकटुर्दीपनपाचनी॥

अर्थ समुद्रदेशका पान--चरपरा, तीक्ष्ण, हृदयको हितकारी, दीर्घ वाला, कफवातनाशक, रुचिकारक, चरपरा, दीपन और पाचक है।

नवीनप्राचीनपर्णगुणाः।

सद्यस्त्रोटितभक्षितंमुखरुजाजाड्यापहंदोषकृ-
द्दाहारोचकरक्तदायिमलकृद्विष्टम्भिवान्तिप्रदम्।
यद्भूयोजलपानपोषितरसंतच्चेच्चिरात्त्रोटितं
ताम्बूलीदलमुत्तमंचरुचिंकृद्वर्ण्यंत्रिदोषार्त्तिनुत्॥

अर्थ--तत्कालके तोडेहुए पानका भक्षण करना मुखरोग और जड़ दूर करे है, त्रिदोषकारक, दाहजनक, अरुचिकारक रक्तरोगको करनेवाला, मलकारक, विष्टम्भ और वमनदायक है, वही पान, बहुत बक जलसे सींचाहुआ श्रेष्ठ है, रुचिको उत्पन्न करनेवाला है, शरीरके सुन्दर करनेवाला है और त्रिदोषनाशक है।

कृष्णशुभ्रपर्णगुणाः।

कृष्णंपर्णंतिक्तमुष्णंकषायंधत्तेदाहंवक्त्रजाड्यंमलञ्च
शुभ्रंपर्णंश्लेष्मवातामयघ्नंपथ्यं रुच्यंदीपनंपाचनं च

अर्थ--काला पान--कडवा, गरम, कषेला, दाह,मुखकी जडता और मलको दूरकरनेवाला है । सफेद पान--कफ वात रोगनाशक, पथ्य, रुचिकारक, जठराग्निप्रदीपक और पाचक है ।

पर्णशिरादिगुणाः ।

शिरापर्णस्यशैथिल्यंकुर्य्यात्तस्यास्त्रहृद्रसः ।
शीर्णंत्वग्दोषदंतास्यरोगकृत्तुसितासितम् ॥

अर्थ-पानकी शिरा- (नस) शिथिलताकारक और उन शिराओंका रस रुधिरको हरनेवालाहै । गले और सूखे पान--त्वचाके रोगोंको, दन्तरोगोंको और मुखरोगोंको उत्पन्न करेहैं ।

पर्णमूलेभवेद्व्याधिःपर्णाग्रेपापसञ्चयः ।
चूर्णपर्णंहरेदायुःशिराबुद्धिविनाशिनी ॥
आयुरग्रेयशोमूलेमध्येलक्ष्मीर्व्यवस्थिता ।
तस्मादग्रञ्चमूलञ्चमध्यंपर्णस्यवर्ज्जयेत् ॥
चूर्णाधिकंहरतिगन्धमथादिपूगंपूगंतथाधिकदलं
च सुगन्धिकारि । ताम्बूलमुत्तमामिदंरसनाग्रभि-
न्नपर्णनिशास्वधिकखण्डितपर्णमाह्नि ॥ (वि० ति० भा०)

भावार्थ-पानकी जडके भक्षण करनेसे अनेक प्रकारकी व्याधि उत्पन्न होतीहै, पानका अग्रभाग भक्षण करनेसे पाप सञ्चय होताहै, पानका चूर्ण आयुको हरताहै, और पानकी शिरा (नस) बुद्धिको भ्रष्ट करतीहै, अधिक चूना सुगंधिको हरताहै, अधिक सुपारी रोगको उत्पन्न करती है और अधिक पान सुगन्धि करनेवालाहै । चोच टूटा हुआ पान रात्रिमें और अधिक टूटा पान दिनमें भक्षण करना उत्तम है ।

अस्य फलगुणाः ।

नागवल्लीफलंहृद्यंसुगन्धिकफवातजित् ॥ (आ. सं.)

अर्थ--नागरवेलका फल हृदयको हितकारी, सुगन्धि, कफ और वातविनाशक है ।

पर्णरहितपूगगुणाः ।

अनिधायमुखेपर्णंयःपूगंखादतेनरः ।

मतिभ्रंशोदरिद्रीस्यादन्तेनस्मरतेहरिम् ॥

अर्थ--जो मनुष्य विनापान सुपारी खातेहैं उनकी बुद्धि बिगडजाती है, दरिद्री होजातेहैं तथा अन्तमें हरिका स्मरण नहीं करते।

अन्यच्च ।

विनापर्णमुखेदत्त्वागुवाकंभक्षयेद्यदि ।
तावद्भवतिचाण्डालोयावद्गंगांनगच्छति ॥

अर्थ--जो मनुष्य विना पानक सुपारी खातेहैं, वे मनुष्य जबतक गंगाजीमें स्नान नहीं करते, तबतक चाण्डाल गिने जाते ह।

पर्णभक्षणनिषेधः ।

ननेत्ररोगेनचरक्तपित्तेक्षतेनवातेनविषेनशोषे।
मदात्ययेनापिचमोहमूर्च्छाश्वासेषुताम्बूलमुशन्तिवैद्याः

(सुषेणदे०

अर्थ--नेत्ररोग, रक्तपित्त, उरःक्षतरोग, वातरोग, विषरोग, शोष, मद्यपानजनितरोग, मोह, मूर्च्छारोग और श्वासरोगमें पानका भक्षण निषेध है।

अन्यच्च ।

ताम्बूलमहितम्प्रोक्तंशरीरेरूक्षदुर्बले ।
ज्वरास्यशोषपित्तास्रमदमूर्च्छाक्षिरोगिषु ॥

अर्थ--ताम्बूल--रूखे शरीर, दुर्बल, ज्वररोग, मुखशोष, रक्तपित्तरोग, मद, मूर्च्छा और नेत्ररोगवालेको अहितकारी कहाहै।

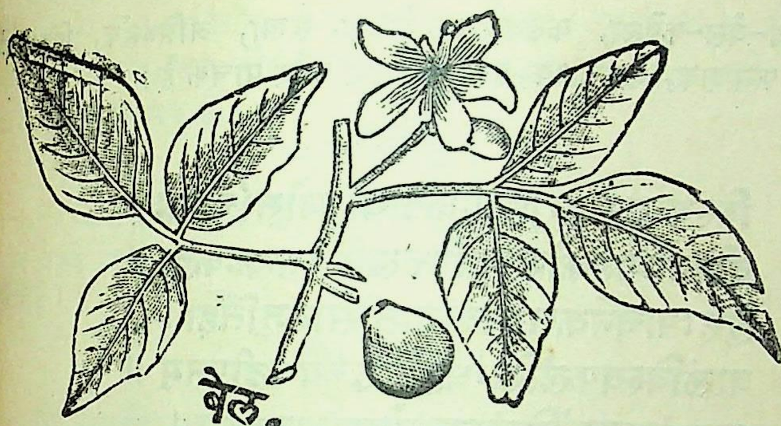
अन्यच्च ।

ताम्बूलंविधवास्त्रीणांयतीनांब्रह्मचारिणाम् ।
तपस्विनाञ्चविप्रेन्द्रगोमांससदृशंध्रुवम् ॥ (ब्रह्मवैवर्तपु०

अर्थ--पान--विधवा स्त्री, यती, ब्रह्मचारी और तपस्वीको गोमांसके समान है।

विवरण--पानकी वेल अत्यंत शोभायमान और मनोहर होतीहै। इसकी कईएक जातीहैं जैसे बंगला, मौहुवा, महाराजपुर, बिलौआ, कपूरी, ... इत्यादि। उपरोक्त मौहुवा आदि देशोंमें पान अधिकतासे होतेहैं। ... वेली कोटहीओंपर तथा अगस्तियाके वृक्षोंपर चढादेतेह।

बिल्वनामानि ।



बेल.

बिल्वोमहाकपित्थाख्यःश्रीफलोगोहरीतकी ।
पूतिवातोऽथमङ्गल्योमालूरस्त्रिशिखावपि ॥

अर्थ-बिल्व, महाकपित्थाख्य, श्रीफल, गोहरीतकी, पूतिवात, मंगल्य, मालूर, त्रिशिख, (शाण्डिल्य, शैलूष, मालुर, कपीतन, महाकपित्थ, अतिमंगल्य, महाफल, शल्य, हृद्यगन्ध, शलाटु, कर्कटाह्व, शैलपत्र, शिवेष्ट, पत्रश्रेष्ठ, त्रिपत्र, गन्धपत्र, लक्ष्मीफल, गन्धफल, दुरारुह, त्रिशाखपत्र, शिवद्रुम, सदाफल, सत्यफल, सुनीतिक, समीरसार, सत्यधर्म, अधरारुह, कण्टकाढ्य, पितानन, नीलमल्लिक, पीतफल, सोमहरीतकी)

संस्कृतभाषामें	बिल्व ।
हिन्दीभाषामें	बेल ।
बंगलाभाषामें	बेल, बिल्व ।
मराठी भाषामें	बेल. बेलफळ ।
गुजरातीभाषामें	बिलोबिलु ।
कर्णाटकीभाषामें	बेललु ।
तैलिंगीभाषामें	मारेडोपंदुबिल्व ।
तामिलीभाषामें	बिल्वपाझाम ।
अंग्रेजीभाषामें	बेगालंकिन्स् । Bengal kins
लैटिन्भाषामें	इगलमारमेलाझ । Aragle Marmelos

अस्य गुणाः ।

श्रीफलस्तुवरस्तिक्तोग्राहीरूक्षोग्निपित्तकृत् ।

वातश्लेष्महरोबल्योलघुरुष्णश्चपाचनः ॥ (भा. प्र.)

अर्थ-बेल-कषेला, कडवा, मलरोधक, रूखा, अग्निवर्द्धक, पित्तजनक, वातकफनाशक, बलकारक, हलका, गरम और पाचक है।

अन्यच्च ।

बिल्वस्तुमधुरोहृद्यःकषायोष्णोरुचिप्रदः ।
दीपनोग्राहकोरूक्षःपित्तलस्तिक्तकःकटुः ॥
गुरुःपाचनकर्त्ताचवातातीसारजूर्तिहा ।
बालंबिल्वफलंस्निग्धंगुरुरुच्यंचदीपनम् ॥
ग्राहकंपाचकंतिक्तंलघुचोष्णश्चतूवरम् ।
शूलामवातग्रहणीकफातीसारनाशनम् ॥
तरुणंतुफलंबैल्वंग्राहितूवरमम्लकम् ॥
स्निग्धंचकटुतीक्ष्णश्चउष्णंचलघुदीपनम् ।
पाचकंकफवाय्वोश्चनाशकंहृदयप्रियम् ॥
पक्वंबैल्वंदाहकरंमधुरंगुरुतूवरम् ।
विष्टम्भकारितिक्तोष्णंग्राहकंकटुदोषलम् ।
दुर्ज्जरंवातलंचाग्निमांद्यकृद्दोषिभिर्मतम् ।
बिल्वमूलंतुमधुरंत्रिदोषच्छर्दिशूलनुत ॥
लघुकृच्छ्रहरंवातकफपित्तस्यनाशकम् ।
पर्णानिग्राहकाणिस्युर्वातनाशकराणिच ॥ (नि. र.)

अर्थ-बेल-मधुर, हृदयको हितकारी, कषेला, गरम, रुचिकारक, दीपन, ग्राही, रूखा, पित्तकारक, कडवा, चरपरा, भारी, पाचक, तथा वातातिसार और ज्वरनाशक है। बेलका कच्चा फल स्निग्ध, भारी, रुचिकारक, जठराग्निको दीपन करनेवाला, मलरोधक, पाचक. कडवा, हलका, गरम, कषेला तथा शूल, आमवात, संग्रहणी, और कफातिसारका नाशक है। बेलका तरुणफल-ग्राही, कषेला, खट्टा, स्निग्ध, चरपरा, तीक्ष्ण, गरम, हलका, दीपन पाचक, हृदयको हितकारी, कफ और वातविनाशक है। बेलका पका फल-दाहजनक, मधुर, भारी, कषेला, विष्टम्भकारक, कडवा, गरम,

कटु, त्रिदोषकारक, दुर्जर, वातकारक और मंदाग्निको उत्पन्न करनेवाला है बेलकी जड-मधुर तथा त्रिदोष, वमन, शूल इनको नाश करनेवाली, हलकी तथा मूत्रकृच्छ्र, वायु, कफ और पित्तका नाश करनेवाली है। इसके पत्ते ग्राही और वातनाशक हैं ।

अन्येच पत्रगुणाः ।

तत्पत्रंकफवातामशूलघ्नंग्राहिरोचनम् ॥

अर्थ-बेलके पत्ते-कफ, वात, आम, और शूलनाशक हैं, ग्राही और रोचक हैं ।

अस्य पुष्पगुणाः ।

निहन्याद्बिल्वजंपुष्पमतिसारंतृषांवमिम् ॥

अर्थ-बेलके फूल-अतिसार, तृषा और वमननिवारक हैं ।

बिल्वमज्जाभवतैलगुणाः ।

बिल्वमज्जाभवंतैलमुष्णंवातहरंपरम् ॥

अर्थ-बेलका तेल-गरम और वातविनाशक है इसके अधिक गुण तैल वर्गमें देखो ।

बिल्वपेषिकागुणाः ।

कफवातामशूलघ्नीग्राहिणीबिल्वपेषिका ॥

अर्थ-बिल्वपेशिका-(बेलका सूखा गूदा) कफ, वात, आम और शूल-नाशक है तथा मलरोधक है । ॥ ६४ ॥

कांजिकस्थितबिल्वगुणाः ।

काञ्जिकेसंस्थितंबिल्वमग्निसंदीपनंपरम् ।
हृद्यंरुचिकरंप्रोक्तमामवातविनाशनम् ॥

अर्थ-काञ्जीमें रक्खा हुआ बेल-अग्निको दीपन करेहै, हृदयको हितकारी रुचिकारी है और आमवातनाशक है ।

पक्वबिल्वस्य दोषोक्तिः ।

फलेषुपरिपक्वेषुयेगुणाःसमुदाहृताः ।
बिल्वादन्यत्रविज्ञेयाबिल्वमामंगुणोत्तरम् ॥ (रा. व.)

अर्थ-सर्वप्रकारके पकेहुएही फल गुणवाले होते हैं; किन्तु बेल तो कच्चाही गुणवाला होता है और पक्का बेल, अनेक प्रकारके दोषोंको उत्पन्न करनेवाला है ।

विवरण-बेलका वृक्ष बडा होता है, शाखाओंमें कांटे होते हैं। पत्ते एक डंडीमें तीन (त्रिशूलाकार) होते हैं। फूल सुफेद और सुगंधित होते, फल गोल स्वादिष्ठ और कडे छिलकेसे ढका होताहै, फलमें बहुतसे बीज होतेहैं। बीजोंमें गोंद होता है। ग्रीष्म ऋतुके आरम्भमें इसके पुराने पत्ते गिरकर नवीन निकल आते हैं। और इसकी लकडी बहुत पवित्र होती चंदनकी समान मानी जाती है और मूलकी छाल दशमूलके काढेमें प्रधान औषधीहै, इसके पत्तोंको पीसकर आंखमें लगानेसे नेत्ररोग नाश होता है। जलमें पकाकर अरिष्ट पीनेसे ज्वरादिका नाश होता है। पत्तोंका अर्क बालकोंके लिये दस्तावर और कफका नाश करनेवाला है, बहुत औषधियोंके अनुपानमें इसका व्यवहार होता है। हिन्दुस्थानके प्रत्येक स्थानमें बेलका वृक्ष पाया जाता है। और इसमें एक बडा भारी गुण है कि जो इन पत्तोंको शिवके ऊपर चढाता है, उससे शिव अत्यन्त प्रसन्न होते हैं। इसके अधिक गुण आगे फलवर्गमें देखो।

गम्भारीनामानि।

गम्भारीसर्वतोभद्राकाश्मरीमधुपर्णिका।
श्रीपर्णीभद्रपर्णीचभद्राचगोपभद्रिका॥

अर्थ-गम्भारी, सर्वतोभद्रा, काश्मरी, मधुपर्णिका, श्रीपर्णी, भद्रपर्णी, भद्रा, गोपभद्रिका (काश्मर्य, काश्मरी, काश्वरी, कम्भारिका, सदाभद्रा, कृष्णफला, कट्फला, कृष्णवृन्तिका, हीरा, सर्वतोभद्रिका, मधुपर्णी, सुभद्रा, कम्भारी, गोपभद्रा, क्षीरिणी, विदारिणी, महाभद्रा, स्वरुभद्रा, कृष्णा, अश्वेता, रोहिणी, गृष्टि, स्थूलत्वचा, मधुमती, मोदिनी, महाकुमुदा, सुदृढत्वचा, काश्मीरी, पीतरोहिणी, मधुरसा, मुदिका, पीतफला और वातहा)

संस्कृतभाषामें	कम्भारी, गंभारी।
हिन्दीभाषामें	कुम्भेर, खम्भारी।
बंगलामें	गाम्भारी, गाभार।
मराठीभाषामें	शिवणगम्भारी।
गुजरातीभाषामें	शवन्य।
लैटिन्भाषामें	मीलाइनाआर्बोरिया। Gmclina arbo[rea]
	ट्रिवियाउम्बिलीफोरा। Tiebia unbillc[ifera]

कर्नाटकीभाषामें सीवनी।
तैलिंगीभाषामें साल्लागुंबुटीचेट्टु।

अस्यः गुणाः।

काश्मीरीतुवरातिक्तावीर्योष्णामधुरागुरुः।
दीपनीपाचनीमेध्याभेदिनीभ्रमशोषजित्॥
दोषतृष्णामशूलार्शोविषदाहज्वरापहा।

अर्थ-कुम्भेर-कषेली, कडवी, उष्णवीर्य, मधुर, भारी, अग्निको दीपन, करनेवाली, पाचक, मेधाजनक, दस्तलानेवाली तथा भ्रम, शोष, त्रिदोष, तृषा, आमशूल, बवासीर, विष, दाह और ज्वरको दूर करनेवाली है।

अस्याः फलगुणाः।

तत्फलंबृंहणंवृष्यंगुरुकेश्यंरसायनम्।
वातपित्ततृषारक्तक्षयमूत्रविबन्धहृत्॥
स्वादुपाकेहिमंस्निग्धंतुवराम्लंविशुद्धिकृत्।
हन्याद्दाहतृषावातरक्तपित्तक्षतक्षयान्॥ (भा. प्र.)

अर्थ-कुम्भेरका फल-पुष्टिकारक, वीर्यवर्द्धक, भारी, केशोंको हितकारी रसायन तथा वात, पित्त, तृष्णा, रक्तक्षय, मूत्र और विबन्धनाशक है, पचनेमें स्वादिष्ठ, शीतल, स्निग्ध, कषेला, खट्टा, शुद्धिकारक और दाह, तृषा, वात, रक्तपित्त, क्षत और क्षयरोगको नष्ट करेहै।

अन्यच्च।

गाम्भारिकाफलंग्राहिसतिक्तमधुरंगुरु।
केश्यंरसायनंमेध्यंशीतलंदाहपित्तजित्॥ (रा० व०)

अर्थ-कुम्भेरका फल-मलरोधक, कडवा, मधुर, भारी, केशोंको हितकारी, रसायन, मेधाजनक, शीतल, दाह और पित्तनाशक है।

गम्भारीगुणाः।

श्रीपर्णीमारुतश्लेष्मशोफमेहकृमीञ्जयेत्।

अर्थ-कुम्भेर--वात, कफ, शोफ, प्रमेह और पित्तनाशक है।

अस्या पुष्पगुणाः।

तत्पुष्पंमधुरंशीतंतिक्तंसंग्राहिवातलम्॥

कषायंमधुरंपाकेपित्तास्रास्रृग्गदापहम् ॥ (शो. नि.)

अर्थ--कुम्भेरका फूल--मधुर, शीतल, कडवा, ग्राही, वातकारक, कषैला, पचनेमें भी मधुर तथा रक्तपित्त और रक्तरोगको दूर करे है।

अस्या मूलगुणाः ।

गाम्भारीमूलमत्युष्णमहितंमानुषेषुतत् ॥ (रा. व.)

अर्थ--कुम्भेरकी जड--अत्यन्त गरम और मनुष्योंका अहित करनेवाली है।

अन्यच्च ।

काश्मरीकटुकातिक्तास्वाद्वयुष्णातुवरागुरुः ।
मधुरादीपनीमेध्यापाचनीभेदिकामता ॥
हृद्यातृषामशूलघ्नीकफशोफत्रिदोषहा ।
विषदाहज्वरारक्तदोषार्शोभ्रमनाशिनी ॥
शोषनाशकरीप्रोक्ताफलंवृष्यंगुरुस्मृतम् ।
धातुवृद्धिकरंकेश्यंस्वादुशीतंरसायनम् ॥
स्निग्धंबुद्धिप्रदंचाम्लंतुवरंमूत्रलंगुरु ।
मूत्रकृच्छ्ररक्तपित्तंरक्तदोषामवातकम् ॥
तृषांदाहंक्षयंवातंरक्तपित्तंक्षतक्षयम् ।
प्रदरंनाशयत्येवफलमज्ञातुशीतला ॥
मधुराग्राहिणीतिक्तावातलातुवरामता ।
बल्यावृष्यारक्तदोषकफपित्तहरामता ॥
प्रदरंवाशयत्येवमृषिभिःपरिकीर्तिता । (नि. र.)

अर्थ-कुम्भेर--चरपरी, कडवी, स्वादिष्ठ, गरम, कषेली, भारी, मधुर, दीपन, मेधाजनक, पाचक, भेदक, हृदयको हितकरी, तथा तृषा, आमशूल, कफ, सूजन, त्रिदोष, विष, दाह, ज्वर, रक्तविकार, बवासीर, भ्रम और शोषको दूर करनेवालीहै। इसका फल वीर्यजनक, भारी, धातुवर्धक, केशोंको हितकारी, स्वादिष्ठ, शीतल, रसायन, स्निग्ध, बुद्धिप्रद, अम्ल, कषेला, मूत्रजनक, गुरु तथा मूत्रकृच्छ्र रक्तपित्त, रक्तदोष, आमवात, तृषा,

क्षय, वात, रक्तपित्त, क्षतक्षय और प्रदररोगका नाश करनेवाला है। कुम्भेरके फलकी मज्जा शीतल, मधुर, ग्राही, कडवी, वातकारक, कषेली, बलकारक, वीर्यवर्द्धक तथा रक्तविकार, कफ, पित्त और प्रदररोगको दूर करनेवाली है।

विवरण--कुम्भेरका वृक्ष बड़ा होता है, पत्ते समुद्रशोष और पीपलके पत्तोंसे कुछ, कवडे २ होते हैं, फूल पीले रंगके और फलभी पीले होते हैं। छाल सुफेद और इसमें दूध निकलता है।

पाटलानामानि।

पाटलाकर्बुरामोघाफलेरुहाबुम्वासिनी।
कृष्णवृन्ताकालवृन्ताकुम्भीतोयाधिवासिनी॥

अर्थ--पाटला, कर्बुरा, अमोघा, फलेरुहा, अम्बुवासिनी, कृष्णवृन्ता, कालवृन्ता, कुम्भी, तोया, तोयाधिवासिनी (पाटली, काचस्थाली, कुबेराक्षी, तोयपुष्पी, ताम्रपुष्पी, कुम्भीका, सुपुष्पिका, वसन्तदूती स्थाली, स्थिरगन्धा, अम्बुवासी, कालवृन्ती, कामदूती, अलिप्रिया, मधुदूती, अलिवल्लभा, वसन्तदूती, कोकिला)

श्वेतपाटला--काष्ठपाटलानामानि।

द्वितीयापाटलाश्वेतानिर्दिष्टाकाष्ठपाटला॥

अर्थ--श्वेतपाटला, काष्ठपाटला (श्वेतकुम्भी, श्वेतकुबेराक्षी, श्वेतफलेरुहा, काष्ठकुबेराक्षी, काष्ठफलेरुहा, काष्ठपाटलि, मुष्कक, मोक्षक, घण्टापाटलि)

संस्कृतभाषामें	पाटला, श्वेतपाटला।
हिन्दीभाषामें	पाडरि, पाढल, सफेदपाडर, कठपाडर।
बंगलाभाषामें	पारुल, घण्टापारुल।
मराठीभाषामें	रक्तपाडल।
गुजरातीभाषामें	रातफूलना पाडल, श्वेतपाडर, कांकच।
कर्णाटकीभाषामें	हादरी, विलियहादरी।
तैलिंगीभाषामें	कलगोरु, कलिगोट्टुचेट्टु।
तामिलीभाषामें	पद्रि।
उत्०	पाटुड़ि।
लैटिनभाषामें	विगनोनिया सुवियोलेन्स् Vignonia suaviolens स्टिरियोस्परंगंकेलोनोइडिस् Seriospemrum Chelonoides

पाटलागुणाः ।

पाटलातुरसेतिक्ताकटूष्णाकफवातजित् ।
शोफाध्मानवमिश्वासशमनीसन्निपातनुत् ॥ (रा. नि.)

अर्थ--पाढल--तिक्तरसान्वित, कटुरसयुक्त, उष्ण, कफवातनाशक, सूजन, अफारा, वमन, श्वास और सन्निपातनिवारक है ।

अन्यच्च ।

पाटलारुचिशोथास्रश्वासतृट्छर्दिनाशिनी ।
नात्युष्णंतुवरंस्वादुतत्पुष्पंकफवातनुत् ॥
पित्तातिसारदाहघ्नंफलंहिक्कास्रपित्तनुत् । (ध० नि०)

अर्थ -पाढल--अरुचि, सुजन, रुधिरविकार, श्वास, तृषा और [वमन] निवारक है । किंचित् उष्ण, कषाय,स्वादिष्ठ,इसका फूल कफ, वात, पित्ता[ति]सार और दाहनाशक, है इसका फल हिचकी और रक्तपित्तको दूर करै[है]

अन्यच्च ।

पाटलाकफपित्तास्रच्छर्दितृण्मारुतापहा ।
पुष्पंकषायमधुरंशीतंपित्तकफास्रजित् ॥ (शो. नि.)

अर्थ--पाडर--कफ, रक्तपित्त, वमन, तृषा और वातको हरनेवाली इसका फूल--कषेला,मधुर,शीतल तथा पित्त,कफ और रुधिरविकारको ह[रै]

अपिच ।

रक्तपाटलिकातिक्ताकटूवीचोष्णाकफापहा ।
सन्निपातश्वासवामशोफाध्मानानिनाशयेत् ॥
पुष्पाणिपाटलायास्तुस्वादूनितुवराणिच ।
हृद्यानिशीतवीर्य्याणिरक्तदोषहराणिच ॥
दाहंकफंपित्तरोगंपित्तातीसारहानिच ।
फलानिपाटलायास्तुशीतलानिगुरूणिच ॥
तुवराणिचतिक्तानिमधुराणिबुधाजगुः ।
मूत्रकृच्छ्ररक्तपित्तंहिक्कावातहराणिच ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ--पाड़ल-कडवी, चरपरी, गरम, कफनाशक तथा सन्निपात

(त्रिदोष) वमन, सूजन और अफारेको दूर करे है. पाडलके फूल--स्वादिष्ठ कषेले, हृदयको हितकारी, शीतवीर्य्य तथा रक्तदोष, दाह, कफ, पित्तरोग और पित्तातिसारको हरनेवाले हैं । पाडलके फल-शीतल, भारी, कषेले, कडवे, मधुर तथा मूत्रकृच्छ्र, रक्तपित्त, हिचकी और वातके नाश करनेवाले हैं ।

श्वेतपाटलागुणाः ।

सितपाटलिकातिक्तागुर्व्युष्णावातदोषजित् ।
वमिहिक्काकफघ्नीचश्रमशोषापहारिका ॥ (ध. नि.)

अर्थ--सफेदपाडर--कडवी, भारी, वातनाशक तथा वमन, हिचकी, कफ श्रम और शोषको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

श्वेतातुपाटलाचोष्णातिक्तागुर्वीसुगन्धिका ।
रक्तदोषारुचिशोफश्वासतृड्वान्तिनाशिनी ॥
हिक्कांकफंचवातञ्चनाशयेदितिकीर्त्तितम् । (नि. र.)

अर्थ--सफेदपाडर--गरम, कडवी, भारी, सुगन्धि तथा रक्तविकार, अरुचि, सूजन, श्वास, तृषा, वमन, हिचकी, कफ और वातका नाश करे है ।

भूमिपाटलागुणाः ।

भूपाटलाकटूष्णाचबल्यावीर्य्यविवर्द्धिनी ।

अर्थ-भुईपाडर--चरपरी, गरम, बलजनक, और वीर्यवर्द्धक है ।

क्षुद्रपाटलागुणाः ।

क्षुद्रातुपाटलाश्वेतास्निग्धाचव्रणशोधिनी ।
कफमेदःकुष्ठविषमण्डलानिविनाशयेत् ॥

अर्थ-क्षुद्रपाडर--सफेद, स्निग्ध, व्रणशोधक तथा कफ, मेद, कुष्ठ, विष और मण्डलकुष्ठको नष्ट करे है ।

वल्लीपाटलागुणाः ।

वल्लीपाटलिकाचोष्णावातारोचकपित्तहा ।
रक्तदोषंचशोफंचनाशयेदितिकीर्तितम् ॥

अर्थ--वल्लीपाडर--गरम, वात, अरोचक, पित्त, रक्तविकार और सूजनको दूर करेहै ।

(प्र०)--पाडरके पत्तोंका रस निकालकर उसमें छः मासे सोंठ और तोले खांड मिलाकर देनेसे अम्लपित्त दूर होताहै ।

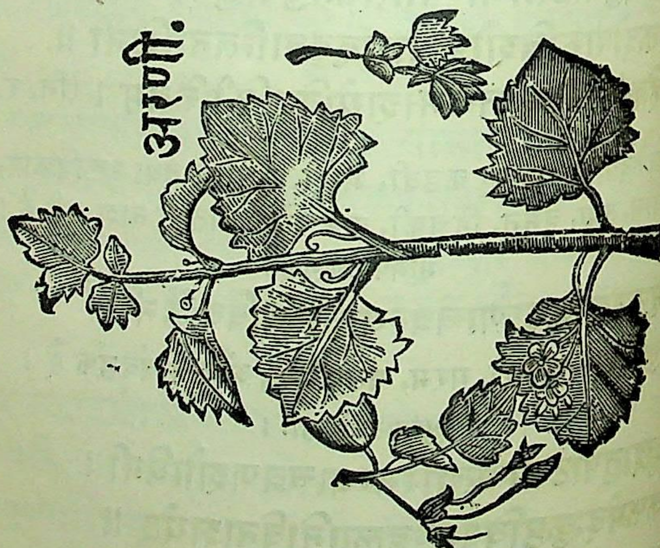
विवरण । पाडरका फूल लाल होताहै और दूसरी पाडरका फूल सफेद होताहै । पत्ते वेलके समान होतेहैं ।

अग्निमन्थनामानि ।

अग्निमन्थोहविर्मन्थःकर्णिकागिरिकर्णिका ।
जयाजयन्तीतर्कारीनादेयीवैजयन्तिका ॥

अर्थ--अग्निमन्थ, हविर्मन्थ, कर्णिका, गिरिकर्णिका, जया, जयन्ती, तर्कारी, नादेयी और वैजयन्तिका (श्रीपर्ण, तेजोमन्थ, ज्योतिष्क, पावक, आग्नि, वह्निमन्थ, मथन, जय, पावकारणि, अग्निमथन, तर्कारी, अरणीकेतु, श्रीपर्णी, विजया, अनन्ता, नदीजा, तनुत्वक्, पित्तमाता, वह्निमूल, अग्निबीजक)

क्षुद्राग्निमन्थनामानि ।



क्षुद्राग्निमन्थोविजयानादेयीचाग्निमंथिनी ।
जयाचगन्धपत्राचगन्धपुष्पाकृशानुगा ॥

अर्थ--क्षुद्राग्निमन्थ, विजया, नादेयी, अग्निमन्थिनी, जया, गन्धपत्रा, गन्धपुष्पा, कृशानुगा (तपन, गणिकारिका, अरणि, लघुमन्थ, तेजोवृक्ष, तनुत्वचा ।

संस्कृतभाषामें	अग्निमन्थ, अरणी, गणिकारिका, क्षुद्राग्निमन्थ
हिन्दीभाषामें	अरणी, अगेथु, गणिवारी, छोटअरणी ।
वंगभाषामें	गणिर, आगगन्त, छोटीगणिरी ।

मराठीभाषामें	थोरऐरण, लघुऐरण, टहांकळी, नरवेल्य ।
गुजरातीभाषामें	अरणी, ऐरण ।
कर्णाटकीभाषामें	नरुवल ।
तैलिङ्गीभाषामें	नेलिचेट्ट ।
उत्कलिभाषामें	अगिवथ ।
लैटिन्भाषामें	क्लोरेड्रूनफ्लोमोईडिस् । ClorodrudronPhlomodes

अग्निमन्थगुणाः ।

तर्कारीकटुकातिक्ताथोष्णानिलपाण्डुजित् ।
शोथश्लेष्माग्निमांद्यार्शोविड्बन्धामविनाशिनी ॥ (ध. नि.)

अर्थ-अरणी--कटु, तिक्त, उष्ण तथा वात, पाण्डुरोग, शोथ, कफ, अग्निमांद्य, अर्श, मलबद्धता और आम इत्यादि अनेक प्रकारके रोगोंको दूर करनेवाली है ।

अन्यच्च ।

अग्निमन्थोगुरुस्तिक्तोवातशोफामजित्सरः ॥ (शो॰नि॰)

अर्थ-अरणी--भारी, कडवी तथा वायु, सूजन और आमको जीतेहैं तथा सारकहै ।

अपिच ।

अग्निमन्थोबृहत्प्रोक्तःकटुश्चोष्णोमधुःस्मृतः ।
तिक्तस्तुवरश्चाग्निदीपकोवातनाशनः ॥
प्रतिश्यायंकफंशोथमर्शश्चैवामवातकम् ॥
मलरोधंचाग्निमांद्यंपाण्डुरोगंविषंतथा ॥
आमंचमेदोरोगंचनाशयेदितिकीर्तितम् । (नि. र.)

अर्थ-अरणी-कटु, उष्ण, मधुर, तिक्त, कषाय, अग्निप्रदीपक, वातनाशक तथा प्रतिश्याय (जुकाम) कफ, सूजन, बवासीर, आमवात, मलरोध, मंदाग्नि, पाण्डुरोग, विष, आम और मेदोरोगको नाश करनेवाली है ।

क्षुद्राग्निमन्थगुणाः ।

लघ्वग्निमन्थस्यगुणाःप्रोक्तावृद्धाग्निमन्थवत् ।
विशेषाल्लेपनेचोपनाहेशोफेचकीर्तिताः ॥ (नि. र.)

अर्थ--छोटी अरणीके गुण अरणीके समानहैं, किन्तु विशेष करके इसक लेप उपनाहके विषय हितकारक है और यह सूजनको दूर करनेवाली है।

तेजोमन्थगुणाः ।

तेजोमंथगुणाःप्रोक्ताश्चाग्निमंथसमाबुधैः ।
विशेषाद्वातशोफेचप्रोक्ताःपूर्वैश्चसूरिभिः ॥ (नि. र.)

अर्थ--तेजोमन्थ--(अरणीका भेद) इसके गुण अरणीके समानहैं, परन्तु विशेष करके यह वातशोफका नाश करेहै ।

विवरण--इसका वृक्ष होताहै, पत्ते गोल और सूक्ष्म करकरयुक्त होतेहैं फूल सफेद होताहै, फल छोटे करोंदेके समान होतेहैं ।

श्योनाकनामानि ।

श्योनाकःशुकनासश्चकट्वङ्गोथकटम्भरः ।
मयूरजंघोरलुकःप्रियजीवीकुटन्नटः ॥

अर्थ--श्योनाक--शुकनास, कट्वङ्ग, कटम्भर, मयूरजंघ, अरलुक, प्रियजीवी, कुटन्नट (मण्डूकपर्ण, पत्रोर्ण, नट, कटाङ्ग, टुण्टक, ऋक्ष, दीर्घवृन्त, शोणक, अरल, स्योनाक, विषनुत्, अम्बान्तशात्रव, पूतिवृक्ष, भण्टुक, मण्डूक, भूतपुष्प, शोण, अरटु, दीर्घवृन्तक, वटु, ध्वान्तशात्रव, स्वर्णवल्कल, पृथुशिम्ब, शल्लक, शोषण, प्रियजीव, कुर्कट, भल्लूक, कन्दर्प, पाडल, भूताटक, पारिपादप)

श्योनाकभेदनामानि ।

टुण्टुकोदीर्घवृन्तश्चटिण्टुकोकीरनाशनः ।
पूतिवृक्षोपूतनागोभूतिपुष्पोमुनिद्रुमः ॥

अर्थ--टुण्टुक, दीर्घवृन्त, टिण्टुक, कीरनाशन, पूतिवृक्ष, पूतिनाग, भूतिपुष्प और मुनिद्रुम (श्योनाक, पृथुशिम्ब, भल्लूक, टेण्टुक, पीतवृक्ष, भूतवृक्ष, निःसार, फलवृन्ताक, पूतिपत्र, वसन्तक, मण्डूकपर्ण, पीताङ्ग, जम्बुक, पीतपादप, वातारि, पीतक, शोण, कुनट, विरोचन, भ्रमरेष्ट, जंघनेत्र)

संस्कृतभाषामें	श्योनाक, अरलु, टुण्टुक ।
हिन्दीभाषामें	सोनापाठा, अरलु, टेंटु ।
बंगलाभाषामें	सोना, सोनालु ।
मराठीभाषामें	टेट्टु ।
गुजरातीभाषामें	अरडूशो, मरमस्य ।

कर्णाटकीभाषामें	शोणा, शोडिलमर ।
तैलिंगीभाषामें	पेद्दामानु ।
औत्कलीमें	फणफणा ।
पञ्जाबीमें	मुलिन ।
नेपालीमें	करुमकन्द ।
तामिलीमें	पन ।
लैटिन्भाषामें	ओरोक्सिलं ईंडिकम् । (Orocylnm indicum

श्योनाकगुणाः ।

श्योनाकस्तुवरस्तिक्तःकटुश्चाग्निप्रदीपनः ।
ग्राहकःशीतलोवृष्योबलदोवातपित्तहा ॥
सन्निपातज्वरकफत्रिदोषारुचिनाशनः ।
आमवातकृमिवमीकासातीसारनाशनः ॥
तृष्णांकुष्ठंनाशयतीत्येवमाहुर्मनीषिणः ।

अर्थ--शोनापाठा--कषेला, कडवा, चरपरा, जठराग्निको दीपन करनेवाला, मलरोधक, शीतल, वीर्य्यवर्द्धक, बलदायक तथा वात पित्त, सन्निपातज्वर, कफ, त्रिदोष, अरुचि, आमवात, कृमि, वमन, खांसी, अतिसार, तृषा और कुष्ठको नष्ट करे है ।

अन्यच्च ।

टिण्टुकोवातजिद्रूक्षःशोफहाग्निबलप्रदः ।
तुवरःशीतलस्तिक्तोवस्तिरोगहरःपरः ॥
पित्तश्लेष्मामवातारिःश्वासकासारुचीर्जयेत् ।

अर्थ-टेंटु--वातविनाशक,रूक्ष,शोफनिवारक,जठराग्निवर्द्धक, बलदायक, कषाय, शीतल, तिक्त, वस्तिरोगनाशक, पित्त, कफ, वातनाशक, श्वास, कास और अरुचिनिवारक है ।

अस्य कोमलफलगुणाः ।

कोमलंतुफलंचास्यतुवरंमधुरंलघु ।
हृद्यंरुच्यंपाचकञ्चकण्ठयञ्चाग्निप्रदीपकम् ॥

उष्णश्चकटुकंक्षारंगुल्मवातकफार्शनुत् ।
अरुचिंचकृमींश्चैवनाशयेदितिकीर्त्तितम् ॥

अर्थ--इसका कच्चा फल कषेला, मधुर, हलका, हृदयको हितक रुचिकारी, पाचक, कण्ठको हितकारक, अग्निप्रदीपक, गरम, कटु, तथा गुल्म, वात, कफ, बवासीर, अरुचि और कृमिरोगनाशक है।

अस्य तरुणफलगुणाः ।

दीर्घवृन्तफलंचामंगुरुवातप्रकोपनम् ॥ (नि. र.)

अर्थ--इसका तरुण फल भारी और वातको कुपित करनेवाला है।

अन्यच्च ।

पुटपाकविधानेनरसोनिष्कास्यभक्षितः ।
चिरंतनमतीसारंनाशयेदितिकीर्त्तितम् ॥ (रा. नि.)

अर्थ--शोनाकका रस पुटपाककी विधिसे निकालकर उस रसको पी बहुत दिनोंका पुराना अतिसार दूर होता है ।

द्विविधश्योनाकगुणाः ।

श्योनाकयुगलंतिक्तंशीतलञ्चत्रिदोषजित् ।
पित्तश्लेष्मातिसारघ्नंसन्निपातज्वरापहम् ॥ (रा. नि.)

अर्थ--दोनों प्रकारके श्योनाक--कडवे, शीतल, त्रिदोषनाशक तथा पि कफ, अतिसार, सन्निपात और ज्वरको हरनेवाले हैं ।

विवरण--शोनाकका वृक्ष बहुत ऊंचा होता है, फली लम्बी लम्बी त रकी समान दो दो फुटकी होती हैं, फलीके भीतर रुई और दाने निक एक दूसरे प्रकारका श्योनाक होता है । उसका फूल लाली लिये समुद्रशो समान होता है ।

शालिपर्णीनामानि ।

शालिपर्णीस्थिरासौम्यात्रिपर्णीपीवरीगुहा ।
विदारिगन्धादीर्घाङ्घ्रिर्दीर्घपत्रांशुमत्यपि ॥

अर्थ-शालिपर्णी, स्थिरा, सौम्या, त्रिपर्णी, पीवरी, गुहा, विदारिग दीर्घांघ्रि, दीर्घपत्रा, अंशुमती (सुदला, सुपत्री, कुमुदा, ध्रुवा, सुपर्णि दीर्घमूला, दीघपत्रिका, वातघ्नी, पीतिनी, तन्वी, सुधा, सर्वानुकारि शोफघ्नी, सुभगा, देवी, शोथघ्नी, निश्चला, व्रीहिपर्णिकाः, सुमूला,

शुभपत्रिका, सुपर्णी, शालिपत्री, शालिदला, विदारी, सालपर्णी, एकमूला, अस्तमती, शालानी, शालिका, तन्वी और कीटविनाशिनी)

संस्कृतभाषामें	शालिपर्णी ।
हिन्दीभाषामें	सरिवन ।
वंगभाषामें	शालपान, शालपानी ।
मराठीभाषामें	सालवण ।
गुजरातीभाषामें	शालिपर्णी ।
कर्नाटकीभाषामें	मुरुलुवोने ।
तैलिङ्गीभाषामें	शीयाकुपना, सप्पाकुपोवा ।
औत्कलीभाषामें	शारपाणि ।
लैटिन्भाषामें	डेस्मोडियंगेंजेटिकम् Desmodium Gangetcum डेस्मोडियम् ट्रायल्फोरम् ।

अस्याः गुणाः ।

शालिपर्णीसारच्छर्दिज्वराश्वसातिसारजित् ।
शोषदोषत्रयहरीबृंहण्युक्तारसायनी ।
तिक्ताविषहरीस्वाद्वीक्षतकासकृमिप्रणुत् ।

अर्थ-सरिवन-विष, वमन, ज्वर, श्वास, अतिसार, शोष और त्रिदोष-नाशकहै तथा पुष्टिजनक, रसायन, कडवी, विषनाशक, स्वादिष्ठ, क्षत, कास और कृमिरोगको हरनेवाली है ।

अन्यच्च ।

शालिपर्णीरसेतिक्तागुर्व्युष्णाधातुवर्धिका ।
रसायनीस्वादुवृष्याविषमज्वरवातहा ॥
मेहार्शःशोथसन्तापज्वरश्वासविषकृमीन् ।
त्रिदोषशोषच्छर्दिघ्नीक्षतकासातिसारहा ॥ (नि. र.)

अर्थ-सरिवन-तिक्तरसान्वित, भारी, गरम, रसायन, धातुवर्द्धक, स्वादिष्ठ, वीर्यजनक तथा विषमज्वर, वात, प्रमेह, बवासीर, सूजन, सन्ताप-ज्वर, श्वास, विष, कृमि, त्रिदोष, शोष, वमन, क्षत, खांसी और अतिसार-को दूर करेहै ।

विवरण-शालिपर्णीका क्षुप होता है, एक एक दंडीमें तीन २ पत्ते होते और उसमें बहुत छोटीफलियें होती हैं।

पृश्निपर्णीनामानि।



पृश्निपर्णीपृथक्पर्णीतन्वीक्रोष्टुकपुच्छिका।
त्रिपर्णीपूर्णपर्णीचकलसीसिंहलांगुली।

अर्थ-पृश्निपर्णी, पृथक्पर्णी, तन्वी, क्रोष्टुकपुच्छिका, त्रिपर्णी, पूर्णपर्णी, कलसी और सिंहलांगुली (चित्रपर्णी, अंघ्रिवल्लिका, क्रोष्टुविन्ना, सिंहपुच्छी, कलशी, धावनी, गुहा, पिष्टपर्णी, लाङ्गली, क्रोष्टुपुच्छिका, कलशी, को मेखला, दीर्घा, शृगालवृन्ता, सिंहपुच्छिका, दीर्घपत्रा, अतिगुहा, चित्रपर्णिका, कलसि, क्रोष्टुपुच्छी, कदला, कंकशत्रु, चक्रकुल्या, शीर्णमाला, महागुहा, शृगालविन्ना, धमनी, मेखला, लांगुलिका, दीर्घपर्णी, सिंहपुष्पी, पृष्टिपर्णी, अंघ्रिपर्णी, धावनी, विष्णुपर्णी)

संस्कृतभाषामें	पृश्निपर्णी, पृष्टिपर्णी।
हिन्दीभाषामें	पिठवन, पिठौनी, डावडा, दौला, पृश्निपर्णी
वंगभाषामें	चाकुले, चाकुलिया।
मराठीभाषामें	पीठवण।
गुजरातीभाषामें	पृष्टिपर्णी।
कर्नाटकीभाषामें	तोरेमोड, नरियलवोने।
तैलिंगीभाषामें	कोलाकुपन्न।
औत्कलीमें	क्रंष्टपर्णी।
लैटिन्भाषामें	उरेरिया लेगोपोईडिस्। उरेरियापिक्टा। Uraria lagopoides Uraria picta

पृश्निपर्णीगुणाः ।

पृश्निपर्णीत्रिदोषघ्नीवृष्योष्णामधुरासरा ।
हन्तिदाहज्वरश्वासरक्तातीसारतृड्वमीन् ॥ (भा. प्र.)

अर्थ-पिठवन--त्रिदोषनाशक, वीर्यजनक, गरम, मधुर, सारक तथा दाह, ज्वर, श्वास, रक्तातिसार, तृषा और वमननिवारक है ।

अन्यच्च ।

पृष्टिपर्णीकटूष्णाचतिक्तातीसारकासनुत् ।
वातरक्तज्वरोन्मादव्रणदाहविनाशिनी ॥ (ग. नि.)

अर्थ-पिठवन-कटु, उष्ण, तिक्त तथा अतिसार, खांसी, वातरक्त, ज्वर, उन्माद, व्रण और दाहनाशक है ।

शालपर्णीपृश्निपर्ण्योर्गुणाः ।

शालपर्णीपृश्निपर्णीग्राहिणीकफवातजित् ॥ (रा. व.)

अर्थ-शालपर्णी और पृश्निपर्णी, ग्राही और कफपित्तनाशक हैं ।

विवरण । पिठवन पश्चिम और वंगदेशमें अधिकतासे उत्पन्न होती है, दक्षिण देशमें दिखाई नहीं देती । पत्ते गोल वेलदार होते हैं, फूल गोल स-फेद कुछ नीले जटायुक्त होतेहैं, । मात्रा तीन आनेभरि ।

व्यवहार-जड । परन्तु अल्पमूल्य होनेसे सर्वदेशान्तरोंमें इसके वेलकाही व्यवहार होताहै ।

बृहतीनामानि ।

बृहतीमहतीसिंहीप्रसहाहिंगुलीकुली ॥
अक्रान्ताक्षुद्रवार्ताकीरक्तापाकीलतातथा ।

अर्थ-बृहती महती, सिंही, प्रसहा, हिंगुली, कुली, अक्रान्ता, क्षुद्रवार्त्ताकी, रक्तपाकी, लता (बृहतिका, क्रान्ता, वार्त्ताकी, सिंहिका, राष्ट्रिका, स्थूलकण्ठा, बृहत्कण्टा, भण्टाकी, महोटिका, बहुपत्री, कण्ठतनु, कण्ठालु, कटुफला, डोवडी, वनवृन्ताकी, बृहतिका, पारावेदी)

संस्कृतभाषामें	बृहती, वार्त्ताकी ।
हिन्दीभाषामें	कटाई, वरहंटा ।
बंगभाषामें	व्याकुड, तित्‌वेगुन ।
मराठीभाषामें	थोरडोरली ।

गुजरातीभाषामें	उभीभोरिंगणी ।
कर्णाटकीभाषामें	हेग्गुळ
तैलिंगीभाषामें	पेद्दामुलंगा, कुकमाची
तामिलीभाषामें	चेरुचुण्ट ।
लैटिन्भाषामें	सोलेनमजेकीआई । Solanum iepuiuii
	सोलेनमूइंडिकम् । Solanum Indicum
फारसीभाषामें	उस्तरगार, वादंजान्जंगली ।
अरबीभाषामें	वालुंजान्जंगली ।

बृहतीगुणाः ।

बृहतीग्राहिणीहृद्यापाचनीकफवातहृत् ।
कटुतिक्तास्यवैरस्यमलारोचकनाशिनी ॥
उष्णाकुष्ठज्वरश्वासशूलकासाग्निमांद्यजित् । (भा.प्र.)

अर्थ--खटाई-मलरोधक, हृदयको हितकारी, पाचक, कफवातनाशक, [illegible] तिक्त तथा मुखकी विरसता, मल और अरुचिनाशक है, गरम है और [illegible] ज्वर, श्वास, शूल, खांसी और मंदाग्निको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

बृहतीकटुतिक्तोष्णावातजिज्ज्वरहारिणी ।
अरोचकामकासघ्नीश्वासहृद्रोगनाशिनी ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ--कटाई-कटु, तिक्त, गरम, तथा वात, ज्वर, अरुचि, आम, [illegible] श्वास और हृदयरोगका नाश करनेवाली है ।

अपिच ।

बृहतीकटुकाचोष्णातिक्ताहृद्याचपाचिका ।
ग्राहिण्यग्नेर्दीप्तिकरीकफवातज्वरापहा ॥
कुष्ठंचारोचकंछर्दिंश्वासंकासंकृमींस्तथा ।
मुखवैरस्यहृल्लासंकण्डूशूलामदोषहा ॥
हृद्रोगंचाग्निमांद्यंचनाशयेदितिकीर्तिता ।

अर्थ--कटाई--कटु, उष्ण, तिक्त, हृद्य, पाचक, मलरोधक, अग्नि[illegible] [illegible]क तथा कफ, वात, ज्वर, कुष्ठ, अरोचक, वमन, श्वास, कास, [illegible]

मुखकी विरसता, हृल्लास, कण्डू, शूल, आमदोष, हृदयरोग और अग्निमांद्यका नाश करै है।

अस्याः फलगुणाः ।

फलानिबृहतीनांचकटुतिक्तलघूनिच ।
कण्डूकुष्ठकृमिघ्नानिकफवातहराणिच ॥

अर्थ-बृहतीके फल--कटु, तिक्त, लघु, कण्डू, कुष्ठ, कृमि, कफ और वातनाशक हैं ।

क्षुद्रबृहतिकागुणाः ।

लघ्वीबृहतिकावातश्वासशूलकफापहा ।
अग्निमांद्यंज्वरंछर्दिंहृद्रुगामंचनाशयेत् ॥

अर्थ-क्षुद्रबृहती--वात, श्वास, शूल, कफ, मंदाग्नि, ज्वर, वमन, हृदयरोग और आमनाशक है ।

श्वेतबृहतीगुणाः ।

श्वेताबृहतिकारुच्याकफवातविनाशिनी ।
अंजनान्नेत्ररोगघ्नीगुणास्त्वन्येतुपूर्ववत् ॥

अर्थ-सफेदबृहती-रुचिकारक, कफवातविनाशक और अंजनके योगसे अनेक प्रकारके नेत्ररोगोंको नाश करतीहै । शेष गुण बृहतीकी समान जानने।

बृहतीभेदगुणाः ।

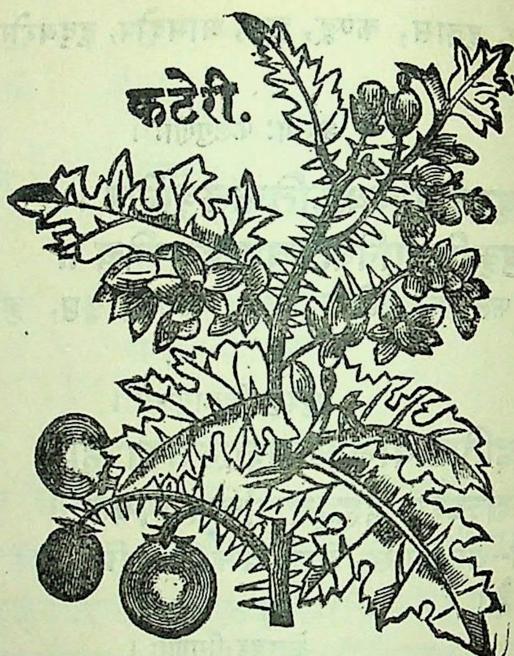
अन्याबृहतिकातिक्ताकट्वीचोष्णाचपित्तला ।
रूक्षारुच्याभेदिकाचपाचिन्यग्निप्रदीपनी ॥
कफवातहराप्रोक्तापूर्ववैद्यैर्मनीषिभिः । (नि. र.)

अर्थ-दूसरे प्रकारकी कटाई--कडवी, चरपरी, गरम, पित्तजनक, रूखी, रुचिकारी, भेदक, पाचक, अग्निप्रदीपक, कफवातनाशक है ।

विवरण । बृहतीका क्षुप जंगलमें होताहै इसमें कांटे बहुत कम होतेहैं, इसके पत्ते बैंगुनकेसे होते हैं, फल बडे बडे आमलेके समान चितले और पीले होतेहैं ।

कण्टकारीनामानि ।

कण्टकारीकुलीक्षुद्राकासघ्नीकण्टकारिका ।
स्पृहीधावनिकाव्याघ्रीदुःस्पर्शादुष्प्रधर्षिणी ॥



अर्थ-कण्टकारी; कुली, क्षुद्रा, कासघ्नी, कण्टकारिका, स्पृही, धावनी, व्याघी, दुःस्पर्शा, दुष्प्रधर्षिणी (कण्टश्रेणी, निदिग्धिका, बृहती, प्रचोदनी, राष्ट्रिका, अनाक्रान्ता, भण्टाकी, सिंही, कुलि, कण्टकिनी निदिग्धा, धावनी, क्षुद्रकण्टिका, बहुकण्टा, क्षुद्रफला, कण्टालिका, चित्रफला)

संस्कृतभाषामें	कण्टकारी।
हिन्दीभाषामें	कटेरी, लघुकटाई भटकटैया, रेंगनी।
वङ्गभाषामें	कण्टकारी।
मराठीभाषामें	रिंगणी, भुईरिंगणी, लघुरिंगणी।
गुजरातीभाषामें	बेठीभोरिंगणी।
कर्णाटकीभाषामें	नेल्लगुल्लु।
तैलिंगीभाषामें	रेवटीमुलंगा, व्राकुडिचेट्टु।
औत्कलीभाषामें	कण्टमारिष।
लैटिन्भाषामें	सोलेनंझेंथोकार्पं Solenum Xunthocurpum

कण्टकारीगुणाः।

कण्टकारीसरातिक्ताकटुकादीपनीलघुः।
रूक्षोष्णापाचनीकासश्वासज्वरकफानिलान्॥
निहन्तिपीनसंरोगंपार्श्वपीडाहृदामयान्। (भा. प्र.)

अर्थ-कटेरी-सारक, कडवी, चरपरी, अग्निप्रदीपक, हलकी, रूखी,

पाचक तथा खांसी, श्वास, ज्वर, कफ, वात, पीनस, पार्श्वपीडा और हृदयरोगका नाश करे है ।

अन्यच्च ।

कण्टकारीकटूष्णाचदीपनीश्वासकासजित् ।
प्रतिश्यायार्त्तिदोषघ्नीकफवातज्वरार्तिनुत् ॥ (रा. नि.)

अर्थ--कटेरी--चरपरी, गरम, अग्निप्रदीपक तथा श्वास, खांसी, प्रतिश्याय, कफ, वात और ज्वर नाशक है ।

अपिच ।

कटेरीकटुकाचोष्णादीपन्यग्नेश्चभेदिका ॥
कटीरूक्षापाचनीचलघ्वीतिक्ताचसारिका ॥
श्वासंकासंकफंवातंपीनसंचज्वरंजयेत् ।
हृद्रोगारुचिकृच्छ्रघ्नीपार्श्वशूलस्यनाशिनी ॥
आमंकृमींश्चशूलञ्चनाशयेदितिकीर्तितम् । (नि. र.)

अर्थ--कटेरी--चरपरी, गरम, अग्निप्रदीपक, भेदक, कडवी, रूखी, पाचक, हलकी, तिक्त, सारक तथा श्वास, खांसी, कफ, वात, पीनस, ज्वर, हृदयरोग, अरुचि, मूत्रकृच्छ्र, पार्श्वशूल, आम, कृमि और शूलका नाश करनेवाली है ।

फलंतस्याः कटुः पाके रसेचकटुकंभवेत् ।
शुक्रस्यरेचनंभेदितिक्तंपित्ताग्निकृल्लघु ॥

अर्थ--कटेरीके फल--पचनेमें चरपरे और रसमें भी चरपरे हैं, शुक्रको दूर करनेवाले, भेदक, कडवे, पित्तजनक, अग्निवर्द्धक और हलके हैं ।

अन्यच्च ।

कण्टकारीफलंतिक्तंकटुकंभेदिपित्तलम् ।
हृद्यंचाग्नेर्दीप्तिकरंलघुवातकफापहम् ॥
कण्डूश्वासज्वरकृमिमेहशुक्रविनाशनम् ॥

अर्थ--कटेरीके फल--कडवे, चरपरे, भेदक, पित्तकारक. हृदयको हितकारी, अग्निदीपक, हलके, वातकफनाशक तथा कण्डू, श्वास, ज्वर, कृमि, प्रमेह और वीर्यविनाशक हैं ।

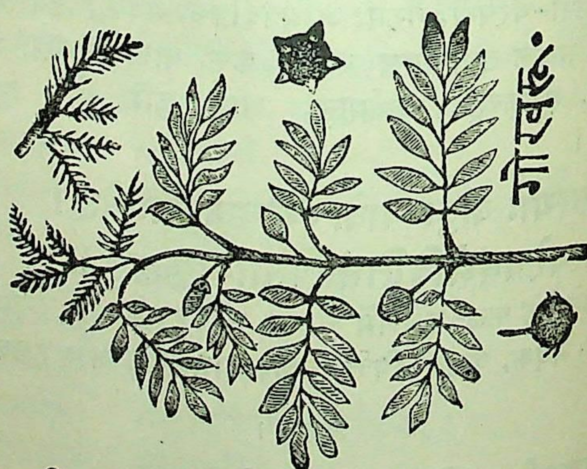
श्वेतकण्टकारीगुणाः ।

लक्ष्मणाकटुकाचोष्णाचक्षुष्याचाग्निदीपनी ।
गर्भस्थापनकर्त्रीचपारदस्यानियामिका ॥
रुचिकृत्कफवातानांनाशिनीपरमामता ।
शेषाश्चास्या गुणाः प्रोक्ताः फलस्यापिचपूर्ववत् ।

अर्थ -सफेद कटेरी--चरपरी, गरम, नेत्रोंको हितकारी, अग्निप्रदीपक, गर्भस्थापक, पारेको बांधनेवाली, रुचिकारक तथा कफ और वातका विनाश करनेवाली है । इसके शेष गुण और इसके फलके शेष गुण कटेरीके समान जानने । व्यवहार--मूल, फल । मात्रा १ मासेकी ।

विवरण । कटेरीके क्षुप छत्तेसे पृथ्वीपर सर्वत्र होते हैं । फूल बैंगनी और केशर पीले रंगकी होती है । पत्ते चितले और अत्यंत कांटेदार होते हैं। फल चितले कच्ची अवस्थामें हरे और पकने पर पीले पडजाते हैं । दूसरी सुफेद फूलकी कटेरीभी इसीमाफिक होती है ।

गोक्षुरनामानि ।



पलङ्कषात्विक्षुगन्धाश्वदंष्ट्रास्वादुकण्टका ।
गोकण्टकोगोक्षुरकोवनशृङ्गाट इत्यपि ॥

अर्थ- पलङ्कषा, इक्षुगन्धा, श्वदंष्ट्रा, स्वादुकण्टका, गोकण्टक, गोक्षुरक, वनशृङ्गाट, त्रिकण्ट (स्थलशृङ्गाट, गोकण्ट, त्रिकण्टक, त्रिपुट, कण्टकफल, गोक्षर, गोखुरि, विकण्टक, गोखुर, त्रिकट, त्रिक, इक्षुर, क्षुरक, भद्रक, इक्षुरगन्धिका, क्षुरांग, श्वदंष्ट्रक, कण्टकी, भद्रकण्ट, व्यालदंष्ट्र, षडंग, क

क्षुद्रगोक्षुरनामानि ।

क्षुद्रोपरोगोक्षुरकास्त्रिकण्टकःकण्टीषडंगोबहुकण्टकःक्षुरः ।
गोकण्टकःकण्टफलःपलंकषाक्षुद्रक्षुरोभक्षटकश्चणद्रुमः॥
स्थलशृङ्गाटकश्चैववनशृङ्गाटकस्तथा ।
इक्षुगन्धःस्वादुकण्टःपर्य्यायाःषोडशस्मृताः ॥

अर्थ--क्षुद्रगोक्षुर, त्रिकण्ट, कण्टी, षडङ्ग, बहुकण्टक, क्षुर, गोकण्टक, कण्टफल, पलंकषा, क्षुद्रक्षुर, भक्षटक, चणद्रुम, स्थलशृङ्गाटक, वनशृङ्गाटक, इक्षुगन्ध, स्वादुकण्ट यह सोलह नाम क्षुद्रगोखुरुके हैं ।

संस्कृतभाषामें	गोक्षुर, क्षुद्रगोक्षुर ।
हिन्दीभाषामें	गोखुरु, छोटे गोखरु ।
वंगभाषामें	गोखरि ।
मराठीभाषामें	सराटे, लहान गोखरु ।
गुजरातीभाषामें	गोखरु, ऊभो बेठो बेजातने छे ।
कर्नाटकीभाषामें	वेडितीसराटीदोड्डनेग्गिलु ।
तैलिङ्गीभाषामें	पालेरु ।
औत्कलीभाषामें	गोखरा ।
लैटिन्भाषामें	पेडेल्यंम्युरेक्स (बडा) ट्रिब्युलसटेरेसट्रीस(छोटा) Pedalum MureW Terrebulus Terrestris ट्रिब्युलसऐलटस (सिन्धुकागोखरू) Tribulas alatus
फारसीभाषामें	तुख्मेखार खस्क ।
अरबीभाषामें	वजरुल खस्क, बक्लतलखार, खसूक ।

द्विविधगोक्षुरगुणाः ।

स्यातामुभौगोक्षुरकौसुशीतलौ बलप्रदौतौमधुरौचबृंहणौ ।
कृच्छ्राश्मरीमेहविदाहनाशनौरसायनौतत्रबृहद्गुणोत्तरः ॥
(राजनिघण्टु)

अर्थ--दोनोंप्रकारके गोखुरु--शीतल, बलकारक, मधुर, बृंहण तथा मूत्रकृच्छ्र, पथरी, प्रमेह और दाहनाशक हैं, रसायन हैं, इनमें बडा गोखुरु अधिक गुणवाला है ।

अन्यच्च ।

गोक्षुरःशीतलोबल्योमधुरोबृंहणोमतः ।
वस्तिशुद्धिकरोवृष्यःपौष्टिकश्चरसायनः ॥
अग्निदीप्तिकरःस्वादुर्मूत्रकृच्छ्राश्मरीहरः ।
दाहमेहश्वासकासहृद्रोगार्शोविनाशनः ॥
वस्तिवातंत्रिदोषञ्चकुष्ठंशूलंचनाशयेत् ।

अर्थ-गोखरू--शीतल, बलकारक, मधुर, बृंहण, वस्तिशोधक, वीर्यवर्द्धक, पुष्टिकारक, रसायन, अग्निदीपक, स्वादिष्ठ, तथा मूत्रकृच्छ्र, पथरी, दाह, प्रमेह, श्वास, खांसी, हृदयरोग, बवासीर, बस्तिवात, त्रिदोष, कुष्ठ और शूलको नष्ट करे है ।

अपिच ।

गोक्षुरोमूत्रकृच्छ्रघ्नोबल्योवृष्योनिलापहः ॥ (राजवल्लभ)

अर्थ-गोखुरु-मूत्रकृच्छ्ररोगनाशक, बलकारक, वीर्य्यजनक और वातनाशक है । -

अस्य शाकगुणाः ।

तिक्तंगोक्षुरकंवृष्यंशाकंस्रोतोविशोधनम् ॥ (रा. व.)

अर्थ-गोखरुके पत्तोंका शाक-तिक्तरसान्वित, वीर्यजनक और स्रोतोंशोधक है ।

अस्य बीजगुणाः ।

बीजंगोक्षुरकंशीतंमूत्रलंशोथवारणम् ।
वृष्यमायुष्करं शुक्रमेहनुत्कृच्छ्रनाशनम् ॥ (आत्रेयसंहिता)

गोक्षुरके बीज-शीतल, मूत्रजनक, शोथनिवारक, वृष्य, आयुवर्द्धक और शुक्र, प्रमेह और मूत्रकृच्छ्रको दूर करनेवाले हैं ।

अस्य क्षारगुणाः ।

क्षारस्तुगोक्षुराणान्तुमधुरःशीतलोमतः ।
स्रोतोविशोधनश्चैववातघ्नोवृष्यएवच ॥ (नि. र.)

अर्थ-गोखुरुओंका खार-मधुर, शीतल, स्रोतोविशोधन, वातनाशक और वीर्यवर्द्धक है ।

विवरण। गोक्षुर दो जातिके होतेहैं, एक पहाडी दूसरा देशी। पहाडी गोखरुका क्षुप होताहैं, फूल पीला और सफेद होता है, पत्तेभी किंचित् सफेद होते हैं, फलके चार कोनोंके ऊपर एक कांटा होता है। देशी गोखरूका पृथ्वीके ऊपर छत्ता होता है, पत्ते चनेके समान होते हैं, फूल पीला होता है, इसके फलमें छः कांटे होते हैं। मात्रा ६ मासेकी।

पञ्चमूलगुणाः।

पञ्चमूलमिदंह्रस्वंबृंहणंबलवर्द्धनम्।
कषायंतिक्तकंनातिशीतोष्णंसर्वदोषजित्॥

अर्थ- ह्रस्वपञ्चमूल--पुष्टिकारक, बलवर्द्धक, कषायरसान्वित, तिक्तरससंयुक्त, न अत्यन्त शीतल, न अत्यन्त गरम और त्रिदोषनाशक है।

बृहत्पंचमूलगुणाः

पंचमूलंमहत्तिक्तंकषायंकफवातनुत्।
मधुरंश्वासकासघ्नमुष्णंलघ्वग्निदीपनम्॥

अर्थ--बृहत्पंचमूल--तिक्त, कषाय, कफवातनाशक, मधुर, श्वासनिवारक, कासनाशक, उष्ण, लघु और अग्निदीपक हैं।

दशमूलगुणाः।

दशमूलंत्रिदोषघ्नंश्वासकासशिरोरुजः।
तन्द्राशोथज्वरानाहपार्श्वपीडारुचीर्हरेत्॥ (भा. प्र.)

अर्थ--दशमूल--त्रिदोष, श्वास, खांसी, शिरोरोग, तन्द्रा, सूजन, ज्वर, अनाह, पार्श्वपीडा और अरुचिको हरनेवालाहै। अधिक दशमूलके गुण मिश्रवर्गमें देखो।

जीवन्तीनामानि।

जीवन्तीजीवनीजीवाजीवदाचसुखंकरी।
रक्ताङ्गीप्राणदाभद्रामङ्गल्यामृगराटिका॥

अर्थ-जीवन्ती, जीवनी, जीवा, जीवदा, सुखङ्करी, रक्ताङ्गी, प्राणदा, भद्रा, मङ्गल्या, मृगराटिका(जीवनीया, स्रवा, मधुस्रवा मङ्गल्यनामधेया, पयस्विनी, जीव्या, जीवदात्री, शाकश्रेष्ठा, जीवभद्रा, क्षुद्रजीवा, यशस्या, शृङ्गाटी, जीवपुष्टा, काञ्जिका, शशशिम्बिका, सुपिंगला, पुत्रभद्रा, मधुश्वासा जीववृषा, जीवपत्री, जीवपुष्पी, जीववर्द्धिनी, यशस्करी)

संस्कृतभाषामें	जीवन्ती ।
हिन्दीभाषामें	जीवन्ती (डोडी)
वंगभाषामें	जीवई, जीयाती जीवन्ती ।
मराठीभाषामें	जीवंती ।
गुजरातीभाषामें	राडारुडी, वाछंटी ।
कर्णाटकीभाषामें	हिरियाहलि ।

अस्या गुणाः ।

जीवन्तीमधुराशीतारक्तपित्तानिलापहा ।
क्षयदाहज्वरान्हन्तिकफवीर्य्यविवर्द्धिनी ॥ (रा. नि.)

अर्थ–जीवन्ती–मधुर, शीतल तथा रक्त, पित्त, वात, क्षय, दाह, और ज्वरका नाश करनेवाली है तथा कफ और वीर्य्यको बढानेवालीहै ।

अन्यच्च ।

चक्षुष्यासर्वदोषघ्नीजीवन्तीमधुराहिमा ॥ (आ. स.)

अर्थ–जीवन्ती–नेत्रोंको हितकारी, त्रिदोषनाशक, मधुर और शीतल है

अपिच ।

जीवन्तीश्वासकासघ्नीस्वर्य्याचक्षयनाशिनी ॥ (रा.नि.)

अर्थ–जीवन्ती–श्वास और खांसीको दूर करनेवालीहै,स्वरको श्रेष्ठ करने वाली है और क्षयरोगका क्षयकरनेवालीहै ।

अन्यच्च ।

जीवन्तीशीतलामाध्वीस्निग्धास्वाद्वीरसायनी ।
चक्षुष्याग्राहकाबल्यालघ्वीधातुविवर्द्धिनी ॥
वृष्याकफकरीसूतबंधिनीरक्तपित्तहा ।
वातंक्षयंज्वरंदाहंनेत्ररोगंत्रिदोषकम् ।
रक्तदोषंभूतबाधांपित्तंचैवविनाशयेत् ।
फलंचास्याधातुवृद्धिकारकंमधुरंगुरु ॥

अर्थ–जीवन्ती–शीतल, मधुर, स्निग्ध, स्वादिष्ठ, रसायन, नेत्रोंको हितकारी, मलरोधक, बलकारक, हलकी, धातुवर्द्धक, वीर्यवर्द्धक, कफकारक, पारेको बांधनेवाली तथा रक्तपित्त, वात, क्षय, ज्वर, दाह नेत्ररोग, त्रिदो

रक्तविकार, भूतबाधा और पित्तका नाशकरे है। इसका फल--धातुवर्धक मधुर और भारी है।

बृहज्जीवन्तीनामानि।

जीवन्त्यन्याबृहत्पूर्वापुत्रभद्राप्रियंकरी॥
मधुराजीवपुष्पाचबृहज्जीवायशस्करी।

अर्थ--बृहज्जीवन्ती, पुत्रभद्रा, प्रियंकरी, मधुरा, जीवपुष्पा, बृहज्जीवा, यशस्करी।

संस्कृतभाषामें	बृहज्जीवन्ती।
हिन्दीभाषामें	बडीजीवन्ती।
वङ्गभाषामें	भडजीवइ।
गुजरातीभाषामें	मोटीखरखोडी तृणधारनी।
कर्णाटकीभाषामें	किरियहाले।
अंग्रेजीभाषामें	शाशांप्रेरला। Sasapralla

अस्या गुणाः।

एवमेवबृहत्पूर्वारसवीर्य्यबलान्विता।
भूतविद्राविणीज्ञेयावेगाद्रसनियामका॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ--बडी जीवन्ती--रसवीर्य्य और बलमें, जीवन्तीके समान है भूत-विद्रावक और पारेको बांधनेवाली है।

स्वर्णजीवन्तीनामानि।

हेमपूर्णास्वर्णलतास्वर्णजीवन्तिकाचसा।
हेमवल्लीहेमलताहेमक्षीरीसुमङ्गला॥

अर्थ--हेमपूर्णा, स्वर्णलता, स्वर्णजीवन्तिका, हेमवल्ली, हेमलता, हेमक्षीरी सुमङ्गला (हेमाह्वा, स्वर्णजीवन्ती स्वर्णजीवा, हेमजीवन्ती, तृणग्रन्थि, हेमाश्रया स्वर्णपर्णा, सुजीवन्ती, सुपर्णिका, हेमपुष्पी, हेमा, हेमवती, सौम्या)

संस्कृतभाषामें	स्वर्णजीवंती।
हिन्दीभाषामें	पीलीजीवन्ती, सुनहरीजीवन्ती।
वंगभाषामें	स्वर्णजीवन्ती।
मराठीभाषामें	हरणवेल, हेमहरणवेल।
गुजरातीभाषामें	खरखोडी, मीठीखरखोडी।

कर्णाटकीभाषामें	होणहाले ।
लैटिन्भाषामें	ड्रेजिआवोल्युविलिस् ।

अस्या गुणाः ।

स्वर्णजीवन्तिकावृष्याचक्षुष्यामधुरातथा ।
शिशिरावातपित्तासृग्दाहजिद्बलवर्धिनी ॥ (रा. नि.)

अर्थ-स्वर्णजीवन्ती-वीर्य्यवर्द्धक, नेत्रोंको हितकारी, मधुर, शीतल तथा वात, रक्त, पित्त और दाहको दूर करनेवाली है और बलवर्द्धक है।

तिक्तजीवन्तीनामानि ।

तिक्तजीवन्तिकातिक्तभद्रातिक्ताप्रियंकरी ॥

अर्थ--तिक्तजीवन्तिका, तिक्तभद्रा, तिक्तप्रियङ्करी (विषमुष्टि, केशमुष्टि, सुमुष्टि, रणमुष्टिक, डोडीक्षुप)

संस्कृतभाषामें	विषमुष्टि, तिक्तजीवन्ती ।
हिन्दी भाषामें	डोडी ।
मराठीभाषामें	विषदोडी ।
गुजरातीभाषामें	कडवोखरखोडो ।
कर्णाटकीभाषामें	दोडीकर्गसगे ।

अस्या गुणाः ।

तिक्तजीवन्तिकावातकफाजीर्णज्वरापहा ।
शोफघ्नीविषहन्त्रीचलेपादाखुविषापहा ।

अर्थ--तिक्तजीवन्ती-वात, कफ, अजीर्ण, ज्वर, सूजन और विषविनाशक है । इसका लेप करनेसे मूषेका विष दूर होता है ।

अन्यच्च ।

विषडोडीभवेत्तिक्ताकट्वीचाग्निप्रदीपनी ।
मलस्तम्भकरीग्राहीपित्तलोष्णास्त्रपित्तजित ॥
लघ्वीवृष्याचरुच्याचदाहकारीकफापहा ।
कण्ठरुग्वातगुल्मार्शःकृमिकुष्ठविषापहा ॥
श्वासप्रमेहाखुविषनाशिनीपरिकीर्तिता ।

अर्थ-डोडी- तिक्त, कटु, अग्निप्रदीपक, मलस्तम्भक, ग्राही, पित्तजनक, गरम, रक्तपित्तनाशक, हलकी, वीर्य्यजनक, रुचिकारक, दाहकारक, कफ

नाशक तथा कण्ठरोग, वात, गुल्म, बवासीर, कृमि, कुष्ठ, विष, श्वास, प्रमेह और मूषेके विषको दूर करनेवाली है ।

विषमुष्टिगुणाः ।

विषमुष्टिःकटुस्तिक्तोदीपनःकफवातनुत् ।
कण्ठामयहरोरुच्योरक्तपित्तार्तिदाहनुत् ॥

अर्थ-विषमुष्टि-चरपरी, कडवी, दीपन, कफवातविनाशक, कण्ठरोगनाशक, रुचिकारी तथा रक्तपित्त और दाहको दूरकरे है ।

विवरण । जीवन्ती अनेक जातिकी होती है, इसकी वेल चलती है, फल डोडोंमें आते हैं इसमें आककी समान दूध निकलता है ।

मुद्गपर्णीनामानि ।

मुद्गपर्णीकाकमुद्गासहाचशिम्बिपर्णिका ।
शिम्बिपर्णीक्षुद्रसहाशिम्बीमार्ज्जारगन्धिका ॥

अर्थ-मुद्गपर्णी, काकमुद्गा, सहा, शिम्बिपर्णिका, शिम्बिपर्णी, क्षुद्रसहा, शिम्बी, मार्ज्जारगन्धिका (वनजा, रिङ्गिणी, ह्रस्वा, शूर्पपर्णी, कुरङ्गिका, कोशिला, वनोद्भवा, वनमुद्गा, आरण्यमुद्गा, वन्या, करञ्जिका)

संस्कृतभाषामें	मुद्गापर्णी ।
हिन्दीभाषामें	मुगवन ।
बंगलाभाषामें	मुगानि ।
मराठीभाषामें	रानमूग ।
गुजरातीभाषामें	अडवाड मगवेल्य ।
कर्णाटकीभाषामें	कोहसरु ।
तैलिङ्गीभाषामें	कारुपसारा ।
लैटिन्भाषामें	फेशिपोलस् ट्रायलो बेटस् । Phasiolo Trilobetus

अस्या गुणाः ।

मुद्गपर्णीहिमारूक्षातिक्तास्वाद्वीचशुक्रला ।
चक्षुष्याक्षयशोथघ्नीग्राहिणीज्वरदाहनुत् ॥
दोषत्रयहरीलघ्वीग्रहण्यर्शोतिसाराजित (भा. प्र.)

अर्थ-मुगवन-शीतल, रूखी, कडवी, स्वादिष्ठ, शुक्रजनक, नेत्रोंको हित

कारी, क्षयघ्न, शोथनाशक, मलरोधक तथा ज्वर, दाह और त्रिदोषनाशक हलकी और संग्रहणी, बवासीर और अतिसारको दूर करनेवाली है।

अन्यच्च ।

मुद्गपर्णी हिमा कासवातरक्तक्षयापहा।
पित्तदाहज्वरान्हन्तिचक्षुष्याशुक्रवृद्धिकृत् ॥ (रा. नि.)

अर्थ–मुगवन–शीतल तथा खांसी, वातरक्त, क्षय, पित्त, दाह और ज्वरको दूर करनेवाली है, नेत्रोंको हितकारी और वीर्य्यवर्द्धक है।

अपिच ।

मुद्गपर्णीहिमाकासवातरक्तज्वराञ्जयेत्।
स्वाद्वीलघ्वीत्रिदोषघ्नीग्रहणीकृमिनाशिनी ॥
अतिसारकफार्शोघ्नीपित्तनाशकरीमता ॥
रक्तस्तम्भकरारूक्षाचोक्तावैद्यैर्निघण्टुके ॥

अर्थ–मुगवन– शीतल तथा खांसी, बात, रक्त और ज्वरका नाश करैहै स्वादिष्ट, हलकी, त्रिदोषनाशक तथा संग्रहणी, कृमि, अतिसार, कफ, बवासीर और पित्तको दूर करेहै। रक्तस्तम्भक और रूखाहै।

विवरण। मुद्गपर्णी मूंगकी समान वेल होतीहै, पत्ते मूंगकी समान होते हैं, फूल पीले रंग होते हैं और फली भी मूंगकी समान आती है।

माषपर्णीनामानि ।

माषपर्णीकृष्णवृन्तापर्णिनीपाण्डुलोमशा।
ऋषिप्रोक्ताहयपुच्छीकाम्बोजीसिंहपुच्छिका॥

अर्थ–माषपर्णी, कृष्णवृन्ता, पर्णिनी, पाण्डुलोमशा, ऋषिप्रोक्ता, हयपुच्छी, काम्बोजी सिंहपुच्छिका (महासहा, सिंहपुच्छी, पाण्डु, लोमशपर्णिनी, पाण्डुलोमा, आर्द्रमाषा, मांसमाषा, मङ्गल्या, हयपुच्छिका, हंसमाषा, आर्द्र पुच्छी, माषपर्णिका, कल्याणी, वज्रमूली, शालिपर्णी, विसारणी, [illegible] द्भवा, बहुफला, स्वयम्भू, सुलभा, घना, सिंहविन्ना, विशाम्बिका, [illegible] पर्णी, पाण्डुरा)

संस्कृतभाषामें	माषपर्णी।
हिन्दीभाषामें	मषवन, बनउर्दी, जंगलीउडद।
वंगभाषामें	माषार्ण।

मराठी भाषामें	रानउडीद)
गुजरातीभाषामें	अडवाड, अडदवेल ।
कर्णाटकीभाषामें	रानोडिंडुका उद्दु ।
तैलङ्गीभाषामें	कारुमीनुरु ।
लैटिनभाषामें	ग्रेंजिआमड्रासपटना । Crangea madrass Patana

अस्याः गुणाः ।

माषपर्णीहिमातिक्तारूक्षाशुक्रबलासकृत् ।
मधुराग्राहिणीशोथवातपित्तज्वरास्रजित् ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-मषवन-शीतल, कडवी, रूखी, शुक्रजनक कफकारक, मधुर, ग्राही तथा सूजन, वात, पित्त, ज्वर और रुधिरविकारको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

माषपर्णीरसेतिक्तावृष्यादाहज्वरापहा ।
शुक्रवृद्धिकरीबल्याशीतलापुष्टिवर्द्धिनी ॥ (रा. नि.)

अर्थ-मषवन-तिक्तरसान्वित, वृष्य, दाह ज्वरनाशक शुक्रवर्द्धक, बलकारक, शीतल और पुष्टिवर्द्धक है । अपिच ।

माषपर्णीमहावृष्याबृंहणीबलवर्णकृत् ।
स्तन्यकेशहितास्निग्धावातपित्तापहाहिमा ॥ (शो० नि०)

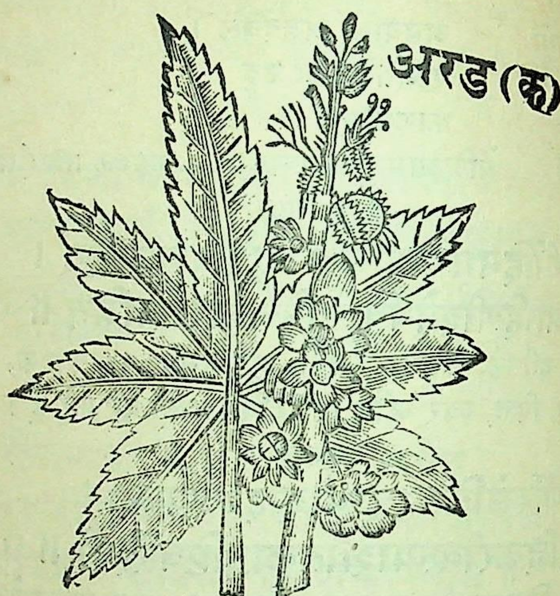
अर्थ-मषवन-महावृष्य, पुष्टिकारक, बलकारक, बलवर्द्धक, वर्णको सुंदरतादायक, स्तनोंमें दूध उत्पन्न करनेवाली, केशोंको उत्पन्न करनेवाली, स्निग्ध, वातपित्तनाशक और शीतल है ।

अन्यच्च ।

माषपर्णीशुक्रवृद्धिकरावृष्याचतिक्तका ।
बलदापौष्टिकाशीतारूक्षाकफकरीमता ॥
रक्तरुङ्नाशिनीग्राहीत्रिदोषज्वरपित्तहा ।
रक्तपित्तंक्षयंकासंवातंशोषञ्चदाहकम् ॥
वातपित्तंरक्तदोषंनाशयेदितिकीर्त्तितम् ।

अर्थ-मषवन- शुक्रवर्द्धक, वृष्य, कडवी, बलदायक, पुष्टिकारक, शीतल-रूखी, कफकारक, रक्तरोगनाशक, मलरोधक तथा त्रिदोष, ज्वर, पित्त, रक्तपित्त, क्षय, खांसी, वात, शोष, दाह, वातपित्त और रुधिरविकारको हरनेवाली है । माषपर्णीकी वेल उड़दके समान होती है । व्यवहार-सर्वांग । मात्रा २ माशेकी ।

एरण्डनामानि ।



एरण्डोव्याघ्रपुच्छःस्याच्चित्रकस्त्रिपुटीफलः ।
पञ्चांगुलःशूलशत्रुर्वातारिर्दीर्घदन्तकः

अर्थ–एरण्ड, व्याघ्रपुच्छ, चित्रक, त्रिपुटीफल, पञ्चांगुल, शूलशत्रु, वातारि, दीर्घदन्तक (रुवूक, गन्धर्वहस्तक, उरुवुक, रुवुक, चंचुक, मण्ड, वर्द्धमान, व्यडत्वक्, एरण्डक, इष्ट, अमङ्गल तुच्छद्रु व्रणहा, त्रिपुटी, व्याघ्रदल, उरुवूक, रुवूक, रुवुक, रूवक, वुक, अमण्ड, आमण्ड, व्यडम्बन, कान्त, तरुण, शुक्ल, दीर्घपत्रक (दीघदण्डक) चित्रबीज और स्नेहप्रद)

रक्तैरण्डनामानि ।



रक्तोपरोहस्तिकर्णोव्याघ्रोव्याघ्रकरोरुवुः।
त्रिबीजश्चरुवूकश्चचारुरुत्तानपत्रकः ॥

अर्थ-रक्तैरण्ड, हस्तिकर्ण, व्याघ्र, व्याघ्रकर, रुवु, त्रिबीज, रुवूक, उत्तानपत्रक, (उरुवुक, नागकर्ण, चंचु, करपर्ण, पाचन, स्निग्ध, व्याघ्रबल, रक्तक, विरवीर्य्य, ह्रस्वैरण्ड और व्याघ्रपुच्छ)

स्थूलैरण्डनामानि ।

स्थूलैरण्डोमहैरण्डोमहापञ्चाङ्गुलादिकः ॥

अर्थ-स्थूलैरण्ड, महैरण्ड और महापञ्चांगुल ।

हिन्दीभाषामें	अण्ड, सफेद अण्ड, लाल अण्ड, बडा अण्ड ।
बंगलाभाषामें	भेराण्डा, शादारेडी, लालभेण्डा, बडभैराण्डा ।
मराठीभाषामें	एरंड, एरण्डोली ।
गुजरातीभाषामें	धोलोएरंडो, रातोएरण्डो ।
कर्णाटकीभाषामें	एरंडुआंडलके ।
तैलिङ्गीभाषामें	आमुडामु आमिदपुचेटूटु ।
अंग्रेजीभाषामें	कास्टर ओईल प्लाट Casteroil Plant Castor soed कास्टरसीड्
लटिन्‌भाषामें	रिसिनस्‌कॉम्युनिस् । Ricinus Communis
फारसीभाषामें	वेदंजीर, सुरुमेवेदजीर ।
अरबीभाषामें	खिरवा, हबुलखिरुवा ।
तुरकीमें	करचक ।

द्विविधैरण्डगुणाः ।

ऐरण्डयुग्मंमधुरमुष्णंगुरुविनाशयेत् ।
शूलशोथकटीवस्तिशिरःपीडोदरज्वरान् ।
वर्ध्मश्वासकफानाहकासकुष्ठाममारुतान् ।

अर्थ-दोनोंप्रकारके अण्ड-मधुर, उष्ण, भारी तथा शूल, सूजन, कमर, वस्ति (पेडू) और शिरोरोग, उदर, ज्वर, वद, श्वास, कफ, अफारा, कास, कुष्ठ और आमवातनाशक है ।

अस्य पत्रगुणाः ।

एरंडपत्रंवातघ्नंकफक्रिमिविनाशनम् ।

मूत्रकृच्छ्रहरंचापिपित्तरक्तप्रकोपनम् ॥
वातार्यग्रदलंगुल्मवस्तिशूलहरंपरम् ।
कफवातकृमीन्हन्तिवृद्धिंसप्तविधामपि ॥

अर्थ-अण्डके पत्ते-वातनाशक, कफघ्न, क्रिमिविनाशक, मूत्रकृच्छ्र रोग हरनेवाले और पित्तरोगको कुपित करनेवाले हैं । अण्डके आगेके दल अर्थात् कोमल पत्ते-वात, गुल्म, वस्ति, शूल, कफवात, कृमि और सातप्रकारकी अण्डवृद्धिको दूर करे हैं ।

अस्य फलगुणाः ।

एरण्डफलमत्युष्णंगुल्मशूलानिलापहम् ।
यकृत्प्लीहोदरार्शोघ्नंकटुकंदीपनंपरम् ॥

अर्थ-अण्डके फल-अत्यन्त उष्ण, चरपरे, अग्निको दीपन करनेवाले तथा गुल्म, शूल, वात, यकृत्, प्लीहा, उदररोग और बवासीरको दूर करे हैं।

अस्य मज्जागुणाः ।

एतन्मज्जाचविडभेदीवातश्लेष्मोदरापहा ॥ (भा. प्र.)

अर्थ-इसकी मींग-मलभेदक तथा वात, कफ और उदररोगका नाशकरे ।

अस्य मूलगुणाः ।

एरण्डमूलंशूलघ्नंवृष्यंवातकफापहम् ॥ (शो. नि.)

अर्थ-इसकी जड-शूल, वात और कफको निमूल करेहै, तथा वीर्यजनक है ।

अस्य पुष्पगुणाः ।

पुष्पंहन्त्यस्यवर्ध्मानिलकफगुदजान्गुल्मशूलोर्ध्ववातान् ।

अर्थ-इसका फूल-वर्ध्म (बद) वात, कफ, गुदजरोग, गुल्म, शूल और ऊर्ध्ववातको, दूर करे है ।

श्वेतैरण्डगुणाः ।

श्वेतोरुवूकस्तुकटुस्तीक्ष्णश्चोष्णोगुरुःस्मृतः ।
मधुरस्तिक्तकोवृष्योगुरुःस्वादुःसरःस्मृतः ॥
वातोदावर्तकफहज्ज्वरकासोदरापहः ।
शोथशूलकटीवस्तिशिरोरुङ्नाशनःस्मृतः ॥

श्वासानाहकुष्ठवर्ध्मगुल्मप्लीहामपित्तहा ।
प्रमेहोष्मावातरक्तमेदान्त्रावर्धनप्रणुत् ॥
अस्यभेदोबृहत्स्थूलोरसेपाकेगुणाधिकः ।

अर्थ-सफेद अण्ड-कटु, तीक्ष्ण, गरम, भारी, मधुर, कडवा, वृष्य, भारी, स्वादिष्ठ और दस्तावर है । तथा वात, उदावर्त्त, कफ, ज्वर, कास, उदर, सूजन, शूल और कमर, वस्ति, मस्तकशूल, श्वास, अफारा, कोढ, वर्ध्मरोग (बद) गोला, प्लीहा, आमपित्त, प्रमेह, उष्णता, वातरक्त, मेद और अन्त्रवृद्धिरोगका नाश करेहै । इसका भेद--स्थूल एरण्ड है और वह इसकी अपेक्षा रसमें और पाकमें अधिक गुणवाला है ।

रक्तैरण्डगुणाः ।

रक्तोरुबूकस्तुवरोरसेकटुर्लघुःस्मृतः ।
तिक्तोवातकफश्वासकासकृम्यर्शवर्ध्महा ॥
रक्तदोषपाण्डुरुजंभ्रांत्यरोचकनाशनः ।
प्रायस्त्वन्येगुणाश्चास्यश्वेतवच्चसमीरिताः ॥
पर्णद्वयोस्तुसंप्रोक्तंवातपित्तस्यवर्धकम् ।
मूत्रकृच्छ्रंवातकफंकृमींश्चैवविनाशयेत् ॥
एतयोश्चांकुरोगुल्मवस्तिशूलकफाक्रिमीन् ।
वातंसप्तप्रकारंतुवृद्धिरोगंविनाशयेत् ॥
पुष्पंतुवातकफहृत्पित्तमूत्ररुजापहम् ।
रक्तपित्तंवर्धयतिफलमज्जाग्निदीपनी ॥
अत्युष्णाकटुकास्वादुःपटुःस्निग्धासरास्मृता ।
मलभेदकरालघ्वीगुल्मशूलकफापहा ॥
यकृद्वातोदरप्लीहावातार्शानांविनाशिनी ।

अर्थ-लाल अण्ड-- कषेला, रसमें चरपरा, हलका, कडवा, वात, कफ, श्वास, कास, कृमि, बवासीर, बद, रुधिरविकार, पाण्डुरोग भ्रान्ति और अरुचिको दूर करे है । शेष गुण सफेद अण्डके समान जानने । इन दोनोंके

पत्ते--वातपित्तकारक तथा मूत्रकृच्छ्र, वायु, कफ, और कृमिरोगको करे हैं। इसके कोमल अंकुर--गुल्म, बस्ति, शूल, कफ, कृमि, वायु सातप्रकारके वृद्धिरोगको दूर करेहैं। इसके फूल--वात, कफ, पित्त मूत्रकृच्छ्रादिरोगोंको दूर करे हैं तथा रक्तपित्तको बढावे हैं। इसकी आग्नेदीपक, अत्यन्त उष्ण, कटु स्वादिष्ठ, खारी, स्निग्ध, सारक, मलभे लघु तथा गुल्म, शूल, कफ, यकृत्, वात, उदररोग, प्लीहा और बवासीरको दूर करे है।

अस्य तैलगुणाः।

एरण्डतैलंमधुरंगुरुश्लेष्माभिवर्द्धनम्।
वातासृग्गुल्महृद्रोगजीर्णज्वरहरंपरम्॥ (राजवल्लभ)

अर्थ--अण्डीका तेल -मधुर, भारी, कफवर्द्धक तथा वातरक्त, हृद्रोग और जीर्णज्वरका नाश करे है।

अपिच।

एरण्डतैलंमधुरंसरंचोष्णंगुरुस्मृतम्।
अरुच्यंचस्मृतंस्निग्धंतिक्तंवध्मोदरापहम्॥
गुल्मवातकफांश्चैवशोथश्चविषमज्वरम्।
कटिपृष्ठकोष्ठगुह्यशूलनाशकरंपरम्॥

अर्थ--अण्डीका तेल--मधुर, दस्तावर, गरम, भारी, अरुचिकारक, स्नि तिक्त तथा बद, उदर, गुल्म, वात, कफ, सूजन, विषमज्वर और क पीठ, कोष्ट और गुदा आदिके शूलको निर्मूल करे है।

अन्यच्च।

एरण्डतैलंमधुरमुष्णंतीक्ष्णञ्चदीपनम्।
रसेकटुकषायञ्चसूक्ष्मंस्रोतोविशोधनम्॥
योनिशूलाविशोधनमारोग्यमेधाकान्तिकृत्।
स्मृतिस्थैर्य्यबलकरंवृष्यंमधुरमेवच॥
वयःस्थापनकंहृद्यंवातश्लेष्महरंपरम्।

अर्थ--अण्डीका तेल--मधुर, उष्ण, तीक्ष्ण और जठराग्निप्रदीपक कटुरसान्वित, कषेला, सूक्ष्म और श्रोतविशोधक है। योनि (बी

को शोधनेवाला है। आरोग्यता, मेधा और कान्ति करनेवाला है। स्मरण-
कि बढानेवाला, स्थिरताकारक, बलजनक, मधुर और वीर्य्यको उत्पन्न
है। अवस्थाको स्थापन करनेवाला है, हृदयको हितकारी तथा वात और
को दूर करेहै।

अपिच।

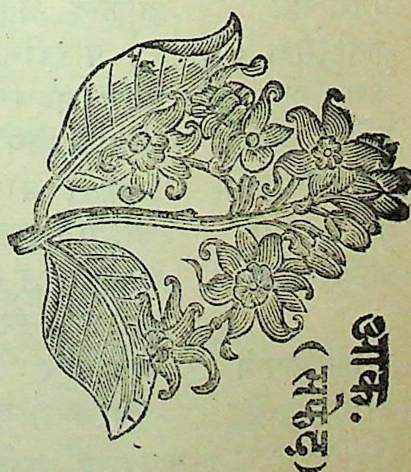
एरण्डतैलंकृमिदोषनाशनंवातामयघ्नंसकलाङ्गशूलहृत्।
कुष्ठापहंस्वादुरसायनोत्तमंपित्तप्रकोपंकुरुतेतिदीपनम्॥

अर्थ-अण्डीका तेल-कृमिरोगनाशक, वातरोगनिवारक, सर्व प्रकारके
को निर्मूल करनेवाला, कुष्ठघ्न, स्वादिष्ट, रसायनमें श्रेष्ठ, पित्तको
पित करनेवाला और अग्निको दीपन करनेवाला है। आगे इसके गुण
वर्गमें देखो।

विवरण-इसके वृक्ष प्रायः खेतीकी वाडपर लगाये जाते हैं, इसकी लाल
र सफेद दो जाती हैं, इसके फलपर, कोमल कांटे होते हैं, फलमेंसे तीन
ज निकलतेहैं यह फल ऊपर चित्रित होतेहैं और बीजके भीतर मींग सफेद
कलतीहै उस मींगके भीतर तेल होताहै, उस मींग अथवा तेलको खानेसे
राव होता है। इसके पत्तोंको मस्तकपर बांधनेसे माथेका शीत दूर
ताहै। व्यवहार-मूल, पत्ते, छाल मूलकीछाल, फल, फूल मींग और तैल।

अर्कनामानि।





क्षीरदलंशुकफलंतूलार्कश्च सदाप्तुमः ।

अर्थ--क्षीरदल, शुकफल, तूलफल, अर्क, सदासुम, (प्रताप, क्षीरकाण्ड, विक्षीर, भास्कर, हरिदश्व, बिवस्वान, अहर्मणि, अहर्बान्धव, अर्यमा, अरु, उष्णरश्मि, भानु, विकर्त्तन, गणरूप, मन्दार, प्रभाकर, विभाकर, दिवा, विभावसु, विवस्वान्, सप्ताश्व, सविता, सूनु, आस्फोत, वसुक, हिमार, पुच्छी, प्रताप, क्षीरी, खर्ज्जून्न, शीतपुष्पक, जम्भल, क्षीरपर्णी, विक्षी, सदापुष्प, सूर्य्याह्व, आस्फोतक, भास्कर, आस्फोटक, रवि, कीरतुफल, क्षीराङ्ग)

श्वेतार्कनामानि ।

श्वेतार्कोऽलर्कराजार्कोमन्दारोगणरूपकः ॥

अर्थ--श्वेतार्क, अलर्क, राजार्क, मन्दार गणरूपक, (तपन, श्वेत, पुष्प, शिवाह्वय, प्रताप शीतार्कक शर्करापुष्प, काष्ठील, वसुक, सदा, वृत्तमल्लिक , वेधा, शम्भु, गणरूपी, रक्तार्क, बिस्वोर, सदापुष्पी, हरि, आदित्यपुष्पिका, दिव्यपुष्पिका, अर्क, रक्तपुष्प, और शुक्लफल)

हिन्दीभाषामें	लाल आक, सफेद आक, मंदार ।
वंगभाषामें	आकन्द, श्वेतआकन्द ।
मराठीभाषामें	रुई, पांढरीरुई ।
कर्णाटकीभाषामें	पक्के, मंदारपक्के ।
तैलिङ्गीभाषामें	नीलजिल्लेडघोली, तेलाजिल्लीडे, जिल्लेहचेद्दु ।
गुजरातीभाषामें	आकडो भोलोआकडो ।
अंग्रजीभाषामें	जाईगेंटिक्स्वोलोवर्ट । Gigantic Swallow
लैटिन्भाषामें	केलोट्रोपिस् जाईगंठिया । Galotropis Jiga...
	कलोट्रोपिसप्रोसिरा । Gprocera
फारसीभाषामें	खुर्क, दुध ।
अरबीभाषामें	उषर ।

अर्कगुणाः ।

अर्कःकृमिहरस्तीक्ष्णःसरोऽर्शःकफनाशनः ।
तत्पुष्पंकृमिदोषघ्नंहन्तिशूलोदराणिच ॥ (धन्वन्तरि)

अर्थ-आक--कृमिनाशक, तीक्ष्ण, दस्तावर, बवासीर और कफनाशक इसके फूल कृमिदोष, शूल और उदररोगका नाशकरे हैं ।

रक्तार्कपुष्पंमधुरंसतिक्तंकुष्ठक्रिमिघ्नंकफनाशनञ्च ।
आखोर्विषंहंतिचरक्तपित्तंसंग्राहिगुल्मेश्वयथौहितंतत् ॥

अर्थ-लाल आकका फूल-मधुर, तिक्त, ग्राही तथा कुष्ठ, कृमि, कफ, मूषेका विष, रक्तपित्त, गुल्म, और सूजनको दूर करे है ।

अर्कक्षीरगुणाः ।

क्षीरमर्कस्यतिक्तोष्णंस्निग्धंसलवणंलघु ।
कुष्ठगुल्मोदरहरंश्रेष्ठमेतद्विरेचनम् ॥ (भा. प्र.)

अर्थ-आकका दूध-तिक्त, उष्ण, स्निग्ध, लवणरस संयुक्त, हलका, कोढ, गुल्म तथा उदररोगको दूर करे इसका विरेचनदेना श्रेष्ठ है, अर्थात् इसके द्वारा दस्त उत्तम प्रकारसे होते हैं ।

अर्कमूलस्य त्वग्गुणाः ।

अर्कमूलत्वचास्वेदकरीश्वासनिबर्हणी ।
उष्णाचवामिकाचैवह्युपदंशविनाशिनी ॥

अर्थ-आकके जडकी छाल-पसीनेको उत्पन्न कर, श्वासको दूरकरे गरम है और उपदंशरोगका नाश करे है ।

अर्कस्तुकटुरुष्णश्चवातजिद्दीप्तदीपकः ।
शोफव्रणहरःकण्डूकुष्ठक्रिमिविनाशनः ॥ (रा. नि.)

अर्थ-आक कटु, उष्ण, वातनाशक, अग्निप्रदीपक तथा शोफ, व्रण, कण्डू कुष्ठ और कृमिरोगका नाशकरे है ।

द्विविधार्कगुणाः ।

अर्कद्वयंसरंवातकुष्ठकण्डूविषव्रणान् ।
निहंतिप्लीहगुल्मार्शःश्लेष्मोदरयकृत्कृमीन् ॥
अलर्ककुसुमंवृष्यंलघुदीपनपाचनम् ।
अरोचकप्रसेकार्शःकासश्वासनिवारणम् ॥

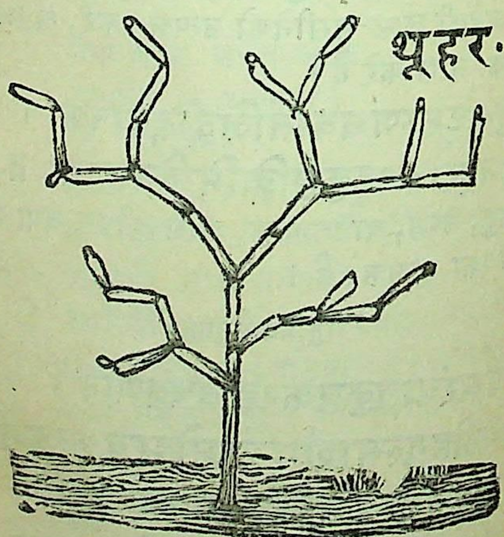
अर्थ-दोनों प्रकारके आक-रेचक तथा वात, कोढ, कण्डू, विष, व्रण, प्लीहा, गुल्म, बवासीर, श्लेष्म, उदररोग, यकृत् और कृमि रोगको दूर करे हैं। सफेद आकका फूल-बलकारक, हलका, अग्निको दीपन करे, पाचक, अरुचि, प्रसेक (मुखसे लारका गिरना) बवासीर कास और श्वासको दूर करे है ।

श्वेतमन्दारकोत्युष्णस्तिक्तोमलविशोधनः।
मूत्रकृच्छ्रव्रणान्हन्तिकृमीनत्यन्तदारुणान् ॥
राजार्कःकटुतिक्तोष्णःकफमेदोविषापहः।
वातकुष्ठव्रणान्हंतिशोफकण्डूविसर्पनुत् ॥

अर्थ-सफेद मन्दार-अत्यन्त उष्ण, तिक्त, मलशोधक तथा मूत्रकृच्छ्र और अत्यन्त दारुण क्रिमिरोगको दूर करे है। राजार्ककटु, तिक्त, तथा कफ, मेद, विष, वातकुष्ठ, व्रण, शोफ, कण्डू और विसर्पको नाशकरे है।

विवरण। आकके वृक्ष जंगल और भूडोंमें अधिकतासे होते हैं। निःसार होती हैं, पत्ते वडके समान होते हैं, फल तोतेके समान। भीतर तीन रुई निकलती हैं, आकके पंच अङ्गका क्षार करते हैं, कफको दूर करे है। इसके पत्तोंको गरम कर पेट पर बांधनेसे पेटका दूर होता है।

स्नुहीनामानि।



स्नुहीसमन्तदुग्धाचनागद्रुर्बहुदुग्धिका।
महावृक्षःसुधावज्राशीहुण्डोदण्डवृक्षकः ॥ (शोडलनि

अर्थ-स्नुही, समन्तदुग्धा, नागद्रु, बहुदुग्धिका, महावृक्ष, सुधा, शीहुण्डा, दण्डवृक्षक, (सीहुण्ड, सिहुण्ड, स्नुक्, स्नुषा, स्नुहा, स्नुही,

वज्रद्रु, वज्रद्रुम, वज्रकण्टक, गुड, गुडा, डि, गु ा, बहुशाल, कृष्णसार, निस्त्रिंशपत्रिका, नेत्रारि, शाखाकण्ट, सेहुण्ड, सिंहतुण्ड, वज्री, काण्डशाख, कुलिशद्रुम, काण्डरोहक)

हिन्दीभाषामें	थूहर, सेहुड।
वंगभाषामें	मनसागाछ सिजवृक्ष।
मराठीभाषामें	निवडुंग, कांटेनिवडुंग, फणीचें निवडुंग, विकांडी, वईनिवडुंग।
गुजरातीभाषामें	थोर दांडलियो, कटाली, कंटालोथोर। हाथलो तरवारी, नानो परदेशी।
कर्णाटकीभाषामें	निवडिंगु, कालि मुंडुकालि।
तैलिङ्गीभाषामें	चेंमुडु।
देशान्तरीभाषामें	सावर।
इंग्रेजी भाषामें	मिल्कसहेज्ज। प्रिक्लीपीयर। MilKs hedge Priekly pear
लैटि०	युफोर्विया ट्रायगोना। Euphorbia Trigona युफोरविग्रानिरिफोलीया। Euphorbia Nirifolia
फारसीभाषामें	लादनाम्
अरबीभाषामें	जकुम, फव्युन।
लैटिन्भाषामें	युफोर्विया टिरुकालाइ। युफोर्विया पेण्टागोना।
तु०	कोडकलि। ता० कलि। मला० तिरुकझि।

स्नुहिगुणाः।

स्नुहिरुष्णःपित्तदाहकुष्ठवातप्रमेहनुत्।
क्षीरंवाताविबाध्मानगुल्मोदरहरंपरम्॥ (रा० नि०)

अर्थ-थूहर—गरम, पित्त, दाह, कुष्ठ, वात और प्रमेहनाशक है। थूहरका दूध—वायु, विष, आध्मान, गुल्म और उदररोगनिवारक है।

अपिच।

सेहुण्डोरेचनस्तीक्ष्णोदीपनःकटुकोगुरुः।
शूलमष्ठीलिकाध्मानकफगुल्मोदरानिलान्॥

उन्मादमोहकुष्ठार्शशोथमेदोश्मपाण्डुहा ।
व्रणशोथज्वरप्लीहविषदूषीविषंहरेत् ॥

अर्थ–सेहुण्ड–रेचक, तीक्ष्ण, अग्निको दीपन करनेवाला, कटु, भारी, शूल, अष्ठीलिका, आध्मान, कफ, गुल्म, उदररोग, वायु, उन्माद, मूर्छा, कोढ, बवासीर, सूजन, मदरोग, पथरी, पाण्डुरोग, व्रण, शोथ, ज्वर, प्लीहा, दूषीविष और विषको दूर करे है ।

अस्यदुग्धगुणाः ।

उष्णवीर्य्यस्नुहिक्षीरंस्निग्धञ्चकटुकंलघु ।
गुल्मिनांकुष्ठिनांचापितथैवोदररोगिणाम् ।
हितमेतद्विरेकार्थेयेचान्येदीर्घरोगिणः ॥

अर्थ—सेहुण्डका दूधउष्णवीर्य, स्निग्ध, चरपरा और हलका है तथा गुल्म, कुष्ठ (उपदंशरोग) उदर इनरोगवालोंको और बहुत कालके रोगियोंको इसका जुल्लाब हितकारी है ।

अस्य पत्रगुणाः ।

सेहुण्डस्यदलंतीक्ष्णंदीपनंरोचनंभवेत् ।
आध्मानाष्ठीलिकागुल्मशूलशोथोदराणिच ॥

अर्थ—सेहुण्डके पत्ते तीक्ष्ण अग्निको दीपन करनेवाले अत्यन्त रुचिकारी तथा आध्मान, अष्ठीलिका, गुल्म, शूल, शोथ और उदररोगको दूर करें ।

अपिच ।

सेहुण्डःकटुकस्तिक्तश्चोष्णस्तीक्ष्णःप्रदीपनः ।
सरोगुरुर्वांतिकरःकुष्ठोदरविनाशकः ॥
प्लीहवातप्रमेहघ्नःशूलामकफशोथनुत् ।
गुल्माष्ठीलाध्मानपाण्डुकफोदरव्रणज्वरान् ॥
उन्मादवातंमेदश्चवृश्चिकस्यविषंहरेत् ।
दूषीविषाशर्शाश्मरीघ्नोमुनिभिःपरिकीर्त्तितः ॥

अर्थ—थूहर. वा सेहुण्ड–कटु, तिक्त, उष्ण, तीक्ष्ण, जठराग्निदीपक, सर, भारी, वान्तिकारक तथा कुष्ठ, उदर, प्लीहा, वात, प्रमेह, शूल, आम, कफ, सूजन, गोला, अष्ठीला, आध्मान, पाण्डुरोग, कफ, उदरव्रण,

उन्माद,वायु,मेद,विच्छूका विष, दूषीविष,बवासीर और पथरीको दूरकरेहै । विवरण । थूहर और सेंड दोनों एकही जातिके वृक्ष हैं सेहुंडकी डंडी कांटेदार और मोटी होती है, पत्ते कोमल पत्थरचटेके समान होते हैं, परन्तु दूध इसकी प्रत्येकशाखा और प्रत्येक पत्तेमें होता है थूहरकी शाखा पतली और पत्तेभी छोटे छोटे हरीमिर्चके समान लम्बे होते हैं इसके सब अंगोंमें दूध निकलताहै । थूहरकी अनेक जातिहैं । जैसे कांटेवाला थूहर, तिधारा थूहर, चौधारा थूहर, नागफनी थूहर खुरासानी थूहर, विलायती थूहर, इत्यादि । खुरासानी थूहरका दूध विषैला होताहै । इसके दूधको बादीके रोगमें तथा सन्धियोंकी पीडामें चुपडनेसे तुरंत पीडा दूर होतीहै । थूहरके दूधकी बाजरेके चूनके साथ गोली बनाकर खानेसे जुल्लाब होकर उदरका रोग दूरहोता है और थूहरके दूधमें चनेकी दालको भिगोकर उसको पीसकर झडवेरके समान गोली बनाकर खानेसे जुल्लाब होकर उपदंश तथा फिरंगरोग दूरहोता है । थूहरकी राख कर उसका खार निकाल अनेक औषधियोंमें डालतेहैं । कांटेवाले थूहरके पत्तोंका शाक बनाकर खाते हैं । उससे उदरके रोग दूर होतेहैं । इसके डंडोंकी भस्मारक नामवाली औषधि बनती है । नागफनी थूहरके लाल पके हुए फल खानेसे श्वास और खांसी दूर होती है ।

सातलानामानि ।



सातलासप्तलासाराविमलाविद्रुलाचसा ।
तथानिगदिताभूरिफेनाचर्म्मकषेत्यपि ॥

अर्थ-सातला, सप्तला, सारा, विमला, विदुला, भूरिफेना, चर्मकषा, (अमला, बहुफेना, फेना, दीप्ता, विषाणिका, स्वर्णपुष्पी, पुत्रघना)

हिन्दीभाषामें	सातला।
वङ्गभाषामें	सिजविशेष।
मराठीभाषामें	निवडुंगाचा भेद।
गुजरातीभाषामें	साथेर।
लटिन् भाषामें	ओरिगेनं वल्गेरीस् Origanm Valgoris
कर्नाटकीभाषामें	वडीलसोतुली, हिरीयचट, कनख।
फारसीभाषामें	एशन्।
अरबीभाषामें	सातर।

सातलागुणाः।

सातलाकटुकापाकेवातलाशीतलालघुः।
तिक्ताशोफकफानाहपित्तोदावर्त्तरक्तनुत॥ (भा.प्र.)

अर्थ-सातला-पचनेमें कटु, वातजनक, शीतल, हलका, तिक्त तथा शो[illegible] कफ, आनाह, पित्त, उदावर्त और रक्तदोषको दूर करेहै।

अपिच।

सातलाकफपित्तघ्नीलघ्वीतिक्ताकषायिका।
विसर्पकुष्ठविस्फोटव्रणशोफनिकृन्तनी॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-सातला-कफपित्तनाशक, लघु, तिक्त, कषाय तथा विसर्प, [illegible] विस्फोट, व्रण और शोफनाशक है।

अन्यच्च।

सातलामुखपाकघ्नीजठरव्रणहृत्सरा॥ (शो.नि.)

अर्थ-सातला-मुखपाक, उदर और व्रणरोगनाशक है।

अपिच।

सातलातुविसर्पघ्नीरेचनीवातशोफनुत्॥ (ग.नि.)

अर्थ-सातला-विसर्परोगनाशक, दस्त करनेवाला, वात तथा सूजन दूर करे है।

अन्यच्च।

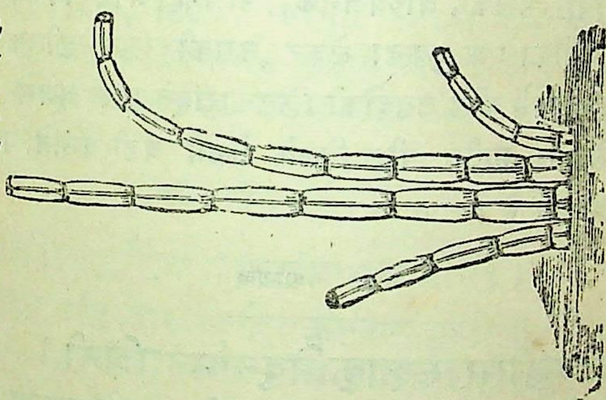
सातलाशीतलातिक्तातीक्ष्णापाकेकटुर्लघुः।
हृद्यानिलंप्रकुरुतेहरतेहृद्रुजंकफम्॥

पित्तोदावर्तकुष्ठार्शोगुल्मोदरगतंविषम् ।
आनाहकृमिशोफामंनाशयेदितिकीर्त्तितम् ॥

अर्थ-सातला- शीतल, तिक्त, तीक्ष्ण, पचनेमें कटु; लघु, हृदयको हितकारी, अग्निजनक तथा हृदयरोग, कफ, पित्त, उदावर्त, कुष्ठ बवासीर, गुल्म, उदरविष, आनाह, कृमि; शोफ और आमको दूर करे है ।

विवरण । सातलेकी वेल जंगल और वनोंमें होती है, पत्ते खैरके पत्तोंके समान छोटे छोटे होते हैं । फूल पीला होता है । उसमें पतली तथा चपटी फली लगती हैं । उसमें काले बीज निकलते हैं । इसमें पीले रंगका दूध निकलता है ।

अस्थिसंहारिनामानि ।



वज्रवल्ल्यस्थिसंहारीकुलिशंचशिरालकः ॥

अर्थ-वज्रवल्ली, अस्थिसंहारी, कुलिश, शिरालक (ग्रन्थिमान्, अमर, वज्राङ्गी, अस्थिशृंखला, अस्थिसंहारक, क्रोष्टुघण्टिका)

हिंदीभाषामें	हडसंहारी, हडजोड, हडसंकरी ।
बंगभाषामें	हाडभाङ्गा ।
गुजरातीभाषामें	हाडसांकला, वेधारी, तरधारी, चोधारी ।
मराठीभाषामें	कांडवेल, त्रिधारी, चौधारी,
तैलिङ्गीभाषामें	नालेह ।
लैटिन् भाषामें	विटिस्क्रौंड्रग्युलारिस् । Vitisquodrou gularis साइसस् काड्रेग्युलोरिस्

अस्थिसंहारिगुणाः ।

अस्थिसंहारकःप्रोक्तोवातश्लेष्महरोस्थियुक् ।

उष्णःसरःकृमिघ्नश्चदुर्नामघ्नोऽक्षिरोगजित् ॥
रूक्षःस्वादुर्लघुर्वृष्यःपाचनःपित्तलःस्मृतः ।
कांडत्वग्विरहितमास्थिशृंखलाया
माषार्द्धद्विदलमकंचुकंतदर्द्धम् ।
संपिष्टंसुतनुततास्तिलस्यतैले
संपक्ववंवटकमतीववातहारि ॥ (भा. प्र)

अर्थ-हडसंहारी-वातकफनाशक, टूटी हड्डीको जोडनेवाली, सारक, कृमिघ्न, बवासीरको दूर करनेवाली, आंखके रोगका नाशकरनेवा रूखी, स्वादिष्ठ, हलकी, वीर्य्यंजनक, पाचक और पित्तकारक है। ह हारीकी लकडीका एक टुकडा लेकर उसकी छाल छीलकर चूर्ण क पश्चात् उस चूर्णमें गीले उडदोंकी छिलकारहित दाल चूर्णसे आधी मि दोनोंको सिलपर महीन पीस तिलके तैलमें वडी बनावे, यह वडी अ वातका नाश करे है ।

अन्यच्च ।

वज्रवल्लीसरारूक्षाकृमिदुर्नामनाशिनी ।
दीपन्युष्णाविपाकेम्लास्वाद्वीवृष्याबलप्रदा ॥
अर्शसांतुविशेषेणहिताचैवाग्निदीपनी ।
चतुर्धाराकाण्डवल्लीभूतोपद्रवशूलहा ॥
अत्युष्णाध्मानवातांश्चतिमिरंवातरक्तकम् ।
अपस्मारंवातरोगंनाशयेदितिकीर्त्तितम् ॥
त्रिधाराकाण्डवल्लीतुसरालघ्व्यग्निदीपनी ।
रूक्षोष्णामधुरावातकृम्यर्शःकफनाशिनी ॥
काण्डवल्लीतुकटुकातिक्ताचोष्णासरामता ।
पित्तलाचकफंगुल्मंलूतांदुष्टव्रणंतथा ॥
प्लीहोदराग्निमांद्यानिशूलंवातंचनाशयेत् ।
मलस्तम्भहराचैवकीर्त्तितामुनिभिःपुरा ॥ (नि० र०)

अर्थ—वज्रवल्ली-दस्तावर, रूखी, कृमि, बवासीरनाशक, पचनेमें अम्ल, स्वादिष्ठ, वीर्यजनक, बलदायक, विशेषकरके बवासीरके लिये अधिक हितकारी है और अग्निदीपक है। चौधारा काण्डवेल -भूतोपद्रवको दूर करनेवाली, शूलनाशक, अत्यन्त उष्ण तथा आध्मान, वात, तिमिर, वातरक्त, अपस्मार और वातरोगविनाशक है। त्रिधारी काण्डवेल--दस्तावर, हलकी, अग्निदीपक, रूखी, उष्ण, मधुर तथा वात, कृमि, बवासीर और कफनाशक है। काण्डवल्ली--कटु, तिक्त, उष्ण, दस्तावर, पित्तजनक तथा कफ, गुल्म, खुजा, दुष्टव्रण, प्लीहा, उदर, मंदाग्नि, शूल, वात और मलस्तम्भको दूर करे है।

विवरण। इसकी वेल थूहरकी जाति होती है, इस वेलमें चार छे अंगुलपै गांठ होती है, यह द्विधार, तिधार, चारधार इनमेंसे एक हडसंघारीकी जाति होती है। काण्डवेलके भिन्नभिन्न भागमें काण्ड होती है इस कारण संस्कृतमें इसको काण्डवल्ली कहते हैं, यह शंकलके समान होती है, इसलिये इसको हडशङ्करी कहते हैं।

कलिकारीनामानि।

कलिकारीलाङ्गलिकीदीप्ताचगर्भघातिनी।
अग्निजिह्वावह्निशिखावह्निवक्त्राचलांगुली॥

अर्थ-कलिकारी, लाङ्गलिकी, दीप्ता, गर्भघातिनी अग्निजिह्वा, वह्निशिखा, वह्निवक्त्रा, लांगुली, (हलिनी, गर्भपातिनी, विशल्या, अग्निमुखी, हली, नक्ता, इन्द्रपुष्पिका, विद्युज्ज्वाला, व्रणहृत्, पुष्पसौरभा, स्वर्णपुष्पा, इन्द्रपुष्पिका, शक्रपुष्पी, अनन्ता, कलिकारिका, लांगलिका, गर्भनुत्)

संस्कृतभाषामें	कलिकारी।
हिन्दीभाषामें	कलिहारी, कलियारी।
बंगलामें	विषलाङ्गला, ईशलाङ्गला।
मराठीभाषामें	खडयानाग, चगमोड्या, कळलावी।
गुजरातीभाषाम	डुधियो, बछनाग, कलगारी।
को०	कलई।
कर्णाटकीभाषामें	राडागारी।
मला.	मेहोन्नि, कांडल।
इंग्रजीभाषामें	वुल्फसबेन। Wolfs bane
लेटिनभाषामें	ग्लोरीओझासुपर्बा। Gloriosa superba
	एकोनाइटमूनेपिलम्। Acomtum napellus

अस्या गुणाः ।

कलिकारीसरातीक्ष्णाकुष्ठदुष्टव्रणापहा ॥ (वि० ति०

अर्थ—कलिहारी-सारक, तीक्ष्ण और कुष्ठ तथा दुष्ट व्रणको नष्ट करनेवाली है ।

अपिच ।

कलिकारीसराकुष्ठशोफार्शोव्रणशूलजित् ।
सक्षाराश्लेष्मजित्तिक्ताकटुकातुवरापिच ॥
तीक्ष्णोष्णाकृमिहल्लध्वीपित्तलागर्भपातिनी । (भा.

अर्थ—कलिहारी, सारक, कुष्ठ, शोफ, बवासीर, व्रण और शूलको दूर करे है । क्षाररसयुक्त, कफनाशक; कडवी, चरपरी, कषेली, तीक्ष्ण, गरम, कृमिहारक, हलकी, पित्तजनक और गर्भको गिरानेवाली है ।

अन्यच्च ।

कलिकारीसरातीक्ष्णागर्भशल्यव्रणापहा ।
शुष्कगर्भश्चगर्भश्चपातयेल्लेपमात्रतः ॥ (शो. नि.)

अर्थ—कलिहारी-सारक, तीक्ष्ण तथा गर्भशल्य और व्रणनाशक, शुष्कगर्भ और गर्भको केवल लेपसेही गिरानेवाली है ।

अपिच ।

कलिकारीसरातिक्ताकट्वीपट्वीचपित्तला ।
तीक्ष्णोष्णातुवरालध्वीकफवातकृमिप्रणुत् ॥
वस्तिशूलंविषंचार्शःकुष्ठंकण्डूंव्रणंतथा ।
शोथंशोषश्चशूलश्चनाशयेदितिकीर्तिता ॥
शुष्कगर्भश्चगर्भश्चपातयेदितिकीर्तिता । (नि. र.)

अर्थ—कलिहारी--सारक, कडवी, चरपरी खारी, पित्तकारी, तीक्ष्ण, कषेली, हलकी तथा कफ, वात. कृमि, वस्ति शूल, विष और कोढ, बवासीर, कण्डू व्रण, सूजन, शोष, शूल, शुष्कगर्भ और गर्भको दूर करनेवाली है ।

विवरण । कलिहारीका क्षुप बच्छनागकी वेलके समान बडकी जडवाला होता है, पत्ते अंधाहुली समान होते हैं । फूल--लाल और पीले तरंगके अत्यन्त सुंदर होते हैं । फल--तीनरेखावाले मिरचके समान

इसके भीतर लाल छालवाले इलायचीके बीजोंके समान बीज होते हैं, इसकी जड़के नीचे गांठ होती है, उसकी ऊपरकी छाल पिलाई लिये होती है, इस गांठको वच्छनाग कहते हैं इसमें विष होता है।

करवीरनामानि ।


कनेर.

करवीरःश्वेतपुष्पःशतकुम्भोऽश्वमारकः ।
द्वितीयोरक्तपुष्पश्चचण्डालोलगुडस्तथा ॥

अथ-करवीर, श्वेतपुष्प, शतकुम्भ, अश्वमारक, (प्रतिहास, शतप्रास चडात, हयमारक, अश्वमार, अश्वघ्न, हयारि, शीतकुम्भ, तुरंगारि, रंगारि, शतकुम्भ, प्रचंड, अश्वहा, वीर, हयमार, हयघ्न, शतकुन्द, अश्वरोधक, स्थूलकुन्द, शंकुद्र, तुंगारी, श्वेतपुष्पक, अश्वान्तक, नखराह्व, अश्वनाशक, श्वेतकुमुद, दिव्यपुष्प, हरिप्रिय, गौरीपुष्प और सिद्धपुष्प, यह नाम श्वेतकरवीरके हैं। रक्तपुष्प, चडात, लगुड, रक्तप्रसव, गणेशकुसुम, चंडीकुसुम, क्रूर, भूतद्रावी, रविप्रिय)

संस्कृतभाषामें	करवीर, श्वेतकरवीर, रक्तकरवीर ।
हिन्दीभाषामें	सफेदकनेर, लालकनेर, पीलीकनेर, काले फूलकी कनेर ।
बंगालाभाषामें	करवी, लालकरवी ।
मराठीभाषामें	कहेर, पांढरी, तांबडी, पिंवळी ।
गुजरातीभाषामें	कणेर, धोळांफुळनी, रातांफुलनी, गुलाबी-फूलनी, पीला फूलनी ।
कर्णाटकीभाषामें	वाकणलिंगे । केगणलिंगे ।

तैलिङ्गीभाषामें कानेरचेट्टु ।
अंग्रेजीभाषामें स्वीट्सेन्टेड् ओलियंडर Sweet scruted olea
लैटिन्भाषामें नीरीयं ओडोरम् Nirinm odorum नीरीयम्
ओलियंडर Nerirum obander सर्वेराथिविटिया Cerbera Ther
फारसीभाषामें खरजेहरा ।
अरबीभाषामें सुमुल, हिमारदकली ।

श्वेतादिकरवीरगुणाः ।

हयारिःपञ्चधाप्रोक्तःश्वेतोरक्तश्चपाटलः ।
पीतःकृष्णःसमुद्दिष्टःश्वेतस्यैताःगुणाञ्छृणु ॥
कटुस्तिक्तश्चतुवरस्तीक्ष्णोवीर्येणचोष्णदः ।
ग्राहीमेहकृमीन्कुष्ठव्रणार्शोवातनुत्परः ॥
भक्षितोविषवज्ज्ञेयोनेत्र्योलघुविषापहः ।
विस्फोटकुष्ठकृमिनुत्कण्डूव्रणकफापहः ॥
ज्वरंनेत्ररुजंचैवहयप्राणांश्चनाशयेत ।

अर्थ--कनेर--सफेद, लाल, गुलाबी, पीली और काली इसप्रकार भेदसे पांच प्रकारकी है। इनमें सफेद कनेर कटु, तिक्त, कषैली, उष्णवीर्य, ग्राही तथा प्रमेह, कृमि, कोढ, घाव, बवासीर और वात है, यह भक्षण करनेमें विषके समान है, और नेत्रोंको हितकारी, हलकी विस्फोट, कुष्ठ, कृमि, कंडू व्रण, कफ, ज्वर, नेत्ररोग और घोडेके प्राण हरनेवाली है ।

रक्तकरवीरगुणाः ।

रक्तवर्णःशोधकःस्यात्कटुःपाकेचातिक्तकः ।
कुष्ठादिनाशकोलेपादथपाटलवर्णकः ॥
शीर्षपीडांकफंवातंनाशयेदितिकीर्तितः ।
रक्तादिचतुरोभेदागुणाः श्वेतहयारिवत् ॥ (नि. र.)

अर्थ--लाल कनेर-शोधक, चरपरी, पचनेके समय कडवी और लेप करनेसे कोढ दूर होता है । गुलाबी कनेर-मस्तकशूल, कफ

इनका नाश करे है, इसके और गुण तथा पीली, काली कनेरोंके गुण सफेद कनेरकी समान जानने ।

विवरण। कनेरके वृक्ष, वन, उपवन और पुष्पवाटिकामें लगाये जाते हैं । इसपर लाल, गुलाबी, सफेद, पीले और काले फूल आते हैं लाल, पीले और सुफेद फूलकी कनेर सर्वत्र होती है ।

कनेरमें विष होता है। इसको विना विचारे खानेसे मनुष्य मृत्युको प्राप्त होवे हैं इसकारण इसको विना विचारे कभी भक्षण करना नहीं चाहिये । इसका घी बनाते हैं, वह घी अत्यन्त नसीला होता है। मात्रा दोरत्तीसे लेकर चाररत्तीतककी ।

धुस्तूरनामानि ।





धतूरा.

धुस्तूरोमदनोन्मत्तःकितवःकनकाह्वयः ।
शिवप्रियोमहामोही देविकाखरदूषणः ॥

अर्थ-धुस्तूर, मदन, उन्मत्त, कितव, कनकाह्वय, शिवप्रिय, महामोही, देविका, खरदूषण, (धूर्त, मातुल, पुरीमोह, धूर्तकृत, धत्तर, घण्टिक, शठ, मातुलक, श्याम, शिवशेखर, खर्ज्जूघ्न, काहलापुष्प, खल, कण्टफल, मोहन लक्ष्म, मत्त, शैव, तूरी, धुस्तुर, धुत्तूर, उन्मत्तक, मदनक, हरवल्लभ, कण्ट-

फल, कनक, सविष, मोहन, मदकर, घण्टापुष्प, महाशठ और जितने ... के नाम हैं वो सब इसके भी जानने)

हिन्दीभाषामें धतूरा ।
बंगलाभाषा,, धुतुरा ।
मराठीभाषा,, धोत्रा, धोतरा ।
गुजरातीभाषा,, धंतुरो ।
कर्णाटकीभाषा,, मदकुणिके ।
तैलिंगीभाषा,, नाल्लाउम्मीते, उम्मेत्तचेट्टु ।
तामिलीभाषा,, उमतताई, कारुउमते ।
पाह्लीभाषा,, सतुल्या, तातरईसफेदा ।
इंग्रेजीभाषा,, थोर्नआपल स्ट्रामोनियं Thorn apple Stramoni...
लैटिन्भाषा,, डाटुरा स्ट्रामोनियं डाटुराआल्बा, डा० फेस्टुओसा
: Datura stramonm D. albo D. Fost...
अरबीभाषा,, जोजमासील जोजनसी तातूरा ।

अस्य गुणाः ।

धत्तूरोमदवर्णाग्निवातकृज्ज्वरकुष्ठनुत् ।
कषायोमधुरस्तिक्तोयूकालिक्षाविनाशनः ॥
उष्णोगुरुर्व्रणश्लेष्मकण्डूकृमिविषापहः । (भा० प्र०)

अर्थ-धतूरा मद, वर्ण, अग्नि और वात इनको करनेवाला, ज्वरको ... करनेवाला,कोढका नाश करनेवालाकषेला, मीठा, कडवा जुयें और लीखें ... दूर करनेवाला, गरम, भारी तथा व्रण, कफ, कण्डू, कृमि और विषनाशक ...

अपिच

धत्तूरःकटुरुष्णश्चकांतिकारीव्रणार्तिनुत् ।
त्वग्दोषखर्जूकण्डूतिज्वरहारीभ्रमप्रदः । (रा० नि०)

अर्थ—धतूरा—कटु, उष्ण, कान्तिकारी तथा व्रण, त्वचाके रोग खर्जू ... और ज्वरको दूर करे तथा भ्रमदायक ह ।

अन्यच्च ।

धत्तूरोदुष्टरक्तघ्नोव्रणहाविषपित्तकृत् ॥ (शोढलनिघण्टु)

अर्थ—धतूरा—दुष्टरक्तनाशक, व्रणको दूर करनेवाला विष, और पि... दूर करे है ।

अपिच ।

धत्तूरकौचसविषौतिक्तोग्रौमोहकारकौ ।
कुष्ठदुष्टव्रणहरौकामलाशोंविषापहौ ॥ (ग० नि०)

अर्थ—दोनोंप्रकारके धत्तरे (काला और सफेद) विषयुक्त, कडवे, उग्र, मोहकारक तथा कुष्ठ, दुष्टव्रण, कामला, बवासीर और विषको नष्टकरेहैं ।

अपिच ।

धत्तूरःकांतिकृच्चोष्णःकटुकश्चाग्निदीपकः ।
तुवरोमधुरास्तिक्तोमदकृद्वांतिकृद्गुरुः ॥
वर्ण्यःकुष्ठव्रणश्लेष्मज्वरकण्डूकृमीञ्जयेत् ।
यूकालिक्षाश्रमविषपामात्वग्दोषनाशनः ॥
एषुकृष्णोगुणैःश्रेष्ठोमुनिभिःपरिकीर्त्तितः (नि. र.)

अर्थ—धतूरा—कान्तिकारक, गरम, चरपरा, अग्निदीपक, कषैला, मधुर, कडवा, मदकारक, वान्तिकरनेवाला, भारी, वर्णकर्त्ता तथा कुष्ठ, व्रण, कफ, ज्वर, कण्डू, कृमि, जुंआ, लिख, आम, विष, पामा और त्वचाके रोगोंका नाश करेहै इन सबप्रकारके धतूरोंमें काला गुणोंमें श्रेष्ठ है ।

अपिच ।

धुस्तूरोमूर्च्छाजनकोवह्निपित्तञ्चनाशयेत् (रा० व०)

अर्थ—धतूरा—मूर्च्छाकारक अग्नि और पित्तका नाशकरेहै ।

कृष्णधत्तूरकनामानि ।

कृष्णधत्तूरकःसिद्धःकनकःसचिवःशिवः ।
कृष्णपुष्पोविषारातिःक्रूरधूर्त्तश्चकीर्त्तितः ॥ (रा. व.)

अर्थ—कृष्णधत्तरक—सिद्ध, कनक, सचिव, शिव, कृष्णपुष्प, विषाराति क्रूरधूर्त्त ।

हिन्दीभाषामें कालाधतूरा ।
बंगलाभाषामें धुत्तुरा, कनकधुत्तुरा ।
कर्णाटकीभाषामें करीयमदगणिके ।

राजधत्तूरनामानि ।

राजधत्तूरकश्चान्योराजधूर्त्तोमहाशठः ।

निस्त्रैणिपुष्पकोभ्रान्तोराजस्वर्णःषडाह्वयः ॥

अर्थ—राजधनूरक, राजधूर्त्त, महाशठ, निस्त्रणिपुष्पक, भ्रान्त, राज[illegible] और षडाह्वय ।

सितनीलकृष्णलोहितपीतप्रसवाश्चसंतिधत्तूराः।
सामान्यगुणोपेतास्तेषुगुणाढ्यस्तुकृष्णकुसुमःस्यात्

अर्थ—धत्तूरे—सफेद, नीले, काले, लाल और पीले फूलके होते[illegible] सबोंमें सामान्यही गुण हैं, किन्तु काले फूलका धतूरा अधिक गुणवाला[illegible]

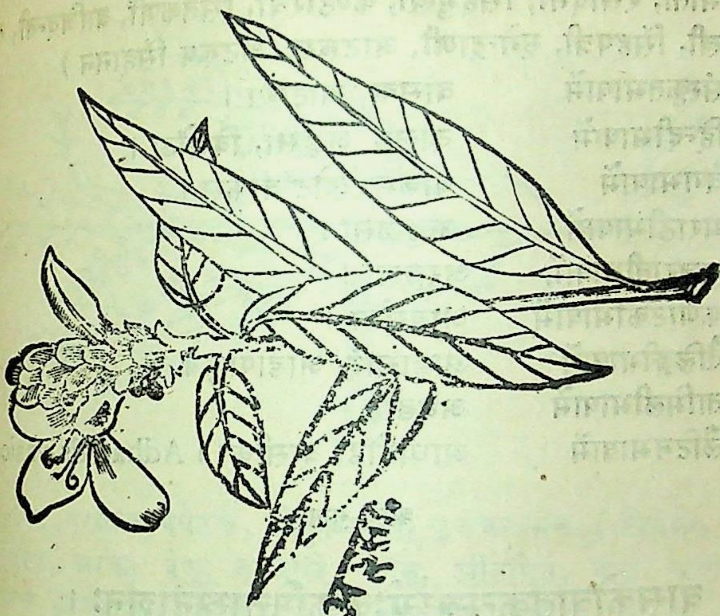
प्रयोग ।

श्वासके रोगमें बढेहुएश्वासको रोकनेके लिये इसके सूखे डंठल और [illegible] धुआं पिलावै । वातादिरोग और चोटलगीहुई दर्दकी जगहमें धतूरे[illegible] गायका घी और सैंधानोंन मिलाकर दर्दके स्थानमें लगावे । धतूरेके [illegible] वातजनित शिरोरोग आराम होताहै ।

विवरण । धतूरा फूलोंक भेदसे काला, नीला, सफेद, पीला ४–५ [illegible] रका होताहै । प्रायः जंगलमें उत्पन्न होताहै । काले और सुनहरी [illegible] धतूरा बागादिमें होताहै, पत्ते मध्यमाकार होतेह, फूल घण्टेके आकार [illegible] फूलका रंग बीचमें सफेद और ऊपर सफेद, नीला, काला पीला, [illegible] जिसके पांच भाग होतेहैं फूलकी बाहिरी पांच पखडियाँ नीलेरंगकी [illegible] फल—गोल, कांटेदार और भीतर बहुत बीजवाला होताहै । जिस धतूरे[illegible] अत्यन्त काला और दण्डी, पत्ते, फल, फूल तथा सर्वांग काला हो, उस[illegible] विष अधिक होताहै और उसके गुणभी अधिक हैं, फल सूखनेपर [illegible] होजाते हैं इसके बीजोंमें विष अधिक होता है, उन बीजोंको मात्रासे [illegible] खानेसे मृत्यु होती है, वंधेजादिक धातुपुष्टिकी औषधिमें इसके [illegible] व्यवहार ग्रन्थोंमें लिखा है, इसके बीज प्रमेहको दूर करनेवाले हैं, [illegible] धतूरेके पंचांगकी धूपसे खांसी दूर होतीहै । धतूरेके मदको दूर करने[illegible] धतूरेकी भींगका नास लेना चाहिये, धतूरेका नास धतूरेके विषको दू[illegible] नेवाला है । अथवा धतूरेके विषमें उसको पीसकर पिलावै, तथा [illegible] दुहा हुआ दूध और घी मिलाकर पीजाय ।

व्यवहार-मूल, पत्ते, बीज । मात्रा आधी रत्तीसे एक रत्तीतक ।

वासकनामानि ।





वासकोवासिकावासासिंहिकारामरूपकः ।
मातृसिंहीवैद्यमाताकसनोत्पाटनोवृषः ॥

अर्थ-वासक, वासिका, वासा, सिंहिका, रामरूपक, मातृसिंही, वैद्यमाता, कसनोत्पाटन, वृष, (अटरूष, सिंही, वृष, सिंहास्य, वाजिदन्तक, आमलक, वाशा, वाशिका, अटरूष वासक, वास, वाजी, वैद्यसिंही, सिंहपर्णी,

भिषङ्माता, रसादनी, सिंहमुखी, कण्ठीरवी, सितकर्णी, वाजिदन्ती, नाग पञ्चमुखी, सिंहपत्री, मृगेन्द्राणी, आटरूख, अटरूष सिंहानन)

संस्कृतभाषामें	वासक, आटरूष ।
हिन्दीभाषामें	वासा, अडूसा, विसौटा ।
वंगभाषामें	वाकस, छोट वाकस ।
मराठीभाषामें	अडुळसा ।
गुजरातीभाषामें	अरडुशो ।
कर्णाटकीभाषामें	आडसोगे ।
तैलिङ्गीभाषामें	आडासारं, आडापाकु ।
तामिलीभाषामें	अधडोडे ।
लैटिन्भाषामें	आधाटोढा वासीका । Adhatods vasica

अस्य गुणाः ।

वासकोवातकृत्स्वर्य्यःकफपित्तास्रनाशनः ।
तिक्तस्तुवरकोहृद्योलघुःशीतस्तृडार्तिहृत् ॥
श्वासकासज्वरच्छर्दिमोहकुष्ठक्षयापहः । (भा. प्र.)

अर्थ-अडूसा-वातकारक, स्वरको उत्तम करनेवाला, कफघ्न, रक्तपित्त नाशक, कडवा, कषेला, हृदयको हितकारी, हलका, शीतल तथा तृ० श्वास, खांसी, ज्वर, वमन, मोह, कोढ और क्षयरोगको दूर करहै।

अन्यच्च ।

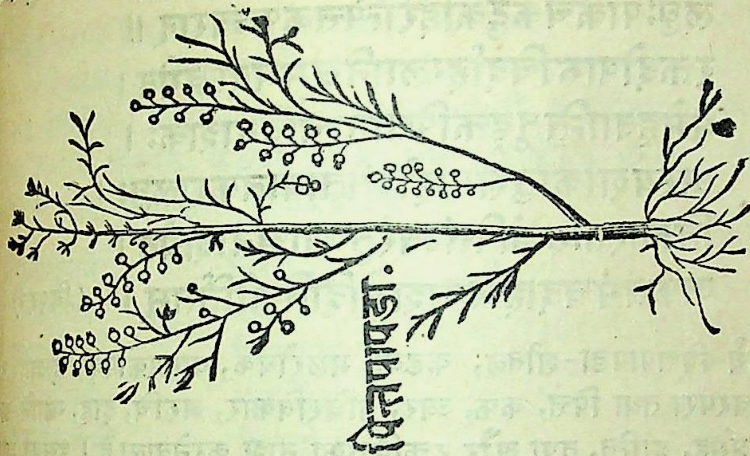
वासातिक्ताकटुःशीताकासघ्नीरक्तपित्तजित् ।
कामलाकफवैक्लव्यज्वरश्वासक्षयापहा ॥ (राजनि.)

अर्थ-अडूसा-तिक्त, कटु, शीतल तथा खांसी, रक्तपित्त, कामला, क० विकलता, ज्वर, श्वास और क्षयरोगनाशक है ।

अडूसेका क्षुप होता है, पत्ते लम्बे अनीदार, अमरूदके समान होते फूल सफेद लगता है, दूसरा एक और लाल फूलका अडूसा होता अडूसा सर्वत्र प्रसिद्ध है ।

पर्पटनामानि ।

पर्पटोवरतिक्तश्चस्मृतःपर्पटकश्चसः ।
कथितःपांशुपर्य्यायस्तथाकवचनामकः ॥



अर्थ-पर्पट, वरतिक्त, पर्पटक, पांशुपर्य्याय, कवचनामक, (त्रियष्टि, तिक्त, चरक, वरक, अरक, रेणु, तृष्णारि, शीत, शीतप्रिय, पांशु, कलपाङ्ग, वर्म्मकण्टक, कृष्णशाख, प्रगन्ध सुतिक्त, रक्तपुष्पक, पित्तारी, कटुपत्र, नक्र, शीतवल्लभ)

संस्कृतभाषामें पर्पट।
हिन्दीभाषामें पित्तपापडा, दवन पापरा।
वंगभाषामें क्षेत् पापडा।
मराठीभाषामें सिरपठी, पित्तपापडा, को०-थरमरें।
वम्० पित्तपापडा।
गुजरातीभाषामें पितपापडो, खडसलियो।
क्षेत्रपर्पट, धातो।
कर्णाटकीभाषामें पर्पाटक।
तैलिंगीभाषामें पापार्टकमु।
औत्कलीभाषामें जडपाँपुडा।
अंग्रेजीभाषामें जस्टिसयाप्रोकंबेन्स। Justici Procoıahens
लेटिन्भाषामें फुमेरियापार्वीफ्लोरा। Eumeria Parvifiora
फुमेरियाओफिसिनेलीस। Fumerin oficinalis
फारसीभाषामें शातरा।
अरबीभाषामें बकलतल मलीक।

अस्य गुणाः।

पर्पटःशीतलस्तिक्तःसंग्राहीवातकोपनः।

लघुःपाकेचकटुकोहरेत्पित्तकफज्वरान् ॥
रक्तदोषारुचिर्दाहग्लानिभ्रममदाञ्जयेत् ।
प्रमेहवान्तितृड्रक्तपित्तानांचविनाशकः ।
अस्यशाकातुसंग्राहीशीतावातकरालघुः ।
तिक्तारक्तरुजंपित्तंज्वरंतृष्णाश्चनाशयेत् ।
कफंभ्रमंचदाहश्चनाशयेदितिकीर्तितम् । (नि०र०)

अर्थ-पित्तपापडा-शीतल, कडवा, मलरोधक, वातप्रकोपक, हलका, पाकमें चरपरा तथा पित्त, कफ, ज्वर, रुधिरविकार, अरुचि, दाह, ग्लानि, भ्रम, मद, प्रमेह, वान्ति, तृषा और रक्तपित्तका नाश करनेवाला है। इसका शाक मलरोधक, शीतल, वातकारक, हलका, कडवा, रक्तरोग, पित्तज्वर, तृषा, कफ, भ्रम और दाहको दूर करेहै ।

विवरण । इसका क्षुप होता है, इसकी दो जाती हैं एकमें नीला फूल दूसरेमें लाल फूल आता है, इन दोनोंमें लालफूलका अधिक गुणवाला है।

निम्बनामानि ।



निम्बोनियमनोनेतापिचुमंदःसतिक्तकः ।
अरिष्टःसर्वतोभद्रःसुभद्रःपारिभद्रकः ॥
शुकप्रियःशीर्षपर्णोयवनेष्टोवरत्वचः ।
छर्दनोहिंगुनिर्यासःपीतसारोरविप्रियः ॥

अर्थ-निम्ब, नियमन, नेता, पिचुमंद, सतिक्तक, अरिष्ट, सर्वतोभद्र, सुभद्र, पारिभद्रक, शुकप्रिय, शीर्षपर्ण, यवनेष्ट, वरत्वच, छर्दन, हिंगु, निर्यास, पीतसार, रविप्रिय, (मालक, पिचुमंद, पक्कृत, पूयारि, अर्कपादप, पूकमालक, कीटक, विबन्ध, निम्बक, कैटर्य्य, छर्दिघ्न, प्रभद्र, काकफल, कीरेष्ट, सुमना, विशीर्णपर्ण, पीतसारक, शीत, राजभद्रक)

संस्कृतभाषामें	निम्ब ।
हिन्दीभाषामें	नीम ।
बङ्गभाषामें	निमगाछ ।
मराठीभाषामें	कडूनिंब ।
गुजरातीभाषामें	लिंबडो ।
कर्णाटकीभाषामें	बेड वेवु ।
तैलङ्गीभाषामें	वेया, टोयचेट्टु ।
तामिलीभाषामें	वेपुम्मरम ।
अंग्रेजीभाषामें	निंबट्री । Nunbtree
लैटिन्भाषामें	एकाडिरेकटा इंडिका । Azadiracta Indica मेलियाएकाडिरेकटा । Mch Aoadziracta
फारसीभाषामें	नेनवूनीम दरख्तहक ।

अस्य गुणाः ।

प्रभद्रकःप्रभवतिशीतातिक्तकःकफव्रणक्रिमिवमिशोफशांतये
बलासभिद्बहुविधपित्तदोषजिद्विशेषतोहृदयविदाहशांतिकृत् ।

अर्थ-प्रभद्रक-(नीम) शीतल, कडवा तथा कफ, व्रण, कृमि, वमन, सूजन, बलास, बहुविध पित्तदोष और विशेषकरके हृदयकी दाहको शान्तकरे है ।

अन्यच्च ।

निम्बवृक्षोलघुःशीतस्तिक्तोग्राहीकटुःस्मृतः ।
अग्निमांद्यकरश्चैवव्रणशोधनकारकः ॥
शोथपाककरोबालेहितोरुद्योमतोबुधैः ।
कृमिवान्तिव्रणकफशोफपित्तविषापहः ॥
वातंकुष्ठञ्चहृद्दाहंश्रमंकासंज्वरंतृषाम् ।
अरुचिंरक्तदोषञ्चमेहञ्चैवविनाशयेत् ॥

अर्थ-नीम- हलका, शीतल, कडवा, ग्राही, कटु, मन्दाग्निकारक, शोधक, शोफको पकानेवाला, बालकोंको हितकारक तथा कृमि, वमन, कफ, शोथ, पित्त, विष, वात, कुष्ठ, हृदयकी दाह, श्रम, खांसी, ज्वर, अरुचि, रुधिरविकार और प्रमेहका नाश करेहै ।

अस्य कोमलपल्लवगुणाः ।

कोमलःपल्लवश्चास्यग्राहकोवातकारकः ।
रक्तपित्तंनेत्ररोगंकुष्ठञ्चैवाविनाशयेत् ॥ (नि. र.)

अर्थ-इसके कोमल पत्ते-ग्राही, वातकारक तथा रक्तपित्त, नेत्ररोग और कुष्ठनाशक हैं ।

अस्य सामान्यपत्रगुणः ।

निम्बपत्रंस्मृतंनेत्र्यंकृमिपित्तविषप्रणुत् ।
वातलंकटुपाकञ्चसर्वारोचककुष्ठनुत् । (भा. प्र.)

अर्थ-नीमके पत्ते-नेत्रोंको हितकारी,कृमि,पित्त और विषविनाशक, बादी, पचनेमें कटु, तथा सर्वप्रकारकी अरुचि और कुष्ठनाशक हैं ।

अस्य जीर्णपत्रगुणाः ।

जीर्णपर्णविशेषेणव्रणनाशकरंमतम् ॥ (नि. र.)

अर्थ-इसके पुराने पत्ते-विशेष करके व्रणको दूर करनेवाले हैं ।

अस्य पुष्पगुणाः ।

निम्बवृक्षस्यपुष्पाणिपित्तघ्नानिविशेषतः ।
तिक्तानिचकृमिघ्नानितथाकफहराणि च ॥

अर्थ-नीमके फूल-पित्तनाशक, कडवे तथा कृमि और कफ हरनेवाले हैं ।

अस्य सूक्ष्मशाखादिगुणाः ।

निम्बस्यसूक्ष्मशाखातुकासश्वासार्शगुल्महा ।
कृमिमेहहराप्रोक्ताफलंचामंलघुस्मृतम् ॥
स्निग्धञ्चभेदकचोष्णंमेहकुष्ठविनाशकम् ।

अर्थ-इसकी सूक्ष्मशाखें-खांसी, श्वास, बवासीर, गुल्म, कृमि और प्रमेहको दूर करनेवाली हैं, इसके अपक फल (कच्चीनिंबोली) लघु, स्निग्ध, भेदक, गरम, प्रमेह और कुष्ठको नष्ट करे है ।

अन्यच्च ।

आम्रंफलंरसेतिक्तंपाकेतुकटुकंमतम् ।
स्निग्धंलघूष्णंकुष्ठघ्नंगुल्मार्शःकृमिमेहनुत् ॥

अर्थ-कच्ची निंबोली-रसमें कडवी, पचनेमें चरपरी, स्निग्ध, हलकी, गरम तथा कोढ, गुल्म, बवासीर, कृमि और प्रमेहको हरनेवाली है ।

अस्य पक्वफलगुणाः ।

निम्बस्यपक्वंमधुरंसुतिक्तंस्निग्धंफलंशोणितपित्तरोगे ।
कफेप्रशस्तंनयनामयघ्नंक्षतक्षयघ्नंगुरुपिच्छलञ्च ॥

अर्थ-पक्की निंबोली-मधुर, कडवी, स्निग्ध तथा रक्तपित्त, कफ, नेत्ररोग, क्षत और क्षयरोगनाशक है तथा भारी और पिच्छल है ।

अस्य बीजस्य मज्जागुणाः ।

निम्बबीजस्यमज्जातुकुष्ठघ्नीकृमिनाशिनी ।

अर्थ-निंबोलीकी मींग-कुष्ठ और कृमिनाशक है ॥

अस्य तैलगुणाः ।

निम्बतैलन्तुकुष्ठघ्नंतिक्तंकृमिहरंपरम् ॥

अर्थ-नीमके बीजोंका तेल-कडवा कुष्ठ और कृमिनाशक है ।

अस्य पञ्चाङ्गगुणाः ।

निम्बवृक्षस्यपञ्चांगंरक्तदोषहरंमतम् ।
पित्तंकण्डूंव्रणंदाहंकुष्ठञ्चैवविनाशयेत् ॥

अर्थ-नीमका पंचांग--(छाल, पत्ते, फूल, फल, जड) रुधिरविकार, पित्त, खुजली, व्रण, दाह और कुष्ठको दूर करेहै ।

विवरण । नीमका वृक्ष बडा होताहै, हिन्दोस्थानके सर्व स्थानोंमें अधिकतासे पाया जाताहै । वसंतऋतुके आरम्भमें नये पत्ते और अन्तमें फूल आतेहैं । वमिरोगमें, पत्तोंको पानीमें पकाके रोगीको पिलावे तो वमन और ज्वररोग बंद होजायगा । मसूरिका रोगके लेपादिमें, इसका व्यवहार होता है । मसूरकी दालको इसके पत्तोंमें मिलाकर चैत्र महीनेमें देनेसे अत्यन्त विषैले सांपकाभी विष नहीं चढताहै । व्यवहार-छाल, पत्ते, फूल, तेल, गोंद । मात्रा १ पल ॥

महानिम्बनामानि ।

महानिम्बःस्मृतोद्रेकाकार्मुकोविषमुष्टिकः ।
केशमुष्टिर्निम्बकश्चरम्यकःक्षीर इत्यपि ॥

अर्थ-महानिम्ब, द्रेका, कार्मुक, विषमुष्टिक, केशमुष्टि, निम्बक, रम्यक, क्षीर, (काकाण्ड, बृहन्निम्ब, महातिक्त, महाद्रेष्क, हिमद्रुम, पार्वत, ..., शुक्लसारक, सकालेयक, गिरिपत्र, पवनेष्ट, कैटर्य्य)

संस्कृतभाषामें	महानिम्ब ।
हिन्दीभाषामें	बकायन ।
बंगलाभाषामें	बोडानिम, महानिम ।
मराठीभाषामें	बकाणीनिंब, कडुनिंब ।
गुजरातीभाषामें	बकान्य ।
कर्णाटकीभाषामें	महावेड ।
तैलिंगीभाषामें	पेद्वेया, गंगाराबिचेट्टु, तुरकवयक, काण्डवेर
तामिलीभाषामें	मालाइवेतुवावेप्यम ।
लैटिन्भाषामें	मेलिया एझेडेरक । Melia Azedarach
फारसीभाषामें	आजाददरख्त ।
अरबीभाषामें	वान (वृक्ष) हवुल, (बीज)

अस्य गुणाः ।

महानिम्बोहिमोरूक्षस्तिक्तोग्राहीकषायकः ।
कफपित्तक्रमिच्छर्दिकुष्ठहृल्लासरक्तजित् (ध. नि.)

अर्थ-बकायन-शीतल, रूक्ष, कडवी, मलरोधक, कषेली, तथा कफ, पित्त, क्रिमि, वमन, कोढ, हृल्लास (उबकाई) और रुधिरविकारको दूर करै।

अन्यच्च ।

महानिम्बःकटुस्तिक्तःशीतश्चतुवरोमतः ।
रूक्षोग्राहीकफंदाहंव्रणंरक्तरुजंतथा ॥
पित्तंक्रमींश्चविषमज्वरंचहृदयव्यथाम् ।
सर्वकुष्ठानिछर्दिंचप्रमेहंचविषूचिकाम् ॥
मूषिकायाविषंगुल्मंशीतपित्तश्चनाशयेत् ।
कोठरोगंचार्शरोगंश्वासश्चाविनिवारयेत् ॥

अर्थ-बकायन-कटु, तिक्त, शीतल, कषाय, रूक्ष, ग्राही तथा कफ, दाह, व्रण, रक्तरोग, पित्त, कृमि, विषमज्वर, हृदयव्यथा, सर्वप्रकारके कुष्ठ, वमन, प्रमेह, विषूचिका, मूषेका विष, गुल्म, शीतपित्त, कोढरोग, अर्शरोग, और श्वासरोगको निवारण करनेवाली है।

विवरण-बकायनके वृक्ष नीमकी समान अधिक लम्बे होते हैं, पत्ते किंचित् बडे होते हैं, बकायनके फूल भी नीमकी समान होते हैं परन्तु कुछ नीले रंगके होते हैं फल गोल गोल होते हैं ।

कैडर्य्यनामानि ।

कैडर्य्योऽन्योमहानिम्बोरामणोरमणस्तथा ।
गिरिनिम्बोमहारिष्टःशुक्लसारोऽलकाह्वयः ॥

अर्थ-कैडर्य्य-महानिम्ब, रामण, रमण, गिरिनिम्ब, महारिष्ट, शुक्लसार, अलकाह्वय (छर्दिघ्न, प्रियसाल. शुक्लसार, वरतिक्त)

संस्कृतभाषामें	कैडर्य ।
हिन्दीभाषामें	मीठानीम, कृष्णनिम्ब, वरसंग ।
वंग भाषामें	घोडानिम्विशेष ।
मराठीभाषामें	कढ्यानिंब, धाणेरानिंब ।
गुजरातीभाषामें	मोठोलीबडो ।
कर्णाटकीमें	कयाहेवेड ।
तैलिंगीभाषामें	कारीवेया ।
लेटिन्भाषामें	मरेयाकोनिजिआई । Muryaya Korinjri
अंग्रेजीभाषामें	सजंदकरखी कुनाह ।

अस्य गुणाः ।

कैडर्यःकटुकस्तिक्तःकषायःशीतलोलघुः ।
सन्तापशोषकुष्ठास्रकृमिभूतविषापहः ॥ (रा. नि.)

अर्थ-मीठा नीम-कटु, तिक्त, कषाय, शीतल, लघु तथा सन्ताप, शोष, कुष्ठ, रुधिरविकार, कृमि, भूत और विषविनाशक है

अन्यच्च ।

कैडर्यःशीतलस्तिक्तःकटुश्चतुवरोलघुः ।
दाहार्शःकृमिशूलघ्नःसन्तापविषनाशनः ॥
शोफकण्डूभूतबाधानाशयेदितिकीर्त्तितः । (नि. र.)

अर्थ-मीठानीम--शीतल, कडवा, चरपरा, कषेला, हलका तथा बवासीर, कृमि, शूल, संताप, विषनाशक, सूजन, कण्डू, और मूत्र... हरनेवाला है।

विवरण। मीठेनीमका वृक्ष होता है; पत्ते नीमकी समान किन्तु ... होतेहैं, निंबोली झुमखेमें आती है और पकनेके समय निंबोलीका ... पड जाता है।

पारिभद्रनामानि।

पारिभद्रश्चपालाशोरक्तपुष्पःप्रभद्रकः।
कण्टकीपारिजातःस्यान्मन्दारःकण्टकिंशुकः॥

अर्थ--पारिभद्र, पालाश, रक्तपुष्प, प्रभद्रक, कण्टकी, पारिजात, ... कण्टकिंशुक (पारिजात, निम्बतरु, रक्तपुष्पक, क्रिमिशत्रु, रक्तकुसुम, ... बहुपुष्प, रक्तकेशर)

संस्कृतभाषामें	पारिभद्र।
हिन्दीभाषामें	फरहद।
वंगभाषामें	पालतेमान्दार।
मराठीभाषामें	पानरो (को०) पारिंगा।
गुजरातीभाषामें	पांडेरवो।
कर्णाटकीभाषामें	हरिवाल। (भरुकमरम)
तैलिङ्गीभाषामें	मुलमोतिचेट्टु मोदुगु, वारिदेचेट्टु।
द्राविडीभाषामें	पंजीर।
तामिलीभाषामें	मुराक।
लैटिन्भाषामें	एरिथ्रिनाइंडिका Erythrina inbica एरथ्रिरनासुवरोझा Erythrina Subro...

अस्य गुणाः।

पारिभद्रःकृमिश्लेष्ममेदःकफानिलापहः॥ (म. नि.)

अर्थ-फरहद- कृमि, कफ, मेद और कफवातविनाशक है।

अपिच।

पारिभद्रःकटूष्णःस्यात्कफवातानिकृन्तनः।
अरोचकहरःपथ्योदीपनश्चापिकीर्त्तितः॥ (रा. नि.)

अर्थ-फरहद-कटु, उष्ण, कफवातनाशक, अरुचिहारक, पथ्य और दीपन है।

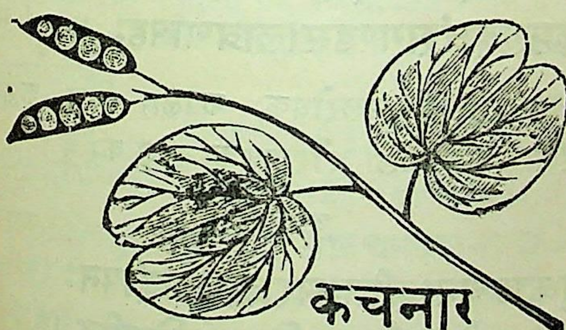
अन्यच्च ।

पारिभद्रःकटूष्णश्चपथ्यश्चाग्निप्रदीपकः ।
अरोचकःकफक्रिमिमेहशोफहरःस्मृतः ॥
पुष्पंपित्तरुजंहन्तिकर्णव्याधिंविनाशयेत् ।

अर्थ-फरहद-कटु, उष्ण, पथ्य, अग्निप्रदीपक तथा अरुचि, कफ, कृमि, प्रमेह और सूजनको दूर करे है;इसके फूल पित्तरोग और कर्णरोगनाशक हैं।

विवरण। इसके वृक्ष जङ्गल और सडकोंपर होते हैं,पत्ते ढाककी समान एक डालीमें तीन तीन होते हैं, फूल लाल और सुन्दर होता है, इसपर फली आती हैं, इसकी शाखाओंमें सूक्ष्म कांटे होते हैं। व्यवहार, छाल, पत्ते, फूल। मात्रा २ मासेकी।

काञ्चनारनामानि ।



काञ्चनोरक्तपुष्पश्चकान्तारःकनकप्रभः ।
सुवर्णारोथगिरिजःकरकः काञ्चनारकः ॥

अर्थ-काञ्चन, रक्तपुष्प, कान्तार, कनकप्रभ, सुवर्णार, गिरिज, करक, काञ्चनारक, (युग्मपत्र, महापुष्प, गण्डारि, यमलच्छद,काञ्चनार,काञ्चनक, शोणपुष्पक, चमरिक, कुद्दाल, युगपत्रक, युगपत्र, काञ्चनाल, ताम्रपुष्प, कुद्दार, रक्तकाञ्चन, चम्पविदल, यमलच्छद)

कौविदारनामानि ।

कोविदारोथकुद्दालःकुदारःकुण्डलीकुली ।
आस्फोतोद्दालकःस्वल्पकेसरश्चमरीमतः ॥

अर्थ-कोविदार, कुद्दाल, कुद्दार, कुण्डली, कुली, आस्फोत, उद्दा स्वल्पकेसर, चमरी, (काञ्चनाल, कर्बूदार, पाकारी, आश्मन्तक)

संस्कृतभाषामें	काञ्चनार (ल), कोविदार।
हिन्दीभाषामें	कचनार, सफेदकचनार।
वंगभाषामें	काञ्चन, सफेदकांचन।
मराठीभाषामें	कोरल, कांचनवृक्ष।
गुजरातीभाषामें	चम्पाकाटी, चम्पोकांचनार जेना पादडाने चम्पाभाजी कहे छे।
कर्णाटकीभाषामें	कोचाले कचनार।
तैलङ्गीभाषामें	देवकांचन
लैटिनभाषामें	बोहिनिया, वेरिएगेटा। Banheria Yarieg[ata] बोहिनिया परपुरिआ B. Purpuria

काञ्चनारगुणाः।

काञ्चनारोहिमोग्राहीतुवरः श्लेष्मपित्तनुत्।
कृमिकुष्ठगुदभ्रंशगण्डमालाव्रणापहः॥ (भा. प्र.)

अर्थ-कचनार-शीतल, मलरोधक, कवेला, पित्त, कफनाशक कृमि, कोढ, गुदभ्रंश, गण्डमाला और व्रणका नाश करे है।

अन्यच्च।

रक्तस्तुकाञ्चनःशीतःसरोह्यग्निप्रदीपनः।
संप्रोक्तस्तुवरोग्राहीकफपित्तव्रणक्रिमीन्॥
गण्डमालारक्तपित्तकुष्ठवातांश्चनाशयेत्।
गुदभ्रंशंरक्तपित्तंनाशयेत्पुष्पमस्यच॥
शीतलं तुवरंरूक्षंसंग्राहिमधुरं लघु।
पित्तंक्षयञ्च प्रदरंकासंरक्तरुजंहरेत्॥ नि. र.)

अर्थ-लालकचनार-शीतल, सारक, अग्निप्रदीपक, कवेला, ग्राही कफ, पित्त, व्रण, कृमि, गण्डमाला, रक्तपित्त, कुष्ठ, वात, गुदभ्रंश रक्तपित्तको दूर करे है। इसके फूल--शीतल, कबेले, रूखे, ग्राही, हलके तथा पित्त, क्षय, प्रदर, खांसी और रक्तरोगको दूर करे हैं।

श्वेतकाञ्चनगुणाः ।

श्वेतस्तुकाञ्चनोग्राहीतुवरोमधुरःस्मृतः ।
रुच्योरूक्षः श्वासकासपित्तरक्तविकारहा ॥
क्षतप्रदरनुत्प्रोक्तोगुणाश्चान्येतुरक्तवत् ।

अर्थ--सफेदकचनार, ग्राही, कषेला, मधुर, रुचिकारक, रूक्ष, श्वास, खांसी, पित्त, रक्तविकार, क्षत और प्रदररोगनाशक है। शेष गुण लाल कचनारके समान जानने ।

कोविदारगुणाः ।

कोविदारोदीपनःस्यात्कषायोव्रणरोपणः ।
संग्राहीसारकःस्वादुःपर्णशाकेषुचोत्तमः ॥
मूत्रकृच्छ्रंत्रिदोषञ्चशोषंदाहंकफंतथा ।
वातंहरेत्पुष्पगुणारक्तकाञ्चनपुष्पवत् ॥

अर्थ--कोविदार--(सफेद कचनार) अग्निप्रदीपक, कषेला, व्रणको भरनेवाला, मलरोधक, सारक,स्वादिष्ठ यह पत्रशाकोंमें उत्तम है।तथा मूत्रकृच्छ्र, त्रिदोष, शोष, दाह, कफ, और वातनाशक है । इसके फूलोंके गुण लाल-कचनारके समान जानने ।

पीतकाञ्चनारगुणाः ।

पीतस्तुकाञ्चनोग्राहीदीपनोव्रणरोपणः ।
तुवरोमूत्रकृच्छ्रस्यकफवाय्वोश्चनाशनः ॥

अर्थ--पीला कचनार--ग्राही, दीपन, व्रणरोपण, कषेला, मूत्रकृच्छ्र, कफ और वातनाशक है ।

काञ्चनीगुणाः ।

काञ्चन्युक्ताशीर्षरुजांत्रिदोषंचविनाशयेत् ।
स्तन्यस्यवर्द्धनकरीऋषिभिःसूक्ष्मदर्शिभिः (नि. र.)

अर्थ--काञ्चनी-- (छोटाकचनार) शिरोरोग और त्रिदोषनाशकहै । तथा स्तनोंमें दूध बढानेवाली है ।

विवरण । कचनार लाल और सुफेद इनमें दोसै दोप्रकारका होता है । यह वृक्ष जंगल और पहाडोंमें अधिक होतेहैं । पत्ते एक एक शाखामें बराबर दोदो होते हैं, सुफेद फूल आतेहैं, और फलिय, लगतीहैं, दूसरी प्रकारका कचनारभी ऐसाही होताहै परन्तु लाल फूल रंगके होतेह ।

शोभाञ्जननामानि ।

शोभाञ्जनःशिग्रुतीक्ष्णान्धकाक्षीबसुभाञ्जनः ॥

अर्थ--शोभाञ्जन, शिग्रु, तीक्ष्णान्धक, अक्षीब, सुभाञ्जन, (तीक्ष्ण... अक्षीब, सोभाञ्जन, सौभाञ्जन, विद्रधिनाशन, मधुगुञ्जन, हरीतशाक, ... पत्र, शिग्रुक, सुपत्रक, उपदंश, क्षमादंश, कोमलपत्रक, बहुमूल, ... तीक्ष्णमूल, उग्र, कामिनीश, शोभतक, शौभाञ्जन, मोचक, तीक्ष्ण... सुतीक्ष्ण, वनपल्लव, श्वेतमरिच, कटुकन्द, गन्ध, गन्धक कालीवक, ... आक्षीब, शुभाञ्जन, स्त्रीचित्तहारी, द्रविणनाशन, कृष्णगन्धा, मूल... मोच, तिलशिग्रु, जलप्रिय, मुखमोद, कृष्णशिग्रु, चलुषा, रुचिराञ्जन)

श्वेतशिग्रुनामानि ।

श्वेतशिग्रुःसुतीक्ष्णश्चमुखभङ्गःसिताह्वयः ॥

अर्थ-श्वेतशिग्रु, सुतीक्ष्ण, मुखभङ्ग, सिताह्वय, (श्वेतमरिच, ... सुमूल, मधुशिग्रुक)

रक्तशिग्रुनामानि ।

रक्तोऽसौमधुशिग्रुःस्यात्सुरंगीचशुभाञ्जना ॥

अर्थ--रक्तशिग्रु, मधुशिग्रु, सुरंगी शुभाञ्जना, (कृष्णबीज, गर्भ... रक्तक, मधुर, बहुलद, सुगन्ध, केसरी, सिंह, मृगारी)

संस्कृतभाषामें	शोभाञ्जन, श्वेतशिग्रु । रक्तशिग्रु ।
हिन्दीभाषामें	सैंजिना, सफेदसैंजिना, लालसैंजिना ।
वंगभाषामें	सजिने, सादासजिने, लालसजनेड़ो ।
मराठीभाषामें,	शेगट, शेवगा ।
गुजरातीभाषामें	शरघवो ।
कर्नाटकीभाषामें	विलिपतुग्गि, कंपनेयनुगि ।
तैलिंगीभाषामें	मुलंगा ।
तामिलीभाषामें	मोरंग ।
दक्षिणीभाषामें	सेगत ।
अंग्रेजीभाषामें	होर्सरेडीशट्रि Horse Rabisd Trec
लैटिन् भाषामें	मोरिंगा टेरिगोस्परमा Moringapterygo...

शोभाञ्जनगुणाः ।

शिग्रुःकटुःकटुः पाकेतीक्ष्णोष्णोमधुरोलघुः ।

दीपनोरोचनोरूक्षःक्षारतिक्तोविदाहकृत् ॥
संग्राहीशुक्रलोहृद्यः पित्तरक्तप्रकोपनः ।
चक्षुष्यःकफवातघ्नोविद्रधिश्वयथुक्रिमीन् ॥
मेदोऽपचीविषप्लीहगुल्मगण्डव्रणान्हरेत् ॥ (भा. प्र.)

अर्थ--सैंजिना--चरपरा, पचनेमेंभी चरपरा, तीक्ष्ण, गरम, मधुर, हलका, अग्निको दीपन करनेवाला, रुचिकारक रूखा, क्षारयुक्त, कडवा, दाहजनक, मलरोधक, शुक्रवर्द्धक हृदयको हितकारी, पित्तको कुपित करनेवाला, रुधिरको दूषित करनेवाला नेत्रोंको हितकारी तथा कफ, वात, विद्रधि, सूजन, कृमि, मेदोरोग, अपची, विष, प्लीहा, गुल्म, गण्डमाला और व्रणको दूर करनेवाला है ।

अन्यच्च ।

शोभाञ्जनस्तीक्ष्णकटुःस्वादूष्णःपिच्छिलस्तथा ।
जन्तुवातार्त्तिशूलघ्नश्चक्षुष्योरोचनःपरः ॥ (रा. नि.)

अर्थ-सैंजिना -तीक्ष्ण, चरपरा, स्वादिष्ठ, गरम, पिच्छिल तथा कृमि, वातकी वेदना और शूलको निर्मूल करैहै । नेत्रोंको हितकारी और परम रोचन है ।

श्वेतशिग्रुगुणाः ।

श्वेतःप्रोक्तगुणोज्ञेयोविशेषाद्दाहकृद्भवेत् ।
प्लीहानंविद्रधिंहन्तिव्रणघ्नःपित्तरक्तकृत् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ--सफेदसैंजिनेके गुणभी सैंजिनेके समान हैं, विशेषकरके दाह उत्पन्न करैहै । तथा प्लीहा, विद्रधि और व्रणको दूर करे है तथा पित्तरक्तकारक है ।

अन्यच्च ।

श्वेतशिग्रुःकटुस्तीक्ष्णःशोफानिलनिकृन्तनः ।
अङ्गव्यथाहरोरुच्योदीपनोमुखजाड्यनुत् ॥ (रा. नि.)

अर्थ--सफेदसैंजिना--चरपरा, तीक्ष्ण, शोफनाशक, वातविनाशक, अंगव्यथानिवारक, रुचिकारक, अग्निको दीपन करनेवाला और मुखकी जडताको दूर करनेवाला है ।

रक्तशिग्रुगुणाः ।

रक्तशिग्रुर्महावीर्योमधुरश्चरसायनः ।

शोथंवातश्चपित्तञ्चआध्मानञ्चकफंजयेत् ॥

अर्थ--लालसैंजिना- महावीर्य्यवाला, मधुर, रसायन तथा सूजन, पित्त, आध्मान और कफको हरनेवाला है।

अन्यच्च ।

मधुशिग्रुःप्रोक्तगुणोविशेषाद्दीपनःसरः ॥

अर्थ--मधुशिग्रु--(लालसैंजिना) विशेष करके दीपन और सारक है।

शिग्रुवल्कलपत्राणां स्वरसः परमार्तिहृत् ॥

अर्थ-सैंजिनेकी छाल और पत्तोंका स्वरस अत्यन्त पीडाको दूर करे है।

शिग्रुबीजगुणाः ।

चक्षुष्यंशिग्रुबीजंचतीक्ष्णोष्णंविषनाशनम् ।
अवृष्यंकफवातघ्नंतन्नस्येनशिरोर्त्तिनुत् ॥

अर्थ--सैंजिनके बीज--नेत्रोंको हितकारी, तीक्ष्ण, गरम, विषविनाशक, अवृष्य, कफघ्न, वातनाशक और इसके नास लेनेसे शिरकी पीडा दूर होती है।

शिग्रुशाकगुणाः ।

शिग्रुशाकंहिमंस्वादुचक्षुष्यंवातपित्तहृत् ।
बृंहणंशुक्रकृत्स्निग्धंरुच्यंमदकृमिप्रणुत् ॥

अर्थ- सैंजिनेका शाक-शीतल, स्वादिष्ठ, नेत्रोंको हितकारी, वातपित्त-नाशक, बृंहण, तेजवर्द्धक, शुक्रजनक, स्निग्ध, रुचिकारक तथा मद और कृमिनाशक है।

शिग्रुपुष्पगुणाः

शिग्रोःपुष्पन्तुकटुकंतीक्ष्णोष्णंस्नायुशोथनुत् ।
कृमिकृत्कफवातघ्नंविद्रधिप्लीहगुल्मजित् ॥

अर्थ--सैंजिनेके फूल--चरपरे, तीक्ष्ण, गरम, स्नायुरोग और शोथनाशक हैं, कृमिजनक, कफवातनाशक तथा विद्रधि, प्लीहा और गुल्मका नाश करे हैं।

शिग्रुफलगुणाः ।

शोभाञ्जनफलंस्वादुकषायकफपित्तनुत् ।
शूलकुष्ठक्षयश्वासगुल्महृद्दीपनंपरम् ॥

अर्थ--सैंजिनेकी फली--स्वादिष्ठ, कषेली, कफपित्तनाशक तथा

कोढ, क्षय, श्वास और गुल्म (गोला) का नाश करे है तथा दीपन है ।

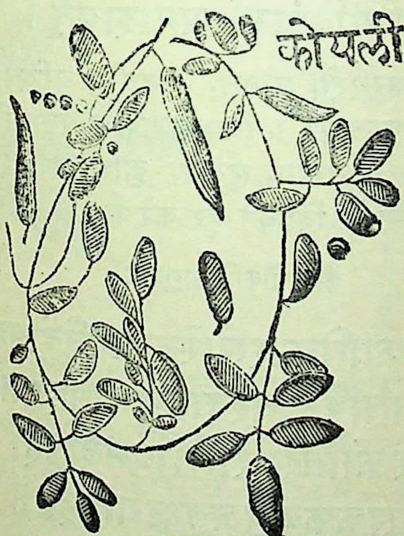
विवरण । सैंजिनेके वृक्ष बाग, वन और जंगलमें होते हैं । इसकी फूलोंके छोटफेरसे तीन जाती हैं, फूल सफेद, नीले और लाल आते हैं, इनमेंसे सफेद फूलका सैंजिना अधिकतासे होता है, इसकी फलियोंको दालमें डालकर खाते हैं, सजिनेका तेल अनेक प्रकारकी खुजलीको दूर करता है ।

अपराजितानामानि ।

आस्फोतागिरिकर्णीस्याद्भूमिलग्नापराजिता ।
नगपर्य्यायकर्णीचगवाक्षीगिरिशालिनी ॥

अर्थ--आस्फोता, गिरिकर्णी, भूमिलग्ना, अपराजिता, नगपर्य्यायकर्णी, गवाक्षी, गिरिशालिनी (अश्वक्षुरादिकर्णी, कटभी, दधिपुष्पिका, गर्दभी, सितपुष्पा, श्वेतस्यंदा, किणिही, श्वेता, भद्रा, सुपुष्पी, विषहंजी, सुपुत्री, सिंहपुष्पी, श्वेतवराटा, गवादिनी)

नीलापराजितानामानि ।



नीलपुष्पीमहानीलास्यान्नीलागिरिकर्णिका ।
गवादिनीव्यक्तगन्धाविष्णुक्रान्ताविभाण्डिका ॥

अर्थ-नीलपुष्पी, महानीला, नीला, गिरिकर्णिका, गवादिनी, व्यक्तगन्धा विष्णुक्रान्ता, विभाण्डिका ।

संस्कृतभाषामें	अपराजिता, नीलापराजिता ।
हिन्दीभाषामें	सफेदकोयल, नीलीकोयल ।
बङ्गलाभाषामें	अपराजित, नीलपराजिता ।

मराठीभाषामें गोकर्णी काळी, पांढरी ।
गुजरातीभाषामें गरणी ।
कर्णाटकीभाषामें विलीयगिरिकर्णिके, नीलगिरिकर्णिके ।
तैलिङ्गीभाषामें नीलगंटुना ।
लैटिन्भाषामें क्लीटोरिआ टरनेटिया Cletorea Ternatea
लै० मेजोरिअन् Megorian
अं० मजीरयुतएहिंदी ।

अपराजिता गुणाः ।

श्वेतागोकर्णिकाकट्वीशीतातिक्ताचबुद्धिदा ।
चक्षुष्यातुवराचैवसराविषविनाशिनी ॥
त्रिदोषंशीर्षशूलञ्चदाहंकुष्ठञ्चशूलकम् ।
आमंपित्तरुजंचैवशोथंजन्तून्व्रणंकफम् ॥
ग्रहपीडाशीर्षरोगंविषंसर्पस्यनाशयेत् ।

अर्थ-सफेद कोयल-चरपरी, शीतल, कडवी, बुद्धिदायक, नेत्रोंको हि-कारी, कषेली, सरा (दस्तावर), विषविनाशक तथा त्रिदोष, मस्तक- दाह, कोढ, शूल, आम, पित्तरोग, सूजन, कृमि, व्रण, (घाव), कफ, ग्रह- पीडा, मस्तकरोग और सर्पके विषको दूर करे है ।

कृष्णगोकर्णिकागुणाः ।

कृष्णगोकर्णिकातिक्तारसोस्निग्धात्रिदोषहा ।
शीतवीर्य्यावातपित्तज्वरदाहभ्रमापहा ॥
पिशाचबाधारक्तातिसारोन्मादमदापहा ।
अतिकासश्वासकफकुष्ठजंतुक्षयापहा ॥
अन्येगुणास्तुसुश्वेतगोकर्णसिद्दशामताः ।

अर्थ-नीलीकोयल-कडवी, स्निग्ध त्रिदोषनाशक, शीतवीर्य्य तथा वा- पित्त, ज्वर, दाह, भ्रम, पिशाचबाधा, रक्तातिसार, उन्माद, मद, अति- खांसी, श्वास, कफ, कोढ, जन्तु, और क्षयरोगको दूर करे है । शेष- सफेद अपराजिताकी समान जानने ।

विवरण-कोयल सफेद और नीले फूलोंके भेदसे दो प्रकारकी है बा- बाग और उपवनोंमें होती है पत्ते छोटे गुलाबके समान होते हैं इसपर - लम्बी आती हैं ।

सिन्दुवारनामानि ।

इन्द्राणिकेन्द्रसुरसोनिर्गुण्डीसिन्धुवारकः ॥

अर्थ-इन्द्राणिका, इन्द्रसुरस, निर्गुण्डी, सिन्धुवारक, (सिन्धुवार, सिन्धु, रक, सिन्धुक, इन्द्रसुरिष, सिन्दुवारित, इन्द्राणी, शक्राणी, काशनाशिनी रसा, सिन्धु, शुक्लपृष्ठक, विसुगन्धक, सुरस, श्वेतपुष्प, स्थिरसाधनक नन्त, सिद्धक, अर्थसिद्धक, सिन्दुवारिका)

नीलसिन्धुवारनामानि ।





नीलिकानीलनिर्गुण्डीसिन्दुकोनीलसिन्दुकः ॥

अर्थ-नीलिका, नीलनिर्गुण्डी, सिन्दुक, नीलसिन्दुक, (नीलसिन्दुवार नसहा, निर्गुण्डी, भूतकेशी, इन्द्राणी, नीलिका, कपिका, शेफालिका वभीरु, नीलिका, नीलमञ्जरी, कर्त्तरीपत्रा, भूतकेशी, वनजा, मरुत्पत्री न्द्राणी)

संस्कृतभाषामें	सिन्दुवार, नीलसिन्दुवार, निर्गुण्डी, निर्गुण्डीभेद ।
हिन्दीभाषामें	सम्हालु, निर्गुण्डी, मेउडी, नीलसम्हालु, सिहरु, सम्हालुके बीज ।
बंगभाषामें	निशिन्दा, नीलनिशिन्दा ।
मराठीभाषामें	निर्गुण्डी-पांढऱ्याफुलांची, काळ्याफूलांची, लिंगुर, निर्गुण्डीचें बीज ।
गुजरातीभाषामें	नागडय, नागडयनावी ।

कर्णाटकीभाषामें	करियल्लाक्किमेडडी विलीयलोके ।
तामिलीभाषामें	नोक्चि, निर्नोचि, मनजाप ।
वम्.	निर्गुण्डी, कद्रि, कल अडलुसा ।
द्रा.	सान्वालि, कालिसुम्बालि ।
पञ्जावीभाषामें	वणा, लहरि ।
कोकणीभाषामें	नगूड, सेन्दुवार ।
इंग्रेजीभाषामें	काईवलिव्ड चेष्टद्री । Fiveleaveb Chost
लैटिन्भाषामें	वाईटेक्सनिगण्डु । Vitex Negunbo
तैलिङ्गीभाषामें	तेलावाविली, नाविलिचेट्टु तेल्लव, नल्लविले
फारसीभाषामें	परंगुष्ट, तुख्मेपञ्जंगुष्ट-सिसमा ।
अरबीभाषामें	असलुक, हुडुलफुक्का, बजरुल, असलुक् ।

सिन्दुवारगुणाः ।

सिन्दुकःस्मृतिदस्तिक्तः कषायःकटुकोलघुः ।
केश्योनेत्राहितोहंतिशूलशोथाममारुतान् ॥
कृमिकुष्ठारुचिश्लेष्मज्वरान्नीला सिता द्विधा ।
सिन्दुवारदलंजन्तुवातश्लेष्महरंलघु ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ—सम्हालु-और नीलसम्हालु दोनों स्मरणशक्तिदायक, कषेले, चर्परे, हलके बालोंको सुन्दरतादायक, नेत्रोंको हितकारी तथा शूल, सूजन, आमवात, कृमि, कोढ, अरुचि, कफ और ज्वरको दूर करे हैं। सम्हालुके पत्ते-कृमि वात और कफनाशक हैं तथा हलके हैं ।

कटूष्णानीलनिर्गुण्डीतिक्तारूक्षाचकासजित् ।
श्लेष्मशोफसमीरार्तिप्रदराध्मानहारिणी ॥ (रा. नि.)

अर्थ—नीलनिर्गुण्डी-कटु (चर्परी) उष्ण (गरम) तिक्त (कडवी) (रूखी) तथा कास (खांसी) कफ, शोफ (सूजन), वातकी वेदना, प्रदर रोग और आध्मान (अफारा) को दूर करे है ।

अन्यच्च ।

निर्गुण्डीकटुकातिक्तारूक्षोष्णाचकषायका ।
स्मृतिप्रदानेत्रहिताकेश्यालघ्वग्निदीपनी ॥
मेध्यावर्ण्याचसंप्रोक्तागुदवातक्षयापहा ।

सन्धिवातञ्चवातञ्चशोफंवामंकृमींस्तथा ॥
कुष्ठंकफंव्रणंप्लीहांगुल्मंकण्ठरुजंतथा ।
विषशूलंचारुचिंचज्वरंमेदोरुजंतथा ॥
गृध्रसींचप्रतिश्यायंकासंश्वासंचनाशयेत् ।
पित्तनाशकरी प्रोक्तापर्णमस्यालघुस्मृतम् ॥
कृमिनाशकरंप्रोक्तंपूर्ववैद्यैःकृपालुभिः ।

अर्थ-निर्गुण्डी-चरपरी, कडवी, रूखी, गरम, कषेली, स्मरणशक्तिदायक, नेत्रोंको हितकारी, केशोंको सुन्दरतादायक, हलकी अग्निको दीपन करनेवाली, मेधाजनक, वर्णकारक तथा गुदवात, क्षय, सन्धिवात, सूजन, आम, कृमि, कोढ़, कफ, घाव, प्लीहा, गोला, कण्ठरोग, विष, शूल, अरुचि, ज्वर, मेदोरोग, गृध्रसीवात, प्रतिश्याय, (नाकसे पानीगिरना) खांसी, श्वास और पित्तको दूर करे है। इसके पत्ते-हलके और कृमिरोगनाशक हैं।

कर्तरीनिर्गुण्डीगुणाः ।

निर्गुण्डीकर्त्तरीयुक्ताकटूवीतिक्ताकफापहा ।
वातंक्षयश्चशूलश्चकण्डूंकुष्ठंचनाशयेत् ॥

अर्थ-कर्तरी, निर्गुण्डी- चरपरी, कडवी, कफनाशक तथा वात, क्षय, शूल, कण्डू और कुष्ठको नष्ट करे है।

अरण्यनिर्गुण्डीगुणाः ।

प्रोक्ताचारण्यनिर्गुण्डीपथ्यापित्तज्वरंहरेत् ।
विषंचगृध्रसीवातंनाशयेद्वर्णकारिणी ॥
पर्णचास्यास्तुकटुकंचाग्निदीप्तिकरंलघु ।
कृमीन्कफश्चवातश्चनाशयेदितिकीर्तितम् ॥
कटु चोष्णं पुष्पमस्यास्तिक्तंकृमिकफापहम् ।
प्लीहांगुलमश्चवातश्चकुष्ठंशोथश्चनाशयेत ॥
अरुचेर्नाशकंप्रोक्तंकण्डूचैवविनाशयेत् । (नि. र.)

अर्थ-वननिर्गुण्डी-पथ्य तथा पित्तज्वर विष और गृध्रसीवातनाशक

है और वर्णकारक है। इसके पत्ते-चरपरे, अग्निको दीपन करनेवाले, ह
तथा कृमि, कफ और वातनाशक हैं। इसके फूल-चरपरे, गरम, क
तथा कृमि, कफ, प्लीहा, गोला, वात, कोढ़, सूजन, अरुचि और
तथा खुजलीका नाश करे है।

विवरण। निर्गुण्डीके वृक्ष बाग और वनोंमें होते हैं। पत्ते अ
समान होते हैं। एक दंडीपै पांच पांच होते हैं। पत्ते नीले और नीचे
होते हैं। निर्गुण्डी अनेक जातिकी होती है किसीपै काले और किसीपै
फूल आते हैं। फल आमके मौरके समान गुच्छेदार और केशरी रंगके
व्यवहार। मूल। मात्रा ३ मासेकी।

कुटजनामानि।



कुटजोमल्लिकापुष्पःशक्राशोवरतिक्तकः ॥

अर्थ-कुटज, मल्लिकापुष्प, शक्राश, वरतिक्त, (शक्र, वत्सक, गि
ल्लिका. पाण्डुर, कटुक, कुटक कौटज, तिक्तक, रक्तनाशक वृक्षक, श
शक्रपर्याय, कूटज, काही, कालिङ्ग, मल्लिका, पुष्प, प्रावृष्य, शक्र
यवफल, संग्राही, पाण्डुद्रुम, प्रावृषेण्य, महागन्ध, इन्द्रद्रु, शक्रशाखी)

संस्कृतभाषामें	कुटज।
हिन्दी ”	कुडा, कौरैया।
वंग ”	कुडचि, कुरचि।
मराठी ”	कुडा।
गुजराती ”	कडो।

कर्णाटकीभाषामें कोडसिगयमहनु।
तैलिङ्गीभाषामें अंकेलु चंगलकुष्ठ।
तामिलीभाषामें वेप्याले
तु० कोडंजि।
अंग्रजीभाषामें ओवलूलिव्ड रोझबे। Ovalleaved Rose Bay
लैटिन्भाषामें राइटियाएंटिडिसेन्टरिका। Wrightia autidv terica
अरबीभाषामें तिवाज।

अस्य गुणाः।

कुटजःकटुकोरूक्षोदीपनस्तुवरोलघुः।
अर्शोंतिसारपित्तास्रकफतृष्णामापित्तनुत्॥
तत्पुष्पंशीतलंतिक्तंकषायंलघुदीपनम्।
वातलंकफपित्तास्रकुष्ठातीसारजन्तुजित्॥
तस्यशिम्बीभवंशाकंव्यंजनंचामवातजित्।
रुच्यंकफघ्नंरक्तातीसारकुष्ठक्रिमीञ्जयेत॥ (म. बि.)

अर्थ-कुडा-चरपरा, रूखा, दीपन, कषेला, हलका तथा बवासीर, अतिसार, रक्तपित्त, कफ, तृषा, आम और पित्तको दूर करे है। कुडेके फूल-शीतल, कडवे, कषेले, हलके, दीपन, वातकारक तथा कफ, रक्तपित्त कुष्ठ, अतिसार और कृमिको दूर करे हैं। इसकी फलियोंका शाक-व्यञ्जन, आमवातनाशक, रुचिकारक, कफनाशक तथा रक्तातिसार, कुष्ठ और कृमिको दूर करे है, इसकी विशेष पर्य्याय और गुण एवं विवरणादिक सब हरीतक्यादिवर्गमें देखो।

करंजनामानि।



करञ्जोनक्तमालश्चपूतिकःपूतिपत्रकः ।
पूतीकरञ्जःकैडर्यःकलिमारउदाहृतः ॥

अर्थ-करञ्ज, नक्तमाल, पूतिक, पूतिपत्रक, पूतिकरञ्ज, कैडर्य्य, कलि॰
(पूतिपर्ण, बद्धफल, रोचन, करज, करञ्जक, उदकीर्य)

अपिच ।

चिरबिल्वःकरञ्जोन्य.प्रकीर्योगौरएवच ।
उदकीर्योथषड्ग्रन्थोवृत्तपर्णःप्रकीर्त्तितः ॥

अर्थ-चिरबिल्व, प्रकीर्य, गौर, उदकीर्य, षड्ग्रन्थ, और वृत्तपर्ण।

अन्यच्च ।

करञ्जोनक्तमालश्चपूतिकश्चिरबिल्वकः ।
पूतिपर्णोवृत्तफलोरोचनोगुच्छपुष्पकः ॥

अर्थ-करञ्ज, नक्तमाल, पूतिक, चिरबिल्वक, पूतिपर्ण, वृत्तफल, रो॰
गुच्छपुष्पक (स्निग्धपत्र, तपस्वी, विषारि, घृतपर्णक)

तथाच ।

उदकीर्यस्तृतीयोन्यःषड्ग्रन्थाहस्तिवारुणी।
अंगारवल्लीशांर्गष्ठाकाकघ्नीकरभण्डिका॥

अर्थ-उदकीर्य-षड्ग्रन्था, हस्तिवारुणी, अंगारवल्ली, शार्ङ्गष्ठा, का॰
करभण्डिका।

महाकरञ्जिकाचैवमदहस्तिनिकाचसा ॥

अर्थ -महाकरञ्जिका, मदहस्तिनिका (काकघ्नी, मदहस्तिनी)

संस्कृतभाषामें	करञ्ज, पूतिकरञ्ज, घृतकरञ्ज, षड्ग्रन्थ महा॰
हिन्दीभाषामें	करञ्ज, करञ्जभेद ।
वंगभाषामें	डहरकरञ्ज, नाटाकरञ्ज इत्यादि ।
मराठीभाषामें	चापडाकरञ्ज, घाणेराकरञ्ज, वावळा ।
गुजरातीभाषामें	करञ्ज, चरेलकणसे ।
कर्णाटकीभाषामें	नापसीयमरनु, वारुबहुलिगिलु ।
तैलिङ्गीभाषमें	कानुगचेट्टु, कंज ।
मला॰	पोन्नं ।
तामिलीभाषामें	पुंगामारं ।

अंग्रेजीभाषामें स्मूथलिव्ड पोनगेमिया । Smooth leaved Pongamia
लेटिन्भाषामें पोनगेमियाग्लेब्रा । Pongamia Glabra अलमस्
इन्टेग्रेफोलिया । Almus Integrefolia

करञ्जगुणाः ।

करंजःकटुकःपाकेनेत्र्योष्णस्तिक्तकोरसे ।
कषायोदावर्त्तवातानांयोनिदोषापहःस्मृतः ॥
वातगुल्मार्शव्रणहृत्कण्डूकफविषापहः ।
विचर्चिकापित्तकृमित्वग्दोषोदरमेहहा ॥
प्लीहाहरश्चसंप्रोक्तःफलमुष्णंलघुस्मृतम् ।
शिरोरुग्वातकफहृत्कृमिकुष्ठार्शमेहनुत् ॥
पर्णपाकेकटूष्णंस्याद्भेदकंपित्तलंलघु ।
कफवातार्शकृमिनुद्व्रणंशोथश्चनाशयेत् ॥
पुष्पमुक्तंचोष्णवीर्य्यंपित्तवातकफापहम् ।
अस्यांकुरारसेपाकेकटुकाश्चाग्निदीपकाः ॥
पाचकाःकफवातार्शःकुष्ठकृमिविषापहाः ।
शोथनाशकराःप्रोक्ताऋषिभिःसूक्ष्मदर्शिभिः ॥ (नि.र.)

अर्थ-करंज-पचनेमें चरपरी, नेत्रोंको हितकारी, गरम, कडवी, कषैली [त]था उदावर्त, वात, योनिदोष, वातगुल्म, बवासीर, घाव, कण्डू, कफ, विष, [वि]चर्चिका, पित्त, कृमि, त्वचाके विकार, उदररोग, प्रमेह और प्लीहाको [दू]र करनेवाली है। करंजके फल-गरम, हलके तथा शिरोरोग, वात, कफ, [कृ]मि, कोढ, बवासीर और प्रमेहको दूर करै हैं।

इसके पत्ते-पचनेमें चरपरे, गरम, भेदक, (दस्तावर) पित्तजनक, हलके [त]था कफ, वात, बवासीर, कृमि, घाव और सूजनको दूर करै हैं। इसके [फूल]-उष्णवीर्य्य तथा,पित्त, वात और कफका नाश करै हैं। इसके अंकुर-[रस]में और पचनेमें चरपरे, अग्निदीपन करनेवाले, पाचक, तथा कफ, वात, [बव]ासीर, कुष्ठ, कृमि, विष और सूजनको दूर करनेवाले हैं।

अपिच ।

करञ्जोज्वरत्वग्दोषनाशनोदंतदार्ढ्यकृत् ।

कटुकोभेदनस्तस्यफलंनयनपुष्पहृत् ॥
पित्तश्लेष्मण्युदासीनंविष्टम्भनविबन्धकृत् । (शो. नि

अर्थ-करंज-ज्वर और त्वचाके दोषको दूर करे है, दाँतोंको दृढ़ करै, चरपरी और दस्तावर है । इसके फल-आंखके फूलेको दूर करै हैं । पित्त और कफको हरै हैं, विष्टम्भ और विबन्धकारक हैं ।

करञ्जतैलगुणाः ।

करञ्जतैलंतीक्ष्णोष्णंकृमिहृद्रक्तपित्तकृत् ।
नयनामयवातार्त्तिकुष्ठकण्डूव्रणप्रणुत् ॥
वातनुत्पित्तकृत्किञ्चिल्लेपनाच्चर्म्मदोषनुत् । (आ. स

अर्थ—करञ्जका तेल--तीक्ष्ण, गरम, कृमिनाशक, रक्तपित्तकारक, नेत्ररोग, वातकी वेदना, कोढ, कण्डू (खुजली) घाव और वातका करै हैं, किञ्चित् पित्तकारक और इसका लेप करनेसे त्वचाके विकार होते हैं ।

महाकरञ्जगुणाः ।

महाकरंजकस्तीक्ष्णःकटुश्चोष्णश्चतिक्तकः ।
कण्ड्वाविचर्चिकाकुष्ठत्वग्रुग्विषव्रणापहा ॥

अर्थ—महाकरंज--तीक्ष्ण, चरपरी, गरम, कडवी तथा कण्डू, विचर्चिका, कुष्ठ, त्वचाके रोग, विष और व्रणनाशक है ।

घृतकरंजगुणाः ।

प्रोक्तोघृतकरंजस्तुकटुकोष्णोव्रणापहः ।
वातंचसर्वत्वग्दोषंविषंचार्शोविनाशयेत् ॥
करञ्जद्वयसंप्रोक्तागुणास्तत्रअन्येभिषग्वरैः ।

अर्थ--घृतकरञ्ज--चरपरी, गरम तथा व्रण (घाव) वात, सर्व त्वचाके रोग, विषरोग और अर्श (बवासीर) को दूर करै है । शेष करंजके समान जानने ।

गुच्छकरंजगुणाः ।

गुच्छनामाकरंजःस्यादुष्णस्तिक्तःकटुःस्मृतः ।
विचर्चिकावातविषकण्डूकुष्ठार्शनाशनः ॥

त्वग्दोषनाशकश्चैवऋषिभिःपरिकीर्तितः ।

अर्थ-गुच्छकरंज-गरम, कडवी चरपरी तथा विचर्चिका, वात, विष, कण्डू कुष्ठ, बवासीर और त्वचाके रोगोंका नाश करे है।

पूतिकरञ्जगुणाः ।

पूतिकरञ्जकःप्रोक्तोगुच्छपूर्वकरंजवत ॥ (नि. र.)

अर्थ-पूतिकरञ्जके गुण गुच्छकरंजके समान हैं।

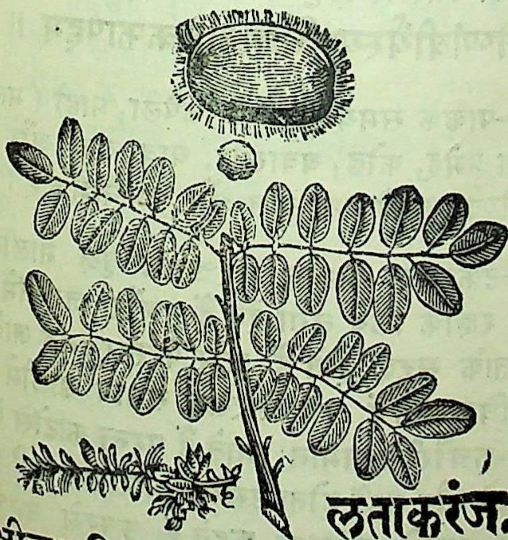
पूतिकरञ्जपत्रगुणाः ।

पूतिकरंजजंपत्रंलघुवातकफापहम् ।
भेदनंकटुकंपाकेवीर्य्योष्णंशोफनाशनम् ॥

अर्थ-पूतिकरंजके पत्ते--हलके, वातकफनाशक, भेदक (दस्तावर) पचनेमें चरपरे, उष्णवीर्य्य और शोफ (सूजन) नाशक ह।

विवरण। करंजके बहुत बड़े २ वृक्ष वनमें होते हैं, पत्ते--पाखरके पत्तोंके समान गोल और ऊपरके भागमें चमकदार होते हैं। इसमें फूल आसमानी रंगके आते हैं और फलभी नीले २ झुमकेदार लगते हैं, पत्तोंमें गन्ध आती है। करंज छे सातप्रकारकी होती है।

कण्टकरञ्जनामानि



कुबेराक्षीक्रकचिकाकरञ्जातिणगच्छिका ।
वारिणीतीरिणीवल्लीज्ञेयाकण्टकिनीतिच ॥

अर्थ-कुबेराक्षी, क्रकचिका, करंजा, तिणगच्छिका, वारिणी, तीरिणी, वल्ली, कण्टकिनी।

संस्कृतभाषामें	कंटकरंज ।
हिन्दी "	करंजा, करंजुवा ।
वंग "	काँटाकरंज ।
मराठी "	सागरगोटा ।
गुजराती "	कांकच, तेनांफल--कांकचिया ।
कर्णाटकीभाषामें	करञ्जभेदु ।
तैलङ्गी "	कचकाई, गुच्चेपिका ।
अंग्रेजी "	बोण्डकनट् Banducnut
लैटिन् "	सिसाल पिनिया बोन्डुसेला CaesalPinia Bond...
फारसी "	खाय, इबलीस ।
अरबी "	अक्तमक्त ।

कण्टकरञ्जगुणाः ।

कण्टयुक्तःकरञ्जस्तुपाकेचतुवरःकटुः ।
ग्राहकश्चोष्णवीर्य्यः स्यात्तिक्तःप्रोक्तश्चमेहहा ॥
कुष्ठार्शोव्रणवातानांकृमीणांनाशनःपरः ।
पुष्पंतुचोष्णंवीर्यस्यात्तिक्तंवातकफापहम् ॥

अर्थ--करञ्जा--पाकके समय चरपरा, कषैला, ग्राही (मलरोधक) उष्ण वीर्य्य, कडवा तथा प्रमेह, कोढ, बवासीर, घाव, वात और कृमिनाशक है। इसके फूल उष्णवीर्य्य, कडवे तथा वात और कफनाशक हैं।

विवरण। कंटककरंज अर्थात् करञ्जवेके वृक्ष मालीलोग पु... काओंकी वाडोपर रक्षाके लिये लगा देते हैं। और जंगलोंमें भी हो... परन्तु वह पेड लताके सदृश होते हैं और परस्पर गठ जाते हैं। ... झांकडोंमें कांटे अधिक होते हैं पत्ते सिरसके समान डालीमें आमने ... लगे होते हैं। फल-कचौरीके समान लगते हैं परन्तु कांटोंसे ऐसे परि... हैं कि, तिलरखनेको ठौर नहीं होता उसमेंसे चार पांच बडी कौडीकी ... दाने निकलते हैं। उनको करंजवा कहते हैं ऊपरसे उनकी छाल ... रंगके समान होती है भीतरसे सपेद गिरी निकलती है।

गुञ्जानामानि ।

रक्तिकागुञ्जिकागुञ्जाकाकजंघाशिखण्डिनी ।

कृष्णलाकाकिनीकक्षाकनीचिःकाकणन्तिका ॥

अर्थ-रक्तिका, गुञ्जिका, गुञ्जा, काकजंघा, शिखंडिनी, कृष्णला, काकिनी, कक्षा, कनीची, काकणन्तिका (काकचिंची, शांगुष्ठा, काकादनी, काकतिक्ता, काकतुण्डिका, काका, काकिणी, काञ्ची, चूडामणी, सौम्या, शिखण्डी, अरुणा, ताम्रिका, शीतपाकी, उच्चटा, कृष्णचूडिका, रक्ता, काम्बोजी, भीलभूषणा, वन्या, श्यामलचूडा, काकचिञ्चिका काकपीलु, काकणन्ती, काकवल्लरी, काकशिम्बी, रक्तला, वक्तशल्या, ध्वांक्षनख, दुर्मोघा वायसादनी, चटकी, द्वावीजा, अंगारवल्लरी)

श्वेतगुञ्जानामानि ।

द्वितीयाश्वेतकाम्बोजीश्वेतगुञ्जाभिरिण्टिका ।
श्वेतोच्चटाश्वेतबीजाश्वेतपूर्वाचसास्मृता ॥

अर्थ-श्वेतकाम्बोजी, श्वेतगुञ्जा, मिरिण्टिका, श्वेतोच्चटा, श्वेतबीजा, श्वेतरक्तिका और श्वेतगुञ्जिका इत्यादि (चक्रशल्या, चूडाला)

संस्कृतभाषामें गुञ्जा, श्वेतगुञ्जा ।
हिन्दीभाषामें घुँघुची, चोंटली, चिरमिटी, सफेद घुँघुची ।
बंगभाषामें कुँच, सादा कुँच ।
मराठीभाषामें गुंजा, को०--माडलवेल ।
गुजरातीभाषाम चणोठी राती, चणोठीधोली ।
कर्णाटकीभाषामें गुलगुञ्जे, एरडु ।
तैलिङ्गीभाषामें गुलविंदे ।
तामिलीभाषामें करिन ।
द्रु० गोजी ।
म० कुन्नि गुञ्जा ।
उत्० रुंज ।
अंग्रेजीभाषामें विड्ट्री । Bead tree
लैटिनभाषामें एब्रेस् प्रिकेटोरियस् । Abrus precatorins
फारसीभाषामें चश्मखरूस् ।
अरबीभाषामें हब सुर्ख, हब सुफेद ।

गुञ्जागुणाः ।

गुञ्जाद्विगुणारसेतिक्ताकषायाकफपित्तहा ।

चक्षुष्याशुक्रलाकेश्यात्वच्यारुच्याबलप्रदा ॥
इन्द्रलुप्तहरीतीव्रासविषामदमोहकृत् ।
यक्षग्रहविषंहन्तिकण्डूकुष्ठव्रणान्क्रिमीन् ॥

अर्थ—घुँघुची--अनुष्णा (गरमनहीं) कडवी, कषैली, कफघ्न, पित्त... नेत्रोंको हितकारी, शुक्रजनक, केशोंको सुंदरतादायक, त्वचाको हित... रुचिकारक, बलवर्द्धक, इन्द्रलुप्त (गंज) रोगनाशक, तीव्रविषयुक्त... रक, मोहजनक तथा यक्ष, ग्रह, विष, कण्डू (खुजली) कोढ, घाव... कृमिरोगको नष्ट करे है ।

द्विविधगुञ्जागुणाः ।

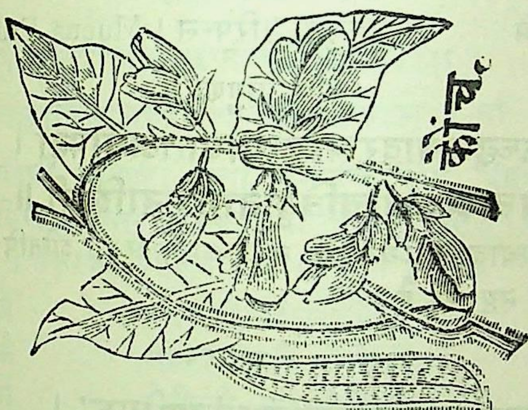
गुञ्जाद्वयंस्वादुतिक्तंबल्यंचोष्णंकषायकम् ।
त्वच्यंकेश्यञ्चरुच्यंचशीतंवृष्यंमतंबुधैः ॥
नेत्ररोगंविषंपित्तमिंद्रलुप्तंव्रणंकृमीन् ।
राक्षसग्रहपीडांचकण्डूंकुष्ठकफंज्वरम् ॥
मुखशीर्षरुजंवातंभ्रमंश्वासंतृषंतथा ।
मोहंमदंनाशयतिबीजंवान्तिकरंमतम् ॥
शूलनाशकरंमूलंपर्णंचाविषनाशकम् ।
श्वेतगुञ्जाविशेषेणवशीकरणकृन्मता ॥

अर्थ—दोनों प्रकारकी (लाल और सफेद) घूँघची, स्वादिष्ठ, कडवी... कारक, गरम, कषैली, त्वचाको उत्तम करनेवाली, केशोंको हितकारी... कारी, शीतल, वीर्यवर्द्धक तथा नेत्ररोग, विष, पित्त, इन्द्रलुप्त, व्रण... राक्षस, ग्रहपीडा, कण्डू, कुष्ठ, कफ, ज्वर, मुखरोग, शीर्षरोग, वात... श्वास, तृषा, मोह और मदका नाश करे है । इसके बीज वान्तिकारक... शूलहारक हैं । इसकी जड और पत्ते-विषनाशक हैं । सफेद घूँघची... करके वशीकरण है ।

विवरण । घूँवचीकी वेल जंगलमें अधिकतासे होती है । पत्ते... समान होते हें । और खानेमें मीठे लगतेहैं । फूल सेमके समान होतेहैं... फली भी सेमके सदृश गुच्छेवाली होतीहै । उन फलियोंमें घूँघची (... होती हैं इनमें लाल रंगकी चोंटलीके मुखपै कुछ कालापन होताहै और...

रंगकी चोंटली सम्पूर्ण सफेद होती है । सफेद रंगकी चोंटलीके छुलके उतारकर उसका चून पीसले उस चूनको दूधमें मिलाकर रबडी करले वह रबडी धातुको वढानेवाली है । चोंटलीका तेल त्वचाके रोगोंको हरनेवाला, केशोंको वढानेवाला और अनेक प्रकारके रोगोंको हरनेवाला है । व्यवहार- मूल और बीज। मात्रा १ रत्तीसे २॥ रत्तीपर्य्यन्त है ।

कपिकच्छुनामानि ।



कपिकच्छूरात्मगुप्ताशुकशिम्बाकपिप्रभा ।
शुकपिण्डीस्वयंगुप्ताकण्डूराशूकशिम्बिका ॥

अर्थ--कपिकच्छु, आत्मगुप्ता, शुकशिम्बा, कपिप्रभा, शुकपिण्डी स्वयंगुप्ता, कण्डूरा, शूकशिम्बा (जडा, अध्यण्डा, प्रावृषायणी, शुकशिम्बि, ऋष्यप्रोक्ता, शूकशिम्बि, मर्कटी, सद्यःशोथा, शूका, शूकवती, गात्रभंगा, कच्छूमती, कण्डुरा, ऋषभी, कपिकच्छुरा, ऋषभ, जटा, स्वगुप्ता, अजाह्वा, कण्डुरा, प्रगुप्ता, शूकशिम्बा, अजहा, वानरी, कपिकच्छू, कपीकच्छू, शूकपिण्डी, कपिपिण्डि, शुकशिम्बी, व्याघ्रा, सुगुप्ता, महर्षभी, लाङ्गली, कुण्डली, चण्डा, रोमिप्रहा, कपिरोमफला, गुप्ता, दुःस्पर्शा, अजडा, प्रावृषेण्या, वदरी गुरु, वृषभी, शिम्बी, वराहिका, तीक्ष्णा, रोमालु, वनशूकरी, काशीरोमा, रोमवल्ली, व्यङ्गा, वृष्या)

संस्कृतभाषामें	कपिकच्छु ।
हिन्दीभाषामें	कौंछ, किवाँच ।
बंगभाषामें	आलकुशि, धुनारगुंड, दया, शुयाशिम्बी ।
मराठीभाषामें	कुहिलीचें बीज ।
गुजरातीभाषामें	कउंचो, भेरवनी शीगनां बी ।

कर्णाटकीभाषामें	नसुगुन्नी ।
तैलिङ्गीभाषामें	पिल्लिअडुगु ।
तामिलीभाषामें	पुनाइक, कालि ।
मद्रासीभाषामें	नायिकहणा. चोरिवाल्लि ।
गोमंतकी	खवल्यावालि ।
वम्.	कुहिला ।
अंग्रेजीभाषामें	कौहेज Cowhage
लैटिन् भाषामें	म्युक्युना प्रुरिपेन्स । Mucua Pruriens

कपिकच्छुगुणाः ।

कपिकच्छुःस्वादुरसावृष्यावातक्षयापहा ।
शीतपित्तास्रहन्त्रीचविकृताशुणनाशिनी ॥ (रा. नि.)

अर्थ--कौंछ--स्वादु, वीर्य्यवर्द्धक तथा वात, क्षय, शीतपित्त, रुधिरविकार और दुष्टव्रणको नष्ट करै है ।

अन्यच्च ।

कपिकच्छुर्भृशंवृष्यामधुराबृंहणीगुरुः ।
तिक्तावातहरीबल्याकफपित्तास्रनाशिनी ॥ (भा. प्र.)

अर्थ-कौंछ-अत्यन्त वीर्य्यवर्द्धक तथा मधुर, बृंहण (पुष्टिजनक) भारी, कडवी, वातनाशक, बलकारक तथा कफ और रक्तपित्तनाशक है।

कपिकच्छुबीजगुणाः ।

तद्बीजंवातशमनंस्मृतंवाजीकरंपरम् ॥ (भा. प्र.)

अर्थ-कौंछके बीज-वातनिवारक और वाजीकरण करनेवाले हैं।

लघुकपिकच्छुगुणाः ।

कपिकच्छुर्लघुःशीतावृष्यापित्तानिलापहा ।
सिध्मातिसारहन्त्रीचवंध्यानांचाप्यपत्यदा ॥ (शो. नि.)

अर्थ-छोटीकौंछ-शीतल, वीर्य्यवर्द्धक तथा पित्त, वात, सिध्म और अतिसारको दूर करै है । तथा वंध्या स्त्रियोंको संतान उत्पन्न करनेवाली है।

अन्यच्च ।

कच्छुरातुवरातिक्तायोनिदोषापहामता ।
कुष्ठव्रणंरक्तकोपंनाशयेदितिकीर्तिता ॥ (नि. र.)

अर्थ-छोटीकौंछ-कषैली, कडवी तथा योनिदोष, कोढ व्रण और रक्तके रोगको दूर करेहै ।

विवरण । कौंछकी वेल होतीहै, फूल सेमके समान होतेहैं और फलियें भी सेमके समान होतीहैं. और फलियोंके ऊपर सूक्ष्म रुँआ अधिक होताहै, इसका रुँआ शरीरमें लगनेसे अत्यन्त खुजली होनेलगतीहै, । फलियोंके भीतरसे सेमके बीजोंके समान बीज निकलतेहैं, छोटी कौंछका क्षुप होताहै ।

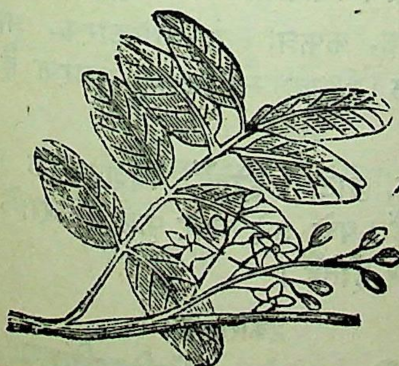
मांसरोहिणीनामानि ।

मांसरोहिण्यतिरुहावृत्ताचर्मकषावसा ।
प्रहारवल्लीविकशावीरवत्यपिकथ्यते (भा प्र)

अर्थ--मांसरोहिणी, अतिरुहा, वृत्ता, चर्मकषा, वसा, प्रहारवल्ली, विकशा, वीरवती, (अग्निरुहा, मांसरोही, कशामांसी, महामांसी, मांसरोहा, रसायनी, सुलोमा, लोमकरणी, रोहिणी, चन्द्रवल्लभा)

संस्कृतभाषामें	रोहिणी, मांसरोहिणी ।
हिन्दीभाषामें	मांसरोहिणी, रोहिणी ।
मराठीभाषामें	रोहिणी, मांसरोहिणी ।
गुजरातीभाषामें	रोण्य ।
कर्णाटकीभाषामें	रोहिणी, मांसरोहिणी ।
अंग्रेजीभाषामें	रेड्वुडट्री । Redwood Tre
लैटिन्‌भाषामें	सोयमीडा फेब्रीफ्युगा । Soymiba Fedriflga

मांसरोहिणीगुणाः ।



स्यान्मांसरोहिणीवृष्यासरादोषत्रयापहा ॥ (भा. प्र.)

अर्थ-मांसरोहिणी-वीर्य्यवर्द्धक, सारक, (दस्तावर) और त्रिदोष नाशकहै ।

अपिच ।

मांसरोहिणिकाव्रण्याचोष्णाचरक्तपित्तजित् ।
सर्वांसंग्रहणींहंतिनात्रकार्याविचारणा ॥ (नि. र.)

अर्थ-मांसरोहिणी-व्रणको हितकारी, उष्ण, तथा, रक्तपित्त और सब प्रकारकी संग्रहणी दूर करैहै ।

रोहिणी गुणाः ।

रोहिणीवातहृत्कासश्वासशोणितनाशिनी ॥ (अ. भा.)

अर्थ-रोहिणी-वातनाशक, कासनिवारक, श्वासहारक और रुधिरविकार विनाशकहै ।

द्विविधरोहिणिगुणाः ।

रोहिणीयुगलंशीतंकषायंकृमिनाशनम् ।
कण्ठशुद्धिकरंरुच्यंवातदोषनिषूदनम् (रा. नि.)

अर्थ-दोनोंप्रकारकी रोहिणी-शीतल, कषेली, कृमिनाशक, कण्ठशुद्धिकारक रुचिकारक और वातनिवारक है ।

विवरण । रोहिणीके वृक्ष जंगलमें अधिक होते हैं, पत्ते खिरनीके समान होते हैं और एक २ डालीमें सात २ आते हैं, फल अत्यन्त बारीक होते हैं ।

चिह्लकगुणाः ।

चिह्लकोवातनिर्हारःश्लेष्मघ्नोधातुपुष्टिकृत् ।
आग्नेयोविषवद्यस्यफलंमत्स्यनिषूदनम् ॥ (अ...)

अर्थ-चिह्लक-वातनाशक, कफघ्न, धातुपुष्टिकारक, आग्नेय, (गरम) और इसका फल विषके समान गुणकारक है तथा मछलियोंको नष्ट करैहै ।

विवरण । चिह्लकके वृक्ष, छोटे २ होतेहैं, विशेषकरके पर्वत अथवा पथरीली भूमिमें उत्पन्न होतेहैं । पत्ते-हरे और फूल नीलेरंगके होतेहैं । फल-रीठेके समान गोल २ होतेहैं ।

टंकारीगुणाः ।

टंकारीवातजित्तिक्ताश्लेष्मघ्नीदीपनीलघुः ।
शोथोदरव्यथाहंत्रीहितापीठविसर्पिणोः ॥ (भा. प्र.)

अर्थ-टंकारी-वातनाशक, कडवी, कफनाशक, अग्निको दीपन करने...

हलकी तथा सूजन और उदररोगको हरनेवाली है। और पीठ तथा विसर्प रोगवालोंको हितकारी है।

विवरण। टंकारीके क्षुप वन और जंगलमें अधिक होते हैं। पत्ते-लम्बे और गोल आते हैं, फूल-लाल, गुलाबी, कई प्रकारके आते हैं। फल-छोटे २ चमकेदार लगते हैं।

वेतसनामानि।

वेतसोनिचुलःप्रोक्तोवंजुलोदीर्घपत्रकः।
कलनोमंजरीनम्रोवानीरोविदुलस्तथा॥

अर्थ-वेतस, निचुल, वंजुल, दीर्घपत्रक, कलन, मञ्जरीनम्र, वानीर, विदुल, (रथ, अभ्रपुष्प, शीत, वञ्जुलप्रिय, गन्धपुष्प, रथाभ्र, वेतसी, मञ्जरीनम्र, सुषेण, गन्धपुष्पक)

जलवेतसनामानि।

निकुञ्चकःपरिव्याधोनादेयोजलवेतसः॥

अर्थ-निकुञ्चक, परिव्याध, नादेय, जलवेतस, (शाखालु, मेघपुष्प, तोयकाम, अभ्रपुष्पक, नदीकूलप्रिय, नीरप्रिय, सुशीतल, परिव्याध, व्याधिघात)

संस्कृत भाषामें	वेतस, जलवेतस।
हिन्दीभाषामें	बेंत, जलबेंत।
बंगभाषामें	वेत, वयसा, जलवेत।
मराठीभाषामें	थोरवेत, वेत।
गुजरातीभाषामें	नेतर।
कर्णाटकीभाषामें	वेडिमु, वेतसु।
तैलिंगीभाषामें	पीपारुवा, जीतयुरलुकी।
अंग्रेजी भाषामें	रोटा केन। Cane
लेटिन्भाषामें	केलेमस रोटन Galamus
फारसीभाषामें	वेत।
अरबीभाषामें	खलाफ।

वेतसगुणाः।

वेतसःशीतलोदाहशोफार्शोयोनिरुग्व्रणान्।
हन्तिवीसर्पकृच्छ्रास्रपित्ताश्मरिकफानिलान्॥ (भा. प्र.)

अर्थ-वेत-शीतल तथा शोफ (सूजन) अर्श (बवासीर) योनिरोग, व्रण

(घाव) विसर्प, मूत्रकृच्छ्र, रक्तपित्त, अश्मरी (पथरी) कफ और वात नाश करे है ।

अन्यच्च ।

वेतसःकटुकःस्वादुःशीतोभूतविनाशनः ।
वातप्रकोपनोरुच्योविज्ञेयोदीपनःपरः ॥
रक्तपित्तोद्भवंरोगंकुष्ठंदोषञ्चनाशयेत् । (राजनिघण्टु)

अर्थ-वेत-चरपरा, स्वादिष्ठ, शीतल, भूतनाशक, वातको कुपित करनेवाला, रुचिकारक, अग्निको दीपन करनेवाला तथा रक्तपित्त और कोढको दूर करे है ।

अपिच ।

वेत्रस्तुतुवरःशीतस्तिक्तःकटुकफापहः ।
वातंपित्तंचदाहंचशोफार्शोऽश्मरिकृच्छ्रकान् ॥
विसर्पातिसतंरक्तंयोनिरोगंतृषांजयेत् ।
रक्तदोषंव्रणंमेहंरक्तपित्तश्चकुष्ठकम् ॥
विषंवैनाशयत्येवांकुरःक्षारोलघुःस्मृतः ।
कटूष्णःकफवातघ्नःपर्णंभेदकरंमतम् ॥
तुवरंलघुशीतञ्चतिक्तंकटुचवातलम् ।
रक्तदोषंकफंपित्तंनाशयेदितिकीर्तितम् ॥
वेत्रबीजन्तुतुवरंस्वाद्वम्लंरूक्षपित्तलम् ।
रक्तदोषंकफंचैवनाशयेदितिकीर्तितम् ॥ (नि. र.)

अर्थ-बेंत-कषैला, शीतल, कडवा, चरपरा, कफ, वात, पित्त, दाह, सूजन, बवासीर; पथरी, मूत्रकृच्छ्र, विसर्प, अतिसार, रुधिरविकार, योनिरोग, तृषा, रक्तकोप, व्रण, प्रमेह, रक्तपित्त, कुष्ठ और विषका नाश करनेवाला है । इसके अंकुर-खारी, हलके, चरपरे, गरम तथा कफवातनाशक हैं। इसके पत्ते-भेदक (दस्तावर) कषेले, हलके, शीतल, कडवे, चरपरे, वातकारक तथा रुधिरविकार, कफ और पित्तको हरे हैं । इसके बीज-कषैले, स्वादिष्ठ, खट्टे, रूखे, पित्तजनक तथा रक्तविकार और कफका नाश करे हैं।

जलवेतसगुणाः ।

जलजोवेतसःशीतःसंग्राहीवातकोपनः ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-जलबेंत-शीतल, मलरोधक और वातको कुपित करे है ।

अन्यच्च ।

वानीरःशीतलस्तिक्तोव्रणशुद्धिकरोमतः ।
तुवरोवातकृद्ग्राहीरूक्षःपित्तहरोमतः ॥
रक्तदोषव्रणकफक्रव्यादग्रहनाशनः । (नि. र.)

अर्थ-जलबेंत-शीतल, कडवा, व्रणशोधक, कषेला, वातकारक, मलरोधक, रूखा, पित्तनाशक तथा रुधिरदोष, व्रण, कफ, राक्षसबाधा और ग्रहकी पीडाको दूर करे है ।

द्विविधवेतसगुणाः ।

वेतसस्यद्वयंशीतंरूक्षंचव्रणशोधनम् ।
रक्तपित्तहरंतिक्तंसकषायंकफापहम् ॥ (ध. नि.)

अर्थ-दोनों प्रकारके बेंत-शीतल, रूखे, व्रणशोधक, रक्तपित्तनाशक, कडवे, कषेले और कफनाशक हैं ।

बृहद्वेत्रगुणाः ।

बृहद्वेत्रस्तुशीतःस्याद्भूतपित्तामकंपहा ।
अन्येगुणाःपूर्ववेत्रसदृशाः समुदाहृताः ॥

अर्थ-बडा बेंत-शीतल तथा भूतबाधा, पित्त आम और कम्पको दूर करे है। शेष गुण बेंतके समान जानने ।

बृहज्जलवेत्रगुणाः ।

स्थूलवानीरकःशीतोरूक्षोव्रणविशोधनः ।
तिक्तस्तुतुवरोरक्तदोषपित्तकफाञ्जयेत् ॥ (नि. र.)

अर्थ-बडा जलबेंत-शीतल, रूखा, व्रणशोधक, कडवा, कषेला, तथा रक्तविकार, पित्त और कफको दूर करे है ।

विवरण । बेंत और जलबेंत इसकी दो जाति हैं, यह बेंत जलके निकटकी भूमिमें उत्पन्न होते हैं । इसके पेडभी लताके आकार होते हैं, पत्ते--बांसके समान, फल फूल आते ही नहीं, बेंतकी जड बहुत लम्बी २ होती हैं। बेंतके

ऊपरका वक्कल बहुत पका होता है। कुर्सी विंच इत्यादि इसीसे बुनी जाती हैं, वेंत जलमेंभी उत्पन्न होता है। इसके गुण वेतहीके समान होते हैं।

हिज्जलनामगुणाः।

इज्जलोहिज्जलश्चापिनिचुलश्चाम्बुजस्तथा।
जलवेतसवद्वेद्योहिज्जलोऽयंविषापहः॥

अर्थ--इज्जल, हिज्जल, निचुल, अम्बुज, यह समुद्रफल (शोप) के नाम हैं। इसके गुण जलवेतके समान हैं, विशेषता यह है कि विषविनाशक है।

अंकोटनामानि।

अङ्कोटःकोलकोरेचीविषघ्नोदीर्घकीलकः।
पीतसारस्ताम्रफलोगन्धपुष्पोनिकोचकः॥

अर्थ—अंकोट, कोलक, रेची, विषघ्न, दीर्घकीलक, पीतसार, ताम्रफल, गन्धपुष्प, निकोचक, (अङ्कोटक, अंकोठ अंकोल, निकोठक, अंकोट, बोध, नेदिष्ट, दीर्घकीलक रामठ कंकरोल, घलन्त, दृढकण्टक, कोठर, पत्र, मदन, गुप्तस्नेह, गूढवल्लिका, पीत, दीर्घकील, गुणाढयक, लम्ब, रोचन, विशालतैलगर्भ, निकोठक, कठोर, वामक, लम्बपर्णक, भूषित)

संस्कृतभाषामें	अंकोट (ठ)
हिन्दीभाषामें	ढेरा, टेरा।
वंगभाषामें	आंकड, धला आंकड, आँकोड।
मराठीभाषामें	अंकोली वृक्ष।
गुजरातीभाषामें	अंकोल्य।
कर्णाटकीभाषामें	अंकुले।
तैलिङ्गीभाषामें	उडीके।
अंग्रेजीभाषामें	ट्रीलीव्ड सल्युरिटीस्।
लैंटिन्भाषामें	एलेन्जेयं लेमार्कि आई। Alangums Lamarckii.
	एलेन्जियम् हेक्सापेटेलम्।

अंकोटगुणाः।

अङ्कोटस्तुवरस्तिक्तोरसशुद्धिकरोलघुः।
चित्कटुःसरःस्निग्धस्तीक्ष्णश्चोष्णश्चरूक्षकः॥
रसोवान्तिकरश्चास्यविषदोषकफापहः।

वातशूलशोथकृमिग्रहपीडामपित्तहा ॥
रक्तदोषविसर्पघ्नःश्वानाखुविषनाशनः ।
ओतोर्विषकटीशूलमतिसारंचनाशयेत् ॥
पिशाचपीडाशमनोबीजंचास्यतुशीतलम् ।
धातुवृद्धिकरंस्वादुचाग्निमांद्यकरंगुरु ॥
रसेपाकेतुमधुरंबलकृत्कफकृत्सरम् ।
स्निग्धंवृष्यञ्चदाहघ्नंवातपित्तक्षयापहम् ॥
रक्तदोषंकफंपित्तंविसर्पञ्चैवनाशयेत् । (नि. र.)

अर्थ-ढेरा-कषेला, कडवा, पारेको शुद्ध करनेवाला, हलका, किञ्चित् चरपरा, सर, (दस्तावर), स्निग्ध, तीक्ष्ण, गरम और रूखा है। इसका रस-कान्तिजनक तथा विषविकार, कफ, वात, शूल, कृमि, सूजन, ग्रहपीडा, आम, पित्त, रुधिरविकार, विसर्प, कुत्तेका विष, मूसेका विष, बिलावका विष, कटिशूल, अतिसार और पिशाचपीडा इनका नाश करे है। इसके बीज-शीतल, धातुवर्द्धक, स्वादिष्ट, मंदाग्निकारक, भारी, रसमें और पाकमें मधुर, बलकारक, कफकारी, सारक, स्निग्ध, वृष्य (वीर्य्यवर्द्धक) तथा दाह, वात, पित्त, क्षय, रक्तविकार, कफ, पित्त और विसर्प इनको दूर करे हैं।

अन्यच्च ।

अङ्कोटकःकटुस्तीक्ष्णः स्निग्धोष्णस्तुवरोलघुः ।
रेचनःकृमिशूलामशोफग्रहविषापहः ॥
विसर्पकफपित्तास्रमूषकाहिविषापहः ।
तत्फलंशीतलंस्वादुश्लेष्मघ्नंबृंहणंगुरु ॥
बल्यंविरेचनंवातपित्तदाहक्षयास्रजित् ॥ (भा. प्र.)

अर्थ--ढेरा--चरपरा, तीक्ष्ण, स्निग्ध, गरम, कषेला, हलका, दस्तावर तथा कृमि, शूल, आम, सूजन, ग्रहपीडा, विष, विसर्प, कफ, पित्त, रुधिरविकार, मूषेके विष और सांपके विषको दूर करे है। इसका फल--शीतल, स्वादिष्ट, कफनाशक, बृंहण (वाजीकरण), भारी, बलकारक, दस्तावर तथा वात, पित्त, दाह, क्षय और रक्तविकारको दूर करे है।

विवरण । ढेरेके वृक्ष वनमें अधिकतासे होते हैं । इसके पत्ते-एक अंगुल चौडे और पांच छै अंगुल लम्बे होते हैं, फूल--सफेद होता है, फल-कच्ची अवस्थामें नीले और पकनेपर लाल होजाते हैं । उनके ऊपर कालापन झलकता रहता है । इस वृक्षपर कांटे होते हैं ।

बलानामानि ।

वाट्यपुष्पीसमांशाचविलत्लाबलिनीबला ।

अर्थ--वाट्यपुष्पी, समांशा, विलला, बलिनी, बला (वाट्यालक, ओदनी, समंगा, ओदनिका, भद्रा, भद्रोदनी, खरककाष्ठिका, कल्याणिनी, भद्रबला, मोटापाटी, बलाढया, शीतपाकी, वाट्यवाटी । निलया, वाट्याली, वाटि, वाटयालिका, खरयष्टिका, ओदनाह्वा, वातघ्नी, कनका, रक्ततन्दुला, प्रहासा, वारिगा, फणिजिह्विका, जयन्ती, कठोरयष्टिका, बलाढया)

संस्कृतभाषामें	बला ।
हिन्दीभाषामें	खिरटी, वरियारा (ला), बीजवन्द ।
वंगभाषामें	वेडेला ।
मराठीभाषामें	लघुचिकणा, खिरहंटी, थोरचिकणा ।
गुजरातीभाषामें	बलदाणा, खरेटी ।
कर्नाटकीभाषामें	वेणगरग ।
तैलिंगीभाषामें	मुर्पिंडी ।
अंग्रेजीभाषामें	होर्न बिमलीव्डसिडा।हार्टलिव्डसिडा Hornbeam leaved sida. HeArt leaved Sida
लैटिन्भाषामें	सिडा कार्पिनीफोलिया । Sida carpinifolia सिडाकोर्डिफोलिया । Cardifolia

बलागुणाः ।

स्निग्धारुच्याबलावृष्याग्राहिणीवातपित्तजित् ॥ (रा. नि.)

अर्थ–खिरैंटी- स्निग्ध, रुचिकारक, वृष्य (वीर्यवर्द्धक), ग्राही तथा वात और पित्तको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

वलातिक्तातिमधुरापित्तातीसारनाशिनी ।
बलवीर्यपुष्टिदात्रीकफरोधविशोधनी ॥ (राजनिघण्टुः)

अर्थ-खिरैंटी--कडवी, मधुर, पित्तातिसारनाशक, बलवीर्य्यवर्द्धक, पुष्टिकारक और कफरोधविशोधक है ।

अपिच ।

बलामूलत्वचश्चूर्णंपीतंसक्षीरशर्करम् ।
मूत्रातिसारं हरति दृष्टमेतन्नसंशयः ॥ (भा. प्र.)

अर्थ-खिरैंटीकी- जडकी छालका चूरण मिश्रीमिलेहुए दूधमें मिलाकर पीनेसे मूत्रातिसार रोग दूर होता है ।

बलाबीजगुणाः ।

बलाफलस्वादुपाकेकषायंमधुरंरसे ।
हिमवीर्यंगुरुगुणंस्तम्भनंलेखनंभृशम् ॥
विबन्धाध्मानपवनकारिपित्तकफास्त्रनुत् । (वै. नि.)

अर्थ--खिरैंटीका फल -पचनेमें स्वादिष्ठ, कषेला, मधुर, शीतवीर्य्य, भारी, स्तम्भन, लेखन, विबन्धकारक, आध्मानजनक, वातवर्द्धक, तथा पित्त, कफ और रुधिरविकारको दूर करेहै ।

महाबला नामानि ।

महाबलापीतपुष्पीसहदेवीचसास्मृता ॥

अर्थ--महाबला, पीतपुष्पी, सहदेवी, (ज्येष्ठबला, करम्भरा, केशरुहा, ...मरिका, मृगादनी, बर्षपुष्पा, केशवर्द्धिनी, प्रसादनी, देवबला, सारिणी, ...पुष्पा, देवाहाँ, गन्धवल्लरी, मृगा, मृगरसा, वर्षपुष्पी, वाट्या, वाटया-...नी, सहदेवा, देवसहा, बृहद्बला, गन्धावल्ली, महागन्धा, मङ्गलार्थप्रसादनी)

संस्कृतभाषामें	महाबला, सहदेवी।
हिन्दीभाषामें	सहदेई ।
बङ्गलाभाषामें	पीतपुष्प, वेडेला ।
मराठीभाषामें	भांबुर्डी ।
गुजरातीभाषामें	सहदेवी ।
तामिलीभाषामें	नेचिट्टी ।
म०	पिरिब्रा ।
कर्नाटकीभाषामें	वेल्दुरुँवे ।
लैटिनभाषामें	सिडारोंफिफोलिया । Sida rhomflfolia

महाबलागुणाः ।

हरेन्महाबलाकृच्छ्रंभेवद्वातानुलोमनी ॥ (भा. प्र.)

अर्थ--सहदेई--मूत्रकृच्छ्ररोगनाशक है और वातानुलोमकहै ।

अन्यच्च ।

महाबलातुमधुराधातुवृद्धिकरीमता ।
बल्यावृष्यादिदोषघ्नीज्वरहृद्रोगदाहनुत् ॥
वातार्शःशोफविषमज्वरान्मेहगणंतथा ।
बहुमूत्रंनाशयतीत्येवमाचार्यभाषितम् ॥

अर्थ--सहदेई--मधुर, धातुवर्द्धक, बलकारक, वीर्य्यवर्द्धक, त्रिदोष तथा ज्वर, हृदयरोग, दाह, वादीकी बवासीर, सूजन, विषमज्वर, सर्व प्रमेह और मूत्रातिसारनिवारक है ।

अतिबलानामानि ।



बलिकातिबलाबल्याविकंकतावाट्यपुष्पिकाघण्टा ।
शीताचशीतपुष्पाभूरिबलावृष्यगन्धिकादशधा ॥

अर्थ--बलिका- अतिबला, बल्या, विकंकता, वाटयपुष्पिका, घंटा, शीतपुष्पा, भूरिबला, वृष्यगन्धिका (कंकती, ऋषिप्रोक्ता, वृष्यन्धा)

संस्कृतभाषामें	अतिबला ।
हिन्दीभाषामें	कंगही, कंघी, ककहिया ।
मराठीभाषामें	विकंकती, आककई, कांसुली ।

गुजरातीभाषामें खपाटच ।
कर्नाटकीभाषामें मल्लुदुर्रुवे ।
अंग्रेजीभाषामें इंडियनमेलो । Iuhian Malow
लैटिन्भाषामें एव्युटिलन्इंडिकम् । Aputilon indicnm

अतिबलागुणाः ।

तिक्ताकटुश्चातिबलावातघ्नीकृमिनाशिनी ।
दाहतृष्णाविषच्छर्दिक्लेदोपशमनीपरा ॥

अर्थ-कंघई--कडवी, चरपरी तथा वात, कृमि, दाह, तृषा, विष, वमन और क्लेदको शान्तकरे है ।

अन्यच्च ।

बलिकामधुराचाम्लाहितादोषत्रयप्रणुत् ।
युक्त्याबुद्ध्याप्रयोक्तव्याज्वरदाहविनाशिनी ॥ (ग०वि०)

अर्थ-कंघी (ककहिया) मधुर, अम्ल (खट्टी), हितकारक, त्रिदोषनाशक और किसीके साथ युक्तिपूर्वक देनेसे ज्वरको हरनेवाली, है ।

अन्यच्च ।

हन्यादतिबलामेहंपयसासितयासह ॥ (भा. प्र.)

अर्थ-कंघीको दूध और मिश्रीके साथ सेवन करनेसे प्रमेह रोगका नाश होता है ।

त्रिविधबलागुणाः ।

बलात्रयंस्वादुशीतंस्निग्धंवृष्यंबलप्रदम् ।
आयुष्यंवातपित्तघ्नंग्राहिमूत्रग्रहापहम् ॥

अर्थ-खिरैंटी, सहदेई और कंघी यह तीनों स्वादिष्ठ, शीतल, स्निग्ध, वीर्य्यवर्द्धक, बलकारक, अवस्थास्थापक, वातपित्तनाशक, मलरोधक, मूत्ररोगनिवारक और ग्रहकी पीडाको दूर करे है । मात्रा २ मासेकी ।

नागबलानामानि ।

गाङ्गेरुकीनागबलाझषाह्रस्वगवेधुका ॥

अर्थ-गांगेरुकी, नागबला, झषा, ह्रस्वगवेधुका, (खरान्धिनी, गोरक्ततण्डुला, भद्रौदनी, खरगन्धा, चतुःपला, महोदया, महापत्रा, महाशाखा, मृदुफला, विश्वदेवा, अनिष्टा, देवदण्डा, महागन्धा, घण्टा, खरवल्लरिका, ...देवी)

संस्कृतभाषामें	नागबला ।
हिंदीभाषामें	गंगेरन गुलसकरी ।
वंगलाभाषामें	गोरख, चाकुले, पानसांडा ।
मराठीभाषामें	गांगेटी, गांडे धामण ।
कोकणीभाषामें	तुपकडी ।
कर्णाटकीभाषामें	बट्टगरुंके ।
लैटि०	सिडास्फमोझा । Sida spinosa

अस्यागुणाः ।

मधुराम्लानागबलाकषायोष्णागुरुस्तथा ।
कटूष्णाकफवातघ्नीव्रणपित्तविनाशिनी (ग. नि.)

अर्थ-गंगेरन-मधुर, अम्ल, कषेली, गरम, भारी, चरपरी, कफवा-
शक, व्रणनिवारक और पित्तहारक है ।

अन्यच्च।

तद्वन्नागबलात्यर्थंकृच्छ्रेक्षीणक्षतेहिता ॥ (राजवल्लभ)

अर्थ-गंगेरनके गुणभी खिरैंटीकी समान हैं, विशेषकरके मूत्रकृच्छ्र
और क्षीणरोगमें हितकारी है ।

अन्यच्च ।

ज्ञेयानागबलाचाम्लामधुरातुवरागुरुः ।
कटवत्युष्णाव्रणंवातंपित्तंकुष्ठञ्चनाशयेत् ॥
कण्डूञ्चनाशयत्येवंमुनिभिः परिकीर्तिताः ।(निघण्टु)

अर्थ-गंगेरन-अम्ल, मधुर, कषेली, भारी, चरपरी, गरम तथा
वात, पित्त, कुष्ठ और कण्डूको हरनेवाली है ।

अस्याफलगुणाः ।

गांगेरुकीफलंरूक्षंकषायंस्वादुवातलम् ।
लेखनंस्तम्भनंशीतंविबन्धाध्मानकृद्गुरु ॥ (शो० नि०)

अर्थ-गुलशकरीके फल-रूखे, कषेले, स्वादु, वादी, लेखन, स्त-
शीतल, विबन्ध और आध्मानकारक, तथा भारी हैं ।

बृहन्नागबलागुणाः ।

बृहन्नागबलाचाम्लामधुराचत्रिदोषहा ।

दाहज्वरहराप्रोक्तापूर्ववैद्यैर्मनीषिभिः (नि. रा.)

अर्थ- बडीगंगेरन -अम्ल, मधुर, त्रिदोषनाशक, तथा दाह और ज्वरनिवारक है ।

चतुर्विधवलागुणाः ।

बलाचतुष्टयंशीतंमधुरंबलकान्तिकृत् ।
स्निग्धंग्राहिसमीरास्रपित्तास्रक्षतनाशनम् ॥

अर्थ--चारोंप्रकारकी खिरैंटी (खिरैंटी, सहदेई; कंघी, गंगेरन) शीतल, मधुर, बलवर्द्धक, कान्तिकारक, स्निग्ध, मलरोधक, तथा वातरक्त, रक्तपित्त और क्षतनाशक है ।

विवरण । बला अनेक प्रकारकी होती है जैसे खिरैंटी, कंघी, गंगेरन, गुलसकरी, सहदेई, दण्डोत्पल इत्यादि । इनमें खिरैंटीके भी कई भेद हैं । एक प्रकारकी खिरैंटी वह होती है कि, जिसके वृक्ष डेढहाथ ऊंचे होते हैं । इसके पत्ते-तुलसीके पत्तोंकी समान होते हैं । फूल--पीला आता है । फल--छोटे २ होते हैं और इसमें बहुतसे बीज निकलते हैं । इसके पत्तोंका शाक बनाते हैं ।

२ दूसरे प्रकारकी खिरैंटीका वृक्ष पुरुषकी बराबर ऊंचा होता है । इसके पत्ते-अनीदार होते हैं । फूल--सफेद रंगके आते हैं, फल बारीक और गोल होते हैं । उनमेंसे जो बीज निकलता है उनको बलाबीज अथवा बीजबंद कहते हैं ।

३ कंघीके वृक्षभी दोढाई हाथ ऊंचे होते हैं । फूल--पीला, फल--चक्रकी समान और गोल होते हैं । उनको प्रायः बालक छापाकरते हैं । इसके बीजभी खिरैंटीकी समान होते हैं ।

४ गंगेरनका वृक्ष सहदेईके वृक्षकी सदृश होता है किन्तु, इसके पत्ते--कुछ अधिक मोटे और दो अनिवाले होते हैं । फूल--गुलाबी रंगका होता है, फलभी सहदेईसे बडे होते हैं, और फलके सूखनेपर उसके अपने आप पांच भाग होजाते हैं ।

५ सहदेईके वृक्ष छोटे और बडे दोप्रकारके होते हैं- इसके पत्ते पतले और खुरदरे होते हैं । इसका फल फूल पीलेरंगका आता है, फल छोटे २ गोल होते हैं और इसमें कांटे होते हैं ।

लक्ष्मणानामानि ।

लक्ष्मणापुत्रजननीनागपत्रीचपुत्रदा ।

अर्थ--लक्ष्मणा, पुत्रजननी, नागपुत्री, पुत्रदा (पुत्रकन्दा, पुच्छदा, नागाह्वा, नागपुत्री, तूलिनी, मञ्जिका; अस्त्रबिन्दुच्छदा)

लक्ष्मणागुणाः ।

लक्ष्मणाकन्दकःशीतोमधुरश्चरसायनः ।
गर्भप्रदश्चवृष्यश्चत्रिदोषव्रणवातहा ॥ (निघण्टुरत्नाकर)

अर्थ--लक्ष्मणाकन्द--शीतल, मधुर, रसायन. गर्भप्रद, वीर्य्यवर्द्धक, त्रिदोषनाशक और व्रणविनाशक है ।

विवरण । लक्ष्मणा औषधि बहुत कम मिलती है । यह कहीं २ पर्वतादिमें उत्पन्न होती है । इसके पत्ते--चौंडे होते हैं उनपर लाल २ चन्द्र समान बूंदेसी होती हैं । इसके नीचे सफेद रंगका कंद निकलता है)

स्वर्णवल्लीनामानि ।

स्वर्णवल्लीरक्तफलाकाकायुःकाकवल्लरी ॥

अर्थ--स्वर्णवल्ली, रक्तफला, काकायु, काकवल्लरी (हरणीपीतिका)

अस्या गुणाः ।

स्वर्णवल्लीशिरःपीडांत्रिदोषान्हन्तिदुग्धदा ॥

अर्थ--स्वर्णवल्ली--शिरपीडा और त्रिदोषनाशक है, तथा स्तनोंमें दूध बढानेवाली है ।

विवरण । स्वर्णवल्ली अर्थात् सोनवेल प्रायः पर्वत, बाग, और वनोंमें होती है । पत्ते--गोल अनीदार होते हैं, फल--लाल लगते हैं इस लताका सम्पूर्ण पीला होता है इसी कारण इसका नाम स्वर्णलता है ।

हिन्दीभाषामें	स्वर्णवल्ली ।
मराठीभाषामें	सोनवेल ।
गुजरातीभाषामें	स्वर्णवल्ली ।

कर्पासीनामानि ।

कार्पासीतुण्डिकेरीचसमुद्रान्ताचकथ्यते ॥

अर्थ--कर्पासी, तुंडिकेरी, समुद्रान्ता, (बदरा, पटद, वादरा, बदरी, कार्पासिका, कर्पासी, कर्पाससारिणी, चव्या, तुला गुड, तुण्डकेरी, मरुद्भवा, पिचु, बादर, कार्पास, पटलुन, छादन)



कपास

वनकार्पासनामानि ।

त्रिपर्णावनकार्पासीभारद्वाजीयशस्विनी ॥

अर्थ–त्रिपर्णा, वनकार्पासी, भारद्वाजी, यशस्विनी (वनसरोजिनी, बहुमूर्ति, वनकार्पासिका, वनजा, वनोद्भवा, वनोद्भवकार्पास, अरण्यकार्पासिका, अरण्यकार्पासी)

कालाञ्जनीनामानि ।

कालाञ्जनीचकृष्णाभाकृष्णाञ्जनीशिलाञ्जनी ॥

अर्थ-कालाञ्जनी, कृष्णाभा, कृष्णाञ्जनी, शिलाञ्जनी, (अञ्जनी, रचनी, नीलाञ्जनी, काली)

संस्कृतभाषामें कार्पासी, वनकार्पासी, कालाञ्जनी ।

हिन्दीभाषामें कपास, वनकपास, नरमावाडी, कापच्छी, [विनोले] कालीकपास, [रुई]

बंगभाषामें कार्पास, वनकार्पास, कालिकर्पासिकिनी [तुला]

मराठीभाषामें कापशी, कापूस, सरकी, काली कापशी ।

गुजरातीभाषामें वणरु कपास, हिरवणी कपाशिया ।

कर्णाटकीभाषामें हत्ति काडहत्ति ।

तैलिंगीभाषामें पत्तिचेट्टु ।

अंग्रेजीभाषामें　　काटन् । Cotten plant
लैटिन्भाषामें　　गोसिपीयं अरपेश्यं । Gossypium herpace...
फारसीभाषामें　　कुतुन, पुंवेदना ।
अरबीभाषामें　　कुतन, हवुल कुतन ।

कार्पासीगुणाः ।

कार्पासीमधुराशीतास्तन्यापित्तकफापहा ।
तृष्णादाहश्रमभ्रान्तिमूर्च्छाहृद्बलकारिणी ॥ (रा. नि.)

अर्थ-कपास मधुर, शीतल, स्तनोंमें दूध बढानेवाली, बलकारक, पित्त, कफ, तृषा, दाह, श्रम, भ्रांति और मूर्च्छाको दूर करनेवाली है।

अन्यच्च ।

कार्पासकीलघुश्चोष्णामधुरावातनाशिनी ।
तत्पलाशंसमीरघ्नंरक्तकृन्मूत्रवर्द्धनम् ॥
तत्कर्णपिडिकानादपूयास्रावविनाशनम् ।
तद्बीजंस्तन्यदंवृष्यंस्निग्धंकफहरंगुरु ॥ (भा. प्र.)

अर्थ-कपास हलकी, गरम, मधुर, और वातविनाशक है। इसके पत्ते वातनाशक, रक्तवर्द्धक, मूत्रको बढानेवाले, तथा कानडी पीडा, नाद और कानसे राधके बहनेको दूर करनेवाले हैं। कपासके बीज दूध बढानेवाले, वीर्य्यवर्द्धक, स्निग्ध, कफकारी और भारी हैं।

वनकार्पासीगुणाः ।

भारद्वाजीहिमारुच्याव्रणशस्त्रक्षतापहा ॥

अर्थ-वनकपास शीतल, रुचिकारक, तथा घाव और शस्त्रके घावको दूर करे है।

कालांजनीगुणाः ।

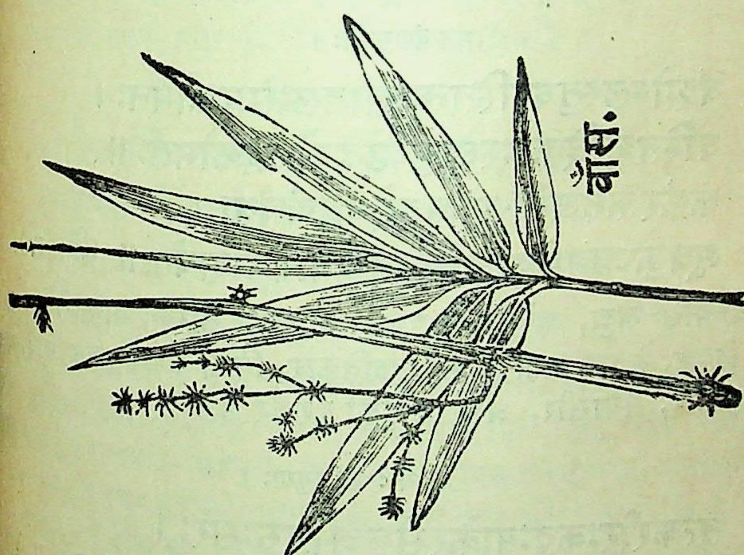
कालाञ्जनीकटूष्णास्यादम्लामक्रिमिशोधिनी ।
अपानावर्तशमनी जठरामयहारिणी ॥ (रा. नि.)

अर्थ-कालीकपास चर्परी, गरम, खट्टी, आमनाशक, कृमिशोधक, अपानावर्त्तशामक, और उदररोगको हरनेवाली है।

विवरण । कपासके पेड़ सब हिन्दोस्तानमें बहुत होते हैं। इसकी खेती होती है, इसका बहुत बड़ा व्यापार होता है, उत्तम २ वस्त्रादिक

सहीके बनते हैं। कपासके फूल-पीले और बीचमें लाल होतेहैं उसमें गूलरकी समान तिकोने फूल आते हैं। उसके भीतर कपास निकलतीहै, वह कपास चरखीमें ओटी जातीहै उसमेंसे जो बीज निकलतेहैं उनको बिनौले कहतेहैं। इसके पत्तेमें पांच अनी होतीहैं जैसे, एरण्डके पत्तोंमें। परन्तु उनसे बहुत छोटे होतेहैं। एक काली कपास होतीहै जिसके फूल काले और बिनौले भी काले होतेहैं। एक नरयावाडी होतीहै जिसके पेड बडे२ होते हैं, फल फूल बारह महीने आतेहैं, रुई नरम होतीहै, बिनौले हरे होतेहैं, यह सब कपासहीके भेद हैं।

वंशनामानि।



वंशत्वक्सारकम्मारत्वचिसारतृणध्वजाः ।
शतपर्वा यवफलो वेणुमस्करतेजनाः ॥

अर्थ--वंश, त्वक्सार, कर्मार, त्वचिसार, तृणध्वज, शतपर्वा, यवफल, वेणु, मस्कर, तेजन, (किलाटी, पुष्पघातक, बृहत्तृण, किष्कुपर्वा, वन्य, सुपर्वा, तृणकेतुक, कण्टालु, कण्टकी, महाबल, दृढग्रन्थि, दृढपत्र, धनर्द्रुम, यातुघ्य, दृढकाण्ड, कीचक, कुक्षिरन्ध्र, षट्पदालय, कमठ, मृत्युबीज, नादनीय, फलान्तक, तृणकेतु, पर्वयोनि, सुपर्वन्, तृणराजक, बहुपर्वन्, दुरारुह)

संस्कृतभाषामें	वंश।
हिंदीभाषामें	बाँस।
बंगलामें	बाँस।

मराठीभाषामें	वेळू, पोकळवेळू. भरींववेळू ।
गुजरातीभाषामें	वांश ।
कर्णाटकीभाषामें	यरडुबिदीरु ।
तैलिङ्गीभाषामें	कचिकई यदुरु, वेन्नमुक, बेन्नुर्शणि, वेत्तु।
तामिलीभाषामें	मनगिल ।
वम्०	माण्डगय ।
अंग्रेजीभाषामें	बेंबूकेन । Camboo cane
लैटिनभाषामें	बेंबुसाबलगेरिस् Bambsusa Vlgarcs
फारसीभाषामें	कसव ।

वंशगुणाः ।

वंशोम्लस्तुवरस्तिक्तःशीतलःसारकोमतः ।
वस्तिशुद्धिकरःस्वादुच्छेदनोभेदकोमतः ॥
कफंरक्तरुजपित्तकुंष्ठशोथंव्रणंतथा ।
मूत्रकृच्छ्रप्रमेहार्शान्दाहश्चैवविनाशयेत् ॥ (नि. र.)

अर्थ-बाँस-खट्टा, कषेला, कडवा, शीतल, सारक, वस्तिशोधक, ह... दिष्ठ, छेदक, भेदक, तथा कफ, रक्तविकार, पित्त, कोढ, सूजन, घाव, ... कृच्छ्र, प्रमेह, बवासीर, और दाहको दूरकरे है ।

अस्याः करीरगुणाः ।

तत्करीरःकटुःपाकेरसेरूक्षोगुरुःसरः ।
कषायःकफकृत्स्वादुर्विदाहीवातपित्तलः ॥ (भा. प्र.)

अर्थ-बाँसके अंकुर-पचनेमें चरपरे, रूखे, भारी सारक (दस्तावर) कषेले, कफकारक, स्वादु, दाहजनक और वातपित्तकारकहैं ।

अपिच ।

करीरंकटुतिक्ताम्लंकषायंलघुशीतलम् ।
पित्तास्रदाहकृच्छ्रघ्नंरुचिकृत्पर्वनिर्गुणम् ॥ (रा. नि.)

अर्थ-बांसके अंकुर-चरपरे, कडवे. खट्टे, कषेले, हलके, शीतल, ... रक्तपित्त, दाह और मूत्रकृच्छ्र रोगको हरेहैं । इसके पर्व (गांठे) निर्गुण ...

वंशयवगुणाः ।

वेणोर्यवस्तुतुवरो रूक्षश्च मधुरोमतः ।

पुष्टिकृद्वीर्यकृद्बल्यःकफपित्तहरोमतः ।
विषप्रमेहशमनोमुनिभिःपरिकीर्त्तितः । (नि० र०)

अर्थ-बांसके चावल-कषेले, मधुर, पुष्टिकारक, बलवर्द्धक, तथा कफ, पित्त, विष और प्रमेहको दूर करे हैं ।

अपिच ।

तद्यवास्तुसरारूक्षाःकषायाःकटुपाकिनः ।
वातपित्तकराउष्णाबद्धमूत्राःकफापहाः ॥ (भा. प्र.)

अर्थ-बाँसके चावल-सारक (दस्तावर), रूखे, कषेले, पचनेमें कटु, वातपित्तकारक, गरम, तथा मूत्ररोध और कफनाशक हैं ।

द्विविधवंशगुणाः ।

वंशौत्वम्लौकषायौचकिञ्चित्तिक्तौसुशीतलौ ।
मूत्रकृच्छ्रप्रमेहार्शःपित्तदाहस्रनाशनौ ॥
विशेषाद्रन्ध्रवंशस्तुदीपनोऽजीर्णनाशनः ।
रुचिकृत्पाचनोहृद्यःशूलघ्नोगुल्मनाशनः ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-दोनोंप्रकारके बांस-(बांस और रन्ध्रबांस) खट्टे, कषेले, किञ्चित् कडवे शीतल, तथा मूत्रकृच्छ्र, प्रमेह, बवासीर, पित्त, दाह और रक्तविकारोंको करे हैं । रन्ध्रवंश-विशेषकरके अग्निको दीपन करनेवाला, अजीर्णनाशक रुचिकारक, पाचक, हृदयको हितकारी, तथा शूल और गुल्मनाशक है ।

विवरण । बांस वन जंगल और पर्वतोंकी तलेटियोंमें उत्पन्न होते हैं, फूल सफेद आता है बांसमें वंशलोचन निकलता है, कभी २ बांसपै जौ आते हैं उन जौओंमेंसे चावल निकलते हैं उनका भात करते हैं ।

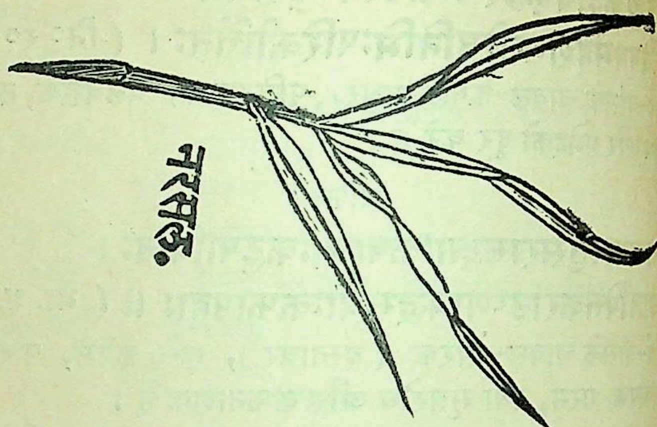
नलनामानि ।

नलः पोटगलःशून्यमध्यश्चधमनस्तथा ॥

अर्थ-नल, पोटगल, शून्यमध्य, धमन (नाल, नड, कुक्षिरन्ध्र, कीचक दीर्घवंश, बिभीषण, छिद्रान्त, मृदुपत्र, वंशपत्र, मृदुच्छद, लालवंश, नट, नदी, नंड, नर्तक, मृत्युपुष्प)

देवनलनामानि ।

अन्योमहानलोवन्योदेवनालोनलोत्तमः ।
स्थूलनालःस्थूलदण्डःसुरनालःसुरद्रुमः ॥



अर्थ—महानल, वन्य, देवनाल, नलोत्तम, स्थूलनाल, स्थूलदंड, सुर सुरद्रुम।

संस्कृतभाषामें	नल, महानल।
हिन्दीभाषामें	नरसल, नल, बडानरसल।
वंगभाषामें	नल, बडनल।
मराठीभाषामें	नळ, देवनळ, थोरदेवनळ।
गुजरातीभाषामें	नाली।
कर्णाटकीभाषामें	देवनाल, कर्हरियदेवनाल।
तैलिङ्गीभाषामें	मुंगुण्डुरु, किक्केशगड्डि।
अंग्रेजीभाषामें	इण्डियन रोबेका। Indian robacoo
लैटिन्भाषामें	लोबिलीया, निकोटिया, निफोलिया। Lobelia Nicotia naefolia
कच्छीभाषामें	आंची।

नलगुणाः।

नलस्तुमधुरस्तिक्तःकषायःकफरक्तजित।
उष्णोहृद्बस्तियोन्यार्तिदाहपित्तविसर्पहृत॥ (भा. प्र.)

अर्थ—नल-मधुर, कड़वा, कषेला, कफनाशक, रक्तविकारविनाशक, गरम, तथा हृदयरोग, वस्तिकी पीड़ा, योनिरोग, दाह, पित्त और विसर्प नाशकरे है।

अन्यच्च।

ज्ञेयोविभीषणःशीतोरुच्यश्चतुवरोमधुः।
वीर्य्यवृद्धिकरस्तिक्तोदीपनोमूत्रशोधनः॥

विसर्पकृच्छ्रदाहास्रदोषपित्तकफान्हरेत् ।
हृद्रोगवस्तिशूलौचयोनिरुग्रक्तपित्तहा ॥ (नि. र.)

अर्थ-नळ (नरसल)-शीतल, रुचिकारक, कषेला, मधुर, वीर्य्यवर्द्धक, कड़वा, अग्निको दीपन करनेवाला, मूत्रशोधक, तथा विसर्प मूत्रकृच्छ्र, दाह, रुधिरविकार, पित्त, कफ, हृदयरोग, वस्तिशूल, योनिरोग, और रक्तपित्तका नाशकरे है)

देवनलगुणाः ।

देवनलोतिमधुरोवृष्यईषत्कषायकः ।
नलाधिकश्चवीर्य्येतुशस्यतेरसकर्मणि ॥

अर्थ-बडा नरसल-अत्यन्त मधुर, वीर्यवर्द्धक, किञ्चित्कषेला, और नलकी अपेक्षा वीर्य्यमें अधिक है तथा रसकर्ममें उत्तम है ।

विवरण-नरसल अर्थात् नल बांसके समान जलाशयके निकट जंगलोंमें उत्पन्न होतेहैं । पत्ते-ईखके पत्तोंके समान होतेहैं इसकी आकृतिभी ईखकेही सदृश होतीहै । जिस प्रकार गन्नेके ऊपर अगोला होताहै उसीप्रकार इसके ऊपरभी होताहै परन्तु ऊंचावमें ईखसे तिगुना ऊंचा होताहै यह भीतरसे पोला होताहै ।

भद्रमुञ्जनामानि ।

भद्रमुञ्जःशरोबाणस्तेजनश्चक्षुवेष्टनः ।
मुञ्जोमुंजातकोबाणःस्थूलदर्भः सुमेखलः ॥

अर्थ-भद्रमुञ्ज, शर, बाण, तेजन और चक्षुवेष्टन, यह नाम रामशरके हैं । मुञ्ज, मुञ्जात, बाण, स्थूलदर्भ, सुमेखल (इक्षुकाण्ड, मौञ्जी, तृणाख्य, ब्रह्मण्य, तेजनाह्वय, वानीरक, मुञ्जनक, शीरी, दर्भाह्वय, दुर्मूल, दृढतृण, दृढमूल, बहुप्रज, रञ्जन, शक्रभंग) यह नाम मूँज अर्थात् सेंटेके हैं ।

संस्कृतभाषामें	भद्रमुञ्ज, मुञ्ज ।
हिन्दीभाषामें	रामसर, मूँज ।
मराठीभाषामें	मोळ ।
बंगभाषामें	मुँज, रामशर, सरपत ।
तैलिङ्गीभाषामें	मुंजगड्डि अनिस्फुलिंग ।

द्विविधमुञ्जगुणाः ।

मुञ्जद्वयन्तुमधुरंतुवरंशिशिरंतथा ।

दाहतृष्णाविसर्पास्रमूत्रवस्त्यक्षिरोगजित् ॥
दोषत्रयहरंवृष्यंमेखलासूपयुज्यते । (भा. प्र.)

अर्थ-दोनों प्रकारकी मूँज (मुञ्ज और रामशर) मधुर, कषेली, शी... तथा दाह, तृषा, विसर्प, रुधिरविकार, मूत्ररोग, नेत्ररोग और त्रिदोषना... है। तथा वीर्य्यवर्द्धक है।

अन्यच्च मुञ्जगुणाः ।

मुञ्जस्तुमधुरः शीतःकफपित्तजदोषजित् ।
ग्रहरक्षासु दीक्षासु पावनो भूतनाशनः ॥

अर्थ-मूँज-मधुर, शीतल, कफपित्तजदोषनाशक, ग्रहरक्षा और दी... पवित्र तथा भूतनाशक है।

विवरण-मुंज और भद्रमुंजके झुंडभी नलके समानजलाशयके ... या रेतेमें बहुत होतेहैं इसको वीणभी कहतेहैं, यह वास्तवमें वीरण ... अब विगडकर वीण होगया इसके बक्कलको मूंज कहतेहैं। फूल फल ... सफेद रंगके होतेहैं।

काशनामानि ।

काशः सुकाण्डःकासेक्षुर्नादेयोनीरजस्तथा ।
काकेक्षुर्वायसेक्षुश्चसस्यादिक्षुरसः शिरिः ॥

अर्थ-काश, सुकाण्ड, कासेक्षु, नादेय, नीरज, काकेक्षु, वायसेक्षु, इक्षुर... शिरि, (इक्षुगन्धा, पोटगल, काश, कर्म्ममूल, इक्षुरम्लिका, इषीका, ... बाल, चामरपुष्प, चामरपुष्पक, काशी, काशा, काण्डेक्षु, अमरपुष्पक, ... वनहासक, इक्षारि, इक्षुर, इक्षुकाण्ड, शारद, सितपुष्पक, दर्भपत्रक, ... काण्ड, काण्डक, कच्छलकारक, दर्भपत्र)

संस्कृतभाषामें	काश ।
हिन्दीभाषामें	कांस ।
वङ्गभाषामें	केशेघास ।
मराठीभाषामें	कसई, लघुकसई, थोर कसई ।
कोकणीभाषामें	कसाड ।
गुजरातीभाषामें	कांसडो ।
कर्णाटकीभाषामें	किरीयकागछु, काडसु, काजलु ।

तैलिङ्गीभाषामें रेलु।
लैटिन्भाषामें कुइक्स बारबेटा। Coxbarbata

काशगुणाः।

काशस्तुतपर्णःशीतोगौल्योरुचिकरोमतः।
बलकृन्मधुरोवृष्यस्तिक्तःपाकेमधुःस्मृतः॥
सरःस्निग्धःपित्तदाहमूत्रकृच्छ्रक्षयापहः।
मूत्राश्मरींरक्तदोषंरक्तपित्तंक्षतक्षयम्॥
पित्तरोगंनाशयतीत्येवंपूर्वैर्निवेदितम्।

अर्थ-कास तृप्तिकारक, शीतल, गौल्य, रुचिकारी, बलकारक, मधुर, वीर्यवर्द्धक, कडवा, पचनेमेंभी मधुर, सर, (दस्तावर) स्निग्ध तथा पित्त, दाह, मूत्रकृच्छ्र, क्षय, मूत्राश्मरी, रुधिरविकार, रक्तपित्त, क्षतक्षय और पित्त, रोगको दूर करे है।

विवरण। कास-नदियोंके किनारे कीचडमें उत्पन्न होती है पत्ते वाभरके समान, बरन एकप्रकारकी देशी वाभरभी होती है, फूलसफेद अधिक शोभायमान मंजरीके समान आते हैं।

गुन्द्रनामानि।

गुन्द्रःपटेरकोरच्छःशृङ्गवेराभमूलकः॥

अर्थ-गुन्द्र, पटेरक, रच्छ, शृङ्गवेराभमूलक।

संस्कृतभाषामें गुन्द्र।
हिन्दीभाषामें गोंदपटेर।
मराठीभाषामें पाणगवत, लव्हा।
गुजरातीभाषामें पान्यघाडाडी।
अंग्रेजीभाषामें एलिफंटग्रास। Elephant gross
लैटिन्भाषामें टाइफा एलिफण्टाइना। Typha Elephantma

अस्य गुणाः।

गुन्द्रःकषायोमधुरःशिशिरःपित्तरक्तजित्।
स्तन्यशुक्ररजोमूत्रशोधनोमूत्रकृच्छ्रहृत्॥

अर्थ-पटेर-कषेली, मधुर, शीतल, रक्तपित्तनाशक, स्तनोंके दूधको तथा शुक्र, रज, मूत्रको शुद्ध करे है। एवं मूत्रकृच्छ्ररोगविनाशक है।

विवरण । गुंद्रपटेर--अर्थात् गौंदपटेर पानीमें होती है, पत्ते--बहुत लंबे चार पांच फुटके और एकइंच चौडे होते हैं, पत्तेमें पत्ते निकलते हैं पत्ते बहुत होते हैं, वरन बीचसे चिरजाते हैं,उनके ऊपर एक बाल वानरके समान होती है, बालऊपर एक पतलीसी लकडी होती है । इनकी चटाई इत्यादि अनेक पदार्थ बनते हैं ।

एरकानामानि ।

एरकागुन्द्रमूलाचशिम्बिगुन्द्राशरीतिच ॥

अर्थ--एरका, गुन्द्रमूला, शिम्बि, गुन्द्रा, शरी । यह नाम हैं।

हिन्दीभाषामें	मोथीतृण ।
बंगलाभाषामें	हौंगला ।
मराठीभाषामें	एरका, पाणलव्हाळा ।
गुजरातीभाषामें	एरका ।

अस्य गुणाः ।

एरकाशिशिरावृष्याचक्षुष्यावातकोपनी ।
मूत्रकृच्छ्राश्मरीदाहपित्तशोणितनाशिनी ॥

अर्थ--एरका-(मोथीतृण) शीतल, वीर्य्यवर्द्धक, नेत्रोंको हितकारी वातको कुपित करनेवाली,तथा मूत्रकृच्छ्र,पथरी,दाह और रक्तपित्तनाशक है।

विवरण । मोथीतृण--जलमें उत्पन्न होता है, पत्ते--बडे २ लम्बे होते

कुशनामानि ।

कुशोदर्भस्तथाबर्हिःसूच्यग्रोयज्ञभूषणः ।
ततोन्योदीर्घपत्रःस्यात्क्षुरपत्रस्तथैवच ॥

अर्थ--कुश, दर्भ, बर्हि, सूच्यग्र, यज्ञभूषण (कुरव, पवित्र, याज्ञिक, गर्भ, कुतुप) यह नाम कुशाके हैं । दीर्घपत्र और क्षुरपत्र यह दूसरे प्रकार कुशाके हैं ।

संस्कृतभाषामें	कुश, दर्भ ।
हिन्दीभाषामें	कुशा, दाभ, डाभ ।
वंगभाषामें	कुश ।
मराठीभाषामें	लघुदर्भ, थोरदर्भ ।
कोकणीभाषामें	दाभ ।
गुजरातीभाषामें	दरभ, डाभ ।

कर्णाटकीभाषामें बिलीप वुदकुशि उह्लाकुशि ।
तैलिङ्गीभाषामें कुशदूर्वालु, दुभ ।
लैटिन्भाषामें एंड्रोपोगन नारडे इडिस् । Andropogon nordaides

द्विविधदर्भगुणाः ।

दर्भद्वयं त्रिदोषघ्नं मधुरं तुवरं हिमम् ।
मूत्रकृच्छ्राश्मरीतृष्णावस्तिरुक्प्रदरास्त्रजित् ॥ (भा. प्र)

अर्थ-दोनों प्रकारकी दाभ-त्रिदोषनाशक, मधुर, कषेली, शीतल, तथा मूत्रकृच्छ्र, पथरी, तृषा, वस्तिरोग, प्रदररोग और रक्तविकारको दूर करनेवाली है ।

अन्यच्च ।

दर्भस्तुमधुरःशीतोगर्भस्थापनकारकः ।
पित्तदाहश्रमरजोदोषश्चैवविनाशयेत् (ध. नि.)

अर्थ-डाभ-मधुर, शीतल, गर्भस्थापक, तथा पित्त, दाह, श्रम और रजोदोषनाशक है ।

अपिच ।

दर्भःशीतोरुचिकरोमधुरस्तुवरोमतः ।
स्निग्धः कफकरः शुक्ररक्तशुद्धिकरोमतः ॥
कफंरक्तंरक्तपित्तंपित्तंश्वासंतृषांतथा ।
मूत्रकृच्छ्रंवस्तिशूलंकामलांप्रदरंतथा ॥
रक्तदोषंविसर्पञ्चछर्दिंमूर्छांतथाश्मरीम् ।
नाशयेदितिचप्रोक्तोमूलंतस्यतुशीतलम् ॥
रुच्यंचमधुरंरक्तज्वरतृट्श्वासकामलाम् ।
पित्तञ्चनाशयत्येवंमुनिभिःपरिकीर्त्तितम् ॥ (नि. रा.)

अर्थ—कुशा तथा दाभ--शीतल, रुचिकारक, मधुर, कषेली, स्निग्ध, कफकारक, शुक्र और रक्तशोधक तथा कफ, रक्त, रक्तपित्त, पित्त, श्वास, तृषा, मूत्रकृच्छ्र, वस्तिशूल, कामला, प्रदर, रक्तविकार, विसर्प, वमन, मूर्च्छा और अश्मरी (पथरी) रोगको नष्ट करे है। इसकी जड शीतल, रुचिकारक, मधुर, रक्त, ज्वर, तृषा, श्वास, कामला और पित्तको दूर करे है ।

दर्भौद्वौचगुणैस्तुल्यौतथापिचसितोधिकः ।
यदिश्वेतकुशाभावस्तत्रपरंयोजयेद्भिषक् ॥

अर्थ--यद्यपि कुशा और दाभमें गुण समानही है तथापि कुशा अधिक गुणवाली है । जो कुशा न मिले तो उसके अभावमें दाभ लेनी ।

विवरण । कुशा और दभ--दोनों एक ही जातिके तृण हैं। यह भूमिमें भूडों और जंगलोंमें उत्पन्न होती है । पत्ते--इसके कासहीके से होते हैं ।

कत्तृणनामानि ।

कत्तृणंरौहिषदेवजग्धंसौगन्धिकंतथा ।
भूतिकंध्यामपौरञ्चश्यामकंधूपगन्धिकम् ॥

अर्थ--कत्तृण, रौहिष, देवजग्ध (क) सौगंधिक, भूतिक, ध्याम, श्यामक, धूपगन्धिक, (सुगन्ध, तृणशीत, सुशीतल, रोहिषतृण, कात्तृण, ध्यामक, पूतिमुद्गल)

संस्कृतभाषामें	कत्तृण, रौहिषतृण ।
हिन्दीभाषामें	रोहिषसोंधिया, गंधेजवास, मिरचियागन्ध, रसवास ।
वंगलाभाषामें	रामकर्पूर ।
मराठीभाषामें	रोहिष, सुगन्धरोहिषतृण ।
कर्णाटकीभाषामें	किरुगंजणी ।
तैलिङ्गीभाषामें	कामंचिगड्डि, तुरिकूर ।
औत्कलीभाषामें	पालखरि ।
फारसीभाषामें	स्वबालमामून ।
अरबीभाषामें	अजस्वर ।

कत्तृणगुणाः ।

रौहिषं तुवरंतिक्तंकटुपाकेव्यपोहति ।
हृत्कण्ठव्याधिपित्तास्रशूलकासकफज्वरान् ॥

अर्थ--कत्तृण--कषेले, कडवे, पचनेमें चरपरे, तथा हृदयरोग, कण्ठरोग, रक्तपित, शूल, खांसी, कफ और ज्वरको हरे हैं ।

अन्यच्च ।

कत्तृणंदशनामाढ्यंकटुतिक्तंकफापहम् ।
शस्त्रशल्यादिदोषघ्नंबालग्रहविनाशनम् ॥

अर्थ-कत्तृण-(रोहिषतृण) चरपरे, कडवे, कफनाशक तथा शस्त्रशस्त्रादि दोष और बालग्रहनिवारक हैं ।

दीर्घरोहिषनामानि ।

अन्यद्रौहिषकंदीर्घंदृढकाण्डोदृढच्छदम् ।
यज्ञेष्टंदीर्घनालश्चतिक्तसारश्चकुत्सितम् ॥

अर्थ-दीर्घरोहिषक, दृढकाण्ड, दृढच्छद, यज्ञेष्ट, दीर्घनाल, तिक्तसार, कुत्सित ।

अस्य गुणाः ।

दीर्घरोहिषकंतिक्तंकटूष्णंकफवातजित् ।
भूतग्रहविषघ्नश्चव्रणक्षतविरोपणम् ॥

अर्थ-दीर्घरोहिषतृण-कडवे, चरपरे गरम तथा कफवात, भूत, ग्रह और विषनाशक हैं । तथा व्रण और क्षतको भरनेवाले हैं ।

विवरण । रोहिष तृण-लम्बे और सुगन्धित मालवे और राज पूतानेके जंगलमें बहुत होतेहैं । पत्ते-छोटे २ और हरे हरे अत्यन्त शोभायमान होतेहैं, इसके सर्वांगमें बहुत सुगन्धि आतीहै । दूसरे रोहिषतृणके कुछ बडे क्षुप होतेहैं । इसका तेल निकलता है, उससें बहुत सुगन्धि होतीह ।

भूतृणनामानि ।

गुह्यबीजन्तुभूतीकंसुगन्धंजम्बुकप्रियम् ।
भूतृणन्तुभवेच्छत्रामालातृणकमित्यपि ॥

अर्थ-गुह्यबीज, भूतीक, सुगन्ध, जम्बुकप्रिय, भूतृण, छत्रा, मालातृणक (रोहिष, भूति, भूतिक, कुटुम्बक, मालातृण, समालम्बी, छत्र, अहिच्छत्रक गुच्छाल, पुंस्त्वविग्रह, बधिर, अतिगन्ध, श्रृङ्गरोह, गुण्डरोह, करेन्दुक, गोच्छालक, पूतिगन्ध, बँधिरध्वनिबोधन)

संस्कृतभाषामें भूतृण ।
हिन्दीभाषामें भूतृण ।
गुजरातीभाषामें भूत्रण ।
कर्णाटकीभाषामें परिमलदगंजीणं ।
लेटिन्भाषामें एँड्रोपोगन, साइट्रेटस । Andropogau Citratus

अस्य गुणाः ।

भूतृणंकटुकंतिक्तंतीक्ष्णोष्णरुचनलघु ।

विदाहिदीपनंरूक्षमनेत्र्यंमुखशोधनम् ॥
अवृष्यंबहुविट्कंचपित्तरक्तप्रदूषणम् । (भा. प्र.)

अर्थ-भूतृण-चरपरे, कडवे, तीक्ष्ण, गरम, दस्तावर, हलके, दाहज अग्निको दीपनकरनेवाले, रूखे, नेत्रोंको अहितकारी । मुखशोधक, अ बहुमलवर्धक और रक्तपित्तको दूषित करे है ।

अन्यच्च ।

भूतृणंकटुतिक्तश्ववातसन्तापनाशनम् ।
हन्तिभूतग्रहावेशान्विषदोषांश्चदारुणान् ॥ (राजनि)

अर्थ-भूतृण-चरपरे, कडवे, वातसन्तापनाशक, भूत, ग्रहआवेशनि और विषके दारुण विकारोंको हरे हैं ।

अपिच ।

भूतृणःकटुतिक्तोष्णःपुंस्त्वघ्नोवक्त्रशोधनः ।
कृमिकासानिलश्वासश्लेष्मदद्रुविनाशनः ॥ (शो. नि)

अर्थ-भूतृण-चरपरे, कडवे, गरम, पुरुषत्वनाशक, मुखशोधक, कृमि, खांसी, वात, श्वास, कफ, और दादोंको दूरकरे है

सुगन्धभूतृणनामानि ।

रौहिषंसुगन्धभूतृणंभूतृणंगोमयप्रियम् ॥

अर्थ-रौहिष, सुगन्धभूतृण, भूतृण, गोमयप्रिय, (गन्धवीरण, सुरभि, सुगन्धि, मुखवास ।

हिन्दीभाषामें	सुगन्धभूतृण ।
मराठीभाषामें	पुदनी गवत, सुगन्ध गवत ।
कर्णाटकीभाषामें	सुगन्ध तृण ।
गुजरातीभाषामें	सुगंधतृण ।

अस्य गुणाः ।

गन्धतृणंसुगन्धिस्यादीषत्तिक्तंरसायनम् ।
स्निग्धंमधुरशीतश्चकफपित्तभ्रमापहम् ॥

अर्थ-सुगन्धभूतृण-सुगन्धित, किंचित् कडवे, रसायन, स्निग्ध, शीतल तथा कफ, पित्त और भ्रमनाशक है ।

विवरण-भूतृण जंगल और वागादि स्थानोंमें अधिक उत्पन्न होते इसमें गुच्छस लगतेहैं और बीज बहुत छोटे २ होतेहैं ।

बल्वजातृणनामानि ।

बल्वजादृढपत्रीचतृणेक्षुस्तृणबल्वजा ।
मौञ्जीपत्राद्दृढतृणापानीयाश्रादृढक्षुरा ॥

अर्थ-बल्वजा, दृढपत्री, तृणेक्षु, तृणबल्वजा, मौञ्जीपत्रा, दृढतृणा, पानीयाश्रा, दृढक्षुरा ।

अस्याः गुणाः ।

बल्वजामधुराशीतापित्तदाहतृषापहा ।
वातप्रकोपनीरुच्याकंठशुद्धिकरीपरा ॥

अर्थ-बल्वजातृण-मधुर, शीतल, पित्तनिवारक, दाहकारक, तृषानाशक, वातको कुपित करनेवाले, रुचिकारक और कण्ठकी शुद्धि करे हैं ।

ऊषलतृणनामानि ।

ऊषलोभूरिपत्रश्चसुतृणश्चतृणोत्तमः ॥

अर्थ-ऊषल, भूरिपत्र, सुतृण और तृणोत्तम ।

अस्य गुणाः ।

ऊषलोबलदोरुच्यःपशूनांसर्वदाहितः ॥

अर्थ-ऊषलतृण-बलकारक, रुचिकारी और पशुओंको सर्वदाहितकारीहै।

इक्षुदर्भानामानि ।

इक्षुदर्भासुदर्भाचपत्रालुस्तृणपत्रिका ॥

अर्थ-इक्षुदर्भ, सुदर्भा, पत्रालु, तृणपत्रिका ।

अस्याः गुणाः ।

इक्षुदर्भासुमधुरास्निग्धांईषत्कषायिका ।
कफपित्तहरारुच्यालघुःसन्तर्पणीस्मृता ॥

अर्थ-इक्षुदर्भा-मधुर, स्निग्ध, किञ्चित्कषेला, कफपित्तनाशक, रुचिकारक, हलका, और सन्तर्पण है ।

गोमूत्रिकातृणनामानि ।

गोमूत्रिकारक्ततृणाक्षेत्रजाकृष्णभूमिजा ।

अर्थ-गोमूत्रिका, रक्ततृणा, क्षेत्रजा, कृष्णभूमिजा ।

अस्य गुणाः ।

गोमूत्रिकातुमधुरावृष्यागोदुग्धदायिनी ॥

अर्थ-गोमूत्रतृण-मधुर, वीर्य्यवर्द्धक और गौओंके दूध बढानेवाला है।

शिल्पिकातृणनामानि ।

शिल्पिकाशिल्पिनीशीताक्षेत्रजाचमृदुच्छदा ॥

अर्थ-शिल्पिका, शिल्पिनी, शीता, क्षेत्रजा, मृदुच्छदा।

अस्याः गुणाः ।

शिल्पिकामधुराशीतातद्बीजंबलवृष्यदम् ॥

अर्थ-शिल्पिकातृण-मधुर और शीतल है । इसके बीज बलकारक और वीर्य्यवर्द्धक हैं ।

निःश्रेणिकानामानि ।

निःश्रेणिकाश्रेणिबलानीरसावनवल्लरी ॥

अर्थ-निःश्रेणिका, श्रेणिबला, नीरसा, वनवल्लरी ।

अस्याः गुणाः ।

निःश्रेणिकानीरसोष्णापशूनामबलप्रदा ॥

अर्थ-निःश्रेणितृण-नीरस अर्थात् रसहीन, गरम, और पशुओंको निर्बलतादायक है ।

जडीतृणनामानि ।

गरमोटिकासुनीलाचजरडीचजलाश्रया ।

अर्थ-गरमोटिका, सुनीला, जरडी, जलाश्रया ।

अस्य गुणाः ।

जरडीमधुराशीतासारिणीदाहहारिणी ।
रक्तदोषहरारुच्यापशूनांदुग्धदायिनी ॥

अर्थ-जरडीतृण-मधुर, शीतल,सारक,दाहकारक, रक्तविकारविनाशक, रुचिकारक, तथा पशुओंके दूध बढानेवाले हैं ।

मञ्जरतृणनामानि ।

मञ्जरः पवनः प्रोक्तः सुत्रणः स्निग्धपत्रकः ॥

अर्थ-मञ्जर, पवन, सुतृण, स्निग्धपत्रक, (मृदुग्रंथि) ।

अस्य गुणाः ।

मृदुग्रन्थिश्चमधुरोधेनुदुग्धकरश्चसः ॥

अर्थ-मञ्जरतृण-मधुर, और गौओंके दूध बढानेवाले हैं ।

तृणाख्यनामानि ।

तृणाख्यंचपर्वतृणंपत्राढ्यंचमृगप्रियम् ॥

अर्थ-तृणाख्य, पर्वतृण, पत्राढ्य, मृगप्रिय ।

अस्य गुणाः ।

बलपुष्टिकरंरुच्यंपशूनांसर्वदाहितम् ॥

अर्थ-पर्वतृण-बल, पुष्टि और रुचिको उत्पन्न करनेवाला है तथा पशुओंको सर्वदा हितकारी है ।

वंशपत्रीतृणनामानि ।

वंशपत्रीवंशदलाजीरिकाजीर्णपत्रिका ॥

अर्थ-वंशपत्री, वंशदला, जीरिका, जीर्णपत्रिका ।

अस्या गुणाः ।

वंशपत्रीसुमधुराशिशिरापित्तनाशिनी ।
रक्तदोषहरारुच्यापशूनांदुग्धदायिनी ॥

अर्थ-वंशपत्रीतृण-मधुर, शीतल, पित्तनाशक, रक्तदोषनिवारक, रुचिकारक, और पशुओंके स्तनोंमें दूध बढानेवाले हैं ।

सन्थानकतृणनामानि ।

सन्थानकस्तुहरितोदृढमूलस्तृणाधिपः ॥

अर्थ-सन्थानक, हरित, दृढमूल, तृणाधिप ।

सन्थानकतृणगुणाः ।

स्निग्धोधेनुप्रियोदोग्धामधुरोबहुवीर्य्यकः ॥

अर्थ-सन्थानकतृण-स्निग्ध, गायोंको प्रिय, दुग्धदायक, मधुर और बहुवीर्यदायक है ।

पल्लिवाहतृणनामागुणाश्च ।

पल्लिवाहोदीर्घतृणःसुपत्रस्ताम्रवर्णकः ।
अदृढःशाकपत्रादिपशूनामबलप्रदः ॥

अर्थ-पल्लिवाह-दीर्घतृण, सुपत्र, ताम्रवर्ण, अदृढ, शाकपत्रादि पल्लिवाह तृण-पशुओंको निबल करनेवाले हैं ।

लवणतृणनामानि ।

लवणतृणंलोणतृणंतृणाम्लंपटुतृणंचअम्लकाण्डश्च ॥

अर्थ-लवणतृण, लोणतृण, तृणाम्ल, पटुतृण, अम्लकाण्ड ।

अस्य गुणाः ।

पटुतृणकंक्षाराम्लंकषायस्तन्यवृद्धिकरम् ॥

अर्थ-लवणतृण-खारी, अम्ल, कषेला, और दूधनाशक है।

पण्यन्धातृणनामानि ।

पण्यन्धाकंगुणीपत्रापण्यध्वापणधाचसा ॥

अर्थ-पण्यन्धा, कंगुणीपत्रा, पण्यध्वा, पणधा ।

अस्याः गुणाः ।

पण्यन्धासमवीर्य्यास्यात्तिक्ताक्षाराचसारिणी ॥
तत्कालशस्त्रघातस्यव्रणसंरोपणीपरा ॥
दीर्घामध्यातथाह्रस्वापण्यन्धात्रिविधास्मृता ।
रसवीर्य्यविपाकेषुमध्यमागुणदायिका ॥

अर्थ-पण्यन्धातृण-समवीर्य्य, तिक्त, क्षार और सारक है तथा तत्काल शस्त्रके घातसे उत्पन्न हुये घावको भरेहै पण्यन्धा तृणदीर्घ, मध्य और ह्रस्व इन भेदोंस तीन प्रकारके है इन तीनोंमें रस वीर्य और विपाकमें मध्यम गुणदायक है।

गुण्डतृणनामानि ।

गुडःसुकांडोगुण्डःस्य.दीर्घकाण्डस्त्रिकोणकः ।
छत्रगुच्छोसिपत्रश्चनीलपत्रस्त्रिधारकः ॥

अर्थ-गुड, सुकाण्ड, गुण्ड, दीर्घकाण्ड, त्रिकोणक, छत्रगुच्छ, असिपत्र, नीलपत्र, त्रिधारक।

वृत्तगुण्डनामानि ।

वृत्तगुण्डोपरोवृत्तोदीर्घनालोजलाश्रयः ।
तत्रस्थूलोलघुश्चान्यस्त्रिधायंद्वादशाभिधः ॥

अर्थ--वृत्तगुण्ड, दीर्घनाल, जलाशय । यह लघु और स्थूल इनभेदोंसे दो प्रकारके हैं।

अस्य गुणाः ।

गुण्डस्तुमधुरःशीतःकफपित्तातिसारहा ।
दाहरक्तहरस्तस्यमन्येस्थूलांतराधिका ॥

अर्थ-गुण्डतृण-मधुर, शीतल, तथा कफ, पित्त, अतिसार, दाह और रुधिरविकारके दूर करे है। इन दोनोंमें स्थूल गुण्डतृण अधिक गुणवालाहै।

चणिकातृणनामानि।

चणिकादुग्धदागौल्यासुनालाक्षेत्रजाहिमा ॥

अर्थ-चणिका, दुग्धदा, गौल्या, सुनाला, क्षेत्रजा, हिमा।

अस्यागुणाः

वृष्याबल्यातिमधुराबीजैःपशुहितातृणैः ॥

अर्थ-इसके बीज-वीर्य्यवर्द्धक, बलकारक, अत्यन्तमधुर और तृण, पशुओंको हितकारी हैं।

गुण्डासिनीतृणनामानि।

गुण्डासिनीतुगुण्डालागुडालागुच्छमूलिकाचिपिटा।
तृणपत्रीजलवासापृथुलासुविष्टराचनवाह्वा ॥

अर्थ-गुण्डासिनी, गुण्डाला, गुडाला गुच्छमूलिका, चिपिटा, तृणपत्री, जलवासा, पृथुला, सुविष्टरा।

अस्यागुणाः।

गुण्डासिनीकटुःस्वादुःपित्तादाहश्रमापहा।
तिक्तोष्णाचपशुघ्नीचव्रणदोषनिबर्हणी ॥

अर्थ-गुण्डासिनी-चरपरे, स्वादु, पित्तनाशक, दाहको दूर करनेवाले श्रमको हरनेवाले, कडवे, गरम, पशुनाशक और व्रणदोषनिवारक हैं।

शूलीतृणनामानि।

शूलीतुशूलपत्रीस्यादशाखाधूम्रमूलिका।
जलाश्रयामृदुलतापिच्छिलामहिषीप्रिया ॥

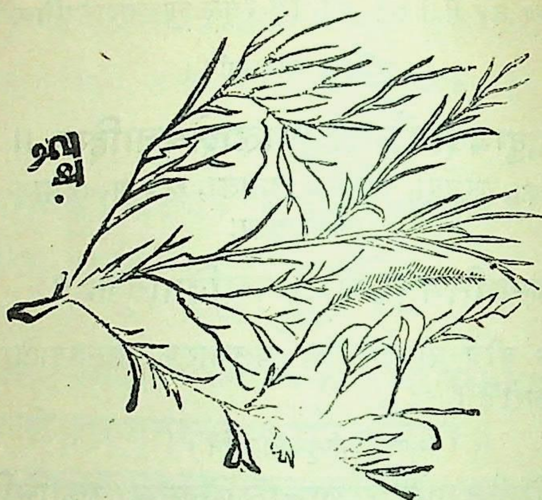
अर्थ-शूली, शूलपत्री, अशाखा, धूम्रमूलिका, जलाश्रया, मृदुलता, पिच्छिला, महिषीप्रिया।

अस्या गुणाः।

शूलीतुपिच्छिलाकोष्णागुरुर्गौल्याबलप्रदा।
पित्तदाहहरारुच्यादुग्धवृद्धिप्रदायका ॥ (नि.रा.)

अर्थ-शूलीतृण-पिच्छिल, गरम, भारी, गौल्य, बलकारक, पित्तनाशक, दाहनिवारक, रुचिकारक और दुग्धवर्द्धक है।

नीलदूर्वानामानि ।



नीलदूर्वास्मृताशष्पंशाद्वलंहरितंतथा ।
शतपर्वाशीतकुम्भीशीतलावामिनीतथा ॥

अर्थ-नीलदूर्वा, शष्प, शाद्वल, हरित, शतपर्वा, शीतकुम्भी, शीतला, वामिनी (हरिता, शाम्भवी, श्यामा, शीता, शतपर्विका, अमृता, दूर्वा, शतग्रन्थि, अनुवल्लिका, शिवा, शिवेष्टा, मङ्गला, जया, भूतहन्त्री, शतमूला, महौषधी, विजया, गौरी, शान्ता, रुहा, अनन्ता, भार्गवी, सहस्रवीर्या, शतवल्ली, गुणा, नन्दा, महमरी, हरसालिका, तिक्तपर्वा, दुर्मरा, बहुवीर्या, हारिवा, हरिताली, कच्छरुहा, अमरी, सौम्या, शीतली, अमरा, असितालता)

श्वेतदूर्वानामानि ।

श्वेतदूर्वाशतवीर्य्यागण्डालीशकुलाक्षकः ।
गोलोमीसितदूर्वाचशतपर्वासितालता ॥

अर्थ-श्वेतदूर्वा, शतवीर्य्या, गण्डाली, शकुलाक्षक, गोलोमी, सितदूर्वा, शतपर्वा, सितालता, (सिता, श्वेता, सिताख्या, चण्डा, भद्रा, भार्गवी, दुर्मरा, गौरी, विघ्नेशानकान्ता, अनन्ता, त्रिद्या, श्वेतकाण्डा, प्रचण्डा, सहस्र-वीर्य्या, सहस्रकाण्डा, सहस्रपर्वा, सुरवल्लभा, शुभा, सुपर्वा, सितच्छा, स्वच्छा, कच्छान्तरुहा)

गण्डदूर्वानामानि ।

गण्डदूर्वातुगण्डालीतीव्रामत्स्याक्षिकापिच ।
जलस्थाग्रन्थिपर्णीचबाह्लीचशकुलादनी ॥

अर्थ-गण्डदूर्वा, गण्डाली, तीव्रा, मत्स्याक्षिका, जलस्था, ग्रंथिपर्णी, बाल्ही, कुक्कुटादनी, (अतितीव्रा, मत्स्याली, ग्रंथिला, ग्रंथिपर्णी वारुणी, मतिनेत्रा, शतग्रंथि, सूचिपत्रा, श्यामकाण्डा, कलाया, शकुलाक्षी, चित्रा और शकुलाक्षक)

संस्कृतभाषामें दूर्वा, नीलदूर्वा, श्वेतदूर्वा, गण्डदूर्वा ।
हिन्दीभाषामें दूब, हरीदूब, सफेददूब, गांडरदूब ।
बंगभाषामें दूर्वा, नीलदूर्वा, सादादूर्वा, गेंटदूर्वा ।
मराठीभाषामें दूर्वा, नील श्वेत हरली, गण्डूरदूर्वा, गाटीहरली ।
गुजरातीभाषामें ध्रो, लीलीध्रो, धोलीध्रो, गण्डूरध्रो ।
कर्णाटकीभाषामें हसुगरुके, बिलिपकरुके, मीनगत्ते, होन्नगुंद ।
तैलिंगीभाषामें दूर्वालु, गरिकेगड्डि, गरिककसुवु, पोन्नगंडी ।
तामिलीभाषामें अरुगम् पुल्लु ।
औत्कलीभाषामें दुब् ।
इंग्रेजीभाषामें क्रीपिंग् साई नोडन् । Creeping Cynodon
लैटिन्भाषामें साई नोडन् डेक् टिलन् । Cynodon Dactylon

सामान्यदूर्वागुणाः ।

दूर्वाकषायामधुराचशीतापित्तंतृषारोचकवान्तिहन्त्री ।
सदाहमूर्च्छाग्रहभूतशान्तिश्लेष्मश्रमध्वंसनतृप्तिदाच । (रा. नि.)

अर्थ-दूब कषेली, मधुर, शीतल, तथा पित्त, तृष, अरुचि, वान्ति, दाह, मूर्च्छा, ग्रहकी पीडा, भूतबाधा, कफ और श्रमनाशक है तथा तृप्तिदायक है ।

नीलदूर्वागुणाः ।

दूर्वातुरक्तपित्तघ्नीकण्डूत्वग्दोषनाशिनी ॥ (रा. व.)

अर्थ-हरीदूब-रक्तपित्त, खुजली और त्वचाके रोगोंको हरे है ।

अन्यच्च ।

नीलदूर्वातुमधुरातिक्ताशीतारुचिप्रदा ।
संजीवनीचतुवरारक्तशुद्धिकरीमता ॥
रक्तपित्तातिसारघ्नीज्वरपित्तवमीहरा ।
कफंरक्तरुजंतृष्णांविसर्पञ्चविनाशयेत् ॥
दाहञ्चचर्म्मदोषञ्चनाशयेदितिकीर्तिता ।

अर्थ--हरीदूब--मधुर, कडवी, शीतल, रुचिकारक, संजीवन, कषेली रक्त-शोधक तथा रक्तपित्त, अतिसार, ज्वर, पित्त, वमन, कफ, रक्तरोग, तृषा, विसर्प, दाह और त्वचाके बिकारोंको दूर करे है।

श्वेतदूर्वागुणाः।

श्वेतातुदूर्वामधुरारुच्याचतुवरामता।
तिक्तातिशीतलावान्तिविसर्पतृट्कफापहा॥
पित्तदाहामातिसृतिरक्तपित्तहरामता।
कासघ्ननाशयत्येवंपूर्ववैद्यैर्निरुपिता॥ (रा. नि.)

अर्थ--सफेद दूब--मधुर, रुचिकारक, कषेली, कडवी, शीतल तथा वमन, विसर्प, तृषा, कफ, पित्त, दाह, आमातिसार, रक्तपित्त और खाँसीको दूर करे है।

गण्डदूर्वागुणाः।

गण्डदूर्वातुमधुरावातपित्तज्वरापहा।
शिशिराद्वंद्वदोषघ्नीभ्रमतृष्णाश्रमापहा॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ--गाडरदूब--मधुर, शीतल तथा वात, पित्त, ज्वर, द्वन्द्वदोष, भ्रम, तृषा और श्रमको हरनेवाली है।

अन्यच्च।

गण्डदूर्वाहिमालोहद्राविणीग्राहिणीलघुः।
तिक्ताकषायामधुरावातकृत्कटुपाकिनी॥
दाहतृष्णाबलासास्रकुष्ठपित्तज्वरापहा (भा० प्र०)

अर्थ--गाण्डरदूब--शीतल, लोहेको पिघलानेवाली, मलको रोकनेवाली, हलकी, कडवी, कषेली, मधुर, वातकारक, पचनेमें चरपरी तथा दाह, तृषा, कफ, रुधिरविकार, कुष्ठ, पित्त और ज्वरको दूर करनेवाली है।

विवरण। नीलीदूब जगलमें न होती है भूमिहीमें दूबकी बेलसी चलती है और गांठपर जडभी पकडती है जाती है उसको दूबके नाल कहते हैं ऊपरको नहीं उठती और पृथ्वीपरही छतसी फल जाती है। पत्ते-नालोंके छोटे २ और लम्बे २ लगे होते हैं और इसके नाल लम्बे २ फैलते चले जाते हैं विशेषकरके दूब पशुओंके भक्षणके लिये है, इसकारण यह संपूर्ण भारतवर्षमें प्रसिद्ध है।

२ सपेद दूबभी नीलीदूब अर्थात् हरीदूबहीकी जगह कहीं कहीं कोई होजाता है वह बहुत सफेद होती है, परन्तु सब आकृति हरीही जैसी होतीहै ।

३ गांडर एकप्रकारकी घास होती है इसके क्षुप दो दो तीन २ फुट ऊँच होतेहैं जलाशयके स्थानमें कोसोंतक लगातार इसके खेत होते हैं इसके तृण कांसके समान लम्बे होतेहैं. घरोंके छप्पर आदि इसीके तृणोंसे छाये जाते हैं. इसीकी जड खस होतीहै ।

विदारीनामानि ।

विदारीवृष्यकन्दाचक्षीरशुक्लासितास्मृता ।
इक्षुगन्धात्रिपर्णाचशुक्लागजवाजिप्रिया ॥

अर्थ-विदारी, वृष्यकन्दा, क्षीरशुक्ला, सिता, इक्षुगन्धा, त्रिपर्णा, शुक्ला, गजवाजिप्रिया, (क्रोष्ट्री, विदारिका, स्वादुकन्दा, शृगालिका, वृष्यवर्द्धिनी, बिडाली, वृष्यवल्लिका, भूकूष्माण्डी, स्वादुलता, गजेष्टा, वाजिवल्लभा, गन्धफला, क्षीरवल्ली पयस्विनी, वृक्षवल्ली और भूमिकूष्माण्ड)

क्षीरविदारीनामानि ।

अन्याक्षीरविदारीस्यादिक्षुगन्धेक्षुवल्ल्यपि ।
क्षीरकन्दाक्षीरवल्लीक्षीरशुक्लापयस्विनी ॥

अर्थ-क्षीरविदारी, इक्षुगन्धा, इक्षुवल्ली, क्षीरकंदा, क्षीरवल्ली, क्षीरशुक्ला, पयस्विनी, (महाश्वेता, ऋक्षगन्धिका, ऋष्यगन्धिका, ऋष्यगन्धा, मधुस्रवा, क्षीरकन्द क्षीरलता, पयःकन्दा, पयोलता, पयोविदारिका और पयोविदारी ।

संस्कृतभाषामें विदारी, क्षीरविदारी ।
हिन्दीभाषामें बिलैयाकन्द बिलाई कन्द, विदारीकन्द, बिलारीकन्द, दूधबिदारी ।
बंगभाषामें भूंईंकुमडा (ड), श्वेतभूंईंकुमड, कालभूंईंकुमड ।
मराठीभाषामें भूईंकोहळा, बेन्द्रिचा वेल ।
गुजरातीभाषामें फगवेलानो कन्द, भोकोलु ।
कर्णाटकीभाषामें नेलकुंबल ।
तैलिङ्गीभाषामें नेलगुंबुड, मट्टमलतिग ।
कौल्लिभाषामें भूइकरवारु ।

लैटिन्भाषामें आईपोमिया डिजिटेटा । Ipomoeadijitata
प्युरेरियाटयबरोझा Puraria tuberosa
बटाटास पेनिक्युलेटा Batataspeniculata

विदारीकन्दगुणाः ।

विदारीमधुराशीतागुरुःस्निग्धास्रपित्तजित् ।
ज्ञेयाचकफकृत्पुष्टिबल्यावीर्यविवर्धिनी ॥ (रा. नि.)

अर्थ-विदारीकन्द-मधुर, शीतल, भारी, स्निग्ध, रक्तपित्तनाशक, कफकारक, तथा पुष्टि, बल और वीर्य्यवर्धक है ।

अन्यच्च ।

विदारीमधुरास्निग्धाबृंहणीस्तन्यशुक्रदा
शीतास्वर्य्यामूत्रलाचजीवनीबलवर्णदा ॥
गुरुःपित्तास्रपवनदाहान्हन्तिरसायनी । (भा. प्र.)

अर्थ-विदारीकन्द, मधुर, स्निग्ध, बृंहण, स्तनोंमें दूध बढानेवाला, वीर्यजनक, शीतल, स्वरको शुद्ध करनेवाला, मूत्रवधक, संजीवन, बलकारक, वर्णको सुंदर करनेवाला, रसायन, भारी तथा रक्तपित्त, वात और दाहको दूर करनेवाला है ।

अपिच ।

विदारीवातपित्तघ्नीवृष्याबल्यारसायनी ॥ (रा. व.)

अर्थ-विदारीकन्द-वातपित्तनाशक, वीर्यवर्द्धक, बलकारक और रसायन है ।

अन्यच्च ।

विदारीमधुराशीतावृष्यास्निग्धाचपौष्टिका ।
धातुवृद्धिकरीबल्याकफदुग्धप्रदागुरुः ॥
रसायनीमूत्रलाचस्वर्य्यारूक्षाचगर्भदा ।
पित्तवातहरास्वादूरक्तरुग्दाहवान्तिहा ॥
ज्ञेयाह्येतेगुणाःकन्देपुष्णंवृष्यञ्चशीतलम् ।
रसेपाकेचमधुरंकफकृद्वातलंगुरु ॥
पित्तनाशकरंह्येतदुक्तंमुनिवरैःपुरा ।

अर्थ-विदारीकन्द--मधुर, शीतल, वीर्यवर्द्धक, स्निग्ध, पुष्टिकारक,

र्धक, बलकारक, कफजनक, दुग्धवर्धक, भारी, रसायन, मूत्रजनक, वर्णको सुन्दर करनेवाला, रूखा, गर्भदायक, स्वादिष्ठ, तथा पित्त, वात, रुधिरविकार, दाह और वमनको दूर करे है । इसके फूल-वीर्यवर्धक, शीतल, रस और पाकमें मधुर, कफकारक, वातवर्धक, भारी और पित्त-नाशक हैं ।

क्षीरविदारीगुणाः ।

प्रोक्ताक्षीरविदारीतुमधुराम्लाकषायका ।
वृष्याचशुक्रजननीपुष्टिदुग्धप्रदाकटुः ॥
रसायनीचबल्याचशीतामूत्रकफप्रदा ।
स्निग्धावर्ण्यागुरुःस्वर्य्यापित्तरुग्रक्तदोषहा ॥
पित्तशूलहरावातदाहजिन्मूत्रमेहजित् ।
ज्ञेयाकंदगुणाह्यस्याःसदृशावल्लिवद्गुणैः ॥

अर्थ-दूधविदारी--मधुर, अम्ल, कषेला, वीर्य्यवर्द्धक, शुक्रजनक, पुष्टिकारक, दूधवर्द्धक, चरपरा, रसायन, बलकारक, शीतल, मूत्रजनक, कफकारक, स्निग्ध, वर्णको सुंदरकरनेवाला भारी, स्वरको उत्तम करनेवालातथा पित्तरोग, रुधिरविकार, पित्तशूल, वात, दाह, और मूत्रमेहको दूर करनेवालाहै, इसके कदके गुण बलकी समान जानने ।

अन्यच्च ।

कन्दःक्षीरविदार्यास्तुस्वादुर्वृष्योरसायनः ।
मधुरोबृंहणो [illegible]ीतवीर्योहिमूत्रलः ॥

अर्थ-क्षीरविदारीकाःद[illegible] ादिष्ट, वीर्य्यवर्द्धक, रसायन, मधुर, बृंहण, हृदयको हितकारी, शीतल अ[illegible] मूत्रवर्द्धक है ।

अपिच ।

क्षीरकन्दोद्विधाप्रोक्तोविनालस्तुसनालकः ।
विनालोरोगहर्त्तास्याद्वयः स्तम्भीसनालकः ॥

अर्थ-क्षीरकन्द-नालरहित और नालयुक्त इन भेदोंसे दो प्रकारकाहै, तहां विनानालका रोगोंको हरनेवालाहै और नालवाला अवस्थाको स्थापन करनेवालाहै ।

विवरण-बिदारीकंदकी बेल-अनूप देशके जगलोंमें होतीहै कोई २ इसको चर्मकारालुकभी कहतेहैं, यह कन्द वराहके समान रोमयुक्त उत्पन्न होताहै पत्ते-बड़े बडे घुइयांके समान होतेहैं, इसके नीचे जडमें बहुत वड़ा कन्द निक लताहै, उसका रंग लालीलिये होताहै दूसरे क्षीरविदारी कन्दकीभी बेल चलतीहै इसका कन्दभी मूलीके समान होताहै, पत्ते-एक एक शाखामें २ २ आठ २ होतेहैं, कन्दका रंग लाल और सफेद होता है ।

मुसलीनामानि ।

मुसलीतालमूलीचखलनीतालमूलिका ॥

अर्थ-मुसली, तालमूली, खलनी, तालमूलिका, (तालिका, अर्शोघ्नी, त... सुवहा, तालपत्रिका, गोधापदी, हेमपुष्पी, भूताली, दीर्घकन्दिका, मुस... तालपत्री, काञ्चनपुष्पिका, महावृष्या, वृष्यकन्दा, (खर्जूरी)

संस्कृतभाषामें	मुसली, तालमूली ।
हिन्दीभाषामें	कालीमुसली, सफेदमुसली । (श्याममुसली)
वंगभाषामें	तालमूली ।
मराठीभाषामें	काळी मुसली, पांढरी मुसली ।
गुजरातीभाषामें	काली मुसली, धोली मुसली ।
कर्णाटकीभाषामें	नेलताडी ।
तैलिङ्गीभाषामें	निलयतलि गड्डु, नेलतारु ।

लैटिन् भाषामें हाइपोक्सिस् आर्चिओइडिस् Hypoxis Orchioides एस्पेरेगस सारमेंटोसस Asparagus Sarmentosus

अस्याः गुणाः ।

मुसलीमधुरावृष्यावीर्योष्णाबृंहणीगुरुः ।
तिक्तारसायनीहन्तिगुदजन्यानिलांस्तथा ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-मुसली-मधुर, वीर्य्यवर्द्धक, उष्णवीर्य, बृंहण, भारी, कडवी, रसा... तथा बवासीर और वातनिवारक है ।

अपिच ।

मुसलीरसपाकाभ्यांस्वादुःशीताग्निवर्द्धिनी ।
वातपित्तहरावृष्यास्थैर्यमार्दवदायिनी ॥ (शो० नि०)

अर्थ-मुसली-रस और पाकमें मधुर, शीतल, अग्निवर्द्धक, वातना... पित्तनिवारक, वीर्य्यवर्द्धक तथा स्थिरता, और मृदुतादायक है ।

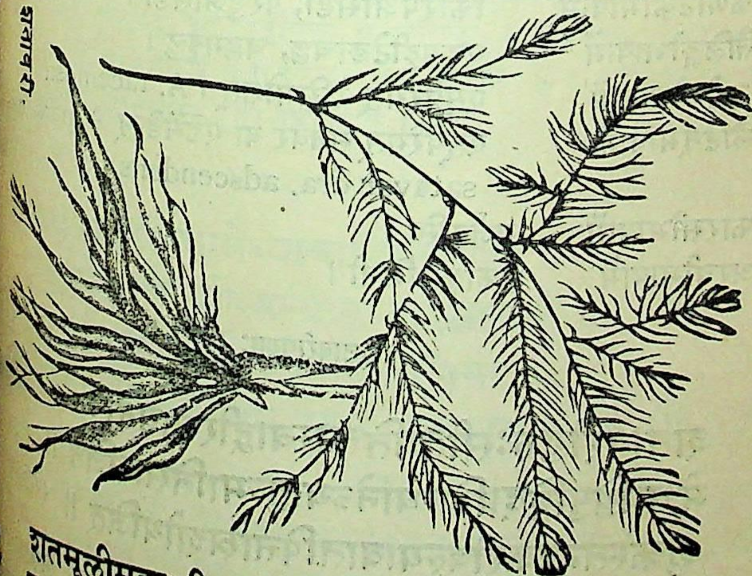
अन्यच्च ।

मुसलीमधुरावृष्याधातुवृद्धिकरीगुरुः ।
तिक्तापुष्टाबलकरीपिच्छिलाश्लेष्मलामता ॥
रसायनाशीतलाचपित्तदाहहरीमता ।
रक्तदोषंश्रमश्चैवनाशयेदितिकीर्त्तितम् ।
कृष्णाधिकगुणाप्रोक्ताश्वेताचाल्पगुणामता ॥

अर्थ-मुसली-मधुर, वीर्य्यवर्द्धक, धातुवृद्धिकारक, भारी, कडवी, पुष्टिकारक, बलवर्द्धक, पिच्छिल, कफजनक, रसायन, शीतल; तथा पित्त, दाह, रुधिरविकार और श्रमको हरनेवाली है ।

विवरण । काली मुसली और सफेद मुसली इन भेदोंसे मुसली दो प्रकार की है, इनमें सफेद मुसलीकी अपेक्षा काली मुसलीके अधिक गुण हैं, काली मुसलीके क्षुपका ऐसा स्वरूप होता है जैसा ४--५ पत्तोंवाला खजूरका नवीन वृक्ष होता है, इसमें बहुत छोटे २ पीले फूल आते हैं, क्षुपके नीचे ...कीके समान मूल होता है उसके ऊपरकी छाल भूरेरङ्गकी होती है भीतरका गर्भ सफेद रङ्गका होता है ।

शतावरीमहाशतावरीनामानि ।



शतमूलीमहाशीताभीरुपत्रीशतावरी ।
महाशतावरीत्वन्याशतवीर्य्यामहोदरी ॥

अर्थ-शतमूली, महाशीता, भीरुपत्री, शतावरी (बहुसुता, भीरु,

इन्दीवरी, वरी, ऋष्यप्रोक्ता, नारायणी, अहेरु, अभीरु, अभीरुपत्री, ... पुरुषदन्ता, रङ्गिणी, द्वीपिशत्रु, ऋषगला, काञ्चनकारिणी, मदभञ्जि... शतपदी, पीवरी, पीवरा, वृष्या, दिव्या, द्वीपिका, दरकण्टिका, सूक्ष्मप... सूक्ष्मपत्रिका, सुपत्रा, बहुमूला, शताह्वया, द्वीपशत्रु, स्वादुरसा, शत... लघुपर्णिका, आत्मगुप्ता, जटा, मूला, शतवीर्य्या, महौषधी, मधुरा, केशि... शतपत्रिका, विश्वस्था, वैष्णवी, कार्ष्णी, वासुदेवप्रियंकरी, दुर्मना, तैलव... अर्धकण्टका, सुपत्रिका और शतवीर्य्या)। महाशतावरी, शतवीर्य्यामहोद... (सहस्रवीर्य्या, सुरसा, महापुरुषदन्तिका, वीरा, तुरंगिणी, बहुपत्रि... ऊर्ध्वकण्ठी, महावीर्य्या, फणिजिह्वा, महाशता, सुवीर्य्या, महती, ... कण्टिका, शतमूली, अभीरु, बहुपुत्रिका, स्वादुरस्या)।

संस्कृतभाषामें	शतावरी, महाशतावरी।
हिन्दीभाषामें	सतावर, बडीसतावर।
बंगलाभाषामें	शतमूली।
मराठीभाषामें	लघुशतावरी, शतमूली, आसवली, बड़ीशतावरी, सहस्रमूली।
गुजरातीभाषामें	शतावरी, एकलकण्टो, शापनाशुवा।
कर्णाटकीभाषामें	किरिषआसडी, परडुआसडी।
तैलिङ्गीभाषामें	एदुमट्टीटेङाचल्ल, चल्लगड्डलु।
अंग्रेजीभाषामें	एसूपेरेगस् रेसिमोससू। A. racemosus
लैटिन्भाषामें	एसूपेरेगस् सतवर वा एडसेंडेन्स् Asparogus satavar ora. adscendens
फारसीभाषामें	गुर्जदस्ति।
अरबीभाषामें	शकाकुलमिश्री।

शतावरीगुणाः।

शतावरीगुरुःसीतातिक्तास्वाद्वीरसायनी। मेधाग्निपुष्टिदास्निग्धानेत्र्यागुल्मातिसारजित्॥ शुक्रस्तन्यकरीबल्यावातपित्तास्रशोथजित्॥ (भा. ...)

अर्थ--सतावर-भारी, शीतल, कडवी, मधुर, रसायन, मेधाकारक, जठराग्निवर्द्धक, पुष्टिदायक, स्निग्ध, नेत्रोंको हितकारी, गुल्मनाशक, अति-सार निवारक, शुक्रजनक, स्तनोंमें दूधवर्द्धक, बलकारी तथा वात, रक्त... और सूजनको दूर करे है।

अन्यच्च ।

शतावर्यौहिमेतिक्तेमधुरेपित्तजित्परे ।
कफवातहरेवृष्येमहाश्रेष्ठेरसायने ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-सतावर-शीतल, कडवी, मधुर, पित्तनाशक, कफवातनाशक, वीर्यवर्द्धक और रसायनकर्ममें श्रेष्ठ हैं ।

अन्यच्च ।

शतावरीतुमधुराशीतावृष्याचतिक्तका ।
रसायनीगुरुःस्वादुःस्निग्धादुग्धप्रदामता ॥
अग्निदीप्तिकरीबल्यामेध्याशुक्रकरीमता ।
चक्षुष्यापुष्टिकृत्पित्तकफवातक्षयापहा ॥
रक्तदोषगुल्महंत्रीशोथातीसारनाशिनी ।
तैलघृतेप्रयोगार्थंप्रशस्तामुनिभिर्मता ॥ (नि. र.)

अर्थ-शतावर-मधुर, शीतल, वीर्य्यवर्द्धक, कडवी, रसायन, भारी, मिष्ट, स्निग्ध, दुग्धप्रद, अग्निप्रदीपक, बलकारक, मेधाजनक, शुक्रजनक, नेत्रोंको हितकारी, पुष्टिकारक तथा पित्त, कफ, वात क्षय, रुधिरविकार, गुल्म, सूजन और अतिसारको हरनेवाली है ।

महाशतावरीगुणाः ।

महाशतावरीहृद्यामेध्याचाग्निप्रदीपनी ।
शुक्लाशीतवीर्य्याचबल्यावृष्यारसायनी ॥
अर्शस्संग्रहणीरोगनेत्ररोगविनाशिनी ।
गुणाह्यस्यास्तुविज्ञेयाः पूर्वायाःसदृशागुणैः ॥ (नि. र.)

अर्थ-बडीशतावर-हृदयको हितकारी,मेधाजनक, अग्निप्रदीपक, शुक्रजनक, शीतवीर्य्यबलकारक, वीर्य्यवर्द्धक,रसायन तथा बवासीर, संग्रहणी और नेत्ररोगको हरे है । शेष गुण उसके शतावरके समान जानने ।

अन्यच्च ।

महतीकफवातघ्नीतिक्ताश्रेष्ठारसायने ॥ (रा. नि.)

अर्थ-बडीशतावर-कफ वातनाशक,कडवी और रसायनकार्य्यमें श्रेष्ठहै ।

द्विविधशतावरीगुणाः ।

शतावरीद्वयंवृष्यंमधुरंपित्तजिद्धिमम् ॥

अर्थ-दोनोंप्रकारकी शतावर-वीर्य्यवर्द्धक, मधुर, पित्तनाशक और शीतल है ।

शतावर्यङ्कुरगुणाः ।

शतावर्याह्यंकुरस्तुतिक्तोवृष्योलघुस्मृतः ।
हृद्यस्त्रिदोषपित्तघ्नोवातरक्तार्शसांहरः ॥
क्षयसंग्रहणीरोगनाशनस्तिक्तकोलघुः ॥ (नि. र.)

अर्थ-शतावरके अंकुर-कडवे, वीर्य्यवर्द्धक, हलके, हृदयको हितकारी तथा त्रिदोष, पित्त, वातरक्त, बवासीर, क्षय और संग्रहणीरोगका नाश करे हैं ।

विवरण । शतावरकी बेल जङ्गलोंमें होती है, बेलका रंग सफेदी लिये होता है, पत्ते अत्यन्त छोटे २ सोयेके पत्तोंके समान होते हैं; इसकी बेलको कोई २ वैद्यलोग एकलकण्ठी कहते हैं; इसमें कांटे बहुत होते हैं; फूल इसके छोटे होते हैं; बडी शतावरीभी इसीप्रकारकी होती है; इससे कुछ अधिक बडी होती है, और इसकी अनन्त मूल होती हैं और शतावर और इसमें कुछ भेद नहीं होता । शतावरी वर्षाके आरम्भमें हरी होती है और फूल आते हैं, एक वृक्षके नीचे सैकडों जड होती हैं उसेही शतावरी कहते हैं ।

अश्वगन्धानामानि ।

अश्वगन्धावाजिगन्धाकटुकाश्वावरोहकः ।
वाराहकर्णीतुरगीबल्यावाजिकरीहया ॥

अर्थ-अश्वगन्धा, वाजिगन्धा, कटुका, अश्वावरोहक, वाराहकर्णी, तुरगी, बल्या, वाजिकरी, हया, (अश्वकन्दिका, काम्बुका, अश्वारोहा, वाजिनी, अश्वगन्धिका, तुरगगन्धा, कम्बुका, अश्वावरोहिका, बलजा, वाजिअवरोहिका, वराहकर्णी, पुष्टिदा, बलदा, पुष्टिपीवरा, पलाशपर्णी, वातघ्नी, श्यामला, कामरूपिणी, काला, प्रियकरी, गन्धपत्री, हयप्रिया, वाराहपत्री, बलदा, वरदा, कुष्ठगन्धिनी, वरगात्रकरी, पुण्या, कुष्ठगन्धा) ।

संस्कृतभाषामें अश्वगन्धा ।
हिन्दीभाषामें असगन्ध ।

बंगभाषामें	अश्वगन्धा ।
मराठीभाषामें	आसकंद, असन्ध ।
गुजरातीभाषामें	आखसंध ।
कर्णाटकीभाषामें	आसादु, अङ्गुर ।
तैलङ्गीभाषामें	पिल्लिआंगा ।
अंग्रेजीभाषामें	विंटरचेरी । Winter cherry
लैटिन् भाषामें	फाइसेलिस् सोम्निफेरा । Physalis Somnifero
	विथानीआ सोम्निफेरा । Withania Sommfea
फारसीभाषामें	मेंहमन् बररी ।

अस्याः गुणाः ।

अश्वगन्धानिलश्लेष्मशोफश्वित्रक्षयापहा ।
बल्यारसायनीतिक्ताकषायोष्णातिशुक्रला ॥ (भा. प्र.)

अर्थ—असगन्ध—वात, कफ, सूजन, श्वित्रकुष्ठ और कफरोगनाशक है, तथा बलकारक, रसायन, कडवी, कषेली, गरम और अत्यन्त वीर्य्यवर्द्धक है ।

अन्यच्च ।

अश्वगन्धाकटूष्णास्यात्तिक्ताचमदगन्धिका ।
बल्यावातहराहन्तिकासश्वासक्षयव्रणान् ॥ (रा. नि.)

अर्थ—असगन्ध—चरपरी, गरम, कडवी, मदगन्धियुक्त, बलकारक, वातनाशक तथा खाँसी, श्वास, क्षय और व्रण (घाव) दूर करे है ।

अन्यच्च ।

अश्वगन्धोजराव्याधिनाशकस्तुवरःस्मृतः ।
धातुवृद्धिकरःकिञ्चित्कटुकोबलदःस्मृतः ॥
कान्तिप्रदश्चसंप्रोक्तस्तथाचमधुगन्धिकः ।
शरीरपुष्टिकारीचवृष्यश्चोष्णोलघुःस्मृतः ॥
वातंक्षयंश्वासकासौव्रणंश्वेतश्चकुष्ठकम् ।
कफंविषकृमीञ्छोथंतथाचैवक्षतक्षयम् ॥
कण्डूंनाशयतीत्येवंपूर्वाचार्यैर्निरूपितम् (नि. र.)

अर्थ-असगन्ध-रसायन अर्थात् जराव्याधिनाशक, कषेली, धातुवर्द्धक,

किञ्चित् चरपरी, बलवर्द्धक, कान्तिजनक, मधुगन्धियुक्त, शरीरको पु करनेवाली वीर्यवर्द्धक, गरम, हलकी तथा श्वास, खांसी, घाव, श्लेष्म कफ, विष,कृमि, सूजन, क्षतक्षय और कण्डू (खुजली) को दूर करे है।

अपिच ।

अश्वगन्धापत्रलेपोग्रन्थिगण्डापचीन्हरेत् ॥ (शो. नि.

अर्थ-असगन्धके पत्तोंका लेप-ग्रन्थि, गण्डमाला और अपचीको करनेवाला है ।

विवरण-असगन्धका क्षुप होता है । फल••पनसोखाकी समान होते हैं । इस क्षुपके नीचे छोटी मूलीकी समान कंद होता है, उस कंद निकाल कर सुखा लेते हैं, उसको असगन्ध कहते हैं ।

पाठानामानि ।



पाठाम्बष्ठापापचेलीकुचेलाछिन्नवेशिका ॥

अर्थ-पाठा, अम्बष्ठा, पापचेली, कुचेला, छिन्नवेशिका (अम्बष्ठि प्राचीना, पापचेलिका, यूथिका, स्थापनी, श्रेयसी, विद्धकर्णिका, एका कुचेली, दीपनी, वनतिक्तिका, रिक्तपुष्पा, बृहतिक्ता शिशिरा, वृकी, मा वरा, देवी, वृत्तपर्णी, तिक्ता, विद्धकर्णी, रसा, अविद्धकर्णी, पाटिका, द्धकर्णा, पाठिका, सुस्थिरा, प्रतानिनी, वत्सादनी, मालवी, त्रिशिरा, वृत्तपर्णी, रक्तघ्नी, विषहन्त्री, महौजसी, रुचिष्या, दीपनी, वीरा, वल्कि

संस्कृतभाषामें	पाठा ।
हिन्दीभाषामें	पाढ ।
वंगभाषामें	आकनादी, निमुक, आंखाँदि ।

मराठीभाषामें	पहाडमूळ ।
गुजरातीभाषामें	कालीपाट, करेटीमूल ।
कर्नाटकीभाषामें	पाठा ।
तैलिंगीभाषामें	पाढचेट्टु ।
औत्कलीभाषामें	पाकन् बिन्धि ।
इंग्रेजीभाषामें	परेरारूट् ।
लैटिन्भाषामें	सिसांपिलोस् परिरा । Cissampelos pareiro

अस्या गुणाः ।

पाठोष्णाकटुकातिक्तावातश्लेष्महरीलघुः ।
हन्तिशूलज्वरच्छर्दिकुष्ठातीसारहृद्रुजः ॥
दाहकण्डूविषश्वासकृमिगुल्मोदरव्रणान् । (भावप्रकाश)

अर्थ-पाढ--गरम चरपरा, कडवा, वातघ्न, कफनाशक, हलका, तथा शूल, ज्वर, वमन, कोढ, अतिसार, हृदयरोग, दाह, कण्डू, विष, श्वास, कृमि, गुल्म, उदररोग और व्रणको दूर करनेवाला है ।

अन्यच्च ।

पाठातिक्ताकटूष्णाचभग्नसन्धानकारका
तीक्ष्णालघ्वीपित्तदाहशूलातीसारनाशिनी ॥
वातपित्तज्वरच्छर्दिविषाजीर्णत्रिदोषकान् ।
हृद्रोगरक्तकुष्ठातिकण्डूश्वासकृमीञ्जयेत् ॥
गुल्मोदरव्रणकफवातनाशकरीमता । (नि. रा.)

अर्थ-पाढ--कडवा, चरपरा, गरम, भग्नसन्धानकारक, (टूटे हुये स्थानको जोडनेवाला) तीक्ष्ण, हलका तथा पित्त, दाह, शूल, अतिसार, वातपित्त ज्वर, वमन, विष, अजीर्ण, त्रिदोष, हृदयरोग, रक्तकुष्ठ, कण्डू, श्वास, कृमी, गुल्म, उदररोग, व्रण और कफवातको हरनेवाला है ।

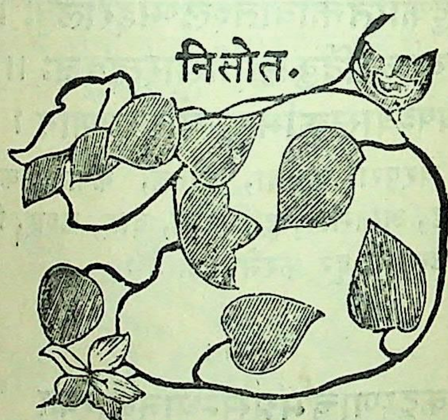
लघुपाठागुणाः ।

लघुपाठातिक्तरसाविषघ्नीकुष्ठकण्डुनुत ॥
छर्दिहृद्रोगगरजित्त्रिदोषशमनीमता ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ- लघुपाढ--कडवा तथा विष, कोढ, खुजली, वमन, हृदयरोग और त्रिदोषनाशक है ।

विवरण । पाढकी बेल होती है, पत्ते कुछ गोल होते हैं, उसके कोनोंमें श्वेत और सूक्ष्म मौरकी समान फूल निकलता है । फलमकोयकी समान लालरंगके होते हैं और वांगकी जडको लघुपाठा कहते हैं तथा वांगकी बेल होतीहै, पत्ते--फंजीकी समान होते हैं, फंजीके पत्ते ऊपर नीले और नीचे सफेद होते हैं, किन्तु वांगके ऐसे नहीं होते; आकार गोलफञ्जीकी समान और कुछेक पिलाई लिये होता है, फूल सूक्ष्म और सफेद होतेहैं, फल-पीलुके सदृश होते हैं ।

त्रिवृन्नामानि ।



त्रिवृत्सुवहात्रिपुटात्रिभण्डीरेचनीसरा ॥

अर्थ-त्रिवृत्--सुवहा, त्रिपुटा, त्रिभण्डी, रेचनी, सरा (सर्वानुभूति- त्रिवृता, सरसा, सरणा, सहा, रोचनी, मालविका, श्यामा, मसूरी, अर्ध- चन्द्रा, विदला, सुषेणी, कालिङ्गिका, कालमेषी, काली, त्रिवेला, त्रि- त्तिका, सारा)

संस्कृतभाषामें	त्रिवृत् ।
हिन्दीभाषामें	निसोत, पनिलर ।
वंगभाषामें	तेड्डी ।
मराठीभाषामें	निशोत्तर, तेंड ।
गुजरातीभाषामें	नसोतर ।
कर्णाटकीभाषामें	तिगडे ।
तैलिंगीभाषामें	आलतेगडा ।
तामिलीभाषामें	शिवदइ ।
अंग्रेजीभाषामें	टरबीथरूट Turbithroot

लैटिन्भाषामें आइपोमियां टरपीथम् Ipomoeaturpethum
फारसीभाषामें निसोथ ।
अरबीभाषामें तुरबुद ।

कृष्णत्रिवृन्नामानि ।

श्यामात्रिवृन्मालविकामसूरविदलाचसा ।
कालार्द्धचन्द्रपालंदीसुषेणीकालमेषिका ॥

अर्थ-श्यामा -त्रिवृत्, मालविका, मसूरविदला, काला, अर्द्धचन्द्रा, पालंदी, सुषेणी, कालमेषिका (पालिन्धी, कालमेशिका)
हिन्दीभाषामें कालानिसोथ, श्यामनिलर ।
बंगलाभाषामें कालतेउडी ।
कर्णाटकीभाषामें केप्यनेयतिगडे ।

श्वेतत्रिवृन्नामानि ।

शुक्लभण्डीत्रिभण्डीस्यात्काकाक्षीसरलात्रिवृत् ।
सर्वानुभूतिस्त्रिपुटात्र्यस्त्राकोटरवाहिनी ॥

अर्थ-शुक्लभण्डी, त्रिभण्डी, काकाक्षी,सरला, त्रिवृत्, सर्वानुभूति, त्रिपुटा, त्र्यस्त्रा, कोटरवाहिनी (व्याघ्रपादी, त्रिसूत्रा, वृकाक्षी, चोरनासिका, सुवहा, निसोत्रा, रेचनी, सर्वानुभूति और त्रिवृता)
हिंदीभाषामें सफेदनिसोत ।
बंगभाषामें श्वेततेउडी ।
मराठीभाषामें पांढऱ्या फुलांचा निशोत्तर ।
गुजरातीभाषामें धोलाफुलनुं नसोतर ।

रक्तत्रिवृन्नामानि ।

रक्तपुष्पारक्तमूलाकलिङ्गापरिपाकिनी ।
त्रिवृतानिःसृतारुणासूत्रमध्याचसास्मृता ॥

अर्थ-रक्तपुष्पा, रक्तमूला, कलिंगा, परिपाकिनी, त्रिवृता, निःसृता, अरुणा, सूत्रमध्या, (व्याघ्रादनी, कुटरुणा, कालिन्दी, त्रिपुरा, ताम्रपुष्पिका, कुलवर्णा, मसूरी, अमृता, काकनासिका, और रक्तत्रिवृत् ।

सामान्यत्रिवृद्गुणाः ।

त्रिवृत्तिक्ताकटूष्णाचक्रिमिश्लेष्मोदरार्त्तिजित् ।

कुष्ठकण्डूव्रणान्हन्तिप्रशस्ताचविरेचनी ॥ (रा. नि.)

अर्थ--निसोत--कडवा, चरपरा, गरम, तथा क्रिमि, कफ, उदररोग, कुष्ठ, कण्डू और व्रणको दूर करेहै, इसका जुलाब प्रशंसायोग्यहै।

अन्यच्च ।

त्रिवृत्तुमधुरंरूक्षंतीक्ष्णंवातकरंमतम् ।
तुवरंचरसेतिक्तंकटुपाकञ्चरेचकम् ॥
हितकृन्मलस्तम्भञ्चग्रहणीञ्चकफोदरम् ।
शोथंपाण्डुंकृमीन्प्लीहांज्वरंपित्तंकफंतथा ॥
वातरक्तमुदावर्त्तंहृद्रोगञ्चविनाशयेत् । (रा. नि.)

अर्थ--निसोत--मधुर, रूखा, तीक्ष्ण, वातजनक, कषेला, तिक्तरसान्वित, कटुपाकी; इसका रेचक (जुलाब), हितकारी तथा मलस्तम्भ, संग्रहणी, कफोदर, सूजन, पाण्डुरोग, कृमि, प्लीहा, ज्वर, पित्त, कफ, वातरक्त, उदावर्त और हृदयरोगको हरनेवाला है।

श्यामत्रिवृद्गुणाः ।

श्यामात्रिवृत्ततोहीनगुणातीव्रविरेचनी ।
मूर्च्छादाहमदभ्रान्तिकण्ठोत्कर्षणकारिणी ॥

अर्थ--श्यामपनिलर (काला निसोथ)--सफेद निसोथकी अपेक्षा हीनगुणोंवाला है, किन्तु विरेचन गुण इसमें तीव्रहै, तथा मूर्च्छा दाह, मद, भ्रान्ति और कंठको उत्कर्षण करनेवाला है।

श्वेतत्रिवृद्गुणाः ।

श्वतात्रिवृद्रेचनीस्यात्स्वादुरुष्णासमीरहृत् ।
रूक्षापित्तज्वरश्लेष्मपित्तशोथोदरापहा (भा. प्र.)

अर्थ--सफेद निसोथ--रेचक, स्वादिष्ट, गरम, वातनाशक, रूखा, तथा पित्तज्वर, कफ, पित्त, सूजन और उदररोगको दूर करेहै।

रक्तत्रिवृद्गुणाः ।

अरुणात्रिवृतास्वादुःकषायामृदुरेचनी ।
रूक्षाचकटुकाचैवपाकेतिक्ताकफापहा ॥ (राजवल्लभ०)

अर्थ--लाल निसोथ--मधुर, कषेला, मृदुरेची, रूखा, चरपरा, पचनेमें कडवा और कफनाशक है।

अन्यच्च ।

रक्तात्रिवृत्कटुस्तिक्ताकटूष्णारेचनीचसा ।
ग्रहणीमलविष्टम्भहारिणीहितकारिणी ॥ (रा. नि.)

अर्थ-लालनिसोथ-कडवा, चरपरा, गरमरेचक तथा संग्रहणी, एवं मल-विष्टम्भहारक और हितकारक है ।

विवरण। सफेद निशोथकी बेल जंगलमें होती है, सफेद फूल आते हैं, गोल २ फल आते हैं, उनमें चार २ बीज होते हैं, पत्ते-नोकदार गोल होते हैं, इसकी बेलकी लकडीमें तीन धारें होती हैं, निसोथ तीन प्रकारका होता है, परन्तु सफेद सबसे उत्तम है ।

२ काले निसोथकीभी लता होती है, फूल कालापनलिये बैंजनीसे होतेहैं, पत्ते गोल २ नोंकदार उसीप्रकार होते हैं; परन्तु सफेदसे कुछ छोटे और फल भी कुछ छोटे होते हैं और सब आकार इकसार होता है; परन्तु वैद्योंने सफेदकी अधिक प्रशंसा करी है ।

मात्रा सफेद निसोथकी २ मासेसे लेकर ४॥ मासे पर्य्यन्त है । मात्रा काले निशोथकी १ मासेसे लेकर ३ मासेपर्य्यन्त है । मात्रा लाल निसोथकी ३ मासेसे ६ मासेतककी है ।

दन्तीनामानि

उदुम्बरपर्णीदन्तीप्रत्यक्पर्णीचदन्तिका ।
श्वेतघण्टानिकुम्भीचनिःशल्यानिष्कुम्भस्तथा ॥

अर्थ-उदुम्बरपर्णी, दन्ती, प्रत्यक्पर्णी, दन्तिका, श्वेतघण्टा, निकुम्भी, निःशल्या, निष्कुम्भ (निकुम्ब, शीघ्रा, नागस्फोता, दन्तिनी, उपचित्रा, भद्रा, रूक्षा, रेचनी, अनुकूला, रक्तदन्ती, विशल्या, मधुपुष्पा, एरण्डफला, वहनी, एरण्डपत्रिका, एरण्डपत्री, अणुखेती, विशोधनी, कुम्भी, उदुम्बर-दला, विशल्या, उदुम्बरपर्णी, शीघ्रा, श्येनघंटा, घुणप्रिया, वराहाङ्गी, निकुम्भ और मकूनक यह नाम छोटी दन्तीके हैं) (द्रवन्ती, सावरी, चित्रा, मूषकपर्णी, अर्कपर्णी, चित्रोपचित्रा न्यग्रोधी, प्रत्यक्श्रेणी, आखुकर्णी)

संस्कृतभाषामें	दन्ती ।
हिन्दीभाषामें	दन्ती, तिरिफल ।
बंगभाषामें	दन्तीघाछ ।
मराठीभाषामें	लघुदन्ती ।

गुजरातीभाषामें	दांतएटले नेपालनां मूल ।
कर्णाटकीभाषामें	दंती ।
तैलिङ्गीभाषामें	दन्तीचेट्टु, कोण्ड अमुदुम् ।
अंग्रेजीभाषामें	क्रोटन् सीडस् । Crotenseeds
लैटिन्भाषामें	क्रोटनटिग्लियम् । Crotentiglium
फारसीभाषामें	दंद ।
अरबीभाषामें	हबुलं मुलुक ।

दन्तीगुणाः ।

दन्तीवह्निसमापाकेशोफदद्रुविनाशिनी ।
कण्डूपामाहराकुष्ठध्वंसिनीकृमिहृत्सरा ॥ (ग० नि०)

अर्थ—दन्ती-पाकमें अग्निकी समान है, दस्तावर है तथा शोफ, ब[वा]सीर, कण्डू, पामा, कोढ और कृमिरोगको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

दन्तीकटूष्णाशूलामत्वग्दोषशमनीचसा ।
अर्शोव्रणाश्मरीशल्यशोधनीदीपनीपरा ॥ (रा. नि.)

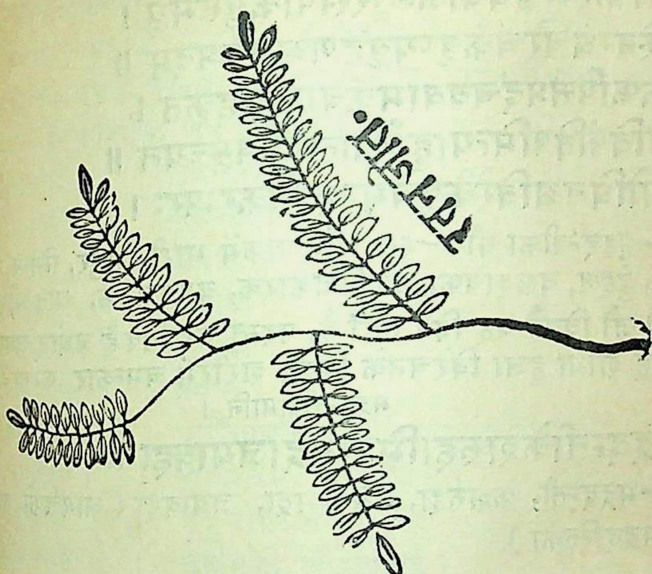
अर्थ—दन्ती—चरपरी, गरम, शोधक, दीपन, तथा शूल, आम, त्वचाके दोष, बवासीर, घाव, पथरी और शल्यनिवारक है ।

अपिच ।

दन्तीद्वयंसरंपाकेरसेचकटुदीपनम् ।
गुदांकुराश्मशूलार्शःकण्डूकुष्ठविदाहनुत् ॥
तीक्ष्णोष्णंहन्तिपित्तास्रकफशोफोदरकृमीन् ।
क्षुद्रदन्तीफलंतुस्यान्मधुरंरसपाकयोः ॥
शीतलंसृष्टविण्मूत्रंगरशोथकफापहम् । (भा. प्र.)

अर्थ—दोनोंप्रकारकी दन्ती-दस्तावर,रसऔर पाकमें चरपरी जठराग्निको दीपन करनेवाली,तीक्ष्ण, गरम, तथा गुदांकुर, पथरी, शूल, बवासीर, कण्डू, कोढ, दाह, पित्तकारक, कफ, सूजन, उदररोग और कृमि रोगका नाश करने[वाली] है । छोटी दन्तीका फल-रस और पाकमें मधुर शीतल, मल तथा मूत्रको निकालनेवाला, विष, शोथ और कफनाशक है ।

बृहद्दन्तीनामानि ।



बृहद्दन्ती गुच्छफला दुग्धगर्भा विरेचनी ।
विषभद्राभद्रदन्तीज्योतिष्काचजयावहा ॥

अर्थ-बृहद्दन्ती, गुच्छफला, दुग्धगर्भा, विरेचनी, विषभद्रा, भद्रदन्ती, ज्योतिष्का, जयावहा ।

संस्कृतभाषामें	बृहद्दन्ती
हिन्दीभाषामें	मुगलाई अण्ड ।
मराठीभाषामें	थोरदन्ती ।
गुजरातीभाषामें	रतनजोत ।
कर्नाटकीभाषामें	एरण्डनेदन्ती ।
अंग्रेजीभाषामें	दिफिझिकनट् । The physicient
लेटिन्भाषामें	करकस मल्टीफीडस्, । Curcas Multifidus जेट्रोफापरगन्स्, Jatrophapurgans
फारसीभाषामें	शकारदुजुवा !
अरबीभाषामें	अबुखलसा ।

बृहद्दन्तीगुणाः ।

बृहद्दन्तीकटूष्णाचजठरामयशोधिनी ।
अर्शोव्रणाश्मरीशूलत्वग्दोषशमनीचसा ॥

अर्थ-बृहद्दन्ती-चरपरी, गरम, जठरामयशोधक तथा बवासीर, घाव, पथरी, शूल और त्वचाके दोषोंको दूर करे है ।

बृहद्दन्तीबीजगुणाः ।

तिक्तैरण्डयबीजन्तुरसपाकेगुरुमधु ।
स्निग्धंचरेचकंवृष्यंबृंहणश्चबलप्रदम् ॥
कफपित्तप्रदंचैववामकंवातदाहकृत् ।
नविषंविषमित्याहुर्जैपालोविषमुच्यते ॥
शोधितश्चविरेकेषुचमत्कृतिकरःपरः ।

अर्थ-बृहद्दन्तीका बीज-रस और पाकमें भारी, मधुर, स्निग्ध, रेचक, वीर्यवर्द्धक, बृंहण, बलदायक, कफपित्तकारक, वमनजनक, वात और दाह-कारक है। जो विषहै वह विष नहीं है, परन्तु यह विष है अर्थात् जमालगोटा विषहै। यह शोधा हुआ विरेचनके विषय शरीरमें चमत्कार करता है।

भद्रदन्तीनामानि ।

भद्रदन्तीकेशरुहाभिषग्भद्राजयावहा ॥

अर्थ-भद्रदन्ती, केशरुहा, भिषग्भद्रा, जयावहा (आवर्त्तकी, ज्वरांकुशा, जयाह्वा, भद्रदन्तिका)

अस्यागुणाः ।

भद्रदन्तीकटूष्णाचरेचनीकृमिहापरा ।
शूलकुष्ठामदोषघ्नीतुंदामयविनाशिनी ॥

अर्थ-भद्रदन्ती-चरपरी, गरम, दस्तावर, कृमिनाशक उथा शूल, कोढ़, आमदोष और उदररोगनाशक है।

जयपालनामानि ।



जयपालश्चजैपालःसारकास्तिन्तिडीफलम् ॥

अर्थ-जयपाल, जैपाल, सारक, तिन्तिडीफल, (दन्तीबीज, मलद्रावि, निकुम्भाख्यबीज, रेचक, बीजरेचन, कुम्भीबीज, कुंभिनीबीज, घण्टाबीज, वह्निनीबीज, शोधनीबीज, चक्रदन्तीबीज)

संस्कृतभाषामें	जयपाल ।
हिन्दीभाषामें	जमालगोटा ।
बंगभाषामें	जैपाल ।
मराठीभाषामें	जेपाळ ।
गुजरातीभाषामें	नेपालो ।
कर्णाटकीभाषामें	जेपाल ।
इंग्रेजीभाषामें	पार्जिगक्रोटन । Parging Broton
लैटिन् भाषामें	औलियम, कोटोनिस ।
अरबीभाषामें	हबुससलातीन ।
फारसीभाषामें	तुखमेबेंद जीरखताई ।

अस्य गुणाः ।

जयपालःकटुरुष्णःक्रृमिहारीविरेचकः
दीपनःकफवातघ्नोजठरामयशोधनः ॥ (रा. नि.)

अर्थ-जमालगोटा--चरपरा, गरम, क्रृमिनाशक, रेचक, दीपन, कफवात नाशक और उदरामयशोधक है ।

अन्यच्च ।

जयपालोगुरुःस्निग्धोरेचीपित्तकफापहः ॥ (भा. प्र.)

अर्थ- जमालगोटा--भारी, स्निग्ध, दस्तावर और पित्त, कफनाशक है ।

अन्यच्च ।

सारकंकफनुत्क्लेदितीक्ष्णमुष्णंविरेचनम् ॥ (रा. नि.)

अर्थ--जमालगोटा--कफनाशक, क्लेदकारक, तीक्ष्ण, गरम और दस्त लानेवाला है ।

अस्य बीजशोधनविधिः ।

निस्तुषंजयपालञ्चद्विधाकृत्वाविचक्षणः ।
एतद्बीजस्यमध्येतुपत्रवत्परिवर्ज्जयेत ॥

अष्टमांशेनचूर्णेनटङ्कणस्यतुमेलयेत् ।
केशयन्त्रेणंतद्भाव्यंपाच्यंदुग्धेनसंप्लुतम् ॥
त्रिवारंशुद्धिमायातिजयपालोमृतोपमम् । (इतिरसच०)

अर्थ--बुद्धिमान् वैद्य बक्कल रहित जमालगोटेके दो भागकरके इसके बीजके मध्यमें पत्तेकी समान जो वस्तु है उसको निकाल डाले और जमाल गोटेकी दालमें अष्टमांश सुहागेका चूर्ण करके मिलावे । केशयन्त्रके द्वारा भावना दे फिर दूधमें भिजोकर मिलावे; इसप्रकार तीन वार करनेसे जमाल गोटा अमृतकी सदृश हो जाता है ।

अन्यच्च ।

स्विन्नंगोमयतोयेवादुग्धेवाजयपालकम् ।
खर्परीमृदुभृष्टंतन्निःस्नेहंशुद्धिमृच्छति ॥ (आत्रेयसंहिता)

अर्थ--जमालगोटेको गोबरके जलमें तथा दूधमें भिजोकर फिर कोमल खीरडेमें भूनलेवे जब उसमें चिकनाई न रहे तब शुद्ध हो जाता है।

अस्य बीजतिलगुणाः ।

तैलंनिकुम्भबीजोत्थमत्युग्रंरेचनंपरम् ।
आनाहमुदरंहन्तिसंन्यासंश्वशिरोगदम् ॥
धनुस्तम्भंज्वरोन्मादंगदमेकाङ्गसंज्ञकम् ।
आमवातश्वशोथश्वमर्द्दनात्कासनाशनम् (आत्रेयसंहिता)

अर्थ--जमालगोटेका तेल--अत्युग्र रेचक तथा आनाह (अफारा) उदररोग, संन्यास, शिरोरोग, धनुःस्तम्भ, ज्वर, उन्माद, एकाङ्गसंज्ञक रोग, आमवात और शोथको मर्दन करनेसे तथा खाँसीको दूर करे है ।

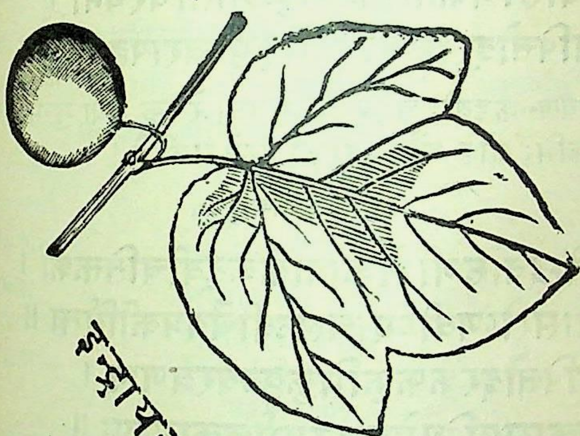
विवरण--दन्तीका क्षुप होता है, पत्ते- गूलरकी समान होते हैं, फूल महुवेकी समान होताहै इसका फल जमालगोटा है । बडी दन्तीका बडा वृक्ष होता है, फल--अण्डकी समान होते हैं, उसमेंसे अंडीकी समान बीज निकलते हैं, इन बीजोंका जुल्लाब होता है, तथा इसके दूधकाभी थूहरके दूधकी समान जुल्लाब दियाजाता है ।

इन्द्रवारुणीनामानि ।

इन्द्रवारुणिकाचित्राविशालागजचिर्भिटा ।
मृगेर्वारुःक्षुद्रसहा चित्रफलेन्द्रवारुणी ॥

अर्थ-इन्द्रवारुणिका, चित्रा, विशाला, गजचिर्भिटा, मृगेर्वारु, क्षुद्रसहा, चित्रफला, इन्द्रवारुणी, (ऐन्द्री, गवाक्षी, अरा, पिटङ्कोकी, मृगादनी, इन्द्रा, अरुणा, गवादनी, इन्द्रचिर्भिटी, सूर्य्या, विषघ्नी, गणकर्णिका, माता, वृकर्णिका, तारका, वृषभाक्षी, पीतपुष्पा, इन्द्रवल्लरी, हेमपुष्पा, क्षुद्रफला, वारुणी, बालकप्रिया, रक्तेर्वारु, विषलता, शक्रवल्ली, विषापहा, अमृता, विषवल्ली, चित्रवल्ली, बहुफला, कपिलाक्षी, मृगेक्षणा मृगेक्ष्णा)

महेन्द्रवारुणीनामानि ।



महेन्द्रवारुणीकायाविशालाचमहाफला ।
आतमरक्षाचित्रफलातुंवसीत्रपुसीचसा ॥

अर्थ-महेन्द्रवारुणी, काया, विशाला, महाफला, आत्मरक्षा, चित्रफला, तुंबसी, त्रपुशी (रम्या, महेन्द्री, त्रपुसा, चित्रवल्ली, दीर्घवल्ली, बृहत्फला, इन्द्रवारुणी, सौम्या, श्वेतपुष्पा, मृगाक्षी, मृगेर्वारु मृगादिनी, हस्तिदन्ती, मधुरसा, कपिलाक्षी, कुम्भसी, उरुप्रिया, चित्रला, देवी और गजचिर्भिरा)

संस्कृतभाषामें	
हिन्दीभाषामें	इन्द्रवारुणी, महेंद्रवारुणी ।
वङ्गभाषामें	इन्द्रायण, फरफेंदु, बडीइन्द्रायण, बडीइन्द्रफला ।
मराठीभाषामें	राखालशशा, राखालताडु, कुंदरुकी, बडमाकाल ।
गुजरातीभाषामें	लघुइंद्रवण, कांवडळ, थोरकावँडल ।
रा०	इंदरवाणीयुँ, गावसुकणु ।
दे०	तसतुम्बो, गडतुम्बो ।
कर्णाटकीभाषामें	वोडइन्द्रावण, घुलेइन्द्रावण ।
तैलिङ्गीभाषामें	हामेक्क, हिरियाहामेक्क
२६	एतिपुच्छा

अग्रंजीभाषामें कोलोसिंथ । Colocynth
लैटिन्भाषामें सिट्रूलस् कालोसिंथिस् । Citrullus Colocynthis
क्युक्युमिस् स्युडोकोलो सिंथिस् । Cucumispo colocynthis
फारसीभाषामें खुर्य नातलख ।
अरबीभाषामें हंजल ।

इन्द्रवारुणीगुणाः ।

इन्द्रवारुणिकातिक्ताकटुःशीताचरेचनी ।
गुल्मपित्तोदरश्लेष्मक्रिमिकुष्ठज्वरापहा ॥ (रा. नि.)

अर्थ--इन्द्रायण--कडवी, चरपरी, शीतल, रेचक तथा गुल्म, पित्त, उदररोग, कफ क्रिमि, कोढ और ज्वरको हरनेवाली है ।

अन्यच्च ।

लघ्वीन्द्रवारुणीप्रोक्तापाकेकट्वीचतिक्तका ।
शीतासरोष्णवीर्य्याचलघ्वीचैवप्रकीर्तिता ॥
गुल्मपित्तोदरकफक्रमिकुष्ठज्वरव्रणान् ।
श्वासकासग्रन्थिमेहमूढगर्भककामलाः ॥
प्लीहानंशुष्कगर्भश्चगलगण्डंविषंतथा ।
आनाहंवातमपिचचामंदुष्टोदरंतथा ॥
सर्वोदराणिपाण्डुश्चनाशयेदितिकीर्त्तिता । (नि. र.)

अर्थ--इंद्रायण--पचनेमें चरपरी, कडवी, शीतल, सारक, उष्णवीर्य, हलकी तथा गुल्म, पित्त, उदररोग, कफ, कृमि, कुष्ठ, ज्वर, व्रण, श्वास, खाँसी, ग्रन्थि, प्रमेह, मूढगर्भ, कामला, प्लीहा, शुष्कगर्भ, गलगण्ड, विष, आनाह, वात, अपची, आम, दुष्टोदर, सर्वप्रकारके उदररोग और पाण्डुरोगका नाशकरनेवाली है ।

महेन्द्रवारुणीगुणाः ।

अन्येन्द्रवारुणीकफरुजश्चश्लीपदंतथा ।
नाशयेदितिसंप्रोक्तागुणाश्चान्येतुपूर्ववत् ॥
रसवीर्येचपाकेचाधिकाचोक्तागुणैरियम् । (नि. र.)

अर्थ--बडी इन्द्रायण--कण्ठरोग और श्लीपद रोगको दूर करनेवाली

…, वीर्य और विपाकमें इन्द्रायणकी अपेक्षा यह अधिक गुणवाली है … गुण इन्द्रायणकी समान जानने ।

विवरण। इसकी बेल अधिकतर खारी भूमिमें उत्पन्न होतीहै, फल-सूक्ष्म …युक्त लालरङ्गका होताहै, फूल-पीलेरङ्गका होताहै। पत्ते-लम्बे बीचबीचमें …कटे होतेहैं दूसरी रेतली भूमिमें होती है, उसकाफल-पीलेरङ्गका होता है। …दोनों जातिकी इन्द्रायणके फल तथा मूलके द्वारा जुल्लाब दिया जाताहै।

स्वर्णपत्रीनामानि ।

कल्याणीहेमपत्रीचरेचनीस्वर्णपत्रिका ।

अर्थ- कल्याणी, हेमपत्री, रेचनी, स्वर्णपत्रिका, (स्वर्णपत्री, स्वर्णमुखी, …पत्रिका, रेचिका, स्वर्णिनी और मलहारिणी)

संस्कृतभाषामें	स्वणपत्री ।
हिन्दीभाषामें	सनाय ।
मराठीभाषामें	सोनामुखी ।
वंगभाषामें	सोनामुखी, सोनापाता ।
अंग्रजीभाषामें	टिनेवलीसिना ।
लैटिन्‌भाषामें	सिनाइंडिका ।

अस्यागुणाः ।

विट्बन्धंवह्निमान्द्यञ्चयकृदाद्युदरंतथा ।
प्लीहोदरंबद्धगुदमजीर्णंविषमज्वरम् ॥
कामलांपाण्डुरोगञ्चकल्याणींक्षपयेद्ध्रुवम् । (भा. सं.)

अर्थ-सनाय--मलबद्ध, मंदाग्नि, यकृत्, उदररोग, प्लीहोदर, बद्धगुद, अजीर्ण, विषमज्वर, कामला और पाण्डुरोगका नाश करे है।

कृष्णबीजनामानि ।



कृष्णबीजंश्यामबीजंस्मृतंश्यामलबीजकम् ॥

अर्थ-कृष्णबीज, श्यामबीज, श्यामलबीजक ।

संस्कृतभाषामें	कृष्णबीज ।
हिन्दीभाषामें	कालादाना ।
बंगलाभाषामें	नीलकलमी ।
अंग्रेजीभाषामें	पेलब्लुइपोमिया ।
लैटिन्भाषामें	फारवटिसनील ।

अस्य गुणाः ।

कृष्णबीजंसरंस्निग्धंशोथोदरहरंपरम् ।
ज्वरविष्टम्भहारीचमस्तकामयनाशनम् ॥
उदावर्त्तकफेनाहेप्रयोज्यंबुद्धिमत्तरैः ।

अर्थ-कालादाना-दस्तावर, चिकना तथा सूजन, उदररोग, ज्वर, विष्टम्भ, मस्तकरोग, उदावर्त, कफ, और आनाह रोगको दूर करे है।

विवरण। जमालगोटेके अभावमें इसका व्यवहार किया जाता है क्योंकि जमालगोटेकी समान यह इतना भयंकर दस्तावर नहीं है। आज कल बहुतसे आलोपैथिकडाक्तर सरकारी सफाखानेमें इसका व्यवहार करते हैं। व्यवहार—बीज। मात्रा ६ मासेकी।

नीलिकानामानि।

नीलीतुनीलिनीनीलामेघवर्णाचकुत्सला ।
दूलीक्लीतकिकाकालानीलिकानीलपुष्पिका ॥

अर्थ- नीली, नीलिनी, नीला, मेघवर्णा, कुत्सला, दूली, क्लीतकिका, काला, नीलिका, नीलपुष्पिका, (ग्रामीणा, मधुपर्णिका, रञ्जनी, श्रीफला, तुत्था, तूणी, दोला, दूलिका, द्रोणिका, अक्लिका, ग्रामणी, ग्रामिणी, शोधिनी, द्रोणी, मेला, तुच्छा, नीलपत्री, राज्ञी, नीलपुष्पी, काली, श्यामा, महाफला, श्रीफला, ग्राम्या, भद्रा, भारवाही, मोचा, कृष्णा, व्यञ्जनकेशी, रङ्गपत्री, असिता, क्लीतनी, केशी, चारटिका, गन्धपुष्पा, श्यामलिका, विषा, महाबला, स्थिररङ्गा, रङ्गपुष्पी, वृन्तिका, अञ्जनकेशिका, चारटी, गन्धपुष्पी, और स्थिररागा)

संस्कृतभाषामें	नीली।
हिन्दीभाषामें	नील, लील।

बंगभाषामें नीलगच्छी नीलगाछ ।
मराठीभाषामें गुली, लघुनीली ।
गुजरातीभाषामें गली ।
कर्णाटकीभाषामें हिरीपनीली ।
तैलिंगीभाषामें निलीजेट्टु ।
अंग्रेजीभाषामें इंडिगो Indigo
लेटिन्भाषामें इंडिगोफेरा कोर्डिफोलिआ । Indigofera cordifolia

अस्याः गुणाः ।

नीलीतुकटुकातिक्ताकेश्याचोष्णासरामता ।
व्यंगंश्लेष्मोदरंमोहंहृद्रोगंचभ्रमंतथा ॥
वातरक्तमुदावर्त्तमामवातंकफञ्जयेत् ।
मदंकासंविषंचामंवातंगुल्मंज्वरंतथा ॥
कुष्ठंकृमीश्चोदरश्चप्लीहाश्चैवविनाशयेत् । (नि. र.)

अर्थ- नील--चरपरा, कडवा, केशोंको हितकारी, गरम, सारक तथा व्यंग, कफ, उदररोग, मोह, हृदयरोग, भ्रम, वातरक्त, उदावर्त्त, आमवात, कफ, मद, खाँसी, विष, आम, वात, गुल्म, ज्वर, कोढ, कृमि, उदर और प्लीहाका नाशकरे है ।

अन्यच्च ।

नीलीकेश्याशिरोरोगव्रणकुष्ठापहासरा ॥ (शो० नि०)

अर्थ- नील--केशोंको सुंदरकरनेवाला तथा मस्तकरोग, घाव और कोढको दूर करेहै तथा दस्तावर है ।

विवरण। नीलके क्षुप छोटे २ किसानलोग खेतीमें बोतेहैं, पत्तसरफोंकके समान नीले और कुछेक कालापन लिये होतेहैं । इसकी फली--टेढी और गोल होतीहै, इसकी डाली और पत्तोंकी कुहीकर कुण्डोंमें पानीभर उसमें सड़ातेहैं, तब इसका नील बनातेहै वह नीले रंगके काममें आताहै, दूसरा इसीका भेद बडा नील है ।

महानीलीनामानि ।

अन्याचैवमहानीलीअमराराजनीलिका ।
तुत्थाश्रीफलिकामेलाकेशार्हाभतर्सपत्रिका ॥

अर्थ--महानीली, अमरा, राजनीलिका, तुत्था, श्रीफलिका, गेला, केशार्ह, भत्संपत्रिका ।

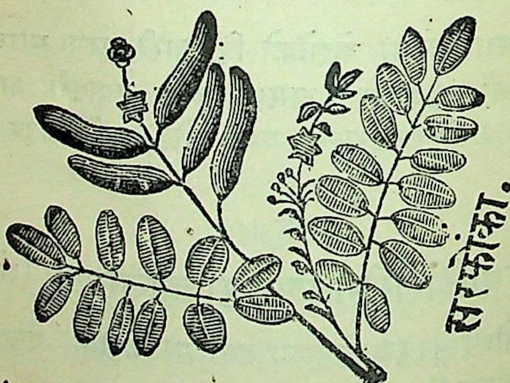
हिन्दीभाषामें	बडानील ।
वंगभाषामें	वडनील ।
मराठीभाषामें	थोरनीली ।
गुजरातीभाषामें	मोटीगली ।
कर्णाटकीभाषामें	हिरीपनील ।
लैटिन्भाषामें	इंडिगोफेरा टिंकटोरिया । Indigotcra tinct...

अस्या गुणाः ।

महानीलीगुणाढ्यास्याद्रंगश्रेष्ठासुवीर्य्यदा ।
पूर्वोक्तनीलिकादेषासगुणासर्वकर्मसु ॥

अर्थ -बडानील--गुणाढ्य, उत्तमरंगवाला, वीर्य्यजनक, नीलकी अपेक्षा सब गुणोंमें उत्तम है ।

शरपुंखानामानि ।



शरपुंखाकालशाकंप्लीहारिः कालिकामता ॥

अर्थ -शरपुंखा, कालशाक, प्लीहारि, कालिका (प्लीहशत्रु, नीलवृक्षा, काण्डपुंखा, बाणपुंखा, इषुपुंखिका, सायकपुंखा, इषुपुंखा, शरपुंखा)

श्वेतशरपुंखानामानि ।

शराभिधाचपुंखास्याच्छ्वेताद्यासितसायंका ।
सितपुंखाश्वेतपुंखाशुभ्रपुंखाचपञ्चधा ॥

अर्थ--श्वेतशरपुंखा, सितसायका, सितपुंखा, श्वेतपुंखा, शुभ्रपुंखा ।

कंठपुंखानामानि ।

अन्यातुकंठपुंखास्यात्कंठालुःकंठपुंखिका ॥

अर्थ-कण्ठपुंखा, कंठालु, कण्ठपुंखिका ।

संस्कृतभाषामें शरपुंखा, श्वेतशरपुंखा, कण्ठपुंखा ।
हिन्दीभाषामें सरफोंका, सफेद सरफोंका, कण्ठपुंखा ।
वंगभाषामें बननील, सादबननील ।
मराठीभाषाम उन्हाली ।
कर्णाटकीभाषामें येरडुकोगिग, मल्लुकोगिग ।
तैलिंगीभाषामें प्रांपोराचेट्टु तेल्लवेंपल्लिचेट्टु ।
तामिलीभाषामें कोल्लुक्कवकेल्लपि ।
द्रा० जंलिकुलथि ।
अंग्रजीभाषामें परपलटेफ्रोझिया । Purple tephrosia
लैटिनभाषामें टेफ्रोझियापरपूरिया । Tephrosia Purpurea

शरपुंखागुणाः ।

शरपुंखायकृत्प्लीहगुल्मव्रणविषापहा ।
तिक्तःकषायःकासास्रश्वासज्वरहरोलघुः ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-सरफोंका-यकृत, प्लीहा, गुल्म, व्रण और विषविनाशक, है । तथा कड़वा कषैला, हलका, और खांसी, रुधिरविकार, श्वास तथा ज्वरको दूर करनेवाला है ।

अपिच ।

शरपुंखाकटूष्णाचक्रिमिवातरुजापहा ।
श्वेतात्वेषागुणाढ्यास्यात्प्रशस्ताचरसायने ॥ (रा.नि.)

अर्थ-सरफोंका-चरपरा,गरम,क्रिमि और वातनाशक है सफेद सरफोंक सरफोंकेकी, अपेक्षा अधिक गुणवाला और रसायनकार्य्यमें उत्तम है ।

अन्यच्च ।

शरपुंखातुकटुकातिक्तोष्णातुवरालघुः ।
यकृत्क्रिमिप्लीहगुल्मव्रणकासविषापहा ॥
श्वासार्शरक्तदोषघ्नीहृद्रोगकफजूर्त्तिहा ।
वातंकफोदरंव्यंगंगलत्कुष्ठश्चनाशयेत् ॥
श्वेताग्रश्शरपुंखायारक्तातोह्यधिकागुणाः । (नि. र.)

अर्थ-सरफोंका-चरपरा, कडवा, गरम, कषेला, हलका, तथा यकृत्, कृमि, प्लीहा, गुल्म, व्रण, खांसी, विष, श्वास, बवासीर, रुधिरविकार, हृदयरोग, कफ, ज्वर, वात, कफोदर, व्यङ्ग (झांई) और गलत्कुष्ठको दूर करे है। रक्त शरफोंकेसे सफेद अधिक गुणवाला है।

कंठपुंखागुणाः ।

कंठपुंखाकटूष्णाचक्रिमिशूलविनाशिनी ॥ (रा नि.)

अर्थ-कंठपुंखा-चरपरा, गरम तथा कृमि और शूलविनाशक है।

विवरण । सरफोंकेका क्षुप होता है, पत्ते-नीलके समान होते हैं, फूल लाल और बारीक होते हैं, फलियोंके ऊपर रूँआ होता है, दूसरे प्रकारके फलियोंपै रूँआ नहीं होता। सफेद सरफोंकेका क्षुप, पृथ्वीपर फैला हुआ होता है, पत्ते-लाल सरफोंकेसे कुछेक छोटे होते हैं, फूल-सफेद होता है। शरफोंकेकी जड-विलममें रखकर पीनेसे खांसी और श्वास दूर होता है। सरफोंकेकी मात्रा ४ मासे। कंठपुंखेकी मात्रा ५ मासे।

दुरालभानामानि ।

दुरालभादुरालम्भासमुद्रान्ताचरोदिनी ।
गान्धारीकच्छुरानन्ताकषायादुरभिग्रहा ॥

अर्थ-दुरालभा, दुरालंभा, समुद्रान्ता, रोदिनी, गांधारी, कच्छुरा, अनन्ता, कषाया, दुरभिग्रहा (दुःस्पर्शा, कुनाशक, रोदनी, धनुर्यास, दुरालभा, कच्छुरा, धन्वयवास, विकण्टक, आत्ममूली, पद्ममुखी, इदंकार्या, धन्वयास, ताम्रमूला, कच्छुरा, धन्वी, धन्वयवासक, प्रबोधिनी, सूक्ष्मदला, विरूपा, दुर्लभा, दुष्प्रधर्षा, ताम्रमूली, मरुज्जन्मा, उष्ट्रभक्ष्या, मृदुपर्णी, कपायक, प्राहादनी, विरूपा, फणिहारी, विशारदा, रविग्रहा, अजाभक्ष्या, प्राहिणी, सूक्ष्मदला)

संस्कृतभाषामें	दुरालभा ।
हिन्दीभाषामें	धमासा, हिंगुणा ।
बंगलाभाषामें	दुरालभा ।
मराठीभाषामें	धमासा ।
गुजरातीभाषामें	धमासो ।
कर्णाटकीभाषामें	वह्निदुरुवे ।
तैलिंगीभाषामें	पिल्लेगटि, दुलगोडि ।

लैटिन्‌भाषामें फगोनियाएरेबिका । Fogonia-arabica
फ़ारसीभाषामें बादावर्द ।
अरबीभाषामें शुकाई ।

अस्या गुणाः ।

उष्ट्रभक्ष्यामरुछासविषघ्नीबोधकृत्परा ।
कषायाज्वरहृच्छीतातथातीसारनाशिनी ॥ (ध. नि.)

अर्थ-धमासा-बोधकारक, कषेला, शीतल, तथा वात, श्वास, विष, ज्वर और अतिसारनाशक है ।

अन्यच्च ।

दुरालम्भाकटुस्तिक्तासोष्णाक्षाराम्लिकातथा ।
मधुरावातपित्तघ्नीज्वरगुल्मप्रमेहजित् ॥ (रा० नि०)

अर्थ-धमासा, चरपरा, कडवा, गरम, खारी, खट्टा, मीठा तथा, वात, पित्त, ज्वर, गुल्म और प्रमेहको हरेहै ।

अपिच ।

दुरालभाकटुस्तिक्तामधुरारक्तशुद्धिकृत् ।
शीताचोष्णाविसर्पघ्नीविषमज्वरनाशिनी ॥
तृट्छर्दिमेहगुल्मघ्नीमोहरक्तरुजापहा ।
वातंपित्तंकफंकुष्ठंज्वरंचैवविनाशयेत् ॥ (नि. र.)

अर्थ-धमासा-चरपरा, कडवा, मीठा, रक्तशोधक, शीतल, गरम, तथा विसर्प, विषमज्वर, तृषा, वमन, प्रमेह, गुल्म, मोह, रुधिरविकार, वातपित्त, कफ, कोढ़ और ज्वरको दूर करे है ।

विवरण । धमासेका, रेतली भूमिमें छत्ता होता है, कांटे बारीक होते हैं, पत्ते-सूक्ष्म और फलभी बहुत छोटे २ होते हैं । मात्रा ६ मासेकी ।

यवासनामानि ।

यासोयवासकोनन्ताबालपत्रोधिकंटकः ।
दूरमूलःसमुद्रान्तोदीर्घमूलोमरुद्भवः ॥

अर्थ-यास, यवासक, अनन्ता, बालपत्र, अधिकण्टक, दूरमूल समुद्रान्त, दीर्घमूल, मरुद्भव (यवास, कण्टकी, बहुकण्टक, क्षुद्रेंगुदी, रोदनिका, विषघ्न,

कण्टकालुक, त्रिपर्णिका गन्धारी, वासन्त, वनदर्भ, त्रिवर्णक, तीक्ष्णकण्टक, सूक्ष्मपत्र)





संस्कृतभाषामें	यवास ।
हिन्दीभाषामें	जवासा, दुलाह ।
वंगभाषामें	यवासा ।
मराठीभाषामें	कांटेचुबुक, तांबडा धमासा ।
गुजरातीभाषामें	जवासो ।
कर्णाटकीभाषामें	तोरे इंगलु ।
लैटिन्भाषामें	अल्हेजाइ मरोरम । Alhagimaurorum
फारसीभाषामें	फराक्नुन ।
अरबीभाषामें	अल्गुल हाज ।

अस्य गुणाः ।

यासःस्वादूरसस्तिक्तस्तुवरःशीतलोलघुः ।
कफमेदोमदभ्रान्तिपित्तासृक्कुष्ठकासजित् ॥
तृष्णाविसर्पवातास्रवमिज्वरहरःस्मृतः । (धन्वन्तरिनि.)

अर्थ-जवासा-स्वादिष्ट, कडवा, कषेला, शीतल, हलका, तथा कफ, मेद, मद, भ्रान्ति, रक्तपित्त, कोढ, खाँसी, तृषा, विसर्प, वातरक्त, वमि और ज्वरको करेहै ।

अन्यच्च ।

यासस्तुमधुरस्तिक्तोबल्यश्चाग्निप्रदीपकः । सरःशीतोल-

गुर्व्येवतुवरःकफपित्ताजित् ॥ रक्तरुक्कुष्ठवीसर्पमेदभ्रममदापहः। वातरक्तंतृषांछर्दिंकासंदाहंज्वरंहरेत् ॥ (नि. र.)

अर्थ-जवासा-मधुर, कडवा, बलकारक, अग्निको दीपन करनेवाला, ग्राहक, शीतल, हलका, कषैला तथा कफ, पित्त, रक्तविकार, कोढ, विसर्प, मेद, भ्रम, मद, वातरक्त, पियास, वमन, खाँसी, दाह और ज्वरका नाश करे है।

विवरण। जवासा--धमासेकी समान होता है और यह भी जलाशयके समीपकी भूमिमें अधिक उत्पन्न होता है। इसके काँटे धमासेसे कुछेक बडे होते हैं और पत्ते भी किञ्चित् बडे होते हैं। प्रायः जवासेके गुण धमासेसे मिलते हैं। वर्षाऋतुके आदि अंतमें यह फलता फूलता है, और वर्षाऋतुमें तो आपसे आपही जलजाता है ;

मुण्डीनामानि ।

श्रावणीश्रवणामुण्डीभूतघ्नीचपलङ्कषा ॥

अर्थ--श्रावणी, श्रवणा, मुण्डी, भूतघ्नी, पलङ्कषा, कदम्बपुष्पा, अरुणा, मुण्डीरिका, कुम्भला भिक्षु, श्रवणशीर्षिका, प्रव्रजिता, परिव्राजि, तपोधना)

महामुण्डीनामानि ।

महाश्रावणिकान्यातुसास्मृताभूकदम्बिका ।
कदम्बपुष्पिकाचस्यादव्यथातितपस्विनी ॥

अर्थ-महाश्रावणिका, भूकदम्बिका, कदम्बपुष्पिका, अव्यथा, तपस्विनी महामुण्डी, लोचनी, कदम्बपुष्पी, विकचा, क्रोडचूडा, पलङ्कषा, नदीकदम्बा मुण्डाख्या महामुण्डनिका, माता, स्थविरा, लोतनी, भूकन्द, अलम्बुषा, वृद्धा, ग्रन्थिका, नीलकदम्बिका, बोडा)

संस्कृतभाषामें	
हिन्दीभाषामें	मुण्डी, महामुण्डी, महाश्रावणिका ।
बंगलाभाषामें	मुण्डी, छोटीमुण्डी, गोरखमुण्डी, बडीमुण्डी ।
मराठीभाषामें	मुंडिरी, मुण्डी, थुलकुडी, बडथुलकुडी ।
गुजरातीभाषामें	बरसवोडी बोडथरा ।
कर्णाटकीभाषामें	मुंडी, गोरखमुंडी, बोडियोकलार ।
तैलिङ्गीभाषामें	कीपोवोडतर, हिरीपवोडतर ।
ला. वम्.	वोडसरपुचेट्टु ।
	कोट्टक ।

लैटिन्भाषामें स्फिरेंथस् इंडिकस् (Sphoeranthus indicus
अरबीभाषामें कमादर युस् ।

मुण्डीगुणाः ।

मुण्डीतिक्ताकटुःपाकेवीर्य्योष्णामधुरालघुः ।
मेध्यागंडापचीकृच्छ्रकृमिपित्तार्तिपाण्डुनुत् ।
श्लीपदारुच्यपस्मारप्लीहमेदोगुदार्त्तिनुत् । (ग. नि.)

अर्थ-मुण्डी-कडवी, पचनेमें चरपरी, उष्णवीर्या, मधुर, हलकी, मेधाजनक, तथा गलगंड, अपची, मूत्रकृच्छ्र, कृमि, पित्तकी पीडा, पाण्डुरोग, श्लीपद, अरुचि, अपस्मार, प्लीहा, मेद और गुदाकी वेदनाको दूर करे है।

अन्यच्च ।

श्रावणीतुकषायोष्णापाकेतिक्ताचतीक्ष्णका । मधुराभेदकालघ्वीमेध्याबल्यारसायना ॥ गलगंडंगंडमालामपचींकफवातकम् । प्लीहामेदमथोन्मादंश्लीपदंपाण्डुरोगकम् ॥ अरुचिंयोनिशूलञ्चकासमर्शंचकृच्छ्रकम् । पित्तंचाममपस्मारंकृमिंश्वासञ्चकुष्ठकम् ॥ विषदोषंचातिसारंछर्दिंचैव विनाशयेत् ।

अर्थ-गोरखमुण्डी (मुण्डी) कषैली, गरम, पचनेमें चरपरी, तीक्ष्ण, मधुर, दस्तावर, हलकी, मेधाजनक, बलकारक, रसायन, तथा गलगण्ड, गण्डमाला, अपची, कफ, वात, प्लीहा, मेदोरोग, उन्मादरोग, श्लीपद, पाण्डुरोग, अरुचि, योनिशूल, खाँसी, बवासीर, मूत्रकृच्छ्र पित्त, आमदोष, मृगी, कृमि. श्वास, कोढ, विषविकार, अतिसार और वमनको दूर करनेवाली है।

महाश्रावणिकागुणाः ।

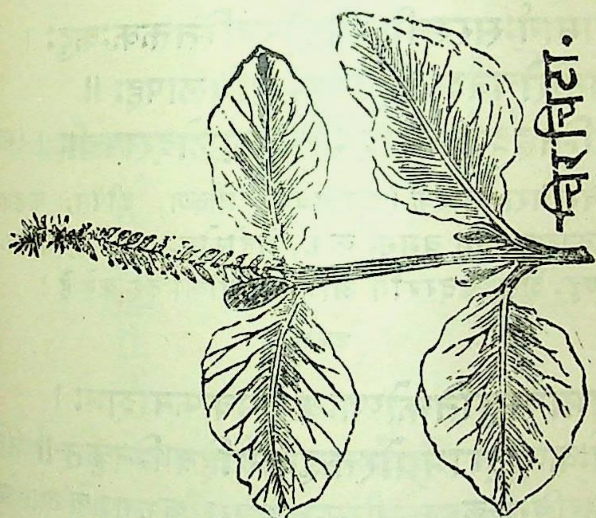
महामुण्डीतुमधुरातिक्ताचोष्णारसायनी ।
रुच्यास्वर्याप्रमेहघ्नीवातनाशकरीमता ॥
अन्येगुणास्तुमुण्डीवज्ज्ञेयावैद्यैश्चसूरिभिः । (रा०नि०)

अर्थ-महामुण्डी-मधुर, कडवी, गरम, रसायन, रुचिकारक, स्वर

शुद्ध करनेवाली, प्रमेहनाशक और वातविनाशक है। शेष गुण मुण्डीकी समान जानने।

विवरण। मुण्डी और महामुण्डी तृणके समान प्रसर जातिकी वनस्पति है, पत्ते-अंगुलीके समान लम्बे २ होते हैं फल-कदम्बके समान अथवा बोंटीके तुल्य किंवा घुण्टी सदृश होते हैं।

अपामार्गनामानि।



अपामार्गःशैखरिकोधामार्गवमयूरकौ ।
प्रत्यक्पर्णीकीशपर्णीकिणिहीखरमञ्जरी ॥

अर्थ-अपामार्ग, शैखरिक, धामार्गव, मयूरक, प्रत्यक्पर्णी, कीशपर्णी, खरमञ्जरी, (अपाङ्गक, किणी, कीशपर्णी, चमत्कार, शैखरेय, अधामार्गव, केशपर्णी, स्थलमञ्जरी, प्रत्यक्पुष्पी, क्षारमध्य, अधोघण्टा, शिखरी, दुर्ग्रह, कण्टशल्य, कान्तरिक, मर्कटी, दुरभिग्रह, वासिर, पराक्पुष्पी कण्टी कर्कटपिप्पली, कटुमञ्जरिका, अघाट, क्षुरक, पाण्डुकण्टक, तालाकंट, कुब्ज, मालाकण्ट, अघाट)

संस्कृतभाषामें	अपामार्ग।
हिन्दीभाषामें	चिरचिटा, लटजीरा, ओंगा।
वंगभाषामें	आपाङ्ग।
मराठीभाषामें	अघाडा।
गुजरातीभाषामें	अघेडो।
कर्णाटकीभाषामें	उत्तरणे, चिचिरा।
तैलिङ्गीभाषामें	दुचीणिके।

अंग्रेजीभाषामें रफूचेफट्री । Roughchaffftree
लैटिन्भाषामें एचिरेंथिस् एस्पिरा । Achyranthis aspera
ओकिरेंथस् आल्टर निफोलिया । A. Alternifolia
फ़ारसीभाषामें खारवास्‌गोला ।
अरबीभाषामें अत्कम ।

अपामार्ग गुणाः ।

अपामार्गःसरस्तीक्ष्णोदीपनस्तिक्तकःकटुः ।
पाचनोरोचनश्छर्दिकफमेदोनिलापहः ॥
निहन्तिहृद्रुजाध्मार्शःकण्डूशूलोदरापचीः । (भा. प्र.)

अर्थ-चिरचिरा-सारक (दस्तावर) तीक्ष्ण, दीपन, कडवा, चरपरा पाचक, रुचिकारक, तथा वमन, कफ, मेदोरोग, वात, हृदयरोग, आध्मान बवासीर, कण्डू, शूल, उदररोग और अपचीको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

अपामार्गस्तुतिक्तोष्णःकटुश्चकफनाशनः ।
अर्शःकण्डूदरामघ्नोरक्तहृद्ग्राहिवान्तिकृत् ॥ (रा. नि.)

अर्थ-चिरचिरा-कडवा, गरम, चरपरा, कफनाशक तथा कण्डू, उदररोग, आम और रुधिरविकारको दूर करे है, तथा मलरोधक और वमनकारक है ।

अपिच ।

अपामार्गोऽग्निकृत्तीक्ष्णःक्लेदनःस्रंसनःसरः (रा. व.)

अर्थ-चिरचिरा-अग्निके समान तीक्ष्ण, क्लेदक, स्रंसन और सारक है

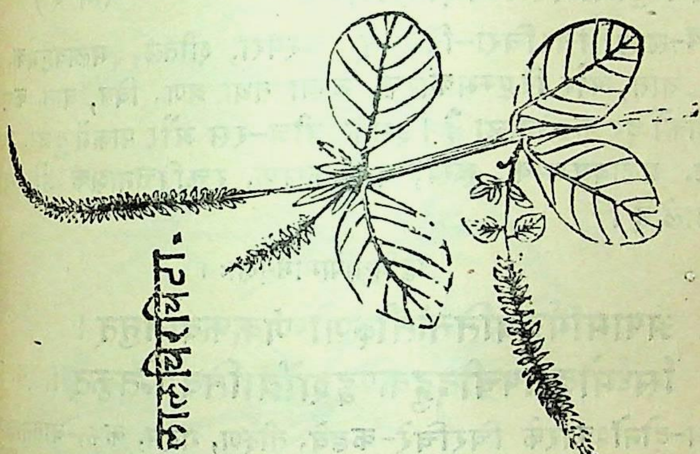
अन्यच्च ।

अपामार्गोऽग्निवत्तीक्ष्णोनस्याच्छीर्षकृमीञ्जयेत् ।
वामकोरक्तसंग्राहीरक्तातीसारनाशनः ॥
नस्येवान्तौप्रशस्तःस्याद्दद्रुकण्डूकफापहः । (शो. नि.)

अर्थ-चिरचिरा-अग्निकारक, तीक्ष्ण और इसका नास-शिरके कीडोंको दूर करे है । वमनकारक, रक्तविकारनाशक, और रक्तातिसारनिवारक है चिरचिरा-नास और वमनकर्ममें प्रशंसायोग्य है, तथा दाद खुजली और कफनाशक है ।

विवरण। चिरचिटेका क्षुप होताहै, पत्ते-गोल होते हैं, पत्तोंके बीचमेंसे एक बाल निकलती है, उस बालमें सूक्ष्म और मृदु काँटेयुक्त बीज होते हैं, बीजोंको पीसकर पीनेसे बवासीर दूर होती है। चिरचिटेके क्षारके गुण क्षारवर्गमें देखो।

रक्तापामार्गनामानि।



रक्तोन्योवशिरोवृत्तफलोधामार्गवोपि च ।
प्रत्यक्पर्णीकेशपर्णीकथिताकपिपिप्पली ॥

अर्थ-रक्तापामार्ग, वशिर, वृत्तफल, धामार्गव, प्रत्यक्पर्णी, केशपर्णी, कपिपिप्पली, (क्षुद्रापामार्ग, आघट्टक, दुग्धनिका, रक्तविट, कल्पपत्रिका, खर, अधामार्गव, प्रत्यक्छ्रेणी, खरच्छद, कूट, मर्कटपिप्पली, कुब्ज और दुरभिग्रह)

संस्कृतभाषामें	रक्तापामार्ग ।
हिन्दीभाषामें	लालचिरचिरा ।
बंगभाषामें	रांगाआपांग ।
मराठीभाषामें	लालअघाडा ।
गुजरातीभाषामें	झिपटो ।
कच्छीभाषामें	केंपिगुत्तरणे ।
तैलिङ्गीभाषामें	उतरायणी-केंपिगुत्तरणे ।
लेटिनभाषामें	एकिरेंथिसलेपेरिया ।

अस्य गुणाः।

रक्तापामार्गकःकिञ्चित्कटुकःशीतलःस्मृतः । मलावष्टम्भ-

वमिकृद्वातविष्टम्भकारकः ॥ रूक्षोव्रणंविषंवातंकफंकण्डूंचनाशयेत् । बीजमस्यरसेपाकेदुर्जरंस्वादुशीतलम् ॥ मलावष्टम्भकंरूक्षंवान्तिकृद्रक्तपित्तजित् । कासनाशकरं प्रोक्तमुनिभिस्तत्त्वदर्शिभिः ॥ (नि. र.)

अथ-लाल चिरचिरा-किंचित् चरपरा, शीतल, मलावष्टंभक, वमन जनक, वात, और विष्टम्भकारक, रूखा तथा व्रण, विष, वात, कफ और खुजलीको दूर करनेवाला है । इसके बीज-रस और पाकमें दुर्जर, स्वादिष्ट शीतल, मलावष्टम्भक, रूखे, वमनकारक, रक्तपित्तनाशक और खांसी हरनेवाले हैं ।

द्विविधापामार्गगुणाः ।

अपामार्गद्वयंतिक्तंतीक्ष्णोष्णंकफवातनुत् ।
सिध्मोदरापचीदद्रुकण्ड्वर्शोघ्नातिवान्तिकृत् ॥ (म. नि.)

अर्थ-दोनोंप्रकारके चिरचिरे-कडवे, तीक्ष्ण, गरम, कफ, वातनाशक तथा सिध्म, उदररोग, अपची, दाद, खुजली और बवासीरको दूर करे हैं और वमनजनक हैं ।

अपिच ।

अपामार्गद्वयंतिक्तंकृमिशीर्षविशोधनम् ।
वातंकरक्तसंग्राहिरक्तातीसारनाशनम् ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-दोनोंप्रकारके चिरचिरे-कडवे, कृमि और शीर्षशोधक, वमनकारक रक्तरोध और रक्तातिसारनाशक हैं ।

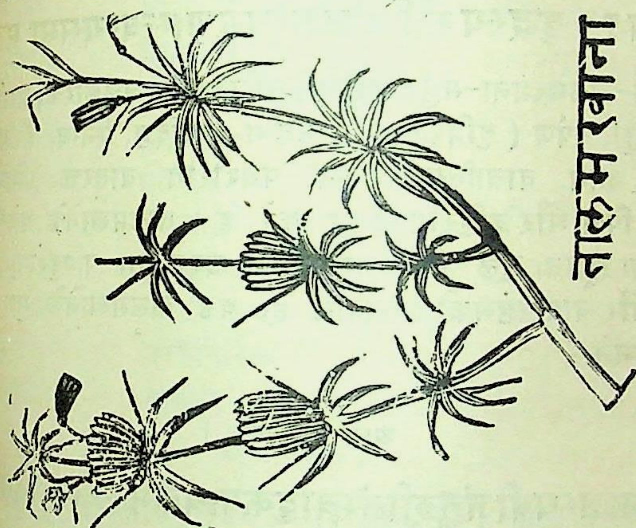
विवरण । लाल चिरचिटाभी उसीप्रकार होता है, इसके पत्ते-कुछ गोल और लाल होतेहैं, फूल-पीले और फल-लाल २ बालपर लगे होते परन्तु उनके ऊपर कांटेभी होतेहैं, इसप्रकार लाल और सफेद दो जाति चिरचिटा होताहै ।

कोकिलाक्षनामानि ।

कोकिलाक्षस्तुकाकेक्षुरिक्षुरःक्षुरकःक्षुरः ।
भिक्षुकाण्डेक्षुरप्युक्तइक्षुगन्धेक्षुवालिका ॥

अर्थ-कोकिलाक्ष, काकेक्षु, इक्षुर, क्षुरक, क्षुर, भिक्षु, काण्डेक्षु, इक्षुगन्धा, इक्षुवालिका, (कोकिलाक्षक, कोकिलनयन, शृगाली, शृंखलिका,

(आलघण्टी, वज्रास्थि, शृंखला, वज्रकण्टक, वज्र, शृंखलिका, पिकेक्षणा, पिच्छिला,) (वीरतरु, त्रिक्षुर, क्षुरक, शुक्रपुष्प और कुलाहक यह नाम सफेद कोकिलाक्षके हैं) (छत्रक और अतिछत्र यह दो नाम लाल कोकिलाक्षके हैं)



संस्कृतभाषामें	कोकिलाक्ष।
हिन्दीभाषामें	तालमखाना-कैलया।
बंगभाषामें	कुलिखाडा, कुलेकाँटा, कुलक, शूलमर्दनइत्यादि
मराठीभाषामें	विखरा।
कोकणीभाषामें	कोलिस्ता।
गुजरातीभाषामें	एखरो।
कर्णाटकीभाषामें	कुलुगोलिके।
तैलंगीभाषामें	गोबी। गोलिमिडिचेट्टु।
औत्कलीभाषामें	कुइलिरखा, माखुरेण।
अंग्रेजीभाषामें	लांगलिव्ड बार्लेरिया। Longleaved Barlaria
लैटिनभाषामें	एष्टकैंथा लौंजिफोलिया। Astercantha Lorgifolia

अस्य गुणाः।

कोकिलाक्षोमधुःशीतोरुच्योबल्योगुरुःस्मृतः। वृष्योम्लतर्पणस्तिक्तःस्वादुःस्निग्धश्चचिक्कणः ॥ आमवातामवातनाशनोमतः। वातास्रमेहशोथामरक्तरुङ्ना-शनोमतः। पित्तश्च दृष्टिरोगश्च नाशयेदिति कीर्त्तितः।

अस्य पत्रगुणाः ।

पर्णञ्च स्वादु तिक्तं स्याच्छोथशूलविषापहम् । आनाहवात-मुदरं पाण्डुरोगञ्च नाशयेत् ॥ बन्धञ्च मलमूत्राणां वातमेवं च नाशयेत् । वृद्धस्य कोकिलाक्षस्य गुणास्तत्वस्य समा मताः ॥

अर्थ-तालमखाना-मधुर, शीतल, रुचिकारक, बलकारक, भारी, वीर्य-वर्द्धक, खट्टा, तर्पण (तृप्तिकारक), कडवा, स्वादिष्ठ, स्निग्ध, चिकना, आमवात, आम, वातातिसार, तृषा, पथरीरोग, वातरक्त, प्रमेह, आमरक्त, पित्त और दृष्टिरोगको दूर करे है । तालमखानेके पत्ते-स्वादु, कडवे, तथा सूजन, शूल, विष, आनाहवात, उदररोग, पाण्डुरोग, मल-मूत्ररोध और वातावष्टंभको हरनेवाले हैं, बडे तालमखानेके गुण इसके समान जानने ।

अस्य बीजगुणाः ।

कोकिलाक्षस्य बीजं तु शीतं स्वादु कषायकम् । तिक्तं वृष्यं गुरु बल्यं ग्राहकं गर्भस्थापनम् ॥ कफवातकरञ्चैव मलस्त-म्भकरं तथा । रक्तदोषञ्च दाहञ्च पित्तञ्चैव विनाशयेत् ॥

अर्थ- तालमखानेके बीज--शीतल, स्वादिष्ठ, कषेला, कडवा, वीर्यवर्द्धक, भारी, बलकारी, गर्भस्थापक, कफवातकारक, मलस्तम्भक तथा रुधिरविकार, दाह और पित्तको हरनेवाले हैं ।

विवरण । कोकिलाक्ष अर्थात् कैलयाके क्षुप प्रायः जलके निकट चौमासेकी ताल, और तलयोंमें उत्पन्न होजाते हैं, पत्ते--लम्बे होते हैं, कांटे होते हैं, गूमेकी समान गांठें होती हैं, उन गाठोंमेंसे बीज निकलते हैं उसको तालमखाना कहते हैं ।

घृतकुमारीनामानि ।

सहा घृतकुमारी च कुमारी दीर्घपत्रिका । अफला सुरसा कन्या मृदुर्घृतकुमारिका ॥

अर्थ-सहा घृतकुमारी, कुमारी, दीर्घपत्रिका, अफला, सुरसा, कन्या, मृदु, घृतकुमारिका, (तराणि, सुवहा, बहुपत्री, कन्या, स्थलेरुहा, बहुपत्री, तरुणी, अजरा, कण्टकप्रावृता, विपुलस्रवा, ब्रह्मघ्नी, वीरा, भृंगेष्टा,

...ला, अम्बुधिस्रवा, सुकण्टका, स्थूलदला, गृहकन्या, अदला, मण्डला, ...ला, अतिपिच्छिला, रसायनी, कण्टकिनी)

संस्कृतभाषामें	घृतकुमारी ।
हिन्दीभाषामें	घिगुवार, ग्वारपाठा, कुवारपाठा ।
बङ्गलाभाषामें	घृतकुमारी ।
मराठीभाषामें	कोरफड, कोरफांटा ।
गुजरातीभाषामें	कुवार ।
कर्णाटकीभाषामें	लोयिसर ।
तैलिङ्गीभाषामें	पिन्नगोरिण्टकलवन्द, विरजाजितोगे ।
अंग्रेजीभाषामें	बार्बेडोझ्आलोझ् । Barbadoesaloes
लैटिन्भाषामें	आलाइब्रार्बडेन्स । Aloebarbadense
फारसीभाषामें	दरखतेसिन्न ।
अरबीभाषामें	मुसबर ।

अस्या गुणाः ।

कुमारीभेदिनीशीतातिक्तानेत्र्यारसायनी । मधुराबृंहणीब-ल्यावृष्यावातविषप्रणुत् ॥ गुल्मप्लीहयकृच्छर्दिकफज्वरह-रीभवेत्।ग्रन्थ्यग्निदग्धविस्फोटरक्तपित्तत्वगामयान् ॥ भा. प्र.

अर्थ-घीकुवार-भेदक (दस्तावर) शीतल, कडवा, नेत्रोंको हितकारी, रसायन, मधुर, बृंहण, बलकारक, वीर्यवर्द्धक, तथा वात, विष, गुल्म, प्लीहा, यकृत, वमन, कफज्वर, ग्रन्थि, अग्निदग्ध, विस्फोट, रक्तपित्त और त्वचाके रोगोंको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

गृहकन्याहिमातिक्तामदगन्धिःकफापहा ।
पित्तकासविषश्वासकुष्ठघ्नीचरसायनी ॥ (रा. नि.)

अर्थ-घीकुवार-शीतल, कडवा, मदगन्धियुक्त, कफनाशक, तथा पित्त, खांसी, विष, श्वास और कुष्ठको नष्ट करे है और रसायन है ।

अस्य दण्डादिगुणाः ।

तन्मध्यदण्डोमधुरःकुमारीसदृशोगुणैः ।
विशेषात्कृमिपित्तघ्नःपुष्पमस्यगुरुस्मृतम् ॥
वातंपित्तंकृमींश्चैवनाशयेदितिकीर्तितम् ।

अर्थ-इसके बीचका डंडा-घीकुवारकी समान गुणवाला है विशेषकर मधुर तथा कृमि और पित्तनाशक है । इसके फूल भारी तथा वात, पित्त और कृमिको दूर करनेवाले हैं ।

विवरण । घीकुवारका क्षुप-खारी पृथ्वी, रेतली भूमि तथा नदीके तट निकट अधिकतासे उत्पन्न होते हैं; पत्ते-लम्बे और मोटे होते हैं । पत्तेके दोनों ओर काँटे होते हैं; इनके भीतर घीके समान गूदा निकलता है; पत्तेके छोर अनीदार होते हैं, घीकुवारके बीचसे डंडा निकलता है, उसमें फूल आता है । घीकुवारके रससे एलुआ बनाया जाता है ।

एलीयकनामानि ।

एलीयकःकृष्णबोलःकुमारीसारतोद्भवः ॥

अर्थ-एलीयक, कृष्णबोल, कुमारी, सारतोद्भव ।

संस्कृतभाषामें	एलीयक ।
हिन्दीभाषामें	एलवा ।
मराठीभाषामें	कालाबोळ, एल्याबोल ।
गुजरातीभाषामें	एळियो, शिकोतरी एलियो ।
तैलिंगीभाषामें	भोलं ।
अंग्रेजीभाषामें	सौकोट्रन आलोझ । Socotrine aloes
लैटिन्भाषामें	आलोसोकोट्रीना । Aloes ocotrina
फ़ारसीभाषामें	मुसब्बीर ।
यु०	फेकरा ।
अरबीभाषामें	सीवरसुकुतरे ।

अस्य गुणाः ।

कृष्णबोलःकटुःशीतोभेदकोरसशोधनः ।
शूलाध्मानकफान्वातंकृमिगुल्मौचनाशयेत् ॥ (र. नि.)

अर्थ- एलुवा-चरपरा, शीतल, दस्तावर, पारेको शोधनेवाला तथा शूल, अफरा, कफ, वात, कृमि और गुल्मको दूर करनेवाला है ।

क्षुद्रकेतकीनामानि ।

काककेतकिकाक्षुद्रकेतकीतृणकेतकी ।
रज्जुदात्रीमध्यदण्डापृथक्पुष्पाचसास्मृता ॥

अर्थ--काककेतकी, क्षुद्रकेतकी, तृणकेतकी, रज्जुदात्री, मध्यदण्डा, ...पुष्पा।

हिन्दीभाषामें रामबाँस (न)
गुजरातीभाषामें केतकी।
लेटिनभाषामें एलोअमेरिकाना। Aloe Amerieana

विवरण--रामबाँसके--वृक्ष प्रायः बाग और खेतोंकी बाडोंपर अधिकतासे होते हैं; यह घीकुवारके समान होते हैं, परन्तु घीकुआरसे कुछ कालापन लिये और बडे तथा पतले होते हैं, इसपर लाल और सफेद रंगके गुच्छेदार फूल आते हैं।

अस्या गुणाः।

श्वेतातुकेतकीकट्वीस्वाद्वीतिक्तालघुःस्मृता। विषकफंनाशयतिपुष्पमस्यालघुस्मृतम्॥ कटुतिक्तंकान्तिकरमुष्णं वातकफापहम्। केशदुर्गन्धितापघ्नंकेसरः सिध्मकण्डुहा॥ किञ्चिदुष्णंफलंस्वादुवातमेहकफापहम्॥ (नि. र.)

अर्थ--रामबाँस--चरपरा, स्वादु, कडवा, हलका, तथा विष और कफनाशक है। इसका फूल--हलका, चरपरा, कडवा, कान्तिजनक, गरम, वातकनाशक, केशोंकी दुर्गन्धताको दूर करनेवाला और तापनाशक है। इसके फूलका जीरा--सिध्म और कण्डूनाशक है। इसका फल किञ्चित् उष्ण, स्वादिष्ठ, तथा वात, प्रमेह और कफनाशक हैं।

पाण्डुफलीनामानि।

पाटलीस्यात्पाण्डुफलीधूसरावृत्तबीजका।
पाण्डुफलाभूरिफलातथासप्ताह्वयाभिधा॥

अर्थ--पाटली, पाण्डुबली, धूसरा, वृत्तबीजका, पाण्डुफला, भूरिफला।

हिन्दीभाषामें पाटली।
मराठीभाषामें पांढरफली।
गुजरातीभाषामें शौणवी।
कर्णाटकीभाषामें पाटरफल मणमंडं।
लेटिनभाषामें फ्लुजिया ल्युकोपाईरस् Flujia leucopyrus

अस्या गुणाः।

पाण्डुफलीतुमधुराबल्यावृष्याचशीतला।
मूत्राघातंपित्तरोगंमूत्रकच्छ्रास्त्ररुग्जयेत्॥ (नि. र.)

अर्थ--पाण्डुफला--मधुर, बलकारक, वीर्य्यवर्द्धक, शीतल, तथा मूत्राघात पित्तरोग, मूत्रकृच्छ्र और रुधिरके विकारोंको दूर करेहै ।

अन्यच्च ।

शिशिरापाण्डुरफलीगौल्याकृच्छ्रार्तिदोषहा ।
बल्यापित्तहरावृष्यामूत्राघातनिवारणी ॥ (रा. नि.)

अर्थ- पाण्डुफली--शीतल, गौल्य, मूत्रकृच्छ्ररोगनाशक, बलवर्द्धक, पित्तनाशक, वीर्य्यवर्द्धक, और मूत्राघातनिवारक है ।

पनसीनामानि ।

पनस्यांरोपणीचोक्तातथाचकपिकच्छुकः ॥

अर्थ--पनसी, रोपणी, कपिकच्छुक ।

अस्या गुणाः ।

पनसीकाभवं मूलं व्रणरोपणभेदनम् ॥

अर्थ--पनसीकी जड--व्रणको भरनेवाली और दस्तावर है ।

गङ्गाटीनामानि ।

गंगाटचा गंगटी चैव पित्तव्रणप्रसादनी ॥

अर्थ--गङ्गाटी, गंगटी, पित्तव्रणप्रसादनी ।

अस्या गुणाः ।

गंगेटीबहुविण्मूत्राकषायाशीतलागुरुः (शो नि.)

अर्थ--गंगेटी मलमूत्रवर्द्धक, कषेली, शीतल और भारी है । तथा और पित्तनाशक है ।

श्वेतपुनर्नवानामानि ।



पुनर्नवाश्वेतमूलाकठिल्लश्चचिराटिका ।

अथ-पुनर्नवा, श्वेतमूला, कठिल्ल, चिराटिका, (वृश्चीरा, श्वेतपुनर्नवा, सित-वर्षाभू, वर्षाङ्गी, वर्षाही, त्रिशाख, शशिवाटिका, पृथ्वी, धनपत्र, कठिल्लक, दीर्घपत्री, दीर्घपत्रिका ।

रक्तपुनर्नवानामानि ।



रक्तपुनर्नवाप्युक्ताशोथघ्नीरक्तपत्रिका ।
रक्तकाण्डावर्षकेतुर्वर्षाभूःप्रावृषायणी ॥

अर्थ-रक्तपुनर्नवा, शोथघ्नी, रक्तपत्रिका, रक्तकाण्डा, वर्षकेतु, वर्षाभू, प्रावृषायणी (कठिल्लक, रक्तपुष्पा, शिलाटिका, वर्षकेतु, क्रूरा, मंडलपत्रिका, लोहिता, वैशाखी रक्तवर्षाभू, शोफघ्नी, रक्तपुष्पिका, विकस्वरा, विषघ्नी, प्रावृषेण्या, सारिणी, वर्षाभव, शोणपत्र, भौम, पुनर्भव, नव, नव्य)

नीलपुनर्नवानामानि ।



नीलापुनर्नवानीलाश्यामानीलपुनर्नवा ।
कृष्णाख्यानीलवर्षाभूर्नीलिनीस्वाभिधान्विता ॥

अथ—नीलपुनर्नवा, नीला, श्यामा, नीलपुनर्नवा, कृष्णाख्या, नीलपत्रा, नीलिनी।

संस्कृतभाषामें	पुनर्नवा, श्वेतपुनर्नवा, रक्तपुनर्नवा, नीलपुनर्नवा।
हिन्दीभाषामें	विषखपरा, साँठ, गदहपूर्ना, नीलीसांठ गदहपुरैना इत्यादि।
वंगभाषामें	श्वेतगांदावन्न, श्वेतपुण्या, गादापुण्या, नीलगाँदावन्न राङ्गागाँदावन्ते।
मराठीभाषामें	घेंटुळी पांढरी, खरपन्या, रक्तवसु।
गुजरातीभाषामें	साटोडी ४ छे खेतरी लांबां पाननी राता फूलने नि धोलाकंद डोला पानने चोमासानी।
कर्णाटकीभाषामें	बिलीयदुबेल्लड्ड किलु कॅपिनवेल्लड किलु करीय-वेल्लडकिलु।
तैलिंगीभाषामें	गाल्जेरु, अतिकममेदि।
तामिलीभाषामें	मुकरत्तेकिर।
वम्०	पुनर्नरा।
अंग्रेजीभाषामें	स्प्रेडिंग् होग्वीड् । Spreadiug Hogneed
लैटिनभाषामें	बौरहावियाडिफ्युझा। Boerhavia Diffusa ट्रिरौंथिमा हबियाप्रोंकंवेन्स। B. procumbens ट्रिरौंथिमा ओब्कार्डाटा। Trironthema-Obcardata
अरवीभाषामें	हंदकूकी

श्वेतपुनर्नवागुणाः।

श्वेतापुनर्नवासोष्णातिक्ताकफविषापहा।
कासहृद्रोगशूलास्रपाण्डुशोफानिलार्तिनुत्॥ (रा. नि.)

अर्थ—श्वेतपुनर्नवा (विषखपरा)—गरम, कडवा तथा कफ, विष, खांसी, हृदयरोग, शूल, रुधिरविकार, पाण्डुरोग, सूजन और वातकी वेदनाको दूर करे है।

अन्यच्च।

कटुःकषायारुच्यर्शःपाण्डुहृद्दीपनीपरा।
शोफानिलगरश्लेष्महृद्रीब्रध्नोदरप्रणुत् (भा. प्र.)

अर्थ—श्वेतपुनर्नवा—चरपरा, कषेला, रुचिकारी, अग्निप्रदीपक, तथा पाण्डुरोग, ववासीर, सूजन, वात, विष, कफ, ब्रध्न और उदररोगको हरनेवाली है।

अन्यच्च ।

पुनर्नवातुवीर्य्योष्णाभेदिनीचरसायनी ।
कफानिलामदुर्नामब्रध्नशोथोदरापहा ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-श्वेतपुनर्नवा--उष्णवीर्य्य, दस्तावर, रसायन तथा कफ, वात, बवासीर, ब्रध्न, सूजन और उदररोगको दूरकरे है ।

अन्यच्च ।

वर्षाभूर्मधुरातिक्ताकषायाकटुकासरा ।
क्षारोष्णादीपनीरूक्षाशोफानिलकफापहा ॥
हृद्यारुच्याजयेदर्शोव्रणपाण्डुगरोदरम् । (ग. नि.)

अर्थ-श्वेतपुनर्नवा-मधुर, कडवा, कषेला, चरपरा, सारक, क्षारयुक्त, गरम, दीपन, रूखा, शोफघ्न, वातविनाशक, कफनाशक, हृदयको हितकारी रुचिकारी तथा बवासीर, घाव, पाण्डु, विष और उदररोगको दूर करे है ।

अपिच ।

श्वेतापुनर्नवातिक्ताचोष्णाकट्वीचतूवरा।रुच्याग्निदीपनीरूक्षामधुरापटुसारका ॥ हृद्याशोफंकफंवातंकासमर्शोव्रणंजयेत् । पाण्डून्विषोदरंशूलंहृद्रोगोरःक्षतापहा ॥ घृतेनमूलकंचास्याह्यंजितंहन्तिपुष्पकम् । मधुनासहमूलंह्यंजितं स्त्रावनाशकम् ॥ अंजितंमार्कवरसैर्नेत्रकण्डूनिवारणम् । केवलेनजलेनैवह्यंजितंतिमिरापहम् । जलेनगोशकृताचपिप्पल्याचांजितंयदा ॥ रात्र्यांध्यंनश्यतेतेनचोष्णःपर्णरसः स्मृतः ॥ (नि. र.)

अर्थ--श्वेतपुनर्नवा--कडवा, गरम, चरपरा, कषेला, रुचिकारक, अग्निदीपक, रूखा, मधुर, खारी, दस्तावर, हृदयको हितकारी, तथा सूजन, कफ, वात, खाँसी, बवासीर, घाव, पाण्डुरोग, विष, उदर, शूल, हृदयरोग और उरःक्षत रोगको दूर करे है। इसकी जडको पीसकर घीमें मिलाकर अंजन करे, वह अंजन आंखोंके फूलेको दूर करता है) इसकी जडमें मधु मिलाकर अंजन करे वह अंजन रक्तस्रावनाशक है। इसकी जडको भांगरेके रसके साथ नेत्रोंमें लगानेसे नेत्रोंकी खुजली दूर होती है। इसकी जडको

केवल जलके साथ आंखोंमें लगानेसे तिमिररोग दूर होता है। गायके गोबरके रसमें इसकी जड और पीपल उबालकर अंजन करलेवे वह अंजन रतोंधेको दूर करनेवाला है, इसके पत्तोंका रस गरम है।

रक्तपुनर्नवागुणाः ।

पुनर्नवारुणातिक्ताकटुपाकाहिमालघुः ।
वातलाग्राहिणीश्लेष्मपित्तरक्तविनाशिनी । (भा. प्र.)

अर्थ- रक्तपुनर्नवा (गदहपूर्ना) कडवा, पचनेमें चरपरा, शीतल, हलका, वातकारक, मलरोधक, तथा कफ, पित्त और रक्तविकारोंको दूरकरे है।

अन्यच्च ।

रक्तपुनर्नवातिक्तासारिणीशोफनाशिनी ।
रक्तप्रदरदोषघ्नीपाण्डुपित्तप्रमार्दिनी ॥ (रा. नि.)

अर्थ- रक्तपुनर्नवा (गदहपूर्ना साँठ) कडवा, सारक, शोथनाशक तथा रक्त, प्रदररोग, पाण्डुरोग और पित्तको दूर करनेवाला है।

नीलपुनर्नवागुणाः ।

नीलापुनर्नवातिक्ताकटूष्णाचरसायनी ।
हृद्रोगपाण्डुश्वयथुश्वासवातकफापहा ॥ (रा. नि.)

अर्थ- नीलपुनर्नवा-कडवा, चरपरा, गरम, रसायन तथा हृदयरोग, पाण्डुरोग, सूजन, श्वास, वात और कफनाशक है।

अस्य पत्रशाकगुणाः ।

पौनर्नवीपर्णशाकाचातिरूक्षाकफापहा ।
वाताग्निमांद्यगुल्मघ्नीप्लीहाशूलविनाशिका । (नि. र.)

अर्थ -पुनर्नवेके पत्तोंका शाक अत्यन्त रूक्ष, तथा वात, मंदाग्नि, गुल्म, प्लीहा और शूलको दूर करे है।

विवरण । साँठ-तीन चार जातकी होती है, फूल लाल, सपेद जुदे रङ्गके होते हैं। इनमें सपेद रङ्गके फूलका विषखपरा है और लाल रङ्गका साँठ अर्थात् गदपुरेना जानना। १—विषखपरेका क्षुप पृथ्वीपर फैलाहुआ होता है। पत्ते गोल और लाल किनारेदार होते हैं, फूल सपेद होता है। २—सांठ ककरीली पृथ्वीमें अधिकतासे होती है, पत्ते—चोलाईके समान होते है, फूल लाल होता है।

प्रसारणीनामानि ।



प्रसारणीराजबलागन्धालीचकटम्भरा ।
गन्धाढ्यागन्धभद्राचसारणीसरणीतथा ॥

अर्थ-प्रसारणी, राजबला, गन्धाली, कटम्भरा, गन्धाढया, गन्धभद्रा, सारणी, सरणी (भद्रपर्णी, शरणा, शरणी, गन्धोली, सारणी, भद्रबला, भद्रपर्णी, प्रतानिनी, सरणी, सुप्रसरा, सारिणी, प्रसरा, सरा, चारुपर्णी, प्रतानिका, प्रबला, राजपर्णी, चन्द्रपर्णी, चन्द्रवल्ली, प्रभद्रा, प्रसारिणी, बल्या)

संस्कृतभाषामें	प्रसारणी ।
हिन्दीभाषामें	गन्धप्रसारणी, पसरन, प्रसारनी ।
बङ्गभाषामें	गन्धभादला, गाँधाली, गन्धभादुलिया ।
मराठीभाषामें	प्रसारणी, चांदवेल ।
गुजरातीभाषामें	प्रसारणवेल्य (नारी)
कर्णाटकीभाषामें	हेसरणे ।
तैलिंगीभाषामें	गोन्तेमगोरुचेट्टु, सविरेलचेट्टु ।
लैटिनभाषामें	पिडेरिया फिटीडा Paederia foetlda
	मेकारेंगा टोमेंटोसा । Macaranga-tomentosa

अस्या गुणाः ।

प्रसारिणीगुरुर्वृष्याबलसन्धानकृत्सरा ।
वीर्य्योष्णावातहृत्तिक्तावातरक्तकफापहा ॥ (भा. प्र.)

अर्थ-गन्धप्रसारणी-भारी, वीर्य्यवर्द्धक, बलकारी, सन्धानकारक, उष्ण वीर्य्य, वातनाशक, कडवी तथा वातरक्त और कफको हरनेवाली है ।

अन्यच्च ।

प्रसारिणीगुरूष्णाचतिक्तावातविनाशिनी ।
अर्शःश्वयथुहन्त्रीचगलविष्टम्भहारिणी ॥ (रा. नि.)

अर्थ--पसरन -भारी, गरम, कडवी तथा वात- सूजन, बवासीर, और मलकी विष्टम्भताको हरनेवाली है ।

अन्यच्च

वातपित्तहरासोष्णाबल्यावृष्याप्रसारिणी ॥ (राजवल्लभ)

अर्थ -गन्धप्रसारिणी वातपित्तनाशक, गरम, बलकारक और वीर्यवर्द्धक है ।

अपिच ।

सारणीवातरक्तघ्नीसोष्णावृष्याबलप्रदा ।
कटुवीचलघुचक्षुष्यास्वर्य्याज्वरनिशान्ध्यहृत् ॥ (शो. नि.)

अर्थ-गन्धप्रसारणी -वातरक्तनाशक, गरम, वीर्यवर्द्धक, बलवर्द्धक, चरपरी, हलकी, नेत्रोंको हितकारी, स्वरको उत्तम करनवाली तथा ज्वर और रतौंधेको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

प्रसारिणीगुरुश्चोष्णातिक्ताबल्यासरामता । भग्नास्थिसन्धानकरीकान्तिकृद्धातुवर्द्धका । वातार्शःशोफकफहामलस्तम्भकरीमता । वातरक्तंत्रिदोषञ्चनाशयेदितिकीर्तिता ॥ (नि. र.)

अर्थ--गन्धप्रसारणी--भारी, गरम, कडवी, बलकारक, सारक, टूटे हुए हाडको जोडनेवाली, कान्तिजनक, धातुवर्द्धक, तथा वादीकी बवासीर, सूजन और कफको दूर करनेवाली है, मलस्तम्भकारक और वातरक्त तथा त्रिदोषनाशक है ।

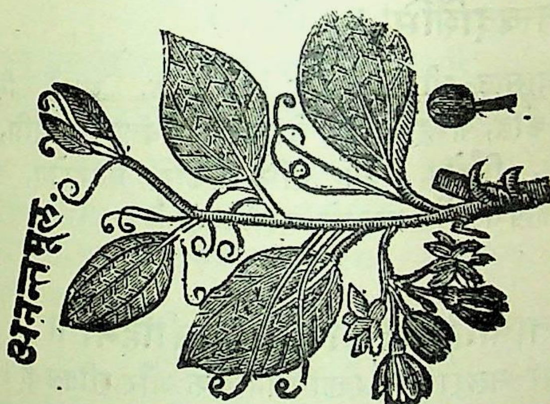
प्रसारणीको संस्कृतमें राजवला कहते हैं, परन्तु अभीतक यह किसीने निश्चय नहीं किया कि, प्रसारणी क्या है, इसको कोई कोई ग्रन्थकार मराठीमें चांदवेल और गुजरातीमें नारी कहते हैं, लैटिन्में चांदवेलके और प्रसारणीके नाम, लक्षण और गुण अलग २ हैं, सो वह नाम, लक्षण और गुण, इनसे कुछ भी मिलते नहीं, क्योंकि चांदवेल मलरोधक है, और प्रसारणी मलको निकालनेवाली अर्थात् दस्तावर है इसमें बडा अन्तर है ।

सारिवानामानि ।

सारिवाशारिवानन्तागोपीचोत्पलशारिवा ।
भद्रवल्लीनागजिह्वाकरालाभद्रवल्लिका ॥

अर्थ-सारिवा, शारिवा, अनन्ता, गोपी, उत्पलशारिवा भद्रवल्ली, नागजिह्वा, कराला, भद्रवल्लिका, (गोपवल्ली, सुगन्धा, भद्रा, श्यामा, शारदा, गोपकन्या, गोपा, प्रतानिका, लता, आस्फोता, काष्ठशारिवा, गोपवधू, उत्पलशारिवा, कृशोदरी)

कृष्णशारिवानामानि ।



श्यामलताचपालिन्दीगोपिनीकृष्णशारिवा ॥

अर्थ-श्यामलता, पालिन्दी, गोपिनी, कृष्णशारिवा, (चिह्वधारिणी, दृढबन्धिनी गोपी, गोपवल्ली, गोपा, सारिवा, उत्पलसारिवा, अनन्ता, शारिवा, श्यामा, कालपेषी, महाश्यामा, सुभद्रा, दीर्घमूला, मसूरविदला, कलघण्टिका, गोपवधू, कृष्णमूली, कृष्णा, चन्दनसारिवा, भद्रा, चन्दनगोपा, चन्दना, कृष्णवल्ली)

संस्कृतभाषामें	सारिवा, कृष्णसारिवा ।
हिन्दीभाषामें	गोरीसर, कालीसर, करियासाउ, गौरियासाउ, सालसा, सरिवन इत्यादि ।
वंगभाषामें	अनन्तमूल, श्यामालता, कलघण्टि इत्यादि ।
मराठीभाषामें	श्वेतउपलसरी, कृष्णउपलसरी, सुगन्धउपलसरी ।
गुजरातीभाषामें	कपरी, कालीवेल्य ।
कर्णाटकीभाषामें	सारिवा ।
तैलङ्गीभाषामें	नीलतिग ।

औत्कलिभाषामें	गुपापानमूल ।
अंग्रेजीभाषामें	इंडियन् सारसापरिला । Indian sarsaparilla.
लैटिन् भाषामें	हेमिडेस्नेस् इंडिकस् । Hsmideisnus indicus

श्वेतसारिवागुणाः ।

श्वेतातुसारिवाशीतामधुराशुक्रलागुरुः । स्निग्धातिक्तासुगन्धिश्चकुष्ठकण्डूज्वरापहा ॥ देहदौर्गन्ध्यामिमांद्यश्वासकासारुचीहरा । आमत्रिदोषविषहृद्रक्तरुक्प्रदरापहा ॥ कफातिसारतृड्दाहरक्तपित्तहरापरा ! वातनाशकरीप्रोक्ता ऋषिभिस्तत्त्वदर्शिभिः ॥ (नि. र.)

अर्थ-गौरियासाउ-शीतल, मधुर शुक्रजनक, भारी, स्निग्ध, कडवी सुगन्धि तथा कोढ, कण्डू, ज्वर, देहकी दुर्गन्धता, मन्दाग्नि, श्वास, खांसी अरुचि, आम, त्रिदोष, विष, रुधिरविकार, प्रदररोग, कफ, अतिसार तृषा, दाह, रक्तपित्त और वातको हरनेवाली है ।

अन्यच्च ।

अनन्ताग्राहिणीरक्तपित्तप्रशमनीहिमा ॥

अर्थ-गौरीसर-मलरोधक रक्तपित्तनाशक और शीतल है।

कृष्णशारिवागुणाः ।

शारिवावातपित्तास्रक्तृट्छर्दिज्वरनाशिनी ॥ (राजवल्लभ)

अर्थ--कालीसर (करियावासाउ)-वात, पित्त, रुधिरविकार, तृषा वमन और ज्वरको हरनेवाली है ।

अन्यच्च ।

कृष्णातुसारिवाशीतावृष्याचमधुरामता । कफघ्नीचैवसंप्रोक्तागुणाश्चान्येतुपूर्ववत् ॥ (नि. र.)

अर्थ- कालीसर-शीतल, वीर्यवर्द्धक, मधुर और कफनाशक है, शेष गुण श्वेतसारिवाके समान जानने ।

द्विविधसारिवागुणाः ।

सारिवायुगलंस्वादुस्निग्धंशुक्रकरंगुरु । अग्निमांद्यारुचिश्वासकासामविषनाशनम् ॥

दोषत्रयास्रप्रदरज्वरातीसारनाशनम् । (भा. प्र.)

अर्थ-दोनोंप्रकारकी सारिवा--स्वादिष्ठ, स्निग्ध, शुक्रजनक, भारी तथा मन्दाग्नि, अरुचि, श्वास, खांसी, आम, विष, त्रिदोष, रक्तप्रदर और ज्वरा तिसारको हरनेवाली है ।

विवरण । कालीसारिवा और सफेदसारिवाकी काली बेल होती है, पत्ते-अनारके, समान होते हैं, उन पत्तोंमें सफेद छोटे होते हैं, बेलकी जडमें कपूरकचरीके, समान सुगन्धि आती है, और इसमें दो २ फली आती हैं, कितने मनुष्य इसकी जडको सालसापरेला कहते हैं ।

भृङ्गराजनामानि ।

मार्कवोभृङ्गराजश्चभृङ्गाह्वःकेशरञ्जनः ॥
पितृप्रियोरंगकश्चकेश्यःकुन्तलवर्द्धनः ॥

अर्थ-मार्कव, भृङ्गराज, भृङ्गाह्व, केशरञ्जन, पितृप्रिय, रंगक, केश्य, कुन्तलवर्द्धन (भृङ्ग, पतङ्ग, मार्कर, मार्क, नागमार, पररु, भृङ्गसोदर, अङ्गारक, एकरज, करञ्जक, भृङ्गरज, भृङ्गार, अजागर, केशराज, मर्कर, भृङ्गारक, भेकराज, पंकजात)

पीतभृङ्गराजनामानि ।

पीतोन्यःस्वर्णभृङ्गारोहरिवासोहरिप्रियः ।
देवप्रियोवन्दनीयःपावनश्चषडाह्वयः ॥

अर्थ-पीतभृङ्गराज--स्वर्णभृङ्गार, हरिवास, हरिप्रिय, देवप्रिय, वन्दनीय, पावन ।

नीलभृङ्गराजनामानि ।

नीलस्तुभृङ्गराजोन्योमहानीलः सुनीलकः ।
महाभृङ्गोनीलपुष्पः श्यामलश्चषडाह्वयः ॥

अर्थ-नीलभृङ्गराज, महानील, सुनीलक, महाभृङ्ग, नीलपुष्प, श्यामल, यह छे नाम हैं ।

संस्कृतभाषामें	भृंगराज, केशराज ।
हिंदीभाषामें	भांगरा, भंगरा, भंगरिया, भगरैया, कुकुर भांगरा ।
बंगभाषामें	भीमराज, केशुरे ।
मराठीभाषामें	माका ।

गुजरातीभाषामें	भांगरो ।
कर्णाटकीभाषामें	गरुगसुरु ।
तैलिङ्गीभाषामें	गुण्टकलगरचेट्टु, भृंगराजपुचेट्टु ।
औत्कलीभाषामें	कलाकेशदुरा ।
अंग्रेजीभाषामें	ट्रेलिंगइक्लिप्टा । Traling Eclipta
लैटिन्भाषामें	इक्लिप्टाप्रोस्ट्रेटा । Eclipta Prostrata इक्लिप्टा आल्बा E. alba
फारसीभाषामें	जमर्दर ।
अरबीभाषामें	हज़ीज ।

भृङ्गराजगुणाः ।

भृङ्गराजस्तुचक्षुष्यस्तिक्तोष्णः केशरञ्जनः ।
कफशोफविषघ्नश्चतत्रनीलोरसायनः ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-भांगरा-नेत्रोंको हितकारी, कडवा, गरम, केशरञ्जक (केशोंको काला करनेवाला) तथा कफ, सूजन, और विषविनाशक है, इनमें नीला भांगरा रसायन है ।

अन्यच्च ।

भृङ्गराजःकटुस्तिक्तोरूक्षोष्णःकफवातहृत् ।
रसायनोज्वरान्हन्तिकुष्ठनेत्रशिरोर्तिनुत् ॥ (म. नि.)

अर्थ-भांगरा-चरपरा, कडवा, रूखा, गरम, कफवातनाशक, रसायन तथा ज्वर, कोढ, नेत्ररोग, और शिरकी पीडाको दूर करनेवाला है ।

अपिच ।

मार्कवस्तिक्तकश्चोष्णश्चक्षुष्यःकेशरञ्जनः । त्वच्योरूक्षश्च तीक्ष्णश्चदन्त्योमेध्योरसायनः ॥ शोफंकामंचांत्रवृद्धिंशिरो नेत्ररुजंतथा । कफंवातंचकासञ्चश्वासकुष्ठकृमीञ्जयेत् ॥ आमंचपांडुरोगञ्चहृद्रोगंत्वग्रुजंतथा । विषञ्चनाशयत्येव कण्डूनाशकरो मतः ॥ (नि, र.)

अर्थ-भांगरा-कडवा, गरम, नेत्रोंको हितकारी, केशरञ्जक, त्वचाको हितकारी, रूखा, तीक्ष्ण, दाँतोंको हितकारक, मेधाकारक रसायन तथा सूजन, कामदेव, अंत्रवृद्धि, शिरोरोग, नेत्ररोग कफ, वात, खाँसी, श्वास

कोढ, कृमि, आम, पाण्डुरोग, हृदयरोग, त्वचाके रोग, विष, और कण्डूको दूर करनेवाला है ।

विवरण—भांगरेका क्षुप-प्रायः गीली पृथ्वीमें होता है, पत्ते खरखरे होते हैं, पत्तोंका रस काला होता है, सपेद, पीले और काले इन फूलोंके भेदसे तीन प्रकारका है ।

शणपुष्पीनामानि ।

शणपुष्पीस्मृताघण्टाशणपुष्पसमाकृतिः ॥

अर्थ--शणपुष्पी, घण्टा, शणपुष्पसमाकृति (बृहत्पुष्पी, शणिका, शणघण्टिका, शणपुष्पिका, पीतपुष्पी, स्थूलफला, लोमशा, माल्यपुष्पिका और झनझनवा)

द्वितीयान्यासूक्ष्मपुष्पास्यात्क्षुद्रशणपुष्पिका ।
विष्टिकासूक्ष्मपर्णीचबाणाह्वासूक्ष्मघंटिका ॥

अर्थ-दूसरी--सूक्ष्मपुष्पा क्षुद्रशणपुष्पिका, विष्टिका, सूक्ष्मपर्णी, बाणाह्वा और सूक्ष्मघण्टिका ।

तृतीयान्यावृत्तपर्णीश्वेतपुष्पामहासिता ।
सामहाश्वेतघण्टीचसामहाशणपुष्पिका ॥

अर्थ--तीसरी -वृत्तपर्णी, श्वेतपुष्पा, महासिता, महाश्वेतघण्टी, महाशणपुष्पिका ।

शणनामानि ।



शणस्तुमाल्यपुष्पःस्याद्वागधःकटुतिक्तकः ।
निशादनोदीर्घशाखस्त्वक्सारोदीर्घपल्लवः ॥

अर्थ-शण, माल्यपुष्प, वामक, कटुतिक्त, निशादन, दीर्घशाख त्वक्सार, दीर्घपल्लव ।

संस्कृतभाषामें शणपुष्पी, द्वि० शणपुष्पी, तृ० शणपुष्पी।
हिन्दीभाषामें झुनझुनिया, पटशण, वनशण, शणहुली, घागही इत्यादि, । सन ।
वंगभाषामें वनशणइ, झनझने शोणोरगाछ ।
मराठीभाषामें ताग ।
कोकणीभाषामें खुळखुळा ।
गुजरातीभाषामें शण ।
द्राविडभाषामें जनवकनर ।
कर्नाटकीभाषामें गिलुगिचि, चिक्कगिलु, मतेकाडविट्टि ।
तैलिंगीभाषामें शणमतुवेल्ल, जेनपनर, रेल्लेचेट्टु ।
तामिलीभाषामें जेनप्पनर ।
ब्रह्मीभाषामें पन ।
अंग्रेजीभाषामें फ्लाक्सहेंप । Flak Hemp
लैटिन् भाषामें क्रोटेलेरिया जुनशिया । Crotalaria—juncea
फारसीभाषामें लादनां ।

शणपुष्पी गुणाः ।

शणपुष्पीकटुस्तिक्तावामिनीकफपित्तजित् । (भा. प्र.)

अर्थ--बनशन (झुनझुनिया)—चरपरी, कडवी, वमनकारक कफपित्तनाशक है ।

अन्यच्च ।

शणपुष्पीरसेतिक्ताकषायाकफवातजित् ।
अजीर्णज्वरदोषघ्नीवामनीरक्तदोषनुत् ॥ (रा. नि.)

अर्थ-वनशण-तिक्तरसान्वित, कषैली, कफवातनाशक, वमनकारक तथा अजीर्ण, ज्वर और रुधिरविकारको हरनेवाली है ।

अपिच ।

शणघण्टारसेतिक्तातुवरावामनीस्मृता ।
अजीर्णकफवातघ्नीरक्तदोषज्वरंजयेत् ।
कण्ठास्यरोगहृद्रोगपित्तरुक्सन्निपातहृत् ॥

अर्थ--वनशन--तिक्तरसान्वित, कषेली, वमनजनक तथा अजीर्ण, कफ, [illegible], रुधिरविकार, ज्वर, कण्ठरोग, मुखरोग, हृदयरोग, पित्तरोग और [illegible]ातको दूर करे है ।

क्षुद्रशणपुष्पीगुणाः ।

शणपुष्पीक्षुद्रतिक्तावम्यारसनियामिका ॥ (रा. नि.)

अर्थ-दूसरी शणपुष्पी--कडवी, वमनकारक, और पारेको बांधनेवाली है ।

महाश्वेतागुणाः ।

महाश्वेतातुतुवराचोष्णासूतनियामिका ।
मोहनेस्तम्भनेचैवप्रशस्ताऋषिभिःस्मृता ॥ (नि. र.)

अर्थ-तीसरी शणपुष्पी--कषेली, गरम, पारेको बांधनेवाली तथा मोहन [और] स्तम्भनके विषय ली जाती है ।

शणगुणाः ।

[शण]स्त्वम्लःकषायश्चमलवातकरोमतः । गर्भपातंरक्तपातं [illegible]निकृद्वामपातकृत् ॥ उष्णोवातकफघ्नश्चअंगमर्दरुजा-[प]हः । अस्यप्रसूनंप्रदरंरक्तदोषहरंस्मृतम् ॥ (नि. र.)

अर्थ-सन--अम्ल (खट्टी), कषेली, मलको पतित करनेवाली; गर्भ और [रक्त]को गिरानेवाली, वमनजनक, आमको गिरानेवाली, गरम तथा वात, [कफ] और अंगके टूटनेको दूर करे है । इसका फूल-प्रदर और रुधिरविका-[रको] हरे है ।

शणबीजगुणाः ।

शीतलंशणबीजंस्याद्ग्राहकञ्चगुरुस्मृतम् ।
इतरेतुगुणाःसर्वेशणवत्परिकीर्त्तिताः ॥ (नि. र.)

अर्थ-सनके बीज--शीतल, ग्राही और भारी हैं, गुण सनकी समान जानने । विवरण । शनकी खेती हिन्दोस्थानमें सर्वत्र अधिकतासे होती है, झांदरा[के]की समान पत्ता--फलाकार । फूल--पीले होते हैं । फल लम्बा और खुकल [हो]ता है । व्यवहार--बीज और पत्ते ।

त्रायमाणानामानि ।

त्रायमाणासुभद्राणीत्रायन्तीबलभद्रिका ॥

अर्थ-त्रायमाणा, सुभद्राणी, त्रायन्ती, बलभद्रिका (वार्बिक; बलदेवा,

भद्रनाभिका; कुलत्रा, त्रायमाणिका, बलभद्रा, सुकामा, वार्षिका, गिरि॰ अनुजा, मंगल्याहा, देवबला, पालिनी, भयनाशिनी, अवनी, रक्षणी, त्रा॰

संस्कृतभाषामें त्रायमाणा ।
हिन्दीभाषामें त्रायमान ।
वंगभाषामें बडाडुसुर, बला, बहुला, वनभादुलिया इत्यादि।
मराठीभाषामें त्रायमाण ।
गुजरातीभाषामें त्राहिमान् ।
कर्णाटकीभाषामें त्रायमाणा हिमवति प्रसिद्धा ।
लैटिन् भाषामें थेलिकूट्रम् फोलियो लोझम् । Thalictrum Faliolos॰
फारसीभाषामें अस्प्रक ।

अस्या गुणाः ।

त्रायमाणातुतुवराशीतलामधुरासरा । तिक्तापित्तरुजं॰ ज्वरंगुल्मंकफंविषम् ॥ शूलंभ्रमंरक्तरुजंक्षयंग्लानिंतृषांत॰ हृद्रोगंरक्तपित्तश्चदुर्नामानंविनाशयेत् ॥ त्रिदोषनाशि॰ प्रोक्तापूर्ववैद्यैर्महर्षिभिः । (नि. र.)

अर्थ–त्रायमान–कषेली, शीतल, मधुर, दस्तावर, कडवी तथा पित्त॰ वमन, ज्वर, गुल्म, कफ, विष, शूल, भ्रम, रक्तरोग, क्षय, ग्लानि, तृषा॰ यरोग, रक्तपित्त, बवासीर और त्रिदोषका नाश करनेवाली है।

विवरण। त्रायमानके पत्ते गोजियाकी समान पृथ्वीपर फैलेहुये हों॰ और बीचमें दोदण्डीसी निकलती हैं, उसके बीजोंको त्रायमान कह॰ किन्तु कितनेक मनुष्य भ्रमसे त्रायमानको गुलवनपसा कहते हैं।

यवतिक्तानामानि।

यवतिक्तामहातिक्तादृढपादाविसर्पिणी । नाकुलीनेत्रमी॰ चशंखिनीपत्रतण्डुली ॥ तंदुलीचाक्षपीडाचसूक्ष्मपुष्पी॰ यशस्विनी । माहेश्वरीतिक्तयवायावीतिक्तेतिषोडश॰

अर्थ–यवतिक्ता, महातिक्ता, दृढपादा, विसर्पिणी, नाकुली, नेत्रमी॰ शंखिनी, पत्रतण्डुली, तन्दुली; अक्षपीडा सूक्ष्मपुष्पी, यशस्विनी, माहे॰ तिक्तयवा, यावी, तिक्ता ।

संस्कृतभाषामें यवतिक्ता ।

हिन्दीभाषामें शंखिनी ।
बंगभाषामें यवेची, श्वेतबोना (कालमेघ)
मराठीभाषामें यवोची, टीटवी ।
को० शांखवेल्य ।
गुजरातीभाषामें शंखहेल्य आख्युफुटामाणा, भगलिंगी ।
कर्णाटकीभाषामें शंखिनी ।
लेटिन्भाषामें एंड्रोग्राफिस् पेनिक्युलेटा । Andrograph-is-paniculata
ब्रायोनियास्का ब्रेला । Bryoniascabrella

अस्या गुणाः ।

यवतिक्तासतिक्तास्याद्दीपनीरुचिकृत्परा ।
आमकुष्ठक्रिमिविषदोषघ्नीरेचनीचंसा ॥ (रा. नि.)

अर्थ-शंखिनी-कडवी, अग्निको दीपन करनेवाली, रुचिको उत्पन्न करनेवाली, दस्तोंको लानेवाली, तथा आम, कोढ, कृमि और विषदोषको नाश करनेवाली है ।

अन्यच्च ।

यवतिक्तामहातिक्तासाग्निकृद्बलवर्द्धिनी ।
तिक्ताज्वरातिसारघ्नीबालानांशुभदासदा ॥ (आ. सं.)

अर्थ-शङ्खिनी-जठराग्निको दीपन करनेवाली, बलवर्द्धक, कडवी ज्वरातिसारनाशक और सदैव बालकोंके कल्याण करनेवाली है ।

अपिच ।

शंखिनीकटुतिक्तोष्णागुरुःस्निग्धाविशोधिनी ।
त्रिदोषशमनीकुष्ठक्षयोदरविनाशिनी ॥ (रा. नि.)

अर्थ-शंखिनी-चरपरी कडवी, गरम, भारी, स्निग्ध, विशोधक, तथा त्रिदोष, कोढ, क्षय और उदररोगको दूर करनेवाली है ।

अन्यच्च ।

यवतिक्तातुकटुकारुचिराचाग्निदीपनी ।
सराम्लाकटुकातीक्ष्णास्निग्धोष्णाचत्रिदोषहा ॥
कुष्ठामविषदोषघ्नीरक्तदोषंकृमींस्तथा ।
शोफंजयेच्चोपरश्चनाशयेदितिकीर्तितम् ॥ (नि. रा.)

अर्थ-शंखिनी-कडवी, चरपरी, रुचिकारक, अग्निदीपक, सर (दस्तावर) अम्ल (खट्टी), कटु, तीक्ष्ण, स्निग्ध, गरम, त्रिदोषनाशक तथा कुष्ठ, आम, विषविकार, रक्तदोष, कृमि, सूजन और उदररोगको दूर करनेवाली है।

विवरण। शंखिनीकी बेल-शिवलिंगीके समान होती है, फल भी शिवलिंगीके समान होते हैं, शंखिनीके बीज--शंखके सदृश होते हैं, शिवलिंगीके फलके ऊपर सफेद छीटे होते हैं, किंतु शंखिनीके फलके ऊपर छीटे नहीं होते।

लिङ्गिनीनामानि।

लिङ्गिनीबहुपत्रास्यादीश्वरीशैवमल्लिका। स्वयम्भूलिंगसम्भूतालिंगीचित्रफलाऽमृता॥ पंडोलीलिंगजादेवीचण्डाऽऽस्तम्भिनीतथा। शिवजाशिववल्लीचविज्ञेयाषोडशाह्वया॥

अर्थ--लिंगिनी, बहुपत्रा, ईश्वरी, शैवमल्लिका, स्वयम्भू, लिंगसम्भूता, लिंगी, चित्रफला, पंडोली, लिंगजा, देवी, चण्डा, आपस्तम्भिनी, शिवजा, शिववल्ली (शिवमल्लिका, बकपुष्पा, और तुत्थिनी)

संस्कृतभाषामें	लिंगिनी।
हिन्दीभाषामें	शिवलिंगी, ईश्वरलिंगी।
वंगभाषामें	शिवलिंगिनी।
मराठीभाषामें	शिवलिंगी वाडुवल्ली।
गुजरातीभाषामें	शिवलिंगी।
कर्णाटकीभाषामें	पचगुरिया ईश्वरलिंगी।
लैटिन्‌भाषामें	ब्रायोनिया लेसिनियोसा। Bryonia lacin[iosa]

अस्या गुणाः।

लिंगिनीकटुरुष्णाचदुर्गन्धाचरसायनी। सर्वासिद्धिकरीदिव्यावश्यारसनियामिनी॥ (रा. नि.)

अर्थ–शिवलिंगी–चरपरी, गरम, दुर्गन्ध रसायन, सर्वसिद्धिकारक दिव्य, वशीकरण और पारेको बांधनेवाली है।

अपिच।

लिंगिनीकटुकाचोष्णादुर्गन्धाचरसायनी। सर्वसिद्धिप्रदालोहस्तम्भिनीसूतबन्धिनी॥

सिध्मनाशकरीवश्यकारिणीचप्रकीर्तिता । (नि. र.)

अर्थ-शिवलिङ्गी-चरपरी, गरम, दुर्गन्धित, रसायन, सर्वसिद्धिदायक, देहस्तम्भक, पारदको बांधनेवाली, सिध्मनाशक और वशीकरण है ।

विवरण। शिवलिंगीकी बेल होतीहै, फल-नीले और गोल होतेहैं, पकनेपर लाल पडजातेहैं, फलके ऊपर सपेद चित्र होते हैं, फलमेंसे बीज निकलते हैं, उन बीजोंमें शिवके लिंगका, आकार होता है ।

मूर्वानामानि ।

मूर्वामधुरसादेवीगोकर्णीदृढसूत्रिका ।
तेजनीपीलुपर्णीचधनुर्मालाधनुर्गुणा ॥

अर्थ-मूर्वा, मधुरसा, देवी, गोकर्णी, दृढसूत्रिका, तेजनी,पीलुपर्णी, धनुःमाला, धनुर्गुणा (मोरटा, स्रवा, मधुलिका, धनुःश्रेणी, कर्म्मकरी, धनुःमाला, श्रवा, मूर्वी, मधुश्रेणी, धनु, श्रेणी, सुरङ्गिका, देवश्रेणी, पृथक्त्वचा, मधुस्रवा, अतिरसा, पीलुपर्णिका, दिव्यलता, ज्वलिनी, गोपवल्ली)

संस्कृतभाषामें	मूर्वा ।
हिन्दीभाषामें	चूर्णहार, मुर्हरी, चुरनहार ।
वंगभाषामें	मुर्वा, मुर्गा, मुरहर, शोचमुखी, वोडाचक्र इत्यादि ।
मराठीभाषामें	मोरवेल ।
कर्णाटकीभाषामें	मुहरसि ।
तैलिङ्गीभाषामें	षागचेट्टु, सग, चग, सांगा ।
तामिलीभाषामें	मरूल ।
का०	मोरहरी ।
लैटिन्भाषामें	क्लिमेटिस् ट्राईलोबा । Clomatistriloba

अस्या गुणाः ।

मूर्वासरागुरुःस्वादुस्तिक्तापित्तास्रमेहनुत् ।
त्रिदोषतृष्णाहृद्रोगकण्डुकुष्ठज्वरापहा (धन्वन्तरि)

अर्थ-चूर्णहार-सारक (दस्तावर),स्वादिष्ठ, कडवी तथा रक्तपित्त, प्रमेह, त्रिदोष, तृषा, हृदयरोग, कण्डू, कुष्ठ और ज्वरको हरनेवाली है ।

अन्यच्च ।

मूर्वातिक्ताकषायोष्णाहृद्रोगकफवातहृत् ।

वमिप्रमहकुष्ठघ्नीविषमज्वरहारिणी ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-चूर्णहार-कडवी, कषेली, गरम तथा हृदयरोग, कफ, वात, वमन, प्रमेह, कोढ और विषमज्वरको दूर करनेवाली है।

अपिच ।

मोरटातुवरातिक्तास्वाद्वीचोष्णागुरुःस्मृता । पाककालेतु कटुकासारकाचत्रिदोषहा ॥ रक्तदोषंमेदरोगंकुष्ठंमेहंज्वरंतथा । वान्तिंचमुखशोषञ्चभ्रमंकण्डूंतृषांतथा ॥ हृद्रोगंचकफंपित्तंवातञ्चविषमज्वरम् । नाशयेदितितैरुक्तंकन्दोस्याः कृमिनाशकः ॥ कृमिकीलकरोगञ्चविषदोषञ्चनाशयेत् ।

अर्थ-चूर्णहार-कषेली, कडवी, स्वादिष्ठ, गरम, भारी, पचनेमें चरपरी, दस्तावर, त्रिदोषनाशक तथा रुधिरविकार, मेदोरोग कोढ, प्रमेह, ज्वर, वमन, मुखशोष, भ्रम, कण्डू, तृषा, हृदयरोग, कफ, पित्त, वात और विषमज्वरको दूर करनेवाली है। इसका कन्द-कृमि, कृमिकीलकरोग और विषविकारको दूर करेहै।

विवरण। मूर्वाकी बेल वनमें होतीहै, इसमें छोटे २ और मधुर २ फल लगते हैं, पत्ते-घीकुआरके समान चिकने और कुछ मोटे २ होते हैं।

काकमाचीनामानि ।



मकोय.

काकमाचीध्वांक्षमाचीवायसीचघनाघना ॥

अर्थ-काकमाची, ध्वांक्षमाची, वायसी, घनाघना, (काकमाचिका, क्षिका, वायसाह्वा, सर्वतिक्ता, बहुफला, कटुफला, रसायनी, गुच्छफला, काकमाता, स्वादुपाका, सुन्दरी, तिक्तिका, बहुतिक्ता, जघनेफला, काकिनी और कुष्ठघ्नी,

संस्कृतभाषामें	काकमाची ।
हिन्दीभाषामें	मकोय, कबैया ।
बंगभाषामें	मदन, मधुनि, गुडकामाइ ।
मराठीभाषामें	लघुकावळी, कामोनि ।
गुजरातीभाषामें	पीलुडी ।
कर्णाटकीभाषामें	कावईकाके ।
अंग्रेजीभाषामें	नाइट्सेड ।
लैटिन्भाषामें	सोलेनम् नाइग्रम् । Solanum nigrum.
फारसीभाषामें	रोवातरीख ।
अरबीभाषामें	एनवुस्सालव ।

अस्या गुणाः ।

काकमाचीत्रिदोषघ्नीस्निग्धोष्णास्वरशुक्रदा ।
तिक्तारसायनीशोथकुष्ठार्शोज्वरमेहजित् ॥
कटुनेत्रहिताहिक्काछर्दिहृद्रोगनाशिनी ॥ (भा. प्र.)

अर्थ-मकोय-त्रिदोषनाशक, स्निग्ध, गरम, स्वरजनक, शुक्रकारक, चरपरी, रसायन, चरपरी, नेत्रोंको हितकारी तथा सूजन, कोढ, बवासीर, ज्वर, प्रमेह, हिचकी, वमन और हृदयरोगको हरनेवाली है ।

अन्यच्च ।

काकमाचीकटुस्तिक्तरसोष्णाकफनाशिनी ।
शूलार्शःशोफदोषघ्नीकुष्ठकण्डूतिहारिणी ॥ (रा. नि.)

अर्थ-मकोय-चरपरी, तिक्तरसान्वित, गरम, कफनाशक तथा शूल, बवासीर, सूजन, कोढ और कण्डूका नाश करे है ।

अन्यच्च ।

काकमाचीसरास्वर्यावृष्यादोषत्रयापहा ।
नात्युष्णाशीतलानातिकुष्ठहन्त्रीरसायनी ॥ (शो. नि.)

अर्थ-मकोय-सारक (दस्तावर), स्वरको उत्तम करनेवाली, वीर्य्यवर्द्धक, त्रिदोषनाशक, न अत्यन्त उष्ण है, और न अत्यन्त शीतल है, कुष्ठनाशक और रसायन है।

अपिच।

काकमाचीरसेतिक्ताचोष्णाकटूवीरसायनी। वृष्यास्निग्धाच स्वर्य्याचहृद्याधातुविवर्द्धिनी ॥ नेत्र्यारुच्यासरालघ्वीकफशूलार्शशोफहा। त्रिदोषकुष्ठकण्डूतिकर्णकीटातिसारहा ॥ हिक्काछर्दिश्वासकासज्वरहृद्रोगमेहहा। (नि. र.)

अर्थ-मकोय-तिक्तरसान्वित, गरम, चरपरी, रसायन, वीर्य्यवर्द्धक, स्निग्ध, स्वरको उत्तम करनेवाली, हृदयको हितकारी, धातुवर्द्धक, नेत्रोंको हितकारी, रुचिकारी, दस्तावर, हलकी तथा कफ, शूल, ववासीर, सूजन, त्रिदोष, कोढ, कण्डू, कर्णकीट, अतिसार, हिचकी, वमन, श्वास, खाँसी, ज्वर और हृदयरोगको हरनेवाली है।

विवरण। मकोयका-क्षुप होताहै, पत्ते गोल और लम्बे। फूल-सफेद रंगका छोटा। फल-चोटलीके समान गोल और गुच्छोंमें आते हैं। फल पकनेपर लाल रंगके और किसी २ के काले रंगके भी होजातेहैं।

काकजंघानामानि।



काकजंघाचकाकाञ्चीकाकांगीकाकनासिका ॥

अर्थ-काकजंघा, काकाञ्ची, काकांगी, काकनासिका (काका, काकनासा, काककला; कृषीवल, काकाङ्गा, ध्वांक्षजंघा, काकाह्वा, सुलोमा, पारावतपदी, दासी, नदीकान्ता, काकी, सुरंगी)

संस्कृतभाषामें काकजंघा।

हिन्दीभाषामें काकजंघा, मसी।

वंगभाषामें केउयाठेङा कांटागुडकाउली ।
मराठीभाषामें कांगाचें झाड ।
गुजरातीभाषामें अघेड़ी ।
कर्णाटकीभाषामें जीरीचिलेच ।
तैलिङ्गीभाषामें नालादुश्चीणीके ।
लैटिन्भाषामें हेंपलेथिस् हेंटेक्युलेरीसू । Leea Hirta.

अस्यागुणाः ।

काकजंघातुतिक्तोष्णाकृमिव्रणकफापहा ।
बाधिर्य्याजीर्णजित्कट्वीविषमज्वरहारिणी । (रा. नि.)

अर्थ-काकजंघा, (मसी)-कडवी, गरम, चरपरी तथा कृमि, घाव, कफ, बधिरता, अजीर्ण और विषम ज्वरको दूर करनेवाली हैं ।

विवरण । काकजंघाके क्षुप-जंगलमें और वनोंमें बहुत होते हैं, पत्ते-लम्बे २ हरे और काले रंगके होते हैं, फूल-छोटे २ और काले रंगके होते हैं । पत्तोंपर खरखरापन और बारीक २ रुआंसा होता है, शाखा गांठेदार होती है और उनमें थोडी २ दूरपर ऐंडावैंडापन होता है ।

अन्यच्च ।

काकजंघाहिमातिक्ताकषायाकफपित्तनुत् ।
निहन्तिज्वरपित्तास्रव्रणकण्डूविषक्रिमीन् ॥ (भा. प्र.)
"क्षतोपयोगिकाचैवबाधिर्य्यश्चविनाशयेत् ।"

अर्थ-काकजंघा, (मसी)—शीतल, कडवी, कषेली तथा कफ, पित्त, ज्वर, रक्तपित्त, कण्डू, विष और कृमिका नाश करे है। तथा क्षतरोगमें हितकारी, और बधिरताको दूर करे है ।

काकनासानामानि ।

काकनासातुकाकांगीकाकतुण्डफलाचसा ।

अर्थ-काकनासा, काकांगी, काकतुण्डफला (ध्वांक्षनासा, काकतुण्डी, वायसी, सुरंगी, तस्करस्नायु, ध्वांक्षतुण्डा, सुनासिका, वायसाह्वा, ध्वांक्षनखी, काकाक्षी, ध्वांक्षनासिका, काकप्राणा, काकश्मश्रु, चोरस्नायु, शिरोबला)
संस्कृतभाषामें काकनासा ।
हिन्दीभाषामें कौआठोडी ।
वंगभाषामे केउयाटुंटी ।

मराठीभाषामें श्वेतकावळी।
कर्णाटकीभाषामें हिरीयकागे डोले वडिलि कद्रुरली।
तैलिङ्गीभाषामें बेलुमसन्दिचेट्टु, पुप्पगुलिबिन्दचेट्टु, काकिदोंडचेट्टु।
लैटिन्भाषामें जिम्रिमासिल्वेस्ट्रि। Gymurbma Sylvestre

अस्या गुणाः।

काकनासाकषायोष्णाकटुकारसपाकयोः।
कफघ्नीवामनीतिक्ताशोफार्शःश्वित्रकुष्ठनुत्॥ (भा. प्र.)

अर्थ-कौआठोडी -कषेली, गरम, रसमें चरपरी और पचनेंमेंभी चरपरी, कफनाशक, वमनकारक, कडवी, तथा सूजन, बवासीर और श्वित्रकुष्ठको नष्ट करे है।

अन्यच्च।

काकनासातुमधुराशिशिरापित्तहारिणी।
रसायनीदार्ढ्यकरीविशेषात्पलितापहा॥ (रा. नि.)

अर्थ—कौआठोडी-मधुर, शीतल, पित्तनाशक, रसायन, दृढ़ताकारक और विशेषकरके पलित (बालोंका धवल हो जाना) को दूर करे है। कौआठोडी,—विशेषकरके जंगल और कठैरकी भूमिमें होतीहै, पत्ते-गुलाबके पत्तोंसे छोटे, फूल-नीले और सुफेद रंगके कौवेकी नासिकाकी समान होते हैं, इसपर फली आती है बीज लोवियेकी समान निकलते हैं।

नागपुष्पीनामानि।

नागपुष्पीश्वेतपुष्पानागिनीरामदूतिका॥

अर्थ—नागपुष्पी; स्वेतपुष्पा, नागिनी, रामदूतिका।

अस्यागुणाः।

नागिनीरेचनीतिक्तातीक्ष्णोष्णाकफपित्तनुत्।
विनिहन्तिविषंशूलंयोनिदोषवमिक्रिमीन्॥ (भा. प्र.)

अर्थ—नागपुष्पी—दस्तावर, कडवी, तीक्ष्ण, गरम तथा कफ, पित्त, विष, शूल, योनिदोष, वमन और कृमिरोगको दूर करे।

विवरण। नागपुष्पीकी बेल चलती है, वनके वृक्षोंपर फैलजाती है, फूल—सफेद और काले होते हैं, एक एक शाखामें एक एक पत्ता होता है, इसके नीचे कंद होता है।

मेषशृङ्गीनामानि ।

मेषशृङ्गीमेषवल्लीचक्षुर्मेषविषाणिका ॥

अर्थ-मेषशृंगी, मेषवल्ली, चक्षु, मेषविषाणिका (नन्दीवृक्ष, चक्षुर्बहल, मेढ्रशृंगी, गृहद्रुमा, बहलचक्षु, विषाणी, अजशृंगिका, विषाणिका, अजशृङ्गी, चक्रश्रेणी, अजगन्धिनी, मौर्वी नेत्रौषधी, आवर्तिनी, वर्तिका, सर्पदंष्ट्रिका, चक्षुष्या, तिक्तदुग्धा, पुत्रशृंगी, कर्णिका, अक्षिभेषज)

संस्कृतभाषामें	मेषशृंगी, अजशृंगी ।
हिन्दीभाषामें	मेढाशींगी ।
बंगलाभाषामें	मेडाशिंगे, गाडलशिंगी, छागलवेंटे ।
मराठीभाषामें	मेंडफली, केवणीच्या शेंगा ।
गुजरातीभाषामें	मडाशिंगी आटर्डीनी शींग ।
कर्णाटकीभाषामें	उरियमर ।
अंग्रेजीभाषामें	स्क्रूट्री । Screwtree
लैटिन्‌भाषामें	हेलीक्‌ टेरीस्‌ इसोरा । Helicteris isora
	जिमनेगा सिलवेसद्री । Gymneruasylves tree
फारसीभाषामें	किस्त ।
अरबीभाषामें	बर्किस्त ।

अस्या गुणाः ।

अजशृंगीरसेतिक्तारूक्षापाकेकटुःस्मृता । चक्षुष्याशीतला स्वाद्वीबल्याभेदकरीमता॥ रसायनातुतुवरादाहपित्तकफापहा । रक्तरुक्कासतिमिरश्वासव्रणविषापहा ॥ कृम्यर्शःशूलहृद्रोगनाशिनीशोथहास्मृता । कुष्ठंवातंनाशयतिफलमस्यास्तु तिक्तकम् ॥ कटूष्णंदीपनंहृद्यंरुच्यंचाम्लंपटुस्मृतम् । स्रंसनंकुष्ठमेहघ्नंकासक्रिमिकफप्रणुत ॥ विषदोषंव्रणंवातंनाशयेदितिकीर्त्तितम् । (नि. र.)

अर्थ-मेढाशिंगी-रसमें कडवी, रूखी, पचनेमें चरपरी, नेत्रोंको हितकारी शीतल, स्वादिष्ठ, बलकारक, भेदक, रसायन, कषेली तथा दाह, पित्त, कफ, रक्तविकार, खांसी, तिमिररोग, श्वास, व्रण, विष, कृमि, बवासीर, हृदयरोग, सूजन, कोढ और वातको विनाश करनेवाली है। इसका फल-कडवा, चर-

परा, गरम, दीपन, हृदयको हितकारी, रुचिकारक, खट्टा, खारा, स्रंसन, तथा कोढ, प्रमेह, खाँसी, कृमि, कफ, विषविकार, व्रण, और वातको दूर करनेवाली है।

विवरण। मेढाशिंगीका बडा वृक्ष होताहै, पत्ते-फालसेके समान, और फूल-लाल होते हैं, इसकी फली गोल और लम्बी होतीहै, इसके वृक्ष प्रायः पर्वतोंपर बहुत होतेहैं।

हंसपादीनामानि।



हंसपादीकीरमातात्रिपादीचमधुस्रवा।

अर्थ-हंसपादी, कीरमाता, त्रिपादी, मधुस्रवा (सुवहा, हंसपदी, गोधांघ्रि, त्रिफला, गोधापदिका, त्रिदला, हंसवती, चित्रपदा, हंसपदिका, हंसांघ्रि, रक्तपादी, त्रिपदा, घृतमण्डलिका, विश्वग्रन्थि, त्रिपादिका, त्रिपदी, कीटमारी, कर्णाटी, ताम्रपादी, विक्रान्ता, ब्रह्मादनी, पदाङ्गी, शीताङ्गी, सूतपादिका, सञ्चारिणी, पदिका, प्रह्लादी, कीरपादिका, धार्त्तराष्ट्रपदी, गोधापदी, त्रिपादिका, रक्तपादी)

संस्कृतभाषामें	हंसपादी, गोधापदी।
हिन्दीभाषामें	हंसपादी, हंसपगी।
वंगभाषामें	गोयालेलता।
मराठीभाषामें	लाल लाजालु।
गुजरातीभाषामें	हंसराज कालीडांडलीनो।
कर्णाटकीभाषामें	नविलडि।
तैलिंगीभाषामें	हंसपादमु।
अंग्रेजीभाषामें	मैडनहेर। Maiden hair
लैटिन्भाषामें	एडिएन्टम् ल्युन्युलेटम्। Adiantum Lunulatum
फारसीभाषामें	परस्या उशान।
अरबीभाषामें	शारुलजीन् शारुलअर्द।

अस्या गुणाः ।

हंसपादीगुरुःशीता हन्ति रक्तविषव्रणान् ।
विसर्पदाहातीसारलूताभूताग्निरोहिणीः ॥ (भा. प्र.)

अर्थ-हंसपादी-भारी, शीतल तथा रुधिरविकार, विष, व्रण, विसर्प, दाह, अतिसार, लूता, भूतबाधा और अग्निरोहिणीरोगको दूर करनेवाली है ।

अन्यच्च ।

हंसपादीतुकटुकाचोष्णाप्रोक्तारसायनी ।
भूतबाधांविषंचैवापस्मारभ्रमनाशिनी ॥ (नि. र.)

अर्थ-हंसपादी-चरपरी, गरम, रसायन तथा भूतबाधा, विष, अपस्मार और भ्रमको हरनेवाली है ।

विवरण । हंसपदीके क्षुप-जलाशयके समीप अत्यन्त शीतल स्थानोंमें होते हैं, विशेष करके कुँएँ बावडी इत्यादि स्थानोंमें बहुत होते हैं, इसको इस देशमें हंसराज कहते हैं, इसकी जड लाल और कोमल होती है, पंत्ते-हरे २ बहुत छोटे २ होते हैं ।

सोमलतानामानि ।

सोमलतासोमवल्लीसोमक्षीरीद्विजप्रिया ॥

अर्थ-सोमलता, सोमवल्ली, सोमक्षीरी, द्विजप्रिया (चन्द्रवल्लरी, इन्दुलेखा, सोमवल्लिका, महागुल्मा, यज्ञश्रेष्ठा, धनुलँता, सोमार्हा, गुल्मवल्ली, यज्ञवल्ली, सोमक्षीरा, सोमा, यज्ञाङ्गा)

संस्कृतभाषामें	सोमवल्ली ।
हिन्दीभाषामें	सोमवल्ली, सोमलता ।
बंगभाषामें	सोमलता ।
मराठीभाषामें	सोमवल्ली ।
कर्णाटकीभाषामें	सोमवल्ली ।
तैलिंगीभाषामें	पल्लटीजी, टिगटसुम्मुड्, पुल्लतोगे ।
लेटिन्भाषामें	सारकोष्टिमा ब्रेवीस्टिग्मा Sarcostemma BreVistigma

अस्या गुणाः ।

सोमवल्लीत्रिदोषघ्नीकटुतिक्तारसायनी ॥ (भा. प्र.)

अर्थ-सोमलता-त्रिदोषनाशक, चरपरी, कडवी और रसायन है ।

अन्यच्च ।

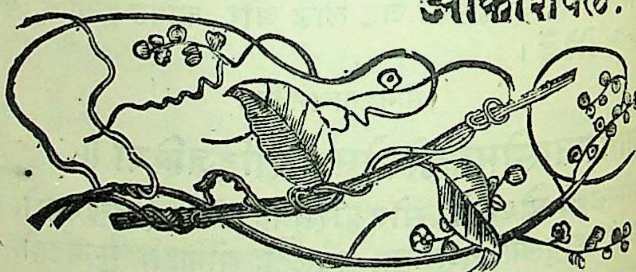
सोमवल्लीकटुःशीतामधुरापित्तदाहनुत् ।
तृष्णाविशोषशमनीपावनीयज्ञसाधनी ॥ (रा. नि.)

अर्थ-सोमलता-चरपरी, शीतल, मधुर तथा पित्त, दाह, तृषा और विशोषको शान्त करनेवाली है, पवित्र और यज्ञसाधक है ।

विवरण । थूहरकी जो कोई प्रकारकी जाति हैं उनमेंसे सोमलता भी एक भांतिकी बेल है, इसमें शुक्ल पक्षके दिनोंमें क्रमवार प्रतिपदासे लेकर पूर्णमासीतक एक एक पत्ता प्रतिवार निकलता है, पन्द्रहतिथियोंमें पन्द्रह पत्ते होजाते हैं, फिर कृष्णपक्षकी परीवासे लेकर अमावास्यातक एक एक पत्ता प्रतिदिन गिरता जाता है, पन्द्रहदिनमें एक पत्ता भी नहीं रहता; इस लताको चन्द्रमासे अधिक स्नेह है, इसकारण इस अद्भुतलताका नाम सोमलता है।

आकाशवल्लीनामानि ।

आकाशवल.



आकाशवल्लीतुबुधैःकथिताऽमरवल्लरी ॥

अर्थ-आकाशवल्ली, अमरवल्लरी (खवल्ली, दुःस्पर्शा, व्योमवल्लिका)

संस्कृतभाषामें	आकाशवल्ली ।
हिंदीभाषामें	आकाशबेल, अमरबेल ।
वंगभाषामें	आलोकलता, आकाशबेल ।
मराठीभाषामें	आकाशबेल, अमरबेल ।
गुजरातीभाषामें	अमरवेल ।
कर्णाटकीभाषामें	नेंदमुदवल्ली ।
तैलिङ्गीभाषामें	इन्द्रजाल ।
लैटिन्भाषामें	कसकुटारी फ्लेक्सा । Cusutareflexa केसिथाफिलिफोर्मिस् । Cassythafilliformis
अरबीभाषामें	अफतिमून ।

अस्या गुणाः ।

खवल्लीग्राहिणीतिक्तापिच्छिलाक्ष्यामयापहा ।
तुवराग्निकरीहृद्यापित्तश्लेष्मामनाशिनी ॥ (भा. प्र.)

अर्थ-आकाशबेल--ग्राही, कडवी, पिच्छिल, अक्षिरोगनाशक, कषैली, अग्निजनक, हृदयको हितकारी, तथा पित्त, कफ और आमवातनाशक है ।

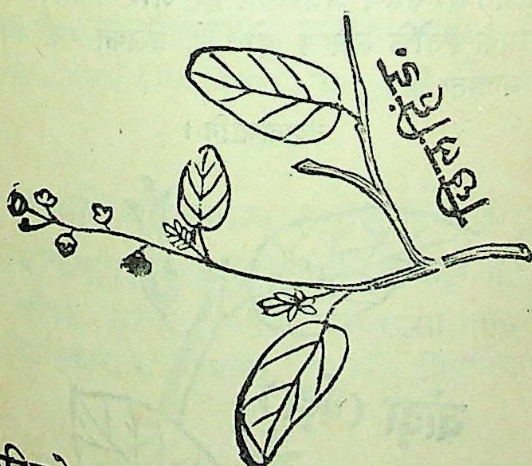
अन्यच्च ।

आकाशवल्लीकटुकामधुरापित्तनाशिनी ।
वृष्यारसायनीबल्यादिव्यौषधिपरास्मृता ॥ (रा. नि.)

अर्थ-आकाशबेल--चरपरी, मधुर, पित्तनाशक, वीर्य्यवर्द्धक, रसायन, बलकारक और दिव्यौषधि है ।

विवरण । आकाशबेल--डोरेकी समान वृक्षोंपै फैली हुई होती है, रङ्ग पीला होता है, फूल-सफेद आता है, और इसकी जड नहीं होती । व्यवहार सर्वांग । मात्रा २ तोले ।

पातालगरुडीनामानि ।



छिलिहिण्डोमहामूलः पातालगरुडाह्वयः ॥

अर्थ-छिलिहिण्ड: महामूल. पातालगरुड (वत्सादनी, सोमवल्ली, [illegible], मोचकाभिधा, तार्क्षी, सौपर्णी, गारुडी, दीर्घकाण्डा, दृढकाण्डा, [illegible], दीर्घवल्ली, दृढलता)

संस्कृतभाषामें पातालगरुडी ।
हिन्दीभाषामें छिरेटा ।
वङ्गभाषामें शिलिन्दा ।

मराठीभाषामें	तानीचा बेल, भुयपाड ।
गुजरातीभाषामें	बेबडीओलप ।
तैलिङ्गीभाषामें	दूसरतोगे ।
लैटिन्भाषामें	कोक्युलस् विलोसस् । Coceulus villosus

अस्या गुणाः ।

छिलिहिण्डः परंवृष्यः कफघ्नः पवनाह्वयः ॥ (भा. प्र.)

अर्थ--छिरेटा--अत्यन्त वीर्य्यवर्द्धक, कफ और वातनाशक है।

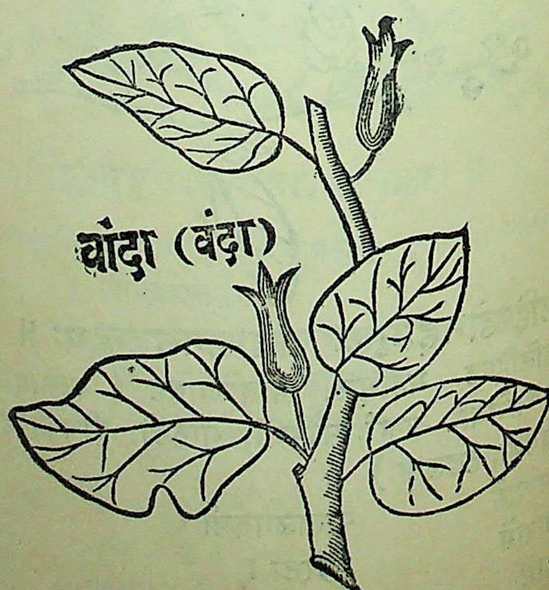
अन्यच्च ।

वत्सादनीतुमधुरापित्तदाहास्रदोषनुत् ।
वृष्यासन्तर्पणीरुच्याविषदोषविनाशिनी ॥ (रा. नि.)

अर्थ-छिरेटा-मधुर, वीर्य्यवर्द्धक, सन्तर्पण, रुचिकारक, तथा दाह, पित्त रुधिरविकार और विषदोषविनाशक है।

विवरण। पातालगरुडकी अर्थात् छिरेटीकी बेल होती है, यह बहुत मोटी और दृढ होती है, इसके तंतुभी बहुत पक्के होते हैं, इसके फल छोटे और गुच्छोंमें लगते हैं, तरुण अवस्थामें हरे और पकनेपर काले होजाते हैं इसके पत्ते सीसमके पत्तोंके समान होते हैं, उसका रस निकालकर जलमें डालनेसे जल जमजाता है।

वंदानामानि ।



वंदावृक्षादनीसेव्यापरपुष्टापराश्रया ॥

अर्थ-वंदा, वृक्षादनी, सेव्या, परपुष्टा, पराश्रया (वृक्षरुहा, जीवन्तिका, काकरुहा, वन्दाका, शेखरा, वन्दका, वल्दक, नीलवल्ली, वन्दाकी, परवासिका, वशिनी, पुत्रिणी, वन्ध्या, पादपरुहा, शिखरी, तरुरोहिणी, वृक्षादनी, कामवृक्ष, शेखरी, केशरूपा, तरुरुहा, तरुस्था, गन्धमादनी, कामिनी, तरुभुक्, श्यामा, उपदी, वृक्षभक्षा, नीलवर्णा, वन्दाकी, गन्धमादनी और रोहिणी)

संस्कृतभाषामें वन्दा।
हिन्दीभाषामें वन्दा, बन्दाल, वदाक, वांदा।
वङ्गलाभाषामें वाँदु, परगाछा, मान्दडा।
मराठीभाषामें बादांगुल, कामरुख।
गुजरातीभाषामें वांदो।
कर्णाटकीभाषामें वन्दणिके।
तैलिङ्गीभाषामें वाजिनीके।
लैटिन् भाषामें लोरेन्थस लोंगिफोलियस्। Loranthus Longifolious.

अस्या गुणाः।

वन्दाकःकफवातास्रस्नायुव्रणविषापहः॥ (म. नि.)

अर्थ-वांदा-कफ, वात, रुधिरविकार, स्नायु, व्रण और विषविनाशक है।

अन्यच्च।

वंदाकःस्याद्धिमस्तिक्तःकषायोमधुरोरसे।
मांगल्यःकफवातास्त्ररक्षोव्रणविषापहः॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-वन्दा-शीतल, कडवा, कषेला, मधुररसान्वित, मंगलजनक तथा कफ, वात, रुधिरविकार, राक्षसबाधा, व्रण और विषविनाशक है।

अपिच।

वन्दाकस्तिक्तशिशिरःकफपित्तश्रमापहः।
वश्यादिसिद्धिदोवृष्यःकषायश्चरसायनः॥ (नि. र.)

अर्थ-वन्दा-कडवा, शीतल, कफनाशक, पित्तघ्न, श्रमहर्ता, वशीकरणादिसिद्धिकर्ता, वीर्यवर्द्धक, कषेला और रसायन है। वन्दा, वृक्षोंकी शाखोंपे होता है।

विवरण। वन्दा विविधप्रकारका वृक्षोंपर वृक्षसरीखा होजाता है, उसकी जड़ अलग नहीं होती, वृक्षमें उत्पन्न होजाता है कोई २ ऐसा कहते हैं कि, काकादिक कोई पक्षी किसी वृक्षकी शाखा लाकर वृक्षपर रखदेतेहैं, उसीमें

पत्ते निकल आते हैं और वही फल फूलकर वन्दा हो जाता है, किसीमें लाल किसीमें पीला, किसीमें सफेद, और किसीमें नीला फूल होता है, और पत्तेभी भिन्न २ जातिकेसे होते हैं।

वटपत्रीनामानि।

वटपत्रीतुकथितामोहन्यैरावतीबुधैः ॥

अर्थ-वटपत्री, मोहनी, ऐरावती (इरावती, इनानी गोधावती, श्याम खट्वाङ्गनासिका)

संस्कृतभाषामें	वटपत्री।
हिन्दीभाषामें	वडपत्री।
मराठीभाषामें	वडवती।
वंगभाषामें	वडपाथरकुचि।
तैलिङ्गीभाषामें	पिण्डि, वण्डचेट्टू।
इंग्रेजीभाषामें	लैकोपेडियम्।

अस्या गुणाः।

वटपत्रीकषायोष्णायोनिमूत्रगदापहा ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-वडपत्री-कषेली, गरम तथा योनिरोग और, मूत्ररोगको दूर करे है।

अपिच।

वटपत्र्यश्मभिच्छीतामधुरातुबलप्रदा।
किञ्चिदग्नेर्दीप्तिकरीव्रणकृच्छ्रप्रमेहजित ॥
अश्मरींमूत्रघातञ्चभगन्दरंविनाशयेत। (नि. र.)

अर्थ-वडपत्री-शीतल, मधुर, बलवर्द्धक, किञ्चित् अग्निको दीपन करने वाली, तथा घाव, मूत्रकृच्छ्र, प्रमेह, पथरी, मूत्रघात और भगन्दररोगको दूर करनेवाली है।

विवरण। वटपत्री पाषाणभेदहीका भेद है, इसके पत्ते-वडके समान होते हैं, इसीसे इसका नाम वटपत्री है।

मत्स्याक्षीनामानि।

मत्स्याक्षीबालिकामत्स्यगन्धामत्स्यादनीति च ॥

अर्थ-मत्स्याक्षी, बालिका, मत्स्यगन्धा, मत्स्यादनी।

अस्या गुणाः।

मत्स्याक्षीग्राहिणीशीताकुष्ठपित्तकफास्रजित।

लघुस्तिक्ताकषायाचस्वाद्वीकटुविपाकिनी ॥ (भा. प्र)

अर्थ-मछेछी--ग्राही, शीतल, हलकी, कडवी, कषेली, स्वादिष्ठ, पचनेमें चरपरी, तथा कोढ, पित्त, कफ, और रुधिरविकारको दूर करे है ।

विवरण । मत्स्याक्षी--अर्थात् मछेछीक क्षुप छोटे २ होते हैं, पत्ते उडदके पत्तोंके समान होते हैं, फूल--सफेद और पीले रंगके होते हैं, इसमें मछलीके समान गंध आती है ।

सर्पाक्षीनामानि ।

सर्पाक्षीस्यात्तुगण्डालीतथानाडीकलापकः ॥

अर्थ-सर्पाक्षी, गण्डाली, नाडीकलापक ।

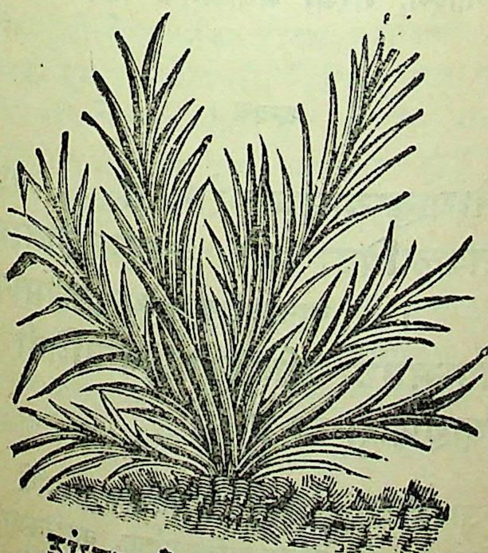
अस्या गुणाः ।

सर्पाक्षीकटुकातिक्तासोष्णाकृमिनिकृन्तनी ।
वृश्चिकोन्दुरुसर्पाणांविषघ्नीव्रणरोपणी ॥ (भा, प्र.)

अर्थ--सर्पाक्षी, (सरहटी, गंडनी)--चरपरी, कडवी, गरम, कृमिनाशक तथा बिच्छू, मूसा और साँपके विषको दूर करनेवाली है ।

विवरण । सर्पाक्षी--सरफोंकेका भेदहै, सरफोंकेमें और इसमें किसी प्रकारका भेद नहीं पाया जाता है ।

शंखपुष्पीनामानि ।



शंखपुष्पी (शंखाहूली)

मेध्याचण्डाशंखपुष्पीसुपुष्पीकम्बुमालिनी ।

अर्थ--शंखपुष्पी, मेध्या, चण्डा, सुपुष्पी, कम्बुमालिनी, (शंखाह्वा,

पीतपुष्पी, कम्बुपुष्पा, मलविनाशिनी, किरीटी, शंखकुसुमा, भूलग्ना, शङ्खमालिनी, माङ्गल्यकुसुमा, कम्बुपुष्पी, वनमालिनी. इतरा, सूक्ष्मपत्रा, सर्पाक्षी, रक्तपुष्पी, रक्तपुष्पिका, नीलपुष्पी, विष्णुक्रान्ता, सितपुष्पी, श्वेतकुसुमा, वनविलासिनी)

संस्कृतभाषामें	शंखपुष्पी ।
हिन्दीभाषामें	शंखाहुली, कौडियाली ।
वंगलाभाषामें	शंखाहुली, डानकुनी ।
मराठीभाषामें	शंखावली, शंखोनी ।
गुजरातीभाषामें	शंखावली ।
कर्णाटकीभाषामें	शंखपुष्पी ।
लैटिन्भाषामें	इवोल्व्युलस् इरेक्टा (सफेद) Evolvulus Erecta इवोल्व्युलस् आलसिनोइडिसू (लाल) E.Alsindoides इवोल्व्युलसू हर्सटसू (काली) E. hirsutus

अस्या गुणाः ।

शंखपुष्पीतुतीक्ष्णोष्णामेध्याकृमिविषापहा ॥ (रा. व.)

अर्थ--शंखाहुली--तीक्ष्ण, गरम, मेधाजनक तथा क्रिमि और विषविनाशक है।

अन्यच्च ।

शंखपुष्पीसरामेध्यायुष्यामानसरोगहृत् । रसायनीकषायोष्णास्मृतिकान्तिबलाग्निदा ॥ कटुकाशीतलास्वर्य्याकुष्ठक्रिमिविषप्रणुत् । पाचकायुःस्थिरकरीमांगल्यापित्तनाशिनी ॥ लूतापस्मारदोषघ्नीग्रहदोषस्यनाशिनी । सर्वोपद्रवहाप्रोक्तापुष्पैर्भेदागुणैःसमाः ॥

अर्थ--शंखाहुली--सारक, मेधाजनक, आयुर्वर्द्धक, मनके रोगोंको हरनेवाली, रसायन, कषेली, गरम, स्मरणशक्तिवर्द्धक, कान्तिजनक, बलवर्द्धक, अग्निदायक, चरपरी, शीतल, स्वरको उत्तम करनेवाली, मंगलकारक, अवस्थास्थापक, पाचक, तथा कोढ, कृमि, विष, पित्त, लूता, अपस्मार, ग्रहदोष और सर्वप्रकारके उपद्रवोंको दूर करनेवाली है, सर्वप्रकारकी शंखपुष्पी गुणोंमें समान है।

अन्यच्च ।

शंखपुष्पीकषायोष्णा कफकुष्ठविनाशिनी ।
रसायनीसरादिव्या लालाहल्लासज्वर्तिहा ॥
लक्ष्मीमेधाबलाग्नीनां वर्द्धिनी कथिताबुधैः ।

अर्थ-शंखपुष्पी-कषैली, गरम, कफ और कुष्ठको नष्ट करनेवाली, रसायन सारक, दिव्य, मुखसे लारका गिरना, उबकाई, और ज्वरको दूर करनेवाली है तथा लक्ष्मी, मेधा, बल और अग्निको बढानेवाली है ।

श्वेतशंखपुष्पीगुणाः ।

शुभ्राचशंखिनीमेध्याशीतलावश्यसिद्धिदा।रसायनीसरा-स्वर्य्या किञ्चिदुष्णाचतूवरा ॥ स्मृतिकान्तिबलाग्नीनां वर्द्धिनीकटुकामता ॥ पाचकायुःस्थिरकरीमाङ्गल्यापित्त-नाशिनी ॥ विषदोषमपस्मारंकफंकृमिविषंहरेत् । कुष्ठलू-तात्रिदोषघ्नीग्रहदोषस्यनाशिनी ॥ सर्वोपद्रवहाप्रोक्तारक्ता-नीलागुणैःसमा । (निघण्टुरत्नाकर)

अर्थ-सफेद शंखाहुली-मेधाजनक, शीतल, वशीकरण, सिद्धिदायक, रसायन, सारक, स्वरको सुन्दर करनेवाली, किञ्चित् उष्ण, कषेली, तथा स्मरणशक्ति, कांति और अग्निको बढानेवाली है । चरपरी, पाचक अवस्थास्थापक, मंगलकारक, तथा पित्त और विषदोष, अपस्मार (मृगी), कफ, कृमि, विष, कोढ, लूता, त्रिदोष, ग्रहदोष और सर्व उपद्रवोंको दूर करे है । लाल शंखपुष्पी और नीली शंखपुष्पीके गुणभी इसके समान जानने ।

विवरण । शंखपुष्पीका छत्ता प्रायः ऊषर भूमिमें होता है, पत्ते छोटे और धूसर रंगके सूक्ष्म होते हैं, फूल-दुपहारियासे मिलता हुवा होता है, सफेद फूलवालीको सफेद शंखाहुली कहते हैं, लाल रंगके फूलवालीको लाल शंखाहुली कहते हैं, नीले रंगके फूलवालीको विष्णुक्रान्ता कहते हैं ।

अर्कपुष्पीनामानि ।

पयस्याह्यर्कपुष्पीचसूर्य्यवल्लीकुटुम्बिनी ॥

अर्थ-पयस्या, अर्कपुष्पी, सूर्यवल्ली, कुटुम्बिनी (जलकामुका, क्षीरिणी, वक्रशल्या, दुराधर्षा, क्रूरकर्मा, सिरिन्टिका, शीता, प्रहरकुटवी, शीतला, कोलेहा, सिवपर्णी, शीतपर्णी और अर्कपुष्पिका)

संस्कृतभाषामें अर्कपुष्पी।
हिन्दीभाषामें अंधाहुली, अर्कहुली, दधियार, क्षीरवृक्ष, अर्कपुष्पी।
मराठीभाषामें शिरडोरि।
गुजरातीभाषामें खरणेर।
लैटिन्भाषामें होलोस्टेमा हिडिआई। Holostema rheedii

अस्या गुणाः।

कुटुम्बिनीतुमधुराग्राहकाचरसायनी।
शीतलाचव्रणंपित्तंकफंरक्तरुजंतथा॥
कृमिंचकण्डुदोषञ्चकुष्ठञ्चैवविनाशयेत् (नि. र.)

अर्थ-अर्कपुष्पी-मधुर, ग्राही, रसायन, शीतल तथा व्रण, पित्त, कफ रुधिरविकार, कृमि, कण्डू और कुष्ठको नष्ट करे है।

विवरण। अर्कपुष्पी जीवन्तिकाका भेद है, इसकी बेल नागरबेलकी समान होती है, पत्ते--गिलोयके समान छोटे २ होते हैं, फूल सूर्यमुखीके समान गोल आता है, और इसमें दूध निकलता है।

लज्जालुनामानि।



लज्जालुःस्याच्छमीपत्रासमंगाञ्जलिकारिका।
रक्तपादीनमस्कारीताम्राखदिरकेत्यपि॥

अर्थ--लज्जालु, शमीपत्रा, समंगा, अञ्जलिकारिका, रक्तपादी, नमस्कारी, ताम्रा, खदिरका, (कन्दिरी, स्पृका, खदिरपत्रिका, संकोचिनी, समङ्गा

प्रसारिणी, सप्तपर्णी, खदिरी, गण्डमालिका, लज्जा, लज्जिका, स्पर्शलज्जा, असरोधनी, रक्तमूला, ताम्रमूला, स्वगुप्ता, महाभीता, वशिनी, महौषधी)

संस्कृतभाषामें	लज्जालु ।
हिन्दीभाषामें	लज्जावन्ती छुईमुई, शर्मानी, लाजवती इत्यादि ।
बंगभाषामें	लाजुक, लज्जावती ।
मराठीभाषामें	लाजाळु लाजरी, संकोरणी ।
गुजरातीभाषामें	रिशामणी ।
कर्णाटकीभाषामें	मुदिदरेसुरुटव ।
लैटिन्भाषामें	माईमोंसासेनसिटाईवा । Mimosaensitiva
	मा० पुण्डिका । M. Pudica

अस्यागुणाः ।

लज्जालुःशीतलातिक्ताकषायाकफपित्तजित् ।
रक्तपित्तमतीसारंयोनिरोगान्विनाशयेत् ॥ (भा. प्र.)

अर्थ–लज्जावती (छुईमुई) शीतल, कडवी, कषेली तथा कफ, पित्त, रक्तपित्त, अतिसार और योनिरोगोंको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

रक्तापादीकटुःशीतापित्तातीसारनाशिनी ।
शोफदाहश्रमश्वासव्रणकुष्ठकफास्रनुत् ॥ (रा. नि.)

अर्थ–लज्जावती (छुईमुई) चरपरी, शीतल, पित्तातिसारनाशक तथा सूजन, दाह, श्रम, श्वास, घाव, कोढ, कफ और रक्तविकारको दूर करे है ।

विपरीतलज्जालुनामानि ।

लज्जालुर्विपरीतान्याअल्पक्षुपबृहद्दला ॥

अर्थ–विपरीतलज्जालु, अल्पक्षुप, बृहद्दल ।

अस्या गुणाः ।

वैपरीत्याचलज्जालुर्ह्यभिधानेप्रयोजयेत् ।
लज्जालुर्वैपरीत्याद्दुः कटुरुष्णःकफप्रणुत् ॥
रसेनियामकश्चैवनानाविज्ञानकारकः । (रा. नि.)

अर्थ–विपरीतलज्जालु–चरपरा, गरम, कफनाशक, पारेको बांधनेवाला और अनेक प्रकारके चमत्कार दिखलानेवाला है ।

विवरण। लज्जावती अर्थात् छुईमुईके क्षुप बेलके समान होते हैं, पत्ते छौंकर अथवा खैरके समान होते हैं फूल गुलाबी नीले मिश्रित रंगके होते हैं, इसकी जड लाल होती है, इसको स्पर्श करे तो ये लज्जाके मारे समांकर सुकड जाती है, पश्चात् विस्तृत होजाती है, यह दो प्रकारकी होती हैं, एक कांटेवाली, एक विना कांटेकी, हाथके लगतेही सुकड सुकडकर नीचेको झुक जाती है। इसीलिये इसका नाम लज्जावन्ती (छुईमुई) रक्खा है।

अलम्बुषानामानि।

अलम्बुषाखरत्वक्चतथामेदोगलास्मृता ॥

अर्थ—अलम्बुषा, खरत्वक्, मेदोगला।

अस्या गुणाः।

अलम्बुषालघुःस्वादुःकृमिपित्तकफापहा ॥

अर्थ—अलम्बुषा (लज्जालुका भेद) हलका, स्वादिष्ठ तथा कृमि, पित्त और कफनाशक है।

दुग्धिकानामानि।

दुग्धीक्षीरात्मिकाक्षीरीक्षीरावीचमरुद्भवा ॥

अर्थ—दुग्धी, क्षीरात्मिका, क्षीरी, क्षीरावी, मरुद्भवा, (स्वादुपर्णी, क्षीरिणी, क्षीराविका, ग्राहिणी, कच्छरा, ताम्रमूला और दुग्धिका)

दुग्धफेनीनामानि।

दुग्धफेनीपयःफेनीफेनीदुग्धापयस्विनी।
लूतारिर्व्रणकेतुश्चगोजापर्णीचसप्तधा ॥

अर्थ—दुग्धफेनी, पयःफेनी, फेनीदुग्धा, पयस्विनी, लूतारि, व्रणकेतु, गोजापर्णी।

नागार्जुनीनामानि।


दुद्धी. (क)


दुद्धी. (ख)

नागार्जुनीपयोवर्षायोगिनीलघुदुग्धिका ।

अर्थ--नागार्जुनी, पयोवर्षा, योगिनी, लघुदुग्धिका ।

संस्कृतभाषामें	दुग्धिका, दुग्धफेनी, नागार्जुनी ।
हिन्दीभाषामें	दुद्धी, दूधिया, दूधीकलव ।
बङ्गभाषामें	दुधि, दुध्या, दुदूले, क्षीरइ, खिरुइ इत्यादि ।
मराठीभाषामें	लघुदुधी, थोरदुधी ।
गुजरातीभाषामें	दुधेलीमोटी, थोरदुधी ।
कर्णाटकीभाषामें	मरिजबणीगे ।
तैलिंगीभाषामें	पिलपालचेट्टु ।
लैटिन्भाषामें	युर्फोबियाहिर्टा । Eupharbia hirta यूपार्विफ्लोरा Euparviflora युटाईमिफोलिया Euthymefolia.
फारसीभाषामें	निशाशत ।

दुग्धिकागुणाः ।

दुग्धिकोष्णागुरूरूक्षावातलागर्भकारिणी ।
स्वादुक्षीराकटुस्तिक्तासृष्टमूत्रमलापहा ॥
स्वादुर्विष्टम्भिनीवृष्याकफकुष्ठकृमिप्रणुत् । (भा. प्र.)

अर्थ--दुद्धी- गरम, भारी, रूखी, बादी, गर्भकारक, स्वादिष्ठ, क्षीरयुक्त, मलमूत्रको निकालनेवाली, चरपरी, कडवी, मधुर, विष्टम्भजनक, वीर्य्यवर्द्धक तथा कफ, कोढ और कृमिनाशक है ।

दुग्धफेनीगुणाः ।

दुग्धफेनीकटुस्तिक्ताशिशिराविषनाशिनी ।
व्रणापसारणीरुच्यायुक्त्याच्चरसायनी ॥ (रा. नि.)

अर्थ--दुग्धफेनी--चरपरी, कडवी, शिशिर, विषनाशक, व्रणनिवारक, रुचिकारक और किसीके साथ होनेसे रसायन है ।

नागार्जुनीगुणाः ।

नागार्जुनीतुमधुरावृष्यारूक्षाचग्राहिणी । तिक्ताचवातला गर्भस्थापनीकटुकापटुः ॥ धातुवृद्धिकरीहृद्याचोष्णापारदबन्धिनी । मलस्तम्भकरीमेहकफकुष्ठकृमीन्हरेत् ॥

अर्थ--नागार्जुनी (एक प्रकारकी दुद्धी)--मधुर, वीर्य्यवर्द्धक, रूखी,

ग्राही, कडवी, वातकारक, गर्भस्थापक, चरपरी, खारी, धातुवर्द्धक, हृदयको हितकारी, गरम, पारेको बांधनेवाली, मलको स्तम्भन करनेवाली तथा प्रमेह, कफ, कोढ और कृमिको दूर करे है।

विवरण। दुद्धीका क्षुप छत्तासा होता है. ऊपरको कम उठता है, क्षितिमें फैलता है, दुद्धी तीन प्रकारकी होती है, एक नोकदार लाल पत्तोंकी, एक गोलपत्तोंकी और एक मूंगोंके दानोंकी समान छोटे २ पत्तोंकी होती है, तीनोंप्रकारकी दुद्धीमें दूध निकलता है।

भूम्यामलकीनामानि।



भूम्यामलीशिवातालीक्षेत्रामलीचझारिका॥

अर्थ–भूम्यामली, शिवा, ताली, क्षेत्रामली, झारिका (बहुपुष्पी, जटा, अध्यण्डा, तालि, तामलकी, अजटा, सूक्ष्मफला, क्षेत्रामलकी, भूम्यामलकी, वितुन्नक, झटा, अफला, अमला, अजुटा, झाटा, माला, झाटामला, अमला, जुटा, तमाली, तमालिका, तामलको, उच्चटा, दृढपादी, वितुन्ना, वितुन्निका, भूधात्री, चारटी, वृष्या, विषघ्नी, बहुपत्रिका, बहुवीर्य्या, अहिमपदा, वीरा, विश्वपर्णी, हिमालया, अरुहा, भूम्यामलकिका, बहुपत्रा, बहुफला, भूपर्णी, दलस्पर्शिनी, बहुपत्रा, सूक्ष्मदला, दृढपादा, विश्वपर्णी, अमली, तमालिनी, पुत्रश्रेणिका, आमलकी, हिलोलिका, चोरटा)

संस्कृतभाषामें	भूम्यामलकी।
हिन्दीभाषामें	मुँईआमला, भद्रआँवला, पतालआंवरा, भोमिआँवरा
वङ्गभाषामें	मुँईआमला।
मराठीभाषामें	मुईआंवळी।
गुजरातीभाषामें	भोंआंवली।

कर्णाटकीभाषामें आर्रुनेल्लि ।
तैलंगीभाषामें नेलाउसीरीके ।
लैटिन्भाषामें फाईलेन्थस् निरुरी Phyllanthusniruri
फाईलेन्थस् युरिनेरिया P. urinaria.

अस्या गुणाः ।

भूधात्रीचकषायाम्लापित्तमेहविनाशिनी ।
शिशिरामूत्ररोघार्त्तिशमनीदाहनाशिनी ॥ (रा. नि.)

अर्थ-भुँईआमला -कषेला, खट्टा, शीतल तथा पित्त और प्रमेहनाशक, मूत्ररोधनिवारक और दाहको शान्त करनेवाला है ।

अन्यच्च ।

भूधात्रीवातकृत्तिक्ताकषायामधुराहिमा ।
पिपासाकासपित्तास्रकफपाण्डुक्षतापहा ॥ (भा. प्र.)

अर्थ-भुँईआमला-वातकारक, कडवा, कषेला, मधुर, शीतल तथा पियास, खांसी, रक्तपित्त, कफ, पांडुरोग और क्षतनाशक है ।

अन्यच्च ।

भूधात्रीतुविशेषेणविषघ्नीपुत्रदायिनी ॥ (शो. नि.)

अर्थ-भुँईआमला-विशेषकरके विषनाशक और पुत्रदायक है ।

अपिच ।

भूधात्रीतुहिमातिक्ताकषायामधुरालघुः ।
रोचनीपाण्डुपित्तास्रकफकुष्ठविषापहा ॥
जयेच्छ्वासतृषांदाहंहिक्काकासक्षतक्षयान् । (ग. नि.)

अर्थ-भुँईआमला-शीतल, कडवा, कषेला, मधुर, हलका, रुचिकारक तथा पाण्डुरोग, रक्तपित्त, कफ, कोढ, विष, श्वास, तृषा, दाह, हिचकी, खाँसी, क्षत और क्षयका नाश करे है ।

विवरण । भुईआमलेके क्षुप छोटे २ होते हैं पत्तोंके नीचे राईके दानेके समान फलोंकी शाखा होती है ।

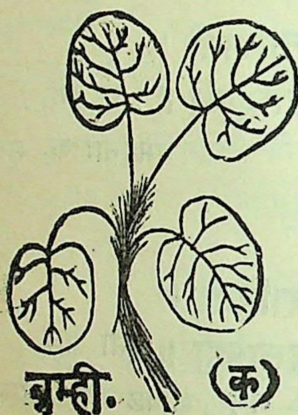
ब्राह्मीनामानि ।

ब्राह्मीवयस्थामत्स्याक्षीसुरसाब्रह्मचारिणी ॥

अर्थ-ब्राह्मी, वयस्था, मत्स्याक्षी, सुरसा, ब्रह्मचारिणी (सोमवल्लरी) मत्स्याक्षी, सरस्वती, सोम्या, सुरश्रेष्ठा, सुवर्चला, कपोतवेगा, वैधाजी, दिव्य-

तेजा, महौषधि, स्वायम्भुवी, सौम्यलता, सुरेष्टा, ब्रह्मकन्यका, मण्डूकमाता, मण्डूकी, मेध्या, वीरा, भारती, वरा, परमेष्ठिनी, दिव्या, शारदा, कपोतवङ्का, सोमवल्ली)

मण्डूकपर्णीनामानि ।





मण्डूकपर्णीमण्डूकीभेकीमण्डूकपर्णिका ॥

अर्थ—मण्डूकपर्णी, मण्डूकी, भेकी, मण्डूकपर्णिका (माण्डूकी, त्वाष्ट्री, दिव्या, महौषधी, ब्रह्ममण्डूकी, सुप्रिया, दर्दुच्छदा)

संस्कृतभाषामें	ब्राह्मी, मांडूकी, ब्रह्ममांडूकी ।
हिन्दीभाषामें	ब्रह्मी, ब्रह्ममांडूकी, वरंभी, चरेली ।
वंगभाषामें	ब्रह्मीशाक, अधविर्णी, थुलकुडि, थाल्कुनि ।
मराठीभाषामें	ब्राह्मी ।
गुजरातीभाषामें	ब्राह्मी, विद्याब्राह्मी, खडभरामी ।
कर्णाटकीभाषामें	औदेलग ।
तैलिंगीभाषामें	शम्ब्रनीचेट्टु, मंडूकब्रम्मी ।
तामिलीभाषामें	वीमी, वल्लरीकेरी ।
वम्०	वाम, ब्रह्मी ।
इंग्रेजीभाषामें	इण्डियन् पेनीवर्ट । Indian penny wort
लैटिन्भाषामें	हाइड्रो कोटाईल एश्याटीका Hydrocotyle Assiatica
फारसीबाषामें	जरनव ।

ब्राह्मीगुणाः ।

ब्राह्मीहिमासरातिक्तालघ्वीमेध्याचशीतला । कषायामधुरा

स्वादुपाकायुष्यारसायनी ॥ स्वर्य्यास्मृतिप्रदाकुष्ठपाण्डुमेहास्त्रकासजित् । विषशोथज्वरहरीतद्वन्मण्डूकपर्णिनी ॥ (भा. प्र.)

अर्थ-ब्राह्मी-हिम, सारक, (दस्तावर), हलकी, मेधाकारक, शीतल कषेली, मधुर, स्वादुपाकी, आयुर्वर्द्धक, रसायन, स्वरको उत्तम करनेवाली, स्मरणशक्तिवर्द्धक तथा कोढ, पाण्डु, प्रमेह, रुधिरविकार, खांसी, विष, सूजन और ज्वरको हरनेवाली है, इसकेही समान मण्डूकपर्णीके गुण जानने।

अन्यच्च ।

ब्राह्मीतुभेदिनीगुर्वीमेध्यापित्तकफापहा ॥ (रा. व.)

अर्थ-ब्राह्मी-भेदक, भारी, मेधाजनक, तथा पित्त और कफनाशकहै।

अपिच ।

ब्राह्मीशीताकषायाचतिक्ताबुद्धिप्रदामता । मेध्यायुरग्निजननीसारकास्वादुलालघुः ॥ कण्ठशुद्धिकरीहृद्यास्मृतिदाचरसायना । हृद्यामेहंविषंकुष्ठंपांडुकासंज्वरंजयेत् । शोफकण्डूप्लीहवातरक्तपित्तारुचीर्जयेत् । श्वासंशोषंसर्वदोषंकफवातामयाञ्जयेत् । सर्वेप्येतेगुणाब्रह्ममण्डूक्यामपिसंस्थिताः । (नि. र.)

अर्थ-ब्राह्मी-शीतल, कषेली, कडवी, बुद्धिदायक, मेधाजनक, आयुर्वर्द्धक, अग्निजनक, सारक, स्वादिष्ठ, हलकी, कण्ठशोधक, हृदयको हितकारी, स्मरणशक्तिवर्द्धक, रसायन तथा प्रमेह, विष, कोढ, पाण्डुरोग, खांसी, ज्वर, सूजन, कण्डु, प्लीहा, वातरक्त, पित्त, अरुचि, श्वास, शोष, सकलदोष, कफ और वातको दूर करनेवाली है। ब्रह्ममाण्डूकीके भी इसीके समान गुण जानने।

अन्यच्च ।

ब्राह्मीतुपिच्छिलायुष्यासरोन्मादविमर्दिनी ।
वयसःस्थापनीमेध्यावाक्स्वरस्मृतिदापरा ॥
तिक्ताहृद्याकटुःपाकेश्वासश्लेष्मनिकृन्तनी । (ग. नि.)

अर्थ-ब्राह्मी-पिच्छिल, आयुर्वर्द्धक, सारक (दस्तावर), उन्मादनाशक, अवस्थास्थापक, मेधाकारक तथा वाणी, स्वर और स्मरणशक्तिवर्द्धक है। कडवी, हृदयको हितकारी, पचनेमें चरपरी और श्वास तथा कफनाशक है।

मण्डूकपर्णी गुणाः ।

मण्डूकपर्णिकालघ्वीस्वादुपाकासराहिमा ॥

अर्थ--ब्रह्ममाण्डूकी--हलकी, पचनेमें स्वादिष्ठ, दस्तावर और शीतल है।

अस्यार्कगुणाः ।

ब्रह्ममण्डूकिकापाण्डुविषशोथज्वरान्हरेत् ॥ (इतिदशा.)

अर्थ-ब्रह्ममण्डूकीका अर्क-पाण्डुरोग, विषदोष, सूजन और ज्वरको दूर करनेवाला है ।

विवरण । ब्रह्मीके क्षुपका छत्तासा प्रायः सजल क्षिति अथवा जलाशयके समीप भूमिमें होता है, पत्ते--छोटे २ गोल एक ओरसे खिले हुए होते हैं दूसरी ब्रह्ममण्डूकी होती है, उसके पत्ते--छोटे होते हैं ।

द्रोणपुष्पीनामानि ।

द्रोणाचद्रोणपुष्पीचफलेपुष्पाचकीर्त्तिता ॥

अर्थ-द्रोणा, द्रोणपुष्पी, फलेपुष्पा, (क्षवपत्री, कुम्भयोनि, कुरुम्बिका, चित्राक्षुप, कुरुम्बा, सुपुष्पी चित्रपत्रिका, श्वसनक, पालिन्दी, कुम्भयोनिका, छत्राणी, छत्रका, कौण्डिन्य, वृक्षसारक)

संस्कृतभाषामें	द्रोणपुष्पी ।
हिन्दीभाषामें	गूमा, गोमा ।
बंगालीभाषामें	द्रोणपुष्पी (घलघसे)
मराठीभाषामें	कुम्भा, तुम्बा ।
गुजरातीभाषामें	कुबो ।
कर्णाटकीभाषामें	तुम्ब ।
तैलिङ्गीभाषामें	लतुगतुम्मि ।
लैटिन्भाषामें	ल्युकासूसिफेलोटस् Leucas cephalotus

अस्या गुणाः ।

द्रोणपुष्पीगुरुःस्वाद्वीरूक्षोष्णावातपित्तकृत् ।
सतीक्ष्णालवणास्वादुपाकाकट्वीचभेदिनी ॥
कफामकामलाशोथतमकश्वासजन्तुजित् । (भा. प्र.)

अर्थ-द्रोणपुष्पी (गूमा)--भारी, स्वादिष्ठ, रूखी, गरम, वातपित्तकारक, तीक्ष्ण और लवणरसयुक्त, पचनेमें भी स्वादिष्ठ, चरपरी, दस्तावर तथा कफ, आम, कामला, सूजन, तमकश्वास और कृमिको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

द्रोणपुष्पीकफार्शोघ्नीकामलाकृमिशोथजित्॥ (रा व.)

अर्थ-द्रोणपुष्पी (गूमा)-कफ, बवासीर, कामला, कृमि और सूजनको दूर करे है।

अपिच ।

द्रोणपुष्पीकटुःसोष्णारुच्यावातकफापहा ।
अग्निमांद्यहराचैवपक्षाघातस्यनाशिनी ॥ (शो. नि.)

अर्थ-गूमा-चरपरा, गरम, रुचिकारक तथा वात, कफ, मंदाग्नि और पक्षाघात रोगनाशक है ।

अस्या पत्रगुणाः ।

द्रोणपुष्पीदलंस्वादुरूक्षंगुरुचपित्तकृत् ।
भेदनंकामलाशोथमेहज्वरहरंकटु ॥ (भा. प्र.)

अर्थ-गूमाके पत्ते-स्वादिष्ठ, रूखे, भारी, पित्तकारक, भेदक तथा कामला, सूजन, प्रमेह और ज्वरको हरनेवाले है ।

विवरण । गूमाका क्षुप होता है, गुच्छे गांठ २ में होते हैं, उन गुच्छोंमें सफेद फूल होता है । और फूलके ऊपर दो पत्ते होते हैं । इसके भीतर बीज होते हैं । मात्रा २ मासेकी ।

आदित्यभक्तानामानि ।

आदित्यभक्तावरदार्कभक्तासुवर्चलासूर्यलतार्ककान्ता ।
मण्डूकपर्णीसुरसंभवाचसौरिस्सुतेजार्कहितारवीष्टा ॥
मण्डूकीसत्यनाम्नीस्यादेवामार्तण्डवल्लभा ।
विक्रान्ताभास्करेष्टाचभवेदष्टादशाह्वया ॥

अर्थ-आदित्यभक्ता, वरदा, अर्कभक्ता, सुवर्चला, सूर्यलता, अर्ककान्ता, मण्डूकपर्णी, सुरसम्भवा, सौरि, सुतेजा, अर्कहिता, रवीष्टा, मण्डूकी, सत्यनाम्नी, मार्तण्डवल्लभा, विक्रान्ता, भास्करेष्टा (सूर्य्यावर्त्ता, रविप्रीता) और दूसरी ब्रह्मसुवर्चला इसीकाही भेद है ।

संस्कृतभाषामें आदित्यभक्ता, सुवर्चला, ब्रह्मसुवर्चला ।
हिन्दीभाषामें हुरहुज, ब्रह्मसोंचली, सोंचली ।
वंगभाषामें हुडहुडे, वनशलते

मराठीभाषामें	सूर्यफूल ।
गुजरातीभाषामें	सूरजमुखी ।
कर्णाटकीभाषामें	हुरहुर, आदित्यभक्ति ।
तैलिङ्गीभाषामें	सूर्यकान्तिमु ।
अंग्रेजीभाषामें	संफ्लावर ।Sunflower
लैटिन्भाषामें	हेलिएन्थसू एन्युअसू । Helianthus annus
फारसीभाषामें	गुलेआफतावपरस्त ।
अरबीभाषामें	अरदमून ।

आदित्यभक्तागुणाः ।

आदित्यभक्ताशिशिरासतिक्तापटुस्तथोग्राकफहारिणीच।
त्वग्दोषकण्डूव्रणकुष्ठभूतग्रहोग्रशीतज्वरनाशिनीच॥ (रा.)

अर्थ-आदित्यभक्ता (हुरहुज)-शीतल, कडवी, खारी, उग्र, कफनाशक तथा त्वचाके विकार, कण्डू, व्रण, कुष्ठ, भूत और उग्रशीतज्वरनाशक है।

अन्यच्च ।

आदित्यभक्ताकटुकाशीतातिक्तातिपित्तला। रूक्षास्वाद्वी चकटूवीचकफवातव्रणापहा।शीतज्वरंभूतबाधांग्रहपीडांवि नाशयेत्॥मेहंकृमींश्चकुष्ठश्चत्वग्दोषश्चविनाशयेत्॥ (नि. र.)

अर्थ-आदित्यभक्ता(हुरहुज)-चरपरी, शीतल, कडवी, अत्यन्त पित्त कारक, रूखी, स्वादिष्ठ, खारी, तथा कफ. वात, व्रण, शीतज्वर, भूतबाधा, ग्रहपीडा, प्रमेह, कृमि, कोढ और त्वचाके दोषोंको दूर करनेवाली है।

अन्यच्च ।

सुवर्चलाहिमारूक्षास्वादुपाकासरागुरुः ।
अपित्तलाकटुःक्षाराविष्टम्भकफवातजित् ॥ (भा. प्र.)

अर्थ-हुरहुज-शीतल, रूखा. पचनेमें स्वादिष्ठ, दस्तावर, भारी. पित्तकारक नहीं, चरपरा, खारी तथा विष्टम्भ,कफ और वातको दूर करनेवाला है।

अपिच ।

सुवर्चलागुरुःशीतामूत्रलाकर्णशूलनुत् ॥

अर्थ-हुरहुज-भारी, शीतल, मूत्रजनक और कर्णशूलनाशक है।

ब्रह्मसुवर्चलागुणाः ।

अन्यातिक्ताकषायोष्णासरारूक्षालघुःकटुः ।

निहन्तिकफपित्तास्रश्वासकासारुचिज्वरान् ॥
विस्फोटकुष्ठमेहास्रयोनिरुक्कृमिपाण्डुताः ॥

अर्थ-ब्रह्मसुवचला (ब्रह्मसोचली) -कषेली, गरम, सारक, (दस्तावर) हलकी, चरपरी तथा कफ, रक्तपित्त, खांसी, अरुचि;ज्वर, विस्फोटक, कोढ, प्रमेह, रुधिरविकार, योनिरोग; कृमि और पाण्डुरोगको दूर करनेवाली है ।

अन्यच्च ।

अन्योष्णाकुष्ठमेहाश्मकृच्छ्रज्वरहरालघुः॥ (म. नि.)

अर्थ-ब्रह्मसौचली-गरम, हलकी तथा कोढ, प्रमेह, पथरी, मूत्रकृच्छ्र और ज्वरको हरनेवाली है ।

आदित्यपत्त्रागुणाः ।

आदित्यपत्त्रावीर्योष्णाकटूवीसंदीपनीमता। स्वर्यारसायनी तिक्तातुवराचसरामता॥रूक्षालघ्वीचसंप्रोक्ताकफवातविनाशिनी। रक्तदोषंज्वरंश्वासंकासविस्फोटकंतथा ॥ कुष्ठं मेहंचारुचिंचयोनिशूलंतथाश्मरीम्। मूत्रकृच्छ्रंपाण्डुरोगं गुल्मश्चैवविनाशयेत् ॥ (नि० र०)

अर्थ-आदित्यपत्रा-उष्णवीर्य, चरपरा, अग्निप्रदीपक, स्वरको उत्तम करनेवाला, रसायन, कडवा, कषेला, दस्तावर, रूखा, हलका तथा कफ, वात, रुधिरविकार, ज्वर, श्वास, खांसी, विस्फोटक, कोढ, प्रमेह, अरुचि, योनिशूल, पथरी, मूत्रकृच्छ्र, पाण्डुरोग और गुल्मका नाश करे है ।

विवरण । ब्रह्मसुवर्चला-अर्थात् हुरहुरकी बेल तथा क्षुप होतेहैं, यह विशेषकरके बागोंमें बोये जाते हैं, प्रायः इसपर सूर्योदयके होनेपर फूल प्रफुल्लित होजाते हैं, बेलवाले हुरहुरमें जो फूल आते हैं वह नीले रंगके होते हैं, और क्षुपवाले हुरहुरके फूल सफेद होते हैं, बहुत सुन्दर और सूर्य्याकार होते हैं, परन्तु बहुत छोटे २ होते हैं ।

वन्ध्याकर्कोटकीनामानि ।

वन्ध्याकर्कोटकीदेवीकान्तायोगेश्वरीतिच ।
नागारिर्भक्तदमनीविषकण्टकिनीतथा ॥

अर्थ-वन्ध्याकर्कोटकी, देवी, कान्ता, योगेश्वरी, नागारि, भक्तदमनी, विषकण्टकिनी (नागाराति, वन्ध्या, नागहन्त्री, मनोज्ञा, पथ्या, दिवा पुत्रदा,

सकन्दा कन्दवल्ली; ईश्वरी, श्रीकन्दा,सुगन्धा, सर्पदमनी,विषकन्दकिनी, वरा, नक्रदमनी,कन्दशालिनी, भूतापहा, सर्वौषधी,विषमोहप्रशमनी,महायोगेश्वरी।

संस्कृतभाषामें	वन्ध्याकर्कोटकी ।
हिन्दीभाषामें	बांझखखसा, बनककोडा, बांझककोडा।
वंगभाषामें	तित्काँकरोल, तित्कांकडी ।
मराठीभाषामें	बांझकर्टोली ।
गुजरातीभाषामें	वांझकण्टोलो ।
कर्णाटकीभाषामें	बंजेमडुवागलु ।

लैटिनभाषामें मोमोर्डिका डायोइकामेल । Momodic a dioicamal.

अस्या गुणाः ।

वन्ध्याकर्कोटकीतिक्ताकटूष्णाचकफापहा ।
स्थावरादिविषघ्नीचशस्यतेसारसायने ॥ (रा. नि.)

अर्थ-बांझककोडा-कडवा, चरपरा, गरम, कफनाशक, स्थावरादि विष विनाशक और पारेको बांधनेवाला है ।

अन्यच्च ।

वन्ध्याकर्कोटकीलघ्वीकफनुद्व्रणशोधिनी ।
सर्पदर्पहरीतीक्ष्णाविसर्पविषहारिणी ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-वनककोडा-हलका, कफनाशक, व्रणशोधक, सर्पके विषको हरने वाला, तीक्ष्ण तथा विसर्प और विषको दूर करनेवाला है।

अपिच ।

वन्ध्याकर्कोटकीतिक्ताकटूवीचोष्णालघुःस्मृता । रसायनी शोधिनीचस्थावरादिविषापहा ॥ कफनेत्रशिरोरोगव्रणवी-सर्पकासहा।रक्तदोषंसर्पविषंनाशयेद्दितिकीर्त्तिता॥ (नि. र.)

अर्थ-वनककोडा-कडवा, चरपरा, गरम, हलका, रसायन, शोधक, स्थावरादिविषनाशक तथा कफ, नेत्ररोग, मस्तकरोग, व्रण, विसर्प, खांसी, रुधिर विकार और सांपके विषको दूर करनेवाला है ।

विवरण-वन्ध्याकर्कोटकी अर्थात् बांझककोडेकी बेल ककोडेके समान बांगलके वृक्षोंपर फैलजातीहै, परन्तु इसमें फल नहीं आते, इसलियें इसको जंझककोडा कहते हैं, फलके स्थानमें खाली एक कोष होताहै और इसकी जडके नीचे खोदनेसे एक केन्द निकलता है ।

अस्याः कन्दगुणाः ।

वन्ध्याकर्कोटकीकन्दो हन्ति श्लेष्मविषद्वयम् ॥ (शो. नि.)

अर्थ—वनमकोडेका कन्द—कफ और दोनों प्रकारके विष, (स्थावर और जंगम) को दूर करनेवाला है ।

मार्कण्डिकानामानि ।

मार्कण्डिका भूमिचरी मार्कण्डी मृदुरेचनी ॥

अर्थ—मार्कण्डिका, भूमिचरी, मार्कण्डी, मृदुरेचनी, (भूमिवल्ली, पीतपुष्पी, पीतपुष्पा, महौषधी, जालतीका)

संस्कृतभाषामें	मार्कण्डिका ।
हिन्दीभाषामें	भुईखखसा । (सनाय)
वंगभाषामें	कांकरोलभेद ।
मराठीभाषामें	सोनामुखी ।
द०	सोनामुखी ।
दे०	आहुली ।
गुजरातीभाषामें	मीठीआवलय ।
कर्णाटकीभाषामें	नलाडवल्ली ।
तैलङ्गीभाषामें	नेलतंवडी ।
अंग्रेजीभाषामें	आलेक्झाण्ड्रियन-सेना । Alexandrian-sena
लैटिन्भाषामें	सेन्नेफ़ोलिआ । Sennafolia
	केसियाएगस्टिफोलिआ । Cassia augustifolia
फारसीभाषामें	सना ।
अरबीभाषामें	सना ।

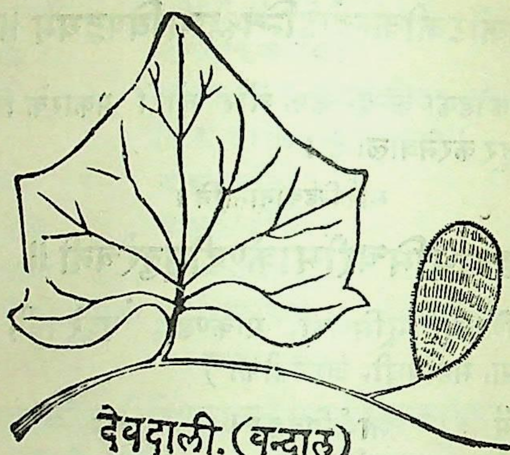
अस्या गुणाः ।

मार्कण्डिका कुष्ठहरी ऊर्ध्वाधःकायशोधिनी ।
विषदुर्गन्धकासघ्नी गुल्मोदरविनाशिनी ॥ (भा. प्र.)

अर्थ-भुईखखसा-कुष्ठनाशक, ऊपर और नीचेसे शरीरका शोधन करनेवाला, तथा विष, दुर्गन्ध, खांसी, गुल्म और उदररोगोंको हरनेवाला है ।

विवरण । भुईखखसाकी एक लता होती है, पत्ते—परवलके समान होते हैं और फूल पीले रंगके होते हैं ।

देवदालीनामानि ।



देवदाली. (वन्दाल)

जीमूतकःकण्टफलागरागरीवेणीसहाकोषफलाचकटूफला ।
घोराकदम्बाविषदाचकर्कटीस्याद्देवदालीखलुसारमूषिका॥
वृत्तकोषाविषघ्नीचदालीलोमशपत्रिका ।
तुरंगिकाचतर्कारीनाम्नामेकोनविंशतिः ॥

अर्थ–जीमूतक, कण्टफला, गरागरी, वेणी, सहा, कोषफला, कटूफला, घोरा, कदम्बा, विषहा, कर्कटी, देवदाली, सारमूषिका, वृत्तकोषा, विषघ्नी, दाली, लोमशपत्रिका, तुरंगिका, तर्कारी (देवताड, गरनाशिनी, वेणा आखुविषहा, चतुरंगका, देवदालिका, पीता, खरस्पश)

संस्कृतभाषामें	देवदाली ।
हिन्दीभाषामें	सोनैया, घघरबेल, बिदाली घुसरान वंदाल।
वंगभाषामें	घोषकलताविशेष, देयाताडा ।
मराठीभाषामें	देवदाली, देवडंगरीफल ।
गुजरातीभाषामें	कुकडवेल्य ।
तैलिङ्गीभाषामें	डातरगण्डि, लताविशेषमु ।
कर्णाटकीभाषामें	देवडङ्गर ।
अंग्रेजीभाषामें	ब्रिस्टलि–ल्युफा । Bristly-lufia
लैटिन्भाषामें	ल्युफाएकिनेटा । Luffa Echinata
या०	वंदाल ।

अस्या गुणाः ।

देवदालीरसेपाकेतिक्तातीक्ष्णाविषापहा ।

वामनीहन्तिगुदजकफशोफाममकामलाः ॥
ज्वरकासारुचिश्वासहिध्मापाण्डुक्षयक्रिमीन् । (रा. नि.)

अर्थ—देवदाली (धनरबेल)-रस और पाकमें कडवी, तीक्ष्ण, विषनाशक, वमनकारक, तथा गुदजरोग, कफ, शोफ, आम, कामला, ज्वर, खांसी, अरुचि, श्वास, हिध्म, पाण्डु और क्षयरोगका नाश करे है ।

अपिच ।

देवदालीवमिकरातिक्ताचोष्णाचऊष्मणा।तीक्ष्णापाण्डुक-फश्वासकासार्शःक्षयनाशिनी॥कामलाक्रिमिहिक्काघ्नीज्वर शोथविषापहा । भूतबाधारुचिहरा चोंदुरोर्विषनाशिनी॥ फलमस्याःसरंतिक्तंगुल्मक्रिमिकफापहम्। शूलार्शःकाम-लावातनाशकंपरिकीर्त्तितम् ॥ (नि. र.)

अर्थ—देवदाली (घघरबेल)-वमनकारक, कडवी, गरम, चरपरी, तीक्ष्ण तथा पाण्डुरोग, कफ, श्वास, खांसी, बवासीर, क्षय कामला, कृमि, हिचकी, ज्वर, सूजन, विष, भूतबाधा, अरुचि और मूषेके विषको दूर करनेवाली है । इसका मूल-सारक, कडवा तथा गुल्म, कृमि, कफ, शूल, बवासीर और कामला वातको हरनेवाली है ।

अन्यच्च ।

देवदालीत्रयंश्वासज्वरकासकफापहम् ।
आखोर्विषंनिहन्त्याशुवामकञ्चविरेचकम् ॥
श्वेतारक्ताचपीताचदेवदालीगुणैःसमा । (शो. नि.)

अर्थ—तीनों प्रकारकी देवदाली-श्वास, ज्वर, खांसी, कफ और मूषेके विषको दूर करे है तथा वमनकारक और विरेचक है । सफेद, लाल और पीली इन तीनों देवदालीके गुण समान हैं ।

विवरण । देवदाली, वन्दाल, घघरबेल, सुनैया और खखसाके फलवाली बड़ीबेल होती है, खेतकी वाडोंपर किसान लोग बहुत लगा देते हैं, फूल-सफेद पीले और लाल तीन रंगके होते हैं, फलोंके ऊपर बहुत छोटे २ कांटे होते हैं, इसका फल छोटी तुराईकेसा होता है ।

जलपिप्पलीनामानि ।

जलपिप्पल्यभिहिताशारदीशकुलादनी ।

मत्स्यादनीमत्स्यगन्धालाङ्गलीत्यपिकीर्त्तिता ॥

अर्थ-जलपिप्पली, शारदी, शकुलादनी, मत्स्यगन्धा, लाङ्गली (महाराष्ट्र) तोयवल्लरी, अग्निज्वाला, चित्रपत्री, प्राणदा, तृणशीता, बहुशिखा)

संस्कृतभाषामें	जलपिप्पली ।
हिन्दीभाषामें	पनिसिगा, गंगतिरिया, जलपीपर ।
वंगभाषामें	कॉंचडाघास, पनिसिगा ।
मराठीभाषामें	जलपिंपळी ।
गुजरातीभाषामें	रतवेलियो ।
कर्णाटकीभाषामें	होमुगुलु ।
अंग्रेजीभाषामें	परपल् लिप्पा । Purple Lippla
लैटिन्भाषामें	लिपियानोडिफ्लोरा । Lippia Nodiflora
फारसीभाषामें	पीपलआवी ।
अरबीभाषामें	फिलफिलमाय ।

अस्या गुणाः ।

जलपिप्पलिकाहृद्याचक्षुष्याशुक्रलालघुः ।
संग्राहिणीहिमारूक्षारक्तदाहव्रणापहा ॥
कटुपाकरसारुच्याकषायावह्निवर्द्धिनी । (भा. प्र.)

अर्थ-जलपीपल-हृदयको हितकारी, नेत्रोंको हितकारी, शुक्रजनक, हलकी, मलरोधक, शीतल, रूखी, पचनेमें और रसमें चरपरी, रुचिकारक, कषेली, अग्निवर्द्धक तथा रुधिरविकार, दाह और व्रणको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

जलपिप्पलिकाहृद्याचक्षुष्याशीतलामता । रसकालेचकटुकाग्राहिणीशुक्रलालघुः ॥ रूक्षातीक्ष्णाचतुवरामुखशुद्धिकरीमता । रुच्याग्निदीपनीवातकारिणीरक्तदोषहा ॥ रसदोषंकृमीन्दाहंव्रणंश्वासंकफंतथा । वातंविषंभ्रमंमूर्च्छांतृषांपित्तज्वरंहरेत् ॥ (नि. र.)

अर्थ-जलपीपल-हृदयको हितकारी, नेत्रोंको हितकारी, शीतल, कटुरसान्वित, ग्राही, शुक्रजनक, हलकी, रूखी, तीक्ष्ण, कषेली, मुखको शुद्ध करनेवाली, रुचिकारक, अग्निप्रदीपक, वातकारक तथा रुधिरविकार, रस

शोष, कृमि, दाह, व्रण, श्वास, कफ, वात, विष, भ्रम, मूर्च्छा, तृषा और पित्तज्वरको दूर करे है ।

विवरण । जलपीपलके क्षुप-प्रायः सजल भूमिमें उत्पन्न होते हैं. पत्ते-बडी सेंतियाके समान और नोंकदार होते हैं, इसमें पीपलके समान एक बाल निकलती है ।

गोजिह्वानामानि ।



गोजिह्वादार्विकागोभीकुरसादार्विपत्रिका ॥

अर्थ-गोजिह्वा, दार्विका, गोभी, कुरसा, दार्विपत्रिका (अनडुजिह्वा, ...िका, दर्वी, दार्वी, गोजिह्विका, खरपत्री, वातोना, अधोमुखा, अधःपुष्पी)

संस्कृतभाषामें	गोजिह्वा ।
हिन्दीभाषामें	गोजिया गोभी ।
बङ्गभाषामें	दाडिशाक ।
मराठीभाषामें	पाथरी ।
गुजरातीभाषामें	भोपाथरी ।
तैलिङ्गीभाषामें	येद्दुनालुकचेद्दु, भरीलिकचेद्दु ।
लेटिन्भाषामें	एलिफेण्टोपस् स्केबर । Elophuntopus Scabar
फारसीभाषामें	कलमरूमी ।

अस्या गुणाः ।

गोजिह्वावातलाशीताग्राहिणीकफपित्तनुत् ।
हृद्यात्रमेहकासास्रव्रणज्वरहरीलघुः ॥
कोमलातुवरातिक्तास्वादुपाकारसास्मृता । (भा. प्र.)

अर्थ-गोभी-वातकारक, शीतल, ग्राही, कफपित्तनाशक, हृदयको हितकारी हलकी तथा प्रमेह, खांसी, रुधिरविकार, व्रण और ज्वरको हरनेवाली है तथा कोमल, कषेली, कडवी, पचनेमें और रसमें स्वादिष्ट है।

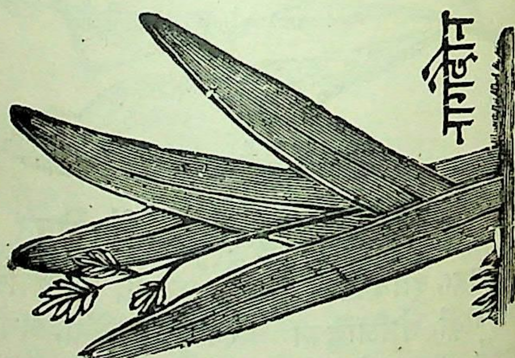
अन्यच्च।

गोजिह्वाकटुकातिक्ताशीतलाव्रणरोपिणी।
पित्तंसर्वविषंहन्तिकासारुचिविनाशिनी॥ (नि. र.)

अर्थ-गोभी-चरपरी, कडवी, शीतल, व्रणको भरनेवाली तथा पित्त, सब प्रकारके विष, खांसी और अरुचिको दूर करनेवाली है।

विवरण। गोभीका क्षुप होता है, पत्ते-लम्बे और खरखरे होते हैं, फूल सुवर्णके वर्णके समान चक्राकार होता है, पत्तोंके बीचमें एक वाल निकलती है। इसको शाकरी गोभी नहीं समझना चाहिये।

नागदमनीनामानि।



विज्ञेयानागदमनीबलामोटाविषापहा।
नागपुष्पीनागपत्रामहायोगेश्वरीतिच॥

अर्थ-नागदमनी, बला, मोटा विषापहा, नागपुष्पी, नागपत्रा, महायोगेश्वरी, (जम्बु, जाम्बवती, वृक्का, रक्तपुष्पी, जाम्बवी, मलघ्नी, दुर्धर्षा, दुःसहा, वृत्ता, वृत्तपुष्पा, मदघ्नी, विषमर्दिनी, विफला, वनकुमारी, विषारी, श्रीकन्दा, कंदशालिनी, विषविनाशिनी)

संस्कृतभाषामें	नागदमनी।
हिन्दीभाषामें	नागदमन, नागदौन।
बंगलाभाषामें	नागदना।
मराठीभाषामें	नागदवणी।
गुजरातीभाषामें	नागडमण।
कर्णाटकीभाषामें	नागदमनी।

तैलङ्गीभाषामें ईश्वरिचेंट्टु दरणमु ।
तामिलीभाषामें माचिपत्री ।
बंगालीभाषामें तितापात ।
लेटिन्‌भाषामें आरटिमसियाबुल्गेरिस् साइन. ए. इण्डियन ।
Artimsia vulgoris Syn A Indian.

अस्या गुणाः ।

नागदमनी ...मोटाकटुस्तिक्तालघुःपित्तकफापहा । मूत्रकृच्छ्रव्रणा-
रक्षोनाशयेज्जालगर्दभम् ॥ सर्वग्रहप्रशमनीविशेषविषना-
शिनी । जयंसर्वत्रकुरुतेधनदासुमतिप्रदा ॥ (भा. प्र.)

अर्थ-नागदौन-चरपरी, कडवी, हलकी, तथा पित्त, कफ, मूत्रकृच्छ्र, व्रण, राक्षसबाधा, और जालगर्दभरोगको दूरकरनेवाली है । सर्वग्रहोंको शान्ति करनेवाली और विशेषकरके विषनाशक है, सर्वत्र जयकारक, धन, और सुमतिदायक है ।

अन्यच्च ।

ज्ञेयाजम्बूस्त्रिदोषघ्नीतीक्ष्णोष्णाकटुतिक्तका ।
उदराध्मानदोषघ्नीकोष्ठशोधनकारिणी ॥ (रा. नि.)

अर्थ-नागदौन -त्रिदोषनाशक, तीक्ष्ण, गरम, चरपरी, कडवी, उदरके रोगोंको दूर करनेवाली, और कोठेको शुद्ध करनेवालीहै ।

अपिच ।

प्रोक्तानागदमन्युष्णातिक्तालघ्वीरुचिप्रदा ।
कोष्ठशुद्धिकरीतीक्ष्णाकटुकायोनिदोषजित् ॥
लूतांसर्पविषंवातंकफंवान्तिंकृमीन्व्रणम् ।
मूत्रकृच्छ्रंचोदरञ्चजालगर्दभकंतथा । त्रिदोषञ्चप्रमेहञ्चका-
संकण्ठरुजंतथा । शूलंगुल्मंरक्तदोषंज्वरंसर्वविषाणिच ।
आध्मानंग्रहपीडाञ्चनाशयेदितिकीर्तिता । (नि. र.)

अर्थ-नागदौन..गरम, कडवी, हलकी, रुचिदायक, कोठेको शुद्धकरने-वाली, तीक्ष्ण, चरपरी तथा योनिदोष, मकडी और साँपका विष, कफ, वमन, कृमि, घाव, मूत्रकृच्छ्र, उदररोग, जालगर्दभ, त्रिदोष, प्रमेह, खांसी,

कण्ठरोग, शूल, गुल्म, रुधिरविकार, ज्वर, सर्वविष, आध्मान और ग्रही डाको दूर करनेवाली है ।

विवरण । नागदमनको कितनेक वैद्य तो दौना कहते हैं और कि भिषग्वर सुदर्शन कहते हैं, सो हमको ठीक २ निश्चय नहीं होता कि दमन क्या वस्तु है ।

छिक्कनीनामानि ।



नकछिकनी.

छिक्कनीक्षवकृत्तीक्ष्णाछिक्किकाघ्राणदुःखदा ।

अर्थ--छिक्कनी, क्षवकृत्, तीक्ष्णा, छिक्किका, घ्राणदुःखदा, (उग्रा, उग्र क्षवक, क्रूरनासा, संवेदनापटु)

संस्कृतभाषामें	छिक्कनी ।
हिन्दीभाषामें	नाकछिकनी ।
बंगलाभाषामें	हाँचुटी, छिकनी, हेंचतागाछ ।
मराठीभाषामें	नाकशिकणी ।
गुजरातीभाषामें	नाकछीकणी ।
लैटिन्भाषामें	सेंटिपीडा अर्बिकयुलरीस्। Sentipeda Orbicula
फारसीभाषामें	बेरगाउजबां ।
अरबीभाषामें	उफरककुदुश ।

अस्या गुणाः ।

छिक्कनीकटुकारूक्षातीक्ष्णोष्णावह्निपित्तकृत् ।
वातरक्तहरीकुष्ठकृमिवातकफापहा ॥ (भा० प्र०)

अर्थ--नाकछिकनी--चरपरी, रूखी, तीक्ष्ण, गरम, अग्निजनक, पित्तका तथा वातरक्त, कोढ, कृमि, वात, और कफनाशक है ।

अपिच ।

छिक्कनीकटुकारुच्यापित्तलाचाग्निदीपनी ।
लघ्व्युष्णातुवरातीव्रगन्धात्वग्दोषनाशिनी ॥

कफवातश्वेतकुष्ठकृमिरक्तरुजस्तथा ।
ग्रहपीडांभूतबाधांदृष्टिश्चैवविनाशयेत् ॥

अर्थ-नाकछिकनी-चरपरी, रुचिकारक, पित्तकारक, अग्निदीपक, हलकी, गरम, कषेली, तीव्रगन्धयुक्त, तथा त्वचाके दोष, कफ, वात, श्वेतकुष्ठ, कृमिरोग, रक्तविकार, ग्रहकी पीडा, भूतबाधा और दृष्टिके दोषोंको दूर करनेवाली है ।

विवरण । नाकछिकनीका क्षुप छोटा होता है, पत्ते छोटे होते हैं । इसके नीचे कंद होता है, इसकेपत्तोंको वा डंडीको सूँघनेसे छीकें आती हैं ।

अन्यच्च ।

छिक्कनीश्वासकासास्रग्विषघ्नीवामनीमता । (शो. नि.)

अर्थ-नाकछिकनी-श्वास, खांसी, रुधिरविकार और विषविनाशक है तथा वमनकारक है ।

कुकुन्दरनामानि ।

कुकुन्दरस्ताम्रचूडःसूक्ष्मपत्रोमृदुच्छदः ।

अर्थ-कुकुन्दर, ताम्रचूड, सूक्ष्मपत्र, मृदुच्छद, (कुक्कुरद्रु) ।

संस्कृतभाषामें	कुकुन्दर, कुक्कुरद्रु ।
हिन्दीभाषामें	कुकुरौंदा ।
बंगभाषामें	कुकुरशोंका कुकुरमुता ।
मराठीभाषामें	कुकुरबंदा ।
गुजरातीभाषामें	कोकरुन्दा ।
लेटिन० ,,	ब्ल्युमियाओडोरेटा । Blumea Odorata
फारसीभाषामें	कमाकिसुम ।
अरबीभाषामें	सनौवरुल अर्द ।

अस्यागुणाः ।

कुकुन्दरःकटुस्तिक्तोज्वरघ्नश्चोष्णकृन्मतः ।
रक्तरुक्कफदाहानांतृषायाश्चैवनाशनः ॥
अस्यार्द्रमूलञ्चमुखेधारितमुखदोषनुत् । (नि. र.)

अर्थ-कुकरौंदा-चरपरा, कडवा, ज्वरनाशक, गरम, तथा रुधिरविकार, कफ, दाह और तृषाको दूर करनेवाला है । इसकी कच्ची जड़को मुखमें रखनेसे मुखके रोग दूर होते हैं ।

विवरण। कुकुरौंदेके क्षुप, लम्बे लम्बे होते है। विशेष करके शरदीके स्थानोंमें उत्पन्न हो जाते हैं, पत्ते तम्बाकूके समान बडे २ होते हैं, ऊपर लाल शिखा होती है।

सुदर्शननामानि।

सुदर्शनासोमवल्लीचक्राङ्गीमधुपर्णिका।

अर्थ--सुदर्शना, सोमवल्ली, चक्रांगी, मधुपर्णिका (चक्राह्वा, वृषकर्णी, चक्राह्वा)।

हिन्दीभाषामें सुदर्शन।
वंगभाषामें सुदर्शनगुलञ्ज, पद्मगु०।

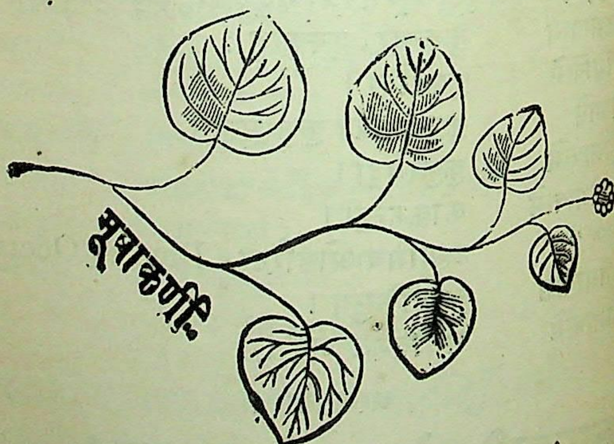
अस्या गुणाः।

सुदर्शनास्वादुरुष्णाकफशोफास्रवातजित्। (भा. प्र.)

अर्थ--सुदर्शन--स्वादिष्ट, गरम, तथा कफ, सूजन और वातरक्त हरनेवाला है।

विवरण। सुदर्शनका क्षुप चक्रके समान होता है, पत्ते लम्बे २ समान होते हैं कभी कभी किसीपर सुफेद रंगका फूलभी आता है।

आखुकर्णीनामानि।



मूषाकर्ण्याखुपर्णीचवृषपर्ण्याखुकर्णिका। भूमिचरीद्रवन्तीचशम्बरीभूधराश्रया॥

अर्थ-मूषाकर्णी-आखुकर्णी, वृषपर्णी, आखुकर्णिका, भूमिचरी, द्रवन्ती, शम्बरी, भूधराश्रया (कुशिका, उन्दुरकर्णी, न्यग्रोधी, मूषिकपर्णी, कर्णी, बहुकर्णिका, माता, भूमिचरी, चण्डा, बहुपादिका, प्रत्यक्श्रेणी, पुत्र श्रेणी, आदिभू, चित्रा, सुवर्णी, शतमूलिका, आखुपर्णिका,

पर्णी प्रतिपर्णशिफा, सहस्रमूषी, विक्रान्ता, पत्रश्रेणी, आखुपर्णी, पर्णिका, मूषिकोद्भवा, उपचित्रा, मूषिकाह्वया, रण्डा, आखुपर्णिका, मूषिका, फञ्जिपर्णिका, मूषिपर्णिका, सचित्रा मूषीकर्णी, सुकर्णिका, न्यग्रोधी)।

संस्कृतभाषामें	आखुकर्णी, मूषाकर्णी, द्रवन्ती ।
हिन्दीभाषामें	मूसाकानी ।
बंगभाषामें	उन्दुरकानीपाना ।
मराठीभाषामें	उंदिरकानी ओपनी ।
गुजरातीभाषामें	उंदरकनी ।
कर्णाटकीभाषामें	वल्लिहर्हे ।
तैलङ्गीभाषामें	एलुकचेविचेट्टु ।
लैटिन्भाषामें	आईपोमिया रेनिफोर्मिस्, Ipomoea Renniformis.
	लेक्टूकारिमोटीलफोरा । Lectcaremotiflora.
फारसीभाषामें	गोरोमुष, सवर ।
अरबीभाषामें	अजानुल्फार ।
यु०	शरदम् ।

अस्या गुणाः ।

आखुकर्णीकटुस्तिक्ताकषायाशीतलालघुः । विपाकेकटुकामूत्रकफामयकृमिप्रणुत् ॥ (भा. प्र.)

अर्थ-मूसाकानी-चरपरी, कडवी, कषेली, शीतल, हलकी, पचनेमें चरपरी तथा मूत्ररोग, कफरोग और कृमिरोगको दूर करनेवाली है ।

अन्यच्च ।

द्रवन्तीकृमिहत्तीक्ष्णायोनिदोषहरासरा । (शो. नि.)

अर्थ-मूसाकानी-कृमिनाशक, तीक्ष्ण, सारक और योनिदोषहारक है ।

अपिच ।

लघ्व्याखुकर्णीकटुकातिक्ताचोष्णाचशीतला । रसायनीरसालवीकषायाकफपित्तनुत् ॥ शूलज्वरकृमिग्रन्थिमूत्रकृच्छ्रप्रमेहहृत् ॥ अनाहोदरहृद्रोगविषपाण्डुभगन्दरान् । कुष्ठानिनाशयेदेवंपूर्ववैद्यैर्निरूपितम् ॥

अर्थ-मूसाकानी-चरपरी, कडवी, गरम, शीतल, रसायन, सारक, हलकी,

कषेली तथा कफ, पित्त, शूल, ज्वर, कृमि, ग्रन्थि, मूत्रकृच्छ्र, प्रमेह, आनाह, उदररोग, हृदयरोग, विष, पाण्डुरोग, भगन्दर और कुष्ठको दूर करनेवाली है।

बृहदाखुकर्णीगुणाः ।

आखुकर्णीबृहत्युक्ताशीतलामधुरास्मृता ।
रसबन्धकरीनेत्र्यारसायन्यथशूलनुत् ॥
ज्वरंकृमीन्व्रणंचाखुविषंचैवविनाशयेत् । (नि. र.)

अर्थ-बडी मूसाकानी-शीतल, मधुर, पारेको बांधनेवाली, नेत्रोंको हितकारी, रसायन तथा शूल, ज्वर, कृमि, व्रण और मूषेके विष हरनेवाली है।

विवरण । मूषाकर्णीका छत्ता पृथ्वी पर फैला हुआ होताहै, पत्ते मूषेके कानके समान होते हैं, हरेकपत्तेके नीचे जड होती है, डाली सूक्ष्म और लालीलिये होती हैं और फल बहुत लगते हैं ।

मयूरशिखानामानि ।

बर्हिचूडातुशिखिनीशिखालुःसुशिखाशिखा ।
शिखिबलाकेकिशिखामयूराद्याभिधाशिखा ॥

अर्थ-बर्हिचूडा, शिखिनी, शिखालु, सुशिखा, शिखा, शिखिबला, केकिशिखा, मयूरशिखा, (नीलकण्ठशिखा, सहस्राहि, मधुच्छदा, मयूरचूडा)

संस्कृतभाषामें	मयूरशिखा ।
हिंदीभाषामें	मोरशिखा (लालमुर्गा)
वङ्गभाषामें	मयूरशिखा ।
मराठीभाषामें	मयूरशिखा ।
गुजरातीभाषामें	मोरशिखा ।
कर्णाटकीभाषामें	होरेयसूसुव ।
तैलिङ्गीभाषामें	मयूरशिखियने क्षुपविशेषमु ।
लैटिन्भाषामें	सिलोसिया क्रिस्टाटा । Celosin Cristata
फारसीभाषामें	असनाने, असलान ।

अस्या गुणाः ।

नीलकण्ठशिखालघ्वीपित्तश्लेष्मातिसारजित् । (भा. प्र.)

अर्थ -मोरशिखा--हलकी तथा पित्त, कफ और अतिसारको दूर करनेवाली है ।

अन्यच्च ।

बर्हिचूडारसेस्वादुर्मूत्रकृच्छ्रविनाशिनी ।
बालग्रहादिदोषघ्नीवश्यकर्म्मणिशस्यते ॥

अर्थ-मोरशिखा-स्वादुरसान्वित, मूत्रकृच्छ्रनाशक, बालग्रहादिदोषविनाशक और वशीकरण कर्ममें प्रशंसायोग्य है ।

अपिच ।

मयूराह्वाशिखाशीताकषायाम्लाम्लपाकिनी ।
लघ्वीपित्तकफंपित्तमतीसारंविनाशयेत् ॥ (के० चि०)

अर्थ-मोरशिखा--शीतल, कषेली, खट्टी, पचनेमेंभी खट्टी, हलकी तथा पित्त, कफपित्त और अतिसारनिवारक है ।

विवरण । मोरशिखाके छोटे छोटे क्षुप होते हैं, यह प्रायः खुस्क भूमिमें उत्पन्न होती है, पत्ते कटीले होते हैं, इसके ऊपर मोरकी समान चोटी होती है, इसी कारण इसको मोरशिखा कहते हैं, कितनेक वैद्य मोरशिखाको अजावंतीका भेद कहते हैं ।

इति श्रीशालिग्रामनिघण्टुभूषणे गुडूच्यादिवर्गः ॥ ३ ॥

अथ पुष्पवर्गः ।

पुष्पनामानि ।

स्त्रियःसुमनसःपुष्पंप्रसूनंकुसुमंसुमम् ॥

अर्थ-सुमनस, पुष्प, प्रसून, कुसुम, सुम, (सून, प्रसव सुमन)

पुष्परसनामानि ।

पुष्पद्रवःपुष्पसारःपुष्पस्वेदश्चपुष्पजः ।
पुष्पनिर्य्यासकश्चैवपुष्पाम्बुजषडाह्वयः ॥

अर्थ-पुष्पद्रव, पुष्पसार, पुष्पस्वेद, पुष्पज, पुष्पनिर्यासक, पुष्पांबुज ।

संस्कृतभाषामें पुष्प, पुष्पद्रव ।
हिन्दीभाषामें फूल, पुष्पका अर्क, गुलाबादि अथवा पुष्पका मधु ।
बंगालाभाषामें फुल, फुलेरस, गोलापजलप्रभृति वा मधु ।
मराठीभाषामें फूल ।
गुजरातीभाषामें फुल ।

कर्णाटकीभाषामें	हुविनयसरु ।
तैलंगीभाषामें	पुत्रु ।
अंग्रेजीभाषामें	फ्लावर । Flower
लैटिन्भाषामें	फ्लोस् Flos फ्लोरिस् Flores
फारसीभाषामें	गुल ।
अरबीभाषामें	वर्द ।

पुष्पधारणगुणाः ।

पुष्पस्यधारणंकान्तिवर्द्धनंकामकारकम् ।
ओजःश्रीवर्द्धकंचैवपापग्रहविनाशनम् ॥ (नि. र.)

अथ -पुष्पको धारण करनेसे--कान्ति, काम, ओज और लक्ष्मीकी [वृद्धि] होती है तथा पापग्रहका नाश होताहै ।

पुष्पद्रवगुणाः ।

पुष्पद्रवःसुरभिशीतकषायगौल्यो दाहभ्रमार्तिवमिमोहमु-खामयघ्नः । तृष्णार्तिपित्तकफदोषहरःसरश्च सन्तर्पणश्चि-रमरोचकहारकश्च ॥

अर्थ--पुष्पद्रव--(पुष्पका अर्क तथा मधु)--सुगन्धित, शीतल, कषे[ला] गौल्य तथा दाह, भ्रम, वमन, मोह, मुखरोग, तृषा, पित्त, कफ और [चिर-]कालकी अरुचिको दूर करनेवाला है । तथा सारक और सन्तर्पण है ।

अन्यच्च ।

पुष्पद्रवःसरः शीतस्तुवरः श्रमदाहहा ।
वान्तितृट्पित्तरोगघ्नोमुखरोगविनाशनः ॥ (ग्रन्थान्तर)

अथ--पुष्पद्रव--सारक (दस्तावर), शीतल, कषेला तथा श्रम, [दाह, वमन,] तृषा, पित्तरोग और मुखरोग नाशक है ।

जातीनामानि ।

सुमनामालतीजातीचेतकीचसुरप्रिया ॥

अर्थ-सुमना--मालती--जाती, चेतकी, सुरप्रिया (सुरभिगन्धा, [कु-]मारी, सन्ध्यापुष्पी, मनोहरा, राजपुत्री, मनोज्ञा, तैलमालिनी, [वा-]हृद्यगन्धा, जाति, राजपुत्रिका, जातिका, प्रियंवदा, मालिनी, [...] प्रहसन्ती, सुवसन्ता, वसन्तजा, वार्षिका) (२ स्वर्णजातिका, [...]

स्वर्णवदा, मनोज्ञा, नृपात्मजा, जाति और वसन्तजाता) यह नाम पीली जातिके हैं ।

संस्कृतभाषामें	जाती, स्वर्णजाती ।
हिन्दीभाषामें	जाती (चमेली) जाई, पीलीजाई ।
बंगभाषामें	जाती (चामिली) स्वर्णजाती ।
मराठीभाषामें	पांढरी जाई, पिंवलीजाई ।
कर्णाटकीभाषामें	जाजि ।
तैलङ्गीभाषामें	जाईपुष्पालु ।
तुर्कीभाषामें	जाजिपु ।
लैटिन्भाषामें	जेस्मिनं फ्लेकूसाईलिस् ।

अस्या गुणाः ।

जातीतुतुवरातिक्तालघ्वीचोष्णाकटुःस्मृता । मुखपाकंकफं वातंमुखदन्तशिरोरुजम् ॥ अक्षिरोगंविषंकुष्ठंरक्तदोषंव्रणं तथा। पित्तंकृमिन्नाशयति कलिकास्याव्रणापहा ॥ विस्फोटनेत्ररुक्कुष्ठनाशिनीतिबुधाजगुः।पुष्पंसुगन्धिसंप्रोक्तंमनोज्ञंकफपित्तनुत् ॥ (नि. र.)

अर्थ-जाती-कषेली, कडवी, हलकी, गरम, चरपरी,वमनकारक तथा मुखपाक, कफ, वात, मुखरोग, दन्तरोग मस्तकरोग, नेत्ररोग, विष, कुष्ठ, रुधिरविकार, घाव, पित्त और कृमिरोगको दूर करनेवाली है । इसकी कली-व्रण, विस्फोट, नेत्ररोग और कुष्ठको नष्ट करे है। इसका फूल -सुगन्धित, मनोज्ञ, कफ और पित्तनाशक है ।

स्वर्णजातीगुणाः ।

स्वर्णजातीचसंप्रोक्तादन्तशूलरुजापहा ।
रक्तदोषश्चपूयश्चकर्णशूलश्चनाशयेत् ॥
गुणास्त्वन्येतुजातीवज्ज्ञेयाःपूर्वमनीषिभिः ।

अर्थ—पीलीजाती- दन्तशूल, रुधिरविकार, पूय (राधा. पीप) और कर्णशूलको दूर करनेवाली है । इसके शेष गुण जातीके समान जानने ।

विवरण । जातीकी--बेल--प्रायः चौमासेमें अधिकतासे होती हैं, फूल-सफेद और बारीक पँखडीका होता है ।

उपजातिनामानि।



उपजातिःसुवर्षाचसुरूपाश्रीमतीतथा।
वर्षापुष्पाचचम्बेलीवल्लिह्वासाचवेशिका॥

अर्थ-उपजाति, सुवर्षा, सुरूपा, श्रीमती, वर्षापुष्पा, चम्बेली, वल्लिह्वासा, वेशिका।

संस्कृतभाषामें	उपजाति।
हिन्दीभाषामें	चमेली।
वंगभाषामें	चामिली।
मराठीभाषामें	चमेली।
गुजरातीभाषामें	चंवेली।
कर्णाटकीभाषामें	मोग राचाभेदु।
अंग्रेजीभाषामें	स्पॅनिस् जास्मीन। Spanish Jamine
लैटिन्भाषामें	जेस्मिनं ग्रान्डिफ्लोरं। Jasminumgrandi flora
फारसीभाषामें	यासमीन।
अरबीभाषामें	यासमन्

अस्या गुणाः।

चम्बेलीतुवरातिक्ताव्रणकुष्ठविषास्त्राजित।
शिरोक्षिमुखदन्तार्त्तिहरात्वग्दोषनाशिनी॥

अर्थ--चमेली, कषली, कडवी, तथा घाव, कोढ, विष, रुधिरवि-

शिरोरोग, नेत्ररोग, मुखरोग, दन्तरोग, और त्वचाके विकारोंको दूर करनेवाली है ।

विवरण । चमेलीकी बेल-वन, उपवन, बाग और पुष्पवाटिकामें लगाई जाती है, इसकी कली लम्बी डंडीकी होती है, फूलका रङ्ग सफेद और कुछ लाली लिये होता है, फूलकी सुगन्धि अत्यन्त प्रिय होती है, चमेलीके फूलोंमें तिलोंको वसाकर अर्थात् रखकर कुछ दिन पीछे कोल्हूमें पिसवाते हैं, उस तेलको फुलेल और चमेलीका तेल कहते हैं; वह उत्तम सुगन्धिवाला और शीतल होता है ।

वार्षिकी-मल्लिकामुद्गरनामानि ।

वार्षिकीशीतभीरुश्चमदयन्तीप्रमोदनी ।
भद्रवल्लीप्रियासौम्यामल्लिकावनचन्द्रिका ॥
मुद्गरकोगन्धराजःसप्तपत्रश्चविटूप्रियः ।

अर्थ-वार्षिकी, शीतंभीरु, दमयन्ती, प्रमोदिनी (अतिगन्धा, गवाक्षी, ...री, वार्षिकी, अष्टापदी, दन्तपत्रा, देवलता, श्रीपदी, षट्पदानन्दा, मुक्तब-...ना, दलकोषका) भद्रवल्ली, प्रिया, सौम्या, मल्लिका, वनचन्द्रिका, (भूपदी, ...शीतभीरु, तृणशून्य, तृणशून्या, गौरी, वनचन्द्रिका, नारीष्टा. गिरिजा, सिता, ...) मुद्गरक, गन्धराज, सप्तपत्र, विटूप्रिय, (मुद्गरा, राजपुत्री, वर्तुल, ...द, प्रिया, गन्धसार, अतिगन्ध, प्रिय, जनेष्ट, मृगेष्ट)

संस्कृतभाषामें	१ वार्षिकी. २ मल्लिका, ३ मुद्गर ।
हिन्दीभाषामें	बेला, मोतिया, घुघुरुमोतिया, वनमोगरा, मोगरा ।
बङ्गभाषामें	बेलफुलगाछ, मल्लिकाफुलरेगाछ, मल्लिकाभेद ।
गुजरातीभाषामें	बेल्य, डोलर; जंगलीचिखलयो; रानमोगरो ।
मराठीभाषामें	मोगरी, रानमोगरी, सोटईमोगरा ।
कर्णाटकीभाषामें	वल्लिमल्लिगे ।
तैलंगीभाषामें	मल्लिपुष्पालु, मल्लेचेट्टु, कुलक्रान्ताचेट्टु ।
लैटिनभाषामें	जेस्मिनंपुबिसेन्स J. जेस्मिलसॅबक् । Jasminum Savibac

वार्षिकी गुणाः ।

वार्षिकीशीतलालघ्वीतिक्तादोषत्रयापहा ।
कर्णाक्षिमुखरोगघ्नीतत्तैलंतद्गुणंस्मृतम् ॥

अर्थ--बेला--शीतल, हलका, कडवा, त्रिदोषनाशक तथा कर्ण, नेत्र और मुखरोगको दूर करनेवाला है। इसके तेलके गुण भी इसीकी समान जानने।

मल्लिकागुणाः ।

मल्लिकोष्णालघुर्वृष्यातिक्ताचकटुकाहरेत् ।
वातपित्तास्यदृग्व्याधिकुष्ठारुचिविषव्रणान् ॥

अर्थ--मल्लिका (एक प्रकारका मोतिया)--गरम, हलका, वीर्यजनक, कडवा, चरपरा, तथा वात, पित्त, नेत्ररोग, कोढ, अरुचि, विष और व्रणको नष्ट करे है।

मुद्गरगुणाः ।

मुद्गरोमधुरःशीतःसुरभिःसौख्यदायकः ।
मनोजमधुपानन्दकारीपित्तप्रकोपहृत् ॥ (रा. नि.)

अर्थ--मोतिया -मधुर, शीतल, सुगन्धि, सुखदायक, कामको जगानेवाला, भौंरोंको आनन्दजनक; और पित्तके कोपको दूर करे है।

अन्यच्च ।

वाषकीशिशिराहृद्यासुगन्धिःपित्तनाशिनी ।
कफवातविषस्फोटकृमिदोषामनाशिनी ॥ (रा. नि.)

अर्थ--बेला--शीतल, हृदयको हितकारी, सुगन्धित, पित्तनाशक, तथा कफ, वात, विष, स्फोट, कृमि और कामको दूर करनेवाला है।

अपिच ।

मल्लिकाकटुतिक्तास्याच्चक्षुष्यामुखपाकहृत् ।
कुष्ठविस्फोटकण्डूतिविषव्रणहरापरा ॥

अर्थ--मल्लिका (मोतियाभेद)--चरपरा, कडवा, नेत्रोंको हितकारी, मुखपाकनाशक तथा कुष्ठ, विस्फोट, कण्डू, विष और व्रणको हरनेवाला है।

मल्लिकासम्भवंपुष्पंतिक्तंजयतिमारुतम् ॥ (शो. नि.)

अर्थ- मल्लिकाके फूल--कडवे और वातको जीते हैं।

विवरण। मोतिया, बेला, घुघुरमोतिया और मोगरा, यह सब एकही होते हैं। पत्ते-बेरीके पत्तोंसे कुछेक छोटे और विशेष रेखावाले होते हैं। फूल--अत्यंत सुगन्धित सुपेद रङ्गके आते हैं। मोतियाके फूल अधिक गोल होते हैं, मोगराके फूल कुछ कम गोल होते हैं।

नेपालीवनमल्लिकानामानि ।

वासन्तीप्रहसन्तीचसुवसन्तावसन्तजा ।
सुकुमाराशिखरिणीनेपालीवनमल्लिका ॥

अर्थ-वासन्ती--प्रहसन्ती, सुवसन्ता, वसन्तजा, सुकुमारा, शिखरिणी, नेपाली, वनमल्लिका, (नेपाल, मधुगन्धा, गुच्छपुष्पा, ग्रैष्मिका, राजादन-फल, वनजा, सूक्ष्मपुष्पिका, सप्तला, नवमालिका, भद्रवर्म्मा, देवलता, वनिलया, मालिका, ग्रीष्मभवा, अतिमोदा, ग्रैष्मी, ग्रीष्मोद्भवा, सुकुमारी, सुरभि, शुचिमल्लिका, सुगन्धा, नेवाली, ग्रीष्मी, वनवासिनी, कान्ता, सुरभि, नैपाली, नेपाली)

संस्कृतभाषामें	नेपाली, वासन्ती ।
हिन्दीभाषामें	नेवारी, वासन्ती ।
बंगभाषामें	नेपाली, नेओयार, वासन्ती ।
गुजरातीभाषामें	नेवरी ।
मराठीभाषामें	नेवाळी, रायनेवाळी, वीरवन्ति ।
कर्नाटकीभाषामें	विरवन्तिगे, विरवन्तिभेद ।
लैटिन्‌भाषामें	इक्सोरा पार्विफ्लोरा । lxora parviflora

अस्यागुणाः ।

नेपालीकटुकातिक्ताशीताचसुरभिर्लघुः ।
त्रिदोषनेत्ररोगघ्नीकर्णाननरुजापहा ॥
सर्वरोगहराप्रोक्तागुणज्ञैःपूर्वकोविदैः ।

अर्थ-नेवारी--चरपरी, कडवी, शीतल, सुगन्धि, हलकी तथा त्रिदोष, नेत्ररोग, कर्णरोग और मुखरोग, सर्वरोगनाशक है ।

विवरण । नेवारीके वनमें बड़े बड़े वृक्ष होते हैं, पत्ते--लम्बे कुछ गोल होते हैं, फूल-आमके बोरके समान गुच्छोंमें आते हैं ।

यूथिकानामानि ।

यूथिकायूथिवासन्तीबालपुष्पीशिखण्डिनी ।
सापीतास्वर्णयूथीचहेमपुष्पीमनोहरा ॥

अर्थ-यूथिका, यूथि, वासन्ती, बालपुष्पी, शिखण्डिनी (गणिका, अम्बष्ठा, मागधी, प्रहसन्ती, बालपुष्पिका, भृङ्गानन्दा, पुण्यगन्धा. गुणज्वला,

चारुमोदा, शिखण्डी, हरिणी, शंखयूथिका, सुगन्धिका, यूथिका, सुगन्धा, मोदनी बहुगन्धा, गजाह्वया) यह जुहीके नाम हैं। स्वर्णयूथी हेमपुष्पी मनोहरा, (सुवर्णयूथी. हेमपुष्पा, सुगन्धा, हेमयूथिका, युवतीष्टा, रक्तगन्धा, शिखण्डी, नागपुष्पिका, पीतयूथी, पीतिका, कनकप्रभा, हेम-गन्धाढया, हेमपुष्पिका, सुवर्णाह्वा, व्यक्तगन्धा, पीतयूथी) यह पीली जुहीके नामहैं।

संस्कृतभाषामें	यूथिका, यूथी
हिन्दीभाषामें	जुही, पीलीजुही।
वंगभाषामें	जुइ, स्वर्णजुई।
मराठीभाषामें	पांढरी लहान जुई, पिंवळी जुई।
गुजरातीभाषामें	जुइजिंगरी, पीली जुई।
कर्णाटकीभाषामें	यरडुमोल्ले।
तैलिंगीभाषामें	जुईपुप्पालु।
लैटिन्भाषामें	जस्मिनं ओरिक्युलेटम्। Jasminum Auriecalatum

द्विविधयूथिकागुणाः

यूथिकायुगलंस्वादुशिशिरंशर्करार्त्तिनुत पित्तदाहतृषाहारिनानात्वग्दोषनाशनम् ॥ सर्वासांयूथिकानान्तुरसवीर्यादिसाम्यता। सुरूपश्चसुगन्धाढ्यंस्वर्णयूथ्यांविशेषतः ॥ (रा. नि.)

अर्थ–दोनोंप्रकारकी जुही–स्वादिष्ठ, शीतल, तथा शर्करारोग, पित्त, दाह, तृषा और नानाप्रकारके त्वचाके विकारोंको दूर करनेवाली है, सर्वप्रकारकी जुही रस, वीर्य्य और विपाकमें समानही है, परन्तु पीली जुही सुरूपमें और सुगन्धिमें अधिक है।

अन्यच्च।

यूथियुग्मंहिमंतिक्तंकटुपाकरसंलघु।
मधुरंतुवरंहृद्यंपित्तघ्नंकफवातलम् ॥
व्रणास्त्रमुखदन्ताक्षिशिरोरोगविषापहम्।

अर्थ–दोनोंप्रकारकी जुही–शीतल, कडवी, पचनेमें चरपरी, हलकी, मधुर, कषेली, हृदयको हितकारी, पित्तनाशक, कफ और वातकारक तथा

...ण, रुधिरविकार, मुखरोग, दन्तरोग, नेत्ररोग, मस्तकरोग, और विषको नाश करनेवाली है ।

विवरण । जुहीकी बेल-वन, उपवन और पुष्पवाटिकामें होती है, फूलकी पंखडी सपेद रङ्गकी और सुगन्धिवाली होती है, दूसरी पीलेरंगकी जुही होती है, उसके फूल पीलेरङ्गके होते हैं; पीली जुही अत्यन्त शोभायुक्त और सुगन्धिदायक है ।

माधवीनामानि ।

अतिमुक्तामाधवीचसुवसन्तापराश्रया ।
अतिमुक्तःकामुकश्चमण्डपोभ्रमरोत्सवः ॥

अर्थ--अतिमुक्ता, माधवी, सुवसन्ता, पराश्रया, अतिमुक्त, कामुक, मण्डप, भ्रमरोत्सव (चन्द्रवल्ली, सुगन्धा, भृङ्गप्रिया, भद्रलता, भूमिमण्डप, ...णा, वासन्ती, पुण्ड्रकलता, अतिमुक्तक, माधविका, विमुक्तक, माधवी-लता, वसन्तदूती, और लतामाधवी)

संस्कृतभाषामें	माधवी ।
हिंदीभाषामें	माधवी ।
बंगभाषामें	माधवीलता ।
गुजरातीभाषामें	माधवीलता, रक्तपित्ति ।
मराठीभाषामें	पीतबेल
कर्णाटकीभाषामें	इन्दगोचे, विरवन्तिगे ।
तैलंगी०	माधवतोगे, पुष्पलगुरिविंद ।
अंग्रेजी०	क्लस्टर्ड हिप्टेज । Clustered Hiptage.
लेटिन०	हिप्टेजमेटेब्लोटा । Hiptage Madablota

अस्या गुणाः ।

माधवीकटुकातिक्ताकषायामदगन्धिका ।
पित्तकासव्रणान्हन्तिदाहशोषविनाशिनी ॥ (रा. नि.)

अर्थ-माधवीलता--चरपरी, कडवी, कषेली, मदगन्धवाली, तथा पित्त, खांसी, व्रण, दाह और शोषको दूर करनेवाली है ।

अन्यच्च ।

माधवीमधुराशीतालघ्वीदोषत्रयापहा । (भा. प्र.)

अर्थ-माधवीलता--मधुर, शीतल, हलकी और त्रिदोषनाशक है ।

विवरण । माधवीलताकी बड़ी बेल होती है, पत्ते-चम्पाकी समान होते हैं, फूल-तिलके फूलकी समान होते हैं, और गुच्छोंमें आते हैं।

मालतीनामानि ।

मालतीसुमनाजातिर्वासन्तीयुवतीतथा ।

अर्थ—मालती, सुमना, जाति, वासन्ती युवती ।

संस्कृतभाषामें	मालती ।
हिन्दी०	"
वंग०	"
मराठी०	"
गुजराती०	"
लैटिन्०	एकाईटिस् कोर्योफाइलेटा । Echies Corophylata

अस्य गुणाः ।

मालतीकफपित्तास्यरुग्व्रणक्रिमिकुष्ठजित् ।
चक्षुष्यंकुसुमं तस्याःपत्रंतत्कफपित्तजित् ॥ (रा. व.)

अर्थ—मालतीलता कफ, पित्त, मुखरोग, व्रण, क्रिमि, और कुष्ठनाशक है। मालतीके फूल-नेत्रोंको हितकारी हैं । मालतीके पत्ते-कफ और पित्तको हरनेवाले हैं।

अन्यच्च ।

मालतीकफपितास्रत्वग्दोषकृमिकुष्ठनुत् ।
वामनीव्रणशोथघ्नीपूतिकर्णास्यपाकहृत् ॥ (शो. नि.)

अर्थ-मालती-कफ, रक्तपित्त, त्वचाके दोष, कृमि, और कुष्ठनाशक है। वमनकारक, तथा व्रण, सूजन, और कानसे राधके वहनेको दूर करे है।

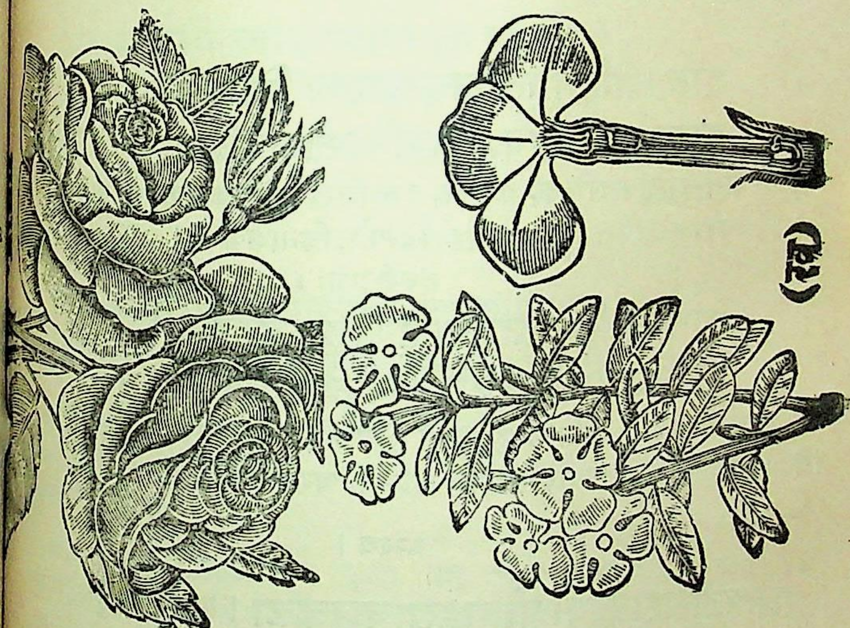
विवरण । मालती लताकीभी बेल होती है, फल झुमखोंमें आते हैं। पत्ते-जीवन्तीकी समान होते हैं।

तरुणी शतपत्री-कुब्जकनामानि ।

सेवंतीरामतरुणीकर्णिकाचारुकेसरा ।
शतपुत्रीसौम्यगन्धासवृत्ताशतपत्रिका ॥
कुब्जकोभद्रतरुणीवृत्तपुष्पोतिकेसरः ।

अर्थ-सेवंती, रामतरुणी, कर्णिका, चारुकेसरा (कुमारी, सहा, ...

ती गन्धाढ्या, शिववल्लभा, भृङ्गेष्टा, तरुणी, सुदला, बहुपत्रिका, भृङ्गवल्लभा) पत्री, सौम्यगन्धा, सुवृत्ता, शतपत्रिका, (महाकुमारी, लाक्षापुष्पा, अति-मञ्जुला, सुमना, सुशीता, शतदला, सुवृत्ता,) कुब्जक, भद्रतरुणी, वृत्तपुष्प, कर्णिकेसर, (महासह, कण्टकाढ्य, खर्व, अलिकुलसंकुल, बृहत्पुष्प, महासहा, कण्टकाढ्या, देवतरुणी, वारिकण्टक)



संस्कृतभाषामें तरुणी, शतपत्री, कुब्जक ।
हिंदीभाषामें सेवती, गुलाब, कूजा, सदागुलाब ।
बङ्गभाषामें सेउती, गोलाप, कूजा, श्वेतगोलाप ।
मराठीभाषामें गुलाबाचें फूल, शेवंती, कांटेशेवन्ती ।
गुजरातीभाषामें शेवती, गुलाब, मोशमीगुलाब ।
कर्णाटकीभाषामें सेवतिगे, चेवडे ।
तैलिंगीभाषामें गुलाबीपुबु, चेमंडिचेट्टु ।
अंग्रेजीभाषामें कंबेजरोस Cabbageroes गुलकंदकनफेशन् Confection ऑफरोस of rose
लैटिन् भाषामें रोसा सेण्टिफोलिया Rosa Centifolia रोसाडेमसेना Rosa damascena
फारसीभाषामें गुले, गुलसुर्ख, गुलेमुशकी ।
अरबीभाषामें वर्दअहमरनसरीन, गरंजबीन, गुलकंद. माउलवर्द, अर्क

शतपत्रीगुणाः ।

शतपत्रीहिमातिक्ताकषायाकुष्ठनाशिनी ।
मुखस्फोटहरारुच्यासुरभिःपित्तदाहनुत् ॥ (रा. नि.)

अर्थ-गुलाब-शीतल, कडवा, कषेला, कुष्ठनाशक, मुखके मुहासोंको दूर करनेवाला, रुचिको करनेवाला, सुगन्धि, तथा पित्त और दाहको शान्त करनेवाला है ।

अन्यच्च ।

शतपत्रीहिमातिक्तासरारुच्यानिलप्रणुत् ।
दाहज्वरास्रपित्तघ्नीकुष्ठविस्फोटनाशिनी ॥ (आ. सं.)

अर्थ-गुलाब शीतल, कडवा, दस्तावर, रुचिकारक, वातनाशक, तथा दाह, ज्वर, रक्तपित्त, कुष्ठ और विस्फोटविनाशक है ।

तरुणीगुणाः ।

शतपत्रीहिमाहृद्याग्राहिणीशुक्रलालघुः ।
दोषत्रयास्रजिद्वर्ण्यातिक्ताकटूवीचपाचनी ॥

अर्थ-सेवती-शीतल, हृदयको हितकारी, मलरोधक, शुक्रजनक, हलकी, त्रिदोषनाशक, रक्तदोषविनाशक, कडवी, चरपरी और पांचक है ।

अन्यच्च ।

शतपत्रीसरावृष्याशीताहृद्याचशुक्रला । लघ्वीचतुवरास्वाद्वीसुरभिग्राहिणीमता ॥ वर्ण्याकटूवीचतिक्ताचरुच्याचाग्निप्रदीपनी । त्रिदोषंमुखपाकञ्चरक्तपित्तंकफंतथा ॥ पित्तंरक्तविकारञ्चदाहञ्चैवविनाशयेत । पुष्पन्तुशीतलंवर्ण्यवातपित्तविदाहनुत् ॥

अर्थ--सेवती--सारक, वीर्यवर्द्धक, शीतल, हृदयको हितकारी, शुक्रजनक, हलकी, कषेली, स्वादिष्ठ, सुगंधित, मलरोधक, वर्णको सुन्दर करनेवाली, चरपरी, कडवी, रुचिकारक, अग्निप्रदीपक तथा त्रिदोष, मुखपाक, रक्तपित्त, कफ, पित्त, रुधिरविकार और दाहको दूर करनेवाली है। इसका फूल-शीतल, वर्णको उज्ज्वल करनेवाला, तथा वात, पित्त और दाहनाशक है।

रक्तकुब्जकगुणाः ।

रक्तस्तुकुब्जकोरक्तविकृतेर्नाशकोमतः ।

वृश्चिकाणांविषंचैवत्रिदोषश्चैवनाशयेत् ॥
अन्येगुणाःसमुद्दिष्टाःश्वेतकुब्जकवद्बुधैः । (नि. र.)

अर्थ-रक्तकुब्जक (गुलाब)--रक्तविकार, विच्छूका विष, और त्रिदोषनाशक है। और इसके गुण सदागुलाबके समान जानने।

कुब्जकगुणाः ।

कुब्जकःसुरभिःस्वादुःकषायानुरसःसरः ।
त्रिदोषशमनोवृष्यःपित्तघ्नश्चेतरस्तथा ॥ (भा. प्र.)

अर्थ-कूजा (सदागुलाब) सुगन्धित, स्वादिष्ठ, किञ्चित् कषेला, सारक (कुछ दस्तावर) त्रिदोषकी शान्ति करनेवाला, वीर्य्यवर्द्धक, और पित्तनाशक है।

अपिच ।

कुब्जकःसुरभिःशीतोरक्तपित्तकफापहः ।
पुष्पन्तुशीतलंवर्ण्यदाहघ्नंवातपित्तजित् ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-कूजा (सदागुलाब)--सुगन्धि, शीतल, तथा रक्तपित्त और कफनाशक है। इसका फूल--शीतल, वर्णको सुंदरतादायक तथा दाह और वातपित्तनाशक है।

विवरण। सेवती, गुलाब और कूजा यह तीनों क्षुपजातिके वृक्ष--वन उपवन और पुष्पवाटिकामें होतेहैं, तहां सेवती सपेद फूलवाली और प्राचीन है, गुलाब, लाल फूलका, पीलेफूलका, सपेद फूलका और अनेक जातिका नवीन है, अर्थात् पहिले हिन्दोस्थानमें नहीं होता था, कूजेपै भी सपेद फूल आता है, इसके फूलमें गुलाब और सेवतीकी अपेक्षा अल्प सुगन्धि होतीहै। एक मोशमी गुलाब, दूसरा बारहमासी होताहै, मोशमी गुलाब चैत्र वैशाखमें खिलताहै और इसमें सुगन्धि अत्यन्त होतीहै, बारहमासी गुलाबपै सदैव फूल आते हैं। गुलाब और सेवतीके फूलोंका गुलकन्द तथा पाक बनता है, वह पाक पुष्टिकारी, बलदायक और दस्तावर है। मारवाडकी ओर गुलाबके वन होतेहैं। गुलाबका अर्क अत्यन्त गुणकारी है। औषधिके प्रयोगमें सेवती और मोशमी गुलाब लेना चाहिये।

चम्पकनामानि ।

चम्पकःसुकुमारश्चसुरभिःशीतलश्चसः ।
चाम्पेयोहेमपुष्पश्चकाञ्चनःषट्पदातिथिः ॥

अर्थ-चम्पक, सुकुमार, सुरभि, शीतल, चाम्पेय, हेमपुष्प, काञ्चन, षट्पदातिथि, (कुसुमाधिराट्, हेमाह्व, सुभग, शीतलच्छद, कुसुमाधिप, वरलब्ध, उग्रगन्ध, कटु, हेमपुष्पक, पुण्यगन्ध, नागपुष्प, स्वर्णपुष्प, भृङ्गमोहि, भ्रमरातिथि, दीपपुष्प, वनदीप, स्थिरगन्ध, अतिगन्धक, पीतपुष्प, सुकुमार, स्थिरपुष्प)

अस्य कलिकानामानि ।

एतस्य कलिकागन्धफलीतिकथिताबुधैः ॥

अर्थ-चम्पाकी कलीको गन्धफली, (बहुगन्धा, गन्धमोदिनी, चंपककोरक कहते हैं)

संस्कृतभाषामें	चम्पक ।
हिन्दीभाषामें	चम्पा (आकीन, दे०)
वंगभाषामें	चांपा ।
मराठीभाषामें	सोनचांफा, पिंवळाचांफा ।
गुजरातीभाषामें	रायचंपो, पीलोचंपो ।
कर्णाटकीभाषामें	संपगे ।
तैलिङ्गीभाषामें	चंपागी पुवुलु ।
ता०	चंवकं । नु० संपेंडो ।
लैटिन्भाषामें	मिचेलिया चम्पेका । Michelia Champaca

अस्या गुणाः ।

चम्पकःकटुकस्तिक्तःकषायोमधुरोहिमः ।
विषक्रिमिहरः कृच्छ्रकफवातास्रपित्तजित् ॥ (भा. प्र.)

अर्थ-चम्पा-चरपरी, कडवी, कषेली, मधुर, शीतल, तथा विष, कृमि, मूत्रकृच्छ्र, कफ, वात और रक्तपित्तको दूर करनेवली है ।

अन्यच्च ।

चम्पकःकटुकस्तिक्तःशिशिरोदाहनाशनः ।
कुष्ठकण्डूव्रणहरोगुणाढ्योराजचम्पकः ॥ (रा. नि.)

अर्थ-चम्पा-चरपरी, कडवी, शीतल तथा दाह, कुष्ठ और व्रणको हरनेवाली है । इससे राजचम्पा अधिक गुणवाली है ।

अस्य पुष्पगुणाः ।

चम्पकंरक्तपित्तघ्नंशीतोष्णंकफनाशनम् ॥ (सु० सं०)

अर्थ--चम्पाके फूल--रक्तपित्तनाशक, शीतल, उष्ण और कफनाशक हैं ।

अन्यच्च ।

चाम्पेयंकुसुमंशीतंकषायस्वादुपाकिच ।
कफपित्तहरंतद्वत्पुन्नागस्यचसम्भवम् ॥ (शो. नि.)

अर्थ-चम्पाके फूल--शीतल, कषैले, पचनेमें स्वादिष्ठ, तथा कफ और पित्तनाशक हैं ।

अपिच ।

सुवर्णचम्पकश्चोक्तःशीतलस्तिक्तकःकटुः । तुवरोमधुरोवृष्योहृद्यश्चैवसुगन्धिदः ॥ भ्रमराणांघातकरोदाहपित्तकफापहः । रक्तदोषंमूत्रकृच्छ्रंवातंकुष्ठंविषंतथा ॥ कृमिकण्डूव्रणांश्चैवनाशयेदितिकीर्त्तितम् ॥ (नि. र.)

अर्थ- चम्पा--कडवी, चरपरी, शीतल, कषैली, मधुर, वीर्य्यवर्द्धक, हृदयको हितकारी, सुगन्धि, भौरोंका नाश करनेवाली तथा दाह, पित्त, रुधिरविकार, मूत्रकृच्छ्र, वात, कुष्ठ, विष, कृमि, कण्डु और व्रणको दूर करनेवाली है ।

विवरण । चम्पाका बडा वृक्ष होता है, पत्ते--रामफलके समान होते हैं, फूल-पीले अत्यंत सुगंधियुक्त होते हैं ।

चम्पकभेदाः ।

श्वेतस्तुचम्पकःप्रोक्तोनागादिश्चम्पकस्तथा ।
सुलतानचम्पकश्चान्योनीलश्चभूमिचम्पकः ॥

संस्कृतभाषामें श्वेतचम्पक (क्षुद्रचम्पक, क्षीरवृक्ष) २ नागचंपक, (नागपुष्प, नागकेशरक) ३ सुलतानचंपक, ४ नीलचंपक (मधुगन्धि, मनोहर) ५ भूमिचंपक ।

हिन्दीभाषामें १ सपेदचंपा, २ नागचम्पा, ३ सुलतानचम्पा, ४ नीलचम्पा, भुँईचम्पा ।

मराठीभाषामें १ खुरचांफा, २ नागचांफा, ३ सुलतानचांफा, ४ निलाचांफा, ५ भुंईचांफा ।

गुजरातीभाषामें १ धोलोचम्पो, २ नागचम्पो, ३ सुलतानचम्पो, ४ लीलोचम्पो ५ भूचम्पो ।

कर्णाटकीभाषामें १ नागचम्पगे ।
तैलङ्गीभाषामें १ गणेरचेट्टु ।
लैटीन्भाषामें १ प्ल्युमेरिया एक्युटिफोलिया । Plumiera acutifolia मेस्सुआफेरिआ Mesuaferrea कैलोफैलं इनोफैलं Calophyllum Inobhllum स्वीट्सेन्टेडकेलोफिलं, (इं०) Sweet scented Calophyllum आर्टे बोट्रिस् ओडोरेसिमा । Artabotys Odoratissima केम्फेरिया रोटंडा Kaempheria rotunda

श्वेतादिचम्पकगुणाः ।

श्वेतस्तुचम्पकःप्रोक्तःसरास्तिक्तःकटुस्मृतः । तुवरोष्णः कुष्ठकण्डूव्रणशूलकफापहः ॥ वातंचोदररोगश्चआध्मानंचैव नाशयेत् । नागनामाचम्पकस्तुवर्ण्यश्चोष्णःकटुःस्मृतः ॥ व्रणरोपणकारीचचक्षुष्यःकफवातहा । वस्त्वंतरस्यसंयोगादग्निस्तम्भकरोमतः ॥ भूमिजश्चम्पकश्चोष्णःकटुःशोथरुजापहः । गलगण्डंव्रणश्चैवनाशयेदितिकीर्तितम् ॥ (नि. र.)

अर्थ—सफेद चम्पा-सारक (कुछेकदस्तावर) कडवी, चरपरी, कषैली, गरम, तथा कुष्ठ, कण्डू, व्रण, शूल, कफवात, उदररोग और आध्मान रोगको दूर करनेवाली है । नागचम्पा-वर्णको उज्ज्वल करनेवाली, गरम, चरपरी, व्रणको भरनेवाली, नेत्रोंको हितकारी, तथा कफ और वातनाशक है और वस्तुओंके संयोगसे अग्निस्तम्भक है । भुंईचम्पा-गरम, चरपरी, तथा शोथ रोग, गळगण्ड और व्रणको दूर करनेवाली है ।

विवरण । सफेद चम्पाका वृक्ष बडा होता है पत्ते-लम्बे और तोडनेसे दूध निकलता है, फूल-सफेद और थोडे भागमें पीला होता है । नीलीचम्पाका वृक्ष मध्यमाकारका होता है, पत्ते-रामफलीके समान होते हैं, फूल-नीले रंगका होता है, उस फूलहीको नागकेसर कहते हैं, नागकेसरके गुण सुगन्धिवर्गमें लिखचुके हैं । सुलतानचम्पाके फूलको भी नागकेसर कहते हैं । नागकेसरकी दो जाती हैं इसको आगे लिखेंगे । भूमिचम्पाका फूल जैसे पृथ्वीमेंसे निकले हैं ऐसा होता है, पत्ते-गुलबाँसके समान होते हैं । फूल-सफेद आता है और सुगन्धिभी गुळबाँसकेसी आती है ।

बकुलनामानि ।

बकुलःकेशरःकण्ठस्तैलाङ्गोमधुपञ्जरः ॥

अर्थ-बकुल, केशर, कण्ठ, तैलांग, मधुपञ्जर (सिंहकेशर, केशर, बकुल, मकुल, वरलब्ध, सीधुगन्ध, स्त्रीमुखमधु, दोहल, मधुपुष्प, सुरभि, भ्रमरानन्द, स्थिरकुसुम, शारदिक, करक, सिन्धुगन्ध, विशारद, पुष्पक, धन्वी, मदन, पद्ममोद, चिरपुष्प)

संस्कृतभाषामें	बकुल ।
हिन्दीभाषामें	मौलसिरी, बकुल ।
बंगभाषामें	बकुलगाछ ।
मराठीभाषामें	बकुळ ।
गुजरातीभाषामें	बोससरी, वरशोली ।
कर्णाटकीभाषामें	करक ।
तैलिंगीभाषामें	पाघडा, पोगडचेट्टु ।
औत्कलीभाषामें	वउडकुडि ।
तामिलीभाषामें	मोगदम् ।
द्रा०	धोलसरी ।
अंग्रेजीभाषामें	सुरीनामभेडलर । Surinam medlar
लैटिन्भाषामें	माईमुसोप्सइलञ्जीआई । Mimusops Eleng

बकुलगुणाः ।

बकुलःशीतलोहृद्योविषदोषविनाशनः ।
मधुरश्चकषायश्चमदाढ्योहर्षदायकः ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-मौलसिरी-शीतल, हृदयको, हितकारी, विषदोषनाशक, मधुर, कषैली, मदाढ्य, और हर्षदायक है ।

अन्यच्च ।

बकुलस्तुवरोऽनुष्णःकटुपाकरसोगुरुः ।
कफपित्तविषश्वित्रकृमिदन्तगदापहः ॥ (भा. प्र.)

अर्थ-मौलसिरी-कषेली, अनुष्ण, पाक और रसमें चरपरी, भारी, कफ, पित्त, विष, श्वित्रकुष्ठ कृमि और दन्तरोगोंको दूर करनेवाली है

बकुलपुष्पगुणाः ।

बकुलजकुसुमंरुच्यंक्षीराढ्यंसुरभिशीतलंमधुरम् ।

स्निग्धंकषायंकथितंमलसंग्रहकारकंचैव ॥ (रा. नि.)

अर्थ-मौलसिरीके फूल-रुचिकारक, क्षीराढय, सुगन्धि, शीतल, मधुर, स्निग्ध, कषेले और मलको संग्रह करनेवाले हैं।

अन्यच्च ।

पुष्पंकषायमधुरंशीतंपित्तकफास्रजित् ॥ (राजवल्लभ)

अर्थ-मौलसिरीके फूल-कषेले, मधुर, शीतल, कफ, और रुधिर विकारोंको दूर करनेवाले हैं ।

बकुलफलगुणाः ।

मधुरश्चकषायश्चस्निग्धंसंग्राहिबाकुलम् ।
स्थिरीकरश्चदन्तानांविशदंफलमुच्यते ॥ (सु. सं.)

अर्थ-मौलसिरीके फल-मधुर, कषेले, स्निग्ध, मलको सञ्चित करने चाले, दांतोंको स्थिर करनेवाले और विशद हैं।

अन्यच्च ।

तत्फलंमधुरंस्निग्धंकषायंविशदंहिमम् ।
कफपित्तहरंदन्त्यंविबन्धाध्मानवातकृत् ॥ (ध. नि.)

अर्थ-मौलसिरीके फल-मधुर, स्निग्ध, कषेले, विशद, शीतल, कफपित्त नाशक, दांतोंको स्थिर करनेवाले, तथा विबन्ध, आध्मान और वातकारक हैं।

अपिच ।

बकुलस्यफलंरूक्षंविशदंस्तम्भनंगुरु । कषायंमधुरंशीतंले खनंकफपित्तहृत् ॥ दन्तदार्ढ्यकरंग्राहिविबन्धाध्मानवात कृत् । तद्बीजंदन्तचालघ्नंस्याच्छीर्षरुजापहम् ॥ (शो. नि.)

अर्थ-मौलसिरीके फल-रूखे, विशद, स्तम्भन, भारी, कषेले, मधुर, शीतल, लेखन, कफपित्तनाशक दांतोंको दृढ करनेवाले, मलरोधक, विबन्ध, आध्मान और वातकारक हैं। मौलसिरीके बीज दांतोंके हिलनेको दूर करें अर्थात् दांतोंको स्थिरतादायक हैं, और मौलसिरीके बीजोंका नस्य लेनेसे शिरोरोग नाशको प्राप्त होता है।

वृद्धबकुलनामानि ।

शिवमल्लीपाशुपतएकाष्ठीलोबुकोवसुः ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-शिवमल्ली, पाशुपत, एकाष्ठील, बुक, वसु (शैव, शिवपिण्ड, सुव्रत, बुक, शिवांग, शिवष्ठ, क्रमपूरक, शिवाह्लाद, शाम्भव)

संस्कृतभाषामें शिवमल्ली, बृहद्बकुल ।
हिन्दीभाषामें वनहुला, बृहन्मौलसिरी ।
मराठीभाषामें थोरबकुल ।
गुजरातीभाषामें वरशोली, मोटीवालसिरी ।
कर्णाटकीभाषामें वगेटाहु ।

अस्य गुणाः ।

बुकोऽनुष्णःकटुस्तिक्तःकफपित्तविषापहः ।
योनिशूलतृषादाहकुष्ठशोथास्रनाशनः ॥

अर्थ--बडी मौलसिरी--अनुष्ण, चरपरी, कडवी, तथा कफ, पित्त, विष योनिशूल, तृषा, दाह, कुष्ठ, सूजन और रुधिरविकारको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

बुकःशीतोविषश्लेष्मपित्तकृच्छ्राश्मदाहनुत ।

अर्थ--बृहन्मौलसिरी (वनहुला)--शीतल, तथा विष, कफ, पित्त, मूत्रकृच्छ्र, पथरी और दाहका नाश करनेवाली है ।

अपिच ।

स्थूलपुष्पश्चबकुलोदीपनोमधुरःकटुः ।
पित्तदाहकफश्वासमूत्रकृच्छ्रविषश्रमान् ॥
अश्मरींनाशयत्येवमदगन्धिश्चविद्यते (नि. र.)

अर्थ--बडीमौलसिरी-अग्निप्रदीपक, मधुर, चरपरी तथा पित्त, दाह, कफ, श्वास, मूत्रकृच्छ्र, विष, श्रम और पथरी रोगका नाश करे है, तथा मद-गन्धियुक्त है ।

विवरण--मौलसिरीके वृक्ष-वन और उपवनोंमें होते हैं, पत्ते-राजजामुनके समान होते हैं, फूल--सूक्ष्म और सपेद तथा चक्रके आकारके होते हैं, इसमें अत्यन्त सुगन्ध होती है इसकी सुगन्ध सुखानेपरभी न्यून नहीं होती; मौलसिरीकी नर नारी दो जाती हैं । एकमें फल आते हैं, और दूसरेमें नहीं आते हैं, जिसपर फल नहीं आते उस मौलसिरीका फूल बडा और सपेद होता है और जिसपर सिन्दूरी रङ्गका फूल आता

है उसका फल कुछ लाली लिये और छोटा होता है । जिस मौलसिरीपै फल नहीं आता उसको मौलसिरा कहते हैं और जिसपर फल आता है उसको मौलसिरी कहते हैं । मौलसिरीका अर्क तथा अत्तरभी निकलता है।

मुचुकुन्दनामानि ।

मुचुकुन्दःक्षत्रवृक्षश्चित्रकःप्रतिविष्णुकः ॥

अर्थ–मुचुकुन्द, छत्रवृक्ष, चित्रक, प्रतिविष्णुक (दीर्घपुष्प, बहुपत्र, मुण्डीवृक्षानुकारक, हरिवल्लभ, सुपुष्प, अर्घ्यार्हलक्षणक, रक्तप्रसव)

संस्कृतभाषामें	मुचुकुन्द ।
हिन्दीभाषामें	मुचकुन्द ।
वंगभाषामें	मुचकुन्द ।
मराठीभाषामें	मुचकुन्द ।
गुजरातीभाषामें	मुचकुन्द ।
कर्णाटकीभाषामें	मुचकुन्द ।
तैलिङ्गीभाषामें	लोलगु ।
तामिलीभाषामें	टड्डो ।
औत्कलीभाषामें	वइलो ।
लैटिन्भाषामें	टेरोस्परमम सुबेरीफोलियम् । Pterospermum Suberifolium

अस्य गुणाः ।

मुचुकुन्दःकटुतिक्तःकफकासहरश्चकण्ठदोषघ्नः ।
त्वग्दोषशोफशमनोव्रणपामाविनाशनश्चैव ॥

अर्थ- मुचकुन्द--चरपरा, कडवा तथा कफ, खाँसी, कण्ठरोग, त्वचारोग, सूजन, व्रण और पामारोग-विनाशक है ।

अन्यच्च ।

मुचुकुन्दःशिरःपीडापित्तास्रविषनाशनः । (म० पा० नि०)

अर्थ--मुचकुन्द--शिरकी पीडा और रक्तपित्त विनाशक है ।

अपिच ।

मुचुकुन्दःकटुश्चोष्णस्तिक्तःस्वर्यःकफापहः ।
कासत्वग्दोषशोफघ्नःशीर्षपीडानिवारकः ॥
त्रिदोषरक्तपित्तघ्नःपित्तरक्तविकारनुत् । (नि. र.)

अर्थ-मुचकुन्द-चरपरा, गरम, कडवा, स्वरको सुंदर करनेवाला, कफनाशक तथा खाँसी, त्वचाके विकार, सूजन, शिरकी पीडा, त्रिदोष, रक्तपित्त और रुधिरविकारको दूर करे है।

विवरण। मुचकुन्दका वृक्ष बडा होता है, पत्ते-बडे और अखरोटके समान होते हैं, फूल-बडा आताहै और उसमें अत्यंत सुगंध होती है, फल-लम्बे और गोल काष्ठके समान होते हैं। औषधिमें केवल फूल लियेजाते हैं।

कुन्दनामानि ।

कुन्दन्तुकथितंमाध्यंसदापुष्पश्चतत्स्मृतम् ॥

अर्थ-कुन्द, माध्य, सदापुष्प, (शुक्लपुष्प, दलकोष, वरट, वोरट, मकरन्द, महामोद, मनोहर, मुक्तपुष्प, तारपुष्प अट्टपुष्पक, दमन, वनहास, मनोज्ञ, भ्रमरबन्धु, मनोरम, अट्टहास, भृङ्गसुहृत्,)

संस्कृतभाषामें	कुन्द ।
हिन्दीभाषामें	कुंदेकावृक्ष, कुंदेका फूल ।
बंगभाषामें	कुन्द ।
मराठीभाषामें	कुन्द ।
कर्णाटकीभाषामें	सुरागि ।
तैलिंगीभाषामें	मोल्ल ।

अस्य गुणाः ।

कुन्दंशीतंलघुश्लेष्मशिरोरुग्विषपित्तजित् ॥ (भा. प्र.)

अर्थ-कुन्द-शीतल, हलका, तथा कफ, शिरोरोग, विष और पित्तका नाश करनेवाला है।

अन्यच्च ।

कुन्दोतिमधुरःशीतःकषायःकेशभावनः ।
कफपित्तहरश्चैवसरोदीपनपाचनः ॥ (रा. नि.)

अर्थ-कुन्द-अत्यन्त-मधुर, शीतल, कषेला, केशभावन, सारक (कुछेक दस्तावर), अग्निदीप, पाचक और कफपित्तनाशक है।

अपिच ।

कुन्दःशीतोतिमधुरस्तुवरःसारकोलघुः । पाचकोदीपको हृद्यःकटुकस्तिक्तकःस्मृतः ॥ पित्तरोगशिरोरोगविषशो-

थामनाशनः । रक्तदोषञ्चवातञ्चनाशयेदितिकीर्त्तितम् ।
(नि० र०)

अर्थ-कुन्द-शीतल, अत्यन्तमधुर, कषेला, सारक, हलका, पाचक, दीपन, हृदयको हितकारी, चरपरा, कडवा तथा पित्तरोग, मस्तकरोग, विष, सूजन, आम, रुधिरविकार और वातको हरनेवाला है।

विवरण। कुन्दके वृक्ष-छोटे छोटे होते हैं, फूल-अतीव सुन्दर सफेद रंगके आते हैं।

तिलकनामानि ।

तिलकःक्षुरकःश्रीमान्पुरुषश्छिन्नपुष्पकः ।

अर्थ--तिलक, क्षुरक, श्रीमान्, पुरुष, छिन्नपुष्पक (मुखमण्डनक, विशेषक, पुण्ड्र, पुण्ड्रक, स्थिरपुष्पी, छिन्नरुह, दग्धरुह, मृतजीव, तरुणीकटाक्षकाम, वासन्तसुन्दर, दुग्धरुह, भालविभूषणसंज्ञ, पुन्नाग, रेचक, शतपत्रक)

संस्कृतभाषामें	तिलकपुष्पवृक्ष ।
हिन्दीभाषामें	तिलकपुष्प ।
गुजरातीभाषामें	तिलकवृक्ष ।
मराठीभाषामें	तिलकपुष्पक ।
कर्णाटकीभाषामें	तिलकपुष्पविशेष ।

अस्य गुणाः ।

तिलकःकटुकःपाकेरसेचोष्णोरसायनः ।
कफकुष्ठकृमीन्वस्तिमुखदन्तगदान्हरेत् ॥ (भा. प्र.)

अर्थ-तिलकपुष्पवृक्ष-पचनेमें चरपरा, रसमें भी चरपरा, गरम, रसायन तथा कफ, कुष्ठ, कृमि, वस्तिरोग, मुखरोग और दन्तादिरोगोंको दूर करें।

अन्यच्च ।

तिलकोमधुरःस्निग्धोवातपित्तकफापहः ।
बलपुष्टिकरोहृद्योलघुर्मेदोविवर्द्धनः ॥

अर्थ--तिलक--मधुर, स्निग्ध, बलवर्द्धक, पुष्टिकारक, हृदयको हितकारी, हलका, मेदजनक तथा वात, पित्त और कफनाशक है।

अपिच ।

तिलकोमधुरःस्निग्धःपौष्टिकोबलमेदकृत । हृद्योलघुरसे-

र्युष्णःपाकेचोष्णकरस्मृतः ॥ रसायनस्तीक्ष्णरूक्षोदन्तरुक्कृमिकुष्ठहा ॥ वातपित्तकफघ्नश्चविषकण्डूव्रणापहः॥रक्तरुदुग्धरुग्वस्तिरुजांनाशकरःस्मृतः । तिलकःक्षारयोगेनगुल्मशूलोदरापहः । त्वगस्यतुवराचोष्णापुस्त्वघ्नी दन्तदोषहा ॥ रक्तदोषकृमिव्रणशोफानांचविनाशिनी ॥ (नि. र.)

अर्थ-तिलक-मधुर, स्निग्ध, पुष्टिकारक, बलवर्द्धक, मेदजनक, हृदयकी हितकारी, हलका, रसमें अत्यन्त उष्ण, पचनेमें चरपरा, रसायन, तीक्ष्ण रूखा, तथा दन्तरोग, कृमि, कुष्ठ, वात, पित्त, कफ, विष, कण्डू, व्रण, रुधिरविकार, दुग्धरोग, और वस्तिरोगका नाश करे है। यह किसी क्षारके योगसे गुल्म, शूल और उदररोगको दूर करे है। इसकी छाल-कषेली, गरम, तथ पुंस्त्वघ्न, दन्तरोग, रुधिरविकार, कृमि, व्रण और सूजनको दूर करनेवाली है

विवरण। तिलक वृक्षका फूल-तिलके फूलके समान होता है और उस फूलमें सुगन्धि आती है, फल-पीपलके समान तथा मधुर होता है।

कदम्बनामानि।

कदम्बःसुरभिर्नीपः प्रावृषेण्योहरिप्रियः ।

अर्थ—कदम्ब, सुरभि, नीप, प्रावृषेण्य, हरिप्रिय, (हलिप्रिय, ललनाप्रिय, प्रियक, हारिद्र, अशोकारी, नीप, कादम्ब, षट्पदेष्ट, जाल, वृत्तपुष्प, कादम्बर्य, सीधुपुष्प, जीर्णपर्ण, महाढ्य, कर्णपूरक)

धाराकदम्बनामानि।

नीपोमहाकदम्बःस्याद्धाराकदम्ब इत्यपि ।

अर्थ-नीप, महाकदम्ब, धाराकदम्ब (धूलिकदम्ब, धाराकदम्बक, भ्रमरप्रिय, षट्पदप्रिय, प्रावृष्य, पुलकी, भृङ्गवल्लभ, मेघाभ, प्रियक, केशराढ्य, बहुफल, कदम्बक)

भूमिकदम्बनामानि।

भूमिकदम्बोभूनीपोभूमिजोभृङ्गवल्लभः ।
लघुपुष्पोवृत्तपुष्पोविषघ्नोव्रणहारकः ॥

अर्थ-भूमिकदम्ब, भूनीप, भूमिज, भृङ्गवल्लभ, लघुपुष्प, वृत्तपुष्प, विषघ्न, व्रणहारक।

संस्कृतभाषामें	कदम्ब, धाराकदम्ब, भूमिकदम्ब।
हिन्दीभाषामें	कदमका पेड, धाराकदम्ब।
वंगभाषामें	कदमगाछ, केलिकदम।
मराठीभाषामें	राजकदम्ब, धूलिकदम्ब, कळंब, भूमिकदम्ब।
गुजरातीभाषामें	कदम्ब कलम।
कर्णाटकीभाषामें	कडउ, धूलिकडउ, धारेयकडउ, भूमिकडउ।
तैलिङ्गीभाषामें	कडिमिचेट्टु, कदम्बचेट्टु, मोगुलुकडिमि।
लैटिन्भाषामें	एंथोसिफालसूकेडंबा Anthocepehalus cadamba नोक्लियापार्विफ्लोरा Nauclea parvjflora
अरबीभाषामें	कदम्ब।

कदम्बगुणाः।

कदम्बःकटुकस्तिक्तोमधुरस्तुवरःपटुः। शुक्रवृद्धिकरःशीतोगुरुर्विष्टम्भकारकः॥ रूक्षःस्तन्यप्रदोग्राहीवर्णकृद्योनिदोषहा॥ रक्तरुङ्मूत्रकृच्छ्रघ्नवातपित्तंकफंव्रणम्॥ दाहंविषंनाशयतिह्यंकुराश्चास्यतूवराः। शीतवीर्य्यादीपकाश्चलघवोऽरोचकापहाः॥ रक्तपित्तातिसारघ्नाः फलंरुच्यंगुरुस्मृतम्। उष्णवीर्य्यंकफकरंतत्पक्वंकफपित्तजित्॥ वातनाशकंप्रोक्तमृषिभिस्तत्त्वदर्शिभिः।

अर्थ-कदम-चरपरी, कडवी, मधुर, कषेली, खारी, शुक्रवर्धक, शीतल भारी, विष्टम्भकारक, रूषी, स्तनोंमें दूध बढानेवाली, मलरोधक, वर्णकारक तथा योनिरोग, रक्तरोग, मूत्रकृच्छ्र, वात, पित्त, कफ, दाह और विषको दूर करनेवाली है। इसकेअंकुर-कषेले शीतवीर्य्य, अग्निदीपक,हलके तथा अरुचि रक्तपित्त और अतिसारको दूर करनेवाल हैं। इसके फल-रुचिकारक, भारी उष्णवीर्य्य और कफकारक हैं। इसके पक्के फल-कफ, पित्तकारक और वातविनाशक हैं।

राजकदम्बगुणाः।

नीपस्तुचाम्लस्तुवरोमधुरःशीतलः स्मृतः। विषंरक्तरुजंपित्तकफश्चैवविनाशयेत्॥ फलन्तुमधुरंचास्यशीतलंगुरुपित्तहृत्। रक्तदोषहरंप्रोक्तमृषिभिस्तत्त्वदर्शिभिः॥

अर्थ-राजकदंब--अम्ल, कषेली, मधुर, शीतल तथा विष, रुधिरविकार, पित्त और कफको दूर करनेवाली है। इसका फल-मधुर, शीतल, भारी, तथा पित्त और रुधिरके दोषोंको दूर करे है।

धाराकदम्बगुणाः ।

धाराकदम्बकस्तिक्तोवर्ण्यःशीतःकषायकः ।
कटुकोवीर्य्यकृच्छोथविषपित्तकफव्रणान् ॥
वातंनाशयतीत्येवमुक्तश्चऋषिभिःकिल ।

अर्थ-धाराकदम्ब-कडवी, वर्णको उज्ज्वल करनेवाली, शीतल, कषेली, चरपरी, वीर्य्यकारक तथा सूजन, विष, पित्त, कफ, व्रण और वातका विनाश करनेवाली है।

धूलिकदम्ब गुणाः ।

धूलीकदम्बकस्तिक्तस्तुवरःकटुकोहिमः ।
वीर्य्यवृद्धिकरोवर्ण्योविषशोथविनाशकः ॥
वातंपित्तंकफंरक्तदोषश्चैवविनाशयेत् ।

अर्थ-धूलीकदम्ब-कडवी, कषेली, चरपरी, शीतल, वीर्य्यवर्द्धक, वर्णको सुंदर करनेवाली तथा विष, सूजन, वात, पित्त, कफ और रुधिरके विकारोंको हरनेवाली है।

कदम्बिकागुणाः ।

कदम्बिकातुमधुराशीतलातुवरागुरुः । मलस्तम्भकरीक्षा-राक्षास्तन्यकफप्रदा ॥ वातलामुनिभिःप्रोक्ताफलंत्वस्या-स्तुशीतलम् । तुवरंमधुरंपित्तरक्तदोषहरंमतम् ॥

अर्थ-कदम्बिका (कदम्बी)-मधुर, शीतल, कषेली, भारी, मलस्तम्भकारी, खारी, रूखी, स्तनोंमें दूध उत्पन्न करनेवाली, कफकारक और वातवर्द्धक है। इसके फल-शीतल, कषेले, मधुर तथा पित्त और रक्तविकारनाशक हैं।

भूमिकदम्बगुणाः ।

भूमेःकदम्बकस्तिक्तोवर्ण्यःशीतःकटुःस्मृतः ।

वीर्य्यवृद्धिकरश्चैवतुवरोविषशोथहा ॥
पित्तंकृमींश्चसर्वांश्चमेहान्नाशयतीरितः । (नि० र०

अर्थ-भूमिकदम्ब—कडवी, वर्णको उज्ज्वल करनेवाली, शीतल, चरपरी वीर्य्यवर्द्धक, कषेली तथा विष, सूजन, पित्त, कृमि और सर्वप्रकारके प्रमेहरोगोंको दूरकरनेवाली है ।

द्विविधकदम्बगुणाः ।

कदम्बयुगलंवर्ण्यंविषशोथहरंहिमम् ।

अर्थ—दोनोंप्रकारकी कदम्ब (कदम्ब, बड़ीकदम्ब)-वर्णको सुन्दर करनेवाली, शीतल, तथा विष और सूजनको दूरकरनेवाली है ।

विवरण । कदम्बके वृक्ष—नगरके निकट होते हैं, पत्ते-लम्बे और गोल तथा महुवेके समान होते हैं, फल गोल नीम्बूके समान, फूल फलके ऊपर तथा सुगन्धयुक्त और छोटे होते हैं, राजकदम्ब तथा नीपको बड़ीकदम्ब कहते हैं । कदमकी अनेक जाति हैं ।

कर्णिकारनामानि ।

कर्णिकारःपरिव्याधःपादपोत्पल इत्यपि ॥

अर्थ—कर्णिकार, परिव्याध, पादपोत्पल ऐसे तीन नाम हैं ।

कर्णिकारगुणाः ।

कर्णिकारःकटुस्तिक्तस्तुवरःशोधनोलघुः ।
रञ्जनःसुखदःशोथश्लेष्मास्रव्रणकुष्ठजित् ॥ (भा. प्र.)

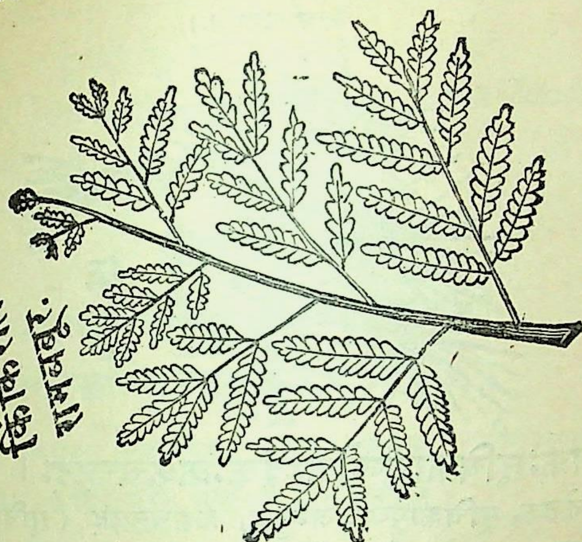
अर्थ--कर्णिकार—चरपरा, कडवा, कषेला, शोधक, हलका, रञ्जन सुखदायक तथा सूजन, कफ, रुधिरविकार, व्रण और कुष्ठको नष्ट करे है ।

विवरण । कर्णिकारके वृक्ष--प्रायः पर्वत और वनोंमें अधिक होते हैं पत्ते—ढाकके पत्तोंके समान होते हैं, फूल--लाल और अत्यन्त मनोहर लगते हैं ।

किंकिरातनामानि ।

किङ्किरातःकिङ्किराठःपीठकःपीतभद्रकः ।
हेमगौरोविप्रलम्बीषट्पदानन्दवर्द्धनः ॥

अर्थ--किंकिरात, किंकिराठ, पीतक, पीतभद्र, हेमगौर, विप्रलम्बी षट्पदानन्दवर्द्धन (विप्रलोभी, पीताम्लान)



संस्कृतभाषामें	किंकिरात ।
हिन्दीभाषामें	किंकिरात ।
मराठीभाषामें	देवबाभूळ ।
गुजरातीभाषामें	रामबावल ।
फारसीभाषामें	मधिलान ।

अस्य गुणाः ।

किङ्किरातोहिमस्तिक्तस्तुवरःशोधनोलघुः ॥
विषक्रिमिहरःशोथश्लेष्मश्रवणकुष्ठजित् ॥ (ध.नि)

अर्थ-किंकिरात-शीतल, कडवा, कषेला, शोधक, हलका तथा विष, कृमि, सूजन, कफ, बधिरता और कुष्टको नष्ट करे है ।

अन्यच्च ।

किङ्किरातोहिमस्तिक्तःकषायश्चहरेदसौ ।
कफपित्तपिपासास्रदाहशोथवमिक्रिमीन् ॥

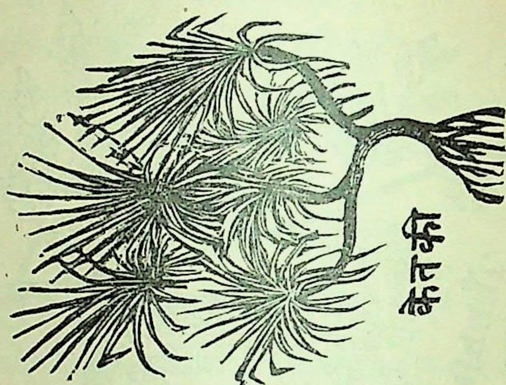
अर्थ--किंकिरात--शीतल, कडवा, कषेला तथा कफ, पित्त, पियास, रुधिरविकार, दाह, सूजन, वमन और कृमिरोगको दूर करे है ।

अपिच ।

किङ्किरातंतुवरंतिक्तंशीतोष्णदंमतम्। कफपित्ततृषारक्तदोषदाहज्वरान्वमिम् ॥ मोहंविषंनाशयतीत्येवमुक्तंभिषग्वरैः ॥

अर्थ--किंकिरात-कषेला, कडवा, शीतल, गरम, तथा कफ, पित्त, तृषा, रुधिरदोष, दाह, ज्वर, वमन, मोह और विषका नाश करे है ।

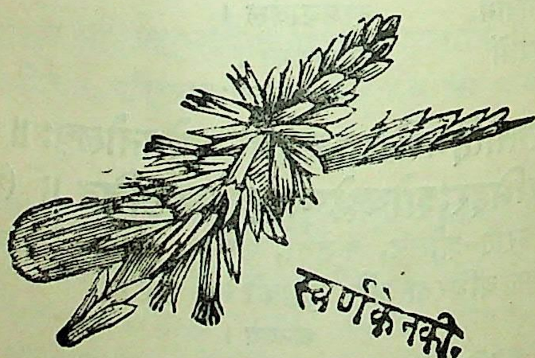
केतकीनामानि ।



केतकःसूचिकापुष्पोजम्बुकःक्रकचच्छदः ।

अर्थ--केतक, सूचिकापुष्प, जम्बुक, क्रकचच्छद (सूचिपुष्प, हलीक, जम्बुल, चामरपुष्पा केतकी, तीक्ष्णपुष्पा, विफला, धूलिपुष्पिका, मेध्या, कण्टदला, शिवद्विष्टा, नृपप्रिया, क्रकचा, दीर्घपत्रा, स्थिरगन्धा, गन्धपुष्पा, इंदुकलिका, दलपुष्पा; पांशुला ।

सुवर्णकेतकीनामानि ।



सुवर्णकेतकीत्वन्यालघुपुष्पासुगन्धिनी ॥

अर्थ-सुवर्णकेतकी, लघुपुष्पा, सुगंधिनी (स्वर्णकेतकी, हेमकेतकी, कनकप्रसवा, पुष्पी, हैमी, छिन्नरुहा, विष्ठारुहा, स्वर्णपुष्पी, कामखड्गदला

संस्कृतभाषामें	केतकी, स्वर्णकेतकी ।
हिन्दीभाषामें	केवडा. केतकी. पीलीकेतकी ।
वंगभाषामें	केयागाछ, सोणाकेया ।
मराठीभाषामें	श्वेतकेवडा, केतकी ।
गुजरातीभाषामें	केवडो ।
कर्णाटकीभाषामें	केदगे ।

तैलिंगीभाषामें मुगलीपुबु, मोगिलिचेट्टु ।
लेटिन्भाषामें पेन्डनस्ओडोरेटिसिमस् । Pandanus Odoratissimus
फारसीभाषामें करज ।
अरबीभाषामें कादी ।

केतकी-सुवर्णकेतकी गुणाः ।

केतकीकटुकास्वाद्वीलघ्वीतिक्ताकफापहा ।
उष्णातिक्तरसाज्ञेयाचक्षुष्याहेमकेतकी ॥

अर्थ--केवडा--चरपरा, स्वादिष्ठ, हलका, कडवा, और कफनाशक है सुवर्णकेतकी-गरम, कडवी और नेत्रोंको हितकारी है ।

अन्यच्च ।

श्वेतातुकेतकीकट्वीस्वाद्वीतिक्तालघुःस्मृता। विषंकफंनाशयति पुष्पमस्यालघुस्मृतम् ॥ कटुतिक्तंकान्तिकरमुष्णवातकफापहम् । केशदुर्गन्धतापघ्नंकेसरःसिध्मकण्डुहा ॥ किञ्चिदुष्णंफलं स्वादुवातमेहकफापहम् । सुवर्णकेतकीतिक्तानेत्र्याचोष्णालघुःस्मृता ॥ कटुकामधुराचैवविषरुक्कफनाशिनी । अस्याःपुष्पंसुखकरंकामोद्दीपनकारकम् ॥ किञ्चिदुष्णञ्चकटुकंतिक्तंनेत्र्यंसुगंन्धिकम् । स्तनश्चास्यातिशिशिरोदेहदार्ढ्यकरःपटुः ॥ बल्योरसायनःपित्तकफस्यचविनाशकः । फलकेसरयोश्चैवगुणाःपूर्वोक्तवन्मताः ॥ (नि. र.)

अर्थ--श्वेतकेतकी (केवडा)-चरपरा, स्वादिष्ठ, कडवा, हलका तथा विष और कफको दूर करनेवाला है, इसका फूल-हलका, चरपरा, कडवा, कान्तिकारक, गरम तथा वात, कफ और बालोंकी दुर्गंधको दूर करे है। इसकी केसर-सिध्म और कण्डूनाशक है, तथा कुछ गरम है। इसका फल-स्वादिष्ठ तथा वात, प्रमेह और कफनाशक है । सुवर्णकेतकी (केतकी)-कडवी, नेत्रोंको हितकारी, हलकी, चरपरी, मधुर, विषविकार और कफनाशक है। इसका फूल-सुखकारी, कामको दीपन करनेवाला, किञ्चित् गरम, चरपरा, कड़वा, नेत्रोंको हितकारी और सुगन्धित है। इसके स्तन-अत्यन्त शीतल, देहको दृढकरनेवाले निमकीन, बलकारक, रसायन तथा

पित्त और कफनाशक हैं। और इसके फलके तथा केसरके गुण सपेद केवडीके फलकी और केसरके समान जानने।

अन्यच्च।

केतकीवातलावृष्यातन्द्रानिद्राकरीमता॥ (आ. स.)

अर्थ--केतकी-वातकारक, वीर्य्यवर्द्धक तथा तन्द्रा और निद्राको उत्पन्न करनेवाली है।

विवरण। केवडेके वृक्ष बाग और जलके निकट अधिकतासे होते हैं वृक्षके भीतर बारीक कांटे और पत्ते लम्बे होते हैं, पत्तेके कोनेपर कांटे होते हैं। दूसरी सुवर्णकेतकी होती हैं, उसका क्षुप पीला और विशेष सुगंधवाला होता है।

अशोकनामानि।

अशोकःशोकनाशश्चविचित्रःकर्णपूरकः।
कङ्केलिर्हेमपुष्पश्चपिण्डपुष्पस्तथैव च॥

अर्थ-अशोक, शोकनाश, विचित्र, कर्णपूरक, कङ्केली, हेमपुष्प, पिण्डपुष्प, (अङ्गनाप्रिय, वीतशोक, विशोक, वञ्जुलद्रुम. वञ्जुल, मधुपुष्प, अपशोक, कङ्केलि· केलिक, रक्तपल्लव, चित्र, कर्णपूर, सुभग, दोहली, ताम्रपल्लव, रोगितरु, वामांकयातन, पिण्डीपुष्प, नट, रामा, पल्लद्रु, कान्ताङ्घ्रिदोहद, कान्ताचरणदोहद, चक्रगुच्छ, गन्धपुष्प, स्त्रीनिरीक्षणदोहद, शोकहर्त्ता, स्मराधिवास, दोषहारी प्रपल्लव, वामांघ्रिघातक)

संस्कृतभाषामें	अशोक।
हिन्दीभाषामें	अशोक (अशोगि)
वंगभाषामें	अस्पाल।
मराठीभाषामें	अशोक।
गुजरातीभाषामें	आशुपालो देशी पीलाफुलनो, आशुपालो रातांफुलनो।
लैटिन्भाषामें	ग्वेटेरिया लोंजिफोलिया। Guatterera Longifolia जोनेशिया अशोका। Jonesia asoka

अशोकगुणाः।

अशोकःशीतलस्तिक्तोग्राहीवर्ण्यःकषायकः।
दोषापचीतृषादाहकृमिशोषविषास्रजित॥ (भा. प्र.)

अर्थ--अशोक--शीतल, कडवा, मलरोधक, वर्णको उज्ज्वल करनेवाला,

कषेला, तथा अपचीदोष, तृषा, दाह, कृमि, शोष, विष और रक्तदोषको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

अशोकोमधुरःशीतश्चास्थिसन्धानकृन्मतः । प्रियःसुगन्धिः कृमिकृत्तुवरोष्णश्चतिक्तकः ॥ शरीरकान्तिकृच्चैवस्त्रीणामुच्छोकनाशनः । ग्राहीपित्तहरोदाहश्रमगुल्मोदरापहः ॥ शूलाध्मानेविषंचार्शोव्रणंसर्वांतृषंतथा । शोथापचीतृषश्चैव नाशयेद्रक्तजांरुजम् ॥ (नि. र.)

अर्थ-अशोक-मधुर, शीतल, हड्डीको जोडनेवाला, प्रिय, सुगन्धि, कृमिनाशक, कषेला, गरम, कडवा, देहकी कांति बढानेवाला, स्त्रियोंके शोकको दूर करनेवाला, मलरोधक तथा पित्त, दाह, श्रम, गुल्म, उदररोग, शूल, आध्मान विष-बवासीर, व्रण, सर्व प्रकारकी तृषा, सूजन, अपची, तृषा और रुधिररोगको दूर करनेवाला है ।

अपिच ।

अशोकस्यत्वचारक्तप्रदरस्याविनाशिनी ॥ (शो. नि.)

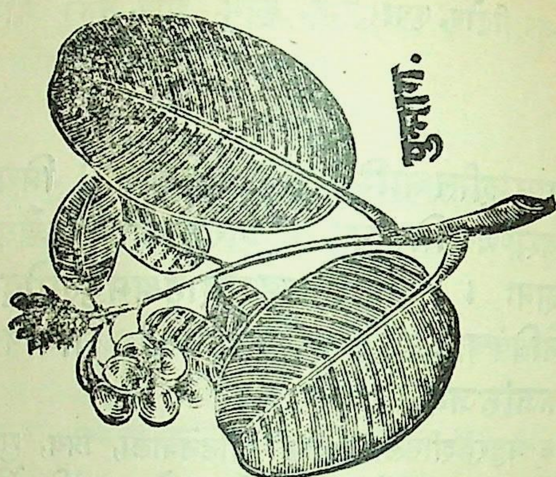
अर्थ-अशोककी छाल-रक्तप्रदररोगको हरनेवाली है ।

विवरण । अशोक वृक्षकी दो जाती हैं, एकके पत्ते रामफलके समान और फूल नारंगीके रंगकी सदृश होता है, माह फाल्गुनमें खिलते हैं और दूसरे अशोकके पत्ते आमके समान होतेहैं, फूल-सफेद कुछेक साधारण पीले रंगका होता है, इसपै फल चौमासक आरम्भमें आते हैं । इसके कच्चे फलका रंग नीला और पकनेपर लाल हो जाता है, इसके फल खानेके योग्य नहीं हैं और इन फलोंमेंसे जो बीज निकलते हैं वह बीज भी किसी औषधिके प्रयोगमें नहीं लिये जाते, फूल जिसका नारंगके समान है ऐसे अशोकको "जोनेशिआ" अशोक कहते हैं और दूसरेको "ग्वेटेरीआ लोंजिफोलिआ" कहते हैं ।

पुन्नागनामानि ।

पुरुषाख्योरक्तवृक्षःपुन्नागोदेववल्लभः ॥

अर्थ-पुरुषाख्य, रक्तवृक्ष, पुन्नाग, देववल्लभ (पूरुष, तुङ्ग, केशर, केशव, केसरी, काम्बोज, नागपुष्प, कुम्भीक, रक्तकेशर, पाण्डुनाग, पाटलाद्रुम, रक्तपुष्प, रक्तरेणु, अरुमा ।



संस्कृतभाषामें	पुन्नाग ।
हिन्दीभाषामें	पुन्नाग, पुलाक (के) सुलतानचम्पक ।
वंगभाषामें	पुन्नांगाछ, राजचम्पक ।
गुजरातीभाषामें	पुन्नाग, सुरपुन्नाग ।
मराठीभाषामें	गोडी उंडीण, कडवी उंडीण ।
कर्णाटकीभाषामें	सुरहोन्तेयभेद ।
तैलिङ्गीभाषामें	सुरपोन्नचेट्टु ।
औत्क०	पुंणां ।
तामिलीभाषामें	पिन्नप ।
लैटिन्भाषामें	ओक्रोकार्यसलोजिफोलियम् । Ochrocarpus Songifolium

अस्य गुणाः ।

पुन्नागोमधुरःशीतःसुगन्धिःपित्तनाशकृत् । देवप्रसादजनकोरक्तरुग्रक्तपित्तजित् ॥ कफंपित्तंभूतबाधांनाशयेदितिकीर्तितम् । पुष्पंवृष्यंवातशूलकफदोषाञ्जयत्यलम् ॥ नमेरुस्तिक्तपुन्नागादयिकश्चगुणैःस्मृतः । (नि. र.)

अर्थ-पुन्नाग-मधुर, शीतल, सुगन्धि, पित्तनाशक, देवताओंको प्रसन्नकरनेवाला तथा रक्तदोष, रक्तपित्त, कफ, पित्त और भूतबाधाको दूर करते है इसके फूल-वीर्यवर्द्धक, वातशूल और कफनाशक हैं. सुरपुन्नाग-कडवा और पुन्नागकी अपेक्षा अधिक गुणवाला है ।

विवरण । पुन्नागका वृक्ष बडा होता है; पुन्नागके फूलकी कलीको सुगन्धि लेते हैं । उसको नागकेशर कहते हैं. नागकेशरके गुण प्रथम सुगंधिव

...त आये हैं। इसके फल बृहद्दन्तीकी समान होते हैं उन फलोंका तेल ...लता है।

सैरेयकनामानि।

सैरेयकःश्वेतपुष्पःसैरेयंकटसारिका।
सहाचरःसहचरःसचभिंद्यपिकथ्यते॥

अर्थ–सैरेयक, श्वेतपुष्प, सैरेय, कटसारिका, सहाचर, सहचर, भिन्दी (मृदुकण्ट, महासह, बाण, उद्यानपाकी, सौरीयक, कण्टकुरण्ट, झिण्टिका, ...न्दी)

कुरण्टकनामानि।

किङ्किरातोकुरण्टश्चकनकःपीतपुष्पकः।
पीताम्लानःसहचरःपीतसैरेयकश्चसः॥

अर्थ-किङ्किरात, कुरण्ट, कनक, पीतपुष्पक, पीताम्लान, सहचर, पीत ...यक (कुरण्टक, सहचरी, सहाचर, वीर, पीतपुष्प, दासी, कुरुण्टक, पुर)

नीलझिण्टी (आर्त्तगल) नामानि।

नीलपुष्पीनीलझिण्टीदासीचार्तगलश्चसः।

अर्थ-नीलपुष्पी, नीलझिण्टी, दासी, आर्त्तगल, (बाणा, अर्त्तगल, बाण, ...चर, नीलकुरुण्टक, शैरीयक, शैरेयक, सैरीय, सैरेय, नीलकुसुमा, बाला, ...र्त्तगला)

कुरबकनामानि।

रक्ताम्लानोरक्तपुष्पोरामालिङ्गनकामुकः।
रागप्रसवकश्चैवसुभगःशोणझिण्टिकः॥

अर्थ-रक्ताम्लान, रक्तपुष्प, रामालिङ्गनकामुक, रागप्रसव, सुभग, शोणझिंटिक, (कुरवक, रक्तझिंटी, रक्तझिंटिका, शोणझिण्टी)।

रक्तपुष्पःकुरबकःपीतपुष्पःकुरण्टकः।
नीलपुष्पश्चार्त्तगलःसैरेयःश्वेतपुष्पकः॥

अर्थ-लालफूलकी कटसरैयाको "कुरबक" पीलेफूलवालीको "कुरण्टक" ...फूलवालीको "आर्त्तगल" और सफेदफूलकी कटसरैयाको "सैरेय(क)," ...कहते हैं।



संस्कृतभाषामें	सैरेयक, कुरण्टक, आर्त्तगल, कुरबक।
हिन्दीभाषामें	कटसरैया, पियावासा।
वंगभाषामें	झाँटि, कुलझाँटि, पीतझांटि, नीलझांटि, लालझांटि
मराठीभाषामें	पिंवळाकोरंटा, तांबडाकोरंटा, नीळाकोरंटा पांढराकोरंटा।
गुजरातीभाषामें	कांटा अशेलीयो, पीलाफुल, रातांफुलनो, कालां फुलनो, धोलाफुलनो।
कर्णाटकीभाषामें	होवणदगोरटे, वणदगिड, करियगोरटे, सरसुइ गोरटे गल्लु।
तैलिंगीभाषामें	गोरेंडु।
लैटिन्भाषामें	बार्लेरिया प्रायोनिटस्। Barleria Prionitis

सैरेयकगुणाः।

सैरेयःकुष्ठवातास्रकफकण्डूविषापहः। तिक्तोष्णोमधुरोऽनम्लःसुस्निग्धःकेशरञ्जनः॥ (भा. प्र.)

अर्थ-सफेद फूलकी कटसरैया-कडवी, गरम, मधुर, दांतोंको हितकारी, सुस्निग्ध, केशरञ्जक तथा कोढ, वात; रुधिरविकार, कफ, कण्डू और विषविनाशक है।

अन्यच्च।

श्वेतःकुरण्टकस्तिक्तःकेश्यःस्निग्धोमधुःस्मृतः। कटूष्णोदन्तहितोवलीपलितनाशनः॥ कुष्ठंवातंरक्तदोषंकफं कण्डूंविषं तथा। नाशयेदारुणंचैवऋषिभिःपरिकीर्तितः॥ (नि. र.)

अर्थ-सफेद फूलकी कटसरैया-कडवी, केशोंको हितकारी, स्निग्ध, मधुर, चरपरी, गरम, दांतोंको हितजनक तथा वलीपलित, कुष्ठ, वात, रक्तविकार, शूल, कण्डू, विष और घोर वेदनाको हरनेवालीहै ।

कुरण्टकगुणाः ।

पीतःकुरण्टकश्चोष्णस्तिक्तश्चतुवरःस्मृतः ।
अग्निदीप्तिकरोवातकफकण्डूहरः स्मृतः ।
शोथंरक्तविकारश्चत्वग्दोषश्चैवनाशयेत् ॥

अर्थ-पीलेफूलकी कटसरैया,-गरम, कडवी, कषेली, अग्निदीपक तथा वात, कफ, कण्डू, सूजन, रक्तविकार और त्वचाके दोषोंको दूर करे है ।

आर्तगलगुणाः ।

नीलःकुरण्टकस्तिक्तःकटुर्वातकफापहः ।
शोथकण्डूशूलकुष्ठव्रणत्वग्दोषनाशनः ॥

अर्थ-नीलेफूलकी कटसरैया-कडवी, चरपरी तथा वात, कफ, सूजन, कण्डू, शूल, कोढ, व्रण और त्वचाके विकारोंको दूर करे है ।

नीलझिण्टीगुणाः ।

नीलझिण्टीतुकटुकातिक्तात्वग्दोषनाशिनी ।
दन्तरोगंकफंशूलंवातंशोथश्चनाशयेत् ॥

अर्थ-कालेफूलकी कटसरैया-चरपरी, कडवी तथा त्वग्दोष, दन्तरोग, कफ, शूल, वात और सूजनको दूर करनेवाली है ।

कुरबकगुणाः ।

रक्तःकुरण्टकस्तिक्तोवर्ण्यश्चोष्णःकटुःस्मृतः ।
शोथंज्वरंवातरोगंकफंरक्तरुजंतथा ॥
पित्तमाध्मानकंशूलंश्वासंकासश्चनाशयेत् । (नि० र०)

अर्थ-लालफूलकी कटसरैया-कडवी वर्णको उज्ज्वल करनेवाली, गरम, चरपरी तथा सूजन, ज्वर, वातरोग, कफ, रक्तविकार, पित्त, आध्मान, शूल, श्वास, और खाँसीको हरनेवाली है ।

विवरण । पियावांसा अर्थात् कटसरैयाके क्षुप वन और बागोंमें बहुत होते हैं, इसकी चार प्रकारकी जाति हैं इसके फलोंका रंग भी चार प्रकारका

होता है—सफेद, पीले, लाल और नीले इन चारों प्रकारके पियावांसे कांटे होते हैं, पत्तेभी सबके छोटे २ एकसेही होते हैं, किसीमें विशेष अन्तर नहीं होता ।

बन्धूकनामानि ।



दुपहरियाका फूल.

बन्धूकोबन्धुजीवश्चरक्तोमाध्याह्निकोपिच ।

अर्थ—बन्धूक, बन्धुजीव, रक्त, माध्याह्निक, (रक्तक, बन्धुजीवक, बन्धुक, बन्धु, बन्धुल, बन्धूजीव, वन्धूलि, बन्धुर, सूर्यभक्त, सूर्यभक्तक, ओष्ठपुष्प, अर्कवल्लभ, मध्यदिन, रक्तपुष्प, हरिप्रिय, शरज्ज्वरघ्न, सुपुष्प)

संस्कृतभाषामें	बन्धूक ।
हिन्दीभाषामें	दुपहरिया, गेजुनिया ।
वंगभाषामें	बान्धुलिफुलेरगाछ ।
मराठीभाषामें	दुपारीचें फूल ।
गुजरातीभाषामें	बपोरियो ।
कर्णाटकीभाषामें	बंदुरे ।
तैलिङ्गीभाषामें	नितिमल्ली, मकिनचेट्टु, बेगसिनचेट्टु ।
वम्०	दुपारि ।
पञ्जा०	गुलदुफारिया ।
लैटिनभाषामें	परोटपिटिस् फिनिश्या । Pentapets Phoenicea

अस्य गुणाः ।

स्याद्बन्धुजीवकोग्राहीकिञ्चिदुष्णोगुरुर्मतः ।
कफकृज्ज्वरहृद्वातपित्तेचैवविनाशयेत् ॥
पिशाचग्रहबाधांचनाशयेदितिकीर्त्तितः ।

अर्थ-दुपहरिया-मलरोधक, किंचित् गरम, भारी, कफकारक, ज्वर-[illegible], तथा वात, पित्त, पिशाचबाधा और ग्रहबाधाको दूर करे है ।

विवरण । दुपहरियाके वृक्ष घर और बागोंमें बोदेते हैं, फूल सफेद, [illegible], लाल तीन चार जातिका होता है, यह दुपहरके समय खिलती है, [illegible] इसको दोपहरिया कहते हैं ।

सिद्धेश्वरनामानि ।

सिद्धेश्वरश्चसिद्धाख्यःसिद्धनाथःप्रकीर्त्तितः ।

अर्थ-सिद्धेश्वर, सिद्धाख्य, सिद्धनाथ ।

संस्कृतभाषामें	सिद्धेश्वर, सिद्धाख्य, सिद्धनाथ,
दे०	गुलतुरा ।
बङ्गलाभाषामें	कृष्णचूड ।
गुजरातीभाषामें	संधेशरो ।
कर्णाटकीभाषामें	कोमरी ।

लैटिन्भाषामें सिसालपिनियालकेरिमा । Caesalpina pulcherrima

अस्य गुणाः ।

सिद्धेश्वरोहिमःस्निग्धःग्रन्थिनाडीव्रणापहः ।
वातव्याधिहरश्चैवत्रिदोषामयनाशनः ॥

अर्थ-सिद्धेश्वर--शीतल, स्निग्ध तथा ग्रन्थि, नाडीव्रण, वातरोग और [illegible]षनाशक है ।

शंखोदरीनामानि ।

शंखोदरीबहुपुष्पाचिश्चापत्राल्पकण्टकी ।
श्लाखापत्रीसुपुष्पाचवनवासीसुशिम्बिका ॥

अर्थ--शंखोदरी, बहुपुष्पा, चिश्चापत्रा, अल्पकण्टकी, श्लाखापत्री, [सु]पुष्पा, वनवासी, सुशिम्बिका ।

संस्कृतभाषामें	शंखोदरी ।
दे०	गुलतोरा, गुलपरी ।
गुजरातीभाषामें	राशंगडी, नहानी, गुलमोर ।
मराठीभाषामें	शंखासुर, धाकटीगुल, कुंकुमकेशर ।
तैलङ्गीभाषामें	सामिडीतांघेडु ।
लैटिन्भाषामें	पोईनसियाना रिजाइना । Pcinoeana rigina
	पोईनसियाना पलकेरिमा P. Pulcherrima

शंखोदरीगुणाः ।

शंखोदरीमताचोष्णाकफवातविनाशिनी ।
शूलामवातशमनीनेत्ररोगनिवारिणी ॥

अर्थ-शंखोदरी--गरम तथा कफ, वात, शूल, आमवात और नेत्ररोग निवारक है।

झण्डूकनामानि ।

झण्डुःस्यात्स्थूलपुष्पातुझण्डूकोझण्डुकस्तथा ।

अर्थ-झण्डु, स्थूलपुष्पा, झण्डूक, झण्डुक ।

संस्कृतभाषामें	झण्डु, स्थूलपुष्पा, झण्डूक, झण्डुक ।
हिन्दीभाषामें	मखमली, गुलतोरा, कलगा, लालमुरगा।
मराठीभाषामें	झेंडू, मखमाल ।
गुजरातीभाषामें	मुखमल ।
अंग्रेजीभाषामें	फ्रेंचमेरीगोल्ड । French mary gold
लैटिन्भाषामें	टेजिटिस् इरेक्टा । Tagetes erecta
	सिलेस्याक्रेसूरोटा । Celasiacrestota
फारसीभाषामें	काजखरूस ।
अरबीभाषामें	हमाहम ।

अस्य गुणाः ।

झण्डुःकटुःकषायःस्याज्ज्वरभूतग्रहापहा । (रा. नि.)

अर्थ--लालमुरगा--चरचरा, कषेला तथा ज्वर, भूत और ग्रहकी पीडा दूर करनेवाला है ।

सिन्दूरपुष्पीनामानि ।

सिन्दूरपुष्पीसिन्दूरीतृणपुष्पीसुकोमला ।

अर्थ--सिन्दूरपुष्पी, सिन्दूरी, तृणपुष्पी, सुकोमला (रक्तबीजा, रक्तबीरपुष्पा, करच्छदा, शोणपुष्पी) ।

संस्कृतभाषामें	सिन्दूरपुष्पी ।
हिन्दीभाषामें	सिन्दूरिया, जाफर, लटकण ।
मराठीभाषामें	शेंद्री ।
गुजरातीभाषामें	सिन्दूरी ।
कर्णाटकीभाषामें	सिन्दूरी ।

अंग्रेजीभाषामें आरनाटो Crnott
लेटिन्भाषामें बिक्सा,ओरमाना Bixa Oimana

अस्या गुणाः।

सिन्दूरीविषपित्तास्रतृष्णावान्तिहरीहिमा (भा. प्र.)

अर्थ-सिन्दूरपुष्पी-विष, रक्तपित्त, तृषा और कान्तिनाशक तथा शीतल है।

अन्यच्च।

सिन्दूरीकटुकातिक्ताकषायाश्लेष्मवातजित्। शिरोर्तिशमनीभूतनाशीचंडीप्रियाभवेत्॥

अर्थ-सिन्दूरपुष्पी-चरपरी, कडवी, कषेली, तथा कफ, वात, मस्तकरोग और भूतनाशक है तथा चण्डीको प्यारी है।

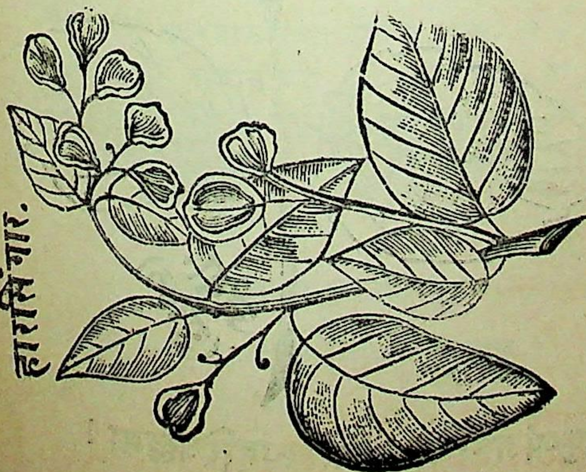
अपिच।

सिन्दूरीपुष्पिकातिक्ताकटुःशीतलघुःस्मृता। तुवरारक्तदोषघ्नीवातरक्तंतृषञ्जयेत्॥ विषदोषञ्चपित्तञ्चवातपित्तंवमिंतथा। कफंमस्तकशूलञ्चभूतदोषञ्चनाशयेत्। (नि.र.)

अर्थ-सिन्दूरपुष्पी-कडवी, चरपरी शीतल, हलकी, कषेली तथा रक्तविकार, वातरक्त, तृषा, विषदोष, पित्त, वातपित्त, वमन, कफ, मस्तकशूल और भूतबाधाको दूर करनेवाली है।

विवरण। सिन्दूरियाके क्षुप उपवनोंमें होते हैं, पत्ते बेलके समान होते हैं, फूल लाल २ सिन्दूरके समान होते हैं उसके बीज भी लाल रंगके होते हैं, इनको जलमें डालनेसे जल लाल हो जाता है।

प्राजक्तनामानि।



प्राजक्तःपारिजातश्चहारशृङ्गारपुष्पकः ।
नालकुङ्कुमकोरागपुष्पीचखरपत्रकः ॥

संस्कृतभाषामें	प्राजक्त, पारिजात, हारशृङ्गारपुष्पक नालकुंकुम, रागपुष्पी, खरपत्रक ।
हिंदीभाषामें	हारसिंगार, प्राजक्त ।
मराठीभाषामें	प्राजक्त, पारिजात ।
गुजरातीभाषामें	शीयाली, हारशणगार ।
अंग्रेजीभाषामें	स्केरस्टोक्ड निक्टेंथिस । Square Stalked Nytnacthes
लेटिन्भाषामें	निकटेन्थिस् अर्बोट्रिस्टिस् Nycranthes Arbotristis

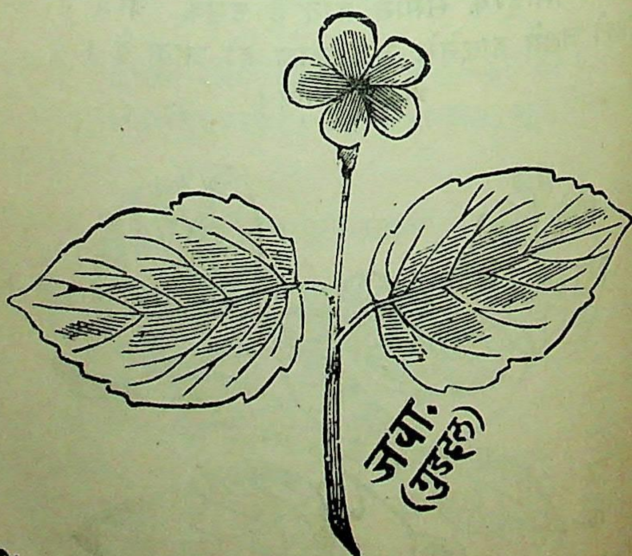
हारशृङ्गारगुणाः ।

रसःप्राजक्तपत्रस्यज्वरघ्नस्तिक्तकःस्मृतः ।
पर्णखण्डसमायुक्तस्त्वचाकासविनाशनः ॥

अर्थ-हारशृङ्गारके पत्तोंका रस-ज्वरनाशक और कडवा है । इसकी छाल पानमें रखकर खानेसे खांसी दूर होती है ।

विवरण । इसके वृक्ष वन और उपवनोंमें होते हैं, इसके फूल अत्यन्त सुंदर होते हैं, फूलकी डंडी केशरीरंगकी होती है, उन डंडिओंको पीसकर वस्त्र रंगते हैं, इसके फल चपटे और छोटे होते हैं और पत्ते ओडहुलके समान तथा खरखरे होते हैं ।

॥ जपापुष्पनामानि ॥



ओड्रपुष्पंजपाचाथप्रातिकाहरिवल्लभा ।

संस्कृतभाषामें ओड्रपुष्प, जपा, प्रातिका, हरिवल्लभा (जवा, ओड्राख्या, रक्तपुष्पी, अर्कप्रिया, रागपुष्पी, ओड्रपुष्पी, त्रिसन्ध्या, अरुणा.)
हिन्दीभाषामें ओडहुल, जवा, गुडहर ।
बंगभाषामें जवाफूलेरगाछ ।
मराठीभाषामें जासवंद ।
गुजरातीभाषामें जासुम ।
कर्णाटकीभाषामें दासनल ।
तैलिङ्गीभाषामें मंदारपु ।
अंग्रजीभाषामें शुफ्लावर । Shoe flower
लैटिन्० हिबिस् स्कस् रोझासाई नेनसिस् । Hibiscus Rosasinensis

अस्य गुणाः ।

जपाशीताचमधुरास्निग्धापुष्टिप्रदामता । गर्भवृद्धिकरीग्राही-केश्या जन्तुप्रदामता ॥ वान्तिजन्तुकरादाहप्रमेहार्शवि-नाशिनी । धातुरुक्प्रदरंचेंद्रलुप्तञ्चैवविनाशयेत् ॥ जपापुष्पं-लघुग्राहितिक्तंकेशविवर्द्धनम् । (नि. र.)

अर्थ-जपा (ओढहुल, गुडहर)-शीतल, मधुर, स्निग्ध, पुष्टिकारक, गर्भवृद्धिकारक, ग्राही, बालोंको हितकारी तथा वमन और कृमिको उत्पन्न करनेवाली तथा दाह, प्रमेह, बवासीर, धातुरोग, प्रदर और इन्द्रलुप्त रोगको हरनेवाली है । इसके फूल-हलके, मलरोधक, कडवे और केशवर्द्धक हैं ।

विवरण । जवाके वृक्ष मध्यमाकारके होते हैं, प्रायः बाग और उपवनोंमें बोयेजाते हैं, पत्ते अडूसेकी समान बडे बडे और फूल बहुत बडा अत्यन्त लालरंगका आताहै । प्रयोगमें फूल लिये जातेहैं इसके फूलमें अनेक गुण हैं विशेषकरके रुधिरके विकार और स्त्रियोंके रजके विकारोंमें व्यवहार किये जाते हैं ।

घृतभर्जितजपापुष्पगुणाः ।

घृतेनभ्रर्जितजपास्त्र्यार्त्तवंकुरुतेसुखम् ।
अर्थ-घीमें भुनाहुवा गुडहरका फूल-स्त्रियोंके सुखपूर्वक रजोधर्म्म करानेवाला है ।

अगस्त्यनामानि ।



अगस्त्योवङ्गसेनश्चमुनिपुष्पोमुनिद्रुमः ।

अर्थ--अगस्त्य, वङ्गसेन, मुनिपुष्प, मुनिद्रुम (अगस्ति, शीघ्रपुष्प, व्रणारि, दीर्घफलक, रक्तपुष्प, सुरप्रिय, शुक्लपुष्प, व्रणापह, खरध्वंसी, पवित्र, मुनिप्रिय, मुनितरु, वङ्गसेनक, कनली, शीघ्रपुष्प, वक्रपुष्प, सुरप्रिय)

संस्कृतभाषामें	अगस्त्य ।
हिन्दीभाषामें	अगस्तिया, हँथिया, हदगा ।
बंगभाषामें	वक ।
मराठीभाषामें	अगस्ता, हदगा ।
गुजरातीभाषामें	अगथियो ।
कर्णाटकीभाषामें	अगसेधमरनु ।
तैलिङ्गीभाषामें	अनीसे, अविसि ।
तामिलीभाषामें	अगति ।
इंग्रेजीभाषामें	लार्जफ्लावर्ड एगेटी ।
लैटिन्भाषामें	एगाटी ग्लांडी फ्लोरा ।

अस्य गुणाः ।

अगस्तिःपित्तकफजिच्चातुर्थिकहरोहिमः ।
रूक्षोवातकरस्तिक्तःप्रतिश्यायनिवारणः । (भा. प्र.)

अर्थ--अगस्तिया--शीतल, रूखा, वातकारक, कडवा तथा पित्त, कफ, चातुर्थिकज्वर और प्रतिश्यायनिवारक है ।

अन्यच्च ।

अगस्तिशिशिरंगौल्यंत्रिदोषघ्नंभ्रमापहम् ।
बलासकासवैवर्ण्यभूतघ्नञ्चबलावहम् ॥

अर्थ-हथिया- शीतल, गौल्य तथा त्रिदोष, भ्रम, बलास, कास, विवर्णता भूतबाधा और बलनाशक है ।

अस्यपुष्पगुणाः ।

अगस्तिकुसुमंशीतंचातुर्थिकनिवारकम् ।
नक्तान्ध्यनाशनंतिक्तंकषायकटुपाकिच ॥
पीनसश्लेष्मपित्तघ्नंवातघ्नंमुनिभिर्मतम् ।

अर्थ-अगस्तियाके फूल--शीतल, चातुर्थिकज्वरनिवारक, रतौंधेको दूर करनेवाले, कडवे, कषेले, पचनेमें चरपरे तथा पीनसरोग, कफ, पित्त और वातनाशक हैं ।

अस्यपत्रगुणाः ।

पर्णन्तुमुनिवृक्षस्यकटुतिक्तंगुरुस्मृतम् ।
मधुरंकिञ्चिदुष्णञ्चस्वच्छंकृमिकफापहम् ॥
कण्डूंविषंरक्तपित्तंनाशयेदितिकीर्तितम् ।

अर्थ-अगस्तियाके पत्ते--चरपरे कडवे, भारी, मधुर, किञ्चित्गरम, स्वच्छ तथा कृमि, कफ, कण्डू, विष और रक्तपित्तको हरनेवाले हैं ।

अस्यशिम्बीगुणाः ।

मुनिशिम्बीसराप्रोक्ताबुद्धिदारुचिदालघुः । पाककालेतु मधुरातिक्ताचैवस्मृतिप्रदा ॥ त्रिदोषशूलकफहृत्पांडुरोग-विषापनुत् । शोषगुल्महराप्रोक्तासापक्वारूक्ष पित्तला। (नि.र.)

अर्थ-अगस्तियाकी फली -सारक (कुछेक दस्तावर) बुद्धिदायक, रुचि-कारक, हलकी, पचनेमें मधुर, कडवी, स्मरणशक्तिवर्द्धक, तथा त्रिदोष, शूल, कफ, पाण्डुरोग, विष, शोष और गुल्मनाशक है। इसका शाक रूखाऔर पित्तकारक है ।

विवरण-अगस्तियाके वृक्ष पुष्पोंद्यानोंमें अधिक होतेहैं, पत्ते सैंजिनेकेसे होते हैं विशेषकरके इसपर नागरबेल अर्थात् पानोंकी बेल चढा करतीहै, इसलिये

इसके पत्ते उत्तम होतेहैं इसके फूल लाल और सफेद होतेहैं इसकी फली अत्यन्त कोमल होतीहै यह इसकी ठीक पहिचानहै कि. जब अगस्त्यमुनिका उदय होताहै तबही अगस्तियाके फूल खिलतेहैं ।

तुलसीनामानि ।

तुलसीवैष्णवीवृंदासुगन्धागन्धहारिणी ।
अमृतापत्रपुष्पाचपवित्रासुरवल्लरी ॥

अर्थ--तुलसी, वैष्णवी, वृन्दा, सुगन्धा, गन्धहारिणी, अमृता, पत्रपुष्पा, पवित्रा, सुरवल्लरी (सुभगा, तीव्रा, पावनी, विष्णुवल्लभा, सुरेज्या, सुरसा, कायस्था, सुरदुन्दुभि, सुरभि, बहुपत्री, मञ्जरी, हरिप्रिया, अपेतराक्षसी, श्यामा, गौरी, त्रिदशमञ्जरी, भूतघ्नी, भूतपत्री पर्णास, कठिञ्जर, कुठेरक, पुण्या, माधवी, सुरवल्ली, प्रेतराक्षसी, सुरहा, ग्राम्या, सुलभा, बहुमञ्जरी, देवदुन्दुभि, विष्णुपत्नी, मालाश्रेष्ठा, पापघ्नी लक्ष्मी, श्रीकृष्णवल्लभा)

कृष्णातुलसीनामानि ।

कृष्णातुकृष्णतुलसीकृष्णपर्णीकरालकः ।

अर्थ--कृष्णा, कृष्णतुलसी, कृष्णपर्णी करालक ।

संस्कृतभाषामें	तुलसी ।
हिन्दीभाषामें	तुलसी ।
वंगभाषामें	तुलसी ।
मराठीभाषामें	तुळस, तुलसी ।
गुजरातीभाषामें	तुलसी ।
कर्णाटकीभाषामें	एरेडतुलसी ।
तैलिंगीभाषामें	तुलसी ।
अंग्रेजीभाषामें	ह्वाइटबेझिल White Basil परपल् स्टाकूड बेझिल Purple stalked Basil
लैटिन्भाषामें	ओसिमं आल्बं Ocimum Album ओसिमं सेंक्टं Ocimum sanctum
फ़ारसीभाषामें	रेहान् ।
अरबीभाषामें	उलसीबदरुत ।

तुलसीगुणाः ।

तुलसीकटुकातिक्ताहृद्योष्णादाहपित्तकृत ।

दीपनीकुष्ठकृच्छ्रास्रपार्श्वरुक्कफवातजित् ॥
शुक्लाकृष्णाचतुलसीगुणैस्तुल्याप्रकीर्तिता ।

अर्थ-तुलसी-चरपरी, कडवी, हृदयको हितकारी, गरम, दाहकारक, पित्तजनक, दीपन तथा कुष्ठ, मूत्रकृच्छ्र, रक्तविकार, पसवाडेकी पीडा, कफ और वातका नाश करनेवाली है । सफेद और काली तुलसीके गुण समान हैं ।

अन्यच्च ।

श्वेताकृष्णाचतुलसीकटूष्णाचोषणाजगुः । दाहपित्तकरी हृद्यातुवराह्यग्निदीपिका । लघ्वीवातकफश्वासकासहिध्मा-कृमीञ्जयेत् । वान्तिदौर्गन्ध्यकुष्ठानिपार्श्वशूलविषापहा ॥ मूत्रकृच्छ्रंरक्तदोषंभूतबाधांचनाशयेत् । शूलंज्वरंचहिक्कां-चनाशयेदितिकीर्तिता ॥ (नि. र.)

अर्थ-सफेद और काली तुलसी-चरपरी, गरम, तीक्ष्ण, दाहजनक, पित्तकारक, हृदयको हितकारी, कषेली, अग्निदीपक, हलकी तथा वात, कफ, श्वास, खाँसी, हिध्म, कृमि, वमन, दुर्गन्ध, कुष्ठ, पार्श्वशूल, विष, मूत्रकृच्छ्र, रक्तदोष, भूतबाधा, शूल, ज्वर और हुचकीको दूर करनेवाली है ।

विवरण । तुलसीके क्षुप जंगलमें और बागोंमें बहुत होते हैं और बहुतेरे गृहस्थी लोग पूजाके लिये अपने २ घरोंमें लगा लेते हैं इसके पत्ते गोल २ कुछ लम्बाई लिये अत्यन्त कोमल होते हैं और उनमें सुगन्धीभी आती है, इसकी डाली २ में बाल निकलती है उसको मंजरी कहते हैं । दूसरी श्याम पत्तोंकी श्यामा तुलसी कहलाती है परन्तु आकृति दोनोंकी एकसीही है ।

मरुवकनामानि



मरुवा. (क)



मरुवा. (ख)

मरुत्तकोमरुबकोमरुन्मरुरपिस्मृतः ।
फणीफणिज्जकश्चापिप्रस्थपुष्पःसमीरणः ॥

अर्थ-मरुत्तक, मरुबक, मरुत्, मरु, फणी, फणिज्जक, प्रस्थपुष्प, समीरण (खरपत्र; गन्धपत्र, बहुवीर्य्य, शीतलक, सुराह्व, जम्बीर, प्रस्थकुसुम, मरिच, आजन्मसुरभिपत्र, कुलसौरभ)।

संस्कृतभाषामें	मरुबक ।
हिन्दीभाषामें	मरुवा, मरआ, गेदरेत।
वंगभाषामें	मरुया ।
मराठीभाषामें	सबजा, मर्वा ।
गुजरातीभाषामें	मरुवो ।
कर्णाटकीभाषामें	मरुवा ।
तैलङ्गीभाषामें	रुद्रजाड ।
अंग्रेजीभाषामें	स्वीटमार्जोरन । Sweet marjoran
लैटिन्भाषामें	ओरिध्येनं मार्जोराना । Origanum marjorana
फिरंगीभाषामें	शाहसू ।
फारसीभाषामें	मर्जंगुसू ।
अरबीभाषामें	मर्जंजुसू ।

अस्य गुणाः ।

मरुदग्निप्रदोहृद्यस्तीक्ष्णोष्णःपित्तलोलघुः ।
वृश्चिकादिविषश्लेष्मवातकुष्ठकृमिप्रणुत् ॥
कटुपाकरसोरुच्यस्तिक्तोरूक्षःसुगन्धिकः ।

अर्थ-मरुवा-अग्निप्रदीपक, हृदयको हितकारी, तीक्ष्ण, गरम, पित्त जनक, हलका तथा विच्छू इत्यादिका विष, कफ, वात, कुष्ठ और कृमिनाशक है। पाक और रसमें चरपरा, रुचिकारी, कडवा, रूखा और सुगन्धित है।

अन्यच्च ।

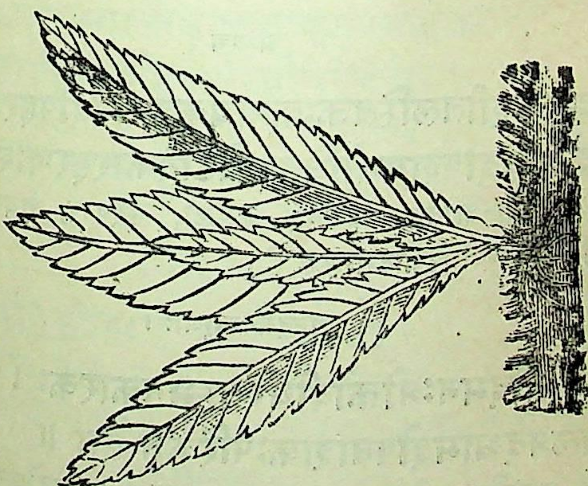
मरुबकःकटूष्णश्चदीपनस्तिक्ततीक्ष्णकः । हृद्यःपित्तकरोरुच्योरूक्षोलघुसुगन्धिकः ॥ पाचकःपित्तकफहृद्रक्तदोषविषज्वरान् । कुष्ठकण्डरुचीवातश्वासशोफकृमीञ्जयेत्॥ हृद्रोगवृश्चिकविषविबंधाध्मानशूलहा। मांद्यत्वग्दोषशम-

नःश्वेतकृष्णविभेदतः ॥ श्वेतस्त्वौषधकृत्येषुयोग्यःप्रोक्तः पुरातनैः । (नि. र.)

अर्थ-मरुवा-चरपरा, गरम, दीपन, कडवा, तीक्ष्ण, हृदयको हितकारी, पित्तकारक, रुचिकारी, रूखा, हलका, सुगन्धि पाचक तथा पित्त, कफ, रक्तविकार, विषज्वर, कोढ, कण्डू, अरुचि, वात, श्वास, सूजन, कृमि, हृदयरोग, विच्छूका विष, मलबद्धता, पेटका फूलना, शूल, मन्दाग्नि और त्वचाके विकारोंको दूर करे है। मरुवा, श्वेत और कृष्ण इन भेदोंसे दो प्रकारका है इनमें सफेद मरुवा औषधीके प्रयोगमें लिया जाता है।

विवरण-मरुवेके क्षुप बागोंमें अधिक होते हैं, पत्ते लम्बे २ अंगुलीकी समान अत्यन्त सुगन्धित होते हैं इसमें तुलसीके समान बहुतसी बालें निकलती हैं, मरुवेके सब अंगोंमें सुगन्धि आती है।

दमनकनामानि ।



दमनक (दौना.)

उक्तोदमनकोदान्तोमुनिपुत्रस्तपोधनः ।
गन्धोत्कटोब्रह्मजटोविनीतःकुलपत्रकः ॥

अर्थ-दमनक, दान्त, मुनिपुत्र, तपोधन, गन्धोत्कट, ब्रह्मजट, विनीत, कुलपत्रक, (पुष्पचामर, मदनक, दमन, मुनि, जटिला, दण्डी, पाण्डुराग, ब्रह्मजटा, पुण्डरीक, तापसपत्री, पत्री, पवित्रक, देवशेखर, कुलपत्र, तपस्विपत्र)

संस्कृतभाषामें	दमनक ।
हिन्दीभाषामें	दौना, दवना ।

वंगभाषामें	दोना, दना ।
मराठीभाषामें	दवणा, रानदवणा ।
गुजरातीभाषामें	डमरो ।
कर्णाटकीभाषामें	दवना ।
अंग्रेजीभाषामें	वर्मुवुड । Worm wood
लैटिन्भाषामें	आर्टिमिस्या इन्डिका । Artemefial ndica
	आर्टिमिस्या सिवर्सियाना । A. Sieversian

दमनकगुणाः ।

दमनस्तुवरस्तिक्तोहृद्योवृष्यःसुगन्धिकः ।
ग्रहणाद्विषकुष्ठास्रक्लेदकण्डूत्रिदोषजित् ॥ (नि. र.)

अर्थ--दौना--कषेला, कडवा, हृदयको हितकारी, वीर्यवर्द्धक, सुगन्धि इसका सेवन करनेसे विष, कोढ, रुधिरविकार, क्लेद, कण्डू और त्रिदोष नाश होता है ।

अन्यच्च ।

दमनःशीतलस्तिक्तःकषायकटुकश्चदोषहरः ।
द्वन्द्वत्रिदोषशमनोविषस्फोटविकारहरणःस्यात् । (रा.)

अर्थ-दौना-शीतल, कडवा, कषेला, चरपरा, तथा, द्वन्द्वज दो त्रिदोष, विष और विस्फोटनाशक है ।

बनदमनकगुणाः ।

वनजोदमनःप्रोक्तोवीर्यस्तम्भनकारकः ।
बलप्रदश्चामदोषनाशकःपरिकीर्तितः ॥

अर्थ-वनदौना-वीर्यस्तम्भक, बलदायक व आमदोषनाशक है ।

अग्निदमनकगुणाः ।

अग्नेर्दमनकश्चोष्णःकटूरूक्षोग्निदीपनः ।
रुच्योहृद्योवातकफगुल्मप्लीहविनाशकः ॥

अर्थ-अग्निदवना-गरम, चरपरा, रूखा, अग्निदीपक, रुचिकारक, हृदय हितकारी तथा वात, कफ, गुल्म और प्लीहाको दूर करनेवाला है ।

विवरण-दौनेके क्षुप छोटे २ होते हैं. पत्ते अत्यन्त सुगन्ध युक्त होते पत्तोंके ऊपर बहुत रुआँसा होता है, फूलोंके छत्तेसे होते हैं ।

अर्जकनामानि।

अर्जकःक्षुद्रतुलसीक्षुद्रपर्णोमुखार्जकः।
उग्रगन्धस्तुजम्बीरःकुठेरस्तुकठिञ्जरः॥

अर्थ-अर्जक, क्षुद्रतुलसी, क्षुद्रपर्ण, मुखार्जक, उग्रगन्ध, जम्बीर, कुठेर, कठिञ्जर।

सितार्जकनामानि।

सितार्जकस्तुवैकुंठोवटपत्रःकुठेरकः।
जम्बीरोगन्धबहुलःसुमुखःकटुपत्रकः॥

अर्थ-सितार्जक, वैकुण्ठ, वटपत्र, कुठेरक, जम्बीर, गन्धबहुल, सुमुख, कटुपत्रक (श्वेतच्छद, पाता, अर्जक, श्वेतपर्णास, अम्रार्जक, तीक्ष्ण, तीक्ष्णगन्धा)

कृष्णार्जकनामानि।

कृष्णार्जकःकाममालोमालुकःकृष्णमालुकः।
स्यात्कृष्णमल्लिकाप्रोक्तागरघ्नोवनबर्बरः॥

अर्थ-कृष्णार्जक, कालमाल, मालुक, कृष्णमालुक, कृष्णमल्लिका, गरघ्न, वनबर्बर (कृष्णवर्णी, कालवर्णी, करालक, कृष्णपर्णी, सुरभिमालक, कालमालक)।

बर्बरीनामानि।

बर्बरीकबरीतुङ्गीखरपुष्पाजगन्धिका।

अर्थ-बर्बरी, कबरी, तुङ्गी, खरपुष्पा, अजगन्धिका, (असुरसा, बर्बा, अजगन्धा, कबरा, खरपुष्पिका, सुरभी, तुलसीद्वेषा, सुरसा, अपेतराक्षसी)।

वनबर्बरीनामानि।

वनबर्बरिकान्यातुसुगन्धिःसुप्रसन्नकः।
दोषाक्लशीविषघ्नश्चसुमुखःसूक्ष्मपत्रकः॥
निद्रालुःशोफहारीचसुवक्त्रश्चदशाह्वयः।

अर्थ-वनबर्बरिका, सुगन्धि, सुप्रसन्नक, दोषाक्लशी, विषघ्न, सुमुख, सूक्ष्मपत्रक, निद्रालु, शोफहारी, सुवक्त्र।

संस्कृतभाषामें अर्जक, बर्बरी, वनबर्बरी।
हिन्दीभाषामें बर्बरी, वनतुलसी।

वङ्गभाषामें	वाबुइतुलसी, बनवाबुइतुलसी ।
मराठीभाषामें	रानतुळस ।
गुजरातीभाषामें	रानतुलसीभेद ।
कर्णाटकीभाषामें	कगोरले--करीयकगोरले ।
तैलिङ्गीभाशमें	कारुतुलसी ।
सि०	तोकूबलाम्बा ।
लैटिन्भाषामें	ओसिमम् ग्रेटिसिमं । Ocimum gratissimum
फारसीभाषामें	पलंगमुष्क ।
अरबीभाषामें	फरंजमुष्क ।

अर्जकसितार्जक- कृष्णार्जकगुणाः ।

अर्जकास्त्रिकटूष्णाःस्युःकफवातामयापहाः ।
नेत्रामयहरारुच्याःसुखप्रसवकारकाः ॥ (रा. नि.)

अर्थ--तीनोंप्रकारकी अर्जक--चरपरी, रुचिकारक, गरम तथा कफ, वात रोग और नेत्ररोगनाशक है तथा सुखपूर्वक प्रसव करानेवाली है।

अन्यच्च ।

बर्बरीत्रितयंरूक्षंशीतंकटुविदाहिच ।
तीक्ष्णंरुचिकरंहृद्यंदीपनंलघुपाकिच ॥
पित्तलंकफवातास्रदद्रुक्रिमिविषापहम् ।

अर्थ-तीनोंप्रकारकी बर्बरी-रूखी, शीतल, चरपरी, दाहजनक, तीक्ष्ण, रुचिकारक, हृदयको हितकारी, दीपन, पचनेमें हलकी, पित्तकारक तथा कफ, वात, रुधिरदोष, दाद, कृमि और विषको दूरकरनेवाली है।

अपिच ।

आरण्यतुलसीक्षुद्राकटूवीचोष्णाचतिक्तका। रुच्याग्निदीपनीहृद्याविदाहीलघुपित्तला ॥ रूक्षाकण्डूविषच्छर्दिकुष्ठज्वरविनाशिनी। वातंकृमीन्कफंदद्रुंरक्तदोषञ्चनाशयेत। बीजंचास्यादाहशोषनाशकंपरिकीर्त्तितम् ।

अर्थ--सर्वप्रकारकी बर्बरी- चरपरी, गरम, कड़वी, रुचिकारक, अग्निदीपक, हृदयको हितकारक, दाहकारक, हलकी, पित्तजनक, रूखी तथा कण्डू, विष, वमन, कुष्ठ, ज्वर, वात, कृमि, कफ दाद और रुधिरके दोषोंको दूर करनेवाली है। इसके बीज-दाह और शोषनाशक हैं।

वनबर्बरिकागुणाः ।

वनबर्बरिकाचोष्णासुगन्धाकटुकाचसा ।
पिशाचवान्तिभूतघ्नीघ्राणसन्तर्पणीपरा ॥ (रा. नि.)

अर्थ-वनबर्बरी--गरम, सुगंधित, चरपरी, नासिकाइंद्रियको तृप्ति करने वाली तथा पिशाचबाधा, वमन और भूतबाधाको दूर करनेवाली है ।

अन्यच्च ।

आरण्यतुलसीचोष्णाकटुकाचसुगन्धिका ।
वातत्वग्दोषवीसर्पविषंचैवविनाशयेत् ॥ (नि. र.)

अर्थ-वनतुलसी -गरम, चरपरी, सुगंधित तथा वात, त्वचाके विकार, विसर्प और विषके विकारोंको हरनेवाली है ।

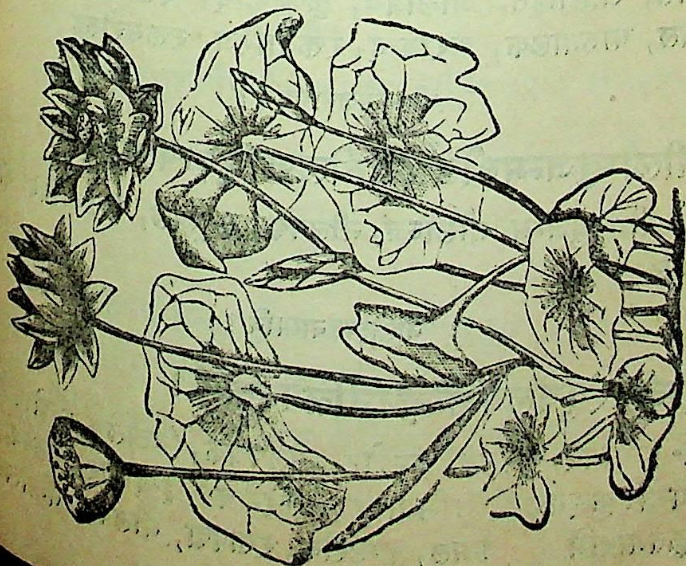
अपिच ।

निद्राहरःशोफहारीदाहकारीचसस्मृतः ।
सुमुखंचातिकृच्छ्रघ्नंवातश्लेष्महरंपरम् ॥

अर्थ-वनबर्बरी--निद्राका नाशकरनेवाली, शोफनाशक, दाहकारक तथा मूत्रकृच्छ्र, वात और कफनाशक है ।

विवरण-बर्बरी अर्थात् वनतुलसी अनेक प्रकारकी होती है यह प्रायः जंगल और वनोंमें अधिक होतीहै, पत्ते पियाबाँसेके समान छोटे होतेहैं उनमें नीमके पत्तोंकेसे कंगूरे होते हैं, फूल पिलावनलिये होता है सुगंधिभी बहुत आती है ।

अथ पङ्कजनामानि ।



पङ्कजंकमलंपद्ममब्जंनलिनमम्बुजम् ।
कुशेशयश्वराजीवमरविन्दंसरोरुहम् ॥

अर्थ-पङ्कज, कमल, पद्म, अब्ज, नलिन, अम्बुज, कुशेशय, राजीव, अरविन्द, सरोरुह (पाथोज, नल, अम्भोज, अम्बुजन्म श्री (:) अम्बुरोह, अम्बुपद्म, सुजल, अम्भोरुह, पाथोरुह, पुष्कर, वार्ज, तामरस, कुञ्ज, कञ्ज, शतपत्र, बिसकुसुम, सहस्रपत्र, महोत्पल, वारिरोह, सरसिज, सलिलज, पंकेरुह, बिसप्रमून, वारिज, कवार, आस्यपत्र, वनशोभन, जलजन्म, जलरुट, जलरुह, सरोज, सरोजन्म, सरोरुट, पंकेज, श्रीवास, श्रीपर्ण, इंदिरायल, जलजात, कंज; नालीक, नालिक, वनज, अम्लान, पुटक, अग्र, सारज, सीरुह, कुटप,)

श्वेतकमलनामानि ।

पुण्डरीकंमहापद्मंश्वेतपद्मंसिताम्बुजम् ।
दशोपमंहरिनेत्रंशारदंशम्भुवल्लभम् ॥

अर्थ- पुण्डरीक, महापद्म, श्वेतपद्म, सिताम्बु, दशोपम, हरिनेत्र, शारद, शम्भुवल्लभ (सिताम्भोज, शतपत्र, शुक्लपद्म सिताब्ज, श्वेतवारिज, शरत्पद्म)

रक्तकमलनामानि ।

रक्तोत्पलंकोकनदंरक्तवर्णरविप्रियम् ।

अर्थ-रक्तोत्पल, कोकनद, रक्तवर्ण, रविप्रिय, (अल्पपत्र, रक्तकमल, रक्त कम्बल, आलोहित, अलिप्रिय, कृष्णकन्द, रक्ताम्भोज, शोणपद्म, अरुणकमल, चारुनालक, अरविन्द, रक्तवारिज, रक्तसरोरुह ।

नीलकमलनामानि ।

नीलाम्बुजन्मनीलाब्जंनीलपद्मंमृदूत्पलम् !

अर्थ-नीलम्बुजन्म, नीलाब्ज, नीलपद्म, मृदूत्पल, (इन्दीवर, नीलवारिजनीलकमल,)

नीलोत्पलनामानि ।

इन्दीवरंकुवलयंकन्दोटंनीलपत्रकम् ।

अर्थ--इन्दीवर, कुवलय, कन्दोट, नीलपत्रक, (उत्पलक, कन्दोत्थ, सौगन्धिक, सुगन्ध, कुड्मलक, असितोत्पल, इंदिरावर, इन्दीवार, नीलपत्र,) नीलोत्पल।

संस्कृतभाषामें कमल, पुण्डरीक, रक्तपद्म, नीलपद्म, नीलोत्पल

हिन्दीभाषामें कमल सफेद्कमल, लालकमल, नीलकमल, नील-कमोदनी ।
बंगभाषामें पद्म, श्वेतपद्म, रक्तपद्म, नीलपद्म, नीलशुन्दि,
मराठीभाषामें कमळ, पांढरेंकमळ, तांबडेंकमळ, नीलेंकमल, ।
गुजरातीभाषामें कमल, घोलाकमल, रातनाउघेडेते रातांकमल, जेना नालमां कांटाहोय, नीलकमल, सुगन्धीनेताना ।
कर्णाटकीभाषामें विलीयतावरे, केदावरे, करियतावरे, नेइदिलु ।
तैलिंगीभाषामें कालात्रा, नालावाकालावा, एराकालावा, तम्मि; तम्मियुव्वु, नेल्लनामर, नल्लकुलवु ।
तामिलीभाषामें अम्बल ।
अंग्रेजीभाषामें लोटस् । Lotus
लेटिन् भाषामें लीलंवियम् स्पेसीयोज्ञम् । Nelumbium Speciosum
नीलंबीयं केरुलियम् Nelumbinm Carruleum
नीलवीयं प्युवेसिन्स । Npubeseins
फारसीभाषामें नीलुफर, गुलनीलोफर ।
अरबीभाषामें करंबुलमा, बर्द नीलोफर ।

कमलगुणाः ।

कमलंशीतलंवर्ण्यंमधुरंकफपित्तजित् ।
तृष्णादाहास्रविस्फोटविषवीसर्पनाशनम् ॥ (भा. प्र.)

अर्थ--साधारणकमल-शीतल, देहको सुन्दर करनेवाला, मधुर तथा कफ, पित्त, तृषा, दाह, रुधिरदोष, विस्फोट, विष और विसर्परोगनाशक है।

अन्यच्च ।

पद्मंकषायंमधुरंशीतंपित्तकफास्रजित् । (राजवल्लभ)

अर्थ-कमल--कषेला, मधुर, शीतल तथा पित्त, कफ और रुधिरविकारको दूर करे है ।

अपिच ।

कमलंशीतलंस्वादुसुगन्धिभ्रान्तितापहम् । वर्ण्यंतृप्तिकरंचैवरक्तपित्तश्रमापहम् ॥ कफंपित्तंतृषांदाहंविस्फोटंरक्तदोषकम् । विसर्पञ्चविषञ्चैवनाशयेदितिकीर्त्तितम् ॥

अर्थ--कमल-शीतल, स्वादिष्ठ, सुगन्धि, भ्रान्तिहारक, तापनिवारक

वर्णकारक, तृप्तिजनक तथा रक्तपित्त, श्रम, कफ, पित्त, तृषा, दाह, विस्फोट, रक्तविकार, विसर्प और विषको दूर करनेवाला है।

श्वेतकमलगुणाः।

धवलंकमलंशीतंमधुरंकफपित्तजित्। (भा० प्र०)

अर्थ--सफेदकमल--शीतल, मधुर तथा कफ और पित्तनाशकहै।

अन्यच्च।

श्वेतंतुकमलंशीतंस्वादुतिक्तंकषायकम्। मधुरंवर्णकृन्नेत्र्यं रक्तदोषतृषाहरम्॥ कफंपित्तंश्रमंदाहंतृष्णांशोथंव्रणंज्वरम्। सर्वविस्फोटकश्चैवनाशयेदितिकीर्तितम्॥ (रा. नि.)

अर्थ--सफेदकमल, शीतल, स्वादिष्ट, कडवा; कषेला, मधुर, वर्णको उज्ज्वल करनेवाला नेत्रोंको हितकारी तथा रुधिरविकार, तृषा, कफ, पित्त, श्रम, दाह, तृष्णा, शोष, व्रण, ज्वर और सर्वप्रकारके विस्फोटकोंके हरनेवाला है।

रक्तकमलगुणाः।

कोकनदंकटुतिक्तंमधुरंशिशिरञ्चरक्तदोषहरम्। पित्तकफवातशमनंसन्तर्पणकारणंवृष्यम्॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ--लालकमल--चरपरा, कडवा, मधुर, शीतल, रक्तदोषनाशक, पित्त, कफ और वातको शान्ति करनेवाला संतर्पण तथा शुक्रवर्द्धक है।

नीलकमलगुणाः।

नीलाब्जंशीतलंस्वादुसुगन्धिपित्तनाशकृत्। रुच्यंरसायनेश्रेष्ठंकेश्यंचदेहदार्ढ्यकृत्॥ (रा. नि.)

अर्थ--नीलकमल--शीतल, स्वादिष्ठ, सुगन्धि, पित्तनाशक, रुचिकारक, रसायनकर्म्ममें उत्तम, देहको, दृढ करनेवाला और बालोंको बढानेवाला है।

नीलोत्पलगुणाः।

नीलोत्पलमतिस्वादुशीतंसुरभिसौख्यकृत्। पाकेतुतिक्तमत्यन्तंरक्तपित्तापहारकम्॥ (रा. नि.)

अर्थ--नीलोत्पल (फा०नीलोफर)--अत्यन्त स्वादिष्ठ शीतल, सुगन्धि, सुखकारक, पचनेमें अत्यन्त कडवा और रक्तपित्तनाशक है।

पद्मिनीनामानि।

मूलनालदलोत्फुल्लैःफलैःसमुदितापुनः।

पद्मिनीप्रोच्यतेप्राज्ञैर्विसिन्यादिश्चसास्मृता ॥

अर्थ-मूल, नाल, पत्र और बीजादिसंयुक्त, खिलेहुए कमलको पद्मिनी कहते हैं, (विसिनी, नलिनी, कुन्दिनी, मृणालिनी, कमलिनी, पुटकिनी, पद्मिनी, सरोजिनी, अरविन्दिनी, अब्जिनी, नालिकिनी, अम्भोजिनी, पुष्करिणी और जम्बालिनी यह सब पद्मिनीके पर्य्याय हैं) ।

पद्मिनीगुणाः ।

पद्मिनीमधुरातिक्ताकषायाशिशिरापरा ।
पित्तक्रिमिशोषवान्तिभ्रांतिसन्तापशान्तिकृत् (रा. नि.)

अर्थ-कमलिनी-मधुर, कडवी, कषेली, शीतल तथा पित्त, कृमि, शोष, वांति, भ्रांति और संतापकी शांति करनेवाली है ।

अन्यच्च ।

पद्मिनीशीतलागुर्वीमधुरालवणाचसा ।
पित्तासृक्कफनुद्रूक्षावातविष्टम्भकारिणी ॥ (भा. प्र.)

अर्थ-कमलिनी-शीतल, भारी, मधुर, लवणरसयुक्त, रक्तपित्तनिवारक, कफनाशक, रूखी और वातविष्टम्भकारक है ।

अपिच ।

पद्मिनीमधुराशीतातिक्ताचतुवरागुरुः । वातस्तम्भकरीरूक्षास्तनदार्ढ्यकरीमता ॥ कफंपित्तंरक्तरुजंविषंशोषंवमिंकृमीन् । सन्तापंमूत्रकृच्छ्रंचनाशयेदितिकीर्त्तिता ॥ (नि. र.)

अर्थ -कमलिनी-मधुर, शीतल, कडवी, कषेली, भारी, वातस्तम्भकारक रूखी, स्तनोंको दृढ करनेवाली तथा कफ, पित्त, रक्तविकार, विष, शोष, वमन, कृमि, संताप और मूत्रकृच्छ्ररोगको हरनेवाली है ।

पद्मसंवर्त्तिकादिनामानि ।

संवर्त्तिकानवदलंबीजकोशस्तुकर्णिका ।
किञ्जल्कःकेसरःप्रोक्तोमकरन्दोरसःस्मृतः ॥
पद्मनालंमृणालंस्यात्तथाबिसमितिस्मृतम् ।

अर्थ-कमलके नये पत्तोंको संवर्त्तिका, बीजकोश (कमलगट्टेका घर) को कर्णिका, केसर (जीरा) को किञ्जल्क रसको मकरन्द और नालको मृणालकंद तथा बिस (कमलकंद) कंद कहते हैं ।

संवर्तिकागुणाः ।

संवर्त्तिकाहिमातिक्ताकषायादाहतृट्प्रणुत् ।
मूत्रकृच्छ्रगुदव्याधिरक्तपित्तविनाशिनी ॥

अर्थ-कमलके कोमलपत्ते-शीतल, कडवे, कषेले तथा दाह, तृषा, मूत्रकृच्छ्र, गुदरोग और रक्तपित्तको दूर करनेवाले हैं।

कर्णिकागुणाः ।

पद्मस्यकर्णिकातिक्ताकषायामधुराहिमा ।
मुखवैशद्यकृल्लघ्वीतृष्णास्रकफपित्तनुत् ॥ (भा. प्र.)

अर्थ-कर्णिका (बीजकोष)-कडवा, कषेला, मधुर, शीतल, हलकी तथा मुखकी विरसता, तृषा, रक्तविकार, कफ और पित्तका नाश करे है।

पद्मकेसरनामानि ।

किञ्जल्कंमकरन्दश्चकेसरंपद्मकेसरम् ।

अर्थ-किञ्जल्क, मकरंद, केसर, पद्मकेसर (किञ्ज, पीतपराग, तुङ्ग, चाम्पेयक, केशर, चाम्पेय, आपीत, काञ्चन)

पद्मकेसरगुणाः ।

किञ्जल्कःशीतलोवृष्यःकषायोग्राहिकोऽपिसः ।
कफपित्ततृषादाहरक्तार्शोविषशोथजित् ॥

अर्थ-कमलकेसर-शीतल, वीर्य्यवर्द्धक, कषेली, मलरोधक तथा कफ, पित्त, तृषा, दाह, रक्तार्श (रुधिरकी बवासीर), विष और सूजनको दूर करे है।

अन्यच्च ।

किञ्जल्कोमधुरोरूक्षःकटुरास्यव्रणापहः ।
शिशिरोरुच्यपित्तघ्नस्तृष्णादाहविषापहः ॥ (रा० नि०)

अर्थ-कमलकेसर-मधुर, रूखी, चरपरी, मुखरोग, तथा व्रणरोगनाशक है और शीतल, रुचिकारक, पित्तनाशक, तृषा, दाह और विषको दूर करनेवाली है।

अपिच ।

किञ्जल्कःशीतलोग्राहीकान्तिदस्तुवरोमधुः । कटूरूक्षोरु-चिकरोगर्भस्थैर्य्यकरोमतः ॥ व्रणंपित्तंतृषांदाहंमुखरोगंच

यंकफम् । विषंरक्तार्शसंशोषंज्वरंवातञ्चनाशयेत् ॥ (नि. र०)

अर्थ-कमलकेसर -शीतल, मलरोधक, कान्तिजनक, कषेली, मधुर, चरपरी, रुचिकारी, गर्भको स्थिर करनेवाली तथा व्रण, पित्त, तृषा, दाह, मुखरोग, क्षय, कफ, विष, रक्तार्श, शोष, ज्वर और वातका नाश करनेवाली है ।

पद्मबीजनामानि ।

पद्मबीजन्तुपद्माक्षंगालाड्यंपद्मकर्कटी ।

अर्थ-पद्मबीज, पद्माक्ष, गालोड्य, पद्मकर्कटी (कन्दली, भेण्डा, क्रौञ्चादनी, क्रौञ्चा, श्यामा) ।

संस्कृतभाषामें	पद्मबीज ।
हिन्दीभाषामें	कमलगट्टा ।
वंगभाषामें	पद्मवीचि ।
मराठीभाषामें	कमलाक्ष ।
तैलिङ्गीभाषामें	तामरकाडा ।
गुजरातीभाषामें	कमलकाकडी ।
कर्णाटकीभाषामें	पद्माक्ष ।
अरबीभाषामें	वालकेकुब्रति ।

अस्य गुणाः ।

पद्मबीजंहिमंस्वादुकषायंतिक्तकंगुरु ।
विष्टम्भिवृष्यंरूक्षञ्चगर्भस्यस्थापकंपरम् ॥
कफवातहरंबल्यंग्राहिपित्तास्रदाहनुत् ।(भा० प्र०)

अर्थ-कमलगट्टा-शीतल, स्वादिष्ठ, कषेला, कडवा, भारी,विष्टम्भकारक वीर्यवर्द्धक, रूखा, गर्भस्थापक, कफवातनाशक, बलकारक, मलरोधक तथा रक्तपित्त और दाहको दूर करनेवाला है ।

अपिच ।

कमलाक्षःस्वादुरुच्यःपाचनःकटुकःस्मृतः । शीतलस्तुवरस्तिक्तोगुरुर्विष्टम्भकारकः ॥ गर्भस्थितिकरोरूक्षोवृष्योवातकरोमतः । कफकृल्लेखनोग्राहीबल्यःपित्तविनाशकः ॥ रक्तरुग्वमिदाहास्रपित्तनाशकरोमतः । (निघण्टुरत्नाकर)

अर्थ-कमलगट्टा-स्वादिष्ठ, रुचिकारक, पाचक, चरपरा, शीतल, कषेला कडवा, भारी, विष्टम्भकारक, गर्भस्थापक, रूखा, वीर्य्यवर्द्धक, वातवर्द्धक, कफकारक, लेखन, मलरोधक, बलकारक तथा पित्त, रक्तविकार, वमन, दाह और रक्तपित्तका नाश करनेवाला है। पूर्वदेशमें कमलगट्टेकी गिरी (मींग) को भूनकर मखाना बनाते हैं। मखानेके गुण आगे परिशिष्टवर्गमें लिखे हैं।

मकरन्द-पद्ममधुगुणाः।

अरविन्दहृतःशीतोमकरन्दोतिबृंहणः।
त्रिदोषशमनःसर्वनेत्रामयनिषूदनः॥ (आ० सं०)

अर्थ-कमलका मधु-शीतल अत्यन्तपुष्टिकारक, त्रिदोषनाशक और सर्वप्रकारके नेत्ररोगोंको दूर करनेवाला है।

कमलिनीपत्रगुणाः।

कमलिन्याश्छदःशीतस्तुवरोमधुरोमतः।
तिक्तःपाकेतिकटुकोलघुर्वैग्राहकोमतः॥
वातकृत्कफपित्तानांनाशकोमुनिभिःस्मृतः॥ (नि. र.)

अर्थ-कमलिनीके पत्ते-शीतल, कषेले, मधुर, कडवे, पचनेमें चरपरे, हलके, मलरोधक, वातकारक तथा कफपित्तनाशक हैं।

पद्मनालनामानि।

मृणालंपद्मनालञ्चकोमलंबिसिनीबिसम्।

अर्थ-मृणाल, पद्मनाल, कोमल, बिसिनी, बिस (बिस, कोरक, कोमलक, तन्तुर, मृणाली, मृणालिनी, पद्मतन्तु, नलिनीरुह, तन्तुल)

संस्कृतभाषामें	मृणाल, पद्मनाल।
हिन्दीभाषामें	कमलकी नाल, कमलकी दंडी।
वंगभाषामें	पद्मेरडांटा।
मराठीभाषामें	कमळाचा देंट।
कर्णाटकीभाषामें	कमलदनूलु।
तैलिङ्गीभाषामें	तामरतुंड, तामरतोंगे।

मृणालगुणाः।

मृणालंशिशिरंतिक्तंकषायंपित्तदाहजित्।
मूत्रकृच्छ्रविकारघ्नंरक्तवान्तिहरंपरम्॥ (रा० नि०)

अर्थ-कमलकी नाल- शीतल, कड़वी, कषेली तथा पित्त, दाह, मूत्रकृच्छ्र रुधिरविकार और वमनको हरनेवाली है ।

अन्यच्च ।

मृणालंशीतलंवृष्यंपित्तदाहास्रजिद्गुरु ।
दुर्जरंस्वादुपाकञ्चस्तन्यानिलकफप्रदम् ॥
संग्राहिमधुरंरूक्षंशालूकमपितद्गुणम् । (भावप्रकाश)

अर्थ-कमलकी नाल--शीतल, वीर्य्यवर्द्धक, पित्तनिवारक, दाहहारक, रक्तरोगनाशक, भारी, दुर्जर पचनेमें, स्वादिष्ठ, स्तनोंमें दूध उत्पन्न करनेवाली, वातवर्द्धक, कफकारक. मलरोधक, मधुर और और रूखी है इसीके समान भसींडेके गुण जानने ।

पद्मकन्दनामानि ।

पद्मादिकन्दश्शालूकंकरहाटश्चकथ्यते ॥
मृणालमूलंभिस्साण्डंजालालूकश्चकथ्यते ॥

अर्थ-कमलादिकके कन्दको–शालूक, करहाट (पद्ममूल, कटाह्वय, शालूक और नालालूक) कहते हैं । मृणालकी मूलको भिस्साण्ड, जलालूक, (पंकसूरण, शालूक, शालु और गोपभद्र) कहते हैं ।

संस्कृतभाषामें	पद्मकन्द, भिस्साण्ड ।
हिन्दीभाषामें	कमलकन्द, भसीडा ।
बंगभाषामें	पद्मेर गेंडों, शालुक ।
तैलिङ्गीभाषामें	जाजिकाय ।

शालूकगुणाः ।

शालूकंकटुविष्टम्भिरूक्षंरुच्यंकफापहम् ।
कषायकासपित्तघ्नंतृष्णादाहनिवारणम् ॥ (रा० नि०)

अर्थ-शालूक (कमलकंद, भसीडा)-कटु, विष्टम्भकारक, रूक्ष, रुचिकारक, कफनाशक, कषेला तथा खाँसी, पित्त, तृषा और दाहनिवारक है ।

अपिच ।

शालूकःकटुकश्चोक्तस्तुवरोमधुरोगुरुः । मलस्तम्भकरोरूक्षोनेत्र्योवृष्यश्चशीतलः॥दुर्जरोग्राहकोरक्तपित्तंदाहंतृपांकफम् । पित्तवातश्चगुलमश्चपित्तंकासंकृमींस्तथा॥मुखरोगंरक्तदोषंनाशयेदितिचस्मृतः । (नि० र०)

अर्थ-शालूक (कमलकन्द, भसीडा) कटु, कषेला, मधुर, भारी, मलस्त-म्भक, रूखा नेत्रोंको हितकारी, वीर्य्यवर्द्धक, शीतल, दुर्जर, मलरोधक रक्तपित्त, दाह, तृषा, कफ, पित्तवात, गुल्म, पित्त, खाँसी, कृमि, मुखरोग और रुधिरविकारको दूर करनेवाला है ।

विवरण । कमल-लाल, नीले और सफेद इन भेदोंसे तीन प्रकारके होते हैं, कमल विशेषकरके गम्भीर और निर्मल नीरवाले स्वच्छ सरोवर और तालोंमें उत्पन्न होते हैं पत्ते बडे २ गोल और चिकने जिनपर जलका बिन्दु न ठहरै इस प्रकारके अद्भुत और शोभायमान होते हैं. उन पत्तोंको पुरैन पात भी कहते हैं, उनके नीचे जो डण्डी होती है उसको मृणाल अर्थात् कमलकी नाल कहते हैं, कमलके फूलोंमें जो पीला २ जीरा होता है उसको कमल केशर कहते हैं, कमलके फूलोंमें जो स्वरस रस लगा होता है उसको कमलकी रज और मकरन्द कहते हैं कमलमें जो फल 'लगते हैं उसको कमलकी रज और मकरन्द कहते हैं कमलमें जो फल लगते हैं उसको पद्मकोष कहते हैं, उनमें जो बीज निकलते हैं उनका नाम कमलगट्टा है कमलकी जडको भसीडे कहते हैं ।

कुमुदनामानि ।

कैरवंचन्द्रकान्तश्चगर्दभंकुमुदंकुमुद् ।

अर्थ-कैरव, चन्द्रकान्त, गर्दभ, कुमुद, कुमुद् (सौगन्धिक, कन्दोट, कच्छ, कुव, गन्धसोम, सितोत्पल, धवलोत्पल, श्वेतोत्पल, कह्लार, शीतलक, शशिकान्त , चन्द्रिकाम्बुज, इन्दुकमल, कुवलय)

संस्कृतभाषामें	कुमुद ।
हिन्दीभाषामें	कोई, कमोदनी, वघोला, बबूला ।
बंगभाषामें	हेलाफुल, नालिफुल, श्वेतशुद्धि ।
मराठीभाषामें	पांढरें उत्पल ।
गुजरातीभाषामें	पोयणा ।
कर्णाटकीभाषामें	विलियेतें इटिलु ।

कुमुदगुणाः ।

कुमुदंशीतलंस्वादुपाकेतिक्तंकफापहम् ।
रक्तदोषहरंदाहश्रमपित्तप्रशान्तिकृत् ॥ (रा० नि०)

अर्थ-कुमुद (कमोदनी)--शीतल स्वादिष्ठ पचनेमें कडवी, कफनाशक तथा रुधिरविकार, दाह, श्रम और पित्तको शांति करे है ।

अन्यच्च ।

कुमुदंपिच्छिलंस्निग्धंमधुरंह्लादिशीतलम् ।

अर्थ-कुमुद-पिच्छिल, स्निग्ध, मधुर, शीतल और आनन्दजनक है ।

कुमुदबीजगुणाः ।

भवेत्कुमुद्वतीबीजंस्वादुरूक्षंहिमंगुरु ।

अर्थ-कुमुदके बीज अर्थात् घंघोलके दाने-स्वादिष्ट, रूक्ष, शीतल और भारी हैं ।

उत्पलनामानि ।

अनुष्णंचोत्पलंचैवरात्रिपुष्पंजलाह्वयम् ।
हिमाब्जंशीतजलजंनिशाफुल्लश्चसप्तधा ॥

अर्थ- अनुष्ण, उत्पल, रात्रिपुष्प, जलाह्वय, हिमाब्ज, शीतजलज, निशाफुल्ल (पुष्प) (कुवल, कुवलय कुवेल) ।

उत्पलगुणाः ।

उत्पलंशिशिरंस्वादुपित्तरक्तार्त्तिदोषनुत ।
दाहश्रमवमिभ्रान्तिकृमिज्वरहरंपरम् ॥

अर्थ-उत्पल-शीतल, स्वादिष्ट तथा पित्त, रक्तविकार, दाह, श्रम, वान्ति, भ्रान्ति, कृमि और ज्वरको शान्ति करे है ।

रक्तकुमुदनामानि ।

हल्लकंरक्तकुमुदंसोमाख्यंरक्तकैरवम् ।

अर्थ-हल्लक, रक्तकुमुद, सोमाख्य, रक्तकैरव (रक्तसन्ध्यक, रक्तकह्लार, रक्तसौगन्धिक, रोचना, अलगन्ध)

उत्पलिनीनामानि ।

उत्पलिनीकैरविणीकुमुद्वतीकुमुदिनीचचन्द्रेष्टा ।
कुवलयिनीन्दीवरिणीनीलोत्पलिनीचविज्ञया ॥

अर्थ-उत्पलिनी, कैरविणी कुमुदिनी, चन्द्रेष्टा, कुवलयिनी, इन्दीवरिणी, नीलोत्पलिनी ।

उत्पलिनीगुणाः ।

उत्पलिनीहिमातिक्तारक्तामयहारिणीचपित्तघ्नी ।
तापकफकासतृष्णाश्रमवमिशमनीचविज्ञेया ॥ (रा. नि.)

अर्थ-कुमुदिनी. उत्पलिनी, शीतल, कडवी, तथा रक्तरोग, पित्त, ताप, कफ, खांसी, तृषा, श्रम और वमनको दूर करनेवाली है।

विवरण। कुमुदनी कमलके तुल्य तीन प्रकारके होते हैं लाल, नीले और सफेद फूलोंके भेदसे हो जाते हैं, कुमुदके फूल कमलके फूलोंसे छोटे होते हैं और रात्रिको चन्द्रमाके उदय होनेपर खिलते हैं और सूर्य्यका प्रकाश होतेही बन्द होजाते हैं, इसके पत्त फूलके ऊपरही लगे होते हैं, उसमें जावित्रीके समान कोष होताहै, उस कोषका फल होजाताहै, कच्ची अवस्थामें तो उसके भीतर लालदाने निकलते हैं और पक जानेपर वह दाने काले पड जातेहैं इस फलको घंघोल कहते हैं, उसकी जडको चाच अथवा सालक कहते हैं।

स्थलपद्मिनीनामानि ।

पद्मचारिण्यतिचराऽव्यथापद्माचसारदा ।

अर्थ-पद्मचारिणी, अतिचरा, अव्यथा, पद्मा, सारदा, (चारिटी, पद्माह्वा, सुगन्धमूला, अम्बुरुहा, लक्ष्मी, श्रेष्ठा, सुपुष्करा, रम्या, पद्मावती, स्थलरुहा, पुष्करिणी, पुष्करपर्णिका, पुष्करनाडी)।

संस्कृतभाषामें	स्थलपद्मिनी ।
हिन्दीभाषामें	स्थलकमलिनी ।
वंगभाषामें	स्थलपद्म ।
मराठीभाषामें	स्थलकमलिनी ।
कर्णाटकीभाषामें	कलुदाबरे ।
लैटिनभाषामें	आयोनीडयं फ्रुटिकोसं । Ionidiuam Suffruticosum

अस्य गुणाः ।

शीतातिक्ताचतुवरास्तनदार्ढ्यकरीमता।लघ्वीकटूवीचविरेयाकफपित्तस्यनाशिनी ॥ मूत्राश्मरीमूत्रकृच्छ्रवातशूलातिसारहा । वान्तिदाहमोहमेहौरक्तरुग्श्वासहामता ॥ अपस्मारंविषंकासंनाशयेत्पद्मचारिणी । (नि. र.)

अर्थ--पद्मचारिणी-स्थलकमलिनी, शीतल, कडवी, कषेली, स्तनोंको दृढ करनेवाली, हलकी, चरपरी, तथा कफ, पित्त, मूत्राश्मरी, मूत्रकृच्छ्र, वात, शूल, अतिसार, वमन, दाह, मोह, प्रमेह, रक्तविकार, श्वास, अपस्मार, विष और खांसीको दूर करनेवाली है।

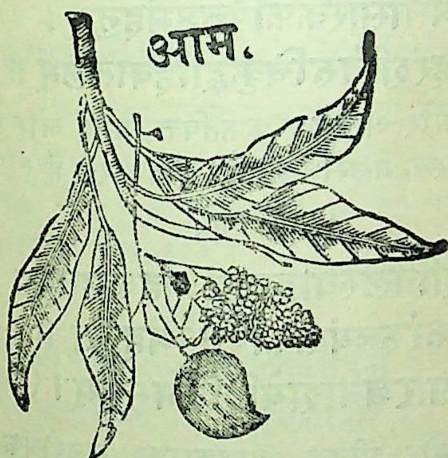
विवरण । स्थलकमलभी कमलकेही समान होता है, परन्तु इसमें विशेषता यह है कि, पृथ्वीमें उत्पन्न होता है, आकृति तो सब कमलकीसीही होती है किन्तु पत्ते और फूल, फल सब कमलसे छोटे होते हैं ।

इति श्रीशालिग्रामनिघण्टुभूषणेपुष्पवर्गः ॥ ४ ॥

अथ फलवर्गः ।



आम्रनामानि ।



आम्रःप्रोक्तोरसालश्चसहकारोऽतिसौरभः ।
कामाङ्गोमधुदूतश्चमाकन्दःपिकवल्लभः ॥

अर्थ-आम्र, रसाल, सहकार, अतिसौरभ, कामाङ्ग, मधुदूत, माकन्द, पिकवल्लभ, (चूतक, अम्र, फलश्रेष्ठ, फलोत्पत्ति, मृषालक, चूत, षट्पदातिथि, वसन्तद्रु, पिकप्रिय, स्त्रीप्रिय, गन्धबन्धु, अलिप्रिय, शरेष्ट, मदिरासख, पिकबन्धु, केशवायुध, कोषी, परपुष्टमहोत्सव, कामशर, कामवल्लभ, कामांग, कीरेष्ट, माधवद्रुम, भृङ्गाभीष्ट, सीधुरस, माधूली, कोकिलोत्सव, वसन्तदूत, मोदाख्य, मन्मथालय, मध्वावास, सुमदन, पिकराग, नृपप्रिय, प्रियम्बु, कोकिलावास, वसन्तपादप, भ्रमरप्रिय, मनोज्ञ, मन्मथावास, शुकप्रिय वनोत्सव, मदाढ्य, मञ्जरी) ।

संस्कृतभाषामें आम्र ।
हिंदीभाषामें आम ।

वङ्गभाषामें	आम।
मराठीभाषामें	आंबा।
गुजरातीभाषामें	आंबो।
कर्णाटकीभाषामें	माविनफल।
तैलिंगीभाषामें	माविडि।
अंग्रेजीभाषामें	मंगोट्री। Mangotree
लैटिन्भाषामें	मँगीफराइडिका। Mangifera Indica
फारसीभाषामें	आंबा।
अरबीभाषामें	अम्बज।

आम्रपुष्पगुणाः।

आम्रपुष्पमतीसारकफपित्तप्रमेहनुत्।
असृग्दुष्टिहरंशीतंरुचिकृद्ग्राहिवातलम्॥ (भा. प्र.)

अर्थ-आमका मौर-अतिसार,कफ,पित्त, प्रमेह और दुष्टरक्तनाशक है तथा शीतल, रुचिकारक, मलरोधक और वातकारक है।

अन्यच्च।

आम्रपुष्पंशीतलंस्याद्वातलंग्राहकंमतम्।
अग्निदीप्तिकरंरुच्यंकफपित्तप्रमेहनुत्॥
प्रदरंचातिसारश्चनाशयेदितिमेमतम्। (निघण्टुरत्नाकर)

अर्थ-आमका मौर-शीतल, वातकारक, मलरोधक, अग्निप्रदीपक, रुचिकारी तथा कफ, पित्त, प्रमेह प्रदर और अतिसारनिवारक है।

बालतरुणाम्रगुणाः।

बालाम्रकंकषायाम्लंरुच्यंमारुतपित्तकृत्।
तरुणंतुतदत्यम्लंरूक्षंदोषत्रयास्रकृत्॥ (भा. प्र.)

अर्थ-बालाम्र अर्थात् कच्ची अँबिया-कषेली, खट्टी रुचिकारक तथा वात और पित्तकारक है, विनापका हुआ बडा आम-अत्यन्त खट्टा, रूखा तथा त्रिदोष और रुधिरके विकारोंको उत्पन्न करे है।

अन्यच्च।

बालाम्रकंरक्तपित्तकरंमध्यन्तुपित्तलम्। (रा, व.)

अर्थ -कच्ची अँबिया--रक्तपित्तकारक और तरुण आम पित्तजनक है।

अपिच ।

बालम्रस्तुवरश्चोष्णःसुगन्धिश्चाम्लकःस्मृतः । क्षारस्ययोगाद्रुचिदोग्राहीरूक्षश्चकान्तिदः ॥ पित्तवातकफान्रक्तदोषांश्चैवकरोतिसः । कण्ठरुग्वातमेहश्चयोनिदोषव्रणंतथा ॥ अतिसारंप्रमेहश्चनाशयेदितिकीर्तितः । (नि० र०)

अर्थ--कच्ची अँबिया--कषेली, गरम, सुगन्धि, खट्टी, किसी क्षारके साथ होनेसे रुचिकारी, मलरोधक, रूखी तथा कान्ति, पित्त वात, कफ और रुधिरके दोषोंको उत्पन्न करनेवाली और कण्ठरोग, वात, प्रमेह, योनिदोष, व्रण, अतिसार तथा प्रमेहको हरनेवाली है ।

आम्रपेशीगुणाः ।

आम्रमामंत्वचाहीनमातपेतिविशोषितम् ।
आम्लस्वादुकषायंस्याद्भेदनंकफवातजित् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-कच्चे आमके ऊपरका छिलका छील फिर उसके टुकडे करके धूपमें सुखादेवे उसको अमचूर कहते हैं; वह अमचूर -खट्टा, स्वादिष्ठ, कषेला, भेदक और कफवातको हरनेवाला है ।

पक्काम्रगुणाः ।

पक्कंतुमधुरंवृष्यंस्निग्धंबलसुखप्रदम् ।
गुरुवातहरंहृद्यंवर्ण्यंशीतमपित्तलम् ॥
कषायानुरसंवह्निश्लेष्मशुक्रविवर्द्धनम् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-पकाहुआ आम-मधुर, वार्य्यवर्द्धक, स्निग्ध, बलवर्द्धक, सुखदायक भारी, वातविनाशक, हृदयको हितकारी, वर्णको सुन्दर करनेवाला, शीतल, अपित्तल अर्थात् पित्तको नहीं करनेवाला, किञ्चित् कषेला तथा अग्नि, कफ और शुक्रवर्द्धक है ।

अन्यच्च ।

पक्वंत्वाम्रफलंसुगन्धिमधुरंस्निग्धंपरंबृहणं रुच्यंवातहरञ्चहृद्यलघुग्राहीप्रमेहप्रणुत् । शीतंवर्ण्यमपित्तलंव्रणहरंश्लेष्मास्त्ररोगापहं यद्दृष्ट्वामनउल्लसत्यपिमुनेःकिंवर्णनंभूतले ॥

अर्थ-पकाहुवा आम--सुगंधि, मधुर, स्निग्ध, अत्यन्त पुष्टिकारक, रुचि-

कारी, वातविनाशक, हृदयको हितकारी, भारी, मलरोधक, प्रमेहनाशक, शीतल, वर्णको उज्ज्वल करनेवाला, अपित्तल तथा व्रण, श्लेष्म और रुधिर रोगोंको दूर करनेवाला है ।

अपिच ।

पक्वाम्रोमधुरःशुक्रवर्द्धकःपौष्टिकःस्मृतः ।
गुरुःकान्तितृप्तिकरः किञ्चिदम्लोरुचिप्रदः ॥
हृद्योमांसबलानाञ्चवर्द्धकःकफकारकः ।
तुवरश्चतृषावातश्रमाणांनाशकः स्मृतः ॥ (नि० र०)

अर्थ--पकाहुवा आम--मधुर, शुक्रवर्द्धक, पुष्टिकारक, भारी, कान्तिजनक, तृप्तिकारक, किञ्चित् खट्टा, रुचिकारक, हृदयको हितकारी तथा मांस, बल और कफवर्द्धक है, कषेला और तृषा, वात तथा श्रमनाशक है ।

वृक्षपक्काम्रगुणाः ।

तदेववृक्षसंपक्वंगुरुवातहरंपरम् ।
मधुराम्लरसंकिंचिद्भवेत्पित्तप्रकोपनम् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ,-वही वृक्षपे पकाहुवा आम--भारी, वातनाशक, मधुर, किञ्चित् खट्टा और पित्तको कुपित करनेवाला है ।

कृत्रिमपक्वाम्रगुणाः ।

अम्रकृत्रिमपक्वश्चतद्भवेत्पित्तनाशनम् । रसस्याम्लस्य हीनन्तुमाधुर्य्याच्चविशेषतः ॥ उषितंतत्परंरुच्यंबलवीर्य्यकरंलघु । शीतलंशीघ्रपाकिस्याद्वातपित्तहरंसरम् ॥
(भा० प्र०)

अर्थ--पालमें पकायाहुवा आम--पित्तनाशक, अम्लरसहीन और मधुर रसपूरित है । वही वासित--परम रुचिकारक, बलवर्द्धक, वीर्य्यजनक, हलका, शीतल, शीघ्रपाकी, वातपित्तनाशक और कुछेक दस्तावर है ।

आम्ररसगुणाः ।

तद्रसोगालितोबल्योगुरुर्वातहरःसरः ।
अहृद्यस्तर्पणोतीवबृंहणःकफवर्द्धनः ॥

अर्थ--आमका निचोड़ाहुवा रस -बलकारक, भारी, वातविनाशक, कुछेक दस्तावर, हृदयको अहितकारी, तृप्तिकारक, अतीव बृंहण और कफवर्द्धक है

सैवदुग्धेनसंयुक्तकान्तिदःस्वाददःस्मृतः ।
वृष्यश्चान्येगुणाश्चोक्तारसेनसदृशाःस्मृताः ॥ (नि. र.)

अर्थ- वही रस दूधके साथ कांतिजनक, स्वाददायक और वीर्य्यवर्द्धक है और गुण रसकी समान जानने ।

चोषिताम्रगुणाः ।

चोषिताम्रोबलरुचिर्वीर्य्यवृद्धिकरःपरः ।
लघुताशीतताशीघ्रपाकतावातपित्तनुत् ॥
मलबन्धकरश्चैवपूर्ववैद्यैरुदीरितः ।

अर्थ-चूसकर खायाहुवा आम--बल, रुचि और वीर्य्यवर्द्धक है तथा लघुता, शीतता, शीघ्रपाकता और वातपित्तनाशक है तथा मलबन्धक है ।

शस्त्रच्छिन्नाम्रगुणाः ।

पक्वःस्याच्छस्त्रछिन्नाम्रोजाड्यमाधुर्यशीतकृत् ।
रुचिकृच्चिरपाकश्चधातुवृद्धिंकरोतिसः ॥
बलकर्त्तावातपित्तनाशनःपरिकीर्तितः । (नि. र.)

अर्थ-शस्त्र अर्थात् चक्कूसे काटके खाया हुआ आम--जडता, मधुरता, शीतता, रुचि, चिरपाक, धातुवृद्धि और बलकारकहै तथा वातपित्त नाशक है ।

आम्रावर्त्त ।

पक्वस्यसहकारस्यपटेविस्तारितोरसः ।
घर्मशुष्कोमुहुर्दत्तआम्रावर्त्तइतिस्मृतः ॥

अर्थ- पकेहुये आमके रसको वस्त्रपर बिछाकर धूपमें सुखा लेवे उसको आम्रावर्त्त (ऑंबट) कहते हैं ।

आम्रावर्त्तगुणाः ।

आम्रावर्त्तस्तृषाच्छर्दिवातपित्तहरःसरः ।
रुच्यःसूर्य्यांशुभिःपाकाल्लघुश्चसहिकीर्त्तितः ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-आम्रावर्त्त (ऑंबट) तृषा, वमन और वातपित्तनिवारक है, कुछेक दस्तावर, रुचिकारक यह सूर्यकी किरणोंसे पाक होनेसे हलका है ।

आम्रखण्डगुणाः ।

तस्यखण्डंगुरुपरंरोचनंचिरपाकिच ।

मधुरंबृंहणंबल्यंशीतलंवातनाशनम् ॥

अर्थ--आमका टुकडा--भारी, रुचिकारी, देरसे पचनेवाला, मधुर, बृंहण, बलकारक, शीतल और वातविनाशक है।

अतिशयाम्रभक्षणगुणाः।

मन्दानलत्वंविषमज्वरश्चरक्तामयंबद्धगुदोदरश्च। आम्रातियोगेनयनामयंवाकरोतितस्मादतितानिनाद्यात् ॥ एतदम्लाम्रविषयंमधुराम्लपरंनतु। मधुरस्यपरंनेत्रहितत्वाद्या गुणायतः ॥ शुण्ठ्यम्भसोऽनुपानंस्यादाम्राणामतिभक्षणे जीरकंवाप्रयोक्तव्यंसहसौवर्च्चलेनच ॥ (रा. नि.)

अर्थ--अधिक आमका खाना मंदाग्नि, विषमज्वर, रुधिरविकार, बद्धगुदोदर और नेत्ररोगको उत्पन्न करे है, इस कारण अधिक आमका खाना वर्जित है, यह जितने दोष आमके कहे हैं सो सब खट्टे आमके जानने; परन्तु मीठे आमके भक्षण करनेसे यह दोष नहीं होते हैं, मधुर आम तो अधिकतर नेत्रोंको हितकारी और अधिक गुणवाला है। अधिक आम खानेके पीछे सोंठका जल पीवे तथा जीरा कालानोन खाना उचित है।

मधुयुक्ताम्रगुणाः।

मधुनातत्क्षयप्लीहवातश्लेष्महरंपरम्।

अर्थ--मधुयुक्त आम--क्षय (राजयक्ष्मा,) प्लीहा, वात और श्लेष्मनाशक है।

घृतयुक्ताम्रगुणाः।

सघृतंवातपित्तघ्नंदीपनंबलवर्णकृत्। (राजवल्लभ)

अर्थ--घृतयुक्त आम--वातपित्तनाशक, दीपन, बलवर्द्धक और वर्णकारक है।

दुग्धयुक्ताम्रगुणाः।

वातपित्तहरंरुच्यंबृंहणंबलवर्द्धनम्। वृष्यंवर्णकरंस्वादुदुग्धाम्रंगुरुशीतलम् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ--दुग्धयुक्त आम्र--वातपित्तहारक, रुचिकारक बृंहण, बलवर्द्धक, वीर्यवर्द्धक, स्वादिष्ट, भारी और शीतल है।

आम्रास्थिगुणाः।

आम्रबीजंतुमधुरंकिञ्चिदम्लंकषायकम्। वान्त्यतीसारहृद्दाहनाशनश्चबुधैर्मतम् ॥

अर्थ-आमकी गुठली-मधुर, किञ्चित् अम्ल, कषेली तथा वमन; अतिसार और हृदयकी दाहको दूर करनेवाली है ।

आम्रास्थितैलगुणाः ।

आम्रतैलंतुतुवरंस्वादुरूक्षञ्चतिक्तकम् ।
सुगन्धिमुखरोगस्यनाशनंकफवातनुत । (नि. र.)

अर्थ-आमकी गुठलीका तेल-कषेला, स्वादिष्ट, रूखा, कडवा, सुगन्धि, तथा मुखरोग, कफ और वातनाशक हैं ।

आम्रत्वचादिगुणाः ।

आम्रत्वचाकषायाचमूलंसौगन्धितादृशम् ॥
रुच्यंसंग्राहिशिशिरंपुष्पंतुरुचिदीपनम् ॥

अर्थ-आमकी छाल--कषेली, आमकी जड-कषेली, सुगन्धित, रुचिकारक, मलरोधक और शीतल है । आमका फूल-रुचिको दीपन करे है ।

आम्रान्तस्त्वग्गुणाः ।

आम्रान्तस्त्वग्ग्राहिणीतुतुवरादाहकारिणी ।
पित्तमेहकफानाञ्चनाशिनीयोनिशुद्धिकृत् ॥

अर्थ--आमकी अन्तरकी--छाल--मलरोधक, कषेली, दाहकारक तथा पित्त, प्रमेह और कफनाशक है । तथा योनिको शुद्धि करे है ।

आम्रमूलगुणाः ।

आम्रमूलंतुतुवरंग्राहिशीतंरुचिप्रदम् ।
सुगन्धिकफवातानांनाशनंपरिकीर्त्तितम् ॥

अर्थ-आमकी जड-कषेली, मलरोधक, शीतल, रुचिदायक, सुगन्धि तथा कफ और वातविनाशक है ।

आम्रपल्लवगुणाः ।

आम्रच्छदस्तुतुवरोग्राहकोरुचिकारकः ।
वातपित्तकफान्हन्तीत्येवञ्चपरिकीर्त्तितम् ॥ (नि० र.)

अर्थ- आमके कोमल पत्ते--कषेले, मलरोधक, रुचिकारक तथा वात पित्त और कफको हरनेवाले हैं ।

राजाम्रनामानि ।

राजाम्रोन्योराजफलःस्मराम्रःकोकिलोत्सवः ।

मधुरःकोकिलानन्दःकामेष्टोनृपवल्लभः ॥

अर्थ-राजाम्र, राजफल, स्मराम्र, कोकिलोत्सव; मधुर, कोकिलानन्द, कामेष्ट, नृपवल्लभ, (टंक, आम्रात, कामाह्व, राजपुत्रक)

बालंराजफलंकफास्रपवनंश्वासातिपित्तप्रदं मध्यंतादृशमेवंदोषबहुलंभूयःकषायाम्लकम् । पक्वंचेन्मधुरंत्रिदोषशमनंतृष्णाविदाहश्रमश्वासारोचकमोचकंगुरुहिमंवृष्यातिभूपाह्वयम् ॥

अर्थ—कच्चा कलमी आम, कफ, वातरक्त, श्वास और अत्यन्त पित्तजनक है। तरुण कलमी आमके गुण कच्चे कलमी आमके समान हैं। अनेक दोषकारक, कषेला और खट्टा है। पक्का कलमी आम मधुर, त्रिदोषनिवारक तथा तृष्णा, दाह, श्रम, श्वास और अरुचिनाशक है, भारी, शीतल और अत्यन्त वीर्यवर्द्धक है।

विवरण। आमके वृक्ष प्रायः भारतवर्षके समस्त प्रदेशोंमें अधिकतासे होते हैं, अर्थात् प्रत्येक नगरके निकट आमके बाग होते हैं। आमकी अनेक जाती हैं, किन्तु आकृति सबकी एकसी होती है। पत्ते जामुनके समान कुछ विशष लम्बे होते हैं। फूल छोटा छोटा मौर आता है, वसन्तऋतुके प्रारम्भमें फूल आने लगता है। और वसन्तऋतुके अन्तमें चनेकी बराबर फल आते हैं, पश्चात् बढ़कर १०-१० तोले तकके होजाते हैं। अपक्व अवस्थामें हरा रङ्ग होता है और पकनेपर पीला पडजाता है और कोई हरे ही रहते हैं। फलके भीतर गुठली निकलती है उसके भीतर मींग निकलती है उसको बिजली कहते हैं।

दूसरे कलमी, मालदये, विलायती, अनेकप्रकारके दूसरे द्वीपोंसे आये हुये आम हैं। वह इनकी अपेक्षा अधिक बडे और विशेष मधुर होते हैं परन्तु अनेकप्रकारके कार्य्योंमें यह देशीही आम श्रेष्ठ गिनेजाते हैं।

आम्रातकनामानि।

आम्रातकःपीतनकःकपिचूतोम्लवाटकः ।
वर्षपाकीकपिचूडातनुक्षीरीकपिप्रियः ॥

अर्थ-आम्रातक, पीतनक, कपिचूत, अम्लवाटक, वर्षपाकी, कपिचूड, तनुक्षीरी, कपिप्रिय (पीतन, कपीतन, मधुमूलक, आम्रवाटिक, शृङ्गी

रसाढ्य, तनुक्षीर, अम्बरातक, अम्बरीष, आम्रात, अम्रात, अम्रातक, अध्व-भोग्य, मर्कटाम्र और तुङ्गी)



संस्कृतभाषामें	आम्रातक ।
हिन्दीभाषामें	अंबाडा ।
बंगभाषामें	आमडा ।
मराठीभाषामें	अंबाडा ।
कर्णाटकीभाषामें	आंबोडियकायि ।
तैलिंगीभाषामें	आमाटम् ।
गुजरातीभाषामें	अभेडा ।
अंग्रेजीभाषामें	स्पोन्डिआस् मिनट्ट । Spondias minute
लैटिन्भाषामें	स्पोन्डिआस मॅंगिफरा । Spondias mangifera

अस्यफलगुणाः ।

आम्रातमम्लंवातघ्नंगुरूष्णंरुचिकृत्सरम् । पक्वंतुतुवरंस्वादु रसेपाकेहिमंस्मृतम् ॥ तर्पणंश्लेष्मलंस्निग्धंवृष्यंविष्टम्भि बृंहणम् । गुरुबल्यंमरुत्पित्तक्षतदाहक्षयास्रजित् ॥ (भा. प्र.)

अर्थ-कच्चा अम्बाडा -खट्टा, वातनाशक, भारी, गरम, रुचिकारक और सारक है। पका अम्बाडा, कषेला, स्वादु, पाकमेंभी स्वादु, शीतल, तृप्तिकारक, कफकारक, स्निग्ध, वीर्य्यवर्द्धक, विष्टम्भजनक, पुष्टिकारक, भारी, बलकारी तथा वात, पित्त, क्षत, दाह, क्षय और रुधिरविकारको दूर करे है।

अन्यच्च ।

आम्रातकोगुरुश्चोष्णस्तुवरोम्लोरुचिप्रदः। सरःकंठ्यपि-

त्तकफरक्तकारीचसंस्मृतः ॥ आमवातस्यवातस्यचामस्य चविनाशनः।सपक्वस्तुवरः शीतोगुरुर्वृष्योबलंकरः।मधुरस्तृप्तिकफकृत्स्निग्धोधातुविवर्धकः । मलस्तम्भकरोवातकफपित्तविनाशनः ॥ रक्तरुग्दाहक्षतरुक्क्षयनाशको मतः।पर्णंतुकोमलंचास्यरुच्यंग्राह्यग्निदीपनम् ॥(नि. र.)

अर्थ–अम्बाडा–भारी, गरम, कषेला, खट्टा, रुचिकारक, सारक, कंठको हितकारी तथा पित्त, कफ और रक्तकारक है तथा आमवात, वात और आमको नाशक है। पक्का अंबाडा–कषेला, शीतल, भारी वीर्य्यवर्द्धक, बलकारक, मधुर, तृप्तिकारक, कफकारक, स्निग्ध, धातुवर्द्धक, मलस्तम्भक तथा वात, कफ, पित्त, रक्तविकार, दाह, क्षतरोग और क्षयरोगका नाश करे है। इसके कोमल पत्ते रुचिकारक, ग्राही और अग्निप्रदीपक हैं।

विवरण। आम्रातक अर्थात् अम्बाडेके वृक्ष प्रायःपर्वत और वनोंमें बहुत होते हैं, पत्ते जिंगनीके पत्तोंके समान एक शाखामें बराबर दोनों ओर होते हैं, इसपर आमके तुल्य मौर आता है, फल कन्दूरीके समान छोटे २ होते हैं उनको अम्बाडा कहते हैं, इनका अचार डालते हैं, यह स्वादमें खट्टे होते हैं।

कोशाम्रनामानि ।

कोशाम्रःघनस्कन्धोवनाम्रोजन्तुपादपः ।
क्षुद्राम्रश्चतिरक्ताम्रोलाक्षावृक्षःसुरक्तकः ॥

अर्थ-कोशाम्र, घनस्कन्ध, वनाम्र, जन्तुपादप, क्षुद्राम्र, रक्ताम्र, लाक्षावृक्ष, सुरक्तक (कोषाम्र, कृमिवृक्ष, सुकोशक)।

हिन्दीभाषामें	कोशंब ।
बंगलाभाषामें	केओडा, जलपाई ।
मराठीभाषामें	कोशाम्र ।
गुजरातीभाषामें	कोशम ।
कर्णाटकीभाषामें	जूरिसाचु ।
लैटिन्भाषामें	स्लीचराट्रिजगा ।

अस्य गुणाः ।

कोशाम्रःकुष्ठशोथास्रपित्तव्रणकफापहः ।

अर्थ-कोशाम्रवृक्ष-कुष्ठ, सूजन, रक्तपित्त, व्रण और कफका नाश करे है।

अस्य-अपक्वफलगुणाः ।

तत्फलंग्राहिवातघ्नमम्लोष्णंगुरुपित्तलम् ।

अर्थ-इसका कच्चा फल-मलरोधक, वातनाशक, खट्टा, गरम, भारी और पित्तकारी है ।

अस्य पक्वफलगुणाः ।

पक्वंतुदीपनंरुच्यंलघूष्णंकफवातनुत । (भा. प्र.)

अर्थ-इसका पक्का फल-अग्निप्रदीपक, रुचिकारक, हलका, गरम तथा कफ और वातका नाशक है ।

अन्यच्च ।

कोशाम्रमम्लमनिलापहरंकफार्त्तिपित्तप्रदंगुरुविदाहविशोककारि । पक्वंभवेन्मधुरमीषदपारमम्लंपट्वादियुक्तरुचिदीपनपुष्टिदायि ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-कोशंभ- खट्टा, वातविनाशक, कफकारक, पित्तजनक, भारी तथा दाह और शोककारी है । पक्का कोशंभ--मधुर और कुछेक खट्टा है । लवणयुक्त कोशंभ -दीपन, रुचि और पुष्टिकारक है ।

अन्यच्च ।

कोशाम्रंकफवातघ्नंदीपनंग्राहितत्परम् ॥ (रा० व० द्र० चं०)

अर्थ—कोशंभ--कफ और वातनाशक, अग्निप्रदीपक और मलरोधकहै ।

कोशाम्रमज्जागुणाः ।

स्वादुपाकोऽग्निबलकृत्स्निग्धःपित्तानिलापहः ।(सु. सं.)

अर्थ--कोशंभकी मींग—पाकमें स्वादिष्ठ, अग्निकारक; बलवर्द्धक, स्निग्ध, पित्त और वातनाशक है ।

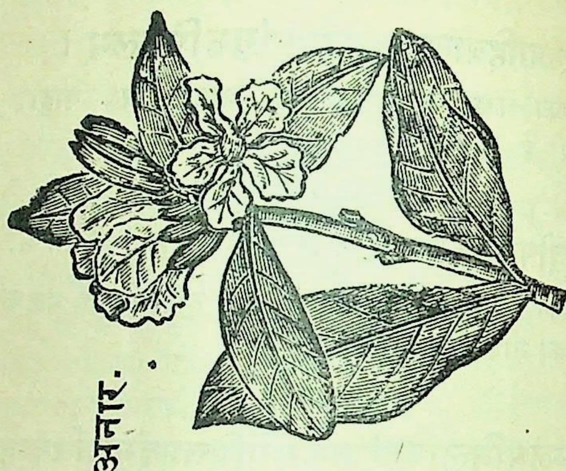
अस्य तैलगुणाः ।

सरंकोशाम्रजतैलंकृमिकुष्ठव्रणापहम् ॥ (रा० नि०)
तिक्ताम्लमधुरंबल्यंपथ्यंरोचनपाचनम् ॥ (रा०नि०)

अर्थ-कोशंभका तेल सर (कुछेकदस्तावर), कृमिनाशक, कुष्ठघ्न, व्रणविनाशक, कडवा, खट्टा, मधुर, बलकारक, पथ्य, रोचन और पाचक है ।

विवरण । कोशाम्र—जङ्गली आमको कहते हैं उसके वृक्षभी आमके समान होते हैं और पत्ते, फल छोटे २ देखनेमें आते हैं ।

दाडिमनामानि ।



दाडिमोदाडिमीसारःकुट्टिमःफलषाडवः । करकोरक्तबीजश्चसुफलोदन्तबीजकः ॥ मधुबीजःकुचफलोरोचनःशुकवल्लभः । मणिबीजस्तथावल्कफलोवृत्तफलस्तथा ॥

अर्थ-दाडिम, दाडिमीसार, कुट्टिम, फलषाडव, करक रक्तबीज, सुफल, दन्तबीजक, मधुबीज, कुचफल, शुकवल्लभ, मणिबीज, वल्कफल, वृत्तफल, (पिण्डपुष्प, दाडिम्ब, पर्वरुट्र, स्वाद्वम्ल, पिण्डीर, फलशाडव, मुखवल्लभ, रक्तपुष्प, डालिम, शुकादन, फलसाडव, सुनील, मालपत्र, नीलपत्रक, दन्तबीज और लोहितपुष्पक) ।

संस्कृतभाषामें	दाडिम ।
हिन्दीभाषामें	अनार ।
वंगलाभाषामें	दाडिम, डालिम् ।
मराठीभाषामें	डाळिंब ।
गुजरातीभाषामें	दाडम ।
कर्णाटकीभाषामें	दालिंब ।
तैलिंगीभाषामें	डानिम्बचेट्टु, दालिंबकाया ।
तामिलीभाषामें	मालदइ चेहेड्डि ।
औत्क०	दालिंब ।
अंग्रेजीभाषामें	पमग्रानेट । Pulmgranitc
लैटिन्भाषामें	प्युनिकाग्रानेटम् । Punica granatum
फारसीभाषामें	अनार तुरस, अनारसीरी ।
अरबीभाषामें	रुमानहामीज, रुमानहुलु ।

अस्य गुणाः ।

दाडिमत्रिविधंस्वादुस्वाद्वम्लंकेवलाम्लकम्।तत्तुस्वादुत्रिदोषघ्नंतृड्दाहज्वरनाशनम् ॥ हृत्कण्ठमुखरोगघ्नंतर्पणंशुक्रलंलघु । कषायानुरसंग्राहिस्निग्धमेधाबलावहम्॥स्वाद्वम्लंदीपनंरुच्यंकिंचित्पित्तकरंलघु। अम्लंतुपित्तजनकमम्लंवातकफापहम् (भावप्रकाश)

अर्थ--अनार--तीन प्रकारका होता है, एक मीठा दूसरा मीठा और खट्टा, तीसरा केवल खट्टा। तहां मीठा अनार त्रिदोषनाशक, तृषा, दाह, ज्वर, हृदयरोग, कण्ठरोग और मुखरोगको दूर करे है। तृप्तिकारक, शुक्रजनक, हलका, किञ्चित् कषेला, मलरोधक स्निग्ध, मेधाजनक और बलवर्द्धक है॥ मीठा और खट्टा अनार--दीपन, रुचिकारक, किंचित् पित्तकारक और हलका है। खट्टा अनार--पित्तकारक, खट्टा तथा वात और कफनाशक है।

अन्यच्च ।

दाडिमंहृद्यमम्लोष्णंवातघ्नंग्राहिदीपनम् ।
कषायानुरसंप्रोक्तंकफपित्ताविरोधिच ।

अर्थ--अनार--हृदयको हितकारी, खट्टा, गरम, वातनाशक, मलरोधक, अग्निदीपक, कषेला तथा कफ और पित्तको दूर करे है।

द्विविधंतत्तुविज्ञेयंमधुरंचाम्लमेवच ।
मधुरंतुत्रिदोषघ्नमम्लंवातकफापहम् ॥
ज्वरघ्नंरोचनंपथ्यंपाकेलघ्वग्निदीपनम् । (रा. व. द्र. च.)

अर्थ-अनार-मधुर और अम्ल इन भेदोंसे दो प्रकारका है तहां मधुर अनार-त्रिदोषनाशक है और खट्टा अनार-वातकफनाशक, ज्वरनिवारक, रोचक, पथ्य, हलका और अग्निको दीपन करे है।

अन्यच्च ।

स्वाद्वम्लंमधुरंचाम्लंत्रिविधदाडिमीफलम् ।
मधुरंतुत्रिदोषघ्नंस्वाद्वम्लंवातपित्तजित् ।
असृक्पित्तकरंचाम्लंसंग्राहिसर्वमुच्यते । (नि० भै०)

अर्थ-अनार- तीन प्रकारका होता है। एक खट्टा और मीठा, दूसरा मीठा

और तीसरा खट्टा, तहां मधुर अनार त्रिदोषनाशक है। और मीठा और खट्टा अनार वातपित्तनाशक है। खट्टा अनार रक्तपित्तकारक और सब प्रकारके अनार मलरोधक हैं।

अन्यच्च ।

बल्यंपित्तानिलघ्नंलघुशिशिरमसृग्दाहमूर्च्छापिपासा-
भ्रान्तिश्रन्तिज्वरच्छर्द्यरुचिमदगदाजीर्णनैर्बल्यनाशी।
मिष्टविष्टम्भिशुक्रप्रदमकफकरंदाडिमंचातिपक्वं
हीनंतस्मादपक्वंतुवरमथमरुन्माथिरुच्यंयदम्लम् ॥

अर्थ--अत्यन्त पक्का अनार--बलकारक पित्तनाशक, वातविनाशक, हलका, शीतल तथा रुधिरविकार, दाह, मूर्च्छा, पियास, भ्रांति, श्रम, ज्वर, वमन, अरुचि, मोह, अजीर्ण और निर्बलताका नाश करे है। मिष्ट, विष्टम्भजनक शुक्रवर्द्धक और कफकारक है। तरुण अनार-कषेला, वातनाशक, रुचिकारक और खट्टा है।

अपिच ।

दाडिमंतुवरंचाम्लंमधुरंतृप्तिकारकम् । स्निग्धंचदीपनंग्रा-
हिहृद्यंचोष्णंरुचिप्रदम् ॥ लघ्वग्निदीपकंप्रोक्तंकफकासश्र-
मापहम् । मुखकंठरुजंपित्तंनाशयेदितिकीर्त्तितम् ॥ मधुरं
तृप्तिकरंधातुवृद्धिकरंलघु । तुवरंग्राहकंस्निग्धंमेध्यंबल्य-
श्चमाधुरम् ॥ पथ्यंत्रिदोषतृड्दाहज्वरहृद्रोगनाशनम् ।
मुखरोगंकंठरोगंनाशयेदितिकीर्त्तितम् ॥ मधुराम्लंतुरु-
च्यंदीपनंचमतंलघु । वातपित्तप्रशमनंतदम्लंपित्तलंमतम् ॥
रक्तपित्तकरंचैवकफवातविनाशकम् । शुष्कंबालश्वत-
त्प्रोक्तंरुच्यंचहृदयप्रियम् ॥ वातानुलोमनकरंमुनिभिः
परिकीर्तितम् । (नि. र.)

अर्थ-अनार-कषेला, खट्टा, मधुर, तृप्तिकारक, स्निग्ध, दीपन, मलरोधक, हृदयको हितकारी, गरम, रुचिकारक, हलका अग्निप्रदीपक तथा कफ खांसी, श्रम, मुखरोग, कंठरोग और पित्तको दूर करनेवाला है। मधुर

अनार-तृप्तिकारक, धातुवर्द्धक, हलका, कषेला, ग्राही, स्निग्ध, मेधाजनक, बलवर्द्धक, मधुर, पथ्य तथा त्रिदोष, तृषा; दाह, ज्वर, हृदयरोग, मुखरोग, और कंठरोगको दूर करेहै । मधुराम्ल अर्थात् खट्टा और मीठा अनार-रुचिकारक, दीपन, हलका, वात और पित्तनाशक है । खट्टा अनार-पित्तकारक रक्तपित्तजनक, कफ और वातविनाशक है । कच्चा सुखाया हुआ अनार—अहारदाता-रुचिकारक, हृदयको प्रिय और वातको अनुलोमन करनेवाला है ।

दाडिमपुष्पादिगुणाः ।

तत्पुष्पश्चपुनर्ज्ञेयंनासासृग्गतिनावनात् ।
दाडिमत्वक्कृमिघ्नाचग्राहीरक्तातिसारहा ॥ (शो० नि.)

अर्थ-अनारके फूल-नाकसे रुधिर गिरनेको दूर करेहैं । अनारके वल्कल कृमिनाशक, मलरोधक, और रक्तातिसारको हरेहैं ।

विवरण । अनार-मध्यमाकारका वृक्षहै, हिन्दोस्थानके सर्व स्थानोंमें होताहै, पंजाबी और काबुली वृक्षोंके फल कुछ अधिक मधुर होतेहैं । जो नाकसे रुधिर गिरता होतो अनारको सूंघनेसे और इसका अर्क नाकमें डालनेसे आराम होजाताहै । बीज और छिलका खाँसीको खोतेहैं । इसकी जड़ कीड़ोंको नाश करतीहै ।

कदलीनामानि ।



कदलीसुफलारंभामोचावारणवल्लभा ।

सकुमाराचर्म्मण्वतीतत्पत्रीनगरौषधिः ॥

अर्थ-कदली, सुफला, रंभा, मोचा, वारणवल्लभा, सुकुमारा, चर्म्मण्वती तत्पत्री, नगरौषधि (वारणबुसा, अंशुमत्फला, काष्ठीला, कदल, वारबुषा, वारणबुषा, बालकप्रिया, ऊरुस्तम्भा, भानुफला, वनलक्ष्मी, कदलक, मोचक, रोचक, लोचक, वारवृषा, आयतच्छदा, तन्तुविग्रहा, अम्बुसारा)।

संस्कृतभाषामें	कदली ।
हिन्दीभाषामें	केला ।
वंगभाषामें	कला ।
मराठीभाषामें	केळ, सोनकेळ, मुठेली, लोखंडी, चवई।
गुजरातीभाषामें	केल्य ।
कर्णाटकीभाषामें	कदली, मरवालेकाष्ठ, कावालेतब ।
तैलिङ्गीभाषामें	चक्राकेली,आरटीकाया, अरटिचेट्टु,वुरुगचेट्टु दोंडतोंडे ।
तामिलीभाषामें	वाळै ।
पाह्वी०	तल, तलमपज ।
लुसाई०	वाह्ला ।
बरमी०	हगापी ।
अंग्रेजीभाषामें	प्लेंटिन् । Plant im
लैटिन्भाषामें	मुसासेपियेन्टम् । Musasapientum मुसोपरेडिस्याका । M. paridisiaca
फारसीभाषामें	मावज़्, मोझ ।
अरबीभाषामें	तनां ।

अस्य साधारणफलगुणाः ।

कदलंमधुरंवृष्यंकषायंनातिशीतलम् ।
रक्तपित्तहरंहृद्यंरुच्यंश्लेष्मकरंगुरु ॥ (रा. व.)

अर्थ--केलेकी साधारणफली, मधुर, वीर्य्यवर्द्धक किञ्चित् कषैली शीतल, रक्तपित्तनाशक, हृदयको हितकारी, रुचिकारी, कफकारक और भारी है ।

अन्यच्च ।

कदलीशीतलागुर्व्वीवृष्यास्निग्धामधुःस्मृता ।

पित्तरक्तविकारश्चयोनिदोषंतथाश्मरीम् ॥
रक्तपित्तंनाशयतीत्येवमाचार्य्यभाषितम् ।

अर्थ-कदली-शीतल, भारी, वीर्य्यवर्द्धक, स्निग्ध, मधुर तथा पित्त, रुधिरविकार, योनिदोष, पथरी और रक्तपित्तको दूर करे है।

कोमलकदलीफलगुणाः ।

कोमलंकदलंशीतंमधुरंचकषायकम् ।
रुच्यमम्लंसमुद्दिष्टंपित्तनाशकरश्चतत ॥

अर्थ-केलेकी कोमल फली--शीतल, मधुर, कषेली, रुचिकारक, अम्ल और पित्तनाशक है।

मध्यमकदलीफलगुणाः ।

तृड्रक्तपित्तादिगदप्रमेहान्फलंकदल्यास्तरुणंनिहन्ति ।
संग्राहिकंतिक्तकषायरूक्षंरक्तातिसारंशमयेज्ज्वरञ्च ॥

अर्थ-केलेकी तरुणफली--तृषा, रक्तपित्त, नेत्ररोग, प्रमेह, रक्तातिसार और ज्वरको दूर करनेवाली है, ग्राही, कडवी, कषेली और रूखी है।

अन्यच्च ।

मध्यमंकदलंकिञ्चित्तुवरंमधुरंगुरु ।
अग्निमांद्यकरंचैवऋषिभिःपरिकीर्त्तितम् ॥

अर्थ-केलेकी तरुण (कुछ कच्ची और कुछ पक्की) फली-किञ्चित् कषेली, मधुर, भारी और मन्दाग्निकारक है।

अपक्वकदलीफलगुणाः ।

संग्राह्यपक्वञ्चसुशीतलञ्चकषायकंवातकफंकरोति ।
विष्टम्भिवल्यंगुरुदुर्जरञ्चआरण्यरम्भाफलमेवचैतत ॥

अर्थ-कच्ची केलेकी फली-मलरोधक, शीतल, कषेली, वातकफकारक, विष्टम्भकारक, बलवर्द्धक, भारी, दुर्जर और जङ्गली केलेकेभी गुण इसीके समान जानने।

पक्वकदलीफलगुणाः ।

रम्भापक्वफलंकषायमधुरंबल्यञ्चशीतंतथापित्तंचास्रविमर्द-
नंगुरुतरंपथ्यंनमंदानले । सद्यःशुक्रविवर्द्धनंक्लमहरंतृष्णा-
पहंकान्तिदं दीप्ताग्नौसुखदंकफामयकरंसन्तर्पणंदुर्जरम् ॥

अर्थ-केलेकी पक्की फली-कषेली, मधुर, बलकारक, शीतल, रक्तपित्त नाशक, भारी, मन्दाग्निवाले मनुष्यको अहितकारी, तत्काल शुक्रवर्द्धक, क्लमहारक, तृष्णानिवारक, कान्तिजनक, अग्निदीपनवाले मनुष्यको हितकारी, कफरोगनाशक, तृप्तिकारक और कठिनतासे पचनेवाली है।

अपिच ।

कदलीवरपक्कफलंमधुरंरुचिरंमृदुवातहरंशिशिरम् ॥ क्षतजक्षयदाहनिवार्य्यसृजायुतपित्तविकारनिवृत्तिकरम् । प्रदराश्मगदंनिहरेल्लघुचप्रतिबंधकरंबलदंनसरम् । अशनात्प्रथमंयदिभुक्तमिदंनशुभंशुभदंत्वशनविरतौ ॥

अर्थ-केलेकी पक्कीफली--मधुर, रुचिकारक, कोमल, वातनाशक, शीतल तथा क्षतज, क्षय, दाह, रक्तपित्त, प्रदर और पथरीरोगको दूर करे है, हलकी, विबन्धकारक, बलवर्द्धक, सारक नहीं, और भोजनसे प्रथम खाई हुई केलेकी फली शुभ नहीं है और भोजन करते समय हित है।

अन्यच ।

पक्वन्तुकदलंबल्यंतुवरंमधुरंगुरु । शीतंवृष्यंशुक्रवृद्धिकरं सन्तर्पणंमतम् ॥ मांसकांत्यरुचीनाञ्चवर्द्धनंदुर्जरंमतम् । कफकृच्चतृषाग्लानिपित्तरक्तरुजस्तथा । मेहक्षुधानेत्ररोग-नाशकंपरमंमतम् । मन्दाग्नीनांविकृतिदमृषिभिः परिकीर्तितम् ॥ (नि. रा.)

अर्थ--केलेकी पक्कीफली-बलकारक, कषेली, मधुर, भारी, शीतल, वीर्य्यवर्द्धक, वृष्य, सन्तर्पण तथा मांस, कांति और रुचिको बढानेवाली, दुर्जर, कफकारक तथा ग्लानि, पित्त, रक्त, प्रमेह, क्षुधा और नेत्ररोग नाश करे है और मदाग्नियुक्त मनुष्योंके विकार उत्पन्न करनेवाली है।

अपिच ।

सामान्यकदलीफलगुणाः ।

हृद्यंमनोज्ञंकफवृद्धिकारिक्षान्तञ्चसन्तर्पणमेवबल्यम् । रक्तंसपित्तंश्वसनञ्चदाहंरम्भाफलंहन्तिसदानराणाम् ॥ (आ. वि.)

अर्थ-केलेकी फली--हृदयको हितकारी, मनोज्ञ, कफकारी, शान्तिकारक, तृप्तिदायक, बलवर्द्धक तथा रक्तपित्त, वात और दाहको दूर करनेवाली है।

अन्यच्च ।

सामान्यंकदलंप्रोक्तंकफकृन्मधुरंगुरु । स्निग्धंविष्टम्भिवृष्यं-वरुच्यंकिंचिच्चशीतलम् ॥ रक्तपित्तञ्चपित्तञ्चतृषांदाहंक्ष-तक्षयम् । वातञ्चनाशयत्येववल्कंतिक्तंलघुः कटुः ॥(नि. र.)

अर्थ-केलेकी फली-कफकारक, मधुर, भारी, स्निग्ध, विष्टम्भकारक, वीर्यवर्द्धक, रुचिकारक, किञ्चित् शीतल तथा रक्तपित्त, पित्त, तृषा, दाह, क्षतक्षय और वातनाशक है। इसकी छाल-कडवी, हलकी और कटुरसा-न्वित है।

कदलीपुष्पगुणाः ।

कदल्याः कुसुमंस्निग्धंमधुरंतुवरंगुरु ।
वातपित्तहरंशीतंरक्तपित्तक्षयप्रणुत ॥

अर्थ-केलेका फूल-स्निग्ध, मधुर, कषेला, भारी, वातपित्तनाशक, शीतल तथा रक्तपित्त और क्षयरोगको नाश करे है।

अन्यच्च ।

पुष्पंकदल्याःसुस्निग्धंमधुरंतुवरंगुरु । ग्राहितिक्तश्चाग्निदीप्ति-करंवातविनाशनम् । किञ्चिदुष्णञ्चवीर्ये स्याद्रक्तपित्तंक्षयंकृ-मीन् । पित्तंकफंनाशयतीत्येवञ्चऋषिभिर्मतम् ॥ (नि. र.)

अर्थ-केलेका फूल-स्निग्ध, मधुर, कषेला भारी, मलरोधक, कडवा, अग्निप्रदीपक, वातनाशक, किञ्चित् उष्णवीर्य्य तथा रक्तपित्त, क्षय, कृमि, पित्त और कफका नाश करनेवाला है।

कदलीमोचकगुणाः ।

कदलीमोचकंहृद्यंकफघ्नंक्रिमिनाशनम् ।
तृष्णाप्लीहज्वरंहन्तिदीपनंवस्तिशोधनम् ॥ (रा. व.)

अर्थ-केलेका मोचा-हृदयको हितकारी, कफनाशक, क्रिमिनाशक, तृष्णा-निवारक, प्लीहानाशक, ज्वरहारक, दीपन और वस्तिशोधक है।

कदलीजलगुणाः ।

रम्भातोयंशीतलंग्राहितृष्णाकृच्छ्रान्मेहान्कर्णरोगातिसारान् । अस्रावंस्फोटकात्रक्तपित्तंदाहंहन्यादस्रयोनिंचशोषान् ॥

अर्थ- केलेका जल-शीतल, मलरोधक तथा तृषा, मूत्रकृच्छ्र, प्रमेह, कर्ण रोग, अतिसार, रुधिरका गिरना, स्फोटक, रक्तपित्त, दाह, रुधिरविकार, योनिरोग और शोषको दूर करे है।

कदलीकन्दगुणाः

बल्यःकदल्याःकन्दःस्यात्कफपित्तहरोगुरुः।
वातलोरक्तशमनःकषायोरूक्षशीतलः॥
कर्णशूलंरजोदोषंसोमरोगंनियच्छति।

अर्थ–केलेका कन्द–बलकारक, कफपित्तनाशक, भारी, वातकारक, रक्त विकारको दूर करनेवाला, कषेला, रूखा, शीतल तथा कर्णशूल, रजोदोष और सोमरोगको दूर करे है।

अन्यच्च।

कन्दःकदल्यारूक्षःस्याद्वातलस्तुवरोगुरुः। शीतोबल्योम धुःकश्योरुच्योऽग्निमांद्यकारकः॥ कर्णशूलंचाम्लपित्तदा हंरक्तरुजंतथा। सोमदोषंरजोदोषंकृमीन्कुष्ठञ्चनाशयेत्॥नि०

अर्थ–केलेका कन्द–रूखा, कषेला, भारी, शीतल, बलवर्द्धक, मधुर, केशोंको हितकारी, रुचिकारी, मन्दाग्निकारक तथा कर्णशूल, अम्लपित्त, दाह, रुधिरविकार, सोमरोग, रजोदोष, कृमि और कुष्ठको नष्ट करे है।

कदलीसारगुणाः।

सारंकदल्याःसंग्राहिचाप्रियंगुरुशीतलम्॥
तृड्दाहमूत्रकृच्छ्रातिसारमेहांश्चसोमकम्।
अस्थिस्रावंरक्तपित्तंविस्फोटांश्चवनाशयेत्॥

अर्थ–कदलीसार–मलरोधक, अप्रिय, भारी, शीतल तथा तृषा, दाह, मूत्रकृच्छ्र, अतिसार, प्रमेह, सोमरोग, अस्थिस्राव, रक्तपित्त और विस्फोटक नाशक है।

आरण्यकदलीगुणाः।

आरण्यकदलीशीतामधुराबलवर्द्धिनी। वीर्यवृद्धिकरीरु च्याद्गुर्जराचगुरुःस्मृता। तृड्दाहशोषपित्तानांनाशिनीच प्रकीर्तिता। फलंतुतुवरंचास्यामधुरञ्चगुरुस्मृतम्।

अर्थ--वनकदली अर्थात् जंगलीकेली--शीतल, मधुर, बलवर्द्धक, वीर्य

वर्द्धक, रुचिकारक, दुर्जर, भारी, तथा तृषा, दाह, शोष और पित्तका नाश करे है। इसका फल कषेला, मधुर और भारी है।

काष्ठकदलीगुणाः।

काष्ठस्यकदलीग्राहीहृद्यारुच्याचशीतला। अग्निमांद्यकरी गुर्व्वीदुर्जराचातिमाधुरी॥ तृड्दाहमूत्रकृच्छ्राणांरक्तपित्तस्य नाशिनी। विस्फोटंचास्थिरोगंचनाशयेदितिकीर्तिता॥

अर्थ-काष्ठकदली (काठकेला)-ग्राही, हृदयको हितकारी, रुचिकारक, शीतल, मन्दाग्निकारक, भारी, कठिनतासे पचनेवाला, अत्यन्त मधुर तथा तृषा, दाह, मूत्रकृच्छ्र, रक्तपित्त, विस्फोट और अस्थिरोगका नाश करे है।

सुवर्णकदलीगुणाः।

सुवर्णकदलीशीतामधुराचाग्निदीपनी। बल्यावृष्याचगुर्वीचतृड्दाहकफनाशिनी॥ (नि. र.)

अर्थ-सोनकेला-शीतल, मधुर, अग्निप्रदीपक, बलकारक, वीर्यवर्द्धक, भारी तथा तृषा, दाह और कफका नाश करे है।

अन्यच्च।

तदेवचम्पकाख्यंतुवातपित्तहरंगुरु। वृष्यञ्चैवातिशीतञ्चमधुरंरसपाकयोः॥ (रा. व.)

अर्थ-चम्पककेला, वातपित्तनाशक, भारी, वीर्यवर्द्धक, अत्यन्त शीतल, मधुर और पचनेमेंभी मधुर है।

अन्यच्च।

सुवर्णमोचाकफवातहारिणीविष्टम्भिनीदीपनकारिणीच। सुदुर्जरादाहविघातिनीचरक्तञ्चपित्तंशमयेतनिश्चितम्॥

अर्थ-चम्पैकेला-पीलाकेला-कफवातनाशक, विष्टम्भकारक, अग्निप्रदीपक दुर्जर, दाहनाशक और रक्तपित्तको शान्तिकरे है।

महेन्द्रकदलीगुणाः।

महेन्द्रकदलीचोष्णावातस्यचविनाशिनी। प्रदरंपित्तरोगंचनाशयेदितिकीर्त्तिता॥

अर्थ-महेन्द्रकदली-गरम तथा वात प्रदर और पित्तरोगका नाश करे है।

कृष्णकदलीफलगुणाः ।

कृष्णातुकदलीरुच्यातुवरामधुरालघुः ।
वायोर्धातोवृद्धिकरीमेहपित्ततृषाहरा ॥ (नि. र.)

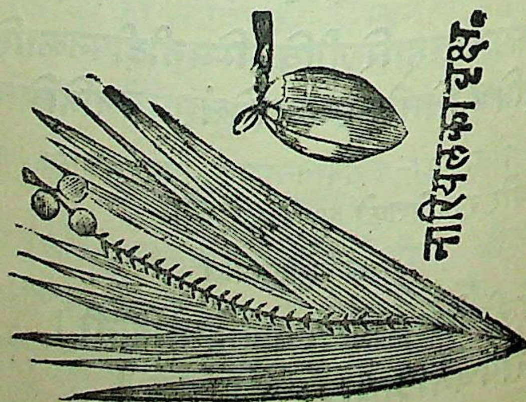
अर्थ—कालाकेला-रुचिकारक, कषेला, मधुर, हलका, वातकारक, धातुवर्द्धक तथा प्रमेह, पित्त और तृषाको दूर करे है ।

माणिक्यमुक्तामृतचम्पकाद्याभेदाःकदल्याबहवो-पिसन्ति । उक्तागुणास्तेषुचिराद्भवन्तिनिर्दोषता स्याल्लघुताचतेषाम् ॥ (भा. प्र.)

अर्थ—केलेकी माणिक्य, मुक्ता, अमृत और चम्पकादि अनेक जाति हैं उन सबोंमें उपरोक्तही गुण हैं किन्तु निर्दोष और हलकापन अधिक होता है।

विवरण । केला सम्पूर्ण भारतवर्षमें और उत्तर खण्डके वन और पहाडोंमें अधिकतासे होता है, केलेकी अनेक जाति हैं, जैसे पहाडी केला चम्पककेला जंगली केला, बडा, केला, काठ केला, इत्यादि, परन्तु गुणमें सब समान हैं केलेका वृक्ष बहुत ऊंचा होता है, पत्ते दो चार गजतक लम्बे और आध आध गज चौडे होते हैं यह वृक्ष खम्भके समान होता है और पत्तेमें पत्ते निकलते चले आते हैं, सिवाय पत्तोंके और कोई शाखा इसमें नहीं होती केवल पत्तोंहीसे वेष्टित होता है, उसमें बक्कलके भीतर बक्कलही निकलता है कुछ सार नहीं होता उसके बीचमें एक दण्डा निकलता है उस डण्डेपर एक हजार फली आती ह बीचमें सबसे ऊपर कमलकलीसेभी बडा लाल रंगका एक फूल नोकदार बुरजीके तुल्य आता है फली कच्ची अवस्थामेंलाल होती हैं उसको तोडकर रखनेसे पीले रंगकी हो जाती हैं पहाडमें मुनियोंके भोजनके लिये यह उत्तम पदार्थ है ।

नारिकेलनामानि ।



नारिकेलोदृढफलोलाङ्गलीकूर्च्चशीर्षकः ।
जुङ्गःस्कन्धफलश्चैवतृणराजः सदाफलः ॥

अर्थ-नारिकेल, दृढफल, लाङ्गली, कूर्चशीर्षक, जुङ्ग, स्कन्धफल, तृणराज, सदाफल, (नारिकेर, नाडिकेलि, नारीकेली, नारीकारी, नारिकेरि-नारिकेलि, सदापुष्प, शिरःफल, मृदुफल, पुटोदक, गारिकेर, रसफल,सुतुङ्ग-कूर्चशेखर, दृढनीर, नीलतरु, मङ्गल्य, उच्चतरु, स्कन्धतरु, दाक्षिणात्य, दुरा-रुह, त्र्यम्बकफल, शिराफल, करकाम्भा, पयोधर, मुरकुण, कौशिकफल, जलमुण्ड, जटाफल, मुण्डफल, विश्वामित्रप्रिय, नाडीकेल, नारकेर, सुभङ्ग, कूर्चकेशर, वरफल, महाफल, सदाफल, तोयगर्भ, त्र्यक्षफल)।

संस्कृतभाषामें	नारिकेल ।
हिन्दीभाषामें	नारियल, नरियल, खोपरा ।
बंगभाषामें	नारिकेल, नारकोल ।
मराठीभाषामें	श्रीफल, नारळ।
गुजरातीभाषामें	नालीयर ।
कर्णाटकीभाषामें	तेंगिनकायि ।
तैलिंगीभाषामें	टेंकाया, नारिकदम ।
तामिलीभाषामें	टेन्ना, तेङ्गायि ।
औत्कलीभाषामें	नडिया ।
अंग्रजीभाषामें	कोकोनट्ट पाम । Coconut palm
लैटिन्भाषामें	कोकोसून्युसिफेरा । Coecsnusifera
फारसीभाषामें	जोजहिन्दी नारीगल ।
अरबीभाषामें	नारजिल्र ।

नारिकेलसाधारणगुणाः ।

नारीकेलंसुमधुरंगुरुस्निग्धश्चशीतलम् ।
हृद्यंसंबृंहणंवस्तिशोधनंरक्तपित्तनुत ॥ (आ. सं.)

अर्थ-साधारण नारियल-मधुर, भारी, स्निग्ध, शीतल, हृदयको हितकारी, पुष्टिकारक, वस्तिशोधक और रक्तपित्तनाशक है।

अन्यच्च ।

नारिकेलंगुरुस्निग्धंशीतंवृष्यंचदुर्जरम् । वस्तिशुद्धिकरंबल्यंबृंहणंकफकारकम् ॥ स्वादुविष्टम्भकृत्प्रोक्तंशोषतृट्पि-

त्तनाशनम् । वातपित्तरक्तदोषंदाहश्चैवविनाशयेत् ॥ क्षत-क्षयंनाशयतीत्येवमुक्तंकृपालुभिः । (नि. र.)

अर्थ--नारियल-साधारण, भारी, स्निग्ध, शीतल, वीर्य्यवर्द्धक, कठिनतासे पचनेवाला, वस्तिशोधक, बलकारक, पुष्टिकारक, कफकारक, स्वादिष्ट, विष्टम्भकारक तथा शोष, तृषा, पित्त, वातपित्त, रुधिरदोष, दाह और क्षतक्षयका नाश करे है ।

अपिच ।

स्निग्धस्वादुरसंविपाकमधुरंहृद्यंजडंदुर्ज्जरंपित्तघ्नंकृमिवर्द्धनं मदकरंवातामयध्वंसनम् । आमश्लेष्मविपाककोपशमनंव-ह्नेःश्रमध्वंसनंकन्दर्पस्यबलंददातिनितरांतन्नारिकेलंफलम् ॥

अर्थ–नारियल-साधारण, स्वादु, रसयुक्त, पाकमें मधुर, हृदयको हित-कारी, भारी, दुर्जर, पित्तनाशक, कृमिवर्द्धक, मदकारक, वातरोगनाशक, सारक, आम और कफके कोपको शांति करनेवाला, अग्निनाशक, श्रम-नाशक और कामदेवके बलको बढानेवाला है ।

कोमलनारिकेलगुणाः ।

विशेषतःकोमलनारिकेलंनिहन्तिपित्तज्वरमस्रदोषान् । तृट्छर्दिदाहामयमाशुहन्यात्सरक्तपित्तप्रभवांश्चरोगान् ॥ (रा. व.)

अर्थ--कोमल नारियल विशेषकरके पित्तज्वर, रक्तविकार, तृषा, वमन, दाह और रक्तपित्तसे उत्पन्न हुए रोगोंका शीघ्रही नाश करे है ।

पक्कनारिकेलगुणाः ।

पक्वंचनारिकेलंतुदाहकंपित्तलंगुरु ।
वृष्यंमलस्तम्भकरंरुचिदंमधुरंमतम् ॥
दीपनंबलकृत्प्रोक्तंवीर्य्यस्यचविवर्द्धकम् ॥ (नि. र.)

अर्थ–पक्कनारियल-दाहकारक, पित्तजनक, भारी, वीर्य्यवर्द्धक, मलस्त-म्भक, रुचिदायक, मधुर, दीपन, बलवर्द्धक और वीर्य्यवर्द्धक है ।

शुष्कनारिकेलगुणाः ।

नारिकेलफलंशुष्कंदुर्ज्जरंदाहकंगुरु ।

स्निग्धंमलस्तम्भकरंबलवीर्य्यरुचिप्रदम् ॥

अर्थ-शुष्कनारियल अर्थात् सूखागोला-कठिनतासे पचनेवाला, दाहकारक, भारी, स्निग्ध, मलस्तम्भक, तथा बल, वीर्य्य और रुचिको उत्पन्न करनेवाला है।

नारिकेलजलगुणाः।

स्निग्धंस्वादुहिमंहृद्यंदीपनंबस्तिशोधनम्।
वृष्यंपित्तपिपासाघ्नंनारिकेलोदकंगुरु ॥ (सु. सु.)

अर्थ-नारियलका जल वा दूध-स्निग्ध, स्वादिष्ठ, शीतल, हृदयको हितकारी, दीपन, वस्तिशोधक, वीर्य्यवर्द्धक, पित्तनिवारक, प्यासनाशक और भारी है।

अन्यच्च।

दुग्धंतुनारिकेलस्यबल्यंरुच्यंगुरुस्मृतम्।
पाकेस्वादुसमुद्दिष्टंस्निग्धंवृष्यञ्चदाहकम् ॥
किञ्चिदुष्णंवातकफगुल्मकासविनाशकम्। (नि. र.)

अर्थ-नारियलका दूध-बलकारक, रुचिदायक, भारी, पचनेमें स्वादिष्ठ, स्निग्ध, वीर्य्यवर्द्धक, दाहकारक, किञ्चित् गरम तथा वात, कफ, गुल्म और खाँसीको दूर करे है।

अपिच।

नारिकेलाम्बुतरुणंतृष्णाघ्नंपित्तनाशनम्। बालस्यनारिकेलस्यजलंप्रायोविरेचनम् ॥ शीतंवमथुमूर्च्छाघ्नंपित्तज्वरविनाशनम्। नारिकेलोदकंजीर्णंविष्टम्भिगुरुशीतलम्॥ (नि. र.)

अर्थ-तरुण नारियलका जल-तृष्णा और पित्तनाशक है। बाल नारिकेल अर्थात्-कच्चे नारियलका जल-विरेचक, शीतल तथा वमन, मूर्च्छा और पित्तज्वरको दूर करे है। पक्के नारियलका जल-विष्टम्भकारक, भारी और शीतल है।

नारिकेलपुष्पगुणाः।

नारिकेलस्यपुष्पन्तुशीतरक्तातिसारहृत् ॥
रक्तपित्तप्रमेहश्चसोमरोगश्चनाशयेत्।
मलस्तम्भकरंचापिप्रोक्तंपूर्वमनीषिभिः ॥ (नि. र.)

अर्थ-नारियलका फूल-शीतल तथा रक्तातिसार, रक्तपित्त, प्रमेह और सोमको दूर करे है और मलस्तम्भक है ।

नारिकेलपुष्पजलगुणाः ।

नारिकेलपुष्पजलंगुरुवृष्यंप्रकीर्तितम् ।
तत्कालमदकृत्प्रोक्तंचातिस्निग्धमुदीरितम् ।
तच्चेदम्लंकफकरंपित्तलंकृमिवातनुत् । (नि. र.)

अर्थ--नारियलके फूलका जल-भारी, वीर्य्यवर्द्धक, तत्काल मदकारक, अत्यन्त स्निग्ध, अम्ल, कफकारक, पित्तजनक, कृमि और वातनाशक है।

नारिकेलताडीगुणाः ।

नारिकलतरुतोयमतीवस्निग्धमाशुमदकृद्गुरुवृष्यम् ।
सोम्लभावमुपयात्यपराह्णेश्लेष्मपित्तजनकश्चकृमिघ्नम् ॥

अर्थ--नारियलके पेंडका जल-अत्यन्त स्निग्ध, तत्काल, मदकारक, भारी और वीर्य्यवर्द्धक है। और वही जल दोपहरके पीछे अम्लभावयुक्त होकर कफकारक, पित्तजनक और कृमिनाशक होजाता है।

नारिकेलफलतैलगुणाः ।

नारिकेलफलोद्भूतंतैलवाजीकरंगुरु । पोषणंक्षीणधातूनांवातपित्तप्रणाशनम् ॥ मूत्राघातेप्रमेहेचश्वासेकासेचयक्ष्मणि । मेधालोपेचहितदंक्षतानांभरणंतथा ॥

अर्थ--नारियलका तेल-वाजीकर, भारी, क्षीणधातुवाले मनुष्योंको पुष्टिकारक, वातपित्तनाशक तथा मूत्राघात, प्रमेह, श्वास, खाँसी, राजयक्ष्मा और मेधाके लोपमें हितकारी है तथा क्षतरोगको हरनेवाला है।

मधुनारिकेलगुणाः ।

मोहजातीयकंनामनारिकेलंचशीतलम् ।
मधुरंपुष्टिकृद्बल्यंरुच्यंचाग्निप्रदीपकम् ॥
कान्तिजंतुकरंस्निग्धंकफस्यामस्यकोपनम् ।
कामवृद्धिकरंदेहस्थैर्य्यकृद्दाहनाशनम् ।
तृषांपित्तंश्रमंवातमतिसारंचनाशयेत् ।

अर्थ--मधुनारियल--शीतल, मधुर, पुष्टिकारक, बलवर्द्धक, रुचिकारक,

अग्निप्रदीपक, कान्तिजनक, कृमिकारक, स्निग्ध, कफको कुपित करनेवाला, आमकारक, कामवर्द्धक, देहको स्थिर करनेवाला, दाहनाशक, तृषा, पित्त, श्रम, वात और अतिसारको दूर करनेवाला है ।

विवरण । नारियलका बहुत बडा वृक्ष होता है आकार खजूर और ताडके समान होता है, यह वृक्ष पूर्वकी ओर कलकत्ता, जगन्नाथ तथा बम्बई में बहुत हैं, विशेष करके नदी अथवा समुद्रके निकट अधिक उत्पन्न होते हैं, इनमें शाखा नहीं होती, इनके ऊपरके भागमें खजूरकेसे पत्ते होते हैं, उनहीं पत्तोंके वीचमें नारियल लगते हैं, उन नारियलको फोडकर जो रस निकलता है उसको नारियलका दूध कहते हैं, जब वे नारियल सूख जाते हैं, तब उनकी भीतरकी मींगको गोला अथवा खोपडा कहते हैं, यह फल मङ्गलादि क्रियामें बहुत लिये जाते हैं ।

ग्राम्यखर्ज्जूरीनामानि ।

भूमिखर्ज्जूरिकास्वाद्वीदुरारोहामृदुच्छदा ।
तथास्कन्धफलाकाककर्कटीस्वादुमस्तका ॥

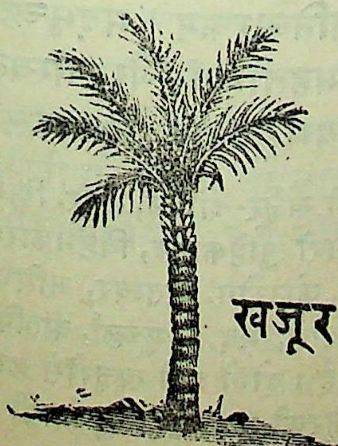
अर्थ-भूमिखर्ज्जूरिका–स्वादिष्ठ, दुरारोहा, मृदुच्छदा, स्कन्धफला काककर्कटी, स्वादुमस्तका (खर्ज्जु, खर्ज्जू, खर्ज्जूरी, खरस्कन्धा, दुष्प्रधर्षा दुरारुहा, कषायी, निःश्रेणी, यवनेष्टा, हरिप्रिया)

पिण्डखर्ज्जूरिकानामानि ।

पिण्डखर्ज्जूरिकात्वन्यासादेशेपश्चिमेभवेत् ।

अर्थ-पिण्डखर्ज्जूरिका (पिण्डखर्ज्जूरी, राजजम्बु, पिण्डीफल, मुद्रिका, दीप्या, सपिण्डा, मधुरस्रवा, फलपुष्पा, स्वादुपिण्डा, हयभक्षा) यह पश्चिम देशमें प्रसिद्ध है ।

छोहारानामानि ।



खर्ज्जूरीगोस्तनाकारापरद्वीपादिहागता ।
जायतेपश्चिमेदेशेसाछोहारेतिकीर्त्यते ॥

अर्थ-छुहारा गोस्तनाकारखर्ज्जूरी यह दो नाम छुहारेके हैं, छुहारा गौके थनोंके समान आकारवाला होता है और दूसरे द्वीपसे आया है।

संस्कृतभाषामें	खर्ज्जूरी, पिण्डखर्ज्जूरी, छोहारा।
हिन्दीभाषामें	खजूर, पिंडखजूर, छुहारा।
वंगभाषामें	खेजूर, पिण्डखेजूर, छोहारा।
मराठीभाषामें	शिन्दी, खजूरी।
गुजरातीभाषामें	खजूरी, खजूर, खारक।
कर्णाटकीभाषामें	इंचिलु, सिंहइंचिलु, करांइंचिलु।
तैलिंगीभाषामें	इंटाचेट्टु, खजुरपुपंडु।
अंग्रेजीभाषामें	डेट पाम। Date plam
लैटिन्भाषामें	फिनिक्स मोंटेना। Phoenix montena
	फिनिक्स डेकटिलिफेरा। P. Dactylifera
	फिनिक्स सिल्वेसट्रिस। P. Sylvestris
फारसीभाषामें	तमररुतब।
अरबीभाषामें	खुर्मातर, खुर्माखुश्क।

त्रिविधखर्ज्जूरीगुणाः ।

खर्ज्जूरीत्रितयंशीतंमधुरंरसपाकयोः । स्निग्धंरुचिकरंहृद्यं क्षतक्षयहरंगुरु ॥ तर्पणंरक्तपित्तघ्नंपुष्टिविष्टम्भशुक्रकृत् । कोष्ठमारुतकृद्बल्यंवान्तिवातकफापहम् ॥ ज्वराभिघातक्षुत् तृष्णाकासश्वासनिवारकम् । मदमूर्च्छामरुत्पित्तमद्योद्भूत गदान्तकृत् ॥ महतीभ्यांगुणैरल्पास्वल्पखर्ज्जूरिकामता । तस्मादल्पगुणंज्ञेयमन्यत्खर्ज्जूरिकाफलम् ॥ (भा. प्र.)

अर्थ-तीनोंप्रकारकी खजूर--शीतल, मधुर, स्निग्ध, रुचिकारक, हृदयको हितकारी, भारी, तृप्तिकारी, पुष्टिकारक, विष्टंभकारक, शुक्रवर्द्धक, बलवर्द्धक तथा क्षत, क्षय, रक्तपित्त, कोठरोग, वातज्वर, अभिघात, वमन, वात, कफ, क्षुधा, तृषा, खांसी, श्वास, मद, मूर्च्छा, वातपित्त और मद्यपानजनित रोगोंको दूर करनेवाली है। दोनों बड़ी खजूरोंसे छोटी खजूरके गुण अल्प हैं और खजूरें छोटी खजूरकी अपेक्षा हीनगुणवाली हैं।

अन्यच्च ।

अपक्वखर्ज्जूरफलंत्रिदोषाणांप्रकोपनम् ।
पक्वमेवहितंश्रेष्ठंत्रिदोषशमनंपरम् ॥ (आ. सं.)

अर्थ-कच्चीखजूर- त्रिदोषको प्रकुपित करनेवाली । पक्की खजूर--हितकारी, उत्तम और त्रिदोषको शान्ति करनेवाली है ।

खर्ज्जूरीताडीगुणाः ।

खर्ज्जूरीतरुजंतोयंमदपित्तकरंभवेत् ।
वातश्लेष्महरंरुच्यंदीपनंबलशुक्रकृत् ॥ (भा. प्र.)

अर्थ-खजूरकी ताडी–मदकारक, पित्तकारक, वातनाशक, कफनाशक, रुचिकारक, दीपन, बलकारक और शुक्रवर्द्धक है ।

खर्ज्जूरादिमस्तकगुणाः ।

खर्ज्जूरिकादितालानांनारिकेलस्यमस्तकम् ।
स्वादुपाकरसंप्रोक्तंरक्तपित्तहरंतथा ॥

अर्थ--खजूर, ताड और नारियलवृक्षका मस्तक-स्वादिष्ठ, पचनेमें भी स्वादु और रक्तपित्तनाशक है ।

अन्यच्च ।

गुवाकतालखर्ज्जूरनारिकेलशिरांसिच ।
स्वादुतिक्तकषायाणिमूत्रातङ्कहराणिच ॥
बलप्राणकराण्याहुःशुक्रवृद्धिकराणिच । (रा. ज.)

अर्थ--सुपारी, ताड, खजूर और नारियलवृक्षका मस्तक--स्वादु, कडवा, कसैला, मूत्ररोगनाशक, बलवर्द्धक, प्राणवर्द्धक और शुक्रवर्द्धक है ।

पिण्डखर्ज्जूरीगुणाः ।

दाहघ्नीमधुरास्रपित्तशमनीतृष्णार्त्तिदोषापहाशीतश्वासककफश्रमोदयहरासन्तर्पणीपुष्टिदा ॥ वह्नेर्मांद्यकरीगुरुर्विषहराहृद्याचधत्तेबलं स्निग्धावीर्य्यविवर्द्धिनीचकथित।पिण्डाख्यखर्ज्जूरिका ॥

अर्थ- पिण्डखजूर, दाहनाशक, मधुर, रक्तपित्तनिवारक, तृषानाशक, शीतल, श्वासनाशक, कफघ्न, श्रमहारक, तृप्तिकारक, पुष्टिदायक, मंदाग्निकारक, भारी, विषहारी, बलवर्द्धक, स्निग्ध और वीर्य्यवर्द्धक है ।

सुलेमानीखर्ज्जूरीनामानि ।

सुलेमानीतुमृदुलादलहीनफलाचसा ।

अथ-सुलेमानी, मृदुला, दलहीनफला यह नाम सुलेमानी खजूरके हैं।

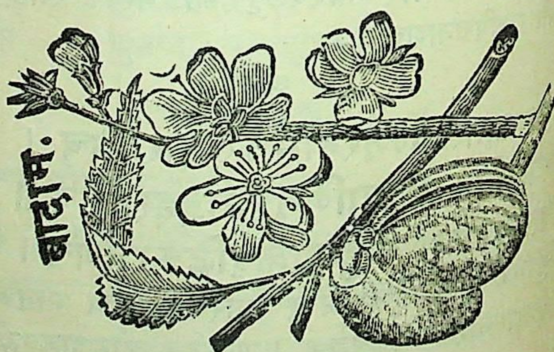
अस्या गुणाः ।

सुलेमानीश्रमभ्रान्तिदाहमूर्च्छाम्लपित्तहृत् ॥ (भा. प्र.)

अर्थ-सुलेमानीखजूर--श्रम, भ्रान्ति, दाह, मूर्च्छा और अम्लपित्तनाशक है

विवरण । खजूर--पिण्डखजूर और छुहारेके वृक्ष सीधे लम्बे २ चले जाते हैं, उनमें पत्ते लम्बे और शाखाभी लम्बी होती है, वृक्षपर खपटेसे सरीफेके समान बक्कल जमा रहता है, ऊपर शाखाओंमें फल लगते हैं खानेमें उत्तम नहीं होते हैं, बखसे २ होते हैं इसलिये उनको धनाढ्य लोग नहीं खाते, दीनलोग खाते हैं, दूसरी पिण्डखजूर होती है उसके फल तोडकर बोरियोंमें भर देते हैं, तीसरा छुहारा होता है यह दोनों खजूरके समान आकारवाला होते हैं ।

बादामनासानि ।



वातादोवातवैरीस्यान्नेत्रोपमफलस्तथा ।

अर्थ--वाताद, वातवैरी, नेत्रोपमफल, (सुफल, बादाम, वाताम, वातवैरी

संस्कृतभाषामें	वाताद ।
हिन्दीभाषामें	बदाम मीठे, बदाम कडवे ।
बंगभाषामें	बादाम ।
मराठीभाषामें	गोडे बदाम, कडु बदाम ।
गुजरातीभाषामें	बदाम मीठी, बदाम कडवी ।
तैलिङ्गीभाषामें	वेदम ।
तामिलीभाषामें	नटवडुम ।

अंग्रेजीभाषामें स्वीट् अल्मंड । Sweet almond
बीटर अल्मंड । Bitter almond
लेटिन्भाषामें एमिग्डेलस्कम्युनी । Amigdahalus Communis एमिग्डेलसू एमेर । Amigdalus amarr
अरबीभाषामें लोलजहलु, लोजलमुर ।
फारसीभाषामें बदामशीरी, बदामतल्ख ।

बदामगुणाः ।

वातादउष्णः सुस्निग्धोवातघ्नःशुक्रकृद्गुरुः ।
वातादमज्जामधुरावृष्यापित्तानिलापहा ।
स्निग्धोष्णाकफकृन्नेष्टारक्तपित्तविकारिणाम् ॥ (भा. प्र.)

अर्थ-बदाम-गरम, स्निग्ध, वातनाशक, शुक्रवर्द्धक और भारी है। बदामकीमींग-मधुर, वीर्य्यवर्द्धक, वातपित्त नाशक, स्निग्ध, गरम, कफकारक और रक्तपित्तरोगवालेको हितकारी नहीं है ।

अपिच ।

बादामःसारकश्चोष्णोगुरुरम्लःकफप्रदः । स्निग्धः स्वादुस्तुवल्यश्शुक्रलोवातनाशनः ॥ उष्णवीर्यंचामफलंसारकंगुरुपित्तदम् । कफपित्तकरश्चैववातनाशकमुत्तमम् ॥ तत्पक्वंमधुरंवृष्यं सुस्निग्धंपौष्टिकंमतम् । शुक्रलंकफकारीचरक्तपित्तंव्यपोहति ॥ शामकंवातपित्तस्यपूर्ववैद्यैरुदीरितम् । शुष्कश्चतत्फलंप्रोक्तंमधुरंधातुवर्द्धकम् ॥ स्निग्धंवृष्यञ्चबलयञ्चपौष्टिक कफकारिचवातपित्तस्यशमनंप्रोक्तंगुणविशारदैः ॥ (नि. र.)

अर्थ-बदाम-सारक, गरम, भारी, अम्ल, कफकारी, स्निग्ध, स्वादु, बलदायक, शुक्रजनक, वातनाशक, उष्णवीर्य है। कच्चा बदाम-सारक, भारी, पित्तजनक तथा कफ, पित्तविकार और वातका नाश करे है। पक्का बदाम-मधुर, वृष्य, स्निग्ध, पुष्टिकारक, शुक्रजनक, कफकारक तथा रक्तपित्त और वातपित्तका नाश करे है। सूखा बदाम--मधुर, धातुवर्द्धक, स्निग्ध, वृष्य, बलकारक, पुष्टिकारी, कफकारक और वातपित्तको दूर करे है ।

बदामतैलगुणाः ।

वातादतैलंमृदुरेचनंस्याद्वाजीकरंमूर्द्धगदंप्रहन्यात ।

पित्तानिलघ्नंलघुदाहनाशिलावण्यदंमेहकरंसुशीतम् ॥
(आत्रेयसंहिता)

अर्थ--बदामका तेल-मृदुरेची, वाजीकर, मस्तकरोगनाशक, पित्तनाशक, वातघ्न, हलका, दाहनाशक, लावण्यतादायक, प्रमेहकारक और शीतल है।

विवरण। बदामके बडे २ वृक्ष, काबुल और मलवारमें होते हैं। पत्ते लम्बे और गोल होते हैं, फूल मौरसे छोटा आता है। फलके बीज बदाम कहलाते हैं।

सेवफलनामानि।

मुष्टिप्रमाणंबदरंसेवंसिञ्चितिकाफलम्।

अर्थ-मुष्टिप्रमाण, बदर, सेव, सिञ्चितिकाफल, (सेवित, सेवि)

संस्कृतभाषामें	महाबदर।
हिन्दीभाषामें	सेव।
वंगभाषामें	सेउ।
मराठीभाषामें	मोठें बोर।
गुजरातीभाषामें	शेव।
अंग्रजीभाषामें	ॲपल्। Apple
लैटिन्भाषामें	पाइरस् मेलस्। Pyrus malus
फारसीभाषामें	सेव।
अरबीभाषा	तुफाह।

अस्य गुणाः।

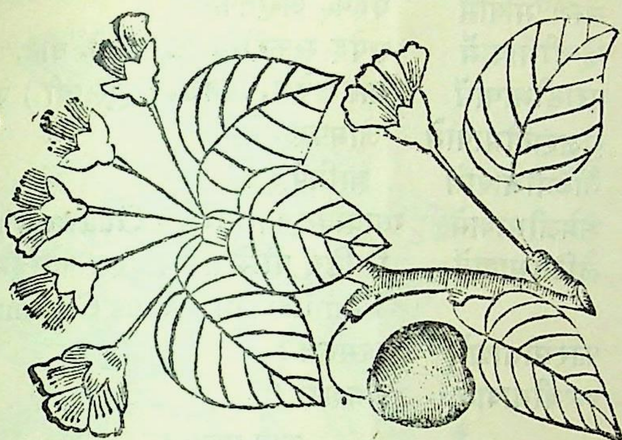
सेवंसमीरपित्तघ्नंबृंहणंकफकृद्गुरु।
रसेपाकेचमधुरंशिशिरंरुचिशुक्रकृत्॥ (भा. प्र.)

अर्थ--सेव। वातपित्तनाशक, पुष्टिकारक, कफकारी, भारी, रस और पाकमें मधुर, शीतल, रुचि और शुक्रकारक है, सेव प्राचीन नहीं है, क्योंकि सिवाय भावप्रकाशके और किसी ग्रंथमें नहीं देखाजाता।

अमृतफलगुणाः।

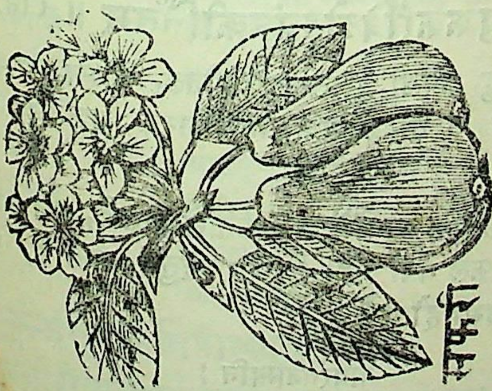
अमृतस्यफलंधातुवर्द्धकंमधुरंगुरु।
रुच्यंचाम्लंवातहरंत्रिदोषस्यचशामकम्॥

अर्थ--नासपाती--धातुवर्द्धक, मधुर, भारी, रुचिकारी, अम्ल, वातनाशक और त्रिदोषको शांति करनेवाली है।



विवरण । सेव, वीह और नासपाती इन तीनोंकी एकही जातिहै, इनमें अन्तर थोडाही है, जैसे छुहारे, पिण्डखजूर, खजूरकी एकही जाति है। सेवके वृक्ष काश्मीर और काबुलमें बहुत होते हैं, परन्तु नासपाती हिन्दोस्तानमें भी बहुत होती हैं, इनके वृक्ष अमरूदके वृक्षके बराबर होते हैं, पत्तेभी अमरूदके बराबर कुछ चौडे होतेहैं , काश्मीरका सेव बहुत मधुर होता है, और काबुलका तुरश होता है, काश्मीरकी नासपातीभी बहुतही मधुर होती है, जिसे नाश कहते हैं, वीहका मुरब्बा दस्तोंकी व्याधिमें काम आता है और बलदायक होता है ।

पेरुकफलनामानि ।



पेरुकंदृढबीजंचमांसलंचापृथक्त्वचम् ।
मृदुपीतंवर्तुलञ्चतुवरंमधुराम्लकम् ॥

अर्थ-पेरुक, दृढबीज, मांसल, अपृथक्त्वच, मृदु, पीत, वर्त्तुल, तुवर, मधुराम्लक ।

संस्कृतभाषामें	पेरुक, अमृतफल ।
हिन्दीभाषामें	सपेद सफरी, लालसफरी, वीह, अमरूद ।
मराठीभाषामें	पांढरे पेरू, तांबडे, (गुलाबी) पेरू ।
गुजरातीभाषामें	जामफल, पेर ।
तैलिंगीभाषामें	झामिपंडु ।
अंग्रेजीभाषामें	ग्वावावैट ग्वावारेड । Guava white Guava red
लैटिन्भाषामें	सिडियं पोमिफरं पाईरस कोम्बुनीस् Psidium Pomiferum Pyrus Commnnis
फारसीभाषामें	अमरुत ।
अरबीभाषामें	कमशरी ।

अस्य गुणाः ।

पेरुकंतुवरंप्रोक्तंस्वाद्वम्लंकफकारकम् ।
शुक्रलंवातपित्तघ्नंशीतलंचरसंमतम् ॥

अर्थ-सफरी-कषेली, स्वादु, अम्ल, कफकारक, शुक्रजनक, वातपित्तनाशक और शीतल है ।

अन्यच्च ।

ततोमृतफलंस्वादुतुवरंचातिशीतलम् ।
तीक्ष्णंगुरुकफकरंवातदंमादनाशकम् ॥
वृष्यंरुचिशुक्रकरंत्रिदोषघ्नंप्रकीर्तितम् ॥ (नि. र.)

अर्थ--सफरी -स्वादु, कषेली, अत्यन्त शीतल, तीक्ष्ण, भारी, कफकारी, वातवर्द्धक, उन्मादनाशक, वीर्य्यवर्द्धक, रुचिकारक, शुक्रजनक और त्रिदोषनाशक है ।

विवरण । सफरीके वृक्ष बागोंमें अंधिकतासे होते हैं, पत्ते आमके पत्तोंसे कुछेक छोटे होते हैं, फल वर्षा और शिशिर ऋतुमें आते हैं, फल भीतरसे सफेद और कोई लालभी होता है ।

नागरंगनामानि ।

नारंगोनागरंगःस्यात्त्वक्सुगन्धोमुखप्रियः ॥

अर्थ-नारंग, नागरंग, त्वक्सुगन्ध. मुखप्रिय, (नार्य्यङ्ग, नागर, ऐरावत, नागरुक, चक्राधिवासी किर्मिर, किर्मीरत्वक्, मुखप्रिय, सुरंग, त्वग्गन्ध, इरावत, वक्रवास, योगरंग, गन्धाड्य, गन्धपत्र, वरिष्ठ)



संस्कृतभाषामें	नागरंग, नारंग ।
हिन्दीभाषामें	नारंगी ।
बंगभाषामें	नारंगालेबु ।
मराठीभाषामें	नारिंग ।
गुजरातीभाषामें	नारंगीलिंबु ।
कर्णाटकीभाषामें	माधवळा ।
तैलिङ्गीभाषामें	दबाकाया, गजनिम्म. नारंजिचट्टु ।
तामिलीभाषामें	किचिढि ।
औत्कलीभाषामें	नारिंगी ।
अंग्रजीभाषामें	ऑरेंज । Orange
लैटिन्भाषामें	साइट्रस् औरेंटियम् । Cltrus aurantium
फारसीभाषामें	नारंज ।
अरबीभाषामें	नारंज ।

अस्यफलगुणाः ।

नागरङ्गन्तुसुरभिविपाकेदुर्जरंगुरु । नात्यम्लमीषन्मधुरंवृष्यंवातविनाशनम् ॥

अर्थ--नारंगी-सुगन्धि, अतिकठिनतासे पचनेवाली, भारी, किञ्चित् अम्ल, किञ्चित्, मधुर, वीर्य्यवर्द्धक और वातविनाशक है ।

अन्यच्च ।

नारंगंकफपित्तामकारकंदुर्जरंसरम् । अत्यम्लंवातहरकंचा-

त्युष्णंचमतंबुधैः ॥ मधुरंतच्चामधुरंहृद्यमम्लंबलप्रदम् । विशदंगुरुरुच्यञ्चसरंचोष्णसुगन्धिकम् ॥ स्वादुचामंकृमी-न्वातंश्रमंशूलञ्चनाशयेत् । (नि. र.)

अर्थ-नारंगी (मधुर और अम्ल) दोनों प्रकारकी-कफ, पित्त औ[र] आमकारक है। कठिनतासे पचनेवाली, कुछेक दस्तावर, अत्यन्त अ[ग्नि] वातनाशक, अत्यन्त उष्ण और मधुर है। खट्टी नारंगी-हृदयको, हितका[री] अम्ल, बलवर्द्धक, विशद, भारी, रुचिकारक, सारक, उष्ण, सुगंधि, [स्वादु] तथा आम, कृमि, वात, श्रम और शूलका नाश करे है।

विवरण-नारंगीके वृक्ष मध्यमजातिके बागोंमें बहुत होते हैं, पत्ते नीं[बूके] समान होते हैं फूल अत्यन्त सुगन्धित, और सफेद रङ्गके आते हैं, फल गोल होते हैं, कच्ची अवस्थामें हरे और पकनेपर लाल सिंदूरिया रङ्गके होजाते हैं। बागेश्वरकी नारंगी सर्वत्र स्थानोंमें प्रसिद्ध है।

बीजपूरनामानि ।



बीजपूरोमातुलुङ्गोरुचकःफलपूरकः ॥

अर्थ-बीजपूर, मातुलुंग, रुचक, फलपूरक (अम्लकेशर, बीजपूर्ण, [पूर्ण]बीज, सुकेशर, बीजक, मातुलङ्ग, सुपूर, बीजफलक, जन्तुघ्न, दन्तुर[...] पूरक, रोचनफल)

संस्कृतभाषामें	बीजपूर ।
हिन्दीभाषामें	बिजोरा नींबू ।
वँगभाषामें	टावालेवु ।
मराठीभाषामें	महालुङ्ग ।

गुजरातीभाषामें	बीजोरुलिंबु ।
अंग्रेजीभाषामें	साईट्रस् । Citrus
लैटिनभाषामें	साईट्रस् एसीडा । Citrus acida
	साईट्रस् मेडिका । Citrus Madica
फारसीभाषामें	तुरंज ।
अरबीभाषामें	उतरंज ।

अस्य फलगुणाः ।

बीजपूरफलंस्वादुरसेऽम्लंदीपनंलघु ।
रक्तपित्तहरंकण्ठजिह्वाहृदयशोधकम् ॥
श्वासकासारुचिहरंहृद्यंतृष्णाहरंस्मृतम् । (भा. प्र.)

अर्थ--विजोरानींबू--स्वादिष्ठ, खट्टा, दीपन, हलका, रक्तपित्तनाशक, कंठशोधक, जिह्वाशोधक, हृदयशुद्धिकारक तथा श्वास, खाँसी, अरुचि, तृषानाशक है और हृदयको हितकारी है ।

अन्यच्च ।

मातुलुंगफलंचाम्लमुष्णंकंठविशोधकम् । तीक्ष्णंलघुप्रियं चाग्निदीपकंरुचिकारकम् ॥ स्वादुश्चजिह्वाहृदयशोधकं पित्तवातनुत् ।कफश्वासतृषाकासान्हिक्काश्चैवविनाशयेत् ॥ अरुचिंरक्तपित्तंचनाशयेदितिकीर्तितम् । तच्चबालंमातुलुङ्गंपित्तवातकफप्रदम् ॥ रक्तरुक्कारकंचैतेमध्यमस्यापिते गुणाः । पक्वंमहावर्णकरंहृद्यंबल्यश्चपौष्टिकम् ॥ शूलाजीर्णविबन्धघ्नंवातंश्वासंकफञ्जयेत् । अग्निमांद्यश्चशोफश्चकासारोचकनाशकम् ॥ फलत्वग्दुर्जरातिक्तातीक्ष्णोष्णास्निग्धकागुरुः । कृमिवातकफान्हन्तित्वग्द्रवःसाधुशीतलः॥ गुरुर्धातोर्वृद्धिकरः स्निग्धः कफकरः स्मृतः । वातपित्तहरः प्रोक्तःप्रोक्तोन्तर्भागकोमधुः । वातंशूलंकफंछर्दिमरोचस्यचनाशकः । केसरंदीपनंमेध्यंलघुग्राहिरुचिप्रदम् ॥ गुल्मोदरश्वासकासहिक्कावातमदात्ययान् । मदशोषविबन्धार्शो-

वांतीश्चनाशयत्यलम् । केसरस्यरसःपार्श्ववस्तिशूलकफा-रुचीः । वातंचश्वासकासंचछर्दिंश्चैवविनाशयेत॥ बीजं तु मातुलुंगस्यगर्भदंदुर्जरंगुरु । उष्णंतिक्तंदीपनंचबल्यमर्शोरुजापहम् ॥ वातपित्तशोफकफान्नाशयेदितिकीर्तितम् । फलमज्जागुरुःशीतास्वाद्वीस्निग्धाबलप्रदा ॥ वातपित्तेनाशयेच्चमूलमर्शःकृमीहरम् । विषूचीमलबन्धश्चशूलंचैवविनाशयेत् ॥ पुष्पन्तुमातुलुंगस्यदीपनंग्राहिशीतलम् । लघुवातंरक्तपित्तंनाशयेदितिकीर्तितम् ॥

अर्थ--बिजोरा नींबू-खट्टा, गरम, कंठशोधक, तीक्ष्ण, हलका, स्नि॰ अग्निप्रदीपक, रुचिकारक, स्वादिष्ठ,तथा जिह्वा और हृदयको शुद्ध करनेवाला तथा पित्त, वात, कफ, श्वास, तृषा, खाँसी, हिचकी, अरुचि और रक्तपि॰ त्तको दूर करेहै । कोमल बिजोरा--पित्त, वात, कफ और रुधिरके विकारोंको उत्पन्न करेहै । मध्यम-अवस्थाके बिजोरेकेभी कोमल अर्थात् कच्चे बिजोरेके समान गुण हैं । पक्का बिजोरा--देहको सुंदर करनेवाला, हृदयको हितकारी, बलकारक, पुष्टिजनक तथा शूल, अजीर्ण, विबन्ध, वात, श्वास, क॰ मंदाग्नि, सूजन, खाँसी और अरुचिको हरनेवाला है । बिजोरेका ग॰ दुर्जर कडवा, तीक्ष्ण, गरम, स्निग्ध, भारी तथा वात और कफको दूर क॰ है । बिजोरेके बक्कलका रस-स्वादु, शीतल, भारी, धातुवर्द्धक, स्निग्ध, ब॰ कारक और वातपित्तनाशक है । बिजोरेके बक्कलके अन्तरका भाग-दी॰ तथा वात, शूल,कफ,वमन और अरुचिको दूरकरेहै । बिजोरेकी केशर-दी॰ मेधाकारक, हलकी, मलरोधक, रुचिकारक तथा गुल्म, उदररोग, श॰ खाँसी, हुचकी, वात, मदात्यय, उन्माद, शोष, विबन्ध, अर्श और वमन॰ दूर करनेवाली है । बिजोरेकी केसरका रस-पार्श्व, वस्तिशूल, कफ, अ॰ वात, श्वास, खाँसी और वमनका नाश करे है । बिजोरेके बीज-गर्भदा॰ अतिकठिनतासे पचनेवाले, भारी, गरम, दीपन, बलवर्द्धक तथा बवा॰ वात, पित्त, सूजन और कफका नाश करेहै । बिजोरेके बीजकी गि॰ भारी, शीतल, स्वादु, स्निग्ध, बलवर्द्धक तथा वात और पित्तका नाश॰ है । बिजोरेके वृक्षकी जड-अर्शरोग, कृमि, विषूची, मलबंध और शू॰

नाशकरे हैं। विजोरेके फूल दीपन, मलरोधक, शीतल, हलके तथा वात और रक्तपित्तका नाश करे हैं।

ऋतुपरत्वेनानुपानगुणाः ।

सिन्धूत्थेनघनागमेचसितयाकालेशरत्संज्ञके हेमन्तेलवणार्द्र-हिंगुमरिचैःसिद्धार्थतैलान्वितैः ॥ एतैस्तैः शिशिरेमधावपि युतैर्ग्रीष्मेगुडेनान्वितंवैद्यैर्भूमिपमातुलुंगमुदितंसर्वत्रसाधारणम्

अर्थ-विजोरेको--वर्षाऋतुमें सैन्धलवणके साथ, शरद्ऋतुमें मिश्रीके साथ, हेमन्तऋतुमें लवण, अदरख, हींग और मिर्चके साथ, शिशिर ऋतुमें और बसन्तऋतुमें सरसोंके तेलके साथ और ग्रीष्मऋतुमें गुडके साथ सेवन करना चाहिये।

वनबीजपूरगुणाः ।

अम्लःकटूष्णोवनबीजपूरोरुचिप्रदोवातविनाशनश्च ।
स्यादामदोषक्रिमिनाशकारीकफापहःश्वासनिषूदनश्च (रा. नि.)

अर्थ-वनबिजोरनींबु-खट्टा चरपरा, गरम, रुचिदायक, वातविनाशक तथा आमदोष, कृमि, कफ और श्वासको दूर करे है।

मधुरमातुलुङ्गगुणाः ।

मधुरंमातुलुंगन्तुशीतंरुच्चिकरंमधु । गुरुवृष्यंदुर्ज्जरश्चस्वादिष्ठंचत्रिदोषनुत । पित्तंदाहंरक्तदोषान्विबन्धश्वासकासकान् ॥ क्षयंहिक्कांनाशयेच्चपूर्वैरेवमुदाहृतम् ।

अर्थ-मधुरमातुलुङ्ग शीतल, रुचिकारक, मधुर, भारी, वीर्य्यवर्द्धक, दुर्जर, स्वादिष्ठ तथा त्रिदोष, पित्त, दाह, रुधिरविकार, मलबंध, श्वास, खांसी, क्षय और हुचकीको दूर करे है।

विवरण। विजोरेके वृक्ष बागोंमें होते हैं, इसके पत्ते नींबुके पत्तोंसे ही मिलते हैं, परन्तु लम्बाई चौडाईमें इससे आठ दसगुने होते हैं, फूल सफेद आता है, फल लम्बा और गोल होता है. किसी किसी देशमें जङ्गली बिजोरा होता है, दूसरा मीठा बिजोरा होता है।

निम्बूकनामानि ।

निम्बूकंस्यादम्लजम्बीरकाख्यंवह्निदीप्योवह्निबीजोम्लसारः ।
दन्ताघातःशोधनोजन्तुमारीनिम्बूकःस्याद्रोचनोरुद्रसंज्ञः ॥

अर्थ-निम्बूक, अम्लजम्बीर, वह्निदीप्य, वह्निबीज, अम्लसार, दन्ताघात, शोधन, जन्तुमारी, निम्बूक, रोचन।

जम्बीरनामानि।



जम्बीरोदन्तशठोजम्भजम्भीरजम्भलश्चैव।
रोचनकोमुखशोधीजाड्यारिर्जंतुजिन्नवधा॥

अर्थ-जम्बीर, दन्तशठ, जम्म, जम्भीर, जम्भल, रोचनक, मुखशोधी, जाड्यारि, जन्तुजित् (जम्भल, जम्भक, जम्भर, दन्तहर्षण, दन्तकर्षण, गम्भीर, जम्भिर, रेवत, वक्रशोधी, दन्तहर्षक, जम्भी)

संस्कृतभाषामें	निम्बूक, जम्बीर।
हिन्दीभाषामें	नींबु, कागजीनींबु, जम्भीरीनींबु, विहारीनींबु, कन्नानींबु, मीठानींबु।
वंगभाषामें	कागजीलेबु, जांमीरलेबु, पातीलेबु, कमललेबु।
मराठीभाषामें	कागदीलिंबु, ईडलिंबु, मोठेंईडलिंबु, साखरलिंबु।
गुजरातीभाषामें	कागदीलिंबु, दोडिंगालिंबु, मीठालिंबु,।
कर्णाटकीभाषामें	कचिले, कनिले।
तैलिङ्गीभाषामें	निम्मपंड्डु, जंभिरम्।
अंग्रेजीभाषामें	लेमन्स। Lemons
लैटिन्भाषामें	लेमोनं एसिडं। Lemonum acidum

लेमोनिसूकोर्टिक्स
फारसीभाषामें लिमुनेतुर्श, लिमुनेशिरि ।
अरबीभाषामें लिमुनेहामिज ।

निम्बूकगुणाः ।

निम्बूकमम्लंवातघ्नंदीपनंपाचनंलघु ।
निम्बुकंकृमिसमूहनाशनंतीक्ष्णमम्लमुदरश्रमापहम् ।
वातपित्तकफशूलिनेहितंकष्टनष्टरुचिरोचनंपरम् ॥ (भा. प्र.)

अर्थ–नीम्बु–खट्टा, वातनाशक, दीपन, पाचक, हलका, कृमिसमूहनाशक तीक्ष्ण, उदररोगनाशक, श्रमहारक, वात, पित्त, कफ और शूलमें हितकारी, अरुचिनिवारक और रोचन है ।

अन्यच्च ।

त्रिदोषसद्योज्वरपीडितानांदोषाश्रितानाञ्चस्रवज्जलानाम् ।
मलग्रहेबद्धगुदेहितश्चविषूचिकायांमुनयोवदन्ति ॥ (भा. स.)

अर्थ–नींबू–त्रिदोषजन्य रोग, तत्कालके ज्वर, अनेक प्रकारके मंदाग्निक रोग, मुखादिकसे पानीका गिरना, मलग्रह, गुदबद्धता और विषूचिकारोगमें अत्यंत हितकारी है ।

अपिच ।

निम्बूफलंरोचनमग्निवृद्धिंकरोतिपित्तञ्चसवातरक्तम् ।
अचाक्षुषंश्लेष्मकरंविशेषाद्भुक्तस्यपाकंकुरुतेचसद्यः ॥ (सुषेण)

अर्थ–नींबू–रोचन अग्निदीपक पित्तजनक, वातरक्तकारक, नेत्रोंको अहितकारी, कफकारक और विशेष करके खाये हुए भोजनको पचानेवाला है ।

अन्यच्च ।

त्रिदोषवह्निक्षयवातरोगनिपीडितानांविषविह्वलानाम् ।
मंदानलेबद्धगुदेचदेयंविषूचिकायांमुनयोवदन्ति ॥

अर्थ–नीम्बु–त्रिदोष, वह्नि, क्षय और वातरोगसे पीडित किये हुए मनुष्योंको तथा विषसे विह्वल किये हुए मनुष्योंको और मंदाग्नि, कोष्ठरोध तथा विषूचिका रोगमें देना चाहिये ।

अन्यच्च ।

निम्बूर्णंपाचकंचाम्लंदीपनंनेत्रयोर्हितम् । अतिरुच्यञ्चक-

टुकंतुवरंचमतंलघु ॥ कफंवातंवमिंकासंकण्ठरोगंक्षयंतथा पित्तंशूलंत्रिदोषश्चमलस्तम्भंविषूचिकाम् । बद्धोदरंचामवातंगुल्मश्चैवकृमीञ्जयेत् । तत्पक्वंचगुणैःश्रेष्ठंप्रोक्तंवैद्यविशारदैः ॥ (नि. र.)

अर्थ—नींबू-गरम, पाचक, खट्टा, दीपन, नेत्रोंको हितकारी, अतिशय रुचिकारक, कटु, कषेला, हलका तथा कफ, वात, वमन, खाँसी, कण्ठरोग, क्षय, पित्त, शूल, त्रिदोष, मलस्तम्भ, विषूचिका, बद्धगुदोदर, आमवात, गुल्म और कृमिको दूर करे है । पक्का निम्बु गुणोंमें श्रेष्ठ है ।

जम्बीरगुणाः ।

जम्बीरंमधुरंकिञ्चिदत्यम्लंपित्तकृद्गुरु ।
सुगन्धिदुर्जरंवह्निकफवातविबन्धनुत् ॥ (रा. व)

अर्थ—जम्भीरीनींबू-किञ्चित् मधुर, अत्यन्तखट्टा, पित्तकारी, भारी, सुगन्धित, दुर्जर तथा अग्नि, वायु और कफकी विबन्धताको दूर करने वाला है ।

अन्यच्च ।

जम्बीरस्यफलंरसेम्लमधुरंवातापहंपित्तकृत्पथ्यंपाचनरोचनं बलकरंवह्नेर्विवृद्धिप्रदम् । पक्वंचेन्मधुरंकफार्तिशमनंपित्तास्रदोषापनुद्वर्ण्यंवीर्य्यविवर्द्धनंरुचिकरंपुष्टिप्रदंतर्पणम् (रा नि)

अर्थ—जम्भीरीनींबू-अम्ल, मधुर, वातनाशक, पित्तजनक, पथ्य, पाचन, रोचन, बलकारक और अग्निवर्द्धक है । पका जम्भीरीनींबू-मधुर, कफनाशक, रक्तपित्तनिवारक, वर्णको सुंदर करनवाला, वीर्य्यवर्द्धक, रुचिकारक, पुष्टिकारक और तृप्तिदायक है ।

अपिच ।

जम्बीरमुष्णंगुर्वम्लंवातश्लेष्मविबन्धनुत् । शूलंकासकफोत्क्लेशच्छर्दितृष्णामदोषजित् ॥ आस्यवैरस्यहृत्पीडावह्निमान्द्यंकृमीन्हरेत् । स्वल्पजम्बीरिकातद्वत्तृष्णाछर्दिनिवारिणी ॥ (रा.)

अर्थ—जम्भीरीनींबू-गरम, भारी, अम्ल, वातकफनाशक, विबन्धनिवा-

तथा शूल, खाँसी, कफ, उत्क्लेश, वमन, तृषा, आमदोष, मुखकी विरसता, हृदयकी पीडा, मंदाग्नि और कृमिको दूर करे है। छोटी जम्भीरीके गुणभी बडीके समान जानने, विशेषकरके यह तृषा और वमनको दूर करे है।

लिम्पाकगुणाः।

लिम्पाकंसुरभिस्वादुनात्यम्लंभक्तरोचनम् ।
वातश्लेष्महरंहृद्यंछर्दिघ्नंनातिपित्तकृत् ॥ (राजवल्लभ)

अर्थ-लिम्पाक (जम्बीरभेद) सुगन्धि, अत्यन्त अम्ल नहीं, अन्नरोचक, वातश्लेष्मनाशक, हृदयको हितकारी, वमननिवारक और कुछेक पित्तकारक है।

करुणगुणाः।

करुणंकफवातास्रमेदोघ्नंपित्तकोपनम् ।

अर्थ-कन्नानींबू-कफ, वातरक्त और मेदरोगनाशक है तथा पित्तवर्द्धक है।

निम्बूकसाधारणगुणाः।

अशीतमम्लमग्निकृत्समस्तशूलगुल्महृत् ।
अरोचकंविषूचिकांकृमिश्चनिंबुनाशयेत् ।

अर्थ-साधारणनींबू पित्तकारक, खट्टा, अग्निवर्द्धक, सर्व प्रकारके शूल और गुल्मको नाश करनेवाला तथा अरुचि, विषूचिका और कृमिरोगको हरनेवाला है।

बृहज्जम्बीरगुणाः।

बृहज्जम्बीरकंचाम्लंतुवरंतिक्तकंसरम् ।
उष्णंपित्तकफघ्नञ्चपाचनंपरिकीर्त्तितम् ॥
येगुणालघुजंबीरेतेवृद्धेसन्तिचाखिलाः ।

अर्थ-बडाजम्भीरीनींबू-खट्टा, कषेला कडवा, सारक, गरम, पित्तकफनाशक, पाचक। जो गुण बडे जम्भीरीनींबूमें हैं वही गुण छोटे जम्भीरीनींबूमें जानने।

मधुकुक्कुटिगुणाः।

मधुकुक्कुटिकाशीताश्लेष्मलास्यप्रसादनी ।
रुच्यास्वादुर्गुरुःस्निग्धावातपित्तविनाशिनी ॥ (रा. व.)

अर्थ-मीठाजम्भीरीनींबू-शीतल, कफकारक, मुखको निर्मल करनेवाला, रुचिकारक, स्वादिष्ट, भारी, स्निग्ध तथा वात और पित्तनाशक है।

मिष्टनिम्बुगुणाः ।

मिष्टनिम्बूफलंस्वादुगुरुमारुतपित्तनुत् ।
गररोगविषध्वंसिकफोत्क्लेशघ्नरक्तहृत् ॥
शोषारुचितृषाछर्दिहरंबल्यञ्चबृंहणम् (भा. प्र.)

अर्थ-मीठानींबू-स्वादिष्ठ, भारी, वातपित्तनाशक, गररोगनाशक, विषविनाशक तथा कफ, उत्क्लेश, रुधिरविकार, शोष, अरुचि, तृषा और वमनको दूर करे है, बलवर्द्धक और पुष्टिकारक है ।

मधुकर्कटीगुणाः ।

मधुकर्कटिकास्वाद्वीरोचनीशीतलागुरुः ।
रक्तपित्तक्षयश्वासकासहिक्काभ्रमापहा ॥ (भा. प्र.)

अर्थ-चकोतरा-स्वादिष्ठ, रोचक, शीतल, भारी तथा रक्तपित्त, क्षय, श्वास, खाँसी, हिचकी और भ्रमको दूर करनेवाला है ।

जम्बीरपत्रगुणा गुणाः ।

पत्रंजम्बीरजंतीक्ष्णंकृमिवातकफापहम् ।
सुरभिदीपनंरुच्यंमुखवैशद्यकारकम् ॥

अर्थ-जम्भीरीनींबूकेपत्ते-तीक्ष्ण, कृमिहारक, वातनिवारक, कफनाशक, सुगन्धित, दीपन, रुचिकारक और मुखको निर्मल करनेवाले हैं ।

विवरण । नींबूके वृक्ष, बागोंमें होते हैं, किन्तु किसी २ देशमें वनमें भी देखपडते हैं, पत्ते सर्व प्रकारके नींबूओंके गोल होते हैं निंबुओंके पत्तोंमें केवल छोटे बडेकाही अन्तर अर्थात् किसीके पत्ते छोटे और किसीके बडे होते हैं सर्व प्रकारके नींबुओंके फूल सफेद और सुगन्धियुक्त होते हैं, फल कच्ची अवस्थामें नीले और पकनेपर पीले पडजाते हैं, नींबू, जम्भीर, कागजी, बिहारी, कन्ना, मीठानींबू, चकोतरा, नारंगी, संतरा, विजोरा इत्यादि अनेक जाति होते हैं ।

तिन्तिडीनामानि ।

अम्लिकाचुक्रिकाम्लीचचुक्रादंतशठापिच ।
अम्लाचचिंचकाचिंचातिन्तिडीकाचतिन्तिडी ॥

अर्थ-अम्लिका, चुक्रिका, आम्ली, चुक्रा, दंतशठा, अम्ला, चिंचका, चिंचा, तिन्तिडीका, तिन्तिडी । (तिन्तिडीक, तिन्तिलिका, वृक्षाम्ल

अम्लीका, आम्लिका, आम्लीका, तिन्तिड, तिन्तिली, तिन्तिका, आम्ब्दिका, शुक्र, अत्यम्ला, भुक्ता, भुक्तिका, चारित्रा, गुरुपत्रा, पिच्छिला, यमदूतिका चरित्रा, शाकचुक्रिका, सुचुक्रिका, सुतिन्तिडी, पंक्तिपत्रा, सर्वाम्ला)



संस्कृतभाषामें	तिन्तिडी ।
हिन्दीभाषामें	इमली ।
वंगभाषामें	तेंतुल ।
मराठीभाषामें	चिंच ।
गुजरातीभाषामें	आंबली ।
कर्णाटकीभाषामें	हुणिसे, हुणिसेहण्णु, हुणिसिनयले ।
तैलिङ्गीभाषामें	चिंताचेट्टु, चिण्ट ।
औत्कलीभाषामें	कंआं ।
तामिलीभाषामें	पुलि ।
ब्रम्०	टिन्टज ।
अंग्रेजीभाषामें	टेमेरिंड्ट्री । Tamarind Tree
लेटिन्भाषामें	टेमेरिंडस् इंडिकस् । Tamarindus Indicus
अरबीभाषामें	तमरहिंदी ।

अस्य फलगुणाः ।

अम्लिकाम्लागुरुर्वातहरीपित्तकफास्त्रकृत् ।
पक्वातुदीपनीरूक्षासरोष्णाकफवातनुत् ॥ (भा. प्र.)

अर्थ-कच्ची इमली-भारी, वातनाशक, पित्तजनक, कफकारक और रक्तको दूषित करे है । पक्की इमली-दीपन, रूखी, कुछेक दस्तावर, गरम, कफ तथा वातनाश करे है ।

अन्यच्च ।

अम्लिकायाःफलंबालंवातघ्नंकफपित्तकृत् ।
तत्पक्वंदीपनंरुच्यमत्युष्णंकफवातजित् ॥ (रा. व.)

अर्थ-कच्ची इमली-वातविनाशक, कफकारक और पित्तजनक है। पकी इमली-दीपन, रुचिकारी, अत्यन्त उष्ण तथा कफ और वातको जीते है।

अपिच ।

चिंचावृक्षोगुरुश्चोष्णश्चाम्लःपित्तकफप्रदः।रक्तकोपनकारीचवातनाशकरोमतः ॥ चिंचापुष्पन्तुतुवरंस्वाद्वम्लंचरुचिप्रदम् । विशदंचाग्निजनकंलघुवातकफापहम् ॥ प्रमेहघ्नंसमुद्दिष्टंपर्णंशोथहरंमतम् । रक्तदोषहरंचैवफलंचास्यतुकोमलम् ॥ अत्यम्लंग्राहकंचोष्णंरुच्यंचाग्निप्रदीपकम् । रक्तपित्तस्यपित्तस्यकफरक्तस्यकोपनम् ॥ वातनाशकरंप्रोक्तंतत्पक्वंवातलंमतम् । कफपित्तकरंचैवतत्पक्वंमधुरंसरम् ॥ अम्लंहृद्यंभेदकंश्चमलस्तम्भकरंमतम् । दीपनंरुचिदंचोष्णंरूक्षंवस्तिविशोधनम् ॥ व्रणदोषंकफंवातंजन्तूंश्चैवविनाशयेत् । शुष्कंचिंचाफलंहृद्यंलघुश्रान्तिश्रमापहम् ॥ तृषाहरंक्लमहरंकृमिनाशकरंमतम् ॥

अर्थ-इमलीका वृक्ष-भारी, गरम, खट्टा, पित्तजनक, कफकारक रक्तप्रकोपक और वातविनाशक है। इमलीके फूल-कषेले, स्वादु, अम्ल, रुचिकारक, विशद, अग्निदीपक, हलके तथा वात, कफ, और प्रमेहको दूर करते हैं। इमलीके पत्ते-सूजन और रुधिरविकारको हरनेवाले हैं। कच्ची इमली-अत्यन्तखट्टी, मलरोधक, गरम, रुचिकारक, अग्निप्रदीपक तथा रक्तपित्त, पित्त, कफ और रक्तको कुपित करनेवाली है तथा वातनाशक है। तथा पकी हुई इमली-बादी, कफ और पित्तको उत्पन्न करनेवाली है। पकी हुई इमली-मधुर, सारक, खट्टी, हृदयको हितकारी दस्तावर मलस्तम्भक, दीपन, रुचिकारक, गरम, रूखी, वस्तिशोधक तथा व्रण दोष, कफ, वात और कृमिनाश करनेवाली है, सूखी इमली-हृदयको हितकारी, हलकी तथा श्रम, भ्रान्ति, तृषा, क्लम और कृमिका नाश करे है।

चिंचातुनूतनावातकफस्यकरिणीमता ।
सावार्षिकीवातपित्तनाशिनीपरिकीर्त्तिता ॥

अर्थ-नवीन इमली-वात और कफको उत्पन्न करे है । एक वर्षकी इमली-वात-पित्तनाशक है ।

चिंचाक्षारश्चाग्निमांद्यशूलनाशकरोमतः ॥

अर्थ-इमलीका क्षार-मंदाग्नि और शूलको निर्मूल करे है ।

पक्कचिंचारसश्चाम्लोमधुरोरुचिकृन्मतः ।
व्रणनाशकरश्चैवलेपनाच्छोथपंक्तिहृत् ॥

अर्थ-पक्कीइमलीका रस-अम्ल, मधुर, रुचिकारक, व्रणविनाशक तथा इसका लेप करनेसे- सूजन और पंक्तिशूल नष्ट होता है ।

चिंचासारंदाहकफकारकंचातिअम्लकम् ।
वातनाशकरंप्रोक्तंसमानशर्करायुतम् ॥
दाहंपित्तंकफंचैवनाशयेदितिकीर्त्तितम् । (नि. र.)

अर्थ-इमलीका सार-दाह और कफकारक, अत्यन्तखट्टा और वातविनाशक है । उसी सारमें बराबरकी खाँड मिलालीजाय तो दाह, पित्त और कफको हरनेवाला होजाताहै ।

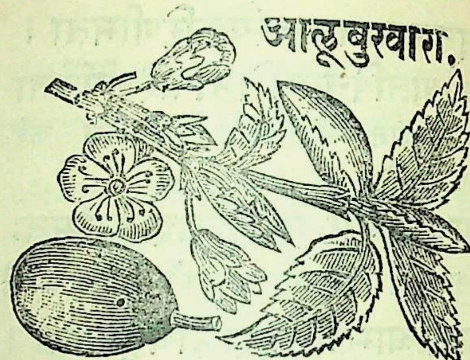
विवरण । इमलीके वृक्ष बहुत बडे २ ऊँचे और सघन जंगल तथा नगरके निकट घर बाहर सर्वत्र स्थानोंमें होते हैं, पत्ते, चौंटलीके समान डालियोंमें दोनों ओर बराबर लगे होते हैं और खट्टे होते हैं, फूल गुच्छोंमें लगे होते हैं, रंगपीला २ उनमें कुछ लाल लाल बिन्दुसे पडे होते हैं; फलियें कटोरके समान तिरछी और लम्बी होती हैं, उसको भी कटारा कहते हैं, उन कटारोंपर सूखे हुए छिलके होते हैं, छिलकोंको छीलनेसे गूदा निकलता है, परन्तु उस गूदेके भीतरभी बीज निकलते हैं उनको चोइये कहते हैं, यह इमली दो प्रकारकी होती है, एक लाल गूदकी दूसरी सपेद गूदेकी ।

आलुकनामानि ।

आरुकंवीरसेनश्चवीरंवीरारुकंतथा ।
तच्चविद्याच्चतुर्जातिपत्रपुष्पादिभेदतः ॥

अर्थ-आरुक, वीरसेन, वीर, वीरारुक (आलूक, मल्ल, भल्लूक भल्लूकफल) इसकी पत्र और पुष्पादिके भेदसे चार जाति हैं ।

आलूबुखारा.



संस्कृतभाषामें	आरुक ।
हिन्दीभाभाषामें	आलुबुखारा ।
मराठीभाषामें	वीरारुक ।
गुजरातीभाषामें	आलु ।
कर्णाटकीभाषामें	आरुक ।
अंग्रेजीभाषामें	चेरिप्लम् ।Cherry Plum प्रुन Piune
लैटिन्भाषामें	प्रुनस् बूखेयेन्सिस् । Prunus bookhariensis
	प्रुनस् कोम्युनीस् । Prunus Communis
फारसीभाषामें	आलुस्या ।
अरबीभाषामें	इज्जासू ।

आलुकगुणाः ।

आरुकोग्राहीतुवरोहृद्यःशीतोगुरुःस्मृतः । मलावष्टम्भकोग्राहीभेदीचोष्णःकफापहः ॥ पित्तहृत्पाचकश्चाम्लोमधुरश्चमुखप्रियः।मुखस्वच्छकरश्चैवमेहगुल्मार्शनुत्परः ॥ रक्तवातरुजांहन्तासपक्वोमधुरोगुरुः । कफपित्तकरश्चोष्णोरुच्योधातुविवर्द्धकः॥प्रियश्चैवतथाप्रोक्तोमेहार्शज्वरवातहा । (नि. र.)

अर्थ-आलुबुखारा -मलरोधक, कषेला, हृदयको हितकारी, शीतल, भारी, मलस्तम्भक, ग्राही, दस्तावर. गरम, तथा कफपित्तनाशक, पाचक, अम्ल, मधुर, मुखप्रिय, मुखको स्वच्छ करनेवाला तथा प्रमेह, गुल्म, बवासीर और रक्तवातका नाश करनेवाला है । पकाहुवा आलुबुखारा-मधुर, भारी, कफकारक, पित्तजनक, गरम, रुचिकारक, धातुवर्द्धक, प्रिय तथा प्रमेह, बवासीर, ज्वर और बातको हरनेवाला है ।

विवरण । आलुबुखारेके वृक्ष प्रायः बलख बुखारे और सिंहल द्वीपमें विशेष होते हैं । एक देशी आलुबुखारा इस देशमें होने लगा है ।

भव्यनामानि ।

भवंभव्यंभविष्यश्चभावनंवक्त्रशोधनम् ।
तथापिच्छलबीजश्चतच्चलोमफलंस्मृतम् ॥

अर्थ-भव, भव्य, भविष्य, भावन, वक्त्रशोधन, पिच्छलबीज, लोमफल (भाविक, संपुटांग, कुसुमोदर)

संस्कृतभाषामें	भव्य ।
हिन्दीभाषामें	ओट ।
वङ्गभाषामें	चालते ।
मराठीभाषामें	ओंटीचें झाड, ओंटीचें फळ ।
गुजरातीभाषामें	ओंटफल, करमल ।
फारसीभाषामें	चकी ।

लैटिन्‌भाषामें गारसीनिया झंथोचाईमस् Garcinia Znathochymus

अस्य गुणाः ।

भव्यमम्लकटूष्णंचबालंवातकफापहम् ।
पक्वन्तुमधुराम्लश्चरुचिकृच्छ्रमशूलहत् ॥ (रा. नि.)

अर्थ-कच्चा भव्यफल-अम्ल, चरपरा, गरम तथा वात और कफनाशक है । पक्का भव्यफल--मधुर, अम्ल, रुचिकारक तथा श्रम और शूलनाशक है ।

अन्यच्च ।

भव्यंस्वादुकषायाम्लंहृद्यमास्यविशोधनम् ।
तदेवपक्वंदोषघ्नंगुरुग्राहिविषापहम् ॥ (रा. व.)

अर्थ--भव्यफल--स्वादिष्ठ, कषेला, खट्टा, हृदयको हितकारी और मुखको शुद्धकरनेवाला है । पकाहुआ भव्यफल--त्रिदोषनाशक, भारी, मलरोधक और विषनाशक है ।

विवरण । इसका बडा वृक्ष होता है, फूल सपेद और पीले रङ्गके वर्षा-ऋतुमें आते हैं, उनमें सुगंधि आती है, कलकत्ते और जगन्नाथकी ओर अधिक होता है, फल ताडके फलके आकारका होता है, फलके भीतरका गूदा चिकना होता है । इसको खटाई इत्यादिकी जगह दालमें डालते हैं ।

वृक्षाम्लनामानि।

वृक्षाम्लंतिन्तिड़ीकञ्चचुक्रंस्यादम्लवृक्षकम्।

अर्थ--वृक्षाम्ल, तिन्तिडीक, चुक्र, अम्लवृक्षक, (अम्लशाक, चुक्राम्ल, तित्तिडीफल, शाकाम्ल, अम्लपूर, पूराम्ल, रक्तपूरक, चूडाम्ल, वीजाम्ल, फलाम्लक, अम्लवृक्ष, अम्लफल, रसाम्ल, श्रेष्ठाम्ल, अत्यम्ल, अम्लवीज, चुक्रफल)

संस्कृतभाषामें	वृक्षाम्ल।
हिन्दीभाषामें	विषाम्बिल। तत्तडीक।
वङ्गभाषामें	महादा, (भ.) अम्लकुटा, (सार०मु०) चुक्र (भा० दी०) तेंतुल, (मु)।
मराठीभाषामें	आमसोल (को०) कोकंबसोल।
गुजरातीभाषामें	कोकम।
कर्णाटकीभाषामें	तित्तीडिक।
अंग्रेजीभाषामें	कोकंबटरट्री। Kokum Buttstree
लैटिन्भाषामें	ग्यारसीनिया परप्यूरिआ। Oarcinia Purpurea
गोवा०	त्रिडोओ।

अस्य गुणाः।

वृक्षाम्लमाममम्लोष्णंवातघ्नंकफपित्तलम्। पक्वन्तुगुरुसंग्राहिकटुकंतुवरंलघु ॥ अम्लोष्णंरोचनंरूक्षंदीपनंकफवातकृत। तृष्णार्शोग्रहणीगुल्मशूलहृद्रोगजन्तुजित।

अर्थ--कच्चा विषांबिल--खट्टा, गरम, वातनाशक, कफकारक और पित्तजनक है। पक्का विषांबिल भारी, मलरोधक; चरपरा, कषैला, हलका खट्टा, गरम, रोचन, रूखा, दीपन, कफकारक, वातवर्द्धक तथा तृषा, बवासीर, संग्रहणी, गुल्म, शूल, हृदयरोग और कृमिको दूर करे है।

विवरण। विषांबिलके वृक्ष गोवाकी ओर होते हैं देखनेमें बड़े सुन्दर और झांदेदार होते हैं, पत्ते लम्बे और चिकने, शीत ऋतुमें आते और वसन्तऋतुमें फल लगते हैं, फल नारङ्गीके समान होते हैं, इसके गूदे अत्यन्त खट्टे होते हैं।

अम्लवेतसनामानि ।

स्यादम्लवेतसश्चुक्रःशतवेधीसहस्रजित् ।

अर्थ—अम्लवेतस, चुक्र, शतवेधी, सहस्रजित् (अम्ल, बोधि, रसाम्ल, आम्लवेतस, श्वेतसाम्ल, अम्लसार, वेधक, भीम, भेदन, भेदी, राजाम्ल, अम्लभेदक, अम्लांकुश, रक्तसार, फलाम्ल, अम्लनायक, सहस्रवेधी वीराम्ल, गुल्मकेतु, वराभिध, शंखद्रावी, मांसद्रावी, वराङ्गी, गुल्महा, महाक्षार)

संस्कृतभाषामें	अम्लवेतस ।
हिन्दीभाषामें	अमलवेंत ।
बंगभाषामें	थैकड़, अम्लवेतस ।
मराठीभाषामें	चुका ।
गुजरातीभाषामें	अमलवेत ।
अंग्रेजीभाषामें	कामन् सोरेल । Common Soral
लेटिन् भाषामें	आसीडो झफोलिया । AcidoZeyfolia
फारसीभाषामें	तुर्षक ।

अस्यफलगुणाः ।

अम्लवेतसमत्यम्लंभेदनंलघुदीपनम् । हृद्रोगशूलगुल्मघ्नंपित्तलंलोमहर्षणम् ॥ रूक्षंविण्मद्यदोषघ्नंप्लीहोदावर्त्तनाशनम् ॥ हिक्कानाहारुचिश्वासकासाजीर्णवमिप्रणुत् ॥ कफवातामयध्वंसिच्छागमांसद्रवत्वकृत् । चणकाम्लगुणंज्ञेयं लोहसूचिद्रवत्वकृत् ॥ (भा. प्र.

अर्थ—अमलवेंत–अत्यन्त खट्टा, भेदक, हलका, दीपन, पित्तकारक, लोमहर्षक, रूखा तथा हृदयरोग, शूल, गुल्म, मलदोष, मद्यदोष, प्लीहा, उदावर्त्त, हिचकी, आनाह, अरुचि, श्वास खाँसी, अजीर्ण, वमन, कफ और वातरोगको हरनेवाला है । बकरेके मांसको गलानेवाला । जैसे चनेके खारसे लोहेकी सुई गलजाती है उसीप्रकार इसके रसमें सुई गेरनेसे गलजाती है ।

अन्यच्च ।

अम्लवेतसमत्यम्लंकषायोष्णंचवातजित् । कफार्शःश्रमगुल्मघ्नमरोचकहरंपरम् ॥ (रा. नि.)

अर्थ—अमलवेंत-अत्यन्तखट्टा, कषेला, गरम, वातनाशक तथा कफ, ववासीर, श्रम, गुल्म और अरुचिको दूर करनेवाला है।

अपिच।

अम्लवेतसमत्यम्लमानाहकफवातजित्।
तदेवसिद्धंदोषघ्नंश्रमघ्नंग्राहिगुर्व्वपि॥ (रा. व.)

अर्थ—अमलवेंत-अत्यन्त खट्टा, आनाहनाशक, कफ तथा वातविनाशक है। पक्का अमलवेंत- त्रिदोषनाशक, श्रमहारी, ग्राही और भारी है।

विवरण। अम्लवेंतके वृक्ष मध्यम आकार और दो प्रकारके होते हैं, एक अम्लवेंत, दूसरी बेंती, यह छोटे होते हैं यह पेड मालियोंके बागोंमें बहुत होते हैं, फूल सफेद रंगके, फलगोल खर्बूजेके समान, कच्चा हरा, पकनेपर पीला पडजाता है और चिकना होता है।

पनसनामानि।



पनसःकंटकिफलः फणसोऽतिबृहत्फलः।
अपुष्पःफलदश्चैवस्थूलकण्टफलस्तथा॥

अर्थ—पनस, कंटकिफल, फणस, अतिबृहत्फल, अपुष्प, फलद, स्थूलकण्टफल, (कण्टाफल, आशय, मुरजफल, पलस, फलस, चम्पकालु, चम्पकोष चम्पालु, मृदङ्गफल पानस, महासर्ज्ज, फलिन, फलवृक्षक, स्थूल, कण्टफल, मूलफलद, अपुष्पफलद, पूतफल)

संस्कृतभाषामें	पनस।
हिन्दीभाषामें	कटहर, कटहल, फटैल।
बंगभाषामें	कांटाल।

मराठीभाषामें फणस ।
गुजरातीभाषामें पणस ।
कर्णाटकीभाषामें हलसिनहण्णु ।
तैलिङ्गीभाषामें पनसकायि ।
औ० फणस ।
तामिलीभाषामें वला ।
लेटिन्‌भाषामें आर्टोकार्पस् इन्टेग्रिफोलिया । Artocorpus Lutergrifolia

अस्यफलगुणाः ।

पनसंशीतलंपक्वंस्निग्धंपित्तानिलापहम् । तर्पणंबृंहणंस्वादु मांसलंश्लेष्मलंभृशम् ॥ बल्यंशुक्रप्रदंहन्तिरक्तपित्तक्षतक्षयान् । आमंतदेवविष्टम्भिवातलंतुवरंगुरु ॥ दाहकृन्मधुरंबल्यंकफमेदोविमर्दनम् । पनसोद्भूतबीजानिवृष्याणिमधुराणिच ॥ गुरूणिबद्धवर्च्चांसिसृष्टमूत्राणिसंवदेत् । मज्जापनसजोवृष्योवातपित्तकफापहः ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-पक्का कटहर-शीतल, स्निग्ध, पित्तवातविनाशक, तृप्तिकारक, पुष्टिकारक, स्वादिष्ट मांसवर्द्धक, कफकारक. बलवर्द्धक, शुक्रजनक तथा रक्तपित्त और क्षतक्षयको क्षय करे है। कच्चा कटहल--विष्टम्भकारक, बादी, कसेला, भारी, दाहकारक, मधुर, बलकारक, कफनाशक और मेदनाशक है। कठैलके बीज--वीर्य्यवर्द्धक, मधुर, भारी, मलको बांधनेवाले और मूत्रको निकालनेवाले हैं। कठैलकी मींग-वीर्य्यवर्द्धक और वात पित्त कफका नाश करनेवाली है।

अन्यच्च ।

कण्टाफलंसुमधुरंबृंहणंगुरुशीतलम् । दुर्ज्जरंवातपित्तघ्नंश्लेष्मशुक्रबलप्रदम् ॥ कण्टाफलमपक्वन्तुकषायंस्वादुशीतलम् । कफपित्तहरञ्चैवतत्फलास्थ्यपितद्गुणम् ॥ तद्बीजंसर्पिर्युक्तंस्निग्धंहृद्यंबलप्रदम् । (रा. व.)

अर्थ-पक्का कटहल--मधुर, पुष्टिकारक, भारी, शीतल, दुर्जर, वात और पित्तनाशक तथा कफ-शुक्र और बलवर्द्धक है। कच्चा कठैल और उसके बीज-

कषैले, स्वादिष्ठ, शीतल तथा कफ और पित्तनाशक हैं। इसके बीज घृतके साथ-स्निग्ध, हृदयको हितकारी और बलवर्द्धक हैं।

अपिच ।

पनसस्यफलंचाममंमलावष्टम्भकृन्मतम् । मधुरंदोषलंबल्यं तुवरंगुरुवातलम् ॥ कोमलंतच्चमधुरंगुरुबल्यंकफप्रदम् मेदोवृद्धिकरंचैवदाहवातप्रपित्तनुत् ॥ तत्पक्कंशीतलंदाहिस्निग्धंवैतृप्तिकारकम् । धातुवृद्धिकरंस्वादुमांसलश्चकफप्रदम् ॥ बल्यंपुष्टिकरंजन्तुकारकंदुर्जरंवृषम् । वातंक्षतक्षयंरक्तपित्तं चाशुव्यपोहति ॥ तस्यबीजन्तुमधुरंवृष्यंविष्टम्भकंगुरु । तस्यपुष्पंगुरुस्तिक्तंमुखशुद्धिकरंमतम् ॥ (नि. र.)

अर्थ-कटहरका कच्चा फल-मलस्तम्भक, मधुर, त्रिदोषकारक, बलवर्द्धक, कषेला भारी और बादी है। कोमल कठैल-मधुर, भारी, बलवर्द्धक, कफकारक, मेदोवर्द्धक तथा दाह और वातपित्तनाशक है। पक्का कठैल-शीतल, विदाही, स्निग्ध, तृप्तिकारक, धातुवर्द्धक, स्वादिष्ठ, मांसवर्द्धक, कफकारक, बलवर्द्धक, पुष्टिजनक, जन्तुजनक, दुर्जर, वीर्य्यवर्द्धक तथा वात, क्षतक्षय और रक्तपित्तका नाश करे है। इसके बीज--मधुर, वृष्य, विष्टम्भक और भारी हैं। इसके फूल-भारी, कडवे और मुखको शुद्ध करनेवाले हैं।

विवरण । कटहरके वृक्ष बहुत बडे २ होते हैं, प्रायः बागोंमें माली लोग बहुत लगा देते हैं, पत्ते गोल और लम्बे होते हैं, फूल आतेही नहीं, कटहरका बहुत बडा फल होता है और वह गूलरके समान लकडीको फोडकर निकलता है, फल हरे रङ्गका निकलता है, ऊपर कडे २ कांटे होते हैं, कटहरमें हेमन्तऋतुके पश्चात् फल लगते हैं वह फल गजभर लम्बा और बहुत मोटा होता है, तोल २० सेर तकका होता है।

लकुचनामानि ।

लकुचःक्षुद्रपनसोलिकुचोडहुरित्यपि ।

अर्थ-लकुच, क्षुद्रपनस, लिकुच, डहु (लकच, ऐरावत, भव्यक, निकोचक, कषायी, दृढवल्कल, काश्यं, शाल, शूर, स्थूलस्कन्ध, ग्रन्थिमत्फल)

संस्कृतभाषामें	लकुच ।
हिन्दीभाषामें	बडहर ।

बंगलाभाषामें	डेओ, मादार।
मराठीभाषामें	वटार, फल, क्षुद्रफणस।
गुजरातीभाषामें	लकुच।
लैटिन्‌भाषामें	आर्टोकार्पस्‌लकुचा। ArtocarpusLacooeha

अस्यगुणाः।

आमलंकुचमुष्णञ्चगुरुविष्टम्भकृत्तथा। मधुरञ्चतथाम्लञ्चदोषत्रितयरक्तकृत्॥ शुक्राग्निनाशनञ्चापिनेत्रयोरहितं स्मृतम्। सुपक्वंतत्तुमधुरमम्लंचानिलपित्तहृत्॥ कफवह्निकारंरुच्यंवृष्यंविष्टम्भकञ्चतत्। (भा.प्र.)

अर्थ-कच्चा बडहर-गरम, भारी, विष्टम्भकारी, मधुर, खट्टा, त्रिदोषकारक, रुधिरविकारकारक, नेत्रोंको अहितकारी तथा शुक्र और अग्निनाशक है। पक्का बडहर-मधुर, खट्टा, वातपित्तनाशक, कफकारक, वह्निवर्द्धक, रुचिकारी, वीर्य्यवर्द्धक और विष्टम्भकारक है।

अन्यच्च।

लकुचंगुरुविष्टम्भिस्वाद्वम्लंरक्तपित्तकृत्। श्लेष्मकारिसमीरघ्नमुष्णशुक्राग्निनाशनम्।

अर्थ-बडहर-भारी विष्टम्भकारी, स्वादिष्ठ, खट्टा, रक्तपित्तकारक, कफकारक, वातनाशक, गरम तथा शुक्र और अग्निनाशक है।

अपिच।

लिकुचंगुरुविष्टम्भित्रिदोषंशुक्रदूषणम्।

अर्थ-बडहर-गुरु, विष्टम्भकारक, त्रिदोषवर्धक और शुक्रको दूषितकरे है।

विवरण। बडहरके वृक्ष-बहुत ऊंचे २ और झांदेदार होते हैं प्रायः बागोंमें बहुत देखनेमें आते हैं, पत्ते-पाखरके समान और फल-गांठदार गोल २ नींबूके बराबर होते हैं, कच्ची अवस्थामें हरे २ होते हैं। इनको पेडपरसे तोडकर पालमें रखकर पकालेते हैं, इसके भीतर दश वीस सफेद रंगके बीज निकलते हैं, यह भी कटहरका भेद है, इसके फूलको लकुच कहते हैं, यह पीले रंगके होते हैं।

तिन्दुकनामानि।

तिन्दुकोनिलसारश्चकालस्कन्धोतिमुक्तकः।

स्फूर्जकःस्फर्जनः सृष्टः स्यंदनोरावणोरवः ॥
कृष्णत्वक्कृष्णसारश्चसुसारश्चविरूपकः ।

अर्थ-तिन्दुक, अनिलसार, कालस्कन्ध, अतिमुक्तक, स्फूर्जक, स्फूर्जन, सृष्ट, स्यन्दन, रावण, रव, कृष्णत्वक्, कृष्णसार, सुसार, विरूपक (शितिसारक, स्फूर्जक, केन्दु, तिन्दु, तिन्दुल, तिन्दुकि, तिन्दुकी, नीलसार, स्यन्दन, रावण, स्यन्दनाह्वय)

संस्कृतभाषामें	तिन्दुक ।
हिन्दीभाषामें	तेंदू ।
वंगभाषामें	गाव, तेंद ।
मराठीभाषामें	टेंमुर्णी, आपन ।
गुजरातीभाषामें	टिंबरवो ।
कर्णाटकीभाषामें	रुंबुरु ।
तैलिङ्गीभाषामें	तमिक ।
तामिलीभाषामें	तुम्बिक ।
अंग्रेजीभाषामें	एब्ननी । Edony
लैटिन्भाषामें	डायोस्पायीईरोस् एंब्रिओप्टेरिस् । Dtospyros
फारसीभाषामें	अबनुसुझाड । Embryoperis

अस्यगुणाः ।

तिन्दुकस्तुवरस्तिक्तःस्निग्धोष्णोव्रणवातहा । संग्राहिदुर्जरो जिह्वाजाडचकारीजडोगुरुः ॥ आमंचास्यफलंस्निग्धंकषायंलेखनंलघु । संग्राहिशीतलंरूक्षंविबन्धारुचिवातकृत् । पक्वंपित्तप्रमेहास्रह्यश्मघ्नंमधुरंगुरु । स्वादुपाकरसंस्निग्धं दुर्ज्जरंवातनाशकम् ॥

अर्थ-तेंदू--कषेला, कडवा, स्निग्ध, गरम, व्रणनाशक, वातहारक, ग्राहक, अतिकठिनतासे पचनेवाला, जिह्वाको जडताकारक, जड और भारी है। इसका कच्चाफल-स्निग्ध, कषेला, लेखन, हलका, मलरोधक, शीतल, रूक्ष तथा विबन्ध, अरुचि और वातको करनेवाला है। इसका पक्का फल-पित्त, प्रमेह, रुधिरविकार और अश्मरीनाशक है । स्वादुपाकी, स्वादु, स्निग्ध, दुर्ज्जर और वातनाशक है।

अन्यच्च ।

अम्लोष्णंलघुसंग्राहिस्निग्धपित्ताग्निवर्द्धनम् ।
आमंकषायंसग्राहितिन्दुकंवातकोपनम् ॥ (सु० सं०)

अर्थ-तेंदू- खट्टा, गरम, हलका, स्निग्ध, पित्त और अग्निवर्द्धक है। कच्चा तेंदू-कषेला, मलरोधक और वातको कुपित करनेवाला है।

अपिच ।

तिंदुकस्तुवरस्तिक्तःस्निग्धश्चोष्णोमधुःस्मृतः । वायुव्रणंहत्यस्यफलंचामंकषायकम् ॥ लेखनंग्राहकंशीतंस्वादुरूक्षंलघुस्मृतम् । मलस्तम्भारुचिकरंवातकृत्तिक्तकंमतम् ॥ तत्पक्वंश्चगुरुस्वादुमधुस्निग्धश्चदुर्जरम् । कफकृन्मेहापित्तघ्नंरक्तरुग्वातनाशकम् ॥ तिन्दुकाष्ठस्यसारस्तुपित्तरोगहरोमतः । (नि० र०)

अर्थ-तेंदु--कषेला, कडवा, स्निग्ध, गरम, मधुर, वात और व्रणनाशक है। इसका कच्चा फल--कषेला, लेखन, ग्राही, शीतल, स्वादु, रूखा, हलका, मलस्तम्भक, अरुचिकारक, वातवर्द्धक और कडवा है। इसका पक्का फल--भारी, मधुर, स्वादु, दुर्जर, कफकारी, प्रमेहहारी तथा पित्त, रक्तरोग और वातनाशक है। तेंदूकी लकडीका सार पित्तरोगनाशक है।

विवरण । तेंदूके वृक्ष--अत्यन्त ऊंचे २ होते हैं, पत्ते--गोल २ नोकदार शीसमकेसे होते हैं, छाल--काली २ होती है, उसमें खार होता है, इसकी लकडी स्थानादिकोंके बनानेके काममें आती है, इसके भीतरका सार काला और वजनदार होता है, हिन्दुस्तानी लोग इसको आवनूस कहते हैं, तेंदूके फल गोल और शोभायमान नींबूके समान हरे हरे होते हैं, पकनेपर पीले पड जाते हैं।

काकतिन्दुकनामानि ।

तिन्दुकोन्योद्वितीयस्तुजलजोदीर्घपत्रकः ।
काकेंदुकेतिविख्यातःकुपीलुःकाकपीलुकः ॥

अर्थ-काकेन्दु. जलज, दीर्घपत्रक, काकेन्दुका, कुपीलु, काकपीलुक, (काकड, काकतिन्दु, काकस्फूर्ज, काकाह्व, काकबीजक, कुलक)।

संस्कृतभाषामें	काकतिन्दुक ।
हिन्दीभाषामें	मकरतेंदुआ, काकतेंदु ।
बंगभाषामें	केंद माकडागाव, माकडातेंदु ।
मराठीभाषामें	काकटेंभुर्णी ।
गुजरातीभाषामें	काकटिंबरवो ।
तैलिङ्गीभाषामें	तुमि, तुमुकि ।
तामिळीभाषामें	तुम्बि ।

अस्य गुणाः ।

स्यात्काकतिन्दुकंतिक्तंशीतलंवातलंलघु ।
विपाकेकटुकंग्राहिकफपित्तास्रनाशनम् ॥

अर्थ--मकरतेंदुवा--कडवा, शीतल, बादी, हलका, पचनेमें चरपरा, मलरोधक तथा कफ और रक्तपित्तकफनाशक है ।

अन्यच्च ।

काकतिन्दुःकषायाम्लोगुरुर्वातविकारनुत् ।
पक्वस्तुमधुरःकिञ्चित्कफकृत्पित्तवातहृत् ॥

अर्थ--काकतेंदू (मकरतेंदुआ)--कषेला, खट्टा भारी, वातविकारनाशक है पकातेंदू--किञ्चित् मधुर कफकारक और पित्तवातहारक है ।

विवरण । तेंदूके वृक्ष-जंगलमें होते हैं, इसकी छाल काली और छालमें खार होता है, वृक्षके भीतरका सार वजनदार और काले सीसमके समान होता है, उसको देशीभाषामें आवनूस कहते हैं, फल--गोल नींबूके समान होते हैं । दूसरा काकतेन्दु कांटेयुक्त होता है, फल--तेंदूके फलसे छोटे होते हैं ।

कारस्करनामानि ।

कारस्करस्तुकिंपाकोविषतिन्दुर्विषद्रुमः ।
गरद्रुमोरम्यफलःकुपाकःकालकूटकः ॥

अर्थ-कारस्कर किम्पाक, विषतिन्दु, विषद्रुम, गरद्रुम, रम्यफल, कुपाक, कालकूटक (कुपीलु, मर्कटतिन्दु, कचीर, वर्तुल, चिपिट)





संस्कृतभाषामें	कारस्कार ।
हिन्दीभाषामें	कुचला ।
बंगभाषामें	कुंचिले ।
मराठीभाषामें	काजरा, कारस्कार, कुचला ।
गुजरातीभाषामें	झेरकोचलां ।
कर्णाटकीभाषामें	कांजिबार ।
तैलिङ्गीभाषामें	मुष्टिगिंजा ।
अंग्रेजीभाषामें	पाइझननट । Poison nut
लेटिन्भाषामें	स्टिकनस् नक्सवामिका Strychnos Nuxvomica
फारसीभाषामें	इफराकी ।
अरबीभाषामें	कातिलुलकलक फलूजमाही ।

अस्य गुणाः ।

विषतिन्दुर्महातिक्तः कफवातविषापहः ॥

अर्थ-कुचला-अत्यन्त कडा तथा कफ, वात और विषविनाशक है ।

अपिच ।

कारस्करःकटूष्णश्चातिक्तःकुष्ठविनाशनः ।
वातामयास्रकण्डूतिकफकार्श्यव्रणापहः ॥

अर्थ--कुचला--चरपरा, गरम, कडवा, कुष्ठनाशक तथा वातरोग, रुधिरदोष, कण्डू, कार्श्य, बवासीर और व्रणको दूर करनेवाला है।

अन्यच्च।

काचिरःकटुकस्तिक्तोरूक्षोष्णोदीपनोलघुः। भेदनस्तूदनोहन्तिपाण्डुरोगंचकामलाम्॥

अर्थ—कुचिला—चरचरा, कडावा, रूखा, गरम, दीपन, हलका, भेदक, तूदन तथा पाण्डुरोग और कामलारोगको हरनेवाला है।

अपिच।

कारस्करोमदकरस्तुवरोग्राहकःस्मृतः। कटुस्तिक्तोलघुश्चोष्णःकुष्ठरक्तविकारहा॥ कण्डूंकफंवातरोगंव्रणंचार्शोज्वरंजयेत्। अस्यचामफलंग्राहितुवरंवातकृल्लघु॥ शीतलंचसमुद्दिष्टंतत्पक्वंविषदंगुरु। पाकेचमधुरंप्रोक्तंकफंवातप्रमेहकम्॥ पित्तरक्तविकारंचनाशयेदितिकीर्त्तितम्॥ (नि.)रा.)

अर्थ--कुचिला- मदकारक, कषेला, मलरोधक, चरपरा, कडवा, हलका, गरम तथा कोढ, रक्तविकार, कण्डू, कफ, वातरोग, घाव, बवासीर और ज्वरको दूर करे है। इसका कच्चा फल--मलरोधक, कषेला, वातकारक, हलका और शीतल है। इसकापक्का फल -विषद, भारी, पाकमें मधुर तथा कफ, वायु, प्रमेह, पित्त और रक्तदोषनाशक है।

विवरण। कुचलेके वृक्ष-- मध्यम आकारके होते हैं, प्रायः वनोंमें बहुत देखनेमें आते हैं, पत्ते-पानके समान और फल नारंगीके समान सुन्दर सुन्दर होते हैं, इसके बीजोंको कुचला कहते हैं।

मधूकनामानि।

मधूकोमधुवृक्षश्चमधुष्ठीलोमधुस्रवः। गुडपुष्पोरोध्रपुष्पोवानप्रस्थोथमाधवः॥ मध्वगस्तीक्ष्णसारश्चडोलाफलोमहाद्रुमः। मधूकोन्योद्वितीयस्तुजलजोदीर्घपत्रकः॥ ह्रस्वपुष्पफलःस्वादुर्गौलिकास्यान्मधूलिका:।

अर्थ--मधूक, मधुवृक्ष, मधुष्ठील, मधुस्रव, गुडपुष्प, रोध्रपुष्प, वानप्रस्थ, माधव, मध्व, तीक्ष्णसार, डोलाफल, महाद्रुम (मधुक, मधु, मधुवा

मखल,) दूसरा जलमधूक होता है, उसके यह नाम हैं जलज, (दीर्घपत्रक, हस्वपुष्पफल, स्वादु, गौलिका, मधूलिका, क्षौद्रप्रिय, पतङ्ग, कीरेष्ट, गौरिकाक्ष मंगल्य, मधुपुष्प गैरिकाख्य)

संस्कृतभाषामें	मधूक जलमधूल।
हिन्दीभाषामें	महुआ, जलमहुआ।
वंगभाषामें	मौल, मउल, मौया, जलमउल।
मराठीभाषामें	मोहाचा वृक्ष, मोहवृक्ष, जलमोहा।
गुजरातीभाषामें	महुडो, जलमहुडो।
कर्णाटकीभाषामें	महूइप्पे, जलमह्वे, तोरेइप्पे, यरडुइप्पे।
तैलिङ्गीभाषामें	इपा, पिन्ना।
तामिलीभाषामें	कटइल्लुपि।
अंग्रेजीभाषामें	इलूपाट्री। Elloopatree
लैटिन्भाषामें	बेसिया लाटिफोलिया। Bassia latifolia
फारसीभाषामें	चकां।

अस्य गुणाः।

मधूकोमधुरःशीतःश्लेष्मलोवीर्य्यदःस्मृतः। पुष्टिकृत्तुवरस्तिक्तःपित्तदाहव्रणश्रमान् ॥ कृमिदोषंचवातंचनाशयेदितिकीर्त्तितम्। पुष्पंचमधुरंशीतंधातुवृद्धिकरंगुरु॥ स्निग्धंविकाशिहृद्यंचदाहपित्तमरुत्प्रणुत्। फलमस्यगुरुशीतमहृद्यंशुक्रलंमतम् ॥ स्निग्धंरसेचपाकेचमधुरंधातुवर्द्धकम्। मलावष्टम्भकंबल्यंरक्तरुग्वातपित्तकम्॥ तृषांदाहंश्वासकासंक्षतयक्ष्मापहंस्मृतम्। तदेवपक्कंबलदंपित्तवातविनाशनम्॥ (नि. र.)

अर्थ-महुवेका वृक्ष—मधुर, शीतल, कफकारक, वीर्य्यवर्द्धक, पुष्टिकारक कषेला, कडवा, तथा पित्त, दाह, व्रण, श्रम, कृमिदोष और वातका नाश करनेवाला है इसका फूल--मधुर, शीतल, धातुवर्द्धक, भारी, स्निग्ध, विकाशी, हृदयको हितकारी तथा दाह, पित्त और वातका नाश करनेवाला है। इसका फल-भारी, शीतल, हृदयको अहितकारी, शुक्रजनक, स्निग्ध, रस और पाकमें मधुर, धातुवर्द्धक, मलस्तम्भक, बलवर्द्धक, रुधिरदोष, वात, पित्त,

तृषा, दाह, श्वास, खाँसी; क्षतक्षय और राजयक्ष्माको दूर करे है। इसका पक्का फल--बलवर्द्धक तथा वात और पित्त नाश करे है।

अस्य त्वग्गुणाः ।

मधूकंरक्तपित्तघ्नंव्रणशोधनरोपणम् ।

अर्थ--महुवेकी छाल--रक्तपित्तनाशक, व्रणशोधक और व्रणरोपण है।

अस्य तैलगुणाः ।

मधूकतैलंमधुरंपिच्छलंतुवरंमतम् ॥
कफपित्तज्वरंचैवदाहपित्तंचनाशयेत् ।

अर्थ- महुवेका तेल--मधुर, पिच्छल, कषेला तथा कफ, पित्तज्वर, दाह और पित्तका नाश करे है।

अस्थ सारगुणाः ।

मधूकसारोनस्येनभूतादिकफवातजित् ॥

अर्थ--महुवेके सारकी नास लेनेसे—भूतादि बाधा, कफ और वात दूर होता है।

जलमधूकगुणाः ।

ज्ञेयोजलमधूकस्तुमधुरोव्रणनाशनः ।
वृष्योवान्तिहरःशीतोबलकारीरसायनः ॥

अर्थ—जलमहुवा—मधुर, व्रणनाशक, वीर्य्यवर्द्धक वमननाशक शीतल, बलवर्द्धक और रसायन है।

विवरण । महुवेके वृक्ष--वनमें और पर्वतोंमें बड़े २ ऊंचे होते हैं पत्ते बदाम अथवा वडके पत्तोंके समान होते हैं। फूलमें शहदके समान गन्ध आती है और इसमेंसे शरीफेके समान बीज निकलते हैं, इसके फलोंमें तेल निकलता है।

पीलुनामानि ।

पीलुःशीतसहःस्रंसीधानीगुडफलस्तथा ।
विरेचनफलःशाखीश्यामः करभवल्लभः ॥

अर्थ--पीलु, शीतसह, स्रंसी, धानी, गुडफल, विरेचनफल, शाखी, श्याम, करभवल्लभ (पीलुक, कलभवल्लभ)

महापीलुनामानि ।

अन्यश्चैवबृहत्पीलुर्महापीलुर्महाफलः ।

राजपीलुर्महावृक्षोमधुपीलुःषडाह्वयः ।

अर्थ-बृहत्पीलु, महापीलु, महाफल, राजपीलु, महावृक्ष, मधुपीलु ।

संस्कृतभाषामें	पीलु, बृहत्पीलु ।
हिन्दीभाषामें	पीलु, बडापीलु ।
बङ्गभाषामें	पीलुगाछ ।
मराठीभाषामें	लघुपीलु, थोरपीलु, किकलेचा वृक्ष ।
गुजरातीभाषामें	खारीजाल्य, मोटीजाल्य ।
कर्णाटकीभाषामें	मिरीयिऊगनि, दोड्डुपीलु ।
तैलिङ्गीभाषामें	गोलुगुचेट्टु, पिन्नवरगोण्ड ।
तामिलीभाषामें	कोकु ।
देशीभाषामें	झल ।
अंग्रेजीभाषामें	मस्टर्डट्री ऑफ स्क्रीपूचर । Mustard tree of scripure
लेटिन्भाषामें	सालवेडोरेरापर्सिका । Salvadora persica सालवेडोराओलिओइडिस । SalvadoraOleoides
फारसीभाषामें	दर्खतेमिस्वाक् ।
अरबीभाषामें	ईराक ।

पीलुगुणाः ।

लघुपीलुस्तुकटुकःकषायोमधुरोम्लकः । सरःस्वादुर्दीपनश्च-तिक्तस्तीक्ष्णश्चभेदकः ॥ रक्तपित्तकरश्चोष्णोविदाहीचार्श-गुल्मनुत् । स्निग्धःकफंवातरक्तंप्लीहानाहरुजंतथा ॥ उदरं-विषबाधांचनाशयेदितिकीर्तितम् ।

अर्थ-लघुपीलु-चरपरा, कषेला, मधुर, खट्टा, सर, स्वादिष्ठ, दीपन, कडवा, तीक्ष्ण, दस्तावर, रक्तपित्तकारक, गरम, दाहजनक, स्निग्ध, तथा बवासीर, गुल्म, कफ, वातरक्त, प्लीहा, आनाह, उदर, और विषके दोषोंको दूर करे है ।

बृहत्पीलुगुणाः ।

बृहत्पीलुस्तुमधुरोवृष्यःपित्तविषापहः ।
आमहादीपनोरुच्यस्तैलंचास्यलघुस्मृतम् ॥
कफवातरुजंहन्तिचेतिपूर्वबुधैःस्मृतम् । (नि. र.)

अर्थ-बृहत्पीलु-मधुर, वीर्य्यवर्द्धक, पित्तनाशक, विषघ्न, आमनाशक, दीपन, रुचिकारी है। इसका तैल-हलका तथा कफ और वातका नाश करनेवाला है।

विवरण। पीलुके वृक्ष दो जातिके होते हैं एक छोटा और एक बडा, छोटे पीलूपर बहुत छोटे २ फल आते हैं और पकनेपर लाल पडजाते हैं, दूसरा बडा पीलू होता है, उसके फूल पीले और फल लाल और काले होते हैं।

अखरोटनामानि।

अखरोटःपार्वतीयःफलस्नेहोगुडाशयः।
कीरेष्टःकर्परालश्चस्वादुमज्जःपृथक्छदः॥

अर्थ-अखरोट, पार्वतीय, फलस्नेह, गुडाशय, कीरेष्ट, कर्पराल, स्वादुमज्ज, पृथक्छद, (रेखाफल, वृत्तफल, मदनाभफल, अक्षोट, अक्षोटक, अखोट, आखोट, आक्षोट, आक्षोड, कन्दराल और आस्फोटक)

संस्कृतभाषामें	अक्षोट।
हिन्दीभाषामें	अखरोट।
वंगभाषामें	आक्रोट।
मराठीभाषामें	अक्रोड।
गुजरातीभाषामें	अखोड।
कर्नाटकीभाषामें	आखोट।
दा०	उव्वकाई
अंग्रेजीभाषामें	वाल्नट्। Walnut बेलगाम वाल्नट्। Belgaum walnut
लैटिन्भाषामें	एल्युराइटीस् ट्रायलोबा। Aleuritcs triloba
	एल्युराइटीस् मोलक्काना। A. moluccana
फारसीभाषामें	चार्तगज।
अरबीभाषामें	जोझअक्रुपम् मगज, जोझगीर्द गांवचार।

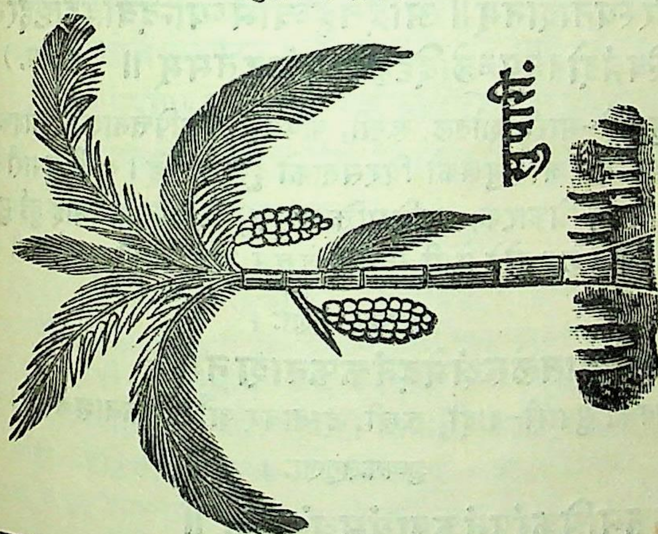
अस्य गुणाः।

अखरोटोमधुरःकिञ्चिदम्लःस्निग्धश्चशीतलः। वीर्य्यवृद्धिकरश्चोष्णोरुचिदःकफपित्तकृत्॥ गुरुःप्रियोबलकरःकफकृन्मलबद्धकृत। वातपित्तक्षयवातंहृद्रोगंरक्तदोषकम्॥ रक्तवातंचदाहंचनाशयेदितिकीर्तितम्। (नि. र.)

अर्थ--अखरोट--मधुर, किञ्चित् खट्टा, स्निग्ध, शीतल, वीर्यवर्द्धक गरम, रुचिदायक, कफपित्तकारक, भारी, प्रिय, बलवर्द्धक, कफकारक, मलवर्द्धक तथा वातपित्त, क्षय वात- हृदयरोग, रुधिरदोष, रक्तवात और दाहको दूर करनेवाला है ।

विवरण । इसके वृक्ष--काबुलकी ओर अधिकतासे होते हैं, फूल--सफेद रंगके छोटे और झुमखोंमें लगते हैं, पत्ते--गोल लम्बे और कुछ २ मोटे होते हैं, फल--गोल और मैनफलके समान होता है, फलके भीतर मींग निकलती है। वह मींग बदामकी मींगके समान मधुर होती है ।

गुवाकनामानि ।



गुवाकःखपुरःपूगीपूगश्चक्रमुकोऽस्यतु ।
फलंपूगीफलंप्रोक्तमुद्वेगश्चतदीरितम् ॥

अर्थ--गुवाक, खपुर, पूगी, पूग, क्रमुक, (घोण्टा, गूवाक, कपीतन, क्रमु, क्रमुकी, पूगवृक्ष, दीर्घपादप, दृढवल्क, वल्कतरु, चिक्कण, अकोट, तन्तुसार, सुरंजन, गोपदल, राजताल, छटाफल, करमट्ट) इसके फलको पूगीफल, उद्वेग और घोण्टाफल कहते हैं ।

संस्कृतभाषामें	पूगीफल ।
हिन्दीभाषामें	सुपारी ।
बंगभाषामें	शुपारी ।
मराठीभाषामें	सुपारी ।
गुजरातीभाषामें	शोपारी ।
कर्णाटकीभाषामें	अडकेमर ।

तैलिङ्गीभाषामें	पाककाया।	
औत्क०	गुया।	
अंग्रेजीभाषामें	बिटलनट् पाम्।	Betelnut Palm
लेटिन्भाषामें	एरिका केटेचु।	Areea cate chu
फारसीभाषामें	पोपिल।	
अरबीभाषामें	फोफिल।	

अस्य गुणाः।

पूगंगुरुहिमंरूक्षंकषायंकफपित्तजित्। मोहनंदीपनंरुच्यमास्यवैरस्यनाशनम्॥ आर्द्रंतद्गुर्वभिष्यन्दिवह्निदृष्टिहरंस्मृतम्। स्विन्नंदोषत्रयच्छेदिदृढमध्यंतदुत्तमम्॥ (भा. प्र.)

अर्थ—सुपारी-भारी, शीतल, रूखी, कषेली, कफपित्तनाशक, मोहकारक, दीपन, रुचिकारक और मुखकी विरसताको दूर करे है। कच्ची सुपारी भारी, अभिष्यन्दी, मन्दाग्निकारक, दृष्टिशक्तिनाशक, औटाकर बनाई हुई सुपारी, जिसका मध्यभाग दृढ होवे ऐसी सुपारी उत्तम और त्रिदोषनाशक है।

पक्वपूगफलगुणाः।

पक्वन्तुवातलंरूक्षंभेदनंकफनाशनम्॥

अर्थ—पक्की सुपारी-बादी, रूखी, दस्तावर और कफनाशक है।

शुष्कफलगुणाः।

शुष्कमग्निकरंपूगंकषायंमधुरंपरम्॥

अर्थ—सूखीसुपारी- अग्निवर्धक, कषेली और मधुर है।

अपक्वपूगफलगुणाः।

गुर्वभिष्यन्दिमधुरंतोयवह्निनाशनम्॥

अर्थ-कच्ची सुपारी-भारी, क्लेदजनक, मधुर और अग्निनाशक है।

पूगस्य बालमध्यादिभेदमाह।

पूगमादौविषंघोरंद्वितीयेभेदिदुर्जरम्। तृतीयादिषुपातव्यंसुधातुल्यंरसायनम्॥

अर्थ-सुपारी-प्रथम अर्थात् कच्ची अवस्थामें विषके समान अपकारी है मध्यम अवस्थामें भेदक और दुर्जर है। और शुष्क अवस्थामें अमृतके समान उपकारी और रसायन है। इस कारण प्रथम और द्वितीय अवस्थाको छोड़कर तृतीय अर्थात् सूखी सुपारी खानी चाहिये।

अपिच ।

पूगीफलंमोहकरंस्वादुरुच्यंकषायकम् । रूक्षंसरंचमधुरंगुरुपथ्यंचदीपनम् ॥ किञ्चित्कटुचसम्प्रोक्तंमुखवैरस्यनाशकम् । वमिंक्लेदंत्रिदोषघ्नंमलंवातंकफंतथा ॥ पित्तदुर्गंधतां चैवनाशयेदितिकीर्तितम् । आर्द्रपूगीफलंप्रोक्तंतुवरंकंठशुद्धिकृत ॥ अभिष्यन्दिसरंचैवगुरुदृष्टचाग्निमांद्यकृत् । रक्तदोषंमुखमलंपित्तंचामंकफंतथा ॥ आध्मानमुदरं चैवनाशयेदितिकीर्त्तितम् । शुष्कंपूगीफलंरुच्यंपाचकंरेचकंतथा ॥ स्निग्धंचवातलंचैवकण्ठरुग्वृत्रिदोषनुत् । पर्णं विना केवलं तुभक्षितंशोफपाण्डुकृत ॥ पक्वंचार्द्रपूगफलंछेदकंचत्रिदोषहृत । शुष्कंपक्वीकृतंतत्तुस्निग्धंवातकरंमतम् ॥ त्रिदोषनाशकंचैवतद्बालंसर्वदोषहृत ।

अर्थ-सुपारी साधारण-मोहकारक, स्वादिष्ठ, रुचिजनक, कषेली, रूखी, सारक, मधुर, भारी, पथ्य, दीपन, किञ्चित् चरपरी, मुखकी विरसताको दूर करनेवाली तथा वमन, क्लेद, त्रिदोष, मल, वात, कफ, पित्त और दुर्गंधको दूर करनेवाली है । कच्ची सुपारी -कषेली, कंठशोधक, अभिष्यन्दि, सारक, भारी, दृष्टिशक्तिनाशक, मंदाग्निकारक तथा रक्तविकार, मुखमल, पित्त, आम, कफ, आध्मान और उदररोगका नाश करेहै । सूखी सुपारी-रुचिकारी, पाचक,रेचक, स्निग्ध, बादी तथा, कंठरोग और त्रिदोषका नाश करनेवाली है । विना पानके सुपारी खानेसे सूजन और पाण्डुरोग उत्पन्न होताहै । पकाई हुई कच्ची सुपारी--छेदक और त्रिदोषनाशक है । पकाईहुई सूखीसुपारी-स्निग्ध, वातकारक और त्रिदोषनाशक है । कोमलसुपारी—सर्वदोषनाशक है ।

आंध्रोद्भवंपूगफलंपाकेतुमधुरंमतम् । किञ्चिदम्लश्वतुवरंकफवातविनाशकम् । मुखजाड्यकरंचैवमुनिभिःपरिकीर्तितम् ॥

अर्थ-आन्ध्रदेशमें उत्पन्न होनेवाली सुपारी-पचनेमें मधुर, किञ्चित् अम्ल, कषेली तथा कफवातनाशक और मुखको जडतादायक है ।

चम्पावतीभवंपूगंपाचनंचाग्निदीपनम् ।
बलप्रदंरसाढ्यञ्चकफनाशकरंमतम् ॥

अर्थ--चम्पापुरकी सुपारी-पाचक, अग्निप्रदीपक, (बलवर्द्धक) रसाढ्य और कफनाशक है ।

रोठसंज्ञंपूगफलंरुच्यंचाग्निप्रदीपनम् ।
कटुकंतुवरंचोष्णंपित्तलंमलरोधकृत् ॥

अर्थ-रोठनामवाली सुपारी-रुचिकारक, अग्निप्रदीपक, चरपरी, कषेली, गरम, पित्तजनक और मलरोधक है ।

वल्गुलग्रामजंपूगंरुच्यंचाग्निप्रदीपनम् ।
पाचनंचत्रिदोषघ्नंमलस्तम्भाममेदहृत् ॥

अर्थ--वल्गुलग्राममें उत्पन्न होनेवाली सुपारी—रुचिकारी, अग्निप्रदीपक, पाचक, त्रिदोषनाशक तथा मलस्तम्भ, आम और मेदनाशक है ।

चन्दापुरभवंपूगंरसेचमधुरंमतम् ।
कटुकंतुवरंरुच्यंस्वादुचाग्निप्रदीपनम् ॥
पाचनंमुनिभिःप्रोक्तंकफनाशकरंमतम् ।

अर्थ-चंदापुरीसुपारी-रसमें मधुर, चरपरी, कषेली, रुचिकारी, स्वादु, अग्निप्रदीपक, पाचक और कफनाशक है ।

गुहागरोद्भवंपूगंमधुरंतुवरंलघु ।
कटुकंद्रावकंचैवपाचकंविशदंमतम् ॥
मलस्तम्भंतथाध्मानवातंचैवविनाशयेत् ।

अर्थ -गुहागरीसुपारी--मधुर कषेली, हलकी, चरपरी, द्रावक, पाचक, विशद तथा मलस्तम्भ और आध्मान, वातनाशक है ।

नैलवद्ग्रामसंभूतंक्रमुकंकंठशुद्धिकृत ।
पाचनंमधुरंरुच्यंसरंकान्तिकरंलघु ॥
त्रिदोषनाशकंचैवरसाम्लंचनिगद्यते ।

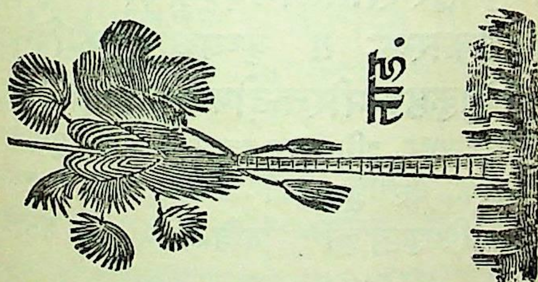
अर्थ-नैलवतग्राममें उत्पन्न होनेवाली सुपारी--कंठशोधक, पाचक, मधुर, रुचिकारक, सारक, कान्तिकारक, हलकी, त्रिदोषनाशक और रसाम्ल

पूगवृक्षस्यनिर्य्यासोमोहनः शीतलोगुरुः ।
पाकेचोष्णःपित्तलश्चपटुश्चाम्लःप्रकीर्त्तितः ॥
वातनाशकरश्चैवमुनिभिःपरिकीर्तितः ।

अर्थ-सुपारीके पेडका गोंद- मोहजनक, शीतल, भारी, पाकके समय गरम, पित्तकारक, चरपरा, खट्टा और वातनाशक है ।

विवरण । सुपारीके वृक्ष--ताड और नारियलकी जातिके लम्बे २ बागोंमें बहुत होते हैं, इसका वृक्ष खम्भके समान सीधा चला जाता है, इसके पत्ते-बड़े २ नारियलकेसे होते हैं, इसके ऊपर बड़े २ बेरके शिरके सदृश फल कुछ लम्बाई लिये गोल २ आते हैं, उसको छीलनेमें भीतरसे सुपारी निकलती है, सुपारीकी अनेक जाति हैं, जिहाजी, श्रीवर्धनी, मानगन्धी और अनेक प्रकारकी होती हैं ।

तालनामानि ।



तालस्तुलेख्यपत्रःस्यात्तृणराजोमहोन्नतः ॥

अर्थ-ताल लेख्यपत्र, तृणराज, महोन्नत, (तल, भूमिपिशाच, दीर्घतरु, वृक्षश्रेष्ठ, द्रुमेश्वर, तालद्रुम, पत्री, दीर्घस्कन्ध, ध्वजद्रुम, तृणराज, मधुरस मदाढ्य, दीर्घपादप, चिरायु, तरुराज, दीर्घपत्र, गुच्छपत्र, आसवद्रु, करपत्रवान, दीर्घद्रु, तन्तुनिर्य्यास, तन्तुगर्भ, शतपर्वा)

श्रीतालनामानि ।

श्रीतालोमधुतालश्चलक्ष्मीतालोमृदुच्छदः ॥

अर्थ--श्रीताल, मधुताल, लक्ष्मीताल, मृदुच्छद (विशालपत्र, लेखाई, पत्रीलेख्यदल, शिरालपत्रक, याम्योद्भूत)

हिन्तालनामानि ।

हिन्तालःस्थूलतालश्चवल्कपत्रोबृहद्दलः ॥

अर्थ--हिन्ताल, स्थूलताल, वल्कपत्र, बृहद्दल (पूगरोट, स्थिरांघ्रिक

हिमहासक, हिन्ताल, स्थिरपत्र, शिरापत्र, अस्थिरांघ्रिक, गर्भस्रावी, ... ताल, भीषण, बहुकण्टक, अम्लसार, बृहत्ताल)

संस्कृतभाषामें	ताल, श्रीताल, हिन्ताल।
हिन्दीभाषामें	ताड, श्रीताड, हिन्ताम।
वङ्गभाषामें	ताल, श्रीताल, हेंताल।
मराठीभाषामें	ताड, काँटेताड, काळाताड।
गुजरातीभाषामें	ताड, श्रीताल, हिन्ताल।
तामिलीभाषामें	पनम।
अंग्रेजीभाषामें	पालमाईपाम। Palmyra palm
लैटिन्भाषामें	बोरेसस फ्लेबेलिफोर्मिस BaralsuseFlabellefor...
फारसीभाषामें	ताल।
अरबीभाषामें	तार।

तालगुणाः।

तालवृक्षस्तुमधुरःशीतलोमदकृद्गुरुः। पुष्टिकृच्छ्... कृन्मेदकृद्बलकारकः॥ वृष्यश्चसारकःपित्तदाहशोषवि... श्रमान्। विषकुष्ठकृमीरक्तदोषवातांश्चनाशयेत॥ (नि. र.)

अर्थ-तालवृक्ष- मधुर, शीतल, मदकारक, भारी. पुष्टिकारक, ... कफकारक, मेदकारक, वलवर्द्धक, वीर्य्यजनक, सारक, तथा, पित्त, दाह, शोष, विष, श्रम, विषकुष्ठ, कृमि, रुधिरदोष और वातका नाश ... वाला है।

अस्य फलगुणाः।

वातहाबृंहणोबल्यः क्रिमिहाकुष्ठनाशनः।
रक्तपित्तहरःस्वादुस्तालः सप्तगुणान्वितः॥ (रा. नि.)

अर्थ-ताडका फल-पुष्टिकारक, बलवर्द्धक, क्रिमिनाशक, कुष्ठ... रक्तपित्तहारक और स्वादुरसवाला है।

अस्यामफलगुणाः।

आममस्यफलंप्रोक्तंस्निग्धंस्वादुगुरुस्मृतम्। मलाव... कंबल्यंशीतलंधातुवर्द्धकम्॥ वृष्यंतृप्तिकरंमांसकर्... त्तिकरंस्मृतम्। वातंश्वासंरक्तपित्तंव्रणंदाहंक्षतंतथा॥ ... त्क्षयंरक्तदोषंनाशयेदितिकीर्तितम्॥

अर्थ-ताडका कच्चा फल-स्निग्ध, स्वादिष्ट, भारी, मलरोधक, बलकारक, शीतल, धातुवर्द्धक, वीर्यजनक, तृप्तिकारक मांसवर्द्धक, कफकारक तथ वात, श्वास, रक्तपित्त, व्रण, दाह, क्षत, पित्त, क्षय और रुधिरके दोषोंको दूर करनेवाला है।

अस्यपक्वफलगुणाः ।

पक्वंतालफलंपित्तरक्तश्लेष्माविवर्द्धनम् ।
दुर्जरंबहुमूत्रंचतन्द्राभिष्यन्दशुक्रदम् ॥

अर्थ-ताडका पक्का फल-रक्तपित्तकारक, कफकारक, कठिनतासे पचनेवाला, बहुमूत्रजनक, तन्द्राको उत्पन्न करनेवाला, अभिष्यन्दि और शुक्रदायक है।

अस्यार्द्रफलबीजगुणाः ।

आर्द्रतुफलबीजंचमूत्रलंशीतलंस्मृतम् ।
रसेपाकेचमधुरंकफकृद्वातपित्तहृत् ॥

अर्थ-ताडके कच्चे फलके बीज-मूत्रजनक, शीतल, रस और पाकमें मधुर, कफकारक और वातपित्तहारक है।

अस्यफलमज्जा गुणाः ।

तालमज्जातुतरुणाकिंचिन्मदकरीलघुः ।
श्लेष्मलावातपित्तघ्नासस्नेहामधुरासरा ॥ (भा. प्र.)

अर्थ-तरुण ताडकी मींग-किञ्चित् मदकारक, हलकी, कफकारक वातपित्तनाशक, स्नेहयुक्त, मधुर और सारक है।

तालफलोद्भवजलगुणाः ।

तालाम्बुपित्तजिच्छुक्रस्तन्यवृद्धिकरंगुरु ॥ (रा० व०)

अर्थ-ताडके फलका जल-पित्तनाशक, शुक्रवर्द्धक, भारी और स्तनोंमें दूधको उत्पन्न करनेवाला है।

तालमण्डिकागुणाः ।

श्लेष्मदोषकरीवृष्यावातलाश्लेष्मवर्द्धिनी ।
कासहृल्लासविध्वंसकरणीतालमण्डिका ॥ (आ. सं.)

अर्थ-ताडी-कफकारक, वीर्य्यवर्द्धक वादी, श्लेष्मवर्द्धक, कासनाशक और उबकाई को दूर करनेवाली है।

अन्यच्च ।

तालजंतरुणंतोयमतीवमदकृन्मतम् ।
अम्लीभूतंतदातुस्यात्पित्तकृद्वातदोषहृत् ॥

अर्थ–नवीन ताडी–अत्यन्त मदकारक है और खट्टी होनेपर पित्तकारक और वातहारक है ।

तालप्रलम्बगुणाः ।

तथातालप्रलम्बश्चरूक्षंक्षतरुजापहम् ।

अर्थ--तालप्रलम्ब--रूक्ष और क्षतरोगनाशक है।

तालपञ्जरगुणाः ।

तालवृक्षस्यशीर्षस्थःपंजरोधातुवर्द्धनः ।
वातपित्तहरश्चैववास्तिशुद्धिकरःपरः ॥

अर्थ--ताडके मस्तकका पञ्जर--धातुवर्द्धक, वातपित्तनाशक और वस्तिशोधक है।

तालवृन्तवायुगुणाः ।

तालवृन्तभवोवातस्त्रिदोषशमनोलघुः । राजवल्लभ

अर्थ--ताडके पंखेकी पवन--त्रिदोषनाशक और हलकी है।

तालमूलगुणाः।

तन्मूलंतुभवेत्स्वादुपाकेचरक्तपित्तहम् ।

अर्थ--ताडकी जड--स्वादिष्ठ, पचनेमें स्वादिष्ठ और रक्तपित्तनाशक है।

श्रीतालगुणाः ।

श्रीतालोमधुरोत्यंतमीषच्चैवकषायकः ।
पित्तजित्कफकारीचवातमीषत्प्रकोपयेत ॥

अर्थ--श्रीताल- अत्यन्त मधुर, किञ्चित्कषेला, पित्तनाशक कफकारक और कुछ २ वातको कुपित करनेवाला है ।

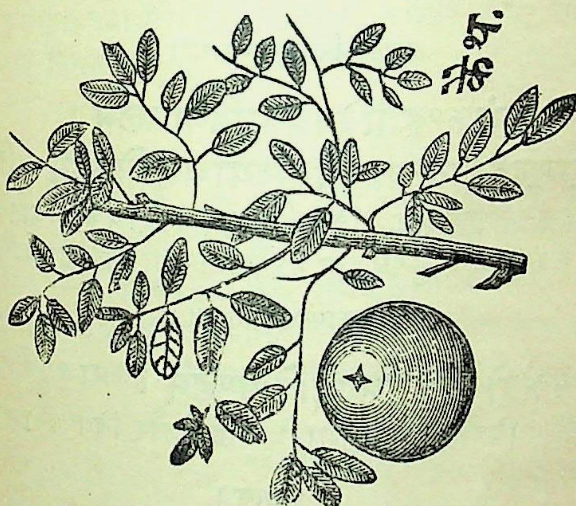
विवरण--ताडके बडे २ वृक्ष होते हैं, पत्ते बडे बडे लम्बे खजूरकी भांति के समान कटीले चौडे चार चार फूटके होते हैं, इनके पंखे आदि कितने ही पदार्थ बनाये जाते हैं । पहिले यहां ताडके पत्तोंपर समस्त ग्रन्थ लिखे जाते थे ताडकी नर और नारी यह दो जाति हैं नर जातिके वृक्षमें फूल नहीं आते और नारीके वृक्षमें फल लगते हैं । नरमें शाखा नहीं होती । वृक्षके रसको ताडी कहते हैं ।

हिन्तालगुणाः ।

हिन्तालोमधुराम्लश्चकफकृत्पित्तदाहनुत् ।
श्रमतृष्णापहारीचशिशिरोवातदोषनुत् । ॥(रा. नि.)

अर्थ-हिन्ताल-मधुर, अम्ल, कफकारी, पित्तनाशक, दाहनाशक, शीतल, वातविकारविनाशक तथा श्रम और तृषाको दूर करे है।

कपित्थनामानि ।



कपित्थस्तुदधित्थःस्यात्तथापुष्पफलःस्मृतः ।
कपिप्रियोदधिफलस्तथादन्तशठोऽपिच ॥

अर्थ-कपित्थ दधित्थ, पुष्पफल, कपिप्रिय, दधिफल, दन्तशठ (ग्राही, मन्मथ, पुष्पफल, कपित्थ, कवित्थ, देवपादाढ्य, मालूर, मङ्गल्य नीलमल्लिका, ग्राहिफल, चिरपाकी, ग्रन्थिफल, कुचफल कपीष्ट, गन्धफल, दन्तफल, करभवल्लभ, काठिन्यफल, करञ्जफलक, अक्षसस्य)

संस्कृतभाषामें	कपित्थ ।
हिन्दीभाषामें	कैथ ।
वंगभाषामें	कयेद्वाछ, कत्वेल ।
मराठीभाषामें	कँवठ, कविठ ।
गुजरातीभाषामें	कोंट, काट, कोठवडी ।
कर्णाटकीभाषामें	वेललु ।
तैलङ्गीभाषामें	एलांगाकाया ।

अंग्रेजीभाषामें वुडएपल एलिफंटएपल। Wood apple Elephant apple
लैटिन्भाषामें फेरोनिया एलिफेंटिनम् Feronia Elephantnum

कपित्थफलसाधारणगुणाः।

कपित्थमम्लंमधुरंकषायंविशदंगुरु।
कासातिसारहृद्रोगच्छर्दिकफरुजापहम्॥ (आ. सं.)

अर्थ-कैथ-खट्टा, मधुर, कषेला, विशद, भारी तथा खाँसी, अतिसार, हृदयरोग, वमन और कफरोगको दूर करे है।

अपक्वकपित्थफलगुणाः।

कपित्थमामंकण्डूघ्नंविषघ्नंग्राहिवातलम्।
मधुराम्लकषायत्वात्सौगन्ध्याच्चरुचिप्रदम्। (रा.)

अर्थ-कच्चा कैथ-कण्डूनाशक, विषनाशक, मलरोधक, वातवर्द्धक। तथा मधुर, अम्ल, कषाय और सुगंधयुक्त होनेके कारण रुचिकारक है।

पक्वकपित्थफलगुणाः।

तदेवपक्वंदोषघ्नंगुरुग्राहिविषापहम्। (राज)

अर्थ-पका कैथ-त्रिदोषनाशक, भारी, ग्राही और विष विनाशक है।

अन्यच्च।

कपित्थंमधुरंचाम्लंतुवरंग्राहिशीतलम्। वृष्यंतिक्तंपित्त-
तव्रणनाशकरंमतम्॥ फलमामंकपित्थस्यग्राहिचोष्णंच-
क्षकम्। लघ्वम्लंतुवरंचैवलेखनंवातपित्तकृत्॥ जिह्वा-
ड्यकरंरुच्यंविषस्वरकफप्रणुत्। तत्पक्वंरुचिदंचाम्लंक-
यंग्राहिमाधुरम्॥ कंठशुद्धिकरंशीतंगुरुवृष्यंचदुर्जरम्।
श्वासंक्षयंरक्तरुजंवान्तिंवातंश्रमंतथा॥ हिध्मानंचविशं-
निंतृषांदोषत्रयंतथा। हिक्कांकासंनाशयतिबीजंचहृद्य-
पहम्॥ शीर्षव्यथांविषंचैवविसर्पंचैवनाशयेत्। बीजतै-
श्चतुवरंग्राहकंरुक्षंदुपित्तनुत्॥ आखोर्विषंकफश्चैवहि-
वान्तिंचनाशयेत्। विषनाशकरंपुष्पंपर्णंवान्त्यतिसारनुत्
हिक्कांनाशयतीत्येवंप्रोक्तंपूर्वैर्महर्षिभिः। (नि. र.)

अर्थ-कपित्थ-मधुर, खट्टा, कषेला, ग्राही, शीतल, वीर्यवर्द्धक, कडवा तथा पित्त और वातका नाश करे है। इसका कच्चा फल--ग्राही, गरम, रूखा, हलका, खट्टा, कषेला, लेखन तथा वात, पित्त और जिह्वाको जडता कारक है, रुचिजनक तथा विष, स्वर और कफका नाश करे है, इसका पक्का फल-रुचिकारक खट्टा, कषेला ग्राही, मधुर, कंठशोधक, शीतल, भारी, वीर्यवर्द्धक, और दुर्जर है। तथा श्वास, क्षय, रक्तदोष, वमन, वायु, श्रम, विष, ग्लानि, तृषा, त्रिदोष, हुचकी और खाँसीको दूर करे है, इसके बीज हृदयरोग, मस्तकशूल, विष, विसर्प इनको दूर करे हैं, इसके बीजोंका तेल--कषेला, ग्राही, स्वादु, पित्तनाशक तथा मूँसेका विष, कफ, हुचकी और वमनको दूर करे है, इसके फूल--विषनाशक हैं। इसके पत्ते--वमन, अतिसार और हुचकीको दूर करे हैं।

विवरण। इसके वृक्ष सर्व हिन्दोस्थानमें पाये जाते हैं, फल बेलसे छोटे और सफेद रङ्गके लगते हैं, पत्ते छोटे और चिकने होते हैं, फूल छोटे और सफेद रङ्गके आते हैं, वर्षाऋतुमें इसकी कली खिलती है, फिर क्रमसे फलके आकार परणवती है, शीतऋतुमें फल पकजाते हैं, कैथमें एक आश्चर्यकारक गुण है कि, कोई हाथी कैथको खालेवे उस हाथीके पेटमें कैथका सार भाग अर्थात् गूदा रह जायगा और गूदेरहित अखण्डित कैथ मलके साथ निकल आवेगा।

कर्मरङ्गनामानि।



कारुकःकर्म्मरंगःस्याच्छिरालस्तुशुकप्रियः।

अर्थ-कारुक, कर्म्मरंग, शिराल, शुकप्रिय (बृहद्दल, रुजाकर, कर्म्मार, कर्म्मरक, पीतफल, कर्म्मर मुद्गर, धाराफल, कर्म्मारक)

संस्कृतभाषामें	कर्म्मरङ्ग ।
हिन्दीभाषामें	कमरख ।
वंगभाषामें	कामराङ्गा ।
मराठीभाषामें	कर्मरें ।
गुजरातीभाषामें	कमरकखाटां मीठांवेछे ।
अंग्रेजीभाषामें	करंबोला । Carambola
लैटिन्भाषामें	एवरहोया करंबोला । Averrhoa Carambola

अस्य गुणाः ।

कर्मरङ्गन्तुतीक्ष्णोष्णंकटुपाकेम्लपित्तकृत ॥ (रा. व.)

अर्थ--कमरख--तीक्ष्ण, गरम, पचनेमें चरपरी, खट्टी और पित्तकारक है।

अन्यच्च ।

कर्म्मारस्यफलंचामंग्राह्यम्लंवातनाशकम् ।
उष्णंपित्तकरंचैवतत्पक्कंमधुरंमतम ॥
अम्लश्चबलपुष्टीनांरुचेश्चैवतुवर्द्धकम् । (नि. र.)

अर्थ–कच्ची कमरख-मलरोधक, खट्टी, वातनाशक, गरम और पित्तकारक है, पक्की कमरख मधुर, खट्टी तथा बल, पुष्टि और रुचिवर्द्धक है।

विवरण । कमरखका वृक्ष अत्यन्त सुन्दर होता है, पत्ते हरफारेवडीके समान होते हैं, फल चार पांच धारवाले होते हैं, फल कच्ची अवस्थामें हरे और पकनेपर पीले पड जाते हैं।

लवलीफलनामानि ।

हरफारेवडी.



सुगंधमूलालवलीपाण्डुःकोमलवल्कला

अर्थ-सुगंधमूला, लवली, पाण्डु, कोमलवल्कला (घना, स्निग्धा, स्कन्धफला)

संस्कृतभाषामें	लवली ।

हिन्दीभाषामें हरफारेवडी ।
बंगभाषामें नोयाड, नोयाल, लोओयाड ।
मराठीभाषामें काथआंवळे, रायआंवळे, रानआंवळे ।
गुजरातीभाषामें खाटीआंवली ।
लैटिन्भाषामें साईकाडिस्टिका । Ciceodisticha

अस्य गुणाः ।

लवलीफलमस्रार्शः कफपित्तहरंगुरु ।
विशदंरोचनंरूक्षंस्वाद्वम्लन्तुवरंरसे ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-हरफारेवडी--रुधिरविकार, बवासीर और कफपित्तनाशक है । भारी, विशद, रोचन, रूखी, स्वादिष्ठ, खट्टी और कषेली है ।

अन्यच्च ।

कषायंकफपित्तघ्नंकिञ्चित्तिक्तंरुचिप्रदम् ।
हृद्यंसुगन्धिविशदंलवलीफलमुच्यते ॥ (सु० सं०)

अर्थ-हरफारेवडी--कफपित्तनाशक किंचित्कडवी, रुचिदायक, हृदयको हितकारी, सुगंधि और विशद है ।

अपिच ।

रायामलंतुतुवरंरुचिप्रदंप्रियंचाम्लम् । तिक्तंरुक्षंविशदंस्वादुसुगंधिवातलंचोक्तम् ॥ स्वादिष्ठंलघुचोक्तंकफपित्तहरंचवातपित्तघ्नम् । मूत्राश्मर्य्यर्शोघ्नमृषिभिश्चोक्तंचपूर्वजैर्ग्रन्थे ॥
(नि० र.)

अर्थ-हरफारेवडी--कषेली, रुचिकारक, प्रिय, खट्टी, कडवी, रूखी, विशद, स्वादु, सुगंधित, वातवर्द्धक, स्वादिष्ठ, हलकी तथा कफ, पित्त, वातपित्त, मूत्राश्मरी और अर्शरोगनाशक है ।

विवरण । हरफारेवडीका वृक्ष अत्यन्त सुंदर होता है, पत्ते कसोंदीके समान होतेहैं । फल गूलरके सदृश शाखाओंमेंसे निकलते हैं ।

प्राचीनामलकनामानि ।

प्राचीनामलकंलोकेपानीयामलकंस्मृतम् ।

अर्थ-प्राचीन आमलकको-लोकमें पानीयामलक कहते हैं (वारीबदर)

संस्कृतभाषामें प्राचीनामलक ।

हिन्दीभाषामें पानीआमला ।
वङ्गभाषामें पानीआमला ।
मराठीभाषामें पाणआंवळे ।
गुजरातीभाषामें पाणिआंवला ।
अंग्रेजीभाषामें फ्लाकुर्श्यां काटाफ्राक्टा । Flacourtia Cataphracta
फ्लारोमोचिआई । F. Romontchii

अस्य गुणाः ।

प्राचीनामलकंदोषत्रयजिज्ज्वरघातिच ॥ (भा.प्र.)
अर्थ--पानीआमला–त्रिदोषनाशक और ज्वरको दूर करे है ।

अपिच ।

पानीयामलकंग्राहिस्वाद्वम्लंमुखशोधनम् । (रा. नि.)
अर्थ--पानीआमला--मलरोधक, स्वादु, अम्ल और मुखशोधक है।

अन्यच्च ।

"प्राचीनामलकंरुच्यंस्निग्धंगुरुगरापहम् ।
वातघ्नंपित्तकफहृदुष्णंगुरुसमीरजित् " ॥(म० पा०)
अर्थ--पानीआमला- रुचिकारी, स्निग्ध, भारी, विषनाशक, वात, पित्त और कफको दूर करनेवाला, भारी और वातहारीहै ।

अपिच ।

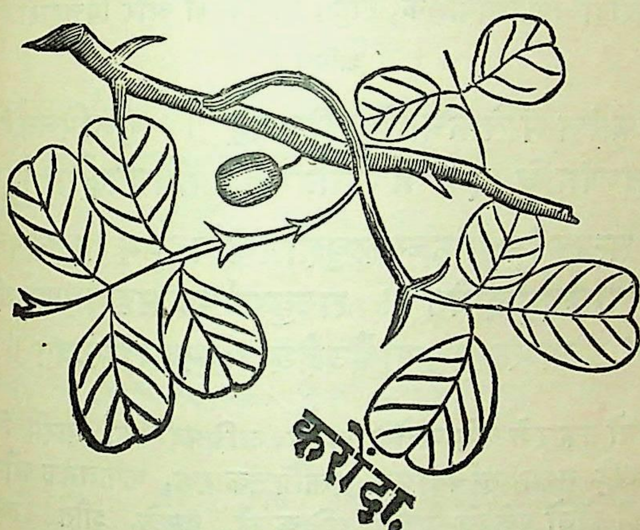
पर्णामलकंमधुरंरुचिप्रदंगुरुचोष्णम् ।
विषत्रिदोषशमनंकफतृष्णावातहंप्रोक्तम् ॥
सुतरांतदेवपक्वंकफपित्तकरंविशेषतश्चोक्तम् ॥ (नि. र.)
अर्थ--पानीआमला-मधुर, रुचिदायक, भारी, गरम, त्रिदोषनाशक तथा कफ, तृषा और वातका नाश करनेवाला है । वही पकाहुवा विशेष करके कफ और पित्तकारक है ।

विवरण--पानीआमलेके वृक्ष जलाशयके समीप होते हैं, इसमें कांटे होते हैं पत्ते लम्बे और फल लाल लाल बेरके समान कठिया होते हैं।

करमर्दकनामानि ।

करमर्दोवनेक्षुद्राकराम्लःकरमर्दकः ।
तस्माल्लघुफलायातुसाज्ञेयाकरमर्दिका ॥

अर्थ-करमर्द, वनेक्षुद्रा, कराम्ल, करमर्दक, (कृष्णपाकफल, अविघ्न, सुषेण, करामर्द, कृष्णपाक, पाकफल, कृष्णफल, पाककृष्ण, फल, कृष्णफल-पाक, पाककृष्ण, फलकृष्ण, वनालय, वनालक, कराम्बुक, कणचूक, बोल, वरा, करमर्दी, कराम्लक, पाणिमर्द, कण्टकी, अविघ्न सुपुष्प, दृढकण्टक, जातिपुष्प, क्षीरफल, डिम्-डिम, गुच्छी क्षीरी, बहुदल) इससे छोटीको करमर्दिका कहते हैं।



संस्कृतभाषामें	करमर्दक।
हिन्दीभाषामें	करौंदा, करौंदी।
वंगभाषामें	करम्चा।
मराठीभाषामें	गोडाकरवंदा, कडूकरवंदा।
गुजरातीभाषामें	करमदी, करमदां।
कर्णाटकीभाषामें	करिजिगे।
तैलिङ्गीभाषामें	वाका, पारिकचेट्टु।
अंग्रेजीभाषामें	जास्मिन्फ्लावर्डकेरिसा। Jasmine flowered carisa
लैटिन्भाषामें	केरिसा कोरंदास Cerissa Corandas

अस्य गुणाः।

करमर्दद्वयंत्वाममम्लंगुरुतृषाहरम्।
उष्णंरुचिकरंप्रोक्तंरक्तपित्तकफप्रदम्॥
तत्पक्वंमधुरंरुच्यंलघुपित्तसमीरजित् (भा. प्र.)

अर्थ-दोनों प्रकारके करोंदे कच्चे-खट्टे, भारी, तृषानाशक, गरम, रुचिकारक तथा रक्तपित्त और कफकारक हैं। वही पक्के, मधुर, रुचिकारी, हलके तथा पित्त और वातको जीते हैं।

अन्यच्च ।

करमर्द्दपिपासाघ्नमम्लंरुच्यंचपित्तकृत् । (रा. व.)

अर्थ--करोंदा--पिपासानाशक, खट्टा, रुचिकारी और पित्तहारी है।

अपिच ।

करमर्दफलंचामंतिक्तंचाग्निप्रदीपकम् । गुरुपित्तकरंग्राहि-चाम्लमुष्णंरुचिप्रदम ॥ रक्तपित्तकफंचैववर्द्धयेत्तृड्विनाश-कम् ॥ तत्पक्वंमधुरंरुच्यंलघुशीतंचपित्तहम् । रक्तपित्तंत्रिदोषञ्चविषंवातंचनाशयेत् । तच्छुष्कंपक्वसदृशंगुणज्ञेयंविचक्षणैः ॥ अत्यम्लस्यगुणाश्चैवज्ञेयाआमकराम्लवत् ॥

अर्थ--दोनों प्रकारके कच्चे करोंदे कडवे, अग्निप्रदीपक, भारी, पित्तकारी, मलरोधक, खट्टे, गरम, रुचिदायक, रक्तपित्तकारक, कफजनक और तृषानाशक हैं। वही दोनों पकेहुये--मधुर, रुचिकारी, हलके, शीतल तथा पित्त, रक्तपित्त, त्रिदोष, विष और वातविनाशक हैं। सूखे करोंदेके गुण पक्के करोंदेके समान जानने और अम्लकरोंदेके गुण कच्चेके समान जानने।

अन्यच्च ।

करमर्दफलंचार्द्रमम्लंपित्तकफप्रदम् ।
भेदनंचोष्णवीर्य्यंचवातप्रशमनंगुरु ॥
पक्वंशुक्लपपित्तेचतन्मूलंकृमितुत्सरम् । (शो. नि.)

अर्थ--कच्चाकरोंदा-- खट्टा, पित्तजनक, कफकारक, भेदक उष्णवीर्य्य, वातनिवारक और भारी है। पक्का करोंदा--पित्तनाशक है। इसकी जड कृमिको हरनेवाली और सारक है

विवरण- करोंदेके वृक्ष बागोंमें बहुत हैं, फूल सफेद और सुगन्धित जुहीके समान आते हैं, फलोंके गुच्छे बेरोंके समान लगते हैं, परन्तु वे दो जातिके होते हैं, एक सफेद नोकोंपर लालीलिये अत्यन्त मनोहर होते हैं, दूसरे कच्चे हरे आधेलाल और पकनेपर काले पडजाते हैं।

बदरीनामानि ।

**बदरीदृढबीजाचकण्टकीसुफलापिच ।
नखीव्याघ्रनखीघोण्टाकोलीगुडफलापिच ।**

अर्थ-बदरी, दृढ़बीजा, कण्टकी, सुफला, नखी, व्याघ्रनखी, घोण्टा, (कोली, गुडफला, कोला, कोली, कोलि, कुवली)

बदरीफलनामानि ।

**फलंतुबदरंकोलंसौवीरंफेनिलंकुहम् ।
कर्कन्धुःकोलिकुवलंपिच्छलाबदरीच्छदा ।**

अर्थ-बदर, कोल, सौवीर, फेनिल, कुह, कर्कन्धु, कोलि, कुवल, पिच्छला, बदरीच्छदा, (सौवीरक, बालेष्ट, फलशैशिर, वृत्तफल, घोण्टा गोपघोण्टा, हस्तिकोलि, गोपघोण्टी, शृगालकोलि, वादिर, गूढफल, दृढबीज, वृत्तफल, कण्टकी, वक्रकण्टक, सुरस, सुफल, स्वच्छ, कर्कन्धू, बदर, कोली, कोला, कुवली, स्वादुफला; गृध्रनखी, कुवल (:), पिच्छिल, स्वादुफल, कुलक, कोकिल, अजामिया, उभयकण्टक)

संस्कृतभाषामें	बदरी, बदर, कर्कन्धू, कोल, सौवीर, हस्तिकोलि ।
हिन्दीभाषामें	बेरीका पेड, बेर, छोटेबेर, पैमदी, बड़े बेर ।
वंगभाषामें	कुलगाछ, कुलफल, वडकुलगाछ, वरुइ, शियाकुल ।
मराठीभाषामें	बोरीचें झाड, बोर, रायबोर, लघुबोर ।
गुजरातीभाषामें	मोटीबोरडी, नानीबोडी ।
कर्णाटकीभाषामें	येरनु ।
तैलिङ्गीभाषामें	रेगुचेट्टु, रेंग ।
औत्क०	कुडि ।
तामिलीभाषामें	रेयन्ति ।
अंग्रेजीभाषामें	जुजब । Jujob
लैटिन्भाषामें	झिझिफस् जुजुबा । Zizyphusfujba
फारसीभाषामें	कुनार ।
अरवीभाषामें	सीदरनवंक ।

बदरलक्षणानिगुणाश्च ।

पच्यमानंसुमधुरंसौवीरंबदरंमहत् । सौवीरंबदरंशीतंभेदनं गुरुशुक्रलम् ॥ बृंहणंपित्तदाहास्रक्षयतृष्णानिवारणम् ।सौ-

वीराल्लघुसंपक्कंमधुरंकोलमुच्यते ॥ कोलन्तुबदरंदाहिरुच्यमुष्णञ्चवातहृत् । कफपित्तकरञ्चापिगुरुसारकमीरितम् ॥ कर्कन्धूःक्षुद्रबदरंकथितंपूर्वसूरिभिः । अम्लंस्यात्क्षुद्रबदरंकषायंमधुरंमनाक् ॥ स्निग्धंगुरुचतिक्तंचवातपित्तापहंस्मृतम्।शुष्कंभेद्यग्निकृत्सर्वंलघुतृष्णाक्लमास्रजित्॥ (भा. प्र.)

अर्थ-बडा और पककर मीठा पड़गयाहो, ऐसे बेरको सौवीर कहते हैं। सौवीरबेर-शीतल, भेदक, भारी, शुक्रजनक, पुष्टिकारक तथा पित्त, दाह, रुधिरविकार, क्षय और तृषा निवारक है। सौवीरसे छोटे अर्थात् सामान्य बेर और पककर मीठे होगये हों ऐसे बेरोंको कोल कहते हैं। कोलबेर-दाह जनक, रुचिकारक, गरम, वातनाशक, कफपित्तकारक, भारी, और सारक हैं। छोटे बेरोंको कर्कन्धू; कहते हैं। कर्कन्धू-खट्टे, कषैले, मधुर, स्निग्ध, भारी, कडवे और वातपित्तनाशक हैं। सर्वप्रकारके सूखेहुए बेर-भेदक, अग्निजनक, हलके तथा तृषा, क्लम और रुधिरदोषोंको दूर करते हैं।

अन्यच्च ।

कर्कन्धूःकोलबदरमामंपित्तकफावहम् । पक्कंपित्तानिलहंस्निग्धंसमधुरंसरम् ॥ तच्छुष्कंकफवातघ्नंनचपित्तेविरुध्यते । पुराणंतृट्प्रशमनंश्रमघ्नंदीपनंलघु । (राजवल्लभ)

अर्थ-छोटे; बडे और सामान्य कच्चे बेर-पित्त और कफवर्द्धक हैं और पक्के--पित्तवातनाशक, स्निग्ध, मधुर और सारक ह, वही सूखे-कफ और वातनाशक हैं और पित्तवर्द्धक नहीं हैं और वही पुराने तृषा-और श्रमनाशक हैं, अग्निदीपक और लघुपाकी हैं।

अन्यच्च ।

अपक्कंश्लेष्माणंविरचयतिवातंवितनुते ततोमध्यावस्थं किंचिदिमपिमधुराम्लंपवनहृत् । सुपक्कंपित्तघ्नंश्रममदवमिच्छेदि बलदं सरंतृष्णाजित्तद्गृहबदरमश्नन्तिधनिनः ॥

अर्थ-अपक्क अर्थात् कच्चे बेर-कफकारक और वातनिवारक हैं। मध्य अवस्थाके बेर-किञ्चित् मधुर, अम्ल और वातनाशक हैं। पक्के बेर-पित्त नाशक, श्रमहारक, वमननिवारक, बलवर्द्धक, सारक और तृषानाशक हैं।

अपिच ।

बदरीशीतलारूक्षातिक्तापित्तकफापहा । फलमस्यास्तुमधुरंतुवरंचाम्लमीरितम् ॥ तच्चपक्कंतुमधुरमम्लमुष्णकफप्रदम् । ग्राहकंलघुरुच्यश्चवाय्वतीसारशोषहृत् ॥ रक्तश्रमहृत्प्रोक्तंपंडितैश्वरकादिभिः ॥ (नि. र.)

अर्थ-बेरीका वृक्ष- शीतल, रूक्ष, कडवा तथा पित्त और कफनाशक है। इसका कच्चाफल-मधुर, कषेला और खट्टा है। इसका पक्का फल मधुर, खट्टा, गरम, कफकारक, मलरोधक, हलका रुचिकारी तथा वात, अतिसार, शोष, रुधिरदोष और श्रमको हरनेवाला है ।

हस्तिकोलिगुणाः ।

गजकोलंदुर्जरंस्याच्छीतंस्वादुगुरुस्मृतम् ।
ग्राहकंलेखनंस्निग्धंपौष्टिकमलबद्धकृत् ॥
आध्मानकारकंचैवपित्तवातविनाशनम् ॥ (रा. नि.)

अर्थ- हस्तिकोलिबेर -दुर्जर, शीतल, स्वादु, भारी, ग्राही, लेखन, स्निग्ध पुष्टिकारक, मलवर्द्धक, आध्मानकारक तथा पित्त और वातनाशक है ।

राजबदरगुणाः ।

राजबदरःसुमधुरःशिशिरोदाहार्तिपित्तबातहरः ।
वृष्यश्चवीर्य्यवृद्धिंकुरुतेशोषश्रमंहरते ।

अर्थ-राजबेर-मधुर, शीतल, दाहनाशक, पित्तनाशक, वातनिवारक, वीर्यवर्द्धक, वृष्य तथा शोष और श्रमनाशक है ।

भूबदरीगुणाः ।

भूबदरीमधुराम्लाकफवातविकारहारिणीपथ्या ।
दीपनपाचनकर्त्रींकिञ्चित्पित्तास्रकारिणीरुच्या ॥ (नि. र.)

अर्थ- झडबेर-मधुर, आम्ल, कफनाशक, वातविकारनिवारक, पथ्य, दीपन, पाचक, रुचिकारक और किंचित् रक्तपित्तको कुपित करे है ।

बदरीफलमज्जागुणाः ।

बदरीफलमज्जातुवरामधुरामता ।

शुक्रदाबलदावृष्याकासश्वासतृषापहा।
वातघ्नीछर्दिदाहघ्नीपित्तहामुनिभिर्मता ॥ (नि. र.)

अर्थ--बेरकी मींग--कषेली, मधुर, शुक्रजनक, बलवर्द्धक, वीर्यवर्द्धक तथा खाँसी, श्वास, तृषा, वात, वमन दाह और पित्तको दूर करे है।

बदरस्यपत्रगुणाः।

बदरस्यपत्रलेपोज्वरदाहविनाशनः।
विस्फोटशमनीबीजंनेत्रामयापहम् ॥ (रा. नि.)

अर्थ--बेरीके पत्तोंका लेप--ज्वर और दाहका नाशकरे है। बेरीकी छाल फोडेको दूर करनेवाली है। बेरीके बीज अर्थात् गुठलीकी मींग नेत्ररोगनिवारक है। बेरीके वृक्ष सर्व हिन्दोस्थानके स्थानोंमें प्रसिद्ध हैं।

विवरण--बेरके वृक्ष अनेक जातिके होते हैं और यह सबस्थानोंमें होते हैं, इसके वृक्ष काँटेदार मध्यम भागके होते हैं, पत्ते छोटे और गोल कुछेक लम्बाई लियें होते हैं, फूल मौरहीमें छोटे २ सफेद रङ्गके होते हैं फल अपनी अपनी जातिके आते ह, छोटे बडे लम्बे, गोल, पैवन्दी, कठा, पौंडा और रामपुरी इत्यादि। एक झरबेर कहलाते हैं उनके क्षुप छोटे २ पृथ्वीपर फैले हुए होते हैं उनका एक वनही है जिसका नाम बदरिकाश्रम है. और दिल्लीसे आगे बढकर जो द ो कोसोंतक बरके ही वृक्ष देखनेमें आय, उनहीके क्षुपों को काट काटकर और उनके पत्ते झाड झाडकर वडे बड ऊंच ढेर लगाते हैं उनको पाला कहते हैं. उसीसे गाय भसकी उदरपूर्णता होती है उन क्षुपोंमें छोटे २ बेरभी लगते हैं प्रथम हरे होते हैं, मध्यम अवस्थामें पीले और अन्त समय लाल पडकर सुकड जाते ह।

विकङ्कनामानि।

विकङ्कतःस्रुवावृक्षोग्रन्थिलःस्वादुकण्टकः।
सएवयज्ञवृक्षश्चकण्टकीव्याघ्रपादपि ॥

अर्थ--विकङ्कत, स्रुवावृक्ष, ग्रन्थिल, स्वादुकण्टक, यज्ञवृक्ष, कण्टकी, व्याघ्रपाद् (वैकङ्कत,वृतिकर,कण्टकारी, स्रुवावृक्ष, किंकिरी, स्रग्दारु, कण्टकी, स्रुग्दारु, मधुपर्णी,कण्टपाट, बहुफल, गोपघोण्टा, स्रुवद्रुम, मृदुफल,दन्तकाष्ठ, यज्ञिय, ब्रह्मपादप, पिण्डार, हिमक, पूतकिंकिणी, पृथुबीज, सुगन्धि, पादरोहिण, रावण)

संस्कृतभाषामें	विकंकत।
हिन्दीभाषामें	कंटाई, किंकिणी, वंज.।
वङ्गभाषामें	वईचिगाछ।
मराठीभाषामें	बेहड्याचें फळ।
गुजरातीभाषामें	विकलो।
कर्णाटकीभाषामें	हलुमाणिका मालेगु।
तैलिङ्गीभाषामें	कानवेगुचेट्टु।
औत्क०	वइचकुडि।
पं०	कुकोया।
लैटिन्भाषामें	सिलसूट्रस् मोंटैना। Selstrus Montana

अस्य गुणाः।

विकंकतोम्लमधुरःपाकतिमधुरोलघुः। दीपनःकामलास्रघ्नःपाचनःपित्तनाशनः (रा. नि.)

अर्थ-कंटाई-अम्ल, मधुर, पाकमेंभी मधुर, लघु, दीपन,कामलानाशक, रुधिरदोषनिवारक, पाचक और पित्तनाशक है।

अन्यच्च।

विकंकतोमधुश्चाम्लःकषायःशीतलोजयेत्। बलासपित्त-शोफास्रविकारान्कामलान्तथा॥ पाककालेतिमधुरोदाहं शोषंचनाशयेत्। दीपनःपाचनश्चैवव्रणलूतार्शनाशनः॥

अर्थ-विकंकत-मधुर, अम्ल, कषेला, शीतल तथा कफ, पित्त, शोफ, रुधिरविकार और कामलारोगको दूर करे है। पचनेमेंभी मधुर, दीपन, पाचक और दाह, शोष, व्रण, लूता और बवासीरको दूर करे है।

अपिच।

विकंकतफलंपक्कंमधुरंसर्वदोषजित्। (भावप्रकाश)

अर्थ--विकंकतका पक्का फल-मधुर और सर्वदोषनाशक है।

अन्यच्च।

विकंकतचनात्युष्णंदोषहन्नेत्रपुष्पजित्।

अर्थ-विकंकत-अत्यन्तगरम नहीं है,त्रिदोषनाशक और आंखके फूलेको दूर करे है। विकंकतके वृक्ष-जंगल और वनोंमें होते हैं, वृक्षपै कांटे होते हैं।

विवरण । कटाईके वृक्ष जंगल और वनोंमें बहुत बडे २ होते हैं इनके पत्ते छोटे २ और डालियोंमें कांटे होते हैं, इसमें बहुत अच्छे २ बेरके समान गोल २ फल लगते हैं ।

प्रियालनामानि ।

प्रियालस्तुखरस्कन्धश्चारोबहुलवल्कलः ॥
राजादनस्तापसेष्टःसन्नकद्रुर्धनुष्पटः ॥

अर्थ--प्रियाल, खरस्कन्ध, चार, बहुलवल्कल, राजादन, तापसेष्ट, सन्नकद्रु, धनुष्पट (अखट्ट, ललन, चारक, बहुवल्कल, सन्नद्रु, तापसप्रिय, स्नेहबीज, उपवट, मोक्षवीर्य्य, ह्रुसङ्गक, राजातन, वियल, धनु, पट, हसनक, धनु:पट, पियालक)

संस्कृतभाषामें	प्रियाल, पियाल ।
हिन्दीभाषामें	चिरोंजी ।
वंगभाषामें	चिरोंजी, पियाल ।
मराठीभाषामें	चारोळी (को०) चारवृक्षबीज ।
गुजरातीभाषामें	चारोली ।
कर्णाटकीभाषामें	चारबीज ।
तैलिङ्गीभाषामें	सारुपपु ।
तामिलीभाषामें	काटमरा ।
औ०	चरु ।
पं०	चिरोली ।

लैटिन्भाषामें बुकेननिया लेट्रिफोलिआ । Buchanania Latrifolia.

फारसीभाषामें	बुकलेखाजा ।
अरबीभाषामें	हबुस्समाना ।

अस्य गुणाः ।

चारोलीमधुरावृष्याचाम्लागुर्वीसरामता । मलस्तम्भकरीस्निग्धाशीतलाधातुवर्धिनी ॥ कफकृद्दुर्जरावल्याप्रियावातविनाशिनी । पित्तदाहज्वरतृषाक्षतरुग्रक्तदोषनुत् ॥ क्षतक्षयंनाशयतितन्मज्जामधुरामता । वृष्याचदाहपित्तघ्नीतत्तैलंमधुरंगुरु ॥ किञ्चिदुष्णंकफकरंपित्तवातविनाशनम् ॥ (नि. र.)

अर्थ-चिरौंजी-मधुर, वृष्य, भारी, अम्ल, सारक, मलस्तम्भक, स्निग्ध, शीतल, धातुवर्द्धक कफकारक, दुर्जर, बलवर्द्धक, प्रिय, वातविनाशक तथा पित्त, दाह, ज्वर, तृषा, क्षतरोग, रक्तविकार और क्षतक्षयका नाश करेहै। चिरौंजीकी मींग-मधुर, वीर्यवर्द्धक, दाह और पित्तनाशक है। चिरौंजीका तेल मधुर, भारी, किञ्चित् गरम, कफकारक और पित्तवातको दूर करेहै।

अपिच।

प्रियालंमधुरंस्निग्धंबृंहणंवातपित्तजित्। (रा. नि.)

अर्थ-चिरौंजी-मधुर, स्निग्ध, पुष्टिकारक और वातपित्तनाशक है।

प्रियालमूलादिगुणाः।

चारमूलंतुतुवरंरक्तरुक्कफपित्तहम्। चारमज्जातुमधुरावृष्यास्निग्धाचशीतला॥ मलस्तम्भकरीचामवर्द्धकादुर्जरा मता। हृद्याचशुक्रलावातपित्तनाशकरीमता॥ (नि. र.)

अर्थ-चिरौंजीके वृक्षकी जड़-कषेली तथा रुधिरबिकार, कफ और पित्तनाशक है। चिरौंजीवृक्षकी मींग-मधुर, वीर्यवर्द्धक, स्निग्ध, शीतल मलस्तम्भक, आमवर्द्धक, दुर्जर हृदयको हितकारी, शुक्रजनक और वातपित्तनाशक है।

विवरण-चिरौंजीके वृक्ष कोंकण आदि देशमें अधिक होते हैं, पत्ते छोटे २ नोकदार खरखरे होते हैं, पत्ते छोटे २ बेरके समान नीलेरंगके होते हैं उसमेंसे जो मींग निकलती है, उसको चिरौंजी कहते हैं।

राजादननामानि।

राजादनःफलाध्यक्षोराजन्याक्षीरिकापिच।

अर्थ-राजादन, फलाध्यक्ष, राजन्या, क्षीरिका (राजफल, कपीष्ट, क्षीरवृक्ष, नृपद्रुम, निम्बबीज, मधुफल, माधवोद्भव, क्षीरी, गुच्छफल, धूपेष्ट, राजवल्लभ, श्रीफल, दृढस्कन्ध, क्षीरशुक्र)

संस्कृतभाषामें	राजादन।
हिंदीभाषामें	खिन्नी, खिरनी।
बंगभाषामें	क्षीरिणी, राजणी।
मराठीभाषामें	खिरणी।
गुजरातीभाषामें	रायण।

कर्णाटकीभाषामें खणे मारिले ।
तामिलीभाषामें पल्ल ।
अंग्रेजीभाषामें ओबट्युस्लीव्ड माईमुसोप्स । Obtuse leaved Mimusops
लैटिन्भाषामें माईमुसोप्स हेगूझान्डा । Mimnsops hezrandra

अस्य गुणाः ।

क्षीरीरूक्षाफलंशीतंस्निग्धंगुरुबलप्रदम् ॥
तृष्णामूर्च्छामदभ्रान्तिक्षयदोषत्रयास्रजित् (म. नि.)

अर्थ-खिरनी-शीतल, स्निग्ध, भारी, बलवर्द्धक तथा तृषा, मूर्च्छा, मद, भ्रांति, क्षय और त्रिदोषको दूर करे है ।

अपिच ।

राजादनीतुमधुरापित्तहृद्गुरुतर्पणी ।
वृष्यास्थौल्यकरीहृद्यासुस्निग्धामेहनाशकृत ॥ (रा. व.)

अर्थ-खिरनी-मधुर, पित्तनाशक, भारी, तृप्तिकारक, वीर्य्यजनक, देहको स्थूल करनेवाली, हृदयको हितकारी, स्निग्ध और प्रमेहको हरनेवाली है ।

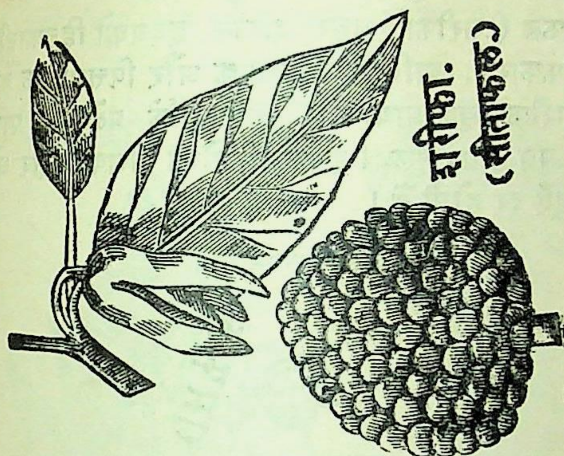
अन्यच्च ।

राजादनंहिमंस्निग्धंकषायंमधुरंगुरु। स्वाद्वम्लपाकंसंग्राहि वृष्यंविष्टम्भिबृंहणम् ॥रोचनंमांसलंहन्तिदोषत्रयमदभ्रमान् । मूर्च्छामोहतृषादाहंरक्तपित्तक्षतक्षयान् ॥

अर्थ-खिरनी, शीतल, स्निग्ध, कषेली, मधुर, भारी, स्वादु, अम्लपाकी, मलरोधक, वीर्य्यवर्द्धक, विष्टम्भजनक, पुष्टिकारक, रोचन, मांसवर्द्धक तथा त्रिदोष, मद, भ्रम, मूर्च्छा, मोह, तृषा, दाह, रक्तपित्त और क्षतक्षयको दूर करे है ।

विवरण । खिरनीके वृक्ष बडे २ ऊंचे होतेहैं, पत्ते नेवाडीके समान होतेहैं, इसमें शीतऋतुमें मौर आताहै और वसन्त ऋतुमें फल आते हैं, फल निबौलीके समान गुच्छे लगतेहैं, वे कच्ची अवस्थामें हरे और पकनेपर पीले पड जातेहै और कोई २ पकनेपरभी हरे ही रहतेहैं, उनको हरियल कहतेहैं। फलोंमेंसे दूध भी निकलता है ।

आतृप्यनामानि ।



सीताफलंगंडगात्रंवैदेहीवल्लभंतथा ।
कृष्णबीजंचाग्रिमाख्यमातृप्यंबहुबीजकम् ॥

अर्थ-सीताफल--गंडगात्र, वैदेहीवल्लभ, कृष्णबीज, अग्निमाख्य, आतृप्य, बहुबीजक ।

संस्कृतभाषामें	आतृप्य।
हिन्दीभाषामें	सरीफा, सीताफल ।
बंगभाषामें	आता ।
मराठीभाषामें	सीताफळ ।
तैलिङ्गीभाषामें	सीताफल ।
अंग्रेजीभाषामें	कस्टर्डएपल Custerd ypple
लै०	एनोना स्केमोसा Annona Sqamosa
फारसीभाषामें	काज ।
अरबीभाषामें	सरीफा ।

अस्य गुणाः ।

तर्पणंरक्तकृत्स्वादुशीतलंहृद्यमेवच ।
बलदंमांसकृद्दाहरक्तपित्तमरुत्प्रणुत् ॥

अर्थ--सीताफल--तृप्तिजनक, रक्तवर्द्धक, स्वादिष्ठ, शीतल, हृदयको हितकारी, बलवर्द्धक, मांसवर्द्धक तथा दाह, रक्तपित्त और वातविनाशक है ।

अन्यच्च ।

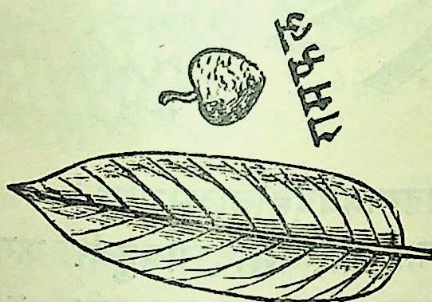
सीताफलंतुमधुरंशीतंहृद्यंबलप्रदम् ।

वातलंकफकृत्स्वादुपुष्टिकृत्पित्तनाशनम् ॥ (नि. र.)

अर्थ-सीताफल (सरीफा) मधुर, शीतल, हृदयको हितकारी, बलवर्द्धक वातकारक, कफकारक, स्वादिष्ठ, पुष्टिकारक और पित्तनाशक है ।

विवरण । सरीफेके वृक्ष प्रायः सर्व भारतवर्षके प्रदेशोंमें पाये जाते हैं। व्यवहार फल, पत्र, छाल, मूल, । इसके बीजोंको पीसकर शिर धोनेसे शिरके कीडे अर्थात् जूएँ दूर होती हैं ।

लवनीफलनामानि ।



रामस्यचफलंरामफलंरामाह्वयंतथा ।
रक्तत्वचंचवासन्तंकृष्णबीजंमृदूफलम् ॥

अथ--रामफल, रामाह्वय, रक्तत्वच, वासन्त, कृष्णबीज, मृदूफल (लवनी ग्रीष्मजा, अग्रिमा)

संस्कृतभाषामें	लवनी ।	
हिन्दीभाषामें	लवनी, एनोना ।	
वंगभाषामें	नोना, लोना ।	
मराठीभाषामें	रामफळ ।	
गुजरातीभाषामें	रामफल ।	
तैलिङ्गीभाषामें	रामफल	
अंग्रेजीभाषामें	नेटेड्कस्टर्डएपल् ।	Nettedcustard apple
लैटिनभाषामें	एनोना रेटिक्युलेटा ।	Anonareteculata
गोवा०	अनोना ।	

अस्य गुणाः ।

रामफलंकषायंचस्वाद्वम्लंकफकारकम् ।
वातलंचास्रतृट्दाहपित्तश्रमक्षुधापहम् ॥ (नि. र.)

अर्थ-रामफल--कषेला, स्वादिष्ठ, खट्टा, कफकारक, बादी तथा रुधिर-विकार, तृषा, दाह पित्त, श्रम और क्षुधाको हरनेवाला है ।

अनंनासनामानि ।

अनन्नास.





अनंनासंपारवतीचामंकौतुकसंज्ञकम् ।

अर्थ--अनंनास, पारवती, आम, कौतुकसंज्ञक ।

संस्कृतभाषामें	अनंनास, कौतुकसंज्ञक ।
हिन्दीभाषामें	अनंनास ।
मराठीभाषामें	अननस ।
गुजरातीभाषामें	अनंनास ।
अंग्रेजीभाषामें	पाइनएंपल । Pine apple
लैटिन्भाषामें	अननासा सेटिवा । Annassa sative

अस्या गुणाः ।

अनंनासमपक्वन्तुरुच्यंहृद्यंगुरुर्मतम् । कफपित्तकरंचैवप्रोक्तं चान्नमरोचकम् ॥ श्रमंक्लमंनाशयतितत्पक्वंस्वादुपित्तहृत् । रसातपविकारंचनाशयेदितिकीर्तितम् ॥ (नि. र.)

अर्थ-कच्चा अनंनास–रुचिकारक-हृदयको हितकारी, भारी कफपित्त-कारक, अन्नरोचक तथा श्रम और क्लमनाशक है । पक्का अनंनास-स्वादिष्ठ पित्तकारक तथा रसविकार और आतपविकारको दूर करे है ।

विवरण । अनंनास पहिले हिन्दोस्थानमें नहीं होता था क्योंकि सिवाय

निघण्टुरत्नाकर (जोकि, थोड़ेसे दिनोंसेही बना है) के और किसी प्राचीन निघण्टुमें नहीं देखा जाता ।

निकोचकनामानि ।

निकोचकंचारुफलंसकोचंजलगोजकम् ।
पिस्तंमुकूलकंज्ञेयंदन्तीफलसमाकृति

अर्थ--निकोचक, चारुफल, सकोच, जलगोजक, पिस्त, मुकूलक, दन्तीफलसमाकृति ।

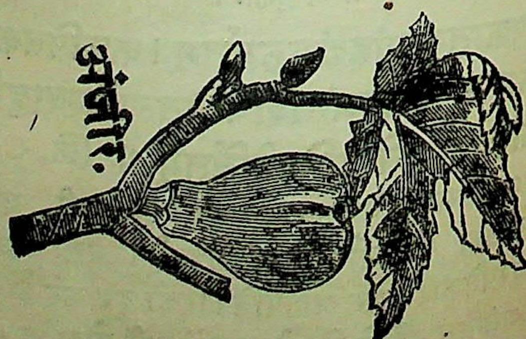
संस्कृतभाषामें	निकोचक ।
हिन्दीभाषामें	पिस्ता ।
वंगभाषामें	पेस्तागाछ ।
मराठीभाषामें	पिस्ते ।
गुजरातीभाषामें	पस्ता ।
अंग्रेजीभाषामें	पिस्टेशिओनट । Pistachionut
लेटिन्भाषामें	पिस्टेशियाव्हेरा । Pistasiavera
फारसीभाषामें	पिस्तां ।
अरबीभाषामें	पिस्तक ।

अस्य गुणाः ।

निकोचकंगुरुस्निग्धंवृष्योष्णंधातुवर्द्धकम् ।
रक्तप्रसादनंस्वादुबल्यंपित्तकरंमतम् ॥
तिक्तंसरंचकफहृद्वातगुल्मत्रिदोषजित् । (नि. र.)

अर्थ--पिस्ते--भारी स्निग्ध, वीर्य्यवर्द्धक, गरम, धातुवर्द्धक, रक्तको शुद्ध करनेवाले, स्वादु, बलवर्द्धक, पित्तकारक, कडवे, सारक, कफनाशक तथा वात, गुल्म, और त्रिदोषको दूर करे हैं ।

अञ्जीरनामानि ।



अंजीरंमञ्जुलंज्ञेयंकाकोदुम्बरिकाफलम्।

अर्थ—अंजीर मंजुल, काकोदुम्बरिकाफल।

संस्कृतभाषामें	अंजीर।
हिन्दीभाषामें	अंजीर।
बंगभाषामें	आँजीर, पेयारा।
मराठीभाषामें	अंजीर।
गुजरातीभाषामें	अजीर।
कर्णाटकीभाषामें	मेडियंड्डु।
अंग्रेजीभाषामें	फिग्ट्री। Fig tree
लैटिन्भाषामें	फाईकसूकेरिका। Ficuscariea
फारसीभाषामें	तीन।

अस्य गुणाः।

अंजीरकंफलमतीवसुशीतलंचसद्योनिवारयतिशोणितपित्तमुग्रम्। पथ्यंविशेषमपिपित्तशिरोविकारेनासाप्रवृत्तरुधिरेचविशेषतस्तु॥

अर्थ-अंजीर-अत्यन्तशीतल, तत्काल रक्तपित्तनाशक, पित्त और शिरोरोगमें विशेष करके पथ्य है तथा नाकसे रुधिरके गिरनेको बंदकरे है।

अन्यच्च।

अंजीरकंगुरुहिमंमधुरंचवातपित्तास्त्ररोगहरणंरुचीनाम्। सुस्वादुपाकरसयोर्गुरुशीतलं च श्लेष्मामवातकरमस्त्रविकारहारि॥

अर्थ-अंजीर-भारी, शीतल, मधुर, वातनाशक, रक्तपित्तहारी, रुचिकारी, स्वादु, पचनेमें भी स्वादु तथा श्लेष्म और आमवातकारक है और रुधिरविकारको दूर करे है।

परूषकंगिरिपीलुरोषणंनागदलोपमम्।

परूषकनामानि।

अर्थ-परूषक, गिरिपीलु, रोषण, नागदलोपम (परावत, नीलचर्म्म, नीलमण्डल, परापर, अल्पास्थि, धन्वनच्छद, मृदुफल)



संस्कृतभाषामें	परूषक ।
हिन्दीभाषामें	फलसा, परुषा ।
वंगभाषामें	फलसा ।
मराठीभाषामें	फाळ्सा ।
कर्णाटकीभाषामें	बेट्टहा, दागलि ।
तैलिंगीभाषामें	पुटिकी ।
गुजरातीभाषामें	ध्रामण ।
अंग्रेजीभाषामें	एश्याटिक् ग्रेविया । Asiatic Grewia
लैटिन्भाषामें	ग्रेविया एश्याटिका । Grewia asiatic
फारसीभाषामें	पालसा ।
अरबीभाषामें	फालसा ।

अस्यफलगुणाः ।

परूषमम्लंकटुकंकफार्तिजिद्वातापहंतत्फलमामपित्तकृत् । सोष्णश्चपक्वंमधुरंरुचिप्रदंपित्तापहंशोफहरंचतर्पणम् ॥

अर्थ–कच्चा फालसा–कटु, कफनाशक, खट्टा, वातनाशक और पित्तको उत्पन्न करे है। पका फालसा–मधुर, रुचिदायक, पित्तनाशक शोफनाशक और तृप्तिकारक है।

अन्यच्च ।

परूषकंकषायाम्लमामपित्तकरंलघु ।

तत्पक्वंमधुरंपाकेशीतंविष्टम्भिबृंहणम् ॥
हृद्यंतृट्पित्तदाहास्रज्वरक्षयसमीरहृत् । (भा. प्र.)

अर्थ-कच्चा फालसा-कषेला खट्टा, पित्तकारक, हलका । पका फालसा मधुर, शीतल, विष्टम्भकारक, पुष्टिजनक, हृदयको हितकारी तथा तृषा, पित्त, दाह, रुधिरविकार, ज्वर, क्षय और वातको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

परूषकंकषायाम्लंलघूष्णंस्वादुपित्तलम् । रूक्षंमारुतजित्पक्वंस्वाद्वम्लंशुक्रलंहिमम् ॥ रोचनंमधुरंपाकेहृद्यंविष्टम्भि बृंहणम् । हन्तिमारुतपित्तास्रतृष्णादाहक्षतक्षयान् ॥

अर्थ-कच्चा फालसा-कषेला, खट्टा, हलका, गरम, स्वादिष्ठ, पित्तकारक रूखा व वातको दूर करनेवालाहै । पका फालसा-स्वादिष्ठ, खट्टा, शुक्रजनक, शीतल, रोचन, पचनेमें मधुर, हृदयको हितकारी, विष्टम्भकारक, पुष्टिकारक तथा वात, रक्तपित्त, तृषा, दाह और क्षतक्षयको क्षयकरेहै ।

अस्यत्वग्गुणाः ।

परूषकत्वक्प्रमेहघ्नीयोनिमेढ्रप्रदाहनुत् ॥
मूत्रदोषप्रशमनीशीतपित्तानिलापहा ॥ (आ. सं.)

अर्थ-फालसेकी छाल-प्रमेहनाशक, योनिकी दाह और लिङ्गकी दाहको दूरकरनेवाली, मूत्ररोगनिवारक तथा शीत, पित्त और वातविनाशकहै ।

विवरण-फालसेके वृक्ष मध्यम आकारके होतेहैं, मालीलोग अपने बागोंमें बहुत लगा देते हैं पत्ते वेलके समान तीन २ मिलेहुए होतेहैं, फल दो तीन एकत्र होतेहैं, फल कच्ची अवस्थामें हरे और पकनेपर ऊदे रंगके होजाते हैं ।

तूतनामानि ।



सहतूत

तूतंतूदंब्रह्मकाष्ठंब्रह्मण्यंब्रह्मदारुच ।
मृदुसारंसुपुष्पंचसुरूपंनीलरंगकम् ॥

अर्थ-तूत, तूद, ब्रह्मकाष्ठ, ब्रह्मण्य, ब्रह्मदारु, मृदुसार, सुपुष्प, सुरूप, नीलरंगके (तूल, ब्राह्मणेष्ट, नीलवृन्तक, क्रमुक, विप्रकाष्ठ, मदसार, प्र, ब्रह्मनेष्ट, नूढ, पूष, ब्रह्मण्य, पलाशिक, यूष) ।

संस्कृतभाषामें	तूत ।
हिन्दीभाषामें	सहतूल, तूत ।
वंगभाषामें	तूँत (द), पलाशपिपुल ।
मराठीभाषामें	तूतें ।
कों०	तूतीची फलें ।
गुजरातीभाषामें	शेतूत, तूत ।
तैलिङ्गीभाषामें	कम्बलिचट्टु ।
तामिलीभाषामें	मपुकट्टइचेडि ।
अंग्रजीभाषामें	मलबेरिज़ Mulberies
लैटिन्भाषामें	मोरस इण्डिका (Morus Indica
	मोरसनिग्रा । Morus'nigra
	मोरसआल्बा । Morus alba
फ़ासीभाषामें	शाठतूत, तूततुर्श, तूतशीरि ।
अरबीभाषामें	तूत, तूतहामीज, तूतहुलु ।

अस्य गुणाः ।

तूतंपक्कंगुरुस्वादुहिमंपित्तानिलापहम् ।
तदेवामंगुरुसरमम्लोष्णंरक्तपित्तकृत् ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ--पके सहतूत-भारी, स्वादिष्ट, शीतल तथा पित्त और वात विनाशक हैं । कच्चे सहतूत--भारी; सारक, खट्टे, गरम और रक्तपित्तकारक हैं ।

अपिच ।

तौतानिपक्कानिगुरुशीतानिमधुराणिच । ग्राहकाणिरक्त... षवातपित्तहराणिच ॥ कोमलानिचतानिस्युर्गुरूणिचकारि... णिच । अम्लानिचोष्णवीर्य्याणिरक्तपित्तहराणिच ॥

अर्थ-पके सहतूल-भारी, शीतल, मधुर, मलरोधक तथा रक्तविकार...

वात और पित्तका नाश करे हैं। कोमल सहतूत--भारी, दस्तावर, खट्टे, गरम और रक्तपित्तका नाश करे हैं। सहतूतके वृक्ष बागोंमें बहुत होते हैं, पत्ते अञ्जीरके समान तीन २ कंगूरेवाले और नीमके पत्तोंके सदृश चारों ओर आरेकेसे चिह्न होते हैं, यह वृक्ष दो प्रकारके होते हैं, एकपर काले सहतूत आते हैं, और दूसरेपर सफेद सहतूत आते हैं, इसके फल फलीके समान होते हैं, और उनमें बाजरेकेसे दाने सर्वत्र लगे होते हैं, वह फली अत्यन्त कोमल और रसीली होती हैं।

पारेवतनामानि ।

पारेवतंश्वेतपुष्पंतिन्दुकाभफलंमतम् ।

अर्थ--पारेवत, श्वेतपुष्प तिन्दुकाभफल (आरेवत, पालेवत)

संस्कृतभाषामें	पारेवत।
हिन्दीभाषामें	पारेवत।
वंगभाषामें	पेयारा।
औ०	प्याडा।
तैलिङ्गीभाषामें	उत्तरिगे, दोडउत्तरिगे।

अस्य गुणाः ।

पारेवतंहिमस्वादुगुरूष्णंवातपित्तजित् ।
तद्वन्माणवकंज्ञेयंतृष्णाघ्नंमिष्टमम्लकम् ॥ (ध. नि.)

अर्थ--पारेवत--शीतल, स्वादिष्ठ, भारी, गरम, वातपित्तनाशक और महापारेवतकेभी गुण इसीके समान हैं तृषानाशक, मिष्ट और अम्ल है।

अन्यच्च ।

पारेवतंतुतुवरंकृमिवातहारि वृष्यंतृषाज्वरविदाहहरंचहृद्यम् ॥ मूर्च्छाभ्रमश्रमविशोषविनाशकारिस्निग्धश्चरुच्यमुदितंबहुवीर्य्यदंच ॥

अर्थ--पारेवत--कषेला, कृमिनाशक, वीर्य्यवर्द्धक, स्निग्ध, रुचिकारक, वृष्य हृदयको हितकारी तथा तृषा, ज्वर, दाह, मूर्च्छा, भ्रम, श्रम, और शोषनाशक है।

महापारेवतगुणाः ।

महापारेवतंगौल्यंबलकृत्पुष्टिवर्द्धनम् ।

वृष्यंमूर्च्छाज्वरघ्नश्चपूर्वोक्तादधिकंगुणैः ॥

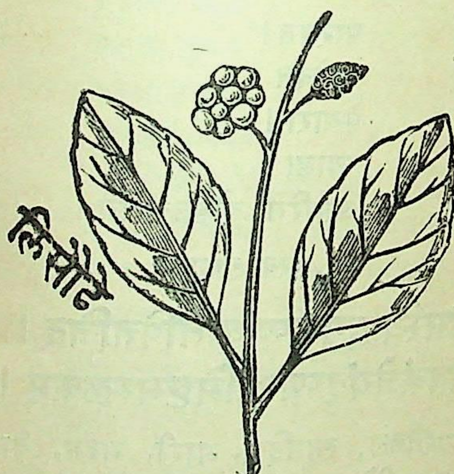
अर्थ--महापारेवत--गौल्य, बलकारक, पुष्टिवर्द्धक, वीर्य्यवर्द्धक, मूर्च्छा निवारक, ज्वरनाशक यह पारेवतसे अधिक गुणवाला है।

श्लेष्मातकनामानि।

श्लेष्मातकःकर्बुदारःपिच्छिलोलेखशाटकः।
शेलुःशैलुर्गंधपुष्पःशापितोबहुवारकः ॥

अर्थ--श्लेष्मातक--कर्बुदार, पिच्छिल, लेखशाटक, शेलु, शैलु, गन्धपुष्प, शापित, बहुवारक, (उद्दाल, भूतवृक्ष, बहुवार, द्विजकुत्सित, शीतफल, शाकट, कर्बुदारक, भूतद्रुम, श्लेष्मात, श्लेष्मातक, शीतल, उद्दालक, सेलु)

भूकर्बुदारनामानि।



भूकर्बुदारकश्चान्यलघुश्लेष्मातकस्तथा ॥

अर्थ-भूकर्बुदार, लघुश्लेष्मातक (क्षुद्रश्लेष्मान्तक, भूशेलु, लघुपिच्छिल, लघुशीत, लघुशेलु, सूक्ष्मफल, मधुभूतद्रुम, भूकर्बुदार)

संस्कृतभाषामें	श्लेष्मातक। भूकर्बुदार।
हिन्दीभाषामें	लिसोड़ा, निसोरे, लभेरा।
वंगभाषामें	बहुयार, चालतागाछ, बोहरी।
मराठीभाषामें	भोंकर, शेळवंट, भोंकरी, गोंधणी।।
गुजरातीभाषामें	गुंदोमोटो, गुंदीनांनी।
कर्णाटकीभाषामें	चेलु, गोंदिणी।
तैलिङ्गीभाषामें	नाकेरु, नुककरु।
तामिलीभाषामें	विडि।
औत्कलीभाषामें	अह

अंग्रेजीभाषामें नेरोलिण्ड सेपिस्टन । Narrow leaved Sepistun
लैटिन्भाषामें कोर्डिया एंगस्टिफोलिया । Cordia angustifolia
फारसीभाषामें सिपिस्तान् ।
अरबीभाषामें सेफिस्तान् दवक ।

अस्य गुणाः ।

श्लेष्मान्तकटुशीतलंचतुवरंस्यात्पाचकंमाधुरं स्निग्धंकेश्यबलासदंत्वथक्रमीञ्छूलामरक्तापहम् ॥ विस्फोटव्रणपित्तनाशनकरंवीसर्पसर्वविषं हन्तिह्यस्यफलंतुशीतमधुरंतिक्तलघुस्तूवरम् ॥ वायोर्वृद्धिकरंचपित्तशमनंविष्टम्भिरुच्यं तथासृग्दृष्टिकफनाशनंचगदितंपक्वंतथामाधुरम् ॥ स्निग्धं शीतलबृंहणंनिगदितंविष्टम्भिरूक्षंगुरु वायोर्नाशकरंचपित्तशमनंस्याद्रक्तदोषापहम् ॥ (नि. र.)

अर्थ--श्लेष्मान्तक-कटु, शीतल, कषेला, पाचक, मधुर, स्निग्ध, केशोंको हितकारी, तथा कृमि, शूल, आमरक्त, कफकारी, विस्फोटक, व्रण, पित्त, विसर्प और सर्व प्रकारके विषोंको हरनेवाला है । इसके फल-शीतल, मधुर, कडवे, हलके, कषेले, वातवर्द्धक, पित्तको शान्ति करनेवाले, विष्टम्भकारक, रुचिजनक तथा रुधिरविकार, दृष्टिविकार और कफनाशक हैं । इसके पक्के फल-मधुर स्निग्ध-शीतल, पुष्टिकारक, विष्टम्भकारक, रूखे, भारी, वातविनाशक, पित्तनिवारक और रुधिरविकारको हरनेवाले हैं ।

भूकर्बुदारगुणाः ।

क्षुद्रश्लेष्मातकंवातकोपनंमधुरंमतम् ।
किंचिच्चशीतलंज्ञेयंक्रमिघ्नंस्वर्णमारकम् ॥

अर्थ -लभेरा-वातको कुपित करनेवाला, मधुर, किंचित् शीतल, कृमिनाशक और सुवर्णको मारे है ।

विवरण । लिसोडेके वृक्ष जंगल और वनमें अधिक होते हैं; पत्ते गोल कुछ लम्बाई लिये होते हैं, फल अळूचेके समान गोल रसीले गुच्छोंमें लगते हैं, भीतरसे चिपकते हैं इसीप्रकारके लभेडेके वृक्षभी होते हैं, पत्तेभी इसी भांतिके होते हैं परन्तु फल इससे छोटे होते हैं, कच्चे रंगमें हरे और पकनेपर कुछ गुलाबीसे होजाते हैं, फलके भीतर बीज और कुछ गोंदसा निकलता है ।

कतकनामानि ।

कतकंछेदनीयश्चश्लक्ष्णंतोयप्रसादनम् ।
कात्थंकतकरेणुश्चचक्षुष्यंशोधनात्मकम् ॥

अर्थ-कतक, छेदनीय श्लक्ष्ण, तोयप्रसादन, कात्थ, कतकरेणु, चक्षुष्य शोधनात्मक (अम्बुप्रसादनफल, रुचिष्य, लेखनात्मक, अम्बुप्रसाद, तिक्तफल, रुच्य, गुच्छफल तिक्तमरिच, तोयप्रसादफल, पयःप्रसादि)

संस्कृतभाषामें	कतक ।
हिन्दीभाषामें	निर्म्मलीफल, पायपसारी ।
वंगभाषामें	निर्म्मलफल ।
मराठीभाषामें	निवळीच्या बिया, चिल्लार, गजरा ।
गुजरातीभाषामें	निर्मली ।
कर्णाटकीभाषामें	चिल्लिकापि ।
अंग्रेजीभाषामें	नट् वुइच् क्लिअर्सवाटर । Nut which clears water
लैटिन्भाषामें	स्ट्रिक्नोस् पोटेटेरम् । Strychinos Potaterum

अस्यगुणाः ।

कतकःकटुकस्तिक्तोलेखनोरुचिकृल्लघुः । चक्षुष्यस्तुवरः शीतोविशदश्चविकासकः ॥ छेदनोमधुरश्चैवतृषादाहविषापहः । गुल्मशूलकृमीन्मेहंनेत्ररुग्जलजंमलम् ॥ नाशयेदितिचप्रोक्तःफलंतस्यचकोमलम् । चक्षुष्यंवातकृच्छीतंक्तपित्तंतृषांविषम् ॥ मोहंचनाशयत्येवतरुणंततुदुर्जरम् । रुचिदंकफपित्तघ्नंततपक्वंपित्तलंमतम् ॥ छर्देःस्वेदस्यजनकंशोफंपाण्डुंविषंजयेत् । प्रतिश्यायंकामलांचनाशयेदितिकीर्तितम् ॥ कतकस्यचबीजन्तुचक्षुष्यंतुवरंगुरु । जलप्रसादनंशीतंमधुरंचाश्मरीहरम् ॥ वातंकफंमूत्रकृच्छ्रंनेत्ररुजंविषम् । प्रमेहंशीर्षरोगंचनाशयेदितिकीर्तितम् ॥ कतकस्यचमूलन्तुसर्वकुष्ठहरंपरम् ।

अर्थ-निर्म्मलीवृक्ष -चरपरा, कडवा, लेखन, रुचिकारक, हलका, नेत्रोंको हितकारी, कषेला, शीतल, विशद, विकासी, छेदन, मधुर तथा तृषा, दाह

विष, गुल्म, शूल, कृमि, प्रमेह, नेत्ररोग और जलके मैलको दूर करे है। इसका कोमलफल-नेत्रोंको हितकारी, वातवर्द्धक, शीतल तथा रक्तपित्त, तृषा, विष और मोहको दूर करे है। इसका तरुणफल-दुर्जर, रुचिजनक, कफ और पित्तनाशक है। इसका पका फल पित्तजनक, वमनकारक, पसीनेको लानेवाला तथा सूजन, पाण्डुरोग, विष, प्रतिश्याय और कामला रोगको दूर करे है। इसके बीज--नेत्रोंको हितकारी, कषेले, भारी, जलको निर्मल करनेवाले, मधुर तथा पथरी, वात, कफ, मूत्रकृच्छ्र, तृषा, नेत्ररोग, विष, प्रमेह और मस्तकरोगको दूर करे हैं। निर्म्मलीकी जड-सर्वप्रकारके कुष्ठोंको नष्टकरनेवाली है।

विवरण । कतक अर्थात् निर्मलीफल गोल होतेहैं, और उसके, ऊपरकी छाल कुचलेकी छालके समान होतीहै, विशेष करके इसकी सब आकृति कुचलेसेही मिलती है।

द्राक्षानामानि ।

द्राक्षामधुरसास्वाद्वीकृष्णाचारुफलारसा ।
मृद्वीकागोस्तनीचैवयक्ष्मघ्नीतापसप्रिया ॥

अर्थ-द्राक्षा, मधुरसा, स्वाद्वी, कृष्णा, चारुफला, रसा, मृद्वीका, गोस्तनी, यक्ष्मघ्नी, तापसप्रिया, (प्रियाला, गुच्छफला, रसाला अमृतफला, स्वादुफला हारहूरा, फलोत्तमा, सुफला)।

कपिलद्राक्षानामानि ।

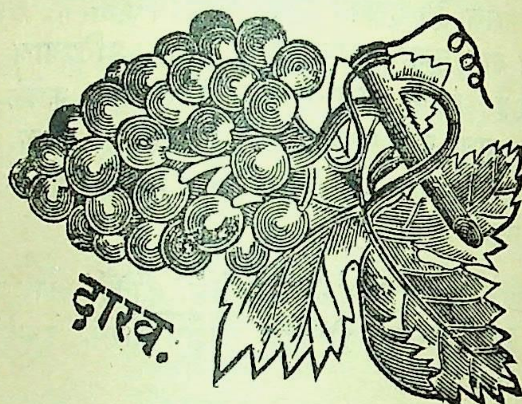
अन्याकपिलद्राक्षामृद्वीकागोस्तनीचकपिलफला ।
अमृतरसादीर्घफलामधुवल्लीमधुफलामधूलिश्च ॥
हरिताचहारहूरासुफलामृद्वीहिमोत्तरापथिका ।
हैमवतीशतवीर्य्याकाश्मीरीगजराजमहिगणिता ॥

अर्थ-कपिलद्राक्षा, मृद्वीका, गोस्तनी, कपिलफला, अमृतरसा, दीर्घफला, मधुवल्ली, मधुफला, मधूलि, हरिता, हारहूरा सुफला, मृद्वी, हिमोत्तरा, पथिका, हैमवती, शतवीर्य्या, काश्मीरी ।

काकलीद्राक्षानामानि ।

अन्यासाकाकलीद्राक्षाजाम्बुकाचफलोत्तमा ।
लघुद्राक्षाचनिर्बीजासुवृत्तारुचिकारिणी ॥

अर्थ–काकलीद्राक्षा, जाम्बुका, फलोत्तमा, लघुद्राक्षा, निर्बीजा, सुवृत्ता, रुचिकारिणी, (रसाधिका)।



संस्कृतभाषामें द्राक्षा।
हिंदीभाषामें दाख, कालीदाख, किसमिस, अंगूर, भूरीदाख।
वंगभाषामें किसमिस, मनेक्का, आंगुर बेदाना, किस्‌मिस्।
मराठीभाषामें कालें द्राक्ष, बेदाणा, किसमिस।
गुजरातीभाषामें धराख, कालिधराख, किसमिस।
कर्णाटकीभाषामें वेडगणद्राक्षे, चिकुद्राक्षे।
तैलिङ्गीभाषामें द्राक्षा, किसिमिसि, पोंड्डु, द्राक्षचेट्टु।
तामिलीभाषामें कोडिमण्डि रिप्पझाम्।
अंग्रेजीभाषामें ग्रेप Grape राझिन्स। Ryisins
लैटिन्‌भाषामें वाइटिन्स्, वेनिफेरा। Witins Venifera
फारसीभाषामें अंगूर, मुनक्का, दानेमबीज।
अरबीभाषामें कीसमीस, एनब्जबीव, 'हबुसूजबीव।

द्राक्षापक्कासराशीताचक्षुष्याबृंहणीगुरुः। स्वादुपाकरसास्वर्य्यातुवरासृष्टमूत्रविट् ॥ कोष्ठमारुतकृद्वृष्याकफपुष्टिरुचिप्रदा। हन्तितृष्णाज्वरश्वासवातवातास्रकामलाः॥ कृच्छ्रास्रपित्तसंमोहदाहशोषमदात्ययान्। आमास्वल्पगुणागुर्वीसैवाम्लारक्तपित्तकृत् ॥ वृष्यास्याद्गोस्तनीद्राक्षागुर्वीचकफपित्तनुत्। अबीजान्यास्वल्पतरागोस्तनीसदृशीगुणैः॥

द्राक्षापर्वतजालघ्वीसाम्लाश्लेष्माम्लपित्तकृत् । द्राक्षापर्वतजायादृक्कूतादृशीकरमर्दिका ॥ (भा. प्र.)

अर्थ-पक्कीदाख-सारक (कुछ २ दस्तावर) शीतल, नेत्रोंको हितकारी, बृंहण, भारी, स्वादुपाकी, स्वादु, स्वरशोधक, कषेली, मूत्र और मलको निकालनेवाली, कोठेमें वातको करनेवाली, वीर्य्यवर्द्धक कफकारक, पुष्टिजनक, रुचिकारक तथा तृषा, ज्वर, श्वास, वात, वातरक्त, कामला, मूत्रकृच्छ्र, रक्तपित्त, मोह, दाह, शोष और मदात्ययरोगको हरनेवाली है। कच्चीदाख-अल्पगुणवाली, भारी, खट्टी और रक्तपित्तकारक है। गोस्तनी अर्थात् कालीदाख-वीर्य्यवर्द्धक, भारी और कफपित्तहारी है। किसमिस-कालीदाखके समान गुणवाली है। पर्वतीदाख-हलकी, खट्टी, कफ और अम्लपित्तको करनेवाली है। करमर्दिकानामवाली दाख--पर्वतीदाखके समान गुणवाली है।

अन्यच्च ।

द्राक्षातुमधुरास्निग्धावृष्याशीतानुलोमनी ।
बल्यावृष्याक्षतक्षीणतृषावातास्रपित्तजित् ॥ (रा. व.)

अर्थ-दाख-मधुर स्निग्ध, वीर्य्यवर्द्धक, शीतल, मलभेदक, बलकारक, वीर्य्यवर्द्धक तथा क्षत क्षीण, वात, और रक्तपित्तका नाश करे है।

अन्यच्च ।

द्राक्षातिमधुराम्लाचशीतापित्तार्त्तिदाहजित् ।
मूत्रदोषहरारुच्यावृष्यासंतर्पणीपरा ॥

अर्थ--दाख- मधुर, खट्टी, शीतल, पित्तनिवारक, दाहनाशक, मूत्रदोषहारक, रुचिकारक, वृष्य और तृप्तिकारक है।

द्राक्षाबालफलंकटूष्णविशदपित्तास्रदोषप्रदं
मध्यंचाम्लरसंरसान्तरगतंरुच्यातिवह्निप्रदम् ।
पक्वंचेन्मधुरंतथाम्लसहितंतृष्णास्रपित्तापहं
पक्वंशुष्कसमंश्रमार्त्तिशमनंसन्तर्पणंपुष्टिदम् ॥

अर्थ--कच्चीदाख--कटु, उष्ण, विशद, रक्तपित्तकारक, मध्यम अवस्थाकी दाख--खट्टी, रुचिकारक और अग्निवर्द्धक है। पक्की दाख--मधुर, खट्टी, तृषा

और रक्तपित्तनाशक है। पककर सूखगई हो ऐसी दाख--श्रम--नाशक, वृद्धि कारक और पुष्टिजनक है।

द्राक्षासैवसुधातुवृद्धिजननीसंसर्पशोषापहा तृषणार्त्तिव्यथनीसमीरशमनीछर्द्यामयध्वंसिनी। पाकेम्लाखुरसारसेनमधुराशीताचवीर्य्येणसा संपक्वाविहिताज्वरेचकफजेविण्मूसंशोधनी॥

अर्थ--दाख--धातुवर्द्धक, शोषनाशक, प्यासको हरनेवाली, वातको दूर करनेवाली, वमनरोगनाशक, पचनेमें अम्ल, सुरस, मधुर, शीतवीर्य्य, ज्वर और कफको हरनेवाली मूत्र और मलको शोधनेवाली है।

द्राक्षाफलंमधुरमम्लकषाययुक्तं क्षारणेपित्तमरुतांकफहारिशीघ्रम् ॥ श्रेष्ठंनिहन्तिरुधिरामयदाहशोषमूर्च्छाज्वरश्वसनकासविनाशकारि ॥

अर्थ--दाख,-मधुर, खट्टी, कषेली और किसी क्षारके साथ पित्त वात और कफका नाश करे है। उत्तम तथा रुधिररोग, दाह, शोष, मूर्च्छा, ज्वर, श्वास और खाँसीको दूर करे है।

गोस्तनीगुणाः ।

द्राक्षातुगोस्तनीशीताहृद्यावृष्यागुरुर्मता । वातानुलोमनीस्निग्धाहर्षदाश्रमनाशिनी ॥ दाहमूर्च्छाश्वासकासकफपित्तज्वरापहा। रक्तदोषंतृषांवातंहृद्व्यथांचैवनाशयेत्॥

अर्थ--कालीदाख--शीतल, हृदयको हितकारी वीर्य्यवर्द्धक भारी, वातानुलोमन, स्निग्ध, हर्षजनक तथा श्रम, दाह, मूर्च्छा, श्वास, खाँसी, कफ, पित्त ज्वर रुधिरविकार, तृषा, वात और हृदयकी व्ययाको हरनेवाली है।

लघुद्राक्षागुणाः

लघ्वी द्राक्षातुमधुराशीतावृष्यारुचिप्रदा। अम्लारसालघ्वीप्रोक्ताश्वासकासज्वरापहा ॥ हृद्व्यथारक्तपित्तघ्नीक्षतक्षयविनाशिनी। स्वरभेदंतृषांवातंपित्तंचैवविनाशयेत्॥ तिक्ततांचमुखस्यापिनाशयेदितिकीर्त्तिता।

अर्थ-किलमिस-मधुर, शीतल, वीर्यवर्द्धक, रुचिप्रद, खट्टी, रसाल तथा श्वास, खाँसी, ज्वर, हृदयकी पीडा, रक्तपित्त, क्षतक्षय, स्वरभेद, तृषा, वात, पित्त और मुखके कडवेपनको दूर करे है ।

विवरण। दाख--काली, लाल और किसमिस इत्यादि अनेक जातिकी है, इसकी उत्पत्ति काबुल तथा देशांतरोंमें होती है, दूसरे प्रकारकी दाख इस देशमें भी होती है, इसके पत्ते हाथके आकारके होते हैं, फल गुच्छोंमें लगते हैं।

मण्डपीनामानि ।

भूशिम्बिकारक्तबीजात्रिबीजास्नेहबीजका ।
मण्डपीभूमिजाभूस्थातथाभूचणकास्मृता ॥

अर्थ-भूशिम्बिका, रक्तबीजा, त्रिबीजा, स्नेहबीजका, मण्डपी, भूमिजा, भूस्था, भूचणका ।

संस्कृतभाषामें	मण्डपी ।
हिन्दीभाषामें	मूँगफली ।
मराठीभाषामें	भुईमुगाच्याशेंगा ।
गुजरातीभाषामें	मांडवी ।
अंग्रेजीभाषामें	ग्राउंड्नट् पिनट् । Groundnut peanut
लैटिन्भाषामें	आरेकीस हायपोजिया । Arachis hypoicea
फारसीभाषामें	मुलीयन् बेल ।
अरबीभाषामें	शंपवान ।

अस्य गुणाः ।

मण्डपीमधुरास्निग्धावातलाकफकारिका ।
ग्राहिकाबद्धवर्च्चाश्चतत्तैलंतद्गुणंस्मृतम् ॥

अर्थ-मूँगफली; मधुर, स्निग्ध, बादी, कफकारक, मलरोधक, मलको बांधनेवाली, उसके तेलके गुण इसके समान जानने ।

काजूतकनामानि ।

काजूतकोवृत्तपत्रोगुच्छपुष्पश्चपार्वती ।
स्निग्धपीतफलश्चैवपृथग्बीजोह्यरुष्करः ॥

अर्थ-काजूतक, वृत्तपत्र, गुच्छपुष्प, पार्वती, स्निग्धपीतफल, पृथग्बीज अरुष्कर (अग्निकृत्, उपपुष्पिका)

संस्कृतभाषामें काजूतक ।
मराठीभाषामें काजूचें झाड ।
गुजरातीभाषामें काजुकलिया ।
तैलङ्गीभाषामें गतमामोड, जिडिमामेडी ।
अंग्रेजीभाषामें केश्युनट्। Casheunut
लैटिन्भाषामें एनाकार्डियं ओक्सिडेन्टेली । Anacordium Occedentaly
फारसीभाषामें बादामफिरंगी ।

अस्य गुणाः ।

काजूतकस्तुतुवरोमधुरोष्णोलघुःस्मृतः । धातुवृद्धि करोवातकफगुल्मोदरज्वरान् ॥ कृमिव्रणाग्निमांद्यानिकु ष्ठंचश्वेतकुष्ठकम् । संग्रहण्यर्शआनाहान्नाशयेदितिकी र्त्तितः ॥ (नि. र.)

अर्थ-काजूतक-कषेला, मधुर, गरम, हलका, धातुवर्द्धक तथा वात, कफ; गुल्म, उदररोग, ज्वर, कृमि, व्रण, मंदाग्नि, कुष्ठ, श्वेतकुष्ठ, संग्रहणी, बवासीर और अफारेको दूर करनेवाला है ।

विवरण । काजूतकके वृक्ष--दक्षिण और गुजरातमें अधिकतासे होते हैं पत्ते-लम्बे और गोल, फूल--सफेद और लाली लिये झुमखोंमें आते हैं फल--सफरीके समान होता है ।

जम्बूनामानि ।

जम्बूस्तुसुरभिपत्रानीलफलाश्यामलामहास्कन्धा । राजार्हराजफलाशुकप्रियामेघमोदिनीचनवाहा ॥

अर्थ- जम्बू, सुरभिपत्रा, नीलफला, श्यामला, महास्कन्धा, राजार्हा, राजफला, शुकप्रिया, मेघमोदिनी, (जम्बु, जम्बुल)

महाजम्बूनामानि ।

महाजम्बूराजजम्बूःस्वर्णमातामहाफला । शुकप्रियाकोकिलेष्टामहानीलाबृहत्फला ॥

अर्थ-महाजम्बू, राजजम्बू, स्वर्णमाता, महाफला, शुकप्रिया, कोकिलेष्टा, महानीला, बृहत्फला, (महापत्रा, फलेंद्र, नन्द, सुरभिपत्रा

क्षुद्रजम्बूनामानि ।

क्षुद्रजम्बूर्दीर्घपत्रासूक्ष्मकृष्णफलातथा ॥

अर्थ-क्षुद्रजम्बू, दीर्घपत्रा, सूक्ष्मकृष्णफला (मध्यमा)

काकजम्बूनामानि ।

काकजंबूःकाकफलानादेयीकाकवल्लभा ।
भृंगेष्टाकाकनीलाचध्वांक्षजंबूर्घनप्रिया ॥

अर्थ-काकजम्बू, काकफला, नादेयी, काकवल्लभा, भृंगेष्टा काकनीला, ध्वांक्षजम्बू, घनप्रिया ।

भूमिजम्बूनामानि ।

अन्याचभूमिजम्बूर्ह्रस्वफलाभृंगवल्लभाह्रस्वा ।
भूजम्बूर्भ्रमरेष्टापिकभक्षाकाष्ठजम्बूश्च ॥

अर्थ-भूमिजम्बू, ह्रस्वफला, भृंगवल्लभा, ह्रस्वा, भ्रमरेष्टा, पिकभक्षा, काष्ठजम्बू (सूक्ष्मपत्रा, जलजाम्बुका)

संस्कृतभाषामें	जम्बू, महाजम्बू, क्षुद्रजम्बू ।
हिन्दीभाषामें	जामुन, बडीजामुन, फरेंद्र, छोटीजामुन ।
वंगभाषामें	जामगाछ, वडजाम, क्षुद्रेजाम, वनजाम ।
मराठीभाषामें	थोर जांभूळ, नदीजांभूळ ।
कोंकणीभाषामें	राजिले ।
गुजरातीभाषामें	राजजाम्बु, रावणां वेलरोपाजाम्बु, डुंगरिजाम्बु ।
कर्णाटकीभाषामें	निरलु, दोदुनिरलु ।
तैलङ्गीभाषामें	पेद्दानेरडि, नीरनेरडि ।
अंग्रेजीभाषामें	जांबीरट्री Jambir tree
लेटिन्भाषामें	युजिनिया जाम्बोलेना Eugenia Jambolana

सिझिझियम् जांबोलेनम् Syzyzyum Jambolanum

जम्बुगुणाः ।

जम्बूवृक्षस्तुतुवरोग्राहीमधुरपाचकः । मलस्तम्भकरोरुक्षोरुचिकृतिपित्तदाहहा ॥ अम्लःकण्ठचःकृमिश्वासशोषातीसारकासहा । रक्तदोषंकफंचैवव्रणंचैवविनाशयेत् ॥ फलंचतुवरंचाम्लंमधुरंशीतलंमतम् । रुच्यंरूक्षंग्राहकंचले

खनंकंठदूषकम् ॥ मलस्तम्भकरंवातकारकंकफपित्तनुत्। आध्मानकारकंप्रोक्तंपूर्ववैद्यैर्मनीषिभिः ॥

अर्थ-जामुनकी छाल-कषेली, मलरोधक, मधुर, पाचक, मलस्तम्भक, रूक्ष, रुचिकारक तथा पित्त और दाहको दूर करे है, खट्टी, कंठको हित-कारी तथा कृमि, श्वास, शोष, अतिसार, खाँसी, रक्तदोष, कफ और व्रण इनका नाश करे है। इसके फल-कषेले, मधुर, शीतल, रुचिकारक, रूक्ष, मलरोधक, कंठदूषक, मलस्तम्भक, वातवर्द्धक, कफपित्तनाशक और अफा-रेको करनेवाले हैं।

अन्यच्च ।

जांबवंगुरुविष्टम्भिकषायंस्वादुशीतलम् ।
अग्निसंदूषणंरूक्षंवातलंकफपित्तजित् ॥ (रा.)

अर्थ-जामुनका फल-भारी, विष्टंभकारक, कषेला, स्वादिष्ठ, शीतल, अग्निदूषक, रूखा, बादी तथा कफ और पित्तनाशक है।

राजजम्बूगुणाः ।

राजजम्बूतुमधुराचोष्णाचतुवरामता। स्वर्यामलस्तम्भक-रीश्वासशोषश्रमापहा ॥ मुखजाड्यातिसारघ्नीकफकास विनाशिनी । फलंचास्यास्तुरुचिदंमधुरंस्तम्भकंगुरु ॥ दोषनाशकरंस्वादुऋषिभिःपरिकीर्तितम् ।

अर्थ--राजजामुन--मधुर, गरम, कषेली, स्वरशोधक, मलस्तम्भक तथा श्वास, शोष, श्रम, मुखकी जडता, अतिसार, कफ, और खाँसीको हरने-वाली है। इसके फल—रुचिकारक, मधुर, स्तम्भक, भारी, दोषनाशक और स्वादिष्ठ हैं।

जलजम्बूगुणाः ।

जलजम्बूतुतुवराशीतातिक्तगुरुःस्मृता । पाकेचमधुराचा-म्लापुष्टिकृद्ग्राहिणीमता ॥ वीर्यवृद्धिकरीबल्याश्रमदाहाति-सारहा । रक्तदोषंकफंपित्तंव्रणंचैवविनाशयेत ॥

अर्थ--जलजामुन- कषेली, शीतल, कडवी, भारी, पाकमें मधुर, अम्ल, पुष्टिकारक, मलरोधक, वीर्यवर्द्धक, बलकारक तथा श्रम, दाह, अतिसार, रुधिरविकार, कफ, पित्त और व्रणको दूर करनेवाली है।

क्षुद्रजम्बूगुणाः ।

क्षुद्रजम्बूतुतुवराहृद्याचमधुरामता । वीर्य्यप्रदाग्राहिणीच पुष्टिकृत्कफपित्तहा ॥ हृद्रोगंकंठरोगंचदाहंचैवविनाशयेत ॥ अस्याःफलगुणाःप्रोक्ताराजजम्बूफलैःसमाः ॥ नि. र.)

अर्थ-छोटी जामुन-कषेली, हृदयको हितकारी, मधुर, वीर्य्यवर्द्धक, मलरोधक, पुष्टिकारक, कफपित्तनाशक तथा हृदयरोग, कण्ठरोग और दाहको दूर करे है । इसके फलोंके गुण राजजामुनके फलके समान जानने ।

जम्बूफलमज्जागुणाः ।

तन्मज्जामधुराग्राहीविशेषान्मधुमेहहा ।
तदंकुराहिमारूक्षाग्राहकाध्मानकारकाः ॥

अर्थ-जामुनकी मींग-मधुर, मलरोधक और विशेषकरके मधुमेहको हरे है । इसके अंकुर-शीतल, रूखे, ग्राही और आध्मानकारक हैं ।

विवरण । जामुनके वृक्ष-तीन चार प्रकारके होते हैं, एक नदीके निकट होते हैं, जिनके पत्ते कनेरके समान होते हैं उनको नदी जामुन कहते हैं, दूसरी बडी जामुन होती है, उसके पत्ते पीपलकेसे होते हैं, उसको जमुना कहते हैं, तीसरी साधारण जामुन होती है, उसके पत्ते आमकेसे होते हैं, फल मध्यम जातिका होता है, कच्ची अवस्थामें हरी २ होती है और पकनेपर उसका रंग वैजनी हो जाताहै, फूलके स्थानमें जामुनपर मौरही आता है ।

इति फलवर्गः समाप्तः ।

इति श्रीशालिग्रामनिघण्टुभूषणे फलवर्गः ॥ ५ ॥

वटादिवर्गः ।

वटनामानि ।

वटोरक्तफलःशृङ्गीन्यग्रोधःस्कन्धजोध्रुवः ।
क्षीरीवैश्रवणावासोबहुपादोवनस्पतिः ॥

अर्थ-वट, रक्तफल, शृङ्गी, न्यग्रोध, स्कन्धज, ध्रुव, क्षीरी, वैश्रवणावास, बहुपाद, वनस्पति (नन्दी, शुङ्ग, बृहत्पाद, वैश्रवणालय, वैश्रवणोदय, वृक्षनाथ, यमप्रिय, कर्म्मज, भाण्डीर, जटाल, रोहिण, अवरोही, विटपी,

स्कन्धरुह, मण्डली, महच्छाय, भृङ्गी, यक्षावास, यक्षतरु, पादरोहण, नील, शिफारुह, बहुपात्, जटिल, जटी)

संस्कृतभाषामें	वट।
हिन्दीभाषामें	वड।
वंगभाषामें	वट।
मराठीभाषामें	वड।
गुजरातीभाषामें	बड।
कर्णाटकीभाषामें	आल।
तैलिंगीभाषामें	मर्रिचेट्टु, मारि, पेडिमरि।
तामिलीभाषामें	आल।
औत्कलीभाषामें	वोरु।
अंग्रेजीभाषामें	बनीयन्ट्री। Banyantree
लैटिन्भाषामें	फाईकस् इन्डिकस्। Ficus indicus
फारसीभाषामें	दरखितरेशा, वडवाई, ऐशाएबगर्द।
अरबीभाषामें	जातुद्बाइबथआब।

अस्य गुणाः।

वटःशीतोगुरुर्ग्राहीकफपित्तव्रणापहः।
वर्ण्योविसर्पदाहघ्नःकषायोयोनिदोषहृत्॥ (भा. प्र.)

अर्थ--वड-शीतल, भारी, मलरोधक, कफ और पित्तनाशक, व्रणनाशक, वर्णको सुन्दर करनेवाला, विसर्परोगनाशक, दाहनिवारक और योनिदोषको दूर करे है।

अन्यच्च।

वटःकषायमधुरःशिशिरःकफपित्तजित्।
ज्वरदाहतृषामोहव्रणशोफापहारकः॥ (रा. ज.)

अर्थ--बड--कषेला, मधुर, शीतल, कफपित्तनाशक तथा ज्वर, दाह, तृषा, मोह, व्रण और सूजनको दूर करे हैं।

अपिच।

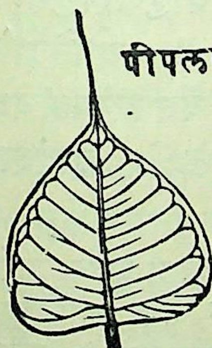
वटोरूक्षोहिमोग्राहीछर्दिघ्नोयोनिदोषजित्।
वर्ण्योमूर्च्छाविसर्पघ्नःकफपित्तहरोगुरुः॥ (ध० नि०)

अर्थ--वड--रूखा, शीतल, मलरोधक, वमननिवारक, योनिदोषहारक, वर्णको सुन्दर करनेवाला, भारी तथा मूर्छा, विसर्प और कफपित्तको दूर करे है।

विवरण। वडका वृक्ष महाविशाल होता है, इसके पत्तेभी लम्बे चौड़े होते हैं, फल छोटे २ झडबेरके बराबर आते हैं। इसकी शाखाओंमेंसे लाल लाल अंकुर निकलते हैं, जब वह बढजाते हैं उसको वटकी डाढी कहतेहैं, वह इतनी बढजाती है कि, लटकती २ पृथ्वीमें आकर जमजाती है। जहाँ जहाँ वह डाढी जमजाती है वहां २ वडके वृक्ष हो जातेहैं, इस प्रकार एक वडकी अनेक जडें होतीहैं परन्तु यह सब वास्तवमें एकही हैं और परस्पर मिली-हुई होतीहैं ऐसेही यह बढते २ उस वढका बीघोंमें विस्तार होजाता है।

अश्वत्थनामानि।

पीपलकापत्र



बोधिद्रुःपिप्पलोऽश्वत्थश्चलपत्रोगजाशनः

अर्थ-बोधिद्रु, पिप्पल, अश्वत्थ, चलपत्र, गजाशन, (केशवालय, चैत्यद्रु, बोधितरु, कृष्णावास, चैत्यवृक्ष, नागबंधु, देवात्मा, महाद्रुम कपीतन, बोधिद्रुम, चलदल, कुञ्जराशन, अच्युतावास, पवित्रक, शुभद, बोधिवृक्ष, याज्ञिक, गजभक्षक, श्रीमान्, क्षीरद्रुम, विप्र, मङ्गल्य, श्यामल, गुह्यपुष्प, सेव्य, सत्य, शुचिद्रुम, धनुर्वृक्ष)

संस्कृतभाषामें	अश्वत्थ।
हिन्दीभाषामें	पीपलवृक्ष।
वंगभाषामें	अश्वत्थ, आशोतगाछ।
मराठीभाषामें	पिंपळ।
गुजरातीभाषामें	पीपळो।

कर्णाटकीभाषामें अरली।
तैलिङ्गीभाषामें राईचेट्टु, कुलुजुव्विचेट्टु।
अंग्रेजीभाषामें पोप्लरलीव्ड फिग्ट्री। Poplar leaved figtree.
लैटिन्भाषामें फाईकस् रिलिजियोझा। Ficus Religiosa.
फारसीभाषामें दरखतलरजां।

अस्या गुणाः।

पिप्पलोदुर्जरःशीतःपित्तश्लेष्मव्रणास्रजित्।
गुरुस्तुवरकोरूक्षोवर्ण्योयोनिविशोधनः॥ (भा. प्र.)

अर्थ--पीपल--दुर्जर, शीतल, पित्त, श्लेष्म, व्रण, और रुधिरके विकारोंको दूर करे है। भारी, कषेला, रूखा, वर्णको सुंदरतादायक और योनिशोधक है।

अपिच।

अश्वत्थोमधुरःशीतःकषायोदुर्जरोगुरुः। रूक्षोवर्ण्यस्तिक्तःकश्चयोनिशोधनकारकः॥ योनिदोषंरक्तदोषंदाहपित्तकफाञ्जयेत्। व्रणंचनाशयत्येवफलंपक्वंचशीतलम्॥ हृद्यंरक्तरुजंपित्तंविषंदोषंचनाशयेत्। दाहंवान्तिंचशोषंचह्यरुचिं चैवनाशयेत् (नि. र.)

अर्थ--पीपल--मधुर, शीतल, कषेला, दुर्जर, भारी, रूखा, वर्णको उज्वल करनेवाला, कडवा, योनिशोधक तथा योनिदोष, रुधिरदोष, दाह, पित्त, कफ और व्रणको दूर करनेवाला है। इसके पक्के फल--शीतल हृदयको हितकारी तथा रक्तरोग, पित्त, विष, दाह, वमन, शोष और अरुचिको दूर करनेवाले हैं।

विवरण। पीपलका वृक्ष--बहुत बड़ा होता है, यह वृक्ष ग्राम और नगरोंमें बहुत होते हैं; वनोंमें बहुत कम होते हैं, इसके पत्ते--गोल और अनीदार डालियोंपर लगते हैं, यहपत्ते सदैव हिलते रहते हैं इसपर भी छोटे अंकुर होते हैं, फल भी पत्तोंकी जडमें छोटे झडबेरकी तुल्य लगते हैं, उनको पिपलौति कहते हैं, इसकी शाखाओंपर लाखभी आती है, परन्तु सदैव नहीं कोई समय पाकर यह वृक्ष बहुत श्रेष्ठ और पवित्र है, ऋषि मुनियोंने इसको पूजनके योग्य समझ रक्खा है।

पारीशपिप्पलनामानि

पारीशोन्योफलीशश्चकपिचूतःकमण्डलुः।

गर्द्दभांडःकन्दरालःकपीतनःसुपार्श्वकः ॥

अर्थ--पारीश, फलीश, कपिचूत, कमण्डलु, गर्दभाण्ड, कंदराल, कपीतन, सुपार्श्वक ।

संस्कृतभाषामें	रीश ।
हिन्दीभाषामें	पारिसपीपल, गजदंड ।
वंगभाषामें	गजशुंडी ।
मराठीभाषामें	पारसपिंपळ भेंड । को० मणेरवृक्ष ।
गुजरातीभाषामें	पारसपिपलो ।
कर्णाटकीभाषामें	वंगरली ।
तैलङ्गीभाषामें	घेनगाखी, गंगरेय ।
तामिलीभाषामें	पोरिश, पूवरश, सरम् ।
अंग्रेजीभाषामें	हिबिक्सस् Hibixus
लैटिन्भाषामें	थेसपीसीया पोपलनिया । Thaspesia populnea
फारसीभाषामें	यलास बेल्य ।

अस्य गुणाः ।

फलीशोदुर्ज्जरःस्निग्धःकृमिशुक्रकफप्रदः ।
फलोम्लोमधुरोमूलेकषायःस्वादुमज्जकः ॥ (भा. प्र.)

अर्थ--पारिसपीपल- अत्यन्त कठिनतासे पचनेवाला, स्निग्ध, कृमिजनक शुक्रकारक और कफवर्द्धक है । इसके फल--अम्ल । इसकी जडमें मधुरता । इसकी मज्जामें कषेला और मीठापन है ।

अन्यच्च ।

वल्ग्रवृक्षस्तुमधुरोवृष्योम्लस्तुवरोमतः। दुर्जरःकफकृत्स्निग्धः शुक्रलोजंतुकारकः ॥ वातंपित्तंचहृद्रोगदाहंकंठरुजंतथा । नाशयेदितिसंप्रोक्ताःफलमम्लंमधुस्मृतम् ॥ मूलंतुतुवरंज्ञेयं मज्जास्वाद्वीस्मृताबुधैः । (नि. र.)

अर्थ--पारिसपीपल--मधुर, वीर्य्यवर्द्धक, खट्टा, कषेला, अतिकठिनतासे पचनेवाला, कफकारक, स्निग्ध, शुक्रजनक, कृमिकारक तथा वात, पित्त, हृदयरोग, दाह और कंठरोगको दूर करे है । इसके फल--अम्ल और मधुर हैं । इसकी जड--कषेली है । इसकी मज्जा स्वादिष्ठ है ।

विवरण । पारिसपीपलका वृक्ष-पीपलके समान होता है, परन्तु पीपलमें फूल नहीं होते हैं और पारिसपीपलमें भिंडीके समान पीपलफूलभी आते हैं और इसके डोरे भिंडीके आकार होते हैं ।

नन्दीवृक्षनामानि ।

नन्दीवृक्षोऽश्वत्थभेदःप्ररोहीगजपादपः ।
स्थालीवृक्षःक्षयतरुःक्षीरीचस्याद्वनस्पतिः ॥

अर्थ--नन्दीवृक्ष, अश्वत्थभेद, प्ररोही, गजपादप, स्थालीवृक्ष, क्षयतरु क्षीरी, वनस्पति ।

संस्कृतभाषामें	नन्दीवृक्ष ।
हिन्दीभाषामें	वेलियापीपल ।
तेलिङ्गीभाषामें	वट्टिचेट्टु ।

अस्य गुणाः ।

नन्दीवृक्षोलघुःस्वादुस्तिक्तस्तुवरउष्णकः ।
पाकेकटूरसेग्राहीविषपित्तकफास्रनुत ॥ (भा. प्र.)

अर्थ-वेलियापीपल-हलका, स्वादिष्ठ, कषेला, कडवा, गरम, पचनेमें चरपरा, मलरोधक तथा विष, पित्त, कफ और रुधिरके दोषको दूर करे है।

विवरण। वेलिया पीपलभी पीपलका भेद है, इसके पत्ते-बडे २ होते हैं इसकी शाखाओंमेंभी अंकुर होते हैं, इसकी जड बहुत मोटी होती है।

प्लक्षनामानि ।

प्लक्षोजटीपर्कटीचकर्परीचारुदर्शिनी ।
शृङ्गीवरोहशाखीचह्यश्वत्थीपिंपरीवटी ॥

अर्थ-प्लक्ष, जटी, पर्कटी, कर्परी, चारुदर्शिनी, शृङ्गी, वरोहशाखी, अश्वत्थी, पिंपरी, वटी (कमण्डलुतरु, कपीतन, क्षीरी, सुपार्श्व, कमण्डलु, गर्दभाण्ड, पीतन, दृढप्ररोह, प्लवक प्लवङ्ग, महाबल, कन्दराल, पर्कटी, [illegible] जटि, प्लीक्षा)

संस्कृतभाषामें	प्लक्ष, पर्कटी ।
हिन्दीभाषामें	पाखर, पाकर, पिलखन।
वंगभाषामें	पाकुडगाछ ।
मराठीभाषामें	पिंपरी ।

गुजरातीभाषामें पीपर्य ।
कर्णाटकीभाषामें बसुरि)
लैटिन्भाषामें फाईकसविरेन्स । Fielus verance

अस्य गुणाः ।

प्लक्षःकषायःशिशिरोव्रणयोनिगदापहः ।
दाहपित्तकफास्रघ्नःशोफहारक्तपित्तहृत् ॥ (भा. प्र.)

अर्थ-पाखर-कषेला, शीतल तथा व्रण, योनिरोग, दाह, पित्त, कफ, रुधिरविकार, सूजन और रक्त पित्तको दूर करै है ।

अन्यच्च ।

प्लक्षःकटुःकषायश्चशिशिरोरक्तदोषजित् ।
मूर्च्छाभ्रमप्रलापघ्नोह्रस्वपत्रोविशेषतः ।
मूर्च्छाभ्रमप्रलापघ्नोह्रस्वपत्रोविशेषतः ॥

अर्थ-पाखर-कटु, कषाय, शिशिर, रक्तदोषनाशक तथा मूर्च्छा, भ्रम और प्रलापको दूर करनेवाला है । ह्रस्वपत्रवाला पाखर अधिक गुणवाला है

विवरण । पाखरके वृक्ष-बड पीपलकी भाँतिके जंगल और ग्रामोंमें बहुत होतेहैं, पत्ते-लम्बे २ आमकेसे होतेहैं, जब नया वृक्ष लगाना होवाहै तब इसके गुद्देको काटकर लगादेतेहैं, उसीमेंसे हरे २ पत्ते निकलने लगतेहैं, पांच, छे, वर्षमें वैसाही वृक्ष छायादार होजाताहै, इसके सघन वनकी प्रशंसा है कि, ऐसी उत्तम छाया किसी वृक्षकी नहीं होतीहै ।

उदुम्बरनामानि ।



उदुम्बरःक्षीरवृक्षोहेमदुग्धःसदाफलः ।
अपुष्पफलसम्बंधोयज्ञाङ्गःशीतवल्कलः ॥

अर्थ-उदुम्बुर, क्षीरवृक्ष, हेमदुग्ध, सदाफल, अपुष्पफलसंबंध, यज्ञाङ्ग, शीतवल्कल (कृमिकण्ट, कृमिकण्टक, क्रिमिकण्टक, पाणिमुख, पुष्पहीन, जन्तुफल, यज्ञफल, यज्ञोडुम्बर, उडुम्बर, हेमदुग्धक, ब्रह्मवृक्ष, हेमदुग्धी, सुचक्षु, श्वेतवल्कल, कालस्कन्ध, यज्ञयोग्य, यज्ञीय, सुप्रतिष्ठित, शीतवल्क, यज्ञसार, पुष्पशून्य, पवित्रक, सौम्य, शीतफल, जघनेफल)

संस्कृतभाषामें	उदुम्बर ।
हिन्दीभाषामें	गूलर ।
वंगभाषामें	यज्ञडुमुर ।
मराठीभाषामें	उम्बर ।
गुजरातीभाषामें	उंबरो ।
कर्णाटकीभाषामें	अत्ति ।
तैलिङ्गीभाषामें	वाडुचेट्टु ।
अंग्रेजीभाषामें	किगूट्री । Keg tree
लैटिन् भाषामें	फाइकसग्लोमिरेटा । Ficus glomirata
फारसीभाषामें	अंजीरे आदम ।
अरबीभाषामें	जमीझ ।

अस्य गुणाः ।

उदुम्बरःशीतलःस्याद्गर्भसन्धानकारकः । व्रणरोपणकृद्रूक्षोमधुरस्तुवरोगुरुः ॥ अस्थिसन्धानकृद्वर्ण्यःकफपित्तातिसारकान् । योनिरोगंनाशयतिवल्कंचैवास्यशीतलम् ॥ दुग्धदंतुवरंगर्भ्यंव्रणनाशकरंस्मृतम् । कोमलंचास्यचफलंस्तम्भकृत्तुवरंमतम् ॥ हितकारितृषापित्तकफरक्तरुजापहम् । मध्यमंकोमलंस्वादुशीतलंतुवरंमतम् ॥ पित्तंतृषामोदकंरंरक्तस्रुतिवमीहरम् । प्रहारघ्नंसमुद्दिष्टमपक्वंतुवरंमतम् ॥ रुच्यंचाम्लंदीपनंस्यान्मांसवृद्धिकरंमतम् । रक्तरुक्कारकंचवदोषलंचजडंमतम् ॥ तत्पक्वञ्चकषायंस्यान्मधुरंकृमिकारकं

रकम् । जडंरुचिप्रदंचातिशीतलंकफकारकम् ॥ रक्तरुक्पित्तदाहक्षुत्तृषाश्रमप्रमेहहम् । शोषमूर्च्छाहरंप्रोक्तंपूर्वैःस्वेस्वेनिघण्टके ॥ (नि. र.)

अर्थ--गूलर--शीतल, गर्भसन्धानकारक, व्रणको भरनेवाला, रूखा, मधुर, कषेला, भारी, अस्थिसन्धानकारक, वणको उज्ज्वल करनेवाला तथा कफ, पित्त, अतिसार और योनिरोगका नाश करे है । उसकी छाल अत्यन्त शीतल, दुग्धवर्द्धक, कषेली, गर्भको हितकारी और व्रणविनाशक है । इसके कोमल फल-स्तम्भक, कषेले, हितकारी तथा तृषा, पित्त, कफ और रुधिरके रोगोंका नाश करे है । मध्यम कोमल फल- स्वादु, शीतल, कषेले, पित्त, तृषा और मोहकारक तथा रक्तस्राव, वमन और प्रदररोगनाशक हैं । इसके तरुणफल--कषेले, रुचिकारक, अम्ल, दीपन, मांसवर्द्धक, रुधिरको बिगाडनेवाले, दोषजनक और जड हैं । इसके पके फल--कषेले, मधुर, कृमिकारक, जड, रुचिकारक अत्यंत शीतल, कफकारक तथा रुधिरविकार, पित्त, दाह, क्षुधा, तृषा, श्रम, प्रमेह, शोष और मूर्च्छाको हरनेवाले हैं ।

नद्युदुम्बरनामानि ।

नद्युदुम्बरिकाचान्यालघुपत्रफलातथा ।
लघुहेमदुग्धाप्रोक्तालघुपूर्वसदाफला ॥

अर्थ--नद्युदुम्बरिका, लघुपत्रफला, लघुहेमदुग्धा, लघुपूर्वसदाफला ।

अस्य गुणाः ।

नद्युम्बरीगुणैःसर्वैःसदृशातुमताबुधैः ।
रसवीर्य्यविपाकेषुकिञ्चिन्न्यूनाचपूर्वतः ॥

अर्थ--नदीके निकटका गूलर--गूलरकेही समान गुणवाला है तथा रस, वीर्य और विपाकमें किंचित् हीन है ।

काकोदुम्बरिकानामानि ।

उदुम्बरफलाचैवकर्कशच्छदनाऽसुमा ।
काकोदुम्बरिकाज्ञेयाक्षीरीचखरपत्रिका ॥

अर्थ--उदुम्बरफला, कर्कशच्छदना, असुमा, काकोदुम्बरिका, क्षीरी, खरपत्रिका (कृष्णोदुम्बरिका, खरपत्रि, राजिका, क्षुद्रोदुम्बरिका, कुष्ठघ्नी,

फल्गुवाटिका, अजाजी, फल्गुनी, मलयू, चित्रभेषजा, ध्वांक्षनाम्नी, फल्गु, जघनेफला, बहुफला, खरदला, मलयु, फल्गुफला, काकोडुम्बर, काकोडुम्बरिका, अजाक्षी, भद्रोदुम्बरिका)

संस्कृतभाषामें	काकोदुम्बरिका ।
हिन्दीभाषामें	कठूमर ।
वंगभाषामें	काकडुमुर ।
मराठीभाषामें	काळाउम्बर, बोखाडा ।
गुजरातीभाषामें	टेडउम्बरो ।
कर्णाटकीभाषामें	काअत्ति ।
तैलिङ्गीभाषामें	ब्रह्ममेडिचेट्टु, काकी वाडुचेट्टु ।
अंग्रेजीभाषामें	किगट्री । Keg tree
लैटिन्भाषामें	फाइकस् ओपोझिटि फोलिया । Ficus opposeti folia फाइकस् हिस्पिडा । F. Hispida
फारसीभाषामें	अंजिरदश्ती ।
अरबीभाषामें	तनबर्रि ।

अस्या गुणाः ।

मलपूस्तम्भकृत्तिक्ताशीतलातुवराजयेत् ।
कफपित्तव्रणश्वित्रकुष्ठपाण्ड्वर्शकामलाः ॥ (भा. प्र.)

अर्थ-कठूमर--स्तम्भक, शीतल, कषेला तथा कफ, पित्त, व्रण, श्वित्रकुष्ठ, पाण्डुरोग, बवासीर और कामलारोगको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

काकोदुम्बरिकाशीताकषायादद्रुघातिनी ।
रक्तातिसारहन्त्रीचमुखनासास्रघातिनी ॥ (शो. नि.)

अर्थ-कठूमर--शीतल, कषेला तथा दाह, रक्तातिसार, मुख और नासिकासे रुधिरके गिरनेको दूर करे है ।

अपिच ।

काकोदुम्बरिकाशीतातिक्ताम्लास्तम्भकाकटुः । तुवराग्राहिणीप्रोक्ताचेन्द्रियाणांप्रसादका ॥ त्वग्दोषकामलापित्तरक्तपित्तकफाञ्जयेत । श्वेतकुष्ठंव्रणंपाण्डुंरक्तरोगंचशोथकम् ॥

दुर्नामानंचोर्द्ध्वदोषंनाशयेदितिकीर्तितम् । फलमस्याःस्वादुशीतंतुवरंतृप्तिकारकम् ॥ गुरुधातुवृद्धिकरं पाके च मधुरं स्मृतम् । स्निग्धंमलस्तम्भकरंपौष्टिकग्राहिवातलम् ॥(नि. र.)

अर्थ-कठूमर-शीतल, कडवा, अम्ल, मलस्तम्भक, कटु, कषेला, ग्राही, इन्द्रियप्रसादक तथा त्वग्दोष, कामला, पित्त, रक्तपित्त, कफ, श्वेतकुष्ठ, व्रण, पाण्डुरोग, रुधिरविकार, सूजन, बवासीर और ऊर्ध्वगत दोषको दूर करे है। इसके फल- स्वादु, शीतल, तृप्तिकारक, भारी, धातुवर्द्धक, पचनेमें मधुर, स्निग्ध, मलस्तम्भकारक, पुष्टिजनक और मलरोधक है।

विवरण । गूलर अर्थात् उदुम्बर और कठूमरका बडा वृक्ष होता है, इसपर फूल नहीं आते, इसकी शाखाओंमेंसे फल उत्पन्न होते हैं,फल गोल २ अंजीरके समान होते हैं, और इसमेंसे दूध निकलता है, इसके पत्ते-लमेडेकेसे होते हैं, नदी उदुम्बरके पत्ते गूलरके पत्तोंसे छोटे और फलभी छोटे होते हैं, कठूमरके पत्ते गूलरके पत्तोंसे बडे हैं बरन् गंगेरनके पत्तोंके समान होते हैं। इसके पत्तोंको छूनेसे हाथोंमें खुजली होने लगती है और पत्तोंमें दूध निकलता है।

शिरीषनामानि ।

शिरीषोभण्डिलोभण्डीभण्डीरश्चकपीतनः ।
शुकपुष्पःशुकतरुर्मृदुपुष्पःशुकप्रियः ॥

अर्थ-शिरीष, भण्डिल, भण्डी, भण्डीर, कपीतन, शुकपुष्प, शुकतरु, मृदुपुष्प, शुकप्रिय (कर्णपूर, शुकद्रुम, भण्डील, भण्डिर,मूर्द्धपुष्प, विषघाती, विपनाशन, शीतपुष्प, भण्डिक, स्वर्णपुष्पक, शुकेष्ट, बर्हपुष्प, विषहन्ता, सुपुष्पक, उद्दानक, सुकृतरु, लोमशपुष्पक, कपीतक, कलिंग, श्यामल, शंखिनीफल, मधुपुष्प, वृत्तपुष्प, शिखिनीफल, प्लवग, श्यामवर्ण)

संस्कृतभाषामें	शिरीष ।
हिन्दीभाषामें	सिरस ।
बङ्गभाषामें	शिरीषगाछ, चट्का ।
मराठीभाषामें	शिरसी ।
गुजरातीभाषामें	शिरीष, शरषडो ।
कर्णाटकीभाषामें	शिरसु ।

तैलिंगीभाषामें	दिरसन, शिरीषंमानु ।
लैटिन्भाषामें	आलवीझियालेबेक् । Albizzia lebbek
	आलवीयमरा A. amara
फारसीभाषामें	दरखते जकरिया, तुख्मेदरखतेजकरिया।
अरबीभाषामें	सुलतानुल् असजार, हबेसुलतानुल् असजार।

अस्य गुणाः ।

शिरीषःकटुकःशीतोविषवातहरःपरः ।
पामास्रकुष्ठकण्डूतित्वग्दोषस्यविनाशनः ॥ (रा. नि.)

अर्थ–सिरस–कटु, शीतल तथा विष, वात, पामा, रुधिरविकार, कुष्ठ, कण्डू और त्वचाके दोषोंको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

शिरीषोर्शोविषस्वेदत्वग्रुक्छोफविसर्पनुत् । (शा. नि.)

अर्थ–सिरस–बवासीर,विष, पसीना, त्वचाके दोष, सूजन और विसर्पको दूर करे है ।

अपिच ।

शिरीषोमधुरोऽनुष्णस्तिक्तश्चतुवरोलघुः ।
दोषशोथविसर्पघ्नःकासव्रणविषापहः ॥ (भा. प्र.)

अर्थ–सिरस–मधुर, अनुष्ण, कड़वा, कषेला, हलका तथा दोष, सूजन, विसर्प, खांसी, व्रण और विषको हरनेवाला है ।

विवरण । सिरसके वृक्ष–बडे २ ऊंचे और सघन जंगलोंमें होते हैं, पत्ते–आमलेके समान छोटे २ और डालियोंमें बराबर लगते हैं, फूल–छोटे २ तन्तुओंसे सुसज्जित अत्यन्त कोमल हरे २ कुछ पीले २ सुगन्धयुक्त बहुत सुन्दर होते हैं, फली पतली चपटी तीन चार आठ अंगुलतक लम्बी एक पौन अंगुलसे ज्यादे चौडी, भीतर उसके भूरे रंगके बीज होते हैं एक फलीमें दश बीजका प्रमाण है ।

शिंशपानामानि ।

शिंशपाकृष्णसाराचपिपलायुगपत्रिका ।
पिच्छलाधूम्रिकावीराकपिलागुरुशिंशपा ॥

अर्थ–शिंशपा, कृष्णसारा, पिपला, युगपत्रिका, पिच्छला, धूम्रिका, बीरा, कपिला, अगुरुशिंशपा (अगुरु, पिच्छिला, युग्मपत्रिका, कान्तुसार्य्य, श्यामा, धीरा, मंडलपत्री, तीव्रधूमका)

श्वेतशिंशपानामानि ।

शिंशपान्याश्वेतपत्रासिताह्वादिश्वशिंशपा ॥

अर्थ-श्वेतशिंशपा, श्वेतपत्रा, सितशिंशपा ।

कपिलशिंशपानामानि ।



कपिलाशिंशपाचान्यापीताकपिलशिंशपा ।
सारिणीकपिलाक्षीचभस्मगर्भाकुशिंशपा ॥

अर्थ-कपिलशिंशपा, पीता, कपिला, सारिणी, कपिलाक्षी, भस्मगर्भा, कुशिंशपा)

संस्कृतभाषामें	शिंशपा, श्वेतशिंशपा, कपिलशिंशपा ।
हिंदीभाषामें	सीसम, सफेदसीसो, कपिलवर्णसीसम ।
वङ्गभाषामें	शिशुगाछ, शादाशिशुगाछ, कपिलपत्रशिशुगाछ ।
मराठीभाषामें	काळाशिसवा ।
गुजरातीभाषामें	शिशम ।
कर्णाटकीभाषामें	करीबइबिड्डु, विलीबइबिड्डु, हौंवदबिड्डु ।
ते०	जिट्टरेगुचेट्टु ।
तामिलीभाषामें	जातुक्कुकट्टइ, पंशकेदर ।
अंग्रेजीभाषामें	ब्लॉक्वुड सीस्ट्री । Black wood Sisoo tree
लेटिन्भाषामें	डायबरजिया लेटिफोलिया । Dalbergia latifolia
अरबीभाषामें	सासम ।

शिंशपागुणाः ।

शिंशपाकटुकातिक्ताकषायाशोषहारिणी ।
उष्णवीर्य्याहरेन्मेदःकुष्ठश्वित्रवमिकृमीन् ॥

वस्तिरुग्व्रणदाहास्रबलासान्गर्भपातिनी । (भा. प्र.)

अर्थ-सीसम-कटु, तिक्त, कषाय, शोषनाशक, उष्णवीर्य्य तथा मेद, श्वित्रकुष्ठ, वमन, कृमि, वस्तिरोग, व्रण, दाह, रुधिरविकार और कफको हरनेवाला है तथा गर्भको गिरानेवाला है ।

अन्यच्च ।

शिंशपादद्रुशोफघ्नीकुष्ठजीर्णज्वरापहा ।

अर्थ-सीसम-दाह, सूजन, कोढ, अजीर्ण और ज्वरको हरनेवाला है।

अन्यच्च ।

श्यामादिशिंशपातिक्ताकटूष्णाकफवातजित् ।
कुष्ठाजीर्णहरादीप्याशोफातीसारहारिणी ॥

अर्थ-सीसम कडवा, चरपरा, गरम, अग्निप्रदीपक तथा कफ, वात, कुष्ठ, अजीर्ण, सूजन और अतीसारको दूर करे हैं ।

श्वेतशिंशपागुणाः ।

श्वेतादिशिंशपातिक्ताशिशिरापित्तदाहनुत् ।

अर्थ-सफेद सीसम-कडवा, शीतल तथा पित्त और दाहको दूर करे है।

कपिलशिंशपागुणाः ।

कपिलाशिंशपातिक्ताशीतवीर्य्याश्रमापहा ।
वातपित्तज्वरघ्नीचच्छर्दिहिक्काविनाशिनी ॥

अर्थ-भूरेरंगका सीसम-कडवा, शीतवीर्य, श्रमनाशक तथा वात, पित्त, ज्वर, वमन और हिचकीको दूर करेहै ।

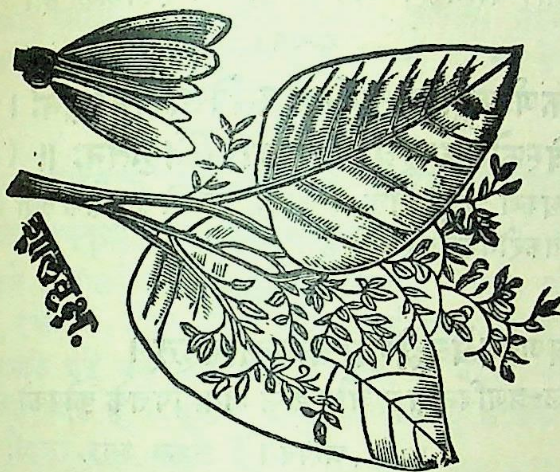
त्रिविधशिंशपागुणाः ।

शिंशपात्रितयंवर्ण्यंहिमंशोफविसर्पजित् ।
पित्तदाहप्रशमनंबल्यंरुचिकरंपरम् ॥ (रा. नि.)

अर्थ-तीनों प्रकारके सीसम-वर्णको सुन्दर करनेवाले, शीतल, बलवर्द्धक, रुचिजनक तथा सूजन, विसर्प, पित्त और दाहको शान्त करें हैं ।

विवरण । सीसमके वृक्ष बहुत बडे २ जंगलमें होते हैं, पत्ते गोल नोकदार बेरीकी बराबर होते हैं, फूल बहुत छोटे २ गुच्छोंमें लगते हैं, फली बहुत पतली और चपटी होतीहैं, उसमें छोटे २ चपटे बीज निकलते हैं, सीसमकी लकडी कुछ श्यामता और ललाई लिये भूरेरंगकी होती है, दूसरा रंगका सीसमभी इसीप्रकारका होता है ।

सालनामानि ।



सालस्तुसर्ज्जकार्याऽश्वकर्णिकासस्यसम्बरः ।

अर्थ--साल, सर्ज्जकार्य, अश्वकर्णिका सस्यसम्बर, (अश्वकर्णक, शस्यसम्बर, उपमेत, दीर्घशाख, जलदाशन, लतातरु, लताशंख, शंकुतरु, शंकुवृक्ष, सर्ज, सर्जरस, कल, कललजोद्भव, वल्लीवृक्ष, चीरपर्ण, रालकार्य्य, अजकर्णक, वस्तकर्ण, कषायी, ललन, गन्धवृक्षक, वंश, रालनिर्य्यास, दिव्यसार सुरेष्टक, शूर, अग्निवल्लभ, यक्षधूप, सिद्धक, जरणद्रुम, ताक्ष्यंप्रसव, धन्य, दीर्घपर्ण, कुशिक, कौशिक)

संस्कृतभाषामें	साल, अश्वकर्ण ।
हिन्दीभाषामें	साल, सखुया, सांखु ।
बंगलाभाषामें	शालगाछ, लताशाल ।
मराठीभाषामें	राळेचा वृक्ष, साजरा ।
कर्णाटकीभाषामें	सज्जरदामर ।
ते०	एपचेट्टु ।
तामिलीभाषामें	कुंगिलियम् ।
अंग्रेजीभाषामें	सालट्री । Sal tree
लैटिन्भाषामें	शोरिया रोबष्टा । Shoria Robusta

अस्य गुणाः ।

अश्वकर्णः कषायः स्याद्व्रणस्वेदकफक्रमीन् ।
ब्रध्नवीद्रधिवाधिर्य्ययोनिकर्णगदान्हरेत् ॥ (भा. प्र.)

अर्थ--अश्वकर्ण साल-कषेला तथा व्रण, पसीना, कफ, कृमि, ब्रध्न विद्रधि' बधिरता, योनिरोग और कर्णरोगको हरनेवाला है।

अन्यच्च ।

अश्वकर्णः कटुस्तिक्तः स्निग्धः पित्तास्रनाशनः ।
उरोविस्फोटकण्डूघ्नः शिरोदोषार्त्तिकृंतनः ॥ (रा. नि.)

अर्थ--अश्वकर्ण--कटु, तिक्त, स्निग्ध, रक्तपित्तनाशक तथा उरोविस्फोट कण्डु और मस्तकरोगको दूर करे है।

अन्यच्च ।

उर्जोव्रणहरश्चैवश्लेष्मरक्तप्रकोपहृत् ।

अर्थ-साल--व्रणविनाशक और कफ तथा पित्तके कोपको शांति करे है।

अपिच ।

अश्वकर्णः कटुस्तिक्तो रुक्षः कान्तिकरो मतः । स्निग्धोष्णः कफपाण्डार्त्तिपित्तकर्णरुजाहरः ॥ रक्तरुङ्मेहकुष्ठघ्नो व्रणोरः क्षतकण्डुहा । विषदोषं वातरोगं शिरारोगञ्च नाशयेत् ॥ फलं च मधुरं रूक्षं शीतं स्तम्भनकृद्गुरु । मलावष्टम्भनकरं दुरं लेखनं मतम् ॥ आध्यानशूलवातानां कारकं पित्तनाशनम् । रक्तदोषतृषादाहक्षतक्षयविनाशनम् ॥ (नि. र.)

अर्थ--अश्वकर्ण- शाल-चरपरा, कडवा, रूखा, कान्तिकारक, स्निग्ध गरम तथा कफ, पाण्डुरोग, पित्त, कर्णरोग, रक्तरोग, प्रमेह कोढ, व्रण उरःक्षत, कण्डू, विषविकार, वातरोग और शिरोरोगका नाश करे है इसका फल-मधुर, रूखा, शीतल, स्तम्भक, भारी, मलावष्टम्भक, कसेला और लेखन तथा आध्मान शूल और वातकारक है। पित्तनाशक और रुधिर विकार, तृषा, दाह और क्षतक्षयको दूर करे है।

अथशालभेदः ।

सर्ज्जकोऽन्योऽजकर्णः स्याच्छालो मरिचपत्रकः

अर्थ-सर्ज्जक, अजकर्ण, शाल, मरिचपत्रक।

लेटिन्भाषामें वेटेरियाइण्डिका।

अस्य गुणाः ।

अजकर्णः कटुस्तिक्तः कषायोष्णोव्यपोहति ।

कफपाण्डुश्रुतिगदान्मेहकुष्ठविषव्रणान् । (भा. प्र.)

अर्थ-अजकर्ण (सालभेद)-चरपरा, कडवा, कषेला, गरम तथा कफ, पाण्डुरोग, कर्णरोग, प्रमेह, कोढ, विष और व्रणको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

सर्जस्तुकटुतिक्तोष्णोहिमःस्निग्धोऽतिसारजित् ।
पित्तास्रदोषकुष्ठघ्नःकण्डूविस्फोटवातजित् ॥ (रा. नि.)

अर्थ-अजकर्ण (सालभेदक) चरपरा, कडवा, गरम, शीतल स्निग्ध तथा अतिसार, रक्तपित्त, कोढ, कण्डू और विस्फोटका नाश करे है ।

विवरण-शालके बडे बडे वृक्ष होते हैं पत्ते भी बहुत बडे बडे लगते हैं फूल कुमखोंमें आते हैं । दूसरा अश्वकर्ण इत्यादि शालके कई एक भेद हैं। शालके गोंदको राल कहते हैं ।

शल्लकीनामानि ।

शल्लकीगजभक्षाचगजप्रियाचह्लादिनी ।
महारुहावसामोचासुरभीसुरभीरसा ॥

अर्थ-शल्लकी, गजभक्षा, गजप्रिया, ह्लादिनी, महारुहा, वसा, मोंचा, सुरभी, सुरभीरसा (गजभक्ष्या, शिल्लकी, सिल्लकी, सल्लकी, सिह्लकी, सिह्लभूमिका, सुवहा, सुरभि, महेरुणा, कुन्दुरुकी, गजाशना, महेरणा, महारणा, ह्लादिनी, अश्वमूत्री (अश्वपुत्री कुम्भी, अस्रफला, करका, सुखमोदा, सुगन्धा सुरभिस्रवा, गजवल्लभा, ह्स्वदा, बहुस्रवा, गन्धवीरा, सुस्रवा, वनकर्णिका, नागवधू, सुश्रीका, गन्धमूला, रसाला, जलतिक्तिका)

संस्कृतभाषामें	शल्लकी ।
हिन्दीभाषामें	सालई, सलई ।
बंगभाषामें	शलई, शालविशेष ।
मराठीभाषामें	शालईवृक्ष, धूपशलाई
गुजरातीभाषामें	शालेड्ड, धूपेडो ।
कर्णाटकीभाषामें	तदीकु
तामिलीभाषामें	कुंलि
लेटिन्भाषामें	वोझवेलिया, थेरीफेरा । Boswelia Therifera

अस्य गुणाः ।

शल्लकीतुवराशीताश्लेष्मपित्तातिसारजित् । रक्तपित्तव्रणह-

रीपुष्टिकृत्समुदीरिता ॥ तत्फलंकफवातार्शःकुष्ठारोचकनाशनम् । पुष्पंचास्यकफंवातमर्शःकुष्ठारुचीर्जयेत् (रा. नि.)

अर्थ-शालई-कषेली, शीतल तथा कफ, पित्त, अतिसार, रक्तपित्त और व्रणको दूर करे है तथा पुष्टिकारक है । इसका फल-कफ, वात बवासीर, कोढ और अरुचिको दूरकरे है । इसका फूल-कफ, वात, बवासीर, कोढ और अरुचिको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

वृक्षस्तुशल्लकीसंज्ञःपुष्टिकारीकषायकः । शीतवीर्य्यो मधुरस्तिक्तोग्राह्यस्त्रिदोषनुत् ॥ व्रणदोषंकफंवातंपित्तंचार्शचनाशयेत् । पक्कातिसारकुष्ठघ्नरक्तपित्तविनाशयेत् ॥ निर्य्यासोस्यमतोनाम्नाकुन्दुरुःसुज्ञभाषितः ॥ (नि. र.)

अर्थ-शालई--पुष्टिकारक, कषेली, शीतवीर्य्य, मधुर, कडवी--मलरोधक तथा रुधिरविकार, व्रण, कफ, वात, पित्त, बवासीर, पक्कातिसार, कोढ और रक्तपित्तका नाश करे है । इसके गोंदको विद्वान् कुन्दुरु कहते हैं।

विवरण -सल्लकी अर्थात् सालईका बहुत बडा वृक्ष होता है पत्ते नीमके समान होते हैं, फलमें तीनरेखा होती हैं, इसी वृक्षका गोंद, कुन्दरु होता है।

अर्जुननामानि ।

अर्ज्जुनः फाल्गुनः पार्थश्चित्रयोधीधनंजयः ।
वैरांतकःकिरीटी च नदीसर्जोथपांडवः ॥

अर्थ--अर्जुन--फाल्गुन, पार्थ, चित्रयोधी, धनंजय, वैरान्तक किरीटी, नदीसर्ज, पांडव (वीरतरु, इन्द्रद्रु, ककुभ, इन्द्रद्रुम, शम्बर, गाण्डीवी, कर्णारि, करवीरक, कौन्तेय, इन्द्रसूनु, गण्डीरी, शिवमल्लक, सव्यसाची, वीरद्रु, कृष्णसारथि, पृथाज, धन्वी, वीर, वीरवृक्ष, धवल) ।

संस्कृतभाषामें	अर्जुन ।
हिन्दीभाषामें	कोह, कौह ।
वंगलाभाषामें	अर्जुनगाछ ।
मराठीभाषामें	सारढोल ।
गुजरातीभाषामें	कडायो ।
तैलङ्गीभाषामें	मद्दिचेट्टु ।

कर्णाटकीभाषामें तारेमत्ति ।
लैटिन्भाषामें स्टर्क्युलियायुरेन्स । Stereulia urcus

अस्य गुणाः ।

ककुभःशीतलोभग्नक्षतक्षयविषास्रजित् ।
मेदोमेहव्रणान्हन्तितुवरःकफपित्तहृत् ॥ (भा. प्र.)

अर्थ-अर्जुन शीतल, कषेला, तथा भग्न, क्षत, क्षय, विष, रुधिरविकार, मेद, प्रमेह, व्रण और कफपित्तको दूर करेहै ।

अन्यच्च ।

अर्जुनस्तुकषायोष्णःकफघ्नोव्रणशोधनः ।
पित्तश्रमतृषार्त्तिघ्नोमारुतामयकोपनः ॥ (रा. नि.)

अर्थ-अर्जुन-कषेला, गरम, कफनाशक, व्रणशोधक, तथा पित्त श्रम और तृषानिवारक है एवं वातरोगको कुपित करेहै ।

अन्यच्च ।

पार्थःपथ्येक्षतेभग्नेरक्तस्तम्भनकृच्छ्रयोः (रा. नि.)

अर्थ-अर्जुन-क्षत, भग्न, रक्तस्तम्भ और मूत्रकृच्छ्ररोगमें हितकारी है ।

अपिच ।

अर्जुनस्तुवरश्चोष्णमधुरःशीतलःस्मृतः । कान्तिदोबलकृ-
द्वैवलयुर्व्रणविशोधकः ॥ अस्थिभंगास्थिसंहारेहितःकफ-
विनाशकः । पित्तश्रमतृषादाहमेहवातविनाशकः ॥ हृद्रोगं
पाण्डुरोगंचविषबाधांक्षतक्षयम् । मेदोवृद्धिंरक्तदोषंघर्म्मश्वा-
संक्षतंतथ॥भस्मरोगंनाशयतिपूर्वैरितिनिरूपितम्। (नि. र.)

अर्थ-अर्जुन-कषेला, उष्ण, मधुर, शीतल, कान्तिजनक, बलकारक हलका, व्रणशोधक, तथा, अस्तिभंग, अस्तिसंहार, कफ, पित्त, श्रम, तृषा, दाह प्रमेह, हृदयरोग, पाण्डुरोग, विषबाधा, क्षतक्षय, मेदवृद्धि, रुधिरविकार, पसीना, श्वास, क्षत और भस्मरोगको नाश करे है ।

विवरण-अर्जुनके वृक्ष बडे २ लम्बे और ऊँचे २ वनोंमें होतेहैं, इसके पत्ते लम्बे और गोल अनीदार होतेहैं इसकी छाल सफेद रंगकी होतीहै और इसमें दूध निकलता है ।

असननामानि ।

बीजकःपीतसारश्चपीतसालकइत्यपि ।
बन्धूकपुष्पःप्रियकःसर्ज्जकश्चासनःस्मृतः ॥

अर्थ-बीजक, पीतसार, पीतसालक, बन्धूकपुष्प, प्रियक, असन (पीतशाल, पीतशालक, पीतसाल, परमायुध, महासर्ज, सौरि, बंधूकपुष्प, बीजवृक्ष, नीलक, प्रियसालक, असन)

संस्कृतभाषामें	असन, बीजक, पीतसाल ।
हिन्दीभाषामें	आसन, विजयसार । विजयसारका गोंद ।
वंगभाषामें	पियाशाल ।
मराठीभाषामें	बिवळा, बिवळ्याचा गोंद ।
गुजरातीभाषामें	वीयां, हीराद्खण, वीयानो गुंद ।
कर्णाटकीभाषामें	केपिन्नहोने ।
तैलिङ्गीभाषामें	मद्दि ।
व०	अइन ।
अंग्रेजीभाषामें	इन्डियन् किनोट्री । Inbian Kinotree
लैटिन्भाषामें	टेरोकार्पस मार्सुपियं । Pterocarpus Mrrsupium
फारसीभाषामें	कमरकस् ।

असनगुणाः ।

असनःकटुरुष्णश्चतिक्तोवातार्तिदोषनुत् ।
सारकोगलदोषघ्नोरक्तमंडलनाशनः ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-असन (विजयसार)-चरपरी, गरम, कडवी, वातार्तिदोषनाशक, सारक, गलरोगनिवारक और रक्तमंडलनाशक है ।

अन्यच्च ।

बीजकःकुष्ठवीसर्पश्वित्रमेहगुदकृमीन् ।
हन्तिश्लेष्मास्रपित्तंचत्वच्यःकेश्योरसायनः ॥ (भा. प्र.)

अर्थ-विजयसार-कोढ, विसर्प, चित्रकुष्ठ, प्रमेह, गुदाके रोग, कृमि, कफ और रक्तपित्तका नाश करे है, त्वचा और केशोंको हितकारी तथा रसायन है ।

अस्य पुष्पगुणाः ।

असनस्यतुपुष्पाणिविपाकेमधुराणिच ।

तिक्तानिपाचनीयानिवातलानिभवन्तिहि ॥

अर्थ-विजयसारके फूल-पचनेमें मधुर, कडवे, पाचक और बादी हैं।

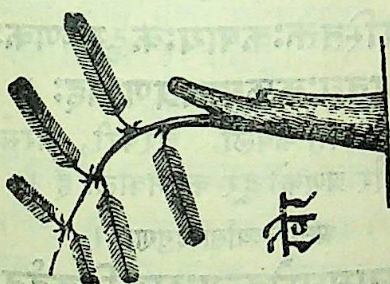
विवरण--असन अर्थात् विजयसारके वृक्ष वनोंमें बहुत बडे २ होते हैं। पत्ते पीपलके पत्तोंसे कुछ २ छोटे होते हैं, फल पीले आमलेके समान होते हैं इसकी लकडी कालापन लिये होती है।

खदिरनामानि ।

खदिरोरक्तसारश्चगायत्रीदन्तधावनः ।
कण्टकीबालपत्रश्चबहुशल्यश्चयाज्ञिकः ॥

अर्थ-खदिर, रक्तसार, गायत्री, दन्तधावन, कण्टकी, बालपत्र, बहुशल्य, याज्ञिक, (बालतनय, पथिद्रुम, तिक्तसार, कण्टकीद्रुम, प्रसख, युपद्रु, बालपुत्र, कर्कटी, जिह्मशल्य, कुष्ठहृत्, बालपत्रक, यूपद्रुम, खद्यपत्री, क्षितिक्षम, सुशल्य, वक्रकण्टक, यज्ञांग, जिह्वाशल्य, सारद्रुम, कुष्ठारि, बहुसार, मेध्य)

श्वेतखदिरनामानि ।



खदिरःश्वेतसारोऽन्यःकदरःसोमवल्कलः ।

अर्थ-खदिर, श्वेतसार, कदर, सोमवल्कल, (सोमवल्क, ब्रह्मशल्य, खदिरोपन, कार्म्मुक, कुजकण्टक, सोमसार, सोमवृक्ष, पथिद्रुम, श्यामसार नेमिवृक्ष, कण्टाढ्य, महावृक्ष, द्विजप्रिय)

संस्कृतभाषामें	खदिर, श्वेतखदिर ।
हिन्दीभाषामें	खैर, सफेदखैर, पपडियाखैर (कत्था) ।
बङ्गभाषामें	खयेरगाछ, पापरीखयेरगाछ ।
मराठीभाषामें	खैर, पांढराखैर ।
गुजरातीभाषामें	खैरियो, गोरड ।
कर्णाटकीभाषामें	कैंपिनखैर विलीयतत्रि ।
तैलिंगीभाषामें	चंडचेट्टु, खासु तेल्लचंड ।
लैटिन्भाषामें	एकेश्याकेटेच्यु । Acacia eatecbn

खदिरगुणाः ।

खदिरःशीतलोदन्त्यःकण्डूकासारुचिप्रणुत् ।
तिक्तःकषायोमेदोघ्नःकृमिमेहज्वरव्रणान् ॥
श्वित्रशोथामपित्तास्रपाण्डुकुष्ठकफान्हरेत् । (भा. प्र.)

अर्थ–खैर–शीतल, दांतोंको दृढ करनेवाली, कडवी, कषेली तथा कण्डू, खाँसी, अरुचि, मेद, कृमि, प्रमेह, ज्वर, व्रण, श्वित्रकुष्ठ, शोथ, आम, रक्तपित्त, पाण्डुरोग, कुष्ठ और कफको दूर करनेवाली है ।

श्वेतखदिरगुणाः ।

कदरोविशदोव्रण्योमुखरोगकफास्रजित् ।
"हन्तिकण्डूविषश्लेष्मकृमिकुष्ठव्रणग्रहान्" ॥ (भा. प्र.)

अर्थ–सफेद खैर–विशद, व्रणको हितकारी तथा मुखरोग, कफ, रुधिरदोष, कण्डू, विष, श्लेष्म, कृमि, कोढ, व्रण और ग्रहबाधाको हरे है ।

अन्यच्च ।

श्वेतस्तुखदिरस्तिक्तःकषायःकटुरुष्णकः ।
कण्डूतिकुष्ठभूतघ्नःकफवातव्रणापहः ॥ (रा. नि.)

अर्थ–सफेद खैर–कडवी, कषेली, चरपरी, गरम तथा कण्डू, कुष्ठ, भूतबाधा, कफ वात, और व्रणको दूर करनेवाली है ।

अस्यनिर्य्यासादिगुणाः ।

निर्य्यासस्तस्यमधुरोबल्यःशुक्रविवर्द्धनः ।
सारस्तुविशदोव्रण्योमुखरोगकफास्रजित् ॥ (म. वि.)

अर्थ--इसका गोंद–मधुर, बलकारक, शुक्रवर्द्धक, इसका सार विशद, व्रणको हितकारी तथा मुखरोग, कफ और रुधिरके दोषोंको दूर करे है ।

खदिरसारनामानि ।

खादिरःखदिरोतद्भूस्तत्सारोरंगदःस्मृतः ।

अर्थ--खादिर, खदिरोद्भूत, रङ्गद (अद्भुतसार, रङ्ग, सत्सार, खदिरशर्करा)

संस्कृतभाषामें	खदिरसार ।
हिन्दीभाषामें	खैरसार, कत्था ।
बङ्गभाषामें	खयेर ।

मराठीभाषामें खैराचा साड, नार, कात।
गुजरातीभाषामें खैरसार, काथो।
कर्णाटकीभाषामें काथ।
अंग्रेजीभाषामें केटेच्यु। Catechu
लैटिन्भाषामें केटेच्युएक्स्ट्राकुटं । Gareebneytraeninm
फारसीभाषामें कात।
अरबीभाषामें कात।

अस्यगुणाः

खादिरस्तुवरोष्णश्चतिक्तोरुचिकरोमतः। अग्निदीप्तिकरोग्राहींदंतदार्ढ्यकरोमतः॥ कटुकःकफवातानांव्रणस्यच विनाशकः।कण्ठरोगंसर्वमेहंकृमीन्मुखरुजंतथा॥अष्टादशैवकुष्ठानिस्थौल्यंचार्शंचनाशयेत्।

अर्थ--खदिरसार तथा कत्था--कषेला, गरम, कडवा, रुचिकारक, अग्निदीपक, मलरोधक, दांतोंको दृढ करनेवाला, चरपरा तथा कफ, वात, व्रण, कण्ठरोग, सर्वप्रकारके प्रमेह, कृमि, मुखरोग, अठारह १८ प्रकारके कोढ शरीरकी स्थूलता और बवासीरको दूर करे है।

विट्खदिरनामानि।

इरिमेदोविट्खदिरःकालस्कन्धोऽरिमेदकः।

अर्थ--इरिमेद, विट्खदिर, कालस्कन्ध, अरिमेदक (विट, इरिमेद, असिमेद, क्रिमिशात्रव, गिरिमेद, मरुद्रुम, रिमेद, गोधास्कन्ध, अहिमार, पूतिमेद, अहिमेदक)

संस्कृतभाषामें अरिमेद।
हिन्दीभाषामें दुर्गंधिखैर।
वंगभाषामें गुयेवाब्ला, विट्खयेर।
मराठीभाषामें शेण्याखैर, गंधियाहिंबर, घाणेराखैर।
गुजरातीभाषामें इरिमेद, गन्धिलोखेर।
अंग्रेजीभाषामें स्पंजट्री Sponge tree
लैटिनभाषामें एकेशीया फारनेशीयाना। Acacia Farneisiana

अस्य गुणाः

इरिमेदःकषायोष्णोमुखदन्तगदास्रजित्।

हन्तिकण्डूविषश्लेष्मकृमिकुष्ठविषव्रणान् ॥ (भा.प्र.)

अर्थ--दुर्गंधखैर--कषेली, गरम तथा मुखरोग, दन्तरोग, रुधिरविकार, कण्डू, विष, कफ, कृमि, कोढ, विष और व्रणको दूर करे है।

अन्यच्च ।

अरिमेदःकषायोष्णस्तिक्तकोभूतनाशनः।
शोफातिसारकासघ्नोविषवीसर्पनाशनः ॥ (रा. नि.)

अर्थ--दुर्गंधखैर--कषेला, गरम, कडवा, भूतनाशक तथा सूजन, अतिसार, खाँसी, विषविकार और विसर्पको हरनेवाला है।

अस्यनिर्य्यासगुणाः ।

अरिमेदस्यनिर्य्यासोमधुरस्तुबलप्रदः।
धातुवृद्धिकरश्चैवमुनिभिः संप्रभाषितः ॥ (नि. र.)

अर्थ--अरिमेदका गोंद--मधुर, बलवर्द्धक और धातुवर्द्धक है।

लघुखदिरगुणाः ।

लघुस्तुखदिरःप्रोक्तस्तिक्तोष्णश्चकषायकः। कटुस्तीक्ष्णश्चअम्लश्चरूक्षःकृमिकफापहः ॥ मुखरोगंदंतरोगंरक्तदोषंप्रमेहकम् । मदंकण्डूंविसर्पंचवस्तिरोगंविषज्वरम्॥पिशाचबाधामुन्मादंकुष्ठंदाहंव्रणंतथा ।आध्मानंनाशयत्येवफलंचास्यमधुस्मृतम् स्निग्धंकटूष्णंमतंचकफवातविनाशकम्॥

अर्थ–लघुखैर--कडवा, गरम, कषेला, चरपरा, तीक्ष्ण, अम्ल, रूखा तथा कृमि, कफ, मुखरोख, दंतरोग, रुधिरविकार, प्रमेह, मद, कण्डू, विसर्प, वस्तिरोग, विषमज्वर, पिशाचबाधा, उन्माद, कोढ, दाह, व्रण और आध्मानको दूर करे है। इसके फल--मधुर, स्निग्ध, चरपरे, गरम तथा कफ वातविनाशक हैं।

वल्लीखदिरगुणाः ।

वल्लीखदिरकस्तिक्तः कटुश्चोष्णः कषायकः।
रसेम्लःश्वासकासघ्नः पित्तरक्तत्रिदोषजित् ॥ नि० र०)

अर्थ- वल्लीखैर- कडवा, चरपरा, गरम, कषेला, खट्टा तथा श्वास, खाँसी, पित्त, रक्तविकार और त्रिदोषनाशक हैं।

विवरण । खैरके वृक्ष वनमें बड़े २ होते हैं, इसकी छाल खरदरी और चटकी हुई होती है, इसके पत्ते आमलेकेसे छोटे २ होत हैं, इसपर महीन २ और टेढे २ काँटे होत हैं, खैरसार और कत्था यह भी खैरहीके लकड़ीका बनाया जाता है, दूसरे सफेद खैर और दुर्गन्धित खैरके वृक्ष वनमें बहुत होते हैं।

रोहीतकनामानि ।

रोहीतकोरोहितकश्चरोहितःकुशाल्मलीदाडिमपुष्पसंज्ञकः॥
सदाप्रसूनःसचकूटशाल्मलिर्विरोचनःशाल्मलिकोनवाह्वयः

अर्थ--रोहीतक, रोहितक, रोहित कुशाल्मली, दाडिमपुष्पसंज्ञक, सदाप्रसून, कूटशाल्मलि, विरोचन, शाल्मलिक, (रक्तपुष्प, सदापुष्प, रक्तघ्न प्लीहनाशन, प्लीहघाती, रुच्य, रक्तप्रसादन, रोही, प्लीहशत्रु, दाडिमपुष्पक, विरेचन, मांसदलन, यकृद्वैरी, चलच्छद, प्लीहारि, रोहितेय, रोहिण)

श्वेतरोहीतकनामानि ।

सप्ताह्वःश्वेतरोहीतः सितपुष्पः सिताह्वयः ।
सितांगःशुक्लरोहीतोलक्ष्मीवाञ्जनवल्लभः ।

अर्थ--सप्ताह, श्वेतरोहीत, सितपुष्प. सिताह्वय, सिताङ्ग, शुक्लरोहीत, लक्ष्मीवान्, जनवल्लभ (क्षारयोग्य, लक्ष्मी, सर्वजनप्रिय)

संस्कृतभाषामें	रोहितक, कूटशाल्मली, श्वेतरोहितक ।
हिन्दीभाषामें	रोहेडा ।
वंगभाषामें	रोढा, रयना, नयना, कडार ।
मराठीभाषामें	रक्तरोहिडा ।
गुजरातीभाषामें	रगतरोहिडो, श्वेतरोहिडो ।
कर्णाटकीभाषामें	यरडुमल, मुत्तलू ।
तैलिङ्गीभाषामें	मुलमोदुगचेट्टु ।
लैटिन्भाषामें	टेकोमा अण्डयुलेटा । Tecoma undulata

रोहीतकोयकृत्प्लीहगुल्मोदरहरः परः (रा० व०)

अस्या गुणाः ।

अर्थ-रोहेडा--यकृत्--प्लीहा, गुल्म और उदररोगनाशक है ।

अन्यच्च ।

रोहीतकौकटुस्निग्धौकषायौचसुशीतलौ ।

कृमिदोषव्रणप्लीहारक्तनेत्रामयापहौ ॥

अर्थ--दोनों प्रकारके रोहेडे-चरपरे, स्निग्ध, शीतल, कषेले तथा कृमिरोग, व्रण, प्लीहा, रक्तविकार और नेत्ररोगोको दूर करे हैं।

अपिच।

रोहीतकद्वयंस्निग्धंतुवरंकटुकंमतम्। रक्तप्रसादनंतिक्तंशीतलंचसरंमतम् ॥ कृमिप्लीहारक्तदोषव्रणकर्णरुजापहम्। विषंनेत्ररुजंगुल्मयकृत्कफविनाशनम् ॥ वातंविबन्धंमांसंचमेदंशूलंचनाशयेत्। आनाहंभूतबाधांचनाशयेदितिकीर्तितम् ॥ (नि० र०)

अर्थ-दोनोंप्रकारके रोहेडे--स्निग्ध, कषेले, चरपरे, रक्तप्रसादक, कड़वे, शीतल, सारक तथा कृमि, प्लीहा, रुधिरविकार, व्रण, कर्णरोग, विष, नेत्ररोग, गुल्म, यकृत्, कफ, वात, विबन्ध, मांस, मेद, शूल, आनाह और भूतबाधाको दूर करे हैं।

विवरण। रोहेडेके वृक्ष वनोंमें अधिक होतेहैं, फूल अनारके समान होते है, लाल और सपेद इन फूलोंके भेदसे रोहेडेकी दो जाती हैं, राजनिघंटुमें रोहिडे और कूटशाल्मनीके एकत्र नाम तथा गुण लिखे हैं और शोढलनिघंटुमेंभी कूटशाल्मली और लाल रोहिडा एकही लिखा है, किन्तु भावप्रकाशमें लाल रोहिडा और कूटशाल्मली भिन्न २ लिखे हैं और गुणभी अलग २ लिखे हैं सो भावप्रकाशसे कूटशाल्मलीके नाम और गुण आगे लिखे हैं।

बबूरनामानि।



मालाफलोथबब्बूलोयुग्मकण्टोदृढारुहः।
कण्टकीसूक्ष्मपत्रश्चपीतपुष्पःकषायकः॥

अर्थ-मालाफल, बबूल. युग्मकण्ट, दृढारुह: कण्टकी, सूक्ष्मपत्र, पीतपुष्प, कषाय (किंकिरात, किंकिराट, युगलाक्ष, कण्टलु, तीक्ष्णकण्टकगोश्रृंग, दीर्घबीज, दीर्घकंटक, कफान्तक, दृढबीज, अजभक्ष, कण्टल, बब्बूल, बब्बोल, आभक, स्वर्णपुष्प, पीतक)

संस्कृतभाषामें	बर्बूर, बब्बूल ।
हिन्दीभाषामें	बबूर, कीकर, २ बबूरका गोंद ।
बंगभाषामें	बाबूगालाछ ।
मराठीभाषामें	बाभूळ, बाबूळ, कीकर, २ बाभलीचा गोंद ।
गुजरातीभाषामें	बावल ।
कर्णाटकीभाषामें	पुलई ।
तैलंगीभाषामें	बलवंतडु, नल्लतुम्म ।
कौंक०	गुइडा ।
द्रावि०	रोमकडि ।
तामिलीभाषामें	कलिकिकर ।
अंग्रेजीभाषामें	एकश्याट्री । Acacia tree
	गम् आरेबीक् । Gum Arabic
लेटिन्भाषामें	एकेश्या आरेबीका Acacia Arabica
	एकेश्या गम्मि । AGummi
फारसीभाषामें	मुगिलां २ गोन् ।
अरबीभाषामें	अमुगिलां ३ सिमग ।

अस्य गुणाः ।

बर्बुरस्तुकषायोष्णःकफकासामयापहः । आमरक्तातिसारघ्नःपित्तदाहार्शनाशनः ॥ ((रा. नि.)

अर्थ-बबूर-कषेला, गरम तथा कफ खाँसी, आम, रक्तातिसार, पित्त दाह और बवासीरको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

बब्बूलःकफनुद्ग्राहीकुष्ठक्रिमिविषापहः ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-बबूल-कफनाशक, मलरोधक तथा कोढ, कृमि और विषविनाशक है ।

अपिच ।

बब्बूलसितकमधुरःस्निग्धःशीतोष्णतूवरः । आमरक्ताति-

सारणांनाशनोग्राहकोमतः ॥ कफंकासंचपित्तंचदाहंरक्ता-
तिसारकम् । वातंप्रमेहंशमयेत्पर्णन्तुग्रहकंमतम् ॥ रुच्यं
कटूष्णकासघ्नंवातपुंस्त्वकफार्शनुत् ॥ (नि. र.)

अर्थ-बबूर कडवा, मधुर, स्निग्ध, शीतल, गरम, कषेला, मलरोधक तथा आम, रक्तातिसार, कफ, खाँसी, पित्त, दाह, वात और प्रमेहको दूर करेहै इसके पत्ते--मलरोधक, रुचिकारक, चरपरे, गरम तथा खाँसी, वात, पुरुषता, कफ और बवासीरको हरेहैं ।

अस्य फलगुणाः ।

"बब्बूलस्यफलंरूक्षंविशदंस्तम्भनंगुरु ।
कषायंमधुरंशीतंलेखनंकफपित्तहृत् ॥" (भा. प्र.)

अर्थ-बबूरकी फली--रूखी, विशद, मलस्तम्भक, भारी, कषेली, मधुर, शीतल लेखन तथा कफ और पित्तनाशक है ।

अस्यनिर्य्यासगुणाः ।

बब्बूलस्यतुनिर्य्यासोग्राहीपित्तानिलापहः ।
रक्तातिसारपित्तास्रमेहप्रदरनाशनः ।
भग्नसन्धानकःशीतःशोणितस्रुतिवारणः ॥ (आ. सं.)

अर्थ--बबूरका गोंद-मलरोधक, पित्त और वातनाशक तथा रक्तातिसार, रक्तपित्त, प्रमेह और प्रदरको दूर करे है । भग्नसन्धानकारक, शीतल और रुधिरके गिरनेको बंद करे है ।

विवरण-बबूरके बहुतसे वृक्ष जलाशयके समीप जंगलादिमें एकत्र खडे होतेहैं, इसमें सुईके समान महातीक्ष्ण काँटे होतेहैं और वे काँटे दो २ एकत्र खडे होतेहैं । पत्ते बहुत छोटे २ आमलेकेसे होतेहैं, फूल पीले गोल २ लगतेहैं उसमें मिर्चके सदृश टेढी २ फली होती हैं ।

अरिष्टकनामानि ।

अरिष्टकस्तुमाङ्गल्यःकृष्णवर्णोर्थसाधनः ।
रक्तबीजःपीतफेनःफेनिलोगर्भपातनः ॥

अर्थ-अरिष्टक, माङ्गल्य, कृष्णवर्ण, अर्थसाधन, रक्तबीज, पीतफेन, फेनिल, गर्भपातन, (रीठा, गुच्छफल, अरिष्ट, मंगल्य कुम्भबीजक, प्रकीर्य, सोमवल्कल)

संस्कृतभाषामें	अरिष्टक ।
हिन्दीभाषामें	रीठा ।
बङ्गलाभाषामें	रिटेगाछ ।
मराठीभाषामें	रिठा ।
गुजरातीभाषामें	अरिठा ।
तैलङ्गीभाषामें	कुकुड ।
अंग्रेजीभाषामें	सोपबेरी सोपनट्। Soap borri Soap nat
लैटिन्भाषामें	सोपिंडस इमार्जिनटस् Sapintus emarginatus सोपिंडस् ट्रिफोलियेटस्। S. Trifoliatus
फारसीभाषामें	फिंदकहिंदी ।
अरबीभाषामें	बूंदक ।

अस्य गुणाः ।

अरिष्टकस्त्रिदोषघ्नोग्रहजिद्गर्भपातनः । (भा. प्र.)

अर्थ-रीठा-त्रिदोषनाशक, ग्रहविनाशक और गर्भको गिरानेवाला है ।

अन्यच्च ।

अरिष्टकः कटुः पाके तीक्ष्णोष्णो लेखनो गुरुः । दोषत्रयहरोगर्भपातनो गर्भशान्तिकृत् ॥ तज्जलं वामकं पानान्नस्याच्छीर्षरुजापहम् । अर्धशीर्षव्यथां हन्ति वमनाद्विषनाशनम् ॥

अर्थ--रीठा-पचनेमें चरपरा, तीक्ष्ण, गरम, लेखन, भारी, त्रिदोषनाशक, गर्भको गिरानेवाला तथा गर्भको शान्ति करनेवाला है । इसके जलको पीनेसे वमन होतीहै और वमनसे विष दूर होताहै । इसके जलका नास लेनेसे मस्तकरोग और आधासीसी दूर होतीहै ।

विवरण । रीठेके वृक्ष-वन और उपवनोंमें होतेहैं, पत्ते रीठेके एक डंडीमें दो० लगे होतेहैं, फल झुमखोंमें आतेहैं । रीठेके झागोंसे वस्त्र धोतेहैं ।

पुत्रजीवनामानि ।

**पुत्रजीवः पवित्रश्च गर्भदः सुतजीवकः ।
पुत्रजीवोपत्यजीवः सिद्धिदोपत्यजीवकः ॥**

अर्थ--पुत्रजीव, पवित्र, गर्भद, सुतजीवक, पुत्रजीव, अपत्यजीव, सिद्धिद, अपत्यजीवक, (गर्भकर, जीवपुत्रक, श्लीपदापह, कुमारजीव, यष्टीपुष्प, अर्थसाधक)

संस्कृतभाषामें	पुत्रजीव ।
हिन्दीभाषामें	जियापोता, पनिजिया, जियापति, पितौजिया।
वंगभाषामें	जियापुँता, पुतजिया ।
मराठीभाषामें	पुत्रजीवकवृक्ष ।
गुजरातीभाषामें	पुत्रजीवक ।
कर्णाटकीभाषामें	पुत्रजीव ।
तैलिङ्गीभाषामें	शीश, कुँवरजुवि ।
लैटिन्भाषामें	पुत्रजीवा राक्सबुर्घिआई । Putrjiva Roxburghi

अस्य गुणाः ।

पुत्रजीवोगुरुर्वृष्योगर्भदःश्लेष्मवातकृत् ।
सृष्टमूत्रमलोरूक्षोहिमःस्वादुःकटुःपटुः ॥ (भा. प्र.)

अर्थ -जीयापता--भारी, वीर्यवर्द्धक, गर्भदायक, कफवातकारक, मलमूत्रको करनेवाला, रूखा, शीतल, स्वादिष्ठ, चरपरा, और खारा है।

अन्यच्च ।

पुत्रजीवोहिमोवृष्यःश्लेष्मदोगर्भजीवदः ।
चक्षुष्यःपित्तशमनोदाहतृष्णानिवारणः ॥ (रा. नि.)

अर्थ-जीयापोता-शीतल, वीर्यवर्द्धक, कफकारक, गर्भ और जीवदायक, नेत्रोंको हितकारी, पित्तको शान्त करनेवाला तथा दाह और तृषाको हरनेवाला है ।

विवरण। पुत्रजीवक अर्थात् पतिजियाके वृक्ष सम्पूर्ण इंगुदीके वृक्षोंके समान होते हैं, पत्तेभी उसी आकारके, फलभी उसी आकारके होतेहैं और इसके बीजोंकी माला रुद्राक्षकी तुल्य बनती है, प्रायः साधु लोग इसे बनालेतेह ।

१ इंगुदीनामानि ।

इंगुदोङ्गारवृक्षश्चतिक्तकस्तापसद्रुमः ॥

अर्थ-इंगुद, अङ्गरवृक्ष, तिक्तक, तापसद्रुम (भल्लकीवृक्ष, इंगुदी, कण्टकी, पुत्रिपत्रा, तापसतरु, इंगुल, हिंगुपत्र, विषकंटक, अनिलान्तक, गौरत्वक्, वगुरुक, शूलारि, विषकण्टक, तीक्ष्णकण्ट, तैलफल, पूतिगन्ध, विगन्धक, क्रोडुपक, तिक्तमज्ज, कृशरक, जलजन्तुविनाशक, दीर्घकण्टा, तैलबीजा, दालपत्रक और अंगुलिदला)

संस्कृतभाषामें	इंगुदी।
हिन्दीभाषामें	हिंगोट, गोंदी।
वङ्गभाषामें	जियापुता, इङ्गोट।
मराठीभाषामें	हिंगणबेट।
गुजरातीभाषामें	इंगोरियो।
तैलिंगीभाषामें	गरा।
अंग्रेजीभाषामें	डेलील। Delil
लैटिन्भाषामें	बेलेनाइटीस राक्सबुर्धिआई Balanites Roxburdhi
अरबीभाषामें	हिलेलजे।

अस्य गुणाः।

इङ्गुदः कुष्ठभूतादिग्रहव्रणविषक्रिमीन्।
हन्त्युष्णश्वित्रशूलघ्नस्तिक्तकः कटुपाकवान्॥ (भा. प्र.)

अर्थ-हिंगोट--कोढ, भूतादिबाधा, ग्रहबाधा, व्रण, विष, कृमि, श्वित्रकुष्ठ और शूलको निर्मूल करे है। गरम, कडवा और पचनेमें चरपरा है।

अन्यच्च।

इंगुदी कफरक्तामग्रन्थिघ्नी स्याद्व्रणे हिता।
ऐंगुदं स्वादु तिक्तं च स्निग्धोष्णं श्लेष्मवातजित्॥ (शो. नि.)

अर्थ--हिंगोट--कफ, रक्ताम, ग्रन्थि और व्रणविनाशक है। इसका फल स्वादिष्ठ, कडवा, स्निग्ध, गरम तथा कफ और वातविनाशक है।

अपिच।

इगुदीनामको वृक्षो मदगंधिः कटुर्लघुः। तिक्तश्चोष्णः फेनिलश्च प्रोक्तश्चैव रसायनः॥ कृमीन्वातं विषं शूलं श्वित्रं कुष्ठं व्रणं कफम्। ग्रहपीडां भूतबाधां नाशयेदिति कीर्तितम्॥ अस्य पुष्पन्तु मधुरं स्निग्धं चोष्णं च तिक्तकम्। वातं कफं नाशयतीत्येवमाचार्यभाषितम्॥ (नि. र.)

अर्थ-हिंगोट- मदगन्धियुक्त, चरपरा, हलका, कडवा, गरम, फेनिल, (झागोंको करनेवाला) रसायन तथा कृमि, वात, विष, शूल, श्वित्रकुष्ठ, व्रण, कफ, ग्रहपीडा और भूतबाधाको दूर करे है। इसके फूल मधुर, स्निग्ध, गरम, कडवे तथा वात और कफका नाश करें हैं।

अस्यफलमज्जागुणाः ।

इंगुद्याःफलमज्जकोजलयुतोलेपोमुखेकान्तिदः । (वै. नी.)

अर्थ-इंगुदीके फलकीमींगको जलके साथ मुखपै लेप करनेसे मुखकी कान्ति बढती है ।

विवरण । इंगुदीके बडे२वृक्ष जंगल और वनोंमें उत्पन्न होते हैं,इस वृक्षमें कांटेभी होते हैं,फूल नींबूके समान कुछेक लम्बे और गोल होते हैं, फलके ऊपर गुठलीके सदृश रस लगा रहता है मानों फल रसमें तर रहता है।

जिङ्गिनीनामानि ।

जिङ्गिनीझिंगिनीझिंगीसुनिर्यासाप्रमोदिनी ॥

अर्थ-जिङ्गिनी, झिंगिनी, झिङ्गी,सुनिर्य्यासा. प्रमोदिनी, (कुल मंजरी, पार्वती)

संस्कृतभाषामें	जिंगिनी ।
हिन्दीभाषामें	जिंगिणी ।
मराठीभाषामें	मोई, मोक ।
गुजरातीभाषामें	मवेडी, मोलेंडु ।
कर्णाटकीभाषामें	ओरीथ, मरम ।
लैटिन्भाषामें	ओडिनावोडियर । Odina wodier

अस्य गुणाः ।

जिङ्गिनीमधुरासोष्णाकषायायोनिशोधिनी ।
कटुकाव्रणहृद्रोगवातातीसारहृत्पटुः ॥ (भा. प्र)

अर्थ-जिंगिणी-मधुर, गरम, कषेली, योनिशोधक, चरपरी तथा व्रण, हृदयरोग, वात और अतिसारको दूर करे है और नमकीन है ।

अन्यच्च ।

जिङ्गिनीमुखदौर्गन्ध्यतृषणावातकफापहा
कटुपाकाजयेद्वातव्रणातीसारहृद्रुजः ॥ (सो. नि.)

अर्थ-जिंगिनी-मुखकी दुर्गन्धता, तृषा, वात, कफ, वातव्रण, अतिसार और हृदयरोगको दूर करे है, तथा पचनेमें चरपरी है ।

विवरण-जिंगनीके बडे २ ऊंचे वृक्ष जंगल और पहाडोंमें होते हैं, पत्ते मरुवेके समान शाखाओंमें बराबर दोनों ओर लगे होते हैं, फूल सफेद और लफ बेरके समान आते हैं ।

तमालनामानि ।

तमालउक्तस्तापित्थः कालस्कन्धोमितद्रुमः ।
लोकस्कन्धोनीलध्वजोनीलतालश्चसंस्मृतः ॥

अर्थ--तमाल, तापित्थ, कालस्कन्ध, अमितद्रुम, लोकस्कन्ध, नीलध्वज, नीलताल, (तापिञ्ज, तापिच्छ, कृष्णस्कन्ध, तम, तमा, कालताल, महाबल)

संस्कृतभाषामें	तमाल ।
हिन्दीभाषामें	स्यामतमाल ।
वंगभाषामें	तामालगाछ ।
मराठीभाषामें	तमालवृक्ष ।
गुजरातीभाषामें	तमाल ।
तैलिङ्गीभाषामें	तमालु ।

अस्यगुणाः ।

तमालस्तुवरःशोथदाहविस्फोटहृत्पुनः (म० नि०)

अर्थ-स्यामतमाल--कषेला, सूजन, दाह और विस्फोटनाशक है ।

अन्यच्च ।

कालस्कन्धश्चमधुरोबल्योवृष्योगुरुः स्मृतः ।
धातुवृद्धिकरः शीतःश्रमदाहकफापहः ॥
पित्तशोथंचविस्फोटंपित्तंचैवविनाशयेत् ॥ (नि० र०)

अर्थ--स्यामतमाल-मधुर, बलवर्द्धक, वीर्य्यवर्द्धक भारी, धातुवर्द्धक, शीतल तथा श्रम, दाह, कफ पित्तसे उत्पन्न हुआ शोथरोग, विस्फोट और पित्तको दूर करे है ।

विवरण-तमालके वृक्ष प्रायः यमुना और तापी नदीके निकट बहुत होते हैं, वृक्षकी मूल और शाखा श्यामरंगकी होती हैं, पत्ते गोल और शीशमके सदृश और फूल लाल २ होते हैं और फल छोटे २ करौंदेके समान होते हैं ।

तूणीनामानि ।

तूणीतुन्नकआपीनस्तुणिकःकच्छकस्तथा ॥
कुठेरकः कान्तलकोनन्दीवृक्षश्चनन्दकः ॥

अर्थ-तूणी, तुन्नक, आपीन, तुणिक, कच्छक, कुठेरक, कान्तलक, नन्दीवृक्ष, नन्दक (तूणीक, पीतक, कच्छप, कान्त, नन्दी,)

अस्य गुणाः ।

तूणीयकः कटुः पाकेकषायोमधुरोलघुः ।
तिक्तोग्राहीहिमोवृष्योव्रणकुष्ठास्रपित्तजित् (रा. नि.)

अर्थ-तूणी-पचनेमें चरपरी, कषेली, मधुर, हलकी, कडवी, मलरोधक, शीतल, वीर्य्यवर्द्धक, तथा व्रण, कुष्ठ और रक्तपित्तको दूर करे है।

अन्यच्च ।

नन्दीवृक्षःकटुस्तिक्तः पीतस्तिक्तास्रदाहजित् ।
शिरोर्तिश्वेतकुष्ठघ्नःसुगन्धिःपुष्टिवीर्य्यदः ॥ (भा. प्र.)

अर्थ-तून-चरपरी, कडवी, पीली, सुगन्धि, पुष्टिकारक, वीर्य्यवर्द्धक तथा रक्तपित्त, दाह, शिरकी पीडा और श्वेतकुष्ठको दूर करे है ।

अपिच ।

तूणीवृक्षःकटुस्तिक्तः पुष्टिकृच्छीतलोलघुः । वीर्य्यप्रदश्चमधुरस्तुवरोग्राहकोमतः । वृष्यस्त्रिदोषहृत्प्रोक्तोव्रणंकुष्ठंच नाशयेत् ॥ रक्तपित्तंश्वेतकुष्ठंशीर्षपीडांचनाशयेत् ॥ कण्डूं पित्तंरक्तदोषंदाहंचैवविनाशयेत् ॥ (नि. र.)

अर्थ-तून-चरपरी, कडवी, पुष्टिकारक, शीतल, हलकी, वीर्य्यवर्धक, मधुर, कषेली, मलरोधक, वृष्य, त्रिदोषनाशक तथा व्रण, कुष्ठ, रक्तपित्त, श्वेतकुष्ठ, शिरकी पीडा, कण्डू, पित्त, रुधिरविकार, और दाहको दूर करे है।

विवरण-तूनके बडे सघन वृक्ष जंगल और वनोंमें होते हैं, पत्ते नीमके पत्तोंसे कुछेक बेड होते हैं, फूल बहुत छोटे २ सफेद रंगके आते हैं, लकडी इसकी बहुत उत्तम होती है ।

भूर्जपत्रनामानि ।

भूर्जपत्रः स्मृतोभूर्जचर्म्मीबहुलवल्कलः ॥

अर्थ-भूर्जपत्र, भूर्ज, चर्म्मी, बहुलवल्कल, (सुचर्म्मा, छदपत्र, वल्कद्रुम, मूर्ज्जपत्रक, चित्रत्वक्, बिन्दुपत्र, रक्षापत्र, विचित्रक, भूतघ्न, मृदुपत्र, मृदुचर्म्मी, शैलेन्द्रस्थ, चर्म्मद्रुम, छत्रपत्र, शिबि, स्थिरच्छद, मृदुत्वक्, दलनिर्मोक, पद्मकी, विद्यादल, पत्रपुष्पक, भुज, बहुपट, बहुत्वक, मृदुच्छद)

संस्कृतभाषामें	भूर्जपत्र ।
हिन्दीभाषामें	भोजपत्र ।
वंगभाषामें	भूर्जिपत्र ।
मराठीभाषामें	भूर्जपत्र ।
गुजरातीभाषामें	भोजपत्र ।
कर्णाटकीभाषामें	भूर्जपत्र ।
अंग्रेजीभाषामें	जेक्वेमोंटी । Jacque montii
लैटिन्भाषामें	बिटयुला भोजपत्रा । Betula bojaputra

अस्यगुणाः ।

भूर्जोभूतग्रहश्लेष्मकर्णरुक्पित्तरक्तजित् ।
कषायोराक्षसघ्नश्चमेदोविषहरः परः ॥ (भा. प्र.)

अर्थ--भोजपत्र -भूत, ग्रह, कफ, कर्णरोग, रक्तपित्त, राक्षस, मद और विषविनाशक तथा कषेला है ।

अन्यच्च ।

भूर्जःकटुकषायोष्णोभूतरक्षाकरः परः ।
त्रिदोषशमनः पथ्योदुष्टकौटिल्यनाशनः ॥
"पित्तरक्तरुजांहंतामंत्रकार्येषुसिद्धिदः" ।

अर्थ--भोजपत्र--चरपरा, कषेला, गरम, भूतबाधाको दूर करनेवाला, त्रिदोषको शान्त करनेवाला, पथ्य तथा दुष्ट, कुटिलता और रक्तपित्तको हरनेवाला है तथा मंत्रादि कार्य्योंमें सिद्धिदेनेवाला है ।

अन्यच्च ।

भूर्जोबल्यः कफास्रघ्नः । (राजवल्लभ)

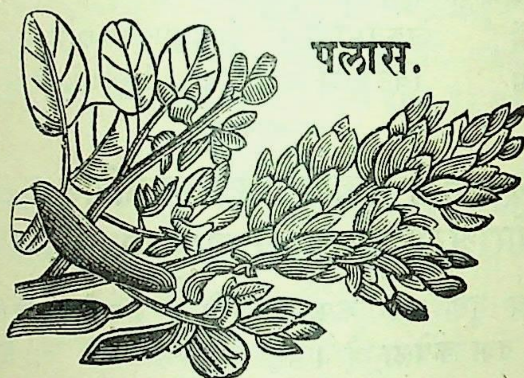
अर्थ--भोजपत्र--बलकारक, कफनाशक और रुधिरके दोषोंको दूर करे है ।
विवरण । भोजपत्रके वृक्ष विशेषकरके हिमालयादि पर्वतोंमें उत्पन्न होते हैं, इस वृक्षकी छालकोही भोजपत्र कहते हैं, छाल, कागज तथा सूखे केलेके पत्तेके समान होती है, पहिले भोजपत्रका वस्त्रके स्थानमें व्यवहार किया जाता था। भोजपत्रमें अनेक प्रकारके जंत्र मंत्र लिखे जाते हैं।

पलाशनामानि ।

पलाशःकिंशुकःपर्णोयाज्ञिकोरक्तपुष्पकः ।

क्षारश्रेष्ठोवातपोथोब्रह्मवृक्षः समिद्वरः ॥

अर्थ-पलाश, किंशुक, पर्ण, याज्ञिक, रक्तपुष्पक, क्षारश्रेष्ठ, वातपोथ, ब्रह्मवृक्ष, समिद्वर, (करक, त्रिपत्रक, ब्रह्मपादप, पलाशक, त्रिपर्ण, रक्तपुष्प, पूतद्रु, ब्रह्मवृक्षक, ब्रह्मोपनेता, काष्ठद्रु बीजस्नेह, त्रिपर्ण, कृमिघ्न, वक्रपुष्पक, सुपर्णी)



संस्कृतभाषामें	पलाश ।
हिन्दीभाषामें	ढाक, टेसू, केसू. धारा, कांकरिया, पलाश ।
वंगभाषामें	पलाशगाछ ।
मराठीभाषामें	पलस ।
गुजरातीभाषामें	खाखरो ।
कर्णाटकीभाषामें	मुत्तलु ।
तैलङ्गीभाषामें	मातुकाचेट्टु ।
तामिलीभाषामें	परशन् ।
औत्कलीभाषामें	पराशु ।
अंग्रेजीभाषामें	डाउनी ब्रांच ब्युटिया । Downy branch butea
लैटिन्भाषामें	ब्युटिया फ्रंडाझा (लाल) Butea frondoza ब्युटिया पार्विफ्लोरा (धवल) B. parvifllora

अस्य गुणाः ।

पलाशोदीपनोवृष्यःसरोष्णोव्रणगुलमजित् । भग्नसन्धानकृद्दोषग्रहण्यर्शःकृमीन्हरेत् ॥ कषायःकटुकस्तिक्तःस्निग्धोगुदजरोगजित् । तत्पुष्पंस्वादुपाकेतुकटुतिक्तंकषायकम् ॥ वातलंकफपित्तास्रकृच्छ्रजिद्ग्राहिशीतलम् । तृड्दाहशमन

वातरक्तकुष्ठहरंपरम् ॥ फलंलघूष्णंमेहार्शःकृमिवातकफाप- हम् । विपाकेकटुकंरूक्षं कुष्ठगुल्मोदरप्रणुत् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-ढाक-अग्निप्रदीपक वीर्यवर्द्धक, सारक, गरम, कषेला, चरपरा, कड़वा, स्निग्ध, टूटे हाड़को जोड़नेवाला तथा गुदजरोग, संग्रहणी, बवासीर, कृमि, व्रण और गुल्मको हरनेवाला है। इसके फूल-स्वादुपाकी, कटु, तिक्त, कषेले, वातवर्द्धक तथा कफ, रक्तपित्त, मूत्रकृच्छ्र, वातरक्त और कुष्ठको नष्ट करे है, तथा शीतल, मलरोधक, तृषा और दाहको दूर करनेवाले हैं। इसके फल-हलके, गरम, पचनेमें चरपरे रूखे तथा प्रमेह, बवासीर, कृमि, वात, कफ, कुष्ठ, गुल्म और उदररोगको दूरकरे हैं।

अन्यच्च ।

पलाशस्तुकषायोष्णःकृमिदोषविनाशनः । तद्बीजंपामक- ण्डूतिदद्रुत्वग्दोषनाशकृत् ॥ तस्यपुष्पंचसोष्णंचकण्डूकु- ष्ठार्तिनाशनम् । रक्तःपीतःसितोनीलःकुसुमैस्तुविभज्यते ॥ किंशुकैर्गुणसाम्येपिसितोविज्ञानदःस्मृतः ।

अर्थ-ढाक-कषेला गरम और कृमिदोषनाशक है। इसके बीज पामा कण्डू, दाद और त्वचाके दोषोंको दूर करे हैं। इसके फूल गरम तथा कण्डू और कुष्ठको नष्टकरे हैं। टेसू-लाल, पीले, सफेद और नीले इन फूलोंके भेदसे चार प्रकारका है, गुण तो चारोंके समान ही हैं, किन्तु सफेद फूलका अनेक प्रकारके विज्ञानदायक है।

अन्यच्च ।

पालाशमूलस्वरसोनेत्रच्छायांध्यपुष्पजित् । तद्बीजंकृमिविध्वंसिकांडोरसायनेहितः ॥ (शो. नि.

अर्थ- पलाशकी जडका स्वरस -नेत्रच्छाया, रतौंधी और नेत्रके फूलोंको दूर करे है। इसके बीज- कृमिनाशक हैं ! इसकी कांड रसायन कर्म्ममें उत्तम है।

अपिच ।

उष्णःपलाशस्तुवरोवृष्योदीप्तिकरःसरः । तिक्तःस्निग्धोग्रा- हकश्चभग्नसन्धानकारकः ॥ व्रणगुल्मकृमिप्लीहासंग्रहण्य-

र्शवातहा ।कफंयोनिरुजंपित्तंनाशयेदितिकीर्तितम् । पुष्पभेदादयंरक्तपीतशुभ्रकनीलकः ॥ पुष्पाणिस्वादुतिक्तानि उष्णानितुवराणिच ॥ वातलानिग्राहकाणिशीतलान्यूषणानिच । तृषादाहपित्तकफास्रक्तदोषंचकुष्ठकम् ॥ मूत्रकृच्छ्रं घातयन्तिफलंरूक्षंलघुस्मृतम् । उष्णंचकटुकंपाकेकफवातोदरकृमीन् ॥ कुष्ठगुल्मप्रमेहार्शशूलानांचैवनाशकम् । फलबीजंचस्निग्धोष्णंकटुकृमिकफाञ्जयेत् ॥ नूतनाःपल्लवाश्चास्यकृमिवातविनाशकाः । (नि. र.)

अर्थ--ढाक-कषेला, गरम, वीर्यवर्द्धक, अग्निप्रदीपक, सारक, कडवा स्निग्ध, मलरोधक, भग्नसन्धानकारक तथा व्रण, गुल्म, कृमि, प्लीहा, संग्रहणी, बवासीर, वात, कफ, योनिरोग, और पित्तको दूर करे है। यह लाल, पीत, श्वेत और नील इन फूलोंके भेदसे चारप्रकारका है। इसके फूल-स्वादिष्ठ, कड़वे, गरम, कषेले. वातवर्द्धक, मलरोधक, शीतल, चरपरे तथा तृषा, दाह, पित्त, कफ, रुधिरविकार, कुष्ठ और मूत्रकृच्छ्रको दूर करे हैं। इसके फल-रूखे, हलके, गरम, पचनेमें चरपरे तथा कफ, वात, उदररोग, कृमि, कुष्ठ, गुल्म, प्रमेह, बवासीर, और शूलको निर्मूल करे हैं। इसके फलके बीज--स्निग्ध, गरम, चरपरे तथा कफ और कृमिका नाश करे हैं। इसके कोमल पत्ते-कृमि और वातका नाशकरे हैं।

अस्य निर्य्यासगुणाः ।

पलाशभवनिर्य्यासोग्राहीचक्षपयेद्ध्रुवम् ।
ग्रहणींमुखजान्कासाञ्जयत्स्नहातिनिर्गमम् (आ. सं.)

अर्थ--ढाकका गोंद-मलरोधक तथा संग्रहणी, मुखरोग, खासी और पसीनेको दूर करे है।

विवरण । पलाश अर्थात् ढाकके बड़े २ वृक्ष प्रायः नदीकी तलेटी और जांगल प्रदेशमें होते हैं, पत्ते-गोल २ एक एक डंडीमें तीन तीन आवे हैं प्रथम लाल निकलते हैं फिर हरे रङ्गके हो जाते हैं। फूलकी डंडी काली और रङ्ग अत्यन्त सुन्दर, लाल रङ्गके होते हैं। फली लम्बी २ लगती हैं, बीज गोल और चपटे निकलते हैं, इसके बीजोंको ढकपन्ना कहते हैं।

हस्तिकर्णपलाशनामानि ।

तद्भेदस्यात्किंशुलुकःकिञ्चुलोहस्तिकर्णकः ॥

अर्थ-इसका भेद हस्तिकर्ण है उसके नाम यह हैं किंशुलुक और हस्तिकर्णक ।

अस्य गुणाः ।

हस्तिकर्णःपरंवृष्योमेधायुर्बलवर्द्धनः ॥(रा. नि.)

अर्थ-हस्तिकर्णपलाश-अत्यन्तवीर्यवर्द्धक तथा मेधा, आयु और बल-वर्द्धक है ।

शाल्मलीनामानि ।

शल्मलिःस्याच्छाल्मलिश्चशाल्मलीशल्मलीतथा ॥

अर्थ-शल्मलि, शाल्मलि, शाल्मली, शल्मली (पिच्छला, पूरणी, मोचा, स्थिरायु, तूलिफला, दुरारोहा, शाल्मलिनी, शाल्मल, अपूरणी, निर्गन्धपुष्पी, तुलिनी, कुक्कुटी, रक्तपुष्पा, कण्टकारी, मोचनी, शीमूल, कदला, चिरजीवी, पिच्छिल, रक्तपुष्पक, तूलवृक्ष, मोचाख्य, कण्टकद्रुम, कुक्कुटी, रक्तोत्पल, रम्यपुष्प, बहुवीर्य्य, यमद्रुम, दीर्घद्रुम, स्थूलफल, दीर्घायु, कण्टकाष्ठ, निस्सारा, दीर्घपादपा)

मोचरसनामानि ।

निर्य्यासःशाल्मलेः पिच्छोशाल्मलीवेष्टकोपिच ।
मोचस्रावोमोचरसोमोचनिर्य्यासइत्यपि ॥

अर्थ-शाल्मलीनिर्य्यास, पिच्छ, शाल्मलीवेष्टक, मोचस्राव, मोचरस मोचनिर्य्यास, (मोचसार, मोचश्रुत्, मोचस्रुत्, पिच्छिलसार, सुरस, मोचाक, शाल्मलि, मोचाह्व, वेश्मरस. शाल्मल)

संस्कृतभाषामें	शाल्मली, २ शाल्मलीनिर्य्यास, मोचरस ।
हिन्दीभाषामें	सेमल (र), २ सेमरका गोंद, मोचरस ।
बंगभाषामें	शिमुल २ शिमुलेरआठा ।
मराठीभाषामें	सांवरी, शेंवरी २ सांवरीचा डीक ।
गुजरातीभाषामें	शेमळो २ शेमळानो गुंद, मोचरस ।
कर्णाटकीभाषामें	यवलवदमर ।
तैलंगीभाषामें	रुगचेट्टु ।
औत्कलीभाषामें	वोन्रो ।

तामिलीभाषामें पुला ।
अंग्रेजीभाषामें सिल्ककाटनट्री Silkcottyn tree
लैटिन्भाषामें बोंबेक्समेलेबेरिकम् Bombaxmalabaricnm
सालमेलिया मेलबेरिका Salmalia malabarica

शाल्मलीगुणाः ।

शाल्मलीशीतलास्वाद्वीरसेपाकेरसायनी। श्लेष्मलास्निग्धवृष्याचबृंहणीरक्तपित्तजित् (भा० प्र०)

अर्थ-सेमल-शीतल, स्वादिष्ठ, पचनेमें भी स्वादिष्ठ, रसायन, कफकारक स्निग्ध, वीर्यवर्द्धक, पुष्टिकारक और रक्तपित्तनाशक है।

अन्यच्च ।

शाल्मलीपिच्छलावृष्याबल्यामधुरशीतला। कषायाचलघुःस्निग्धाशुक्रश्लेष्मविवर्धिनी ॥ (रा. नि.)

अर्थ-सेमल पिच्छिल, वीर्य्यवर्द्धक, मधुर, शीतल, कषेला, हलका स्निग्ध तथा शुक्र और कफवर्द्धक है।

अपिच।

शाल्मलीमधुरावृष्याबल्याचतुवरामता। शीतलापिच्छिलालघ्वीस्निग्धास्वाद्वीरसायना ॥ शुक्रलाश्लेष्मलाचैवधातुवृद्धिकरीमता। रक्तपित्तंचपित्तंचरक्तदोषश्चनाशयेत् ॥ त्वमसोऽस्याग्राहकःस्यात्तुवरःकफनाशनः। पुष्पन्तुशीतपित्तंगुरुस्वादुकषायकम् ॥ वातलंग्राहकंरूक्षंकफपित्तनाशकम् ।रक्तदोषहरंचैवगुणाह्येतेफलस्यच ॥ कन्दोऽस्यमधुरःशीतोमलस्तम्भकरोमतः । शोफंदाहंचपित्तंचन्तापंचैवनाशयेम् (नि. र.)

अर्थ-सेमल-मधुर, वीर्य्यवर्धक, बलकारक, कषेला, शीतल, पिच्छिल, हलका, स्निग्ध, स्वादिष्ठ, रसायन, शुक्रजनक, कफकारक, धातुवर्द्धक, रक्तपित्त, पित्त और रुधिरके दोषोंको दूर करेहै। इसकी छाल-ग्राही, कषेली और कफनाशक है, इसके फूल-शीतल, कडवे, भारी, स्वादिष्ठ, कषेले, बादी, मलरोधक, रूखे तथा कफ, पित्त और रुधिरके दोषोंको

करे हैं। इसके फलके गुणभी इसीके समान जानने। इसका कंद-मधुर, शीतल, मलस्तम्भक तथा सूजन, दाह, पित्त और सन्तापको हरनेवाला है।

अस्यपुष्पशाकगुणाः।

शाल्मलीपुष्पशाकन्तुघृतसैन्धवसाधितम्।
प्रदरंनाशयत्येवदुःसाध्यञ्चनसंशयः॥
कफपित्तास्रजिद्ग्राहिवातलंचप्रकीर्त्तितः।

अर्थ—घृत और सैंधवनोंनसे बनायाहुआ सेमलके फूलोंका शाक असाध्य प्रदररोगको हरे है, कफ और रक्तपित्तको दूर करे है, मलरोधक और वादी है।

मोचरसगुणाः।

मोचारसस्तुतुवरोग्राहीबलकरः स्मृतः। पुष्टिकृद्धातुकृद्वर्ण्योबुद्धिदःशीतलः स्मृतः॥ वयसस्थापनोवृष्योगुरुस्वादूरसायनः। स्निग्धःकफकरोगर्भस्थापकोवातनाशनः॥ अतिसारप्रवाहघ्नोरक्तरुक्पित्तदाहहा। आमातीसारशमनोरक्तातीसारनाशनः॥ "पारदस्यविकारघ्नोसेवनान्मासमात्रतः।केचिन्मोचरसस्थानेपूगपुष्पंचनिक्षिपेत्"॥ (नि. र.)

अर्थ—मोचरस-कषेला, मलरोधक, बलवर्द्धक, पुष्टिकारक, धातुवर्द्धक, वर्णको उज्ज्वल करनेवाला, बुद्धिदायक, शीतल, अवस्थास्थापक, वीर्य्यवर्द्धक, भारी, स्वादिष्ठ, रसायन, स्निग्ध, कफकारक, गर्भस्थापक, वातनाशक तथा अतिसार, प्रवाहिका, रक्तरोग, पित्तदाह, आमातिसार और रक्तातिसारको दूर करनेवाला है। इसको एक मासपर्यन्त सेवनकरनेसे पारेके विकार दूर होते हैं, कोई २ वैद्य मोचरसके स्थानमें सुपारीका फूल गेरते हैं।

विवरण। सेमलके वृक्ष प्रायः जंगलोंमें अधिक होते हैं एक डंडीमें आठ दश पत्ते लगते हैं इसमें कांटे होते हैं। फूल कमलके समान लालरंगके होते हैं। फल आकके समान लगते हैं। भीतरसे रुई निकलती है। इसके गोंदको मोचरस कहते हैं।

कूटशाल्मलीनामानि।

कुत्सितः शाल्मलिः प्रोक्तोरोचनः कूटशाल्मलिः॥

अर्थ—कुत्सितशाल्मलि, रोचन, कूटशाल्मलि।

कूटशाल्मलीगुणाः ।

कूटशाल्मलिकस्तिक्तः कटुकः कफवातनुत् ।
भेद्युष्णःप्लीहजठरयकृद्गुल्मविषापहः ॥
भूतानाहविबंधास्रमेदःशूलकफापहः । (भावप्रकाश)

अर्थ-कूटशाल्मली-कडवा, चरपरा, कफवातनाशक, भेदक, गरम तथा प्लीहा, उदररोग, गुल्म, विष, भूत, आनाह, बिबंध, रुधिरविकार, मेद, शूल और कफनाशक है । कूटशाल्मलिक वृक्ष जंगलमें विशेष करके होते हैं, पत्ते जिंगिनीके समान, फूल अत्यंत लालरंगके आते हैं । एक सफेद रंगका होता है ।

धवनामानि ।

धवःपिशाचवृक्षश्चशकटाख्योधुरन्धरः ॥

अर्थ-धव, पिशाचवृक्ष शकटाख्य, धुरन्धर, (शाकटाख्य, दृढतरु, गौर, कषाय, मधुरत्वक्, शुष्कवृक्ष, शुष्काङ्ग, पाण्डुतरु, धवल, पाण्डुर, घट, नन्दितरु, स्थिर, पीतफल, मधुरत्वच्)

संस्कृतभाषामें	धव ।
हिन्दीभाषामें	धौं, धावा ।
वंगभाषामें	धाऊयागाछ ।
मराठीभाषामें	धावडा ।
गुजरातीभाषामें	धावडो ।
कर्णाटकीभाषामें	सिरिवरु ।
तैलिङ्गीभाषामें	नारिंजचेट्टु ।
लेटिन्‌भाषामें	एनोजिसस् लाटिफोलिया । Anogisus Latifolia
	कोनोकार्पस लाटिफोलिया । Conocorpus Latifolia

अस्य गुणाः ।

धवःकटुःकषायःस्यात्कफवातविनाशनः ।
पित्तप्रकोपनोरुच्यःदीपनःपाण्डुरोगजित् ॥

अर्थ-धव-चरपरा, कषेला, कफवातनाशक, पित्तको कुपितकरनेवाला, रुचिकारक, दीपन और पाण्डुरोगको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

धवस्तुतुवरःशीतोमधुरःकटुकोमतः ।

दीपनोरुचिकृच्चैवपाण्डुरोगप्रमेहजित् ॥ कफपित्तार्शवातानांनाशकःपरिकीर्तितः । फलंचास्यहिमं स्वादुरूक्षंचतुवरंमतम् ॥मलस्तम्भकरंचैववातलंकफपित्त-जित्। "मूलंकटुकषायंचपित्तकृद्दीपनंपरम्"(नि. र.) ॥

अर्थ-धौं-कषेला, शीतल, मधुर, चरपरा दीपन, रुचिकारक तथा पाण्डु-रोग, प्रमेह, कफ, पित्त, बवासीर और वातको दूर करे हैं। इसका फल-शीतल, स्वादिष्ठ, रूखा, कषेला, मलस्तम्भक, वातवर्द्धक तथा कफ-पित्तनाशक है। इसकी जड-चरपरी, कषेली, पित्तकारक और परम-दीपन है।

विवरण। धवके वृक्ष जंगलमें अधिक होतेहैं, इसके पत्ते अमरूदके समान और छाल सफेद रंगकी होती है, फल बहुत छोटे होतेहैं इसकी लकडीके हल और मूसल बनते हैं।

धन्वंगनामानि ।

धन्वंगस्तुधनुर्वृक्षोगोत्रवृक्षःसुतेजनः ॥

अर्थ-धन्वंग, धनुर्वृक्ष, गोत्रवृक्ष, सुतेजन।

अस्य गुणाः ।

धन्वङ्गःकफपित्तास्रकासहृत्तुवरोलघुः । बृंहणोबलकृद्रूक्षःसन्धिकृद्व्रणरोपणः ॥ (भा. प्र.)

अर्थ-धन्वंगवृक्ष-कफ, रक्तपित्त और खाँसीको दूर करेहै, कषेला, हलका, बृंहण, बलकारक, रूखा, संधिकारक और व्रणको भरनेवाला है।

धन्वननामानि ।

धन्वनःपिच्छलत्वक्चधनुर्वृक्षोमहाबः ।

अर्थ-धन्वन, पिच्छिलत्वक्, धनुर्वृक्ष, महाबल, (रक्तकुसुम, रुजासह, पिच्छिलक, रूक्ष, स्वादुफल)

अस्यगुणाः ।

धन्वनस्तुवरोवृष्योमधुरःकटुःमोतकः । बल्योरूक्षोलघुश्चैवधातुवृद्धिकरोमतः ॥ किंचिदुष्णगधसंप्रोक्तोव्रणरोपणकारकः । कफमातहरोदाहशोषकण्ठरुजापहः ॥ रक्तरुक्पि-

त्तकासघ्नःपीनसस्यविनाशकः । फलंचास्यस्वादुशीतंतुवरंकफवातहम् ॥

अर्थ-धामिनवृक्ष-कषेला, वीर्य्यवर्द्धक, मधुर, चरपरा, बलकारक, हलका, धातुवर्द्धक, किंचित् गरम, व्रणरोपण तथा कफ, वात, दाह, शोथ, कण्ठरोग, रुधिरविकार, पित्त, खाँसी, और पीनस रोगको दूर करे है। इसका फल-स्वादिष्ठ, शीतल, कषेला, कफ और वातनाशक है।

विवरण। धामिनके वृक्ष-बहुत बडे और लम्बे होते हैं, पत्तेबेरके पत्तोंसे कुछ बडे होते हैं; इसकी लकडी प्रायः इमारतके काममें आती है।

करीरनामानि ।

करीरंगूढपत्रंचशाकपुष्पंकटूफलम् ।
ग्रन्थिलंतीक्ष्णसारंचकण्टकीमरुभूरुहम् ॥

अर्थ-करीर, गूढपत्र, शाकपुष्प, कटूफल, ग्रन्थिल, तीक्ष्णसार, कण्टकी, मरुभूरुह (क्रकर, क्रकच, निष्पत्रिका, करिर, करक, तीक्ष्णकण्टक, गूढफल, निष्पत्र, शोणपुष्प, विदाहिक, शतकुन्त, सुफल, उष्णसुंदर, विकपत्र, कृशशाख)

संस्कृतभाषामें	करीर ।
हिन्दीभाषामें	करील ।
वंगभाषामें	करील (मथुरादिमें) कचडा ।
मराठीभाषामें	नेवती ।
गुजरातीभाषामें	केर ।
कर्णाटकीभाषामें	तिप्पतिगे ।
तैलिङ्गीभाषामें	कवरकुराक एनुगदंत मुमोदतु ।
अंग्रेजीभाषामें	केपर CaPer.
लैटिन्भाषा	केपरिसू स्पाइनोझा Cappuris spinosa
फारसीभाषामें	कबार ।

अस्यगुणाः ।

करीरमाध्मानकरंकषायंकटूष्णमेतत्कफहारिभूरि ।
श्वासानिलारोचकसर्वशूलविच्छर्दिखर्ज्जूव्रणदोषहारि ।

अर्थ-करील-आध्मानकारक, कषेला, चरपरा, गरम, कफनाशक तथा श्वास, वात, अरुचि, सर्वप्रकारके शूल, वमन, खर्ज्जू और व्रणविनाशक है।

अन्यच्च ।

करीरःकटुकस्तिक्तःस्वेद्युष्णोभेदनःस्मृतः ।
दुर्नामकफवातामगरशोथव्रणप्रणुत् ॥ (भा. प्र.)

अर्थ-करील-चरपरा, कडवा, पसीनेको लानेवाला, उष्ण, भेदक तथा बवासीर, कफ, वात, आम तथा विष, सूजन, और व्रणको दूर करेहै ।

अन्यच्च ।

करीरस्तुवरश्चोष्णः कटुश्चाध्मानकारकः । रुच्योभेदकरः स्वादुःकफवातामशोथजित् ॥ विषार्शोव्रणशोथघ्नःकृमिपामाहरोमतः अरोचकंसर्वशूलंश्वासंचैवविनाशयेत् ॥ फलंचास्यकटुस्तिक्तमुष्णंचतुवरंमतम् । विकासिमधुरंग्राहिमुखवैशद्यकारकम् । हृद्यंरूक्षंकफंमेहंदुर्नामानंचनाशयेत् । पुष्पंवातकरंप्रोक्तंतुवरंकफपित्तनुत् ॥ (नि. र.)

अर्थ-करील-कषेला, गरम, चरपरा, आध्मानकारक, रुचिकारक, भेदक, स्वादु तथा कफ, वात, आम, सूजन, विष, बवासीर, व्रण, शोथ, कृमि, खुजली, अरुचि, सर्व प्रकारके शूल और श्वासको दूर करेहै । इसका फल-चरपरा, कडवा, गरम, कषेला, विकासि, मधुर, मलरोधक, मुखको स्वच्छ करनेवाला, हृदयको हितकारी, रूखा तथा कफ, प्रमेह और पित्तका नाश करे है ।

अन्यच्च ।

करीरोव्रणशोफार्शोरक्तहृत्कफवातजित् । कटुपाकरसोत्युष्णोयकृत्प्लीहापहोग्निकृत् ॥ तत्पुष्पंकफवातघ्नंकटुपाकरसंलघु । सृष्टमूत्रपुरीषंचसदापथ्यंरुचिप्रदम् ॥ बालंचास्यफलंपाकेकटुकंश्लेष्मशोथजित् । कषायंवातलंतिक्तंतत्पक्कंकफपित्तजित् ॥ (शो.नि.)

अर्थ-करील-व्रण, सूजन, बवासीर और रक्तविकारको दूर करनेवाला तथा कफ, वात, यकृत् और प्लीहाको दूर करे है, पचनेमें चरपरा, अत्यंत गरम और अग्निवर्द्धक है । इसके फूल-कफवातविनाशक, चरपरे, पचनेमेंभी चरपरे, हलके,मूत्र और मलको करनेवाले, सदैव पथ्य और रुचिकारक हैं ।

इसके कच्चे फल–पचनेमें चरपरे, कफनाशक, शोथनिवारक, कषेले, वातो, कडवे और पके फल–कफ तथा पित्तनाशक हैं।

विवरण--करीलके वृक्ष भूडके ऊपर तथा मारवाडकी भूमिमें अधिकतासे होते हैं, इसकी डंडी नीले रंगकी और फूल गुलाबी रंगका होता है, फाल्गुन और चैत्रमासमें इसके ऊपर फल फूल आते हैं, पत्ते न होनेके कारण वृक्षमें फूलही फूल दीखते हैं।

शाखोटनामानि।

शाखोटःपीतफलकोभूतावासःखरच्छदः।

अर्थ–शाखोट, पीतफलक, भूतावास, खरच्छद (पिशाचद्रु, पीतफल, कर्कशच्छद, शंखिनीवास, भूतवृक्ष, सकट, अक्षधर, करच्छद, गवाक्षी, भूकावास, रूक्षपत्र, पीत, कैशिक्योज, क्षीरनाश)

सं०	शाखोट।	गु०	साहोडा।
हिं०	सहोडा (रा)।	क०	आखोडमरणु।
बं०	शेओडा, शांडा।	तै०	भारिणिकेचेट्टु वरनको।
म०	सहोड।	लै०	स्ट्रेप्ल्यूसास्पर। Streplusasper

अस्य गुणाः।

शाखोटोरक्तपित्तार्शोवातश्लेष्मातिसारजित्।

अर्थ-,सहोडा--रक्तपित्त, बवासीर,वात,कफ और अतिसारको दूर करे है। विवरण। सिहोडेके वृक्ष अत्यंत गँठोले झाड झंकाडसे मध्यम कदके होवेहैं पत्ते छोटे छोटे और चिकने चिकने होतेहैं, फूल सफेद रंगके और लकडीमें कांटेसे प्रतीत होत्तेहैं।

शाकनामानि।

शाकःक्रकचपत्रःस्यात्खरपत्रोतिपत्रकः।
महीरुहःश्रेष्ठकाष्ठः स्थिरसारोगृहद्रुमः॥

अर्थ--शाक.क्रकचपत्र, खरपत्र, अतिपत्रक, महीरुह श्रेष्ठकाष्ठ, स्थिरसार, गृहद्रुम, (अनिल, अर्ण, महापत्र, शाकतरु, शाकवृक्ष, शाकाख्य, अर्जुनोपम, शरपत्र, अतिपत्र, भूमिरुह, द्वारदारु, खरच्छद, दीर्घच्छद, कोलफल, योगी हलीमक, गन्धसार, स्थिरसार, स्थिरक, ध्रुवसाधन)

संस्कृतभाषामें	शाक ।
हिन्दीभाषामें	सागोन, सागवन ।
बंगभाषामें	शेगुनगाछ ।
मराठीभाषामें	साग, सागवान ।
गुजरातीभाषामें	शाग ।
कर्णाटकीभाषामें	नैगु ।
तैलंगीभाषामें	टेकुचेट्टु ।
तामिलीभाषामें	टेक ।
ओत्क०	सिंगुरु ।
अंग्रेजीभाषामें	इंडियनटीकट्री । Indian teak tree
लैटिन्भाषामें	टेकटोना ग्रांडीस् । Tectona Grandis.
फारसीभाषामें	फिलगोस् ।
अरबीभाषामें	फिल्जोशू उजनुलपिल ।

अस्यगुणाः ।

शाकस्तुसारकःप्रोक्तःपित्तदाहश्रमापहः ।
कफघ्नंमधुरंरूक्षंकषायंशाकवल्कलम् ॥ (रा. नि.)

अर्थ-शाक-(सागोन)-सारक तथा पित्त, दाह और श्रमनाशक है। सागोनकी छाल -कफनाशक, मधुर, रूखी, और कषेली है।

अन्यच्च ।

भूमिसहस्तुशिशिरोरक्तपित्तप्रसादनः ॥ (भा. प्र.)

अर्थ-सागवन-शीतल और रक्तपित्तको शुद्ध करनेवाला है।

अपिच ।

शाकःश्लेष्मानिलामघ्नोगर्भसन्धानदोहिमः । (म. पा. नि.)

अर्थ-सागोन-कफ और वातनाशक, गर्भसन्धानकारक और शीतल है।

अन्यच्च ।

शाकवृक्षस्तुतुवरःशीतलोरक्तपित्तहा । गर्भस्थैर्य्यकरश्चैव गर्भसन्धानकारकः ॥ वातपित्तंतथार्शांसिकुष्ठचातिसृतिंजयेत् । अस्यपुष्पंतुतुवरंतिक्तंचविशदंलघु ॥ वातप्रकोपनं रूक्षंकफपित्तप्रमेहनुत् । वल्कलंचास्यमधुरंरूक्षंचमधुरंमतम् ॥ कफनाशकरंचैवमुनिभिः परिकीर्त्तितम् । (नि. र)

अर्थ- शाकवृक्ष--कषेला, शीतल, रक्तपित्तनाशक, गर्भको स्थिरकरनेवाला, गर्भसन्धानकारक तथा वात, पित्त, बवासीर, कोढ और अतिसारको दूर करे है। इसके फूल--कषेले, कडवे, विशद, रूखे हलके, वातको कुपित करनेवाले तथा कफ, पित्त और प्रमेहको दूर करेहै। इसकी छाल-मधुर, रूखी, कषेली और कफनाशक है।

विवरण। शाकके बडे वृक्ष जंगलमें होते हैं, पत्ते बडे और खरखरे होवें इसके पत्तोंको हाथसे मलनेसे हाथ लाल हो जाते हैं सागके फूल छोटे और सफेद होते हैं।

वरुणनामानि।

वरुणोबर्हपुष्पश्चतिक्तशाकःकुमारकः।
उरुमाणःसेतुवृक्षःश्वेतद्रुर्मारुतापहः॥

अर्थ-वरुण, बर्हपुष्प, तिक्तशाक, कुमारक, उरुमाण, सेतुवृक्ष, श्वेतद्रु, मारुतापह, (वरण, कुमार, अश्मरीघ्न, सेतुक, सेतु, वराण, शिखिमण्डल, श्वेतवृक्ष, श्वेतद्रुम, साधुवृक्ष, तमाल)

संस्कृतभाषामें	वरुण।
हिन्दीभाषामें	वरना (बिलि)
वंगभाषामें	वरुणगाछ।
मराठीभाषामें	वायवरणा, (को०) भाटवरणा)
गुजरातीभाषामें	वरणो।
कर्णाटकीभाषामें	मदवसले।
तैलिंगीभाषामें	उरुमट्टि, जाजिचेट्टु, डलिमिरिचेट्टु।
तामिलीभाषामें	मरलिंगम्।
लैटिन्भाषामें	क्रेटिबा, रोक्सबुर्घिआई Crateava Roxburg क्रेटिवा, रिलिजिओसा। Crataeva. G. Religiosa

अस्य गुणाः।

वरुणःपित्तलोभेदीश्लेश्मकृच्छ्राश्ममारुतान्।
निहन्तिगुल्मवातास्रकृमींश्चोष्णाग्निदीपनः॥
कषायोमधुरस्तिक्तः कटुकोरूक्षकोलघुः॥ (भा. प्र.)

अर्थ-वरना-पित्तकारक, भेदक, कफ, मूत्रकृच्छ्र, पथरी, गुल्म, वात

और कृमिका नाश करे है। गरम, अग्निप्रदीपक, कषेला, मधुर, कडवा, चरपरा, रूखा और हलका है।

अन्यच्च ।

वरुणःकटुरुष्णश्चरक्तदोषहरःपरः ।
शीतवातहरःस्निग्धोदीप्योविद्रधिवातजित् ॥ (रा. नि.)

अर्थ-वरना--चरपरा, गरम, रुधिरविकारनाशक, शीतवातनिवारक, स्निग्ध, दीपन तथा विद्रधि और वातविनाशक है।

अन्यच्च ।

वरुणोऽनिलशूलघ्नोभेदीचोष्णोऽश्मरीहरः ।
पुष्पंवरुणजंग्राहिपित्तघ्नमामवातजित् ॥ (रा०ज०)

अर्थ-वरना--वात और शूलनाशक, दस्तावर, गरम और पथरीको दूर करे है। वरनाके फूल--मलरोधक पित्तनाशक और आमवातको दूर करे हैं।

अपिच ।

वरुणोष्णःकटुःस्निग्धोदीपनोमधुरःस्मृतः । लघुस्तिक्तस्तुवरःपित्तलोभेदकःस्मृतः॥ वातंकफंविद्रधिंचमूत्रकृच्छ्रंचनाशयेत्। अश्मरींवातरक्तंचगुल्मंरक्तरुजंकृमीन्॥ रक्तदोषंशीर्षवातंमूत्राघातंचहृद्रुजम् ॥ हृद्रोगंनाशयत्येव पुष्पंचास्यचग्राहकम् ॥ रक्तदोषहरंचैवफलंचास्यसरंगुरु । पाकेतुमधुरंस्वादुस्निग्धोष्णंवातनाशकम् ॥ पित्तंकफंनाशयतीत्यवचमुनिभिर्मतम् ॥ (नि०र०)

अर्थ-वरना--गरम, चरपरा, स्निग्ध, दीपन, मधुर, हलका, कडवा, कषेला, पित्तजनक, दस्तावर तथा वायु, कफ, विद्रधि, मूत्रकृच्छ्र, पथरी, वातरक्त, गुल्म, रक्तविकार, कृमि, रक्तदोष, शीर्षवात, मूत्राघात, हृदयरोग और उरः शूलको नष्ट करे है। इसका फूल--मलरोधक, रक्तविनाशक। इसके फल--सारक, भारी, पचनेमें मधुर, स्वादिष्ठ, स्निग्ध, गरम तथा वातपित्त, और कफको हरे हैं।

विवरण। वरनेका बडा वृक्ष होता है, पत्ते बेलके समान तीन ३ लगते

हैं, फल बेलके समान गोल और सुपारीकी आकृतिवाले होते हैं, फूल गुलतुर्रेके सदृश होता है।

कटभीनामानि।

कटभीनाभिकाशौण्डीपाटलीकिणिहीतथा।
मधुरेणुःक्षुद्रश्यामाकैडर्य्यश्यामलानवा॥

अर्थ--कटभी. नाभिका, शौण्डी. पाटली, किणिही, मधुरेणु, क्षुद्रश्यामा कैडर्य्य, श्यामला, (स्वादुपुष्प, कटम्भर, किणिही, भद्रेन्द्राणी)

श्वेतकटभीनामानि।

सितादिकटभीश्वेताकिणिहीगिरिकर्णिका।
शिरीषपत्रीकालिन्दीशतपादाविषघ्निका॥
महाश्वेतामहाशौण्डीमहादिकटभीदशा॥

अर्थ-सितकटभी, श्वेतकिणिही, गिरिकर्णिका, शिरीषपत्री, कालिन्दी, शतपदा, विषघ्निका, महाश्वेता, महाशौंडी और महाकटभी)

संस्कृतभाषामें	कटभी, श्वेतकटभी।
हिन्दीभाषामें	करही, कटभी, हरिमल।
मराठीभाषामें	वाकुंभा।
गुजरातीभाषामें	वापुंगा।
कर्णाटकीभाषामें	वेल्लाल।
अंग्रेजीभाषामें	केरीसट्री। Careys. trea
लैटिन्भाषामें	केरिया आर्बोरिया। Careya arboree

कटभीगुणाः।

कटभीचेत्कटुरुष्णागुल्मविषाध्मानशूलदोषघ्नी।
वातकफाजीर्णरुजांशमनीश्वेताचतत्रगुणयुक्ता॥ (रा. नि.)

अर्थ-कटभी-चरपरी, गरम तथा गुल्म, विष, आध्मान शूल, वात कफ और अजीर्णरोगको दूर करे है और श्वेतकटभी गुणयुक्त है।

अन्यच्च।

कटभीतुप्रमेहार्शोनाडीव्रणविषकृमीन्।
हन्त्युष्णाकफकुष्ठघ्नीकटूरूक्षाचकीर्त्तिता।
तत्फलंतुवरंज्ञेयंविशेषात्कफशुक्रजित् (भावप्रकाश)

अर्थ-कटभी-प्रमेह, बवासीर, नाडीव्रण, विष, कृमि, कफ और कुष्ठको नष्ट करे है, गरम, चरपरी और रूखी है। इसका फल--कषेला और त्रिश करके कफ तथा शुक्रनाशक है।

विवरण। कटभीके मध्यम आकारके वृक्ष होते हैं पत्ते लम्बे और कुछ कुछ गोल होते हैं, फल अंड खर्बूजेके समान छोटे छोटे लगते हैं।

मुष्ककनामानि।

मुष्ककोमोक्षकोमुष्टिर्मूर्खकोमोचकस्तथा।
क्षारश्रेष्ठःक्षारवृक्षोद्विविधःश्वेतकृष्णकः॥

अर्थ-मुष्कक, मोक्षक, मुष्टि, मूर्खक, मोचक. क्षारश्रेष्ठ, क्षारवृक्ष, (गौलिक, मेहन, पाटली विषापह, जटाल, वनवासी, सुतीक्ष्णक, गोलीढ, गोलिह, क्षारोष्ण, शिखरी, वनवासी, घण्टापाटलि, क्षुद्रपाटलि, मुंचक, जटालु, झाटल, मोक्ष, घण्टा, पाटलि, क्षारद्रु, कालमुष्कक, पाटली, घण्टाक, तीक्ष्ण, घण्टक, कालस्थाली) यह सफेद और कृष्ण इन भेदोंसे दो प्रकारका है।

संस्कृतभाषामें	मुष्कक, मोक्षक।
हिन्दीभाषामें	मोषा, मोखा, फरवाह।
वङ्गभाषामें	घण्टापारुल।
मराठीभाषामें	मोकडी, मोखावृक्ष।
गुजरातीभाषामें	मरखो।
कर्णाटकीभाषामें	मोखरलाई।
तैलिंगीभाषामें	मोक्कपुचेट्टु, मुष्कतुण्डुचेट्टु।

लैटिन्भाषामें स्क्रीबीरास्वीटे निओइबिस्। Schrc bera swietenioides.

अस्य गुणाः।

मुष्ककःकटुकोम्लश्चरोचनःपाचनःपरः।
प्लीहगुल्मोदरार्त्तिघ्नोद्विधातुल्यगुणान्वितः (रा०नि०)

अर्थ-दोनोंप्रकारके मोखावृक्ष-चरपरे, खट्टे, रोचन, पाचक तथा प्लीहा गुल्म और उदररोगको दूर करे हैं।

अन्यच्च।

मोक्षकःकटुकस्तिक्तोग्राह्युष्णः कफवातहृत्।
विषमेदोगुल्मकण्डूवस्तिरुक्कृमिशुक्रनुत्॥

अर्थ--मोखा--चरपरा, कडवा, मलरोधक, गरम तथा कफ, वात, वि...
मेद, गुल्म, कण्डू, वस्तिरोग, कृमि और शुक्रको नष्ट करे है।

अन्यच्च।

मोक्षकःकफवातघ्नोग्राहीगुल्मविषकृमीन्।
हन्त्युष्णोवस्तिरुक्कण्डूतत्पुष्पंकफपित्तजित्॥
निर्य्यासोस्यपरंवृष्यःशोषपित्तानिलापहः। (म. नि.)

अर्थ--मोखा- कफवातनाशक, मलरोधक, गुल्म, विष और कृमिनाशक है गरम, वस्तिरोग और कण्डूको दूर करे है। इसका फूल कफपित्तनाशक है। इसका गोंद--अत्यन्त वीर्य्यवर्द्धक तथा शोष, पित्त और वा... विनाशक है।

अन्यच्च।

मुष्ककःकटुकश्चाम्लोरुच्चिकृत्पाचनःस्मृतः। ग्राहकोष्ण...
पटुस्तिक्तःप्लीहगुल्मोदरापहः॥ विषदोषंकफंवातंमेदरुग्व...
स्तिशूलहा। शुक्रदोषंकर्णरुजंपित्तकण्डूंकृमीञ्जयेत्॥पुष्प...
कुष्ठहरंज्ञेयंवातपित्तकफप्रणुत्। फलमग्नेर्दीप्तिकरंभेदकरो...
चकंमतम्॥ गुल्ममेहार्शःपाण्डुघ्नंशुक्रदोषोदरञ्जयेत् (नि. र.)

अर्थ--मोखावृक्ष--चरपरा, खट्टा, रुचिकारक, पाचक, मलरोधक, गरम... निकमीन, कडवा तथा प्लीहा, गुल्म, उदररोग, विषविकार कफ, वात, मे... रोग, वस्तिशूल, शुक्रदोष, कर्णरोग, पित्त, कण्डू और कृमिको दूर करे है। इसका फूल--कुष्ठ, वात, पित्त, कफको दूर करे है। इसका फल--अग्निप्रदीपक दस्तावर, रोचक तथा गुल्म, प्रमेह, बवासीर, पाण्डुरोग, शुक्रदोष और उदररोगको दूर करे है।

विवरण। मोखके वृक्ष सफेद और काले इनभेदोंसे दोप्रकारके होते हैं। पत्ते बड २ होते हैं। इनमें आकके समान दूध निकलता है। फल ... कारके लगते हैं।

अम्बुशिरीषिकानामानि।

शिरीषिकाढिंढिणिकादुर्बलाम्बुशिरीषिका।

अर्थ--शिरीषिका ढिंढिणिका दुर्बला, अम्बुशिरीषिका।

संस्कृतभाषामें	अम्बुशिरीषिका ।
हिन्दीभाषामें	जलसिरस, ढाढेन ।
मराठीभाषामें	जलशिरसी ।

अस्य गुणाः ।

त्रिदोषकफकुष्ठार्शोहरीवारिशिरीषिका ।

अर्थ--जलसिरस (ढाँढोन)--त्रिदोष, कफ, कोढ और बवासीरको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

ढिंढिणीकफकुष्ठार्शःसन्निपातविषापहा ॥(म०नि०)

अर्थ-जलसिरस-कफ, कुष्ठ, बवासीर, सन्निपात और विषको दूर करै है ।

विवरण । जलसिरसके वृक्ष, सिरसकेही समान कुछ छोटे जलमें होतेहैं ।

शमीनामानि ।

शमीशक्तुफलीशान्ताकेशहन्त्रीशिवाफला ।
मङ्गल्याशुभदालक्ष्मीःपवित्रापापनाशिनी ॥

अर्थ-शमी, शक्तुफली, शान्ता, केशहन्त्री, शिवाफला, मङ्गल्या, शुभदा, लक्ष्मी, पवित्रा, पापनाशिनी (सक्तुफली, शक्तुफला, सक्तुफला, शिवा, काननारि, तुंगा, कचरिफला, केशमथनी, ईशानी, तपनतनया, इष्टा, शुभकरी इविगन्धा. मेध्या, दुरितदमनी, शक्तुफलिका, समुद्रा, वह्निगर्भा, समीर, ईशान, सुरभी, पापशमनी, भद्रा, शंकरी, सुपत्रा, सुखदा, ईशाना, शंकरा, शंकुफलिका, सुभद्रा)

संस्कृतभाषामें	शमी ।
हिन्दीभाषामें	छोंकर (रा) समी, सफेदकीकर, छिकुर ।
वंगभाषामें	शाँइ, छुँइवाल्ला ।
मराठीभाषामें	थोरशमी, लघुशमी ।
गुजरातीभाषामें	खिजडी, नानी खिजडी ।
कर्णाटकीभाषामें	बनि, कावन्नि ।
तैलिङ्गीभाषामें	शमीचट्टु ।
औत्क०	शुमि ।
अंग्रेजीभाषामें	स्पंजट्री । Spnng tree
लैटिन्भाषामें	प्रोसोपिस स्पाइसिजेरा । Prosopis spicigera

अस्य गुणाः ।

शमीरूक्षाकषायाचरक्तपित्तातिसारजित् ।
तत्फलंतुगुरुस्वादुरूक्षोष्णंनखकेशनुत् ॥ (रा०नि०)

अर्थ-शमी (छोंकर) रूखा, कषेला, तथा रक्तपित्त और अतिसारना-शकहै । इसका फल भारी, स्वादिष्ठ, रूखा, गरम तथा नख और केशोंका नाश करे है ।

अन्यच्च ।

शमीतिक्ताकटुःशीताकषायारोचनीलघुः ।
कफकासभ्रमश्वासकुष्ठार्शःकृमिजित्स्मृता ॥
"तत्फलंपित्तलंरूक्षंमेध्यंकेशविनाशनम्" (भा०प्र०)

अर्थ-छोंकर-कडवा, चरपरा, शीतल, कषेला, रोचन, हलका और कफ, खाँसी, भ्रम, श्वास, कोढ, बवासीर और कृमिको दूर करे है । इसका फल-पित्तजनक, रूखा, मेधाकारक और केशोंका नाश करे है ।

अन्यच्च ।

शमीतुतुवरारूक्षाशीतालघ्वीचतिक्तका । कटुकारेचनीचे-वरक्तपित्तातिसारनुत् ॥ कुष्ठार्शःश्वासकासघ्नीकफभ्रमकृमीन् हरेत् । कम्पश्रमाणांशमनीफलंतीक्ष्णश्चपित्तलम् ॥ मेध्यं-गुरुस्वादुरूक्षमुष्णंकेशहरंपरम् ।

अर्थ--शमी (छोकर)-कषेला, रूखा, शीतल, हलका, कडवा, चरपरा, दस्तावर तथा रक्तपित्त, अतिसार, कुष्ठ, बवासीर, श्वास, खाँसी, कफ, भ्रम, कृमि, कम्प और श्रमनाशक है । इसका फल-तीक्ष्ण, पित्तजनक, मेधाजनक, भारी, स्वादिष्ठ, रूखा, गरम और केशोंको दूर करेहै ।

विवरण । बडा वृक्ष होताहै, पत्ते छोटे, खैरके समान और फली सेंगरीके समान होतीहै । यहभी एक बबूरकी जातीमेंसे है ।

सप्तपर्णनामानि ।

सप्तपर्णोविशालत्वक्छारदोविषमच्छदः ।

अर्थ-सप्तपर्ण, विशालत्वक्, शारद, विषमच्छद (विद्ध, वितद, विन्ध्याक्ष, सारद, देववृक्ष, दलेगन्धि, शिरोरुजा, ग्रहनाश, सूतिपत्र, ग्रहाशी, ग्रहनाशन,

गुच्छपुष्प, शुक्तिपर्ण, सुपर्णक, अयुक्छद, अयुग्मच्छद, गुच्छपुष्प, युग्मपर्ण, मुनिच्छद, बृहत्त्वक्, बहुपर्ण, शाल्मलिपत्रक, मदगन्ध, गन्धिपर्ण, सप्तच्छद, छत्रपर्ण, शरदिपुष्प)

संस्कृतभाषामें	सप्तपर्ण ।
हिन्दीभाषामें	छतिवन, सतवन, सतोना, छातियान् ।
वंगभाषामें	छातिमगाछ, छेतेन ।
मराठीभाषामें	सात्विण ।
गुजरातीभाषामें	सप्तपर्ण ।
व०	छातविण ।
कर्णाटकीभाषामें	एलेलेग ।
तैलिङ्गीभाषामें	ऐडाकुल, अरिटाकु ।
लैटिन्भाषामें	आल्स्टोनिया स्कोलेरिस् । Alstonia schlaris

अस्य गुणाः ।

सप्तपर्णोव्रणश्लेष्मवातकुष्ठास्रजन्तुजित् ।
दीपनःश्वासगुल्मघ्नःस्निग्धोष्णस्तुवरःसरः (भा०प्र०)

अर्थ-सतवन-व्रण, कफ, वात, कुष्ठ, रुधिरविकार, कृमि, श्वास और गुल्मका नाश करे है । दीपन, स्निग्ध, उष्ण और कुछ २ दस्तावर है ।

अन्यच्च ।

सप्तपर्णःकषायोष्णस्तिक्तोदीप्तिकरः सरः ।
स्निग्धोहृद्यःकृमिश्वासकुष्ठगुल्मव्रणास्रजित् ॥
मदगन्धिस्त्रिदोषघ्नःशूलरक्तरुजापहः ॥ (रा० नि०)

अर्थ-सतवन-कषेला, गरम, कडवा, अग्निप्रदीपक, सारक, स्निग्ध, हृदयको हितकारी, मदगन्धिवाला तथा कृमि, श्वास, कोढ, गुल्म, व्रण, रुधिरविकार, त्रिदोष, शूल और रक्तरोगका नाश करे है ।

विवरण । वडा वृक्ष है, पत्ते शेमलके समान और एक २ डालीमें सात २ लगते हैं ।

तिनिशनामानि ।

तिनिशः स्पंदनोनेमीसर्वसारोऽश्मगर्भकः ।

अर्थ-तिनिश, स्पंदन, नेमी, सर्वसार. अश्मगर्भक (तिनाशक, स्पन्द-

नद्रुम, अक्षक, चित्रकर्म्मा, रथद्रु, अतिमुक्तक, वञ्जुल, चित्रकृत्, चक्री, शतांग, शकट, रथ, रथिक, भस्मगर्भ, मेषी, जलधर, स्पंदनि)

संस्कृतभाषामें	तिनिश ।
हिन्दीभाषामें	तिरिच्छ० (–) तिनसुना ।
वंगभाषामें	तिनाश, सादन, जारुलगाछ ।
मराठीभाषामें	तिवस ।
गुजरातीभाषामें	हम्मों, मिणोहम्मों । [bergia oides.
लैटिन् भाषामें	युजिनियाडाल बर्जिया ओईडिस् Ougenia da-

अस्य गुणाः ।

तिनिशःश्लेष्मपित्तास्रमेदःकुष्ठप्रमेहजित् ।
तुवरःश्वित्रदाहघ्नोव्रणपाण्डुकृमिप्रणुत् (भा०प्र०)

अर्थ–तिरिच्छ–कफ, पित्त, रुधिरविकार, मेद, कोढ, प्रमेह, श्वित्रकुष्ठ, दाह, व्रण, पाण्डु और कृमिका नाश करे है तथा कषेला है ।

अन्यच्च ।

तिनिशस्तुवरश्चोष्णोग्राहकःकफवातहा । रक्तातिसारकुष्ठंचमेहमेदंव्रणंतथा ॥ रक्तदोषंचपित्तंचश्वित्रकुष्ठंकृमींस्तथा । दाहंचपाण्डुरोगंचनाशयेदितिकीर्त्तितः ॥ (नि०र०)

अर्थ--तिरिच्छ कषेला, गरम, ग्राही, कफवातनाशक तथा रक्तातिसार, कोढ, प्रमेह, मेद व्रण, रुधिरविकार, पित्त, श्वित्रकुष्ठ, कृमि, दाह और पाण्डु रोगका नाश करे ।

विवरण । तिनिसके बडे बडे वृक्ष होते हैं, पत्ते छोटे छोटे छोंकरके समान होते हैं, इसकी आकृति खैर अथवा लकिरके समान होती है ।

हरिद्रुनामानि ।

हारिद्रकः पीतवर्णःश्रीमान्गौरद्रुमोवरः ।

अर्थ हारिद्रक, पीतवर्ण, श्रीमान्, गौरद्रुम (हरिद्र, पीतदारु, पीतक, पित्तक, कदम्बक, सुपुष्प, सुराह्व, पीतकद्रुम)

संस्कृतभाषामें	हरिद्रु ।
हिन्दीभाषामें	हलदिवा, हलरवा, हलदू ।
वंगभाषामें	वृक्षविशेष ।
मराठीभाषामें	हळदिवावृक्ष ।

गुजरातीभाषामें हलदरवो ।
कर्णाटकीभाषामें विलिलु ।
लैटिन्‌भाषामें नोक्लिया कोर्डिफोलिया । Nauclea cordifolia
एडिना कोर्डिफोलिया । Adina cordifolia

अस्य गुणाः ।

हरिद्रुःकटुकःपाकेवीर्योष्णस्तुवरः कटुः ।
लघुःकफहरोवर्ण्योव्रणशोधनरोपणः ॥
तिक्तोबल्यःकान्तिदश्चत्वग्दोषांश्चविनाशयेत् ।

अर्थ-हलदुवा-पचनेमें चरपरा, उष्णवीर्य्य, कषेला, चरपरा, हलका, कफनाशक, वर्णको उज्ज्वल करनेवाला, व्रणशोधक, व्रणरोपण, कडवा, बलवर्द्धक, कान्तिजनक और त्वचाके दोषोंको दूर करे है ।

अपिच ।

हरिद्रुःशीतलस्तिक्तोमंगल्यःपित्तवान्तिजित् ।
अंगकान्तिकरोबल्योनानात्वग्दोषनाशनः ॥ (रा. नि.)

अर्थ-हलदुवा-शीतल, कडवा, मंगलकारक, पित्तनाशक, वमननिवारक बलवर्द्धक और त्वचाके दोषोंको दूर करे है ।

विवरण । हलदुके बड़े २ वृक्ष पर्वत और वनोंमें होते हैं, इसकी छाल ...रङ्गकी होती है । पत्ते दोनों ओर शाखामें बराबर लगे होते हैं ।

रुद्राक्षनामानि ।

रुद्राक्षंचशिवाक्षंचसर्वाक्षंभूतनाशनम् ॥
पावनंनीलकंठाक्षंहराक्षंचशिवप्रियम् ॥

अर्थ-रुद्राक्ष, शिवाक्ष, शर्वाक्ष, भूतनाशन, पावन, नीलकंठाक्ष, हराक्ष, शिवप्रिय (तृणमेरु, अमर, पुष्पचामर)
हिन्दी, वंग, मराठी, गुजराती, कर्णाटकी, तैलिङ्गी-रुद्राक्ष)
लैटिन्‌भाषामें इल्योकार्पस गेनीट्रस ।

अस्य गुणाः ।

रुद्राक्षमम्लमुष्णंचवातघ्नंकफनाशनम् ।
शिरोर्तिशमनंरुच्यंभूतग्रहविनाशनम् ॥

अर्थ-रुद्राक्ष-अम्ल, उष्ण, वातनाशक, कफनिवारक, शिरकी पीड़ा दूरकरनेवाला तथा भूतबाधा और ग्रहबाधाको हरे है। रुद्राक्षके वृक्ष विशे करके वनमें होते हैं, पत्ते लघु और कुछ गोल होते हैं। इसके बीजों रुद्राक्ष कहते हैं।

माडनामानि।

माडोमाडद्रुमोदीर्घोध्वजवृक्षोवितानकः।
मद्यद्रुमोमोहकारीमद्यद्रुरज्जुरष्टधा ॥

अर्थ-माड, माडद्रुम, दीर्घ, ध्वजवृक्ष, वितानक, मद्यद्रुम, मोहकारी मद्यद्रुरज्जु।

संस्कृतभाषामें	माड।
हिन्दीभाषामें	माड।
मराठीभाषामें	माड।
गुजरातीभाषामें	माड, सेलिमाड।
कर्णाटकीभाषामें	वैनो।
अंग्रेजीभाषामें	टोर्नलिव्ड। Tornleaved
लैटिन्भाषामें	केर्युटायुरेन्स कार्गोट। Caryeta urens cargot

अस्यगुणाः।

माडस्तुशिशिरोरुच्यःकषायःपित्तदाहकृत्।
तृष्णापहोमरुत्कारीश्रमहृच्छ्लेष्मकारकः ॥ (रा. नि.)

अर्थ-माड-शीतल, रुचिकारक, कषेला, पित्तदाहकारक, तृष्णाहारक, वादी श्रमनाशक और कफकारक है।

विवरण। माडके वृक्ष वन जंगल सर्वत्र होते हैं, पत्ते बडे २ लम्बे गोल होते हैं, फूल सफेद और लाल रंगके आते हैं।

साजडनामानि।

साजडोवनजोवृक्षःकृष्णत्वक् श्यामसारकः।
धाराफलोथनिस्सारबलकोवीरवृक्षकः ॥

अर्थ-साजड, वनजवृक्ष, कृष्णत्वक्, श्यामसारक, धाराफल, निस्सार, बलक, वीरवृक्षक।

हिन्दीभाषामें कौहा (ह)

मराठीभाषामें आयन, ऐन ।
गुजरातीभाषामें साजड ।
तैलिङ्गीभाषामें नल्लमद्दि ।
लैटिन्‌भाषामें टरमिनेलिया ग्लेब्रा ।

अस्य गुणाः ।

"पार्थक्षतेनिलेभग्नेरक्तस्तम्भेकफेहितः" ॥

अर्थ--साजड--क्षत, वात, भग्न, रक्तस्तम्भ और कफरोगमें हितकारी है ।

विवरण--साजडभी अर्जुनका भेद है, इसकी आकृति प्रायः अर्जुनवृक्षके समान होती है । इसीका भेद ढोल समुद्रिका जानना ।

ढोलसमुद्रिकागुणाः ।

ढोलसमुद्रिकाप्रोक्ताकीटादीनांविषप्रणुत् ॥

अर्थ-ढोलसमुद्र--कीटादिकोंके विषको हरनेवाला है ।

इति श्रीशालिग्रामनिघण्टुभूषखे वटादिवर्गः ॥ ६ ॥

अथ धातूपधातुवर्गः ।

सुवर्णनामानि ।

स्वर्णंसुवर्णंकनकंहिरण्यंहेमहाटकम् ।
चामीकरंशातकौम्भंद्राविणंभूरिपिञ्जरम् ॥

अर्थ--स्वर्ण, सुवर्ण, कनक, हिरण्य, हेम, हाटक, चामीकरशातकौम्भ, द्राविण, भूरिपिञ्जर, (गांगेय, भर्म्म, कर्व्बूर जातरूप, महारजत, काञ्चन रुक्म, कार्त्तस्वर, जाम्बूनद, अष्टापद, करहाटक, ऋक्थ, सानसि, अकुप्य, लोहोत्तम, भूत्तम, पुरट, रेकन, शातकुम्भ, कर्बुर, कर्चूर, रुक्म, भद्र, गैरिक आग्नेय, भरु, चन्द्र, कलधौत, अभ्रक, अग्निबीजं, लोहवर, ऊर्ध्व, सारुक, स्पर्शमणिप्रभव, मुख्यधातु, शतखण्ड, उज्ज्वल, कल्याण, मनोहर, अग्निवीर्य्य, अग्नि, भास्कर, पिञ्जान, आपिञ्जर, तेज, दिप्त, अग्निभ, दीप्तक, मङ्गल्य, हैमिरुक, भृङ्गार, जाम्बव, आग्नेय, निष्क, तपनीयक, अग्निशिख, चंड, श्रय, पेश, कृशन, लोह, अमृत, मरुत्, दत्र, चारुरत्न, पीतक, श्रीनिकेत, भूषणार्ह, सूर्य्यनामक)

संस्कृतभाषामें सुवर्ण, स्वर्ण ।
हिन्दीभाषामें सोना ।
बंगभाषामें सोना ।
मराठीभाषामें सोनें ।
गुजरातीभाषामें सोनु ।
कर्णाटकीभाषामें चिन्ना, स्वर्ण ।
तैलिङ्गीभाषामें भङ्गारं ।
अंग्रेजीभाषामें गोल्ड । Gold
लैटि० ओरं । Aurum
फारसीभाषामें तिला ।
अरबीभाषामें जहब ।

स्वर्णगुणाः ।

स्वर्णस्निग्धंकषायंचतिक्तंमधुरमेवच ।
स्वादुशीतंत्रिदोषघ्नंरसायनंसुरोचकम् ॥
चक्षुष्यमायुष्यप्रज्ञावीर्य्यबलस्मृतिप्रदम् ॥

अर्थ- सोना--स्निग्ध, कषेला, कडवा, मधुर, स्वादु, शीतल, त्रिदोषनाशक, रसायन, रुचिकारक, नेत्रोंको हितकारी, आयुवर्द्धक, प्रज्ञावर्द्धक, वीर्य्यदायक, बलकारक और स्मरणशक्तिवर्द्धक है ।

सुवर्णपरीक्षा ।

दाहेरक्तंसितंछेदेनिकषेकुंकुमप्रभम् । तारशुल्वोज्झितं स्निग्धंकोमलंगुरुहेमतत् ॥ तच्छ्वेतंकठिनंरूक्षंविवर्णंसमलंदलम् ॥ दाहेछेदेसितंश्वेतंकषेत्याज्यंलघुस्फुटम् ।

अर्थ--तपानेमें लालहो, तोडनेमें सफेदहो, कसौटीके ऊपर रखनेसे केशरके रंगका होजाय, चांदी और तांबे करके रहितहो, स्निग्ध, नरम और भारी ऐसा सोना उत्तम होता है । सफेदरंगका कठोर, रूखा, बुरेरंगका, मैलयुक्त, परतयुक्त, तपाने और तोडनेमें सफेद हो, कसौटीके ऊपर रखनेसे सफेद होजाय, हलका और चोट मारनेसे टूट जावे ऐसा सोना त्याज्य है ।

अन्येच गुणाः ।

सुवर्णशीतलंवृष्यंबल्यंगुरुरसायनम् । स्वादुतिक्तंचतुवरं पाकेचस्वादुपिच्छिलम् । पवित्रंबृंहणंनेत्र्यंमेधास्मृतिमतिप्रदम् । हृद्यमायुष्करंकान्तिवाग्विशुद्धिस्थिरत्वकृत् । विषद्वयक्षयोन्मादत्रिदोषज्वरशोषहृत् ।

अर्थ -सोना (सोनेकी, भस्म)--शीतल, वीर्यवर्द्धक, बलवर्द्धक, भारी

रसायन स्वादिष्ठ, कडवा, कषेला, पचनेमें स्वादु. पिच्छिल, पवित्र, पुष्टिकारक, नेत्रोंका हितकारी तथा मेधा- स्मरण शक्ति और बुद्धिजनक है, हृदयको हितकारी, आयुवर्द्धक, कान्तिजनक, वाणीको शुद्ध और स्थिर करनेवाला, तथा, स्थावरविष, जंगमविष, क्षय, उन्माद, त्रिदोष, ज्वर और शोषको दूर करे हैं ।

असम्यङ्मारितस्वर्णगुणाः ।

असम्यङ्मारितंस्वर्णबलंवीर्य्यंचनाशयेत् ।
करोतिरोगान्मृत्युञ्चतद्धन्यात्प्रयत्नतस्ततः ॥

अर्थ-अविधिसे मारा सुवर्ण-बल, और वीर्य्यनाशक है, रोगजनक और मृत्युकारक है। इसकारण उसको भले प्रकारसे मारे ।

अशुद्धस्वर्णस्यदोषः

बलंसवीर्य्यंहरतेनराणांरोगव्रजंपोषयतीहकाये ।
असौख्यकार्य्येवसदासुवर्णमशुद्धमेतन्मरणञ्चकुर्य्यात् ॥
(भा. प्र.)

अर्थ-अशोधित सुवर्ण--बल और वीर्य्यनाशक, शरीरमें अनेकप्रकारके रोगोंको उत्पन्न करनेवाला, निरन्तर असुखकारक और मरणको करनेवाला है ।

दह्यंतेधातवोवह्नौमणिरत्नाभ्रकादयः। नक्षीयतेनम्रियतेसुवर्णमजरामरम् ॥ अपक्वहेमसंघृष्टंशिलायांजलयोगतः । द्रवरूपंतुतत्पेयंमधुनागुणदायकम् ॥ मध्वामलकचूर्णंचवरकश्चेतितत्त्रयम् । प्राश्यारिष्टग्राहितोपिमुच्यतेप्राणसंकटात् ॥ तस्मान्मृतोत्थितंचापिभक्षन्तद्विचारयेत् मृतंहाटकंदिव्यकांतिंतनोतिक्षतंश्वासकासौक्षयंपित्तवातौ प्रमेहंग्रहण्यातिसारौचकुष्ठंज्वरंहन्तिवाषंढकंदर्पदंच ॥

अर्थ-धातु, मणि, रत्न और अभ्रकादि सम्पूर्ण रस अग्निमें डालनेसे जलजाते हैं। किन्तु, सोना नतो मरताहै और न कम होता है; इसकारण यह अजर और अमरहै । कच्चे सोनेको लेकर जलके योगसे पत्थरपर घिसे, फिर उसमें सहत डालकर पिये तो अत्यन्त गुण होता है ।

सहत--आमलेका चूर्ण और सोनेके वर्क इनको एकत्र मिलाकर चाटनेसे अरिष्टको प्राप्त हुआ और प्राणसंकट होने परभी आरोग्य होजाता है।

सोनेकी भस्म--दिव्य कांतिजनक तथा क्षत, श्वास. खाँसी, क्षय, पित्त, वात, प्रमेह, संग्रहणी, अतिसार, कुष्ठ और ज्वरको दूर करे है तथा नपुंसकोंके कामदेवको वृद्धि करे है।

स्वर्णस्योत्पत्तिः।

पुरानिजाश्रमस्थानांसप्तर्षीणांजितात्मनाम् । मरीचिरंगिरा अत्रिःपुलस्त्यःपुलहःक्रतुः ॥ वसिष्ठश्चेतिसप्तैतेकीर्तिताःपरमर्षयः । पत्नींविलोक्यलावण्यलक्ष्मीसम्पन्नयौवनाम् । कंदर्पदर्पविध्वस्तचेतसोजातवेदसः। पतितंयद्धरापृष्ठेरेतस्तु हेमतामगात्॥कृत्रिमंचापिभवतितद्रसेन्द्रस्यवेधतः॥(भा.प्र.)

अर्थ पूर्वकालमें मरीचि, अंगिरा, अत्रि, पुलस्त्य, पुलह, क्रतु और वसिष्ठ यह जितात्मा, सप्तऋषि अपने आश्रममें बैठे हुये थे । इनकी पत्नीकी लावण्यता और यौवनावस्थारूप लक्ष्मीको देख कामके बाणोंसे पीडित अग्निका शुक्र जो पृथ्वीमें गिरा उसने सोनेकी उत्पत्ति हुई और एक कृत्रिमभी होता है, जिसको पारेके वेधसे बनाते हैं।

वितरण--लंका, चीन, अमेरिका, आफ्रिका आदिदेशोंमें सोनेकी अनेक खानें हैं। प्रायः उपर्युक्तस्थानोंकी भूमिको खोदनेसे जो सोनेकी धूलसे मिलाहुआ रेता निकलता है उसको अनेक प्रकारसे साफ करके सोना बनाया जाता है।

रूप्यकनामानि ।

रूप्यंदुर्वर्णकंश्वेतंखर्जूरंलोहराजकम् । अकुप्यंरजतंसौधंविमलंचन्द्रलोहकम् ॥

अर्थ--रूप्य, दुर्वर्णक. श्वेत, खर्जूर लोहराजक, अकुप्य, रजत, सौध, विमल, चन्द्रलोहक,) शुभ्र, वसुश्रेष्ठ रु.धर, श्वेतक, महाशुभ्र, तारहेम, चन्द्रभूति, सित, तार, कलधूत, इन्द्रलोहक, रौप्य, धौत, चन्द्रहास, राजरंग, दुर्वर्ण, रंगवीज, कलधौत, कुप्य, रुचिर, चन्द्रवपु, महावसु, बाष्कल, महाधन, चन्द्रकान्ति, शुभ)

सं०	रूप्यक, रौप्य, रजत ।	तै०	ऐंडी ।
हिं०	चांदी, रूपा ।	इं०	सिल्वर Silver
बं०	रूप ।	लै०	आर्गेन्टम् । Argentum
म०	रुपें, चांदी ।	फा०	नुकरा ।
गु०	रुपुं ।	अ०	फिद्दा ।
क०	बेळ्ळि ।		

रौप्यपरीक्षा ।

गुरुस्निग्धंमृदुश्वेतंदाहेच्छेदेघनक्षमम् । वर्णाढ्यंचन्द्रवत्स्वच्छंरूप्यंनवगुणंशुभम् ॥ कठिनंकृत्रिमंरूक्षंरक्तपीतदलंलघु । दाहेछेदेघनैर्नष्टंरूप्यंदुष्टंप्रकीर्तितम् ॥

अर्थ-तोलमें भारी, स्निग्ध, नरम, तपाने और तोडनेमें सफेद. घनकी चोटको सहलेवे, सुंदरवर्ण और चन्द्रमाके समान निर्मल यह नवगुणयुक्त रूपा उत्तम होता है। कठोर, बनावटी, रूखा, लाल, पीलेपत्तरवाला, हलका, तपाने तोडने और घनकी चोटसे टूटजाय ऐसा रूपा दुष्ट होता है।

रौप्यगुणाः ।

रौप्यंस्निग्धंकषायाम्लंविपाकेमधुरंसरम् ।
वयसःस्थापनंशीतंलेखनंवातपित्तजित् ॥

अर्थ- रूपा-स्निग्ध कषेला, अम्ल, पचनेमें मधुर, सारक, आयुवर्द्धक, शीतल लेखन और वातपित्तको हरनेवाला है।

अन्यच्च ।

तारंचतारयतिरोगसमुद्रपारंदेहस्यपौष्टिककरंहरतेमलंच ।
वर्ण्यंविषघ्नममलंहरतिप्रमेहंवृष्यंपुनर्नवकरंकुरुतेचिरायुः ॥

अर्थ-तार (रूपा)-प्राणियोंको रोगरूपी समुद्रसे तारनेवाला है, शरीरको पुष्ट करनेवाला, देहके मैलको हरनेवाला, वर्णको उज्ज्वल करनेवाला, विषनाशक, प्रमेहनाशक, वीर्य्यवर्द्धक. वृद्धमनुष्यको यौवनवान् करनेवाला और आयुको बढानेवाला है।

अपिच ।

सितयाहन्तिदाहाद्यंवातपित्तंफलत्रिकात् ।
त्रिसुगन्ध्याप्रमेहादीन्व्रजतंहंत्यसंशयम् ॥

अर्थ-रूपा-चीनीके साथ--दाहादिरोगोंको, त्रिफलेके साथ-वातपित्तादिकोंको और त्रिसुगन्धि (इलायची, दालचीनी और तेजपात) के साथ-प्रमेहादिके रोगोंको हरनेवाला है।

अशोधितरौप्यगुणाः।

तारंशरीरस्यकरोतितापंविध्वंसनंयच्छतिशुक्रनाशम्। वीर्य्यंबलंहन्तितनोश्चपुष्टिंमहागदान्पोशयतिह्यशुद्धम्।

अर्थ-अशोधित रूपा-शरीरमें तापको करनेवाला, शरीरको शिथिल करनेवाला, शुक्रनाशक, वीर्य्यविनाशक, पुष्टिनाशक, बलहारक और महारोगोंको उत्पन्न करनेवाला है।

रौप्यस्योत्पत्तिः।

त्रिपुरस्यवधार्थायनिर्न्निमेषैर्विलोचनैः। निरीक्षयामासशिवःक्रोधेनपरिपूरितः॥ अग्निस्तत्कालमपतत्तस्यैकस्माद्विलोचनात्। ततोरुद्रःसमभवद्वैश्वानरइवज्वलन्॥ द्वितीयादपतन्नेत्रादश्रुबिन्दुस्तुवामकात्। तस्माद्रजतमुत्पन्नमुक्तकर्म्मसुयोजयेत्॥ कृत्रिमञ्चभवेत्तद्धिवंगादिरसयोगतः॥ (भा. प्र.)

अर्थ--त्रिपुरासुरके वध करनेके लिये श्रीमहादेवजी अत्यन्त क्रोधित हुये तब उस त्रिपुरासुरको पलकरहित देखते हुये उसीसमय महादेवके एकनेत्रसे अग्नि निकली, जिससे महादेव अग्निके समान प्रज्वलित होते हुये और वाँये नेत्रसे जो आंसूकी बूँद गिरी उससे चांदीकी उत्पत्ति हुई। एक कृत्रिम चांदी वंग और पारेके योगसे बनती है।

विवरण। चांदीकी खानें अमेरिका, सिलोन आदि देशोंमें अधिक हैं।

ताम्रनामानि।

ताम्रंम्लेच्छमुखंद्विष्टंवरिष्ठञ्चकनीयसम्।

अर्थ--ताम्र, म्लेच्छमुख, द्विष्ट, वरिष्ठ, कनीयस (ताम्रक, शुल्व, उडुम्बर, शुल्ल, उदम्बर, औदुम्बर, औडुम्बर, उदुम्बर, रविसंज्ञक, मुनिपित्तल, अर्क, सूर्य्याह्व, लोहितायस, लोहिताप, तपनेष्ट, अम्बक, अरविन्द, रविलोह, रविप्रिय, रक्त, नैपालिक, रक्तधातु, सर्वलोह, पवित्र, ब्रह्मवर्धन, भासुर)

सं० ताम्र ।		तै०	रागी ।
हिं० ताँबा ।		ता०	तांब्रम्, शेप्पु ।
बं० तामा ।		इं०	कापर । Copper
म० तांबें ।		लै०	क्युप्रम् । Cuprum
गु० त्रांबो ।		फा०	मिस ।
क० ताम्र ।		अ०	नुहास ।

उत्कृष्टताम्रस्य लक्षणम् ।

जपाकुसुमसङ्काशंस्निग्धंमृदुघनंक्षमम् ।
लोहनागोज्झितंताम्रंमारणायप्रशस्यते ॥

अर्थ-जो जपाके फूलके समान रंगवाला, स्निग्ध, नरम, घनकी चोटको सहलेवे और जिसमें लोहे तथा शीशेका मेल न हो ऐसा तांबा मारणकर्म्ममें उत्तम होता है ।

दूषितताम्रस्य लक्षणम् ।

कृष्णंरूक्षमतिस्तब्धंश्वेतंचापिघनासहम् ।
लोहनागयुतंचेतिशुल्बंदुष्टंप्रकीर्त्तितम् ॥

अर्थ-जो काला, रूखा, अत्यन्त,कठोर, सफेद,घनकी चोट न सहसके और लोहे तथा शीशेयुक्त हो ऐसा तांबा दुष्ट होता है । यह मारणकर्म्ममें त्याज्य है ।

ताम्रगुणाः ।

ताम्रंसुपक्वंमधुरंकषायंतिक्तंविपाकेकटुशीतलंच ।
कफापहंपित्तहरंविबन्धशूलघ्नपाण्डूदरगुल्मनाशि॥ (रा. नि.)

अर्थ-तांबा--मधुर, कषेला कडवा, पाकमें कटु, शीतल, कफनाशक, पित्तनिवारक तथा विबंध, शूल, पाण्डुरोग, उदररोग और गुल्मरोग-नाशक है ।

अन्यच्च ।

गुल्मंचकुष्ठंचगुदामयंचशूलानिशोफोदरपांडुरोगम् ।
उत्क्लेशमेदभ्रमदाहहीनंनिहन्तिसम्यङ्मृतमेवशुल्वम् ॥

अर्थ--औरभी ताँबा--गुल्म, कोढ, गुदारोग, शूल, सूजन, उदररोग, पाडुरोग उत्क्लेश, मेद, भ्रम और दाहको हरनेवाला है ।

अपिच ।

ताम्रंकषायंमधुरंसतिक्तमम्लंचपाकेकटुसारकंच ।

पित्तापहंश्लेष्महरंचशीतंतद्रोपणंस्याल्लघुलेखनंच ॥
पाण्डूदरार्शोज्वरकुष्ठकासश्वासक्षयान्पीनसमम्लपित्तम्।
शोफकृमीञ्छूलमपाकरोतिप्राहुर्बुधाबृंहणमल्पमेतत् ॥

अर्थ--तांबा--कषेला, मधुर, कडवा, अम्ल, पाकमें कटु, सारक, पित्तनाशक, कफनाशक, शीतल, रोपण, हलका, लेखन तथा पाण्डुरोग, उदररोग, बवासीर; ज्वर, कोढ, खाँसी, श्वास, क्षय, पीनस, अम्लपित्त, सूजन, कृमि और शूलको दूर करे है और अल्पबृंहण है ।

असम्यङ्मारितताम्रस्य दोषाः ।

एकोदोषोविषेताम्रेत्वसम्यङ्मारितेष्टते ।
दाहःस्वेदोऽरुचिर्मूर्च्छाक्लेदोरेकोवमिर्भ्रमः ॥

अर्थ- विषमें तो केवल एकही दोष है, परन्तु कुविधिसे मारे हुये तांबेमें दाह, पसीना, अरुचि, मूर्च्छा, क्लेद भेद (दस्तोंका होना) वमन और भ्रम यह आठ दोष रहते हैं ।

ताम्रोत्पत्तिः ।

शुक्रंयत्कार्त्तिकेयस्यपतितंधरणीतले ।
तस्मात्ताम्रंसमुत्पन्नमिदमाहुःपुराविदः ॥

अर्थ--कार्त्तिकेयका वीर्य्य पृथ्वीमें पतित हुवा उससे तांबेकी उत्पत्ति हुई ऐसा प्राचीन विद्वान् कहते हैं ।

विवरण । वङ्गदेशमें तांबेकी अनेक खानें हैं ।

रंगनामानि ।

रंगंवंगंचक्रसंज्ञंस्वर्णजंनागजीवनम् ।

अर्थ-रंग, वंग, चक्रसंज्ञ, स्वर्णज, नागजीवन, (मृद्वङ्ग, गुरुपत्र, तमर, नागज, कस्तीर, आलीमक, सिंहल, स्वेत, नाग, त्रपु, त्रपुष, आप, मधुर, हिम, कुरूप्प, पिच्चट, पूतिगन्ध, चिप्पट)

सं०	रंग, वंग ।	तै०	तगरमु ।
हिं०	रांग, रांगा,कलई,वंग ।	अं०	टीन् । Tin
बं०	राङ्ग, वंग ।	लै०	स्टेन्नम् । Stannum.
म०	कथील ।	फा०	अरजीज ।
गु०	कलई,कथीर, खरिपारी	अ०	रुसास ।
क०	तवर ।		

रंगगुणाः।

त्रपुसंकटुतिक्तहिमंकषायलवणंसरंचमेहघ्नम्।
कृमिदाहपाण्डुशमनंकान्तिकरंतद्रसायनंच ॥ (रा. नि.)

अर्थ-रांग (वंग)-कटु, तिक्त, शीतल, कषायरसान्वित, लवणरसयुक्त, सारक, प्रमेहनाशक, कृमिनाशक, दाहनिवारक, पाण्डुरोगहारक, कान्तिकारक और रसायन है।

अन्यच्च।

रंगंलघुसरंरूक्षमुष्णमेहकफकृमीन्। निहन्तिपाण्डुंसश्वासं-चक्षुष्यंपित्तलंमनाक् ॥ सिंहोयथाहस्तिगणंनिहन्ति त-थैवरंगंखिलमेहवर्गम् ॥ देहस्यसौख्यंप्रबलेन्द्रियत्वं नर-स्यपुष्टिंविदधातिनूनम् ॥

अर्थ-रांग (वंग)-हलका, सारक, रूखा, गरम तथा प्रमेह, कफ, कृमि, पाण्डु और श्वासरोगको दूर करे है, नेत्रोंको हितकारी और किंचित् पित्तकारी है। जैसे सिंह हाथियोंके समूहोंका नाश करता है, उसीप्रकार वंग सर्वप्रकारके प्रमेहादिकोंका नाश करती है। देहको सुख देनेवाली, इन्द्रियोंको प्रबल करनेवाली और देहको पुष्टि करनेवाली है।

अपिच।

कासेश्वासेचमन्दाग्नौपीनसेविषमज्वरे।
प्रमेहेपाण्डुरोगेचमृतंवंगंप्रयोजयेत् ॥

अर्थ-खाँसी, श्वास, मन्दाग्नि, पीनस, विषमज्वर, प्रमेह और पाण्डुरोगमें वंग देनी हितकारी है।

अशोधितवङ्गदोषः।

वंगंविधत्तेखलुशुद्धिहीनंतथाह्यपक्वञ्चकिलासगुल्मौ।
कुष्ठानिशूलंकिलवातशोथंपाण्डुंप्रमेहञ्चभगंदरंच ॥
विषोपमंरक्तविकारवृन्दंक्षयश्चकृच्छ्राणिकफंज्वरंच। मेहा-श्मरीविद्रधिमुख्यरोगान्नागोऽपिकुर्य्यात्कथितान्विकारान्॥

अर्थ-अशोधित और अपक्व वंग--किलासकुष्ठ, गुल्म, कुष्ठ, शूल, वातव्याधि, सूजन, पाण्डु, प्रमेह भगन्दर, रक्तविकार, क्षय, मूत्रकृच्छ्र, कफ,

ज्वर, मेह, पथरी और विद्रधि आदि मुख्यरोगोंको उत्पन्न करे है तथा विषके समान है । और अशोधित शीसाभी उपरोक्त रोगोंको उत्पन्न करता है ।

वंगस्य प्रकारभेदाः ।

क्षुरकंमिश्रकश्चापिद्विविधंवङ्गमुच्यते ।
उत्तमंक्षुरकंतत्रमिश्रंकत्वहितंमतम् ॥

अर्थ--क्षुरक और मिश्रक इन भेदोंसे वंग दो प्रकारकी है, तहां क्षुरक वंग अत्यन्त उत्तम और मिश्रक वंग अहितकारी है ।

धवलं मृदुलं स्निग्धं द्रुतद्रावंसगौरवम् ।
निःशब्दंखुरवंगंस्यात् मिश्रकंश्यामशुभ्रकम् ॥

अर्थ--जो श्वेत, नरम, चिकनी शीघ्रगलजाय, तोलमें भारी. और अग्निमें डालनेसे शब्द न करे उसको खुरक कहते हैं और मिश्रक शुभ्र और श्याम मिलहुये रंगकी होती है ।

श्रेष्ठवंगस्य लक्षणम् ।

श्वेतंमृदुलघुस्वच्छस्निग्धमुष्णसहंहिमम् ।
सूत्रपत्रकरंकान्तंत्रपुश्रेष्ठमुदाहृतम् ॥

अर्थ--सफेद, नरम, तोलमें हलका, स्वच्छ, स्निग्ध, उष्णसह, शीतल, जिसके सूत और पत्तर होजाय और चमकदार ऐसा राँग उत्तम होता है। विवरण । राँग अन्यद्वीपोंसे आता है; बर्तनोंकी कलई और रंग प्रभृतिके काममें आता है । तांबेके योगसे इसका काँसा बनता है। राँगकी भस्मको वंग कहते हैं ।

सीसकनामानि ।

सीसंसुवर्णकंचीनंपिष्टंसिन्दूरकारणम् ।

अर्थ-सीस, सुवर्णक, चीन, पिष्ट, सिन्दूरकारण (सीसक, सीसपत्रक, नाग, वप्र, योगेष्ट, गण्डूपदभव, वर्द्ध, स्वर्णारि, यवनेष्ट, चीर, वध्र, पिच्चट, सुवर्णारि, त्रपु [:] वध्रक, महाबल, यामुनेष्टक, बहुमल, श्वेतरंजन, जड, भुजङ्गम, उरग, कुरंग, परिपिष्टक, मृदुकृष्णायस, पद्म, तारशुद्धिकर, शिरावृत्त, वयोरंग, चीनपिष्ट, चीनरंग, लेख्य, धातुमल, पार्वत) ।

सं०	नाग, सीसक।	तै०	शीश, शिषमु।
हिं०	सीसा।	द्रा०	शिशू।
बं०	सीसे, सीसा।	इं०	लेड। Lead
म०	शिसें।	लै०	प्लंबम्। Plumbum
गु०	शीसुं।	फा०	सुर्ब।
क०	सीसा।	अ०	रुसासुल, अस्वद।

सीसकगुणाः।

सीसंरंगगुणंज्ञेयंविशेषान्मेहनाशनम्। नागस्तुनागशततुल्यबलंददाति व्याधिंविनाशयतिजीवनमातनोति॥ वह्निंप्रदीपयतिकामबलंकरोति मृत्युञ्चनाशयतिसंततसेवितोऽसौ॥

अर्थ-शीशेमें राँगके तुल्य गुण हैं, विशेषकरके प्रमेहको दूर करे है। सीसा-सौ हाथियोंके समान बलको देवे है। व्याधिविनाशक, जीवनवर्द्धक, जठराग्निको दीपन करे, कामजनक, बलवर्द्धक, और निरन्तर सेवन करनेसे मृत्युकाभी नाश करे है।

अन्यच्च।

क्षयपवनविकारेगुल्मपाण्ड्वामयेषु भ्रमकृमिकफशूलेमेहकासामयेषु। ग्रहणिगुदगदेवैनष्टवह्नौप्रशस्तः शुभविधिकृतनागः कामपुष्टिंददाति॥

अर्थ-सीसा-क्षयरोग, वातविकार, गुल्म, पाण्डुरोग, भ्रम, कृमि, कफ, शूल, प्रमेह, खाँसी, संग्रहणी और गुदाके रोगोंमें देना चाहिये।

नागस्य प्रकारभेदाः।

नागन्तुद्विविधंप्रोक्तंकुमारंसमलंतथा। कुमारंसर्वकार्य्येषुयोजनीयंगुणाधिकम्॥ द्रुतद्रावंमहाभारंछेदेकृष्णंसमुज्ज्वलम्। पूतिगंधंबहिःकृष्णंशुद्धसीसमतोन्यथा॥

अर्थ-कुमार और समल इन भेदोंसे नाग दो प्रकारका है। तहां अधिक गुणवाला होनेके कारण कुमार जातिके सीसेको सर्व कार्य्योंमें प्रयोग करना चाहिये। जो अग्निमें डालनेसे शीघ्र गलजाय, तोलमें भारी हो तोडनेमें काला और भीतर उज्ज्वल हो, जिनमें दुर्गन्ध आवे और बाहरसे काला हो ऐसा सीसा उत्तम होता है।

अशोधितवंगनागदोषाः ।

पाकेनहीनौकिलवंगनागौकुष्ठानिगुल्मांश्चतथाविकारान् । कण्डूप्रमेहानिलसादशोथभगन्दरादीन्कुरुतःप्रभक्तौ ॥

अर्थ-पाकहीन वंग और शीशीके खानेसे--कुष्ठ, गुल्म, कण्डू, प्रमेह, मन्दाग्नि, सूझन और भगंदरादि रोग उत्पन्न होते हैं ।

नागोत्पत्तिः ।

दृष्ट्वाभोगिसुतांरम्यांवासुकिस्तुमुमोचह । वीर्य्यंजातस्ततोनागःसर्वरोगापहंनृणाम् ॥

अर्थ-भोगिसर्पकी सुन्दर पुत्रीको देख वासुकी साँपने वीर्य्य छोड़ा उस वीर्य्यसे मनुष्योंके सर्वरोग हरनेवाला सीसा उत्पन्न हुआ ।

जसदनामानि ।

जसदंवंगसदृशंरीतिहेतुश्चतन्मतम् ।

अर्थ-जसद, वंगसदृश, रीतिहेतु (श्वेतपटल, कंसास्थि ।

संस्कृतभाषामें जसद ।	तैलिङ्गीभाषामें खर्पर ।
हिन्दीभाषामें जस्त, जस्ता ।	अंग्रेजीभाषामें झिंक । Zinc
वङ्गभाषामें दस्ता ।	लैटिनभाषामें झिंकं । Zincum
मराठीभाषामें जस्त ।	फारसीभाषामें रुएतुतिया ।
गुजरातीभाषामें जसत ।	अरबीभाषामें शबहा ।

जसदगुणाः ।

जसदंतुवरंतिक्तंशीतलंकफपित्तहृत् । चक्षुष्यंपरमंमेहान्पाण्डुंश्वासंचनाशयेत् ॥

अर्थ-जस्त--कषेला, कडवा, शीतल, कफपित्तनाशक, नेत्रोंको हितकारी तथा प्रमेह, पाण्डु और श्वासको दूर करे है ।

कान्तलोहनामानि ।

तीव्रंलोहमयस्कान्तंकृष्णायोलोहकान्तकम् ॥

अर्थ-तीव्र, लोह, अयस्कान्त, कृष्णायस, लोहकान्तक (कान्तलोह, तीक्ष्ण, शास्त्रालय, शस्त्र, शस्त्रक, शम्बक. पित्त, पित्तायस, आयस, अश्मज, मुण्डज, निशित, खड्ग, अयः, कान्त, चित्रायस और चालज)

वर्त्तलौहंतीक्ष्णलौहंनीलिकापुटलोहकम्।

कृष्णलोहनामानि।

अर्थ-वर्त्तलौह, तीक्ष्णलौह, नीलिका, पुटलोहक (रुक्मलोह, मृत्तकाल, कृष्णायस, मुण्डलौह, मुण्डायस, दृषत्सार, शिलात्मज, अश्मज, कृषिलोह और आर)

संस्कृतभाषामें	लोह।
हिन्दीभाषामें	लोहा, इस्पात, फोलाद।
बंगभाषामें	लौह, तिखा, इष्पात्, काललौह।
मराठीभाषामें	लोखंड, पोलाद तिखें।
गुजरातीभाषामें	लोढुं, मोलुं, गजवेल।
कर्णाटकीभाषामें	अयस्कान्त, कठिबण।
तैलङ्गीभाषामें	इनुमु।
अंग्रेजीभाषामें	आयर्न। Iron स्टील। Steel
लेटिन्भाषामें	फेर्रम। Ferrum
फारसीभाषामें	आहन्, फोलाद, संगआहन।
अरबीभाषामें	हदीद, हजरुल।

कान्तलोहगुणाः।

गुल्मोदरार्शःशूलाममामवातंभगन्दरम्। कामलाशोथकुष्ठानिक्षयंकान्तमयोहरेत् ॥ प्लीहानमम्लपित्तञ्चयकृच्चापि शिरोरुजम्। सर्व्वान्रोगान्विजयतेकान्तलौहंनसंशयः ॥ बलंवीर्य्यंवपुःपुष्टिंकुरुतेऽग्निंविवर्द्धयेत्।

अर्थ—कान्तलोह,-गुल्म, उदर, अर्श, शूल, आम, आमवात, भगन्दर, कामला, शोष, कुष्ठ, क्षय, प्लीहा, अम्लपित्त, यकृत् और मस्तकादि अनेक रोगोंको दूर करै है, बलकारक, वीर्य्यजनक, शरीरको पुष्टि देनेवाला और अग्निवर्द्धक है।

कान्तलोहस्य लक्षणम्।

यत्पात्रेनप्रसरतिजलेतैलबिंदुःप्रतप्ते हिंगुर्गंधंत्यजति च निजंतिक्ततांनिम्बकल्कः। तप्तंदुग्धंभवतिशिखराकारकं नैतिभूमिंकृष्णांगःस्यात्सजलचणकःकान्तलोहंतदुक्तम् ॥

अर्थ-जिसके बर्तनद्वारा जलमें तेलकी बूँद डालनेसे नहीं फैले, जिसमें तपानेसे हींग अपनी गन्धको छोडदेवे और नीमका कल्क रखनेसे मीठा होजाय तथा जिसमें दूध औटानेसे दूध शिखरके आकार ऊपरको खडा होजावे, परन्तु फैले नहीं और जिसमें जलसहित चने भिगोनेसे काले होजावें उसको कान्तलोह कहते हैं।

सर्वविधशुद्धलोहस्य गुणाः ।

लोहंतिक्तंसरंशीतंमधुरंतुवरंगुरु । रूक्षंवयस्यंचक्षुष्यंलेखनंवातलंजयेत् ॥ कफंपित्तंगरंशूलंशोथार्शःप्लीहपाण्डुताः । मेदोमेहकृमीन्कुष्ठंतत्किट्टंतद्वदेवहि ॥

अर्थ-शुद्धलोहा-कडवा, सारक, शीतल, मधुर, कषेला, भारी, रूखा, अवस्थास्थापक, नेत्रोंको हितकारी, बादी तथा कफ, पित्त, विष, शूल, सूजन, बवासीर, प्लीहा, पाण्डुरोग, मेद, प्रमेह, कृमि और कुष्ठका नाश करै है। लोहेके समान लोहेके कीटके गुण जानने।

अशोधितलोहस्य दोषाः ।

क्लीबत्वकुष्ठामयमृत्युदंभवेद्धृद्रोगशूलौकुरुतेऽश्मरीञ्च । नानारुजाश्चापितथाप्रकोपंकरोतिहल्लासमशुद्धलोहम् ॥ जीवहारिमदकारिचायसंचेदशुद्धिमदसंस्कृतंध्रुवम् । पाटवंनतनुतेशरीरकेदारुणंहृदिजांचयच्छति ॥

अर्थ-अशुद्धलोहा-नपुंसकता, कुष्ठ, मृत्यु, हृदयरोग, शूल, पथरी, नाना प्रकारके रोगोंका कोप और हल्लासको करनेवाला है। प्राणनाशक, मदकारक, शरीरकी चातुर्य्यता नाशक और दारुण हृदयव्यथाको उत्पन्न करता है।

लोहस्य स्वाभाविकदोषाः ।

गुरुताढृढताक्लेदोकफोदेहस्यकारिता । अश्मदोषःसुदुर्गन्धोदोषाःसप्तायसस्यतु ॥

अर्थ-गुरुता, दृढता, क्लेद, कफ, देहकारिता, पत्थरदोष और दुर्गन्ध ये सात दोष लोहेमें स्वाभाविक रहते हैं।

मुण्डलोहगुणाः ।

मुण्डंरूक्षोष्णतिक्तंचवातापित्तकफप्रणुत् ।

तीक्ष्णंपाण्डुहरंतच्चशूलमेहनिवारणम् ॥

अर्थ-मुण्डलोह-रूखा, गरम, कडवा, त्रिदोषनाशक, तीक्ष्ण तथा पाण्डुरोग, शूल और प्रमेहको हरनेवाला है।

लोहस्योत्पत्तिः।

पुरालोमिनदैत्यानांनिहतानांसुरैर्युधि ॥
उत्पन्नानिशरीरेभ्योलोहानिविविधानिच ॥

अर्थ-पूर्वकालमें देवताओंके द्वारा युद्धमें विनाश किये हुए जो लोमिन दैत्य उनके शरीरसे अनेक प्रकारके लोहे उत्पन्न हुए, ऐसी लोहेकी उत्पत्ति हुई है।

लोहसेविनः कार्य्याणि।

गुञ्जामेकांसमारभ्ययावत्स्युर्नवरक्तिकाः। तावल्लौहंसमश्नीयाद्यथादोषबलंनरः ॥ कूष्माण्डंतिलतैलंचमाषान्नंराजिकान्तथा। मद्यमम्लरसं चैव वर्ज्जयेल्लौहसेवकः

अर्थ-एकगुंजासे लेकर नवरत्तीतक लोहेकी मात्रा है। लोहेको सेवन करनेवाले मनुष्य-पेठा तिलका तेल, उडद, राई, मदिरा और अम्लरस खटाई आदि) वाले पदार्थोंको छोड देवे।

मण्डूरनामानि।

सिंहानंकिट्टिमण्डूरंलोहकिट्टमयोर्मलम् ॥

अर्थ-सिंहान, किट्टि, मण्डूर, लोहकिट्ट, अयोमल (लोहसिंहानिका लोहज, लोहपुरीष, लोहमल, सितघन, सिंहास, सितघाण, शूलघातन, लौहमल, किट्ट, लोहचूर्ण, कृष्णचूर्ण, लोष्ट और सिंहल)

मण्डूरलक्षणगुणाः।

ध्मातस्यलोहस्यमलंमण्डूरमितिचोच्यते।
यल्लोहंयद्गुणंप्रोक्तंतत्किट्टमपितद्गुणम् ॥

अर्थ-दग्धलोहेके मलकोही मण्डूर कहते हैं। जिस २ लोहेके जैसे २ गुण हैं वैसे २ ही उसकी कीटके जानने।

सर्वविधामण्डूरप्रकारभेदाः।

शताद्ध्युत्तमंकिट्टंमध्यंचाशीतिवार्षिकम्।
अधमंषाष्टिवर्षीयंततोहीनंविषोपमम् ॥ (भा. प्र.)

अर्थ-१०० सौवर्षसे अधिक कालका मण्डूर सर्वोत्कृष्ट है, ८० अस्सी वर्षका मण्डूर मध्यम है, ६० साठ वर्षका मण्डूर अधम और इससे अल्पकालका मण्डूर विषके समान है ।

विवरण । लोहेकी अनेक जातिहैं, उन सबको यहां ग्रन्थ बढनेके भयसे नहीं लिखा । लोहेके अलग २ भेद और गुणदोष विशेष देखनेकी इच्छा होय तो "रसराजशंकर" ग्रंथमें देखो ।

कांस्यनामानि ।

कांस्यंविद्युत्प्रियंकंसंताम्रार्धंवंगशुल्वजम् ॥

अर्थ-कांस्य-विद्युत्प्रिय, कंस, ताम्रार्द्ध, वंगशुल्व, (कंसास्थि, प्रकाश, घण्टाशब्द, असुराह्वय, सौराष्ट्रक, घोष, कांसीय, घोरपुष्प, वह्निलोह, दीप्तलोहक, घोषपुष्प, दीप्तलोह, कांसक, कांस, ताम्रत्रपुज, दीप्ति ।

संस्कृतभाषामें	कांस्य ।
हिन्दीभाषामें	काँसा, काँसी ।
वंगभाषामें	कांसा ।
मराठीभाषामें	कांसे ।
गुजरातीभाषामें	कांसु ।
कर्णाटकीभाषामें	कंचु ।
तैलिङ्गीभाषामें	कंचु ।
अंग्रेजीभाषामें	बेलमेटल । Bell Metal ब्रोंझ Bronze
फारसीभाषामें	रोईन ।
अरबीभाषामें	तालिकून ।

कांस्यकगुणाः ।

कांस्यस्यतुगुणाज्ञेयाःस्वयोनिसदृशाजनैः ।
संयोगजप्रभावेणतस्यान्येपिगुणाःस्मृताः ॥
कांस्यंकषायंतिक्तोष्णंलेखनंविशदंसरम् ।
गुरुनेत्रहितंरूक्षंकफपित्तहरंपरम् ॥ (भा. प्र.)

अर्थ-कांसेके गुण तांबे और रांगके समान जानने । संयोगके कारण इसके अलगभी और गुण कहते हैं । कांसा—कषेला, कडवा, गरम, लेखन, विशद, कुछेक दस्तावर, भारी, नेत्रोको हितकारी, रूखा और कफपित्तको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

कांस्यन्तु तिक्तमुष्णं चक्षुष्यं वातकफविकारघ्नम् ।
रूक्षं कषायरुच्यं लघु दीपनपाचनं पथ्यम् ॥ (रा. नि.)

अर्थ-शुद्ध कॉंसा--कडवा, गरम, नेत्रोंको हितकारी, वातकफदोषनाशक, रूखा, कषेला, रुचिकारक, दीपन और पाचक है ।

घृतमेकं विना चान्यत्सर्वं कांस्यगतं नृणाम् ।
भुक्तमारोग्यसुखदं हितं सात्म्यकरं तथा ॥

अर्थ-एक केवल घृतको छोडकर शेष सर्व प्रकारके पदार्थ कांसेके पात्रमें रखे हुए--आरोग्यता और सुखको देनेवाले तथा सात्म्य होजाते हैं ।

विवरण । कांसा--आठभाग तांबा और दो भाग रांगके योगसे बनाया जाताहै । कांसेके पात्र आदि अनेक सामान बनते हैं । कांसा--उपधातु है ।

पित्तलनामानि ।

पित्तलश्चाऽऽरकूटः कपिलोहं सुवर्णकम् ।
रिरी रीरी च रीतिश्च पीतलोहं सुलोहकम् ॥
ब्राह्मी तु राज्ञी कपिला ब्रह्मरीतिर्महेश्वरी ।

अर्थ-पित्तल, आरकूट, कपिलोह, सुवर्णक, रिरी, रीरी, रीति, पीतलोह, सुलोहक, ब्राम्ही, राज्ञी, कपिला, ब्रह्मरीति, महेश्वरी (पतिकावेर, द्रव्यदारु, रीती, मिश्र, आर, राजरीति, क्षुद्रसुवर्ण, सिंहल, पिंगल, पीतलक, लोहितक, पिंगललोह, पीतक, पाकतुण्डी, राजपुत्री, ब्रह्माणी, हरिलोह, पिंग)

संस्कृतभाषामें पित्तल ।
हिन्दीभाषामें पीतल, कांची पीतल ।
बंगभाषामें पितल, कॉंची पितल ।
मराठीभाषामें पितल, सोनपितल ।
गुजरातीभाषामें पीतल ।
कर्णाटकीभाषामें पित्तालेयरडु ।
तैलिङ्गीभाषामें इत्तडी ।
अंग्रेजीभाषामें ब्रास । Brass
फारसीभाषामें विरंज ।

पित्तलगुणाः ।

पित्तलस्य गुणा ज्ञेयाः स्वयोनिसदृशा जनैः । संयोगजप्रभावेण-

तस्यान्येपिगुणाःस्मृताः ॥ रीतिकायुगलंरूक्षंतिक्तंचलवणं रसे । शोधनं पाण्डुरोगघ्नं कृमिघ्नंनातिलेखनम् ॥

अर्थ-पीतलके गुण तांबे और जस्तके समान हैं, संयोगजनकप्रभावसे और भी गुण कहते हैं । दोनों प्रकारके पीतल--रूखे, कडवे, लवणरसान्वित शोधक, पाण्डुरोगनाशक, कृमिनाशक और अतिलेखन नहीं हैं।

अन्यच्च ।

सकलमेहमरुद्गुदजांरुजंग्रहणिकाकफपाण्डुभवंरुजम् । श्वसनकामलशूलभवंरुजंहरतिभस्मतदारकसम्भवम् ॥

अर्थ-पीतल--सर्वप्रकारके प्रमेह, वात, गुदजरोग, संग्रहणी, कफ, पाण्डु श्वास, कामला और शूलका नाश करे हैं ।

अपिंच ।

रीतेर्द्वयंपांडुसमीरनाशनंरूक्षंसरं कृमिहरंलवणं विषघ्नम् वृष्यंवलीपलितनाशनमुग्रमायुर्वृद्धिंकरोतिसहसाचरसायनंच

अर्थ-दोनों प्रकारके पीतल -पाण्डुरोगनाशक, वातविनाशक, रूखे, सारक, कृमिहारक, लवणरसान्वित, विषनाशक, वीर्य्यवर्द्धक, वलीपलितनाशक और आयुवर्द्धक हैं ।

विवरण । पीतल-उपधातु हैं यह, ताँबे और जस्तके योगसे बनाया जाता है । इसमें तांबा १ भाग और जस्त ३ भाग डालकर बनाया जाता है । यह दोप्रकारका होता है ।

पारदनामानि ।

पारदोरसधातुश्च रसेन्द्रश्च महारसः । चपलः शिववीर्य्यंच रसःसूतःशिवाह्वयः ॥

अर्थ-पारद, रसधातु, रसेन्द्र, महारस, चपल, शिववीर्य्य, रस, सूत, शिवाह्वय (रसराज, रसनाथ, महातेज, रसलेह, रसोत्तम, सूतराट्, चैत्य, शिवबीज, शिव, अमृत, लोकेश, दुर्द्धर, प्रभु, रुद्रज, हरतेज, अचिन्त्य, अवित्तज, खेचर, अमर, देहद, मृत्युनाशक, स्कन्द, स्कन्दांशक, हरबीज, दिव्यरस, रसायनश्रेष्ठ, यशोद, सूतक, सिद्धधातु, पारद, हेमनिधि, त्रिनेत्र, रजस्वल, मूर्त्ति, पार, लोहेश, दूर्धर, मृत्युनाशन, रोपण, स्वामी)

संस्कृतभाषामें पारद ।	तैलिंगीभाषामें पारदरसम् ।
हिन्दीभाषामें पारा ।	अंग्रेजीभाषामें मर्क्युरी Mercury
बंगभाषामें पारा ।	लेटिन्भाषामें हेड्रार्जिरं । Hydrargyrum
मराठीभाषामें पारा ।	
गुजरातीभाषामें पारो ।	फारसीभाषामें सिमाब ।
कर्णाटकीभाषामें पारदरसः ।	अरबीभाषामें जीबक ।

पारदगुणाः ।

पारदःषड्रसःस्निग्धस्त्रिदोषघ्नोरसायनः । योगवाहीमहावृष्यःसदादृष्टिबलप्रदः ॥ सर्वामयहरःप्रोक्तोविशेषात्सर्वकुष्ठनुत् । असाध्योयोभवेद्रोगोयस्यनास्तिचिकित्सितम्॥रसेन्द्रोहन्तितद्रोगंनरकुञ्जरवाजिनाम् । (भा०प्र०)

अर्थ-पारा--मधुर, अम्ल, कटु, तिक्त, कषाय और लवणरसान्वित, स्निग्ध, त्रिदोषनाशक, रसायन, योगवाही, महावृष्य, सदैव दृष्टि और बलको बढाता है । सर्वरोगनाशक और विशेष करके कुष्ठनाशक है। जो रोग असाध्य है और जिनकी चिकित्सा नहीं है उन मनुष्य, हाथी और घोडेके रोगोंको पारा अवश्य हरता है ।

अन्यच्च ।

देहस्यशुद्धिंकुरुतेचपारदोनानागदानांहरणेसमर्थः ।
करोतिपुष्टिंहरतेचमृत्युंकल्पायुषंचैवकरोतिनूनम् ॥
पारदःसकलरोगपारदोराजयक्ष्मसरभेकवारिदः ।
सर्वरोगमपहंतितत्क्षणान्नागवल्लिरसराजभक्षणात् ॥

अर्थ-पारा--देहशुद्धकारक, नानाप्रकारके रोगविनाशक, पुष्टिकारक और मृत्युहारक है,तथा चिरंजीव करनेवाला है। पारा सर्वरोगोंको दूर करनेवाला, राजयक्ष्मारोगको हरनेवाला और पानके रसके साथ भक्षण करनेसे सर्वप्रकारके रोगोंको तत्काल दूर करनेवाला है ।

अपिच ।

मूर्च्छांतोंगदहृत्तथैवखगतिंधत्तेविबद्धोर्थदः स्याद्भस्मामयत्रार्धकादिहरणंदृक्पुष्टिकांतिप्रदम् । वृष्यंमृत्युविनाशनं

बलकरं क्रांताजनानंदनं शार्दूलातुलसत्त्वकृच्चभुविजात्रोगानुसारीस्फुटम् ॥ मूर्च्छितोहरतेभुजबंधनंभूयोपिमुक्तिदोभवति । अमरीकरोतिमृतःकोन्यःकरुणाकरोतिसूतात् ॥

अथ-मूर्च्छितपारा--रोगनाशक और आकाशमार्गमें गमन करनेकी शक्ति देनेवाला है। बद्धपारा अर्थदायक है । और पारेकी भस्म--तरुणाई दृष्टि, पुष्टि तथा कान्तिजनक है । वीर्य्यवर्द्धक,मृत्युनाशक,स्त्रियोंको आनन्दजनक और योगवाही है । मूर्च्छित पारा--अंगग्रहनाशक और मुक्तिदायक है और मराहुवा पारा अमरपदको देवे है । फिर इससे अधिक कौन दूसरा कृपा करनेवाला है ।

पारदे पथ्यानि ।

हितंमुद्गान्नदुग्धाजशाल्यन्नानिसदाततः । शाकेपुनर्नवांमेघनादंसवास्तुकम् ॥ सैन्धवंनागरंमुस्तामूलकानिचभक्षयेत् । आत्मज्ञानंकथापूजाशिवस्यचविशेषतः । एतांस्समायान्भद्रेनलंघेद्रसभक्षकः ॥ (नि. र.)

अर्थ--पारेको भक्षण करनेवाले मनुष्योंको मूँग, दूध, शालिधानके चावल, बकरीका दूध, पुनर्नवेका शाक, चौलाईका शाक, बथुएका शाक, सैंधानोंन, नागरमोथा और मूली भक्षण करनी चाहिये। तथा आत्मज्ञानकथा; पूजा और विशेष करके शिवकी भक्ति करनी चाहिये और कदापि लंघन नहीं करे ।

पारददोषाः ।

मलंविषंवह्निगिरित्वचापलंनैसर्गिकंदोषमुशन्तिपारदे । उपाधिजौद्वौत्रपुनागयोगजौदोषौरसेन्द्रेकथितौमुनीश्वरैः ॥ मलेनमूर्च्छामरणंविषेणदाहोग्निनाकष्टतरःशरीरे । देहस्य जाड्यंगिरिणासदास्याच्चांचल्यतावीर्य्यहतिश्च पुंसाम् ॥ वंगेनकुष्ठंभुजगेनषंढोभवेत्ततोसौपरिशोधनीयः । वह्निर्विषंमलंचेतिमुख्यादोषास्त्रयोरसे ॥ एतेकुर्वन्तिसन्तापमूर्च्छा

मूर्च्छांनृणांक्रमात् । अन्येऽपिकथितादोषाभिषग्भिःपारदे यदि ॥ तथाप्येतेत्रयोदोषाहरणीयाविशेषतः ।

अर्थ-मल, विष, अग्नि, गिरिदोष, चपलता यह पांच दोष पारेमें स्वभावसेही हैं और रांग तथा शीशेके दो दोष इसमें उपाधिज हैं, ऐसे सात दोष मुनीश्वरोंने कहे हैं । मलके दोषसे मूर्च्छा, विषके दोषसे मृत्यु, अग्नि-दोषसे दाह और अत्यन्त शरीरमें पीडा, पर्वतके दोषसे देहमें जडता और चंचलताके दोषसे वीर्य्यको हरेहै । वंगदोषसे कुष्ठ और शीशेके दोषसे नपुंसकको करता है । इसकारण इसको विधिपूर्वक शोधनाचाहिये । अग्नि, विष और मल यह तीन दोष पारेमें मुख्य हैं । सो संताप, मृत्यु और मूर्च्छा इनको क्रमसे करते हैं यद्यपि औरभी पारेमें वैद्योंने अनेक दोष कहे हैं किन्तु मुख्य यह तीनही दोष हैं, इससे इनको विशेषकरके हरना चाहिये ।

अशोधितपारददोषाः ।

संस्कारहीनंखलुसूतराजंयःसेवतेतस्यकरोतिबाधाम् । देहस्यनाशंविदधातिनूनंकुष्टांश्चरोगाञ्जनयेन्नराणाम् ॥

अर्थ-जो मनुष्य अशोधितपारेका सेवन करता है उसको यह बाधा करताहै । निश्चय देहका नाश करनेवाला कष्ट और अनेक प्रकारके रोगोंको उत्पन्न करे है

पारदस्योत्पत्तिजातिलक्षणानि ।

रसायनादिभिर्लोकैःपारदोरस्यतेयतः । ततोरसइतिप्रोक्तः सचधातुरपिस्मृतः॥ शिवाङ्गात्प्रच्युतंरेतःपतितंधरणीतले तद्देहसारजातत्वाच्छुक्लमच्छमभूच्चतत् ॥ क्षेत्रभेदेनविज्ञेयं शिववीर्य्यंचतुर्विधम् । श्वेतंरक्तंतथापीतंकृष्णंततुभवेत्क्रमात् ॥ ब्राह्मणःक्षत्रियोवैश्यःशूद्रश्चखलुजातितः । श्वेतंश-स्तंरुजांनाशेरक्तंक्रीलरसायनम् ॥धातुवादेतुतत्पीतंखेगतौ कृष्णमेवच ।

अर्थ-रसायनकी इच्छावाले प्राणी इसकी, कांक्षा करते हैं । इसकारण इसका नाम रसहै और इसको धातुभी कहते हैं । पृथ्वीमें महादेवका वीर्य्य पतित होनेपर पारेकी उत्पत्ति हुई इस कारण वह देहका, सारभाग, शुक्र

उत्पन्न होनेके हेतु, शुक्लवर्ण और स्वच्छ, हुवा। यह क्षेत्रभेदसे श्वेत, रक्त, पीत और कृष्ण चार प्रकारका है। तहाँ सफेद रंगके पारेको ब्राह्मण कहते हैं, यह रोगनाश करनेमें उत्तम है। और लाल रंगके पारेको क्षत्रिय कहते हैं, यह रसायनकार्य्यमें उत्तम है। पीलेरंगके पारेको वैश्य कहते हैं, यह धातुवादमें श्रेष्ठ है। और काले रंगके पारेको शूद्र कहते हैं यह आकाशमार्गमें चलनेको सहायक है।

पारदप्रशंसा।

मृदःकोटिगुणंस्वर्णस्वर्णात्कोटिगुणंमणिः।
मणेःकोटिगुणंबाणोबाणात्कोटिगुणंरसः॥
रसात्परतरंलिंगंनभूतंनभविष्यति। (नि० १०)

अर्थ--मट्टीके गुणोंसे अधिक करोड गुण सुवर्णके दर्शन करनेमें हैं। सुवर्णके गुणोंसे अधिक करोडगुण मणिके दर्शन करनेमें है। मणिके गुणोंसे अधिक करोडगुण बाणके दर्शन करनेमें हैं और बाणके गुणोंसे करोड गुण अधिक पारेके दर्शन करनेमें हैं, पारेसे अधिक गुणवाला पदार्थ न हुवा और न होगा। पारेका विशेषवर्णन हमारे बनाये "रसराजशंकर" ग्रंथमें देखो।

हिंगुलनामानि।

हंसपादंरसस्थानंहिंगुलंरक्तपारदम्॥

अर्थ--हंसपाद, रसस्थान, हिंगुल, रक्तपारद (हिंगुल, हिंगुलि, हिंगुल रक्त, मर्कटशीर्ष, दरद, रस, उरु, उन्द, कपिशीर्षक, बर्बर, सुरंग, सुनर रंजन, म्लेच्छ, चित्राङ्ग, चूर्णपारद, चर्म्मारक, रसोद्भव, रंजक, रसगर्भ चूर्णपारद, मनोहर, चर्म्मार, नानाश्रृंगारवर्द्धन)

संस्कृतभाषामें	हिंगुल।
हिन्दीभाषामें	हिंगुलू, सिंगरफ, इंगुर, हींगलू।
बंगभाषामें	हिंगुल।
मराठीभाषामें	हिंगूल।
गुजरातीभाषामें	हिंगलो।
कर्णाटकीभाषामें	इंगुलियक।
तैलिङ्गीभाषामें	हंगिलाकामु।

अंग्रेजीभाषामें सल्फेट ऑफ् मर्क्युरि । Sulphate of Morcury
सिनेबारानेटिव । cinnabar Native
लैटिन्भाषामें सल्फुएटं हैड्राजिरं । Sulphuatum Hydrargyrium
फारसीभाषामें सिंग्रफ् ।
अरबीभाषामें जजफर ।

हिंगुलगुणाः ।

तिक्तःकषायःकटुहिंगुलुःस्यान्नेत्रामयघ्नःकफपित्तहारी ।
हृल्लासकुष्ठज्वरकामलाश्चप्लीहामवातौचगरंनिहन्ति ॥

अर्थ-हिंगुल (सिंगरफ)—कडवा, कषेला, चरपरा तथा नेत्ररोग, कफ, पित्त, हृल्लास, कुष्ठ, ज्वर, कामला, प्लीहा, आमवात और विषको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

हिंगुलंमधुरंतिक्तमुष्णंवातकफापहम् ॥
त्रिदोषद्वंद्वदोषोत्थंज्वरंहरतिसेवनात्

अर्थ-हिंगुल (सिंगरफ) – मधुर, कडवा, गरम, वातकफ, त्रिदोष, द्वन्द्वजदोष और ज्वरका नाश करेहै ।

अपिच ।

हिंगुलःसर्वदोषघ्नोदीपनोऽतिरसायनः ।
सर्वरोगहरोवृष्योजारणेलोहमारणे ॥

अर्थ-हिंगुल (सिंगरफ (—सर्वदोषनाशक, दीपन, अतिरसायन. सर्वरोगनाशक, वीर्य्यवर्द्धक, जारण और लोहेके मारनेमें उत्तम है ।

हिंगुलभेदलक्षणम् ।

हिंगुलस्त्रिविधःप्रोक्तश्चर्म्मारःशुकतुण्डकः । हंसपादस्तृतीयःस्याच्चर्म्मारःशुभ्रवर्णकः ॥ शुकतुण्डकहिंगूलःपीतवर्णोभवेत्सहि । जपाकुसुमसङ्काशोहंसपादोमहोत्तमः॥(भा० प्र०)

अर्थ-सिंगरफ-चर्म्मार, शुकतुण्डक और हंसपाद इनभेदोंसे तीन प्रकारका है । तहां चर्म्मारहिंगुल सफेद रंगका, शुकतुण्डक हिंगुल पीले रंगका और हंसपादहिंगुल जपाके फूलोंके समान लाल रंगका अत्यन्त उत्तम होता है ।

हिंगुलोत्पत्तिः ।

अशुद्धपारदंभागंचतुर्भागंतुगन्धकम् । उभौक्षिप्त्वालोहपात्रेक्षणंमृद्वग्निनापचेत् ॥ कृत्वाथखंडशस्तत्रकाचकुप्यांनिरुध्यच । वस्त्रमृत्तिकयासम्यक्काचकूपिंप्रलेपयेत् ॥ सर्वतोंगुलमानेनच्छायाशुष्कंतुकारयेत् । वालुकायंत्रगर्भेतुदिनंमृद्वग्निनापचेत् ॥ क्रमवृद्ध्याग्निनापश्चात्पचेद्दिवसपंचकम् । सप्ताहंतुसमुद्धृत्यहिंगुलःस्यान्मनोहरः ॥

अर्थ–अशुद्धपारा--एकभाग, गन्धक चारभाग इन दोनोंको लोहेके पात्रमें डालकर, एक क्षण मंदाग्निसे पकावे, फिर टुकडे करके कांचकी शीशीमें रख उस शीशीपै कपडा और मिट्टी लपेटे, चारोंओर एक अंगुल ऊँचा लेप करे; छायामें सुखावे फिर वालुकायंत्रमें रखकर एक दिन मृदु अग्निसे पकावे क्रमसे फिर पांचदिन पर्य्यंत वृद्धिकरता हुवा अग्नि लगावे सातवें दिन निकालले, अच्छा सिंग्रफ बनजायगा ।

स्रोतोऽञ्जननामानि ।

स्रोतोऽञ्जनंनदीजंचवाल्मीकञ्जयामलम् ॥

अर्थ–स्रोतोंजन, नदीज, वाल्मीक, जयामल, (स्रोतज, स्रोतोनदीभव, स्रोतोभव, सौवीर, सौवीरसार, कपोताञ्जन, यामुन, पीतसारी, वारिभव, कपोतसार, कापोतसार और वाल्मीकशीर्ष)

सौवीराञ्जननामानि ।

सौवीरकंपार्वतेयंमेचकंनीलमंजनम् ॥

अर्थ–सौवीरक, पार्वतेय, मेचक, नील, अंजन (यामुन, कृष्ण, नादेय, स्रोतोज, द्रष्प्रद, सुवीरज, नीलांजन, चक्षुष्य, वारिसम्भव और कपोतक)

संस्कृतभाषामें	स्रोतोंजन, सौवीराञ्जन ।
हिन्दीभाषामें	सुरमा, अंजन, श्वेतशुर्म्मा, कालाशुर्म्मा ।
वंगभाषामें	श्वेतशुर्म्मा, नीलशुर्म्मा, नीलाञ्जन, कालशुर्मा ।
मराठीभाषामें	काळासुरमा, लालसुरमा, पांढरासुरमा ।
गुजरातीभाषामें	सुरमो, कालोसुरमो, लालसुरमो ।
कर्णाटकीभाषामें	स्रोतोंजन ।
तैलिङ्गीभाषामें	सौवीराञ्जन ।

अंग्रेजीभाषामें सल्फुरेट ऑफ आंटीमनी । Sulphuret of antimony
लेटिन्भाषामें आंटिमोनाई सल्फुरेटम् । Antimonai Sulphuretum
फारसीभाषामें सूर्मअस्फहानि ।
अरबीभाषामें कुहल इसमुद ।

स्रोतोऽञ्जनगुणाः ।

स्रोतोऽञ्जनंस्मृतंस्वादुचक्षुष्यंकफपित्तनुत् ।
कषायंलेखनंस्निग्धंग्राहिच्छर्दिविषापहम् ॥
हिक्काक्षयास्रजिच्छीतंसेवनीयंसदाबुधैः । (भा० प्र०)

अथ-स्रोतोञ्जन (कालासुर्मा)-स्वादिष्ट, नेत्रोंको हितकारी, कफपित्तनाशक, कषेला, लेखन, स्निग्ध, मलरोधक, वमननिवारक, विषनाशक, हिचकीको दूर करनेवाला, क्षयरोगको हरनेवाला है, रक्तदोषनिवारक और शीतल है।

श्रेष्ठस्रोतोऽञ्जनस्य लक्षणम् ।

वल्मीकशिखराकारंभिन्नंनीलाञ्जनप्रभम् ।
घृष्टेचगैरिकावर्णंश्रेष्ठंस्रोतोऽञ्जनञ्चतत् ॥

अर्थ-बाँवी शिखरके आकार भिन्न नील अंजनके समान प्रभायुक्त और जो घिसनेमें गेरूकी रंगकाहो यह उत्तम स्रोतोंऽजन है ।

सौवीराञ्जनगुणाः ।

सौवीरंमधुरंशीतंकषायंस्निग्धलेखनम् ।
रक्तपित्तविषच्छर्दिहिक्काघ्नंदृक्प्रसादनम् ॥

अर्थ-सौवीराञ्जन-मधुर, शीतल, कषेला, स्निग्ध, लेखन, तथा रक्तपित्त, विष, वमन और हुचकीको दूर करे है तथा नेत्रप्रसादक है ।

पुष्पाञ्जननामानि ।

पुष्पाञ्जनन्तुकौसुम्भंरीतिकंकुसुमाञ्जनम् ॥

अर्थ-पुष्पाञ्जन, कौसुम्भ, रीतिक, कसुमाञ्जन (रीतिपुष्प, पुष्पकेतु, पौष्पक, सदञ्जन, रीतिकुसुम, माक्षिक, चाक्षुष्य, कृमिरसाञ्जन और धातुमाक्षिक)

सं०	पुष्पाञ्जन ।	क०	पुष्पांजन ।
हिं०	पुष्पांजन ।	तै०	पुष्पांजनमु [Oxyde
वं०	पुष्पाञ्जन ।	इं०	झिंक् ओक्सैड । Zinc
म०	पितलेचेंकीट, पुष्पाञ्जन ।	लै०	झिन्साई ओक्सैड ।
गु०	कसांजण ।		Zinci Oxidum

पुष्पाञ्जनगुणाः ।

पुष्पाञ्जनंहिमंप्रोक्तंपित्तहिक्काप्रदाहनुत् ।
नाशयेद्विषकासार्त्तिंसर्वनेत्रामयापहम् ॥ (रा. नि.)

अर्थ-पुष्पांजन-शीतल, पित्तनिवारक, हिक्कानाशक, दाहहारक, वि[ष]विनाशक, खाँसीकी पीडाको हरनेवाला और सर्व प्रकारके नेत्ररोगोंको दूरकरनेवाला है ।

अन्यच्च ।

रीतिपुष्पंचचक्षुष्यंशीतपित्तकफापहम् ॥
हिक्कांदाहंविषंकासंनेत्ररोगंचनाशयेत् ॥ (नि० र.)

अर्थ-पुष्पांजन-नेत्रोंको हितकारी तथा शीतपित्त, कफ, हिचकी, दाह, विष, खाँसी और नेत्ररोगनाशक है ।

अपिच ।

पुष्पाञ्जनंहिमंस्निग्धंशीतंसर्वाक्षिरोगहृत् ।
अतिदुर्धरहिक्काघ्नंविषज्वरगदापहम् ॥

अर्थ-पुष्पांजन-हिम, स्निग्ध, शीतल, सर्वप्रकारके नेत्ररोगहारक, अत्यन्त दुर्धर हिचकीको दूर करनेवाला तथा विष और ज्वरनाशक है ।

तुत्थकनामानि ।

मूषातुत्थंकांस्यनीलंतुत्थकंशिखिकण्ठकम् ॥

अर्थ-मूषातुत्थ, कांस्यनील, तुत्थक, शिखिकण्ठक (तुत्थ, हरिताश्म, नीलांगज, मयूरग्रीवक, ताम्रगर्भ, अमृतोद्भव, मयूरतुत्थ, भूतक, शिखिकण्ठ, नील, तुत्थांजन, शिखिग्रीव, वितुन्नक, मयूरक, हेमसार, मृतामिद और ताम्रोपधातु)

संस्कृतभाषामें	तुत्थ, मयूरतुत्थ ।
हिन्दीभाषामें	(तूतिया) नीलाथोथा, नीलातूतिया ।
वंगलाभाषामें	तुँतिया ।

मराठीभाषामें	मोरचूत (द)।
गुजरातीभाषामें	मोरथुथु ।
कर्णाटकीभाषामें	मयूरतुत्थ ।
तैलिङ्गीभाषामें	मेलतुतु ।
अंग्रेजीभाषामें	सल्फेट ऑफ कॉपर । Sulphate of Copper
लैटिन्भाषामें	क्युप्रिआसल्फस Cuprea Sulphas
फारसीभाषामें	दूदिया ।
अरबीभाषामें	तुतिया अकजर ।

तुत्थगुणाः ।

तुत्थकंकटुकंक्षारंकषायंवामकंलघु ।
लेखनंभेदनंशीतंचक्षुष्यंकफपित्तहृत् ॥
विषाश्मकुष्ठकण्डूघ्नंखर्परंचापितद्गुणम् ।

अर्थ--नीलाथोथा--चरपरा, नमकीन, कषेला, वमनकारक. हलका, लेखन. भेदक, शीतल, नेत्रोंको हितकारी तथा कफ, पित्त. विष, पथरी, और कण्डूनाशक है । खपरियाकेभी इसीके समान गुण जानने।

अन्यच्च ।

तुत्थंकटुकषायोष्णंश्वित्रनेत्रामयापहम् ।
विषदोषेषुसर्वेषुप्रशस्तंवान्तिकारकम् ॥ (रा० नि०)

अर्थ--नीलाथोथा--चरपरा, कषेला, गरम, श्वित्रकुष्ठनाशक, नेत्ररोगनाशक, सर्वप्रकारके विषके विकारोंमें प्रशस्त और वमनकारक है।

अपिच ।

तुत्थकंनेत्ररोगघ्नंशीतंचित्रविनाशनम् ।
कृमिघ्नंलेखनंभेदिकण्डूक्लेदविषापहम् ॥

अर्थ-नीलाथोथा--नेत्ररोगनाशक, शीतल, चित्रकुष्ठनाशक, कृमिनाशक, लेखन, भेदक तथा कण्डू, क्लेद और विषके विकारोंको हरनेवाला है।

अपिच ।

निःशेषदोषविषहृद्गदशूलमूलंकुष्ठाम्लपित्तकविबंधहरंपरंच ।
रसायनंवमनरेचकरंगदघ्नंचित्रापहंगदितमत्रमयूरतुत्थम् ॥

अर्थ- नीलाथोथा- सर्वदोष, विष, हृदयरोग, शूल, कुष्ठ, अम्लपित्त और

विबन्धको दूर करनेवाला है, रसायन, वमनकारक, दस्तलानेवाला और चित्रकोढको दूर करनेवाला है।

अन्यच्च ।

वमने मंडले दद्रौ विषेचैव प्रशस्यते ॥

अर्थ- नीलाथोथा--वमन, मण्डलकुष्ठ, दाद और विषके विकारोंमें हितकारी है।

खर्परनामानि ।

चक्षुष्यममृतोत्पन्नं खर्परीदार्विकातथा ॥

अर्थ-चक्षुष्य, अमृतोत्पन्न, खर्परी, दार्विका) खर्पर, रसक, खर्परिकतुत्थ, खर्परीतुत्थ, खर्परीतुत्थक, यशदोपधातु)

संस्कृतभाषामें	खर्पर ।
हिन्दीभाषामें	खपरया, खापरिया ।
वंगभाषामें	खापर ।
मराठीभाषामें	कलखापरी ।
गुजरातीभाषामें	खापरियुंकाळुं ।
कर्णाटकीभाषामें	खर्परी ।
तैलिङ्गीभाषामें	खर्परं ।
अंग्रेजीभाषामें	ब्लाकू जाकू । Black jack
लैटिन्भाषामें	झिंकिसलफाईडं । ZinciSulphidum
फारसीभाषामें	संगवसरो ।
अरबीभाषामें	तुतिया, किरमानी, मकसुल ।

खर्परगुणाः ।

रसकःसर्वमेहघ्नःकफपित्तविनाशनः ।
नेत्ररोगक्षयघ्नश्चज्वरकुष्ठविषापहः ॥ (वै. त्रि. ति.)

अर्थ--खपरिया--सर्व प्रकारके प्रमेह, कफ, पित्त, नेत्ररोग, क्षय, ज्वर, कुष्ठ और विषके विकारोंको दूर करे है।

अन्यच्च ।

जायतेशोभनंभस्मसर्वव्याधिहरंपरम् ।
नेत्ररोगहरंक्केदिक्षयहाखर्परोगुरुः ॥ (रसचन्द्रिका)

अर्थ--खपरिया-सर्वप्रकारकी व्याधिविनाशक, नेत्ररोगनिवारक क्लेदकारक, क्षयरोगको हरनेवाली और भारी है।

अशोधितखर्परदोषाः ।

अशुद्धःखर्परःकुर्य्याद्वान्तिंभ्रान्तिंविशेषतः ।
तस्माच्छोध्यःप्रयत्नेनयावद्वान्तिविवर्जितः ॥

अर्थ--अशोधित खपरिया-वान्ति और भ्रान्तिको करती है इसकारण जबतक वान्ति करके रहित नहो तबतक प्रयत्नसे शोधे।

स्वर्णमाक्षिकनामानि ।

माक्षिकधातुमाक्षिकंताप्यंस्वर्णाह्वयंमतम् ।

अर्थ-माक्षिक, धातुमाक्षिक, ताप्य, स्वर्णाह्वय (सुवर्णमाक्षिक, स्वर्णमाक्षिक, तापिच्छ, आपीत, ताप्यक, पीतमाक्षिक आवर्त्त, क्षौद्रधातु, माक्षिकधातु, कदम्ब, चक्रनामा, तापिञ्ज, स्वर्णवर्ण, हेमद्युति, मधुधातु, काञ्चननामक)

तारमाक्षिकनामानि ।

विमलंमाक्षिकश्रेष्ठंश्वेताक्षंतारमाक्षिकम् ।

अर्थ--विमल, माक्षिकश्रेष्ठ, श्वेताक्ष, तारमाक्षिक (रूप्यमाक्षिक, रौप्यमाक्षिक)

संस्कृतभाषामें	स्वर्णमाक्षिक, तारमाक्षिक ।
हिन्दीभाषामें	सोनामाखी, रूपामाखी, तारामुखी ।
बङ्गभाषामें	स्वर्णमाक्षिक, तारमाक्षिक, रौप्यमाक्षी ।
मराठीभाषामें	दगडीसोनामुखी, रौप्यमाक्षिक ।
गुजरातीभाषामें	सोनामाखी, रूपामाखी ।
कर्णाटकीभाषामें	धातुमाक्षिक, यरडुमाक्षिक ।
तैलिंगीभाषामें	स्वर्णमाखी, रूपामाखी ।
अंग्रेजीभाषामें	आयर्नपाईराईटीस् । Ironpyrites
लैटिन्भाषामें	फेरीसल्फुरेटम् । Feerisulphuretum
अरबीभाषामें	मुर्कशीशाजहबी, मुर्कशीशाफिद्दा ।

स्वर्णमाक्षिकगुणाः ।

सुवर्णमाक्षिकंस्वादुतिक्तंवृष्यंरसायनम् ।

चक्षुष्यं बस्तिहृत्कण्ठपाण्डुमेहविषोदरम् ॥
अर्शःशोफविषकण्डुत्रिदोषानपिनाशयेत् ॥ (भा. प्र.

अर्थ--सोनामाखी--स्वादु, कडवी, वृष्य, रसायन, नेत्रोंको हितकारी बस्तिरोगनाशक तथा कण्ठरोग, पाण्डुरोग, प्रमेह, विष, उदररोग, बवासीर, सूजन, विष, कण्डू और त्रिदोषका नाश करे है।

अन्यच्च ।

माक्षिकंमधुरंतिक्तमम्लंकटुकफापहम् ।
भ्रमहृल्लासमूर्च्छार्त्तिश्वासकासविषापहम् ॥

अर्थ-माक्षिकधातु--मधुर, कडवी, अम्ल, चरपरी, कफनाशक तथा भ्रम, हृल्लास, मूर्च्छा, श्वास, खाँसी और विषको दूर करे है।

अन्यच्च ।

माक्षिकंतुवरंवृष्यंस्वर्यंलघुरसायनम् ।
चक्षुष्यंकुष्ठशोफार्शोमेहवस्त्यर्तिपांडुता ।
व्यवायिकटुकंहन्तिकुष्ठोदरविषक्षयान् ॥ (म० नि०)

अर्थ-माक्षिकधातु--कषेली, वीर्य्यवर्द्धक, स्वरको स्वच्छ करनेवाली, हलकी, रसायन, नेत्रोंको हितकारी तथा कुष्ठ, सूजन बवासीर, प्रमेह, बस्तिपीडा, पाण्डुरोग, कुष्ठ, उदररोग, विष और क्षयरोगका नाश करे है व्यवायी और चरपरी है ।

अशुद्धमाक्षिकदोषाः ।

मन्दानलत्वंबलहानिमुग्रांविष्टम्भितांनेत्रगदान्सकुष्ठान् ।
मालांतथैवव्रणपूर्विकांचकुर्य्यादशुद्धंखलुमाक्षिकञ्च ॥ (भा० प्र०)

अर्थ -अशुद्ध माक्षिकधातु--मन्दाग्नि, बलहानि, विष्टम्भता, नेत्ररोग, कुष्ठ, गण्डमाला और व्रणको उत्पन्न करनेवाली है ।

अन्यच्च ।

अशुद्धंमाक्षिकंकुर्यादांध्यंकुष्ठंक्षयंकृमीन् ।
शोधनीयंप्रयत्नेनतस्मात्कनकमाक्षिकम् ॥ (नि. र.)

अर्थ--अशुद्ध सोनामाखी--आंध्य, कुष्ठ, क्षय और कृमिको उत्पन्न करे है इसकारण प्रयत्न करके शोधनी चाहिये ।

अपिच ।

किञ्चित्सुवर्णसाहित्यात्स्वर्णमाक्षिकमीरितम् ।
उपधातुःसुवर्णस्य किञ्चित्स्वर्णगुणान्वितम् ॥

अर्थ-किंचित् सुवर्णमिश्रित होनेसे यह स्वर्णमाक्षिक कहीजाती है, सुवर्णकी उपधातु है और किंचित् सुवर्णके गुणयुक्त है ।

तारमाक्षिकगुणाः ।

माक्षिकोरजतहाटकप्रभःशोधितोतिगुणदःसुसेवितः ।
मेहकुष्ठकृमिशोफपाण्डुतापस्मृतिंहरतिसोश्मरींजयेत् ॥
स्वर्णमाक्षिकवद्दोषाविज्ञेयास्तारमाक्षिके ।

अर्थ-रूपामाखी चांदीकी और सोनेके समान प्रभायुक्त होती है, यह उत्तमप्रकारसे शोधी हुई अनेक गुणदायक है तथा प्रमेह, कोढ, कृमि, सूजन, पाण्डुरोग, अपस्मार और पथरीको हरनेवाली है । अशोधित रूपामाखीके दोष स्वर्णमाखीके समान जानने ।

तारमाक्षिकमन्यत्तुतद्भवेद्रजतोपमम् ।
किञ्चिद्रजतसाहित्यात्तारमाक्षिकमीरितम् ॥

अर्थ-जो माखी रूपेके समान श्वेतवर्ण तथा किंचित् रौप्यमिश्रितहो वह रूपामाखी कही जाती है ।

वोदारनामानि ।

वदारोनागसत्वश्चव्रणघ्नः स्वर्णवर्णकः ।

संस्कृतभाषामें	वोदार, नागसत्व, व्रणघ्न, स्वर्णवर्णक ।
हिन्दीभाषामें	मुरदाशिंग ।
मराठीभाषामें	मुरदाडशिंग ।
गुजरातीभाषामें	वोदारकांकरो ।
अंग्रजीभाषामें	लिथार्ज । Litharge
लैटिन्भाषामें	प्लंबी आक्षैडं । Llumbi
फारसीभाषामें	मुरदासिंग ।
अरबीभाषामें	मुर्दासिंज ।

वोदारगुणाः ।

वोदारःसारकोभेदीव्रणरोपणकारकः।वान्तिकृन्मूत्रकृच्छ्रा-

णांप्रमेहस्यचकारकः ॥ कफंवातंव्रणंशूलमुदरंकृमिशोथक-म् । आध्मानंवातगुल्मञ्चआनाहंशोफजज्वरम् ॥ उदावर्त्त-नाशयतीत्येवमाहुर्मनीषिणः ।

अर्थ-मुरदासिंग--सारक, भेदक, व्रणरोपक, वमनकारक, मूत्रकृच्छ्रकारक, प्रमेहकारक तथा कफ, वात, व्रण, शूल, उदररोग, कृमि, सूजन, आध्मान, वात, गुल्म, आनाह, शोफज्वर और उदावर्तको दूर करे है।

अन्यच्च ।

सीससत्त्वंमरुच्छ्लेष्मशमनंकायदाहकम् ।
केश्यंपुंसांगरोगघ्नंरंजनंरसबंधनम् ॥ (नि. र.)

अर्थ-मुरदासिंग-वात कफ, गरमीके रोग और शरीरकी दाहको दूर करे है केशोंको हितकारी, पुरुषोंके अंगरोगोंको दूर करनेवाला और पारेको बांधनेवाला है।

बोदारोत्पत्तिलक्षणम् ।

अर्बुदस्यगिरेःपार्श्वेजातंबेंदारशृंगकम् ।
सदलंपीतवर्णंचभवेद्गुर्जरमंडले ॥

अर्थ-अर्बुदपर्वतके निकट पार्श्वभागमें बेंदार नामवाला. शृङ्ग है उस शृङ्गमें मुरदासिंग उत्पन्न होता है यह सदल और पीले रंगका तथा गुर्जरदेशमें भी होता है।

अभ्रकनामानि ।

अभ्रकगिरिजाबीजंनिर्मलंगिरिजामलम् ।
अब्दंव्योमघनंशुभ्रंबहुपत्रंघनाह्वकम् ॥

अर्थ-अभ्रक, गिरिजाबीज, निर्मल, गिरिजामल, अब्द, व्योम, घन, शुभ्र, बहुपत्र, घनाह्वक, (गिरिज, अमल, गौर्य्यामल, गरजध्वज, अभ्र, भृङ्ग, अम्बर, अन्तरिक्ष, आकाश, ख, अनन्त, गौरीज, गौरेय, गगन

संस्कृतभाषामें	अभ्रक ।
हिन्दीभाषामें	अभ्रक, अबरख, आभ ।
बंगलाभाषामें	अभ्र ।
मराठीभाषामें	अभ्रक ।
गुजरातीभाषामें	अभरख ।

कर्णाटकीभाषामें	अभ्रक ।
तैलंगीभाषामें	अभ्रकं ।
अंग्रेजीभाषामें	टाल्क, ग्लिमर । Talc Glimmer
लेटिन्भाषामें	माईका । Mica
फारसीभाषामें	सिताराजमीन ।
अरबीभाषामें	तल्क़ ।

मारिताभ्रकगुणाः ।

अभ्रकषायंमधुरंसुशीतमायुष्करंधातुविवर्द्धनञ्च । हन्यात्त्रिदोषंव्रणमेहकुष्ठंप्लीहोदरग्रन्थिविषकृमींश्च ॥ रोगान्हन्तिदृढयतिवपुर्वीर्य्यवृद्धिंविधत्तेतारुण्याढ्यंरमयतिशतंयाषितांनित्यमेव । दीर्घायुष्काञ्जनयतिसुतान्विक्रमैः सिंहतुल्यान्मृत्योर्भीतिंहरतिसततंसेव्यमानंमृताभ्रम् ।

अर्थ--अभ्रक- कषेला मधुर, शीतल, आयुकर, धातुवर्द्धक, त्रिदोषनाशक तथा व्रण, प्रमेह, कोढ, प्लीहा, उदररोग, ग्रन्थि, विष और कृमिका नाश करेहै। रोगनाशक, देहको दृढकरनेवाला वीर्य्यवर्द्धक, तरुणअवस्थायुक्त सौ स्त्रियोंसे नित्यप्रति रमनेका सामर्थ्य करानेवाला, दीर्घ आयुवाले और सिंहके समान पराक्रमी ऐसे पुत्रोंको उत्पन्न करानेवाला और मृत्युके भयको भी हरनेवाला है।

अन्यच्च ।

मृताभ्रकंकामबलप्रदंचविषंमरुच्छासभगन्दरांध्यम् ।
मेहभ्रमंपित्तकफंचकासंक्षयंनिहन्त्येवयथानुपानात् ॥

अर्थ--अभ्रकको यथानुपानके साथ सेवन करनेसे कामप्रद, बलकारक तथा विष, वात, श्वास, भगन्दर, आंध्य, प्रमेह, भ्रम, पित्त, कफ, खाँसी और क्षयरोगको हरनेवाला है।

अभ्रस्य जातिवर्णभेदाः ।

विप्रक्षत्रियविट्शूद्रभेदात्स्यात्तच्चतुर्विधम् ।
क्रमेणचसितंरक्तंपीतंकृष्णञ्चवर्णतः ॥

अर्थ--अभ्रक--जातिके भेदसे चार प्रकारकाहै, जैसे ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य

और शूद्र; तहां ब्राह्मणअभ्रक-श्वेतरंगका, क्षत्रिय अभ्रक-लालरंगका वैश्यअभ्रक--पीले रंगका और शूद्रअभ्रक काले रंगका होता है।

प्रशस्यतेसितंतारेरक्तंतत्तुरसायने ।
पीतहमनिकृष्णंतुगदेषुभूतयेऽपिच ॥ (भा. प्र.)

अर्थ--चांदीके बनानेमें सफेद अभ्रक, रसायन कर्ममें लाल, सुवर्ण बनानेमें पीला और रोगोंमें तथा ऐश्वर्यके लिये कृष्ण अभ्रक लेना चाहिये।

चतुर्विधाभ्रस्य नामलक्षणगुणाः।

पिनाकंदर्दुरंनागंवज्रञ्चेतिचतुर्विधम् । पिनाकंवर्जयेद्धीमान्दर्दुरञ्चविशेषतः । तृतीयंनागसंज्ञञ्चदूरतःपरिवर्जयेत् ॥ मुञ्चत्यग्नौविनिःक्षिप्तंपिनाकंदलसञ्चयम् ॥ अज्ञानाद्भक्षणात्तस्यमहाकुष्ठप्रदायकम् । दर्दुरंत्वग्निनिःक्षिप्तंकुरुतेदर्दुरध्वनिम् ॥ गोलकान्बहुशःकृत्वातत्स्यान्मृत्युप्रदायकम् । नागन्तुनागवद्वह्नौफूत्कारंपरिमुञ्चति ॥ तद्भक्षितमवश्यंहि विदधातिभगन्दरम् । वज्रन्तुवज्रवत्तिष्ठेत्तन्नाग्नौ विकृतिंव्रजेत् ॥ वज्रसंज्ञंहितंयोग्यमभ्रंसर्वत्रनेतरत् । सर्वाभ्रेषुवरंवज्रं व्याधिवार्द्धक्यमृत्युहृत् ॥ अभ्रमुत्तरशैलोत्थंबहुसत्वगुणाधिकम् । दक्षिणाद्रिभवंचाभ्रंस्वल्पसत्वगुणप्रदम् ॥

अर्थ-पिनाक, दर्दुर, नाग और वज्र इन भेदोंसे अभ्रक, चार प्रकारका है। इनमें पिनाक, दर्दुर और नागनामवाला अभ्रक त्यागने योग्य है। यदि इसको पिनाकअभ्रक अग्निमें डालनेसे परत २ होजाताहै। दुर्दुरअज्ञानके वशसे खा ले तो उसके महाकुष्ठरोग उत्पन्न होजाताहै। दर्दुरवाला अभ्रक अग्निमें डालनेसे मेडकके समान शब्द करता है। गोलाकार होजाताहै। इसको भक्षण करनेसे मृत्यु होतीहै। नागनामवाला अभ्रक अग्निमें डालनेसे फुंकार करता है, इसको भक्षण करनेसे भगन्दररोग उत्पन्न होताहै। और वज्रसंज्ञक अभ्रक अग्निमें गेरनेसे वज्रके समान जैसेका तैसा बना रहता है और विकारको प्राप्त नहीं होता है। वज्राभ्रक सर्व प्रकारके अभ्रकोंमें उत्तम होनेके कारण सब प्रकारके

वृद्धावस्था और मृत्यको हरनेवाला है। उत्तरके पर्वतोंमें होनेवाला अभ्रक बहुत सत्त्वसम्पन्न और अधिक गुणवाला है तथा दक्षिणके पर्वतोंमें उत्पन्न होनेवाला अभ्रक अल्पसत्त्व और अल्पगुणवाला है।

अशोधिताभ्रदोषाः।

पीडांविधत्तेविविधांनराणांकुष्ठंक्षयंपाण्डुगदंचशोथम्। हृत्पार्श्वपीडाञ्चकरोत्यशुद्धमभ्रंह्यसिद्धंगुरुतापदंस्यात्॥

अर्थ-अशुद्ध अभ्रक अनेक प्रकारकी पीडा, कुष्ठ, क्षय, पाण्डुरोग, सूजन, हृदयकी पीडा, पसवाड़ेकी पीडा, भारीपन, और तापको उत्पन्नकरेहै

अभ्रकोत्पत्तिः।

पुरावधायवृत्रस्यवज्रिणावज्रमुद्धृतम्। विस्फुलिङ्गास्ततस्तस्यगगनेपरिसर्पितः॥ तेनिपेतुर्घनध्वानाच्छिखरेषुमहीभृताम्। तेभ्यएवसमुत्पन्नंतत्तद्गिरिषुचाभ्रकम्॥ तद्वज्रंवज्रजातत्वादभ्रमभ्ररवोद्भवात्। गगनाद्गलितंयस्माद्गगनञ्चततोमतम्॥ (भा० प्र०)

अर्थ-पूर्वकालमें इन्द्रदेवने वृत्रासुरके मारनेको वज्र उठाया उस समय उस वज्रमेंसे चिनगारियें निकलकर आकाशमंडलमें फैलगईं, फिर वेही चिनगारियें गर्जते बादलोंसे निकलकर जिन २ पर्वतोंके शृङ्गोंमें गिरीं उन्हीं २ पर्वतोंमें अभ्रक उत्पन्न हुआ। यह वज्रसे जो उत्पन्न हुआ इसीसे इसको वज्र कहते हैं, बादलोंके शब्दसे जो प्रगट हुआ इसीसे इसको अभ्रक कहते हैं और आकाशसे जो गिरा इसी कारण इसको गगन कहते हैं।

अभ्रे पथ्यम्।

क्षाराम्लंद्विदलंचैवकर्कटीकारवेल्लकम्॥ वृन्ताकंचकरीरंचतैलंचाभ्रेविवर्ज्जयेत्॥

अर्थ-अभ्रकको सेवन करनेवाले मनुष्य क्षार, अम्ल, द्विदल (उडद मूँगादि) ककडी, करेला, बैंगन, करील और तेलको छोड़देवे।

गन्धकनामानि।

गौरीबीजंबलिर्गन्धपाषाणोगन्धकःस्मृतः।

अर्थ-गौरीबीज, बलि, गन्धपाषाण, गन्धक, (गंधिक, गन्धाश्म, शामाग्र, सौगंधिक, सुगंधिक, पामारि, शुल्वारि, गन्धी, गन्धमोदन,

वर, पूतिगन्ध, गन्ध, दिव्यगन्ध, सगन्ध, रसगन्धक, कुष्ठारि, क्रीटघ्न, क्रूरगन्ध, शरभूमिज, बलरस)

संस्कृतभाषामें	गन्धक।	तैलिङ्गीभाषामें	गन्धकमु।
हिन्दीभाषामें	गन्धक।	अं०	सल्फर ब्रिस्टोन
वंगभाषामें	गन्धक।	फारसीभाषामें	गोगिर्द।
मराठीभाषामें	गन्धक।	लैटिनभाषामें	सल्फर।
गुजरातीभाषामें	गन्धक।	अरबीभाषामें	किब्रित।

गन्धक गुणाः।

गन्धकःकटुकस्तिक्तोवीर्य्योष्णस्तुवरःसरः।
पित्तलःकटुकः पाकेकण्डूवीसर्पजन्तुजित्।
हन्तिकुष्ठक्षयप्लीहकफवातान्रसायनः॥ (भा. प्र.)

अर्थ-गन्धक—चरपरा, कडवा, उष्णवीर्य, कषेला, सारक, पित्तजनक, पचनेमें कटु, रसायन तथा कण्डू, विसर्प, कृमि, कुष्ठ, क्षय, प्लीहा, कफ और वातको दूर करनेवाला है।

अन्यच्च।

शोधितोयस्तुगन्धःस्याज्जरामृत्युरुजापहः।
अग्निसंदीपनःश्रेष्ठोवीर्य्यवृद्धिकरोऽस्थिकृत् (प्र. भू.)

अर्थ- शोधितगन्धक--जरा और मृत्युनाशक है तथा सर्व रोगनिवारक है, अग्निप्रदीपक, श्रेष्ठ, अत्यन्तवीर्य्यवर्द्धक और अस्थिजनक है।

अपिच।

पवनपित्तकफान्विषकामलान् सकलकुष्ठगदान्छुचिगन्धकः। हरतिनिष्कमितःपयसान्वितो मदनवृद्धिकरोनयनार्त्तिहृत्॥ (नि. र.)

अर्थ--शोधितगन्धक चार मासे दूधके साथ सेवन करनेसे वातविकार पित्तविकार, कफविकार, विष, कामला, सर्व प्रकारके कुष्ठ और नेत्ररोगोंको दूर करे है तथा कामदेवको बढावे है।

अशुद्धगन्धकदोषाः।

अशोधितोगन्धकएषकुष्ठंकरोतितापंविषमंशरीरे।
सौख्यञ्चरूपञ्चबलंतथौजःशुक्रंनिहन्त्येवकरोतिचास्रम्॥

अर्थ-अशुद्धगन्धक--कोढ और विषमताप देहमें उत्पन्न करता है तथा सुख, रूप, बल, ओज और शुक्रका नाश करता है और रुधिरको दूषित करे है ।

अन्यच्च ।

अशुद्धंकुरुतेकुष्ठंपित्तंदाहंभ्रमंरुजम् ।
हन्तिवीर्य्यंबलंरूपंगन्धकंशोधयेत्ततः ॥

अर्थ--अशुद्धगन्धक-कुष्ठ, पित्त, दाह, भ्रम और पीडाको उत्पन्न करे है। वीर्य्य, बल और रूपका नाश करे है इस कारण प्रथम शोधकर काम लेवे ।

गन्धकस्य प्रकारभेदाः ।

श्वेतोरक्तश्चपीतश्चनीलश्चेतिचतुर्विधः । गन्धकोवर्णतोज्ञेयोभिन्नभिन्नगुणाश्रयः । श्वेतःकुष्ठापहारीस्याद्रक्तोलोहप्रयोगकृत । पीतोरसेप्रयोगार्होनीलोवर्णान्तरोचितः ॥

अर्थ-गन्धक, सफेद, लाल, पीला और नीला इन भेदोंसे चार प्रकारका है, वहां सफेद गन्धक-कुष्ठनाशक है । लाल गन्धक-लोहके मारनेमें लेना । पीला गन्धक-पारेके विषयमें उत्तम है, और नीला गन्धक वर्णान्तर तथा रसायन कर्म्ममें श्रेष्ठ है ।

अन्यच्च ।

रक्तोहेमक्रियासूक्तःपीतश्चैवरसायने ।
व्रणविलेपनेश्वेतःकृष्णःश्रेष्ठःसुदुर्ल्लभः ॥

अर्थ-लाल गंधक सुवर्णके बनानेमें लेना, पीलागन्धक रसायन कर्म्ममें लेना, व्रणके लेपादिकमें सफेद गन्धक लेना और कृष्णगन्धक श्रेष्ठ और दुर्लभ है ।

श्वेतगन्धकलक्षणम् ।

शुक्लपद्मसमच्छायोनवनीतसमप्रभः ।
मसृणःकठिनःस्निग्धःश्रेष्ठगन्धकउच्यते ॥

अर्थ-जो सफेद कमलके समान वर्णवाला, नवनीतके समान प्रभायुक्त और मसृण, कठिन और स्निग्ध ऐसा गन्धक उत्तम कहा जाता है ।

गन्धकस्योत्पत्तिः ।

श्वेतद्वीपेपुरादेव्याःक्रीडन्त्यारजसाप्लुतम् ।
दुकूलंतेनवस्त्रेणस्नातायाःक्षीरनीरधौ ॥
प्रसृतंतद्रजस्तस्माद्गन्धकःसमजायत ।

अर्थ–पूर्वकालमें श्वेतद्वीपमें क्रीडा करती हुई भगवती देवी रजस्वला हु[ई] तब उस रजके सनेहुए कपडेसे भगवती देवी क्षीरसमुद्रमें न्हाई वह र[ज] क्षीरसागरमें गिरा, उससे गन्धककी उत्पत्ति हुई ।

सिन्दूरनामानि ।

सिन्दूरंनागजंवीरंरक्तंसन्ध्यारुणंशिवम् ॥

अर्थ--सिन्दूर, नागज, वीर, रक्त, सन्ध्यारुण, शिव (रक्तवालुक[ा], रंगज, वंगज, शृङ्गारभूषण, नागरक्त, नागसम्भव, रक्तचूर्ण, रक्तवालुक[ा], रक्तशासन, भालदर्शन, नागरेणु, सीमन्तक, नागगर्भ, शोण, वीरर[ज], गणेशभूषण, सन्ध्याराग, श्रृङ्गारक, सौभाग्य, अरुण, मङ्गल्य, सीस[क], सीसोपधातु)

संस्कृतभाषामें	सिन्दूर ।	लैटिन्भाषामें प्लूवं ओक्संडम् ।	
हिन्दीभाषामें	सिन्दुर ।	तामिलीभाषामें चेन्दूरम् ।	
वंगभाषामें	सिन्दूर ।	अंग्रेजीभाषामें मिनियम् रेडलेड	
मराठीभाषामें	शेंदुर ।	फारसीभाषामें सिरिन्ज ।	
तैलिङ्गीभाषामें	चेन्दुरमु ।	अरबीभाषामें इसरंज ।	

सिन्दूरगुणाः ।

सिन्दूरमुष्णंवीसर्पकुष्ठकण्डूविषापहम् ।
भग्नसन्धानजननंव्रणशोधनरोपणम् ॥

अर्थ–सिन्दूर–गरम, विसर्पनाशक, कुष्ठविनाशक, कण्डूनिवारक, वि[ष]हारक, भग्नसन्धानकारक, व्रणको शोधनेवाला और भरनेवाला है ।

सिन्दूरस्य स्वरूपम् ।

सीसोपधातुःसिन्दूरंगुणैस्तत्सीसवन्मतम् ।
संयोगजप्रभावेणतस्याप्यन्येगुणाःस्मृताः ॥ (भा०प्र०)

अर्थ–सिन्दूर सीसेस बनाया जाता है इस कारण सिन्दूरको सीसे[का] उपधातु कहते हैं, सिन्दूरके गुण सीसके समान है परन्तु संयोगज प्रभाव[से] और २ भी गुण कहे हैं ।

मनःशिलानामानि ।

मनःशिलाचगोलाचमनोज्ञानागजिह्विका ।
मनोगुप्तारोगशिलानेपालीकुनटीशिला ॥

अर्थ--मनःशिला, गोला, मनोज्ञा, नागजिह्विका, मनोगुप्ता, रोगशिला, नेपाली, कुनटी, शिला, (मनःसिल, कुलटी, मनोह्वा, नेपालिका, कल्याणिका, नागमाता, रसनेत्रिका, दिव्यौषधि)

संस्कृतभाषामें मनःशिला ।	तैलिङ्गीभाषामें मानुशिला ।
हिन्दीभाषामें मनशिल, मैनशिल ।	फारसीभाषाम जरनिख, अहेमर ।
बंगभाषामें मनछाल ।	अंग्रेजीभाषामें रीलेगार ।
मराठीभाषामें मनशीळ ।	लैटिन्भाषामें आर्सेनिक,सल्फैडम् ।
गुजरातीभाषामें मणशल ।	

मनःशिलागुणाः ।

मनःशिलागुरुर्बल्यासरोष्णालेखनीकटुः ।
तिक्तास्निग्धाविषश्वासकासभूतकफास्त्रनुत् ॥

अर्थ--मनशिल--भारी, बलकारी, सारक, गरम, लेखन, चरपरी, कडवी, स्निग्ध तथा विष, श्वास, खांसी भूत, कफ और रुधिरके विकारोंको दूर करे है ।

अशोधितमनःशिलादोषाः ।

मनःशिलामन्दबलंकरोतिजन्तुन्ध्रुवंशोधनमन्तरेण ।
मलानुबन्धंकिलमूत्ररोधमशर्करंकृच्छ्रगदंचकुर्य्यात् ॥

अर्थ--अशुद्धमनशिल—बलको कम करनेवाली, मलरोधक, मूत्ररोधक, शर्करारोगजनक और मूत्रकृच्छ्र रोगको करे है ।

हरितालमनःशिलयोर्भेदः ।

तालकस्यैवभेदोऽस्तिमनागेवतदन्तरम् ॥
तालकमतिपीतंस्याद्रवेद्रक्तामनःशिला ॥

अर्थ--हरिताल और मनशिल इन दोनोंमें केवल इतनाही अंतर है कि, हरिताल अत्यन्त पीली और मनशिल लाल होतीहै ।

हरितालनामानि ।

पिञ्जरंपित्तलंतालंमनोज्ञहरितालकम् ।

छत्रांगंकाञ्चनरसंगोदन्तंनटमण्डनम् ॥

अर्थ-पिञ्जर, पित्तल, ताल, मनोज्ञ, हरितालक, छत्राङ्ग, काञ्चनरस, गोदन्त, नटमण्डन (विस्रगन्धि, पीतक, हरिताल, कर्बूर, पीतन, हरिबीज, सिद्धधातु, पिञ्जल, लोमहृत्, वंशपत्रक, वर्णक, अल, पीत, गोरोच, चित्राङ्ग, पिञ्जरक, वैदल, तालक, कनकरस, काञ्चनक, विडालक, चित्रगन्ध, पिङ्ग, पिङ्गसार, गौरीललित ।

सं० हरिताल ।	क० हरिदाल ।
हिं० हरिताल ।	इं० ओर्पिमेंट ।
वं० हरिताल, हत्तेल ।	लै० यलोआर्से निकंसलफाइडम्
म० हरताळ ।	अ० जरनिख अस्फर ।

हरितालगुणाः ।

हरितालंकटुस्निग्धंकषायोष्णंहरेद्विषम् ।
कण्डूकुष्ठास्यरोगास्रकफपित्तकचव्रणान् ॥

अर्थ-हरिताल-चरपरी, स्निग्ध, कषेली, गरम, विषनाशक तथा कण्डू, कुष्ठ, मुखरोग, रुधिरविकार, कफ, पित्त, बाल और व्रणको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

शोधितंहरितालन्तुकान्तिवीर्य्यविवर्द्धनम् ।
कुष्ठादिकफरोगघ्नंजरामृत्युहरंपरम् ॥

अर्थ-शोधित हरिताल-कान्तिजनक, वीर्य्यवर्द्धक, कुष्ठादिरोगहारक, कफरोगनिवारक, जरा और मृत्युको नाश करनेवाली है ।

अपिच ।

अशीतिवातान्कफपित्तरोगान्कुष्ठानिमेहांश्चगुदामयांश्च ।
निहन्तिगुञ्जार्धमितंतुतालंषड्वल्लखंडेनसमंचयुक्तम् ॥

अर्थ-आधी चोटलीभर हरितालकी भस्म और छःभाग चीनी मिलाकर खानेसे अस्सी प्रकारके वात, कफ, पित्त, कुष्ठ प्रमेह और बवासीर दूर होती है ।

अशुद्धहरितालदोषाः ।

अशुद्धन्तालमायुर्हृत्कफमारुतमेहकृत् ।
तापस्फोटादिसंकोचान्कुरुतेतेनशोधयेत् ॥

अर्थ-अशोधित हरिताल--आयुनाशक, कफकारक, वातवर्द्धक; प्रमेहजनक, तापजनक, विस्फोटकारक और अंगसंकोचक है ।

अपिच ।

अशुद्धतालंखलुपीतवर्णसधूमकंवातचयंचपित्तम् । पंगुत्वकुष्ठतनुतेचतेनदेहस्यनाशंचकरोतिसद्यः ॥

अर्थ-अशुद्ध हरताल- पीली और अग्निमें डालनेसे धुआं देने लगती है ऐसी हरिताल--वातपित्तको बढानेवाली है, देहमें पंगुता और कुष्ठको उत्पन्न करनेवाली हैं और तत्काल देहनाशक है ।

अन्यच्च ।

हरतिचहरितालंचारुतांदेहजाताम् सृजतिचबहुतापमंगसङ्कोचपीडाम् ॥ वितरतिकफवातौकुष्ठरोगंविदध्यादिदमशितमशुद्धंमारितंचाप्यसम्यक् ॥

अर्थ--अशुद्ध और कुविधिसे मारी हुई हरिताल--देहकी सुंदरताको हरनेवाली घोर ताप तथा अगोंका संकोच और पीडाको करनेवाली, कफवातको बढानेवाली और कोढको करनेवाली है ।

हरितालस्यप्रकारभेदाः ।

हरितालंद्विधाप्रोक्तंपत्राख्यंपिण्डसञ्ज्ञकम् । तयोराद्यंगुणैः श्रेष्ठंततोहीनगुणंपरम् ॥ स्वर्णवर्णंगुरुस्निग्धंसपत्रंचाभ्रपत्रवत् । आख्यंतालकंविद्याद्गुणाढ्यंतद्रसायनम् ॥ निष्पत्रं पिण्डसदृशंस्वल्पसत्त्वंतथागुरु । स्त्रीपुष्पहारकंस्वल्पगुणं तत्पिण्डतालकम् ॥

अर्थ--पत्रहरिताल और पिंडहरिताल इन भेदोंसे हरिताल दो प्रकारकी है वहां पत्रहरिताल (तबकिया) गुणोंमें श्रेष्ठ और पिण्डहरिताल हीनगुणवाली है। जो हरिताल स्वर्णके समान वर्णवाली हो, भारी हो, स्निग्ध हो और अभ्रकके समान पत्रयुक्त हो वह पत्रहरिताल जाननी यह हरिताल अधिक गुणवाली और रसायन है और जो पत्ररहितहो पिण्डके समान गोल हो वह अल्पसत्वयुक्त, हलकी, स्त्रीके पुष्पका नाश करनेवाली और अल्पगुणवाली ऐसी पिंडहरिताल जाननी ।

अन्यच्च ।

हरितालोष्टधाप्रोक्तोगोदन्तःसर्वतोधिकः ।
तदभावेतुपत्राख्योवयसःस्थापनःपरः ॥

अर्थ- हरिताल आठ प्रकारकी कही है, उन सबमें गोदन्त हरिताल उत्तम है, गोदन्त हरितालके अभावमें पत्राख्य हरिताल लेनी यह अवस्थास्थापक है।

हरितालभस्मानुपानम् ।

सर्वरक्तविकारेषुदेयमाम्रहरिद्रया । सुहालाहलजीराभ्यामपस्मारहरंपरम् ॥ समुद्रफलयोगेनजलोदरविनाशनम् । देवदालिरसैर्युक्तंभगन्दरहरंपरम् । फिरंगदोषजंरोगंजातंहन्तिसुदुस्तरम् ॥ विसर्पमण्डलंकण्डूपामाविस्फोटकंतथा। वातरक्तकृतान्रोगानन्यानपिविनाशयेत् ॥

अर्थ-हरितालकी भस्म-सर्वप्रकारके रक्तविकारोंमें आम्बियाहलदीके साथ देनी चाहिये, बच्छनाग विष और जीरेके साथ अपस्माररोगमें देनी चाहिये, समुद्रफलके साथ जलोदररोगमें देनी चाहिये और देवदालीके रसके साथ भगन्दर, फिरंगोपदंश, विसर्प, मंडल, कण्डू, पामा, विस्फोट और वातरक्तजनित रोग तथा अन्यान्य रोगोंकोभी दूर करे हैं।

हरितालभक्षणप्रमाणम् ।

भक्षयेद्रत्तिमात्रंहियथायोगेनतालकम् ।
क्षाराम्लौचकटुत्यक्त्वाभिष्टभोजनमाचरेत् ॥

अर्थ-हरिताल प्रथम एक गुंजा प्रमाण भक्षण करनी चाहिये तथा क्षार अम्ल और कटुपदार्थ नहीं खावे और, मिष्ठ भोजन करे।

हरितालप्रयोज्यम् ।

श्वासेकासेक्षयेदुष्टेपित्तेवैवातशोणिते ।
दद्रुपामाव्रणेकुष्टेतालकंचप्रदापयेत् ।

अर्थ-हरिताल-श्वास, खांसी, क्षय, पित्त, वातरक्त, दद्रु, पामा, व्रण और कुष्ठरोगमें देनी चाहिये।

हरितालादीनामुत्पत्तिः ।

हरितालंहरेर्वीर्य्यंलक्ष्मीवीर्य्यंमनःशिला ।
पारदंशिववीर्य्यंस्याद्गन्धकंपार्वतीरजः ॥

अर्थ-विष्णुके वीर्य्यसे हरिताल, लक्ष्मीके वीर्यसे मनशिल, शिवकेवीर्यसे पारा और पार्वतीके रजसे गन्धककी उत्पत्ति है.।

विवरण । हरिताल-वंशपत्री, स्तबक (तबकिया) और पिण्डाख्य (गुवरिया) इन भेदोंसे कई प्रकारकी है दूसरी एक गोदन्ती हरिताल होती है ।

कासीसनामानि ।

कासीसंधातुकासीसंखाचरंधातुशेखरम् ।
शोधनंपांसुकासीसंकेसरंहंसलोमशन् ॥

अर्थ-कासीस, धातुकासीस, खाचर, धातुशेखर, शोधन, पांसुकासीस केसर, हंसलोमश (शुभ्र, कासीस, नेत्रौषध)

पुष्पकासीनामानि ।

द्वितीयंपुष्पकासीसंवत्सकंचमलीमसम् ।
ह्रस्वंनेत्रौषधंयोज्यंविशदंनीलमृत्तिका ॥

अर्थ-पुष्पकासीस, वत्सक, मलीमस, ह्रस्व, नेत्रौषध, विशद, नीलमृत्तिका ।

संस्कृतभाषामें	कासीस, पुष्पकासीस ।
हिन्दीभाषामें	कसीस, पुष्पकसीस ।
वंगभाषामें	धातुकासीस, पुष्पकासीस।
मराठीभाषामें	हिराकस, श्वेतनीली ।
गुजरातीभाषामें	हीराकशी बे जातनी छे नीली तथा धोळी ।
कर्णाटकीभाषामें	कासींस ।
अंग्रेजीभाषामें	सल्फेट ऑफ् आयर्न विटिअलग्रीन् । Sulphate of iron vitriolgreen
लै०	फेरिसल्फास Ferry Sulphas
फारसीभाषामें	जाकेसब्ज ।
अरबीभाषामें	जाजेअखदर, जाजेअस्फर ।

कासीसगुणाः ।

कासीसंतुकषायंस्याच्छिशिरंविषकुष्ठजित् । खर्ज्जूकृमिहरंचैवचक्षुष्यंकांतिवर्द्धनम् ॥ पुष्पकासीसकंतिक्तंशीतंनेत्रामयापहम् । लेपेनपामाकुष्ठादिनानात्वग्दोषनाशनम् ॥

अर्थ-कसीस-कषेला, शीतल, नेत्रोंको हितकारी, कांतिवर्द्धक, तथा विष, कुष्ठ, खर्ज्जू और कृमिका नाश करे है। पुष्पकासीस-कडवा, शीतल, नेत्ररोगनाशक, इसका लेप करने से पामा, कुष्ठादि और अनेक प्रकारके त्वचाके विकार दूर होते हैं।

अन्यच्च ।

कासीसंतुवरंशीतंचक्षुष्यंकान्तिवर्द्धनम् । अम्लमुष्णश्चतिक्तश्चकेश्यंक्षारविषप्रणुत् ॥ वृष्यंचश्वित्रकुष्ठघ्नंमूत्रकृच्छ्राश्मरीहरम् । कफंवातंव्रणंकुष्ठंक्षयंचैवविनाशयेत् ॥

अर्थ-कासीस-कषेला, शीतल, नेत्रोंको हितकारी, कान्तिवर्द्धक, अम्ल, उष्ण, कडवा, केशोंको हितकारी, क्षार, विषनाशक, वृष्य, श्वित्रकुष्ठनाशक तथा मूत्रकृच्छ्र, पथरी, कफ, वात, व्रण, कुष्ठ और क्षयरोगका नाश करे है।

अपिच ।

पुष्पादिकासीसमपिप्रशस्तंसोष्णंकषायाम्लमतीवनेत्र्यम् । विषानिलश्लेष्ममतिव्रणघ्नंश्वित्रक्षयघ्नंकचरंजनंच ॥
वातश्लेष्महरंकेशनेत्रकण्डूविषप्रणुत् ।
मूत्रकृच्छ्राश्मरीश्वित्रनाशनंपरिकीर्त्तितम् ॥ (नि. र.)

अर्थ-पुष्पकासीस-अत्यन्तप्रशस्त, गरम, कषेला, खट्टा, अतिशय नेत्रोंको हितकारी तथा विष, वात, कफ, व्रण, श्वेतकुष्ठ और क्षयरोगका नाश करे है, केशरंजक, वात, कफ, नेत्र और केशोंकी खुजली, विष, मूत्रकृच्छ्र और पथरीको दूर करे है।

कासीसलक्षणम् ।

भस्मवन्मृत्तिकाम्लंचकासीसंधातुइत्यपि ।
तदेवकिञ्चित्पीतंतुपुष्पकासीसमुच्यते ।

अर्थ-धातुकासीस-भस्मके समान अल्पमृत्तिका होती है और पुष्पकासीस धातुकासीससे कुछेक पीला होता है।

गैरिकनामानि।

गिरिमृद्गैरिकंरक्तधातुर्लोहितमृत्तिका।

अर्थ-गिरिमृत्, गैरिक, रक्तधातु, लोहितमृत्तिका (गिरिधातु, गवेधुक, धातु, सुरंगधातु, गिरिमृद्भव, वनालक्त, गवेरुक, प्रत्यश्म, गिरिज, गैरेय, ताम्रधातु)

सुवर्णगैरिकनामानि।

सुवर्णगैरिकंचान्यत्सुरक्तंस्वर्णगैरिकम्।

अर्थ-सुवर्णगैरिक, सुरक्त, स्वर्णगैरिक, (स्वर्णधातु, शिलाधातु, सन्ध्याभ्र, बभ्रुधातु, सुरक्तक)

पाषाणगैरिकनामानि।

पाषाणगैरिकंप्रोक्तंकठिनंताम्रवर्णकम्।

अर्थ-पाषाणगैरिक, कठिन, ताम्रवर्णक।

संस्कृतभाषामें	गैरिक, सुवर्णगैरिक, पाषाणगैरिक।
हिन्दीभाषामें	गेरु, पीला गेरु, हिरोंजी।
वंगभाषामें	गिरिमाटी।
मराठीभाषामें	सोनगेरु, तांबेगेरु, हुरमुंजी।
गुजरातीभाषामें	गेरु, सोनागेरु, हडमची।
कर्णाटकीभाषामें	जाजु, होजाजु।
अंग्रेजीभाषामें	ओकर Oker रेडलम्बरस्टोन Red lumber stone
लैटिन्भाषामें	बॉलरुब्रा Bole Rubra
फारसीभाषामें	गिलसुर्खमिश्री।
अरबीभाषामें	तीनेमगरेवी अहमर।

गैरिकगुणाः।

गैरिकंरक्तपित्तास्रकफहिक्काविषापहम्।
चक्षुष्यमन्यद्बल्यंचविशेषाद्वान्तिनाशनम्॥

अर्थ-गेरु- रक्तपित्त, रक्तविकार, कफ, हिचकी और विषका नाश करे है। नेत्रोंको हितकारी, बलकारक और विशेषकरके वमननिवारक है।

अन्यच्च।

विशदोगैरिकःस्निग्धःकषायोमधुरोहिमः।

चक्षुष्योरक्तपित्तघ्नश्छर्दिहिक्काविषापहः ॥

अर्थ -गेरु-विशद, स्निग्ध, कषेला, मधुर, शीतल; नेत्रोंको हितकारी रक्तपित्तनाशक, तथा वमन, हिचकी और विषविनाशक है।

सुवर्णगैरिकगुणाः ।

सुवर्णगैरिकंस्निग्धमधुरंतुवरंमतम् । चक्षुष्यंशीतलंबल्यंव्रणरोपणकारकम् । विशदंकान्तिकृत्प्रोक्तंदाहपित्तंकफंजयेत् । हिक्कांरक्तरुजंजूर्तिविषविस्फोटकंवमिम् ॥ अग्निदग्धव्रणंचार्शोरक्तपित्तंचनाशयेत् ॥

अर्थ-पीला गेरु-स्निग्ध, मधुर, कषेला, नेत्रोंको हितकारी, शीतल, बलकारक, व्रणरोपण, विशद, कान्तिजनक तथा दाह, पित्त, कफ, रुधिरविकार, ज्वर, विष, विस्फोटक, वमन, अग्निदग्धव्रण, बवासीर और रक्तपित्तको हरनेवाला है।

द्विविधगैरिकगुणाः ।

गैरिकद्वितयंस्निग्धंमधुरंतुवरंमतम् ।
चक्षुष्यंदाहपित्तास्रकफहिक्काविषापहम् ॥

अर्थ--दोनोंप्रकारके गेरु--स्निग्ध, मधुर, कषेले, नेत्रोंको हितकारी और दाह, रक्तपित्त, कफ, हुचकी और विषको हरनेवाले हैं।

खड़ीनामानि ।

पाकशुक्लाशिलाधातुःकठिनीचखटिःखडी ।

अर्थ पाकशुक्ला, शिलाधातु, कठिनी, खटि, खडी (खटी, खटिनी, खटिका, धवलमृत्तिका, श्वेतधातु, पाण्डुमृत्तिका, सितधातु, पाण्डुरा, ककखटी, वर्णरेखा, वर्णलेखा, मृत्तिकानखा, अनीलाधातु, वर्णलेखिका, शुक्लधातु, धातुपल, कठिनिका, लेखनी, मकड़)।

संस्कृतभाषामें	खटी ।
हिन्दीभाषामें	खरियामाटी, खडिया, गौरखडी ।
वंगभाषामें	खडिमाटी, चाखडि ।
मराठीभाषामें	खडु ।
गुजरातीभाषामें	खडी ।
कर्णाटकीभाषामें	वेणबहु ।

अंग्रेजीभाषामें पाईपक्ले । Pipe clay
लैटिन्भाषामें कार्बोनेट् आफ कलशम् । Corbonate of calcum
फारसीभाषामें गिलेसुफेद, गिलेखरिया ।
अरबीभाषामें तिने अवीयद ।

खटीगुणाः ।

खटिकामधुरातिक्ताशीतलाव्रणदोषहा ।
पित्तंदाहंकफंरक्तदोषंनेत्ररुजंजयेत् ।

अर्थ--खडिया-मधुर, कडवी, शीतल, व्रणनाशक तथा पित्त, दाह, कफ, रुधिरविकार और नेत्ररोगको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

खटीदाहास्रनुच्छीतामधुराविषशोषजित् । कफघ्नीनेत्रयोः पथ्यालेखनाबालकोचिता ॥ तद्वत्पाषाणखटिकाव्रणपित्तास्रजिद्धिमा । लेपादितद्गुणाप्रोक्ताभक्षितामृत्तिकासमा ॥

अर्थ--खडिया--दाह, रक्तदोष, विष, शोष और कफको दूर करे है, शीतल, मधुर, नेत्रोंको हितकारी, लेखन और बालकोंको हितकारी है । पाषाणखटिका (सेलखड़ी)--केभी गुण खड़ियाके समान हैं तथा व्रण, पित्त और रक्तविकारको दूर करे है, शीतल इसके लेप करनेमें यह गुण है और खानेमें तो मिट्टीके समान है ।

कपर्दकनामानि ।

कपर्दकोवराटश्चकपर्दीचवराटिका ।

अर्थ--कपर्दक, वराटक, कपर्दी, वराटिका (वराट, कपर्द, ऊद्वारी, चराचर, चर, वर्ज्य, बालक्रीडक)

संस्कृतभाषामें	कपर्दक ।	गुजरातीभाषामें	कोड़ी ।
हिन्दीभाषामें	कवड़ी, कौड़ी ।	कर्णाटकीभाषामें	कवड़ी ।
बंगभाषामें	कडि ।	अंग्रेजीभाषामें	कवरीझ Covries
मराठीभाषामें	कवड़ी ।		

कपर्दिकागुणाः ।

कपर्दिकाहिमानेत्रहितास्फोटक्षयापहा ।
कर्णस्रावाग्निमांद्यघ्नीपित्तास्रकफनाशिनी ॥

अर्थ-कवड़ी--शीतल, नेत्रोंको हितकारी तथा स्फोट, क्षय, कर्णशूल, अग्निमांद्य, रक्तपित्त और कफका नाश करे है ।

अपिच ।

कटूष्णादीपनीवृष्याशुल्मवातकफापहा ।
परिणामादिशूलघ्नीग्रहणीक्षयनाशिनी ॥

अर्थ-कौडी--चरपरी, गरम, दीपन, वृष्य, तथा गुल्म, वात, कफ, परिणामशूल, संग्रहणी और क्षयरोगका नाश करे है ।

अन्यच्च ।

कपर्दःकटुतिक्तोष्णःकर्णशूलव्रणापहः ।
शूलगुल्मामयघ्नश्चनेत्रदोषनिकृन्तनः ॥

अर्थ--कौड़ी--चरपरी, कड़वी, गरम तथा कर्णशूल, व्रण, शूल, गुल्म और नेत्ररोगको हरनेवाली है ।

कपर्दिकाभेदाः ।

वराटिकात्रिधाप्रोक्ताश्वेताशोणात्रिधापरा । पीताचतीक्ष्णा चक्षुष्याश्वेताशोणाहिमाव्रणा ॥ अतिबिंदुभिरश्वेतैर्लांछिता रेखयाथवा । बालग्रहहरानानाकौतुकेषुचपूजिता ॥ पीता गुल्मयुतापृष्ठेरसयोगेषुयोजयेत् । सार्धनिष्कप्रमाणासौ श्रेष्ठायोगेषुयोजयेत् ॥ निष्कप्रमाणामध्यासाहीनापादोन निष्कका ॥

अर्थ--कौड़ी सफेद, लाल और पीली इन भेदोंसे तीनप्रकारकी है, पीली कौड़ी--तीक्ष्ण और नेत्रोंको हितकारी है; सफेद और लाल कौड़ी शीतल और व्रणका भरनेवाली है । काले बिन्दुयुक्त तथा रेखाआदिसे लांछित ऐसी कौडी-बालग्रहनाशक और अनेक प्रकारके कौतुकोंमें पूजी गी है और जिसकी पीठपर पीली गांठे हों ऐसी कौड़ी रसकर्ममें लेनी चाहिये । तोलमें डेढ तोलेवाली कौड़ी उत्तम होती है एक तोलेभरकी मध्यम और पाव तोले भरकी कौड़ी कनिष्ठ होती है ।

शुक्ति नामानि ।

शुक्तिर्मुक्ताप्रसूश्चैवमहाशुक्तिश्चशुक्तिका ।
मुक्तास्फोटोब्धिमण्डूकीमौक्तिकप्रसवाचसा ॥

अर्थ-शुक्ति, मुक्ताप्रसू, महाशुक्ति, शुक्तिका, मुक्तास्फोट, अब्धिमण्डूकी, मौक्तिकप्रसवा (दुर्नामा, दीर्घकोषिका, दीर्घकौशिका, पङ्कशुक्ति, मुक्तगार शुक्ति, तौतिक, मौक्तिकशुक्ति, मुक्तमाता, मुक्तास्फोटा)

जलशुक्तिनामानि ।

जलशुक्तिर्वारिशुक्तिः कृमिसूः क्षुद्रशुक्तिका ।
शम्बूकाजलडिम्बश्चपुटिकातोयशुक्तिका ॥

अर्थ-जलशुक्ति, वारिशुक्ति, कृमिसु (क्ति), क्षुद्रशुक्ति काशम्बूका, जलडिम्ब, पुटिका, तोयशुक्तिका, (नरशुक्ति)

संस्कृतभाषामें	शुक्ति, जलशुक्ति ।
हिन्दीभाषामें	मोतीकी सीप, जलसीप
बंगभाषामें	झिनुक, शामुक ।
मराठीभाषामें	मोत्याची शिंप, नदींतील शिंप ।
गुजरातीभाषामें	मोतीनी छीप, नदीना छिपना ।
कर्णाटकीभाषामें	मुक्तिनीसिंपु, तौरेयसिंपु ।
अंग्रेजीभाषामें	ओईस्टरशेल । Oyster shell

शुक्तिगुणाः ।

मुक्ताशुक्तिः कटुः स्निग्धाश्वासहृद्रोगनाशिनी ।
शूलप्रशमनीरुच्यामधुरादीपनीपरा ॥ (रा. नि.)

अर्थ-मोतीकी सीप-चरपरी, स्निग्ध, श्वासनिवारक, हृदयरोगहारक, शूलको दूर करनेवाली, रुचिको उत्पन्न करनेवाली मधुर और दीपन है ।

अन्यच्च ।

मुक्ताशुक्तिस्तुमधुरास्निग्धारुच्याचदीपनी ।
कट्वीचकासशूलघ्नीहृद्रोगस्यचनाशिनी ॥
स्नायुरोगहरीचैवज्वरघ्नीव्रणभेदिनी ॥ (रा. नि.)

अर्थ-मोतीकी सीप-मधुर, स्निग्ध, रुचिकारक, दीपन, चरपरी तथा खांसी, शूल, हृदयरोग, स्नायुरोग और ज्वरका नाश करनेवाली है और व्रणभेदक है ।

अपिच ।

शुक्तिश्चशिशिरापित्तरक्तज्वरविनाशिनी ॥

अर्थ-सीप--शीत, पित्त, रुधिरविकार और ज्वरको हरनेवाली है।

जलशुक्तिगुणाः ।

जलशुक्तिःकटुःस्निग्धादीपनीगुल्मशूलनुत् ।
विषदोषहरारुच्यापाचनीबलदायिनी ॥

अर्थ -जलसीप--चरपरी, स्निग्ध, दीपन, गुल्मनाशक, शूलनिवारक, विष विकारहारक, रुचिकारक, पाचक और बलवर्द्धक है।

अन्यच्च ।

जलशुक्तिःकटुःस्निग्धादीपनीपाचकाचसा ।
रुच्याबलप्रदागुल्मनाशिनीचक्षुषोर्हिता ॥
विषदोषंचशूलंचनाशयेदितिकीर्त्तिता । (रा. नि.)

अर्थ--जलकी सीप--चरपरी, स्निग्ध, दीपन पाचक, रुचिकारक, बलव र्द्धक, गुल्मनाशक, नेत्रोंको हितकारी तथा विषदोष और शूलका नाश करै है।

विवरण । मोतीकी सीप और साधारण सीप इन भेदोंसे सीप दोप्रकारकी होती हैं । तहां मोतीकी सीप अत्यंत शुभ्र और सुफेद रंगकी समुद्रमें होती है । दूसरी सीप नदियोंमें होती हैं ।

शंखनामानि ।

शंखःसमुद्रजःकम्बुःसुनादःपावनध्वनिः ॥

अर्थ--शंख, समुद्रज, कम्बु, सुनाद, पावनध्वनि (कम्बु, कम्बोज अ... त्रिरेख, जलज, अर्णोभव, अन्तःकुटिल, महानाद, श्वेतपूत, मुखरदीर्घ... बहुनाद, हरिप्रिय, दीर्घनिस्वन, सुरचर, सम्यकछब्द, जलोद्भव, विष्णु... दुष्टद्रावी, धवल, स्त्रीविभूषण, पांचजन्य, अर्णवभव, अर्णवभवोदर।

सं०	शंख ।	गु०	शंख ।
हिं०	शंख ।	तै०	शंखमु।
बं०	शाँक, शंख ।	इं०	कोंच। Coneh
म०	शंख ।		

शंखगुणाः ।

शंखोनेत्र्योहिमःशीतोलघुःपित्तकफास्रजित् ।

अर्थ--शंख- नेत्रोंको हितकारी, शीतल, हलका, तथा पित्त कफ और रुधिरके विकारोंको दूर करेहै।

अन्यच्च।

शंखःकटुःसरःशीतःपुष्टिवीर्य्यबलप्रदः।
गुल्मशूलहरःश्वासनाशनोविषदोषनुत्।

अर्थ-शंख-चरपरा, सारक, शीतल, पुष्टि वीर्य्य और बलवर्द्धक तथा गुल्म, शूल, श्वास और विषके बिकारोंको हरेहै।

अपिच।

शंखःशीतःकषायश्चलेखीचाजीर्णशूलजित्।

अर्थ-शंख--शीतल, कषेला, लेखन तथा अजीर्ण और शूलनाशक है।

अपिच।

शंखस्तुपौष्टिकोबल्योरसकालेकटुःस्मृतः। पटुःशीतोग्राहकश्चचक्षुष्योवर्णकृन्मतः॥ नेत्रपुष्पंपंक्तिशूलंगुल्मंसंग्रहणींहरेत्। तारुण्यपिटिकागुल्मशूलश्वासहरःस्मृतः॥ दक्षिणावर्तशंखस्तुत्रिदोषकामलापहः। विषदोषक्षयनेत्रग्रहपीडाविनाशकः॥ (रत्नाकरे)

अर्थ-शंख-पुष्टिकारक, बलवर्द्धक, कटुरसान्वित, खारी, शीतल, मलरोधक, नेत्रोंको हितकारी, वर्णकारक तथा नेत्रका फूला, पंक्तिशूल, गुल्म संग्रहणी, तारुण्यपिटिका (मुहासे) गुल्म, शूल, और श्वासनाशक है। दक्षिणावर्त्त शंख--त्रिदोष, कामलारोग, बिषदोष, क्षय, नेत्ररोग और ग्रहकी पीडाको दूर करे है।

शंखस्य प्रकारभेदाः।

द्विधासदक्षिणावर्तिर्वामावर्त्तिस्तुभेदतः
दक्षिणावर्त्तशंखस्तुपुण्ययोगादवाप्यते॥
यद्गृहेतिष्ठतिसोवैसलक्ष्म्याभाजनंभवेत्।

अर्थ--शंख--दक्षिणावर्त्त और वामावर्त्त इन भेदोंसे दोप्रकारका है। दक्षिणावर्त्त शंख पुण्यके योगसेही प्राप्त होताहै। और जिसके घरमें यह रहवाहै उसके लक्ष्मीकी अधिक वृद्धि होती है।

श्रेष्ठशंखलक्षणम् ।

शंखस्तु विमलः श्रेष्ठश्चंद्रकान्तिसमप्रभः ।
अशुद्धो गुणदो नैव शुद्धस्तु सुगुणप्रदः ॥

अर्थ--निर्मल और जिसकी चंद्रमाके समान कान्ति हो ऐसा शंख उत्तम है। अशुद्ध शंख गुणदायक नहीं है और शुद्ध शंख गुणदायक है।

कृमिशंखनामानि गुणाश्च ।

कृमिशंखः कृमिजलजः कृमिवारिश्च जन्तुकम्बुश्च ।
कथितो रसवीर्य्याद्यैः कृतानिधिभिः शंखसदृशोऽयम् ॥

अर्थ--कृमिशंख, कृमिजलज, कृमिवारि, जन्तुकम्बु । कृमिशंख–रसवीर्य्यादिकमें शंखकेही समानहै ।

क्षुद्रशंख नामानि ।

कोशस्थालघुशंखास्तु क्षुद्रकाः क्षुल्लकास्तथा ।
शंखनकाश्च शम्बूकाः क्षुद्रशंखा नदीभवाः ॥

अर्थ--कोशस्थ, लघुशंख, क्षुद्रक, क्षुल्लक, शंखनक, शम्बूक, क्षुद्रशंख नदीभव ।

क्षुद्रशंखगुणाः ।

शम्बूकाः शीतला नेत्ररुजास्फोटविनाशिनः ।
शीतज्वरहरास्तीक्ष्णा ग्राहिदीपनपाचनाः ॥

अर्थ क्षुद्रशंख शीतल, नेत्ररोगनाशक, स्फोटकविनाशक, शीतज्वरनिवारक, तीक्ष्ण, ग्राही, दीपन और पाचक है ।

अन्यच्च ।

शम्बूकः सृष्टविण्मूत्रो मधुरः पित्तरोगहा ।

अर्थ--क्षुद्रशंख (घोंघा)—मल और मूत्रको करनेवाला, मधुर और पित्तरोग नाशक है ।

अपिच ।

क्षुल्लकः कटुकस्तिक्तः शूलहारी च दीपनः

अर्थ-क्षुल्लक (घोंघा)—चरपरा, कडवा, शूलनाशक और दीपन है।

कंकुष्ठनामानि ।

कङ्कुष्ठं कालकुष्ठश्च विरङ्गं रङ्गदायकम् ।

अर्थ-कंकुष्ठ, कालकुष्ठ, विरंग, रंगदायक (रेचक, पुलक, शोधक, कालपालक)

संस्कृतभाषामें	कंकुष्ठ।
हिंदीभाषामें	कंकुष्ठ (मुरदासिंग)।
वंगभाषामें	पार्वतीयमृत्तिकाविशेष।
मराठीभाषामें	कुंकुष्ठ।
गुजरातीभाषामें	पीलीयो।

कंकुष्ठगुणाः।

कंकुष्ठंरेचनंतिक्तंकटूष्णंवर्णकारकम्।
कृमिशोथोदराध्मानगुल्मानाहकफापहम्॥ (भा. प्र.)

अर्थ-कंकुष्ठ-दस्तावर, कडवा, चरपरा, वर्णकारक तथा कृमि, सूजन, उदर, आध्मान, गुल्म, आनाह और कफरोगका नाश करे है।

अन्यच्च।

कंकुष्ठंतिक्तकटुकंवीर्य्यंचोष्णंप्रकीर्त्तितम्।
गुल्मोदावर्त्तशूलघ्नंसजन्तुव्रणापहम्। (रत्नाकर)

अर्थ-कंकुष्ठ-कडवा, चरपरा उष्णवीर्य्य तथा गुल्म, उदावर्त्त, शूल, कृमि, जन्तु और व्रणविनाशक है।

अन्यच्च।

कंकुष्ठंपित्तकृद्भेदिविबंधकफगुल्मनुत्। भजेदेनंविरेकार्थे ग्राहिभिर्यवमात्रया॥ नाशयेदामपूर्तिंचविरेच्यंक्षणमात्रतः। सुभक्षितंचताम्बूलंविरेकंतंविनाशयेत्॥

अर्थ-कंकुष्ठ--पित्तकारक, भेदक तथा विबन्ध, कफ और गुल्मको दूर करे है। इसको एक जौकी बराबर मलरोधी मनुष्योंको देनेसे क्षणमात्रमें दस्त होने लगते हैं और दुर्गंध आम दूर होजाती है तथा ताम्बूलके खानेसे सभी दस्त बंद हो जाते हैं।

कंकुष्ठोत्पत्तिलक्षणम्।

हिमवत्पादशिखरेकंकुष्ठमुपजायते। तत्रैकंनलिकाख्यंस्यात्तदन्यंरेणुकंस्मृतम्॥ पीतप्रभंगुरुस्निग्धंश्रेष्ठकंकुष्ठमादिमम्। श्यामंपीतंलघुत्यक्तसत्त्वंनेष्टंहिरेणुकम्।

अर्थ--कंकुष्ठ हिमालय पर्वतके शिखरोंमें उत्पन्न होता है, तहां एक नलिकाख्य और दूसरा रेणुक कहा जाता है । इनमें पीला, भारी, चिकना ऐसा श्रेष्ठ कंकुष्ठ होता है और काला, पीला, हलका और जिसमें सत्त्व न हो वह कनिष्ठ और उसको रेणुक कंकुष्ठ कहते हैं ।

अपिच ।

केचिद्वदन्तिकंकुष्ठंसद्योजातस्यदन्तिनः ।
वर्च्चश्वश्यामपीताभंतदतीवविरेचनम् ॥

अर्थ--कोई मुरदेसिंगको तत्कालके उत्पन्न हुवे हाथीके बच्चेकी विष्ठा कहते हैं । यह श्याम और पीली प्रभावाला होता है तथा अत्यन्त दस्तावर है ।

शंखजीरकनामानि ।

कम्बुजीरःश्लक्ष्णजीरस्तथाश्लक्ष्णमृदापिच ।

अर्थ-कम्बुजीर, श्लक्ष्णजीर, श्लक्ष्णमृत् (द्) ।

संस्कृतभाषामें	शंखजीरक ।
हिन्दीभाषामें	संगजराहत ।
मराठीभाषामें	शंखजिरें ।
गुजरातीभाषामें	शंखजीरु ।
अंग्रजीभाषामें	सोपस्टोन् । Soaplstone
लैटिन्भाषामें	सिलिकेट ऑफ मेगनिश्या । Silicate of Magnesia
फारसीभाषामें	संगे जराहत ।
अरबीभाषामें	हजरुल एरावी ।

अस्य गुणाः ।

शंखाभिधंजीरकंतुव्रणदाहरुचंजयेत् ।
प्रलेपाच्छोफवीसर्पकक्षारक्तविकारजित् ॥

अर्थ -शंखजीरक (संगरजराहत)--व्रण और दाहरोगको दूर करै है। इसका लेप करनेसे सूजन, विसर्प, कक्षा और रक्तविकार दूर होता है।

स्फटीनामानि ।

स्फटीचस्फटिकाप्रोक्ताश्वेताशुभ्राचरंगदा ॥
दृढरंगारंगदृढादृढारंगापिकथ्यते ॥

अर्थ-स्फटी, स्फटिका, श्वेता, शुभ्रा, रंगदा, दृढरंगा, रंगदृढा, दृढा, रंगा (स्फटिकारि, स्फटिकारिका, रंगाङ्गा, सुरंगा, गतरंगा)

सं० स्फटिकारि ।
हिं० फटकिरी ।
बं० फटफिरी ।
म० तुर्टी, फटकी ।
क० फटकी ।
तै० फाटिके ।
अ० विट्रील हाईट आलम् ।
लै० हैड्रार्जिरम्सल् फ्युरेष्टम् ।
फा० जाकसफेत ।
अ० जाज कल्कतार ।

अस्य गुणाः ।

स्फाटिकातुकषायोष्णावातपित्तकफव्रणान् ।
निहन्तिश्वित्रवीसर्पान्योनिसङ्कोचकारिणी ॥ (भा. प्र.)

अर्थ-फटकिरी-कषेली, गरम तथा वात, पित्त, कफ, व्रण, श्वित्रकुष्ठ और विसर्पको दूर करे है तथा योनिको संकुचित करनेवाली है ।

अन्यच्च ।

स्फाटिकीतुवरास्निग्धाकटूवीरंगप्रदामता। रसबन्धकरीकुष्ठ व्रणप्रदरनाशिनी ॥ विषदोषंमूत्रकृच्छ्रंवान्तिशोषंत्रिदोषक-म् प्रमेहंचनाशयत्येवंपूर्वाचार्य्यैर्निवेदितम् ॥ (रत्नाकर)

अर्थ-फटकिरी -कषेली, स्निग्ध, चरपरी, रंगप्रद, रसबन्धक तथा कुष्ठ, व्रण, प्रदर, विषविकार, मूत्रकृच्छ्र, वमन, शोष, त्रिदोष और प्रमेहरोगको हरनेवाली है ।

चुम्बकनामानिगुणाश्च ।

चुम्बकःकान्तपाषाणोऽयस्कान्तोलौहकर्षकः ।
चुम्बकोलेखनःशीतोमेदोविषगरापहः ॥

अर्थ-चुम्बक, कान्तपाषाण, अयस्कान्त और लौहकर्षक । चुम्बकपत्थर-लेखन, शीतल तथा मेद, विष और उपविषको दूर करे हैं ।

राजावर्त्तगुणाः ।

राजावर्त्तःकटुस्तिक्तःशिशिरःपित्तनाशनः ।
राजावर्त्तःप्रमेहघ्नश्छर्दिहिक्कानिवारणः ॥

अर्थ-राजावर्त्त-(रेवटी)-कटु, तिक्त, शीतल, पित्तनाशक तथा प्रमेह, वमन और हिचकीको दूर करे है ।

सौराष्ट्रीनामानि ।

सौराष्ट्र्याढकीतुवरीपर्पटीकालिकासती ।
सुजातादेशभाषायांगोपीचंदनमुच्यते ॥

अर्थ- सौराष्ट्री, आढकी, तुवरी, पर्पटी, कालिका सती, सुजाता, इसको गोपीचंदन कहते हैं । (काक्षी, पार्वती, मसी, मृदाह्वया, मृत्, मृत्स्ना, आसङ्ग, सुराष्ट्रजा, मृत्तालक, काली, मृत्तिका, कंसोद्भवा, मृत्तिका, सुरमृत्तिका, स्तुत्या, सौराष्ट्री)

संस्कृतभाषामें	सौराष्ट्री ।
हिन्दीभाषामें	गोपीचंदन, सोरठकी मिट्टी ।
वंगभाषामें	सौराष्ट्रदेशीय सुगन्धिमृत्तिकाविशेष ।
मराठीभाषामें	गोपीचंदन ।
गुजरातीभाषामें	गोपीचंदन ।
लैटिन्भाषामें	सिलिकेट ऑफ एल्युमीना ।

सौराष्ट्रीगुणाः ।

गोपिकाचन्दनंशीतंदाहव्रणविषापहम् ।
विसर्पशमकंलेपात्पतद्गर्भस्थिरीकरम् ॥

अर्थ--गोपीचंदन--शीतल, दाहनाशक, व्रणविनाशक, विषहारक, विसर्प निवारक और इसका लेप करनेसे पतित गर्भ स्थिर हो जाताहै ।

अन्यच्च ।

गोपीचंदनकंदाहक्षतरक्तविकारनुत् ।
पित्तंकफंचप्रदरंनाशयेदितिकीर्त्तितम् ॥

अर्थ--गोपीचंदन- दाह, क्षत, रुधिरविकार, पित्त, कफ, और प्रदररोगको नाश करे है ।

वालुकानामानि ।

सिकतावालुकासिक्ताशीतलासूक्ष्मशर्करा ।
प्रवाहोत्थामहाश्लक्ष्णासूक्ष्मापानीयचूर्णका ॥

अर्थ--सिकता, वालुका, सिक्ता, शीतला, सूक्ष्मशर्करा, प्रवाहोत्था, महाश्लक्ष्णा, सूक्ष्मा, पानीयचूर्णका (वालिका, प्रवाही, महासूक्ष्मा, पानी-यवर्णिका, रेतजा)

सं०	वालुका ।	तै०	विशिका ।
हिं०	बालु; रेत [तो, ता,]	इं०	सॅन्ड । Sand
बं०	बाली ।	लै०	सीलीका । Silica
म०	वाळू, रेती ।	फा०	रेग ।
गु०	रेती, बेलु ।	अ०	रमल ।
क०	हाललु ।		

अस्य गुणाः ।

सिकतामधुराशीतालेखनीतापनाशिनी ।
अग्निदग्धव्रणंचैवव्रणोरःक्षतनाशिनी ॥
श्रमकुष्ठहरीचास्याःस्वेदनंवातनाशनम् । (रत्नाकर)

अर्थ--बालु तथा रेता-मधुर, शीतल, लेखन, तापनाशक तथा अग्निदग्ध व्रण, व्रण, उरःक्षत, श्रम और कुष्ठका नाश करेहै । इसका सेक वातनाशक है.

कर्दमनामानि

पङ्कस्तुजलकल्कश्चचुलुकःकर्दमोमलः ।
चिक्किलःपलितोद्रापःपललश्चनिषद्वरः ॥

अर्थ-पङ्क, चुलुक, कर्दम, मल, चिक्किल, पलित, द्राप, पलल, निषद्वर. (जम्बाल, साद, दम)

कृष्णमृत्तिकानामानि ।

मृन्मृदामृत्तिकामृत्स्नाक्षेत्रजाकृष्णमृत्तिका ।

अर्थ-मृत्, मृदा, मृत्तिका, मृत्स्ना, क्षेत्रजा, कृष्णमृत्तिका ।

संस्कृतभाषामें	पंक, कर्दम, मृत् ।
हिन्दीभाषामें	कींच, गारा, मिट्टी, काली मिट्टी ।
वङ्गभाषामें	कादा, माटी, कालमाटी ।
मराठीभाषामें	चिखल, माती, गारा ।
गुजरातीभाषामें	गारो, कालीमाटी ।
तैलिङ्गीभाषामें	नोवुलु ।
अंग्रेजीभाषामें	मडब्लॅक् क्ले । Mud black Clay
लैटिन्भाषामें	हैड्रस् सिलिकेट ऑफ आल्युमीनीयम् । Hydrasis silicate of alumunum.

पंकगुणाः ।

पंकोदाहास्रपित्तास्रशोथघ्नःशीतलःसरः ।

अर्थ-कीच-दाह, रक्तपित्त, रुधिरविकार और सूजनको दूर करे है शीतल और सारक है)

अन्यच्च ।

कर्दमःशीतलोरूक्षोविषघ्नोवेदनापहः ।
शोफदाहप्रशमनोव्रणशोधनरोपणः ॥

अर्थ- कीच-शीतल, रूखी, विषघ्न, वेदनानाशक, शोफनिवारक, दाहको शांत करनेवाली, व्रणशोधक और व्रणरोपक है ।

अपिच ।

कर्दमःशीतलःस्निग्धोविषपित्तास्रभग्नजित् ।
शोफदादक्षतहरोहितःशोधनरोपणे ॥

अर्थ-कीच-शीतल, स्निग्ध तथा विष, रक्तपित्त, भग्न, सूजन, दाह और घावको दूर करे है । व्रणशोधक और व्रणको भरनेवाला है ।

कृष्णमृद्गुणाः ।

कृष्णमृत्क्षतदाहास्रप्रदरश्लेष्मपित्तनुत् ।

अर्थ-कालीमिट्टी घाव, दाह, रुधिरविकार, प्रदर और कफपित्त नाशक है ।

अन्यच्च ।

कृष्णमृत्स्नारक्तदोषप्रदरक्षतदाहहा ।
मूत्रकृच्छ्रंकफंपित्तंनाशयेदितिकीर्त्तिता ॥

अर्थ-कालीमिट्टी, रुधिरविकार, प्रदर, क्षत, दाह, मूत्रकृच्छ्र, कफ और पित्तको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

कृष्णमृत्क्षतदाहास्रप्रदरश्लेष्मपित्तनुत् ।
प्रलेपाद्विनिहंत्येषाशोथंभल्लातसम्भवम् ॥

अर्थ-कालीमिट्टी-क्षत, दाह, रुधिरविकार प्रदर, कफ, पित्तको हरै और इसका लेप करनेसे भिलावेंसे उत्पन्न हुई सूजन दूर होती है ।

बोलनामानि ।

बोलंगन्धरसंपिण्डंनिर्लोहंबार्बररसम् ।
सुगन्धंनालकंपौरंरसगन्धंसितंविदुः ॥

अर्थ--बोल, गन्धरस, पिंड, निर्लोह, बर्बररस. सुगन्ध, नालक, पौर, रसगन्ध, सित, (रक्तापह, मुण्ड, सुरस, पिण्डक, विष. बबर, सौरभ, रस, रसगन्धक, महागन्ध, विश्व, शुभगन्धक, विश्वगन्ध, व्रणारि, प्राण, बोल, गोद, गोस, पिण्डगोस, शश, गोसशश, गान्धार, मसिवर्धन, गोपरस, बोलज, गोपक, पिण्डल; गोल)

संस्कृतभाषामें	बोल ।
हिंदीभाषामें	बोल. हीराबोल, बीजाबोल ।
बंगभाषामें	गन्धरस, नोल, हिराबोल, खुनखारापी ।
मराठीभाषामें	बोळ ।
गुजरातीभाषामें	हिराबोल ।
कर्णाटकीभाषामें	बोल ।
तैलिङ्गीभाषामें	वालिम्, त्रोपोलम् ।
तामिलीभाषामें	वेल्लइप्पोलम् ।
ब्रम्०	रक्त्या बोल ।
अंग्रेजीभाषामें	मिर्हा ।Myrrha
लैटिन्भाषामें	बालासामोंडेड्रन्मिर्हा । Bulsa modedron myrha
फारसीभाषामें	मुर ।
अरबीभाषामें	मुरसाफ, मुरमकी ।

अस्य गुणाः ।

रक्तबोलःकटुस्तिक्तस्तुवरोष्णश्चपाचनः । मेध्योग्निदीपकोगर्भाशयस्यचविशोधनः ॥ सुगन्धिरक्तदोषघ्नःकफपित्तत्रिदोषनुत् । प्रदराश्मरिमेहघ्नोयोनिशूलज्वरप्रणुत् ॥ कुष्ठापस्माररक्तातीसारस्वेदनिवारणः । ग्रहबाधांपौरुषत्वं नाशयेदितिकीर्तितम् ॥ (रत्नाकरे)

अर्थ--बोल-चरपरा, कडवा, कषेला, गरम, पाचक, मेधाजनक, अग्निप्रदीपक, गर्भाशयशोधक, सुगंधि तथा रुधिरदोष, कफ, पित्त, त्रिदोष,

प्रदर, पथरी, प्रमेह, योनिशूल, ज्वर कुष्ठ, अपस्मार, रक्तातिसार, पसीना, ग्रहबाधा और पुरुषताका नाश करे है ।

शिलाजतुनामानि ।

शिलाजत्वद्रिजतु च शैलनिर्यास इत्यपि ।
गैरेयमश्मजश्चापि गिरिजं शैलधातुजम् ॥

अर्थ-शिलाजतु, अद्रिजतु, शैलनिर्यास, गैरेय, अश्मज, गिरिज, शैलधातुज, (अश्य, शिलाज, अगज, शैल, शैलेय, शीतपुष्पक, शिलाव्याधि, अश्मोत्थ, अश्मलाक्षा, अश्मजतुक, जत्वश्मक)

सं०	सिलाजतु ।	क०	कलुबेचरु ।
हिं०	शिलाजीत ।	इं०	आसफेल्ट, जुडापिच
वं०	शिलाजतु ।	लै०	आस्पल्टं पंझाबितम
म०	शिलाजीत ।		बिटुमेन जुडाइकम् ।

अस्योत्पत्तिलक्षणं गुणाश्च ।

निदाघे घर्मसन्तप्ता धातुसारं धराधराः । निर्यासवत्प्रमुञ्चन्ति तच्छिलाजतु कीर्त्तितम् ॥ सौवर्णं राजतं ताम्रमायसं तच्चतुर्विधम् । शिलाह्वं कटु तिक्तोष्णं कटुपाकं रसायनम् ॥ छेदि योगवहं हन्ति कफमेदोश्मशर्कराः । मूत्रकृच्छ्रं क्षयं श्वासं वातार्शांसि पांडुताम् ॥ अपस्मारं तथोन्मादं शोथकुष्ठोदरकृमीन् । सौवर्णं तु जपापुष्पवर्णं भवति तद्रसात् ॥ मधुरं कटु तिक्तं तु शीतलं कटुपाकि च । राजतं पाण्डुरं शीतं कटुकं स्वादुपाकि च ॥ ताम्रं मयूरकण्ठाभं तीक्ष्णमुष्णं च जायते । लौहं जटायुपक्षाभं तत्तिक्तं लवणं भवेत् ॥ विपाके कटुकं शीतं सर्वश्रेष्ठमुदाहृतम् ॥ (भा. प्र.)

अर्थ--उष्णकालमें सूर्यकी किरणोंसे पर्वत तपित होकर धातुओंके सारको गोंदके समान छोडते हैं, उस सारको शिलाजीत कहते हैं, सौवर्ण, रजत, ताम्र और आयस इन भेदोंसे शिलाजीत चार प्रकारका है । शिलाजीत--कटु, तिक्त, उष्ण, कटुपाकी, रसायन, छेदक, योगवाही तथा क

...मेह, पथरी, शर्करा, मूत्रकृच्छ्र, क्षय, श्वास, वातरक्त, बवासीर, पाण्डुरोग, अपस्मार, उन्माद, सूजन, कुष्ठ, उदररोग और कृमिरोगका नाश करे है। सौवर्ण (सुवर्णकी खानका)। शिलाजीत–जपाके फूलके समान लाल रंगका होता है, मधुरसंयुक्त, कटुरसान्वित, तिक्तरसयुक्त, शीतल और पचनेमें चरपरा है। राजत (रूपेकी खानका)। शिलाजीत--पाण्डुरङ्गका होता है। शीतल, कटु और पचनेमें स्वादिष्ठ है। ताम्र (तांबेकी खानका) शिलाजीत-मोरके गरदनके रङ्गकेसा होता है। तीक्ष्ण और उष्ण है। लौह (लोहेकी खानका)। शिलाजीत--जटायुकी पंखके समान काले रङ्गका होता है। कडवा, लवणरसान्वित, विपाकमें चरपरा, शीतल और सबमें श्रेष्ठ है।

अन्यच्च ।

मासेशुक्रेशुचौचैवशैलासूर्य्यांशुतापिताः । जतुप्रकाशंस्वरसंशिलाभ्यःप्रस्रवन्तिहि॥शिलाजत्विति विख्यातंसर्वव्याधिविनाशनम्।त्रप्वादीनान्तुलौहानांषण्णामन्यतमान्वयम्। ज्ञेयंसुगन्धंतच्चापिषड्योनिप्रथितंक्षितौ। लौहाद्भवतितद्यस्माच्छिलाजतुजतुप्रभम्। तस्यलौहस्यतद्वीर्य्यंरसश्चापि बिभर्त्तितत् । त्रपुसीसायसादीनिप्रधानान्युत्तरोत्तरम् ॥ यथायोगप्रयुक्ताहिश्रेष्ठश्रेष्ठगुणाःस्मृताः । (सु. सं.)

अर्थ--ज्येष्ठ आषाढके महीनेमें पर्वत सूर्य्यकी किरणोंसे अत्यन्त तपित होकर लाखके समान प्रकाशमान अपने रसोंको शिलाओंसे बहाते हैं, वह रस शिलाजीतके नामसे विख्यात है यह सर्व व्याधिका नाश करनेवाला है, सीसा इत्यादि और लोहादिक छह धातुओंसे यह पृथक है इसे सुगंधिवाला जानना। यह पृथ्वीमें छै स्थानोंसे होता है जो लोहसे उत्पन्न होताहै वहलाख के रङ्गका है, वह उस लोहेका वीर्य्य और रसभी धारण करता है। रांग सीसा लोहादि खानजनित गुणोंमें उत्तरोत्तर प्रधान है, वह श्रेष्ठ गुणवाले यथायोग्य प्रयुक्त करने चाहिये।

श्रेष्ठशिलाजतुलक्षणम् ।

गोमूत्रगन्धवत्कृष्णंस्निग्धंमृदुतथागुरु ।
तिक्तंकषायंशीतञ्चसर्वश्रेष्ठंतदायसम् ॥

अर्थ--जिसमें गोमूत्रके समान गंध आतीहो, रङ्ग कृष्णहो, चिकना, नर्म भारी, कडवा, कषेला, और शीतल ऐसा शिलाजीत लौहकी खानसे उत्पन्न हुवा श्रेष्ठ जानना ।

शिलाजतु गुणाः ।

शैलजं कटुकंतिक्तंमेहघ्नंज्वररसायनम् । उष्णमुन्मादशोथघ्नंक्षयकुष्ठाश्मरीहरम् ॥ शोफोदरापस्मारघ्नंबस्तिरोगार्शनाशनम् । कण्डूञ्चपाण्डुरोगञ्चछर्दिंवातंकफंजयेत वलीपलितकासघ्नंश्वासमूत्ररुजापहम् ॥

अर्थ- शिलाजीत--चरपरा कडवा, प्रमेहनाशक, रसायन, गरम और उन्माद, सूजन, क्षय, कोढ, पथरी, शोफ, उदर, अपस्मार, बस्तिरोग, बवासीर, कण्डू, पाण्डुरोग, वमन, वात, कफ, वलीपलित, खाँसी श्वास और मूत्ररोगको दूर करे है ।

अपिच ।

शिलाजंकफवातघ्नंतिक्तोष्णंक्षयरोगनुत ।
वह्नौक्षिप्तंभवेद्यत्तुलिंगाकारमधूमकम् ॥

अर्थ -जो अग्निमें गेरनेसे धूमरहित और लिंगाकार खडा हो जावे वह शिलाजीत उत्तम और शुद्ध जानना । शिलाजीत -कफवातनाशक, कडवा, गरम और क्षयरोगका नाशक है ।

अशुद्धशिलाजतुदोषाः ।

अशुद्धंदाहमूर्च्छांयांभ्रमपित्तास्रशोणितम् ।
शिलाजतुप्रकुरुतेमांद्यमग्नेश्चविड्ग्रहम् ॥ (रत्नाकर)

अर्थ--अशुद्ध शिलाजीत-दाह, मूर्च्छा, भ्रम, रक्तपित्त, रुधिरविकार, अग्निमांद्य और मलवद्धताको करता है ।

इति श्रीशालिग्रामनिघण्टुभूषणे धातूपधातुवर्गः ॥ ६ ॥

अथ रत्नोपरत्नवर्गः ।

अथ रत्नस्य निरुक्तिः ।

धनार्थिनोजनाःसर्वेरमन्तेऽस्मिन्नतीवयत
ततोरत्नमितिप्रोक्तंशब्दशास्त्रविशारदैः ॥ (भा. प्र.)

रत्नंक्लीबेमणिःपुंसिस्त्रियामपिनिगद्यते ।
तत्तुपाषाणभेदोऽस्तिमुक्तादिचतदुच्यते ॥ (कोष)

अर्थ--धनकी इच्छावाले प्राणी इन रत्नोंमें अतीव रमते हैं इसीकारण शब्द-शास्त्रोंके ज्ञाताओंने रत्न ऐसा नाम रक्खा है । रत्न और मणि यह दोनों चमकनेवाले जवाहरात और मोती आदिमें कहे जाते हैं ।

रत्नानांनिरूपणम् ।

वज्रंविद्रुममौक्तिकंमरकतंवैदूर्य्यगोमेदकं
माणिक्यंहरिनीलपुष्पदृषदौरत्नानिनाम्नानव ।
यान्यन्यान्यपिसन्तिकानिचिदिहत्रैलोक्यसीम्निस्फुटं
नाम्नातान्युपरत्नसंज्ञकतमान्याहुःपरीक्षाकृतः । (नि. र.)

अर्थ--नवरत्न--हीरा १ मूँगा २ मोती ३ मरकत ४ वैदूर्य ५ गोमेद ६ माणिक्य ७ नील ८ और पुष्पराग ९ इस प्रकार यह नौ हैं । और इस पृथ्वीपर इन्हीं रत्नोंके सदृश दूसरे रत्न होते हैं उनको उपरत्न ऐसा परीक्षक लोग कहते हैं ।

अन्यच्च ।

मुक्ताफलंहीरकंचवैदूर्य्यपद्मरागकम् ।
पुष्परागंचगोमेदंनीलंगारुत्मतंतथा ॥
प्रवालयुक्तान्येतानिमहारत्नानिवैनव । (विष्णुधर्म्मोत्तरे)

अर्थ--मोती, हीरा, वैडूर्य्य, माणिक, पुखराज, गोमेद, नील, पन्ना और मूँगा इन नवरत्नोंको महारत्न कहते हैं ।

रत्नगुणाः ।

रत्नानिभक्षितानिस्युर्मधुराणिसराणिच ।
चक्षुष्याणिचशीतानिविषघ्नानिधृतानिच ॥
मङ्गल्यानिमनोज्ञानिग्रहदोषहराणिच ।

अर्थ--रत्न--मधुर, सारक, नेत्रोंको हितकारी, शीतल, विषनाशक, स्निग्ध, मंगलकारक, मनोज्ञ और ग्रहदोषको दूर करे हैं ।

अन्यच्च ।

मणयोवीर्य्यतःशीतामधुरास्तुवरारसात् ।

चक्षुष्यालेखनाश्चापिसारकाविषहारकाः ॥

अर्थ--मणि (रत्न--शीतवीर्य्य, मधुर, कषेली, नेत्रोंको हितकारी, लेख सारक और विषहारक है।

हीरकनामानि।

हीरकंवज्रमशिरंषट्कोणंदृढगर्भकम्।

अर्थ-हीरक, वज्र, अशिर, षट्कोण, दृढगर्भक (हीर, दधीचि वज्रक, सुचीमुख, वरारक, रत्नमुख्य, वज्रपर्य्यायनाम, अभेद्य, दृढाङ्ग, मणिवर)।

संस्कृतभाषामें	हीरक, वज्र।
हिन्दीभाषामें	हीरा।
वंगभाषामें	हिरे।
मराठीभाषामें	हिरा।
गुजरातीभाषामें	हिरो।
कर्णाटकीभाषामें	वज्र।
तैलिङ्गीभाषामें	वज्र।
अंग्रेजीभाषामें	डाएमोण्ड। Diamond
लैटिन्भाषामें	पिओरकार्बन् एडम्स्। Pure carbon Ada[illegible]
फा०	इलमाश।

हीरकगुणाः।

हीरकःसारकःशीतःकषायोमधुरस्तथा।
चक्षुष्योवान्तिकृत्पापालक्ष्मीनाशकरोधृतः॥

अर्थ-हीरा--सारक (कुछ २ दस्तावर) शीतल, कषेला, मधुर, और नेत्रोंको हितकारी वमनकारक है। इसको धारण करनेसे पाप और अलक्ष्मीका नाश होता है।

हीरकभेदलक्षणगुणाः।

सश्वेतस्तुस्मृतोविप्रोलोहितःक्षत्रियःस्मृतः। पीतोवैश्यो[illegible] सितःशूद्रश्चतुर्वर्णात्मकश्चसः॥रसायनेमतोविप्रःसर्वसिद्धि प्रदायकः। क्षत्रियोव्याधिविध्वंसीजरामृत्युहरःस्मृतः॥[illegible] श्योधनप्रदः प्रोक्तस्तथादेहस्यदार्ढ्यकृत्। शूद्रोनाशयति[illegible]

व्याधीन्वयःस्तम्भंकरोतिच ॥ पुंस्त्रीनपुंसकानीहलक्षणीया-
विलक्षणैः । सुवृत्ताःफलसम्पूर्णास्तेजोयुक्ताबृहत्तराः ॥ पु-
रुषास्तेसमाख्यातारेखाबिन्दुविवर्ज्जिताः । रेखाबिन्दुसमा-
युक्ताःषडस्रास्तेस्त्रियःस्मृताः ॥ त्रिकोणाश्चसुदीर्घास्तेविज्ञे-
याश्च नपुंसकाः । तेषुस्युःपुरुषाःश्रेष्ठारसबन्धनकारिणः ॥
स्त्रियःकुर्वन्तिकायस्यकान्तिस्त्रीणांसुखप्रदाः । नपुंसका-
स्त्ववीर्य्याःस्युरकामाःसत्त्ववर्जिताः ॥ स्त्रियःस्त्रीभ्यःप्रदा-
तव्याःक्लीबंक्लीबेप्रयोजयेत् । सर्वेभ्यःसर्वदादेयाः पुरुषा-
वीर्य्यवर्द्धनाः ॥ (भा. प्र.)

अर्थ-हीरा--जातिके भेदसे चार प्रकारका है, जैसे ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, और शूद्र, तहां ब्राह्मण हीरा (सफेद, हीरा) रसायनकार्य्यमें उत्तम और सर्वसिद्धिदायक है। क्षत्रिय हीरा (लालरङ्गका) यह सर्व व्याधि, जरा और मृत्युनाशक है। वैश्यहीरा, (पीले रङ्गका) यह, धनप्रदायक, और शरीरको दृढ करनेवाला है। और शूद्र हीरा, (काले रंगका) होता है; यह व्याधिनाशक और अवस्थास्थापक है। हीरा-स्त्री, पुरुष और नपुंसक, इन भेदोंसे तीन प्रकारका है, उत्तम गोलाकार, चमकदार, बडा रेखा और-बिन्दु करके हीन हीरेको पुरुषजातिका जानना। रेखा और बिन्दुकरके युक्त तथा, छै कोनेवाले हीरेको स्त्रीजातिका हीरा जानना। त्रिकोणयुक्त और सुदीर्घ हीरेको नपुंसकजातिका जानना। इनमें पुरुषजातिका हीरा-रस(पारा) को बाँधनेवाला और श्रेष्ठ है। स्त्रीजातिका हीरा--कान्तिजनक और स्त्रियोंको सुखकारक है। नपुंसकजातिका हीरा वीर्य्यविहीन, कामवर्जित और सत्त्वशून्य जानना। स्त्रीजातिका हीरा स्त्रियोंके, नपुंसक जातिका नपुंसकोंके और पुरुषजातिका हीरा सर्व प्राणियोंके लिये उपयोगी और वीर्य्यवर्द्धक है।

हीरकगुणाः ।

वज्रंसमीरकफपित्तगदांश्चहन्याद्वज्रोपमञ्चकुरुतेवपुरुत्तमश्रि ।
शोषक्षयभ्रमभगन्दरमेहमेदपाण्डूदरश्वयथुहारिचषड्रसाढ्यम् ।

अर्थ-हीरा--वातपित्तकफरोगनाशक, शरीरको वज्रके समान दृढ करनेवाला, लक्ष्मीवर्द्धक, षड्रसयुक्त तथा शोष, क्षय, भ्रम, भगन्दर, प्रमेह, मेद, पाण्डु, उदररोग और सूजनको दूर करनेवाला है।

अन्यच्च ।

वज्रंरसायनंचैवषड्रसैश्चयुतंसदा । देहदार्ढ्यकरंपुष्टिबलवीर्य्यविवर्द्धनम् ॥ सुवर्णसुखकृद्वातकुष्ठपित्तक्षयभ्रमान् । कफंवातंचशोफंचमेदमेहभगन्दरान् । पाण्डुरोगोदरंसद्नाशयेदितिकीर्तितम् ॥

अर्थ-हीरा-रसायन, षड्रसयुक्त, देहको दृढकरनेवाला, पुष्टि, बल और वीर्य्यवर्द्धक है, वर्णको सुन्दर करनेवाला, सुखकारक तथा वातकुष्ठ, पित्त, क्षय, भ्रम, कफ, वात, शोफ, मद, प्रमेह, भगन्दर, पाण्डुरोग, उदर और मेदनाशक है।

अशुद्धहीरकदोषाः ।

अशुद्धंकुरुतेवज्रंकुष्ठंपार्श्वव्यथांतथा । पाण्डुतापंगुरुत्वंच तस्मात्संशोध्यमारयेत् ॥ पीडांविधत्तेविविधांनराणांकुष्ठं क्षयंपाण्डुगदंचदुष्टम् । हृत्पार्श्वपीडांकुरुतेतिदुःखदामशुद्धवज्रंगुरुमात्महंत्यजेत् ॥ (रत्ना०)

अर्थ-अशोधित हीरा--कोढ, पार्श्वशूल, पाण्डु, शरीरमें ताप और भारीपनको करे है। तथा अनेक प्रकारकी पीडा, कुष्ठ, क्षय, पाण्डुरोग, हृदय और पसलीमें शूल तथा आत्माका नाश करे है।

माणिक्यनामानि ।

पद्मरागोलोहितकोमाणिक्यंशोणरत्नकम् ।

अर्थ--पद्मराग, लोहित, माणिक्य, शोणरत्नक, (रत्नराट्, रविरत्न, शोणरत्न, तरणिरत्न, शृङ्गारी, रंगमाणिक्य, तरुण, रत्ननायक, रागयुक्, रत्न, शोणोपल, सौगन्धिक, कुरुविन्द, कुरुबिल्व, लोहित, कुरुविन्द, लक्ष्मीपुष्प अरुणोपल)।

सं०	पद्मराग, माणिक्य ।	तै०	माणिक्यं ।
हिं०	मानिक, लाल ।	इं०	रुबी Ruby
बं०	माणिक ।	लै०	रुबिनस् । Rubinus
म०	माणिक ।	फा०	लालबदपूशानी ।
गु०	माण्यक, चुनी ।	अ०	लाल ।
क०	माणक ।		

माणिक्यगुणाः ।

माणिक्यंलेखनंशीतंकषायंमधुरंसरम् ।
चक्षुष्यंमंगलंदाहदुष्टग्रहविषापहम् ॥

अर्थ-मानिक-लेखन शीतल, कषेला, मधुर, सारक, नेत्रोंको हितकारी मंगलकारक तथा दाह, दुष्टग्रह और विषविनाशक है।

माणिक्यभेदवर्णाः ।

सिंहलेतुभवेद्रक्तंपद्मरागमनुत्तमम् । पीतंकाणपुरोद्भूतंकुरुविन्दमितिस्मृतम् ॥ अशोकपल्लवच्छायमिदंसौगन्धिकंविदुः । तुम्बुरुच्छाययानीलंनीलगन्धिप्रकीर्त्तितम् ॥ उत्तमंसिंहलोद्भूतंनिकृष्टन्तुम्बुरूद्भवम् । मध्यमंमध्यमंज्ञेयंमाणिक्यं क्षेत्रभेदतः ॥

अर्थ-सिंहल देशमें लाल रंगका पद्मराग नामवाला रत्न उत्पन्न होताहै यह सर्वमें श्रेष्ठ जानना । कानपुर नामवाले देशमें कुरुविन्द नामवाला माणिक उत्पन्न होताहै यह पीला और मध्यम जानना । और अशोक वृक्षके पल्लवके सदृश रंगके सौगन्धिक नामवाले माणिक्यको मध्यम जानना । तुम्बुरु देशमें उत्पन्न होनेवाले नीले रंगके माणिकको नीलगन्धि माणिक कहते हैं यह अत्यन्त निकृष्ट है अर्थात् सिंहल देशमें उत्पन्न होनेवाला माणिक अत्युत्तम, तुम्बुरु देशमें उत्पन्न होनेवाला अत्यन्त निकृष्ट और अन्य देशमें उत्पन्न होनेवाले सर्व मध्यम जानने ।

बहुमूल्यमाणिक्यगुणाः ॥

बन्धूकगुञ्जाशकलेन्द्रगोपाजपासुमास्रकसमवर्णशोभाः ।
भ्राजिष्णवोदाडिमबीजवर्णास्तथापरेकिंशुकपुष्पभासः ॥
सिन्दूरपद्मोत्पलकुंकुमानांलाक्षारसस्यापिसमानवर्णाः ।
चकोरपुंस्कोकिलसारसानांनेत्रावभासश्चभवन्तिकेचित् ॥

अर्थ-बन्धूक पुष्पके समान, गुञ्जाकी, इंद्रगोप कीडेकी और जपाके फूलके समान वर्णवाला और शोभासंयुक्त तथा चमकदार, अनारके बीजके सदृश रंगवाला माणिक होताहै । और कोई कहते हैं टेसूके फूलके समान प्रभायुक्त, सिंदूरके सदृश, लाल कमलके समान, कुंकुमके समान

लाखके समान तथा चकोर, कोकिला और सारस इनके नेत्रोंकी कांतिके समान वर्णवाले माणिक कचित् होते हैं।

अन्यच।

क्वचितुस्फाटिकोत्थानांदेशेतुवरसंज्ञके। सधर्म्माणःप्रजायन्तेस्वल्पमूल्याहितेस्मृताः॥ वर्णानुयायिनस्तेषांरध्रदेशेतथापरे। यज्जायन्तेतुतेकेचिन्मौल्यलेशमवाप्नुयुः॥ शोभाद्वितयवन्तोयेमणयः क्षतिकारकाः। उभयत्रपदंयेषां तेनचस्यात्पराभवः॥

अर्थ-कहीं तुवर देशमें स्फटिक मणिका माणिक बना लेते हैं वह स्वल्प मूल्यका होता है। रन्ध्रदेशमें उन्हींके रंगके समान दूसरा बनाते हैं वह उससेभी कम कीमतके होते हैं वह मणियें हानिकारक हैं। और जिनके दोनों ओर पद हैं उन माणिकोंसे हार होती है।

अथ तोल।

गुञ्जाफलप्रमाणस्तुदशसप्तगुञ्जकात्। पद्मरागस्तुलयतियथापूर्वमहागुणः॥ बिम्बीफलसमाकारोषड्वसुदशतोलकः। पद्मरागस्तुलयतियथोत्तरमहागुणः॥ अतःपरंप्रमाणेनमानेननचलक्ष्यते।

अर्थ-तोल-एक गुञ्जासे लेकर १७ गुंजा प्रमाणतक पद्मरागमणि तुलता है-वह बडे गुणोंकरके युक्त होतीहै। पद्मराग मणि जितनी २ तोलमें अधिक होगी उतनी २ ही उसकी कीमतभी अधिक होगी। जिसका कंदूरीके समान आकार है और ६-८-१० तोलेकी तोलमें है उसकी कीमत यथाक्रमसे अधिक जाननी। इसके उपरान्त प्रमाणसे मालूम होता है।

अथ मूल्यम्।

षड्विंशतिसहस्राण्येकमणेःपलप्रमाणस्य। कर्षत्रयस्यविंशतिरुपरिष्टात्पद्मरागस्य॥ अर्द्धपलस्यद्वादशकर्षस्यैवषट्सहस्राणि। यच्चाष्टमासिकमितंतस्यसहस्रत्रयंमौल्यम्॥ माषद्वयमितोमाषचतुष्टयंयत्स्यात्तस्यदशशतंमौल्यम्॥

यस्तुपद्मरागःसुनिर्मलः । तस्यपंचशतंमौल्यंरौप्यंकर्षस्य चेरितम्॥माषकैकमितोयस्तुपद्मरागोगुणान्वितः । शतैक-संमितंवाच्यंमौल्यंतस्यविचक्षणैः ॥ अतोन्यूनप्रमाणास्तु पद्मरागागुणोत्तराः ॥ स्वर्णाद्द्विगुणमौल्येनमूल्यंतेषांप्रक-ल्पयेत् । व्रणेमूल्यंचार्द्धंतेजोहीनस्यमूल्यमष्टांशः । अल्प-गुणोबहुदोषोमूल्यंनाप्नोतिविंशांशम् ॥

अर्थ--जो माणिक तोलमें ४ तोलेभर हो उसकी कीमत २६००० रुपये हैं। और जो माणिक ३ तोलेभर हो उसकी कीमत २००००, रुपये हैं। जो माणिक तोलमें दो तोलेभर हो उसकी कीमत १२०००, रुपये हैं। और जो तोलमें एक तोलाभर हो उसकी कीमत ६०००, रुपये हैं। और जो तोलमें आठ मासे हो उसकी कीमत ३०००, रुपये हैं और जो तोलमें चार मासेभर हो उसकी कीमत १०००, रुपये जानने जो पद्मराग तोलमें दो मासेका हो और निर्मल हो उसका मूल्य, ५००, रुपये जानने। जो पद्मराग तोलमें एक मासेका है और गुणसंयुक्त है उसका मूल्य १००, जानने। और जो तोलमें इससेभी कम है तथा गुणोंमें श्रेष्ठ है उसका मूल्य सुवर्णसे दुगुना जानना और जो उसमें व्रण हो तो आधे मूल्यका जानना। और हीन तेजका हो तो कीमत आठवें भाग जाननी। जिसमें अल्पगुण और बहुत दोष हों तो उसकी कीमत बीसवें भाग भी नहीं।

रत्नपरीक्षा ।

बालार्ककरसंस्पर्शाद्यःशिखांलोहितांवमेत् । रंजयेदाश्रयं वापिसमहागुणउच्यते।दुग्धेशतगुणेक्षिप्तोरंजयेद्यःसमंततः। वमेच्छिखांलोहितांवापद्मरागःसउत्तमः। अन्धकारेम-हाघोरेयोन्यस्तःसन्महामणिः॥ प्रकाशयतिसूर्य्याभःसः श्रेष्ठःपद्मरागकः। पद्मकोशेषुयोन्यस्तःप्रकाशयतितत्क्षणा-त् ॥ पद्मरागवरोह्येषदेवानामपिदुर्लभः । सर्वारिष्टप्रशम-नःसर्वसम्पत्तिदायकः॥ बालार्काभिमुखंकृत्वादर्पणेधारये-

न्मणिम् । तत्रकान्तिविभागेनच्छायाभागंविनिर्दिशेत्॥ अ-
प्रणश्यतिसंदेहेशिलायांपरिघर्षयेत् । घृष्टोयोत्यन्तशोभा-
वान्परिमाणंनमुञ्चति ॥ सज्ञेयोऽशुद्धजातीयोज्ञेयाश्चान्ये
विजातयः । अत्यन्तलोहितोयश्चपद्मरागःसउच्यते ॥

अर्थ-जो प्रातःकालके सूर्य्यकी किरणोंके स्पर्श करते ही लाल कान्तिको त्याग देता है और जो अपने आश्रितको प्रसन्न करे वह पद्मरागरत्न महा-गुणवाला है। जो अपनेसे सौगुने दूधमें पडा हुआ भी चारों ओरसे कान्ति प्रगट करता है और जो लाख रङ्गकी कान्तिको फैलावे है वह पद्मरागरत्न अत्यन्त उत्तम है। महाघोर अन्धकारमें रक्खा हुआ यह महारत्न यदि सूर्य्यके समान प्रकाश करे तो उत्तम है। जो माणिक मुद्रिककमलमें रखनेसे तत्काल कमलको प्रफुल्लित करदे वह उत्तम पद्मरागरत्न देवता-ओंकोभी दुर्लभ है सम्पूर्ण अरिष्टोंको शान्ति करनेवाला और सम्पूर्ण सम्प-त्तियोंको देनेवाला है। प्रातःकालके सूर्य्यके सन्मुख दर्पणमें इस मणिको धरे उसके कान्तिविभागसे छायाभागको जाने सन्देहको दूर करनेके लिये इसको पत्थरपर घिसे जो घिसनेसे अत्यन्त शोभावाला हो और परिमाणको त्याग न करे तो शुद्ध पद्मरागमणि जाने और दूसरे विजातीय पद्मराग हैं जो अत्यन्त लाल हैं वे भी पद्मराग मणि हैं।

माणिक्यगुणाः ।

सपत्नमध्येपिकृताधिवासंप्रमादवृत्तावपिवर्त्तमानम् ।
नपद्मरागस्यमहागुणस्यभर्त्तारमापत्समुपैतिकाचित् ।
दोषोपसर्गप्रभवाश्चयेतेनोपद्रवास्तंसमभिद्रवन्ति ।
गुणैःप्रमुख्यैःसकलैरुपेतोयःपद्मरागंप्रयतोबिभर्त्ति ॥

अर्थ-शत्रुओंके बीचमें रहने और प्रमाद करनेपर भी इस महागुणवाले पद्मरागमणिके प्रभावसे इसका धारण करनेवाला कभी आपत्तिको प्राप्त नहीं होता जितने दोष हैं उनमेंसे कोई भी इसको प्राप्त नहीं होता जो पद्मराग मणिको धारण करता है वह सम्पूर्ण गुणोंसे संयुक्त हो जाता है।

अन्यच्च ।

माणिक्यंमधुरंस्निग्धंवातघ्नश्चरसायनम् ।
कफघ्नंदीपनंवृष्यंभूतघ्नश्चक्षयार्तिनुत् ॥

अर्थ-माणिक्य- मधुर, स्निग्ध; वातविनाशक, रसायन, कफनाशक, दीपन, वीर्य्यवर्द्धक, भूत और क्षयरोगको दूर करे है ।

अपिच ।

माणिक्यंमधुरंस्निग्धंवातपित्तप्रणाशनम् ।
रत्नप्रयोगप्रज्ञानांरसायनकरंपरम् ।

अर्थ-माणिक-मधुर, स्निग्ध, वातपित्तनाशक, रत्नके प्रयोगमें श्रेष्ठ और रसायन है ।

अन्यच्च ।

माणिक्यंमधुरंस्निग्धंवातघ्नंचरसायनम् ।
पित्तंव्रणंनाशयतिपूर्वैरितिनिवेदितम् ।

अर्थ-माणिक-मधुर, स्निग्ध, वातनाशक, रसायन, पित्तनाशक और व्रणको दूर करे है ।

मौक्तिकनामानि ।

मौक्तिकंशुक्तिजंमुक्ताशौक्तिकेयंशशिप्रभम् ।
अम्भःसारमिन्दुरत्नंलक्ष्मीमुक्ताफलंहिमम् ॥

अर्थ-मौक्तिक, शुक्तिज, मुक्ता, शौक्तिकेय, शशिप्रभ, अम्भः-सार, इन्दुरत्न, लक्ष्मी, मुक्ताफल, हिम (शुक्तिबीज, हारी, कुवल, सौम्य, तार, तारा, मौतिक, तौतिक, शीतल, नीरज, नक्षत्र, अम्भः-सार, बिन्दुफल, मुक्तिका, शौक्तियक, शुक्तिमणि, स्वच्छ, हिमवल, सुधांशुभ, सुधांशुरत्न, लक्ष, शशिप्रिय, हैमवत, भूरुह, शौक्तिक) ।

सं०	मुक्ता ।	तै०	मोत्यालु ।
हिं०	मोती ।	इं०	पर्ल । Pearl
बं०	मुक्ता ।	लै०	मार्गरिटा Margraira
म०	मोती ।	फा०	मखारिद ।
गु०	मोती ।	अ०	लोलो ।
क०	मौक्तिक ।		

मौक्तिकगुणाः ।

मुक्ताकषायास्वाद्वीचबलपुष्टिप्रदायिनी ।
वृष्यानेत्रहिताराजयक्ष्मघ्नीविषनाशिनी ॥
स्त्रीणांकान्तिरतिकरीधारणाद्ग्रहपापनुत् । (आ. सं.)

अर्थ-मोती-कषेला, स्वादिष्ठ, बलबर्द्धक, पुष्टिकारक, वीर्यवर्द्धक, नेत्रोंको हितकारी तथा राजयक्ष्मा और विषविनाशक है। इसको धारण करनेसे-स्त्रियोंकी कान्ति और रति बढती है तथा ग्रह और पापका नाश होता है।

अन्यच्च।

मौक्तिकंसुमधुरंसुशीतलंदृष्टिरोगशमनंविषापहम्। राजयक्ष्मपरिकोपनाशनंक्षीणवीर्य्यबलपुष्टिवर्द्धनम्॥ कफपित्तक्षयध्वंसिकासश्वासाग्निमांद्यजित्। पुष्टिदंवृष्यमायुष्यंदाहघ्नंमौक्तिकंमतम्। मुक्तानांहारविधृतिर्दाहपित्तविनाशिनी। कान्तिहर्षनेत्रसुखंददातीतिप्रकीर्तितम्॥ (नि. र.)

अर्थ-मोती-मधुर, शीतल, दृष्टिरोगको दूर करनेवाला, विषविनाशक, राजयक्ष्माको हरनेवाला, क्षीणवीर्य्यवालेको बल और पुष्टि देनेवाला है। मोती-कफ, पित्त, क्षय, खांसी, श्वास, मन्दाग्नि और दाहको दूर करे है, पुष्टिकारक, वीर्य्यवर्द्धक और आयुवर्द्धक। मोतियोंका हार धारण करनेसे दाह और पित्त दूर होता है, कान्तिजनक, हर्ष बढता है और नेत्रोंमें सुख होता है।

मौक्तिकोत्पत्तिः।

शुक्तिःशंखोगजःक्रोडःफणीमत्स्यश्चदर्दुरः।
वेणुश्चाष्टौसमाख्याताःसुज्ञैर्मौक्तिकयोनयः॥

अर्थ-पंडितोंने सीप, शंख, हाथी, सूअर, सांप, मछली, मेढक और बांस यह आठ मोतीके उत्पन्न होनेके स्थान कहे हैं।

गजमौक्तिक।

यदन्तावलकुम्भसम्भवमदःपीतारुणंमंदरुक्।
धात्रीद्ग्नतयात्ररत्नमधमंकाम्बोजकुम्भोद्भवम्॥

अर्थ-गजमोती-काम्बोजदेशके बलवान् हाथियोंके गंडस्थलके निकले किंचित् लाल और पीले रंगका मोती उत्पन्न होता है उसको स्त्री, धारण करती हैं और वह अधम रत्न है।

बराहमौक्तिक।

एकाकीससुखेननिस्पृहतयायःकाननंगाहते

तस्यानादिवराहवंशजनुषःकोलस्यमूर्ध्निस्थितम् ।
कंकोलाकृतिमिन्दुवत्सधवलंदैवादवाप्नोतितत्
यस्तंधारयतेभवेत्सनिधिभिर्मर्त्योधनाधीशवत् ॥

अर्थ--वराहमोती--आदि वराह अवतारके वंशका जो सूअर इकला कुलसहित निस्पृह वनमें विहार करता है उस सूअरके मस्तकमें मोती होताहै, यह मोती कंकोलके समान आकृतिवाला, चन्द्रमाके समान धवल होता है, यह मोती प्रारब्धके ही वशसे प्राप्तहोताहै । इस मोतीके मिलनेसे दरिद्री धनाधीश होजाते हैं ।

वेणुमौक्तिक ।

मुक्ताःसन्तिकुलाचलेषुकरकाकान्त्युद्भवावंशजाः ।
कर्कन्धूफलबन्धवोनिदधतेकंठेशुशुद्धांगनाः ॥

अर्थ-वंशमोती--कुलाचल पर्वतपर उत्तमकान्तिवाले बांस होते हैं उन बांसोंमें बेरके समान मोती उत्पन्न होता है उस मोतीको स्त्रियां कण्ठमें धारण करती हैं ।

मत्स्यमौक्तिक ।

प्रोष्ठीगर्भगतस्तुमौक्तिकमणिर्गजैःसमःपाटली-
पुष्पाभःसनलक्ष्यतेभुविजनैरस्मिन्कलौपापिभिः ॥

अर्थ-मत्स्यमोती-मछलीके पेटमें होते हैं यह मोती गजमोतीके समान आकृतिवाले और पाढलके फूलके समान रंगवाले होते हैं और यह मोती इस पृथ्वीपर पापीजनोंकी दृष्टि नहीं पडते हैं ।

दर्दुरमौक्तिक ।

यन्मेघोदरसम्भवंतदवनीमप्राप्तमेवामरैर्व्योमस्थैरपनीयते विनियतंवर्षासुमुक्ताफलम् ॥ तिग्मांशोरपिदुर्निरीक्ष्यमकृशंसौदामिनीसन्निभं देवानामपि दुर्लभं न मनुजस्यैतस्य प्राप्तिःपुनः ॥

अर्थ-वर्षाऋतुमें जो मेढ़क मेघोदरसे उत्पन्न होते और पृथ्वीके ऊपर नहीं गिरते हैं उन मेढ़कोंके उदरमें मोती उत्पन्न होते हैं वह मोती पृथ्वीपर नहीं आते बीचमें देवता ग्रहण करलेते हैं वह मोती सूर्य्यके तेजसेभी अधिक

और बिजलीके समान प्रभावाले होते हैं देवताओंकोभी दुर्लभ हैं और मनुष्यकी तो क्या बात है ।

शंखमौक्तिक ।

शंखस्याच्युतहारिणोजलनिधौयेवंशजाःकम्बुका-
स्तेष्वंतःकिलमौक्तिकंभवतिवैतच्छुक्रतारानिभम् ॥
कापोताण्डसमंसुवृत्तमसकृच्छ्रीकंसरूपंलघु
स्निग्धंस्पर्शकृतंहितन्नपुनर्मर्त्यैस्तदासाद्यते ॥

अर्थ-पांचजन्य शंखके वंशके जो शंख समुद्रमें हैं उन शंखोंमें सफेद नक्षत्रके समान कान्तिवाले और कबूतरके अंडेके समान गोल मोती उत्पन्न होते हैं वह मोती झलकदार, स्निग्ध, हलके और लक्ष्मीजनक हैं तथा एकबार मनुष्योंको स्पर्श होनेपर फिर हाथ नहीं लगते हैं ।

सर्पजमौक्तिक ।

शेषस्यान्वयिनांफणासुफणिनांयन्मौक्तिकंजायते वृत्तं निर्मलमुज्ज्वलंशशिरुचिश्यामच्छविश्रीकरम् ॥ कंकोलाकृतिकोपिकोटिसुकृतैःप्राप्नोतिचेन्मानवः सस्याद्वाजिगजादिकोनृपसमोजातोपिनीचेकुले ॥ आस्तेसद्मनिचेत्सपन्नगमणिस्तेयातुधानामराः हर्तुरंध्रमवेक्षतेइतरतःकुर्यान्महाशांतिकम् ॥

अर्थ--सर्पजमौक्तिक--शेषके वंशमें जो उत्पन्न हुये सर्प उन सर्पोंके फणोंमें उत्पन्न होते हैं वह मोती गोल, निर्मल, उज्ज्वल, चंद्रमाके समान श्याम छविवाले और कंकोलके समान आकृतिवाले होते हैं वह मोती किसी करोड़ों जन्मतक पुण्य करनेवाले मनुष्यकेही हाथ लगते हैं जिस मनुष्यको यह नीचकुलमें प्राप्त होते हैं उसके गज अश्वादिककी वृद्धि होती है और वह मनुष्य राजाके समान हो जाता है और उन मोतियोंको घरमें रखनेसे राक्षसबाधा दूर होती है तथा महाशान्ति होती है ।

लक्षणम् ।

श्वेतस्निग्धमतीवबंधुरतरंस्यात्पारसीकोद्भवम् ।
रूक्षंकाञ्चनवर्णसंकरयुतंस्याद्बार्बरंमौक्तिकम् ।

शोणंतूर्मंजसंभवंविदुरतिस्निग्धंतथादोषजम्
चातुर्वर्ण्ययुतंसुलक्षणमितिश्लक्ष्णंकविश्रीकरम् ॥

अर्थ-पारसदेशके समुद्रमें उत्पन्न होनेवाला मोती-श्वेत, स्निग्ध और अत्यन्त प्रकाशमान होता है अरबके समुद्रमें उत्पन्न होनेवाला मोती-रूखा और कुछ सुवर्णके समान रङ्गवाला होता है। और अन्य समुद्रोंमें उत्पन्न होनेवाले मोती, लाल, स्निग्ध, दोषजनक, चारवर्णयुक्त, सुलक्षण और चिकने तथा लक्ष्मीको करनेवाले होते हैं।

शुक्तिमौक्तिक।

षट्स्वेतेष्वपिरुक्मिणीवजगतिख्यातिंगतारुक्मिणी
नाम्नाशुक्तिमतीवचोत्तमगुणासिंधौसमुज्जृम्भते ॥
तस्यागर्भभवन्तुकुंकुमनिभंजातीफलाकृत्तिनम्
स्थूलंस्निग्धमतीवनिर्मलतमंभूमौप्रकाशंसदा ॥

अर्थ-जो सीप रूपेके समान या सोनेके समान दीप्तिमान अत्यन्त उत्तमगुणयुक्त समुद्रमें उत्पन्न होती है उस सीपमें कुंकुमके समान प्रभायुक्त जायफलके समान रूपवाले, स्थूल, स्निग्ध, अत्यन्त निर्मल और सदैव प्रकाश करनेवाले मोती उत्पन्न होते हैं।

मौक्तिकपरीक्षा।

यद्विच्छायंमौक्तिकंव्यंगकायंशुक्तिस्पर्शंरक्ततांचापिधत्ते
मत्स्याक्षांकंरूक्षमुत्तानिम्नंनैतद्धार्यंधीमतादोषदायि ॥
नक्षत्राभंवृत्तमत्यन्तमुक्तंस्निग्धंस्थूलंनिर्व्रणंनिर्मलंच
न्यस्तंधत्तेगौरवंयत्तुलायांनिर्मौल्यंतन्मौक्तिकंसिद्धिदायि ॥

अर्थ-जो मोती कान्तिरहित, व्यंगशरीरवाला, सीपीमें लगाहुआ, लाल, मछलीकी आंखोंके समान चिह्नित, रूखा और ऊँचा नीचा होता है ऐसे दोषदायक मोतीको, बुद्धिमान् पुरुष नहीं धारण करे। जो मोती नक्षत्रके समान कान्तिवाला, गोल, स्निग्ध, स्थूल, व्रणरहित, निर्मल और तोलमें भारी होता है ऐसा मोती अमूल्य और सिद्धिदायक है।

प्रवालनामानि ।



प्रवालोंगारकमणिर्विद्रुमोंभोधिपल्लवः ।
भौमरत्नंचरत्नांगोरक्तांगश्चलतामणिः ।

अर्थ-प्रवाल, अङ्गारकमणि, विद्रुम, अम्भोधिपल्लव, भौमरत्न, रत्नांग, रक्तांग, लतामणि रक्तकन्द, रक्तकन्दल, रक्ताकार)

संस्कृतभाषामें	प्रवाल ।
हिन्दीभाषामें	मूंगा ।
वंगभाषामें	पला, मुङ्गा ।
मराठीभाषामें	पोंवळें ।
गुजरातीभाषामें	परवाला ।
कर्णाटकीभाषामें	अवलेहवत ।
तैलङ्गीभाषामें	प्रवालकं, पागडालु ।
अंग्रेजीभाषामें	रेड्कोरल । Red coral
लैटिन्भाषामें	कोरेलियंरुब्रं । Coralium rubrum
फारसीभाषामें	मिरजान्, वेखमिरजां ।
अरबीभाषामें	एहेमखुस्सुद ।

प्रवालगुणाः ।

वीर्य्यवृद्धौतथापुष्टौयस्येच्छावर्ततेपरा ।
विद्रुमंशोधितंतेनसेवनीयंगुणप्रदम् ॥

अर्थ-जिन मनुष्योंकी वीर्य्यको बढानेकी और शरीरको पुष्टि करनेकी

...च्छा वर्त्तती है उनको शुद्धप्रवाल (मूँगा) का सेवन करना चाहिये और यह प्रवाल अनेक गुणदायक है ।

अन्यच्च ।

विद्रुमंसर्वदोषघ्नंदीपनंरुचिपुष्टिदम् ।
क्षयपाण्डुज्वरश्वासकासमेदोगदाञ्जयेत् ॥

अर्थ-मूँगा-सर्वदोषनाशक, दीपन, रुचिकारक, पुष्टिदायक तथा क्षय, पाण्डु, ज्वर, श्वास, खाँसी और मेदरोगको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

प्रवालंमधुरंसाम्लंकफपित्तार्त्तिदोषऽनुत् । वीर्य्यकान्तिकरं स्त्रीणांधृतेर्मंगलदायकम् ॥ क्षयपित्तास्रकासघ्नंदीपनंपाचनं लघुविषभूतादिशमनंविद्रुमंनेत्ररोगहृत् ॥

अर्थ-मूँगा-मधुर, अम्ल, कफनाशक, पित्तनिवारक, वीर्य्यवर्द्धक, कान्तिजनक, स्त्रियोंको धारण करनेसे मङ्गलदायक, क्षयनाशक, रक्तपित्त-हारक, कासघ्न, दीपन, सारक, पाचक, हलका तथा ज्वर, विष भूतादिबाधा, उन्माद, पाण्डुरोग, प्रमेह और नेत्ररोगको दूर करे है ।

प्रवालमञ्जरीगुणाः ।

प्रवालमंजरीसार्द्राकामपुष्टिकरीनृणाम् ।
सेवितासततंदेहेवीर्य्यस्तम्भंकरोतिच ॥

अर्थ-मूँगकी कच्ची बेल-मनुष्योंके काम और पुष्टिको देनेवाली है और इसको निरंतर सेवन करनेसे वीर्य्यस्तम्भ होता है ।

प्रवालोत्पत्तिलक्षणम् ।

बालार्ककिरणारक्तासागरसलिलोद्भवाचजलतापा ।
नत्यजतिनिजांरुचिंनिकषेघृष्टापिसामृताजात्या ॥
पक्वबिंबफलच्छायंवृत्तायतमवक्रकम् । स्निग्धमव्रणकंस्थूलं प्रवालंसततधाशुभम् ॥ आररंगंजलाक्रान्तिवक्रंसूक्ष्मंसको-टरम् । रूक्षंकृष्णंलघुश्वेतंप्रवालमशुभंत्यजेत् ॥

अर्थ-समुद्रमें बालसूर्य्यके किरणोंके समान लाल मूँगेकी बेल उत्पन्न होती है वह बेल कसोटीपर घिसनेसे भी अपनी कांति और रङ्गको नहीं

छोडती तथा अमृतके समान गुणकारी है। पक्की कन्दूरीके फलके समान लाल, गोल, लम्बे, सरल, स्निग्ध, व्रणरहित और स्थूल इन सात लक्षणोंसे युक्त मूँगे उत्तम होते हैं। पीतलके समान रङ्गवाले, पानीके समान रङ्गवाले, वक्र (टेढे) सूक्ष्म, छिद्रयुक्त, रूक्ष, कृष्ण, हलके और श्वेत मूँगे त्याज्य हैं।

मरकतनामानि ।

गारुत्मतंमरकतमश्मगर्भंहरिन्मणिः ।

अर्थ-गारुत्मत, मरकत, अश्मगर्भ, हरिन्मणि (गारुत्मक, गरुडाश्म, मरक्त, राजनील, गरुडांकित, रौहिणेय, सौवर्ण, गरुडोद्गीर्ण, बुधरत्न, अश्मगर्भज, गरलारि, वापबोल, गारुड, गरुडोत्तीर्ण वाप्रबोल)

सं०	मरकत।	ते०	नीलम्।
हिं०	पन्ना।	इं०	इमरील्ड। Emerold
बं०	पान्ना।	लै०	स्मेरेग्डस्। Smaragdus
म०	पाचूरल।	फा०	जुमुर्रुइप।
गु०	लीलुंपानुं।	अ०	जमर्रुद।
क०	पाचि पच्चे।		

मरकत गुणाः ।

पाचिकाशीतलारुच्यारसकालेमधुःस्मृता ।
पुष्टिकृद्विषहावृष्याभूतबाधाम्लपित्तहा ॥

अर्थ-पन्ना-शीतल, रुचिकारक, मधुररसान्वित, पुष्टिकारक, विषनाशक, वीर्यवर्द्धक तथा भूतबाधा और अम्लपित्तको दूर करे है।

अन्यच्च ।

ज्वरच्छर्दिविषश्वासंसन्तापाग्निमांद्यनुत् ।
दुर्नामपाण्डुशोफघ्नंतार्क्ष्यमोजोविवर्द्धनम् ॥

अर्थ—पन्ना--ज्वर, वमन, विष, श्वास, सन्ताप, मन्दाग्नि, बवासीर, पाण्डुरोग और सूजनको दूर करे है और ओजको बढानेवाला है।

मरकतमणिपरीक्षा ।

स्वच्छंगुरुस्निग्धगात्रंचमार्दवसमेतमव्यंगंबहुरंगम् । लघुहितकारीमरकतंबिभृयात् । शर्करिलंरूक्षंमलिनम् । लघुहीनोपयुंजीन्ति कल्मषंत्रासयुतंविकृतांगंमरकतममरोपिनोपयुंजीत

अर्थ-स्वच्छ, भारी, स्निग्ध, मृदु, अव्यंग और बहुरंगवाला ऐसा पन्ना
मनुष्योंको धारण करना चाहिये । खरखरा, रूखा,, मलिन, हलका
कान्तिहीन, कल्मषयुक्त, त्रासयुक्त और विकृतांग धारण नहीं करे ।

अपिच ।

हरिद्वर्णगुरुस्निग्धंस्फुटरश्मिरयंशुभम् । भासुरंभासनंता-
र्क्ष्यगात्रसमंसुसंमतम् ॥ कपिलंकर्कशंनीलंपाण्डुकृष्णंच
लाघवम् ॥ चिपटंविकृतंकृष्णंरूक्षंतार्क्ष्यंनशस्यते।(रत्नाकर)

अर्थ-हरेरंगवाला-भारी, स्निग्ध, कान्तिवान्, तेजस्वी, दीप्तियुक्त और
गरुडके समान रूपवाला ऐसा पन्ना उत्तम है । कपिलवर्ण, खरखरा,
नीला, पाण्डुवर्ण, कृष्ण, हलका, चिपट, विकृत और रूखा ऐसा पन्ना
उत्तम नहीं होता ।

पुष्परागनामानि ।

पुष्परागोजीवरत्नंपीतस्फटिकइत्यपि ।

अर्थ-पुष्पराग, जीवरत्न, पीतस्फटिक, (पुष्पराज, मंजुमणि, वाचस्प-
तिवल्लभ, पीत, पीतरक्त, पीताश्मा, गुरुरत्न, पीतमणि)

सं० पुष्पराग ।
हिं० पुखराज ।
बं० पुष्पराग ।
म० पुष्कराज ।
गु० पुखराज, पीलु रत्न ।
क० पुष्पराग ।
तै० पुष्परागम् ।
अं० टोपाज । Topag
लै० टोपाजीयो । Topagio

पुष्पराग गुणाः ।

पुष्परागंविषच्छर्दिकफवाताग्निमांद्यजित् ।
दाहकुष्ठार्शशमनंदीपनंलघुपाचनम् ॥

अर्थ-पुखराज--विष, वमन, कफ, वात, मन्दाग्नि, दाह, कुष्ठ, और
बवासीरको दूर करेहै, दीपन, हलका और पाचक है ।

अन्यच्च ।

पुष्परागोम्लःशीतःस्याद्वातलोग्निश्चदीपनः ।
वृष्योवयःस्थापकश्चप्रज्ञाबुद्धिविवर्द्धनः ॥
वातनाशकरः प्रोक्तोमुनिभिःपारदर्शिभिः ।

अर्थ-पुष्पराज--अम्ल, शीतल, बादी, अग्निप्रदीपक, वीर्य्यवर्द्धक, अवस्था स्थापक प्रज्ञाजनक, बुद्धिवर्द्धक और वातविनाशक है।

पुष्परागलक्षणम्।

पुष्परागंगुरुस्निग्धंस्वच्छंस्थूलंसमंमृदु।
कर्णिकारप्रसूनाभंमसृणंशुभमष्टधा॥

अर्थ--पुखराज-भारी, चिकना, निर्मळ, स्थूल, गोल, नरम, अमलतासके फूलके समान पीलेरंगका और मसृण इन आठ प्रकारसे पुखराज उत्तम जानना।

अन्यच्च।

कृष्णंविद्धाङ्कितंव्यंगंधवलंमालिनंलघु। विच्छायंशर्करा भागंपुष्परागंसदोषलम्॥ स्वच्छायपीतगुरुगात्रसुरंगं शुद्धं स्निग्धंचनिर्मलमतीवसुवृत्तशीलम्। यत्पुष्परागम मलंकलयेदमुष्य पुष्णातिकीर्तिमतिशौर्यसुखायुरर्थान्। अयंखलुपुष्परागोजात्यस्तथाचार्यपरीक्षकैरुक्तः।

अर्थ-जो पुष्पराग-काला, विद्ध, अंकित, व्यंग (झाईयुक्त) सफेद मलिन, हलका, बेरंग और खरखरा ऐसा पुखराज दोषवाला होता है और जो दीप्तिवान्, पीला, भारी, उत्तमरंगदार, शुद्ध, स्निग्ध, निर्मल और उत्तम गोल ऐसा पुखराज श्रेष्ठ होताहै यह पुखराज कीर्ति, शौर्य, सुख आयु अर्थको देवैहै।

नीलमणिनामानि।

नीलस्तुशौरिरत्नस्यान्नीलाश्मानीलरत्नकः।
नीलोपलस्तृणग्राहीमहानीलःसुनीलकः॥

संस्कृतभाषामें	नील, शौरिरत्न, नीलाश्मा, नीलरत्नक, नीलोपल, तृणग्राही, महानील, सुनीलक (मसार)
हिन्दीभाषामें	नीलमणि।
वंगभाषामें	नीलमणि।
मराठीभाषामें	नीळमणि।
गुजरातीभाषामें	नीलम्, काळुंनंग।
कर्णाटकीभाषामें	नील।

तैलङ्गीभाषामें नीलं ।
अंग्रेजीभाषामें सेफायर । Saffire
लैटिन्भाषामें सेफायर्स । Saffirus

नीलगुणाः ।

श्वासकासहरंवृष्यंत्रिदोषघ्नंक्षुदीपनम् ।
विषमज्वरदुर्नामपापघ्नंनीलमीरितम् ॥

अर्थ-नीलम्-श्वास, खांसी, त्रिदोष, विषमज्वर, बवासीर और पापनाशक है, वीर्य्यवर्द्धक और अग्निप्रदीपक है ।

अन्यच्च ।

नीलःसतिक्तकोष्णश्चकफपित्तानिलापहः ।
योदधातिशरीरेचसौरिमर्दनदोभवेत् ॥

अर्थ-नीलम्-कडवा, गरम, कफपित्तनाशक और इसको शरीरमें धारण करनेसे शनिग्रहकी बाधा दूर होती है ।

नीलस्य वर्णभेदाः ।

सितशोणपीतकृष्णच्छायानीलाःक्रमादिमेकथिताः ।
विप्रादिवर्णसिद्ध्यैधारणमस्यापिवज्रवत्फलदम् ॥

अर्थ-सफेद, लाल, पीला और काला इन भेदोंसे नीलम् चार प्रकारका है। सफेद रङ्गका ब्राह्मण, लालरङ्गका क्षत्रिय, पीले रङ्गका वैश्य और काले रङ्गका शूद्र होता है । नीलम् अङ्गमें धारण करनेसे हीरेके समान फल देता है ।

गोमेदनामानि ।

पिंगस्फटिकोगोमेदोऽगस्तिसत्त्वंतमोमणिः ।

अर्थ-पिङ्गस्फटिक, गोमेद, अगस्तिसत्व, तमोमणि (गोमेदक, पीतरक्तक, बाहुरत्न, स्वर्भानव)

सं० गोमेदक ।
हिं० गोमेदमणि ।
बं० गोमेद ।
म० गोमेदमणि ।
गु० गोमूत्र जेवुं पीळारंगनुं ।
क० गोमेद ।
तै० गोमेदकं ।
इं० ओनिक्स । Onyx
लै० ओनिक्स । Onyx

गोमेदक गुणाः ।

गोमेदकोम्लश्चोष्णश्चवातकोपविकारनुत ।
दीपनःपाचनश्चैवधृतोयंपापनाशनः ॥

अर्थ-गोमेदमणि-अम्ल, उष्ण, वातके कोपको शान्ति करनेवाला दीपन, पाचक और इसको शरीरमें धारण करनेसे पापका नाश होता है।

अन्यच्च ।

गोमेदंकफपित्तघ्नंक्षयंपाण्डुक्षयंकरम् ।
दीपनंपाचनंरुच्यंत्वच्यंबुद्धिप्रबोधनम् ॥

अर्थ-गोमेदमणि-कफपित्तनाशक, क्षयनाशक, पाण्डुरोगहारक, दीपन, पाचक, रुचिकारी, त्वचाको हितकारी और बुद्धिप्रबोधक है।

अपिच ।

गोमेदोम्लःपाचकश्चचक्षुष्योष्णोग्निदीपनः ।
लघुर्वातस्यकासस्यनाशकारीप्रकीर्त्तितः ॥

अर्थ-गोमेदमणि-अम्ल, पाचक, नेत्रोंको हितकारी, गरम, अग्निदीपक हलकी तथा वात और खाँसीको दूर करे है।

गोमेदपरीक्षा ।

हिमालयेवासिन्धौवागोमेदमणिसम्भवः । स्वच्छकान्तिर्गुरुःस्निग्धोवर्णाढ्योदीप्तिमानपि ॥ वलक्षःपिञ्जरोधन्योगोमेदइतिकीर्त्तितः । चतुर्धाजातिभेदस्तुगोमेदोऽपिप्रशस्यते ॥ आपीतोवैश्यब्राह्मणः शुक्लवर्णः स्यात्क्षत्रियोरक्तउच्यते । आपीतोवैश्यजातिस्तुशूद्रस्तुनीलउच्यते ॥ छायाचतुर्विधाश्वेतारक्तापीताऽसितातथा । गुरुप्रबाढ्यः सितवर्णरूपः स्निग्धोमृदुर्वा करोतिलक्ष्मीतिमहापुराणः ॥ स्वच्छस्तुगोमेदमणिर्धृतोयंकरोतिलक्ष्मीं धनधान्यवृद्धिम् । लघुर्विरूपोऽतिखरोन्यमानःस्नेहोपलिप्तोमलिनःखरोऽपि । करोतिगोमेदमणिर्विनाशंसम्पत्तिभोगावलवीर्य्यराशेः । येदोषाहीरकेज्ञेयास्तेगोमेदमणावपि ॥ स्फटिकेनैवकर्त्तव्या परीक्षावह्नितःकार्य्याशाणेवाबहुकोविदैः ।

न्तिगोमेदप्रातिरूपिणम् ॥ शुद्धस्यगोमेदमणेस्तुमूल्यंसुव-र्णतोद्वैगुणमाहुरेके । अन्येतथाविद्रुमतुल्यमूल्यंतथापरेचा-मरतुल्यमाहुः ॥ चतुर्विधानामेषान्तुधारणंपरिसम्मतम् ।

(भोजराजकृतयुक्तिकल्पतरुः)

अर्थ--गोमेदमणि-हिमालय और सिन्धुमें होती है । स्वच्छकान्तिवाली, भारी, चिकनी, अच्छेवर्णवाली, दीप्तिमान्, गोल और पिंजरयुक्त ऐसी गोमेदमणि उत्तम होती है, जातिके भेदसे गोमेदमणि चार प्रकारकी है ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र तहां ब्राह्मण सफेद रङ्गकी, क्षत्रिय लाल रङ्गकी, वैश्य पीले रङ्गकी और शूद्र नीले रङ्गकी होती है । इसी प्रकार चार तरहकी छाया होती है सफेद, लाल, पीली और काली । जो भारी, सफेदरङ्गकी, चिकनी तथा अत्यन्त पुरानी और स्वच्छ हो ऐसी गोमेद-मणिको धारण करनेसे लक्ष्मी और धनधान्यकी वृद्धि होती है । जो हलकी, विरूप, खरदरी, स्नेहसे लिपटी हुईसी और मलीन है उस गोमेदमणिको धारण करनेसे--सम्पत्ति, भोग, बल और वीर्य्यका नाश होता है। जो दोष हीरेमें होते हैं वह दोष गोमेद मणिमेंभी हैं । इसकी परीक्षा अग्नि और शानसे करनी चाहिये स्फटिक मणिकोभी गोमेदमणि बनालेते हैं । शुद्ध गोमेदमणिका मूल्य सुवर्णसे दूना है और कोई मूँगेके बराबर कहते हैं । कोई अमररत्नके समान कहते हैं । इसका चार प्रकारका धारण करना शुभ है ।

वैदूर्यनामानि ।

वैदूर्य्यराष्ट्रकंकेतुरत्नंमेघखराङ्कुरम् ।

अर्थ--वैदूर्य्य, राष्ट्रक, केतुरत्न, मेघखरांकुर (बालवायज, बालसूर्य्य, बालसूर्यक, कैतव, प्रावृष्य, अभ्ररोह, शराब्दांकुर, विदूररत्न विदूरज केतुग्रहवल्लभ) ।

संस्कृतभाषामें	वैदूर्य्य ।
हिन्दीभाषामें	वैडूर्य्य, वैदूर्य, लहसुनिया ।
वङ्गभाषामें	बैदूर्य्य ।
मराठीभाषामें	वैडूर्य्यरत्न ।
गुजरातीभाषामें	माजरानी आँख जेवुं लसणियो ।
कर्णाटकीभाषामें	वैडूर्य्यं ।

तैलिंगीभाषामें वैडुर्य्य ।
अंग्रेजीभाषामें केट्सआइ । Catseye

अस्य गुणाः ।

वैडूर्य्यमुष्णमम्लञ्चकफमारुतनाशनम् ।
गुल्मादिदोषशमनंभूषितञ्चशुभावहम् ॥ (रा. नि.)

अर्थ-वैडूर्य्य-गरम, अम्ल, कल्याणकारक तथा कफ, वात और गुल्मादि दोषोंको दूर करे है । एवं इसको धारण करनेसे शुभ फलको देता है।

अन्यच्च ।

वैदूर्य्यंरक्तपित्तघ्नंप्रज्ञायुर्बलवर्द्धनम् ।
पित्तप्रधानरोगघ्नंदीपनंगुल्मनाशनम् ॥

अर्थ-वैदूर्य्यमणि--रक्तपित्तनाशक, प्रज्ञा, आयु और बलवर्द्धक, पित्तप्रधानरोगनाशक, दीपन और गुल्मको दूर करे है ।

अपिच ।

वैडूर्य्यमुष्णमम्लंस्यादग्निदंचरसायनम् ।
शूलगुल्मोदरकफवातनाशकरंमतम् ॥
अन्येगुणाहीरकवद्विज्ञेयाविबुधैःकिल ।

अर्थ--वैदूर्य्यमणि--गरम, अम्ल, अग्निप्रदीपक, रसायन तथा शूल गुल्म उदररोग, कफ और वातका नाश करे है और गुण हीरेके समान जानने ।

उत्तमवैदूर्य्यलक्षणम् ।

वैदूर्य्यंश्यामशुभ्राभंसमस्वच्छंगुरुस्फुटम् ।
भ्रमच्छुभ्रान्तरीयेण गर्भितंशुभमीरितम् ॥

अर्थ-जो वैदूर्य्यरत्न (लहसुनिया)-श्याम और शुभ्र तथा निर्मल कांतिवाला हो, समगोल, स्वच्छ, भारी, स्फुट, भीतरसे जिसमेंसे धवल और चन्द्रमाके समान श्याम कांति हो ऐसा वैदूर्य्य उत्तम होता है ।

इति रत्नानि ।

अथोपरत्नानि ।

वैक्रान्तनामानि ।

वैक्रान्तञ्चैवविक्रान्तंनीलवज्रंकुवज्रकम् ।
गोनासःक्षुद्रकुलिशंजीर्णवज्रञ्चगोनसम् ॥

अर्थ-वैक्रान्त, विक्रान्त, नीलवज्र, कुवज्रक, गोनास, क्षुद्रकुलिश, जीर्णवज्र, गोनस ।

वैक्रान्तगुणाः ।

वैक्रान्तस्तुत्रिदोषघ्नःषड्सोदेहदार्ढ्यकृत् ।
पाण्डूदरज्वरश्वासकासक्षयप्रमेहनुत् ॥

अर्थ-वैक्रान्तमणि--त्रिदोषनाशक, षड्सान्वित, देहको दृढ करनेवाला तथा पाण्डुरोग, उदररोग, ज्वर, श्वास, खांसी, क्षय और प्रमेहको दूर करै है।

अन्यच्च ।

वैक्रान्तोवज्रसदृशोदेहलोहकरोमतः ।
विषघ्नोरसराजश्चज्वरकुष्ठक्षयप्रणुत् ॥

अर्थ-वैक्रान्तमणिके गुण हीरेके समान हैं, देहको दृढ करनेवाली, पारेके विषको हरनेवाली तथा ज्वर, कुष्ठ और क्षयरोगको दूर करै है ।

सूर्य्यकान्तनामानि ।

दीप्तोपलःसूर्य्यकान्तोज्वलनाश्माग्निगर्भकः।

अर्थ-दीप्तोपल, सूर्यकान्त, ज्वलनाश्मा, अग्निगर्भक (रविकान्त, अर्कोपल, तापन, तपनमणि, सूर्य्याश्मा, दहनोपम, सूर्य्यमणि) ।

संस्कृतभाषामें	सूर्य्यकान्त ।
हिन्दीभाषामें	आतिशीशीशा, सूर्यकान्त ।
वंगभाषामें	आतसपाथर ।
मराठीभाषामें	सूर्य्यकान्तमणि ।
गुजरातीभाषामें	अगनचशमांनो काच ।
अंग्रेजीभाषामें	मेग्निफाइंग ग्लास । Magnifying glass

सूर्यकान्तगुणाः ।

सूर्य्यकान्तोभवेदुष्णोनिर्मलश्चरसायनः ।
वातश्लेष्महरोमेध्यःपूजनाद्रवितुष्टिदः ॥ (रा. नि.)

अर्थ-सूर्य्यकान्तमणि--गरम, निर्मल, रसायन, वात और कफनाशक, मेधाजनक और इसका पूजन करनेसे सूर्य संतुष्ट होता है ।

अन्यच्च ।

सूर्य्यकान्तस्त्रिदोषघ्नोमेध्योष्णश्चरसायनः ।

कफवातहरःप्रोक्तःपूर्वैरायुर्विदैर्जनैः ॥ (रत्नाकर)

अर्थ-सूर्य्यकान्तमणि-त्रिदोषनाशक, मेधाजनक, रसायन, कफ और वातको दूर करे है।

शुद्धःस्निग्धोनिर्व्रणोनिस्तुषस्तुयोनिर्घृष्टोव्योमनैर्मल्यमेति।
यःसूर्य्यांशुस्पर्शनिर्व्यूतवह्निर्जात्यासोयंचक्षतेसूर्य्यकान्तः॥

अर्थ-जो चिकना, व्रणरहित, तुषरहित, घिसनेसे आकाशके समान निर्मल होजाय और धूपमें रखनेसे जिसमें अग्नि बलउठे ऐसा सूर्य्यकान्त (आतिशीशीशा) उत्तम होता है।

चन्द्रकांतनामानि ।

चन्द्रकान्तःसोममणिःसिताश्माप्रस्तरोपलः।

अर्थ--चन्द्रकान्त, सोममणि, सिताश्मा प्रस्तरोपल (चान्द्र, चन्द्रमणि, चन्द्रोपल, इन्दुकान्त, चन्द्राश्मा, संप्लत्रोपल, शीताश्मा, चन्द्रिकाद्राव शशिकान्त) ।

संस्कृतभाषामें	चन्द्रकान्त ।
हिन्दीभाषामें	चन्द्रकान्त ।
वंगभाषामें	चन्द्रकान्त ।
मराठीभाषामें	चन्द्रकांतमणि ।
कर्णाटकीभाषामें	चन्द्रकांतः ।
तैलिङ्गीभाषामें	चन्द्रकांत ।

चन्द्रकान्तमणिगुणाः ।

चन्द्रकान्तमणिःशीतःस्निग्धःस्वच्छःशिवप्रियः।
अस्रदाहग्रहालक्ष्मीविनाशनोनिरन्तरम् ॥

अर्थ -चन्द्रकांतमणि--शीतल, स्निग्ध, स्वच्छ, शिवप्रिय तथा रुधिरविकार, दाह, ग्रह और अलक्ष्मीका नाश करे है।

चन्द्रकान्तोद्भवजलगुणाः ।

चन्द्रकान्तोद्भवंरूक्षंशीतंदाहविनाशनम्।

अर्थ--चंद्रकांतमणिका जल--रूखा, शीतल और दाहको दूर करेहै।

चन्द्रकान्तस्य स्वरूपम् ।

पूर्णेन्दुकरसंस्पर्शादमृतंस्रवतिक्षणात्।

चन्द्रकान्तंतदाख्यातंदुर्लभंतत्कलौयुगे ॥ (यु० क०)

अर्थ-चन्द्रमाकी किरणोंके स्पर्शसे जिसमें अमृत (जल) टपकता है उसीको चन्द्रकान्तमणि कहते हैं यह कलियुगमें अत्यन्त दुर्लभ है ।

स्फटिकनामानि ।

शैवःशूकःश्वेतरत्नंस्फटिकोनिस्तुषोपलम् ।

अर्थ-शैव, शूक, श्वेतरत्न, स्फटिक, निस्तुषोपल (स्फाटिक, स्फाटक, स्फटिकात्मा, स्फाटीक, स्फाटिकोपल, भासुर, स्फटिकोपल, शालिपिष्ट धौतशिल, सितोपल, विमलमणि, निर्मलोपल, स्वच्छ, स्वच्छ, स्वच्छमणि, अमरत्न, निस्तुषरत्न, शिवप्रिय) ।

सं०	स्फटिक ।	मु०	फाटकमणि ।
हिं०	स्फाटक, फटिकमणि ।	क०	स्फटिक ।
वं०	फटिक् ।	तै०	स्फटिक ।
म०	स्फटीक ।	इं०	क्रिष्टल ।

स्फटिकगुणाः ।

स्फटिकःसमवीर्य्यःस्यात्पित्तदाहार्तिशोषनुत् ।
तस्याक्षमालाजपतोधत्तेकोटिगुणंफलम् ॥ (नि. र.)

अर्थ-स्फटिकमणि-समवीर्य्य तथा पित्त, दाहकी वेदना और शोषको दूर करै है इसकी मालाके जपनेसे कोटिगुण फल होता है ।

पेरोजनामानि ।

पेरोजंहरिताश्माचभस्माङ्गंहरितंद्विधा ।

अर्थ-पेरोज, हरिताश्म, भस्माङ्ग और हरित इन भेदोंसे दो प्रकारका है

संस्कृतभाषामें	पेरोज ।
हिन्दीभाषामें	फिरोजा ।
वंगभाषामें	उपरत्नविशेष ।
मराठीभाषामें	पेरोज ।
गुजरातीभाषामें	पीरोजो ।
कर्णाटकीभाषामें	पेरोज ।
अंग्रेजीभाषामें	टरकोइझ । Tirkois
लैटिन्भाषामें	टरचेसीयस टरचीना । Terchesius Turchina

फारसीभाषामें फिरोजा।
अरबीभाषामें फिरोजज।

अस्य गुणाः।

पेरोजंतुकषायंस्यान्मधुरंदीपनंपरम्।
स्थावरंजङ्गमञ्चैवसंयोगाच्चतथाविषम्॥
तत्सर्वंनाशयेच्छीघ्रंशूलंभूतादिदोषजम्।

अर्थ—फिरोजा-कषेला, मधुर, दीपन और किसीके संयोगसे स्थावर तथा जंगम विषको दूर करे है और भूतादि दोषोंसे उत्पन्न हुये शूलका नाश करे है।

काचनामानि।

काचःकृत्रिमरत्नञ्चपिंगाणोमुकुरोपिच।

अर्थ-काच, कृत्रिमरत्न, पिंगाण, मुकुर।

संस्कृतभाषामें	काच	अंग्रेजीभाषामें	ग्लास। Glass
हिन्दीभाषामें	काँच, कच्च।	लैटिन्भाषामें	ग्लेसम्। Glesum
वंगभाषामें	काच।	फारसीभाषामें	आबूगीनां।
मराठीभाषामें	कांच।	अरबीभाषामें	जुजाजूं।
गुजरातीभाषामें	काच		

अस्या गुणाः।

काचातुसारकालघ्वीव्रणनेत्रहितावहा।
लेखनीशूलहृत्प्रोक्तावैद्यशास्त्रविशारदैः॥ (नि. र.)

अर्थ-काँच-सारक, हलका, व्रण और नेत्रोंको हितकारी, लेखन और शूलनाशक है।

दुग्धपाषाणनामानि।

दुग्धपाषाणिकाक्षीरीमाधवीमेदसन्निभा।

अर्थ-दुग्धपाषाणिका, क्षीरी, माधवी, मेदसन्निभा (दुग्धपाषाण, दुग्धपाषाणक, दुग्धाश्मा, गोमेदसन्निभ, वज्राभ, दीप्तिक, दुग्धी, क्षीरक्षव, सौध)

संस्कृतभाषामें दुग्धपाषाण।
हिन्दीभाषामें शिरगोळा।

वंगभाषामें शिरगोला ।
मराठीभाषामें शिरगोळा ।
गुजरातीभाषामें दुधियो पाणो ।
कर्णाटकीभाषामें रङ्गवालियहरेल्ल ।

अस्य गुणाः ।

दुग्धपाषाणकोरुच्यईषदुष्णोज्वरापहः ।
पित्तहृद्रोगशूलघ्नःकासाध्मानविनाशनः ॥

अर्थ--दुग्धपाषाण -रुचिकारक, ईषदुष्ण, ज्वरनाशक, तथा पित्त, हृदय-रोग, शूल, खाँसी और आध्मानको दूर करे है ।

इति श्रीशालिग्रामनिघण्टुभूषणे रत्नोपरत्नवर्गःसमाप्तः ॥ ८ ॥

अथ विषवर्गः ।



विषनामानि ।

काकोलोगरलःक्ष्वेडोविषंस्याद्दारदोपिच ।
सौराष्ट्रिकःशौक्लकेयोब्रह्मपुत्रःप्रदीपनः ॥

अर्थ -काकोल, गरल, क्ष्वेड, विष, दारद, सौराष्ट्रिक, शौक्लकेय, ब्रह्मपुत्र, प्रदीपन (आहेय, अमृत, गरद, कालकूट, कसाकूल, हारिद्र, रक्तशृङ्गिक, नील, गर, घोर, हालाहल, हलाहल, शृङ्गी, भुगर, जाङ्गल, तीक्ष्ण, रस, रसायन, जंगुल, जांगुल, वत्सनाभ, जीवनाघात किषल, प्राणहर)

संस्कृतभाषामें वत्सनाभ, अमृत ।
हिन्दीभाषामें वचनाग, मीठाविष ।
वंगभाषामें काटविष, अमृतविष ।
मराठीभाषामें बचनाग ।
गुजरातीभाषामें छिंगडियो, बछनाग ।
कर्णाटकीभाषामें वशनवी ।
तैलिङ्गीभाषामें नाभी ।
अंग्रेजीभाषामें एकोनाईट । ACcnite
लैटिन्भाषामें एकोनाइटंफेरोक्स । Aconitumferox
फारसीभाषामें जहर ।
अरबीभाषामें विष ।

वत्सनाभविषगुणाः ।

वत्सनाभोतिमधुरःसोष्णोवातकफापहः ।
कण्ठरुक्सन्निपातघ्नः पित्तसन्तापकारकः ॥ (रा. नि.)

अर्थ -(वत्सनाभ मीठा)--अत्यन्त मधुर, गरम, वातकफनाशक तथा कण्ठरोग और सन्निपातको दूर करे है । पित्त और संतापको उत्पन्न करे है।

अन्यच्च ।

विषंप्राणहरंप्रोक्तंव्यवायिचविकाशिच ॥
आग्नेयंवातकफहृद्योगवाहिमदावहम् ॥

अर्थ--विष -प्राणनाशक, व्यवायी, विकाशी, आग्नेय. वातकफनाशक योगवाही और मदकारक है ।

अपिच ।

रूक्षमुष्णंतथातीक्ष्णंसूक्ष्ममाशुव्यवायिच । विकाशिविशदश्चैवलघ्वपाकिचतेदश ॥ तद्रौक्ष्यात्कोपयेद्वायुमौष्ण्यात्पित्तंसशोणितम्।तैक्ष्ण्यान्मतिंमोहयतिमर्म्मबन्धान्भिनत्तिच ॥ शरीरावयवान्सौक्ष्म्यात्प्रविशेद्विकरोतिच। आशुत्वादाशुवत्प्रोक्तंव्यवायात्प्रकृतिंहरेत । विकाशित्वादीपयतिदोषान्धातून्मलानपि ।अतिरिच्यतेवैशद्याद्दुश्चिकित्स्यश्चलाघवात् ॥ दुर्जरंचाविपाकित्वात्तस्मात्क्लेशयतेचिरम्

अर्थ--रूक्ष, उष्ण, तीक्ष्ण, सूक्ष्म, आशु व्यवायी, विकाशी, विशद, लघु और अपाकी यह दश गुण विषमें रहते हैं । तहाँ रूक्षगुणसे वायु प्रकुपित होती है । उष्णगुणसे पित्त और रक्त कुपित होते हैं । तीक्ष्णगुणसे मतिको मोहता और मर्मबन्धनको छिन्न करता है । सूक्ष्मगुणसे सर्व शरीरके अवयवोंमें हठसे प्रवेश करके क्रियाओंका प्रकाश करता है ! आशुगुणसे अत्यन्त शीघ्र अपने कार्योंको प्रकाशित करता है । व्यवायिगुणसे प्रकृतिको नष्टकरता है । विकाशिगुणसे शारीरिक वातादि दोष, रसादि धातु और मूत्रादि मलके समूहको फैलाता है । विशदगुणके द्वारा अत्यन्त दस्तोंको लाता है, लघुगुणसे अतिशय दुश्चिकित्स्य जानना और अपाकि गुणसे दुर्जर तथा तज्जन्य बहुत कालपर्यन्त क्लेश होता है ।

अन्यच्च ।

विषरसायनंबल्यंवातश्लेष्मविकारनुत् । कटुतिक्तंकषायञ्च मदकारिसुखप्रदम् ॥ व्यवायिचशिरोद्वाहिकुष्ठवातास्रनाशनम् । अग्निमांद्यश्वासकासप्लीहोदरभगन्दरम् ॥गुल्मपाण्डुव्रणार्शांसिनाशयेद्विधिसेवितम् ॥

अर्थ- विधिसेवित विष-रसायन, बलकारक तथा वात, श्लेष्म, कुष्ठ, वातरक्त, अग्निमांद्य, श्वास, खाँसी प्लीहा, उदररोग, भगन्दर, गुल्म, पाण्डु और व्रणका नाश करे है तथा चरपरा, कडवा, कषेला, मदकारी, सुखकारी और व्यवायी है ।

अपिच ।

विषंव्रणहरंप्रोक्तंव्यवायिचविकाशिच ।आग्नेयंवातकफहृद्योगवाहिमदावहम् ॥ तदेवयुक्तियुक्तन्तुप्राणदायिरसायनम् । पथ्याशिनांत्रिदोषघ्नंबृंहणंवीर्य्यवर्द्धनम् ।

अर्थ-विष-व्यवायी, विकाशी, योगवाही, मादक है, इसीको युक्तिपूर्वक सेवन करनेसे बलदायक, रसायन, पुष्टिकारक, वीर्य्यवर्द्धक तथा व्रण, कफ और त्रिदोषजनित रोग नष्ट होते हैं ।

विषस्य प्रकारभेदाः ।

वत्सनाभःसहारिद्रःसक्तुकश्चप्रदीपनः । सौराष्ट्रिकःशृङ्गकश्चकालकूटस्तथैवच॥हालाहलोब्रह्मपुत्रोविषभेदाअमीनव ।

अर्थ--वत्सनाभ, हारिद्र, सक्तुक, प्रदीपन, सौराष्ट्रिक, शृङ्गक, कालकूट, हलाहल और ब्रह्मपुत्र इन भेदोंसे विष नव प्रकारका है ।

१ अथ वत्सनाभस्य स्वरूपम् ।

सिन्धुवारसदृक्पत्रोवत्सनाभ्याकृतिस्तथा । यत्पार्श्वेनतरोर्वृद्धिर्वत्सनाभःसभाषितः ॥

अर्थ -संभालुके पत्तोंकी समान बछडेकी नाभिक आकृतिवाला और जिसके निकट दूसरा वृक्ष नहीं जमे उसको वत्सनाभ विष कहते हैं ।

२ अथ हारिद्रस्य स्वरूपम् ।

हरिद्रातुल्यमूलोयोहारिद्रःसउदाहृतः ।

अर्थ--हलदीकी समान जिसका मूल हो उसको हारिद्र विष जानना ।

३ अथ सक्तुकस्य स्वरूपम् ।

यद्ग्रन्थिःसक्तुकेनैवपूर्णमध्यःससक्तुकः ।

अर्थ- जिसकी गांठ सत्तूके सदृश बीचमेंसे भरी हुई हो उसको सक्तुक विष जानना ।

४ अथ प्रदीपनस्य स्वरूपम् ।

वर्णतोलोहितोयःस्याद्दीप्तिमान्दहनप्रभः ।
महादाहकरःपूर्वैःकथितःसप्रदीपनः ॥

अर्थ--जिसका वर्ण लाल अत्यन्त दीप्तिमान और अग्निके समान प्रभा वाला उसको महादाह करनेवाला प्रदीपन विष जानना ।

५ अथ सौराष्ट्रिकस्य स्वरूपम् ।

सुराष्ट्रविषयेयःस्यात्ससौराष्ट्रिकउच्यते ।

अर्थ--जो सोरठ देशमें उत्पन्न होता है उसको सौराष्ट्रिक विष कहते हैं।

६ अथ शृङ्गिकस्य स्वरूपम् ।

यस्मिन्गोशृङ्गकेबद्धेदुग्धंभवतिलोहितम् ।
सशृङ्गिकइतिप्रोक्तोद्रव्यतत्त्वविशारदैः ॥

अर्थ--जिसको गायके सींगसे बांधनेसे गायका दूध लाल उतरने लगे उसको वैद्योंने शृङ्गिक (सिंगिया विष) कहा है ।

७ अथ कालकूटस्य स्वरूपम् ।

देवासुररणेदेवैर्हतस्यपृथुमालिनः । दैत्यस्यरुधिराजातस्तरुरश्वत्थसन्निभः ॥ निर्य्यासःकालकूटोऽस्यमुनिभिःपरिकीर्त्तितः । सोहिच्छत्रेशृङ्गबेरेकोङ्कणेमलयेभवेत् ॥

अर्थ- देव असुरोंके संग्राममें देवोंने जब पृथुमालि दैत्यको मारा तब उस दैत्यके रुधिरसे, पीपलके समान वृक्ष उत्पन्न हुआ इस वृक्षके गोंदको मुनि कालकूट विष कहते हैं यह अहिच्छत्र, शृङ्गबेर, कोंकण और मलयाचलमें उत्पन्न होता है ।

८ अथ हालाहलस्य स्वरूपम् ।

गोस्तनाभफलोगुच्छस्तालपत्रच्छदस्तथा । तेजसायस्यदह्यन्तेसमीपस्थाद्रुमादयः ॥ असौहालाहलोज्ञेयःकिष्किन्धायांहिमालये । दक्षिणाब्धितटेदेशेकोङ्कणेपिचजायते ॥

अर्थ-दाखोंके गुच्छोंके समान फल और तालके वृक्षोंके समान वृक्ष होता है जिसके तेजसे समीपके वृक्ष जलजाते हैं उसको हलाहल विष जानना यह किष्किन्धापुर, हिमालय पर्वत, दक्षिण समुद्रके तटके देशोंमें और कोंकणदेशमें उत्पन्न होता है।

९ अथ ब्रह्मपुत्रस्य स्वरूपम्।

वर्णतःकपिलोयःस्यात्तथाभवतिसारकः।
ब्रह्मपुत्रःसविज्ञेयोजायतेमलयाचले॥

अर्थ-जिसका रंग कपिलवर्ण और सारभी जिसका कपिलवर्ण होता है उसको ब्रह्मपुत्र विष जानना यह मलयाचल पर्वतमें होता है।

विषस्य वर्णभेदाः।

ब्राह्मणःपाण्डुरस्तेषुक्षत्रियोलोहितप्रभः।वैश्यःपीतोऽसितःशूद्रोविषउक्तश्चतुर्विधः। रसायनेविषंविप्रंक्षत्रियंदेहपुष्टये वैश्यंकुष्ठविनाशायशूद्रंदद्याद्वधायच॥ (भा. प्र.)

अर्थ-पाण्डु रंगका विष ब्राह्मण, लाल रंगका क्षत्रिय, पीले रंगका वैश्य और काले रंगका विष शूद्र होता है। रसायनमें ब्राह्मणविष, देहको पुष्टि करनेके लिये क्षत्रियविष, कुष्ठको दूर करनेके लिये वैश्य और मारणके लिये शूद्र जातिका विष देना चाहिये।

अन्यच्च।

स्थावरंजंगमश्चैवद्विविधंविषमुच्यते।
दशाधिष्ठानमाद्यन्तुद्वितीयंषोडशाश्रयम्॥

अर्थ-स्थावर और जंगम इन भेदोंसे विष दो प्रकारका है तहां स्थावर विष १० प्रकार और जंगम विष १६ प्रकार जानना।

स्थावरविषस्यदशप्रकारा यथा।

मूलंपत्रंफलंपुष्पंत्वक्क्षीरंसारमेवच।
निर्य्यासोधातवःकन्दःस्थावरस्याश्रयादश॥

अर्थ-स्थावरविष--वृक्षादिकके मूल, पत्र, फल, पुष्प, छाल, दूध, सार, गोंद, धातु और कन्द इन दश स्थानोंमें रहता है। अमृतादिक विषको स्थावरविष कहते हैं।

स्थावरविषस्य भक्षणदोषाः ।

स्थावरंतुज्वरंहिक्कांदन्तहर्षंगलग्रहम् ।
फेनवम्यरुचिश्वासमूर्च्छाश्चजनयेद्विषम् ॥

अर्थ-स्थावरविष-ज्वर, हिचकी, दन्तहर्ष, गलवेदना, मुखमें झागोंका आना, वमन, अरुचि, श्वास और मूर्च्छाको उत्पन्न करता है।

जङ्गमविषस्य स्वरूपम् ।

सर्प्पाःकीटोन्दुरालूतावृश्चिकागलगोधिकाः । जलौकामत्स्यमण्डूकाःशलभाःसकृकण्टकाः ॥ श्वसिंहव्याघ्रगोमायुतरक्षुनकुलादयः।दंष्ट्रिणोऽमीविषंतेषांदंष्ट्रोत्थंजंगमंमतम्।

अर्थ--साँप, कीट, उन्दुर (मूसा), लूता (मकडी), वृश्चिक (बिच्छू), गलगोधिका, जलौका (जोंक), मत्स्य (मछली), मण्डूक (मेंडक), शलभ (पतंग), कृकलास, कुक्कुर, सिंह, व्याघ्र, शृगाल, तेन्दुआ और नौला इन सब जन्तुओंके दाँतोंके विषको जंगम विष कहते हैं।

जंगमविषस्य षोडशप्रकाराः ।

दृष्टिर्निश्वासोदंष्ट्राश्चनखमूत्रमलानिच ।
शुक्रंलालामुखंस्पर्शंसदंशंस्त्रावमार्दितम् ॥
गुदास्थिपित्तशूकानिदशषड्जंगमाश्रयाः ।

अर्थ-जंगमविष-सर्पादिक विषैली जन्तुओंकी दृष्टि, निश्वास, दाँत, नख, मूत्र, मल, शुक्र, लार, मुख, स्पर्श, दाँत, स्राव, गुददेश, अस्थि, पित्त और शूक इन १६ स्थानोंमें होताहै ।

जंगमविषस्य भक्षणदोषाः ।

निद्रांतन्द्रांक्लमंदाहंसपाकंलोमहर्षणम् ।
शोकश्चैवातिसारश्चजनयेज्जंगमंविषम् ॥

अर्थ -जंगमविष-निद्रा, तन्द्रा, क्लान्ति, दाह, पाक, लोमहर्षण, शोक और अतिसारको उत्पन्न करता है ।

शोधितविषगुणाः ।

येदुर्गुणाविषेऽशुद्धेतेस्युर्हीनाविशोधनात् ।
तस्माद्विषंप्रयोगेषुशोधयित्वाप्रयोजयेत् ॥

अर्थ-जो दुर्गुण अर्थात् दोष अशुद्ध विषमें हैं वे दोष शोधितविषमें नहीं हैं इस कारण विषको शोधनपूर्वक औषधिमें लेना चाहिये ।

अथ विषसेवनप्रकारः ।

नानारसौषधैर्येतुदुष्टायांतीहनोगदाः । तेनश्यन्तिविषदत्ते शीघ्रंवातकफोद्भवाः॥ शरद्ग्रीष्मवसन्तेषुवर्षासुचप्रदापयेत्। चातुर्मास्येहरेद्रोगान्कुष्ठलूतादिकानपि । दातव्यंसर्वरोगेषु घृताशिनिहिताशिनि ॥ क्षीराशिनिप्रयोक्तव्यंरसायनरते नरः । ब्रह्मचर्य्यविधानंहिविषकल्पेसमाचरेत् ॥ पथ्येस्वस्थमनाभूत्वातदासिद्धिर्नसंशयः ।आचार्येणतुभोक्तव्यंशिष्यप्रत्ययकारकम् ॥ विषेशुद्धिर्हितदपिमात्रयानान्यथाभवत् । सर्वरोगप्रशमनंदृष्टिपुष्टिकरंविषम् ॥

अर्थ-जो वातकफोद्भवरोग नानाप्रकारकी औषधियोंको सेवन करनेसे नहीं दूर होते वे रोग विषके सेवन करनेसे दूर होजाते हैं सर्वऋतुओंमें विषमात्राके प्रमाण विधिपूर्वक देना चाहिये । चार महीनेमें विष, कुष्ठ और लूतादि रोगोंको दूर करता है और यह सर्वरोगोंमें देना चाहिये । रसायनमें रत ऐसे मनुष्योंको दूध, घी और हितकारक अन्नका सेवन करना और ब्रह्मचर्य्यको धारण कर अनन्तर विषका सेवन करे इसप्रकार करनेसे रोगोंका नाश होता है । शिष्य और रोगीके निश्चयके लिये प्रथम विष वैद्यको भक्षण करना चाहिये । शोधित विष मात्राके अनुसार सर्वरोगोंमें देना हितकारक है । विष दृष्टिको स्वच्छ करनेवाला और शरीरको पुष्टि करनेवाला है ।

विषमात्राप्रमाणम् ।

एकाष्टकंभवेद्यावदभ्यस्तंतिलमात्रया । सर्वरोगहरंनॄणांजायतेशोधितंविषम् ॥

अर्थ-शोधित विष प्रथम आठ दिनपर्यन्त तिलप्रमाण देना तदनन्तर एक तिल बढावे इस प्रकार करनेसे सर्वप्रकारकी व्याधियोंका नाश होता है ।

अन्यच्च ।

प्रथमेसार्षपीमात्राद्वितीयेसार्षपद्वयम्। तृतीयेचचतुर्थेचपंचमेदित्रसेतथा ॥ षष्ठेचसप्तमेचैवक्रमवृद्ध्याविवर्द्धयेत् ।सप्त-

सर्षपमात्रेणप्रथमंसप्तकंनयेत् ॥ एवंमात्राविषंदेयंतृतीयेस-
प्तकेक्रमात् । वृद्ध्याहन्यात्प्रदातव्यंचतुर्थेसप्तकेतथा ॥ ए-
सप्तसमायातेपरांमात्रांभिषग्वरैः । स्थिरीकुर्य्याद्यथेच्छन्तु
ततस्त्यागन्तुकारयेत् । सेवनक्रमहान्यातुविषकल्पस्तुई-
रितः । एवंमात्रासेवनंस्याद्गुञ्जामात्रंतुकुष्ठवान् ॥ एवंमा-
ष्टपर्यन्तंपरामात्राधिकामता । विधिनामात्रयाकालेभवे-
त्पथ्याशिनांनृणाम् ॥

अर्थ--विष-पहिले दिन एक सरसोंकी बराबर, दूसरे दिन दो सरसों समान, तीसरे दिन तीन सरसोंकी समान अर्थात् सातदिनपर्य्यन्त एक सरसों रोज रोज बढाता जाय और दूसरे सप्ताहमेंभी सात सरसों प्र- देता रहै, तीसरे सप्ताहमें फिर क्रमसे एक २ सरसों अधिक बढा दे इसप्र- तीसरे सप्ताहमें क्रमसे विषकी मात्रा देनी चाहिये। चौथे सप्ताहमें क्र- वृद्धि कर देनी चाहिये । इसप्रकार सात सप्ताह बीतनेपर श्रेष्ठ वैद्योंने वि- परम मात्रा कही है यथेच्छ स्थिर करके फिर इसका त्याग कर दे अ- कमती करे । यह विषकल्पके सेवन करनेकी विधि है। इस प्रकार कुष्ठ- एक गुंजा प्रमाण खाय आठ गुंजापर्य्यन्त इसकी परम मात्रा है। त्रिवि- मात्रा सेवन करता हुआ पथ्यसे रहै ।

विषसेवनमें पथ्यपदार्थ ।

घृतंक्षीरंसितांक्षौद्रंगोधूमांस्तण्डुलांस्तथा । मरीचंसैन्धवं-
द्राक्षांमधुरंपानकंहिमम् ॥ ब्रह्मचर्य्यंहिमदशहिमंकालंहिमं-
जलम् । विषस्यसेवकोमर्त्योभजेदतिविचक्षणः ॥

अर्थ--विष सेवन करनेवाले मनुष्योंको घी, दूध, मधु, गेहूं, चा- कालीमिरच, सैंधानमक, दाख, मधुर और शीतल, पानक, ब्रह्मचर्य- शीतलदेश, शीतकाल और शीतल जल सेवन करना चाहिये।

मात्राधिकभक्षणस्यपरीक्षा ।

मात्राधिकंयदामर्त्यःप्रमादाद्भक्षयेद्विषम् । अष्टौवेगास्त-
तेनजायंतेतस्यदेहिनः ॥ रोमाञ्चःप्रथमवेगेद्वितीयेवेपथुर्भ-
वेत् । वेगेतृतीयेदाहःस्याच्चतुर्थेपतनंभवेत् ॥ फेनस्तुपंचमे-

वेगेषष्ठेवैकल्यमेवच । जडतासप्तमेवेगेमरणंचाष्टमेभवेत् ॥ विषवेगानितिज्ञात्वामंत्रतंत्रैर्विनाशयेत् । यावन्नाष्टमवेगन्तु संप्राप्नोतिहिमानवः ॥

अर्थ--जिस समय जो मनुष्य प्रमादके वश होकर मात्रासे अधिक विषको भक्षण करलेता है उस मनुष्यके उसीसमय आठ वेग उत्पन्न होते हैं तहां प्रथम वेगमें रोमाञ्च और दूसरेमें कम्प, तीसरे वेगमें दाह, चौथे वेगमें शरीरका गिरना, पांचवें वेगमें मुखमें झागोंका आजाना,छठे वेगमें विकलता, सातवें वेगमे जडता और आठवें वेगमें मरण होता है। इसप्रकार विषके वेगोंको जानकर जबतक आठवाँ वेग न आवे तबतक मंत्र और तंत्रोंसे नाशकरे।

बिषको उतारना।

अतिमात्रंयदाभुक्तंवमनंतस्यकारयेत् । दद्यात्तावदजादुग्धं यावद्भ्रान्तिर्नजायते ॥ अजादुग्धंयदाकोष्ठेस्थिरीभवतिदेहिनः । विषवेगंततोजीर्णजानीयात्कुशलोभिषक् ॥

अर्थ--जो कोई मात्रास अधिक विषको खाले उसको वमन करावे जबतक वमन न हो तबतक बकरीका दूध पिलादे जिस समय बकरीका दूध कोठेमें स्थिर होजाय उसी समय विषका वेग उतर जायगा।

अन्यच्च।

विषंहन्याद्रसःपीतोरजनीमेघनादयोः ।
सर्पाक्षिटंकणंवापिघृतेनविषहृत्परम् ॥

अर्थ-हलदी और चौलाई तथा सर्पाक्षि अथवा सुहागा और घी देनेसे विषका नाश होता है।

अन्यच्च।

पुत्रजीवकमज्जावापीतानिम्बकवारिणा ।
विषवेगंनिहन्त्येववृष्टिर्दावानलंयथा ॥

अर्थ-जियापोता वृक्षकी मज्जाको नींबूके रसमें उबालकर पीनेसे विषवेगका नाश होता है जैसे वृष्टिसे दावानलका नाश होता है।

अतिमात्रंयदाभुक्तंतदाज्यंटंकणंपिबेत् ।

विषसवेगतोनाशमाशुप्राप्नोतिनिश्चितम् ॥

अर्थ-जिस समय जो कोई मनुष्य मात्रासे अधिक विषको भक्षण करे उस मनुष्यको उसी समय सुहागा और घी मिलाकर पिलानेसे वर्त्तमान विषके वेगका शीघ्रही नाश हो जायगा ।

आखुपाषाणनामानि ।

शतमल्लेतुमल्लःस्याद्गौरीपाषाणकस्तथा ।
आखुपाषाणकश्चैवलोहशंकरकारकः ॥

अर्थ-शतमल्ल, मल्ल, गौरीपाषाण, आखुपाषाण, लोहशंकरकारक ।

संस्कृतभाषामें	आखुपाषाण ।
हिन्दीभाषामें	शोमलखार, शंखिया ।
मराठीभाषामें	सोमल, शंखिया ।
गुजरातीभाषामें	शोमल, शोमलखार, शंखियो ।
अंग्रेजीभाषामें	ओक्साइड ऑफ आर्सेनिक Oxide of Arsenic
लेटिन्भाषामें	ओक्सिड आर्सेनीकम् । Oxidum Arsenicum
फारसीभाषामें	मिगवमूष ।
अरबीभाषामें	संबुल (खा) र ।

अस्य गुणाः ।

खनिजंविषमाख्यातंदाहवांतिविरेककृत ।
मात्राधिकंयदाखादेत्तदामृत्युमवाप्नुयात् ॥

अर्थ-खनिजविष-दाह, वमन और विरेचनको करनेवाला है मात्रासे अधिक खानेसे मृत्युको देवे है ।

आखुपाषाणकः स्निग्धःपारदस्यनियामकः । लोहभेदकरश्चैववीर्य्यकृत्कांतिवर्द्धनः ॥ त्रिदोषसर्वव्याधीनांनाशकः परिकीर्त्तितः।अशुद्धःसतुविज्ञेयःसप्तधातुविनाशकृत् ॥ दाहंचित्तभ्रमंचैवलालास्रावंतथामृतम् । अनेकवेदनाश्चैवव्याधिंतृषांतथा ॥ करोत्यतोमूर्खहस्तेनदातव्यःकदाचन । तत्समीपेनैववाच्यः प्राणघातकरोह्यसौ ॥

अर्थ-शंखिया-स्निग्ध, पारेको बांधनेवाला, लोहभेदक, वीर्य्यवर्द्धक,

कान्तिवर्द्धक तथा त्रिदोष और सर्वव्याधिनाशक है। अशुद्धशंखिया--सप्तधातुनाशक तथा दाह, चित्तभ्रम, लालास्राव, मृति, अनेक प्रकारकी पीडा, बहुव्याधि और तृषाको उत्पन्न करे है यह मूर्खके हाथमें कभीभी नहीं देना और न कहना तथा उसके समीपभी न रखना क्योंकि यह प्राणनाशक है।

अथ उपविषनामानि ।

अर्कक्षीरंस्नुहीक्षीरंतथैवकलहारिका ।
करवीरोऽथधुस्तूरःपञ्चोपविषाःस्मृताः ॥ (अमरकोश)

अर्थ-आकका दूध, सेंहुडका दूध, कलिहारी, कनेर और धतूरा यह पांच उपविष हैं ।

अन्यच्च ।

अर्कक्षीरंस्नुहीक्षीरंलाङ्गलीकरवीरकः ।
गुञ्जाहिफेनोधुस्तूरःसप्तोपविषजातयः ॥ (भा.प्र.)

अर्थ-आकका दूध, सेहुण्डका दूध, कलिहारी, कनेर, घुघुची, अफीम और धतूरा यह सात उपविषकी जाति हैं ।

अपिच ।

स्नुह्यर्कलाङ्गलीगुञ्जाहयारिविषमुष्टिकः ।
जैपालोन्मत्ताहिफेनंनवोपविषजातयः ॥

अर्थ--सेहुण्ड, आक, कलिहारी, घुघुची, कनेर, कुचिला, जमालगोटा धतूरा और अफीम यह ९ उपविषकी जाति हैं।

इति श्रीशालिग्रामवैश्यविरचिते शालिग्रामनिघण्टुभूषणे विषोपविषवर्गःसमाप्तः ॥ ९ ॥

अथ धान्यवर्गः ।

धान्यनामानि ।

धान्यंभोग्यंचभोगार्हमन्नाद्यंजीवसाधनम् ।

अर्थ-धान्य, भोग्य, भोगार्ह, अन्न, आद्य, जीवसाधन (स्तम्बकरी, व्रीहि)

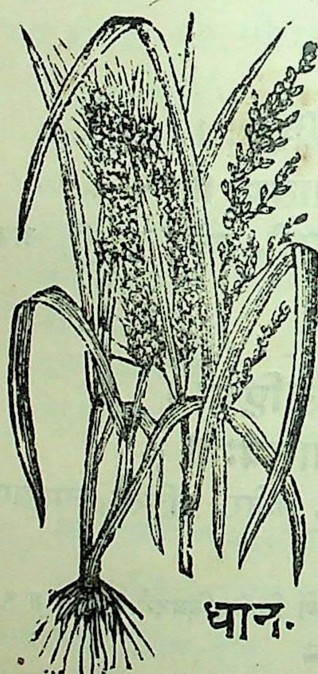
धान्यभेदाः ।

शालिधान्यंव्रीहिधान्यंशुकधान्यंतृतीयकम् । शिम्बीधान्यंक्षुद्रधान्यमित्युक्तंधान्यपंचकम्॥ शालयोरक्तशाल्याद्या-

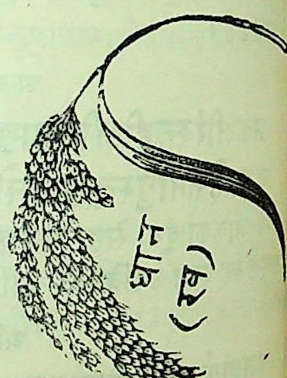
व्रीहयःषष्टिकादयः । यवादिकंशूकधान्यंमुद्गाद्यंशिम्बिधान्यकम् ॥ कंग्वादिकंक्षुद्रधान्यंतृणधान्यंचतत्स्मृतम् ॥

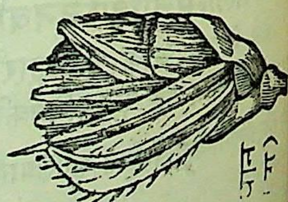
अर्थ-शालिधान्य, व्रीहिधान्य, शूकधान्य, शिम्बीधान्य और क्षुद्रधान्य इन भेदोंसे धान्य पांच प्रकारके कहे हैं। तहां रक्तशालिआदि शालिधान्य, साठीआदि व्रीहिधान्य, जौको आदिले शूकधान्य, मूँगको आदिले शिम्बीधान्य और कंगुनीको आदिले धान्योंको शूकधान्य कहते हैं और क्षुद्रधान्यको तृणधान्य कहते हैं।

शालिधान्यनामानि ।



धान.





रक्तशालिः सकलमःपाण्डुकःशकुनाहृतः । सुगन्धकःकर्दमकोमहाशालिश्चदूषकः ॥ पुष्पाण्डकः पुण्डरीकस्तथामहिषमस्तकः । दीर्घशूकःकाञ्चनकोहायनोलोध्रपुष्पकः ॥ इत्याद्याः शालयः सन्ति बहवो बहुदेशजाः । ग्रन्थविस्तारभीतेस्तेसमस्तानात्रभाषिताः ॥

अर्थ--रक्तशालि, कलम, पाण्डुक, शकुनाहृत, सुगन्धक, कर्दमक, महाशालि, दूषक, पुष्पाण्डक, पुण्डरीक, महिषमस्तक, दीर्घशूक, काञ्चनक और लोध्रपुष्पक इत्यादि अनेक प्रकारके शालिधान्य अनेक देशोंमें उत्पन्न होते हैं वह सब ग्रन्थ बढनेके भयसे यहां नहीं कहे ।

संस्कृतभाषामें	शालि, तण्डुल ।
हिन्दीभाषामें	धान, शालिधान, चावल ।
बंगभाषामें	शालिधान्य, चाउल ।
मराठीभाषामें	साळी, भात ।
गुजरातीभाषामें	शाल्य, चोखा ।
कर्णाटकीभाषामें	नेलु ।
तैलिंगीभाषामें	धान्यमु, बीयमु ।
अंग्रेजीभाषामें	राईस । Rice
लैटिन्भाषामें	ओरिझासेटाईवा । Oryza sativa
फारसीभाषामें	विरंज ।
अरबीभाषामें	उरज ।

शालिधान्यलक्षणम् ।

कण्डनेनाविनाशुक्लाहैमन्ताःशालयःस्मृताः

अर्थ-जोविना छरे फटके सफेद हों उनको शालिधान कहते हैं और शालिधान हेमन्तऋतुमें होते हैं इस कारण इनका हैमन्तिक नामभी है ।

शालिधान्यगुणाः ।

शालयोमधुराः स्निग्धाबल्याबद्धाल्पवर्च्चसः ।
कषायालघवोरुच्याःस्वर्य्यावृष्याश्चबृंहणाः ॥
अल्पानिलकफाःशीताःपित्तघ्नामूत्रलास्तथा ।

अर्थ-शालिधान-मधुर, स्निग्ध, बलकारक, अल्पप्रमाणमलरोधक, कषेले, हलके, रुचिकारक, स्वरको शुद्ध करनेवाले, वीर्य्यवर्धक, पुष्टिजनक, कुछेक वातकफको कुपित करनेवाले, शीतल, पित्तनाशक और मूत्रजनक हैं ।

अपिच ।

शालयोदग्धभूजाताःकषायालघुपाकिनः । सृष्टमूत्रपुरीषाश्चरूक्षाःश्लेष्मापकर्षणाः । कैदारावातपित्तघ्नागुरवःकफशुक्रलाः । कषायाःस्वल्पवर्चस्कामधुराश्चबलावहाः ॥स्थलजाःस्वादवःपित्तकफघ्नावातपित्तदाः । किञ्चित्तिक्ताःकषायाश्चविपाकेकटुकाअपि । वापितामधुरावृष्याबल्याःपित्तपणाशनाः॥श्लेष्मलाश्चाल्पवर्च्चस्काःकषायागुरवोहिमाः ।

वापितभ्योगुणैःकिञ्चिद्धीनाःप्रोक्ताअवापिताः ॥ रोपितास्तुनवावृष्याःपुराणालघवःस्मृताः । तेभ्यस्तुरोपिताभूयःशीघ्रपाकागुणाधिकाः ॥ छिन्नरूढाहिमारूक्षाबल्याःपित्तकफापहाः । बद्धविट्काःकषायाश्चलघवश्चाल्पतिक्तकाः ॥

अर्थ-जलीहुई पृथ्वीपें उत्पन्न हुये शालिधान-कषेले, लघुपाकी, मल और मूत्रको करनेवाले, रूखे और कफको शोखनेवाले हैं । खेतमें उत्पन्न हुये शालिधान-वातपित्तनाशक, भारी, कफकारी, शुक्रजनक, कषेले, अल्पमल वर्द्धक, मधुर और बलवर्द्धक हैं । स्थलमें उत्पन्न हुये शालिधान-स्वादिष्ठ, पित्तकफनाशक, वातपित्तवर्द्धक, किञ्चित्कडवे, कषेले और पाकमें कटु हैं। वापितधान्य-मधुर, वीर्य्यवर्द्धक, बलकारक, पित्तनाशक, कफकारक, अल्प-मलवर्द्धक, कषेले, भारी और शीतल हैं । अवापितधान्य वापितधान्यसे किञ्चित् हीन गुणवाले हैं । रोपितनवीनधान्य-वीर्य्यवर्द्धक हैं और वही पुराने होनेपर हलके होजाते हैं । और २ धानोंकी अपेक्षा रोपितधान्य अधिकगुण-वाले और शीघ्रपाकी हैं । छिन्नरूढशालिधान्य-शीतल, रूखे, बलकारक, पित्तकफनाशक, मलरोधक, कषेले, हलके और किञ्चित् कडवे हैं ।

रक्तशालिगुणाः ।

रक्तशालिर्वरस्तेषुबल्योवर्ण्यस्त्रिदोषजित् । चक्षुष्योमूत्रलःस्वर्य्यःशुक्रलस्तृड्ज्वरापहः । विषव्रणश्वासकासदाहहृद्-हृत्पुष्टिदःतस्मादल्पान्तरगुणाःशालयोमहदादयः (भा.प्र.)

अर्थ-लालशालिधान्य (दाऊदखानी चावल)-सब धान्योंमें उत्तम हैं, बलवर्द्धक, शरीरकें रंगको उज्ज्वल करनेवाले, त्रिदोषनाशक, नेत्रोंको हित-कारी, मूत्रजनक, स्वरको श्रेष्ठ करनेवाले, शुक्रजनक, तृषानिवारक ज्वरहा-रक, विषविनाशक, व्रणनाशक, श्वासको दूर करनेवाले, खाँसीको हरनेवाले, दादको दूर करनेवाले और पुष्टिको देनेवाले हैं । महाशालि आदिके गुण रक्तशालिधानकी अपेक्षा कम हैं ।

महाशालिधान्यगुणाः ।

राजान्नशालिकास्निग्धामधुराचाग्निदीपनी।बलकान्तिधातुपुष्यकारकाचत्रिदोषहा ॥ लघ्वीगुणैरभ्यधिकाज्ञेयाचैवोत्तरोत्तरम्।श्वेतारक्तास्तथाकृष्णाज्ञेयाश्चगुणदर्शिभिः ॥ (रत्नाकरे)

अर्थ-राजशालि (हंसराज, बाँसमती इत्यादि)-स्निग्ध, मधुर, अग्नि-दीपक, बलकारक, कान्तिजनक, धातुवर्द्धक, पथ्य, त्रिदोषनाश और हलके हैं । यें सफेद, लाल और काले इन भेदोंसे तीन प्रकारके हैं इन तीनोंके गुण एक २ से अधिक हैं ।

अन्यच ।

रक्तशालिर्महाशालिःकलमाषष्टिकापरा । खञ्जरीटापसाहीचजीरकान्याकपिञ्जला ॥ सौगन्धीशूकलाचान्याबिलवासीकचोरका ।गरुडारुक्मवन्तीचकलमान्यातथापरा ॥ बिल्वजामागधीपीताताअष्टादशशालयः ।

अर्थ-रक्तशालि, महाशालि, कलमा, षष्टिका, खंजरीटा, पसाही, जीरका, कपिञ्जला, सौगन्धी, शूकला, बिलवासी, कचोरका, गरुडा, रुक्मवन्ती, कलमा, बिल्वजा, मागधी और पीता इन भेदोंसे शालिधान्न अठारह प्रकारके हैं ।

तेषांगुणाः ।

रक्तशालिस्त्रिदोषघ्नीचक्षुष्यामूत्ररोगहा । महाशालिगुरुर्वृष्याचक्षुष्याबलवर्द्धिनी ॥ शीतागुरुस्त्रिदोषघ्नीमधुरापरषष्टिका । जीरकावातपित्तघ्नीकलमाश्लेष्मपित्तहा ॥ कपिञ्जलाश्लेष्मलास्यान्मागधीकफवातला । बिलवासीगुरुश्चापि पित्तघ्नीशुक्रवर्द्धिनी॥ शूकलापित्तवातघ्नीकचोरापित्तनाशिनीगरुडान्याचवातघ्नीपित्तमूत्रगदापहा ॥ रुक्मवन्तीलघुरुचिबलपुष्टिकरीमता। कलमान्यालघुःपथ्यावातश्लेष्मविवर्द्धिनी॥बिल्वजामागधीपीतासामान्यास्तागुणागुणैः॥ रुचिकृद्बलकृन्मूत्रदोषघ्नीचश्रमापहा ॥ दग्धग्रामाचलेजाताःशालयोलघुपाकिनः । सुपथ्याबद्धविण्मूत्रारूक्षाःश्लेष्मापकर्षिणः ॥ केदारप्रभवावृक्षावातपित्तविनाशिनः । रक्तपित्तविकारघ्नावातलाःकफकारकाः ॥ देशेदेशेविभिन्ना-

निनामानिपरिलक्षयेत् । समागुणैश्चसर्वास्तान्भूमिभागोद्भवान्विदुः॥शालयश्छिन्नरोहाश्चमूत्रलावातलाहिमाः॥ हारीत

अर्थ-रक्तशालिधान-त्रिदोषनाशक, नेत्रोंको हितकारी और मूत्ररोगको दूर करे हैं महाशालिधान-भारी, वीर्यवर्द्धक, नेत्रोंको हितकारी और बलकारी हैं। षष्टिक शालिधान-शीतल, भारी, त्रिदोषनाशक और मधुर हैं। जीरक शालिधान-वातपित्तनाशक हैं। कलमीधान-कफ और पित्तको दूर करे हैं। कपिञ्जल शालिधान-कफकारक हैं। मागधी शालिधान-कफ और वातको करे हैं। बिलवासी शालिधान-भारी, पित्तनाशक और शुक्रवर्द्धक हैं। शूकला शालिधान-पित्तवातनाशक हैं। कचोरा शालिधान-पित्तनाशक हैं। गरुड शालिधान-वातविनाशक तथा पित्त और मूत्ररोगके दूर करे हैं रुक्मवन्ती शालिधान-हलके रुचिकारक, बलवर्द्धक और पुष्टिकारक हैं। दूसरे प्रकारके कलमीधान-हलके, पथ्य और वातकफवर्द्धक हैं। बिल्वजा, मागधी और पीता यह तीनों प्रकारके शालिधान गुण और दोषोंमें समान हैं। रुचिकारक, बलकारक, मूत्रदोष नाशक और श्रमरोगहारक है। दग्धग्राम और पर्वतमें उपजे शालिधान-लघुपाकी हैं, पथ्य, मलमूत्ररोक, रूखे, और कफको सोखनेवाले हैं सेतमें उपजे शालिधान-रूखे वातपित्तनाशक, रक्तपित्तविनाशक, वातवर्द्धक और कफकारक हैं। इन सब शालिधानोंके नाम देश २ में भिन्न हैं। सर्व प्रकारके शालिधान सर्वप्रकारकी भूमिके भागोंमें उत्पन्न हुये गुणोंमें समान हैं। छिन्नरोहशालिधान-मूत्रजनक, वातकारक और शीतल हैं।

व्रीहिधान्यलक्षणम् ।

वार्षिकाःकण्डिताःशुक्लाव्रीहयश्चिरपाकिनः । कृष्णव्रीहिः पाटलश्चकुक्कुटाण्डकइत्यपि ॥ शालामुखोजतुमुखइत्याद्या व्रीहयःस्मृताः । कृष्णव्रीहिःसविज्ञेयोयःकृष्णतुषतण्डुलः॥ पाटलःपाटलापुष्पवर्णकोव्रीहिरुच्यते।कुक्कुटांडाकृतिर्व्रीहिः कुक्कुटाण्डकउच्यते ॥ शालामुखःकृष्णशूकःकृष्णतण्डुल उच्यते । लाक्षावर्णमुखंयस्यज्ञेयोजतुमुखस्तुसः॥ व्रीहयःकथिताःपाकेमधुरावीर्य्यतोहिमाः। अल्पाभिष्य-

न्दिनोबद्धवर्चस्काःषष्टिकैःसमाः ॥ कृष्णव्रीहिर्वरस्तेषां तस्मादल्पगुणाःपरे । (भा. प्र.)

अर्थ-व्रीहिधान—वर्षाकालमें पकतेहैं यह धान छरनेमें सफेद और बहुत देरमें पकतेहैं व्रीहिधान अनेक प्रकारके होतेहैं जैसे कृष्णव्रीहि, पाटल कुक्कुटाण्डाकृति, शालामुख और जतुमुख इत्यादि । जिसके तुष और चावल काले रंगके होंय उसको कृष्णव्रीहि कहतेहैं । जिसका रंग पाडलके फूलके समान हो उसको पाटलाव्रीहि कहतेहैं । जिसका आकार मुरगेके अंडेके समान हो उसको कुक्कुटाण्डव्रीहि कहतेहैं । जिसका शूक और चावल काला हो उसको शालिमुख कहतेहैं । जिसके मुखका रंग लाखके समान हो उसको जतुमुखव्रीहि कहते हैं । सर्वप्रकारके व्रीहिधानपाकमें मधुर, शीतवीर्य, अल्प अभिष्यन्दि और मलरोधक । व्रीहिधानोंमें कृष्णव्रीहिधान अधिक गुणवालेहैं, शेष अल्प गुणवाले हैं ।

अन्यच्च ।

कृष्णव्रीहिस्त्रिदोषघ्नीमधुराकार्श्यहातथा ।
पित्तघ्नीपिच्छिलाशुक्ररूपवर्णबलप्रदा ॥ (वै. नि.)

अर्थ-कृष्णव्रीहिधान-त्रिदोषनाशक, मधुर, कृशतानाशक, पित्तनिवारक, पिच्छिल तथा शुक्र, रूप और वर्ण तथा बलको देवे है ।

षष्टिकलक्षणं नामानि च ।

गर्भस्थाएवयेपाकंयान्तितषष्टिकामताः । षष्टिकःशतपुष्पश्च प्रमोदकमुकुन्दकौ ॥ महाषष्टिकइत्याद्याःषष्टिकाःसमुदाहृताः । ऋतेऽपिव्रीहयःप्रोक्ताव्रीहिलक्षणदर्शनात् ॥

अर्थ-जो बालमेंही पकजावें उनको षष्टिक धान्य कहते हैं । षष्टिक, शतपुष्प, प्रमोदक, मुकुन्दक, महाषष्टिक (षष्टिका, षष्टिशालि, षष्टिज, स्निग्धतण्डुल, षष्टिवासरज) इत्यादिक षष्टिकधान्य कहलाते हैं । इनमें व्रीहिधानोंके लक्षण मिलनेसे यह व्रीहि कहे जाते हैं ।

अन्यच्च ।

योव्रीहिः षष्टिरात्रेणपच्यतसतुषष्टिकः ।

अर्थ-जो धान६०रातमें पकके तैय्यार होजायँ उनको षष्टिकधान्य कहते हैं

षष्टिकगुणाः ।

षष्टिकामधुराःशीतालघवोबद्धवर्चसः । वातपित्तप्रशमनाः शालिभिःसदृशागुणैः । षष्टिकाप्रवरातेषांलघ्वीस्निग्धात्रिदोषजित् ॥ स्वाद्वीमृद्वीग्राहिणीचबलदाज्वरहारिणी। रक्तशालिगुणैस्तुल्यास्ततःस्वल्पगुणाःपरे ॥ (भा. प्र.)

अर्थ-षष्टिक (साठीधान)-मधुर, शीतल, हलके मलरोधक, वात पित्तनाशक यह गुणोंमें शालिधानके समान हैं । सर्वप्रकारके धान्योंमें षष्टिक धान्य उत्तम हैं, हलके, स्निग्ध, त्रिदोषनाशक, स्वादिष्ट, नरम, मलरोधक, बलदायक, ज्वरनाशक । इनके गुण लाल शालिधानोंके समान जानने और धान इनसे हीनगुणवाले हैं ।

अन्यच्च ।

स्निग्धोग्राहीगुरुःस्वादुस्त्रिदोषघ्नःस्थिरोहिमः ।
षष्टिकोव्रीहिषुश्रेष्ठोगौरश्चासितगौरतः ॥ (वाग्भट)

अर्थ-साठीधान-स्निग्ध, मलरोधक, स्वादिष्ठ, त्रिदोषनाशक, स्थिर शीतल और सर्वधानोंमें श्रेष्ठ हैं । यह वर्णके भेदसे कृष्ण और गौर दो प्रकारके हैं तहां कृष्णषष्टिक धानोंकी अपेक्षा गौरषष्टिकधान अधिक गुणवाले हैं ।

अपिच ।

स्निग्धोवातहरस्त्रिदोषशमनःपथ्यःसदाप्राणिनांश्रेष्ठोव्रीहिषुषष्टिकःश्रमहरःकृच्छ्रादिदोषापहः ॥ गौरश्चासितगौरतोपिनितरांसेव्यःकरोत्युच्चकैः शुक्रंश्वासहरः क्षतक्षयहरःकासादिदोषापहः ॥

अर्थ-सफेद और काले दोनोंप्रकारसे साठीधान-स्निग्ध, वातनाशक, त्रिदोषनाशक, पथ्य, सर्वप्रकारके व्रीहिधानोंमें श्रेष्ठ, मूत्रकृच्छ्रादिदोषनाशक, शुक्रजनक, श्वासनाशक तथा क्षत, क्षय और कासादिरोगोंको दूर करेहैं ।

विवरण । धानकी तीन चार जातिहै, शालि, शूक, शिम्बी और तृणधान्य इनमें शालिधान- अनेक प्रकारके होते हैं देशके भेदसे इसके नाम

भिन्न २ हैं। संस्कृतग्रन्थोंमें अनेक नाम कहे हैं जैसे कलम, सुगंधशालि, धान्योत्तम, राजभोग्य, सुवर्णशालि, प्रमोदक, षष्टिक इत्यादि अनेक जाति हैं वे नहीं लिखीं क्योंकि वर्त्तमानकालमें संस्कृत नाम प्रचलित नहीं हैं देशमें जुदे २ नाम हैं जैसे इस देशमें हंसराज, बासमती, सुनखर्चा, दाऊदखानी, मुनिया, रायमुनिया, दलबादल, चावल, फतेपुरी, नागपुरी, मोथा इत्यादि प्रचलित हैं अगर इसीदेशके नाम लिखें तो १०० की पुस्तक तैय्यार हो जाय। जो साठ दिनमें पककर तैयार हो जायँ उनको साठीधान कहते हैं। साठीधान और धानोंकी अपेक्षा हलके और पथ्य हैं। जौ, गेंहू, बाजरा, ज्वार इत्यादिको शूकधान्य कहते हैं। मूँग, उडद, मोठ, चने इत्यादिको शिम्बीधान्य कहते हैं। शमा, कंगुनी, कोदों आदि तृणधान्य हैं।

यवनामानि ।

यवस्तुमेध्यःसितशूकसंज्ञोदिव्योक्षतःकंचुकिधान्यराजौ स्यात्तीक्ष्णशूकस्तुरगप्रियश्चशक्तुर्हयेष्टश्चपवित्रधान्यम् ॥

अर्थ-यव, मेध्य, सितशूक, दिव्य, अक्षत, कंचुकि, धान्यराज, तीक्ष्णशूक, तुरगप्रिय, शक्तु, हयेष्ट, पवित्रधान्य (शितशूक, हयप्रिय, यवक, श्वेतशूक, प्रवेट, शीतशूक, कंचुको, तुरङ्गप्रिय)

संस्कृतभाषामें	यव।
हिन्दीभाषामें	जौ।
बंगभाषामें	यव।
गुजरातीभाषामें	जब।
मराठीभाषामें	जव, जौ।
कर्णाटकीभाषामें	मुंडजयव।
तैलिङ्गीभाषामें	यवधान्य।
तामिलीभाषामें	वार्लिअरिसु।
अंग्रेजीभाषामें	बिटरवार्ली, पेरलबार्ली। Bitter Rarley Poarl Rarley
लैटिन्भाषामें	होर्डियंहेगूझास्टिकम्। Hordeum Hexasticum
फारसीभाषामें	जव।
अरबीभाषामें	शईर।

यवस्यप्रकारभेदाः ।

यवःसशूकानिःशूकहरिद्वर्णैस्त्रिधामतः ।
सशूकोगुणवांस्तस्मान्निःशूकोऽल्पगुणःस्मृतः
हरिद्वर्णोहीनगुणोमुनिभिःपरिकीर्त्तितः ।

अर्थ-जौ शूक निःशूक और हरित् वर्ण इन भेदोंसे तीन प्रकारके, तहां शूकयुक्त जौ गुणोंमें अधिक हैं, निःशूक जौ हीन गुणवाले और हरित् वर्ण जौ उससे भी हीन गुणवाले हैं ।

अन्यच्च ।

यवस्तुशीतशूकःस्यान्निःशूकोऽतियवःस्मृतः ।
स्तोक्यस्तद्वत्सहरितस्ततःस्वल्पश्चकीर्तितः॥ (भा. प्र.)

अर्थ-शीतशूकवाले जौको यव कहते हैं, शूकहीन जौको अतियव कहते हैं, हरे रङ्गके जौंको स्तोक्य कहते हैं और साधारण यवोंको स्वल्पयव कहते हैं ।

यव गुणाः ।

रूक्षःशीतोगुरुःस्वादुःकषायोमधुरोयवः ।
वृष्योग्राहीकफघ्नश्चस्यात्पित्तश्वासकासनुत॥ (हा० सं०)

अर्थ-जौ-रूखे, शीतल, भारी, स्वादु, कषेले, मधुर, वीर्यवर्द्धक, मलरोधक, कफनाशक, तथा पित्त, श्वास, और खांसीको दूर करे है।

अन्यच्च ।

यवःकषायोमधुरःशीतलोलेखनोमृदुः । व्रणेषुतिलवत्पथ्योरूक्षोमेधाग्निवर्द्धनः ॥ कटुपाकोऽनभिष्यन्दीस्वर्य्यो बलकरोगुरुः । बहुवातमलोवर्णस्थैर्य्यकारीचपिच्छलः ॥ कण्ठत्वगामयश्लेष्मपित्तमेदःप्रणाशनः । पीनसश्वासकासोरुस्तम्भलोहिततृट्प्रणुत ॥ तस्मादतियवोन्यूनःस्तोक्योन्यूनतरस्ततः (भा. प्र.)

अर्थ-जौ-कषेले, मधुर, शीतल, लेखन, मृदु, व्रणरोगमें तिलके समान हितकारी, रूखे, मेधा और अग्निवर्द्धक, पाकमें कटु, अनभिष्यन्दी, स्वरको शुद्ध करनेवाले, बलकारक, भारी, अत्यन्त वातको करनेवाले मलके

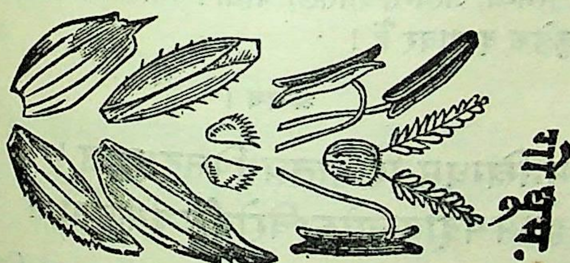
...को करनेवाले, वर्णको सुन्दर करनेवाले, पिच्छिल तथा कण्ठरोग, ...चारोग, कफ, पित्त, मेदरोग, पीनस, श्वास, खांसी, उरुस्तम्भ, रक्तविकार और तृषाको दूर करनेवाले हैं। जैसे अतियव और अतियवसे स्तोक्य ...गुणवाले हैं।

अन्यच्च।

...वःकषायोमधुरःसुशीतलःप्रमेहजित्तिक्तकफापहारकः।
अशूकमुण्डस्तुयवोबलप्रदोवृष्यश्चनॄणांबहुवीर्य्यपुष्टिदः। (रा.)

अर्थ-जौ-कषेले, मधुर, शीतल, प्रमेहनाशक, कडवे और कफनाशक हैं। अशूक अर्थात् मुण्डे जौ-बलवर्द्धक, वीर्य्यवर्द्धक, वृष्य और पुष्टिकारक हैं।

गोधूमनामानि।



गोधूमोबहुदुग्धःस्यादरूपोम्लेच्छभोजनः।
यवनोनिस्तुषःक्षीरीरसालःसुमनश्चसः॥

अर्थ-गोधूम, बहुदुग्ध, अरूप, म्लेच्छभोजन, यवन, निस्तुष, क्षीरी, रसाल, सुमन (गोधुम, सुमना,)

संस्कृतभाषामें	गोधूम।
हिन्दीभाषामें	गेहूं।
वंगभाषामें	गम।
मराठीभाषामें	गहूं, काठे लाल रंगाचे (कों०) पोटेगुळ्धुवे।
गुजरातीभाषामें	घउं।
कर्णाटकीभाषामें	गोदी।
तैलिंगीभाषामें	गोदुमु।
अंग्रेजीभाषामें	ह्वीट्। Wheat
लैटिन्भाषामें	ट्रिटिकम्, वल्गेरी। Tritlcnm Vulgare

फारसीभाषामें गंदुम ।
अरबीभाषामें हिंता ।

गोधूमगुणाः ।

मधुरोगुरुविष्टम्भीवृष्योबल्योऽथबृंहणः ।
ईषत्कषायःशीतश्चगोधूमःस्यात्त्रिदोषहा ॥ (हा. सं.)

अर्थ-गेहूं-मधुर, भारी, विष्टम्भकारक, वीर्य्यवर्द्धक, बलकारक, पुष्टिकारक, कुछेक कषेले, शीतल और त्रिदोषनाशक हैं।

अन्यच्च ।

गोधूमउक्तोमधुगुरोगुरुश्चबल्यःस्थिरःशुक्ररुचिप्रदश्च।
स्निग्धोऽतिशीतोनिलपित्तहंतासन्धानकृज्जीवनकोल्परेची॥

अर्थ-गेहूँ-मधुर, भारी, बलकारी, देहको स्थिरकरनेवाले, शुक्रजनक, रुचिकारक, स्निग्ध, अत्यन्त शीतल, वातपित्तनाशक, सन्धानकारक, प्राणदायक और कुछेक दस्तावर हैं।

अन्यच्च ।

गोधूमःस्निग्धमधुरोवातघ्नःपित्तदाहहृत् ।
गुरुःश्लेष्मप्रदोबल्योरुचिरोवीर्य्यवर्द्धनः ॥ (रा. नि.)

अर्थ-गेहूं-स्निग्ध, मधुर, वातनाशक, पित्तघ्न, दाहनिवारक, भारी, कफकारी, मदकारक, बलवर्द्धक, रुचिजनक और वीर्य्यवर्द्धक हैं।

अपिच लक्षणगुणाः ।

गोधूमःसुमनोऽपिस्यात्त्रिविधःसचकीर्त्तितः । महागोधूम... त्याख्यःपश्चाद्देशात्समागतः ॥ मधूलीतुततःकिञ्चिदल्पा... सामध्यदेशजा । निःशूकोदीर्घगोधूमःक्वचिन्नन्दीमुख... धः ॥ गोधूमोमधुरःशीतोवातपित्तहरोगुरुः । कफशुक्र... दोबल्यःस्निग्धःसन्धानकृत्सरः ॥ जीवनोबृंहणोवर्ण्यो... ण्योरुच्यःस्थिरत्वकृत् । मधूलीशीतलास्निग्धापित्तघ्नी... रालघुः ॥ शुक्रलाबृंहणीपथ्यावद्वन्नंदीमुखःस्मृतः॥ (भा. ...)

अर्थ-गेहूं, महागोधूम, मधूली और दीर्घगोधूम इन भेदोंसे तीन ...

---

१ कफप्रद-कफकारक ऐसा नवीन पद है. परन्तु किसी प्राचीन ग्रन्थमें नहीं मि...

ते हैं तहां महागोधूम पश्चिम मरुदेश आदिमें होते हैं, मधूली गोधूम महागोधूमसे छोटा है यह मध्यदेश (देहली, आगरा, लखनऊ आदि) में होता है और दीर्घगोधूम, शूकरहित होता है और कहीं २ नन्दीमुखनामसे भी प्रसिद्ध है। गेहूं-मधुर, शीतल, वातपित्तनाशक, भारी, कफकारक, शुक्रजनक, बलकारक, स्निग्ध, सन्धानकारक, सारक, संजीवन, पुष्टिकारक, वर्णको सुन्दर करनेवाले, रुचिकारी और शरीरको स्थिर करनेवाले हैं। मधूली गेहूं-शीतल, स्निग्ध, पित्तनाशक, मधुर, हलके, शुक्रजनक, पुष्टिकारक और पथ्य हैं तथा नन्दीमुखकेभी गुण इसीके समान जानने।

यवनालनामानि ।

यवनालोयावनालः शिखरीवृत्ततण्डुलः ।
दीर्घनालोदीर्घशरःक्षेत्रेक्षुश्चेक्षुपत्रकः ॥

अर्थ-यवनाल, यावनाल, शिखरी, वृत्ततण्डुल, दीर्घनाल, दीर्घशर, क्षेत्रेक्षु, इक्षुपत्रक ।

धवलयावनालनामानि ।

धवलोयावनालस्तुपाण्डुरस्तारतण्डुलः ।
नक्षत्राकृतिविस्तारोवृत्तोमौक्तिकतण्डुलः ॥

अर्थ- धवलयावनाल, पाण्डुर, तारतण्डुल, नक्षत्राकृतिविस्तार, मौक्तिकतण्डुल (जूर्णाह्व, देवधान्य, जूर्णल, बीजपुष्पक, जूर्नल, पुष्पगन्ध, सुगन्ध, सेगुरुंदक)

तुवरयावनालनामानि ।



अथतुवरयावनालस्तुवरश्चकषाययावनालश्च ।
अपिरक्तयावनाललोहितलोहिततुवरधान्याश्च ॥

अर्थ--तुवरयावनाल--तुवर, कषाययावनाल, रक्तयावनाल, लोहित लोहिततुवरधान्य।

अपिच।

ललिताक्रोष्टुपुच्छाचश्रीखण्डीचसुगन्धिका।
कृष्णाभाद्रपदीचान्याश्वेतामंडाचजूर्णका॥
रक्तिकाकुब्जिकाद्याश्चबह्व्योजूर्णाह्वजातयः।

अर्थ--ललिता, क्रोष्टुपुच्छा, श्रीखण्डी, सुगन्धिका, कृष्णा, भाद्रपदी, श्वेता, मंडा, जूर्णका, रक्तिका और कुब्जिका इत्यादि ज्वारकी अनेक जाति हैं।

संस्कृतभाषामें	यावनाल, धवलयावनाल, रक्तयावनाल।
हिन्दीभाषामें	जुआर, सफेदजुआर, लालज्वार।
वंगभाषामें	जोयार, जनार+श्वेतजनार, कालजनार, लाल जनार, भुटो
मराठीभाषामें	जोंधळे, ज्वारी।
गुजरातीभाषामें	जारय, जुवार।
कर्णाटकीभाषामें	जोलदहेसरु, कारुजोल।
तैलिङ्गीभाषामें	जोन्नलु।
अंग्रेजीभाषामें	ग्रेटमीलेट। Great Millet
लैटिन्भाषामें	होलकस् वलगारी Holcus vulgare सोरघम् वलगेरीस् Sorghum vulgare
फारसीभाषामें	जुरेमका।
अरबीभाषामें	हंतारुमिया+खंदरूस।

यावनालगुणाः।

यावनालोगुरुःशीतोरूक्षोग्राहीरुचिप्रदः।
वृष्योमलस्तम्भकरःस्वादुःपित्तकफापहः॥
रक्तरोगप्रशमनोऋषिभिःपूर्वमीरितः॥

अर्थ- जुआर, भारी, शीतल, रूखी, मलरोधक, रुचिकारक, वीर्यवर्द्धक- मलस्तम्भक, स्वादिष्ठ, पित्तकफनाशक और रुधिरके विकारको शान्ति करनेवाली है।

धवलयावनालगुणाः ।

धवलोयावनालस्तुपथ्योवृष्योबलप्रदः ।
त्रिदोषार्शोव्रणहरोगुल्मारुचिविनाशकः ॥

अर्थ-सफेदज्वार--पथ्य, वीर्य्यवर्द्धक, बलकारक तथा त्रिदोष, बवासीर, व्रण, गुल्म और अरुचिको दूर करे है ।

शारदयावनालगुणाः ।

शारदोयावनालस्तुश्लेष्मलः पिच्छिलोगुरुः ।
शीतलोमधुरोवृष्योबल्यःपुष्टिकरोमतः ॥
त्रिदोषशमनश्चैवपूर्ववैद्यैर्निरूपितः । (नि. र.)

अर्थ-शारदयावनाल -कफकारक, पिच्छिल, भारी, शीतल, मधुर, वीर्य्य-वर्द्धक, बलकारक, पुष्टिकारक और त्रिदोषनाशक है ।

साजकनामानि ।

वर्जरीनालिकानालीनीलसस्यंचसाजकः ।
अग्रधान्यंवर्जरीकातथानीलकणास्मृता ॥

अर्थ-वर्जरी, नालिका, नाली , नीलसस्य, साजक, अग्रधान्य, वर्जरीका, नीलकणा ।

संस्कृतभाषामें	वर्जरी, साजक ।
हिन्दीभाषामें	बाजरा ।
मराठीभाषामें	बाजरी ।
गुजरातीभाषामें	बाजरो ।
अंग्रेजीभाषामें	स्पाइकूडमिलेट् Spieked millet
लैटिन्भाषामें	पेनीसीलेर्या,स्पाईकटा Pcniecllaria spieate
	पेनीसेटं, टाइफोडियं Peninstum typodinm
फारसीभाषामें	गार्वसा ।
अरबीभाषामें	जार्वस ।

अस्य गुणाः ।

साजकोवातलोहृद्योबल्यःकान्तिकरोमतः ।
अग्निदीप्तिकरश्चोष्णोरूक्षःपित्तप्रकोपनः ॥
स्त्रीकामदोदुर्जरश्चपुंस्त्वपुष्टिहरोमतः । (नि. र.)

अर्थ-बाजरा--बादी, हृदयको हितकारी, बलकारी, कान्तिजनक, अग्निदीपक, गरम, रूखा, पित्तको कुपित करनेवाला, स्त्रियोंके कामको बढानेवाला, देरमें पचनेवाला तथा पुरुषता और पुष्टिको हरनेवाला है।

अन्यच्च ।

वर्जरीदुर्जराज्ञेयाकफवातप्रणाशिनी ।

अर्थ-बाजरा-देरमें पचनेवाला और कफवातको हरनेवाला है।

शमीधान्यनामानि ।

शमीजाःशिम्बिजःशिम्बीभवासूप्याश्चवैदलाः ।

अर्थ-शमीज, शिम्बिज, शिम्बीभव, सूप्य, वैदल ।

शमीधान्यगुणाः ।

वैदलामधुरारूक्षाःकषायाःकटुपाकिनः ।
वातलाःकफपित्तघ्नाबद्धमूत्रमलाहिमाः ॥
ऋतेमुद्गमसूराभ्यामन्येत्वाध्मानकारकाः ।

अर्थ-शिम्बीधान्य (मूँग, मसूर, मोठ, उडद, लोबिया, चने, अडहर, मटर, कुलथी इत्यादि)--मधुर, रूखे, कषेले, पचनेमें कटु, वातकारक, कफपित्तनाशक, मूत्रमलरोधक, शीतल इनमें मूँग और मसूरको छोडकर शेष सर्व आध्मानकारक हैं।

अन्यच्च ।

शिम्बीधान्यंतुमधुरंशीतंरूक्षंकषायकम् । कटुपाकेवातलंचमूत्रलंमलस्तम्भकृत् ॥ मसूरामुद्गरहितंगुरुचाध्मानकारकम् । लेपादिनारक्तदोषमेदपित्तकफापहम् ॥ (र. नि.)

अर्थ--शिम्बीधान्य--मधुर, शीतल, रुक्ष, कषाय, पाकमें कटु, बादी, मूत्रजनक, मलस्तम्भक इनमें मसूर और मूँगको छोडके शेष सर्व शिम्बीधान्य भारी और आध्मानकारक हैं। इनका लेपादिक करनेसे रक्तविकार, मेद, पित्त और कफका नाश होता है !

मुद्गनामानि ।

मुद्गस्तुसूपश्रेष्ठस्याद्वर्णार्हश्चरसोत्तमः ।
भुक्तिप्रदोहयानन्दःसुफलोवाजिभोजनः ॥

अर्थ-मुद्ग, सूपश्रेष्ठ, वर्णार्ह, रसोत्तम, भुक्तिप्रद, हयानन्द सुफल, वाजिभोजन ।

संस्कृतभाषामें	मुद्ग ।
हिन्दीभाषामें	मूग ।
बंगभाषामें	मुग ।
मराठीभाषामें	हिरवे मूग, पिंवळे मूग ।
गुजरातीभाषामें	मग लीला, काला कच्छी ।
कर्णाटकीभाषामें	हेसयेरु ।
तैलिङ्गीभाषामें	पेसलु ।
पंजाबीभाषामें	मूजि ।
अंग्रेजीभाषामें	ग्रीन ग्रेन । Green grain
लैटिन्भाषामें	फेसीओलस् मुगो । Phaseolus Muego
फारसीभाषामें	बुनुमाष ।
अरबीभाषामें	मज ।

मुद्गगुणाः ।

शीतःकषायोमधुरोलघुःस्यात्पैत्तास्रभूदोषहरःसरश्च । विपाकतोऽसौकटुकप्रधानोमुद्गस्तथान्यःकथितोऽभिरम्यः (हा०)

अर्थ-मूँग-शीतल, कषेली, मधुर, हलकी, पित्त और रक्तके दोषको दूर करनेवाली, सारक, विपाकमें कटु और रमणीक है ।

अन्यच्च ।

कृष्णमुद्गामहामुद्गागौराहरितपीतकाः । श्वेतारक्तास्तुनिर्दिष्टालघवःपूर्वपूर्वतः ॥ प्रधानाहरितास्तत्रवन्यमुद्गास्तुमुद्गवत् । मुद्गःकषायोमधुरःकफपित्तास्रजिल्लघुः । ग्राहीशीतःकटुःपाकेचक्षुष्योनातिवातलः ॥ (राज. नि.)

अर्थ-मूँग-अनेक प्रकारके होते हैं जैसे कृष्णमुद्ग, अरुणमुद्ग, गौरवर्णमुद्ग, हरितमुद्ग, पीतमुद्ग, श्वेतमुद्ग और रक्तवर्णमुद्ग इनमें पूर्वसे पूर्व मूँग लघु हैं अर्थात् रक्त मूँगसे सफेद मूँग, सफेद मूँगसे पीलेमूँग और पीले मूँगसे हरा मूँग हलका है इत्यादि सर्व मूँगोंमें हरा मूँग प्रधान है । वनमूँग (मोठ) के गुण भी मूँगके समान हैं । मूँग--कषेली, मधुर, कफनाशक, रक्तपित्त-

निवारक, हलका, मलरोधक, शीतल, पचनेमें कटु, नेत्रोंको हितकारी और अत्यन्त वातकारक नहीं है ।

अपिच ।

मुद्गोरूक्षोलघुर्ग्राहीकफपित्तहरोहिमः । स्वादुरल्पानिलोनेत्र्योज्वरघ्नोवनजस्तथा ॥ मुद्गोबहुविधःश्यामोहरितःपीतकस्तथा । श्वेतोरक्तश्चतेषांतुपूर्वःपूर्वोलघुःस्मृतः ॥ सुश्रुतेनपुनःप्रोक्तोहरितःप्रवरोगुणैः । चरकादिभिरप्युक्तएषएवगुणाधिकः ॥ (भा. प्र.)

अर्थ-मूँग--रूखा, हलका, मलरोधक, कफपित्तनाशक, शीतल, स्वादिष्ट अल्पवातकारक, नेत्रोंको हितकारी और ज्वरको दूर करे है । वनमूँग (मोठ) के गुणभी मूँगके समान हैं ।.मूँग अनेक प्रकारकी हैं जैसे श्याम, हरित पीत, सफेद, लाल । इनमें पहिले २ मूँग हल्के हैं सुश्रुतने हरे मूँगको उत्तम कहाहै और चरकादिकभी इसीप्रकार कहते हैं ।

अन्यच्च ।

मुद्गःपित्तकफापहोव्रणहरःकण्ठामयघ्नोलघुः पथ्योवातविरक्तजन्तुषुतथानेत्रामयेसर्वदा ॥ नैवाध्मानकरस्तथानिलहृरोमन्दानलेशस्यते भक्तानामपिचोत्तमःस्वरकरोमूत्रामयच्छेदनः ॥

अर्थ--मूँग--पित्तकफनाशक, व्रणविनाशक, कण्ठरोगनिवारक, हलकी तथा वातरक्त कृमिरोग, और नेत्ररोगमें हितकारी है, आध्मानकारक नहीं, वातहारकभी नहीं, मन्दाग्निको दूर करनेवाली, भोजनके ऊपरभी पथ्य, स्वरको श्रेष्ठ करनेवाली और मूत्ररोगको हरनेवाली है ।

कृष्णमुद्गनामानि ।

कृष्णमुद्गस्तुवासन्तोमाधवश्चसुराष्ट्रजः ।

अर्थ-कृष्णमुद्ग, वासन्त, माधव सुराष्ट्रज ।

कृष्णमुद्गगुणाः ।

कृष्णमुद्गस्त्रिदोषघ्नोमधुरोवातनाशनः ॥ लघुश्चदीपनःपथ्योबलवीर्य्यांगपुष्टिदः ।

अर्थ-कालीमूँग-त्रिदोषनाशक, मधुर, वातनाशक, हलकी, दीपन, पथ्य तथा बल, वीर्य्य और शरीरको पुष्टि देनेवाली है ।

हरिन्मुद्गनामानि ।

शारदस्तुहरिन्मुद्गोधूसरोऽन्यश्चशारदः ।

अर्थ-शारद और हरिन्मुद्ग यह दो नाम हरिन्मुद्गके हैं, धूसर और शारद यह दूसरी होती है ।

हरिन्मुद्गगुणाः ।

हरिन्मुद्गःकषायश्चमधुरःकफपित्तहृत् ।
रक्तमूत्रामयघ्नश्चशीतलोलघुदीपनः ॥

अर्थ-हरीमूँग- कषेली, मधुर, कफपित्तनाशक तथा रुधिरविकार और मूत्ररोगको दूर करे है, शीतल, हलकी और दीपन है ।

धूसरमुद्गगुणाः ।

तद्वच्चधूसरोमुद्गोरसवीर्य्यादिषुस्मृतः ।
कषायोमधुरोरुच्यःपित्तवातविबन्धकृत् ॥ (रा. नि॰)

अर्थ-धूसर रंगकी मूँग रसवीर्य्यादिकमें तो हरीमूँगकी समान है कषेली, मधुर, रुचिकारी तथा पित्त, वात और विबन्धकारक है ।

मकुष्ठनामानि ।

मकुष्ठकोमकुष्ठश्चवनमुद्गःकृमीलकः ।
अमृतोरण्यमुद्गश्चवल्लीमुद्गश्चकीर्त्तितः ॥

अर्थ-मकुष्ठक, मकुष्ठ, वनमुद्ग, कृमीलक, अमृत, अरण्यमुद्ग, वल्लीमुद्ग, (मुकुष्ठ, सपष्ठ, राजमुद्ग, मयष्ठ, मकुष्टक, मकुष्ठक, मकुष्ठ, वरक, निगूढक, कृष्णीनक, खण्डी, मुद्गष्टक, मुद्गष्ट, मयष्टक, मुकुष्ठ, मयूष्ट, मयष्ट, मद्यक, मयूष्टक, मयुष्ट)

संस्कृतभाषामें	मकुष्ठ ।
हिन्दीभाषामें	मोठ ।
बंगभाषामें	वनमूँग ।
मराठीभाषामें	मटक्या ।
गुजरातीभाषामें	मठ ।
कर्णाटकीभाषामें	मुगु, हेसरुभेद ।
तैलिंगीभाषामें	कंकंपेसालु ।

अंग्रेजीमें	एकोनेडलिव्ड किडनीबिन। Aconite leaved Kidney bean
लैटिन्भाषामें	फेसी ओलस् Phaseolus एकोनिटि फोलीयम्। Aconite folium
फारसीभाषामें	माषहिंदि।

मकुष्ठगुणाः।

सरक्तपित्तकफवातहन्ताचोष्णःकषायोमधुरःप्रदिष्टः।
ग्राहीसुशीतोगुदकीलगुल्मंमकुष्ठकःसर्वगदान्निहन्ति॥

अर्थ-मोठ-रक्तपित्त, कफ और वातनाशक है, गरम, कषेली, मधुर, मल-रोधक, शीतल तथा गुदकील, गुल्म और रोगोंको दूर करे है।

अन्यच्च।

मकुष्ठकःकषायःस्यान्मधुरोरक्तपित्तजित्।
ज्वरदाहहरःपथ्योरुचिकृत्सर्वदोषजित्॥ (रा. नि.)

अर्थ-मोठ-कषेली, मधुर, रक्तपित्तनाशक, ज्वरनिवारक, दाहहारक, पथ्य, रुचिकारक और सर्वदोषनाशक है।

अन्यच्च।

मकुष्ठोवातलोग्राहीकफपित्तहरोलघुः।
वान्तिजिन्मधुरःपाकेकृमिकृज्ज्वरनाशनः॥ (भा. प्र.)

अर्थ-मोठ-बादी, मलरोधक, कफपित्तनाशक, हलकी, वमननिवारक, पचनेमें मधुर, कृमिजनक और ज्वरनाशक है।

अपिच।

मुद्गष्टःशीतलोग्राहीकफपित्तक्षयापहः॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-मोठ-शीतल, ग्राही तथा कफ, पित्त और क्षयको दूरकरे है।

अस्य सूपगुणाः।

मुकुष्ठसूपोऽल्पबलःपाचनोदीपनोलघुः।
चक्षुष्योबृंहणोवृष्यःपित्तश्लेष्मास्त्ररोगनुत॥ (द्र. गु.)

अर्थ-मोठकी दाल--अल्पबलकारक, पाचक, दीपन, हलकी, नेत्रोंको हितकारी, वीर्य्यवर्द्धक तथा पित्त, कफ और रुधिरके दोषोंको दूर करे है।

माषनामानि।

माषस्तुकुरुविन्दःस्याद्धान्यवीरोवृषांकुरः।

मांसलश्चबलाढ्यश्चपित्र्यश्चपितृभोजनः ॥

अर्थ-माष, कुरुविन्द, धान्यवीर, वृषांकुर, मांसल, बलाढ्य, पित्र्य, पितृभोजन (बीजरत्न, बली)

संस्कृतभाषामें	माष ।
हिन्दीभाषामें	उडद ।
बंगभाषामें	माषकलाय ।
मराठीभाषामें	उडीद ।
गुजरातीभाषामें	उडद ।
कर्णाटकीभाषामें	उडु ।
तैलिङ्गीभाषामें	मिनुडलु ।
अंग्रेजीभाषामें	किड्नीबीन । Kidney bean
लैटिन्भाषामें	फेसीओलस् रेडीरेटस् । Phaseolus rediatus
फारसीभाषामें	माष ।
अरबीभाषामें	माषा ।

माषगुणाः ।

माषःस्निग्धोबहुमलकरःशोषणःश्लेष्मकारी वीर्येउष्णोझटितिकुरुतेरक्तपित्तप्रकोपम् । हन्याद्वातंगुरुबलकरोरोचनोभक्ष्यमाणः स्वादुर्नित्यंश्रमसुखवतांसेवनीयोनराणाम् ॥ (रा. नि.)

अर्थ-उडद, स्निग्ध, बहुमलकारक, शोषक, कफकारक, उष्णवीर्य्य, शीघ्र रक्तपित्तको कुपित करनेवाला, वातनाशक, भारी, बलकारी, रुचिकारक, स्वादिष्ठ तथा श्रम और सुखवान् मनुष्योंको सदैव सेवने योग्य है ।

अन्यच्च ।

स्निग्धोऽथवृष्योमधुरश्चबल्योमरुत्कफानांपरिबृंहणश्च । पाकेम्लकोष्णोविदितोहिमश्चमाषोऽथहृद्यःकथितोनरैश्च ॥

अर्थ-उडद-स्निग्ध, वीर्य्यवर्द्धक, मधुर, बलकारक, वात और कफको बढानेवाला, पाकमें अम्ल, उष्ण, शीतल और हृदयको हितकारी है ।

अन्यच्च ।

माषोगुरुर्भिन्नपुरीषमूत्रःस्निग्धोष्णवृष्योमधुरोऽनिलघ्नः ।

सन्तर्पणःस्तन्यकरोविशेषाद्बलप्रदःशुक्रकफावहश्च ॥

अर्थ-उडद-भारी, मलमूत्रको निकालनेवाला, स्निग्ध, गरम, वीर्यवर्द्धक, मधुर, वातनाशक, तृप्तिकारक, स्तनोंमें दूधको बढानेवाला तथा विशेषकरके बल, शुक्र और कफको करनेवाला है ।

कषायभावान्नपुरीषभेदीनमूत्रलोनैवकफस्यकर्त्ता ।
स्वादुर्विपाकेमधुरोऽलसांद्रःसन्तर्पणःस्तन्यरुचिप्रदश्च ॥

अर्थ-उडद--कषैलेपनसे मलभेदक नहीं है और मूत्रजनकभी नहीं है और न कफको करनेवाला है, पचनेमें स्वादु, मधुर, स्निग्ध, तृप्तिकारक, स्तनोंमें दूध प्रगट करनेवाला और रुचिकारक है ।

अपिच ।

माषःस्निग्धोबलश्लेष्ममलपित्तकरःसरः ।
गुरूष्णोनिलहास्वादुःशुक्रवृद्धिविरेककृत (वाग्भ.)

अर्थ--उडद--स्निग्ध, बलकारक, कफजनक, मलकारक, पित्तकारक, सारक, भारी, गरम, वातविनाशक, स्वादिष्ठ, शुक्रजनक और दस्तावर है ।

अन्यच्च ।

माषःसाधारणःस्निग्धःशोषणोष्णःकफप्रदः । वृष्यःपित्तकरःपित्तकोपनोरोचकोगुरुः॥बल्यःसन्तर्पणःस्वादुःपुष्टिकृन्मूत्रशुक्रलः ।मलभेदकरोदुग्धकारकोमांसवर्द्धकः॥मेदवृद्धिकरश्चैवश्वासश्रमनिवारणः । परिणामभवंशूलमर्दितंच विनाशयेत् । वातंचार्शोनाशयतीत्येवमार्यैर्निरूपितम् (र.)

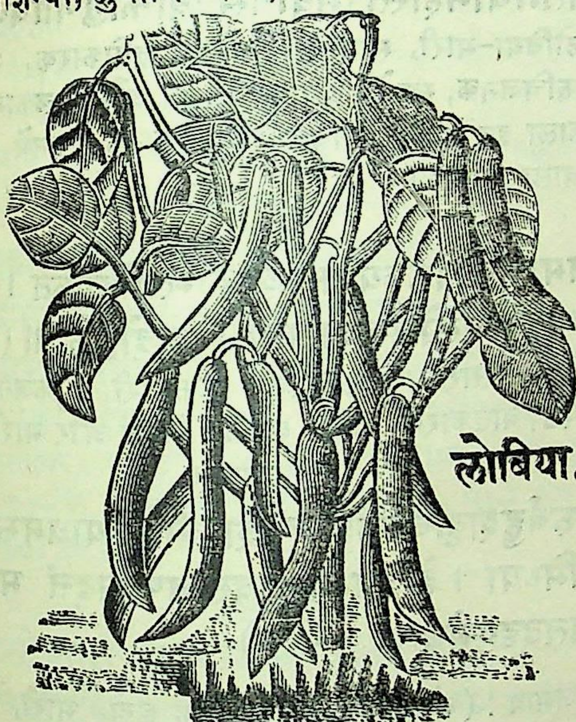
अर्थ-उडद--स्निग्ध, शोषण, गरम, कफकारक, वीर्यवर्द्धक, पित्तकारक, पित्तको कुपित करनेवाला, रुचिको उत्पन्न करनेवाला, भारी, बलकारक, तृप्तिजनक, स्वादिष्ट, पुष्टिकारक, मूत्रजनक, शुक्रकारक, मलभेदक, दुग्धकारक, मांसवर्द्धक, मेदवर्द्धक तथा श्वास, श्रम, परिणामशूल, अर्दितवात, वात और बवासीरको दूर करे है ।

राजमाषनामानि ।

राजमाषोमहामाषश्चपलश्चबलः स्मृतः ।

अर्थ--राजमाष, महामाष, चपल, चवल (वर्व्वट, मरुत्कर, द्विजसत,

नीलमाष, नृपमाष, नृपोचित सितमाष, दीर्घबीज, निष्पाव, राजमाषक, सुकुमार, दीर्घशिम्बी, क्षुधाभिजनक)



लोबिया.

संस्कृतभाषामें	राजमाष ।
हिन्दीभाषामें	लोबिया ।
वंगभाषामें	बरबटीकलाय, बोरा ।
मराठीभाषामें	चंवळ्या (अलसुन्दे) ।
गुजरातीभाषामें	चोला ।
कर्णाटकीभाषामें	वरवटा, अलसंदे ।
पंजाबीभाषामें	रैंस ।
अंग्रेजीभाषामें	चाईनिझ डोलिकोस् । Chinese dolicos
लैटिन्भाषामें	डोलिकोस् सिनेन्सीस् । Dolichos sinensis विगना कटिऐंगू । Vigna catiang
फारसीभाषामें	लोबिया ।
अरबीभाषामें	फरिका ।

राजमाषगुणाः ।

राजमाषोगुरुःस्वादुस्तुवरस्तर्पणः सरः । रूक्षोवातकरोरु-

च्यःस्तन्योभूरिबलप्रदः ॥ श्वेतरक्तस्तथाकृष्णस्त्रिविधःसंप्रकीर्त्तितः।योमहांस्तेषुभवतिसएवोक्तोगुणाधिकः॥(भा. प्र.)

अर्थ-लोविया-भारी, स्वादिष्ठ, कषेला, तृप्तिकारक, सारक, रूखा, वातकारक, रुचिजनक, स्तनोंमें दूध करनेवाला और बलकारक है। सफेद, लाल और काला इन भेदोंसे लोविया तीन प्रकारके हैं इनमें बडा लोविया अधिक गुणवाला जानना।

अन्यच्च।

राजमाषःसरोरुच्यःकफशुक्राम्लपित्तकृत्।
सस्वादुर्वातलोरूक्षःकषायोविशदोगुरुः ॥ (च. सु. सं)

अर्थ--लोविया—सारक, रुचिकारक, कफकारी, शुक्रजनक अम्लपित्तकारक, स्वादिष्ठ, वातकारक, रूखा, कषेला, विशद और भारी है।

अपिच।

रूक्षोगुरुर्बहुशकृच्चलकृच्चशिम्बीधान्याधमस्त्वमसिनागमएषमिथ्या। हेराजमाषतवराजपदंप्रदत्तं माषंविहायविधिनातददृष्टमेव ॥ (वै. अ.)

अर्थ-हे राजमाष! (लोविया) -जो कि, तुम रूखे, भारी, बहुत मलको करनेवाले, शिम्बीधान्योंमें अधम हो यह बात मिथ्या नहीं है इसपरभी विधाताने तुमको और उरदोंको छोडकर राजपद दिया यह प्रारब्धका फल नहीं तो क्या है?।

अस्य सूपगुणाः।

राजमाषभवःसूपःस्वादूरूक्षःकषायकः।
ग्राहीगुरुर्वातकरःस्तन्यकृद्रुचिकारकः ॥ (द्रव्यगुण)

अर्थ-लोवियेकी दाल-स्वादिष्ठ, रूखी, कषेली मलरोधक, भारी, वातकारी, स्तनोंमें दूध प्रगट करनेवाली और रुचिको उत्पन्न करनेवाली है।

निष्पावनामानि।

निष्पावोराजशिम्बीस्याद्वल्लकःश्वेतशिम्बिकः।

अर्थ--निष्पाव राजशिम्बी, वल्लक, श्वेतशिम्बिक।

संस्कृतभाषामें	निष्पाव।
हिन्दीभाषामें	भटवासु, भेटरासु, राजशिम्बीके बीज।

बङ्गभाषामें राजशिम्बीबीज, भटरासु ।
मराठीभाषामें कडवेवाल, पांढरे पावटे, तांबडे पावटे । आँवरे ।
गुजरातीभाषामें ओलिया ।
कर्णाटकीभाषामें आवरे, तोरेआवरे ।
तैलिङ्गीभाषामें आनपचेद्दु ।
लैटिन्भाषामें लेबलेबवल्गेरीस् । Lablab Vulgaris

निष्पावगुणाः ।

निष्पावोमधुरोरूक्षोविपाकेऽम्लगुरुःसरः ।
कषायःस्तन्यपित्तास्रमूत्रवातविबंधकृत् ॥
विदाह्युष्णोविषश्लेष्मशोथहृच्छुक्रनाशनः ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-निष्पाव (भटवासु)-मधुर, रूखा, पाकमें अम्ल, भारी, वातकारी कुछेक दस्तावर, कषेला, स्तनोंमें दूधको प्रगट करनेवाला तथा रक्तपित्त, मूत्र, वात और विबंधकारक है, दाहजनक, गरम तथा विष, कफ, सूजन और शुक्रको हरे है ।

अन्यच्च ।

निष्पावोवातपित्तास्रस्तन्यमूत्रकरोगुरुः ।
सरोविदाहिदृक्छुक्रकफशोफविनाशनः ॥ (वाग्भट)

अर्थ-निष्पाव-वात, पित्त, रुधिरविकार, स्तनोंमें दूध और मूत्रको उत्पन्न करे है । भारी, सारक, दाहकारक तथा दृष्टि, शुक्र, कफ और सूजनको दूर करे है ।

अपिच ।

निष्पावोमधुरोरूक्षःपाकेम्लःसारकोगुरुः ।
उष्णःशोषकरोबल्यःपुष्टिकृत्तुवरोमतः ॥
विषदृष्टिहरःप्रोक्तःपूर्ववैद्यैःकृपालुभिः । (र. नि.)

अर्थ-भटवासु-मधुर, रूखा, पचनेमें अम्ल, सारक, भारी, गरम, सूजनको करनेवाला, बलकारक, पुष्टिकारक, कषेला तथा विष और दृष्टिको हरनेवाला है ।

अन्यच्च ।

निष्पावस्तुवरोमेध्योदीपनोमधुरोरसे ।

कंठशुद्धिकरोरुच्योग्राहकोमुनिभिर्मतः ॥
निष्पावसदृशास्त्वन्येगुणाज्ञेयाश्चिकित्सकैः ॥

अर्थ--सफेद और नील निष्पाव--कडवे मेधाजनक, दीपन, रसमें मधुर, कंठशोधक, रुचिकारक और ग्राही हैं शेष गुण निष्पावके समान जानने।

रक्तनिष्पावगुणाः ।

रक्तनिष्पावकोरुच्योमधुरःशीतलोगुरुः ।
किञ्चित्कषायोबल्यश्चवातलःपुष्टिकृन्मतः ॥
आध्मानकृद्गुणास्त्वन्येनिष्पावसदृशामताः

अर्थ--लाल निष्पाव--रुचिकारक, मधुर, शीतल, भारी, किञ्चित्कषेला बलकारी, वातकारक, पुष्टिकारक, आध्मानकारक और गुण निष्पावके समान जानने ।

नदीनिष्पावगुणाः ।

नदीनिष्पावकस्तिक्तःकटुर्वातकरोगुरुः
रक्तप्रदःकफकरोरुचिकृत्तुवरोमतः ॥
विषदोषहरश्चैवमुनिभिः परिकीर्त्तितः । (नि. र.)

अर्थ–नदीनिष्पाव–कडवा, चरपरावातकारक, भारी, रक्तकारक, कफकारक, रुचिजनक, कषेला और विषके दोषोंको हरनेवाला है।

मसूरनामानि ।

मसूरोरागदालिस्तुमङ्गल्यःपृथुबीजकः ।
सूरःकल्याणबीजश्चगुरुबीजोमसूरकः ॥

अर्थ-मसूर, रागदालि, मङ्गल्य, पृथुबीजक, सूर, कल्याणबीज, गुरुबीज मसूरक (मङ्गल्यक, मसुर, व्रीहिकाश्चन, गभोलिक, ताम्बूलराग, हालासक, मसुरा, मसूरा, मसूरिका, मसूरि, मङ्गल्या, माङ्गल्या)

संस्कृतभाषामें	मसूर ।
हिन्दीभाषामें	मसूर ।
वंगभाषामें	मसूरि, कलाय ।
मराठीभाषामें	मसूर ।
गुजरातीभाषामें	मसूर ।
कर्णाटकीभाषामें	चणगी ।

तैलिंगीभाषामें मसूरपप्पु, चिरशनमलु ।
तामिलीभाषामें मिसुर, पुरपुर ।
अंग्रेजीभाषामें लेंटिल । Lentil
लैटिन्भाषामें ईरवेलेंस । Eravylens
फारसीभाषामें बुनोसुर्ख ।
अरबीभाषामें अदस् ।

मसूरगुणाः ।

मसूरोमधुरःशीतःसंग्राहीकफपित्तजित् ।
वातामयकरश्चैवमूत्रकृच्छ्रहरोलघुः ॥ (रा. नि.)

अर्थ-मसूर-मधुर, शीतल, मलरोधक, कफपित्तनाशक, वातरोगको करनेवाली, हलकी और मूत्रकृच्छ्र रोगको दूर करे है।

अन्यच्च ।

रूक्षोविशोषीमधुरःप्रदिष्टःशूलार्तिगुल्मग्रहणीविकारान्
करोतिवातामयवर्द्धनश्चपित्तास्रसंकृच्छ्रहरोमसूरः ॥(हा. सं.)

अर्थ-मसूर-रूखी, विशोषक, मधुर तथा शूल, गुल्म और संग्रहणीरोग को उत्पन्न करनेवालीहै, वातरोगको बढानेवाली तथा रक्तपित्त और मूत्रकृच्छ्र रोगको हरनेवाली है।

अन्यच्च ।

मासूरालघवोतिरूक्षविशदाश्चक्षुष्यमूत्रग्रहाः
श्लेष्मापित्तनिबर्हणारुचिकरावातव्यथाकारकाः ।
विष्टम्भंजनयन्तिकोष्ठधमनंकृच्छ्राश्मरीछेदकाः
सर्वैपित्तविकारजेषुविहिताहृद्याश्चमाधुर्यकाः ॥

अर्थ-मसूर-हलकी, अत्यंतरूखी, विशद, नेत्रोंको हितकारी, मूत्रग्रहनाशक, श्लेष्मपित्तनाशक, रुचिकारक, वातरोगकारक, विष्टम्भजनक, मलरोधक, मूत्रकृच्छ्र, पथरी और सर्व प्रकारके पित्तविकारोंको दूर करे है हृदयको हितकारी और मधुर है।

अपिच ।

मसूरोलेपनोवर्ण्योरूक्षोबद्धमलोहिमः ।
वाताध्मानकरःकिञ्चित्पित्तास्रकफहालघुः ॥

कषायोमधुरोमेदोहंताचासौप्रकीर्त्तितः ।
तत्पर्णशाकंतुवरंलघुतिक्तञ्चकीर्तितम् ॥

अर्थ–मसूरका लेप–वर्णको सुंदर करनेवाला और त्वचाके रोगोंको हरनेवाला है । मसूर--रूखी, मलवर्द्धक, शीतल, वातकारक, किंचित् आध्मानकारक, रक्तपित्त और कफनाशक, हलकी, कषेली, मधुर, मेदनाशक है। इसके पत्तोंका शाक--कषेला, हलका और कडवा है ।

चणकनामानि ।

चणकोहरिमन्थः स्याद्वाजिमन्थश्चजीवनः ।

अर्थ- चणक, हरिमंथ, वाजिमंथ, जीवन (हरिमंथक, हरिमंथज, चण, सुगंध, कृष्णचंचुक, बालभोज्य, वाजिभक्ष्य, कंचुकी, बालभैषज्य, सकलप्रिय ।

संस्कृतभाषामें	चणक ।
हिन्दीभाषामें	चने, चना, छोला ।
बंगभाषामें	छोलारगाछ, वुट ।
मराठीभाषामें	हरभरे ।
गुजरातीभाषामें	चण्या ।
कर्णाटकीभाषामें	कडले, विलीयकडले ।
तैलंगीभाषामें	शलंगालु ।
अंगेजीभाषामें	ग्राम । Gram
लैटिन्भाषामें	सीसरएरिएटिनं । Cicer Arietinum
फारसीभाषामें	नखूद ।
अरबीभाषामें	हुमस् ।

चणकगुणाः ।

चणकःशीतलोरूक्षोरक्तपित्तकफापहः ।
लघुःकषायोविष्टम्भीवातलःकुष्ठनाशनः ॥ (म. नि.)

अर्थः-चने-शीतल, रूखे, रक्तपित्तनिवारक, कफहारक, हलके कषेले विष्टम्भकारक, वातवर्द्धक और कुष्ठनाशक हैं ।

अन्यच्च ।

चणकोमधुरोरूक्षोमेहजिद्वातपित्तकृत ।

दीप्तिवर्णकरोबल्योरुच्यश्चाध्मानकारकः ॥ (रा. नि.)

अर्थ-चने-मधुर, रूखे, प्रमेहनाशक, वातपित्तकारक, दीपन, वर्णकारक, बलकारक, रुचिकारी और आध्मानको करनेवाले हैं।

अपिच ।

रक्तेकफेपीनसकेतुकण्ठगलामयेवातरुजेसपित्ते ।
शीतःप्रतिश्यायकृमीन्निहन्तिशुष्कस्तथार्द्रश्चणकःप्रशस्तः ।
(हा. सं.)

अर्थ-सूखे तथा गीले चने--रुधिरविकार, कफ, पीनस, कण्ठरोग, गलरोग, वातरोग, पित्तरोग, प्रतिश्याय और कृमिरोगको दूर करे हैं और शीतल हैं।

अन्यच्च ।

चणकोवातलःशीतःकफासृक्पित्तपुंस्त्वनुत् ॥ (रा. व.)

अर्थ--चने- बादी, शीतल तथा कफ, रक्तपित्त और पुरुषतानाशक हैं।

अन्यच्च ।

चणकःशीतलोरूक्षःपित्तरक्तकफापहः । लघुःकषायोविष्टम्भीवातलोज्वरनाशनः ॥ सचाङ्गारेणसंभृष्टस्तैलभृष्टश्चतद्गुणाः । आर्द्रभृष्टोबलकरोरोचनश्चप्रकीर्त्तितः ॥ शुष्कभृष्टोतिरूक्षश्चवातकुष्ठप्रकोपनः । स्विन्नःपित्तकफंहन्यात्सूपःक्षोभकरोमतः ॥ आर्द्रोतिकोमलोरुच्यःपित्तशुक्रहरोहिमः । कषायोवातलोग्राहीकफपित्तहरोलघुः ॥ (भा. प्र.)

अर्थ-चने--शीतल, रूखे, रक्तपित्तनाशक, कफघ्न, हलके, कषेले, विष्टम्भकारक, बादी और ज्वरनाशक हैं। वही चने अंगारों तथा तेलमें भुनेहुये पूर्वोक्त गुणोंको करनेवाले हैं। गीले भुनेहुये चने -बलकारक और रोचक हैं। सूखे भुने चने अत्यन्त रूखे तथा वात और कोढको कुपित करनेवाले हैं। सीजेहुये चने-पित्त और कफनाशक हैं। चनेकी दाल--क्षोभको करनेवाली है। कच्चे चने -अत्यन्तकोमल, रुचिकारक, पित्तनाशक, शुक्रनिवारक, शीतल, कषेले, वातकारक, मलरोधक, कफपित्तनाशक और हलके हैं।

अन्यच्च ।

आमश्चणःशीतलरुच्यकारीसन्तर्पणोदाहतृषापहारी ।

गौल्योश्मरीशोषविनाशकारीकषाईषत्कफवीर्य्यकारी(रा. नि.)

अर्थ--कच्चे-चने-शीतल, रुचिकारक, तृप्तिजनक, दाहनाशक, तृषानिवारक, गौल्य, अश्मरीको दूर करनेवाले, शोषनाशक, किञ्चित्कषैले, कफ और वीर्य्यकारक हैं।

अपिच भृष्टचणकगुणाः।

भृष्टस्तुचणकश्चोष्णोरुच्योरक्तरुजाकरः। लघुर्बल्यःशुक्रलश्चतेजोवृद्धिकरःस्मृतः॥ विनाजलेनचभृष्टाश्चातिरूक्षाश्चवातलाः। कुष्ठप्रवर्द्धनाःप्रोक्तागुणास्त्वन्येतुपूर्ववत्॥ (र. नि.)

अर्थ--भुनेहुये चने--गरम, रुचिकारी, रक्तरोगकारक, हलके, बलकारक, शुक्रजनक, शरीरको तेज देनेवाले तथा पसीना, शीतलता, आम, वात और श्रमका नाशकरे हैं। सूखे भुनेचने अत्यन्त रूखे, बादी, कुष्ठवर्द्धक और गुण पहिलेके समान जानने।

कृष्णचणकगुणाः।

कृष्णस्तुचणकःशीतोमधुरश्चरसायनः।
बलकृच्छ्वासकासघ्नःपित्तातीसारपित्तहा॥ (नि. र.)

अर्थ--काले चने-शीतल, मधुर, रसायन, बलकारक तथा श्वास, खांसी, पित्तातीसार और पित्तको दूर करे हैं।

चणकशाकगुणाः।

चणकानांदलंचाम्लंकिञ्चिद्वातप्रकोपनम्।
मलस्तम्भकरंरुच्यंतर्पणंचाग्निकारकम्॥
कफनाशकरंप्रोक्तंपूर्ववैद्यैःकृपालुभिः॥ (र. नि.)

अर्थ--चनेका शाक--अम्ल, किंचित् वातकारक, मलस्तम्भक, रुचिजनक, तृप्तिकारक, अग्निकारक और कफनाशक है।

अन्यच्च।

रुच्यंचणकशाकंस्याद्दुर्जरंकफवातकृत्।
अम्लंविष्टम्भजनकंपित्तनुदन्तशोथहृत्॥ (भा. प्र.)

अर्थ--चनेके पत्तोंका शाक--कषैला, कठिनतासे पचनेवाला, कफ और वातकारक, अम्ल, विष्टम्भजनक, पित्तनाशक और दांतोंकी सूजनको दूर करे है।

आढकीनामानि ।



आढकीतुवरीवर्य्यामृत्तालंचमृतालकम् ।
काक्षीकरवीरभुजावृत्तबीजासुराष्ट्रजम् ॥

अर्थ-आढकी, तुवरी, वर्य्या, मृत्ताल, मृतालक, काक्षी, करवीरभुजा, वृत्तबीजा, सुराष्ट्रज (पीतपुष्पा, मृत्स्ना, तुवरिका, मृतालक, शणपुष्पिका)

संस्कृतभाषामें	आढकी ।
हिन्दीभाषामें	अडहर ।
वङ्गभाषामें	अडहर, आइरि ।
मराठीभाषामें	तुरी ।
गुजरातीभाषामें	तुरदाल्य ।
कर्णाटकीभाषामें	कटलाकद्रु, तौगरी ।
तैलिंगीभाषामें	कादुलु ।
अंग्रजीभाषामें	पीजीअन्पी । Pigeon pea
लैटिन्भाषामें	केजेनस् इंडिकस् । Cajanus indieus
फारसीभाषामें	शाखुल ।

आढकीगुणाः ।

मुद्गःकषायाचसरक्तपित्तंवातंकफंहन्तिमुखव्रणञ्च ।
गुल्मज्वरारोचककासछर्दिहृद्रोगदुर्नामहराढकीस्यात्। (हा.)

अर्थ-अडहर-कषेली तथा रक्तपित्त, वात, कफ, मुखव्रण, गुल्म, ज्वर, अरुचि, खांसी, वमन, हृदयरोग और बवासीरको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

तुवर्यतिकषायाचमेदःश्लेष्मास्रपित्तजित् ।
विबन्धाध्मानकृत्स्वादुःस्वादुपाकाल्पवातला ॥
शीतलाबद्धविण्मूत्रालघ्वीरूक्षाप्रकीर्त्तिता ।(शो. नि.)

अर्थ-अडहर-अत्यन्त कषेली, मेद, कफ और रक्तपित्तनाशक है, विबन्धकारक, आध्मानकारक, स्वादिष्ठ, पचनेमें स्वादिष्ठ, किञ्चित् वातकारक, शीतल, मल और मूत्रको बाँधनेवाली, हलकी और रूखी है।

अपिच ।

आढकीमधुराकिञ्चिद्वातलाचकषायका । गुर्वीरुच्याग्राहिणीचरूक्षावर्ण्याचशीतला ॥ कफपित्तज्वरविषरक्तरुग्गुल्मवातनुत् । अर्शोनाशकराप्रोक्ताघृतयुक्ताचवातहा ॥ कफपित्तहरालेपैःसेकैर्मेदकफापहा । सुवरीदालिकापथ्याकिञ्चिद्वातकरामता ॥ कृमित्रिदोषशमनीघृतयुक्तात्रिदोषहा ।

अर्थ-साधारण अडहर-मधुर, किञ्चित् वातकारक, कषेली भारी, रुचिकारी, मलरोधक, रूखी, वर्णकारक, शीतल तथा कफ, पित्तज्वर, विष, रुधिरविकार, गुल्म वात और बवासीरको दूर करे है और घीके साथ वातका नाशकरे है। इसका लेप करनेसे कफ और पित्तका नाश होता है इसका सेक करनेसे मेद और कफ दूर होते हैं। इसकी दाल-पथ्य, किञ्चित् वातकारक तथा कृमि और त्रिदोषका नाशकरे है और घीयुक्त त्रिदोषनाशक है।

श्वेताढकीगुणाः ।

श्वेतातुतुवरीगुर्वीवातपित्तप्रकोपदा ।
अम्लपिपित्तकराग्राहिण्यपथ्याध्मानकारिणी ॥

अर्थ-सफेद अडहर-भारी, वातपित्तप्रकोपक, अम्लपित्तकारक, मलरोधक, अपथ्य और आध्मानकारक है ।

रक्ताढकीगुणाः ।

रक्तातुतुवरीरुच्याबल्यापथ्याज्वरापहा ।
पित्तसन्तापादिनानारोगनाशकरीमता ॥

अर्थ-लाल अडहर-रुचिकारक बलकारक, पथ्य, ज्वरनाशक तथा पित्त और सन्ताप इत्यादि नानाप्रकारके रोगोंको दूर करे है ।

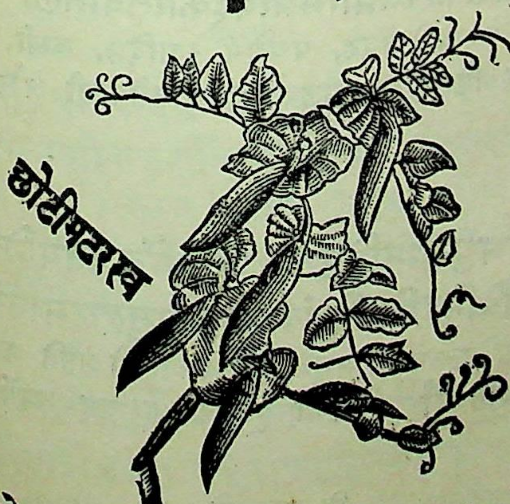
कृष्णाढकीगुणाः ।

कृष्णातुतुवरीबल्याचाग्निदीप्तिकरामता ।
पित्तदाहप्रशमनीऋषिभिःपरिकीर्त्तिता (रत्नाकर)

अर्थ-कालीअडहर-बलकारक, अग्निप्रदीपक, पित्त और दाहको शांति करनेवाली है ।

कलायनामानि ।





कलायोमुण्डचणकोहरेणूरेणुकःस्मृतः ॥

अर्थ-कलाय, मुण्डचणक, हरेणु, रेणुक, (सतीलक, हरेणु, खण्डिक,

त्रिपुट, अतिवर्तुल, शमन नीलक, छण्टी, सतील, सतीन, हरेणुक, सतीनक)

संस्कृतभाषामें	कलाय।
हिन्दीभाषामें	मटर, केराव।
वंगभाषामें	वाँटुला मटर, मठर, तेओडा मटर।
मराठीभाषामें	वाटाणे।
गुजरातीभाषामें	मटाणा।
कर्णाटकीभाषामें	वट्टकडले।
तैलङ्गीभाषामें	पेद्दइब्र्व।
अंग्रेजीभाषामें	फील्डपी। Field pea
लैटिन्भाषामें	पाईसम् सेटाइवम्। Pisum sativum

अस्य गुणाः।

कलायःकुरुतेवातंपित्तंदाहकफापहः।
रुचिपुष्टिप्रदःशीतःकषायश्चामदोषकृत्॥ (रा. नि.)

अर्थ--मटर--वातकारक, पित्तनाशक, दाहनिवारक, कफहारक, रुचिकारक, पुष्टिजनक, शीतल, कषेली और आमदोषको करे है।

अन्यच्च।

कलायोमधुरःस्वादुःपाकेरूक्षश्चशीतलः।
"रक्तहाकफपित्तघ्नोभिन्नविट्कोतिवातलः"॥ (भा. प्र.)

अर्थ--मटर--(केराव) मधुर, पचनेमें स्वादिष्ट, रूखी, शीतल, रुधिरविकारनाशक, कफपित्तहारक, मलको निकालनेवाली और वातको करनेवाली है।

अपिच।

किञ्चित्कषायामधुराःप्रदिष्टारक्तप्रशान्तिंजनयन्तिबल्याः।
किञ्चित्सवातंविनिहन्तिपित्तंकलायकामुद्गसमानरूपाः॥ (हि. सं.)

अर्थ -मटर -किञ्चित्कषेली, मधुर, रक्तविकारको शांति करनेवाली, बलकारक, किंचित् वात और पित्तको दूर करे है यह रूपमें मूँगके समान होती है।

त्रिपुटनामानि।

त्रिपुटःखण्डिकोपिस्यात्कथ्यन्तेतद्गुणाअथ॥

संस्कृतभाषामें त्रिपुट, खण्डिक ।
हिन्दीभाषामें खेसारी, कसूर÷कस्सा ।
बंगभाषामें खेसारिकलाय ।
मराठीभाषामें लांग, लांक ।
गुजरातीभाषामें मटर ।
तैलिंगीभाषामें लांक ।
अंग्रेजीभाषामें चिकिलिंगवेच । Chickling Vetch
लैटिन्भाषामें लेथिरस् सेटिवस् । Lathyrus Sativus
पिसं एवेन्स । Pisum Atvens
फारसीभाषामें मासंग, जलबान् ।
अरबीभाषामें हबुल बकर, खलज ।

त्रिपुटगुणाः ।

त्रिपुटोमधुरस्तिक्तस्तुवरोरूक्षणोभृशम् ।
कफपित्तहरोरुच्योग्राहकःशीतलस्तथा ॥
किन्तुखञ्जत्वपङ्गुत्वकरोवातातिकोपनः । (भा. प्र.)

अर्थ-त्रिपुट (खेसारी)--मधुर, कडवा, कषेला, अत्यन्त रूखा, कफ, पित्तनाशक, रुचिकारक, मलरोधक, शीतल, अत्यन्त वातको कुपित करनेवाला और खञ्जापन तथा लंगडेपनको देनेवाला है ।

अन्यच्च ।

रूक्षोविशोषीमधुरःप्रदिष्टःस्नायुंकरोत्यस्थिगतंबलिष्ठम् ।
शूलंविबन्धभ्रमशोफकर्त्तादाहार्शहृद्रोगविकारकारी॥(हा. सं.)

अर्थ--त्रिपुट (कस्सा)--रूखा, शोधक, मधुर, हड्डीकी नसोंको बलवान करनेवाला तथा शूल, विबन्ध, भ्रम, सूजन, दाह, बवासीर और हृदयरोगको उत्पन्न करेहै ।

अपिच ।

लाङ्कस्तुशीतलोरुच्योमधुरोवातकारकः । गुरुश्चतुवरोरूक्षः कफपित्तविनाशकः ॥ घृषभाणांहितःप्रोक्तःपर्णशाकातुवातला । रुच्यापित्तकफानांतुहननीपरिकीर्तिता ॥ (नि. र.)

अर्थ--त्रिपुट तथा लांक--खेसारी--शीतल, रुचिकारक, मधुर, वातकारक,

भारी, कषेली, रूखी, कफपित्तनाशक और बैलोंको हितकारी है। इसके पत्तोंका शाक--बादी, रुचिकारी तथा पित्त और कफनाशक है।

कुलित्थनामानि ।

कुलित्थस्ताम्रबीजश्चश्वेतबीजःसितेतरः ॥

अर्थ--कुलित्थ, ताम्रबीज, श्वेतबीज, सितेतर, (कालवृन्त, ताम्रवृक्ष, कुलत्थिका, ताम्रवृन्त, ताम्रबीज, कुलत्थ)

संस्कृतभाषामें	कुलित्थ ।
हिंदीभाषामें	कुलथी ।
वंगभाषामें	कुलथी कलाय ।
मराठीभाषामें	कुळीथ, हुलगे ।
गुजरातीभाषामें	कलथी ।
कर्णाटकीभाषामें	हुलुवलेतीसी ।
तैलिङ्गीभाषामें	बुलावुलु ।
अंग्रेजीभाषामें	टुफ्लावर्डडोलीकोस् । Two flowered dolichos
लैटिन्भाषामें	डोलीकोस् बाईफ्लोरस् । Dolichos Bitloros
फारसीभाषामें	किल्लत, मुंखहिंदी ।
अरबीभाषामें	हबुलकिलत ।

कुलत्थगुणाः ।

कुलत्थस्तुकषायोष्णोरूक्षोवातकफापहः ॥ (रा. नि.)

अर्थ- कुलथी--कषैली, गरम खाँखी, तथा वात, और कफनाशक है।

अन्यच्च ।

कुलत्थःकफवातघ्नोग्राह्युष्णोबृंहणःकटुः । गुल्मशुक्राश्मरीमेमेदःश्वासकासप्रमेहाजित् ॥ (राज०)

अर्थ--कुलथी--कफवातनाशक, मलरोधक, गरम, पुष्टिकारक, चरपरी तथा गुल्म, शुक्र, पथरी, मेद, श्वास, खसी, और प्रमेहको दूर करे है।

अन्यच्च ।

कुलत्थःकटुकःपाकेकषायःपित्तरक्तकृत् । लघुर्विदाही वीर्य्योष्णःश्वासकासकफानिलान् ॥ हन्तिहिक्काश्मरीशुक्रदाहानाहान्सपीनसान् ॥ स्वेदसंग्राहकोमेदोज्वरक्रिमिहरः परः ॥ (भा. प्र.)

अर्थ-कुलथी-पाकमें कटु, कषेली, रक्तपित्तकारक, हलकी, दाहजनक, उष्णवीर्य तथा श्वास, खाँसी, कफ, वात, हिचकी, पथरी, शुक्र, दाह, आनाह, पीनस, मेद, ज्वर और कृमिरोगको दूर करे है । तथा पसीनेको रोकनेवाली है ।

अन्यच्च ।

उष्णोजयेन्मारुतपीनसंतुकासप्रतिश्यायविबन्धगुल्मान् ।
हिक्कांसरक्तस्तुबलासपित्तंनिहन्तिमेदश्चकुलत्थकोऽयम् ।(हा.)

अर्थ-कुलथी--गरम, वात, पीनस, खाँसी, प्रतिश्याय, विबन्ध, गुल्म, हिचकी, रक्त, कफ, पित्त और मेदोरोगको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

वीर्य्येचोष्णाःकुलत्थाःकफपवनहराःपित्तरक्तप्रदाश्च ।
पाकेम्लाःश्वासकासोदरहृदयशिरोवस्तिशूलापहाश्च ।
मूत्राघाताश्मरीघ्नानयनगदहराःशुक्रविच्छेदनाश्च
श्रेष्ठादुर्नामकुष्ठश्वयथुगदयकृद्गुल्मतूनीगदेषु ॥

अर्थ--कुलथी—उष्णवीर्य्य, कफवातनाशक, रक्तपित्तजनक, पचनेमें अम्ल तथा श्वास, खाँसी, उदररोग, हृदयरोग, शिरोरोग वस्तिशूल, मूत्राघात, अश्मरी (पथरी), नेत्ररोग, शुक्र, बवासीर, कोढ, सूजन, यकृत्, गुल्म, और तूनीरोगको हरनेवाली है ।

अपिच ।

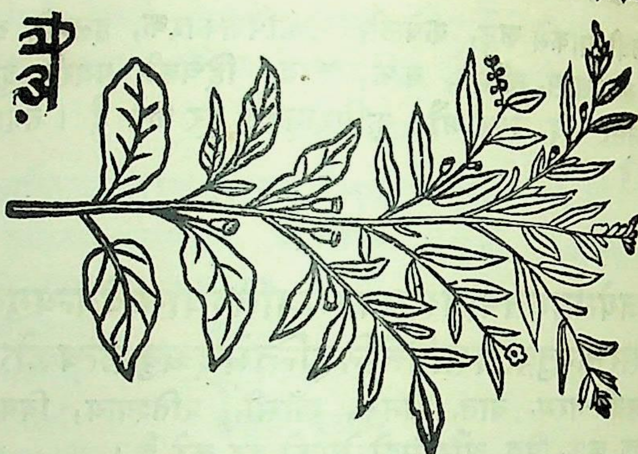
उष्णाःकुलत्थाःपाकेम्लाविषंस्थावरजङ्गमम् ।
कासार्शःकफवातांश्चघ्नन्तिंपित्तास्रदाःपरम् ॥ (वाग्भट)

अर्थ-कुलथी--गरम, पचनेमें अम्ल तथा स्थावरविष, जंगमविष, खाँसी, बवासीर, कफऔर वातका नाश करे है तथा रक्तपित्तको उत्पन्न करेहै ।

तिलनामानि ।

तिलस्तुहोमधान्यंस्यात्पवित्रःपितृतर्पणः ।
पापघ्नंपूतधान्यं च जटिलस्तुवनोद्भवः ॥

अर्थ- तिल, होमधान्य, पवित्र, पितृतर्पण, पापघ्न, पूतधान्य, जटिल, वनोद्भव (स्नेहफल, पूरफल, तैलफल)



संस्कृतभाषामें	तिल ।
हिन्दीभाषामें	तिल, कालेतिल, तिली ।
वङ्गलाभाषामें	तिलगाछ ।
मराठीभाषामें	तीळ, काळे तीळ, चोखे तीळ ।
गुजरातीभाषामें	तल ।
कर्णाटकीभाषामें	एलु ।
तैलिङ्गीभाषामें	तोवुल्ल, सञ्चिनूने, नुव्वुलु ।
तामिलीभाषामें	वाल्लेनेय ।
द्राविडीभाषामें	वारिकतिल ।
अंग्रेजीभाषामें	सिसेम नैजरसीडस् । Sisamum Nigerseeds
लैटिनभाषामें	सिसेमस् इंडिकम् । Sesam Indicum
फारसीभाषामें	कुंजद ।
अरबीभाषामें	सिमसिम ।

तिलगुणाः ।

तिलोरसेकटुस्तिक्तोमधुरस्तुवरोगुरुः । विपाकेकटुकःस्वादुःस्निग्धोष्णःकफपित्तकृत् ॥ बल्यःकेश्योहिमस्पर्शस्त्वच्यःस्तन्योव्रणेहितः । दन्त्योल्पमूत्रकृद्ग्राहीवातघ्नोतिमतिप्रदः ॥ कृष्णःश्रेष्ठतमस्तेषुशुक्लोमध्यमःस्मृतः । अन्येहीनतराःप्रोक्तास्तज्ज्ञैरक्तादयास्तिलाः ॥ (भा. प्र.)

अर्थ-तिल-चरपरे, कडवे, मधुर, कषेले, भारी, पचनेमें चरपरे, स्वादु, स्निग्ध, उष्ण कफपित्तकारक, बलवर्द्धक, केशोंको हितकारी, स्पर्शमें शीतल,

दाँतोंको हितकारी, स्तनोंमें दूध उत्पन्न करनेवाले व्रणरोगमें हितकारी, बालोंको हितकारक, अल्पमूत्रकारक, मलरोधक, वातविनाशक और बुद्धिको उत्पन्न करे हैं। सर्वतिलोंमें काले तिल उत्तम हैं, सफेद तिल मध्यम हैं, यह वीर्य्यवर्द्धक हैं और रक्तआदि तिल हीनगुणवाले हैं।

अन्यच्च।

"ईषत्कषायोमधुरःसतिक्तःसंग्राहिकःपित्तकरस्तथोष्णः।
तिलोविपाकेमधुरोबलिष्ठःस्निग्धोव्रणेलेपनपथ्यउक्तः॥
दन्त्योऽग्निजननोल्पमूत्रःस्तन्योथकेश्योनिलहागुरुश्च।
तिलेषुसर्वेष्वसितःप्रधानोमध्यःसितोहीनतरास्तथान्ये॥"

(आ. सं.)

अर्थ-तिल-किञ्चित्कषेले, मधुर, कडवे, मलरोधक, पित्तकारक, गरम, पचनेमें मधुर, स्निग्ध, व्रणके लेपमें पथ्य, दाँतोंको हितकारी, अग्निजनक, अल्पमूत्रकारक, स्तनोंमें दूध उत्पन्न करनेवाले, केशोंको हितकारी, वातहारी और भारी हैं। सर्व तिलोंमें काले तिल प्रधान हैं, सफेद मध्यम और दूसरे अधम हैं।

अस्य पिण्याक गुणाः।

पिण्याकंमधुरंरुच्यंतीक्ष्णंनेत्रविकारकृत।
मलावष्टम्भकंरूक्षंकफवातप्रमेहनुत॥
पित्तास्रबलपुष्टिश्चददातीतिभिषङ्मतम्। (नि. र.)

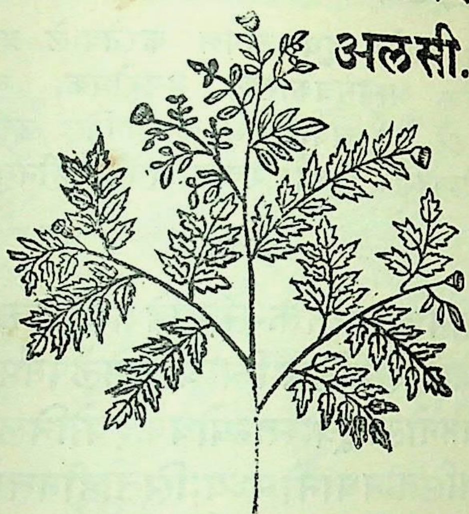
अर्थ-तिलोंकी खल-मधुर, रुचिकारक, तीक्ष्ण, नेत्रविकारको करनेवाली, मलस्तंभक, रूखी, कफ, वात और प्रमेहनाशक हैं, रक्तपित्त, बल और पुष्टिको देनेवाली है।

अतसीनामानि।

अतसीपिच्छिलादेवीमदगन्धामदोत्कटा।
उमाक्षुमाहैमवतीसुनीलानीलपुष्पिका॥

अर्थ-अतसी, पिच्छिला, देवी, मदगन्धा, मदोत्कटा, उमा, क्षुमा, हैमवती, सुनीला, नीलपुष्पिका. (चणका, क्षौमी, रुद्रपत्नी, सुवर्चला, नीलपुष्पी पार्वती मसृणा, तैलोत्तमा)

अलसी.



संस्कृतभाषामें	अतसी।
हिन्दीभाषामें	अलसी, तिसी, मसीना।
वंगभाषामें	मसिना, तिसी।
मराठीभाषामें	जवस, अळशी।
गुजरातीभाषामें	अलशी।
कर्णाटकीभाषामें	असगे।
तैलिङ्गीभाषामें	नल्लपगसिंचट्टु।
अंग्रेजीभाषामें	कामन् फ्लेक्ससीड Common flaxseeds, Linseeds
लैटिन्भाषामें	लीनीसेमीना। Lini Semina
	लीनंउसिटेटिसिम। Linum Usitatissimum
फारसीभाषामें	तुख्मेकतान।
अरबीभाषामें	बजरुलकतान।

अतसीगुणाः।

अतसीमदगन्धास्यान्मधुराबलकारिका।
कफवातकरीचेषत्पित्तहृत्कुष्ठवातनुत् ॥ (रा. नि.)

अर्थ-अलसी-मदगन्धयुक्त, मधुर, बलकारक, किंचित् कफवातकारक, पित्तनाशक तथा कुष्ठ और वातको दूर करे है।

अन्यच्च।

अतसीमधुरातिक्तास्निग्धापाकेकटुर्गुरुः।
उष्णाहृक्छुक्रवातघ्नीकफपित्तविनाशिनी ॥ (भा. प्र.)

अर्थ-अलसी-मधुर, कडवी, स्निग्ध, पचनेमें चरपरी, भारी, गरम तथा ... शुक्र, वात और कफ पित्तका नाश करनेवाली है।

अन्यच्च ।

असतीशुक्रदृष्टिघ्नीस्निग्धावातास्रजिद्गुरुः ॥ (म. नि.)

अर्थ-अलसी- शुक्रनाशक, दृष्टिनाशक, स्निग्ध, वातरक्तविनाशक और ...ती है।

अपिच ।

अतसीमधुरास्निग्धागुर्वीचोष्णाबलप्रदा ।
पाकेकटूवीचतिक्ताचकफवातव्रणापहा ॥
पृष्ठशूलंचशोथंचपित्तंशुक्रंदृशंजयेत् ।
पर्णमस्याःकासकफवातनुच्छ्वासहृत्तथा ॥ (नि.र.)

अर्थ-अलसी--मधुर, स्निग्ध, भारी, गरम, बलकारक, पचनेमें चरपरी-...री तथा कफ, वात, व्रण, पृष्ठशूल, सूजन, पित्त, शुक्र और दृष्टिका नाश ...रे है। इसके पत्तेखांसी, कफ, वात और श्वासको दूर करे करे हैं।

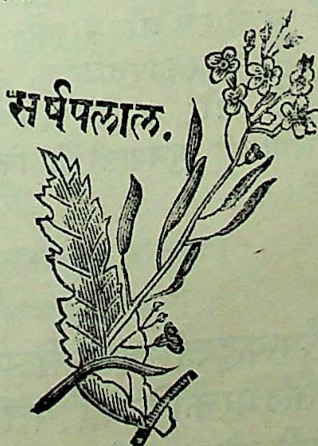
सर्षपनामानि ।

सर्षपःकटुकस्नेहोभूतघ्नोरक्षिताफलः ।
उग्रगन्धोग्रहघ्नश्चतन्तुभोथकदम्बकः ॥

अर्थ--सर्षप, कटुकस्नेह, भूतघ्न, रक्षिताफल, उग्रगन्ध, ग्रहघ्न, तन्तुभ ...दम्बक (सरिषप,कदम्बद, बिम्बट, कदम्ब,तन्तुक,कटुस्नेह,राजक्षवक)।

गौरसर्षपनामानि ।





तीक्ष्णकश्चदुराधर्षोरक्षोघ्नःकुष्ठनाशनः ।
सिद्धप्रयोजनःसिद्धसाधनःसितसर्षपः ॥

अर्थ-तीक्ष्णक, दुराधर्ष, रक्षोघ्न, कुष्ठनाशन, सिद्धप्रयोजन, सिद्धसाधन सितसर्षप (गौर, अनध्य, सिद्धार्थ, भूतनाशन, कटुस्नेह, ग्रहघ्न, कण्डूघ्न, राजिकाफल, गुरुघ्न)

संस्कृतभाषामें	सर्षप, गौरसर्षप ।
हिन्दीभाषामें	सरसों, सफेदसरसों ।
वंगभाषामें	सरिषा, सर्षे, श्वेतसर्षे ।
मराठीभाषामें	शिरस, श्वेतशिरस ।
गुजरातीभाषामें	शरशव ।
कर्णाटकीभाषामें	बिलीयसासेत्र ।
तैलिङ्गीभाषामें	पाचाअश्वालु ।
अंग्रेजीभाषामें	सिनापिस्आल्वा । Sinapisalba
लैटिन्भाषामें	ब्रेसिका कैंपेसूट्रिन् । Brassficacampestris
फारसीभाषामें	सर्षफ ।
अरबीभाषामें	उर्फेअबीयद ।

सर्षपगुणाः ।

सर्षपस्तुरसेपाकेकटुर्हृद्यःसतिक्तकः । तीक्ष्णोष्णःकफवातघ्नो रक्तपित्ताग्निवर्द्धनः॥रक्षोहरोजयेत्कण्डूकुष्ठकोष्ठकृमिग्रहान् । यथारक्तस्तथागौरःकिन्तुगौरोवरोमतः ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-सरसों रस और पाकमें--चरपरी हैं, स्निग्ध, कडवी, तीक्ष्ण, गरम, कफवातनाशक, रक्तपित्तजनक, अग्निवर्द्धक, तथा राक्षसबाधा, कण्डू, कुष्ठ, कोढ, कृमि और ग्रहकी बाधाको दूर करनेवाली हैं, लाल और सफेद सरसों समानही गुणवाली हैं, किन्तु तो भी सफेद सरसों लालकी अपेक्षा उत्तम हैं ।

अन्यच्च ।

सर्षपःकटुकस्तिक्तस्तीक्ष्णश्चोष्णोग्निदीपनः । किंचिद्रूक्षः पित्तलश्चरक्तपित्तकरोमतः ॥ रूक्षोवातंकफंकण्डूंकुष्ठंशूलं कृमीञ्जयेत्।ग्रहपीडांचपीडांचनाशयेदितिकीर्त्तितः॥(नि. र.)

अर्थ-सरसों-चरपरी, कडवी, तीक्ष्ण, गरम, अग्निप्रदीपक, किञ्चित् रूखी, रक्तकारक, रक्तपित्तजनक, रूक्ष तथा वात, कफ, कण्डू, कुष्ठ, शूल, कृमि, ग्रहपीडा और पीडाको दूर करे है ।

सिद्धार्थगुणाः ।

सिद्धार्थःकटुकस्तिक्तोरुच्योष्णोवातरक्तकृत् ।
ग्रहपीडार्शत्वग्दोषशोथव्रणविषापहः ॥

अर्थ—सफेद सरसों--चरपरी, कडवी, रुचिकारक, गरम, वातरक्तकारक तथा ग्रहपीडा, बवासीर, त्वचाके दोष, सूजन, व्रण और विषका नाश करे है ।

सर्षपशाकगुणाः ।

पर्णशाकासराचाम्लापित्तलातुवरागुरुः ।
स्वाद्वीचोष्णाचपट्वीचकफनाशकरीमता ॥ (नि. र.)

अर्थ—सरसोंके पत्तोंका शाक--सारक, अम्ल, पित्तकारक, कषेला, भारी, स्वादिष्ठ, गरम, खारी और कफहारी है ।

राजिकानामानि ।

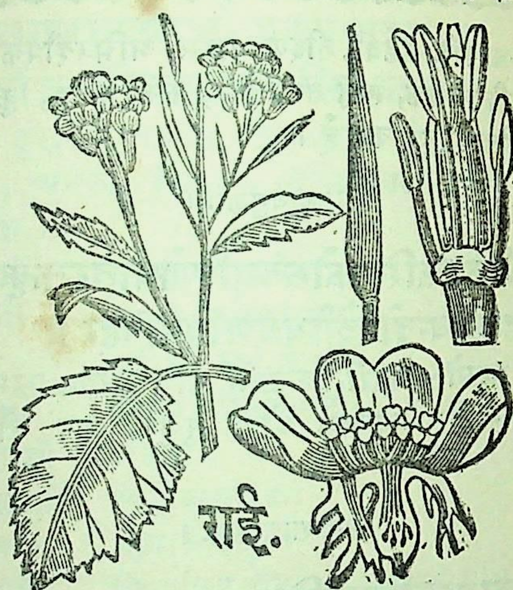
राजीतुराजिकातीक्ष्णगन्धाक्षुज्जनिकासुरी ।
क्षवःक्षुताभिजनकःक्रिमिकःकृष्णसर्षपः ॥

अर्थ—राजी, राजिका, तीक्ष्णगन्धा, क्षुज्जनिका, आसुरी, क्षव, क्षुताभिजनक, कृमिक, कृष्णसर्षप (क्षुधाभिजनन, कृष्णिका, कटु, असुरी, काकोदुम्बरिका, रक्तिक, रक्तसर्षप, अतितीक्ष्णा, मधुरिक, क्षवक, क्षुतक, क्षव, ज्वलन्ती, ज्वलत्प्रभा)

राजसर्षपनामानि ।

राजक्षवकःकृष्णातीक्ष्णफलाराजिकाराज्ञी ।
साकृष्णसर्षपाविज्ञेयाराजसर्षपाख्याच ॥

अर्थ—राजक्षवक, कृष्णा, तीक्ष्णफला. राजिका, राज्ञी, कृष्णसर्षपा, राजसर्षप (कृष्णिका, सूरी, मुष्टक, व्यष्टक, कटुक, क्षव, क्षुताभिजनन, क्षुधाभिजनन)



संस्कृतभाषामें	राजिका, राजसर्षप ।
हिन्दीभाषामें	राई, लाई ।
बंगभाषामें	राइसर्षे, कालसर्षे, राजसर्षा, राइसरिषा।
मराठीभाषामें	मोहरी, रायी ।
गुजरातीभाषामें	राइ जम्बुसरी अने देशी
कर्णाटकीभाषामें	सासिराई ।
तैलिङ्गीभाषामें	वर्णालु ।
अंग्रेजीभाषामें	मस्टर्ड सीड्स् । Mustrd Seeds
लैटिन्भाषामें	सिनापिस् नाईग्रा ब्रोसेका नाईग्रा । Sinapis nigra, Brossica Nigra
अरबीभाषामें	खरदल ।

राजिकागुणाः ।

आसुरीकटुतिक्तोष्णावातप्लीहार्त्तिशूलनुत् ।
दाहपित्तप्रदाहन्तिकफगुल्मकृमिव्रणान् ॥ (रा. नि.)

अर्थ—राई- चरपरी, कडवी, गरम, वात, प्लीहा और शूलनाशक है। दाहजनक, पित्तकारक, तथा कफ, गुल्म और कृमिरोगको हरनेवाली है।

अन्यच्च ।

राजिकाकफपित्तघ्नीतीक्ष्णोष्णारक्तपित्तकृत् ।
किञ्चिद्रूक्षाग्निदाकण्डूकुष्ठकोष्ठकृमीन्हरेत् ॥ (भा. प्र.)
अतितीक्ष्णाविशेषेणतद्वत्कृष्णापिराजिका ।

अर्थ-राई-कफपित्तनाशक, तीक्ष्ण, गरम, रक्तपित्तकारक, किंचित् ... अग्निवर्द्धक, तथा कण्डू, कुष्ठ, कोष्ठरोग और कृमिरोगको दूरकरे है। ... राईके भी गुण राईके समान हैं, विशेष करके अत्यन्त तीक्ष्ण है ।

राजसर्षप गुणाः ।

राजसर्षपकश्चोष्णःपित्तलोदाहकारकः।
कटुस्तिक्तोगुल्मकुष्ठकण्डूव्रणरुजापहः ॥
वातशूलंनाशयतीत्येवंपूर्वैर्निवेदितम् ।

अर्थ-राजसर्षप-गरम, पित्तजनक, दाहकारक, चरपरी, कडवी तथा ... कुष्ठ, कण्डू, व्रण और वात शूलका नाश करे हैं ।

राजिकापत्रशाकगुणाः ।

राजिकापर्णशाकातुकट्वीचोष्णाबलप्रदा ।
स्वाद्वीपित्तकरीज्ञेयाकृमिवातकफापहा ॥
कण्ठरोगहराचोक्तापूर्वैः सूज्ञाचिकित्सकैः । (नि. र.)

अर्थ-राईके पत्तोंका शाक-चरपरा, गरम, बलकारक, स्वादिष्ठ, पित्त ... कृमिनाशक, वातकफनाशक, और कण्ठरोगको दूर करे है ।

तृणधान्यनामानि ।

क्षुद्रधान्यंकुधान्यंचतृणधान्यमितिस्मृतम् ॥

अर्थ-क्षुद्रधान्य, कुधान्य, तृणधान्य ।

तृणधान्य गुणाः ।

तृणधान्यमनुष्णंस्यात्कषायंलघुलेखनम् ॥
मधुरंकटुकंपाकेरूक्षंचक्लेदशोषकम् ॥
वातकृद्बद्धविट्कञ्चपित्तरक्तकफापहम् । (भा. प्र.)

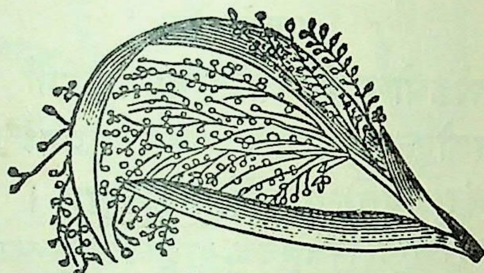
अर्थ-तृणधान्य--अनुष्ण, कषेले, हलके, लेखन, मधुर, पचनेमें चरपरे ... क्लेदशोषक, वातवर्द्धक, मलबंधक तथा पित्तरक्त और कफनाशक है ।

अन्यच्च ।

तृणधान्यंलघुस्वादुपाकेकटुचलेखनम् । मलबन्धकरंरूक्षं तुवरंमधुरंमतम् ॥ क्लेदशोषकरंचोष्णंवातलंपित्तलंतथा ॥ कफनाशकरंचैवपूर्ववैद्यैरुदाहृतम् ॥ (नि. र.)

अर्थ--तृणधान्य--हलके स्वादिष्ठ, पाकमें कटु. लेखन, मलबंधक कषेले, मधुर, क्लेदशोषक, गरम, वादी, पित्तकारक, और कफनाशक है।

कंगुनामानि ।



स्त्रियांकंगुःप्रियंगुद्वेकृष्णारक्तासितातथा ।
पीताचतुर्विधाकंगुस्तासांपीतावरास्मृता ॥

अर्थ--कंगु, प्रियंगु (प्रियंगू, कंगू, कंगुका कंगुनीका, कंगूनी, चीन पीततण्डुल) ।

संस्कृतभाषामें	कंगु ।
हिन्दीभाषामें	कंगुनी, कांगनी, कंगनी ।
बंगभाषामें	कांगुनी, कांनिधान ।
मराठीभाषामें	कांग ।
गुजरातीभाषामें	कांग ।
कर्णाटकीभाषामें	नवणे ।
तैलिङ्गीभाषामें	कोर्रलु ।
लेटिन्भाषामें	पेनिकं मिलियेस्यं । Panicum Miliaceum
फारसीभाषामें	गल ।

कंगनी--काली, लाल, सफेद, और पीली, इन भेदोंसे चार प्रकारकी है इनमें पीली कङ्गनी उत्तम है ।

कंगुगुणाः ।

कंगुस्तुवातसन्धानवातकृद्बृंहणोगुरुः ।
रूक्षाश्लेष्महरातीववाजिनांगुणकृद्भृशम् ॥ (भा. प्र.)

अर्थ- कंगनी--भग्नसन्धानकारक, वातकारक, पुष्टिकारक, भारी, रूखी कफनाशक और घोडोंके लिए अत्यन्त उपकारी है ।

अन्यच्च ।

प्रियङ्गुर्मधुरोरुच्यःकषायःस्वादुशीतलः ।
वातकृत्पित्तदाहघ्नोरूक्षोभग्नास्थिसन्धिकृत् ॥

अर्थ-कंगनी -मधुर, रुचिकारक, कषेली, स्वादिष्ठ, शीतल, वादी, पित्त और दाहनाशक, रूखी, भग्न और हड्डीको जोडनेवाली है ।

अन्यच्च ।

कङ्गुःशीतोवातकरोरूक्षोवृष्यःकषायकः । धातुवृद्धिकरः स्वादुर्गुरुश्चाश्वहितावहः ॥ भग्नास्थिसन्धानकरोगर्भपाते हितावहः । कफपित्तहरश्चायंकृष्णरक्ताच्छपीतकैः ॥ वर्णै श्चतुर्धासमतोगुणैश्चोत्तरतोधिकः ॥

अर्थ-कंगनी--शीतल, वातकारक, रूखी, वृष्य, कषेली,धातुवर्द्धक,स्वादिष्ठ, भारी, अश्वोंको हितकारी, भग्नास्थिसन्धानकारक,गर्भके गिरानेमें हितकारी, कफपित्तनाशक है; यह कृष्ण, रक्त, सुफेद और पीली इन भेदोंसे चारप्रकारकी है, इनमें एकसे एकके अधिक गुण हैं ।

चीनकनामानि ।

चीनकःकाककंगुश्चसुश्लक्ष्णःश्लक्ष्णकःस्मृतः ॥

अर्थ-चीनक, काककंगु, सुश्लक्ष्ण, श्लक्ष्णक (कंगु) ।

संस्कृतभाषामें	चीनक ।
हिन्दीभाषामें	चीना, चैना ।
वंगभाषामें	चिने ।
मराठीभाषामें	राळे ।
गुजरातीभाषामें	चीणो ।
कर्णाटकीभाषामें	चीनक ।
अंग्रेजीभाषामें	मीलेट । Millet
लैटिन्भाषामें	पेनिकंमिलियेरी । Panicum Miliari
फारसीभाषामें	उरजान ।
अरबीभाषामें	बारेगा ।

चीनकगुणाः ।

चीनकःकङ्गुभेदोऽस्तिसज्ज्ञेयःकंगुवद्गुणैः ॥ (भा. प्र.)

अर्थ--चीनाधान कंगनीका भेद है। इसकारण इसके गुणभी कंगनीकी समान जानने।

नीवारनामानि।



नीवारोरण्यधान्यंस्यान्मुनिधान्यंतृणोद्भवम् ॥

अर्थ--नीवार, अरण्यधान्य, मुनिधान्य, तृणोद्भव (तृणधान्य, वनव्रीहि, अरण्यजालि, प्रसाधिका)

संस्कृतभाषामें	नीवार।
हिंदीभाषामें	तिली, तीनी, तीली।
वंगभाषामें	उडीधान्य।
मराठीभाषामें	देवभात।
गुजरातीभाषामें	वंटी।
कर्णाटकीभाषामें	ज्यरहुसेधे।
तैलिङ्गीभाषामें	निवरिवट्टु।
लैटिन्भाषामें	पेनिकं इटालिकं। Panicum Italicum

नीवारगुणाः।

नीवारोमधुरःस्निग्धःपवित्रःपथ्यदोलघुः ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ- नीवारधान्य--मधुर, स्निग्ध, पवित्र, पथ्य और हलके हैं।

अन्यच्च।

नीवारःशीतलोग्राहीपित्तघ्नःकफवातकृत ॥ (भा. प्र.)

अर्थ--नीवारधान्य--शीतल, मलरोधक, पित्तनाशन तथा वात कफ और नाशकारक है।

अपिच।

नीवारःश्लेष्मलोरूक्षःकषायोवातलोहिमः।

लेखनोबद्धविण्मूत्रःस्वादुःपित्तहरोलघुः ॥(शो. नि.)

अर्थ-नीवारधान्य--कफकारी, रूखे, कषेले, बादी, शीतल, लेखन, मल और मूत्रको बांधनेवाले, स्वादिष्ठ, पित्तनाशक और हलके हैं ।

वरकनामानि ।

वरकःस्थूलकंगुश्चरूक्षःस्थूलप्रियंगुकः ।

अर्थ-वरक, स्थूलकङ्गु, रूक्ष, स्थूलप्रियंगु (स्थूलकंगू)

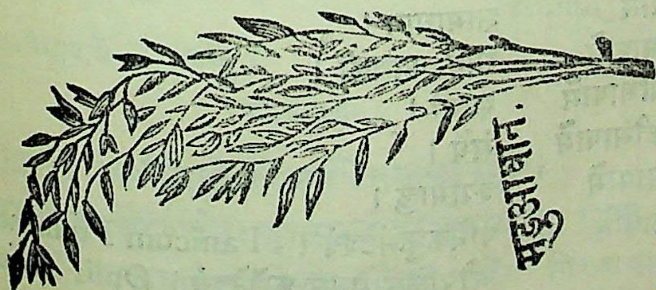
वरकगुणाः ।

वरकोमधुरोरूक्षःकषायोवातपित्तकृत् ॥ (रा०नि०)

अर्थ-वरक, (चीनाभेद) मधुर, रूखे, कषाय और वातपित्तकारक है। यह कंगनीकाही भेद है ।

संस्कृतभाषामें	वरक
हिन्दीभाषामें	चीनाभेद ।
बंगभाषामें	चीनाविशेष ।
मराठीभाषामें	वऱ्या ।
गुजरातीभाषामें	वऱ्यो ।
लेटिन्‌भाषामें	पेनिकंमिलीयेरी कहते हैं ।

नर्त्तकनामानि ।



नर्त्तकोनृत्यकुण्डश्चभूचराचमलीयसः ।
कठिनोगुच्छकणिशोलञ्छनोबहुपत्रकः ॥

अर्थ-नर्त्तक, नृत्यकुण्ड, भूचरा, मलीयस, कठिन, गुच्छ, कणिश, लञ्छन, बहुपत्रक ।

संस्कृतभाषामें	नर्त्तक ।
हिन्दीभाषामें	नर्त्तक मडुआ ।
मराठीभाषामें	नाचणी, नागली ।

गुजरातीभाषामें	नागली।
कर्णाटकीभाषामें	टपिगुचणे।
अंग्रेजीभाषामें	फ्रिक्स्पाइक्ड एल्युसीन। Thrick Spiked Elensinc
लैटिन्भाषामें	इल्युसाइन कारेकेना। Elensine Coracana
फारसीभाषामें	मंडवा।

अस्य गुणाः।

नर्त्तकस्तुवरस्तिक्तोमधुरस्तर्पणोलघुः।बल्यःशीतःपित्तहरस्त्रि-दोषशमनोमतः॥रक्तदोषहरश्चैवमुनिभिःपूर्वमीरितः। (नि. र.)

अर्थ--नर्त्तक--कषेले, कडवे, मधुर, तृप्तिकारक, हलके, बलकारक, शीतल, पित्तनाशक, त्रिदोषनिवारक, और रुधिरके दोषोंको दूर करे है।

श्यामाकनामानि।

श्यामाकःश्यामकःश्यामस्त्रिबीजःस्यादविप्रियः।
सुकुमारो राजधान्यं तृणबीजोत्तमश्च सः॥

अर्थ--श्यामाक, श्यामक, श्याम, त्रिबीज, अविप्रिय. सुकुमार, राजधान्य, तृणबीजोत्तम।

संस्कृतभाषामें	श्यामाक।
हिन्दीभाषामें	समा।
बंगभाषामें	शामाधान।
मराठीभाषामें	सांवे, काथली।
गुजरातीभाषामें	शामो।
कर्णाटकीभाषामें	संधे।
तैलङ्गीभाषामें	श्यामालु।
लैटिनभाषामें	पेनिकंफ्रुमेंटेश्यं। Panicum Frumentaceum ओपलिस् मेनस् फ्रुमेंटेश्यं। Oplis menus Frumentaceum
फारसीभाषामें	शामाख्।

श्यामाकगुणाः।

श्यामाकोमधुरःस्निग्धःकषायोलघुशीतलः।
वातकृत्कफपित्तघ्नःसंग्राहीविषदोषनुत्॥ (रा० नि०)

अर्थ--समा -मधुर, स्निग्ध, कषेला, हलका, शीतल, वातकारक, कफपित्तनाशक, मलरोधक और विषके दोषोंको दूर करे है।

अन्यच्च ।

श्यामाकःशोषणोरूक्षोवातलःकफपित्तनुत् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-समा-शोषक, रूखा, वादी और कफपित्तनाशक है ।

कोद्रवनामानि ।

कोद्रवःकोरदूषःस्यादुद्दालोवनकोद्रवः ॥

अर्थ-कोद्रव, कोरदूष, (कुद्रव, कोरदूषक, कोरदुष्क, कोद्दार, कोद्दाल, मदनाग्रक, कोर्द्रव) उद्दाल और वनकोद्रव यह दो नाम वनकोद्रवके हैं ।

संस्कृतभाषामें	कोद्रव ।
हिन्दीभाषामें	कोदों ।
बङ्गभाषामें	कोदोधान्य ।
मराठीभाषामें	हरीक, कोद्रू ।
गुजरातीभाषामें	कोदरो, जङ्गलीकोदरो ।
कर्णाटकीभाषामें	हारकं ।
तैलिंगीभाषामें	आलुवालु ।
अंग्रेजीभाषामें	पंकचर्ड पासपेलं । Punctured Paspalum
लैटिन्भाषामें	पासपेलं स्क्रोबिटयुटेल्यम् । Paspalum Scrobicatalium
औत्कलीभाषामें	कोद्रु ।

कोद्रवगुणाः ।

कोद्रवोवातलोग्राही हिमःपित्तकफापहः ।
उद्दालस्तुभवेदुष्णोग्राहीवातकरोभृशम् ॥ (भा. प्र.)

अर्थ-कोदों-वातकारक, मलरोधक, शीतल, और पित्तकफनाशक हैं, वनकोदों-गरम, मलरोधक और वातकारक है ।

अन्यच्च ।

कोद्रवोमधुरस्तिक्तोव्रणिनांपथ्यकारकः ।
कफपित्तहरोरूक्षोमोहकृद्वातलोगुरुः ॥

अर्थ-कोदों-मधुर, कडवे, व्रणरोगवालोंको पथ्य, कफपित्तनाशक, रूखे, मोहकारक, वादी और भारी हैं ।

अन्यच्च ।

कोरदूषः परंग्राही स्पर्शशीतो विषापहः ॥ (वाग्भट)

अर्थ--कोदों--अत्यंत मलरोधक, स्पर्शमें शीतल और विषनाशक हैं।

। अन्यच्च ।

रूक्षो ग्राही कोद्रवः स्याद्रक्तपित्तविशोधनः ।
नात्यन्तकफकृत्प्रोक्तो रुच्यः स्वादुः प्रकीर्त्तितः ॥ (हा. सं.)

अर्थ--कोदों-रूखे, ग्राही, रक्तपित्तशोधक, अत्यंत कफकारक नहीं. रुचिकारी और स्वादिष्ठ हैं ।

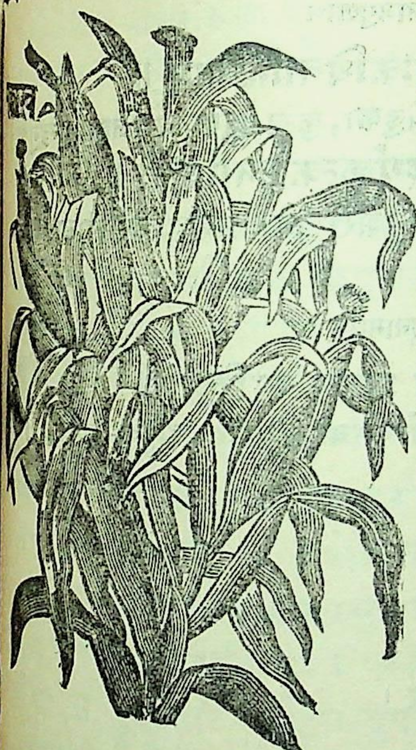
अपिच ।

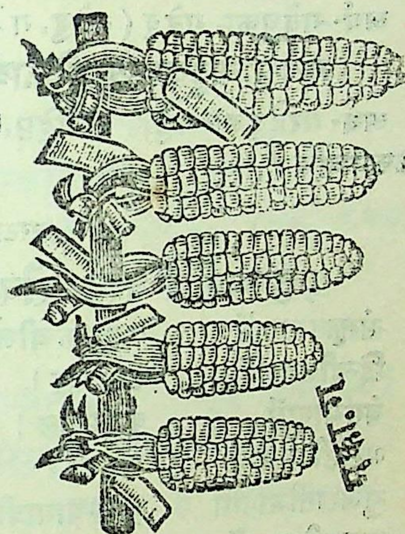
कोद्रवो बद्धविण्मूत्रो वातलो लेखनो लघुः ।
विषपित्तकफामघ्नो कषायो रक्तपित्तजित् ॥
स्पर्शः शीतः परं ग्राही मधुरो रूक्ष शीतलः ॥
उद्दालकस्तु वीर्य्योष्णो लेखनो वातलो लघुः ।
रूक्षः स्वादुः कषायश्च श्लेष्मजिद्बद्धमूत्रविट् ॥ (शो. नि.)

अर्थ--कोदों-मलमूत्रवर्द्धक, वातकारक, लेखन, हलके, विषविनाशक, पित्तनिवारक, कफघ्न, आमनाशक, कषेले और रक्तपित्तको दूर करनेवाले स्पर्शमें शीतल, अत्यंतग्राही, मधुर, रूखे और शीतल हैं। वनकोदों-उष्ण वीर्य लेखन, वादी, हलके रूखे, स्वादिष्ठ, कषेले, कफनाशक और मलमूत्रवर्द्धक हैं ।

कटिधान्यनामानि ।







मकायस्तुमहाकायोकटिजःकांडजःस्मृतः ।
शिखालुःसंपुटांतस्थोयावनालसमोगुणैः ॥

अर्थ-मकाय, महाकाय, कटिज, कांडज, शिखालु, संपुटांतस्थ । इसके गुण ज्वारके समान हैं ।

संस्कृतभाषामें	मकाय, महाकाय ।
हिन्दीभाषामें	मक्का, भुंटे ।
मराठीभाषामें	मका ।
गुजरातीभाषामें	मकाई ।
तेलङ्गीभाषामें	जनपटलु ।
अंग्रेजीभाषामें	इंडियन् कोर्नमेझ । Indian Corn Maize
लैटिनभाषामें	झियामेझ । Zia-Maize

अस्य गुणाः ।

महाकायस्तृप्तिकरोवातलःकफपित्तहृत् ।
विष्टम्भजनकोरूक्षःकोमलोरुचिपुष्टिकृत् ॥

अर्थ-तृप्तिकारक, बादी, कफपित्तनाशक, विष्टम्भकारक और रूखी है । कोमलमक्का-पुष्टि और रुचिको करनेवाली है ।

गवेधुकानामगुणाश्च

गवेधुकातुविद्वद्भिर्गवेधुःकथितास्त्रियाम् ॥

अर्थ--गवेधुका, गवेधु (गवेडु, गवेडुका, कुन्त, क्षुद्रा, गोजिह्वा, गुन्द्रगुत्थ)

गवेधुःकटुकास्वाद्वीकार्श्यकृत्कफनाशिनी ॥ (भा. प्र.)

अर्थ- गरहेडुआ--कटु, स्वादिष्ट, शरीरको कृश करनेवाला और कफनाशक है ।

वरटानामानि ।

कुसुम्भबीजं वरटा सैव प्रोक्ता वरट्टिका ॥

संस्कृतभाषामें	कसूमके बीजोंको वरटा और वरट्टिका कहते हैं।
हिन्दीभाषामें	कर्र, कर ।
वंगभाषामें	कुसुमफल ।
मराठीभाषामें	कडर्या ।
गुजरातीभाषामें	कुसुम्बानावी ।
फारसीभाषामें	तुख्म काषशा ।
अरबीभाषामें	हबुल् अस्फर ।

अस्या गुणाः ।

वरटामधुरास्निग्धारक्तपित्तकफापहा ।
कषायाशीतलागुर्वीस्वादुर्वृष्यानिलापहा ॥ (भा. प्र.)

अर्थ--कर्र--मधुर, स्निग्ध, रक्तपित्तनाशक, कफघ्न, कषेली, शीतल, भारी, स्वादिष्ट, वीर्य्यवर्द्धक और वातविनाशक है ।

चारुकनामगुणाश्च ।

चारुकःशरबीजंस्यात्कथ्यन्तेतद्गुणाअथ ।
चारुकोमधुरोरूक्षोरक्तपित्तकफापहः ॥
शीतलोलघुर्वृष्यश्चकषायोवातकोपनः । (भा. प्र.)

अर्थ--सरपत्तेके बीजोंको चारुक कहते हैं । चारुक--मधुर, रूक्ष, रक्तपित्तनाशक, कफघ्न, शीतल, लघु, वृष्य, कषाय और वातको कुपित करे है ।

वेणुयवगुणाः ।

यवावंशभवारूक्षाःकषायाःकटुपाकिनः ।
बद्धमूत्राःकफघ्नाश्चवातपित्तकराःसराः ॥ (भा. प्र.)

अर्थ-बांसके चावल-रूखे, कषेले, पचनेमें कटु, मूत्ररोधक, कफनाशक वातपित्तकारक और सा.क हैं। इसके गुण और नाम प्रथम तृणवर्गमें लिखचुके हैं।

यवनालगुणाः ।

यवनालोहिमःस्वादुर्लोहितःश्लेष्मपित्तजित् ।
अवृष्यस्तुवरोरूक्षःक्लेदकृत्कथितोलघुः (भा. प्र.)

अर्थ-पुनेरा-शीतल, स्वादिष्ट, लाल, कफपित्तनाशक, अवृष्य, कषेला, रूखा, क्लेदकारक और हलका है।

नूतनपुरातनादिभेदेन धान्यगुणाः ।

धा.ंसर्वंनवंस्वादुगुरुश्लेष्मकरंस्मृतम् । तत्तुवर्षोषितंपथ्यं यत ल्घुतरंहितम् ॥ वर्षोषितंसर्वधान्यंगौरवंपरिमुञ्चति । नतु .जतिवीर्य्यंस्वंक्रमान्मुञ्चत्यतःपरम् ॥ एतेषुयवगोधूम .लमाषानवाहिताः । पुराणाविरसारूक्षानतथागुणकारिणः ॥ पुराणा वर्षद्वयादुपरिस्थिता यवादयो नवाः स्वस्थान्प्रतिहिताः पथ्याशिनां तु पुराणा हिताः ॥

अर्थ-सर्व नये धान्य-स्वादिष्ट, भारी और कफको .करनेवाले कहे हैं। एक वर्षके बीतजानेपर वह हलके होनेके कारण पथ्य होते हैं, वर्ष दिनके पीछे सर्वधान्य भारीपनको छोड देते हैं किन्तु अपने २ वीर्यको नहीं त्यागते क्रमसे दो वर्षके पीछे वीर्यकोभी छोड देते हैं। इनमें जौ, .हूं, तिल, उडद यह नयेही हितकारी होते हैं, पुराने बेरस, रूखे और गुणकारीभी नहीं हैं। यवादिक नवीन निरोगी मनुष्योंके लिये हितकारी कहे हैं। किन्तु पथ्य भोजन करनेवालोंको पुरानेही हितकारक कहे हैं।

इति श्रीशालिग्रामनिघण्टुभूषणे धान्यवर्गः समाप्तः ॥ १० ॥

अथ शाकवर्गः ।



पत्रंपुष्पंफलंनालंकन्दंसंस्वेदजंतथा ।
शाकंषड्विधमुद्दिष्टंगुरुविद्याद्यथोत्तरम् ॥

अर्थ-पत्र, पुष्प, फल, नाल, कन्द और संस्वेदज इन भेदोंसे शाक छः प्रकारका है इनमें एकसे दूसरा भारी जानना अर्थात् पत्रसे पुष्प, पुष्पसे फूल, फलसे नाल, नालसे कंद और कन्दसे संस्वेदज भारी है।

शाकदोषाः ।

प्रायःशाकानिसर्वाणिविष्टम्भीनिगुरूणिच । रूक्षातिबहुवर्चांसिसृष्टविण्मारुतानिच ॥ शाकंभिनत्तिवपुरस्थिनिहन्ति नेत्रं वर्णंविनाशयतिरक्तमथापिशुक्रम् । प्रज्ञाक्षयंचकुरुतेपलितंचनूनं हन्तिस्मृतिंगतिमितिप्रवदन्तितज्ज्ञाः ॥ शाकेषुसर्वेषुवसंतिरोगास्तेहेतवोदेहविनाशनाय।तस्माद्बुधः शाकविवर्जनन्तु कुर्यात्तथाम्लेषु स एव दोषः ॥

अर्थ-दोष और गुण-प्रायः सर्व प्रकारके शाक-विष्टम्भकारक, भारी, रूखे. बहुमल करनेवाले तथा विष्ठा और अधोगत वातको करनेवाले हैं शाक-शरीर, हड्डी, नेत्र रक्त, शुक्र और बुद्धिका नाश करे हैं। स्मरणशक्तिको हरे है, गतिशक्तिको दूर करे है और विनासमयकेही बालोंको श्वेत करे है। सर्व प्रकारके शाकोंमें रोग रहते हैं और रोगही शरीरके नाश करनेके हेतु हैं, इस कारण बुद्धिमान् शाक भोजन करना छोडदेवे और ऐसेही दोष अम्लद्रव्य अर्थात् खटाईमें हैं, सो खटाईभी त्यागने योग्य है।

शाकंसर्वमचक्षुष्यंचक्षुष्यंशाकपंचकम् ।
जीवन्तीवास्तुमत्स्याक्षीमेघनादःपुनर्नवा ॥

अर्थ-सर्व प्रकारके शाक नेत्रोंको अहितकारी हैं, किन्तु जीवन्ती, वास्तूक, मत्स्याक्षी, चौलाई और पुनर्नवा यह पांच शाक हितकारी हैं।

तत्रादौ वास्तूकशाकनामानि ।

वास्तूकंवास्तुकञ्चस्यात्क्षारपत्रश्चशाकराट् ।
तदेवतुबृहत्पत्रंरक्तंस्याद्गौडवास्तुकम् ॥

अर्थ-वास्तूक, वास्तुक, क्षारपत्र, शाकराट, (पांशुपत्र, शाकश्रेष्ठ, शाकवीर, कङ्कङ. घनाघन, वास्तु, वसुक, हिलमोचिका, शाकराज राजशाक, चक्रवर्ती)। दूसरा लाल पत्तोंका होता है उसके पर्याय यह हैं गौडवास्तूक (चिल्ली, चिल्लिका, तुनी, अम्ललोहिता, मृदुपत्री, क्षारदला, क्षारपत्रा, वास्तुकी, महद्दला और गौडवास्तु)।

संस्कृतभाषामें	वास्तूक, गौडवास्तूक ।
हिन्दीभाषामें	बथुआ चिल्ली, बडा बथुआ ।
बंगभाषामें	बेतुया, बेतोशाक ।
मराठीभाषामें	चाकवत, चिविल, चाकवताची भाजी ।
गुजरातीभाषामें	टांको चील ।
कर्णाटकीभाषामें	चक्रवती, चिलीपचिल्लीके ।
अंग्रेजीभाषामें	व्हाईट गुजफूट । White goose foot
	परपल गुजफुट । Purple goose foot
लैटिन्भाषामें	केनापाडयं अल्बं Chenopodum Album
	के. एट्रिप्लिसीस् । Che atripolisis
फारसीभाषामें	मुसेलेसा सरमक ।
अरबीभाषामें	रोकूबतुल बजामेल कुतुफ ।

वास्तूकगुणाः ।

वास्तूकोऽग्निकरोरसेचमधुरःपित्तापहश्चक्षुषः
स्निग्धोवातविनाशनःकृमिहरःपित्तादिदोषापहः ।
वर्चोमूत्रविशोधनःप्रथमतःश्लेष्मामयानांतथा
शाकानामपिचोत्तमोलघुतरःपथ्यःसदाप्राणिनाम् ॥

अर्थ-बथुआ-जठराग्निजनक, मधुररसान्वित, पित्तनाशक, नेत्रोंको हितकारी, स्निग्ध, वातविनाशक, कृमिनाशक, पित्तादिदोषनाशक, मलमूत्र-विशोधक, शाकोंमें उत्तम और कफरोगवाले मनुष्योंको सदैव हितकारीहै ।

अन्यच्च ।

सक्षारःकृमिजित्त्रिदोषशमनःसंदीपनः पाचन-
श्चक्षुष्योमधुरःसरोरुचिकरोविष्टम्भशूलापहः
वर्चोमूत्रविशोधनःस्वरकरःस्निग्धोविपाकेगुरु
र्वास्तूकःसकलामयप्रशमनाश्चिल्लीतदेवोत्तमा ॥

अर्थ-बथुआ-क्षारयुक्त, कृमिनाशक, त्रिदोषनिवारक, दीपन, पाचन, नेत्रोंको हितकारी, मधुर, सारक, रुचिकारक, विष्टम्भनाशक, शूलनाशक, मलमूत्रशोधक, स्वरको उत्तम करनेवाला, स्निग्ध, पाकमें भारी और सर्व

प्रकारके रोगोंको शांति करनेवाला है। चिल्ली अर्थात् लाल बथुआ इससेभी उत्तम है।

अन्यच्च।

अर्शस्त्रिदोषारुचिजन्तुहारीविस्रंसनोबुद्धिबलाग्निकारी।
क्षारोविपाकेकटुवास्तुकःस्यात्तद्वच्चचिल्लीलघुपत्रयुक्ता॥(सुषेण)

अर्थ-बथुआ-बवासीर, त्रिदोष, अरुचि और कृमिनाशक है, विस्रंसन, बुद्धिजनक, बलकारक, जठराग्निवर्द्धक, क्षार, विपाकमें कटु, और चिल्ली के गुणभी इसीके समान हैं।

अपिच।

वास्तूकद्वितयंस्वादुक्षारंपाकेकटूदितम्।
दीपनंपाचनंरुच्यंलघुशुक्रबलप्रदम्॥
सरंपित्तास्रप्लीहास्रकृमिदोषत्रयापहम् (भा. प्र.)

अर्थ-दोनों प्रकारके बथुए-स्वादिष्ठ, क्षार, पाकमें कटु, दीपन, पाचन, रुचिकारक, हलके, शुक्रजनक, बलकारक, कुछेक, दस्तावर, रक्त, पित्त, प्लीहा, रुधिरविकार, कृमि और त्रिदोषको दूर करे हैं।

अन्यच्च।

वास्तुकंमधुरंहृद्यंवातपित्तार्शसांहितम्॥ (हा. सं.)

अर्थ-बथुआ-मधुर, हृदयको हितकारी तथा वात, पित्त और बवासीररोगवालोंको हितकारी है।

चिल्लीगुणाः।

चिल्लीवास्तुकतुल्याचसक्षाराश्लेष्मपित्तनुत्।
प्रमेहमूत्रकृच्छ्रघ्नीपथ्याचरुचिकारिणी॥ (रा. नि.)

अर्थ-चिल्ली अर्थात् लाल बथुआ-बथुएकी समानही गुणवाला है, क्षार कफपित्तनाशक, प्रमेहनाशक, मूत्रकृच्छ्रनिवारक, पथ्य और रुचिकारक है। बथुआ जौ और गेहूँके खेतमें अधिकतासे उत्पन्न होता है इसके पत्तोंमें खार बहुत होता है और यह सर्वत्र प्रसिद्ध है।

लोणीबृहल्लोणीनामानि।

लोणालोणीचकथिताबृहल्लोणीचघोलिका॥

अर्थ-लोणा, लोणी, बृहल्लोणी, घोलिका।

संस्कृतभाषामें लोणा, लोणी, बृहल्लोणी, घोलिका।

हिन्दीभाषामें	लोनी, नोनिया, कुल्फा ।
बंगभाषामें	वडणुनी, क्षुदेणुनीं, वनणुनी ।
मराठीभाषामें	घोळ, लहान घोळ, मळेघोळ, रायघोळ ।
गुजरातीभाषामें	लणी झीणी, लुणी मोटी ।
कर्णाटकीभाषामें	गोलि ।
तैलिङ्गीभाषामें	अईलकुस ।
तामिलीभाषामें	कोरिलकीरइ ।
अंग्रेजीभाषामें	पर्सलेन । Purs 'ane
लेटिन्भाषामें	पोर्चलेका ओलिरेसिया । Portulaca oleracea
फारसीभाषामें	खुरफा ।
अरबीभाषामें	वक्लतुलहुमक्का ।

लोणीगुणाः ।

लोणीरूक्षागुरुःकट्वीवातश्लेष्महरीपटुः ।
अर्शोघ्नीदीपनीचाम्लामन्दाग्निविषनाशिनी ॥

अर्थ-लोणी अर्थात् नोनियाका शाक- रूखा. भारी, कटु, वातकफनाशक, खारी, अर्शरोगनाशक, दीपन, अम्ल. मन्दाग्नि और विषविनाशक है ।

घोलिकागुणाः ।

घोलिकाम्लासराचोष्णावातकृत्कफपित्तहृत् ।
वाग्दोषव्रणगुल्मघ्नीश्वासकासप्रमेहनुत् ॥
पित्तलाम्लाग्रहण्यर्शःकुष्ठातीसारनाशिनी ।

अर्थ-घोलिका अर्थात् बडी नोनिया, कुलफा--अम्ल, सारक, गरम, वातकारक, कफपित्तनाशक, वाणीके दोषको दूर करनेवाला, व्रणविनाशक, गुल्मनाशक, श्वासनिवारक, कासहारक, प्रमेहनाशक, पित्तजनक, अम्ल तथा संग्रहणी, बवासीर कुष्ठ और अतिसारको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

घोलिकारुचिदापटीपित्तलाचाम्लिकामता ।
सराकफकराचोष्णावातत्वग्दोषनाशिनी ॥
गुल्मव्रणश्वासकासनेत्ररुङ्मेहशोथहा ।

अर्थ—नोनिया-रुचिकारी, खारी, पित्तजनक, अम्ल. सारक, कफकारक,

५५

गरम तथा वात, त्वचाके दोष, गुल्म, व्रण, श्वास, खांसी, नेत्ररोग, प्रमेह और सूजनको दूर करनेवाली है।

अन्यच्च ।

राजपूर्वाघोलिकातुरूक्षाचाम्लापटुःस्मृता ।
रुच्याकट्वीचगुर्वीचदीपिकाग्नेःकफापहा ॥
वातंचार्शंचाग्निमांद्यंविषंशुक्रंचनाशयेत् ॥

अर्थ—बडी लोणी-रूक्ष, अम्ल, खारी, रुचिकारक, कटु, भारी, अग्निप्रदीपक, कफनाशक तथा वात, बवासीर, मन्दाग्नि, विष और शुक्रका नाश करे है।

क्षुद्रघोलिकागुणाः ।

क्षुद्रघोलिकापित्तलासराकफकरीचकट्वीजीर्णज्वर्तिहा ।
श्वासकासहागुल्मनाशिनीमेहशोथहासारसायनी ॥
वातहामताचोष्णकारिणीचाम्लिकामतानेत्ररोगहा ।
चर्मदोषहाव्रणहरीमतापूर्ववैद्यकैःसानिरूपिता ॥ (नि. र.)

अर्थ—छोटेपत्तोंके नोनियाका शाक पित्तजनक, सारक, कफकारक, कटु, जीर्णज्वरनाशक और श्वास, खांसी, वायगोला, प्रमेह, और सूजनको दूर करनेवाला है रसायन, वातविनाशक, गरम, खट्टा तथा नेत्ररोग, चर्मविकार और व्रणका विनाश करे है, नोनिया और कुलफा यह दोनों गीली और रेतीली तथा खारी जमीनमें उत्पन्न होते हैं

चुक्रनामानि ।



चुक्रंतुचुक्रवास्तूकंलिकुचंचाम्लवास्तुकम् ।

लाम्लमम्लशाकाख्यमम्लादहिलमोचिका ॥

अर्थ-चुक्र, चुक्रवास्तुक, लिकुच, अम्लवास्तुक, दलाम्ल, अम्लशाकाख्य अम्लहिलमोचिका (चुक्रिका, पत्राम्ला, रोचती, शतवेधनी)

संस्कृतभाषामें	चुक्र, चुक्रिका।
हिन्दीभाषामें	चूका, चूकाकाशाक ।
अंगभाषामें	चुकापालङ्ग ।
मराठीभाषामें	आंबटचुका, लघु व थोर ।
गुजरातीभाषामें	चुको खाटी भाजी ।
कर्णाटकीभाषामें	हुलिचकोत ।
अंग्रेजीभाषामें	ब्लेडरडाक । Bladdered Dock
लैटिन्भाषामें	रुमेक्स वेसिकेरिपस् । Rumex vesicarips
फारसीभाषामें	तुरशक, बडा तुर्रे खुरासानी छोटा ।
अरबीभाषामें	हुमाजवुकले हामेजा ।

अस्यगुणाः ।

चुक्रोग्निदीपनश्चोष्णोरुचिकारीलघुःस्मृतः । पित्तलःसारकःपथ्योह्यत्यम्लःशूलनाशकः ॥ गुल्माग्निमांद्यहृत्पीडाबद्धविट्कामवातहा । स्वादुतृष्णावान्तिकफवातगुल्मापहोमतः । वातंचमुखवैरस्यंनाशयेदितिकीर्त्तितः ॥ (नि० र०)

अर्थ-चूका अग्निदीपक, गरम, रुचिकारक, हलका, पित्तकारक पथ्य, अत्यन्त अम्लशूलनाशक तथा गुल्म, अग्निमांद्य, हृदयकी पीडा,, मलबद्ध, आमवात, तृषा, वमन, कफवात, गुल्म, वात और मुखकी विरसताको दूर करे है तथा स्वादिष्ठ है ।

अन्यच ।

चुक्रकंदुर्ज्जरंभेदिवातजित्पित्तलंगुरु ॥ (राजवल्लभ)

अर्थ-चूका-दुर्ज्जर अर्थात् कठिनतासे पचनेवाला, भेदक, वातनाशक, पित्तकारक और भारी है ।

मारिषनामानि ।

मारिषोबाष्पकोमार्षःश्वेतोरक्तश्चसस्मृतः ॥
दीर्घनालोरक्तपर्णोबिन्दुपर्णश्चसस्मृतः ॥

अर्थ-मारिष, बाष्पक और मार्ष यह नाम मारिषके हैं, मरसा सफेद और लाल इन भेदोंसे दो प्रकारका है, मरसाकी नाल बडी होती है, पत्ते लाल होते हैं और पत्तोंके ऊपर बिन्दु होते हैं ।

संस्कृतभाषामें	मारिष ।
हिन्दीभाषामें	सफेद मरसा, लाल मरसा, नवडा ।
बंगभाषामें	श्वेतकाँटानटेरशाक, लाल काँटानटेरशाक ।
मराठीभाषामें	पोकळ्याची भाजी, माठाची भाजी ।
गुजरातीभाषामें	डांभो ।
औत्कलीभाषामें	नेउटाशाग ।
तैलिङ्गीभाषामें	डुगलकुरा ।
लैटिनभाषामें	एमेरैंथस् ट्रिकलर । Amaranthus tricolor

मारिषगुणाः ।

मारिषोमधुरःशीतोविष्टम्भीपित्तनुद्गुरुः । वातश्लेष्मकरोरक्तपित्तनुद्विषमाग्निजित्॥रक्तमार्षोगुरुर्नातिसक्षारोमधुरःसरः । श्लेष्मलःकटुकःपाकेस्वल्पदोषउदीरितः ॥ (भा. प्र.)

अर्थ-मरसा- मधुर, शीतल, विष्टम्भकारक, पित्तनाशक, भारी, वातकफकारक, रक्तपित्तनिवारक, और अग्निकी विषमताको दूर करे है । लाल मरसा--अत्यंत भारी नहीं, क्षार, मधुर, सारक, कफकारक, पचनेमें चरपरा और स्वल्पदोषयुक्त है ।

अन्यच्च ।

मारिषोरोचकःशीतोगुरुर्मेदस्त्रिदोषजित् ॥ (म. नि.)

अर्थ--मरसा—रुचिकारक, शीतल, भारी तथा मेदरोग और त्रिदोषनाशक है ।

तण्डुलीयनामानि

तण्डुलीयोमेघनादःकाण्डेरस्तण्डुलेरकः ।
भण्डीरस्तण्डुलीबीजोविषघ्नश्चाल्पमारिषः ॥

अर्थ-तण्डुलीय, मेघनाद, काण्डेर, तण्डुलेरक, भण्डीर, तण्डुलीबीज, विषघ्न, अल्पमारिष (तण्डुलीक, तण्डुल, तण्डुली, तण्डुलीयक, ग्रन्थिल, बहुवीर्य्य घनस्वन, सुशाक, पथ्यशाक, स्फूर्जथु, स्वनिताह्वय, वीर, तण्डुलनामा)

कञ्चटनामानि ।

पानीयंतण्डुलीयंच त्कञ्चटमुदाहतम् ॥

अर्थ-पानीय तण्डुलीय, कञ्चट (मारिष जलज)

संस्कृत भाषामें	तण्डुलीय, कञ्चट ।
हिंदी भाषामें	चौलाईका शाक, जल चौलाई ।
बंग भाषामें	क्षुदेनटे, चांपानटे, गोयाल, कांचडादाम ।
मराठी भाषामें	तांदुळजा, चवळाई ।
गुजराती भाषामें	तांजलजो ।
तैलिङ्गी भाषामें	मोलाकुरा. कुईकोरा ।
कर्णाटकी भाषामें	किरुकुशाले ।
तामिली भाषामें	मुल्लुकिरइ ।
द्राविडी भाषामें	काण्डेमाट ।
अंग्रेजी भाषामें	हरमेफ्रोडाईट एमेरेंथ Hermaphrodite Amaranth
लैटिन् भाषामें	एमेरेंथसू ठन्युंइफोलियसू Amaranthus Tenifolius
फारसी भाषामें	सुपेजमर्ज ।
अरबी भाषामें	बुकलेयमानीय ।

तण्डुलीयगुणाः ।

तण्डुलीयोलघुःशीतोरूक्षःपित्तकफास्रजित् ।
सृष्टमूत्रमलोरुच्योदीपनोविषहारकः ॥ (भा. प्र.)

अर्थ-चौलाई-हलकी, शीतल. रूखी, पित्तकफनाशक, रक्तविकारविनाशक, मलमूत्रनिःसारक, रुचिकारक. दीपन और विषहारक है ।

अन्यच्च ।

तण्डुलीयस्तुशिशिरोमधुरोविषनाशनः ।
रुचिकृद्दीपनः पथ्यःपित्तदाहभ्रमापहः ॥

अर्थ-चौलाई-शीतल, मधुर, विषनाशक, रुचिकारक, दीपन, पथ्य तथा पित्त, दाह और भ्रमको दूर करे है ।

अपिच ।

रसेविपाकेमधुरोऽतिशीतोरूक्षस्तृषारोचकनाशनश्च ।
सदाहपित्तंरुधिरंविषंचविशेषतोहन्तिचतण्डुलीयः ॥

अर्थ-चौलाई-रस और विपाकमें मधुर, अत्यन्त शीतल, रूखी तथा तृषा, अरुचि, दाह, पित्त, रुधिरविकार और विषका विनाश करे है।

अन्यच्च ।

स्वादुपाकमसृक्पित्तविषघ्नंतण्डुलीयकम् ।

अर्थ-चौलाई-स्वादुपाकी तथा रक्तपित्त और विषनाशक है।

अस्य पत्रगुणाः ।

तण्डुलीयकदलंहिममर्शःपित्तरक्तविषकासविनाशि ।
ग्राहकंसमधुरंचविपाकेदाहशोषशमनंरुचिदायि ॥ (रा. नि.)

अर्थ—चौलाईके पत्ते-छूनेमें शीतल, पित्तरक्तनाशक, विषघ्न, कासनिवारक, मलरोधक, पचनेमें मधुर तथा दाह और शोषविनाशक हैं।

अस्य मूलगुणाः ।

तण्डुलीयकमूलंस्यादुष्णंश्लेष्मविनाशनम् ।
रजोरोधकरंरक्तपित्तप्रदरसंहरम् ॥ (आ. सं.)

अर्थ—चौलाईकी जड-गरम, कफनाशक, रजरोधक तथा रक्तपित्त और प्रदररोगको दूर करनेवाली है।

कच्छटगुणाः ।

कच्छटंतिक्तकंरक्तपित्तानिलहरंलघु । (भा० प्र०)

अर्थ—जलचौलाई-कडवी, हलकी तथा रक्तपित्त और वातका नाश करे है।

पालङ्क्यनामानि ।



पालङ्क्यंतुपलंक्यायांमधुराक्षुरपत्रिका ।
सुपत्रास्निग्धपत्राचग्रामिणीग्राम्यवल्लभा ॥

अर्थ-पालङ्क्य, पलङ्क्या, मधुरा, क्षुरपत्रिका, सुपत्रा, स्निग्धपत्रा, ग्रामिणी, ग्राम्यवल्लभा (क्षुरिका, पालंक्या, वास्तुकाकारा, छुरिका, चीरितच्छदा, पालंकी)।

संस्कृतभाषामें	पालङ्क्य ।
हिन्दीभाषामें	पालगका शाग ।
बंगभाषामें	पालंशाक ।
मराठीभाषामें	पालख, पोईशाक ।
गुजरातीभाषामें	पालखनी भाजी ।
कर्णाटकीभाषामें	पालक्य ।
अंग्रेजीभाषामें	स्पाईनेज Spinage
लेटिन्भाषामें	स्पाईनेश्या ओलिरेश्या Spinasia Oleracea
फारसीभाषामें	इस्यनाख ।
अरबीभाषामें	अस्यनाख ।

पालङ्क्यगुणाः ।

पालंक्यावातलाशीताश्लेष्मलाभेदिनीगुरुः ।
विष्टम्भिनीमदश्वासपित्तरक्तविषापहा ॥ (भा. प्र.)

अर्थ—पालगका साग—बादी, शीतल, कफकारक, भेदक, भारी, विष्टम्भजनक तथा मद, श्वास, रक्तपित्त और विषका विनाश करे है ।

अन्यच्च ।

पालंक्यमीषत्कटुकंमधुरंपथ्यशीतलम् ।
रक्तपित्तहरंग्राहिज्ञेयंसन्तर्पणंपरम् ॥ (रा. नि.)

अर्थ-पालगका साग--किंचित् चरपरा, मधुर, पथ्य, शीतल, रक्तपित्तनाशक, मलरोधक और तृप्तिकारक है ।

अन्यच्च ।

पालक्यामितिवर्णयन्तिसुधियोगुर्वींसरापिच्छिला ।
शीताश्लेष्मकरीचरक्तशमनीपित्तंविषंनाशयेत् ॥

अर्थ—पालगका साग--भारी, कुछेक दस्तावर, पिच्छिल, शीतल, कफकारक, रुधिरके विकारोंको शान्त करनेवाला तथा पित्त और विषका नाश करे है ।

कुणञ्जरनामानि ।

कुणञ्जरःकुणञ्जीचकुणंजोरण्यवास्तुकः ।

अर्थ—कुणञ्जर, कुणञ्जी, कुणञ्ज, अरण्यवास्तुक (क्षेत्रशाक, सुशाक, मञ्जरी, श्वेतमञ्जरी, अतिसारजनक, दुर्भिक्षवल्लभ)।

संस्कृतभाषामें	कुणंजर ।
हिन्दीभाषामें	लेसुवा ।
वंगभाषामें	वनवेतुया ।
मराठीभाषामें	कुणजीरु ।
गुजरातीभाषामें	कणेझरो, कणेझो ।
कर्णाटकीभाषामें	गोरेंजेश्वपलेय ।
लैटिन्भाषामें	एमेरेन्थस् पोलिगोनोइडिस् । Amaranthus Polygonoides

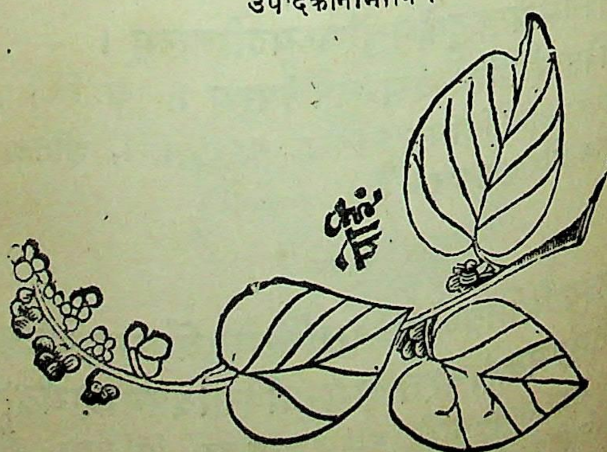
कुणञ्जरगुणाः ।

कुणञ्जरस्त्रिदोषघ्नोमधुरोरुच्यदीपकः ।
ईषत्कषायःसंग्राहीपित्तश्लेष्महरोलघुः ॥ (रा० नि०)

अर्थ—कुणञ्जर-त्रिदोषनाशक, मधुर, रुचिकारक, दीपन, किंचित्कषैला, मलरोधक, पित्तश्लेष्मनाशक और हलका है।

विवरण—कुणंजरके क्षुप वर्षातमें उत्पन्न होते हैं, पत्ते चौलाईकी समान और बाल सफेद तथा लालरंगकी निकलती है।

उपोदकीनामानि ।



उपोदकीकलम्बीचपिच्छिलापिच्छिलच्छदा ।

मोहिनीमदशाकश्चविशालावलिपोदकी ॥

अर्थ-उपोदकी, कलम्बी पिच्छिला, पिच्छिलच्छदा, मोहिनी,मदशाक, विशाला, वलिपोदकी (उपोदिका, उपोदीका, उपोती, वृश्चिकप्रिया अपोदिका, पूतीका पूतिका)

संस्कृतभाषामें उपोदकी, पोदकी ।
हिन्दीभाषामें पोईका साग ।
वङ्गभाषामें पुंइशाक ।
मराठीभाषामें मायालु, लघु व थोर ।
गुजरातीभाषामें पोथी ।
अंग्रेजीभाषामें रेडमलबारनाइटशेड ।Red Malbar Night shabe
लैटिन्‌भाषामें बसेला रुब्रा Bassella Ruba
ब० आल्बा । B. Alba

उपोदकीगुणाः ।

उपोदकीकषायोष्णाकटुकामधुराचसा ।
निद्रालस्यकरीरुच्याविष्टम्भश्लेष्मकारिणी ॥

अर्थ-पोईका शाक-कषेला, गरम, चरपरा, मधुर, निद्रा और आलस्यको करनेवाला, रुचिकारक, विष्टम्भजनक और कफकारक है।

अन्यच्च ।

पोतकीशीतलास्निग्धाश्लेष्मलावातपित्तनुत् ।
अकण्ठ्यापिच्छिलानिद्राशुक्रदारक्तपित्तनुत ॥
बलदारुचिकृत्पथ्याबृंहणीतृप्तिकारिणी ॥ (भा. प्र.)

अर्थ-पोईका शाक -शीतल, स्निग्ध, कफकारक, वातपित्तनाशक, कण्ठको अहितकारी, पिच्छिल, निद्राजनक, शुक्रजनक, रक्तपित्तनाशक, बलवर्द्धक, रुचिकारक, पथ्य, पुष्टिकारक और तृप्तिजनक है।

अन्यच्च ।

उपोदिकासरास्निग्धाबल्याश्लेष्मकरीहिमा ।
स्वादुपाकरसावृष्यावातपित्तमदापहा ॥

अर्थ-पोईका शाक-कुछेक दस्तावर, स्निग्ध, बलकारक, कफकारक शीतल, स्वादुपाकी, वृष्य तथा वात पित्त और मदनाशक है।

अपिच ।

उपोदकीद्वितीयाचक्षुद्रान्यावनजातथा ।
चतुर्थीमूलपोतीचगुणैःसर्वाःसमाःस्मृताः ॥

अर्थ-पोई, लालपोई, छोटीपोई, बनपोई और मूलपोई इन सबके गुण पोईके समान हैं ।

विवरण । पोईकी बेल घर बाहर सब स्थानोंमें उत्पन्न हो जाती है। बेलका रङ्ग सफेद और लाल होता है, पत्ते गोल होते हैं और बीज लाल होते हैं ।

सहस्रमूलीनामानि ।

काण्डपत्रीकोषपुष्पीघननीलसुमाशुभा ।
सहस्रमूलिकाज्ञेयावर्षाकालीचसास्मृता ॥

अर्थ-काण्डपत्री, कोषपुष्पी, घननीलसुमा, शुभा, सहस्रमूलिका, वर्षाकाली ।

संस्कृतभाषामें सहस्रमूली ।
हिन्दीभाषामें सहस्रमूली ।
मराठीभाषामें वेलिची भाजी ।
गुजरातीभाषामें शिषमूली
अंग्रेजीभाषामें स्पैडरवर्ट । Spider Wort
लैटिन्भाषामें कोमिलिया काम्युन स । Comeyllia Communis

अस्यागुणाः ।

सहस्रमूलिकास्निग्धामधुरापित्तनाशिनी ।
किञ्चिद्वातकरीबल्यासराचैवरसायनी ॥

अर्थ—सहस्रमूली--स्निग्ध, मधुर, पित्तनाशक, किंचित् वातकारक, बलकारक, सारक, और रसायन है ।

चंचुनामानि ।

चंचुश्चविजलाचञ्चूःकलभीभीरुपत्रिका ।
चञ्चूरश्चञ्चुपत्रश्चसुशाकःक्षेत्रसम्भवः ॥

अर्थ—चंचु, विजला, चंचू, कलभी, भीरुपत्रिका, चंचुर, चंचुपत्र, सुशाक, क्षेत्रसम्भव (चिंचा, चिंचुकी, दीर्घपत्री)

महाचंचुनामानि ।

बृहच्चंचुविषारिस्यान्महाचंचुःसुचंचुका ।
स्थूलचंचुर्दीर्घपत्रीदिव्यगन्धाचसत्तधा ॥

अर्थ-बृहच्चंचु, विषारि, महाचंचु, सुचंचुका, स्थूलचंचु, दीर्घपत्री दिव्यगन्धा ।

क्षुद्रचंचुनामानि ।

क्षुद्रचञ्चुस्तुचञ्चुःस्याच्चंचूःशुनकचंचुका ॥
त्वक्साराभेदनीक्षुद्राकटुकापटुपत्रिका ॥

अर्थ-क्षुद्रचंचु, चंचु, चंचू, शुनकचंचुका, त्वक्सारा, भेदनी, क्षुद्रा, कटुका, पटुपत्रिका ।

संस्कृत भाषामें	चंचु ।
हिंदी भाषामें	चंचु, चेवुना ।
बंगभाषामें	चेचको ।
मराठी भाषामें	लघुचंचु, थोरचंचु ।
गुजराती भाषामें	छुछ राजगरीनी भाजी ।
तैलिङ्गीभाषामें	चिन्तचेट्टु ।
लैटिन् भाषामें	कार्कोरस एक्युटेंग्युलरीस Corchorus acutangularis

चंचुगुणाः ।

चंचुस्तुमधुरातीक्ष्णाकषायामलशोषिणी ।
गुल्मोदरविबन्धार्शोग्रहणीरोगहारिणी ॥

अर्थ-चंचु-मधुर, तीक्ष्ण, कषेला, मलशोषक तथा गुल्म, उदररोग, विबंध, बवासीर और संग्रहणी रोगको दूर करे है ।

महाचंचुगुणाः ।

महाचंचुःकटूष्णाचकषायामलरोधिनी ।
गुल्मशूलोदरार्शोर्तिविषघ्नीचरसायनी ॥

अर्थ--बडा चंचुका शाक-चरपरा, गरम, कषेला, मलरोधक, रसायन तथा गुल्म, शूल, उदररोग, बवासीर और विषका नाश करे है ।

क्षुद्रचंचुगुणाः ।

क्षुद्रचंचुस्तुमधुराकटूष्णाचकषायिका ।

दीपनीगुल्मशूलार्शःशमनीचविबन्धकृत् ॥ (रा. नि.)

अर्थ--क्षुद्रचंचु--मधुर, चरपरा, गरम, कषेला, विबन्धकारक तथा गुल्म शूल और बवासीरको दूर करे है।

अन्यच्च।

चंचुःशीतासरारुच्यास्वाद्वीदोषत्रयापहा।
धातुपुष्टिकरीबल्यामेध्यापिच्छिलिकास्मृता ॥

अर्थ-चंचुका शाक-शीतल, सारक, रुचिकारक, स्वादिष्ट, त्रिदोषनाशक, धातुवर्द्धक, पुष्टिकारक, बलकारक, मेधाजनक और पिच्छिल है।

चंचुबीजगुणाः।

चंचुबीजंकटूष्णंचगुल्मशूलोदरार्त्तिजित्।
विषंत्वग्दोषकण्डूतिआखोर्दुष्टविषापहम् ॥

अर्थ-चंचुके बीज-चरपरे, गरम, तथा गुल्म, शूल, उदरकी पीडा, विष, त्वचाके दोष, खुजली, मूसका विष और दुष्ट विषको दूर करे है।

विवरण--चेवुनाके छोटे २ क्षुप होते हैं विशेषकरके यह चौमासेमें होता है फूल पीला आता है और फली लगती है इसकी अनेक जाति हैं।

नाडीकनामानि।

नाडीकंकालशाकश्चश्राद्धशाकंचकालकम्।

अर्थ-नाडीक, कालशाक, श्राद्धशाक, कालक।

अस्यगुणाः।

कालशाकंसरंरुच्यंवातकृत्कफशोफहृत् ॥
बल्यंरुचिकरंमेध्यंरक्तपित्तहरंहिमम् ॥ (भा. प्र.)

अर्थ--नाडीका शाक--कुछेक दस्तावर, रुचिकारी, वातकारक, कफनाशक, सूजनको दूर करनेवाला, बलकारक, रुचिजनक; मेधाकारक, रक्तपित्तनाशक और शीतल है।

नाडीशाक-पट्टशाकनामानि।

पट्टशाकस्तुनाडीकोनाडिशाकश्चसस्मृतः।

अर्थ-पट्टशाक, नाडीक, नाडीशाक (नाडीच, केचुक, पेचुली, विश्वरोचन)।

संस्कृत भाषामें पट्टशाक, नाडीशाक।

हिन्दीभाषामें पटुआसाग।
बंगभाषामें पाट्शाक, कोसटारशाक, नालते।
मराठीभाषामें नाडीशाक।
गुजरातीभाषामें नालानी भाजी।
लटिन्भाषामें आईपोमिया रिप्टेप्स। Ipomoea Reptams

अस्य गुणाः।

नाडीकशाकंद्विविधंतिक्तंमधुरमेवच। रक्तपित्तहरंतिक्तंकृमिकुष्ठविनाशनम्॥ मधुरंपिच्छिलंशीतंविष्टम्भिकफवातकृत। तच्छुष्कपत्रंज्वरदोषनाशनंविशेषतःपित्तकफज्वरापहम्। जलंचतस्यापिचपित्तहारकंसुरोचनंव्यञ्जनयोगकारकम्॥ (रा. नि.)

अर्थ—नाडीके शाक-तिक्त और मधुर इन भेदोंसे दो प्रकारका है, तहां तिक्त शाक-रक्तपित्तनाशक तथा कृमि और कुष्ठका नाश करे है। मधुर शाक-पिच्छिल, शीतल, विष्टम्भजनक और कफवातकारक है। नाडीके सूखे पत्ते-ज्वर और विशेषकरके पित्त, कफ, ज्वरनाशक हैं। नाडीका जल-पित्तनिवारक, रोचन और व्यंजनमें उपयोगी है।

अन्यच्च।

तच्छुष्कंजलदोषघ्नंपित्तश्लेष्मामवातनुत्॥

अर्थ—नाडीके सूखे पत्ते--जलदोषनाशक, पित्त, कफ और आमवातविनाशक हैं।

विवरण। नाडीकी वेल पानीमें होती है। इसकी डंडी पोली और गांठदार होती हैं। पत्ते लम्बे लम्बे होते हैं। अफीमके विषको दूर करनेके लिये इसके पत्तोंका रस प्रयोग किया जाता है।

कलम्बीनामानि।

कलम्बीशतपर्वाचकथ्यन्तेतद्गुणाअथ॥

अर्थ—कलम्बी, शतपर्वा (कडम्बी, कलम्बू, कलम्बिका)

संस्कृतभाषामें
हिन्दीभाषामें कलम्बी।
बंगभाषामें कलमीशाक।
मराठीभाषामें कलमी।
तैलिङ्गीभाषामें तोमेवचलिचेट्ट।

अस्या गुणाः ।

कलम्बीस्तन्यदाप्रोक्तामधुराशुक्रकारिणी ॥ (भा०प्र०)

अर्थ—कलमीशाक--स्तनोंमें दूधको उत्पन्नकरनेवाला, मधुर और शुक्रजनक है ।

विवरण । कलमीशाक प्रायः खेतोंमें होता है ।

हिलमोचिकानामानि ।

हिलमोचीत्रिवृत्पर्णीविषघ्नीहिलमोचिका ।

अर्थ—हिलमोची, त्रिवृत्पर्णी, विषघ्नी, हिलमोचिका (हिलमोचि, रोचीमोची, मत्स्याङ्गी हेलञ्ची, मम्बी, मत्स्याक्षी, चक्राङ्गी, जलब्राह्मी, ब्राह्मी, शंखधरा आचारी)

संस्कृतभाषामें	हिलमोचिका ।
हिन्दीभाषामें	हुरहुल ।
वंगभाषामें	हिञ्चेशाक ।
वम्	हुरहुची ।
औत्क०	हिरमिचा ।

अस्या गुणाः ।

शोथंकुष्ठंकफंपित्तंहरतेहिलमोचिका ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ—हिलमोचिका अर्थात् हुलहुरका शाक--सूजन, कोढ, कफ, पित्त इनको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

हिलमोचीसरातिक्ताकुष्ठघ्नीकफपित्तजित् ।

अर्थ -हुरहुलशाग--कुछेक दस्तावर, कडवा तथा कुष्ठ और कफपित्तनाशक है ।

विवरण । यह ब्राह्मीकी समान होती है । प्रायः जलके निकटके स्थानोंमें देखीजाती है । फूल छोटा छोटा नीले रंगका आता है ।

सुनिषण्णकनामानि ।

सितिवारःसितिवरःस्वस्तिकःसुनिषण्णकः ।
श्रीवारकःसूचिपत्रःपर्णाकःकुर्कुटःशिखी ॥

अर्थ--सितिवार, सितिवर, स्वस्तिक, सुनिषण्णक, श्रीवारक, सूचिपत्र, पर्णाक, कुर्कुट, शिखी (वितुन्न, सुनिषण्ण, चुचु, सुतपत्र, शितिवार, सूच्याह्व, सूच्याह्व, सूचिपत्रक श्रीवारक, बभ्रु, कुरण्ट, कुक्कुट, सूचिदल, श्वेतवारक, मेघाकृत, ग्राहक, शितिवार ,

संस्कृतभाषामें	सुनिषण्णक।
हिन्दीभाषामें	शिरिआरि, चौपतिया, उटिंगण, गुठवा। उटिंगणके बीज।
बंगभाषामें	सुषुणीशाक, शुशुनीशाक।
मराठीभाषामें	कुरडू।
गुजरातीभाषामें	ओटीगण, ओटीगणनाबी। खडकतिरा।
तैलिङ्गीभाषामें	सुनिषण्णमनेशाकमु।
औत्कलीभाषामें	छुनछुनिया।
लैटिन्‌भाषामें	ब्लेफेरिस् इडयुलीम्। Blepharis Edulis
फारसीभाषामें	अंजरा, तुख्मेअंजरा।
अरबीभाषामें	अंजरा, बजहुलअंजरा।

अस्य गुणाः।

सुनिषण्णोहिमोग्राहीमोहदोषत्रयापहः।
अविदाहीलघुःस्वादुःकषायोरूक्षदीपनः।
वृष्योरुच्योज्वरश्वासमेहकुष्ठभ्रमप्रणुत्॥ (भा.प्र.)

अर्थ—सुनिषण्णक-शिरिआरि-चौपतियाका शाक-शीतल, मलरोधक, मोहनाशक, त्रिदोषनिवारक, अविदाही, हलका, स्वादिष्ठ, कषेला, रूखा, दीपन, वृष्य, रुचिकारक तथा ज्वर, श्वास, प्रमेह, कोढ और भ्रमको दूर करै है।

अन्यच्च।

सुनिषण्णोलघुर्ग्राहीवृष्योग्निकृत्त्रिदोषहा।
मेधारुचिप्रदोदाहज्वरहारीरसायनः॥ (शो. नि.)

अर्थ—चौपतियाका शाक-हलका, ग्राही, वीर्य्यवर्द्धक, जठराग्निजनक, त्रिदोषनाशक, मेधाजनक, रुचिकारक, दाहनिवारक, ज्वरहारक और रसायन है।

अस्य बीजगुणाः।

सुनिषण्णकबीजन्तुमूत्रकृच्छ्रनिवारणम्।

अर्थ—उटिंगणके बीज-मूत्रकृच्छ्र रोगको दूर करे हैं।

विवरण सुनिषण्णक अर्थात् उटिंगणका छता क्षुपके समान सजलस्थानोंमें होता है पत्ते चार और चांगेरीके समान होते हैं उन चार पत्तोंके बीचमेंसे

कलीसी निकलती हैं उसमें दो बीज चपटे लगेहुये होते हैं वह बीज तालम-खानेके सदृश चिकने होते हैं।

मूलकस्य पत्रशाकगुणाः।

पाचनंलघुरुच्योष्णंपत्रंमूलकजंनवम्।
स्नेहसिद्धंत्रिदोषघ्नमसिद्धंकफपित्तकृत्॥

अर्थ—नवीनमूलीके पत्तोंका शाक—हलका, रुचिकारी, गरम और पाचक है वही घी और तैलादिमें सिद्धकिया अर्थात् छौंकाहुआ त्रिदोषनाशक है और असिद्ध अर्थात् कच्चा कफपित्तकारक है।

चम्पकपत्रशाकगुणाः।

काञ्चनंपत्रशाकंतुकषायंकटुकंमधु।
गंडमालारक्तपित्तकुष्ठवातांश्चनाशयेत्॥

अर्थ—चम्पाके पत्तोंका शाक--कषेला, चरपरा, मधुर तथा गंडमाला, रक्तपित्त, कुष्ठ और वातका विनाश करे है।

मुष्ककपत्रशाकगुणाः।

मोक्षपत्रस्यशाकन्तुतिक्तंचतुवरंमतम्।
दीपनंगुल्ममेहघ्नमुष्णंवातकफक्रिमीन्॥
जयेत्प्लीहामग्रहणीमेहपाण्डुगुदामयान्।

अर्थ—मोखाके पत्तोंका शाक--कडवा, कषेला, दीपन, गरम तथा गुल्म, प्रमेह, वात, कफ, कृमि, प्लीहा, आम, संग्रहणी, मेह, पाण्डु और गुदाके रोगोंको दूर करे है।

करलीनामानि।

करलीदीर्घपत्राचमध्यदण्डाप्रलंबिका।

अर्थ—करली, दीर्घपत्रा, मध्यदण्डा, प्रलम्बिका।

हिन्दीभाषामें	करली।
मराठीभाषामें	कुलीची भाजी।
गुजरातीभाषामें	करलीनो भाजी।
लेटिन्भाषामें	फेलेञ्जियमद्रू युवरोझं।

अस्या गुणाः।

करलीशीतलास्वाद्वीवातलाकफकृद्गुरुः।

अर्थ-करली-शीतल, स्वादिष्ट, वातजनक, कफकारक और भारी है।

अन्यच्च ।

करलीमधुरातिक्तावातलासारकामता ।

अर्थ-करलीके पत्तोंका शाक-मधुर, कडवा, वादी और सारक है।

विवरण। करलीके क्षुप वरषाऋतुमें उत्पन्न होते हैं, पत्त लम्बे और पत्ते बीचमेंसे एक बाल निकलती है इसमें सफेद फूल होता है इसका फल नील गुच्छा होता है और इसके पत्तोंका शाक करते हैं।

शतपुष्पापत्रशाक गुणाः ।

शतपुष्पादलंसोष्णंमधुरंगुल्मशूलजित् ।
वातघ्नंदीपनंपथ्यंपित्तकृद्रुचिदायकम् ॥

अर्थ-सोयेके पत्तोंका शाक-गरम, मधुर, गुल्मनाशक, शूलनिवारक वातविनाशक, दीपन, पथ्य, पित्तजनक और रुचिकारक है।

मेथिकापत्रशाक गुणाः ।

मेथिकापत्रशाकातुतिक्तावातहरामता ।
रुचिकृद्दीपनीयाचकिंचित्पित्तप्रकोपनी ॥

अर्थ-मेथीके पत्तोंका शाक-कडवा, वातविनाशक, रुचिकारक, दीपन और कुछ २ पित्तको कुपित करे है।

राजिकापत्रशाकगुणाः ।

कटूष्णंराजिकापत्रंकृमिवातकफापहम् ।
कण्ठामयहरंस्वादुवह्निदीपनकारकम् ॥

अर्थ-राईके पत्तोंका शाक-चरपरा, गरम, स्वादिष्ठ, अग्निप्रदीपक तथा कृमि, वात कफ और कण्ठरोगको दूर करे है।

सर्षपपत्रशाकगुणाः ।

सार्षपंपत्रमत्युष्णंरक्तपित्तप्रकोपनम् ।
विदाहिकटुकंस्वादुशुक्रकृद्रुचिदायकम् (रा. नि.)

अर्थ-सरसोंके पत्तोंका शाक-अत्यन्त गरम, रक्तपित्तप्रकोपक, दाहजनक, चरपरा, स्वादिष्ट, शुक्रजनक और रुचिकारक है।

अन्यच्च ।

कटुकंसार्षपंशाकंबहुमूत्रमलंगुरु ।

अम्लपाकंविदाहिस्यादुष्णंरूक्षंत्रिदोषजित् ॥
सक्षारंलवणंतीक्ष्णंस्वादुशाकेषुनिन्दितम् । (भावप्रकाश)

अर्थ--सरसोंके पत्तोंका शाक--चरपरा, बहुमूत्रमलकारक, भारी अम्लपाकी, दाहजनक, गरम, रूखा, त्रिदोषनाशक, क्षारयुक्त, लवणरससंयुक्त स्वादु और सर्वशाकोंसे निन्दित है।

शिग्रुपत्रशाकगुणाः ।

शिग्रुपत्रभवंशाकंरुच्यंवातकफापहम् ।
कटूष्णंदीपनंपथ्यंकृमिघ्नंपाचनंपरम् ॥

अर्थ—सैंजिनेके पत्तोंका शाक--रुचिकारक, वातकफनाशक चरपरा गरम, दीपन, पथ्य, कृमिनाशक और परम पाचक है।

दद्रुघ्नपत्रशाकगुणाः ।

दद्रुघ्नपत्रंदोषघ्नमम्लंवातकफापहम् ।
कण्डूकासकृमिश्वासदद्रुकुष्ठप्रणुल्लघु ॥

अर्थ--परमारके पत्तोंका शाक--दोषनाशक, खट्टा, वातकफनाशक तथा कण्डू, खांसी, कृमि, श्वास, दाद, और कुष्ठनाशक है और हलका है।

कासमर्दनामानि ।

कासमर्दोऽरिमर्दश्चकासारिःकर्कशस्तथा ।

अर्थ-कासमर्द, अरिमर्द कासारि, कर्कश (कालङ्कत, विमर्द कासमर्दक, काल, कनक, जरण, दीपन, काशमर्द)

संस्कृतभाषामें	कासमर्द (क)
हिन्दीभाषामें	कसौंदी ।
वङ्गभाषामें	कालकासुंदा ।
मराठीभाषामें	रानकासविंदा ।
गुजरातीभाषामें	कासोंदरी जंगली तथा मोटो शाड ।
कर्णाटकीभाषामें	कासवदी, फरहुल, कसाद ।
तैलिंगीभाषामें	गुर्पुताढयं ।
अंग्रेजीभाषामें	राउण्डपोडेडकेश्या । Round podded cassia
लैटिन्भाषामें	केश्यासोफेरा । Cassia Sophera । C. Occidentalis केश्याओकसिडेंटेलिस ।

अस्य पत्रगुणाः ।

कासमर्ददलंरुच्यंवृष्यंकासविषार्शनुत् ॥
मधुरंकफवातघ्नंपाचनंकण्ठशोधनम् ।
विशेषतःकासहरंपित्तघ्नंग्राहकंलघु ॥ (भा. प्र.)

अर्थ-कसौंदीके पत्तोंका शाक-रुचिकारक, वीर्य्यवर्द्धक, कासनाशक विषघ्न, बवारसीको दूर करनेवाला, मधुर, कफवातविनाशक, पाचक, कण्ठशोधक, विशेष करके खांसीको दूर करनेवाला, पित्तनाशक, ग्राही और हलका है ।

अन्यच्च ।

कासमर्दःसतिक्तोष्णोमधुरःकफवातनुत् ।
अजीर्णकासपित्तघ्नःपाचनःकण्ठशोधनः ॥ (रा. नि.)

अर्थ- कसौंदी-कडवी, गरम, मधुर, कफवातनाशक, अजीर्णको हरने-वाली, खांसीको दूर करनेवाली, पित्तनाशक, पाचक और कण्ठशोधक है ।

अन्यच्च ।

कासमर्दोऽग्निदःस्वर्य्यःस्वादुस्तिक्तस्त्रिदोषाजित् ॥

अर्थ-कसौंदीका शाक-अग्निप्रदीपक, स्वरको उत्तम करनेवाला, स्वादिष्ठ, कडवा और त्रिदोषनाशक है ।

विवरण । कसौंदीके क्षुप प्रायः बाग और जंगलमें बहुत होते हैं, पत्ते बराबर डंडीपर लगे होते हैं, फूल पीला आता है, फली चपटी आती है ।

कौसुम्भशाक गुणाः ।

कौसुम्भशाकंमधुरंकटूष्णंविण्मूत्रदोषापहरंमदघ्नम् ।
दृष्टिप्रसादंकुरुतेविशेषाद्रुचिप्रदंदीप्तिकरंचवह्नेः ॥

अर्थ-कसूमके पत्तोंका शाक-मधुर, चरपरा, गरम, मल और मूत्रके दोषोंको हरनेवाला, मदनाशक, दृष्टिको बढानेवाला, रुचिकारक और अग्निको दीपन करे है ।

वर्षाभूशाक गुणाः ।

वर्षाभूवसुकौपर्णकफमांद्यानिलापहौ ।
शाकेरूक्षतरौगुल्मप्लीहशूलापहारकौ ॥

अर्थ-पुनर्नवा और वसुकके पत्तोंका शाक-रूखा तथा कफ, मंदाग्नि गुल्म, प्लीहा और शूलको निर्मूल करे है ।

गोजिह्वाशाक गुणाः ।

गोजिह्वाकुष्ठमेहास्रकृच्छ्रज्वरहरीलघुः ॥ (भा. प्र.)

अर्थ--गोभीका शाक--कोढ, प्रमेह, रुधिरविकार, मूत्रकृच्छ्र, ज्वर नाशक है तथा हलका है ।

पटोलपत्र गुणाः ।

पटोलपत्रंपित्तघ्नंदीपनंपाचनंलघु ।
स्निग्धंवृष्यंतथोष्णंचज्वरकासकृमिप्रणुत् ॥ (भा. प्र.)

अर्थ--परवलके पत्तोंका शाक-पित्तनाशक, दीपन, पाचक, हलका, स्निग्ध, वीर्य्यवर्द्धक, गरम, तथा ज्वर, खाँसी और कृमिरोगको दूर करे है।

गुडूचीपत्रशाक गुणाः ।

गुडूचीपत्रमाग्नेयंसर्वज्वरहरंलघु । कषायंकटुतिक्तंचस्वादुपाकंरसायनम् ॥ बल्यमुष्णंचसंग्राहिहन्यादोषत्रयंतृषाम् । दाहप्रमेहवातास्रकामलाकुष्ठपाण्डुताः ॥ (भा. प्र.)

अर्थ-गिलोयके पत्तोंका शाक-अग्निप्रदीपक, सर्व प्रकारके ज्वरोंको हरनेवाला, हलका, कसेला, चरपरा, कडवा, स्वादुपाकी, रसायन, बलवर्द्धक, गरम, मलरोधक, त्रिदोषनाशक, तृषानिवारक तथा दाह, प्रमेह, वातरक्त, कामला, कोढ और पांण्डुरोगको दूर करे है ।

पर्पटशाकगुणाः ।

पर्पटोहन्तिपित्तास्रज्वरतृष्णाकफभ्रमान् ।
संग्राहीशीतलस्तिक्तोदाहकृद्वातलोलघुः ॥

अर्थ-पित्तपापडेका शाक-रक्तपित्त, ज्वर, तृषा, कफ, भ्रम, और दाहको दूर करे है, ग्राही, शीतल, कडवा, वादी, और हलका है।

सेहुण्डपत्रशाक गुणाः ।

सेहुण्डस्यदलंतीक्ष्णंदीपनंरोचनंहरेत् ।
आध्मानाष्ठीलिकागुल्मशूलशोथोदराणिच ॥

अर्थ--सेहुण्डके पत्तोंका शाक -तीक्ष्ण, दीपन, रोचक तथा आध्मान, अष्ठीलिका, गुल्म, शूल, सूजन और उदररोगको दूर करे है।

यवानीपत्रशाक गुणाः ।

यावानीशाकमाग्नेयंरुच्यंवातकफप्रणुत

उष्णंकटुचतिक्तंचदीपनंगुल्मशूलनुत ॥

अर्थ—अजवायनके पत्तोंका शाक--जठराग्निकारक, रुचिकारक, वातकफ-नाशक, गरम, चरपरा, कडवा, दीपन, गुल्म और शूलको दूर करे है।

द्रोणपुष्पीपत्रशाकगुणाः ।

द्रोणपुष्पीदलंस्वादुरूक्षंगुरुचपित्तकृत ।
भेदकंकामलाशोथमेहज्वरहरंकटु ।

अर्थ—गूमाके पत्तोंका शाक--स्वादिष्ठ, रूखा, भारी, पित्तजनक, भेदक, कामला, सूजन, प्रमेह और ज्वरका नाश करे है तथा चरपरा है।

चणकपत्रशाकगुणाः ।

रुच्यंचणकशाकंस्याद्दुर्जरंकफवातकृत।
अम्लंविष्टम्भजनकंपित्तनुदन्तशोथनुत ॥

अर्थ—चनेके पत्तोंका शाक--दुर्जर, कफवातकारक, खट्टा, विष्टम्भकारक, पित्तनाशक और दांतोंकी सूजनको दूर करे है।

कलायपत्रशाकगुणाः ।

कलायशाकंभेदिस्याल्लघुतिक्तंत्रिदोषजित ।

अर्थ—मटरके पत्तोंका शाक--दस्तावर, हलका, कडवा और त्रिदोष-नाशक है।

अथ पुष्पशाकम् ।

अगस्तिपुष्पगुणाः ।

अगस्तिकुसुमंशीतंचातुर्थिकनिवारणम् ।
नक्तांध्यनाशनंतिक्तंकषायंकटुपाकिच ॥
पीनसश्लेष्मपित्तघ्नंवातघ्नंमुनिभिर्मतम् ॥ (भा. प्र.)

अर्थ—अगस्तियाके फूलोंका शाक-शीतल, चातुर्थिक अर्थात् चौथियाको दूर करनेवाला, रतौंधेको हरनेवाला, कडवा, कसेला, कटुपाकी तथा पीनस, श्लेष्म पित्त और वातको विनाश करे है।

जीवन्तीपुष्पशाकगुणाः ।

जीवन्तीपुष्पजंशाकंतुवरंमधुरंलघु ।

पथ्यंरुचिकरंवृष्यंकफपित्तविनाशनम् ॥

अर्थ-जीवन्तीके फूलोंका शाक-कसेला, मधुर, हलका, पथ्य, रुचिकारक, वृष्य और कफपित्तनाशक है।

कदलीपुष्पगुणाः ।

कदल्याःकुसुमंस्निग्धंमधुरंतुवरंगुरु ।
वातपित्तहरंशीतंरक्तपित्तक्षयप्रणुत् ॥

अर्थ—केलेके फूलोंका शाक-स्निग्ध, मधुर, कसेला, भारी, वातपित्तनाशक, शीतल तथा रक्तपित्त और क्षयरोगको क्षय करे है।

शिग्रुपुष्पगुणाः ।

शिग्रोःपुष्पन्तुकटुकंतीक्ष्णोष्णंस्नायुशोथकृत् ।
कृमिहृत्कफवातघ्नंविद्रधिप्लीहगुल्मजित् ॥
मधुशिग्रोस्त्वक्षिहितंरक्तपित्तप्रसादनम् ।

अर्थ-सैंजिनेके फूलोंका शाक-चरपरा, तीक्ष्ण, गरम, स्नायुओंमें सूजन करनेवाला, कृमिनाशक, कफवातनाशक तथा विद्रधि, प्लीहा और गुल्मको दूर करे है। मधुशिग्रुके फूलोंका शाक-नेत्रोंको हितकारी और रक्तपित्त प्रसादक है।

शाल्मलीपुष्पशाकगुणाः ।

शाल्मलीपुष्पशाकन्तुघृतसैन्धवसाधितम् । प्रदरंनाशयत्येवदुःसाध्यंचनसंशयः ॥ रसेपाकेचमधुरंकषायंशीतलंगुरु । कफपित्तास्रजिद्ग्राहिवातलंचप्रकीर्त्तितम् ॥

अर्थ-घी और सैंधानिमक डालकर बनायाहुआ शेमलके फूलोंका शाक दुःसाध्यप्रदरका निःसंदेह नाश करे है। रस और पाकमें मधुर, कसेला, शीतल, भारी तथा कफ और रक्तपित्तका नाश करे है, ग्राही और बादी है।

वरुणपुष्पगुणाः ।

पुष्पंवरुणजंग्राहिपित्तघ्नमामवातजित् ।

अर्थ-बरनाके फूलोंका शाक-मलरोधक, पित्तनाशक और आमवातको दूर करे है।

मधूकपुष्पगुणाः ।

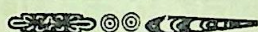
मधूकपुष्पंस्वहृद्यंतर्पणंबृंहणंपरम् ।

अर्थ-महुवाके फूलोंका शाक-हृदयको हितकारी, तृप्तिकारक, और पित्तकारक है।

कोविदारादिपुष्पशाकगुणाः ।

कोविदारकर्बुदारशणशाल्मलिपुष्पकम् ।
ग्राहिशाकंप्रशस्तंचरक्तपित्तेविशेषतः॥

अर्थ-कचनार, सफेद कचनार, सन और समलके फूलोंका शाक—ग्राधक और रक्तपित्तरोगमें हितकारी है।



अथ फलशाकम् ।

कूष्माण्डनामानि ।

कूष्माण्डंस्यात्पुष्पफलंपीतपुष्पंबृहत्फलम् ।

अर्थ-कूष्माण्ड, पुष्पफल, पीतपुष्प, बृहत्फल (घृणावास, तिमिष, ग्राम्यकर्कटी, कूष्माण्डक. कर्कारु, शिखिवर्द्धक, कुम्भाण्ड, कूष्माडी, कर्कोटिका, कुम्भाडी, बृहत्फला, सुफला, कुञ्जफला, नागपुष्पफला)।

संस्कृतभाषामें	कूष्माण्ड ।
हिन्दीभाषामें	पेठा कुम्हडा, कोहडा ।
वंगभाषामें	कुमडागाछ ।
मराठीभाषामें	कोहोला ।
गुजरातीभाषामें	भरुं कोलुं ।
कर्णाटकीभाषामें	दारकोहोळा ।
तैलिंगीभाषामें	पुल्लाहा, वर्डीका, गुम्मडि ।
उडी०	कखाडु, पानीकखारु ।
अंग्रेजीभाषामें	पंपकीन । Pumpkin
लैटिनभाषामें	वेनीनकासा सेरिफेरा । Benincassa Cerifera
फारसीभाषामें	भूराकुदु ।
अरबीभाषामें	महद्दबा ।

अस्यफलगुणाः ।

मूत्राघातहरंप्रमेहशमनंकृच्छ्राश्मरीछेदनम् ।

विण्मूत्रग्लपनंतृषार्तिशमनंजीर्णांगपुष्टिप्रदम् । वृष्यंस्वादुतरंत्वरोचकहरंबल्यंचपित्तापहम् ॥ कूष्माण्डप्रवरंवदन्तिभिषजोवल्लीफलानांपुनः॥ (रा. नि.)

अर्थ–पेठा–मूत्राघात रोगको हरनेवाला, प्रमेहको शान्ति करनेवाला मूत्रकृच्छ्र और पथरीका नाश करनेवाला, मल और मूत्र तृषाकी पीडाको शांति करनेवाला, जीर्ण शरीरवालोंको पुष्टि देनेवाला, वीर्य्यको बढ़ानेवाला स्वादिष्ठ, अरुचिको हरनेवाला, बलको करनेवाला, पित्तका नाश करनेवाला और सब बेलवाले फलोंमें उत्तम हैं

अन्यच्च ।

मूत्रावरोधशमनंबहुपित्तहारि कुच्छ्राश्मरीप्रशमनंविनिहन्तिपित्तम् ॥ पथ्यंसशोणितसमुल्बणपित्तरोगे तृष्णापहंत्रिपुसमंतमुदाहरन्ति ॥ (सु.)

अर्थ–पेठा–मूत्रके रोगको दूर करनेवाला, अनेक प्रकारके पित्तोंको हरनेवाला, मूत्रकृच्छ्र और पथरीरोगको शान्ति करनेवाला पित्तनाशक तथा रक्तपित्तरोगमें हितकारी, तृषा निवारक है ।

अन्यच्च ।

कूष्माण्डंभेद्यभिष्यन्दिविष्टम्भिवातपित्तजित् । वस्तिशुद्धिकरंवृष्यंस्वादुपाकरसंगुरु ॥ विशेषात्पित्तनुद्बालमध्यं चैवकफापहम् । पक्कंलघूष्णंसक्षारंदीपनंपाचनंतथा ॥ सर्वदोषहरंहृद्यंपथ्यंचेतोविकारनुत् ॥ (शो० नि०)

अर्थ–पेठा–भेदक, अभिष्यदी, विष्टम्भकारक, वातपित्तनाशक वस्तिशोधक, वीर्य्यवर्द्धक, स्वादुपाकी और भारी है । कच्चा पेठा–विशेष करके पित्तनाशक है । मध्यम अवस्थाका पेठा–कफनाशक है । और पक्का पेठा–हलका, गरम, क्षारयुक्त, दीपन, पाचन, त्रिदोषनाशक, हृदयको हितकारी, पथ्य और हृदय (मन) के रोगनाशक है ।

अपिच ।

कूष्माण्डकफलंवृष्यंपुष्टिकृद्धातुवर्द्धकम् । वस्तिशुद्धिकरंबल्यमतिस्वादुचशीतलम् ॥ गुरुरूक्षंसारकंचहृद्यंकफकर

मतम् । मूत्राघातंप्रमेहञ्चमूत्रकृच्छ्राश्मरींतृषाम् ॥ अरोचकंवातपित्तंपित्तंरक्तरुजंतथा । वातंरेतोविकारंचनाशयेदितितन्मतम् ॥ तत्कोमलंचातिशीतंदोषकृत्पित्तहारकम् ॥ तन्मध्यमंकफकरंपक्कंकिञ्चिच्चशीतलम् ॥ दीपकंचलघुस्वादुक्षारंवस्तेश्चशुद्धिदम । सर्वदोषहरंपथ्यंपक्कमज्जाचमाधुरी । वस्तिशुद्धिकरीवृष्यापित्तनाशकरीमता ॥ (नि० र०)

अर्थ-पेठा-वीर्य्यवर्द्धक, पुष्टिकारक, धातुवर्द्धक, वस्तिशोधक, बलकारक, अत्यन्त स्वादिष्ठ, शीतल, भारी रूखा, सारक, हृदयको हितकारी, कफनाशक तथा मूत्राघात, प्रमेह, मूत्रकृच्छ्र, पथरी, तृषा, अरुचि, वातपित्त, पित्त, रुधिरविकार, वात और शुक्रके विकारको हरे है, कच्चा पेठा-अत्यन्त शीतल, दोषकारक, पित्तकारक है । मध्यम अवस्थाका पेठा कफकारक और पक्का पेठा-किञ्चित् शीतल, दीपन, हलका, स्वादिष्ठ, खार वस्तिशोधक त्रिदोषनाशक और पथ्य है । पक्के पेठेकी मूँग-मधुर, वस्तिशोधक, वृष्य और पित्तनाशक है ।

विवरण । पेठा घरबाहर सब जगह बोयाजाता है और इसकी बेल चलती है यह फल बडा और इसका रंग नीला होता है जब यह फल पकजाता है तब इसके ऊपर सफेद रंगकी धूलसी जमजाती है ।

पीतकूष्माण्डनामानि ।

कूष्माण्डंपीतपुष्पाचग्राम्यापीतफलाचसा ।
गुडयोगफलाचैवपीतकूष्माण्डइत्यपि ॥

अर्थ-कूष्माण्ड, पीतपुष्पा, ग्राम्या, पीतफला, गुडयोगफला, पीतकूष्माण्ड ।

संस्कृतभाषामें (डंगरी) पीतकूष्माण्ड ।
हिन्दीमें लालपेठा, गोलकद्दू, भिलयाकद्दू, काशीफल, सफुरियाकुम्हार ।
बंगभाषामें विलातिकुमडा ।
मराठीभाषामें तांबडा भोंपळा ।
गुजरातीभाषामें पतकोलु, शाकरकोलु ।
कर्णाटकीभाषामें डंगर ।
तैलङ्गीभाषामें तियागुम्मडिकाया ।

अंग्रेज़ीभाषामें दिगोर्ड । The gourd
लैटिन् भाषामें कुकुर्विटा मेसिमा । Cucurdita Mascima
फारसीभाषामें बादरंग ।

पीतकूष्माण्डगुणाः ।

अपरंपीतकूष्माण्डंगुरुपित्तकरंपरम् ।
अग्निमान्द्यकरंस्वादुश्लेष्मघ्नंवातकोपनम् ॥ (आ० सं०)

अर्थ-पीतकूष्मांड अर्थात् भिलया, लालकद्दू-भारी, पित्तजनक, मन्दाग्निकारक, स्वादिष्ठ, कफनाशक और वातको कुपित करे है ।

विवरण-लाल कद्दू अर्थात् भिलयाकद्दू सर्वत्रबोया जाताहै, इसकी पेठेके माफिक बेल चलतीहैं, पत्ते बडे, बडे, फूल पीला और फल बहुत बडे बडे लगतेहैं ।

कूष्माण्डीनामगुणाश्च ।

कूष्माण्डीतुभृशंलघ्वीकर्कारुरपिकीर्तिता ।
कर्कारुर्ग्राहिणीशीतारक्तपित्तहरागुरुः ॥
पक्वातिक्ताग्निजननीसक्षाराकफवातनुत् । (भा०प्र०)

अर्थ-कूष्माण्डी (कोंहडी) हलकी और इसको कर्कारु भी कहतेहैं, कर्कारु- मलरोधक, शीतल, रक्तपित्तनाशक और भारी है, अग्निप्रदीपक, क्षारयुक्त और कफवातनाशक है ।

अलाबुनामानि ।

अलाबुःकथितातुम्बीद्विधादीर्घाचवर्तुला ।

अर्थ--अलाबू, तुम्बी (अलाबु, तुम्ब, तुम्बक, तुम्बा, पिण्डफला, अलाबु, महाफला, आलाबू, एलाबु, लाबु, लाबुका, तुम्बिका, तुम्बी, तुम्बक) यह दो प्रकारका होताहै एक लम्बा और दूसरा गोल ।

संस्कृतभाषामें अलाबु, तुम्बी ।
हिन्दीभाषामें कद्दू, तोम्बी, लम्बा लौआ, ग्रहालौआ, रामतोरई ।
वंगभाषामें लाउ, कदु ।
मराठीभाषामें दुध्या, भोंपळा ।
गुजरातीभाषामें दुधीयुं, दुधलुं ।
कर्णाटकीभाषामें कहंउकछकायि ।

तैलिंगी भाषामें तीयातुखडीकाया
अंग्रेजी भाषामें व्हाइटगुर्ड । White gourd
लेटिन् भाषामें कुकुर्बिटा लाजिनेरिया ।Cucurbita lagenaria
फारसीभाषामें कुदुशिरिन् कुदुएदरोज ।
अरबी भाषामें युक्तिनेहुलुकरा ।

अस्या गुणाः ।

मिष्टतुम्बीफलंहृद्यंपित्तश्लेष्मापहंगुरु ।
वृष्यंरुचिकरंप्रोक्तंधातुपुष्टिविवर्द्धनम् ॥ (भा.प्र.)

अर्थ-तोम्बी कदू हृदयको हितकारी,पित्तकफनाशक, भारी, वीर्यवर्द्धक रुचिकारक और धातु तथा पुष्टिवर्द्धक है ।

अन्यच्च ।

तुम्बीसुमधुरास्निग्धापित्तघ्नीगर्भपोषकृत् ।
वृष्यावातप्रदाचैवबलपुष्टिविवर्द्धिनी ॥ (रा. नि.)

अर्थ-तोम्बी-मधुर, स्निग्ध, पित्तनाशक, गर्भपोषक, वृष्य, वातजनक तथा बल और पुष्टिकारक है ।

अपिच ।

अलाबूर्भेदनीगुर्वीपित्तघ्नीकफलाहिमा ।

अर्थ-कदू रामतोरई-भेदक, भारी, पित्तनाशक, कफकारक और शीतल है ।

अन्यच्च ।

तुम्बीतुमधुरास्निग्धागर्भपोषणकारिणी । वृष्यावातप्रदाबल्यापौष्टिकारुच्यशीतला ॥ मलस्तम्भकरीरूक्षाभेदकागुरुपित्तनुत् । काण्डमस्याश्चमधुरंवातलंकफकारकम् ॥ स्निग्धंशीतंभेदकंचपित्तनाशकरंजगुः । (नि. र.)

अर्थ--तोम्बी--मधुर, स्निगध, गर्भको पोषण करनेवाली, वृष्य, वातजनक, बलकारक, पुष्टिजनक, रुचिकारक, शीतल, मलस्तम्भक, रूखी, भेदक और पित्तनाशक है । इसकी बेलके कांड-मधुर, बादी, कफकारक, स्निग्ध, शीतल, भेदक और पित्तनाशक हैं ।

कटुतुम्बीनामानि ।

कटुतुम्बीपिण्डफलाराजपुत्रीनृपात्मजा ।

फलिनीतिक्ततुम्बीचतिक्तकाकटुतिक्तका ॥

अर्थ-कटुतुम्बी, पिण्डफला, राजपुत्री, नृपात्मजा, फलिनी तिक्ततुम्बी, तिक्तका, कटुतिक्तका (लम्बा, इक्ष्वाकु, कटुकालाबु, कटुफला, तुम्बिनी, बृहत्फला, दंतबीजा, तिक्तबीजा, तुम्बिका, तुम्बी, महाफला, तुम्बीका, क्षत्रियवरा, कटुतुम्बिनी) ।

संस्कृत भाषामें	कटुतुम्बी ।
हिन्दी भाषामें	तितलौकी, कडवीतोम्बी ।
वंग भाषामें	तित्लाउ ।
मराठी भाषामें	कडू भोंपळा ।
गुजराती भाषामें	कडवी तुम्बडी ।
कर्णाटकी भाषामें	कहीसोरे ।
तैलिङ्गी भाषामें	चेतिआनव ।
अंग्रेजी भाषामें	बोटलगुर्ड । Bottle gourd
लैटिन् भाषामें	लेजीनेरिया वलगेरिस । Lagenaria Vulgaris क्युक्युर्बिटा लेजिनेरिया । Cucurbita Tagenaria
फारसी भाषामें	कदुदुतल्ख ।
अरबी भाषामें	करउल्मुर ।

अस्या गुणाः ।

कटुतुम्बीकटुस्तीक्ष्णावान्तिकृच्छ्वासवातजित् ।
कासघ्नीशोधनीशोफव्रणशूलविषापहा ॥ (रा. नि.)

अर्थ-- कडवी तोम्बी--कटु, तीक्ष्ण, वान्तिजनक, श्वासको दूर करनेवाली और वातनाशक, कासनिवारक, शोधक तथा सूजन, व्रण, शूल और विषनाशक है ।

अन्यच्च ।

कटुतुम्बीहिमाहृद्यापित्तकासविषापहा ।
तिक्ताकटुर्विपाकेचवातपित्तज्वरान्तकृत् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ--कडवी तोम्बी--शीतल, हृदयको हितकारी, कडवी, पचनेमें कटु तथा पित्त, खांसी, विष और वातपित्तज्वरको दूर करे है ।

अस्याः पर्णगुणाः ।

पर्णपाकेतुमधुरंमूत्रशोधनमुत्तमम् ।

पित्तशान्तिकरंप्रोक्तमृषिभिःसूक्ष्मदर्शिभिः ॥

अर्थ-कडवीतोम्बीके पत्ते-पाकमें मधुर, मूत्रशोधक और पित्तको शान्ति-कर हैं।

कासश्वासविषच्छर्दिज्वरार्तेकफकर्षिते।
प्रताम्यतिनरेचैववमनार्थंतदिष्यते ॥

अर्थ-कडवीतोम्बी-खाँसी, श्वास, विष वमन और जो मनुष्य ज्वरसे तथा कफसे पीडित हैं उनके लिये इसकी वमन देनी चाहिये।

विवरण-कडवीतोम्बी और रामतोरईकी बेल एकसी होती है, फूलभी दोनोंपै सफेद आते हैं, फल भी एक से लगते हैं।

कर्कटीनामानि।

एर्वारुःकर्कटीप्रोक्ताकथ्यन्तेतद्गुणाअथ ॥

अर्थ-एर्वारु, कर्कटी (लोमशी, व्यालपत्रा, बृहत्फला, व्यालपत्री, लोमशा, स्थूला, तोयफला, हस्तिदन्तफला, कर्कटी, छर्दापनिका, पीनसा, मूत्रला, मूत्रफला, त्रपुषा, हस्तिपर्णी, लोमशकाण्डा, बहुकन्दा, चिर्भटी, कर्कटाक्ष, वाल्लतु, वालुङ्गी, त्रपुषी, इर्वारु, उर्वारु ईर्वारु)।

संस्कृतभाषामें	कर्कटी
हिन्दीभाषामें	ककडी।
बंगभाषामें	काँकुड, बडकाँकड।
मराठीभाषामें	कांकडी, वालुक-कांकडी।
गुजरातीभाषामें	कांकडी।
कर्णाटकीभाषामें	क्ययसौत।
तैलिङ्गीभाषामें	दोसकाया।
अंग्रेजीभाषामें	ककंबर। Cucumber
लेटिन्भाषामें	क्युक्युमिस् सेटिवस्। Cucunis Sativus
फारसीभाषामें	ख्याटजाव×दरंज ख्यारदराज।
अरबीभाषामें	किस्साकदस्।

अस्या गुणाः।

कर्कटीशीतलारूक्षाग्राहिणीमधुरागुरुः।
रुच्यापित्तहरासामापक्वातृष्णाग्निपित्तकृत ॥ (भा. प्र.)

अर्थ-कच्ची काकडी-शीतल, रूखी, मलरोधक, मधुर, भारी, रुचिकारक और पित्तको दूर करे है। पक्की ककडी-गरम, अग्निवर्द्धक और पित्तकारक है।

एर्वारुकंपित्तहरंसुशीतलंमूत्रामयघ्नंमधुरंरुचिप्रदम्।
सन्तापमूर्च्छापहरञ्चतृप्तिदंवातप्रकोपायघनंतुसेवितम् (रा.नि.)

अर्थ-ककड़ी-पित्तनाशक, शीतल, मूत्ररोगनाशक, मधुर, रुचिकारक सन्ताप और मूर्च्छाको दूर करनेवाली, तृप्तिजनक और अत्यन्त सेवन करनेसे वातको कुपित करे है।

अन्यच्च।

कर्कट्यास्तुफलंपक्वंछर्दितृष्णाक्लमार्त्तिनुत्॥

अर्थ-पक्की ककडी-वमन, तृषा और क्लान्तिको दूर करे है।

अपिच।

एर्वारुकंतुमधुरंरुच्यंरूक्षंचशीतलम्। तृप्तिकृद्ग्राहकंप्रोक्तमत्यन्तवातकारकम्। गुरुवातज्वरकफकारकंतापहारकम्। पित्तंमूर्च्छामूत्रकृच्छ्रंनाशयेदितिकीर्त्तितम्॥ कोमलैर्वारुकंतिक्तंलघुस्वाद्वतिमूत्रलम्। शीतंरूक्षंरक्तपित्तमूत्रकृच्छ्रास्रदोषजित्॥ तत्पक्वंपित्तलंचाग्निदीपनंचतृषापहम्। उष्णंत्रिदोषशमनंक्लमदाहहरंमतम्॥ गृहेजीर्णंतुतत्प्रोक्तमुष्णंपित्तकरंमतम्। कफवायोर्नाशकरंप्रोक्तमायुर्विदैर्जनैः॥

अर्थ--ककडी--मधुर, रुचिकारक, रूखी शीतल, तृप्तिकारक, मलरोधक, अत्यन्त बादी, भारी, वातज्वरकारक कफकारक, तापनाशक तथा पित्त, मूर्च्छा और मूत्रकृच्छ्र रोगका नाश करे है। कोमल ककडी- हलकी, कडवी और स्वादु, अत्यन्त मूत्रकारक, शीतल, रूखी है तथा रक्तपित्त, मूत्रकृच्छ्र और रुधिरके विकारोंको दूर करे है, पक्की ककडी--पित्तजनक, अग्निदीपक, तृषानिवारक, गरम, त्रिदोषनाशक, क्लमहारक, दाहनिवारक है और जो घरमें रक्खीहुई पकजावे ऐसी ककडी--गरम पित्तकारक तथा कफ और वातको नष्ट करे है।

कर्कटीमधुरारुच्याशीतालघ्वीचमूत्रला। त्वचायाकटुका

तिक्तापाचकाग्निप्रदीपनी ॥ अवृष्याग्राहिणीप्रोक्तामूत्ररोधाश्मरीहरा । मूत्रकृच्छ्रंवमिंदाहंश्रमंचैवविनाशयेत् ॥ सापक्वारक्तदोषस्यकारिण्युष्माबलप्रदा ॥

अर्थ—दूसरे प्रकारकी ककडी--मधुर, शीतल, रुचिजनक, हलकी, मूत्रजनक, इसकी त्वचा—कटु, तिक्त, पाचक, अग्निप्रदीपक, अवृष्य, ग्राहिणी, मूत्ररोध, पथरी, मूत्रकृच्छ्र, वमन, दाह और श्रमका नाश करे है। वही पक्की ककडी-रुधिरविकारकारक, गरम और बलकारक है।

तृतीयाकर्कटीरुच्यामधुरावातकारिणी ।
शीतामूत्रप्रदागुर्व्वीकफकृद्दाहनाशिनी ॥
वमिंपित्तंभ्रमंमूत्रकृच्छ्रंमूत्राश्मरींहरेत् ।

अर्थ-तीसरे प्रकारकी ककडी--रुचिकारक, मधुर, वातवर्द्धक शीतल, मूत्रजनक, भारी, कफकारी, दाहनाशक तथा वमन, पित्त, भ्रम, मूत्रकृच्छ्र, मूत्ररोध, पथरीको दूर करे है।

अरण्यकर्कटी गुणाः ।

अरण्यकर्कटीचोष्णारसेतिक्ताचभेदिका ।
पाकेकट्वीकफकृमिपित्तकण्डूज्वरापहा ॥

अर्थ--वनककडी--गरम, तिक्तरसान्वित, भेदक, पाकमें कटु तथा कफ, कृमि, पित्त, कण्डू और ज्वरको दूर करनेवाली है।

तिक्तकर्कटीगुणाः ।

तिक्तकर्कटिकाप्रोक्तारसेपाकेकटुः स्मृता ।
तिक्तामूत्रकरीवान्तिकरिकामूत्रकृच्छ्रहा ।
आध्मानवातंचाष्ठीलांनाशयेदितिकीर्तिता ॥

अर्थ--कडवीककडी--रस और पाकमें कटु, तिक्त, मूत्रजनक, वमनकारक मूत्रकृच्छ्रहारक तथा आध्मान और अष्ठीलाको दूर करे है।

चीनाकर्कटीगुणाः ।

चीनाकर्कटिकाशीतामधुरारुचिदागुरुः ।
कफवाततृप्तिकरीहृद्यापित्तरुजापहा ॥
दाहशोषहराप्रोक्तामुनिभिश्चरकादिभिः ।

अर्थ--चीनाककडी--शीतल, मधुर, रुचिकारक, भारी, कफकारी वातवर्द्धक, तृप्तिजनक, हृदयको हितकारी, पित्तरोगनाशक, तथा दाह और शोषको हरनेवाली है ।

सर्वकर्कटीगुणाः ।

सर्वाकर्कटिकागुर्वीदुर्जरावातरक्तदा । अग्निमांद्यकरीप्रोक्ता ऋषिभिःशास्त्रकोविदैः ॥ वर्षाशरदिचोत्पन्नानोहितानच भक्षयेत् । हेमन्तजारुचिकरापित्तहाभक्षिताहिता ॥ सैवार्धपक्वासंप्रोक्तापीनसोत्पादनीमता । सम्यक्पक्वाचमधुराकफनाशकरीमता ॥ (नि० २०)

अर्थ- सर्वप्रकारकी ककडी--भारी, कठिनतासे पचनेवाली वातरक्तको करनेवाली और मंदाग्निको करनेवाली है । वर्षा और शरद ऋतुमें उत्पन्न होनेवाली ककडी हितकारक नहीं है और न भक्षण करनी चाहिये । हेमन्त ऋतुमें होनेवाली ककडी—रुचिकारक, पित्तनाशक, भक्षणकरने योग्य और हितकारी है । अधपकी ककडी -पीनसको उत्पन्न करनेवाली है । अच्छे प्रकारसे पकी हुई ककडी -मधुर, और कफनाशक है ।

विवरण । ककडीकी अनेक जाति हैं किंतु सर्वप्रकारकी ककडियोंमें ग्रीष्म ऋतुकी ककडी उत्तम है, ककडी सर्वत्र होती है ।

त्रपुषनामानि ।









त्रपुषंकण्टकिफलंसुधावासंसुशीतलम् ।

अर्थ- त्रपुष, कण्टकिफल, सुधावास, सुशीतल (पीतपुष्पा, काण्डालु, ...शालु, त्रपुककटी, बहुफला, कण्टकिलता, कोषफला, तुन्दिलफला, ...वासा) ।

संस्कृतभाषामें	त्रपुष ।
हिन्दीभाषामें	खीरा, क्षीरा, बालमखीरा ।
...भाषामें	शँशा ।
मराठीभाषामें	तवसें, कांकडी, खिरा ।
गुजरातीभाषामें	तांसलि ।
कर्णाटकीभाषामें	तसेंयक्कायि ।
तैलिंगीभाषामें	दोजकइअ ।
तामिलीभाषामें	महेवेहरिकोङ्कणो ।
अंग्रेजीभाषामें	The Cocumber
लैटिन्भाषामें	(Cucumis salivus S. N. C. Hardwichii)
फारसीभाषामें	शियारखुर्द ।

त्रपुषगुणाः ।

त्रपुषंलघुनीलंचनवंतृट्क्लमदाहजित् । स्वादुपित्तापहंशीतं

रक्तपित्तहरंपरम् ॥ तत्पक्कमम्लमुष्णंस्यात्पित्तलंकफवातनुत् । तद्बीजंमूत्रलंशीतंरूक्षंपित्तास्रकृच्छ्रजित् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-नवीनखीरा-हलका, नीला, स्वादिष्ट शीतल तथा तृषा, क्रम, दाह, पित्त और रक्तपित्तको दूर करेहै पकाहुआ खीरा-खट्टा, गरम, पित्तकारक, कफवातनाशक है। इसके बीज-मूत्रजनक, शीतल, रूखे तथा रक्तपित्त और मूत्रकृच्छ्रको दूर करेहैं।

अन्यच्च ।

स्यात्त्रपुषीफलंरुच्यंमधुरंशिशिरंगुरु ।
भ्रमपित्तविदाहार्त्तिवान्तिहृद्बहुमूत्रदम् ॥ (रा. नि.

अर्थ-खीरा-रुचिकारक, मधुर, शीतल, भारी, बहुमूत्रजनक तथा भ्रम, पित्त, दाहकी वेदना और वमनको दूर करे है। खीरा सर्वत्र प्रसिद्ध है।

चिर्भिटनामानि ।

चिर्भिटंधेनुदुग्धंचतथागोरक्षकर्कटी ।

अर्थ-चिर्भिट, धेनुदुग्ध, गोरक्षकर्कटी (सुचित्रा, चित्रफला, क्षेत्रचिर्भिटा, पाण्डुफला, पथ्या, रोचनफला, चिर्भिटिका, कर्कचिर्भिटा)।

मृगेर्वारुनामानि ।

मृगाक्षीश्वेतपुष्पाचमृगेर्वारुमृगादनी । चित्रवल्लीबहुफलाकपिलाक्षीमृगेक्षणा ॥ चित्राविचित्रफलापथ्य विचित्रामृगचिर्भिटा । मरुजाकुम्भसीदेवीज्ञेयाचेकोनविंशतिः ।

अर्थ-मृगाक्षी, श्वेतपुष्पा, मृगेर्वारु, मृगादनी, चित्रवल्ली, बहुफला, कपिलाक्षी, मृगेक्षणा, चित्रा, चित्रफला, पथ्या, विचित्रा, मृगचिर्भिटा, मरुजा, कुम्भसी, देवी (कटूफला, लघुचिर्भिटा)।

संस्कृतभाषामें	चिर्भिट (टा) मृगेर्वारु ।
हिन्दीभाषामें	कचरिया, गुरभीहुँ, भकुर, सेंध, फूट, गोरखककड़ी।
वंगभाषामें	काकुड, गोमुक, फुटी ।
मराठीभाषमें	चिबूड, शेंदाड, टकमकें ।
गुजरातीभषामें	चिभडां, राजगरां, कोठींबां ।
तैलङ्गीभाषामें	बुडरंगपंडु ।
अंग्रेजीभाषामें	पुबिसेंटक्युकंबर । Pubescent Cucumber
लेटिन्भाषामें	क्युकुमिस् प्युबीसेन्स । Cucumis Pubescens
क्यु०	ट्राईगोनस् । C. Trigonus

चिर्भिटगुणाः ।

चिर्भटंमधुरंरूक्षंगुरुपित्तकफापहम् ।
अनुष्णंग्राहिविष्टम्भिपक्वमूष्णञ्चपित्तलम् ॥

अर्थ-कचरिया. गुरुभीहु--मधुर, रूखी, भारी. पित्तकफनाशक, गरम नहीं, ग्राही और विष्टम्भकारक है । पक्की कचरिया--गरम और पित्तकारक है ।

अन्यच्च ।

बाल्यतिक्ताचिर्भटाकिञ्चिदम्ला गौल्योपेतादीपनीसाचपाके ।
शुष्कारूक्षाश्लेष्मवाताहृचिघ्नी जाड्यघ्नीसारोचनीदीपनीच ॥

अर्थ-कच्ची कचरिया--कडवी, किञ्चित् अम्ल, गोरव और पाकमें दीपन है। सूखी कचरिया--रूखी, कफनाशक, वातविनाशक, अरुचिनिवारक जडतानाशक, रोचन और दीपन है ।

अन्यच्च ।

चिर्भटःशीतलोग्राहीगुरुश्चमधुरःस्मृतः । मलस्तम्भकरःपित्तमूत्रकृच्छ्राश्मरीहरः ॥ दाहंप्रमेहंवातंचशोषंचैवविनाशयेत् । तत्कोमलफलंवातकोपनंकफपित्तनुत् ॥ तत्पक्वंपित्तलंचोष्णंमुनिभिःपरिकीर्त्तितम् ।

अर्थ-कचरिया-- शीतल, मलरोधक, भारी, मधुर, मलस्तम्भक तथा पित्त, मूत्रकृच्छ्र, पथरी, दाह, प्रमेह, वात और शोषका नाश करे है। कच्ची कचरिया--वातको कुपित करनेवाली, कफपित्तनाशक है । पक्की कचरिया--पित्तकारक और गरम है ।

अपिच ।

समस्तंचिर्भटंवातकफकृत्स्वादुशीतलम् ॥

अर्थ-सर्वप्रकारकी कचरिया वातककारक, स्वादिष्ट और शीतल है।

चिर्भटपुष्पगुणाः ।

पुष्पञ्चचिर्भटस्यैवदोषत्रयकरंस्मृतम् ।
अपक्वंजीर्णकफकृत्पक्वंकिञ्चिद्विशिष्यते (हा० सं०)

अर्थ-कचरियाके फूल त्रिदोषकारक हैं कच्चा अजीर्ण और कफ करे है और पक्का कुछेक विशेष हो जाता है ।

मृगाक्षीगुणाः ।

मृगाक्षीकटुकातिक्तापाकेम्लावातनाशिनी ।
पित्तकृत्पीनसहरादीपनीरुचिकृत्परा । (रा० नि०)

अर्थ--सेंध--चरपरी, कडवी पचनेमें खट्टी, वातनाशक, पित्तनाशक पीनसरोगको दूर करनेवाली, दीपन और रुचिको करनेवाली है।

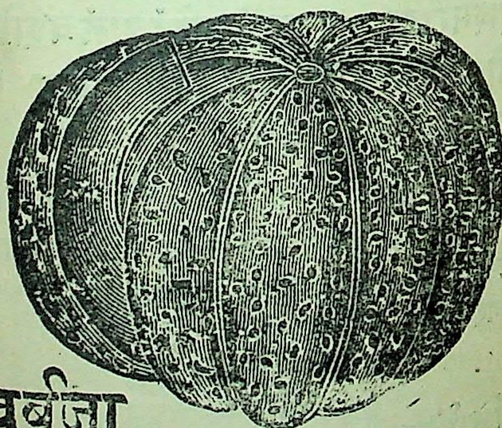
अपिच ।

तिक्तंसुतीव्रंमधुरंचसाम्लंवातापहंपित्तविनाशनंच ।
श्लेष्माकरंरोचनपाचनंचकोठीवटञ्चाग्निकरंनराणाम् (सुषे०)

अर्थ- सेंध- कडवी, तीव्र, मधुर खट्टी, वातविनाशक, पित्तनाशक कफकारक, रोचन, पाचन और मनुष्योंके अग्निको दीपन करे है।

विवरण । चिर्भटा, फूट, सेंध, कचरिया इन सबकी बेल ककडी तथा खबूनके समान होती है ।

खर्बूजनामानि ।



खर्बूजा.

दशांगुलंतुखर्बूजंकथ्यंतेतद्गुणाअथ ॥

अर्थ--दशांगुल, खर्बूज (फ. वृत्तकर्कटी, तिक्ता, तिक्तफला, मधुपाका, वृत्तेर्वारु, षण्मुखा)।

संस्कृत भाषामें	दशांगुल ।
हिन्दी भाषामें	खरबूजा ।
वंग भाषामें	खरमुज, खरबुजा ।
मराठी भाषामें	खर्बुजा ।

गुजरातीभाषामें	तलिया शकरटेटी ।
कर्णाटकीभाषामें	षढजसौते ।
तैलिंगीभाषामें	खरबूजं ।
अंग्रेजीभाषामें	मेलन् । Melon
लैटिन्भाषामें	कुक्युमिस् मेलो । Cucumis Melo
फारसीभाषामें	खुरपुजा ।
अरबीभाषामें	बित्तिख ।

अस्य गुणाः ।

खर्बूजंमूत्रलंबल्यंकोष्ठशुद्धिकरंगुरु । स्निग्धंस्वादुतरंशीतं वृष्यंपित्तानिलापहम् ॥तेषुयच्चाम्लमधुरंसक्षारञ्चरसाद्भवेत् । रक्तपित्तकरंतत्तुमूत्रकृच्छ्रकरंपरम् ॥

अर्थ- खर्बूजा- मूत्रकारक, बलकारक, कोठेको शुद्ध करनेवाला, भारी, स्निग्ध, स्वादुतर, शीतल, वीर्य्यवर्द्धक तथा पित्त और वातको नष्ट करे है। इसमें जो खरबूजा रसमें खट्टा, मीठा और खारी होता है वह रक्तपित्तको करनेवाला और मूत्रकृच्छ्ररोगको उत्पन्न करनेवाला होता है।

अन्यच्च ।

तिक्तंबाल्येतदनुमधुरंकिञ्चिदम्लंचपाके निष्पक्वंचेत्तदमृतसमंतर्पणंपुष्टिदायि । वृष्यंदाहश्रमविशमनंमूत्रवृद्धिंचधत्ते पित्तोन्मादापहरकफदंषड्भुजंवीर्य्यकारि ॥ (रा० नि०)

अर्थ--कच्चा खर्बूजा-- कडवा, ईषत् मधुर और पाकमें किंचित् खट्टा है। पका खर्बूजा--अमृतके समान तृप्तिकारक, पुष्टिदायक, वृष्य, दाहको दूर करनेवाला, श्रमको हरनेवाला, मूत्रवर्द्धक तथा पित्त और उन्मादका नाश करनेवाला, कफकारक और वीर्य्यजनक है।

अन्यच्च ।

खर्बूजंफलराजमुत्तमगुणंपक्वंरसंबृंहण बल्यंस्वादुतरंहिम गुरुमहत्पित्तानिलार्त्तिहरेत् । स्निग्धंमूत्रलमौदरामयहरं सौगन्धिमत्यादरान्नीतं पाणियुगे दशांगुलमतो नाम्ना कृतं विष्णुना ॥ (सुषेण)

अर्थ-फलोंमें राजा, उत्तम हैं गुण जिसके ऐसा पक्का खरबूजा पुष्टिकारक बलवर्द्धक, स्वादुतर, शीतल भारी, पित्त और वातकी वेदनाको शान्तिकरनेवाला, स्निग्ध, मूत्रजनक, उदररोगको दूर करनेवाला और अत्यन्त सुगंधिवाला है। विष्णुने इसको अत्यन्त आदरसे दोनों हाथोंमें लिया इसकारण इसका नाम दशांगुल है।

अपिच।

पक्वन्तु खर्बुजं तृप्तिकारकं पौष्टिकं मतम्। कफकृन्मूत्रलं बल्यं कोष्ठशुद्धिकरं गुरु ॥ स्निग्धं सुस्वादु शीतं च वृष्यं दाहश्रमापहम्। वातं पित्तं च उन्मादं नाशयेदिति तन्मतम् ॥ तत्कोमलं मधु स्तिक्तं किञ्चिदम्लं च तन्मतम्। तत्तु वृद्धं च मधुरं रसे क्षारञ्च अम्लकम् ॥ रक्तपित्तमूत्रकृच्छ्रं करोतीति बुधा जगुः॥ (रत्ना०)

अथ-पक्का खरबूजा-तृप्तिकारक, पुष्टिजनक, कफकारक, मूत्रवर्द्धक, बलकारक, कोठेको शुद्ध करनेवाला, स्निग्ध, सुस्वादु, शीतल, वृष्य तथा दाह, श्रम, वात, पित्त और उन्मादरोगको हरनेवाला है। कच्चा खरबूजा मधुर, कडवा और किंचित् खट्टा है। पुराना खरबूजा-मधुर, क्षाररसान्वित, अम्ल तथा रक्तपित्त और मूत्रकृच्छ्ररोगको उत्पन्न करनेवाला है। खरबूजा कईप्रकारका होता है। किन्तु ग्रीष्मऋतुमें उत्पन्न होनेवाला सर्वमें श्रेष्ठ होता है।

कालिङ्गनामानि।



कालिङ्गं कृष्णबीजं स्यात्कालिन्दं च सुवर्तुलम् ॥

अर्थ-कालिंग, कृष्णबीज, कालिंद, सुवर्त्तुल (मांसफल, चित्रफल, चित्रवल्लिका, चित्र मधुरफल, वृत्तफल, घृणाफल, मांसल, अल्पप्रमाणक, तृणाश राजतिनिष लतापनस, नाटाम्र, भेंट, शीर्णवृन्त, वृहद्गोल सुखवास, गोडुम्ब, रक्तबीज, चेलान्न, मूत्रल)।

संस्कृतभाषामें	कालिंग शीर्णवृन्त ।
हिन्दीभाषामें	तरबूज, सरदा तरबूज, लाल और कालेबीजोंका, कालिङ्ग ।
वंगभाषामें	तरमुज, चेलना ।
मराठीभाषामें	कलिङ्गड ।
गुजरातीभाषामें	तडबूच कलिङ्गडुँ ।
कर्णाटकीभाषामें	कौंड ।
तैलिङ्गीभाषामें	तरबुजंपुच्चकाया ।
औ०क०	तरपुज ।
अंग्रेजीभाषामें	वाटरमेलन् । Water Melon
लैटिन्भाषामें	सांईट्रुलस् वल्गेरीस । Citrullus Vulgaris
फारसीभाषामें	हिंदवाना ।
अरबीभाषामें	बत्तिखहिंदी ।

कालिङ्गगुणाः ।

कालिङ्गंग्राहिदृक्पित्तशुक्रहृच्छीतलंगुरु ।
पक्वन्तुसोष्णंसक्षारंपित्तलंकफवातकृत ॥ ([illegible])

अर्थ-कच्चा तरबूज--मलरोधक, नेत्रपित्त और शुक्रको हरनेवाला शीतल और भारी है, पक्का तरबूज--गरम, क्षारयुक्त, पित्तजनक और कफ-वातनाशक है ।

अपिच ।

कालिंगोमधुरःशीतःपित्तदाहश्रमापहः ।
वृष्यःसन्तर्पणोबल्योवीर्य्यपुष्टिविवर्द्धनः ॥ (रा. नि.)

अर्थ--तरबूज--मधुर, शीतल, पित्तनाशक, दाहनिवारक, श्रमनाशक, वृष्य, तृप्तिकारक, बलवर्द्धक तथा वीर्य्य और पुष्टिकारक है ।

अन्यच्च ।

शीर्णवृन्तंकफकरंसक्षारंमधुरंलघु ।

अर्थ-तरबूज -कफकारक, क्षारयुक्त, मधुर और हलका है ।

अपिच ।

चेलानंगुरुविष्टम्भिमधुरंवातपित्तशित् ॥ (राजवल्लभ)

अर्थ--दूसरे प्रकारका तरबूज -भारी, विष्टम्भकारक, मधुर, और वात-पित्तनाशक है ।

अन्यच्च ।

कालिंगंशीतलंबल्यंमधुरंतृप्तिकारकम् । गुरुपुष्टिकरंज्ञेयं मलस्तम्भकरंतथा ॥ कफकृद्दृष्टिपित्तघ्नंशुक्रधातोस्तुनाशकम् । तत्पक्वंपित्तलंक्षारंचोष्णंवातकफप्रणुत् ॥ "मज्जास्तु-मधुरोबल्योरुचिकृद्धातुवर्द्धकः ।" पर्णंतिक्तंरक्तवृद्धिकरं चैवप्रकाशितम् ॥ (नि. र.)

अर्थ--कच्चा तरबूज--शीतल, बलकारक, मधुर, तृप्तिकारक, भारी, पुष्टिकारक, मलस्तभक, कफकारक, तथा दृष्टि पित्त, शुक्र और धातुका नाशकर्ता है। पका तरबूज--पित्तजनक, क्षारयुक्त, गरम और वातकफनाशक है। इसके तरबूजकी मींग--मधुर, बलकारक, रुचिजनक, और धातुवर्द्धक है। इसके पत्ते--कडवे और रक्त वर्द्धक हैं ।

विवरण । तरबूजेके खेत प्रायः नदीके निकट और रेतीमें होते हैं तरबूज दो प्रकारका होता है एक काले बीजोंका दूसरा लाल बीजोंका काले बीजोंके तरबूजका गूदा गुलाबी और पीलेरङ्गका होता है और लाल बीजोंके तरबूज का गुदा लाल गुलाबी और पीले आदि सब रङ्गका होता है इस देशमें तरबूज पौष और माघके महीनोंमें बोते हैं, फाल्गुन और चैत्र मे क्षुप होकर पुष्प आजाते हैं और बैशाख ज्येष्ठमें फल लगते हैं । दूसरे प्रकारके अर्थात् काले बीजोंके तरबूज कार्त्तिक मासमें होते हैं । किसी २ देशमें तरबूज बड़े होते हैं और तोलमें १ मन पर्यन्त होता है ।

कोशातकीनामानि ।

कोशातकीस्वादुफलासुपुष्पाककोंटकीस्यादपिपीतपुष्पा । धाराफलादीर्घफलासुकोशाधामार्गवःस्यान्नवसंज्ञकोयम् ॥

अर्थ--कोशकी, स्वादुफला, सुपुष्पा, कर्कोटकी, पीतपुष्पा, धाराफला, दीर्घफला, सुकोषा, धामार्गव (कृतवेधना, जालिनी, राजकोशातकी, राजिमत्फला)

संस्कृतभाषामें कोशातकी, धाराफला ।
हिन्दीभाषामें तोरई ।
बंगभाषामें घोषालता ।
मराठीभाषामें शिराळी, दोडकी ।
गुजरातीभाषामें तुरीयां थिसोडा ।
कर्णाटकीभाषामें धारवितरोई ।
तैलङ्गीभाषामें बीरकाया ।
अंग्रेजीभाषामें एक्युटंगलेडककम्बर । Acuteangied Cucumber
लेटिन्भाषामें ल्युफाएक्युटेंग्युला । Luffa acutangula

अस्या गुणाः ।

धाराकोशातकीस्निग्धामधुराकफपित्तनुत् ।
ईषद्वातकरीपथ्यारुचिकृद्बलवीर्य्यदा ॥ (रा. नि.)

अर्थ-तोरई-स्निग्ध, मधुर, कफपित्तनाशक, किंचित् बादी, पथ्य, रुचि-कारक, बल और वीर्य्यको देनेवाली है।

अन्यच्च ।

पित्तानिलघ्नंकफजिद्विपाकात्पथ्यंज्वरेस्वादुरसोपपन्नम् ।
हुताशनोद्दीपनभेदकंचकोशातकंशाकवरंवदन्ति ॥

अर्थ-तोरइयोंका शाक-पित्तवातनाशक, कफहारक, ज्वरमें पथ्य, स्वादु-रसवाला, अग्निको दीपन करनेवाला और शाकोंमें इसको श्रेष्ठ कहते हैं।

अपिच ।

धाराकोशातकीशीतामधुराकफवातला ।
पित्तघ्नीदीपनीश्वासज्वरकासकृमिप्रणुत् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-तोरई-शीतल, मधुर, कफकारक, बादी, पित्तनाशक, दीपन तथा श्वास, ज्वर, खांसी और कृमिका नाश करे है।

महाकोशातकीनामानि ।

महाकोशातकीप्रोक्ताहस्तिघोषामहाफला ।
धामार्गवोघोषकश्चहस्तिपर्णश्चसस्मृतः ॥

अर्थ-महाकोशातकी, हस्तिघोषा, महाफला, धामार्गव, घोषक, हस्तिपर्ण (बृहत्कोशातकी, हस्तिकोशातकी, ग्राम्यकोशातकी, ऐभी, महत्पुष्पा, सपीतिका, हस्तिघोषातकी)।

संस्कृतभाषामें	महाकोशातकी ।
हिन्दीभाषामें	घियातोरई, नेनुआ ।
वंगभाषामें	हस्तिघोषा+धुन्दुल ।
मरठीभाषामें	घोसाळी, घडघोसाळी, पारोशी ।
गुजरातीभाषामें	गलकां ।
कर्णाटकीभाषामें	अरहिरे ।
तैलिङ्गीभाषामें	पुछावीरकाया+एनुगवीर ।
लेटिन्भाषामें	ल्युफाप्रेंटंड्रा । Luffaprntaundra
फारसीभाषामें	खियार ।
उडि०	तरडि ।

अस्य गुणाः ।

महाकोशातकीस्निग्धासरापित्तानिलापहा । (म० वि०)

अर्थ-घियातोरई-स्निग्ध, सारक तथा पित्त और वातका नाश करे है।

अन्यच्च ।

महाकोशातकीस्निग्धारक्तपित्तानिलापहा । (भा० प्र०)

अर्थ—घियातोरई, बडी तोरई-स्निग्ध, रक्तपित्तनाशक और वातकी नाशक है ।

अपिच ।

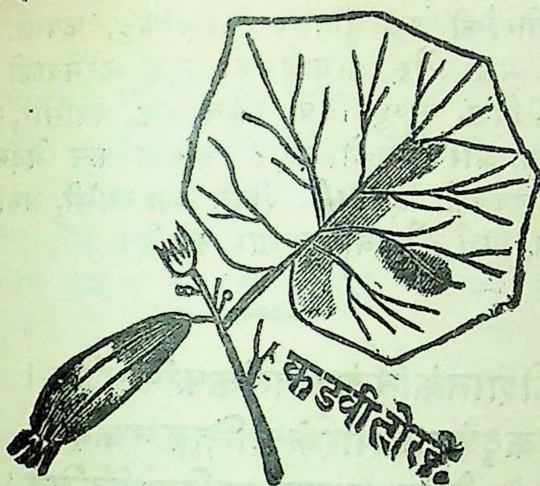
हस्तिकोशातकीस्निग्धामधुराध्मानवातकृत् ।
वृष्याकृमिकरीचैवव्रणसंरोपणीचसा ॥ (रा० नि०)

अर्थ-घियातोरई, नेनुआ-स्निग्ध, मधुर, आध्मानकारक, वातवर्द्धक, वृष्य, कृमिजनक और घावको भरनेवाली है ।

तिक्तकोशातकीनामानि ।

कोषातक्यांकृतच्छिद्राजालिनीकृतवेधना ।
क्ष्वेडासुतिकाघण्टालीमृदंगफलिकामता ॥

अर्थ-कोषातकी, कृतच्छिद्रा, जालिनी, कृतवेधना, क्ष्वेडा, सुतिका, घण्टाली, मृदंगफलिका (तिक्तकोषातकी, विका, कृतवेधनिका । कुष्ठघ्नी, सुशोधनी, वन्या, कर्कशच्छदा) ।



संस्कृतभाषामें	तिक्तकोशातकी ।
हिन्दीभाषामें	कडवी तोरई, जंगली तोरई, झिमनी ।
बंगभाषामें	झिङ्गा ।
मराठीभाषामें	कडू दोडकी, दीवाली कडू शिराली ।
गुजरातीभाषामें	झुमखडां कडवातें कडवी घीसोडी, वामार्गवते । कडवा तुरीया ।
कर्णाटकीभाषामें	काहिरे ।
तैलिङ्गीभाषामें	चेदुविकर्या ।
उडि०	जनी ।
अंग्रेजीभाषामें	बिटरल्युफा । Bitter Luffa
लैटिन्भाषामें	ल्युफाएमेरा । Ruffa amara
फारसीभाषामें	तुरीयेतलख ।

अस्य गुणाः ।

तिक्तकोशातकीशीताकिञ्चित्कट्वीकषायका । तिक्तापक्काशयाध्मानमलामाशयशुद्धिकृत ॥ लघ्वीरूक्षावातकफपित्तपाण्डुविषापहा । यकृत्कुष्ठार्शशोथघ्नीकासोदरविनाशिनी ॥ कामलागुल्मशमनीफलंचास्यास्तुभेदकम् । कटुतिक्तंचशीतश्चस्निग्धंहद्यंचदीपनम् ॥ कासारोचकमेहघ्नंज्वरकुष्ठकफापहम् । श्वासंपित्तंचवातश्चनाशयेदितिकीर्तितम् ॥

अर्थ-कडवी तोरईकी बेल-शीतल, किञ्चित्कटु, कपेली, कडवी, पक्वाशय, आध्मान, मल और आमाशयको शुद्ध करनेवाली, हलकी तथा वात, कफ, पित्त, पाण्डु, विष, यकृत् कुष्ठ, बवासीर, सूजन, खांसी, उदररोग, कामला, और गुल्मको हरे है। इसका फल भेदक, कटु, तिक्त, शीतल, स्निग्ध, हृदयको हितकारी, दीपन तथा खाँसी, अरुचि, प्रमेह ज्वर, कुष्ठ, कफ, श्वास, पित्त और वातका नाश करे है।

अन्यच्च।

तिक्तकोशातकंतिक्तंवातलंकफपित्तजित्।
अवृष्यंकटुकंपाकेसारकंवान्तिकारकम्॥
एतत्फलंचबीजंचनस्यान्नासाशिरोर्त्तिजित्। (शो० नि०)

अर्थ-कडवी तोरई-कडवी, बादी, कफपित्तनाशक, अवृष्य, पचनेमें कटु, सारक और वमनकारक है। इसके फल और बीजोंके नास लेनेसे नासिका और शिरकी पीडा दूर होती है।

विवरण-तोरई, घिया तोरई और कडवी तोरई इन भेदोंसे तीन प्रकारकी है, तहां तोरई सफेद रंगकी और धारयुक्त तथा पीले फूलकी होती है। घियातोरई नीले रंगकी और लम्बे गोल तथा पीले फूलकी होती है और कडवी तोरई सफेद रंगकी जंगलमें वृक्षोंके ऊपर लगती है, फूल पीले और बीज काले होते हैं।

चिचिण्डनामानि।

चिचिण्डःश्वेतराजिःस्यात्सुदीर्घोगृहकूलकः। (भ० पू०)

अर्थ-चिचिण्ड, श्वेतराजि, सुदीर्घ, गृहकूलक (चिचुण्ड, बृहत्फला, अहिफला, दीर्घफला, चीनकर्कटिका।

संस्कृतभाषामें	चिचिण्ड+अहिफला।
हिन्दीभाषामें	चचेण्डा, चिचेण्डा।
बंगभाषामें	चिचिङ्गा, चिचिण्डा।
मराठीभाषामें	टरकाकडी।
गुजरातीभाषामें	पडोलां।
तैलिङ्गीभाषामें	पोटलकाया।
अंग्रेजीभाषामें	स्नेकगोर्ड। Srake Gourd
लेटिनभाषामें	ट्रिकोसैंथिस् ऐंग्विना। Trichos-authis anguina

अस्य गुणाः।

विचिण्डोवातपित्तघ्नोबल्यःपथ्योरुचिप्रदः।
शोषिणेतिहितःकिञ्चिद्गुणैर्न्यूनःपटोलतः॥

अर्थ--चिंचडा- वातपित्तनाशक, बलकारक, पथ्य, रुचिजनक, शोषरोगमें हितकारी और परवलोंसे गुणोंमें किञ्चित् न्यूनहै।

विवरण। चचेंडेके बल तोरईके समान होती है, फल बडे_बडे लम्बे ... के समान होते हैं।

पटोलनामानि।

स्वादौचस्वादुपूर्वासास्वादिष्ठाजनवल्लभा।
राजपूर्वासुशाकाचस्वादुपत्रफलाचसा॥

अर्थ-स्वादुपटोल, स्वादु, स्वादिष्ठा, जनवल्लभा, राजपूर्वा, सुशाका स्वादु-पत्रफला (राजपटोल)।

अस्य गुणाः।

पटोलंपाचनंहृद्यंवृष्यंलघ्वग्निदीपनम्। स्निग्धोष्णंहन्ति-कासास्रज्वरदोषत्रयकृमीन्॥ पटोलस्यभवेन्मूलंविरेचन-करं सुखात। नालंश्लेष्महरंपत्रंपित्तहारिफलंपुनः॥ दोष-त्रयहरंप्रोक्तंतद्वत्तिक्तपटोलिकाः (भा० प्र०)

अर्थ--परवल--पाचक, हृदयको हितकारी, वृष्य, हलका, अग्निप्रदीपक, स्निग्ध, गरम तथा खाँसी, रुधिरविकार, ज्वर, त्रिदोष और कृमिका नाश करै है। परवलकी जड सुखपूर्वक विरेचन करनेवाली है। परवलकी नाल-कफनाशक है। पटोलके पत्ते--पित्तनाशक हैं। इसके फल--त्रिदोषनाशकहैं, कडवे परवलके गुणभी इसीके समान हैं।

अन्यच्च।

पटोलीबलकृत्स्वादुःपथ्यादीपनपाचनी। रुच्यापुष्टिकरी ज्ञेयावातपित्तज्वरापहा॥शोषात्रिदोषशमनीफलंवृष्यंरुचि-प्रदम्। मधुरंस्वादुपथ्यंचपाचनंलघुदीपकम्॥ हृद्यंस्निग्धं चउष्णंचकफरक्तत्रिदोषनुत्। कासज्वरकृमीन्हन्तिपर्णंवै पित्तनाशनम्। मूलंरेचकरंप्रोक्तंवल्लीचैवकफापहा॥

अर्थ-परवल-बलकारक, स्वादिष्ठ, पथ्य, दीपन, पाचक, रुचिकारक, पुष्टिजनक तथा वात, पित्त, ज्वर, शोष, और त्रिदोषको शान्ति करे है। इसके फल-वृष्य, रुचिकारक, मधुर, स्वादिष्ठ, पथ्य, पाचन, हलके, दीपन, हृदयको हितकारी, स्निग्ध, गरम, कफ, रक्तविकार, त्रिदोष, खाँसी, ज्वर और कृमिनाशक हैं। इसके पत्ते पित्तनाशक। इसकी जड विरेचन करानेवाली है। इसकी बेल कफनाशक है।

राजपटोलीनामानि।

मेकीराजपटोलीचपर्वंगीपीलुपर्णिका।
राजनामासुपथ्याचवृत्तबीजाचपर्वरा॥

अर्थ-मेकी, राजपटोली, पर्वंगी, पीलुपर्णिका, राजनामा, सुपथ्या, वृत्तबीजा, पर्वरा।

पर्वरंपाचनंहृद्यंवृष्यंवह्निकरंलघु। दीपनंस्निग्धमुष्णञ्चका-
सरक्तत्रिदोषहम्॥कृमिजिन्मधुरप्रोक्तंवैद्यैर्विद्याविचक्षणैः।
कफनाशकरीवल्लीपत्रंपित्तस्यनाशकम्॥ मूलंतुरेचकंचा-
स्यमुनिभिःपरिकीर्त्तितम्॥ (नि० र०)

अर्थ-पर्वर-पाचक, हृदयको हितकारी, वृष्य, अग्निजनक, हलका, दीपन, मधुर, स्निग्ध, गरम तथा खांसी, रुधिरविकार, त्रिदोष और कृमिनाशक है। इसकी बेल-कफनाशक। पत्र-पित्तनाशक और मूल-रेचन करानेवाली है।

तिक्तपटोलनामानि।

पटोलःकुलकःप्रोक्तःपाण्डुकःकर्कशच्छदः। राजीफलःपाण्डु-
फलोराजीमानोमृताफलः॥तिक्तोत्तमोबीजगर्भःकुष्ठारिःकास-
मर्दनः॥ पञ्चराजोफलोज्योत्स्नाकच्छुरोज्वरनाशनः॥

अर्थ-पटोल, कुलक, पाण्डुक, कर्कशच्छद, राजीफल, पाण्डुफल, राजीमान, अमृताफल, तिक्तोत्तम, बीजगर्भ, कुष्ठारि, कासमर्दन, पञ्चराजीफल, ज्योत्स्ना, कच्छुर, ज्वरनाशन (तिक्तक पटु, पटुक, कर्कशदल, कुलज, वाजिमान, लताफल, राजफल, राजपटोल, वरतिक्त, तिक्तभद्रक, ज्योत्स्नी, फल, कटुक कटु, अमृतफल, पाण्डुक, पाण्डु, नागफल, पञ्चपल, कच्छुघ्नी, प्रतीक, कुष्ठहा, कासभञ्जन)।

संस्कृतभाषामें	पटोल, तिक्तपटोल ।
हिन्दीभाषामें	कडवे परवल ।
बंगभाषामें	पलताल्ता ।
मराठीभाषामें	कडुपडवळ ।
गुजरातीभाषामें	कडवापटोल, आंख्यफुटामणां ।
कर्णाटकीभाषामें	कहिपडवल ।
तैलिङ्गीभाषामें	सेसपडूला-कोम्मुपटोल ।
तामिलीभाषामें	कोम्बुपुडलै ।
कानडीभाषामें	मोरहडी ।
लैटिन्भाषामें	ट्रिकोसेंथिस् कुकुमेरिना । Trichosanthis cucum erina

अस्य गुणाः ।

पटोलःकटुतिक्तोष्णःसरःपित्तबलासजित् ।
कफकण्डूतिकुष्ठासृग्ज्वरदाहार्तिनाशनः ॥ (रा० नि०)

अर्थ-कडवे परवल-कटु, तिक्त, गरम, कुछेक दस्तावर तथा पित्त, बलास, कफ, कण्डू, कुष्ठ, रुधिरविकार, ज्वर और दाहकी वेदनाको दूर करनेवाले हैं।

अन्यच्च ।

पटोलकफपित्तास्त्रव्रणकुष्ठज्वरापहम् । त्रिसर्पनयनव्याधित्रिदोषगरनाशनम् ॥ पटोलपत्रंपित्तघ्नंनाडीतस्यकफापहा । फलंतस्यत्रिदोषघ्नंमूलंतस्यविरेचनम् ॥ (रा० व०)

अर्थ-कडवे परवल--कफ, रक्तपित्त, व्रण कुष्ठ, ज्वर, विसर्प, नेत्ररोग, त्रिदोष और विषका विनाश करे हैं। पटोलपत्र-पित्तनाशक है। परवलकी नाडी-कफनाशक। इसके फल--त्रिदोषनाशक और इसकी जड--दस्तावर है

अन्यच ।

तिक्तापटोलीकटुकासारकोष्णाकटुःस्मृता । भेदनीपाचनीचैवअग्निदीप्तिकरीपरा॥ पित्तंकफंचकण्डूश्चकुष्ठंरक्तविकारकम् । ज्वरंदाहंतृषांकोष्ठरोगंकृमिंचनाशयेत् ॥ फलमस्याःकटुस्तिक्तंपाकेस्वादुलघुस्मृतम् । दीपनंपाचनंवृष्यंमललोमनकारकम् ॥ वातपित्तकफान्नांतुयथास्थाने

निवेशकम् ।सारकंश्वासज्वरहृत्त्रिदोषकृमिनाशकम् ॥ पित्तनाशकरंपर्णमूलंकफविनाशकम्। कफनाशकरवल्लीतैलं वातकफापहम् ॥

अर्थ--कडवे परवल--चरपरे, सारक, गरम, कटु, भेदक, पाचक, अग्निप्रदीपक तथा, पित्त, कफ, कण्डू, कुष्ठ, रक्तविकार, ज्वर, दाह, तृषा, कोष्ठरोग और कृमिरोगका नाश करे है । इसके फल-चरपरे, कडवे, स्वादुपाकी, हलके, दीपन, पाचन, वृष्य, मलअनुलोमक तथा वात, पित्त और कफको यथास्थानमें स्थापन करनेवाले, सारक तथा श्वास, ज्वर, त्रिदोष और कृमिरोगका नाशकरे हैं । इसके पत्ते--पित्तनाशक । इसकी जड--कफनाशक । इसकी बेलकफनाशक और इनका तेल--वात और कफनाशक है ।

विवरण । परवल मधुर और कडवे इन भेदोंसे दो प्रकारके होते हैं, तहां कडवे परवल औषधिमें अधिकतासे लियेजाते हैं । परवलकी बेल प्रायः जंगलमें होती है, फूल सफेद, फल नीले और पकनेपर लाल होजाते हैं ।

विम्बीनामानि ।

बिम्बीरक्तफलातुण्डीतुण्डिकेरीचबिम्बिका ।
ओष्ठोपमफलाप्रोक्तापीलुपर्णीचकथ्यते ॥

अर्थ-बिम्बी, रक्तफला, तुण्डी, तुण्डिकेरी, बिम्बिका, ओष्ठोपमफला, पीलुपर्णी (ओष्ठी, कर्म्मकरी, तुण्डीकेरी, तुण्डिकेरिका, तुण्डिकेरि, सुपिण्डकोशी, बिम्बा, बिम्बक, बिम्बजा, दन्तच्छदोपमा, गोह्नी, रुचिरफला, छर्दिनी) ।

संस्कृतभाषामें	बिम्बी ।
हिन्दीभाषामें	कन्दूरी ।
वंगभाषामें	तेलाकुच ।
मराठी भाषामें	गोडतोंडली, कोंडवली ।
गुजरातीभाषामें	घोलांमिठां ।
कर्णाटकीभाषामें	सीहिदोंड, तोंडेहण्णु ।
तामिलीभामें	कोवे ।
तैलिंगीभाषामें	दोंडतिंगे ।
लेटिनभाषामें	कोकसियाइण्डिक ।

अस्यागुणाः

बिम्बीफलंस्वादुशीतंगुरुपित्तास्रवातजित् ।
स्तम्भनंलेखनंरुच्यंविबंधाध्मानकारकम् ॥

अर्थ-कन्दूरी-स्वादिष्ट, शीतल, भारी, रक्तविनाशक, वातविनाशक, स्तंभन, लेखन, रुचिकारक तथा विबंध और आध्मानकारक है ।

अन्यच्च ।

बिम्बीफलंस्वादुशीतंस्तन्यकृत्कफपित्तजित् ।
हृद्दाहज्वरपित्तास्रकासश्वासक्षयापहम् ॥ (शो० नि०)

अर्थ-कन्दूरी-स्वादिष्ट, शीतल, स्तनोंमें दूध उत्पन्न करनेवाली कफ-पित्तजनक तथा दाह, ज्वर, रक्तपित्त, खांसी, श्वास और क्षयरोगका नाश करे है ।

अन्यच ।

बिम्बिकामधुराशीताकफभ्रान्तिकरामता ।रक्तपित्तक्षयश्वासकामलापित्तशोफकान् ॥ रक्तहृग्विषकासांश्वरक्तपित्तज्वरान्हरेत् । फलमस्यागुरुस्वादुशीतलंलेखनंमतम् ॥मलस्तम्भकरंस्तन्यमुदरेवातसंचयम् । रुच्यंपित्तंरक्तदोषवाताश्वासंचनाशयेत्।शोथवृद्धिदाहकासश्वासनाशकरमतम् । पुष्पमस्याःकण्डुपित्तकामलानाशकारकम् ॥ अस्याःपर्णोद्भवाशाकाशीतलामधुरालघुः । ग्राहकातुवरातिक्तापाके कट्वीचवातला ॥ कफपित्तहराप्रोक्तापूर्वैर्वैद्यवरैःस्फुटम् । मूलमस्याहिमंमेहनाशनंधातुवर्द्धकम् ॥ हस्तदाहहरंभ्रान्तिशान्तिनाशकरंमतम् । (इतिरत्नाकरे)

अर्थ-कन्दूरी-मधुर, शीतल, कफकारक, वमनजनक तथा रक्तपित्त, क्षय, श्वास, कामला, पित्तकी सूजन, रुधिरविकार, विषदोष, खांसी रक्तपित्त और ज्वरको दूर करे है । इसके फल भारी, स्वादिष्ट, शीतल लेखन मलस्तम्भक, स्तन्यकारक, उदरमें वायुको संचितकरनेवाले, रुचिकारक तथा पित्त, रुधिरविकार, वात, श्वास, सूजन, वृद्धि, दाह, खांसी और दमें को नाश करनेवाले हैं । इसके फूल-कण्डू, पित्त, कामलाको दूर करनेवाले हैं । इसके

पत्तोंका शाक-शीतल, मधुर, हलका, मलरोधक, कषेला, पचनेमें चरपरा, बादी तथा कफ और पित्तका नाश करे है। इसकी जड-शीतल, प्रमेहनाशक, धातुवर्द्धक तथा हाथ पांवोंकी दाह, वान्ति और भ्रान्तिको शांतिकरे है।

तिक्तबिम्बीनामानि।

तिक्ततुण्डीतुतिक्ताख्याकटुकाकटुतुण्डिका।
बिम्बीचकटुतिक्तादितुण्डीपर्य्यायगाचसा॥

अर्थ-तिक्ततुण्डी, तिक्ताख्या, कटुका, कटुतुंडिका, कटुबिम्बी तिक्तबिंबी, तुण्डीपर्य्यायगा।

संस्कृतभाषामें	तिक्ततुण्डी।
हिन्दीभाषामें	कडवी कन्दूरी।
बङ्गभाषामें	कटुतराइ, तित्पल्ता, तेत् केन्दुरुकी।
मराठीभाषामें	कडू तोंडली।
गुजरातीभाषामें	कडवी घोली।
कर्णाटकीभाषामें	तीतकुन्दुरु, कहिवोडे।
लैटिन्भाषामें	सिफेलेन्द्राइंडिका Cephalandra-Indica कोकसिनीयाण्मेरा

अस्यागुणाः।

कटुतुण्डीकटुस्तिक्ताकफपित्तविषापहा।
अरोचकास्रपित्तघ्नीसदापथ्याचरेचनी॥ (रा० नि०)

अर्थ-कडवी कन्दूरी-चरपरी, कडवी, सदैव, पथ्य, रेचन करनेवाली तथा कफ, पित्त, विष, अरुचि, खांसी और रक्तपित्तको नष्ट करनेवाली

अन्यच्च।

तिक्तबिम्बीफलंतिक्तवामकंवातकोपनम्।
शोथरुग्विषपित्तघ्नंरक्तरुक्कफपाण्डुहम्॥ (नि० र०)

अर्थ-कडवी कन्दूरी-कडवी, वमनकारक, वातको कुपित करनेवाली तथा शोथरोग, विष, पित्त, रुधिरविकार, कफ और पाण्डुरोगको हरनेवाली है।

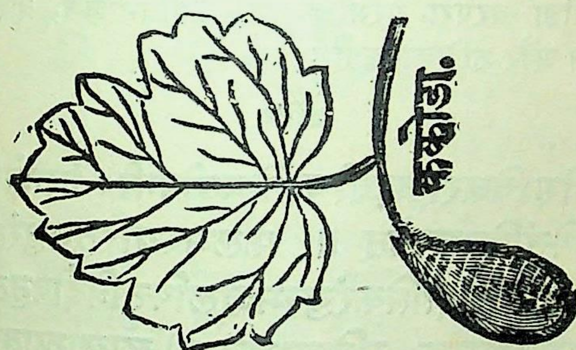
अपिच।

तिक्तबिम्बीफलंचामंछर्दनंकफनाशनम्।
पक्वंपित्तहरंशीतंमधुरंरसपाकयोः॥ (शो० नि०)

अर्थ-कच्ची कडवी कन्दूरी-वमनकारक और कफनाशक है। पक्की कडवी कन्दूरी-पित्तनाशक, शीतल और रसपाकमें मधुर है।

विवरण-कन्दूरी मधुर और कडवी इन भेदोंसे दो प्रकारकी होती है, मधुर कन्दूरी प्रायः बागोंमें बोई जाती है और कडवी कन्दूरी स्वयं वन बाँसियोंमें उत्पन्न होजाती है इसकी बेल चलती है। पत्ते तीन अनीवाले हैं। फूल सफेद, फल हरे और पकनेपर लाल होजाते हैं।

कर्कोटकीनामानि।



कर्कोटकीपीतपुष्पीमहाजालीतिचोच्यते।

अर्थ-कर्कोटकी, पीतपुष्पी, महाजाली (पीतपुष्पा, महाजालिनिका, वन्ध्या, बोधनाजालि, मनोज्ञा, मनस्विनी)।

संस्कृतभाषामें कर्कोटकी।
हिंदीभाषामें खखसा, ककोडा।
बंगभाषामें फलशाकविशेष (काकरोल)।
मराठीभाषामें कांटली कर्कोली।
गुजरातीभाषामें कंटोली।
लैटिनभाषामें मोमोर्डिकाडायोईका।
तैलिङ्गीभाषामें अगोरकर।
म० वेंपावल।
तु० काड कुंचाला।
ता० इगारवल्लि।
क० मडुवागाळ।

अस्या गुणाः।

कर्कोटीसलहृत्कुष्ठहृल्लासारुचिनाशिनी।

कासश्वासज्वरान्हान्तिकटुपाकाचदीपनी ॥

अर्थ-ककोडा--मलको हरनेवाला तथा कुष्ठ, हल्लास, अरुचि, श्वास, खाँसी और ज्वरको दूर करनेवाला, कटुपाकी और दीपन है।

अन्यच्च ।

कर्कोटकीकटूष्णाचातिक्ताविषविनाशिनी ।
वातघ्नीपित्तहच्चैवदीपनीरुचिकारिणी ॥ (रा० नि०)

अर्थ--ककोडा--चरपरा, गरम, कडवा, विषविनाशक, वातनाशक, पित्त-हारक, दीपन और रुचिकारक है ।

अपिच ।

कर्कोटकीरुचिकराकटूवीचाग्निप्रदीपनी । तिक्तोष्णावातकफहृद्विषंपित्तंविनाशयेत् ॥ फलमस्यास्तुमधुरंलघुपाकेकटुस्मृतम् । अग्निदीप्तिकरंगुल्मशूलपित्तत्रिदोषनुत् ॥ कफकुष्ठकासमेहश्वासज्वरकिलासनुत् । लालास्रावारुचिर्वातकिलासहृदयव्यथाः । नाशयेत्पर्णमस्याश्चरुच्यंवृष्यंत्रिदोषनुत् । कृमिज्वरक्षयश्वासकासहिक्कार्शोनाशनम् ॥ कंदोमाक्षिकसंयुक्तःशीर्षरोगेप्रशस्यते ॥ (नि० र०)

अर्थ--कर्कोटकी--रुचिकारक, कटु, अग्निप्रदीक, तिक्त, गरम तथा वात, कफ, विष और पित्तका नाश करे है । इसके फल--मधुर, लघु, पचनेमें कटु, अग्निप्रदीपक तथा गुल्म, शूल, पित्त, त्रिदोष, कफ, कुष्ठ, खाँसी, प्रमेह, श्वास, ज्वर, किलास, लालास्राव, अरुचि, वात, किलास, और हृदयकी पीडाको दूरकरेहैं । इसके पत्ते--रुचिकारक, वीर्य्यवर्द्धक, त्रिदोषनाशक तथा कृमि, ज्वर, क्षय, श्वास, खाँसी, हिचकी और बवासीरको हरनेवाले हैं। इसका कंद--मधुके साथ मस्तकरोगमें हितकारी है ।

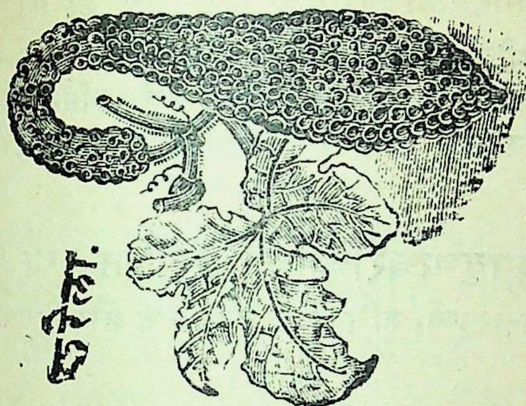
विवरण । ककोडेकी बेल प्रायः झाडी और बाडोंके ऊपर फैलजाती है फलके ऊपर कांटे होतेहैं कची अवस्थामें हरे और पकनेपर लाल पडजाते हैं।

कारवेल्लनामानि ।

कारवेल्लंकठिल्लंस्यात्सुप्रकाण्डंसुकाण्डकम् ।

अर्थ--कारवेल्ल, कठिल्ल, उग्रकाण्ड, सुकाण्डक, (कठिल, कारवेल्लक)

कारवेल्लीनामानि ।



कारवेल्लीवारिवल्लीबृहद्वल्ल्यापरास्मृता ।

अर्थ-कारवेल्ली, वारिवल्ली, बृहद्वल्ली (करका, करवल्ली, चिरिपत्र, कठि-ल्ल, सूक्ष्मवल्ली, कण्टफला, पीतपुष्पा, अम्बुवल्लिका, कटिल्लक, सुषवी, ...वल्ली, शुषवी, ऊर्ध्वासित, तोयवल्ली, कण्डूर, काण्डकटुक, सुकाण्ड, ...काण्ड, नासासंवेदन, पट्ट) ।

...कृतभाषामें — कारवेल्ल, कारवेल्ली ।
...न्दीभाषामें — करेला, करेली ।
...भाषामें — बडकरेलाउच्छे, छोटकरलाउच्छ ।
...ठीभाषामें — कारलें, क्षुद्रकारली, लघुकारली ।
...जरातीभाषामें — कारेला, कडवा वेला ।
...टकीभाषा — हागल ।
...ङ्गीभाषामें — कारिला, काकरकाया ।
...लटीभाषामें — शलरा ।
...बीभाषामें — हेरीमोर्डिका । Hairy Mordica
...टिनभाषामें — मोमोर्डिकाकरेटिया । Memordica Choratia
मो. सिंबेलेरिया । M. Cymbalaria
...रसीभाषामें — कारेलाह ।
...रबीभाषामें — किस्सा, उलहिमार ।

कारवेल्ल गुणाः । ।

कारवेल्लंहिमंभेदिलघुतिक्तमवातलम् ।
ज्वरपित्तकफास्रघ्नंपाण्डुमेहकृमीन्हरेत् ॥

तद्गुणाकारवेल्लीस्याद्विशेषाद्दीपनीलघुः । (भा. प्र.)

अर्थ-करेला-शीतल, भेदक, हलका, कडवा, वातकारक, नहीं तथा ज्वर, पित्त, कफ, रुधिरविकार, पाण्डुरोग, प्रमेह और कृमिरोगका नाश करे है। करेलीके गुणभी करेलेके समान हैं विशेषकरके पित्तनाशक और हलकी है।

अन्यच्च ।

कारवेल्लमवृष्यञ्चरोचनंकफपित्तजित् (रा० नि०)

अर्थ-करेला-अवृष्य, रुचिकारक तथा कफ और पित्तका नाश करे है।

अन्यच्च ।

[कारवेल्लश्चवातघ्नःकफघ्नःपित्तकारकः ।
उष्णोरुचिकरःप्रोक्तोरक्तदोषकरोनृणाम्] (हा०)

अर्थ-करेला-वातविनाशक, कफनाशक, पित्तकारक, गरम, रुचिकारक और रुधिरके विकारोंको करनेवाला है।

अपिच ।

कारवेल्लंचातितिक्तमग्निदीप्तिकरंलघु । उष्णंशीतंभेदकंच स्वादुपथ्यंसमीरितम् ॥ अरुचिंचकफंवातंरक्तदोषंज्वरंकृमीन् । पित्तंपाण्डुञ्चकुष्ठञ्चनाशयेदितिकीर्तितम् ॥ बृहद्रक्तकारवेल्लंकटु तिक्तंचदीपकम् । अवृष्यंभेदकंस्वादुरुच्यं क्षारंलघुस्मृतम् ॥ अवातलंपित्तहरंरक्तरुक्पाण्डुरोगहृत् । अरोचकंकफंश्वासंव्रणंकासंकृमींस्तथा ॥ कोष्ठंकुष्ठंज्वरंचैव प्रमेहाध्माननाशनम् । कामलांनाशयत्येवगुणास्त्वन्येतुपूर्ववत् ॥ जलजंकारवेल्लंस्यात्तिक्तंभेदकरंमतम् । कफंकुष्ठं पाण्डुरोगंकृमीन्पित्तञ्चनाशयेत् ॥ वनजंकारवेल्लन्तुदीपनं तिक्तकंमतम्।हृद्यंज्वरार्शःकासघ्नंकफवातकृमीहरम् (रत्नाकरे)

अर्थ-करेली-अत्यन्त कडवी, अग्निप्रदीपक, हलकी, गरम, शीतल, दस्तावर, स्वादु, पथ्य तथा अरुचि, कफ, वात, रुधिरविकार, ज्वर, कृमि, पित्त, पाण्डुरोग और कुष्ठरोगको नष्ट करनेवाली है। करेला-कटु, तिक्त, दीपन, अवृष्य, भेदक, स्वादिष्ठ, रुचिकारक, क्षार, हलका, वातकारक नहीं, पित्तनाशक तथा रुधिरविकार, पाण्डुरोग, अरुचि, कफ, श्वास, व्रण,

खाँसी, कृमि, कोठरोग, कुष्ठ, ज्वर, प्रमेह, आध्मान और कामला रोगको हरनेवाला है। और शेष गुण पूर्वकी नाईं जानने। जलमें उत्पन्न होनेवाला करेला--कडवा, भेदक तथा कफ, कुष्ठ, पाण्डुरोग, कृमि और पित्तरोगका नाश करे है। वनकरेला--दीपन, कडवा, हृदयको हितकारी तथा ज्वर, बवासीर खाँसी और वातको दूर करे है।

डिण्डिशनामानि गुणाश्च ।

डिण्डिशोरोमशफलोमुनिनिर्मितइत्यपि ।
डिण्डिशोरुचिकृद्भेदीपित्तश्लेष्मापहःस्मृतः ॥
सुशीतोवातलोरूक्षोमूत्रलश्चाश्मरीहरः ॥ (भा० प्र०)

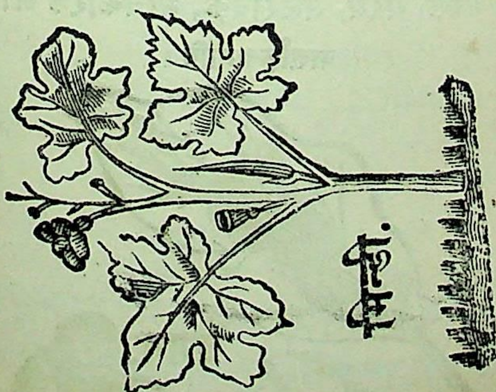
अर्थ-डिण्डिश, रोमशफल, मुनिनिर्मित । हिं० ढेंडश । ढेंडश--रुचिकारक, भेदक, पित्तकफनाशक, शीतल, बादी, रूक्ष मूत्रजनक और पथरीको दूर करे है।

पिण्डारगुणाः ।

पिण्डारंशीतलंबल्यंपित्तघ्नंरुचिकारकम् ।
पाकेलघुविशेषेणविषशान्तिकरंस्मृतम् ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-पिण्डार--शीतल, बलकारक, पित्तनाशक, रुचिकारक, लघुपाकी और विशेषकरके विषको शान्ति करे है।

भेण्डानामानि ।



भेण्डाभिण्डातिकाभिण्डोभिण्डिकःक्षेत्रसम्भवः ।
चतुष्पदश्चतुःपुण्ड्रःसुशाकःपिच्छिलःस्मृतः ॥

अर्थ--भेण्डा, भिण्डातिका, भिण्ड, भिण्डक, क्षेत्रसम्भव, चतुष्पद, चतुःपुण्ड्र, सुशाक पिच्छिल (भिण्डीतक, अस्रपत्रक, करपर्ण, वृत्तबीज)।

संस्कृतभाषामें	भिण्डा ।
हिंदीभाषामें	भिण्डी ।
वंगभाषामें	स्वनामख्यातफलशाक वि० ।
मराठीभाषामें	भेंड, रानभेंडे ।
गुजरातीभाषामें	भींडा ।
कर्णाटकीभाषामें	वेंडे ।
तैलिङ्गीभाषामें	भेडकाया ।
लैटिन्भाषामें	हिबिस्कस् एस्क्युलेंटस् । Hidischus Esculentus
फारसीभाषामें	बामिया ।
अरबीभाषामें	कुवार ।

भेण्डागुणाः

करपर्णफलंरुच्यंपिच्छिलंगुरुवातलम् । वृष्यंश्लेष्मकरंबल्यं शुक्रवृद्धिकरंपरम् ॥ कासेमन्दानलेवातेपीनसेषुविनिंदितम्॥

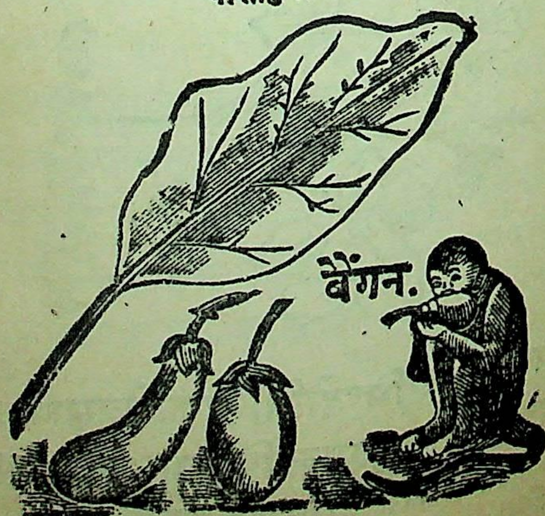
अर्थ—भिण्डी--रुचिकारक, पिच्छिल, भारी, बादी, वृष्य, कफकारक, बलकारक, शुक्रवर्द्धक तथा खाँसी, मन्दाग्नि, वात और पीनसरोगमें अहितकारी है ।

अन्यच्च ।

भेण्डात्वम्लरसाचोष्णाग्राहीचरुचिकारका ।
राजनामानिघण्टेचद्रव्येवृष्यापरास्मृता ॥ (नि० र०)

अर्थ—भिण्डी—अम्ल, गरम, मलरोधक, रुचिकारक और वृष्य है।

वार्त्ताकुनामानि ।



वार्ताकीकण्टवृन्ताकीकण्टालुःकण्टपत्रिका । निद्रालुर्मांसलफलावृन्ताकीचमहोटिका ॥ चित्रफलाकण्टकिनीमहतीकटूफलाचसा । मिश्रवर्णफलानीलफलारक्तफलातथा॥ शाकश्रेष्ठावृत्तफलानृपप्रियफलास्मृता ।

अर्थ-वार्त्ताकी, कण्टवृन्ताकी, कण्टालु, कण्टपत्रिका, निद्रालु, मांसलफला, वृन्ताकी, महोटिका, चित्रफला, कण्टकिनी, महती, कटूफला, मिश्रवर्णफला, नीलफला, रक्तफला, शाकश्रेष्ठा, वृत्तफला, नृपप्रियफला (हिंगुली, सिंही, भण्टाकी, दुष्प्रधर्षिणी, वार्त्ता, वार्त्ताकु, वातिकुण, वार्त्ताक, शाकबिल्व राजकूष्माण्ड, महाबृहती, शाकबिल्वक, वार्त्तिक, वातिगम, वृन्ताक, वङ्गण, वङ्गण, वेर, नीलवृषा, भाण्टिका, नीलकण्टका)।

संस्कृतभाषामें	वार्त्ताकु।
हिन्दीभाषामें	बगन, भण्टा, भटा ।
वंगभाषामें	वेगुनगाछ ।
मराठीभाषामें	वांगे ।
गुजरातीभाषामें	रिंगण, रिंगणी ।
कर्णाटकीभाषामें	बदने ।
तैलिंगीभाषामें	वंकाया, वङ्गणहिरिवंगु ।
औत्कलीभाषामें	वाइगुण ।
तामिलीभाषामें	कुठिरेकइ ।
अंग्रेजीभाषामें	ब्रिंजल। Bringle
लैटिन्भाषामें	सोलेनंमेलंजीना । Solanum Melongena
फारसीभाषामें	वादंगान् ।
अरबीभाषामें	नादंजान् ।

वार्त्ताकुगुणाः ।

वार्त्ताकीकटुकारुच्यामधुरापित्तनाशिनी ।
बलपुष्टिकरीहृद्यागुरुर्वातेषुनिन्दिता ॥ (रा० नि०)

अर्थ-बैंगन-कटु, रुचिकारक, मधुर, पित्तनाशक, बलकारक, पुष्टिकारक, हृदयको हितकारी, भारी, और वातरोगमें निन्दित है।

अन्यच्च ।

निद्राकरंप्रीतिकरंगुरुस्यात्सवातलंकासविकारकारि ।

श्लेष्मंसुदीर्घकफवर्द्धनश्चसश्वासकासारुचिवर्द्धनश्च॥ (हा.)

अर्थ--बैंगन--निद्राजनक, प्रीतिकारक, भारी, वादी, खाँसीके विकारोंको करनेवाला तथा कफ, श्वास, खाँसी और अरुचिको बढानेवाला है। लंबा बैंगन श्रेष्ठ होता है।

अन्यच्च।

अग्निप्रदामारुतनाशिनीचशुक्रप्रदाशोणितवर्द्धिनीच। हृल्लासकासारुचिनाशिनीचवार्त्ताकुरेषागुणसप्तयुक्ता॥

अर्थ--बैंगन--अग्निवर्द्धक, वातविनाशक, शुक्रजनक, शोणितवर्द्धक तथा हृल्लास, खाँसी और अरुचिको दूर करनेवाला है।

साबालाकफपित्तघ्नीपक्वासक्षारापित्तला। सदाफलात्रिदोषघ्नीरक्तपित्तप्रसादनी ॥ अङ्गारपक्वावार्त्ताकुःकिञ्चित्पित्तकरीमता । कफमेदोऽनिलहरासरालघुतरापरा ॥ (रा० व०)

अर्थ--कच्चा बैंगन--कफपित्तनाशक और पक्का बैंगन--क्षारयुक्त और पित्तल है। मध्यम बैंगन--त्रिदोषनाशक और रक्तपित्तको निर्मल करनेवाला है। अङ्गारोंपै भुना हुआ बैंगन (बैंगनका भुरता)--किंचित् पित्तकारक, कफ, मेद और वातविनाशक है, सारक और लघुतर है।

अन्यच्च।

वृन्ताकंकटुतिक्तमुष्णमधुरंक्षारंक्षुधादीपनं हृद्यंरुच्यमपित्तलंकफमरुज्जित्सर्वशाकोत्तमम् ॥ सक्षारंकफवातहारिरुचिकृद्वह्नेस्तुसंदीपनं तिक्तोष्णंमधुरंतथाकटुरसमीषच्चपित्तप्रदम् ॥ (त्रि०)

अर्थ—बैंगन-कटु, तिक्त, गरम, मधुर, क्षार, क्षुधाको दीपनकरनेवाला हृदयको हितकारी, रुचिकारी, अपित्तल कफवातनाशक और सर्वशाकोंमें उत्तम है। और किसी क्षारके साथ कफवातनाशक, रुचिकारक अग्निप्रदीपक तिक्त, गरम, मधुर, कटुरसान्वित और किंचित् पित्तको कुपित करे है॥

अपिच।

वृन्ताकंस्वादुतीक्ष्णोष्णंकटुपाकमपित्तलम्। ज्वरवातबलासघ्नंदीपनंशुक्रलंलघु ॥ तद्बालंकफपित्तघ्नंवृद्धंपित्तकरंगुरु।

वृन्ताकंपित्तलंकिञ्चिदङ्गारपरिपाचितम् ॥ कफमेदोनिलाघ्नमत्यन्तलघुदीपनम् । तदेवहिगुरुस्निग्धंसतैलंलवणान्वितम् ॥ अपरंश्वेतवृन्ताकंकुक्कुटाण्डसमंभवेत् । तदर्शःसुविशेषेणहितंहीनञ्चपूर्वतः ॥ (भा० प्र०)

अर्थ--बैंगन--स्वादु-- तीक्ष्ण. गरम, पाकमें कटु, अपित्तल, ज्वर, वात और कफनाशक, दीपन, शुक्रजनक, और हलका है, कच्चा बैंगन--कफपित्तनाशक, पका बैंगन--पित्तकारक और भारी है। अंगारोंपै भुना हुआ बैंगन किंचित् पित्तकारक, है तथा कफ, मेद और वातनाशक और अत्यन्त हलका तथा दीपन है वही अंगारोंपै भुनाहुआ बैंगन तेल और लवणयुक्त, भारी और स्निग्ध है । और दूसरा सफेद रंगका बैंगन मुरगेके अंडेके समान होता है वह सफेप बैंगन बवासीरवाले मनुष्योंको विशेष करके हितकारी है और पहिले बैंगनोंसे गुणोंमें हीन है। बैंगन सर्वत्र प्रसिद्ध है।

गोराणीनामानि ।

गोराणीदृढबीजाचनिशांध्यघ्नीचबाकुची ।
सुशाकावक्रशिम्बीचगोरक्षफलिनीस्मृता ॥

अर्थ गोराणी, दृढबीजा, निशांध्यघ्नी, वाकुची, सुशाका, वक्रशिम्बी, गोरक्षफलिनी ।

संस्कृतभाषामें	गोराणी ।
हिन्दीभाषामें	ग्वारकी फली ।
मराठीभाषामें	गोवारीच्या शेंगा, बांवच्या ।
गुजरातीभाषामें	गुवार ।
तलिङ्गीभाषामें	गोरचिकुडु ।
लैटिन्भाषामें	सोयेमोपसिस सोरेलियाइडिश । Cyamopsis Psoralioibe

अस्यागुणाः ।

बाकुचिकाशिम्बिरूक्षावातलामधुरागुरुः ।
सराकफकरीचाग्निदीपनीपित्तनाशिनी ॥ (नि० र०)
"पत्रमस्यानिशांध्यघ्नंपित्तनाशकरंपरम्" ।

अर्थ-गुवारकी फली-रूखी, वादी, मधुर, भारी, दस्तावर, कफकारक,

अग्निप्रदीपक और पित्तनाशक है । गुवारके पत्ते-रतोंधिको दूर करनेवाले और पित्तको हरनेवाले हैं ।

हरितनिष्पावीनामानि ।

निष्पावीग्रामजादिःस्यात्फलिनीनखपूर्व्विका ।
मण्डपाफलिकाशिम्बीज्ञेयागुच्छफलाचसा ॥

अर्थ-निष्पावी ग्रामजा, फलिनी, नखपूर्व्विका, मण्डपा, फलिका, शिम्बी, गुच्छफला (विशालफलिका, निष्पावि, चिपिटा) ।

शुभ्रनिष्पावीनामानि ।

अन्यांगुलिफलाचैवनखनिष्पाविकास्मृता ।
वृत्तनिष्पाविकाग्राम्यानखपुञ्जफलाशना ॥

अर्थ-अंगुलिफला, नखनिष्पाविका, वृत्तनिष्पाविका ग्राम्या, नखपुञ्जफला, अशना (कपिकच्छुफला) ।

संस्कृतभाषामें	निष्पावी, अंगुलिफला ।
हिन्दीभाषामें	सेम, सेंवी ।
वंगभाषामें	बोरा, वरवटी ।
मराठीभाषामें	घेवडा, लघु घेवडा, थोर घेवडा, वाल पापडी ।
गुजरातीभाषामें	वालोल, पांदडी ।
तामिलीभाषामें	मोच्चेकोटै ।
तैलिङ्गीभाषामें	चिकुण्डु, अनुमुलु ।
अंग्रेजीभाषामें	ब्लाक्सीडेड डोलिकोस । Black seeded Dolichos
लेटिन्भाषामें	डोलीकोस लबलब । Dolichos Lablad
अरबीभाषामें	त्रिन्स ।

द्विविधनिष्पावीगुणाः ।

निष्पावौद्वौहरिच्छुभ्रौकषायौमधुरौरसौ ।
कण्ठशुद्धिकरौमेध्यौदीपनौरुचिकारकौ ॥ (रा० नि०)

अर्थ-दोनों प्रकारकी (हरी और सफेद) निष्पावी-कषेली, मधुर, कण्ठशोधक, मेधाजनक, दीपन और रुचिकारक है ।

अन्यच्च ।

ग्रामजावातलारुच्यातुवरामधुरामता । मुखप्रियाकण्ठ्य

द्धिकारिणीग्राहिणीमता ॥ अग्निदीप्तिकरीचैवकफपित्तविनाशका । बृहत्तुग्रामजारुच्यावातलाचाग्निदीपनी । मुखप्रियाचसंप्रोक्ताशाकज्ञानविशारदैः ॥ कृष्णातुग्रामजाकण्ठ्यामेध्याचाग्निप्रदीपनी । तुवराचरसेमाध्वीरुच्याचग्राहिणीमता ॥ प्रोक्ताङ्गुलिफलावातकारिणीकफकारिणी । विषनाशकरीप्रोक्तागुणास्त्वन्येतुकृष्णवत । पीतायास्त्वधिकाज्ञेयाःपूर्ववैद्यैर्विचारिभिः । (इति रत्नाकरे)

अर्थ--निष्पावी--बादी, रुचिकारक, कषेली, मधुर, मुखप्रिय, कण्ठको शुद्ध करनेवाली, मलरोधक, अग्निप्रदीपक और कफ तथा पित्तविनाशक है। बड़ी निष्पावी-रुचिकारक, बादी अग्निप्रदीपक और मुखप्रिय है। काली निष्पावी-कण्ठको हितकारी, मेधाजनक, अग्निप्रदीपक, कषेली, मधुर, रुचिकारक और मलरोधक है। सफेद निष्पावी--बादी, कफकारक, विषविनाशक और शेष गुण काली निष्पावीके समान जानने। पीली निष्पावीके गुण सर्वनिष्पावियोंसे अधिक हैं।

शिम्बीनामानि ।

असिशिम्बीखड्गशिम्बीशिंबनीनीलशिम्बिका ।
महाशिम्बिबृहच्छिम्बीस्थूलशिम्बीचशिम्बिका ॥

अर्थ-असिशिम्बी, खड्गशिम्बी, शिम्बिनी, नीलशिंबिका, महाशिंबी, बृहच्छिम्बी, स्थूलशिंबी, शिम्बिका।

कोलाशिम्बीनामानि ।

कोलशिम्बीकृष्णफलाखड्गासूकरपादिका ।
शिम्बीकुशिम्बीकुत्सास्राशिम्बीपुस्तकशिम्बिका ॥

अर्थ--कोलशिम्बी, कृष्णफला, खड्गा, सूकरपादिका, शिम्बी, कुशिम्बी, कुत्सास्रशिम्बी, पुस्तकशिम्बिका (पटपंकपादिका)।

संस्कृतभाषामें	खड्गशिम्बी, कोलशिम्बी ।
हिन्दीभाषामें	सेम, सुअरासेम, गोजियासेम ।
बंगभाषामें	शेमगाछ ।
मराठीभाषामें	खडसांबळ, आबइची शेंग ।

गुजरातीभाषामें परबोलिया, तरवारडी।
तैलिंगीभाषामें काहचिकटु।
लैटिन्भाषामें केनावोलिया एन् सिफोर्मिस्।
Canavalia Ensiformis
अरबीभाषामें गलाफुलगोल।

द्विविधशिम्बी गुणाः।

शिम्बिद्वयञ्चमधुरंरसेपाकेहिमंगुरु।
बल्यंदाहहरंप्रोक्तंश्लेष्मलंवातपित्तजित्॥ (भा. प्र.)

अर्थ दोनों प्रकारकी सेम--मधुर, पाकमेंभी मधुर, शीतल, भारी, बलकारक, दाहनाशक, कफकारक, और वातपित्तको जीतनेवाली हैं।

अन्यच्च।

कृष्णासर्वबलीचोष्णागुर्वीबल्यारुचिप्रदा।
शुक्राग्निमांद्यजननीमलस्तम्भकरीमता॥
तुवरामादकावातकफनुत्पित्तलामता। (नि० र०)

अर्थ-काली सेम-गरम, भारी, बलकारक, रुचिकारक, शुक्रजनक, मन्दाग्निजनक, मलस्तम्भक, कषेली, मदकारक, वातकफनाशक और पित्तकारक है।

अन्यच्च।

असिशिम्बीतुमधुराकषायाश्लेष्मपित्तजित्।
व्रणदोषापहंत्रीचशीतलारुचिदीपनी॥ (रा० नि०)

अर्थ--सेम--मधुर, कषेली, कफपित्तनाशक, व्रणके विकारोंको हरनेवाली, शीतल और रुचिको दीपन करनेवाली है।

कोलशिम्बीगुणाः।

कोलशिम्बीसमीरघ्नीगुर्व्युष्णाकफपित्तकृत्।
शुक्राग्निमांद्यकृद्वृष्यारुचिकृद्बद्धविड्गुरुः॥

अर्थ-सुअरासेम-वातनाशक, भारी, गरम, कफपित्तजनक, शुक्र और अग्निको मंद करनेवाली, वृष्य, रुचिकारक, मलरोधक और भारी है।

दधिपुष्पीनामानि।

दधिपुष्पीखट्वांगीखट्वापर्यंकपादिकाकूपा।

खटापादीवंश्याकाकांकोलपालिकानवधा ॥

अर्थ—दधिपुष्पी, खट्वाङ्गी, खट्वा, पर्य्यंकपादिका, कूपा, खट्वापादी, वंश्या, कांकाकोलपालिका ।

संस्कृतभाषामें	दधिपुष्पी ।
हिन्दीभाषामें	करियसेम, चमरियासेम ।
वंगभाषामें	कट्राशिम् ।
मराठीभाषामें	गोडी कोंहळी ।
गुजरातीभाषामें	अडदवेल्य--कागडोलिया ।
कर्णाटकीभाषामें	कूगरी ।
लेटिन्भाषामें	मुक्वुनामोनोस्यरमा । Mucuna Monosperma

अस्या गुणाः ।

दधिपुष्पीकटुमधुराशिशिरासन्तापपित्तदोषघ्नी ।
वातामयदोषकरीगुरुस्तथारोचकघ्नीच ॥ (रा० नि०)

अर्थ—चमरियासेम-- कटु, मधुर, शीतल, सन्तापनिवारक, पित्तनाशक, वातरोगकारक, भारी और अरुचिको हरनेवाली है ।

अन्यच्च ।

दधिपुष्पीतुमधुराकट्वीशीतोष्णदामता । वृष्याहृद्यागुरुर्ज्ञेयामलस्तम्भाग्निमांद्यकृत् ॥ रुचिशुक्रप्रदाप्रोक्तासन्तापारोचकाञ्जयेत् । त्रिदोषशमनीप्रोक्तापूर्ववैद्यैर्मनीषिभिः ॥ गुरुहृद्यंबीजमस्यारुचिदंस्तम्भकंमतम् । कफाग्निमांद्यकरणंवातंपित्तंचनाशयेत् ॥ (नि. र.)

अर्थ—दधिपुष्पी-करियासेम—मधुर, कटु, शीतल, गरम, वृष्य, हृदयको हितकारी, भारी, मलस्तम्भक, मन्दाग्निकारक, रुचिकारक, शुक्रकारक, सन्तापनाशक, अरुचिको दूर करनेवाली और त्रिदोषनाशक है । इसके बीज-भारी, हृदयको हितकारी, रुचिकारी, मलस्तम्भक, कफकारक, अग्निमांद्यकारक तथा वात और पित्तको दूर करे हैं ।

सौभाञ्जनशिंबीगुणाः ।

सौभाञ्जनफलंस्वादुकषायंकफपित्तनुत् ।
शूलकुष्ठक्षयश्वासगुल्महृद्दीपनंपरम् ॥ (भा. प्र.)

अर्थ—सहिंजनकी फली-स्वादिष्ट, कषेली, कफपित्तनाशक तथा शूल कोढ, क्षय, श्वास और गुल्मको दूर करे है तथा दीपन है।

डोडिकानामगुणाश्च ।

डोडिकाविषमुष्टिश्चडोडीत्यपिसुमुष्टिका ।
डोडिकापुष्टिदावृष्यारुच्यावह्निप्रदालघुः ॥
हन्तिपित्तकफार्शांसिकृमिगुल्मविषामयान् । (भा. प्र.)

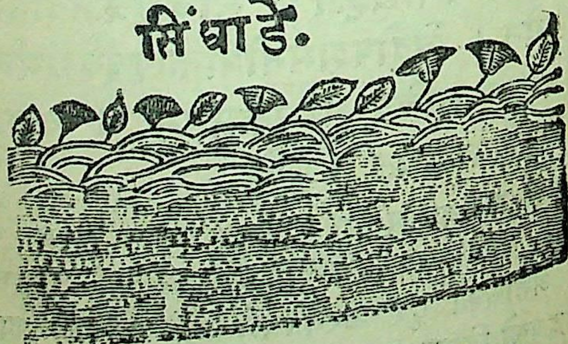
अर्थ—डोडिका विषमुष्टि, डोडी, सुमुष्टिका । डोडी अर्थात् करेरुआपुष्टिकारक, वीर्य्यवर्द्धक, रुचिकारक, अग्निजनक, हलकी तथा पित्त, कफ, बवासीर, कृमि, गुल्म और विषके रोगोंको दूर करे है।

मुनिशिम्बीगुणाः ।

मुनिशिम्बीसराप्रोक्ताबुद्धिदारुचिदालघुः । पाककालेतु
मधुरातिक्ताचैवस्मृतिप्रदा ॥ त्रिदोषशूलकफहृत्पाण्डुरोग-
विषापनुत् ।शोषगुल्महराप्रोक्तासापक्कारूक्षवातला ॥ (नि.र.)

अथ-अगस्तियाकी फली-सारक, बुद्धिदायक, हलकी, पचनेमें मधुर, कडवी, स्मरणशक्तिवर्द्धक तथा त्रिदोष, शूल, कफ, पाण्डुरोग, विष, शोष और गुल्मको हरनेवाली है। वही पकी हुई फली-रूखी और बादी करे है।

शृङ्गाटकनामानि ।



शृङ्गाटकंजलफलंत्रिकोणफलमित्यपि ।

अर्थ-शृङ्गाटक, जलफल, त्रिकोणफल (जलसूचि, संघाटिका, वारिकण्टक, शुक्लदुग्ध, शृङ्गाट, वारिकुब्जक, क्षीरशुक्ल, जलकण्टक, शृङ्गरुह, बलवल्ली, जलाशय, शृङ्गकन्द शृङ्गमूल, बिषाणी, जलकन्द, त्रिकोट, त्रिकट, त्रिक)।

संस्कृतभाषामें	शृङ्गाटक ।
हिन्दीभाषामें	सिंघाड़े ।
बंगभाषामें	पाणिफल, सिंघाडे ।
मराठीभाषामें	शिंगाडे ।
गुजरातीभाषामें	शिंगोडां ।
कर्णाटकीभाषामें	सिंघाडे ।
तैलङ्गीभाषामें	परिकेगड्डु ।
अंग्रेजीभाषामें	वाटरकेलट्राप । Water Caltrop
लैटिन्भाषामें	ट्रापाबाईस्पाईनोझ । Trapa Bispinosa
फारसीभाषामें	सुरंजान ।

अस्यगुणाः ।

शृङ्गाटकंहिमंस्वादुगुरुवृष्यंकषायकम् ।
ग्राहिशुक्रानिलश्लेष्मप्रदंपित्तास्रदाहनुत् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-सिंघाडे-शीतल, स्वादिष्ठ, भारी, वीर्य्यवर्द्धक, कषेले, मलरोधक, शुक्रजनक, वातकारक, कफकारक, तथा रक्तपित्त और दाहको दूर करे हैं ।

अन्यच्च ।

शृङ्गाटकःशोणितपित्तहारीलघुःखरोवृष्यतमोविशेषात् ।
त्रिदोषतापश्रमशोफहारीरुचिप्रदोमेहनदार्ढ्यहेतुः॥ (रा. नि.)

अर्थ-सिंघाडे-रक्तपित्तनाशक, हलके, खर, वृष्यतम, त्रिदोषनाशक, तापनिवारक, श्रमहारक, शोफनाशक, रुचिकारक और लिङ्गको दृढकरनेवाले हैं।

अन्यच्च ।

शृङ्गाटंगुरुविष्टम्भिशीतलंरक्तपित्तनुत् ॥ (रा. व.)

अर्थ-सिंघाडे-भारी, विष्टम्भकारक, शीतल, और रक्तपित्तनाशकहैं ।

अपिच ।

शृङ्गाटकश्चातिवृष्योलघुर्ग्राहीरुचिप्रदः । शुक्रलोवातकफकृद्गुरुर्मेहनदार्ढ्यकृत् ॥तुवरोमधुरः शीतस्तर्पणःस्वादुपित्तजित् । दाहत्रिदोषमेहघ्नोरक्तदोषभ्रमापहः । शोफसन्तापहाप्रोक्तःपूर्ववैद्यैर्महर्षिभिः ॥ (नि० र०)

अर्थ-सिंघाडे अत्यन्त वृष्य, हलके, मलरोधक, रुचिकारक, शुक्रजनक वात और कफकारी, भारी, लिङ्गको दृढकरनेवाले, कषेले, मधुर, शीतल, तृप्तिकारक, स्वादिष्ठ, पित्तनाशक तथा दाह, त्रिदोष, प्रमेह, रुधिरविकार, भ्रम, सूजन और सन्तापको हरनेवाले हैं।

विवरण। सिंघाडे की बेल बडे २ सरोवरोंमें होती हैं बेलमें तीन धार वाले फल लगते हैं फलके ऊपर तीन कांटोंके समान अणी होती है फलमेंसे एक मींग निकलती है उस मींगके शाकादि पदार्थ बनाते हैं और उसी मींग को सुखाकर उसका चून बनाते हैं उस चूनकीभी अनेक वस्तु बनाई जाती हैं इस देशमें सिंघाडेका चून फलाहार होगया है।

अथ नालशाकम्।

सर्षपनालगुणाः।

तीक्ष्णोष्णंसार्षपंनालंवातश्लेष्मव्रणापहम्।
कण्डूक्रिमिहरंदद्रुकुष्ठघ्नंरुचिकारकम्॥ (भा० प्र०)

अर्थ-सरसोंकी नाल-तीक्ष्ण, गरम, रुचिकारक तथा वात, श्लेष्म, व्रण, कण्डू, कृमि, दद्रु और कुष्ठका नाश करे है।

शूरणनालगुणाः।

नालंतुसूरणंरुच्यंकफवातहरंलघु।
अर्शसांतुविशेषेणहितंकामाग्निदीपनम्॥ (म० वि०)

अर्थ-जमीकन्दकीनाल--रुचिकारी, कफ वातविनाशक, हलकी कामा-ग्निदीपक और विशेष करके अर्शरोगमें हितकारी है।

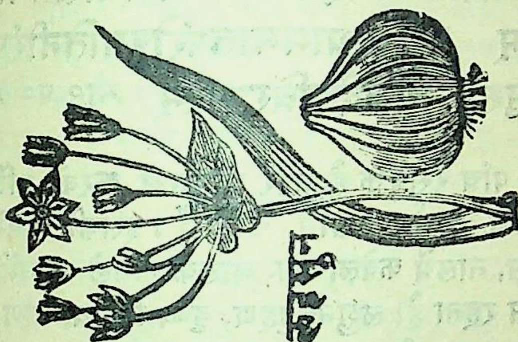
अथ कन्दशाकम्।

रसोननामानि।

रसोनोलशुनोरिष्टोम्लेच्छकन्दोमहौषधः।
शुक्लकन्दोमहाकन्दोवातारिर्दीर्घपत्रकः॥

अर्थ-रसोन, लशुन, अरिष्ट, म्लेच्छकन्द, महौषध शुक्लकन्द, महाकन्द,

...रि, दीर्घपत्रक (रसुन गृञ्जन, रसोनक, कटुकन्द, राहूच्छिष्ट, राहूत्सृष्ट, ...त्र, उग्रगन्ध, यवनेष्ट) ।



संस्कृतभाषामें	रसोन ।
हिन्दीभाषामें	लशुन लहशन, कांदा ।
...गभामें	लसुन ।
मराठीभाषामें	पांढरी लसूण, तांबडी लसूण ।
गुजरातीभाषामें	लसण ।
कर्णाटकीभाषामें	विळीयवेल्लुळ्ळी ।
तैलङ्गीभाषामें	तेल्लाउल्लीगांडा ।
तामिलीभाषामें	वल्लइपाण्डु ।
अंग्रेजीभाषामें	गार्लिकरूट् । Garlic root
लैटिन्भाषामें	एलियंसेटिवं । Ailium Sativum
फारसीभाषामें	सीर ।
अरबीभाषामें	सुम् ईस्कुर्दियून सुमलहैयार ।

अस्य गुणाः ।

...श्चभिश्चरसैर्युक्तोरसेनाम्लेनवर्जितः । तस्माद्रसोनइत्यु-
...क्तोद्रव्याणांगुणवेदिभिः ॥ कटुकश्चापिमूलेषुतिक्तःपत्रेषु
...संस्थितः । नालकषायउद्दिष्टोनालाग्रेलवणःस्मृतः॥बीजे
...मधुरःप्रोक्तोरसस्तद्गुणवेदिभिः । रसोनोबृंहणोवृष्योस्नि
...ग्धोष्णःपाचनःसरः ॥ रसेपाकेचकटुकस्तीक्ष्णोमधुरको
...मतः॥भग्नसन्धानकृत्कण्ठ्योगुरुःपित्तास्रवृद्धिदः ॥ बलव-
...र्णकरोमेधाहितोनेत्र्योरसायनः ॥ हृद्रोगजीर्णज्वरकुक्षिशूल-

विबन्धगुल्मारुचिकासशोफान् ॥ दुर्नामकुष्ठानलसादजन्तुसमीरणश्वासकफांश्चहन्ति । मद्यंमांसंतथाम्लंचहितंलशुनसेविनाम् । व्यायाममातपंरोषमतिनीरंपयोगुडम् ॥ रसोनमश्नन्पुरुषस्त्यजेदेतन्निरन्तरम् (भा० प्र०)

अर्थ–लहसन- पांच रसयुक्त है और अम्लरस करके वर्जित है इस कारण इसको एकरस ऊन अर्थात् रसोन कहते हैं। इसकी जडमें चरपरा रस, पत्तोंमें कडवा रस, नालमें कषेला रस, नालके अगले भागमें लवणरस और बीजोंमें मधुर रस रहता है। लशुन- बृंहण, वृष्य, स्निग्ध, उष्ण, पाचक, सारक, रस और पाकमें चरपरा, तीक्ष्ण, मधुर, भग्नसन्धानकारक, कण्ठको हितकारी, भारी, रक्तपित्तको बढानेवाली, बलकारक, वर्णको सुंदरकरनेवाली, मेधाकारक नेत्रोंको हितकारी और रसायन है। तथा हृदयरोग, जीर्णज्वर, कुक्षिशूल, विबन्ध, गुल्म अरुचि, खाँसी, सूजन, बवासीर, कोढ, मंदाग्नि, कृमि, वात, श्वास और कफको हरनेवाली है, लहसन सेवनकरनेवाले मनुष्यको मद्य, मांस और अम्ल (खटाई) हितकारी है। व्यायाम (दंड, कसरत), धूपमें फिरना, क्रोध करना, अत्यन्त जलपीना, दूध और गुड यह लशुन भक्षण करनेवाले मनुष्यको निरन्तर त्यागने चाहिये।

अन्यच्च ।

रसोनउष्णःकटुपिच्छिलश्चस्निग्धोगुरुःस्वादुरसोथबल्यः ।
वृष्यःसुमेधास्वरवर्णकारीभग्नस्यसन्धानकरःसुतीक्ष्णः(रा.नि.)

अर्थ -लशुन -गरम, चरपरी, पिच्छिल, स्निग्ध, भारी, स्वादिष्ठ, बलकारक, वीर्य्यवर्द्धक, मेधाजनक, स्वरको उत्तमकरनेवाली, वर्णको सुंदरकरनेवाली, भग्नसन्धानकारक और तीक्ष्ण है।

अपिच ।

रसोनःसर्वांगंप्रसरतिमरुन्नाशनकरःसरोवृष्यःस्निग्धोगुरुःरुचिकासज्वरहरः । कफंश्वासंगुल्मंक्षपयातिचकेश्यःक्रिमिहरः प्रमेहार्शःकुष्ठक्षयशुहरउक्तस्त्वशिशिरः ॥ प्रभग्नेसन्धानोरुधिरयुतपित्तंप्रकुरुते जराव्याधिध्वंसीपवनयतिचशूलप्रशमनः ।

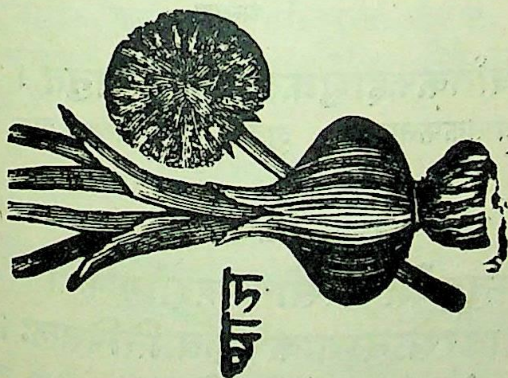
अर्थ-लहसन-शरीरमें सर्व प्रकारकी फैलीहुई वातकी पीडाका नाश करनेवाली, सारक, वृष्य, स्निग्ध, भारी, अरुचिको दूर करनेवाली, खाँसीको नाश करनेवाली, ज्वरका नाश करनेवाली तथा कफ, श्वास और गुल्मका विनाश करनेवाली, केशोंके हितकारी, कृमिनाशक, प्रमेह, बवासीर, कोढ और शोथको क्षय करनेवाली, गरम, भग्नसन्धानकारक, रक्तपित्तको कुपित करनेवाली, शूलको शान्ति करनेवाली और जराव्याधिका नाशक है।

पलाण्डुनामानि।

पलाण्डुर्यवनेष्टश्चदुर्गन्धोमुखदूषकः।

अर्थ-पलाण्डु, यवनेष्ट, दुर्गन्ध मुखदूषक (सुकन्दक, निकेतन, नीचप्रिय, लोहितकन्द, तीक्ष्णकन्द, उष्ण, मुखदूषण, शूद्रप्रिय, दीपन, कृमिघ्न, आन्धक, बहुपत्र, विश्वगन्ध, रोचन, पलाण्डु, सुकन्द, सुकन्दक, [illegible]क)।

राजपलाण्डुनामानि।



अन्योराजपलाण्डुःस्याद्यवनेष्टोनृपाह्वयः। राजप्रियोमहाकन्दोदीर्घपत्रश्चरोचकः॥ नृपेष्टोनृपकन्दश्चमहाकन्दोनृपप्रियः। रक्तकन्दश्चराजेष्टोनामान्यत्रत्रयोदश॥

अर्थ-राजपलाण्डु, यवनेष्ट, नृपाह्वय, राजप्रिय, महाकन्द दीर्घपत्र, रोचक, नृपेष्ट, नृपकन्द, महाकन्द, नृपप्रिय, रक्तकन्द, राजेष्ट।

संस्कृतभाषामें	पलाण्डु, राजपलाण्डु।
हिन्दीभाषामें	प्याज, लालप्याज।
बंगाभाषामें	पेंयाज, लालपेंयाज।
मराठीभाषामें	पांढराकांदा, लालकांदा। पातीचा कांदा,

गुजरातीभाषामें डुंगली ।
कर्णाटकीभाषामें लोहिबी, उल्लि-कॅंपिन उल्लि ।
तैलिङ्गीभाषामें नीरउली ।
तामिलीभाषामें वेञ्जयम ।
अंग्रेजीभाषामें बल्ब ओयिन । (Bulb) Onion
लैटिन्‌भाषामें एलीयंसेपा । Alium Sepa
फारसीभाषामें प्याज ।
अरबीभाषामें वसल्‌ ।

प्रलाण्डुगुणाः ।

पलाण्डुःकटुकोबल्यःकफपित्तहरोगुरुः ।
वृष्यश्चरोचनःस्निग्धोवान्तिदोषविनाशनः ॥ (रा. नि.)

अर्थ-प्याज-चरपरी, बलकारक, कफपित्तनाशक, भारी, वृष्य, रोचक, स्निग्ध और वमनके दोषको हरनेवाली है ।

अन्यच्च ।

पलाण्डुर्वातकफहाशुक्रलःशूलगुल्मनुत । (हा. सं.)

अर्थ-प्याज-वातकफनाशक, शुक्रजनक तथा शूल और गुल्मको नाश करे है ।

अन्यच्च ।

पलाण्डुस्तुबुधैर्ज्ञेयोरसोनसदृशोगुणैः ।
स्वादुःपाकरसेऽनुष्णःकफकृन्नातिपित्तलः ॥
हरतेकेवलंवातंबलवीर्य्यकरोगुरुः । (भा. प्र.)

अर्थ--प्याजके गुण लहसुनके गुणोंके समान जानने। प्याजसर्वादुपाकी, स्वादिष्ट, अनुष्ण, कफकारक, अत्यन्त पित्तकारक नहीं, वातविनाशक, बलकारी, वीर्य्यजनक और भारी है ।

राजपलाण्डुगुणाः ।

पलाण्डुर्नृपपूर्वःस्याच्छिशिरः पित्तनाशनः ।
कफहृद्दीपनश्चैवबहुनिद्राकरस्तथा ॥

अर्थ--लालप्याज -शीतल, पित्तनाशक, कफहारक, दीपन और अत्यन्त निद्राकारक है ।

अन्यच्च ।

वक्ष्यतेनृपपलाण्डुलक्षणंक्षारतीक्ष्णमधुरोरुचिप्रदः ।
कण्ठशोषशमनोऽतिदीपनःश्लेष्मपित्तशमनोऽतिबृंहणः ॥

अर्थ--लालप्याज--क्षार, तीक्ष्ण, मधुर, रुचिकारक, कण्ठशोषको दूर करनेवाली, अन्यन्त दीपन, कफ पित्तनाशक और अत्यन्त बृंहण है ।

पलाण्डुबीजगुणाः ।

बीजपलाण्डोर्वृष्यंस्याद्दन्तकीटप्रमेहजित् । (रत्नाकर)

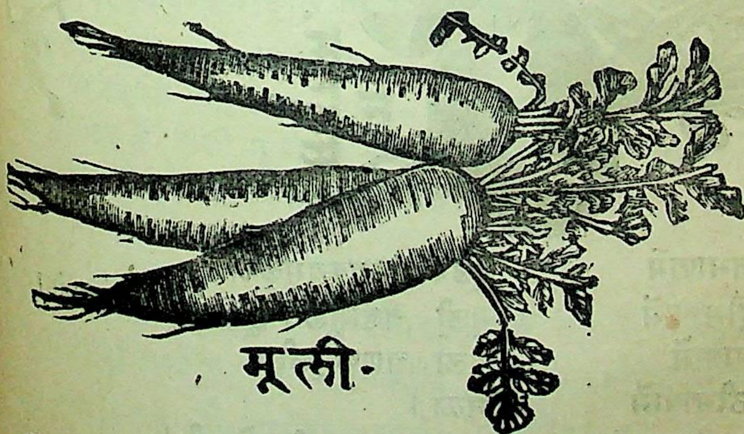
अर्थ-प्याजके बीज-वृष्य तथा दांतोंके कीडे और प्रमेहको दूर करनेवाले हैं।

मूलकनामानि ।

मूलकंहरिपर्णश्चभूमिकाक्षारएवच ।
नीलकण्ठंमहाकन्दंरुचिष्यंहस्तिदन्तकम् ॥

अर्थ-मूलक, हरिपर्ण, भूमिकाक्षार, नीलकण्ठ, महाकन्द, रुचिष्य, हस्तिदन्तक (राजालुक, करुकन्दक, हस्तिदन्त, मूलाह्व, दीर्घमूलक, दीर्घकन्दक, मूलक्षार, कन्दमूल, सित, शंखमूल, रुचिर, दीर्घकन्दक, कुञ्जर, क्षारक, शिम्बी फल)

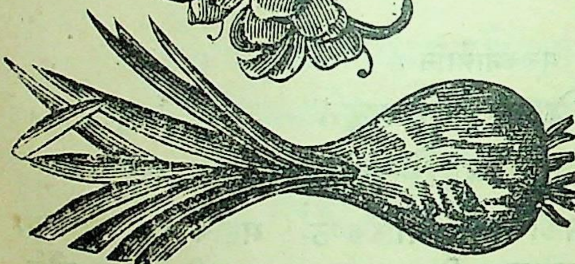
चाणक्यमूलकनामानि ।

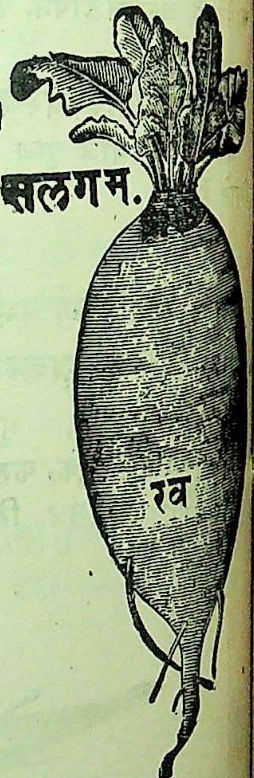


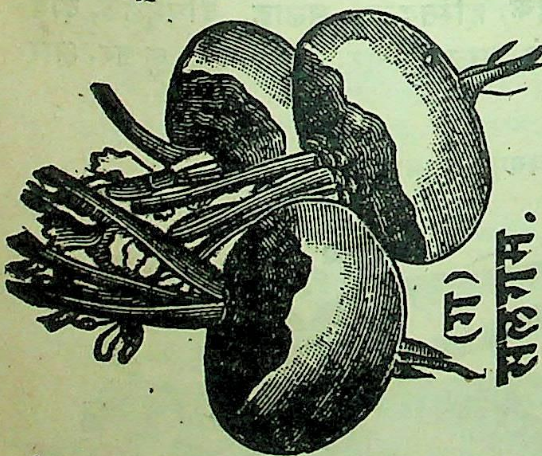
चाणक्यमूलकंचान्यद्द्रानेयंविष्णुगुप्तकम् ।
स्थूलमूलंमहाकंदंकौटिल्यंमरुसम्भवम् ॥
शालामर्कटकंमिश्रंज्ञेयंचै वनवाभिधम् ।

अर्थ-चाणक्यमूलक, वानेय, विष्णुगुप्तक, स्थूलमूल, महाकन्द, कौटिल्य, मरुसम्भव, शालामर्कट, मिश्र ।









संस्कृतभाषामें	मूलक, चाणक्यमूलक ।
हिन्दीभाषामें	मूली, बडीमूली, मूला, मूलीकी फली ।
बंगभाषामें	मुला, चणकमूली ।
मराठीभाषामें	मूळा ।
गुजरातीभाषामें	मूला, मूलाफली, मोगरी ।
कर्णाटकीभाषामें	मुलंगी ।
तैलिङ्गीभाषामें	शूतिदंपा ।
अंग्रेजीभाषामें	रेडीश । Radish
लेटिन्भाषामें	रफेनस् स्टेटिवस् । Raphanus Stativus

कौटिल्य,

फारसीभाषामें तुख तुख्मतुख ।
अरबीभाषामें फजल् बजरुल् ।

मूलकगुणाः ।

मूलकंतीक्ष्णमुष्णञ्चकटूष्णंग्राहिदीपनम् ।
दुर्नामगुल्महृद्रोगवातघ्नंरुचिदंगुरु ॥

अर्थ-मूली--तीक्ष्ण, गरम, कटु, उष्ण ग्राही दीपन, तथा बवासीर, गुल्म, हृदयरोग और वातका नाश करे है रुचिकारी और भारी है ।

चाणक्यमूलकगुणाः ।

चाणक्यमूलकंसोष्णंकटुकंरुच्यदीपनम् ।
कफवातक्रिमीन्गुल्मंनाशयेद्ग्राहकंगुरु ॥ (रा. नि.)

अर्थ--बडीमूली -गरम, चरपरी, रुचिकारक, दीपन, कफवातनाशक, क्रिमिघ्न, गुल्मनाशक, ग्राही और भारी है ।

अन्यच्च ।

लघुमूलकमुष्णंस्याद्रुच्यंलघुचपाचनम् । दोषत्रयहरंस्वर्यंज्वरश्वासविनाशनम् । नासिकाकण्ठरोगघ्नंनयनामयनाशनम् । महत्तदेवरूक्षोष्णंगुरुदोषत्रयप्रदम् ॥ स्नेहसिद्धं तदेवस्यादोषत्रयविनाशनम् । (भा. प्र.)

अर्थ--छोटी मूली -गरम, रुचिकारक, हलकी, पाचक, त्रिदोषनाशक, स्वरको शुद्ध करनेवाली तथा ज्वर, श्वास, नासिकारोग, कण्ठरोग और नेत्ररोगको दूर करे है । बडी मूली--रूखी, गरम, भारी, त्रिदोषनाशक । वही मूली तेलमें सिद्ध की हुई त्रिदोषनाशक हो जाती है ।

अन्यच्च ।

मूलकंगुरुविष्टम्भितीक्ष्णमामंत्रिदोषकृत् । तदेवस्नेहपक्वंचेत्कफकृद्वातपित्तजित् ॥ शुष्कंत्रिदोषशमनंशोथघ्नंगरजिल्लघु । तत्पुष्पंकफपित्तघ्नंतत्फलंकफवातजित् ॥ (रा. व.)

अर्थ--कच्ची मूली--भारी, विष्टम्भकारी, तीक्ष्ण, और त्रिदोषजनक है । वही तेल घृतादिमें पकाई हुई--कफकारक और वातपित्तहारक हो जाती है । सूखी मूली--त्रिदोषनाशक, शोथनिवारक, विषनाशक, और हलकी है । मूलीके फूल-कफ पित्तनाशक और मूलीकी फली-कफवातनाशक है ।

अपिच ।

बालंतुमूलकंतिक्तंकटूष्णंचरुचिप्रदम् । लध्वग्निदीपकंहृद्यंतीक्ष्णंतुपाचकंसरम् ॥ मधुरंग्राहकंबल्यंमूत्रदोषार्शनाशनम् । गुल्मक्षयश्वासकासनेत्ररोगविनाशकम् ॥ नाभिशूलंकफंवातंकण्ठरोगविनाशकम् । त्रिदोषदद्रुशूलघ्नमुदावर्त्तव्रणुत्परम् ॥ पीनसंचव्रणंचैवनाशयेदितिकीर्तितम् । जीर्णमूलंचोष्णवीर्य्यंशोषंचदाहपित्तकृत् ॥ रक्तदोषकरंचैवऋषिभिःपरिकीर्तितम् । पक्वमूलंतुकटुकंचोष्णमग्निकरंमतम् ॥ भक्षितेभोजनात्पूर्वंपित्तदाहप्रकोपनम् । भोजनोत्तरवेलायांभक्षितंबलदंहितम् ॥ वेसवारयुतंचार्शःशूलहृद्रोगनाशकम् । किंचिदुष्णामूलशिम्बीकफवातविनाशिनी॥ मूलपुष्पंकफकरंपित्तकृत्परिकीर्तितम् । (रत्नाकरे)

अर्थ–कच्ची मूली–कडवी, चरपरी, गरम, रुचिकारक,हलकी, अग्निप्रदीपक, हृदयको हितकारी, तीक्ष्ण, पाचक, सारक, मधुर, ग्राही, बलकारी तथा मूत्रदोष, बवासीर, गुल्म, क्षय, श्वास, खांसी, नेत्ररोग, नाभिशूल, कफ, वात कण्ठरोग, त्रिदोष, दाद, शूल, उदावर्त्त, पीनस, और व्रणको नाश करे है। पुरानी मूली उष्णवीर्य्य तथा शोष, दाह, पित्त और रुधिरके विकारोंको उत्पन्न करे है। पक्की मूली चरपरी, गरम, अग्निजनक है, यह भोजनके प्रथम भक्षण करी हुई पित्त और दाहको कुपित करे है। भोजनके पीछे भक्षणकी हुई–बलको करनेवाली और हितकारक है। बेसवारके साथ खाई हुई मूली बवासीर, शूल और हृदयरोगका नाश करे है। मूलीकी फली–किंचित् गरम और कफ वातनाशक हैं। मूलीके फूल—कफकारक और पित्तजनक है।

गर्जरनामानि ।

गाजरंगृञ्जनंप्रोक्तंतथानारंगवर्णकम् ॥

अर्थ–गाजर, गृञ्जन, नारङ्गवर्ण(पिण्डमूल, पीतकन्द, सुमूलक स्वादुमूल, सुपीत, नारङ्ग, पीतमूलक)।

गृञ्जननामानि ।

गृञ्जनंशिखिमूलंचयवनेष्टंचवर्तुलम् ।
ग्रन्थिमूलंशिखाकन्दंकन्दंडिण्डीरमोदकम् ॥

अर्थ--गृञ्जन, शिखिमूल, यवनेष्ट, वर्तुल, ग्रन्थिमूल, शिखाकन्द, कंद, डिंडीरमोदक ।

पिण्डमूलनामानि ।



पिण्डमूलंगजीडंचपिण्डिकंपिण्डमूलकम् ।

अर्थ--पिण्डमूल, गजीड, पिण्डिक, पिण्डमूलक ।

संस्कृतभाषामें	गर्जर, गृञ्जन, पिण्डमूल ।
हिन्दीभाषामें	गाजर, जंगली गाजर, गोलमूली ।
बंगभाषामें	गाजर ।
मराठीभाषामें	गाजर, रानगाजर ।
गुजरातीभाषामें	गाजर, पतालुगाजर, अडवाउगाजर ।
कर्णाटकीभाषामें	सेठीमूलं, चडिकेयलमूलंगी ।
तैलिङ्गीभाषामें	गृञ्जनं ।
अंग्रेजीभाषामें	क्यारटरूट Carrotroot कारटसीड्स । Carrotseeds
लैटिन्भाषामें	डाक्सकेरोटा । Daucus carota
फारसीभाषामें	जर्दक, गजर, गजरेदस्ति तुख्मेजर्दक ।
अरबीभाषामें	जजर, जजरेबीरं बजरुल्जजर ।

गर्जरगुणाः ।

गाजरंमधुरंतीक्ष्णंतिक्तोष्णंदीपनंलघु ।
संग्राहिरक्तपित्तार्शोग्रहणीकफवातजित् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ--गाजर--मधुर, तीक्ष्ण, कड़वी, गरम, दीपन, हलकी, मलरोधक तथा रक्तपित्त, बवासीर, संग्रहणी कफ, और वातका नाश करे है।

अन्यच्च।

गाजरंमधुरंरुच्यंकिञ्चित्कटुकफापहम्।
आध्मानाक्रिमिशूलघ्नंदाहपित्ततृषापहम्॥ (रा० नि०)

अर्थ—गाजर--मधुर, रुचिकारक, किञ्चित् चरपरी, कफनाशक तथा आध्मान, कृमि, शूल, दाह, पित्त और तृषाको दूर करे है।

गृञ्जनगुणाः।

गृञ्जनंकटुचोष्णंहिकफवातरुजापहम्।
रुच्यंचदीपनंहृद्यंदुर्गंधंगुल्मनाशनम्॥

अर्थ—जंगलीगाजर, चरपरी, गरम, कफवातरोगनाशक, रुचिकारक, दीपन, हृदयको हितकारी तथा दुर्गंध और गुल्मका नाश करे है।

पिण्डमूलगुणाः।

पिण्डमूलंकटूष्णञ्चगुल्मवातादिदोषनुत्।

अर्थ—गोलमूली-चरपरी, गरम तथा गुल्म और वातादि दोषोंको दूर करनेवाली है।

सूरणनामानि।



सूरणःकन्दओल्लश्चकन्दलोऽर्शोघ्नइत्यपि॥

अर्थ—सूरण, कंद, ओल्ल, कन्दल, अर्शोघ्न, (सूरण, ओल, कण्ठाल, कण्डुल, कन्दी, सुकन्दी, स्थूलकन्दक, दुर्नामारि, सुवृत्त, वातारि, कन्दशूरण, तीव्रकण्ठ, कंदार्ह, कन्दवर्द्धन, बहुकन्द, रुच्यकन्द, शूरणकन्द)।

संस्कृतभाषामें	शूरण ।
हिन्दीभाषामें	सूरन, जिमीकन्द ।
वङ्गभाषामें	ओल ।
मराठीभाषामें	गोडा । सूरण खाजेरा सुरण ।
गुजरातीभाषामें	सूरण ।
कर्णाटकीभाषामें	सुरण ।
तैलिङ्गीभाषामें	मंचाकन्दा, दोलकन्दा ।
तामिलीभाषामें	सूरण ।
लैटिन्भाषामें	एमोर्फोफिलस् पेनिक्युलेटस् । Amorphophallus (-paniculatus
फारसीभाषामें	ओल ।

अस्य गुणाः ।

सूरणोदीपनोरूक्षःकषायःकण्डुकृत्कटुः । विष्टम्भीविशदो रुच्यःकफार्शःकृन्तनोलघुः ॥विशेषादर्शसिपथ्यःप्लीहगुल्मविनाशनः । सर्वेषांकन्दशाकानांसूरणःश्रेष्ठउच्यते ॥ दद्रूणांरक्तपित्तानांकुष्ठिनांनहितोहिसः।संधानोयोगसम्प्राप्तसूरणोगुणवत्तमः ॥ (भा० प्र०)

अर्थ--सूरण--जमीकन्द--रूखा कषेला, खुजलीको करनेवाला, चरपरा विष्टम्भकारक, विषद, रुचिकारक, कफनाशक, बवासीरको दूर करनेवाला हलका, विशेषकरके अर्शरोगवालोंको हितकारी है तथा प्लीहा और गुल्मरोगोंका नाश करे है यह दाद, रक्तपित्त और कुष्ठरोगवालोंको हितकारी नहीं है इसका सन्धान अधिक गुणकारी है ।

अन्यच्च ।

सूरणश्चकटुरुच्यदीपनःपाचनःकृमिकफानिलापहः। श्वासकासवमनार्शसांहरःशूलगुल्मशयनोस्रदोषकृत् ॥

अर्थ--जमीकन्द--चरपरा, रुचिकारक, दीपन, पाचक, कृमिघ्न कफवातनाशक, तथा श्वास, खांसी, वमन, बवासीर, शूल और गुल्मरोगको दूर करे है तथा रुधिरके विकारोंको करे है ।

सूरणोदीपनोरुच्यःकफघ्नोविशदोलघुः । विशेषादर्शसांपथ्योग्राम्यकन्दस्तुदोषलः ॥

अर्थ--जमीकन्द--दीपन, रुचिकारक, कफनाशक, विशद, हलका, विशेष करके बवासीर रोगवालोंको पथ्य है । और नगरका पैदा हुआ जिमीकन्द दोषजनक है ।

वनसूरणनामानि ।

वज्रकन्दःसुरेन्द्रःस्याद्वन्योऽन्यश्चित्रकन्दकः ।

अर्थ-वज्रकन्द, सुरेन्द्र, बन्द, चित्रकन्दक (सितसूरण, वनकन्द, अरण्यसूरण, वनज, श्वेतसूरण वनओल) ।

अस्या गुणाः ।

तद्वद्वन्योवज्रकन्दःकफघ्नःपित्तरक्तकृत् ।

अर्थ-जंगली सूरणके गुणभी सूरणकेही समान हैं, कफनाशक और पित्तकारक है ।

अन्यच्च ।

वज्रसूरणकोरुच्यःकटूष्णःकृमिनाशनः ।
गुल्मशूलादिदोषघ्नःसचारोचकहारकः ॥ (रा. नि.)

अर्थ-वनसूरण-रुचिकारी, चरपरा, कृमिनाशक, गरम गुल्मशूलादिकरोगनाशक और अरुचिको हरनेंवाला है ।

रक्तालुनामानि ।

रक्तस्तुरक्तपिण्डालूरक्तालूरक्तपिण्डकः ।
लोहितोरक्तकन्दश्चलोहितालुःषडाह्वयः ॥

अर्थ-रक्त, रक्तपिण्डालु,, रक्तालु रक्तपिण्डक, लौहित, रक्तकन्द, लोहितालु ।

पिण्डालुनामानि ।

श्वेतःपिण्डीतकःपिण्डकन्दोरोमशकन्दकः ।
कन्दग्रन्थिश्चपिण्डालुःपिच्छिलःस्वादुकन्दकः ॥

अर्थ-पिण्डीतक, पिण्डकन्द, रोमशकन्दक, कन्दग्रन्थि, पिण्डालु, पिच्छिल, स्वादुकन्दक ।

संस्कृतभाषामें	रक्तालु, पिण्डालु ।
हिन्दीभाषामें	रतालु, पिण्डालु, कॉंदु, शकरकन्दी ।
वंगभाषामें	लालपिण्डालु, गोलआलु, चुवडिआलु ।

मराठीभाषामें लाल रताळें, पांढरें रताळें ।
गुजरातीभाषामें रतालु, शक्करकन्द, श्वेतालु ।
कर्णाटकीभाषामें केंपिनहेंडल, बिलयहेंडल ।
तैलिङ्गीभाषामें चिरगेड्डु ।
तामिलीभाषामें यामस्कोलं ।
औत्क० घराअलु ।
अंग्रेजीभाषामें स्वीट्पोटेटो Sweet potato
लेटिन्भाषामें बटाटास् एस्कुलेटस् Batatas Esculatus
ब. एडयुलीस् B Edulis
फारसीभाषामें जरदाक लाहोरी ।

रक्तालुगुणाः ।

रक्तपिण्डालुकःशीतोमधुराम्लःश्रमापहः
पित्तदाहापहोवृष्योबलपुष्टिकरोगुरुः ॥

अर्थ-रतालु- शीतल, मधुर, अम्ल, श्रमनाशक, पित्तनाशक, दाहनिवारक, वृष्य, बलकारक, पुंष्टिजनक, और भारी हैं ।

पिण्डा [श्वेता [लुर्मधुरःशीतोमूत्रकृच्छ्रामयापहः ।
दाहशोषप्रमेहघ्नोवृष्यःसन्तर्पणोगुरुः ॥ (रा० नि०)

अर्थ-पिंडालु-मधुर, शीतल, मूत्रकृच्छ्ररोगनाशक, दाहनिवारक, शोषनाशक, प्रमेहको हरनेवाले, वीर्य्यवर्द्धक, तृप्तिकारक और भारी हैं ।

पिण्डालुकंकफकरंगुरुवातप्रकोपनम् ॥ (राजवल्लभ)

अर्थ-पिंडालु- कफकारक, भारी और वातको कुपित करनेवाले हैं ।

आलुकीगुणाः ।

राजालुभेदःसम्प्रोक्तश्चारुईइतिनामतः ।
मलावष्टम्भकःस्निग्धोजडोबलकरोमतः ।
कफनाशकरश्चैवतैलेपक्वोरुचिप्रदः ॥ (नि० र०)

अर्थ-रतालुका भेद अरुई है । अरुई—मलस्तम्भक, स्निग्ध, जड, बलकारक, कफनाशक और यह तेलमें पकाईहुई रुचिकारक है ।

गजकर्णालुनामानि ।

आलुकंदीर्घनालश्चतीक्ष्णकन्दंसुकन्दकम् ।

महापत्रालुकंचैवहस्तिकर्णचतत्स्मृतम् ॥

अर्थ-आलुक, दीर्घनाल, तीक्ष्णकन्द, सुकन्दक, महापत्रालुक, हस्तिकर्ण।

संस्कृतभाषामें	गजकर्णालु ।
हिन्दीभाषामें	घुइयाँ, आलु ।
मराठीभाषामें	अळवासा कांदा ।
गुजरातीभाषामें	अलवी ।
तैलिङ्गीभाषामें	सारकंदा ।
अंग्रेजीभाषामें	ग्रेटलीव्ड केलडयम् । Great leaved caledium
लैटिन्भाषामें	एरम् इण्डिकम् । Erum indicum
अरबीभाषामें	दुयांकलकाश ।

गजकर्णीगुणाः ।

गजकर्णातुतिक्तोष्णातथावातकफाञ्जयेत्।शीतज्वरहरीस्वा-दुःपाकेतस्यास्तुकन्दकः ॥ पाण्डुशोथकृमीगुल्मप्लीहानाहो-दरापहः।ग्रहण्यर्शोविकारघ्नोवनसूरणकन्दवत् ॥ (भा. प्र.)

अर्थ-गजकर्ण-कडवा, गरम, वातकफनाशक, शीतज्वरनाशक, इसका कन्द पाकमें स्वादिष्ठ तथा पाण्डुरोग, सूजन, कृमि, गुल्म, प्लीहा, आनाह, उदररोग, संग्रहणी और बवासीरको दूर करनेवाला है और वनसूरणके समान है।

मुखालुनामानि ।

मुखालुर्मण्डपारोहोदीर्घकन्दस्तुकन्दकः ।
स्थूलकन्दोमहाकन्दःस्वादुकन्दश्चसतथा ॥

अर्थ-मुखालु, मण्डपारोह, दीर्घकन्द, सुकन्दक, स्थूलकन्द, महाकन्द, स्वादुकन्द ।

मुखालुगुणाः ।

मुखालुकःस्यान्मधुरःशिशिरःपित्तनाशनः ।
रुचिकृद्वातकृच्चैवदाहशोषतृषापहः ॥

अर्थ-मुखालु मधुर, शीतल, पित्तनाशक, रुचिकारक, वातवर्द्धक, तथा दाह, शोष और तृषाको हरनेवाला है।

कासालुनामानि ।

कासालुःकासकन्दश्चकन्दालुश्चालुकश्चसः ।
आलुर्विशालपत्रश्चपत्रालुश्चेतिसप्तधा ॥

अर्थ-कासालु, कासकन्द, कन्दालु, आलुक. आलु, विशालपत्र पत्रालु।

कासालुगुणाः ।

कासालुरुग्रकण्डूतिविषश्लेष्मामयापहः ।
अरोचकहरःस्वादुःपथ्योदीपनकारकः ॥ (रा० नि०)

अर्थ-कासालु-उग्र, कण्डूको हरनेवाला, विषघ्न, कफरोगनाशक, अरुचिको दूर करनेवाला, स्वादिष्ठ, पथ्य और अग्निको दीपन करे है।

अन्यच्च ।

कासालुकंकण्डुकरंमधुरंपथ्यकारकम् ।
दीपनंरुचिदंप्रोक्तंकफवातरुजापहम् ॥ (नि० र०)

अर्थ-कासालु-कण्डूको उत्पन्न करनेवाला, मधुर, पथ्यकारक, दीपन, रुचिकारक तथा कफ और वातरोगको नाश करनेवाला है।

फोंडालु नामानि ।

फोण्डालुर्लोहितालुश्चरक्तपत्रोमृदुच्छदः ॥

अर्थ-फोण्डालु, लोहितालु, रक्तपत्र, मृदुच्छद ।

फोण्डालुगुणाः ।

फोण्डालुःश्लेष्मवातघ्नःकटूष्णोदीपनीयकः ॥

अर्थ-फोण्डालु-कफवातविनाशक, चरपरा, गरम और अग्निको दीपन करनेवाले हैं।

पानीयालुनामानि ।

पानीयालुर्जलालुःस्यादनूपालुरवालुकः ।

अर्थ-पानीयालु, जलालु, अनूपालु, अवालुक ।

पानीयालुगुणाः ।

पानीयालुस्त्रिदोषघ्नःसन्तर्पणकरःपरः ॥

अर्थ-पानीयालु-त्रिदोषनाशक और तृप्तिकारक है।

नीलालुनामानि ।

नीलालूरसिकालुःस्यात्कृष्णालुःश्यामलालुकः ।

अर्थ-नीलालु, रसिकालु, कृष्णालु, श्यामलालुक ।

नीलालुगुणाः ।

नीलालुर्मधुरःशीतःपित्तदाहश्रमापहः ।

अर्थ-नीलआलु-मधुर, शीतल, तथा पित्त, दाह और श्रमको दूरकरैहै।

शुभ्रालुनामानि ।

शुभ्रालुर्महिषीकन्दोलुलायकन्दश्चशुक्लकन्दश्च ।
सर्पाख्योवनवासीविषकन्दोनीलकन्दान्यः ॥

अर्थ-शुभ्रालु, महिषीकन्द, लुलायकन्द, शुक्लकन्द, सर्पाख्य, वनवासी विषकन्द, नीलकंद ।

शुभ्रालुगुणाः ।

कटूष्णोमहिषीकन्दःकफवातामयापहः ।
मुखजाड्यहरोरुच्योमहासिद्धिकरःसितः ॥

अर्थ-भैंसाकंद-चरपरा, गरम, कफवात रोगनाशक, मुखकी जडताको हरनेवाला, रुचिको करनेवाला और सफेद रंगको महासिद्धिकारक है।

हस्तिकन्द नामानि ।

हस्तिकन्दोहस्तिपत्रःस्थूलकन्दोतिकन्दकः । बृहत्पत्रोतिपत्रश्चहस्तिकर्णस्तुकर्णकः॥त्वग्दोषारिःकुष्ठहन्तागिरिवासीनगाश्रयः । गजकन्दोनागकन्दोज्ञेयोवैसप्तनामकः ॥

अर्थ-हस्तिकन्द, हस्तिपत्र, स्थूलकन्द, अतिकन्दक, बृहत्पत्र, अतिपत्र, हस्तिकर्ण, कर्णक, त्वग्दोषारि, कुष्ठहन्ता, गिरिवासी, नगाश्रय, गजकन्द, नागकन्द ।

हस्तिकन्दगुणाः ।

हस्तिकन्दःकटूष्णःस्यात्कफवातामयापहः ।
त्वग्दोषघ्नोमहाकुष्ठविषवैसर्पनाशकः ॥ (रा० नि०)

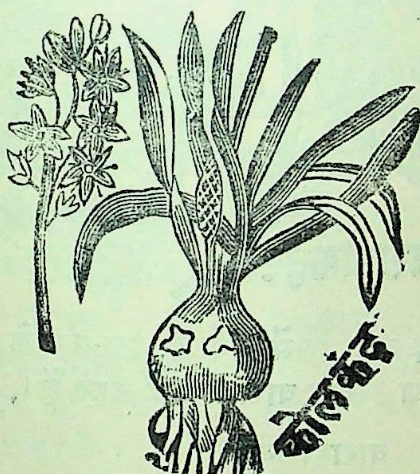
अर्थ-हस्तिकन्द-चरपरा, गरम, कफवातरोगनाशक, तथा त्वचाके विकारनाशक, महाकुष्ठ, विष और विसर्परोगको नाश करे है ।

हस्तिकन्दःस्मृतश्चोष्णःकटुकोमधुरोगुरुः ।

शोफंकफंरक्तदोषंवातंकुष्ठंविसर्पकम् ॥
त्वग्दोषंनाशयत्येवंमुनिभिःपरिकीर्त्तितम् । (नि० र०)

अर्थ–हस्तिकन्द–गरम, चरपरा, मधुर, भारी तथा सूजन, कफ, रुधिरविकार, वात, कोढ, विसर्प और त्वचाके दोषोंको दूर करे है ।

कोलकन्दनामानि ।



कोलकन्दःकृमिघ्नश्चपञ्जलोवस्त्रपञ्जलः ।
पुटालुःसुपुटश्चैवपुटकन्दश्चसप्तधा ॥

अर्थ–कोलकन्द, कृमिघ्न, पञ्जल, वस्त्रपञ्जल, पुटालु सुपुट, पुटकन्द ।

कोलकन्दगुणाः ।

कोलकन्दःकटुश्चोष्णःकृमिदोषविनाशनः ।
वान्तिविच्छर्दिशमनोविषदोषनिवारणः ॥

अर्थ–कोलकन्द--चरपरा, गरम, कृमिरोगनाशक, वान्तिको शान्त करनेवाला, दुष्ट वान्तिको हरनेवाला और विषके विकारोंको दूर करनेवाला है ।

वाराहीकन्दनामानि ।

वाराहीकन्दएवान्यैश्चर्मकारालुकोमतः ।
अनूपसम्भवेदेशेवराहइवलोमवान् ॥

अर्थ-वाराहीकन्द, चर्म्मकारालुक, विष्वक्सेनप्रिया, घृष्टि, बदराकच्छा, (सोमालिनी, गृष्टि, बिल्वमूला, शूकरी, क्रोडकन्या, विष्वक्सेनकान्ता, वराही, कौमारी, त्रिनेत्रा, ब्रह्मपुत्री, क्रोडी, कन्या, माधवेष्टा गृष्टिका, शूकरकन्द, ..., वनवासी, कुष्ठनाशन, बल्य, अमृत, महावीर्य्य, शम्बरकन्द, वराहकन्द, वीर, ग्राम्यीकन्द, महौषध, सुकन्दक, वृद्धिद, व्याधिहन्ता, मागधी) ।



विवरण । यह कन्द अनूपदेशमें होता है इस कन्दके ऊपर सूअरके समान बाल होते है इस कारण इसको वाराहीकन्द कहते हैं ।

संस्कृतभाषामें	वाराहीकन्द ।
हिन्दीभाषामें	गेंठी, भिर्वोलीकन्द ।
वंगभाषामें	चामालु, चुवाडेआलु ।
मराठीभाषामें	डुकरकन्द ।
गुजरातीभाषामें	वाराहीकन्द, सुअरिया, सालिवणावेल्य ।
कर्णाटकीभाषामें	हंदिगेट्टे ।
तैलिङ्गीभाषामें	ब्राह्मदंडिचेट्टु । पाचितोके, नेलताडिचेट्टु ।
लैटिनभाषामें	डायोरकोरियासेटिवा । Dioreorea Sativa

वाराहीगुणाः ।

वाराहीपित्तलाबल्याकटूवीतिक्तारसायनी ।
आयुःशुक्राग्निकृन्मेहकफकुष्ठानिलापहा ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ—वाराहीकन्द-पित्तजनक, बलकारक, चरपरा, कडवा, रसायन तथा आयु, शुक्र और जठराग्निको बढानेवाला है और प्रमेह, कफ, कोढ और वातका नाश करे है ।

अन्यच्च ।

वाराहीतिक्तकटुकाविषपित्तकफापहा ।
कुष्ठमेहकृमिहरावृष्याबल्यारसायनी ॥ (रा० नि०)

अर्थ-वाराहीकन्द-कडवा, चरपरा, वृष्य, बलकारक तथा विष, पित्त, कफ, कोढ, प्रमेह और कृमिरोगको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

वाराहकन्दश्चार्शोघ्नोवातगुल्मनिवारणः । (आ०)

अर्थ-वाराहीकन्द-बवासीर, वात और गुल्मरोगका नाश करनेवाला है ।

अपिच ।

वाराहकन्दःकटुकास्तिक्तोबल्यश्चपित्तलः । रसायनःशुक्रलश्चवृष्यश्चाग्निप्रदीपकः ॥ मधुरोष्णोवर्णकरःस्वर्य्यश्चायुर्विवर्द्धनः । कुष्ठंमेहंत्रिदोषञ्चकफंवातंकृमींस्तथा ॥ मूत्रकृच्छ्रहरःप्रोक्तोवैद्यैर्विद्याविशारदैः । (नि० र०)

अर्थ-वाराहीकन्द-चरपरा, कडवा, बलकारक, पित्तजनक, रसायन, शुक्रजनक, वीर्य्यवर्द्धक, अग्निप्रदीपक, मधुर, गरम, वर्णकारक, स्वरको शुद्ध करनेवाला, आयुवर्द्धक तथा कोढ, प्रमेह, त्रिदोष, कफ, वात, कृमि और मूत्रकृच्छ्र रोगको नाशकरे है ।

विवरण । वाराहीकंदको कहीं गेंठी और कहीं अंगीठी तथा सूअरकंदभी कहतेहैं । यह पृथिवीमें गुडके भेलीके समान होताहै । पत्ते कटीले बडे बडे धनीदार होतेहैं, इसपर सूअरके समान बाल होते ह ।

विष्णुकन्दनामानि ।

विष्णुकन्दोविष्णुगुप्तःसुपुष्टोबहुसम्पुटः ।
जलवासाबृहत्कन्दोदीर्घवृत्तोहरिप्रियः ॥

अर्थ-विष्णुकन्द, विष्णुगुप्त, सुपुष्ट, बहुसम्पुट, जलवासा, बृहत्कन्द, दीर्घवृत्त, हरिप्रिय ।

विष्णुकन्दगुणाः ।

विष्णुकन्दस्तुमधुरःशिशिरःपितनाशनः ।
दाहशोफहरोरुच्यःसन्तर्पणकरःपरः ॥ (रा० नि०)

अर्थ-विष्णुकन्द-मधुर, शीतल, पित्तनाशक, दाहनाशक, शोफहारक, रुचिकारक और तृप्तिकारक है ।

धरणीकन्दनामानि ।

धरणीधारणीयाचवीरपत्रीसुकन्दकः ।

कंन्दालुर्वनकंन्दश्चकन्दाद्योदंडकंदकः ॥

अर्थ-धरणी, धारणीया, वीरपत्री, सुकन्दक, कन्दालु, वनकन्द, कन्दाढ्य, दण्डकन्दक ।

धरणीकन्दगुणाः ।

मधुरोधरणीकन्दःकफपित्तामयापहः ।
वक्त्रदोषप्रशमनःकुष्ठकण्डूतिनाशनः ॥

अर्थ-धरणीकन्द--मधुर, कफपित्तरोगनाशक, मुखदोषको दूर करनेवाला तथा कोढ और खुजलीको हरनेवाला है ।

नाकुलीकन्दनामानि ।

नाकुलीसर्पगन्धाचसुगन्धारक्तपत्रिका ।
ईश्वरीनागगन्धाचाप्यहिभुक्स्वरसातथा ॥
सर्पादनीव्यालगन्धज्ञेयाचेतिदशाह्वया ॥

अर्थ-नाकुली, सर्पगन्धा, सुगन्धा, रक्तपत्रिका, ईश्वरी, नागगन्धा, अहिभुक्, स्वरसा, सर्पादनी, व्यालगन्धा ।

गन्धनाकुलीनामानि ।

अन्यामहासुगन्धाचसुवहागन्धनाकुली।सर्पाक्षीफणिहंत्री चनकुलाढ्याहिभुक्चसा ॥ विषमर्दनिकाचाहिमर्दनीविषमर्दनी । महाहिगन्धाहिलताज्ञेयास्याद्द्वादशाह्वया ॥

अर्थ -महासुगन्धा, सुवहा, गन्धनाकुली, सर्पाक्षी, फणिहन्त्री, नकुलाढ्या, अहिभुक्, विषमर्दनिका, अहिमर्दनी, विषमर्दनी, महाहिगन्धा, अहिलता ।

द्विविधानाकुलीकन्दगुणाः ।

नाकुलीयुगलंतिक्तकटूष्णंचात्रिदोषजित् ।
अनेकविषविध्वंसिकिञ्चिच्छ्रेष्ठंद्वितीयकम् ॥ (रा० नि०)

अर्थ--दोनों प्रकारके नकुलकंद--कडवे, चरपरे, गरम, त्रिदोषनाशक, अनेक प्रकारके विषोंका विध्वंस करनेवाले और सुगंधनाकुलीकन्द नाकुलीकन्दकी अपेक्षा कुछेक उत्तम है ।

मालाकन्दनामानि ।

अथमालाकन्दःस्याद्दलकन्दश्चपंक्तिकन्दश्च ।

त्रिशिखदलाग्रन्थिदलाकन्दलताकीर्तिताषोढा ॥

अर्थ-मालाकन्द, बलकन्द, पंक्तिकन्द, त्रिशिखदला, ग्रन्थिदला, कन्दलता।

मालाकन्दगुणाः।

मालाकन्दःसुतीक्ष्णःस्याद्गण्डमालाविनाशकः।
दीपनोगुल्महारीचवातश्लेष्मापकर्षकृत् ॥

अर्थ-मालाकन्द-तीक्ष्ण, गण्डमालारोगको हरनेवाला, दीपन, गुल्मनाशक तथा वात और कफका नाश करनेवाला है।

विदारीकन्दनामानि।

विदारिकास्वादुकन्दासिताशुक्लाशृगालिका। विदारीवृष्यकन्दाचबिडालीवृष्यवल्लिका ॥ भूकूष्माण्डीस्वादुलतागजेष्टावारिवल्लभा। ज्ञेयाकन्दफलाचेतिमनुसंख्याह्वयामता॥

अर्थ-विदारिका, स्वादुकन्दा, सिता, शुक्ला, शृगालिका, विदारी, वृष्यकन्दा, बिडाली, वृष्यवल्लिका, भूकूष्माण्डी, स्वादुलता, गजेष्टा, वारिवल्लभा, कन्दफला,।

विदारीकन्दगुणाः।

विदारीमधुराशीतागुरुःस्निग्धास्रपित्तजित्।
ज्ञेयाचकफकृत्पुष्टिबल्यावीर्य्यविवर्द्धिनी ॥

अर्थ-विदारीकन्द-बिलारीकन्द-विलाईकन्द-मधुर, शीतल, भारी, स्निग्ध, रक्तपित्तनाशक, कफकारक, तथा पुष्टि, बल और वीर्य्यको बढानेवाला है।

क्षीरविदारीनामानि।

अन्याक्षीरविदारीस्यादिक्षुगन्धेक्षुवल्लरी। इक्षुवल्लीक्षीरकन्दःक्षीरवल्लीपयस्विनी॥क्षीरशुक्लाक्षीरलतापयःकन्दापयोलता। पयोविदारिकाचेतिविज्ञेयाद्वादशाह्वया ॥

अर्थ-क्षीरविदारी. इक्षुगन्धा, इक्षुवल्लरी, इक्षुवल्ली, क्षीरकन्द, क्षीरवल्ली पयस्विनी, क्षीरशुक्ला, क्षीरलता, पयःकन्द, पयोलता, पयोविदारिका।

क्षीरविदारीगुणाः।

ज्ञेयाक्षीरविदारीचमधुराम्लाकषायका।

तिक्ताचपित्तशूलघ्नीमूत्रमेहामयापहा ॥

अर्थ-क्षीरविदारी--दूधविदारी--कंद मधुर, अम्ल, कसेला, कडवा, पित्त नाशक, शूलनिवारक तथा मूत्ररोग और प्रमेहरोगको दूर करे है।

क्षीरकन्दोद्विधाप्रोक्तोविनालस्तुसनालकः ।
विनालोरोगहर्त्तास्याद्वयःस्तम्भीसनालकः ॥

अर्थ-क्षीरविदारी विना नालवाला और नालयुक्त इन भेदोंसे दो प्रकारका है, तहां विना नालका क्षीरकंद--रोगनाशक और नालयुक्त-वयस्तम्भक है। विदारीकंदके विशेष गुण दोष गुडूच्यादि वर्गमे देखो।

चण्डालकन्दनामानि ।

प्रोक्तश्चण्डालकन्दःस्यादेकपत्रोद्विपत्रकः
त्रिपत्रोऽथचतुःपत्रःपञ्चपत्रश्चभेदतः ॥

अर्थ-चण्डालकन्द-एकपत्र, द्विपत्र, त्रिपत्र, चतुःपत्र और पंचपत्र इन भेदोंसे पांच प्रकारका है।

चण्डालकन्दगुणाः ।

चण्डालकन्दोमधुरःकफपित्तास्रदोषजित् ।
विषभूतादिदोषघ्नोविज्ञेयश्चरसायनः ॥

अर्थ-चण्डालकन्द-मधुर, कफघ्न, रक्तपित्तनाशक, विषनिवारक, भूतादि बाधाओंको हरनेवाला और रसायन है।

तैलकन्दनामानि ।

अथतैलकन्दउक्तोद्रावककन्दस्तिलाङ्कितदलश्च।
करवीरकन्दसंज्ञोज्ञेयस्तिलचित्रपत्रकोबाणैः ॥

अर्थ-तैलकन्द, द्रावककन्द, तिलांकितदल, करवीरकंदसंज्ञ, तिलचित्रपत्रक ।

तैलकन्दगुणाः ।

लोहद्रावीतैलकन्दःकटूष्णोवातापस्मारहारीविषारिः ।
शोफघ्नःस्याद्बंधकारीरसस्यद्रागेवासौदेहसिद्धिंधत्ते ॥

अर्थ-तैलकन्द-लोहेको पतला करनेवाला, चरपरा, गरम तथा वात, अपस्मार, विष और सूजनको दूर करे है, पारेको बांधनेवाला और तत्काल देहको सिद्धकरनेवाला है।

त्रिपर्णीनामानि ।

त्रिपर्णिकाबृहत्पत्रायाच्छिन्नग्रन्थिकाचसा ।
कन्दालुःकन्दबहुलाप्यम्लवल्लीद्रुमारुहा ॥

अर्थ-त्रिपर्णिका, बृहत्पत्रा, छिन्नग्रान्थिका, कन्दालु, कन्दबहुला, अम्ल-ल्ली, द्रुमारुहा ।

त्रिपर्णीगुणाः ।

त्रिपर्णीमधुराशीताश्वासकासविनाशिनी ।
पित्तप्रकोपशमनीविषव्रणहरापरा ॥

अर्थ-त्रिपर्णिकन्द-मधुर, शीतल तथा श्वास, खाँसी, पित्त, विष, और व्रणका नाशकरनेवाला है ।

लक्ष्मणाकन्दनामानि ।

लक्ष्मणापुत्रकन्दाचपुत्रदानागिनीतथा ।
नागाह्वानागपत्रीचतुलिनीमक्षिकाचसा ॥
अस्रबिन्दुच्छदाचैवसुकन्दादशधाह्वया ।

अर्थ-लक्ष्मणा, पुत्रकन्दा, पुत्रदा, नागिनी, नागाह्वा, नागपत्री, तुलिनी, मक्षिका, अस्रबिन्दुच्छदा, सुकन्दा ।

अस्या गुणाः ।

लक्ष्मणामधुराशीतास्त्रीवन्ध्यत्वविनाशिनी ।
रसायनकरीबल्यात्रिदोषशमनीपरा ॥

अर्थ-लक्ष्मणाकन्द-मधुर, शीतल, स्त्रीके बांझपनेको हरनेवाला, रसायन, बलकारक और त्रिदोषको शान्ति करनेवाला है ।

हस्तजोडिनामगुणाश्च ।

हस्तपर्य्यायपूर्वस्तुजोडिर्वैद्यवरैःस्मृतः
करजोडिरितिख्यातोरसबद्धादिवश्यकृत् ॥

अर्थ-हस्तजोडि-और करजोडि यह नाम हस्ताजूडी, हत्थाजूडीके हैं हत्थाजोडी-पारेआदिको बाधनेवाली और वशीकरण है ।

गुच्छकन्दनामानि ।

गुच्छाह्वकन्दःस्तबकाह्वकन्दोगुलच्छकन्दश्चविघण्टिकाभिधः

अर्थ-गुच्छाह्वकन्द, स्तबकाह्वकन्द, गुलच्छकन्द, विघण्टिका ।

गुलच्छकन्दगुणाः ।

गुलच्छकन्दोमधुरःसुशीतलोवृष्यप्रदस्तर्पणदाहनाशनः ॥
(राजनिघण्टु)

अर्थ-गुलच्छकन्द मधुर, शीतल, वृष्य, तृप्तिकारक और दाहनाशक है।

मानकन्दनामानि ।

मानकःस्यान्महापत्रःकथ्यन्तेतद्गुणाअथ ।

अर्थ-मानक, महापत्र, (स्थलपद्म, विस्तीर्णपर्ण, माण, बृहच्छद, छत्रपत्र माणक) ।

अस्य गुणाः ।

माणकःशोथहृच्छीतःपित्तरक्तहरोलघुः ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-मानकन्द-सूजनको दूर करनेवाला, शीतल, रक्तपित्तनाशक और हलका है।

अन्यच्च ।

माणकःस्वादुःशीतश्चगुरुःशोथहरःकटु ॥ (राजनि०)

अर्थ-मानकन्द-स्वादिष्ठ, शीतल, भारी, सूजनको दूर करनेवाला और चरपरा है।

शंखालुनामानि ।

शंखालुःशंखसंकाशोमध्वालुःस्यात्तुरोमशः ।

अर्थ--शंखालु, शंखसंकाश, मध्वालु, रोमश ।

काष्ठालुनामानि ।

काष्ठालुःस्वल्पकाष्ठंचततःकाष्ठालुकंस्मृतम् ।

अर्थ--काष्ठालु, स्वल्पकाष्ठ, काष्ठालुक ।

सर्वविधऽऽलुगुणाः ।

आलुकंशीतलंसर्वंविष्टम्भिमधुरंरसम् ।
सृष्टमूत्रमलंरूक्षंदुर्जरंरक्तपित्तनुत् ॥
कफानिलकरंवृष्यंबल्यंस्तन्यविवर्द्धनम् ॥ (म. नि.)

अर्थ-सर्वप्रकारके आलु-शीतल, विष्टम्भकारक, मधुररसान्वित, मलमूत्रको करनेवाले, रूखे, दुर्जर, रक्तपित्तनाशक, कफवातकारक, वृष्य, बल्य और स्तनोंमें दूध प्रकट करनेवाले हैं।

राजाल्वादि गुणाः ।

मधुराजालुकंशीतंमधुरंवायुकारकम् । पाकेकटुचविज्ञेयंरुचिदंदाहपित्तनुत् ॥ शोषतृट्कफनुत्प्रोक्तमस्यकन्दस्तुशीतलः । अग्निमांद्यंमलस्तम्भकफकृत्पित्तनुत्परः ॥ रक्तराजालुकंकिञ्चिदुष्णंचाग्निप्रदीपकम् । कफवातहरंचैवऋषिभिःपरिकीर्त्तितम् ॥ श्वेतालुकिञ्चित्कटुकमुष्णंवातकफापहम् । कृष्णालुकंतुमधुरंशीतवीर्य्यंश्रमापहम् ॥ पित्तदाहहरंचैवऋषिभिःपरिकीर्तितम् । कृष्णंवनालुकंरुच्यंमहासिद्धिकरंपरम् ॥ मुखजाड्यहरंप्रोक्तंमुनिभिस्तत्वदर्शिभिः । वनालुकंतृप्तिकरंत्रिदोषघ्नंपरम् ॥ (नि. र.)

अर्थ-मधुर, राजालु--शीतल, मधुर, वातकारक, पाकमें चरपरे रुचिकारक, दाहनाशक, पित्तनिवारक, शोषको दूर करनेवाले तृषाको हरनेवाले, कफनाशक । इसका कन्द--शीतल, मंदाग्निकारक, मलस्तम्भक, कफकारक और पित्तनाशक है । लालराजालु--किंचित् उष्ण, अग्निप्रदीपक और कफ तथा वातको हरनेवाले हैं । सफेद आलु--किंचित् चरपरे गरम वात कफनाशक हैं । कृष्णालुक--मधुर, शीतवीर्य्य, श्रमनाशक, पित्त और दाहको हरनेवाले हैं । काले आलु--रुचिकारक, महासिद्धिदायक, मुखकी जड़ताको दूर करनेवाले हैं । वनालु--तृप्तिकारक और त्रिदोषको शान्ति करनेवाले हैं ।

कसेरुनामानि ।

गुण्डकन्दःकसेरुःस्यात्क्षुद्रमुस्ताकसेरुका ।
सूकरेष्टःसुगन्धिश्चसुगन्धोगन्धकन्दकः ॥

अर्थ--गुण्डकन्द, कसेरु, क्षुद्रमुस्ता, कसेरुका, सूकरेष्ट, सुगन्धि, सुकन्द कसेरुक, (कशेरु, राजकशेरुक) ।

कसेरुद्विविधंतत्तुमहद्राजकशेरुकम् ।
मुस्ताकृतिर्लघुस्याद्यत्तच्चिचोडमितिस्मृतम् ॥

अर्थ-,कसेरु दो प्रकारके हैं एक कसेरु दूसरा चिचोड। तहां बडे कसेरु अर्थात् कसेरुको कसेरू कहते हैं और जिसका आकार मोथाके समान हो तथा हलका हो उसको चिचोड कहते हैं।

संस्कृतभाषामें कसेरु।
हिन्दीभाषामें कसेरू।
वंगभाषामें केशुर।
मराठीभाषामें कचरा, फुरड्या।
कर्णाटकीभाषामें सेकिनगड्डु।
तैलिङ्गीभाषामें इट्टिकोति।
लैटिन्भाषामें स्किरस कैसूर। Seripus Kyseor

द्विविधकसेरुगुणाः।

कसेरुकद्वयंशीतंमधुरंतुवरंगुरु।
पित्तशोणितदाहघ्नंनयनामयनाशनम्॥
ग्राहिशुक्रानिलश्लेष्मारुचिस्तन्यकरंस्मृतम्। (भा. प्र.)

अर्थ-दोनों प्रकारके कसेरू- शीतल, मधुर, कसेले,भारी, रक्तपित्तनाशक, दाहनिवारक, नेत्ररोगको हरनेवाले मलरोधक, शुक्रजनक, वातकफकारक, रुचिजनक और स्तनोंमें दूधको उत्पन्न करें हैं।

केमुकनामानि।

केबुकाकेमुकःकेम्बुसुपत्रादलमालिनी।
केलूटःस्वल्पविटपःस्वादुकन्दश्चपोलिनी॥

अर्थ- केबुका, केमुक, केम्बु, सुपत्रा, दलमालिनी, केलूट, स्वल्पविटप स्वादुकन्द, पोलिनी (पेचुक, पचुनी, पेचु, पेचिका, दलसारिणी, केचुक)।

संस्कृतभाषामें केमुक।
हिन्दीभाषामें केँउआ।
वंगभाषामें केँउगाछ, केल्लपपैंपा।
मराठीभाषामें कोबी।
गुजरातीभाषामें कोबी।
अंग्रेजीभाषामें कोबेज। (Cabbage)
लैटिन्भाषामें कोस्टस् स्पेश्योसस्। Costus speciosus
फारसीभाषामें कलाम।
अरबीभाषामें कंदकलष।

अस्यगुणाः ।

केमुकःकटुकःपाकेतिक्तंग्राहिहिमंलघु ः ।
दीपनंपाचनंहृद्यंकफपित्तज्वरापहम् ॥
कुष्ठकासप्रमेहार्शनाशनंवातलंकटु । (भा. प्र.)

अर्थ-केमुक-पचनेमें कटु, कडवा, मलरोधक, शीतल, हलका, दीपन, पाचक, हृदयको हितकारी, वातकारक, चरपरा तथा कफ, पित्त, ज्वर, कुष्ठ, खांसी, प्रमेह और बवासीरको हरनेवाला है ।

अन्यच्च ।

केलूटकंतुमधुरंरूक्षमच्छंचशीतलम् ॥
भेदकंग्राहकंरुच्यंगुरुपित्तकफापहम् ।
वातनाशकरंचैवकंदेप्येतेगुणाःस्मृताः ॥ (नि. र.)

अर्थ-केमुक, मधुर, रूखा, स्वच्छ, शीतल, भेदक, मलरोधक, रुचिकारक, भारी, पित्तकफनाशक, वातनाशक और कन्दके गुणभी इसके समान जानने ।

शाल्मलीकन्दनामानि ।

शाल्मलीकन्दश्चाथविज्जुलोवनवासकः ।
वनवासोमलघ्नश्चमलहन्ताषडाह्वयः ॥

अर्थ-शाल्मलीकन्द, विज्जुल, वनवासक, वनवास, मलघ्न, मलहन्ता ।

शाल्मलीकन्दगुणाः ।

मधुरःशाल्मलीकन्दोमलसंग्रहरोधजित् ।
शिशिरःपित्तदाहार्तिशोषसन्तापनाशनः ॥ (रा. नि.)

अर्थ-शाल्मलीकन्द-अर्थात् सेमलकी मूली—मधुर, मलसंग्रहके रुकनेको दूर करनेवाली, शीतल तथा पित्त, दाह, शोष और सन्तापको हरनेवाली है ।

कदलीकन्दगुणाः ।

कन्दःकदल्यारूक्षःस्याद्वातलस्तुवरोगुरुः। शीतोबल्योमधुःकेश्योरुच्योऽग्निमांद्यकारकः ॥ कर्णशूलंचाम्लपित्तंदाहंरक्तरुजंतथा । सोमदोषरजोदोषकृमीन्कुष्ठंचनाशयेत् ॥ (नि. र.)

अर्थ-केलेका कन्द-रूखा, वादी, कसेला, भारी, शीतल, बलकारी,

मधुर, केशोंको हितकारी, रुचिजनक, मंदाग्निकारक तथा कर्णशूल, अम्लपित्त, दाह, रुधिरविकार, सोमदोष, रजोदोष, कृमि और कुष्ठ रोगका नाश करे है।

अथ संस्वेदजशाकनामानि ।



उक्तंसंस्वेदजंशाकंभूमिच्छत्रंशिलीन्ध्रकम् ।
क्षितिगोमयकाष्ठेषुवृक्षादिषुतदुद्भवेत् ॥

अर्थ--संस्वेदजशाक, भूमिच्छत्र, शिलीन्ध्रक, (भूछत्र, पृथिवीकन्द, शिलीन्ध्र, कवच, भूमिच्छत्र, भूमिस्फोट, धरांकुर, भूसुता, छत्र, छत्राक, उच्छिलीन्ध्र, स्वेदज) यह मृतिका, गोबर, काष्ठ और वृक्षादिकोंमें उत्पन्न होताहै।

संस्कृतभाषामें	संस्वेदजशाक ।
हिन्दीभाषामें	सांपकी छत्री, छाता, छतोना ।
वंगभाषामें	छातकुड, छाता, भुँइछाति ।
मराठीभाषामें	भुईफोड, अळम्बी ।
कोकणीभाषामें	कामिल ।
गुजरातीभाषामें	फुग्य मींदडानी वली ।
अंग्रेजीभाषामें	मशरूम । Mushroom
लैटिन्भाषामें	फंगाई । Fungi

अस्य गुणाः ।

सर्वेसंस्वेदजाःशीताःदोषलाःपिच्छिलाश्चते।गुरवश्छर्द्यतीसार-ज्वरश्लेष्मामयप्रदाः॥श्वेतशुभ्रस्थलीकाष्ठवंशगोव्रजसम्भवाः। नातिदोषकरास्तेस्युःशेषास्तेभ्योविगर्हिताः ॥ (भा, प्र.)

अर्थ--सर्वप्रकारके संस्वेदजशाक--शीतल, दोषजनक, पिच्छिल, भारी तथा वमन, अतिसार, ज्वर और कफ रोगोंको उत्पन्न करें हैं। सफेद शुभ्र स्थानमें उत्पन्न होनेवाले तथा काठ, बांस और गायोंके स्थानोंमें उत्पन्न होनेवाले अत्यन्त दोषकारक नहीं हैं और शेष सर्व त्यागने योग्य हैं।

अन्यच्च ।

शीताबल्यासुनेशानीगुरुर्भेदकरामधुः । त्रिदोषकारिणीवृष्याकफदाचमताबुधैः ॥ भेदास्त्रयःसमाख्याताः कृष्णोरक्तश्चपाण्डुरः । कृष्णारसेचपाकेचमधुरोष्णागुरुः स्मृता ॥ श्वेतातुपाककालेचगुर्वीरक्ताल्पदोषदा । (नि० र०)

अर्थ--सांपकी छत्री शीतल, बलकारक, भारी, भेदक, मधुर, त्रिदोषजनक, वीर्य्यवर्द्धक और कफकारक है। यह कृष्ण, रक्त और पाण्डु इन भेदोंसे तीन प्रकारकी है। तहां कालेरंगका मधुर, गरम और भारी है। सफेद पाकमें भारी और लाल अल्पदोषजनक है।

इति श्रीशालिग्रामनिघण्टुभूषणे शाकवर्गः समाप्तः ॥ ११ ॥

अथ वारिवर्गः ।



जलनामानि ।

पानीयंसलिलंनीरंकीलालंजलमम्बुच ।
आपोवार्वारिकंतोयंपयःपाथस्तथोदकम् ॥
जीवनंवनमम्भोर्णोऽमृतंघनरसोऽपिच ।

अर्थ--पानीय, सलिल, नीर, कीलाल, जल, अम्बु, आप्, वार्, वारि तोय, पयस्, पाथस्, उदक, जीवक, वन, अम्भस्, अमृत, घनरस (मेघप्रसव, कमल, भुवन, कबन्ध, पुष्कर, सर्वतोमुख, सलिल, सल, जड, क, अन्ध, उमन्ध, उद, दक, नार, शम्बर, अभ्रपुष्प, घृत, कृत्स्न, पर्य्य, पाथ, यादोनिवास, जीवनीय, कुलीनस, कुलीन, पिप्पल, कुश, विष, काण्ड, सवर, सर, हपीट, चंद्रोरस, सदन, कर्बुर, व्योम, सम्ब, इरा, वाज, तामर, कम्बल, स्यन्दन, सम्बल, जलपीथ, क्षर, ऋत, ऊर्ज्ज, कोमल, सोम, नारा, छद्म,

क्षोद, नभ, मधु, पुरीष, रेत, कश, जन्म, वृबूक, बुस, तुग्या, कर्बूर, सुक्षेम, धरुण, सुरा, अरविन्दानि, धनुन्धतु, जामि, आयुधानि, क्षय, अहि, अक्षर, स्रोत, तृप्ती, रहस, रस, भेषज, सह, शव, षह, ओज, सुख, क्षत्र, आरया, शुभ, यादु, भूत, भविष्य, महत्, यश, मह, सर्णीक, स्वृतीक, सतीन, गहन, गभीर, गम्भलंग, अन्न, हवि, सद्म, योनि, ऋतस्ययोनि सत्य, रयि, सत्, पूर्ण, सर्व, अक्षित, बर्हि, नाम, सर्पि, अप, पवित्र, इन्दु, हेभ, स्वसर्ग, सम्बर, अस्ब, वपु, अम्बु, तुप, शुक्र, तेज, दर्भ, जलाष, वज्र, नीलकण्ठ-प्रिय) इत्याद्यनेकनामानि सन्ति ।

संस्कृतभाषामें	पानीय, सलिल ।
हिन्दीभाषामें	जल, पानी ।
वंगभाषामें	जल ।
मराठीभाषामें	उदक, पाणी ।
गुजरातीभाषामें	पाणी ।
कर्णाटकीभाषामें	मुनीक ।
तैलिङ्गीभाषामें	नीरु ।
अंग्रेजीभाषामे	वाटर । water
लैटिन्भाषामें	एक्का । Aqua
फारसीभाषामें	आब ।
अरबीभाषामें	माय ।

जलगुणाः ।

पानीयंश्रमनाशनंक्लमहरंमूर्च्छापिपासापहं तन्द्राछर्दिविबन्ध हृद्बलकरंनिद्राहरंतर्पणम् । हृद्यंगुप्तरसंह्यजीर्णशमकंनित्यं- हितंशीतलं लघ्वच्छंरसकारणंनिगदतेपीयूषवज्जीवनम् ॥

अर्थ- जल--पानी--श्रम, मूर्च्छा, प्यास, तन्द्रा, वमन, विबन्ध और निद्राको दूर करेहै, बलकारक, तृप्तिजनक, हृदयको हितकारी, गुप्तरसवाला, अजीर्णको हरनेवाला, निरन्तर हितकारी, शीतल, हलका, स्वच्छ, रसोंका कारण और अमृतके समान सर्वप्राणियोंका जीवन है ।

अथातःसम्प्रवक्ष्यामिपानीयानिपृथक्पृथक् । शृणुत्वंचस- मासेनगुणान्गुणविपर्य्ययम् ॥ द्विविधंचोदकंप्रोक्तमन्त-

रीक्षंतथौद्भिदम्। आन्तरीक्षंतुद्विविधगांङ्गसामुद्रिकंपयः॥ गाङ्गसामुद्रविज्ञानंकथयिष्यामिसाम्प्रतम्।धारितंयेनपात्रेणलक्ष्यतेतेनतद्विधम्॥ धौतंशुद्धसितंवस्त्रंचतुर्हस्तप्रमाणकम्।दण्डास्त्रिहस्ताश्चत्वारश्चतुष्कोणेषुबन्धयेत। तस्मात्परीक्ष्यंतत्तोयंशुद्धेरौप्यमयेऽथवा। कांस्यपात्रेसमुद्धृत्यपरीक्षेतभिषग्वरः॥शुद्धकार्पासतूलंवाश्वेतशाल्योदनस्यवा। पिण्डिकातत्समं क्षिप्ताश्वेततांयातिसापुनः॥श्वेतातुनिर्मलापिण्डीशुद्धश्चनिर्मलंपयः। तद्गाङ्गंसर्वदोषघ्नंगृहीत्वासुभाजने॥ तद्धारयेच्चमतिमान्बल्यंमेध्यंरसायनम्।श्रमक्लमपिपासाघ्नंकण्डूदोषनिवारणम्॥ लघुमूर्च्छातृषाच्छर्दिमूत्रस्तम्भविनाशनम्॥ गङ्गोदकस्यदृष्टिःस्यात्द्विवसेवाप्रदृश्यते। आविलंसमलंनीलंघनंपीतमथापिच। सक्षारंपिच्छिलंचैवसामुद्रंतन्निगद्यते॥ सघनंकफकृच्चैवकण्डूश्लीपदकारकम्। सवातलंचविज्ञेयंरक्तदोषार्तिकारणम्॥(हा०सं०)

अन्यच्च।

अर्थ- महर्षि आत्रेयजी हारीतसे कहते हुए कि, मैं अब पानियोंके भेद और गुण दोष कहता हूँ तू सुन। पानी आन्तरीक्ष और औद्भिद इन भेदोंसे दो प्रकारका कहा है तहां आन्तरीक्ष (आकाशका) पानीके भी दो भेद हैं एक गांग अर्थात् गङ्गाका और दूसरा सामुद्रिक अर्थात समुद्रका गङ्गा और समुद्रके जलके विज्ञानको कहता हूँ। जिस पात्रमें रक्खा हो उसी पात्रके अनुसार लक्षण प्रतीत होते हैं। जलपरीक्षा--धुला हुआ शुद्ध और सफेद वस्त्र चार हाथ लेवे फिर तीन २ हाथके दंडोसे उस वस्त्रके चारों कोने बांध देवे इसके उपरान्त शुद्ध चांदीके वरतनमें अथवा काँसे के वरतनमें उस जलकी परीक्षा करे तथा शुद्ध कपासकी रुई वा शालिचावलोंके भातका पिण्ड बना कर जलमें डालदे जो सफेदपनेको प्राप्त होजावे और सफेद होकर वह पिण्ड निर्मल हो जावे और वह जलभी शुद्ध और निर्मल होजावे तो उसको गंगा पानी जानना। वह गंगाजल सर्वदोषनाशक है, उस जलको सुन्दर पात्र

में बुद्धिमान् ग्रहण करे, वह गङ्गाका जल बलकारक, मेधाजनक, रसायन तथा श्रम, क्लम, प्यास, कण्डू, मूर्च्छा, तृषा, वमन और मूत्रस्तम्भको दूर करे है और हलका है। अथवा दिनमें जो बरसता है वह गंगोदक है। कलुषत युक्त, मलसंयुक्त, नीला, घन, पीला, क्षारसहित और पिच्छिल हो ऐसे मघके जलको सामुद्रिकजल जानता। समुद्रका जल-कफकारक कण्डू और श्लीपद रोगको उत्पन्न करनेवाला, वादी और रुधिरके विकारोंको करता है।

अन्यच्च।

पानीयंमुनिभिःप्रोक्तंदिव्यंभौममितिद्विधा। दिव्यंचतुर्विधं प्रोक्तंधाराजंकारकाभवम्॥ तौषारञ्चतथाहैमन्तेषुधारंगुणाधिकम्। धाराभिःपतिततोयं गृहीतंस्फीतवाससा॥शिलायांवासुधायांवाधौतायांपतितंचतत्। सौवर्णेराजतेताम्रे स्फाटिकेकाचनिर्मिते॥ भाजनेमृण्मयेवापिस्थापितंधारमुच्यते। धारंनीरंत्रिदोषघ्नमनिर्देश्यरसंलघु॥सौम्यंरसायनंबल्यंतर्पणंह्लादिजीवनम्। पाचनंमतिकृन्मूर्च्छातन्द्रादाहश्रमक्लमान्॥ तृष्णांहरतिनात्यर्थविशेषात्प्रावृषिस्थितम्। धारंजलञ्चद्विविधंगाङ्गसामुद्रभेदतः॥ आकाशगंगासम्बन्धिजलमादायदिग्गजाः। मेघैरन्तरितावृष्टिंकुर्वन्तीतिवचासताम्॥ गाङ्गमाश्वयुजेमासिप्रायोवर्षतिवारिदः। सर्वथातज्जलंदेयंतथैवचरकेवचः॥ स्थापितेहेमजेपात्रेराजतेमृण्मयेऽपिवा। शाल्यन्नंयेनसंसिक्तंभवेदक्लेदिवर्णवत्॥ तद्गाङ्गंसर्वदोषघ्नंज्ञेयंसामुद्रमन्यथा। ततुसक्षारलवणंशुक्रदृष्टिबलापहम्॥विस्रञ्चदोषलंतीक्ष्णंसर्वकर्म्मसमाहितम्। सामुद्रंत्वाश्विनेमासिगुणैर्गाङ्गवदादिशेत्॥ यतोगस्त्यस्यदिव्यर्षेरुदयात्सकलंजलम्। निर्मलंनिर्विषंस्वादुशुक्रलंस्याद्दोषलम्॥ फूत्कारविषवातेननागानांव्योमचारिणाम्।

वर्षासु सविषं तोयं दिव्यमप्याश्विनं विना । अनात्तवं प्रमुञ्चति वारिवारिधरास्तु यत् ॥ तत्रिदोषाय सर्वेषां देहिनां परिकीर्तितम् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-मुनीश्वरोंने जल दो प्रकारका कहा है एक दिव्य और दूसरा भौम उनमें दिव्यजल-धाराज, करकाभव, तौषार और हैम इन भेदोंसे चार प्रकारका है । इनमें धाराजल गुणोंमें अधिक है । धारारूपसे पतित हुये जलको स्वच्छ वस्त्रमें छानले वह जल निर्मल वा धुलीहुई शिलामें हो वा स्वच्छ भूमिमें गिरा हुआ हो, उसमेंसे सुवर्ण, रजत, ताम्र, स्फटिकमणि, काच वा मृत्तिकाके पात्रमें भरलेना उसको धाराजल कहते हैं । धाराजल त्रिदोषनाशक, गुप्तरस, हलका, शीतल, रसायन, बलकारक, तृप्तिजनक, आनन्दजनक, जीवन, पाचक, बुद्धिवर्द्धक तथा मूर्च्छा, तन्द्रा, दाह, श्रम, क्लम और तृषाको दूर करे है । यह गुण शरदृतुमें कहे हैं, किन्तु वर्षाऋतुमें नहीं । धाराजल गांग और सामुद्र इन भेदोंसे दो प्रकारका है । पहिले आचार्य्योंने कहा है कि, आकाशगंगासम्बन्धी जलको दिग्गज (दिशाके हाथी) लेकर सूंडोंसे छोड़े हुए प्रायः आश्विनके महीनेमें मेघद्वारा वर्षाते हैं वह जल सर्वथा पीनेको देना चाहिये तैसेही चरकमें भी कहा है परीक्षा । सुवर्ण तथा चांदी अथवा मृत्तिकाके पात्रमें चावल डालकर जल भरदेवे, जो वह चावल न बिगडे और न उनका रंग बदले तो उसको गंगाजल जानना । यह गंगाजल सर्वदोषनाशक है । और जो वह चावल सडजावें और रंग बदल जावें तो उस जलको सामुद्रजल जानना । यह समुद्रजल सर्वदोषजनक है । समुद्रका जल-खारी, तिक्त, उष्ण, शुक्र, दृष्टि और बलविनाशक है, दुर्गन्धयुक्त, दोषकारक, तीक्ष्ण और सर्वकर्मोंमें यह अहितकारी है । किन्तु आश्विनके महीनेमें जो समुद्रसंम्बन्धी वर्षाका जल है वह वह गंगाजलके समान गुणकारक जानना । कारण यह है कि, आश्विनके महीनेमें अगस्त्य ऋषिके उदय होनेसे सर्व जल-निर्मल, निर्विष, स्वादु, शुक्रजनक और अदोषकारी होजाते हैं । क्योंकि वर्षाऋतुमें आकाशमें विचरनेवाले सर्पोंकी विषैली पवनसे दिव्यजल विषयुक्त होजाते हैं, किन्तु आश्विनके महीनेमें विषयुक्त नहीं होते । जो जल अपनी ऋतुको छोडकर और ऋतुओंमें बरसता है वह जल सर्वमनुष्योंके त्रिदोष करनेवाला है ।

इतिद्विधोदकंप्रोक्तंतथावक्ष्येचतुर्विधम् । रात्रिवृष्टिर्दिवावृष्टि-

ष्टिर्दुर्दिनासमयोद्भवा ॥ निशाजलंकफकरंघनशीतगुणात्मकम् । समुद्रतोयस्यसमंविज्ञेयंवातकोपनम् ॥ दिवासूर्य्यांशुसंतप्तामेघावर्षन्तियत्पयः । तत्कफघ्नंपिपासाघ्नंलघुवातप्रकोपनम् ॥ दुर्दिनेवृष्टिसंपातंवातोद्भूतंसवातकम् । कफकृच्छोषहननंतर्पणंदोषकोपनम् ॥ तथाश्रावणवृष्टिश्च दोषरोषकरानृणाम् । कण्डूत्रिदोषजननंपानीयंनप्रशस्यते॥ सघनंनाभसंनीरंश्लेष्मकृद्वातकोपनम् । शमनंपित्तरोगाणां मधुरंरक्तदोषहृत् ॥ रूक्षंपित्तकरंचाम्लगुणंरक्तविकारकृत् । चित्रानक्षत्रसम्भूतंपरंशस्तंत्रिदोषहृत् ।कार्त्तिकीवृष्टिसम्भूतंस्वातिसम्पातशीतलम्॥नाशनंचत्रिदोषाणांसर्वसस्यविवर्द्धनम् । शीतलंबलकृद्वृष्यंतृड्दाहज्वरनाशनम् ॥

अर्थ-इसप्रकार ऊपरका पानी दो प्रकारका कहा, अब चार प्रकारका कहतेहैं । रात्रिमें जो बरसता है, दिनमें जो बरसता है, दुर्दिनमें जो बरसताहै, और असमयमें जो बरसता है । रात्रिमें वर्षा हुआ जल- कफकारक, घन, शीतल गुणोंवाला, वातको कुपित करनेवाला और समुद्रके जलके समान है। दिनमें सूर्य्यकी किरणोंसे तप्त हुये मेघ जो पानीको वर्षाते हैं वह जल-कफनाशक, प्यासको हरनेवाला, हलका और वातको कुपित करता है। दुर्दिनमें वर्षा हुआ जल-वातल, कफकारक, शोषनाशक, तृप्तिकारक और दोषोंको कुपित करे है । श्रावणके महीनेकी वर्षाका पानी-मनुष्योंके दोषोंको कुपित करनेवाला, कण्डूजनक, त्रिदोषकारक और वह जल उत्तम नहीं है। भादोंके महीनेकी वर्षाका जल-कफकारक, वातको कुपित करनेवाला, पित्तरोगोंको शान्ति करनेवाला, मधुर और रुधिरके विकारोंको करे है । आश्विनके महीनेकी वर्षाका जल-रूखा, पित्तजनक, अम्ल और रुधिरके विकारोंको उत्पन्न करे है । चित्रानक्षत्रमें वर्षाहुआ जल-त्रिदोषनाशक और अत्यन्त उत्तम होता है । कार्त्तिकमासकी वर्षाका जल-अति शीतल, त्रिदोषनाशक, सर्वप्रकारकी खेतियोंको बढानेवाला, शीतल, बलकारक, वीर्य्यवर्द्धक तथा तृषा, दाह और ज्वरको हरनेवाला है ।

धरकादिचतुर्विधजलस्य लक्षणम् ।

तथाधारंचकारंचतौषारंहैममेवच ।
चतुर्विधंसमुद्दिष्टंतेषांवच्मिगुणागुणम् ॥

अर्थ-धार, कार, तौषार, हैम इन भेदोंसे जल चार प्रकारके हैं, अब इनके गुण और दोषोंको कहता हूं ।

धारंचतुर्विधंप्रोक्तंवक्ष्येकारंमहामते ।
श्रीमतांचमहाप्राज्ञहितायरुजशान्तये ।

अर्थ--धारसंज्ञक जल चार प्रकारका कहा है, अब कार जल श्रीमान् और विद्वानोंके हितके लिये और रोगकी शान्तिके लिये कहता हूँ ।

अथ करकाः ।

स्वर्नद्याःशीतवातेनमेघविस्फूर्जसंकुलम् । शीताम्बुबद्धकाठिन्यंशिलाजातंहिमेनतु ॥ पश्चात्सूर्य्यांशुसन्तापात्किञ्चिद्द्रवतेजलम् । वहन्तिमेघाःसलिलंशकलंशीतलंमतम् ॥

(हा. सं.)

अर्थ-शीतलपवनसे स्वर्गंगादिनदियोंका शीतल जल मेघके शब्दसे संकुलित हुआ कठिन होके पीछे शीतसे शिलारूप होजाता है पश्चात् सूर्य्यकी किरणोंके सन्तापसे कुछेक द्रवीभूत (पतला) होजाता है फिर मेघ उसको खण्डरूप (ओलोंको) बरसाते हैं उन ओलोंका जल परमशीतल होता है ।

अन्यच्च ।

दिव्यंवाय्वग्निसंयोगात्संहताःखात्पतन्तियाः ।
पाषाणखण्डवच्चापस्ताःकारिक्योऽमृतोपमाः ॥

अर्थ-दिव्य वायु और बिजलीके संयोगसे ताडित हुआ जो जल आकाशसे पत्थररूपसे गिरता है उसको 'करकाजल' कहते हैं ।

गुणाः ।

करकाजं जलंरूक्षंविशदंचगुरुस्थिरम् ।
दारुणंशीतलंसांद्रंपित्तहत्कफवातकृत् ॥

अर्थ-ओलोंका जल--रूखा, विशद, भारी, स्थिर, दारुण, शीतल, गाढा पित्तनाशक और कफकारक है ।

अन्यच्च ।

कारंशीतगुणंश्रमोपशमनंरूक्षंमरुच्छ्लेष्मकृन्मूर्च्छामोहशिरोर्त्तिनाशनकरंहिक्काविनिर्वारणम् ।शोफीनांव्रणिनांचनोहितकरंपित्तात्मकानांहितं शंसन्तिप्रवरागुणैःप्रतिकृतिंतस्मान्नदूरेकृतम् ॥

अर्थ--ओलोंका जल--शीतगुणान्वित, श्रमनाशक, रूखा, वातकफकारक तथा मूर्च्छा, मोह, शिरकी पीडा और हिचकीको दूर करे है। सूजन, तथा व्रणरोगियोंको अहित है और पित्तकी प्रकृतिवाले मनुष्योंको हितकारी है। यह अत्युत्तम है इसमें अनेक गुण हैं इसकारण इसको कदापि दूर नहीं करना चाहिये। (हा० सं०)

अथ तौषारलक्षणं गुणाश्च ।

अपिनद्याःसमुद्रान्तेवह्निरापस्तदुद्भवा । धूमावयवानिर्मुक्तास्तुषाराख्यास्तुताःस्मृताः ॥ अपथ्याःप्राणिनांप्रायोभूरुहाणांचनोहिताः । तुषाराम्बुहिमंरूक्षंस्याद्वातमापित्तलम् ॥ कफारुस्तम्भकंठाग्निमेहगण्डादिरोगनुत् । (भा. प्र.)

अर्थ--नदीसे लेकर समुद्रतक अग्नि है उससे उत्पन्न हुये जल धुएँके अवयव हीन तुषार कहाते हैं, वह तुषार प्राणियोंको और वृक्षोंको अहितकारक हैं। तुषारका जल--शीतल, रूखा, बादी, अपित्तल तथा कफ, उरुस्तम्भ, कण्ठ, प्रमेह और गलगण्डादि रोगोंको दूर करे है।

अन्यच्च ।

तौषारंलघुशीतलंश्रमहरंपित्तार्त्तिशान्तिप्रदम् । दोषाणांशमनंजलार्तिहननंसर्वामयघ्नंपरम् ॥ कुष्ठश्लीपदचर्चिकाविषहरंपामाविसर्पापहम् । क्षीणानांक्षतशोषिणांहितकरंसंसेव्यतेमानवैः ॥ (हा. सं.)

अर्थ--तुषारका जल--हलका, शीतल, श्रमनाशक, पित्तकी पीडाको शान्तिकरनेवाला, दोषनिवारक, जलके रोगोंको हरनेवाला, सर्वप्रकारके रोगोंका नाशकरनेवाला तथा कोढ, श्लीपद, मकडीका विष, पामा और

ज्वररोगका नाश करे है। तथा क्षीणमनुष्य, क्षतरोगवाले और शोष रोगवालोंको हितकारी है।

अथ हिमजललक्षणम्।

हिमवच्छिखरादिभ्योद्रवीभूय निवर्षति।
यत्तदेवहिमंजलमाहुर्मनीषिणः ॥ (भा. प्र.)

अर्थ-हिमके समान शीतल पर्वतोंसे जो बर्फ गलकर जल टपकता है उसको विद्वान् हिमजल कहते हैं।

हिमजलगुणाः।

हिमंघनंचमधुरश्चकफात्मकश्च मूर्च्छाश्रमार्तिशमनंभ्रमनाशनश्च। पित्तास्रजप्रशमनंरुधिरक्षतघ्नं शान्तिकरोतिहिमसम्भववारिसद्यः ॥ (हा. सं.)

अर्थ-हिमजल-घन, मधुर, कफकारक, तथा मूर्च्छा, श्रम, भ्रम, रक्तपित्त, रुधिरके विकार और क्षतरोगका नाशकरे है तथा शीघ्रही शान्तिको करे है।

अन्यच्च।

हिमन्तुशीतलंरूक्षंदारुणंसूक्ष्ममित्यपि।
नतदूषयतेवातंनचपित्तंनवाकफम् ॥ (भा. प्र.)

अर्थ-हिमजल-शीतल, रूखा, दारुण, सूक्ष्म, और न यह वातको दूषित करे, न पित्तको दूषित करे और न यह कफको दूषित करे है।

अथ भौमजलम्।

भौममम्भोनिगदितंप्रथमंत्रिविधंबुधैः। जाङ्गलंदरमानूपंतत्साधारणंक्रमात् ॥ अल्पोदकोऽल्पवृक्षश्चपित्तरक्तामयान्वितः। ज्ञातव्योजांगलोदेशस्तत्रत्यंजांगलंजलम् ॥ बहुबुर्बहुवृक्षश्चवातश्लेष्मामयान्वितः। देशोऽनूपइतिख्यातआनूपंतद्भवेज्जलम् ॥ मिश्रचिह्नस्तुयोदेशःसहिसाधारणःस्मृतः। तस्मिन्देशेयदुदकंतत्तुसाधारणंस्मृतम् ॥ जाङ्गलंसलिलंरूक्षंलवणंलघुपित्तनुत। वह्निकृत्कफहृत्पथ्यं विकारान्हरतेबहून् ॥ आनूपंवार्य्यभिष्यन्दिस्वादुस्निग्धं

घनंगुरु। वह्निहृत्कफकृद्पथ्यंविकारान्कुरुतेबहून्॥ साधारणन्तुमधुरंदीपनंशीतलंलघु। तृष्णादाहमदच्छर्दितथा दोषत्रयप्रणुत्॥

अर्थ-भौमजल अर्थात् पृथ्वीका जल-जांगल, आनूप और साधारण इन भेदोंसे तीन प्रकारकाहै। जिस देशमें अल्पजल और थोडे वृक्ष हों और जहां प्रायः प्राणी पित्त तथा रुधिरके रोगवाले अधिक हों उस देशको जांगलदेश कहते हैं और उस देशके जलको जांगल जल कहते हैं। जिस देशमें बहुत जल और बहुत वृक्ष हों और जहांके जीव अधिकतर वात कफ रोगवाले हों उस देशको अनूप देश कहते है और देशके जलको आनूप कहतेहैं। जिस देशमें जंगल और अनूप दोनों लक्षण मिश्रित हों रोगभी मिश्रित हों उस देशको साधारण कहतेहैं और उस देशके जलको साधारण-जल कहतेहैं। जांगलजल--रूखा, निमकीन, हलका, पित्तनाशक, जठराग्निजनक, कफनाशक, पथ्य और अनेक प्रकारके विकारोंको हरनेवाला है। आनूपजल—अभिष्यंदि, स्वादिष्ठ, स्निग्ध, घन, भारी, जठराग्निनाशक, कफ और अनेक प्रकारके विकारोंको करे है। साधारणजल-मधुर, दीपन, शीतल, हलका तथा तृषा दाह, मद, वमन और त्रिदोषका नाश करे है।

अथाष्टविधं जलम्।

धारंपृथिव्यांपतितंपयस्तुतत्रैवजातंगुणभेदभिन्नम्।
नानाविधैर्भेदगुणैश्चसम्यग्जातंजलंचाष्टविधंवदन्ति॥
नद्योद्भिदंप्रस्रवणंचचौंडचंकौपंतडागंसरसोद्भवञ्च।
वाप्योद्भवंतंप्रवदन्तिधीरानीरंसमासेनवदामिचात्र॥ (हा. सं.)

अर्थ-धारनामवाला जल पृथिवीमें पतित हुआ तहां गुणोंके भेदोंसे भिन्न होजाता है फिर अनेक प्रकारके भेद और गुणोंसे आठ प्रकारका होता है। नादेय (नदीका), औद्भिद (जो पृथ्वीको तोड़कर बहता है उसका जल) झरनेका, चौंडयका, कुएका, तडागका, सरका और वापीका इन भेदोंसे जल आठ प्रकारका कहा है।

नदीजलम्।

नद्यानदस्यवानीरंनादेयमितिकीर्तितम्।

नादेयमुदकंरूक्षं वातलंलघुदीपनम् ॥
अनभिष्यन्दिविशदंकटुकंकफपित्तनुत् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ- नदी और नदके जलको नादेय ऐसा कहते हैं नदीका जल--रूखा वादी हलका, दीपन, अनभिष्यंदि, विशद, चरपरा तथा कफ पित्तका नाश करे है।

अन्यच्च ।

यच्छ्रीमताश्चैवमहीपतीनांसेव्यंतथायोग्यतमंप्रदिष्टम् ।
नादेयतोयंमधुरंतथालघुरूक्षंतथोष्णंशमनश्चवायोः ॥
सन्दीपनंसस्यविनाशनश्चहिमागमेवाशिशिरेनिषेव्यम् ।
बलप्रदंपथ्यकरंनराणांप्रदिष्टमेतत्तुसदाभिषग्भिः॥ (हा. सं.)

अर्थ- नदीका जल--लक्ष्मीवान् और राजाओंको अतियोग्य कहा है मधुर, हलका, रूखा, गरम, वातको शांति करनेवाला, अग्निप्रदीपक, खेतीका नाश करनेवाला, बलकारक और पथ्य है, यह जल शीतऋतुके आगममें तथा शिशिर ऋतुमें सेवन करना चाहिये।

नद्यःशीघ्रवहालघ्व्यःसर्वायाश्चामलोदकाः ।
गुर्व्यःशैवलसंछन्नामंदगाःकलुषाश्चयाः ॥

अर्थ--शीघ्र बहनेवाली नदियोंका जल--हलका और निर्मल होता है। और मन्दवहनेवाली नदियोंका जल-भारी, काईसे ढका हुआ और कलुषयुक्त होता है।

नदीसरस्तडागस्थेकूपप्रस्रवणादिजे ।
उदकेदेशभेदनगुणान्दोषांश्चलक्षयेत् ॥

अर्थ--नदी—सरोवर, तालाब, कूआ, झरना इनके जलोंमें देश भेदके द्वारा गुण और दोष जानना।

गंगाजलगुणाः ।

स्वादुपाकरसंशीतंत्रिदोषशमनंतथा ।
पवित्रमतिपथ्यञ्चगाङ्गंवारिमनोहरम् ॥

अर्थ-गंगाजल—स्वादुपाकी, शीतल, त्रिदोषकी शांतिकरनेवाला, पवित्र अत्यन्त पथ्य और मनोहर है।

यमुनाजलगुणाः ।

गाङ्गातिकिञ्चिद्गुरुतरंस्वादुपित्तापहंपरम् ।
वातलंवह्निजननंरूक्षंचयामुनंजलम् ॥

अर्थ-यमुनाका जल गंगाजलसे किंचित् भारी है, स्वादिष्ठ, पित्तनाशक वातजनक, जठराग्निजनक और रूखा है ।

नर्मदाजलगुणाः ।

अथस्वच्छंप्रशस्तञ्चशीतलंलघुलेखनम् ।
पित्तश्लेष्मप्रशमनंनार्मदंसर्वरोगनुत् ॥

अर्थ-नर्मदानदीका जल-निर्मल, शीतल, हलका, लेखन, पित्त और कफकी शान्ति करनेवाला और सर्वप्रकारके रोगोंका नाश करे है ।

गोदावरीजलगुणाः ।

कण्डूकुष्ठप्रशमनंवह्निसंदीपनंपरम् ।
पाचनंवातपित्तघ्नंवारिगोदावरीभवम् ॥

अर्थ-गोदावरी नदीका जल-कण्डू, कुष्ठ और वातपित्तनाशक है, अग्निप्रदीपक और पाचक है ।

कावेरीनदीजलगुणाः ।

कावेरीसलिलंपथ्यंवातघ्नंबलवर्णकृत् ।
आग्नेयमतिशीतञ्चदद्रुकुष्ठविनाशकृत् ॥

अर्थ—कावेरीनदीका जल—पथ्य, वातविनाशक, बलकारक, वर्णको सुन्दर करनेवाला, जठराग्निको बढानेवाला, अत्यन्त शीतल, तथा दाद और कुष्ठका नाश करे है ।

कृष्णावेणीजलगुणाः ।

रूक्षंचशीतलंवारिवातरक्तप्रकोपनम् ।

अर्थ—कृष्णावेणीका जल-रूखा, शीतल, और वातरक्तको कुपित करे है ।

पूर्वदेशोद्भवानद्यःसर्वावातकफप्रदाः । पश्चिमाःपित्तलाःसर्वाःकफवातविनाशनाः ॥ पश्चिमोदधिगाःशीघ्रवहायाश्चामलोदकाः । पथ्याःसमासात्तानद्योविपरीतास्ततोऽन्यथा ॥

अर्थ-पूर्वदेशकी सर्वनदी-वातकफकारक । पश्चिमदेशकी सर्वनदी-पित्तकारक और कफवातनिवारक हैं । पश्चिमके समुद्रमें जानेवाली नदियोंका

जल और शीघ्र बहनेवाली नदियोंका जल निर्मल है। नदीका जल अल्पही पथ्य होता है और अधिक सेवन करना अहितकारक है।

नाद्यंसंप्रवक्ष्यामिसमुद्रगामिस्रोतसाम्। ससैकतासपाषाणाद्विविधाचाम्बुवाहिनी॥ सदावहावाघनवारिकोष्णामरुत्कफानांशमनश्चतस्याः। नीरंवसन्तेहितकृद्विशेषान्नदीभवनवहिमागमेच॥ घनविमलशिलानांस्फालनाज्जातफेनंबहलसजलवीचीच्छन्नसंक्षोभदत्तम्। ननुसुखमयशीतंनातिचोष्णंघनश्च हरतिपवनपित्तंश्लेष्मकृद्वारिसम्यक्॥ नघनविमलतोयंसैकतायाःप्रवाहो नचभवतिलघुत्वंश्लेष्मकृद्धन्तिपित्तम्। भवतिमधुरमेवंकिञ्चिदुष्णंकषायंभवतिपवनकारीशोषमूर्च्छांनिहन्ति॥ हिमवत्प्रभवानद्यःपुण्यादेवर्षिसेविताः। घनपाषाणसिकतावाहिनीविमलोदकाः॥ हन्तिवातकफंतोयंश्रमशोषविनाशनम्। किञ्चित्करोतिवापित्तात्रिदोषशमनंजलम्॥ पारिभद्रभवायाश्चविन्ध्यसिन्धुभवाश्चयाः। शिरोहृद्रोगकुष्ठानांताहेतुःश्लीपदस्यच॥ मलयप्रभवानद्यःशीततोयाःसुधोपमाः। प्रतिपित्तंचवातंचशोषभ्रमश्रमापहाः॥गंगासरस्वतीशोणायमुनासरयूशची। वेणाशरावतीनि[illegible]त्तरापूर्ववाहिनी॥ हिमवत्प्रभवाह्येताहिमसंघातशीतलाः।सभाःसर्वगुणैर्नद्योवातश्लेष्महरानृणाम॥ आसांनवशतैर्युक्तागङ्गाप्रोक्तामनीषिभिः। तथाचर्मण्वतीवेत्रवतीपारावतींतथा॥ क्षिप्रामहापदीपीतामुतसकन्यामनास्विनी। शेवतीचैवशैलिन्यःसिन्धुयुक्ताःसमुद्रगाः वातपित्तहरनीरंत्रिदोषघ्नमतंपरम्। श्रमग्लानिहरंवृष्यमुत्तराशानुगामिच॥ तापीगोपातिगोलोमीगोमतीसलिलामही। सरस्वतीयुतानद्योनर्म्मदापश्चिमानुगाः॥ आसांजलंघनं

शीतंपित्तघ्नंकफकृत्तथा । वातदोषहरंहृद्यंकण्डूकुष्ठविनाशनम् ॥ पश्चिमाद्रिसमुद्भूतागौतमीपुण्यभावनाः । आसां शीतंजलंवापिकफवातविकारकृत ॥ पित्तदंशमनंबल्यंमूत्रदोषविकारकृत् । पूर्णापयस्विनीवेत्राप्रणीताचवरानना ॥ द्रोणागोवर्द्धनीयान्यागौतम्यानुगताइमाः । आसांजलंघनं नातिवातश्लेष्मविकारकृत् ॥ पूर्वसमुद्रगाश्चैवनद्योनवशतैर्युताः । कावेरीवीरकान्ताचभीमाचैवपयस्विनी ॥ विभावरीविशालाचगोवन्दनीमदनस्वसा ।पार्वतीचापरानद्योदक्षिणादिग्गमाइमाः ॥ प्रत्येकशोनवशतैर्युताइमाःपृथक्पृथक् । सर्वासांपरिसंख्याचशतानांचैकविंशतिः ॥ क्रोशेक्रोशेभवेत्कुल्यायोजनेयोजनेनदी । द्वियोजनाचविज्ञेयामहानीराबुधैर्नदी ॥ (हा० सं०)

अर्थ--आत्रेयजी कहते हैं कि, अब समुद्रमें जानेवाली नदियोंको कहता हूं रेतेवाली और पत्थरोंवाली इन भेदोंसे नदी दो प्रकारकी हैं । सदेव वहनेवाली नदी--घनजलवाली, गरम, वात और कफकी शान्ति करनेवाली हैं उनका जल विशेष करके वसतऋतुमें हितकारी है और हिमऋतुके पूर्वमें हितकारी नहीं है । घन और निर्मल ऐसे पत्थरोंवाली नदीका जल--फेनयुक्त और तरंगोंके क्षोभसे गरम हो जाता है, सुंदर शीतल, अत्यन्त उष्ण नहीं, हलका घन वात पित्तनाशक और कफको करता है । बालु रेतेवाली नदियोंका जल-घन नहीं, निर्मल हलका भी नहीं, कफकारक, पित्तनाशक, मधुर, किंचित् गरम, कषेला, वातकारक तथा मूर्च्छा और शोषको दूर करे है । हिमालय पर्वतसे उत्पन्न हुई नदी पवित्र हैं देव और ऋषियों करके सेवित हैं, भारी पत्थर और बालू करके युक्त बहनेवाली हैं और उनका जल-निर्मल, वातकफनाशक, श्रमनिवारक, शोषनाशक, किंचित् पित्तकारक तथा पित्त और त्रिदोषको शान्ति करे है । पारिभद्र, विंध्याचल और सिन्धुपर्वतसे उत्पन्न हुई नदियोंका जल-शिरोरोग, हृदयरोग, कुष्ठ और श्लीपदादिरोगोंका कारण है । मलय पर्वतसे उत्पन्न हुई नदियोंका जल-

शीतल, अमृतके समान तथा वात, पित्त, शोष, भ्रम और श्रमका नाश करे है। गंगा, सरस्वती, शोण, यमुना, सरय, शची, वेणा, शरावती और नीला यह उत्तर और पूर्वको वहनेवाली, हिमालय पर्वतसे उत्पन्न हुई और हिमके संघातसे शीतल हुई यह सर्वनदी गुणोंमें समान और मनुष्योंके वात तथा पित्तको हरनेवाली हैं। इनमें ९०० नौसौ नदियोंयुक्त गंगा कही है। तथा चर्मण्वती, वेत्रवती, पारावती, क्षिप्रा, महापदी, पीता, मुत्सका, मनस्विनी, शुंवती, शैवलिनी और सिन्धु यह सर्वनदी समुद्रमें जानेवाली हैं। इन सर्वनदियोंका जल--वातपित्तनाशक, त्रिदोषनाशक, श्रमहारक, ग्लानिनिवारक, वीर्यवर्द्धक और उत्तर दिशासे आता है तापी, गोपती, गोलोमी, गोमती, सलिला, मही, सरस्वती और नर्मदा यह सर्व पश्चिमसे बहती हैं इनका जल-घन, शीतल, पित्तनाशक, कफकारक, वातविकारविनाशक, हृदयको हितकारी तथा कण्डू और कुष्ठका नाश करे है। पश्चिमके पर्वतसे उत्पन्न हुई गौतमी और पुण्यभावना आदि नदियोंका जल—शीतल कफ और वातके विकारोंको करे है। पित्तज दोषोंको शान्ति करे है, बलकारक और मूत्रदोषोंको उत्पन्न करे है। पूर्णा, पयस्विनी, वेत्रा, प्रणीता, वरानना, द्रोणा, गोवर्द्धनी आदि नदी गौतमी नदीका अनुगमन करती हैं। इनका जल—अत्यन्त घन नहीं है तथा वात और कफके दोषोंको उत्पन्न करे है। पूर्वके समुद्रमें गमन करनेवाली ९०० नदी हैं। कावेरी वीरकान्ता, भीमा, पयस्विनी, विभावरी, विशाला, गोवन्दनी, मदनस्रवसा और पावती आदि नदी दक्षिण दिशाको गमन करनेवाली हैं। एक २ नदी ९०० नदीयुक्त हैं और सर्वहिन्दोस्थानकी नदियोंकी संख्या २१०० हैं। कोशकोशमें कुल्या होती हैं, योजन २ में नदी होती हैं और बारह २ योजनमें महाजलवाली नदी होती है जिसको नद कहते हैं।

औद्भिदभूमिगुणाः ।

भूमिःपञ्चविधाज्ञेयाकृष्णारक्तासितातथा। पीतानीलाभवेज्ज्ञान्यागुणास्तासांप्रकीर्त्तिताः ॥ साकृष्णामधुराक्षाराकषायापीतवर्णिनी ।रक्तासातुभवेत्तिक्तामधुराम्लासितास्मृता ॥ नीलासकटुकाज्ञेयाभूमिभागाज्जलंविदुः । सघनंमधुरंनीरंकृष्णभूमिपरिस्तुतम् ॥ पीतास्थितंकषायंचरक्तायाःक्षारमाधुरम् । सितायाह्यम्लमधुरंभूमिभागेनलक्षयेत ॥ (हा०सं०)

अर्थ-पृथिवी-काली, लाल, सफेद, पीली और नीली इन भेदोंसे पांच प्रकारकी है, अब उनके गुण कहते हैं, काली पृथिवी मधुर और खारी है। पीले रंगकी पृथिवी-कषेली है। लाल पृथिवी कडवी है। सफेद पृथिवी-मधुर और खट्टी है। और नीली पृथिवी चरपरी है। ऐसेही पृथिवीके भागका पानी कहा हैं। काली पृथिवीका जल-घन और मधुर होताहै। पीली पृथिवीका पानी-कषेला होताहै। लाल भूमिका जल-खारी और मधुर होता है। सफेद भूमिका जल-अम्ल और मधुर होताहै ऐसे पृथिवीके भागसे जलको लक्षित करे, प्रायः पृथिवीके समान जलका स्वाद होता है।

औद्भिदजललक्षणं गुणाश्च ।

विदार्य्यभूमिंनिम्नायामहत्याधारयास्रवेत् । तत्तोयमौद्भिदं नामवदन्तीतिमहर्षयः ॥ औद्भिदंवारिपित्तघ्नंसविदाह्यति-शीतलम् । प्रीणनंमधुरंबल्यमीषद्वातकरंलघु ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-पृथिवीको फाडकर जो नीचे बडी धारासे जल बहताहै उस जलको औद्भिद जल कहते हैं, औद्भिदजल-पित्तनाशक, अविदाही, अत्यन्त शीतल, प्रीणन, मधुर, बलकारक, किंचित् वातकारक और हलका है।

अथ प्रस्रवणजलस्य लक्षणं गुणाश्च ।

शैलसानुस्रवद्वारिप्रवाहोनिर्झरोझरः । सतुप्रस्रवणश्चापि तत्रत्यंनैर्झरंजलम् ॥ नैर्झरंरुचिकृन्नीरंकफघ्नंदीपनंलघु । मधुरंकटुपाकंचवातलंस्यादपित्तलम् ॥

अर्थ-पर्वतमेंसे जो जल बहताहै उसको निर्झर, झर और प्रस्रवण कहते हैं, हिन्दीमें झरनेका जल कहते हैं झरनेका जल-रुचिकारक, कफनाशक, दीपन, हलका, मधुर, कटुपाकी, वातजनक और अपित्तल है।

अथ चौंड्यस्य लक्षणं गुणाश्च ।

शिलाकीर्णस्वयंश्वभ्रंनीलाञ्जनसमोदकम् । लतावितानसं-छन्नंचौण्ड्यमित्यभिधीयते ॥ अश्मादिभिरबद्धंयत्तत्रौ-ण्ड्यमितिवापरे । तत्रत्यमुदकंचौण्ड्यंमुनिभिस्तदुदाहृत-म् ॥ चौण्ड्यंवह्निकरंनीरंरूक्षंकफहरंलघु । मधुरंपित्तहृद्-च्यंपाचनंविशदंस्मृतम् ॥

अर्थ-जो गड्ढा चारों ओरसे शिलाओं करके व्याप्त हो और जिसका जल नील अंजनके समान निर्मल हो और जिसके ऊपर लता छारहीहों उसको चौण्ड्य कहते हैं। कोई आचार्य कहते हैं कि, जो पत्थर आदिसे न बांधा हो उसको चौण्ड्य कहते हैं। उसके जलको चौण्ड्य जल कहते हैं। चौण्ड्यका जल-जठराग्निजनक, रूखा, कफनाशक, हलका, मधुर, पित्तनाशक, रुचिकारक, पाचक और विशद है।

अथ कौपस्य लक्षणं गुणाश्च ।

भूमौखातोल्पविस्तारोगम्भीरोमण्डलाकृतिः । बद्धोऽबद्धः सकूपःस्यात्तदम्भःकौपमुच्यते ॥ कौपंजलयदिस्वादुत्रिदोषघ्नंहितंलघु । तत्क्षारंकफवातघ्नंदीपनपित्तकृत्परं॥ (भा. प्र.)

अर्थ-भूमिमें थोडा चौडागहरा गोल गड्ढा खोदकर ईंटपत्थरोंसे बनाले वा कच्चाही रहनेदेवे उसको कूप कहते हैं और उसके जलको कौपजल कहते हैं, कुयेका जल यदि स्वादिष्ट हो तो त्रिदोषनाशक, पथ्य और जो हलका होता है और खारी होय तो कफवातनाशक, दीपन और पित्तकारक होता है।

अन्यच्च ।

कफघ्नंकूपपानीयंक्षारंपित्तकरंलघु । (रा. नि.)

अर्थ-और भी कुयेका जल-कफनाशक, खारी, पित्तकारक और हलका है।

तडागजलस्य लक्षणं गुणाश्च ।

प्रशस्तोभूमिभागस्थोबहुसंवत्सरोषितः । जलाशयस्तडागःस्यात्ताडागंतज्जलंस्मृतम् ॥ ताडागमुदकंस्वादुकषायं कटुपाकिच। वातलंबद्धविण्मूत्रमसृक्पित्तकफापहम् ॥

अर्थ-उत्तम भूमिके भागमें बहुतवर्षोंके पुराने जलाशयको तडाग कहते हैं, उसके जलको ताडागजल कहते हैं। तालाबका जल स्वादिष्ठ, कषैला, कटुपाकी, वातवर्द्धक, मल और मूत्रको बाँधनेवाला तथा रक्तपित्त और कफका नाश करे है।

सारसलक्षणं गुणाश्च ।

नद्याःशैलादिरुद्धायायत्रसंश्रित्यतिष्ठति । तत्सरोजलसंछन्नंतदम्भःसारसंस्मृतम् ॥ सारसं[illegible]ललंबल्यंतृष्णाघ्नंमधुरंलघु । रोचनंतुवरंरूक्षंबद्धमूत्रमलंस्मृतम् ॥

अर्थ-जहांनदी पहाड आदिसे रुककर ठहर जावे उसको सर कहते हैं, उसके जलको सरस कहते हैं। सरका जल-बलकारक, तृषानाशक, मधुर, हलका, रोचन, कषेला, रूखा तथा मल और मूत्रको बांधनेवाला है।

वाप्यलक्षणं गुणाश्च ।

पाषाणैरिष्टकाभिर्वाबद्धःकूपोऽबृहत्तरः । ससोपानोभवेद्वापीतज्जलंवाप्यमुच्यते ॥ वाप्यंवारियदिक्षारंपित्तकृत्कफवातहृत् । तदेवमिष्टंकफकृद्वातपित्तहरंभवेत् ॥

अर्थ-पत्थर अथवा ईटोंसे जो बडा कुआ बनाया जावे और उसमें सोपान अर्थात् सीढीभी लगाईजावें उसको वापी (बावडी) कहते हैं और इसके जलको वाप्य कहते हैं। बावडीका पानी जो खारी होय तो पित्तकारक और कफवातहारक जानना। और जो मीठा होय तो कफकारक और वातपित्तहारक जानना।

पाल्वलस्य लक्षणं गुणाश्च ।

अल्पंसरःपल्वलंस्याद्यत्रचन्द्रर्क्षगेरवौ ।
नतिष्ठतिजलंकिञ्चित्तत्रत्यंवारिपाल्वलम् ॥
पाल्वलंवार्य्यभिष्यन्दिगुरुस्वादुत्रिदोषकृत् ।

अर्थ-छोटे सरको पल्वल कहते हैं, इसमें श्रावण तथा वर्षामें जल रहता हैं फिर सूखजाता है, इसके जलको पाल्वल कहते हैं। पल्वल अर्थात् तलैयाका जल-अभिष्यन्दी, भारी, स्वादु और त्रिदोषकारक है।

विकिरस्य लक्षणं गुणाश्च ।

नद्यादिनिकटेभूमिर्यभवेद्वालुकामयी। उद्धाव्यतेततोयत्तु तज्जलंविकिरंविदुः ॥ विकिरंशीतलंस्वच्छंनिर्दोषंलघुचस्मृतम् । तुवरंस्वादुपित्तघ्नंक्षारंततपित्तलंमनाक् ॥

अर्थ—नदीके निकटकी जो पृथिवी वालुयुक्त होती हे उसमें गड्ढा खोदकर जो जलको निकालते हैं उस जलको विकिर (चोहेका) जल कहते हैं। विकिर (चोहेका) जल-शीतल, निर्मल, निर्दोष, हलका, कषेला, स्वादिष्ठ और पित्तनाशक है और जो खारी होय तो पित्तकारक जानना।

कैदारस्य लक्षणं गुणाश्च ।

केदारंक्षेत्रमुद्दिष्टंकैदारंतज्जलंस्मृतम् ।

केदारंवार्य्यभिष्यन्दिमधुरंगुरुदोषकृत् ॥

अर्थ-केदार खेतको कहते हैं और उसके जलको केदार कहते हैं। केदारका जल-अभिष्यन्दि, मधुर, भारी और दोषकारी है।

वृष्टिजललक्षणंगुणाश्च।

वार्षिकंतदहर्वृष्टंभूमिस्थमहितंजलम्।
त्रिरात्रमुषितन्न तुप्रसन्नममृतोपमम् ॥ (भा. प्र.)

अर्थ-जो वृष्टिका जल उसी दिन वर्षा हो और भूमिस्थित हो वह जल हितकारी है और जो वही जल तीन रात्रि रक्खा रहै तो स्वच्छ और अमृतके समान होजाता है।

क्षारजलगुणाः।

क्षारोदकंपित्तलंस्यात्सरंचाग्निप्रदीपनम्।
कफवातहरंचैवप्रोक्तंपूर्वचिकित्सकैः ॥

अर्थ-खारीजल--पित्तकारक, सारक, अग्निप्रदीपक तथा कफ और वातका नाश करे है।

समुद्रजलगुणाः।

सामुद्रंदोषजनकंदाहकंरक्तदोषकृत्।
अग्निमांद्यंश्लीपदंचत्वग्दोषश्चकफंजयेत् ॥ (वै. नि.)

अर्थ-समुद्रका पानी दोषजनक, दाहकारक रक्तके विकारोंको करनेवाला तथा मंदाग्नि, श्लीपद, त्वचाके दोष और कफका नाश करे है।

सर्वऋतुसम्बन्धिजलगुणाः।

वारिसाधारणंवृष्यंदीपनंमधुरंलघु ॥

अर्थ-साधारण जल- वीर्य्यवर्द्धक, दीपन, मधुर और हलका है।

वार्षिकजलगुणाः।

गुर्वभिष्यन्दिपानीयंवार्षिकंमधुरंसरम्।

अर्थ-वर्षाऋतुका जल-भारी, क्लेदकारक, मधुर और सारक है।

शारदीयजलगुणाः।

शारदंत्वानभिष्यन्दिलघुतत्परिकीर्त्तितम्।

अर्थ-शरदऋतुका जल-अनभिष्यन्दि अर्थात् क्लेदहीन और हलका है।

हैमन्तिकजलगुणाः ।

हैमन्तिकंजलंस्निग्धंवृष्यंबल्यंहितंगुरु ।

अर्थ-हेमन्त ऋतुका जल-स्निग्ध, वृष्य, बलकारक, हितकारी और भारी है ।

शैशिरजलगुणाः ।

शैशिरंकफवातघ्नंकिञ्चिद्धैमन्तिकाल्लघु ।

अर्थ--शिशिरऋतुका जल-कफ वातनाशक और हैमन्तिक जलसे किञ्चित् हलका है ।

वासन्तिकजलगुणाः ।

कषायंमधुरंरूक्षंविद्याद्वासंतिकंजलम्

अर्थ-वसन्तऋतुका जल कषेला, मधुर, और रूखा होता है ।

ग्रैष्मिकजलगुणाः ।

ग्रैष्मिकस्त्वनभिष्यन्दि जलमित्येषनिश्चयः ॥ (रा. व.)

अर्थ--ग्रीष्मऋतुका जल--क्लेदरहित होता है ।

ऋतुपरत्वेनजलगुणाः ।

हेमन्ते सारसंतोयंताडागंवाहितंस्मृतम् । हेमन्तेविहितंतोयं शिशिरेऽपिप्रशस्यते ॥ वसन्तग्रीष्मयोःकौपंवाप्यंवानैर्झरं जलम् । नादेयंवारिनादेयंवसन्तग्रीष्मयोर्बुधैः॥विषवद्रुन-वृक्षाणांपत्राद्यैर्दूषितंयतः । औद्भिदंवान्तरिक्षंवाकौपंवाप्रा वृषिस्मृतम्॥शस्तंशरदिनादेयंनीरमंशूदकंपरम् ॥ (भा. प्र.)

अर्थ--हेमन्तऋतुमें सरोवर और तालावका जल पोना हितकारी है, जो जल हेमन्तऋतुमें हितकारी कहा है वह जल शिशिर ऋतुमेंभी हितकारी है वसन्त और ग्रीष्मऋतुमें कुयेका, बावडीका और झरनेका जल पीना चाहिये, वसन्त और ग्रीष्मऋतुमें नदीका जल नहीं देना चाहिये । कारण यह है कि, इसऋतुमें पतझड होता है इससे उन पत्तोंसे वह नदीका जल विषके समान दूषित होजाता है । वर्षाऋतुमें औद्भिद वा अन्तरिक्षजल अथवा कुयका जल पीना चाहिये और शरद्ऋतुमें नदीका जल अथवा अंशूदक सेवन करना चाहिये ।

अन्यच्च।

शरदिस्वच्छमुदयादगस्त्यस्याखिलंहितम् ॥

अर्थ-शरद्ऋतुमें अगस्त्यऋषिके उदय होनेसे सर्व जल निर्मल और हितकारी हो जाते हैं।

अन्यच्च।

पौषेवारिसरोजातंमाघेतत्तुतडागजम्। फाल्गुनेकूपसम्भूतं चैत्रेचौण्डचंहितंमतम् ॥ वैशाखेनैर्झरंनीरंज्येष्ठेशस्तंतथौद्भिदम्। आषाढेशस्यतेकौपंश्रावणेदिव्यमेवच ॥ भाद्रेकौपंपयःशस्तमाश्विनेचौंज्यमेवच। कार्तिकेमार्गशीर्षेचजलमात्रंप्रशस्यते ॥ (वृद्धसुश्रुतात्)

अर्थ-पौषके महीनेमें सरोवरका जल, माघके महीनेमें तलावका, फाल्गुनके महीनेमें कुयेका, चैत्रके महीनेमें चौंडयका, वैशाखके महीनेमें झरनेका, जेठके महीनेमें उद्भिदका, आषाढके महीनेमें कुयेका. श्रावणके महीनेमें दिव्योदक, भादोंके महीनेमें कुयेका. आश्विनके महीनेमें चौंज्य और कार्तिक तथा मार्गशीर्षके महीनेमें सर्व जल सेवन करने चाहिये।

तथाचतुर्विधंतोयंवक्ष्यामिशृणु कोविद।
पापोदकंरोगोदकमंशूदकारोग्योदकौ ॥

अर्थ-आत्रेयजी कहने लगे कि अब जलको-पापोदक-रोगोदक-अंशूदक और आरोग्योदक इन भेदोंसे चार प्रकारसे कहता हूं. हे हारीत! सुन।

पापोदक।

पापंपापोदकंचैव करोत्येवमरोचकम्। विष्ठायुक्तंग्राहिनीरं कृमिकीटसमाकुलम्॥ समलंनीलशैवालंपापन्तुनार्दितंचयत्। स्नानेपानेनस्वच्छस्तंनराणांवाहयेषुच ॥ स्नानेनत्वग्भवान्रोगान्कण्डूकुष्ठविसर्पकृत्। पानेनकफगुल्मानांकृमीणां ज्वरसम्भवान्॥करोतिविविधान्रोगांस्तस्मात्तत्परिवर्जयेत् ॥

अर्थ—पापोदक अर्थात् पापीपानी-अरुचिकारक है। विष्ठायुक्त जल-मलरोधक है। कृमि कीट, मल और नीलीकाई आदिसे मिले हुये जलको पापोदक कहते हैं। यह पापोदक-मनुष्य और घोडोंको स्नान और पीनेमें

अहितकारी है। और इस जलसे स्नान करनेसे त्वचाके रोग, कण्डू, कुष्ठ और विसर्प रोग उत्पन्न होता है। और इस जलको पान करनेसे-कफ, गुल्म और कृमिप्रभृति नानाप्रकारके रोग उत्पन्न होते हैं। इस कारण यह पापीजल कदापि नहीं पीना चाहिये।

रोगोदकम्।

बहुवृक्षलताकुञ्जेछायाकूपोऽथवासरः । अव्ययश्चेदधोऽप्येवंकृमिशैवालसंयुतम् ॥ क्लिन्नंसपिच्छिलंकृष्णंवृक्षमूलाश्रितंभवेत् । बहुवृक्षपर्णयुक्तंदुर्गन्धंमूत्रगन्धवत् ॥ रोगोदकंविजानीयात्करोतिविषमान्गदान् । शूलंकुष्ठंचकण्डूंचसेवितेनकरोतिहि ॥ विण्मूत्रतृणनीलिकाविषयुतंतप्तंघनंफेनिलंदन्तग्राह्यमनार्त्तवंहिसजलंदुर्गन्धिशैवालजम् । नानाजीवविमिश्रितंगुरुतरंपर्णौघपङ्काविलं चन्द्रार्कांशुसुगोपितंनचपिबेन्नीरंसदादोषलम् ॥ गुल्मंप्लीहार्शःपाण्डुश्चजलंवापिजलोदरम्।

अर्थ—बहुतसे वृक्ष और बहुतसी बेलोंके समूहकी छायामें कूवा वा सरोवर हो और उसमें पानी सदैव भरा रहता हो वह जल कृमि शिवारयुक्त हो, क्लेदित हो, पिच्छिल हो काले रंगका हो, वृक्षोंकी जडोंसे आश्रित हो और बहुत वृक्षोंके पत्तोंसे युक्त हो, दुर्गंधित हो मूत्रके समान गन्धवाला हो उसको रोगोदक कहते हैं यह रोगोदक अर्थात् रोगी पानी विषमरोग, शूल, कुष्ठ और कण्डूरोगको उत्पन्न करता है। तथा जो जल विष्ठा, मूत्र, तृण, काई और विषसहित हो, गरम हो, घन हो, फेनीलहो, दांतोंको पकडता हो, अकालमें वर्षा हो, दुर्गंधियुक्तहो, शिवारयुक्तहो, अनेक प्रकारके जीवोंसे मिलाहुवा हो, अधिकतर भारी हो, पत्र और कीचडसे मैलाहो और जिसपर चन्द्रमा और सूर्यकी किरणें नहीं पडतीं हों वह जलभी रोगोदक जानना, यह जलभी नहीं पीना चाहिये। यह सर्वकालमें दोषजनक है तथा गुल्म, प्लीहा, बवासीर, पाण्डु और जलोदर रोगको उत्पन्न करता है।

अभ्रदकम्।

दिवासूर्यांशुसन्तप्तंरात्रौचन्द्रांशुशीतलम्।

अंशूदकमितिख्यातंसर्वरोगनिवारकम् ॥
कफमेदोनिलघ्नंचदीपनंवस्तिशोधनम् ।
श्वासकासहरंनीरंचक्षुष्यंनेत्ररोगहृत् ॥

अर्थ-जो जल-दिनमें सूर्य्यकी किरणोंसे तप्त होताहै और रात्रिमें चन्द्रमाकी किरणोंसे शीतल होता है वह जल अंशूदक नामसे विख्यात है। अंशूदक सर्वरोगनिवारक है, कफ, मेद और वातविनाशक है। दीपन, वस्तिशोधक श्वास और खाँसीको हरनेवाला, नेत्रोंको हितकारी और नेत्ररोगनाशक है।

आरोग्योदकम्।

पादशेषन्तुक्वथितंतच्चारोग्यजलंविदुः। कासश्वासहरंपथ्यं मारुतंचापकर्षति॥सद्योज्वरंहरत्याशुसमेदःकफनाशनम्। प्रतिश्यायंपाचयतिशूलगुल्मार्शोनाशनम्। दीपनश्चहुताशस्यपाण्डुशोथोदरापहम्। अजीर्णश्चजरत्याशुपीतमुष्णोदकंनिशि ॥ (हारीतसंहिता)

अर्थ-जो जल-अग्निपर औटानेसे चौथाई भाग बाकी रहजाय वह आरोग्योदक है। आरोग्योदक-खांसी और श्वासको हरनेवाला, पथ्य, वातविनाशक, नवीन ज्वरको शीघ्र हरनेवाला तथा मेद, कफ, प्रतिश्याय, शूल, गुल्म और बवासीरको दूर करै है। अग्निप्रदीपक और पाण्डुरोग, सूजन, उदररोग तथा रात्रिमें पियाहुवा गरमजल अजीर्णको दूर करै है।

जलग्रहणकालः।

भौमानामम्भसांप्रायोग्रहणंप्रातरिष्यते।
शीतत्वंनिर्मलत्वंचयतस्तेषांमतोगुणः ॥

अर्थ-भूमिसम्बन्धी जल प्रातःकालही ग्रहण करना चाहिये, कारण यह है कि जलमें मुख्य गुण शीतलता और निर्मलता है, सो यह दोनों गुण प्रातःकालही होते हैं।

शीतलजल गुणाः।

शीताम्बुमदमूर्च्छाघ्नंछर्दिपित्तज्वरापहम्।
श्रमक्लमतृषादाहमदात्ययविषापहम् ॥

अर्थ--शीतजल-मद, मूर्च्छा, वमन, पित्तज्वर, श्रम, भ्रम, तृषा, दाह, मदात्यय और विषका नाशकरैहै ।

उष्णोदकलक्षणंगुणाश्च ।

काथ्यमानन्तुयत्तोयंनिष्फेनंनिर्मलीकृतम् । भवत्यर्द्धावशिष्टन्तुतदुष्णोदकमुच्यते ॥ उष्णोदकंसदापथ्यंकासज्वरविबन्धनुत् ॥ कफवातामदोषघ्नंदीपनंबस्तिशोधनम् ॥ तत्पादहीनंवातघ्नमर्द्धहीनन्तुपित्तजित् । कफघ्नंपादशेषन्तुपानीयंलघुदीपनम् ॥ (राज०)

अर्थ-काथ्यमानजलको अग्नि देते २ जब वह निष्फेन और निर्मल होकर अर्द्धशेष रहजाय तब उस जलको उष्ण जल कहते हैं । उष्ण जल सदैव पथ्य, तथा कास, ज्वर, विबन्ध, कफ, वात और आमदोषनाशक है, दीपन और वस्तिशोधक है । उष्ण जलका जब जलते २ एकपाद कम होजावे तब वह जल वातविनाशक होजाता है और जब जलते २ आधा बाकी रहजाय तब वह जल पित्तनाशक होजाता है और जब जलते २ एकही भाग शेष रहजाय तब वह जल कफनाशक, हलका और अग्निप्रदीपक होजाता है ।

अन्यच्च ।

अष्टमेनांशशेषेणचतुर्थेनार्द्धकेनच । अथवाक्वाथनेचैवसिद्धमुष्णोदकंवदेत् ॥ श्लेष्मामवातमेदोघ्नंवस्तिशोधनदीपनम् । कासश्वासज्वरान्हन्तिपीतमुष्णोदकंनिशि ॥

अर्थ-जो जल-औटाते २ आठवां भाग शेष रहगया हो, उसको वा औटाते २ चौथा भाग शेष रहगया हो उसको अथवा औटाते २ आधा रह गया हो उसको तथा केवल औटायेहुवेही जलको उष्णोदक कहते हैं। उष्णजल रात्रिमें पियाहुवा-कफ, आमवात और मेदरोगनाशक है । वस्तिशोधक, दीपन तथा खांसी, श्वास और ज्वरको हरनेवाला है।

ऋतुभेदे उष्णजलभेदः ।

हेमन्तेशिशिरेपादहीनंपादस्थितंमधौ । स्यात्पानीयंशरत्कालेग्रीष्मेचार्द्धावशेषितम् ॥

इच्छन्तिबहुदोषत्वात्प्रावृष्यष्टावशेषितम् ।

अर्थ-उष्ण जल हेमन्त और शिशिर ऋतुमें चतुर्थांशहीन, वसन्तऋतुमें चतुर्थांश शेष, शरत् और ग्रीष्मऋतुमें अर्द्धशेष और वर्षाऋतुमें जल बहुत दोषयुक्त होता है, इसकारण इस ऋतुमें उष्णजलको औटाते २ जब आठवां भाग शेष रहजाय तब व्यवहारमें लाना चाहिये।

अन्यच्च।

त्रिपादशेषंसलिलंग्रीष्मेशरदिशस्यते ।
हिमेऽर्द्धशेषंशिशिरेतथावर्षावसन्तयोः ।

अर्थ-कोई वैद्य ऐसा कहते हैं कि, उष्णजल ग्रीष्म और शरदऋतुमेंतीन भाग शेष रहनेपर और हिमऋतु, शिशिरऋतु वर्षा और वसन्तऋतुमें अर्द्ध-भाग रहनेपर सेवन करना चाहिये।

पर्य्युषितजलगुणाः।

दिवाशृतश्चयत्तोयंरात्रौतद्गुरुतांव्रजेत् । रात्रौशृतंदिवाचापिगुरुत्वमधिगच्छति ॥ रात्रौतप्तश्चशीतश्चनपेयंदिवसेजनैः। दिवातप्तश्चशीतश्चनपेयंनिशिसर्वदा ॥

अर्थ-दिनका औटाया हुआ पानी रात्रिमें भारीपनको प्राप्त हो जाताहै और रात्रिका औटाया जल दिनमें भारीपनको प्राप्त हो जाता है। रात्रिमें औटाकर जो जल शीतल हो जाय वह जल दिनमें नहीं पीना चाहिये और जो जल दिनमें औटाकर शीतल होजाय वह जल रात्रिमें नहींपीना चाहिए।

शृतशीतजलगुणाः।

शृतशीतंत्रिदोषघ्नंयदन्तर्बाष्पशीतलम् ॥

अर्थ-जो जल औटाकर अपने आप ढके हुए वासनमें शीतल हुआ हो वह जल त्रिदोषनाशक है।

अन्यच्च।

शृतशीतंनचस्निग्धंनरूक्षंचतदेवहि ।
नचश्लेष्मकरंतद्धिनचवायुंप्रकोपयेत् ॥

अर्थ-शृतशीत अर्थात् जो औटाकर ठंढा होगयाहो वह जल स्निग्ध नहीं है, न रूखाहै, न कफकारक और न वायुको कुपित करे है।

अर्थ—अजीर्ण अवस्थामें जल औषधीके समान है अर्थात् औषधीके तुल्य गुण करे है। जीर्ण अर्थात् भोजनके पचजानेमें जल बलको देनेवाला है। भोजनमें जल अमृतके समान गुण करे है और रात्रिमें जल विषके दोषजनक है।

अन्यच्च।

पिबेद्घटसहस्राणियावन्नास्तमितोरविः।
अस्तंगतेदिवानाथेबिन्दुरेकोघटायते॥

अर्थ-जबतक सूर्य्य अस्त नहीं होय तबतक चाहे हजारों घडे जल पिये किन्तु जब सूर्य्य अस्त होजाय तब एक बिन्दु भी जल नहीं पीना चाहिये अर्थात् एक बिन्दु जल भी घटके समान हो जाता है।

ग्रीष्मेशरदिपातव्यंस्वेच्छयासलिलंनरैः।
अन्यदास्वल्पमेवैतद्वातश्लेष्मभयात्पिबेत्॥

अर्थ-ग्रीष्म और शरद्ऋतुमें जल स्वेच्छया अर्थात् जितनी अपनी इच्छा हो उतनाही पीना चाहिये और शेष ऋतुओंमें वात कफके भयसे अल्प जल पीना चाहिये।

आदौजलंवह्निविनाशकारिपश्चात्तदंतेकफबृंहणंच।
मध्येतुपीतंसमताग्निसुखंचतस्याभियोगोऽभिमतःसकृच्च॥

अर्थ-भोजनकी प्रथम अवस्थामें जल पीनेसे मंदाग्नि होती है, भोजनके अंतमें जल पीनेसे कफ बढता है और भोजनके मध्यमें जल पीनेसे जठराग्निप्रबल होती है।

भुक्तान्तःपरतःशस्तंपीतंवारिगुणात्मकम्। अध्वश्रान्तेक्षुधाक्रान्तेशोषक्रोधातुरेषु च॥ विषमासनोपविष्टेचपीतंवारि रुजाकरम्। तस्मात्प्रसन्नमनासिपानीयंमन्दमाचरेत्॥ आदौपीत्वादहत्यग्निंमध्येपीत्वारसायनम्। तदन्तेचजलंपीत्वातज्जलंदुर्जरंभवेत्॥ भोजनादौजलंपीत्वाचाग्निसादःकृशाङ्गता। अन्तेकरोतिस्थूलत्वमूर्ध्वमामाशयात्कफम्॥ (हा. सं.)

अर्थ-भोजनके मध्यमें पीया हुवा पानी गुणकारक है। मार्गसे थकाहुवा और भूखसे व्याकुल हुवा तथा शोक और क्रोधसे पीडित हुवा और विषम आसनमें बैठा हुवा ऐसा मनुष्य पानीको पीवे तो रोगकी उत्पत्ति होती है। इस कारण प्रसन्न मनमें अल्प पानी पीवे। भोजनकी आदिमें पियाहुवा पानी अग्निको करता है, भोजनके मध्यमें पियाहुवा पनी रसायन है और भोजनके अन्तमें पियाहुवा पानी दुर्जर होजाता है। भोजनकी आदिमें जल पीनेसे मंदाग्नि और शरीरमें कृशता होतीहै और भोजनके अन्तमें पानी पीनेसे-स्थूलता और आमाशयके ऊपर कफ उत्पन्न होता है।

पानीयंपानीयंशरदिवसन्तेचपानीयम्।
नादेयंनादेयंशरदिवसन्तेचनादेयम् ॥

अर्थ-शरदू और वसन्त ऋतुमें पानी पीना चाहिये किन्तु नद और नदीका पानी शरदू और वसन्त ऋतुमें नहीं पीना चाहिये। कारण यह है कि, उक्त समयमें जल दूषित होकर दोषोंको दूषित करे है)

जलपानावश्यकता।

पानीयंप्राणिनांप्राणास्तदायत्तंहिजीवनम् । तस्मात्सर्व्वास्ववस्थासुकैश्चिद्वावारिवार्यते ॥ अन्नेनापिविनाजन्तुःप्राणान्धारयतेचिरम् । तोयाभावेपिपासार्त्तःक्षणात्प्राणैर्विमुच्यते॥तृषितोमोहमायातिमोहात्प्राणान्विमुञ्चति । तस्मात्प्राणस्यरक्षार्थंवारिदेयंपिपासवे ॥

अर्थ-जल जीवोंका प्राणस्वरूप है इस कारण जीवन जलके आधीन है, अतएव मनुष्योंको किसी अवस्थामें भी जल त्याग नहीं करना चाहिये। अन्नके विना प्राणी बहुत काल पर्यंत जीते रहते हैं, परन्तु जलके विना तो क्षणभरमेंही प्राणोंको त्यागदेतेहैं। तृषासे पीडित मनुष्यके मोह उत्पन्न होता है और मोहसे प्राणोंका नाश होता है। अतएव प्राणोंकी रक्षाके लिये प्यासे मनुष्यको जल देना चाहिये।

प्रशस्तजलगुणाः।

अगन्धमव्यक्तरसंसुशीतंतर्षनाशनम्
अच्छंलघुचहृद्यंचतोयंगुणवदुच्यते ॥

अन्यच्च ।

स्वच्छंसज्जनचित्तवल्लघुतया नाप्यार्त्तवच्छीतलं पुत्रालिंगनवत्तथैवमधुरं बालस्यसंजल्पवत् । पथ्यंदीपनपाचनं लघुतरं सश्वासकासापहं हिक्काध्मानवज्वरेपि शमनंश्लेष्मापहंश्वासजित् ॥ संशुद्धौवरवस्तिशुद्धिकरणंहृत्पार्श्वशूलापहं । गुल्मारोचकपीनसेनिगदितंशीतोष्णमेतज्जलम् ॥

अर्थ-शृतशीतजल—स्वच्छ, सज्जनके चित्तके समान निर्मल हलका, शीतल पुत्रके आलिङ्गनके समान मधुर, पथ्य, दीपन, पाचक, लघुतर तथा श्वासयुक्त, खांसी, हिचकी, अफारा, नवीन ज्वर, कफ और श्वासकोदूर करे है । शुद्ध, वस्तिशोधक, हृदयरोग, पार्श्वकी पीडा और शूलको दूर करे है । और गुल्म, अरुचि, और पीनसरोगमें हितकारी है ।

अपिच ।

पित्तोत्तरेपित्तरोगेपित्तासृक्कफपित्तयोः । मूर्च्छाछर्दिज्वरेदाहेतृष्णातीऽसारपीडिते ।। धातुक्षयेविषार्त्तेचसन्निपाते विशेषतः । शस्तंविबन्धरोगेच श्रृतशीतंजलंसदा ॥

अर्थ--श्रृतशीतजल--कफ, वात और पित्तरोगमें रक्तपित्त और कफ पित्तमें मूर्च्छा, वमन, ज्वर दाह, तृषा, अतिसार, धातुक्षय, विषसे पीडित रोगोंमें, सन्निपात रोगोंमें और विशेष करके बिबन्ध रोगोंमें हितकारी है ।

अपिच ।

द्विपाचितंजलंपीतंविषतुल्यंसदाचरेत् ।

अर्थ- औटाकर शीतल, किये हुए जलको दुबारा गरम नहीं करना क्योंकि गरम जलको दुबारा गरम करके पान करनेसे विषके समान अपकार करता है ।

ऊष्णजलनिषेधः ।

मदात्ययेसदाहेचरक्तपित्तेतथोर्ध्वगे । (हा. सं.)
रक्तमेहेविशेषेणनोष्णंतोयंप्रशस्यते ॥

अर्थ--गरमजल--मदात्यय, दाह, रक्तपित्त, ऊर्ध्वरोग और रक्तप्रमेह रोगमें अहितकारी है ।

शीतलजलनिषेधः ।

पार्श्वशूलेप्रतिश्यायेवातरोगेगलग्रहे । आध्मानेस्तिमितेकोष्ठे सद्यःशुद्धौनवज्वरे ॥ अरुचिग्रहणीगुल्मश्वासकासेषुविद्रधौ । हिक्कायांस्नेहपानेचशीताम्बुपरिवर्ज्जयेत् ॥ (भा. प्र.)

अर्थ—शीतलजल पसपाडकी पीडा, प्रतिश्याय, वातरोग, गलग्रह, आध्मान, बद्धकोष्ठ, जो तत्काल जुल्लाव ले चुकाहो. नवीनज्वर, अरुचि ग्रहणी, गुल्म, श्वास, खांसी, विद्रधि, हिचकीरोग और स्नेहपानमें त्याज्य है ।

अल्पजलपानविषयः ।

अरोचकेप्रतिश्यायेमन्देऽग्नौश्वयथौक्षये । मुखेप्रसेकेजठरेकुष्ठनेत्रामयेज्वरे॥व्रणेचमधुमेहेचपिबेत्पानीयमल्पकम्॥ (भा.प्र.)

अर्थ-अरुचि, प्रतिश्याय, मन्दाग्नि, सूजन, क्षय, मुखप्रसेक, उदररोग, कुष्ठ, नेत्ररोग, ज्वर, व्रण, और मधुमेह रोगवाले मनुष्यको अल्प जल पीना चाहिये ।

गुल्मार्शोग्रहणीक्षयेषुजठरेमंदानलेध्मानके शोफेपाण्डुगलग्रहेव्रणगदेमहेचनेत्रामये । वातारुच्यतिसारकेकफयुतेकुष्ठे प्रतिश्यायके चोष्णंवारिसुशीतलंश्रृतहिमं स्वल्पंप्रदेयंजलम् ॥

अर्थ-गुल्म, अर्श, संग्रहणी, क्षय उदररोग, मन्दाग्नि, आध्मान, सूजन, पाण्डु, गलग्रह, व्रण, प्रमेह, नेत्ररोग, वात, अरुचि, अतिसार, कफ, कुष्ठ और प्रतिश्याय रोगमें उष्ण, शीतल अथवा श्रृतशीत जल अल्प पीना चाहिये ।

जलपानविधिः ।

अत्यम्बुपानान्नविपच्यतेऽन्नमनम्बुपानाच्चसएवदोषः । तस्मान्नरोवह्निविवर्द्धनायमुहुर्मुहुर्वारिपिबेदभूरि ॥

अर्थ—बहुत जल पीनेसे भोजनका परिपाक नहीं होता और बिलकुल जल न पीनेसे भी अन्न नहीं पचता है. इस कारण मनुष्य जठराग्निके बढानेके लिये वारंवार ठहर २ कर अल्प जल पीवै ।

अजीर्णेभेषजंवारि जीर्णेवारिबलप्रदम् ।
भोजनेचामृतंवारिरात्रौवारिविषप्रदम् ॥

अर्थ--दुर्गंधहीन, अव्यक्तरस, शीतल, तृषानाशक, स्वच्छ, हलका और हृदयको हितकारी ऐसा जल उत्तम कहा है।

निन्दितजलम्।

पिच्छिलंक्रामिलंक्लिन्नंपर्णशैवालकर्दमैः। विवर्णविरसंसान्द्रंदुर्गंधंनहितंजलम् ॥ कलुषाच्छन्नमम्भोजपर्णनीलीतृणादिभिः। सुदुर्दर्शमसंस्पृष्टंसौरचान्द्रमसांशुभिः॥ अनार्त्तवंवार्षिकन्तुप्रथमंतच्चभूमिगम्। व्यापन्नंपरिहर्त्तव्यंसर्वदोषप्रकोपनम्॥ तत्कुर्य्यात्स्नानपानाभ्यांतृष्णाध्मानोदरज्वरान्। कासाग्निमान्द्याभिष्यन्दिकण्डूगण्डादिकांस्तथा॥

अर्थ--पिच्छिल, कृमियुक्त पत्ते, काई और कीचसे बिगडाहुवा, बुरेरंगका, बुरेस्वादका गाढा, दुर्गन्धवाला, कलुषतायुक्त पुरैनके, पत्तोंसे, नीलोंसे और तृणोंस ढकाहुवा, बुरीभूमिका जिसका स्पर्श बुराहो, जिसपर सूर्य्य और चन्द्रमाकी किरणें न पडतीं हों, विना समयका, जो वर्षकर प्रथमही भूमिमें भराहो और बिगडाहुवा एसा जल कभीभी काममें नहीं लेना चाहिये। यह जल अहितकारी और सर्वदोषोंको कुपित करेहै। इस जलमें स्नान और पान करनेसे तृषा, आध्मान' उदररोग, ज्वर, खाँसी मंदाग्नि, अभिष्यन्द, कण्डू और गलगण्डादि रोग उत्पन्न होते हैं।

दुष्टजलनिर्दोषीकरणम्।

निन्दितंचापिपानीयंक्वथितंसूर्य्यतापितम्। ताम्रंसुवर्णरजतंपाषाणंसिकतांमृदम्॥ भृशंसन्ताप्यनिर्वाप्यसप्तधासाधितंतथा। कर्पूरजातीपुन्नागपाटलादिसुवासितम्॥ शुचिसांद्रपटस्त्राविक्षुद्रजन्तुविवर्ज्जितम्। स्वच्छंकनकमुक्ताद्यैः शुद्धंस्याद्दोषवर्जितम्॥ पर्णमूलविषग्रन्थिमुक्ताकनकशैवलैः। गोमेदेनचवस्त्रेणकुर्य्यादंबुप्रसाधनम्।

अर्थ-- दुष्टजलके शोधनकी विधि--प्रथम दुष्टजलको खूब औटावे, फिर धूपमें धर देवे, पीछे सुवर्ण, रजत, लोह, पत्थर और वालूको गरम करके सातबार उस जलमें बुझावे फिर उत्तम मिट्टीके कोरे पात्रमें भरकर उसमें

...चमेली, पुन्नाग और पाटलादिके फूलोंसे तथा खस आदि सुगंधित ...ओंसे सुगंधित करे फिर श्वेत निर्मलवस्त्रमें छानलेवे । जिससे कि, उसमें ...जन्तु न रहैं तथा स्वर्ण मुक्तादिसे शुद्ध किया हुवा जल निर्दोष ...ता है । पर्णमूल, कमलकी गांठ, मोती, स्वर्ण, सिवार, गोमेद और ...दिसे जलको शुद्ध करना चाहिये ।

सुवासितजलगुणाः ।

सुवासितंजलंपुष्पैःपूतंशुक्लेनवाससा
नवेमृद्भाजनेन्यस्तंमाङ्गल्यंरुचिकृत्परम् ॥

...र्थ-सुगंधित पुष्पादिकोंसे सुवासित कियाहुआ श्वेतवस्त्रमें छानाहुवा ...र नवीन मृत्तिकापात्रमें रखाहुवा ऐसा जल मंगलजनक और रुचि-...क है ।

पीतजलपाकविधि ।

आमंजलंजीर्य्यतियामयुग्माद्यामैकमात्राच्छृतशीतलंच ।
तदर्द्धमात्रेण शृतंकदुष्णंपयःप्रपाकेविधिरेषउक्तः ॥

...र्थ-कच्चा जल पियाहुवा दो पहरमें पचता है, औटाकर शीतल किया ...एक पहरमें पचता है और गरम जल १॥ डेढ घंटेमें पचता है इसप्रकार ...पाककी विधि कही है ।

इति श्रीशालिग्रामनिघण्टुभूषणे वारिवर्गः समाप्तः ॥ १२ ॥

अथ दुग्धवर्गः ।

दुग्धंक्षीरंपयःस्तन्यंपीयूषंबालजीवनम् ॥

...र्थ-दुग्ध, क्षीर, पय, स्तन्य, पीयूष, बालजीवन (ऊधस्य, अमृत, ...ज, अवदोह, दोहापनय)

सं०	दुग्ध ।	तै०	पालु ।
हिं०	दूध ।	अं०	मिल्क । Milk
बं०	दुध ।	लै०	लॅक्टस । Lactus
म०	दूध ।	फा०	शीरे ।
गु०	दुध ।	अ०	लबनुल ।
क०	हालु ।		

दुग्धगुणाः ।

दुग्धंसुमधुरंस्निग्धंवातपित्तहरंसरम् । सद्यःशुक्रकरंशीतंसात्म्यंसर्व्वशरीरिणाम् ॥ जीवनंबृंहणंबल्यंमेध्यंवाजीकरंपरम् । वयःस्थापनमायुष्यंसन्धिकारिरसायनम् । विरेकवान्तिवस्तीनांतुल्यमोजोविवर्द्धनम् । जीर्णज्वरे मनोरोगेशोषमूर्च्छाभ्रमे च ॥ ग्रहण्यांपाण्डुरोगेचदाहतृड्हृदामये ॥ शूलोदावर्त्तगुल्मेषुवस्तिरोगगुदांकुरे ॥ रक्तपित्तातिसारेचयोनिरोगश्रमक्लमे । गर्भस्रावेचसततंहितंमुनिवरैःस्मृतम् ॥ बालवृद्धक्षतक्षीणाःक्षुद्व्यवायकृशाश्चये । तेभ्यःसदातिशयितंहितमेतदुदाहृतम् ॥ विदाहीन्यन्नपानानियानिभुङ्क्तेहि मानवः । तद्विदाहप्रशान्त्यर्थंभोजनान्तेपयःपिबेत् ॥ (भा. प्र.

अर्थ--दूध- मधुर, स्निग्ध, वातपित्तनाशक; कुछेक दस्तावर, तत्काल वीर्य्यजनक, शीतल, सर्वप्राणियोंकी आत्मा, जीवन, बृंहण, बलकारक, मेध्य, वाजीकरण, अवस्थास्थापक, आयुष्यकारक, संधिकर्त्ता और रसायन है । ओजके बढानेमें विरेचन, वमन और वस्तिको समान गुण करे है, तथा जीर्णज्वर, मनरोग, शोष, मूर्च्छा, भ्रम, संग्रहणी, पाण्डुरोग, दाह, तृषा, हृद्यरोग, शूल, उदावर्त्त, गुल्मरोग, वस्तिरोग, गुदांकुर, रक्तपित्त, अतिसार, योनिरोग, श्रम क्लम, और गर्भस्रावमें निरन्तर हितकारी है । जो बाल, वृद्ध, क्षतक्षीण भूँखे और मैथुन करनेसे क्षीण होगये हैं उनको दूध सदैव अतिशय हितकारी है । मनुष्य जो दाहजनक अन्न और पानोंको सेवन करते हैं उनके दाहको शांतिकरनेके लिये भोजनके अन्तमें दूध अवश्य पीना चाहिये ।

अन्यच्च ।

क्षीरंस्वादुरसंस्निग्धमौजस्यंधातुवर्द्धनम् ।
वातपित्तहरंवृष्यं श्लेष्मलंशीतलंगुरु ॥ (राजवल्लभ)
जीर्णज्वरे कफेक्षीणक्षीरंस्यादमृतोपमम् ।
तदेवतरुणेपीतंविषवद्धन्तिमानवम् ॥ (वै.)

अर्थ-दूध-स्वादुरसान्वित, स्निग्ध, औजस्य, और धातुवर्द्धक, वातनाशक, वृष्य, कफकारक, शीतल और भारी है । दूध-जीर्णज्वर और क्षीण होनेमें अमृतकी समान गुणकारी है और वही दूध तरुणमें पीना विषकी समान मनुष्यको मार डालता है ।

गोमहिषीछागलाविकगजतुरगखरोष्ट्रमानुषस्त्रीणाम् ।
क्षीरादिकगुणदोषौवक्ष्यनुक्रमतोयथायोग्यम् ॥

अर्थ-गाय, भैंस, बकरी, भेड, हथिनी, घोडी, गधी, ऊँटनी, और स्त्रियोंके दूधके गुण और दोषोंको यथाक्रमसे कहताहूं ।

गोदुग्धगुणाः ।

धेनोःपयःस्यान्मधुरंसुशीतंरसायनंस्निग्धमलंगुरुस्यात् ।
श्रमभ्रमघ्नंविषहृत्सरंचकफावहंशुक्रकरंहिवर्ण्यम् ॥

अर्थ गायका दूध मधुर, शीतल, रसायन, स्निग्ध, भारी, श्रमनाशक भ्रमहारक, विषविनाशक, सारक, कफकारक, शुक्रजनक और वर्णको सुन्दर करैहै ।

अन्यच्च ।

गव्यंक्षीरंपथ्यमत्यंतरुच्यंस्वादुस्निग्धंपित्तवातामयघ्नम् ।
कांतिंप्रज्ञांबुद्धिमेधाङ्गपुष्टिंधत्तेस्पष्टंवीर्य्यवृद्धिंविधत्ते ॥

अर्थ-गायका दूध-पथ्य, अत्यन्त रुचिकारी, स्वादिष्ठ, स्निग्ध, पित्त और वातरोगनाशक, कान्तिजनक तथा प्रज्ञा, बुद्धि, मेधा, अङ्गमें पुष्टि और वीर्यको बढावे है ।

अन्यच्च ।

गोक्षीरंजीवनंबल्यंरक्तपित्तानिलापहम् ।
आयुष्यंपुंस्त्वकृत्पथ्यंमेध्यंवृष्यंरसायनम् ॥

अर्थ-गायका दूध-जीवन, बलकारक, रक्तपित्तनाशक, वातनाशक आयु और पुरुषतावर्द्धक, पथ्य, मेधाजनक, वृष्य और रसायन है ।

अपिच ।

गव्यंदुग्धंविशेषेणमधुरंरसपाकयोः । शीतलंस्तन्यकृत्स्निग्धंवातपित्तास्रनाशनम् ॥ दोषधातुमलस्रोतःकिञ्चित्क्लेदकरंगुरु । जरासमस्तरोगाणांशान्तिकृत्सेविनांसदा ॥ (भा.प्र.)

अर्थ-गायका दूध-विशेष करके रस और पाकमें मधुर, शीतल, स्तनोंमें दूध उत्पन्न करनेवाला, वातनाशक, रक्तपित्तनाशक, दोष, धातु, मल, स्रोत और किञ्चित् क्लेदकारक है, भारी और सदैव सेवन करनेवाले मनुष्योंके जरा तथा सर्वरोगोंको शान्ति करनेवाला है।

वर्णविशेषे गुणविशेषाः।

कृष्णायागोर्भवेद्दुग्धंवातहारिगुणाधिकम्।
पीतायाःहरतेपित्तं तथावातहरंभवेत्॥
श्लेष्मलंगुरुशुक्लायारक्तचित्राचवातहृत्॥

अर्थ-कालीगायका दूध-वातनाशक और अधिक गुणवाला है। पीली गायका दूध-पित्तनाशक और वातविनाशक है। सफेद गायका दूध-कफकारक और भारी है। लाल और चितकबरी गायका दूध-वातनाशक है

विवत्साबालवत्सायाःपयोदोषलमीरितम्।

अर्थ-जिन गायोंका बछडा नहीं है अथवा जिनका छोटा बछडा है उनका दूध दोषकारक है।

बकेनीगोदुग्धगुणाः।

बष्कयिण्यास्त्रिदोषघ्नंतर्पणंबलकृत्पयः।

अर्थ-बाखरी गायका दूध-त्रिदोषनाशक, तृप्तिकारक, और बलवर्द्धक है।

देशविशेषे गुणविशेषाः।

जाङ्गलानूपशैलेषुचरन्तीनांयथोत्तरम्।
पयोगुरुतरंस्नेहोयथाहारंप्रवर्त्तते॥

अर्थ-जो गाय जांगल, अनूप और पर्वतोंमें चरती हैं उनका दूध यथाक्रमसे भारी जानना। अर्थात् जांगल देशकी चरनेवालियोंसे अनूप देशकी गायोंका, और अनूप देशकी चरनेवालियोंसे पर्वतोंमें चरनेवाली गायोंका दूध भारी है और जैसा यह आहार करती हैं वैसेही आहारके अनुसार घृत निकलता है।

आहारविशेषे गुणविशेषाः।

स्वल्पान्नभक्षणाज्जातंक्षीरंगुरुकफप्रदम्।
तत्तुवर्ण्यपरंवृष्यंसुस्थानांगुणदायकम्॥
पलालतृणकार्पासबीजजातंगुणैर्हितम्। (भा० प्र०)

अर्थ—जो गाय अल्प अन्न आहार करती हैं उनका दूध—भारी कफका-रक, वर्णको सुंदर करनेवाला, परमवृष्य, और आरोग्य, मनुष्योंको गुण-कारक है। जो प्याल चरीकी कुट्टी, घास और बिनोले खाती हैं उनका दूध अत्यन्त हितकारक है।

अवस्थाविशेषगुणाः।

तरुणीनांगवांदुग्धंमधुरंचरसायनम्। त्रिदोषशमनंचैववृद्धायादुर्बलंमतम्॥ सगर्भायाःसमुद्दिष्टंत्रिमासोर्ध्वंचपित्त-लम्। क्षारंचमधुरंचैवमतंवैशोषकारणम्॥ प्रथमंचप्रसूतायानिःसारंगुणहीनकम्। नूतनप्रसूतगोर्दुग्धंरूक्षंदाहकरं मतम्॥ रक्तदोषस्यजनकंपित्तलंचमतंबुधैः। चिरप्रसूता-दुग्धंतुमधुरंदाहकंपटु॥ (निघण्टुरत्नाकरे.)

अर्थ—तरुणी गायका दूध—मधुर, रसायन और त्रिदोषनाशक है। वृद्ध-गायका दूध—दुर्बल। जिस गायको ग्यावन हुवे तीन महीने बीत गये हों उस गायका दूध—पित्तकारक, खारी, मधुर और शोषकारक है, जो गाय पहिलीवार व्याई है उसका दूध—सारहीन और गुणोंमें हीन है। जो गाय नवीन व्याई है उसका दूध—रूखा, दाहकारक, रक्तको कुपित करनवाला और पित्तकारक है। जिस गायको व्याये हुवे बहुत दिन बीत गये हैं उसका दूध—मधुर, दाहकारक और निमकीन है।

अन्यच्च गोदुग्धानांप्रशस्ताप्रशस्तभेदाः।

शस्तंवत्सैकवर्णायाधवलीकृष्णयोरपि।
इक्ष्वादामाषपर्णाद्याऊर्ध्वश्रृङ्गीचयाभवेत्॥
तासांगवांहितंक्षीरंश्रृतंवाश्रृतमेववा॥

अर्थ—जिन गायोंका रंग बछडेके रंगसे मिलता है उन गायोंका दूध तथा काली और सफेद गायका दूध प्रशंसायोग्य है। जो गाय ईख और मषवन आदिको खाती हैं और जिन गायोंके सींग ऊपरको उठे हैं उन गायोंका दूध पक्व अथवा अपक्व हितकारी है।

गोदुग्धग्रहणकालनिर्णयः।

गव्यंप्रत्युषसिक्षीरंगुरुविष्टम्भिदुर्जरम्।

तस्मादभ्युदितेसूर्य्येयामंयामार्द्धमेववा ॥
समुत्तार्य्यततोग्राह्यंतत्पथ्यंदीपनंलघु ॥ (राजवल्लभ.)

अर्थ—गायका दूध प्रातःकालमें-भारी, विष्टम्भकारी और दुर्जर होता है। अतएव सूर्य्यके उदय होनेपर एक प्रहर अथवा अर्द्ध प्रहर समय व्यतीत हो जानेपर गायका दूध ग्रहण करना चाहिये । इस प्रकार ग्रहण करनेसे वह दूध-पथ्य, दीपन और हलका है ।

माहिषीदुग्धगुणाः ।

स्निग्धंमरुच्छीतकरंचतन्द्रानिद्राकरंवृष्यतमंश्रमघ्नम् ।
बलप्रदंपुष्टिकरंकफस्यसंजीवनंमाहिषमुच्यतेपयः॥ हा० सं०)

अर्थ—भैंसका दूध-स्निग्ध, वातकारक, शीतजनक तन्द्रा और निद्राको करनेवाला, वीर्य्यवर्द्धक, श्रमनाशक, बलकारक, पुष्टिकारक, और कफको उत्पन्न करे है ।

अन्यच्च ।

माहिषंबवलवर्णाग्निनिद्राशुक्रकफप्रदम् । तीक्ष्णाग्निशमनं स्वादुरसेपाकेचपुष्टिदम् ॥ व्यायामश्रान्तदेहस्यश्रमघ्नम- निलापहम्।निष्कामस्यातिवृद्धस्यस्त्रीषुकामप्रदायकम् ॥ बलेनतरुणस्यापिविशेषात्कामदायकम् । (सुषेण)

अर्थ—भैंसका दूध-बलकारक, वर्णको सुंदर करनेवाला, अग्निजनक, निद्राकारक, शुक्रजनक, कफकारी, तीक्ष्ण अग्निकी शांन्ति करनेवाला, रस और पाकमें मधुर पुष्टिकारक, तथा जिनका देह कसरत करनेसे थकगया है उनके श्रमको दूर करे है, श्रमनाशक, वातविनाशक और निष्काम, वृद्ध स्त्री और तरुणादिकको काम उपजानेवाला है ।

अन्यच्च ।

माहिषंमधुरंगव्यात्स्निग्धंशुक्रकरंगुरु ।
निद्राकरमभिष्यन्दिक्षुधाधिक्यकरंहिमम्॥ (भावमिश्र.)

अर्थ—भैंसका दूध-गायके दूधकी अपेक्षा मधुर है, स्निग्ध, शुक्रजनक, भारी, निद्राकारी, अभिष्यन्दि, क्षुधाको अधिक करनेवाला और शीतल है ।

छागीदुग्धगुणाः ।

...कषायंमधुरञ्चशीतंग्राहिलघुपित्तक्षयापहारि ।
...ज्वराणांरुधिरातिसारेहितंपयश्छागलजंत्रिदोषजित् (हा.)

अर्थ--बकरीका दूध- कषेला, मधुर, शीतल, मलरोधक, हलका, तथा ...क्षय, खांसी, ज्वर और रक्तातिसारमें हितकारी तथा त्रिदोषनाशकहै।

छागीनामल्पकायत्वात्कटुतिक्तनिषेवणात् ।
नात्यम्बुपानाद्व्यायामात्सर्वदोषहरंपयः ॥
दीपनंलघुसंग्राहिश्वासकासास्रपित्तनुत् । (सुश्रुत)

अर्थ--बकरियोंकी छोटी देह होती है। चरपरी और कडवी वनस्पतियोंको ...ती हैं। जल बहुत कम पीती हैं और दिनभर जंगलमें विचरती फिरती ...इसीसे बकरियोंका दूध सर्वदोषनाशक, दीपन, हलका, मलरोधक तथा ...स, खांसी और रक्तपित्तको दूर करे है।

आवीदुग्धगुणाः ।

आविकंलवणंस्वादुस्निग्धोष्णंचाश्मरीप्रणुत् ।
अहृद्यंतर्पणंवृष्यंशुक्रपित्तकफप्रदम् ॥
गुरुकासेऽनलोद्भूतेकेचानिलेवरे । (भा० प्र०)

अर्थ--भेडका दूध-निमकीन, स्वादिष्ठ, स्निग्ध, गरम, पथरीको दूर ...नेवाला, हृदयको अहितकारी, तृप्तिकारक, वृष्य तथा शुक्र पित्त ...र कफकारक ह। भारी तथा वातकी खांसी और केवल वातरोगमें ...कारी है।

अन्यच्च ।

औरभ्रमधुरंरूक्षमुष्णंवातकफापहम् ।
नशस्तंरक्तपित्तीनांवातिकानांहितंभवेत् ॥

अर्थ--भेडका दूध--मधुर, रूखा, गरम, वातकफनाशक, रक्तपित्तरोगि...योंको हितकारी नहीं है। केवल वातरोगवालोंको हितकारी है।

मृगीदुग्धगुणाः ।

मृगीनांजांगलस्थानामजाक्षीरगुणंपयः । (भा० प्र०)

अर्थ--जङ्गलदेशकी मृगीका दूध--बकरीके दूधके समान गुणवाला है।

अश्वीदुग्धगुणाः ।

रूक्षोष्णंवडवाक्षीरंबल्यशोषानिलापहम् ।
अम्लंपटुलघुस्वादुसर्वमैकशफंतथा ॥ (भा० प्र०)

अर्थ--घोडीका दूध—रूखा, गरम, बलकारक, शोषनाशक, वातविनाशक, अम्ल, खारी, हलका, स्वादिष्ट है । इसी प्रकार और जितने एकखुरवाले पशु हैं उन सबका दूध घोडीके दूधके समान जानना ।

उष्ट्रीदुग्धगुणाः ।

रूक्षंतथोष्णंलवणंकफस्यनिवारणंवातविकारहारि ।
लघुप्रशस्तंकटुकंकृमीणांशोफार्शसामौष्ट्रपयोऽनुकूलम् । (हा. सं.)

अर्थ-ऊँटनीका दूध--रूखा, गरम, नमकीन, कफनिवारक, वातहारक, हलका, अच्छा, चरपरा तथा कृमि सूजन और बवासीरको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

औष्ट्रंदुग्धंलघुस्वादुलवणं दीपनं तथा ।
कृमिकुष्ठकफानाहशोथोदरहरंसरम् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ--ऊँटनीका दूध--हलका, स्वादिष्ठ, निमकीन दीपन, सारक, तथा कृमि, कुष्ठ, कफ, आनाह, सूजन और उदररोगको दूर करे है ।

हस्तिनीदुग्धगुणाः ।

बृंहणंहस्तिनीदुग्धंचक्षुष्यंस्थिरतारकम् ।
स्निग्धंचमधुरंवृष्यंकषायानुरसंगुरु ॥

अर्थ-हथिनीका दूध—पुष्टिकारक, नेत्रोंको हितकारी, स्थिरताकारक, स्निग्ध, मधुर, वीर्य्यवर्द्धक, किंचित् कषेला और भारी है ।

गर्दभीदुग्धगुणाः ।

गर्दभ्यास्तुस्मृतंदुग्धंमधुरंबलकारकम् । रूक्षंचाम्लंदीपनंचबुद्धिमांद्यकरंमतम् ॥ पथ्यंरुचिप्रदंक्षारंकफवाताविनाशनम् । बालरोगंचकासंचश्वासंचैवाविनाशयेत ॥

अर्थ-गधीका दूध-मधुर, बलकारक, रूखा, अम्ल, दीपन, बुद्धिको मन्द करनेवाला, पथ्य, रुचिकारक, खारी, कफवातविनाशक तथा बालरो[illegible]सी और श्वासको हरनेवाला है ।

स्त्रीदुग्धगुणाः।

सञ्जीवनंबृंहणमेवसात्म्यंसन्तर्पणंनेत्ररुजापहंच। पित्तस्यरक्तस्यचनाशनंचनारीपयःस्नेहनमेवशस्तम्॥

अर्थ-स्त्रीका दूध-संजीवन, पुष्टिकारक, पथ्य, सात्म्य, तृप्तिकारक, नेत्ररोगनाशक, पित्तनाशक, रुधिरके विकारोंको हरनेवाला और स्नेहयुक्त है

अन्यच्च।

...तुमानुषीदुग्धंमधुरंशीतलंलघु। चक्षुष्यंतुवरंपथ्यंदीपनंपाचकंमतम्॥धातुवृद्धिकरंरुच्यंजीवनंस्नेहनंतथा। रक्तपित्तनस्यार्थंनेत्रशूलेक्षिपूरणे॥ उत्तमंनेत्ररोगघ्नमभिघातविनाशकम्।वातंपित्तंनाशयतीत्येवमुक्तंचिकित्सकैः॥ (नि० र०)

अर्थ-स्त्रीका दूध-मधुर, शीतल, हलका, नेत्रोंको हितकारी, कषेला, दीपन, पाचक, धातुवर्द्धक, रुचिकारक, जीवन और स्नेहयुक्त है। रक्तपित्तपर इसका नास देना और नेत्रके फूलेपर इसको आंखमें ... उत्तम है; नेत्ररोगनाशक, अभिघातविनाशक, वात और पित्तका ... करे है।

दुग्धस्य सात्म्यासात्म्यविधिः।

...ल्पाम्बुपानव्यायामात्कटुतिक्ताशनेलघु। पिण्याकाम्लाशिनांतुगुर्वभिष्यंदिशीतलम्॥ क्षीणानांदुर्बलानांश्वतजीर्णज्वरार्दिते। दीप्ताग्निमानतन्द्राणांश्रमशोषविकारिणाम्॥ व्यवायिनामल्परेतःश्वासिनांविषमाग्निनाम्। तथाराजयक्ष्माणांक्षीरपानंविधीयते॥नशस्तंलवणैर्युक्तंक्षीरमम्लेनवापुनः। करोतिकुष्ठंत्वग्दोषंतस्मान्नैवहितंमतम्॥ (हा० सं०)

अर्थ-जो मनुष्य-अल्पजल पीते हैं, कसरत करते हैं तथा चरपरे और ... पदार्थ खाते हैं उनके लिये दूध हलका है। और जो मनुष्य ...की पिट्ठी खाते हैं और अम्लरसका सेवन करते हैं उनके लिये दूध ..., अभिष्यन्दि और शीतल है। क्षीण, दुर्बल, जीर्णज्वरसे पीडित, ...की जठराग्नि दीपन है, तन्द्राहीन, श्रमवाले, शोषयुक्त, मैथुन करनेवाले

क्षीणवीर्य्यवाले, श्वासयुक्त, विषम, अग्नियुक्त और राजयक्ष्मारोगवाले मनुष्योंको दूधका सेवन करना चाहिये। लवणयुक्त अथवा अम्लद्रव्ययुक्त दूधका पीना श्रेष्ठ नहीं है। यह कोढ और त्वचाके रोगोंको उत्पन्न करता है इस कारण यह अहितकारी है।

आमंक्षीरमभिष्यन्दिगुरुश्लेष्मामवर्द्धनम्।
ज्ञेयं सर्वमपथ्यंतद्गव्यंमाहिषवर्ज्जितम् ॥
नारीक्षीरंत्वाममेवहितंनतुश्रृतंहितम् ॥

अर्थ-गाय और भैंसके दूधको छोडकर प्रायः सर्व दूध अभिष्यन्दी, भारी, कफकारी और अपथ्य होते हैं किन्तु स्त्रीका दूध कच्चाही हितकारी होता है और पक्का नहीं होता।

धारोष्णादिदुग्धगुणाः।

धारोष्णंगोपयोबल्यंलघुशीतंसुधासमम्। दीपनंचत्रिदोषघ्नंतद्धाराशिशिरंत्यजेत् ॥ धारोष्णंशस्यतेगव्यंधाराशीतंतुमाहिषम् । श्रृतोष्णमाविकंपथ्यश्रृतशीतमजापयः ॥ श्रृतोष्णंकफवातघ्नंश्रृतशीतंतुपित्तनुत। अर्धोदकंक्षीरशिष्टमामाल्लघुतरंपयः ॥ जलेनरहितंदुग्धमतिपक्वंयथायथा। तथातथागुरुस्निग्धंवृष्यंबलविवर्द्धनम् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-धारोष्ण (दुहनेके समय जो उष्ण होता है) गायका दूध बलकारी, हलका, शीतल, अमृतके समान दीपन और त्रिदोषनाशक है। जो गायके दूधकी धार शीतल होगई हो तो त्यागने योग्य है। गायका दूध-धारोष्ण प्रशंसायोग्य है। भैंसका दूध--धाराशीत उत्तम होता है। भेडका दूध गरमागरम हितजनक है और बकरीका दूध ओटा कर शीतल किया हुवा हितकारी होता है। श्रृतोष्ण अर्थात् औटाकर गरम किये दूध कफवातनाशक और औटाकर शीतल किये हुए दूध पित्तनाशक होते हैं। आधा पानी मिलाकर शेष बचा हुआ दूध कच्चे दूधकी अपेक्षा हलका है। जलसे रहित जैसे २ दूध बहुत औटता है वैसे वैसेही अधिक भारी, स्निग्ध, शुक्रजनक और बलवर्द्धक होता है।

प्रभातादिभवदुग्धगुणाः।

रात्रौचन्द्रगुणाधिक्याद्व्यायामाकरणात्तथा। प्राभातिकंत-

प्रायोप्रादोषाद्गुरुशीतलम् ॥ दिवाकरकरावाताद्व्याया-मानलसेवनात् । प्राभातिकात्तुप्रादोषंलघुवातकफापहम् ॥

अर्थ-रात्रिमें चन्द्रगुणकी अधिकतासे तथा व्यायाम न करनेसे प्रातःकाका दूध प्रायः सायंकालके दूधसे भारी और शीतल होता है। दिनमें धूप लगनेसे तथा व्यायामकी गरमीके सेवन करनेसे सायंकालका दूध प्रातःकालके दूधसे हलका और वात तथा कफको दूर करे है।

समयविशेषे दुग्धसेवनगुणाः ।

वृष्यंबृंहणमग्निदीपनकरं पूर्वाह्नकालेपयो मध्याह्नेतु बलाहंकफहरं पित्तापहंदीपनम् । बालेवृद्धिकरं क्षयेक्षयकरंवृद्धेरेतोवहं रात्रौपथ्यमनेकदोषशमनं क्षीरंसदासेव्यते ॥ वदन्तिपेयंनिशिकेवलंपयोभोज्यंनतेनेहसहौदनादिकम् । भवत्यजीर्णंनशयीतशर्वरींक्षीरस्यपानस्यनशेषमुत्सृजेत् ॥ जीर्णानलेकृशेपुंसिबालेवृद्धेपयःप्रिये। मतंहिततमंदुग्धंसद्यःशुक्रकरंपरम् ॥ भुक्तायेबहुतीव्रचंडविदलायेचाम्लतिक्तारसारूक्षाःक्षारविदाहशोषककरायेचातितापप्रदाः । काषायाःकटुरूक्षदुर्जरतराःसंसेव्यामानाहठात्तत्सर्वंबलकृत्करोतितरसादुग्धंनिशासेवितम् ॥

अर्थ-पूर्वाह्नकाल (प्रथम प्रहर) में पिया हुआ दूध--वीर्य्यबढानेवाला, पुष्टिको करनेवाला और अग्निको दीपन करे है। मध्याह्नकालमें पियाहुवा दूध-बलकारक, कफनाशक, पित्तहारक, अग्निप्रदीपक, बालकोंको बढानेवाला, क्षई रोगका क्षयकरनेवाला और वृद्ध मनुष्योंके वीर्य्यको देनेवाला है, और रात्रिके समयमें दूध पिया हुवा अनेक दोषोंकी शान्ति करता है, पथ्य है इसकारण दूध नित्य सेवन करना चाहिये। कोई वैद्य ऐसा कहते हैं कि, रात्रिमें केवल दूधही पीना चाहिये, उसके साथ चावल आदिक न खाने चाहिये, क्योंकि रात्रिमें भात आदि भोजन करनेसे अजीर्ण होजाताहै और निद्रा नहीं आतीहै, तथा पीत दूधको बाकी न छोडे। जिनकी जठराग्नि मंद है और जिनका शरीर कृशहै बालक, वृद्ध और जितको दूध प्याराहै

उनके लिये दूध अत्यन्त हितकारीहै और तत्काल शुक्रको उत्पन्न करे है। जो मनुष्य अत्यन्त तीव्र तथा अनेक दोषोंको कुपित करनेवाले विदलोंको खातेहैं और जो मनुष्य -अम्ल, कडवे, रूखे, खारी, दाहजनक, शोषकारक, तापजनक, कषेले, चरपरे, रूखे और दुर्जर पदार्थाका सेवन करतेहैं उन सबको रात्रिमें सेवन किया हुवा दूध बलको देनेवाला है।

निन्दितदुग्धम्।

विवर्णंविरसंचाम्लंदुर्गंधंग्रन्थिलंपयः। वर्जयेदम्ललवणयुक्तं कुष्ठादिकृद्यतः॥ क्षीरंमुहूर्तत्रितयोषितंयदत्तप्तमेतद्विकृतिं प्रयाति। षष्ठेतुदोषंकुरुतेतदूर्ध्वंविषोपमंस्याद्दुषितंदशानाम्॥

अर्थ-जो दूध बुरे रंगका, बुरे स्वादवाला, खट्टा दुर्गंधित और गांठदार हो उसको नहीं पीना चाहिये, तथा खटाई और नमकके पदार्थोंके साथभी दूध नहीं सेवन करना चाहिये। तीन मुहूर्त्ततक रक्खा हुवा कच्चा दूध विकारको प्राप्त होजाता है अर्थात् बिगडजाताहै, छैः मुहूर्त्ततक रक्खा हुवा दूध अनेक प्रकारके दोषोंको उत्पन्न करताहै और दश मुहूर्त्ततक रक्खा हुवा दूध विषके समान होजाताहै।

अन्यच्च।

मुहूर्तपंचकादूर्ध्वंक्षीरंभजतिविक्रियाम्। तदेवद्विगुणेकाले विषवर्द्धन्तिमानवम्। अक्वथितंदशघटिकाक्वथितंद्विगुणास्ताश्चपयःपथ्यम्। कोष्णंचस्वरसाढचंयावत्तावत्पयःप्राश्यम्॥ तस्माच्छृतंवाप्यशृतंपयस्तात्कालिकंपिबेत्॥

अर्थ-पांच मुहूर्त्तके पश्चात् विना औटाया हुवा दूध विकारको प्राप्त हो जाताहै और वही दश मुहूर्त्तके बाद विषके समान मनुष्यको मार देता है। और कच्चा दूध दश घडीतक और औटा हुवा दूध बीस घडीतक पीनेयोग्य और पथ्य होताहै ऐसा मतान्तर है। मंदोष्ण और जबतक रसयुक्त होय तबतक दूध पीनेयोग्य होताहै, इसकारण औटा हुवा अथवा विना औटा हुवा तत्कालका दूध पीना चाहिये।

क्षीरसात्म्यासात्म्यम्।

जीर्णज्वरकेफक्षीणेक्षीरंस्यादमृतोपमम्। तदेवतरुणपीतं

विषवद्धन्तिमानवम् ॥ चतुर्थभागंसलिलंनिधाययत्नाद्य-
वर्त्तितमुत्तमंतत् । सर्वामयघ्नबलपुष्टिकारिवीर्यप्रदंक्षीर-
मतिप्रशस्तम्॥येषांनसासात्म्यंक्षीरेणपीतंचाध्मानकारकम्
तेषामर्द्धजलंदत्वानागरंपिप्पलीयुतम् ॥ आवर्त्तयेत्क्षीरशे-
षंतत्पीत्वासुखमाप्नुयात् । गव्यंपूर्वाह्णकालेस्यादपराह्णेतु
माहिषम् ॥ क्षीरंसशर्करंपथ्यंयद्वासात्म्यंचसर्वदा । स्निग्धं
शीतंगुरुक्षीरंसर्वकालंनसेवयेत् ॥ दीप्ताग्निंकुरुतेमंदंमन्दा-
ग्निनष्टमेवच । नित्यंतीव्राग्निनांसेव्यंसुपक्कंमाहिषपयः ॥
पुष्यन्तिधातवःसर्वेबलपुष्टिविमर्द्धनम् । खण्डेनसहितदुग्धं
कफकृत्पवनापहम् ॥ सितासितोपलायुक्तंशुक्रलंत्रिमला-
पहम् । सगुडंमूत्रकृच्छ्रघ्नपित्तश्लेष्मकरंमतम् ॥

अर्थ-दूध--जीर्णज्वर, कफ और निर्बलतामें अमृतके समान है और वही
नये ज्वरमें पिया हुवा विषके समान मनुष्यको मार देवे है। दूधमें
चौथा भाग पानी मिलाकरऔटावेजबवह पानी जल जाय तब सेवन करे, वह
श्रेष्ठ सर्वरोगनाशक,बलवर्द्धक,पुष्टिकारक,वीर्य्यजनक और अत्यन्त प्रशंसा-
योग्य है। जिनको दूध नहीं पचता है और जिनके दूध पीनेसे अफारा हो
जाता है उनको चाहिये कि दूधमें आधा भाग पानी डालकर, एक तोला
सोंठ और एक तोला पीपल डाललेवे फिर औटावे,जब पानी जल जाय तब
उतारकर खूब लोट पोट करे। तदनन्तर सेवन करनेसे पच जाता है और
सुख उत्पन्न होता हैं। गायका दूध पूर्वाह्णकालमें और भैंसका दूध अपराह्ण-
कालमें पीना चाहिये। शर्करायुक्त और गरम कियाहुआ दूध सर्वकालमें श्रेष्ठ
है। स्निग्ध, शीतल, गाढा ऐसा दूध सर्व कालमें सेवन नहीं करना चाहिये।
पकाहुआ भैंसका दूध--दीप्ताग्निको मंद करे है और मन्दाग्निको नष्ट करे है।
इस कारण सदैव तीव्राग्निवाले मनुष्यको पीना चाहिये और मन्दाग्निवाले
मनुष्यको कभी भी नहीं पीना चाहिये, सर्व धातुओंको पुष्टि करे और बल
तथा पुष्टिवर्द्धक है, खांडयुक्त दूध-कफकारक और वातविनाशक है, मिश्रीके
साथ दूध-शुक्रजनक और त्रिदोषनाशक है, गुडके साथ दूध-मूत्रकृच्छ्रनाशक
और पित्तश्लेष्मकारक है।

पर्य्युषितक्षीरगुणाः ।

क्षीरंपर्य्युषितंसर्व्वंगुरुविष्टम्भिदुर्ज्जरम् ।

अर्थ-सर्व प्रकारके बासी दूध-भारी, विष्टम्भकारी और देरमें पचते हैं।

पीयूषकिलाटक्षीरशाकतक्रपिण्डमोरटानां लक्षणानिगुणाश्च ।

क्षीरंतत्कालसूतायाघनंपीयूषमुच्यते । नष्टदुग्धस्यपक्कस्य पिण्डःप्रोक्तःकिलाटकः ॥ अपक्कमेवयन्नष्टंक्षीरशाकहितत्पयः । दध्नातक्रेणवानष्टंदुग्धंबद्धंसुवाससा ॥ द्रवभावेनसहितंतक्रपिण्डःसउच्यते । नष्टदुग्धंभवेन्नीरंमोरटंजय्यटोब्रवीत् ॥ पीयूषंचकिलाटश्चक्षीरशाकंतथैवच । तक्रपिण्ड इमे वृष्याबृंहणाबलवर्द्धनाः ॥ गुरवःश्लेष्मलाहृद्यावातपित्तविनाशनाः । दीप्ताग्नीनांविनिद्राणांविद्रधौचाभिपूजिताः ॥
मुखशोषतृषादाहरक्तपित्तज्वरप्रणुत् ।
लघुर्बलकरोरुच्योमोरटःस्यात्सितायुतः ॥

अर्थ—तुरतकी व्याई हुई गाय भैंसादिकके गाढे दूधको पीयूष (खीस) कहते हैं। जो दूध, अग्निसे जलकर पिण्डी बँध जाय उसको किलाट (मावा, खोया) कहते हैं। विना औटायेही जो कच्चा दूध फट जाय उसको क्षीरशाक (फटा दूध) कहते हैं। जो दूध दही अथवा मठेके पडनेसे नष्ट होगया हो फिर उस दही वा छाछसे फटे हुए दूधको झीने वस्त्रसे बाँधकर उसका पानी निकाल डाले जब उसका पिण्ड होजाय और जलका उसमें कुछ अंश न रहे तब उसको तक्रपिण्ड कहते हैं। फटे दूधके पानीको जय्यटदेवने मोरट कहा है। पीयूष, किलाट, क्षीरशाक और तक्रपिण्ड यह सब वीर्य्यवर्द्धक, पुष्टिकारक, बलवर्द्धक, भारी, कफकारी, हृदयको हितकारी और वातपित्तको दूर करे हैं। जिनकी जठराग्नि दीपन है जिनको निद्रा नहीं आती है और जिनको विद्रधिरोग है उन मनुष्योंको वह परमहितकारी है। चीनीके साथ मोरट (फटे दूध) के पानीको पीनेसे मुखशोष, तृषा, दाह, रक्तपित्त और ज्वर दूर होता है तथा लघु, बलकारक और रुचिकारक है।

क्षीरसन्तानिकागुणाः ।

सन्तानिकागुरुःशीतावृष्यापित्तास्रदाहनुत् ।

तर्पणीबृंहणीस्निग्धाबलासबलशुक्रदा ॥

अर्थ-दूधकी मलाई- भारी, शीतल, वीर्य्यवर्द्धक, रक्तपित्तनाशक, दाहनिवारक, तृप्तिकारक, पुष्टिजनक, स्निग्ध तथा कफ, बल और शुक्रको करे है।

चण्डातक्षीरगुणाः ।

क्षीरंगव्यमथाजंवाकोष्णंदण्डाहतंपिबेत् ।
लघुवृष्यंज्वरहरंवातपित्तकफापहम् ॥

अर्थ-गाय तथा बकरीके दूधको अल्प उष्ण करके रईसे मथकर पीवे वह मथाहुआ दूध हलका, वीर्य्यवर्द्धक, ज्वरनाशक तथा वात पित्त और कफको दूर करे है।

गोदुग्धादिभवफेनगुणाः ।

गोदुग्धप्रभवंकिंवाछागीदुग्धसमुद्भवम् । भवेत्फेनंत्रिदोषघ्नं रोचनंबलवर्द्धनम् ॥ वह्निवृद्धिकरंवृष्यंसद्यस्तृप्तिकरंलघु । अतिसारेऽग्निमान्द्येचज्वरेजीर्णेप्रशस्यते (भा० प्र०)

अर्थ--गायके दूधके झाग अथवा बकरीके दूधके झाग--त्रिदोषनाशक, रुचिकारक, बलवर्द्धक, अग्निवर्द्धक, वीर्य्यवर्द्धक, तत्काल तृप्तिकारक, हलके तथा अतीसार, मन्दाग्नि और जीर्णज्वरमें हितकारी है।

पयसःकेवलस्यापिपदार्थाबलवृष्यदाः ।
हिताःसुगन्धिनःपुष्टिधातुवृद्धिकराग्निदाः ॥ (नि. र.)

अर्थ-पेडे--बरफी, रबडी इत्यादि शुद्ध दूधके बने हुये पदार्थ- बलकारक, वीर्य्यवर्द्धक, हितकारी, सुगन्धिजनक तथा पुष्टि, धातु और अग्निवर्द्धक हैं।

इति श्रीशालिग्रामनिघण्टुभूषणे दुग्धवर्गः समाप्तः ॥ १३ ॥

अथ दधिवर्गः ।



दधिपयस्यंमंगल्यंविरलंचदधिद्रप्सम् ।

अर्थ-दधि, पयस्य, मंगल्य, विरल दधिद्रप्स, (घनेतर, क्षीरज, क्षीरोद्भव, दिघ्य, तक्रजन्म, साम्लक)

संस्कृतभाषामें	दधि ।
हिन्दीभाषामें	दही ।
बंगभाषामें	दइ ।
मराठीभाषामें	दहीं ।
गुजरातीभाषामें	दहि ।
कर्णाटकीभाषामें	मपरु ।
तैलिंगीभाषामें	पेरुगु ।
अंग्रेजीभाषामें	करड्ल्डमिल्क । Curdled Milk.
फारसीभाषामें	दोग ।
अरबीभाषामें	जुगरात ।

साधारणदधिगुणाः ।

पाकेम्लमुष्णंदधिदीपनंचस्निग्धंकषायंसरसंगुरुस्यात् ।
संग्राहिपित्तास्रकफप्रदस्यान्मेदःप्रदेशोफकरंप्रसिद्धम् ॥

अर्थ--दही- पचनेमें खट्टा, गरम, दीपन, स्निग्ध, कषेला, भारी, मलरोधक, रक्तपित्तकारक, कफकारक, मेदजनक और सूजनको उत्पन्न करे है ।

अन्यच्च ।

दध्यम्लंगुरुवातदोशमनंसंग्राहिमूत्रावहं बल्यंशोफकफार्त्यरुच्यशमनंवह्नेश्चशान्तिप्रदम् । कासश्वाससपीनसेषुविषमशीतज्वरेस्याद्धितं रक्तोद्रेककरंकरोतिसततंशुक्रस्यवृद्धिंपराम् ॥ (रा० नि०)

अर्थ-दही--अम्ल, भारी, वातके विकारको दूर करनेवाला, मलरोधक, मूत्रजनक, बलकारक, शोफनाशक, कफहारक, अरुचिनिवारक, अग्निको शान्ति करनेवाला तथा खाँसी, श्वास, पीनस, विषमज्वर और शीतज्वरको दूर करे है और रक्तपित्त तथा शुक्रवर्द्धक है ।

अन्यच्च ।

दध्युष्णंदीपनंस्निग्धंकषायानुरसंगुरु । पाकेम्लंग्राहिपित्तास्रशोफमेदःकफप्रदम् ॥ मूत्रकृच्छ्रेप्रतिश्यायेशीतकेविषमज्वरे । अतिसारेऽरुचौकार्श्येशस्यतेबलवर्द्धनम् ॥ (वि० म०)

अर्थ-दही-गरम, दीपन, स्निग्ध, कुछेक कषेला, भारी, पाकमें अम्ल, मलरोधक तथा रक्तपित्त, सूजन, मेद और कफको करे है। मूत्रकृच्छ्र, प्रतिश्याय, शीत, विषमज्वर, अतिसार, अरुचि, और कृशतामें दही हितकारी है तथा बलवर्द्धक है

अन्यच्च।

दधिस्वाद्वग्निदंहृद्यंस्नेहनंरोचनंगुरु।
पाकेऽम्लमुष्णंवातघ्नंमाङ्गल्यंबृंहणंपरम्॥ (राजवल्लभ)

अर्थ-दही-स्वादिष्ठ, अग्निजनक, हृदयको हितकारी, स्निग्ध, रुचिकारी, भारी, पाकमें अम्ल, गरम, वातनाशक, मंगलकारक और पुष्टिकारक है।

दधिभेदाः।

आदौमंदंततःस्वादुस्वाद्वम्लंचततःपरम्।
अम्लंचतुर्थमत्यम्लंपंचमंदधिपञ्चधा॥

अर्थ-प्रथम मन्द, फिर मधुर, फिर मधुरखट्टा, उसके उपरांत खट्टा और फिर अत्यन्त खट्टा ऐसे दही पांचप्रकारका होता है।

मन्दादीनां लक्षणानि गुणाश्च।

मन्दंदुग्धवदव्यक्तंरसकिञ्चिद्घनंभवेत्। मन्दंस्यात्सृष्टविण्मूत्रंदोषत्रविदाहकृत्॥ यत्सम्यग्घनतांयातंव्यक्तंस्वादुरसंभवेत्। अव्यक्ताम्लरसंतत्तुस्वादुविज्ञैरुदाहृतम्॥ स्वादुस्यादत्यभिष्यन्दिवृष्यंमेदकफावहम्॥ वातघ्नंमधुरंपाकेरक्तपित्तप्रसादनम्॥ स्वाद्वम्लंसान्द्रमधुरंकषायानुरसंभवेत्। स्वाद्वम्लस्यगुणाज्ञेयाःसामान्यदधिवज्जनैः॥ यत्तिरोहितमाधुर्य्यंव्यक्ताम्लत्वंतदम्लकम्। अम्लन्तुदीपनंपथ्यंरक्तश्लेष्मविवर्द्धनम्॥ तदत्यम्लंदन्तरोमहर्षकण्ठादिदाहकृत् अत्यम्लंदीपनंरक्तपित्तपुष्टिकरंपरम्॥ (भा० प्र०)

अर्थ-जो दूध कुछेक जमकर गाढा पडगयाहो और जिसमें मधुर अम्लादिक किसी प्रकारका स्वाद न मालूम हो उस दहीको मंद कहते हैं।

मंद दही--मलमूत्रको करनेवाला तथा त्रिदोष और दाहको करे है। जो जमकर गाढा होगया हो और जिसमें स्वादुरस मालूम हो तथा अम्लरस प्रगट न हो उसको स्वादु दही जानना। स्वादु दही अत्यन्त अभिष्यन्दी, वीर्य्यवर्द्धक, मेदजनक, कफकारी, वातनाशक, पचनेमें मधुर और रक्तपित्तको कुपित करेहै। जो दधि अम्ल और मधुर दोनों रसयुक्त हो सान्द्र तथा कुछेक कषेला हो उसको स्वाद्वम्ल दही कहते हैं। स्वाद्वम्ल दहीके गुण सामान्य दहीके समान जानने। जिस दहीकी मधुरता नाश होकर खट्टा होगया हो उस दहीको अम्लदही कहते हैं, अम्लदही-दीपन, रक्तपित्त और कफकारक है। जो दही अत्यन्त खट्टा हो, दांतोंको खट्टे करे, जिसके खानेसे रोमांच होआवे और कण्ठादिमें दाहको उत्पन्न करे उस दहीको अत्यम्लदधि कहते हैं। अत्यम्लदही-दीपन, रुधिरविकार, वात और पित्तको करे है।

मधुरंभक्षयेच्चैवचात्यम्लंवर्जयेत्सदा।
म रंदाधिरोगघ्नमत्यम्लंरोगकारम्॥

अर्थ-मधुर दधि खाना चाहिये और अत्यन्त खट्टा दही नहीं खाना चाहिये। कारण यह है कि, मधुर दही रोगनाशक और अत्यन्त खट्टा दही रोगकारक है।

गव्यदधि गुणाः।

दधिगव्यमतिपवित्रशीतस्निग्धंचदीपनंबलकृत।
मधुरमरोचकहारिग्राहिचवातामयघ्नञ्च॥ (रा०नि०)

अर्थ-गायका दही—अत्यन्त पवित्र, शीतल, स्निग्ध, दीपन, बलकारक, मधुर अरुचिको हरनेवाला, मलरोधक और वातरोगनाशक है।

अन्यच्च।

गव्यंदध्युत्तमंबल्यंपाकेस्वादुरुचिप्रदम्।
पवित्रंदीपनंस्निग्धंपुष्टिकृत्पवनापहम्॥
उक्तंदध्नामशेषाणांमध्येगव्यंगुणाधिकम्। (भावप्रकाश)

अर्थ—गायका दही-उत्तम, बलकारक, पचनेमें स्वादिष्ठ, रुचिकारक, पवित्र, दीपन, स्निग्ध, पुष्टिकारक और वातविनाशक है। सर्व दहियोंमें गायका दही—गुणोंमें सबसे अधिक है।

अरोचकेपीनसकासकृच्छ्रेशीतज्वरेतद्विषमज्वरेच।

दुर्नामरोगेग्रहणीगदेचगव्यंप्रशस्तंदधिसर्वदैव ॥

अर्थ-गायका दही-अरुचि, पीनस, खांसी, मूत्रकृच्छ्र, शीतज्वर, विषमज्वर, बवासीर और संग्रहणीरोगमें हितकारी है ।

माहिषंदधिसुस्निग्धंश्लेष्मलंवातपित्तनुत् ।
स्वादुपाकमभिष्यन्दिवृष्यंगुर्वस्रदूषणम् ॥

अर्थ-भैंसका दही-स्निग्ध, कफकारक, वातपित्तनाशक, स्वादुपाकी, अभिष्यन्दि, वीर्यवर्द्धक, भारी और रुधिरको दूषित करे है ।

अन्यच्च ।

घनंमाहिषमुद्दिष्टंमधुरंरक्तदोषकृत ।
कफशोफहरंस्वस्थंपित्तकृद्वातकोपनम् ॥ (हा०सं०)

अर्थ-भैंसका दही-गाढा, मधुर, रुधिरको दूषित करनेवाला, कफनाशक स्वस्थ, पित्तकारक और वातको कुपित करे है ।

अपिच ।

माहिष्यास्तुदधिप्रोक्तंपित्तप्रसादनम् । वृष्यंस्निग्धंचमधुरं शोधनंकफकारकम् ॥ गुर्वभिष्यंदिबल्यंस्याच्छुक्रलंचप्रकीर्तितम् । पित्तंवातंश्रमंचैवनाशयेदितिकीर्त्तितम् ॥ (नि० र०)

अर्थ-भैंसका दही-रक्तपित्तको कुपित करनेवाला, वीर्य्यवर्द्धक, स्निग्ध, मधुर, शोधन, कफकारक, भारी, अभिष्यंदी, वलकारक, सुक्रजनक तथा पित्त, वात और श्रमको दूर करे है ।

छागदधि गुणाः ।

दध्याजंकफपित्तनाशनकरंपातघ्नमुष्णंतथादुर्नामश्वसनेचकासिनिहितंचाग्नेश्चसंदीपनम् । वृष्यंबृंहणकान्तिदंबलकरंसर्वामयध्वंसनंआमार्शेष्वतिसारकेनिगदितंपथ्यंसदाप्राणिनाम् ॥

अर्थ-बकरीका दही-कफपित्तनाशक, वातविनाशक, गरम, वीर्य्यवर्द्धक पुष्टिकारक, कान्तिकारक, बलवर्द्धक, सर्वरोगनाशक, अग्निप्रदीपक तथा बवासीर, श्वास, खांसी, आम, अर्श और अतिसाररोगको दूर करे है और सदैव मनुष्योंको पथ्य है ।

अन्यच्च ।

आजंदधिभवेचोष्णंक्षयवातविनाशनम् । दुर्नामश्वासकासे-

षुहितमग्निप्रदीपनम् ॥ विपाकेमधुरंवृष्यंरक्तपित्तप्रसादनम् । शस्तंप्राभातिकंप्रोक्तंवातपित्तनिबर्हणम् ॥ (अ०हा०)

अर्थ—बकरीका दही--गरम, क्षय वातनाशक, बवासीर, श्वास और खांसीमें हितकारी, अग्निप्रदीपक, पचनेमें मधुर, वीर्य्यवर्द्धक, रक्तपित्तप्रसादन और प्रातःकालका बकरीका दही- श्रेष्ठ और वात पित्तनिवारक है ।

अन्यच्च ।

दध्याजंकफवातघ्नंलघूष्णंनेत्रदोषाजित् ।
दुर्नामश्वासकासघ्नंरुच्यंदीपनपाचनम् ॥ (रा०नि०)

अर्थ-बकरीका दही—वातकफनाशक, हलका, नेत्रविकारनाशक, बवासीरको हरनेवाला, श्वासनाशक, कासघ्न, रुचिकारक, दीपन और पाचनहै।

आविकदधि गुणाः ।

कोपनंकफवातानांदुर्नाम्नांचाविकंदधि।दीपनीयन्तुचक्षुष्यंपाण्डुकृच्चापिवातुलम्॥रूक्षमुष्णं कषायंस्या।दत्यभिष्यन्दिदोषलम्।रसेपाकेचमधुरंकषायंकुष्ठवर्द्धनम्॥ (अ० हा०

अर्थ—भेडका दही--कफ वात और बवासीरको कुपित करनेवाला, जठराग्निको दीपन करनेवाला, नेत्रोंका हितकारी, पाण्डुरोगको उत्पन्नकरनेवाला, वादी, रूखा, गरम, कषेला, अत्यन्त अभिष्यंदि, दोषजनक, रस, और पाकमें मधुर, कषाय और कुष्ठको वढानेवाला है ।

अन्यच्च ।

आविकंदधिसुस्निग्धं कफपित्तकरंगुरु ।
वातेचरक्तवातेचपथ्यंशोफव्रणापहम् ॥ (रा०नि०)

अर्थ—भेडका दही—स्निग्ध, कफपित्तकारक भारी, वात और रक्तवातमें पथ्य, तथा सूजन और बवासीरको दूर करे है ।

हास्तिनीदधि गुणाः ।

हस्तिनीदधिकषायलघूष्णंपक्तिशूलशमनंरुचिप्रदम् ।
दीप्तिदंखकुबलासगदघ्नंवीर्यवर्द्धनबलप्रदमुक्तम् ॥

अर्थ--हथिनीका दही--कषेला, हलका, गरम, पक्तिशूलनिवारक, रुचिकारक, अग्निप्रदीपक, कफनाशक, वीर्य्यवर्द्धक और बलदायकहै ।

अन्यच्च ।

हस्तिन्या दधि वीर्य्योष्णं कषायं कफवातनुत् ।

अर्थ-हथिनीका दही--उष्णवीर्य्य, कसैला और कफ तथा वातनाशक है ।

अश्वीदधिगुणाः ।

अश्वीदधि स्यान्मधुरं कषायं कफार्तिमूर्च्छामयहारि रूक्षम् ।
वाताल्पदं दीपनकारि नेत्रदोषापहं तत्कथितं पृथिव्याम् ॥

अर्थ-घोडीका दही--मधुर कसैला, कफकी वेदना और मूर्च्छारोगको हरनेवाला, रूखा, अल्पवातकारक, दीपन और नेत्रोंके विकारोंको हरनेवाला है ।

अन्यच्च ।

वाजिजं समधुरं बलवर्णदं दाहमुपयाति गुरुत्वम् ।
दीपनीयमतिदोषलं सदा चाक्षुषं दधि मरुत्प्रकोपि च ॥

अर्थ-घोडीका दही-मधुर, बलकारक, वर्णकारक, पसीनेको लानेवाला, दाहजनक, भारी, अग्निप्रदीप, अत्यन्त दोषकारक, नेत्रोंको हितकारी और वातको कुपित करे है ।

गर्दभीदधिगुणाः ।

गर्दभीदधि रूक्षोष्णं लघु दीपन पाचनम् ।
मधुराम्लरसं रुच्यं वातदोषविनाशनम् ॥ (रा० नि)

अर्थ-गधीका दही--रूखा, गरम, हलका, दीपन, पाचन, मधुर अम्ल, रुचिकारी और वातके दोषोंको दूर करे है ।

उष्ट्रीदधिगुणाः ।

वातार्शःकुष्ठक्रिमिनाशनं च औष्ट्रं विपाके कटु तिक्तकं च ।
सक्षारमम्लं कृमिकोष्ठनाशनं बल्यश्च सन्तर्पणमाशुकारि ॥

अर्थ-ऊंटनीका दही--वादीकी बवासीर, कोढ, कृमि और कोठेके कृमियोंको दूर करे है । पाकमें, कटु, तिक्त, क्षार, अम्ल, बलकारक और शीघ्र तृप्तिकारक है ।

अन्यच्च ।

विपाके कटु सक्षारं गुरु भेद्यौष्ट्रिकं दधि ।
वातमर्शांसि कुष्ठानि कृमीन्हंत्युदरं परम् ॥ (हा० सं०)

अर्थ—ऊंटनीका दही-पचनेमें कटु, खारी, भारी, भेदक तथा वात, अर्श, कुष्ठ, कृमि और उदररोगको हरे है।

मानुषीदधिगुणाः।

स्निग्धंविपाकेमधुरंबल्यंसन्तर्पणंहितम्।
चक्षुष्यंग्राहिदोषघ्नंदधिनार्य्यागुणोत्तमम्॥ (हा० सं०)

अर्थ—स्त्रीका दही--स्निग्ध, पचनेमें मधुर, बलकारक, तृप्तिजनक, पथ्य, नेत्रोंको हितकारी, मलरोधक, वातादिदोषनाशक और अधिक गुणवाला है।

वार्षिकदधिगुणाः।

वार्षिकंपित्तकृद्वातशमनंकफकोपनम्।
गुल्मार्शःकुष्ठरोगेचरक्तपित्तेनशस्यते॥

अर्थ—वर्षाऋतुका दही--पित्तकारक, वातनिवारक, कफको कुपित करनेवाला तथा गुल्म, बवासीर, कुष्ठ और रक्तपित्तरोगमें हितकारी नहीं है।

शारदीयदधिगुणाः।

शारदंदधिगुर्व्वम्लंरक्तपित्तविवर्द्धनम्।
शोफतृष्णाज्वरार्त्तानांकरोतिविषमज्वरम्॥

अर्थ—शरदृऋतुका दही--भारी, खट्टा, रक्तपित्तवर्द्धक, तथा सूजन, तृषा और ज्वरसे पीडित मनुष्योंके विषमज्वरको उत्पन्न करे है।

हैमन्तिकदधिगुणाः।

गुरुस्निग्धंसुमधुरंकफकृद्बलवर्द्धनम्।
वृष्यंमेध्यंचहैमन्तंपुष्टिदंतुष्टिदम्॥

अर्थ—हेमन्तऋतुका दही--भारी, स्निग्ध, मधुर कफकारक, बलवर्द्धक, वीर्य्यजनक, मेधाकारक, पुष्टिदायक और तुष्टिदायक है।

शैशिरदधिगुणाः।

वृष्यंबलकरंपैत्तंश्रमस्यापहरंपरम्।
शैशिरंसघनंचाम्लंपिच्छिलंगुरुचैवच।

अर्थ—शिशिरऋतुका दही- वीर्य्यवर्द्धक, बलकारक, पित्तजनक, श्रमनाशक, गाढा, खट्टा, पिच्छिल और भारी है।

वासन्तिकदधिगुणाः।

वातलंमधुरंस्निग्धंकिञ्चिदम्लंकफात्मकम्।

बलकृद्वीर्य्यप्रोक्तंवसन्तेनप्रशश्यते ।

अर्थ-वसन्तऋतुका दही -बादी, मधु, स्निग्ध, किंचित् खट्टा, कफकारी, ...कारक, वीर्य्यवर्द्धक, वसन्तऋतुमें दही श्रेष्ठ नहीं है।

ग्रैष्मिकदधिगुणाः ।

लघुचाम्लंभवेद्ग्रीष्मेचात्युष्णंरक्तपित्तकृत् ।
शोषभ्रमपिपासाकृद्दधिप्रोक्तंनग्रैष्मिके ॥ (हारीतसं)

अर्थ-ग्रीष्मऋतुका दही -हलका, खट्टा, अत्यन्त गरम, रक्तपित्तकारक ...शोष, भ्रम और प्यासको करनेवाला है इस ऋतुका दही उत्तम नहीं है।

पक्वदुग्धभवदधिगुणाः ।

पक्वदुग्धभवंरुच्यंदधिस्निग्धंगुणोत्तमम् ।
पित्तानिलापहंसर्वधात्वग्निबलवर्द्धनम् ॥

अर्थ-औटाये हुवे दूधका दही -रुचिकारक, स्निग्ध, गुणोंमें श्रेष्ठ, पित्तवा...नाशक तथा सम्पूर्णधातु, अग्नि और बलको बढावे है।

निःसारदधिगुणाः ।

असारंदधिसंग्राहिशीतलंवातलंलघु ।
विष्टम्भिदीपनंरुच्यंग्रहणीरोगनाशनम् ॥

अर्थ-जिस दहीका मक्खन निकाल लिया हो फिर उसको जमादिया हो ...असार, दही--मलरोधक, शीतल, वातकारक, हलका, विष्टम्भकारक, ...न, रुचिकारी, और संग्रहणीरोगको दूर करे है।

गालितदधिगुणाः ।

गालितंदधिसुस्निग्धंवातघ्नंकफकृद्गुरु ।
बलपुष्टिकरंरुच्यंमधुरंनातिपित्तकृत् ॥ (भा. प्र.)

अर्थ-छानाहुआ और निचोडाहुआ दही--स्निग्ध, वातनाशक, कफकारक, ...री, बलकारक, पुष्टिजनक; रुचिकारक, मधुर और अत्यन्त पित्तका... नहीं है।

सितायुक्तदधिगुणाः ।

सितायुक्तंदधिप्रोक्तंपित्तदाहतृषाहरम् ।
रक्तदोषहरंचैवमुनिभिःपरिकीर्त्तितम् ॥

अर्थ—चीनीयुक्त दही—पित्त, दाह, तृषा, और रुधिरके विकारोंको दूर करे है।

गुडयुक्तदधिगुणाः।

गुडयुक्तंदधिप्रोक्तंतर्पणंधातुवर्द्धकम्।
गुरुवातहरंचैवमुनिभिःपरिकीर्त्तितम्। (नि०र०)

अर्थ—गुडमिश्रित दही- तृप्तिकारक, धातुवर्द्धक, भारी और वात विनाशक है।

दधिभक्षणनिषिद्धता।

नर्नक्तंदधिभुञ्जीतनचाप्यघृतशर्करम्।
नामुद्गसूपंनाक्षौद्रंनोष्णमामलकैर्विना॥ (सु० सं०)

अर्थ—रात्रिमें दही नहीं खाना चाहिये तथा घृतरहित दही मिश्री, मूंगकी दाल, मधु और आमलेके विना तथा उष्ण दही नहीं खाना चाहिये

शरद्ग्रीष्मवसन्तेषुप्रायशोदधिगर्हितम्।
हेमन्तेशिशिरेचैववर्षासुदधिशस्यते॥ (सु०स०)

शरद् ग्रीष्म और वसन्तऋतुमें दही प्रायः अपकारी है और हेमन्त शिशिर तथा वर्षाऋतुमें दही हितकारी है।

अक्रमदधिभक्षणदोषाः।

ज्वरासृक्पित्तवीसर्पकुष्ठपाण्डूवामयान्भ्रमान्।
प्राप्नुयात्कामलाश्चापिविधिंहित्वादधिप्रियः॥

अर्थ-विना नियमके दहीको खानेसे-ज्वर, रक्तपित्त, विसर्प, कुष्ठ, पाण्डु, भ्रम और कामलादिक अनेक प्रकारके रोग उत्पन्न होते हैं।

त्रिकटवादियुक्तदधिगुणाः।

दधित्रिकटुकयुक्तंराजिकाचूर्णमिश्रं कफहरमनिलघ्नंवह्नि-
संधुक्षणंच। तुहिनशिशिरकालेसेवितंचातिपथ्यं रचय-
तितनुदार्ढ्यंकान्तिमत्त्वंचनॄणाम्॥ (रा० नि०)

अर्थ--दहीमें त्रिकुटेका चूर्ण, सेंधानोंन और राईका चूर्ण मिलाकर हेमन्त और शिशिर ऋतुमें खानेसे कफको दूर करे, वातका नाश करे, और अग्निको दीपन करे, अत्यन्त पथ्य तथा शरीरको दृढ करे और अङ्गमें कान्तिको उत्पन्न करेहै।

सरस्यमस्तुनश्च लक्षणानि गुणाश्च ।

दध्नस्तूपरियोभागोघनःस्नेहसमन्वितः। सलोकेसरइत्युक्तो दध्नोमण्डस्तुमस्त्विति ॥ सरःस्वादुर्गुरुर्वृष्योवातवह्निप्रणाशनः।साम्लोवस्तितिप्रशमनःपित्तश्लेष्मविवर्द्धनः। मस्तुक्लमहरंबल्यंलघुभक्ताभिलाषकृत् । स्रोतोतिशोधनंह्लादिककृतृष्णानिलापहम् ॥ अवृष्यंप्रीणनंशीघ्रंभिनत्तिमलसञ्चयम् ॥ (भा. प्र.)

अर्थ-दहीके ऊपरके स्नेहयुक्त गाढे भागको लोकमें सर (मलाई) कहते और दहीके जलको मस्तु (तोड) कहते हैं । दहीकी (मलाई) स्वादिष्ट ली, वीर्य्यवर्द्धक, वातविनाशक, जठराग्निको मंद करनेवाली, खट्टी, वस्ति-नाशक, पित्त और कफवर्द्धक है। दहीका-जल क्लमनाशक, बलकारक, न्नमें रुचिको करनेवाला, शरीरके स्रोतोंको शोधनेवाला, आनन्दजनक, नाशक, तृषानिवारक, वातविनाशक, अवृष्य, तृप्तिकरनेवाला और घ्री मलके संचयको भेदनेवाला है ।

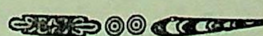
दधिकूर्चिकलक्षणगुणाश्च ।

अर्द्धोदकेपयस्युष्णेदध्यम्लंदधिकूर्चिका ।
वातघ्नीग्राहिणीरूक्षादुर्जरादधिकूर्चिका ॥ (रा. व.)

अर्थ-गरम दूधमें दूधसे आधा भाग पानी मिलाले फिर उसमें खट्टा दही ला लेवे उसको दधिकूर्चिका कहते हैं। दधिकूर्चिका वातनाशक, रूखी, रोधक और कठिनतासे पचनेवाली है ।

इति श्रीशालिग्राम निघण्टुभूषणे दधिवर्गः समाप्तः १४ ॥

अथ तक्रवर्गः ।



तक्रंदण्डाहतंघोलंगोरसःकट्वरंद्रवः ।
मथितंकड्ङ्करंचाम्लंमलिनंभग्नसन्धिकम् ॥

अर्थ-तक्र, दण्डाहत, घोल, गोरस, कट्वर, द्रव, मथित, कङ्कर, अम्ल,

मलिन, भग्नसन्धिक (गोरसज, कालशेय, विलोडित, अरिष्ट, उदश्वित, प्रमथित, अम्बर, कट्वर, वल केवल, छच्छिका)।

संस्कृत भाषामें	तक्र ।
हिंदी भाषामें	छाछ मट्ठा ।
बंग भाषामें	घोल ।
मराठी भाषामें	ताक ।
गुजराती भाषामें	छास, घोलवु ।
कर्णाटकी भाषामें	मज्जिगे ।
तैलिङ्गी भाषामें	चल्ला ।
अंग्रेजी भाषामें	१ बटरमिल्क २ ह्वे । Butter Milk Weay
फारसी भाषामें	मस्त, मठा ।
अरबी भाषामें	हमीज ।

तक्रभेदाः ।

तेषांनामानिभिन्नानिलक्षणानिसमानिच । घोलन्तुमथितंतक्रमुदश्विच्छच्छिकापिच॥ससारंनिर्जलंघोलंमथितंत्वसरोदकम् । तक्रंपादजलंप्रोक्तमुदश्वित्त्वर्द्धवारिकम् ॥ छच्छिकासारहीनास्यात्स्वच्छाप्रचुरवारिका ॥

अर्थ-घोल, मथित, तक्र, उदश्वित् और छच्छिका इन भेदोंसे तक्र पांच प्रकारका है । जो तक्र मलाई सहित मथा गया हो और पानी जिसमें न पडा हो उसको घोल कहते हैं और जिसमेंसे मलाईनिकाल ली हो विनापानी डाले मथा गया हो, उसको मथित कहते हैं । जिसमें तीन भाग दही हो और एक भाग पानी गेरकर मथा गया हो, उसको तक्र (मट्ठा) कहते हैं। और जिसमें आधा दही और आधा पानी पडा हो उसको उदश्वित् कहते हैं और जिसमें अँधाधुन्ध पानी पडा हो उसको सारहीन स्वच्छ छच्छिका (छाछ) कहते हैं ।

एतेषां गुणाः ।

वातपित्तहरंघोलंमितंकफपित्तनुत् । तक्रंग्राहिकषायाम्लंस्वादुपाकंरसंलघु ॥ वीर्य्योष्णंदीपनंवृष्यंप्रीणनंवातनाशनम्।ग्रहण्यादिमतांपथ्यंभवेत्संग्राहिलाघवात् ॥ किंचित्स्वा-

दुविपाकित्वान्नचापित्तप्रकोपनम् । अम्लोष्णंदीपनंवृष्यंप्री-णनंवातनाशनम् ॥ कषायोष्णविकाशित्वाद्रौक्ष्याच्चापिक-फापहम् । नतक्रसेवीव्यथतेकदाचिन्नतक्रदग्धा-प्रभवन्तिरो-गाः ॥ यथासुराणाममृतंसुखायतथानराणांभुवितक्रमाहुः। उदश्वित्कफकृद्बल्यंश्रयघ्नंपरमंमतम् ॥ छच्छिकाशीतलाः। लघ्वीपित्तश्रमतृषाहारी । वातनुत्कफनुत्सातुदीपनीलव-णान्विता ॥ (भा. प्र.)

अर्थ—यहाँ-घोल-वातपित्तनाशक है । मथित-कफपित्तनाशक है । मलरोधक, कसेला, खट्टा, पचनेमें स्वादु, रसमेंभी स्वादु, हलका, वीर्य्य, अग्निप्रदीपक, वीर्य्यवर्द्धक, तृप्ति करनेवाला, वातनशक और ग्रहणी अतीसारादि रोगोंमें पथ्य है । तक्र लका होनेसे ग्राही, स्वादु-पाकी होनेसे पित्तको कुपित नहीं करता । अम्ल, उष्ण, दीपन, वृष्य, तृप्तिकारक, वातनाशक, कषाय, उष्ण, विकाशि, और रूक्ष होनेसे कफका नाश करता है। तक्रका पान करनेवाला मनुष्य कभी रोगी नहीं होता, तक्रसे भस्म हुवे रोग फिर कभी नहीं होते। जैसे स्वर्गलोकमें देवताओंको अमृत वैसेही मृत्युलोकमें प्राणियोंको तक्र है । उदश्वित्-कफकारक, बलवर्द्धक और श्रमनाशक है । छच्छिका (छाछ)—शीतल, हलकी, पित्तनाशक, श्रमहारक, तृषानिवारक और लवणके साथ छाछ वातनाशक, कफहारक और अग्निको दीपन करे है ।

अन्यच्च ।

घोलंमारुतपित्तहारिमथितंवातापहंश्लेष्महत्
पित्तश्लेष्मविनाश्युदश्विदधिकंतक्रंत्रिदोषापहम् ।
मन्दाग्नावरुचौतथैवनितरामन्येपुरोगेष्वपि
श्रेष्ठंतक्रमिदंवदन्तिमुनयस्तेनोत्तमंप्राणिनाम् ॥

अर्थ-घोल- वातपित्तनाशक, मथित--वात और कफनाशक है । उद-श्वित्-पित्तऔर कफनाशक है । और तक्र-त्रिदोषनाशक है, तथा मन्दाग्नि, अरुचि और अन्यरोगोंमें हितकारी है ।

तक्रंत्रिदोषशमनंस्वादुपाकरसंलघु ।

वीर्य्योष्णंमूत्रकृच्छ्रघ्नंकषायमम्लमाग्निदम् ॥

अर्थ—तक्र-त्रिदोषनाशक, स्वादुपाकी, स्वादुरसान्वित, हलका, उष्णवीर्य्य, मूत्रकृच्छ्ररोगनिवारक, कसेला, खट्टा और जठराग्निजनक है।

अम्लेनवातंमधुरेणपित्तंकफंकषायेणनिहन्तिसद्यः।

अर्थ—तक्र-अम्लपनसे वातका, मधुरपनसे पित्तका और कसेलेपनसे कफका नाश करे है। इस प्रकार तक्र त्रिदोषनाशक है।

अन्यच्च।

तक्रंस्वादुकषायमम्लकरसंभक्ष्यंलघूष्णंहितं
गुल्मार्शःपरिणामशूलशमनंछर्दिप्रसेकापहम्।
तृष्णारोचकशोफमेदगराजिच्छ्लेष्मानिलघ्नंपरं
सेव्यंमूत्रगदापहंज्वरहरंस्नेहोत्थपीडापहम् ॥

अर्थ—तक्र-स्वादिष्ठ, कसेला, खट्टा, भक्षनेयोग्य, हलका, गरम, हितजनक तथा गुल्म, बवासीर, परिणामशूल, वमन, प्रसेक, तृषा, अरुचि, सूजन, मेद, विष, कफ, वात, मूत्ररोग, ज्वर और स्नेहसे उत्पन्न हुई पीडाको दूर करे है।

अन्यच्च।

आमातिसारेचविषूचिकायांवातज्वरेपाण्डुषुकामलायाम्।
प्रमेहगुल्मोदरवातशूले नित्यंपिबेत्तक्रमरोचकेच ॥

अर्थ—तक्र-आमातिसार, विषूचिका, वातज्वर पाण्डुरोग, कामला, प्रमेह, गुल्म, उदररोग, वातशूल और अरुचिमें सदैव पीना चाहिये।

तथाचत्रिविधंतक्रंकथ्यतेशृणुपुत्रक। यथायोगेनतत्सम्यक्छस्यतेयेषुरोगिषु ॥ समुद्धृतघृतंतक्रमर्द्धोद्धृतघृतश्चयत् अनुद्धृतघृतश्चान्यदित्येतत्रिविधंमतम् ॥पूर्वंलघुचपथ्यंच-त्रिदोषशमनंपरम्। ततःपरंवृष्यतरंक्रमेणसमुदीरितम् ॥ अनुद्धृतघृतंसान्द्रंगुरुविद्यात्कफात्मकम्। बलप्रदन्तुक्षीणानामामशोफातिसारकृत् ॥ ((हा. सं.)

अर्थ—आत्रेयजी कहनेलगे कि, तक्र तीन प्रकारका है सो मैं कहताहूं। हे पुत्र! सुन, वह तक्र जिन रोगोंमें हितकारी है सो दिखलाताहूं। घृतहीन,

...घृतयुक्त और घृतसंयुक्त ऐसे तक्र तीन प्रकारका है। तहां. घृतहीन ...र्थात् जिस तक्रमेंसे घी निकाललिया हो ऐसा तक्र--हलका, पथ्य और ...दोषनाशक है। अल्पघृतसंयुक्त अर्थात् जिसमेंसे थोडा घी निकाललियाहो ...वा तक्र वीर्य्यवर्द्धक और घृतसंयुक्त अर्थात् जिसमें घी नहीं निकाला हो ...वा तक्र-गाढा, भारी, कफकारक, क्षीणमनुष्योंको बल देनेवाला तथा ...म, सूजन और अतिसारको दूर करे है।

तत्पुनर्मधुरंश्लेष्मप्रकोपनकरंपरम् ।
वातघ्नंपित्तशमनमम्लन्तुपित्तकृत्सदा ॥

अर्थ-मीठातक्र कफकारक, वातनाशक और पित्तको शान्ति करे है। ...र खट्टा तक्र- सदैव पित्तकारक है।

पक्वापक्वतक्रगुणाः ।

तक्रमामंकफंकोष्ठेहन्तिकण्ठेकरोतिच ।
पीनसश्वासकासेषुपक्वमेवप्रयुज्यते ॥ (अ.)

अर्थ-कच्चा तक्र--कोष्ठके कफको दूर करे और कण्ठमें कफको करे है। ...सकारण पीनस, श्वास और खांसीमें तो पकाही तक्र देना चाहिये।

दोषविशेषे व्याधिविशेषे च तक्रविशेषाः ।

वातेऽम्लंशस्यतेतक्रंशुण्ठीसैन्धवसंयुतम् ॥ पित्तेस्वादुसितायुक्तंसव्योषमधिकेकफे ॥ हिंगुजीरयुतंघोलंसैन्धवेनसुसंयुतम् । भवेदतीववातघ्नमर्शोतीसारहृत्परम् ॥ सुरुच्यंपुष्टिदंबल्यंवस्तीशूलविनाशनम् । मूत्रकृच्छ्रेतुसगुडंपाण्डुरोगेसचित्रकम् ॥

अर्थ--वातरोगमें--सोंठ और सैंधवलवणका चूर्ण मिलाकर खट्टातक्र पीना चाहिए। पित्तरोगमें बूरा मिलाकर मीठातक्र पीना। अधिक कफमें त्रिकुटेका चूर्ण डालकर पीना चाहिये। घोल-हींग, जीरा और सैंधवलवण युक्त अत्यन्त वातनाशक है। तथा बवासीर और अतिसारको दूर करे है रुचिकारक पुष्टिजनक, बलकारक और वस्तिशूलको निर्मूल करे है। घोल--मूत्रकृच्छ्ररोगमें गुडके साथ पीना चाहिये और पाण्डुरोगमें चीतेके साथ पीना चाहिये।

तक्रसेवननिमित्तानि ।

शीतकालेऽग्निमान्द्येचतथावातामयेषुच अरुचौस्रोतसां रोधंतक्रंस्यादमृतोपमम् ॥ तत्तुहन्तिगरच्छर्द्दिप्रसेकविषमज्वरान् । पाण्डुमेदोग्रहण्यर्शोमूत्रग्रहभगन्दरान् ॥ मेहं गुल्ममतीसारंशूलप्लीहोदरारुचीः । श्वित्रकोष्ठगतव्याधीन्कुष्ठशोथतृषाकृमीन् ॥

अर्थ--शीतऋतु, मन्दाग्नि, वातरोग, अरुचि और छिद्रोंके रोधमें तक्र अमृतके समान गुणकारी है। यह विष, वमन, प्रसेक, विषमज्वर, पाण्डुरोग मेदरोग, संग्रहणी, बवासीर, सूत्रकृच्छ्र, भगंदर, प्रमेह, गुल्म, अतिसार, शूलरोग, प्लीहा, उदररोग, अरुचि, श्वित्रकुष्ठ, कोष्ठरोग, कोढ, सूजन, तृषा और कृमिरोगक ।

अन्यच्च ।

शीतकालेऽग्निमान्द्येचकफोत्थेष्वामयेषुच ।
मार्गावरोधेकुष्ठेचवायौतक्रंप्रशस्यते ॥

अर्थ--शीतकाल, मन्दाग्नि, कफसे उत्पन्न हुए रोग, मार्ग चलनेकी थकावट, कुष्ठ और वातके रोगोंमें तक्र हितकारी है।

रोगविशेषे तक्रनिषेधः ।

नैवतक्रंक्षतेदद्यान्नोष्णकालेनदुर्बले ।
नमूर्च्छाभ्रमदाहेषुनरोगेरक्तपैत्तिके ॥ (भा. प्र.)

अर्थ--क्षतरोग, उष्णकाल, दुर्बलता, मूर्च्छा, भ्रम, दाह और रक्तपित्त रोगमें तक्र देना नहीं चाहिए।

गव्यादीनां तक्राणां विशिष्टगुणाः

यान्युक्तानिदधीन्यष्टौतद्गुणंतक्रमादिशेत् । (भा. प्र.)

अर्थ--पहिले जो आठ प्रकारके दही कहेहैं उनहीके समान उन दहियोंके तक्रोंके गुण जानने।

गोतक्रगुणाः ।

गव्यंत्रिदोषशमनंपथ्येश्रेष्ठंतदुच्यते ।
दीपनंरुचिकृन्मेध्यमर्शोदरविकारजित् ॥

अर्थ-गायका तक्र अर्थात् मट्ठा-त्रिदोषनिवारक, पथ्योंमें उत्तम, दीपन विकारक, मेधाजनक, तथा बवासीर और उदरके बिकारोंको दूर करे है।

महिषीतक्रगुणाः।

माहिषंकफकृत्किञ्चिद्धनंशोफकरंनृणाम्।
शस्तंप्लीहार्शोग्रहणीदोषेऽतीसारिणामपि॥

अर्थ—भैंसका तक्र—कफकारक, कुछ २ गाढा, मनुष्योंके सूजनको करने-वाला तथा प्लीहा, बवासीर, संग्रहणी और अतिसाररोगमें हितकारी है।

छागीतक्रगुणाः।

छागलंलघुसंस्निग्धत्रिदोषशमनंपरम्।
गुल्मार्शोग्रहणीशूलपाण्ड्वामयविनाशनम्॥ (हा. सं.)

अर्थ—बकरीका तक्र हलका, स्निग्ध, त्रिदोषनिवारक तथा गुल्म, बवासीर ग्रहणी, शूल, और पाण्डुरोगको दूर करेहै।

आविकतक्रगुणाः।

आवितक्रमपथ्यंस्यादम्लंदुर्गंधकारकम्।
दीपनंकटुकंचोष्णंलेखनंलघुपित्तकृत्॥
रक्तदोषकरंचैवकफवातविनाशनम्।

अर्थ-भेडका मट्ठा--अपथ्य, खट्टा. दुर्गंधकारी, दीपन, चरपरा, गरम, लेखन, हलका, पित्तकारक रुधिरके विकारोंको करनेवाला और कफवात नाशक है।

हस्तिनीतक्रगुणाः।

हस्तिन्यास्तुस्मृतंतक्रमग्निमांद्यकरंगुरु।
उष्णंचतुरवरंतेजोवर्द्धकंकफवातहम्॥

अर्थ-हथिनीका तक्र-मन्दाग्निकारक, भारी, गरम, कसेला, तेजवर्द्धक और कफ वातनाशक है।

अश्वीतक्रगुणाः।

अश्वीतक्रंतुतुवरंकिञ्चिद्वातकरंमतम्।
अग्निदीप्तिकरंरूक्षंनेत्र्यंमूर्च्छाकफापहम्॥

अर्थ-घोडीका तक्र-कसेला, किञ्चिद्वातकारक, अग्निप्रदीपक, रूखा, नेत्रोंको हितकारी तथा मूर्च्छा और कफका विनाश करेहै।

उष्ट्रीतक्रगुणाः ।

औष्ट्रंतक्रंतुविरसंगुरुहृद्यंचदोषलम् ।
पीनसश्वासकासेषुशस्तमुक्तंमनीषिभिः ॥

अर्थ-ऊंटनीका तक्र—बेस्वाद, भारी, हृदयको हितकारी, दोषजनक तथा पीनस, श्वास और खांसीमें हितकारी है ।

गर्दभीतक्रगुणाः ।

गर्दभ्यास्तुस्मृतंतक्रंमधुरंदीपनंमतम् ।
रूक्षमम्लकरंचोष्णंवातनाशकरंपरम् ॥

अर्थ-गधीका तक्र-मधुर, दीपन, रूखा, खट्टा, गरम और वातनाशक

स्त्रीतक्रगुणाः ।

स्त्रीतक्रंग्राहकंचाम्लंचक्षुष्यंतर्पणंगुरु ।
पाकेचमधुरंबल्यंत्रिदोषस्यचनाशकम् ॥ (रत्ना०)

अर्थ-स्त्रीका तक्र-मलरोधक, खट्टा, नेत्रोंको हितकारी, तृप्तिकारक, भारी, पाकमें मधुर, बलकारक और त्रिदोषनाशक है ।

इति श्रीशालिग्रामनिघण्टुभूषणे तक्रवर्गः समाप्तः ॥ १५ ॥

अथ नवनीतवर्गः ।



म्रक्षणंसरजंसारंनवनीतंनवोद्धृतम् ॥

अर्थ-म्रक्षण सरज, सार, नवनीत, नवोद्धृत, (मन्थज, हैयङ्गवीन (क), दधिसार, नवनी, कलम्बुट, दधिज, ।)

संस्कृतभाषामें	नवनीत ।
हिन्दीभाषामें	नवनी, नोनी- मक्खन ।
वंगभाषामें	ननी, माखन ।
मराठीभाषामें	लोणी ।
गुजरातीभाषामें	माखण ।
कर्णाटकीभाषामें	बेण्णी ।
तैलिंगीभाषामें	पेन्ना ।

अंग्रेजीभाषामें बटर। Butter
लैटिन्भाषामें बुटिरम्। Butyrum
फारसीभाषामें मसका।
अरबीभाषामें जुबूद।

साधारणनवनीतगुणाः।

शीतंवर्णबलावहं सुमधुरं वृष्यंच संग्राहकं वातघ्नंकफकारकंरुचिकरंसर्वाङ्गशूलापहम्। कासघ्नंश्रमनाशनंसुखकरंकान्तिप्रदंपुष्टिदं चक्षुष्यं नवनीतमुद्धृतनवं गोःसर्वदोषापहम् (रा. नि.)

अर्थ—नवीन (ताजी) नवनीत-शीतल, वर्णको सुंदर करनेवाला, बलकारक, मधुर, वीर्य्यवर्द्धक, मलरोधक, वातनाशक, कफकारक, रुचिकारक, शरीरके सर्व प्रकारके शूलोंको हरनेवाला, खाँसीको दूर करनेवाला, श्रमनाशक, सुखकारक, कान्तिजनक, पुष्टिकारक, नेत्रोंको हितकारी और सर्वदोषोंको दूर करे है।

अन्यच्च।

शीतंबलाढ्यंमधुराम्लवृष्यंश्लेष्मावहंपित्तमरुत्प्रणाशम्।
शोफक्षयक्षीणकृशोतिवृद्धबालेषुपथ्यंनवनीतमुक्तम्॥
(द्रव्यगुणदीपिका)

अर्थ—नवनीत-माखन-शीतल, बलकारक, मधुर, खट्टा, वीर्य्यवर्द्धक, श्लेष्मकारक, पित्तवातनाशक तथा शोफरोगी, क्षयरोगी, क्षीण, अत्यन्त कृश, वृद्ध और बालकोंको हितकारी है।

अपिच।

नवनीतंनवंग्राहिहृद्यंचोलवणदीपकम्। क्षयारुच्यर्दितप्लीहग्रहण्यर्शोविकारनुत॥ चक्षुष्यंशिशिरंस्निग्धंवृष्यंजीवनबृंहणम्। क्षीणेद्रवंहिमंग्राहिरक्तपित्ताक्षिरोगनुत॥ स्मृतिवाग्ग्निशुक्रौजःकफमेदोविवर्द्धनम्। वातपित्तकफोन्मादशोफालक्ष्मीज्वरापहम्॥सर्वदोषापहंशीतंमधुरंरसपाकयोः। हा सं

अर्थ—नवीन नौनी-ग्राही, हृदयको हितकारी, अग्निको दीपन करनेवाला,

क्षयनाशक, अरुचिको हरनेवाला, लकुवा वायुको दूर करनेवाला, प्लीहाका नाश करनेवाला, संग्रहणीको हरनेवाला, बवासीरको नष्ट करनेवाला, नेत्रोंको हितकारी, शीतल, स्निग्ध, वृष्य, प्राणरक्षक, पुष्टिकारक, क्षीणमनुष्यको हितकारी, शीतवीर्य्य, मलरोधक, रक्तपित्तनाशक, नेत्ररोगनिवारक, स्मरणशक्तिको बढानेवाला, वातवर्द्धक, वीर्य्यकारक, अग्निजनक, ओजवर्द्धक, कफकारक मेदजनक तथा वात, पित्त, कफ, उन्माद, सूजन, अलक्ष्मी, ज्वर और सर्वदोषनाशक है तथा पाक और रसमें मधुर है।

गव्यनवनीतगुणाः ।

नवनीतंहितंगव्यंवर्णबलाग्निकृत् ।
संग्राहिवातपित्तासृक्क्षयार्शोऽर्दितकासजित् ।
तद्धितंबालकेवृद्धेविशेषादमृतंशिशोः ॥

अर्थ–गायका माखन–हितकारी, वीर्यवर्द्धक, वर्णकारक, बलकारक, अग्निप्रदीपक, ग्राही, तथा वात, पित्त, रुधिरविकार, क्षय, बवासीर, लकवा और खाँसीको दूर करे है। बालक और वृद्धोंको हितकारी और विशेषकरके यह माखन बालकोंको अमृतके समान गुणकारक है।

महिषीनवनीतगुणाः ।

माहिषंनवनीतन्तुकषायंमधुरंरसे ।
शीतंवृष्यप्रदंबल्यंग्राहिपित्तघ्नतुन्दरम् ॥ (रा. नि.)

अर्थ--भैंसका माखन–कसेला, मधुररसान्वित, शीतल, वीर्य्यवर्द्धक, बलकारक, ग्राही, पित्तनाशक, और तुन्द (थोंद) को देता है।

अन्यच्च ।

नवनीतंमहिष्यास्तुवातश्लेष्मकरंगुरु ।
दाहपित्तश्रमहरंमेदःशुक्रविवर्द्धनम् ॥ (भा. प्र.)

अर्थ--भैंसका नौनी--वातकफकारक, भारी, दाह, पित्त और श्रमनाशक, मेदजनक तथा शुक्रवर्द्धक है।

गव्यंवामाहिषंवापिनवनीतंनवोद्धृतम्
शस्यतेबालवृद्धस्यबलकृद्धातुवर्द्धनम् ॥

अर्थ--गाय अथवा भैंसका मक्खन--नवीनही श्रेष्ठ होता है, बाल और वृद्धोंको हितकारी, बलकारक और धातुवर्द्धक है।

छागीनवनीत गुणाः ।

नवनीतमजायास्तुमधुरंतुवरंलघु चक्षुष्यंदीपनंबल्यंहित-कृत्क्षयकासनुत् ॥ गुल्मंप्रमेहंशूलञ्चकण्डूंनेत्ररुजंज्वरम् । पाण्डुंचश्वित्रकुष्ठंचनाशयेदितिकीर्त्तितम् ॥ (नि. र.)

अर्थ—बकरीका नौनी--मधुर, कसेला, नेत्रोंको हितकारी, दीपन, बलकारक, हितकारक तथा क्षय, खाँसी, गुल्म, प्रमेह, शूल, कण्डु, नेत्ररोग, ज्वर, पाण्डुरोग और श्वित्रकुष्ठको नष्ट करे है ।

आविकनवनीत गुणाः ।

नवनीतंस्मृतंचाव्याःपाकेशीतंसरंलघु । योनिशूलेकफेवाते-शोफेचार्शसिचोदरे ॥ जठराग्नौसदाशस्तंकृमिज्वरकरंपर-म् । कण्डूंवांतिंचारुचिंचकरोतीतिबुधाजगुः ॥ (नि. र.)

अर्थ—भेडका माखन -पाकमें शीतल, कुछेक दस्तावर, हलका तथा योनिशूल, कफ, वात, सूजन, बवासीर, उदररोग और जठराग्निमें श्रेष्ठ है. कृमिकारक, ज्वर जनक तथा कण्डु, वमन और अरुचिको उत्पन्न करे है ।

हस्तिनीनवनीत गुणाः ।

हस्तिन्यानवनीतंतुतुवरंदीपनंलघु ।
तिक्तंमलस्तम्भकरंकृमिपित्तकफापहम् ॥ (नि. र.)

अर्थ—हथिनीका माखन--कसेला. दीपन, हलका, कडवा, मलस्तम्भक तथा कृमि, पित्त और कफनाशक है ।

अश्वीनवनीतगुणाः ।

आश्विन्यानवनीतन्तुतुवरंकटुकंमतम् ।
अचक्षुष्यंस्मृतंचोष्णंकफवातविनाशनम् ॥ (नि. र.)

अर्थ—घोडी माखन- कसेला, चरपरा, नेत्रोंको अहितकारी, गरम, तथा कफ और वातविनाशक है ।

गर्दभनवनीत गुणाः ।

गर्दभ्यानवनीतन्तुबल्यंचतुवरमतम् ।
उष्णंचदीपनंचैवकफंवातंविनाशयेत् ॥
मूत्रदोषंनाशयतीत्येवमाचार्य्यभाषितम् ॥ (नि. र.)

अर्थ—गधीका माखन-बलकारक, कसेला, गरम दीपन तथा कफ, वात और मूत्रदोषनाशक है ।

उष्ट्रीनवनीत गुणाः ।

उष्ट्रीजंनवनीतन्तुपाकेशीतंलघुस्मृतम् ।
अग्निदीप्तिकरंचव्रणघ्नंकृमिनाशनम् ॥ (नि. र.)

अर्थ—ऊँटनीका माखन-पाकमें शीतल, हलका, अग्निप्रदीपक, व्रणनाशक और कृमिनाशक है ।

स्त्रीनवनीत गुणाः ।

स्त्रीजन्यंनवनीतंतुपाकेलघुरुचिप्रदम् ।
चक्षुष्यंदीपनंचैवसर्वरोगान्विषंहरेत् ॥ (नि. र)

अर्थ—स्त्रीका नवनीत-पाकमें लघु, रुचिकारक, नेत्रोंको हितकारी, अग्निप्रदीप, सर्वप्रकारके रोग और विषनाशक है ।

दुग्धजातनवनीत गुणाः ।

दुग्धोत्थंनवनीतन्तुचक्षुष्यंरक्तपित्तनुत ।
वृष्यंबल्यमतिस्निग्धंमधुरंग्राहिशीतलम् ॥ (भा. प्र.)

अर्थ—दूधमेंसे निकाला हुवा नौनी-नेत्रोंकोहित कारी रक्तपित्तनाशक, वीर्य्यवर्द्धक, बलकारक, अत्यन्त स्निग्ध, मधुर, मलरोधक और शीतल हैं

नवीननवनीत गुणाः ।

नवनीतमिदंनवमेवहितंहिमशुक्रबलानलकांतिकरम् ।
ग्रहणात्मकमर्दितपित्तमरुद्गुदजक्षतजक्षयकासहरम् ॥

अर्थ—नवीन अर्थात् ताजा माखन-हितकारी, शीतल, शुक्रजनक, बलकारक, अग्निप्रदीपक, कान्तिकारक तथा संग्रहणी, लकुवा, पित्त, वात, गुदरोग, क्षतरोग, क्षयरोग और खाँसीको दूर करे है ।

प्राचीननवनीत गुणाः ।

सक्षारकटुकाम्लत्वाच्छर्द्यर्शःकुष्ठकारकम् ॥
श्लेष्मलगुरुमेदस्यंनवनीतंचिरंतनम् । (भा. प्र.)

अर्थ—पुराना नौनी-खारी, चरपरा, खट्टा, वमनकारक, बवासीरको उत्पन्न करनेवाला, कुष्ठकारक, कफकारी, भारी और मेदको करे है ।

इति श्रीशालिग्रामनिघण्टुभूषणे नवनीतवर्गः समाप्तः ॥ १६ ॥

अथ घृतवर्गः ।

घृतमाज्यंहविःसर्पिःपुरोडाशनवनीतकम् ।
पवित्रंवह्निभोग्यंचतैजसंचाभिघारकम् ॥

अर्थ—घृत, आज्य, हवि, सर्पि, पुरोडाश्, नवनीतक, पवित्र, वह्निभोग्य ..., अभिघारक (आज, तोद्य, पीथ, अमृत, अडिघार, होम्य, आयु- ...तैजस, भोजनार्ह जीवन ।

संस्कृतभाषामें	घृत ।
हिन्दीभाषामें	घि, घृत, घी ।
बंगभाषामें	घि घृत ।
मराठीभाषामें	तूप ।
गुजरातीभाषामें	घी ।
तैलङ्गीभाषामें	नेई ।
अंग्रेजीभाषामें	क्लेरीफाईड बटर । Clerifted Butter
लैटिन्भाषामें	बुटीरम्, डेप्युरेटम् । Butyrum Deparatum
फारसीभाषामें	रोघनेजर्द ।
अरबीभाषामें	समन्, दुहनुल्बकर ।

घृतगुणाः ।

घृतन्तुसौम्यंशीतवीर्य्यंमृदुमधुरममृतमल्पाभिष्यन्दिस्नेह-नमुदावर्त्तोन्मादापस्मारशूलज्वरानाहवातपित्तशमनम-ग्निदीपनस्मृतिमतिमेधाकान्तिस्वरलावण्यसौकुमार्य्यौज-स्तेजोबलकरमायुष्यंवृष्यंमेध्यंवयःस्थापनंगुरुचक्षुष्यंश्ले-ष्माभिवर्द्धनंपापालक्ष्मीप्रशमनंविषहरंरक्षोघ्नञ्च । (सुश्रुत)

अर्थ—घी-सौम्य, शीतवीर्य्य, कोमल, मधुर, अमृतके समान गुणकारी, ... अभिष्यन्दी, स्निग्ध और उदावर्त्त, उन्माद, अपस्मार, शूल, ज्वर, ...नाह, वात तथा पित्तको दूर करनेवाला, अग्निप्रदीपक तथा स्मरणशक्ति, ...मेधा, कान्ति, स्वर, लावण्यता, सुकुमारता, ओज, तेज और बलको ...करनेवाला है, आयुको बढानेवाला, वीर्य्यको बढानेवाला, मेध्य अवस्थाको

स्थापन करनेवाला, भारी, नेत्रोंको हितकारी, कफकारी, पाप और अलक्ष्मीको शांति करनेवाला, विषविनाशक, और राक्षसबाधाको हरनेवाला है।

अन्यच्च।

घृतंशीतंरसेपाकेमधुरंजीवनंमतम्। स्नेहेषुचोत्तमंवृष्यंकान्तिकृद्धातुवर्द्धकम् ॥ कंठ्यंस्वर्य्यंचेन्द्रियाणांतृप्तिकृद्भेदकंमतम्। व्रण्यंवयःस्थापकंचभेदकंचमृदुस्मृतम् ॥ चक्षुष्यंकफकृत्प्रोक्तमग्निदीप्तिकरंगुरु। बुद्धिमेधास्मृतिप्रज्ञातेजौजोबलपुष्टिकृत् ॥ सौकुमार्यस्यमेदस्यलावण्यस्यचवर्द्धकम्। श्लेष्मकृद्बालवृद्धानांहितकृद्रुचिदंमतम्। स्निग्धंरसायनंचैवक्षतक्षीणेहितंमतम्। विसर्पचाग्निदग्धंचशस्त्रक्षीणेहितंमतम् ॥ अजीर्णोन्मादशूलानि ह्युदावर्तंक्षयंतथा। आनाहंरक्तपित्तंचवातपित्तंव्रणंतथा ॥ रक्तदोषंक्षतंदाहं योनिनेत्रश्रुतीरुजम्। दद्रुशिरोरुजंशोथंत्रिदोषंचैवनाशयेत् ॥ निरामवातज्वरिणांहितंचमेविषोपमम्। (नि. र.)

अर्थ-घी-रसमें शीतल, पाकमें मधुर, प्राणरक्षक, स्नेहोंमें उत्तम, वृष्य, कान्तिकारक, धातुवर्द्धक, कण्ठको हितकारी, स्वरको शुद्धकरनेवाला, इंद्रियोंकी तृप्तिकरनेवाला, भेदक, घावको भरनेवाला, अवस्थास्थापक, मृदु नेत्रोंको हितकारी, कफकारक, अग्निप्रदीपक, भारी तथा बुद्धि, मेधा, स्मरणशक्ति, प्रज्ञा, तेज, ओज, बल और पुष्टिकरनेवाला तथा सुकुमारता, मेद, लावण्यता और श्लेष्मको बढानेवाला है और बाल तथा वृद्धोंको हितकारी, रुचिकारी, स्निग्ध, रसायन, क्षतक्षय, विसर्प, अग्निदग्धव्रण, शस्त्रक्षत और क्षीणतामें हितकारी है। तथा अजीर्ण, उन्माद, शूल, उदावर्त, क्षय, अनाहवात, रक्तपित्त, वातपित्त, व्रण, रुधिरविकार, क्षत, दाह, योनि रोग, नेत्ररोग, कर्णरोग, दाद, शिरोरोग, सूजन, और त्रिदोषको दूर करे है। तथा निराम वातज्वरवाले मनुष्यको हितकारी और आमज्वरमें विषके समान दोषकारी है।

अन्यच्च ।

ओजस्तेजोभिवृद्धिंजनयति सुखदंकान्तिकृत्सम्यगुक्तं पापालक्ष्मीश्रमघ्नं श्वसनकसनहाऽजीर्णजातज्वरघ्नम् । शूलोदावर्त्तरोगग्रहणिमदरुजं यनाशत्याशुपीडां पित्तघ्नंवातनाशिस्वरकरमगदंक्षुद्भ्रमेचैवसेव्यम् ॥ चक्षुष्यंवृष्यमायुःस्मृतिधृतिकरणंराजयक्ष्माविनाशं रूक्षेक्षीणेचपथ्यं वलिपलितहंसामदोषप्रकोपे । भूतोन्मादप्रमत्तेबहुतिमिरकरेकृच्छ्रपस्माररोगेसर्वेषांसर्वदैवप्रथितगुणगणंसाधुपथ्यंघृतंस्यात् ।

[अर्थ]-घी—ओज और तेजको बढानेवाला, सुखको उत्पन्न करनेवाला [कान्ति]जनक, पाप, अलक्ष्मी, श्रम, श्वास, खाँसी, अजीर्णसे उत्पन्न हुआ [ज्व]र, शूल, उदावर्त्तरोग, संग्रहणी और मदरोगका नाश करे है, पीडानाशक [पित्त]निवारक वातविनाशक,स्वरको सुंदर करनेवाला, तथा क्षुधा और श्रम[मे]ं सेवन करना चाहिये । नेत्रोंको हितकारी, वीर्यको बढानेवाला तथा [आय]ु, स्मरणशक्ति और धारणाशक्तिको करनेवाला है । राजयक्ष्मा रोगका [ना]शकरनेवाला, रूक्ष और क्षीणमनुष्यको हितकारी, वलीपलितविनाशक [त]था आमदोष, भूतोन्माद, प्रमत्त, बहुतिमिर, मूत्रकृच्छ्र और अपस्मार रोगमें [सब] मनुष्योंको सर्वकालमें पथ्य है ।

गव्यघृतगुणाः ।

[धी]कान्तिस्मृतिदायकंबलकरंमेधाप्रदंपुष्टिकृद्वातश्लेष्महरंश्रमोपशमनंपित्तापहंहृद्धितम् । वह्नेर्वृद्धिकरंविपाकमधुरंवृष्यं वपुःस्थैर्य्यदं गव्यंहव्यतमंघृतंबहुगुणं भोग्यंभवेद्भाग्यतः ॥ (रा.नि.)

अर्थ-गायका घी बुद्धि, कान्ति और स्मरणशक्तिदायक, बलकारक, मेधा[प्रद]क, पुष्टिकारक, वातश्लेष्महारक, श्रमनिवारक, पित्तनाशक, हृदयको [हित]कारी, अग्निप्रदीपक, पचनेमें मधुर, वीर्य्यवर्द्धक,शरीरको स्थिरतादायक, [हव्य]तम, बहुगुणयुक्त और यह भाग्यसेही प्राप्तहोता है ।

अन्यच्च ।

सर्पिर्गवांचाप्यमृतंविषघ्नंचाक्षुष्यमारोग्यकरंचवृष्यम् ।

रसायनंचेदमतीवमेध्यंस्नेहोत्तमांगांविबुधाःस्तुवन्ति ॥

अथ—गायका घी-अमृतके समान गुणकारी, विषविनाशक, नेत्रोंको आरोग्य करनेवाला, वीर्य्यवर्द्धक, रसायन, मेधाजनक और सब स्नेहोंमें उत्तम है।

माहिषघृतगुणाः।

सर्पिर्माहिषमुत्तमंधृतिकरंसौख्यप्रदंकान्तिकृद्वातश्लेष्मनिबर्हणंबलकरंवर्णप्रदानेक्षमम्। दुर्नामग्रहणीविकारशमनंमन्दानलोद्दीपनं चक्षुष्यंनवगव्यतःपरमिदंहृद्यंमनोहारि च ॥ (रा. नि.)

अर्थ--भैंसका घी--उत्तम, धृतिकारक, सुखकारक कांतिजनक, वातश्लेष्मनिवारक. बलकारक, वर्णप्रदायक, बवासीर और संग्रहणीको हरनेवाला, मन्दाग्निको दीपन करनेवाला, नेत्रोंको हितकारी नवीनगायके घीसे परम हृदयको हितकारी और मनोहारी है।

अन्यच्च।

माहिषंतुघृतंस्वादुपित्तरक्तानिलापहम्।
शीतलंश्लेष्मलंवृष्यंगुरुस्वादुविपच्यते ॥

अर्थ--भैंसका घी—स्वादिष्ट, रक्तपित्तनाशक, वातविनाशक, शीतल, कफकारक, वीर्य्यवर्द्धक, भारी और स्वादुपाकी है।

छागीघृतगुणाः।

आजमाज्यंकरोत्यग्निंचक्षुष्यंबलवर्द्धनम्।
श्वासेकासेक्षयेचापिहितंपाकेभवेत्कटु ॥
कफार्शोराजयक्ष्माणांनाशनंपरिकीर्त्तितम्।

अर्थ—बकरीका घी--अग्निजनक, नेत्रोंको हितकारी, बलवर्द्धक श्वास, खाँसी और क्षय रोगमें हितकारी, पाकमें कटु तथा कफ और राजयक्ष्मारोगको दूर करे है।

मेषीघृत गुणाः।

पाकेलघ्वाविकंसर्पिःसर्वरोगविषापहम्।
वृद्धिंकरोतिचास्थ्नांवैवाश्मरीशर्करापहम् ॥ (हा० सं०)

अर्थ-भेड़का घी--पाकमें लघु, सर्वरोगविनाशक, विषनाशक, हड्डियोंको बढ़ानेवाला, तथा पथरी और शर्कराको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

पाकेलघ्वाविकंसार्पिर्नवंपित्तप्रकोपनम् ।
योनिदोषेकफेवातेशोफेकम्पेचतद्धितम् ॥ (रा. नि.)

अर्थ-भेडका घी--लघुपाकी, पित्तप्रकोपक, तथा योनिदोष, कफ, वात, सूजन और कम्पमें हितकारी है ।

हस्तिनीघृतगुणाः ।

हस्तिन्यास्तुघृतंतिक्तंलघुवैतुवरंमतम् ।
अग्निदीप्तिकरंप्रोक्तंकुष्ठक्रिमिविनाशनम् ॥
मलमूत्रस्तम्भकरंकफपित्तविनाशनम् ।
विषंरक्तविकारंचनाशयेदितिकीर्तितम् ॥ ॥ (नि.र.)

अर्थ-हथिनीका घी-कडवा, हलका कषेला, अग्निप्रदीपक, कुष्ठ और कृमिविनाशक, मलमूत्रस्तम्भक, कफ पित्तनाशक, विष और रुधिरके विकारोंको हरे है।

अश्वीघृतगुणाः ।

वृद्धिंकरोतिदेहाग्नेर्लघुपाकेविषापहम् ।
तर्पणंनेत्ररोगघ्नंदाहनुद्वडवाघृतम् ॥

अर्थ-घोड़ीका घी देह और अग्निको बढानेवाला, लघुपाकी, विषविनाशक, तृप्तिकारक, नेत्ररोगनिवारक और दाहहारक है ।

अन्यच्च ।

अश्वीघृतंतुमधुरंकिञ्चिच्चाग्निप्रदीपकम् ।
तुवरंकटुकंचैवमलमूत्रावरोधकम् ॥
किञ्चिच्चवातलंचोष्णंपाककालेलघुस्मृतम् ।
गुरुचकफमूर्च्छानांनाशनंपरमंमतम् ।

अर्थ-घोडीका घी-मधुर, किञ्चित् अग्निप्रदीपक, कषेला, चरपरा, मलमूत्ररोधक, किञ्चित् वातकारक, गरम, लघुपाकी, भारी तथा कफ और मूर्च्छाको हरनेवाला है ।

गर्दभीघृतगुणाः ।

गर्दभ्यास्तुघृतंबल्यंबुद्धिदंवामकंमतम् ।
अग्निदीप्तिकरंचोष्णवीर्य्यंपाकेलघुस्मृतम् ॥
कषायंग्लानिदंप्रोक्तंमूत्रदोषकफापहम् ॥

अर्थ-गधीका घी-बलकारक, बुद्धिदायक, वमनकारक, अग्निप्रदीपक, उष्णवीर्य्य, लघुपाकी कषेला, ग्लानिको देनेवाला तथा मूत्रविकार और कफनाशक है ।

एकशफपशुघृतगुणाः ।

मधुरंरक्तपित्तघ्नंलघुपाकेचदीपनम् ।
सर्वमैकशफंसर्पिःकषायंकफनाशनम् ॥

अर्थ-एक खुरीवाले सर्वपशुओंका घी-मधुर, रक्तपित्तनाशक, लघुपाकी दीपन, कषेला और कफनाशक है ।

उष्ट्रीघृतगुणाः ।

औष्ट्रंघृतंचाग्निदीप्तिकारकंचपटुस्मृतम् । पाककालेचकटुकंविषार्शःकृमिनाशनम् ॥शोथंवातंकफचैवक्रोष्टुशीर्षंतथोदरम् ।कुष्ठगुल्मोन्मादमोहमूर्च्छापस्मारजूर्तिहम् ॥ (र. नि.)

अर्थ-ऊंटनीका घी-अग्निप्रदीपक, नमकीन, पचनेमें चरपरा, विषविनाशक, बवासीरको हरनेवाला, कृमिनाशक तथा सूजन, वात, कफ, क्रोष्टुशीर्ष, उदररोग, कुष्ठ, गुल्म, उन्माद, मोह, मूर्छा, अपस्मार और ज्वरको दूर करे है ।

स्त्रीघृतगुणाः ।

कफेऽनिलेयोनिदोषेरोगेष्वन्येषुतद्धितम् ।
चक्षुष्यमाहुःस्त्रीणांचसर्पिःस्यादमृतोपमम् ॥ (हा०नि०)

अर्थ-स्त्रीका घी-कफ, वात, योनिदोष और अन्य रोगोंमें हितकारी है, नेत्रोंको हितकारी और अमृतके समान गुणकारी है ।

अन्यच्च ।

स्त्रीघृतंरुचिदंनेत्र्यंपाकेलघ्वग्निदीपनम् ।
वातंपित्तंकफंमेहंविषंचैवविनाशयेत् ॥ (नि. र.)

अर्थ—बीका घी--रुचिकारक, नेत्रोंको हितकारी, लघुपाकी, अग्निप्रदीपक तथा वात पित्त, कफ, प्रमेह और विषविनाशक है ।

उष्ट्रीणांचापिनारीणांगर्दभीनांपयांसिच ।
घृतेकार्य्येषुयोज्यानिघृतंयेषांनविद्यते ॥

अर्थ—जहां ऊंटनी, स्त्री और गधीका घृत न मिलता हो तहां उनका दूध ही प्रयोगमें लेना चाहिये ।

हैयंगवीनघृत गुणाः ।

हैयंगवीनंचक्षुष्यंरुच्यंचाग्निप्रदीपकम् ।
बल्यंवृष्यंधातुकरंविशेषाज्ज्वरनाशकम् ॥

अर्थ—हैयंगवीन--नेत्रोंको हितकारी, रुचिकारी, अग्निप्रदीपक, बलकारक वीर्यवर्द्धक, धातुकारक और विशेष करके ज्वरनाशक है ।

दुग्धोद्भवघृत गुणाः ।

घृतन्दुग्धभवंग्राहिशीतलंनेत्ररोगनुत ।
निहन्तिपित्तदाहास्रमदमूर्छाभ्रमानिलान् ॥

अर्थ—दूधमेंसे निकाला हुवा घी--मलरोधक, शीतल, नेत्ररोगनाशक तथा पित्त, दाह, रुधिरविकार, मद, मूर्च्छा, भ्रम और वायुको दूर करे है ।

शतधौतघृत गुणाः ।

शतधौतंघृतंप्रोक्तंदाहमोहज्वरापहम् ।

अर्थ—सौबार धुला हुवा घी--दाह, मोह और ज्वरनाशक है ।

नूतनघृत गुणाः ।

नूतनंतुघृतंतृप्तिकारकंदुर्बलेहितम् ।
भोजनेस्वादुदंप्रोक्तंनेत्र्यंपाण्डुरुजापहम् ॥

अर्थ—नवीन घी- तृप्तिकारक, दुर्बल मनुष्यको हितकारी, भोजनमें स्वाददायक, नेत्रोंको हितकारी और पाण्डुरोगनाशक है ।

पुराणघृतम् ।

सर्पिःपुराणंतिमिरप्रतिश्यायामकासजित । मूर्छाकुष्ठविषोन्मादग्रहापस्मारनाशनम् ॥ उग्रगन्धंपुराणंस्याद्दशवर्षस्थितंघृतम् । लाक्षारसनिभंशीतंप्रपुराणमतःपरम् ॥ यथायथाभवेज्जीर्णंगुणवत्स्यात्तथापरम् । (रा० व०)

अर्थ—पुराना घी--तिमिररोग, प्रतिश्याय, आम और खाँसीको दूर करैहै तथा मूर्च्छा, कुष्ठ, विष, उन्माद, ग्रहकी पीडा, और मृगीरोगनाशक है। दश वर्षका रखा हुवा और उग्र गन्धवाला तथा लाखके रंगके समान लाल रंगका ऐसेही घीको पुराना घृत कहते हैं। दश वर्षसे अधिक रखे हुवे घीको प्रपुराना घृत कहते हैं। घी जितना २ अधिक पुराना होता है उतना २ ही अधिक गुणवान् जानना।

मतान्तरे।

वर्षादूर्ध्वंभवेदाज्यंपुराणंतत्रिदोषनुत्। मूर्च्छाकुष्ठविषोन्मादापस्मारतिमिरापहम्॥ यथायथाऽखिलंसर्पिःपुराणमधिकंभवेत्।तथातथागुणैःस्वैःस्वैरधिकंतदुदाहृतम्॥ (भा. प्र.)

अर्थ—भावमिश्रने एक वर्ष बीत जानेपर घीको पुराना कहाहै। वह पुराना घी--त्रिदोषनाशक, तथा मूर्च्छा, कुष्ठ, विष, उन्माद, अपस्मार और तिमिररोगनाशक है। घी जितने २ अधिक पुराने होते जाते हैं वैसे २ ही जो जो गुण जिस २ घीमें कहे हैं उन २ गुणोंको अधिक करते हैं।

नूतनघृतविषयाः।

योजयेन्नवमेवाज्यंभोजनेतर्पणेश्रमे।
बलक्षयेपाण्डुरोगेकामलानेत्ररोगयोः॥

अर्थ—भोजन, तर्पण, श्रम, बलक्षय, पाण्डुरोग, कामला और नेत्ररोगमें नवीनही घृत देता चाहिये।

ज्वरेविबन्धेचविषूचिकायामरोचकेवाशमितेतथाग्नौ। पानात्ययेवापिमदात्ययेवाशस्तंनसर्पिर्बहुमन्यतेसुधीः॥ (हा० सं०)

अर्थ—ज्वर, विबन्ध, विषूचिका, अरोचक, मंदाग्नि, पानात्यय और मदात्ययरोगमें बहुल घी नहीं देना चाहिये।

अन्यच्च।

शतवर्षसहस्रंवाःस्थितकौम्भमितिस्मृतम्।
एकादशशताद्यंचमहाघृतमितिस्मृतम्॥

अर्थ—सौ वर्षके पुराने अथवा एक सहस्र वर्षके पुराने घृतको कौम्भ कहते हैं और इसके उपरान्तक घृतको महाघृत कहते हैं।

इति श्रीशालिग्रामनिघण्टुभूषणे घृतवर्गः समाप्तः॥ १७॥

अथ मूत्रवर्गः।



स्रवणंमेहनंमूत्रंप्रस्रावंप्रस्रवंतथा।

अर्थ-स्रवण, मेहन, मूत्र, प्रस्राव, प्रस्रव (गुह्यनिष्यन्द, स्रव)।

संस्कृतभाषामें	मूत्र।
हिन्दीभाषामें	मूत, पेशाब।
बंगभाषामें	मुत्, चोना, प्रस्राव।
मराठीभाषामें	मूत, मूत्र।
गुजरातीभाषामें	मुतर।
कर्णाटकीभाषामें	मूत्र, आकलगोत।
तैलिङ्गीभाषामें	उच्चा।
अंग्रेजीभाषामें	युरीन्
लैटिन् भाषामें	युरिना।

मूत्रंगोजाविमाहिष्यंगजाश्वोष्ट्रखरोद्भवम्।
मूत्रंमानुषजञ्चान्यत्समासेनगुणाञ्छृणु॥

अर्थ-आत्रेयजी कहने लगे कि-गाय, बकरी, भेड, भैंस, हाथी, घोडा, ऊंट और मनुष्य इनके मूत्रके गुण संक्षेपमें कहता हूँ, तूं सुन।

गोमूत्र गुणाः।

तीक्ष्णंचोष्णंक्षारमेवंकषायंगौल्यंमेध्यंश्लेष्मवातंनिहन्ति।
भेद्यारक्तंपित्तशांतिंकरोतिगुल्मानाहोन्माददोषापहंच॥
कण्डूकिलासमलशूलमुखाक्षिरोगान् गुल्मामवातगुदमारुतमूत्ररोधान्। कासंसकुष्ठजठरकृमिकोषजालं गोमूत्रमेकमपिपीतमहोनिहन्ति॥

अर्थ-गोमूत्र-गायका पेशाब-तीक्ष्ण, गरम, खारी, कषेला, गौल्य मेधाजनक, कफवातनाशक, भेदक, रक्तपित्तको शान्त करनेवाला, तथा गुल्म, अनाह और उन्माददोषनाशक है। तथा किलास, मल, शूल मुखरोग, नेत्ररोग, गुल्म, आमवात, गुदारोग, मूत्ररोध, खाँसी कोढ, उदररोग और कृमिके समूहको नाशकरे है।

अन्यच्च ।

गवांमूत्रंकषायंस्यात्कटुतिक्तंलघुस्मृतम् । क्षारंचोष्णंचतीक्ष्णंचपाचनंचाग्निदीपनम् ॥ भेदकंपित्तलंमेध्यंकिञ्चिच्चमधुरंसरम् । लेखनंबुद्धिदंप्रोक्तंकफवातविनाशनम् ॥ कुष्ठगुल्मंचोदरञ्चपाण्डुरोगंकिलासकम् । शूलंचार्शश्चकण्डूंचश्वासंचामंज्वरंतथा । आनाहवातंकासंचमलस्तम्भश्चशोथकम् । मुखाक्षिरोगंत्वग्रोगंकामिन्याश्चातिसारकम् ॥ मूत्ररोधंनाशयतिह्येतच्चैवगुणाधिकम् । (र० नि०)

अर्थ-गायका मूत--कषेला, चरपरा, कडवा,हलका, खारी, गरम, तीक्ष्ण, पाचन, अग्निप्रदीपक, भेदक, पित्तकारक, मेधाजनक, किञ्चित मधुर सारक लेखन, बुद्धिदायक, तथा कफ, वात, कोढ, गुल्म, उदररोग, पाण्डुरोग, किलास, शूल, बवासीर, खुजली, श्वास, आम, ज्वर, आनाहवात, खाँसी, मलस्तम्म, सूजन, मुखरोग, नेत्ररोग, त्वचाके रोग, स्त्रियोंका अतिसार और मूत्ररोधको दूर करे है । यह गुणोंमें अधिक है ।

छागीमूत्रगुणाः ।

आजंमूत्रंतीक्ष्णमुष्णंकषायंयोज्यंपानेशूलगुल्मार्त्तिनाशम् । कासेश्वासेकामलापाण्डुरोगेह्यर्शोरोगेश्रेष्ठमेतद्वदन्ति (हा.सं.)

अर्थ--बकरीका मूत्र- तीक्ष्ण, गरम, कषेला, तथा शूल, गुल्म, खांसी, श्वास, कामला, पाण्डुरोग और बवासी को हरनेवाला है ।

आविकमूत्र गुणाः ।

सक्षारंकटुकंतीक्ष्णंमूत्रंवातघ्नमाविकम् । दुर्नामोदरशूलघ्नंकुष्टमेहविशोधनम् ॥

अर्थ-मेंडका मूत--क्षारयुक्त, चरपरा, तीक्ष्ण, वातनाशक, तथा बवासीर उदररोग, शूल, कुष्ठ और प्रमेहको दूरकरे है ।

माहिषमूत्रगुणाः ।

क्षारंसतिक्तंकटुकंकषायंप्रभेदिवातस्यशमंकरोति । पित्तप्रकोपंकुरुतेसदाचकुष्ठार्शपाण्डूदरशूलनाशनम् ॥

अर्थ-भैंसका मूत--खारी, कडवा, चरपरा, कषेला, भेदक, वातको

...तिकरनेवाला, पित्तको सदैव कुपित करनेवाला, तथा कुष्ठ, बवासीर, ...डुरोग, उदररोग और शूलनाशक है ।

गजमूत्रगुणाः ।

सतिक्तंलवणंभेदिवातघ्नंकफकोपनम् ।
क्षारमण्डलकुष्ठानांनाशनंगजमूत्रकम् ॥

अर्थ-हाथीका मूत-कडवा, नमकीन, वातनाशक, कफको कुपितकरने-...ला, खारी और मण्डलकुष्ठको नष्ट करे है ।

अश्वीमूत्रगुणाः ।

छर्दिकासकफहरंकृमिकुष्ठविनाशनम् ।
दीपनंकटुतीक्ष्णोष्णंवातश्लेष्मविकारनुत ॥ (हा० सं०)

अर्थ—घोडीका मूत-वमन, खाँसी, कफ, कृमि, कोढ, वात और कफना-...क है, दीपन, चरपरा, तीक्ष्ण और गरम है ॥

गर्दभीमूत्रगुणाः ।

खरमूत्रंकटूष्णंचक्षारंतीक्ष्णंकफापहम् ।
महावातापहंभूतकम्पोन्मादहरंपरम् ॥ (रा० नि०)

अर्थ-गधीकामूत्र -चरपरा, गरम, खारा, तीक्ष्ण, कफनाशक तथा महा ...त, भूत, कम्प और उन्मादको दूर करे है ।

औष्ट्रमूत्रगुणाः ।

औष्ट्रंकफहरंरूक्षंकृमिदद्रुविनाशनम् ।
श्रेष्ठंकुष्ठोदरोन्मादशोषार्शःकृमिवातनुत् ॥

अर्थ--ऊंटनीका मूत-कफनाशक, रूखा, कृमि और दद्रुनिबारक है, श्रेष्ठ ...। कुष्ठ, उन्माद, शोष, बवासीर, कृमि और वातनाशक है ।

मानुषमूत्रगुणाः ।

मानुषंक्षारकटुकंमधुरंलघुचोच्यते । चक्षूरोगहरंबल्यंदीप-नंकफनाशनम् ॥ असूतायाघनंमूत्रंप्रसूतायाद्रवंलघु । न-किंगुणविशेषःस्यात्समतापाकवीर्ययोः ॥

अर्थ-स्त्रीका मूत -खारी, चरपरा, मधुर हलका, नेत्ररोगनाशक, बलका-...क, दीपन और कफनाशक है । अप्रसूतास्त्रीका मूत्र गाढा, होता है, प्रसूता-...स्त्रीका मूत-पतला, हलका और अप्रसूताके, मूतसे कुछ विशेष गुणवाला नहीं ...है और पाक तथा वीर्य्यमें भी समानही है ।

गोजाविमहिषाणांतुस्त्रीणांमूत्रंप्रशस्यते ।
खरोष्ट्रेभनराश्वानांपुंसांमूत्रंहितंमतम् ॥

अर्थ--गौ,बकरी, भेड, भैंस इनोंमें स्त्रियोंका मूत्र, उत्तम होता है और गधा, ऊंट, हाथी, मनुष्य इनोंमें पुरुषका मूत्र उत्तम होता है ।

मूत्रविशेषगुणाः ।

सौरभेयकमूत्रन्तु घनंसान्द्रंप्रशस्यते । तच्चवृषणहीनानां किञ्चिल्लघुतरंस्मृतम् ॥ वृषमूत्रञ्चशोफघ्नंकृमिदोषविनाशनम् । कामलाग्रहणीपाण्डुनाशनञ्चाग्निदीपनम्॥अजागविगतंमूत्रंपानेशस्तंभिषग्वर । अविकंमाहिषंचाश्वंतैलपाकोविधीयते ॥ गजमूत्रंप्रलेपश्चकण्डूदद्रुविसर्पनुत । कारभंखरमूत्रंवातैलेनस्येविधायकम् । औष्ट्रंगोजाविनांच गजहयमहिषीमूत्रवर्गःखरोत्थं । तिक्तंतीक्ष्णंलघूष्णंसलवणसुरसांपित्तलंभेदिरूक्षम् ॥ हृद्यंरुच्यंकृमिघ्नंहुतवहजननंकुष्ठमेदोविनाशं । गुल्मानाहार्शशूलानिलकफविषजिच्छोफपाण्डूदरघ्नम् ॥ सर्वेष्वपिचमूत्रेषुगोमूत्रंगुणतोधिकम् । अतोविशेषात्कथनेमूत्रंगोमूत्रमुच्यते । प्लीहोदरश्वासकासशोथवर्चोग्रहापहम् । शूलगुल्मरुजानाहकामलापाण्डुरोगहृत् ॥ मानुषंविषजिन्मूत्रंविषूच्यामहरंचतत् । न स्येत्तौष्ट्रंचपानेतुगवांचाव्याःप्रशस्तकम्॥ तैलयोगेगर्दभस्यवस्त्यश्वमहिषन्तथा । दद्रुकण्डूविसर्पाणांलेपनेहस्तिमूत्रकम् ॥

अर्थ-बैलका मूत--गाढा, सान्द्र और श्रेष्ठ होता है और वही बैल वृषणहीन अर्थात् वधियाका मूत--कुछेक हलका होता है । बैलका मूत--सूजनको दूर करनेवाला, कृमिदोषनाशक तथा कामला, संग्रहणी इनको दूर करे है और अग्निप्रदीपक है । बकरीका मूत और गायका मूत पीनेमें उत्तम है, मेंढेका मूत, भैंसका मूत और घोडेका मूत तेलपाकमें हितकारी है । हाथीके मूतका

कण्डू, दद्रु और विसर्परोगनाशक है। ऊंटका मूत और गधेका मूत—में और नस्यमें उत्तम है। ऊंट, गाय, बकरी, भेड, हाथी, घोडा, और गधेका मूत्र यह सर्व मूत्रवर्ग कडवा, तीक्ष्ण, हलका, गरम लवणान्वित, पित्तकारक, भेदक, रूखा, हृदयको हितकारी, रुचिजनक, विनाशक, क्षुधाको बढानेवाला, कुष्ठ, और मेदरोगनाशक तथा गुल्म, आनाह, बवासीर, शूल, वात, कफ, विष, सूजन, पाण्डु और उदररोगको दूर करे है। सर्वप्रकारके मूत्रोंमें गोमूत्रगुणोंमें अधिकहै। अतएव जहां भी मूत्रशब्द आवे वहांपर गोमूत्र समझना चाहिये। गोमूत्र—प्लीहा, उदररोग, श्वास, खाँसी, सूजन, मलरोध, शूल, गुल्म, अफारा, काफला और पाण्डुरोगको दूर करे है। मनुष्यका मूत्र-विषविनाशक और विषूचिकाको नष्ट करे है, नासमें ऊंटका मूत्र उत्तम है, पानमें गोमूत्र श्रेष्ठ है। प्रयोगमें गर्दभका मूत्र, वस्तिकर्म्ममें घोडे और भैंसका तथा दाद, खुजली और विसर्पके लेपमें हाथीका मूत्र लेना चाहिये।

इति श्रीशालिग्रामनिघण्टुभूषणे मूत्रवर्गः समाप्तः ॥ १८ ॥

अथ तैलवर्गः।

तिलादिस्निग्धवस्तूनांस्नेहस्तैलमुदाहृतम्।

अर्थ-तिलादिक स्निग्धवस्तुओंके स्नेहको तैल कहतेहैं (अभ्यञ्जन, म्रक्षण, तिलज, स्नेह)।

संस्कृतभाषामें	तैल।
हिन्दीभाषामें	तैल।
बंगभाषामें	तैल, तेल।
मराठीभाषामें	तेल।
गुजरातीभाषामें	तेल।
कर्णाटकीभाषामें	तैलं।
तैलिंगीभाषामें	नुने।
अंग्रेजीभाषामें	आइल Oil
लेटिन्भाषामें	ऑईलयम्। Oluem
फारसीभाषामें	रोगन, रोगनकुंनद।
अरबीभाषामें	दोहनुसिमसिग।

तैलंवातहरंसर्वंविशेषात्तिलसम्भवम् ।

अर्थ-सर्व प्रकारके तेल वातनाशक हैं और विशेष करके तिलका तैल वातको हरे है ।

तिलतैल गुणाः ।

कषायानुरसंस्वादुसूक्ष्ममुष्णंव्यवायिच ।
पित्तकृद्वातशमनंश्लेष्मरोगादिवर्द्धनम् ॥
अल्पंरुचिकरंमेध्यंकण्डूकुष्ठविकारनुत । वृष्यंश्रमापहञ्चैयं तिलतैलंविदुर्बुधाः ॥ छिन्नभिन्नेच्युतेघृष्टेभग्नाग्निदाहकेऽपि च । वाताभिष्यन्दिस्फुटनेचाभ्यङ्गेतिलतैलकम् ॥ व्यालश्वसर्पभेकानांविषेभ्यङ्गावगाहने । पानेवस्तौबलासेचतिलतैलंविधीयते॥तिलतैलंविधेयंस्यात्सर्वरोगनिवारणे । (हा. सं)

अर्थ--तिलका तेल-कषेला, स्वादिष्ठ, सूक्ष्म गरम, व्यवायि, पित्तकारक, वातनिवारक, कफादिरोगवर्द्धक, अल्परुचिकारक, मेधाजनक, खुजलीको हरनेवाला, कोढको दूरकरनेवाला, वीर्य्यवर्द्धक, श्रमनाशक, छिन्न अर्थात् खड्ग आदिके लगनेसे कटे हुएमें बरछी आदिके कटे हुएमें, गिरजानेसे जो चोट लगजाती है, उसमें घिसनेमें, पत्थर आदिके रगडनेसे छिलजानेमें, हाड आदिक टूटनेमें, अग्निसे जलजानेमें, वाताभिष्यन्दमें, फूटनेमें, भेडिया, कुत्ता, मेडक और सर्पके विषमें, मालिस, स्नान, वस्तिकर्म्म और बलासरोगमें तिलका तेल हितकारी है और सर्वरोगोंको दूर करनेके लिये तिलका तेल देना चाहिये ।

तिलतैलमलंकरोतिकेशान्मधुरंतिक्तकषायमुष्णतीक्ष्णम् ।
बलकृत्कफवातजंतुखर्जूव्रणकण्डूतिहरंचकान्तिदायि ॥
(राजनिघण्टु)

अर्थ- तिलका तेल--केशोंको उत्तम करनेवाला, मधुर, कडवा, कषेला, गरम, तीक्ष्ण, बलकारक तथा कफ, वात, कृमि, खुजली, घाव, कडू इनको दूरकरनेवाला और कान्तिको देनेवाला है ।

तिलतैलंगुरुस्थैर्य्यबलवर्णकरंसरम् । वृष्यंविकाशिविशदं मधुरंरसपाकयोः ॥ सूक्ष्मंकषायानुरसंतिक्तंवातकफापहम् ।

वीर्य्योष्णंतुहिमंस्पर्शेबृंहणंरक्तपित्तकृत् ॥ लेखनंबद्धविण्मूत्रंगर्भाशयविशोधनम् । दीपनंबुद्धिदंमेध्यंव्यवायिव्रणमेहनुत् । श्रोत्रयोनिशिरःशूलनाशनंलघुताकरम् ॥ त्वच्यंकेश्यञ्चचक्षुष्यमभ्यङ्गेभोजनेऽन्यथा । छिन्नभिन्नच्युतोत्पिष्टमथितक्षतपिच्चिते ॥ भग्नस्फुटितविद्धाग्निदग्धाविश्लिष्टदारिते । तथाभिहतनिर्भुग्नमृगव्याघ्रादिविक्षते ॥ वस्तौपानेन्नसंस्कारेनस्येकर्णाक्षिपूरणे । सेकाभ्यङ्गावगाहेषुतिलतैलं प्रशस्यते ॥ (भावमिश्रः)

अर्थ- तिलका तेल भारी. स्थिरताकारक, बलकारक, वर्णको सुन्दर करनेवाला, सारक, वृष्य, विकाशी, विशद, रस और पाकमें मधुर, सूक्ष्म, कसेला, कडवा, वातकफनाशक, उष्णवीर्य्य, स्पर्शमें शीतल, पुष्टिकारक, रक्तपित्तकारक, लेखन, मलमूत्ररोधक, गर्भाशयविशोधक, दीपन, बुद्धिदायक, मेधाजनक, व्यवायि, व्रण और प्रमेहनाशक, कान. योनि और शिरके शूलको दूर करनेवाला, लघुताकारक, त्वचाको हितकारी, केशोंको सुन्दर करनेवाला, नेत्रोंको हितकारी यह गुण तैलके मलनेके हैं। खानेमें यह गुण नहीं हैं और गुण इनसे उलटे हैं। छिन्न भिन्न, गिरजाना, पिसजाना, मसलजाना, घाव, पिचजाना, टूटजाना, फटजाना, विधजाना, आगसे जलजाना, स्थानसे उतरजाना, चिरजाना, चोटलगनी, टेढा होजाना, मृग और व्याघ्रादिसे घायल होजानेपर, वस्तिकर्म, पान, अन्नसंस्कार (तेलसे छौंकना) नासकर्म, कान और आंखोंमें भरना, सेक, मर्दन और अवगाहनमें तिलका तेल हितकारी है।

नास्तितैलात्परंकिञ्चिदौषधंमारुतापहम् ।
तैलंसंयोगसंस्कारात्सर्वरोगापहंस्मृतम् ॥

अर्थ--तैलके समान और कोई दूसरीवातनाशक, औषधि नहीं हैं और औषधोंके संयोगसे संस्कृत (पक्का) तेल सर्वरोगनाशक है।

घृतादष्टगुणंतैलंमर्दनेचभोजने ।
घृतमब्दात्परंपक्वंहीनवीर्य्यंप्रजायते ॥
तैलंपक्वमपक्वंवाचिरस्थायिगुणाधिकम् ।

अर्थ--तेल--घृतसे गुणोंमें अत्यन्त श्रेष्ठ है। यह मर्दन करनेमें है. भोजन करनेमें नहीं है। घी एक वर्ष बीतजानेपर पका हुवा हीनवीर्य्य होजाता है, परन्तु तेल तो पकाहुवा या बिनापका जितना जितना ज्यादा पुराना होगा इतनाही अधिक गुणवाला होता है।

नपित्तरोगेनचशोनितेचपथ्येमहावातविकारसंघे।
तिलोद्भवंतैलमुदाहरंतिवाताश्रितान्हान्तिसमस्तदोषान्॥

अर्थ- तिलोंका तेल--पित्तरोग और रक्तरोगमें पथ्य नहीं है, महावात-रोगके समूहमें पथ्य है और सर्वप्रकारके वातरोगोंका नाशकरता है।

सर्षपतैलगुणाः।

कटूष्णंसार्षपंतैलंरक्तपित्तप्रदूषणम्।
कफशुक्रानिलहरंकण्डूकृमिविनाशनम्॥ (राज० नि०)

अर्थ-सरसोंका तेल--चरपरा, गरम, रक्तपित्तकारक, तथा कफ, शुक्र, बात, खुजली और कृमिनाशक है।

अन्यच्च।

दीपनंसार्षपंतैलंकटुपाकिसरंलघु।
लेखनंस्पर्शवीर्य्योष्णंतीक्ष्णपित्तास्रदूषकम्॥
कफमेदोऽनिलाऽर्शोघ्नंशिरःकर्णामयापहम्।
कण्डूकोष्ठकृमिश्वित्रकुष्ठदुष्टव्रणप्रणुत्॥ (भा. प्र.)

अर्थ--रससोंका तेल--दीपन, पचनेमें चरपरा, रस, लघु, लेखन स्पर्श और वीर्यमें उष्ण, तीक्ष्ण, रक्तपित्तको प्रकोपित करनेवाला तथा कफ मेद-रोग, वात, बवासीर, शिररोग, कर्णरोग, कण्डू, कोठ, कृमि, श्वित्रकुष्ठ कुष्ठ और दुष्ट व्रणको नष्ट करनेवाला है।

अपिच।

कटुतिक्तंतथाग्राहिचोष्णंस्यात्कफवातनुत्।
कृमिकण्डूशोधनंस्यात्पित्तकृत्सार्षपंस्मृतम्॥
कर्णरोगेकृमिरोगेतथावाताम
कण्डूकुष्ठामयेचैवकफमेदोगदेषुच॥

प्रशस्यंसार्षपञ्चैवरोगाणाञ्चविभावयेत् ।
वस्तिकर्म्मणिनोशस्तंपित्तदाहकरंमहत् ॥ (हा. सं.)

अ०-सरसोंका तेल--चरपरा, कडवा, मलरोधक, गरम, कफवातनाशक और कण्डूनिवारक, पित्तजनक तथा कर्णरोग, कृमिरोग वातरोग, कुष्ठ, कफ और मेदरोगमें हितकारी है, वस्तिकर्म्ममें उत्तम नहीं है पित्त दाहकारक है ।

राजिकातैलगुणाः ।

श्वेतायाश्चैवरक्तायाराजिकायास्तुतैलकम् ।
केश्यंचतिक्तंकटुकंमूत्रकृच्छ्रकरंमतम् ॥
त्वग्दोषंवातदोषंचपूयंचैवविनाशयेत् ।
गुणास्त्वन्येसर्षपानांतैलतुल्यइतीरितम् ॥ (नि.र.)

अ०--लाल वा काली राईका तेल--केशोंको हितकारी, कडवा, चरपरा, कृच्छ्रजनक तथा त्वचाके दोष, वातविकार और पूय (राध) को हरे अन्य गुण सर्सोंके तेलके समान जानने ।

तुवरीतैलगुणाः ।

तीक्ष्णोष्णंतुवरीतैलंलघुग्राहिकफास्रजित् ।
वह्निकृद्विषहृत्कण्डूकुष्ठकोष्ठकृमिप्रणुत् ॥
मेदोदोषापहंचापिव्रणशोथहरंपरम् ॥ (भा. प्र.)

अ०-तोरीका तेल--तीक्ष्ण, गरम, हलका, मलरोधक, कफनाशक, रक्तविकारनाशक, अग्निप्रदीपक, विषविनाशक तथा खुजली, कोढ, कोठ, कृमि, मेद, व्रण और सूजनको हरणकरे है ।

अतसीतैलगुणाः ।

अतसीप्रभवंतैलंघनंमधुरपिच्छिलम् ।
विपाकेकटुचोष्णञ्चवातश्लेष्मनिवारणम् ॥ हा० सं०)

अ०-अलसीका तेल--गाढा, मधुर, पिच्छिल, विपाककालमें कटु, उष्ण और कफनाशक है ।

अन्यच्च ।

मधुरंत्वतसीतैलंपिच्छिलंचानिलापहम् ।

मदगन्धिकषायश्चकफकासापहारकम् ॥ (रा० नि०)

अर्थ-अलसीका तेल--पिच्छिल, वातविनाशक, मदगन्धियुक्त, कषेला तथा कफ और खाँसीको दूर करे है।

अन्यच्च ।

उमातैलंचवातघ्नंस्वादूष्णंबलकृद्गुरु ।
कटुपाकमचक्षुष्यंत्वग्दोषकफपित्तकृत् ॥ (शो० नि०)

अर्थ--अलसीका तेल- बातविनाशक, स्वादिष्ठ, बलकारी, भारी, कटुपाकी नेत्रोंको हितकारी नहीं. तथा त्वग्दोष, कफ और पित्तकारक है।

अन्यच्च ।

अतसीतैलमाग्नेयंस्निग्धोष्णंकफपित्तकृत् । कटुपाकमचक्षुष्यंबल्यंवातहरंगुरु ॥ मलकृद्रसतःस्वादुग्राहित्वग्दोषहृद्व्रणम् । वस्तौपानेतथाभ्यङ्गेनस्येकर्णस्यपूरणे ॥ अनुपानविधौचापिप्रयोज्यंवातशान्तये ॥ (भा० प्र०)

अर्थ--अलसीका तेल--अग्निजनक, स्निगध, गरम, कफ पित्तकारक, कटुपाकी, नेत्रोंको अहितकारी, बलकारी, वातहारी, भारी, मलकारक, रसमें स्वादु, मलरोधक, त्वचाके विकार और व्रणको हरनेवाला तथा वस्तिकर्म्म, पान, मर्दन, नास, कर्णपूरण और अनुपालविधिमें वातशान्ति करनेके लिये देना चाहिये।

कुसुम्भतैलगुणाः ।

कुसुम्भतैलमुष्णन्तुविपाकेकटुकंगुरु ।
विदाहकंविशेषेणसर्वदोषप्रकोपनम् ॥ (हा० सं०)

अर्थ--कसूमका--गरम, पचनेमें चरपरा, भारी, विशेषकरके दाहकारक और सर्वदोषोंको कुपित करनेवाला है।

अन्यच्च ।

कुसुम्भतैलमम्लंस्यादुष्णंगुरुविदाहिच ॥
चक्षुर्भ्यामहितबल्यंरक्तपित्तकफप्रदम् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ--कसूमका तेल--खट्टा, भारी, दाहजनक, नेत्रोंको अहितकारी, बलकारी तथा रक्तपित्त और कफकारक है।

अपिच ।

कुसुम्भतैलंबलदंक्षारंकटुविदाहकृत् । अचक्षुष्यंगुरुस्तीक्ष्ण-वर्णविट्स्तम्भकारकम्॥रक्तपित्तकरंचाम्लंत्रिदोषाणांचका-रकम् ॥ कृमिवातहरंप्रोक्तंपूर्वाचार्य्यैर्महर्षिभिः ॥ (नि.र.)

अर्थ—कमसूका तेल–बलवर्द्धक खारी, चरपरा, दाहजनक, नेत्रोंको अहितकारी, भारी, तीक्ष्ण, गरम, मलस्तम्भक, रक्तपित्तकारक, खट्टा, त्रिदोषजनक, तथा कृमि और वातविनाशक है।

गोधूमादितैल गुणाः ।

गोधूमयावनालव्रीहियवाद्यखिलधान्यजंतैलम् ।
वातकफपित्तशमनंकण्डूकुष्ठादिहारिचक्षुष्यम् (रा०नि०)

अर्थ—गेंहू, ज्वार, व्रीहिधान्य और यवादिकोंका तेल–वात, कफ, पित्त-नाशक, नेत्रोंको हितकारी तथा कण्डू और कुष्ठादिरोगनाशक है।

एरण्डतैल गुणाः ।

एरण्डतैलंकृमिनाशनंचसर्वत्रशूलघ्नमरुत्प्रणाशनम् ।
कुष्ठपहंचापिरसायनंचपित्तप्रकोपानलशोधनंच ॥

अर्थ—एरंडका तेल–कृमिनाशक सर्व प्रकारके शूलोको निर्मूल करने-वाला, वातविनाशक, कुष्ठनाशक, रसायन, पित्तको कुपित करनेवाला और अग्निशोधक है।

अन्यच्च ।

एरण्डतलतीक्ष्णोष्णंदीपनंपिच्छिलंगुरु । वृष्यंत्वच्यंव-यःस्था पिमेधाकान्तिबलप्रदम्॥कषायानुरसंसूक्ष्मंयोनि-शुक्रविशोधनम् । विस्रंस्वादुरसेपाकेसतिक्तंकटुकंसरम् ॥ विषमज्वरहृद्रोगपृष्ठगुह्यादिशूलनुत् । हंतिवातोदरानाह-गुल्माष्ठीलाकटिग्रहान् ॥ वातशोणितविड्बन्धवध्मशोथा-मविद्रधीन । आमवातगजेन्द्रस्यशरीरवनचारिणः ॥एक-एवनिहंतायमेरण्डस्नेहकेसरी ।(भा. प्र.)

अर्थ—अंडका तेल–या अंडीका तेल–तीक्ष्ण, गरम, दीपन, पिच्छिल, भारी, वीर्य्यवर्द्धक, त्वचाको हितकारी, अवस्थास्थापक, मेधाजनक, कान्ति,

कारक, बलदायक, कषेला, सूक्ष्म, योनि और शुक्रशोधक, आमगन्धिवाला, रस और पाकमें स्वादिष्ट, कडवा, चरपरा, कुछ कुछ दस्तावर तथा विषमज्वर हृदयरोग, पीठ और गुह्यस्थानका शूल, वात उदररोग, अनाह, गुल्म, अष्ठीलिका, कमरका दर्द, वातरक्त, मलबद्ध, वध्म (बद) सूजन, आम और विद्रधीरोगको नष्ट करे है शरीररूपी वनमें विचरनेवाले आमवातरूपी मत्त हाथीके मारनेको यह एकही अंडीका तेलरूपी सिंह है।

अन्यच्च ।

एरण्डतैलंमधुरंगुरुश्लेष्माभिवर्द्धनम्।वातासृग्गुल्महृद्रोगजीर्णज्वरहरंपरम् ॥ हृद्बस्तिपार्श्वजानूरुत्रिकपृष्ठास्थिशूलिनाम् । आनाहाष्ठीलवातासृक्प्लीहोदावर्त्तशूलिनाम्॥ हितंवातामयश्वासग्रन्थिब्रध्नविकारिणाम् ॥ (रा. नि.)

अर्थ—अंडीका तेल-मधुर, भारी, श्लेष्मवर्द्धक तथा वातरक्त, गुल्म, हृद्यरोग और जीर्णज्वरको दूर करे है तथा हृदय, वस्ति, पार्श्व, जानु, ऊरु, त्रिक, पृष्ठ और अस्थिशूलवाले, मनुष्योंको एवं आनाह, अष्ठीला, वातरक्त, प्लीहा, उदावर्त्त, शूल, वातरोग, श्वास, ग्रन्थि और ब्रध्नरोगवाले मनुष्योंको हितकारी है।

करजतैलगुणाः ।

कारंजंकटुकंपाकेकटूष्णमनिलापहम् ।
कुष्ठशीर्षगदार्शोघ्नंमेदशुक्रप्रमेहजित् ॥
अधोर्ध्वहरणंश्लेष्मकृमिविध्वंसनंलघु ।
मक्षिकादंशकीटादिनाशनंव्रणरोपणम् ॥ (शो. नि.)

अर्थ—करंजका तेल-पचनेमें चरपरा, गरम, वातनाशक, तथा कोढ, कृमि, शीर्षरोग, बवासीर, मेद, शुक्र, प्रमेह अध और ऊर्द्ध्ववात, और व्रणको मक्षिका और दंशादि कीडोंके विषको दूर करे है हलका और व्रणको भरनेवाला है।

अन्यच्च ।

करंजतैलंतिक्तंस्यादुष्णंचव्रणपूरकम्। नेत्ररोगंविचर्चीश्ववातंकुष्ठंव्रणंतथा ॥ कण्डूंगुल्ममुदावर्त्तयोनिदोषंचनाशयेत् । अर्शोघ्नंलेपनाच्चैवनानात्वग्दोषनाशनम् ॥ (नि० र०)

अर्थ—करंजका तेल—कडवा, गरम, व्रणको भरनेवाला तथा नेत्ररोग, कृमी, वात, कोढ, व्रण, कण्डू, गुल्म, उदावर्त्त, योनिविकार, बवासीर और लेप करनेसे नानाप्रकारके त्वचाके दोषोंको दूर करे है ।

इंगुदीतैलगुणाः ।

इंगुद्यास्तुस्मृतंतैलंस्निग्धंशीतंचकान्तिदम् ।
मधुरंकफकृद्बल्यंचक्षुष्यंधातुवर्द्धकम् ॥
केशवृद्धिकरंचैवपित्तनाशकरंमतम् । (नि० र०)

अर्थ—हिंगोटका तेल—स्निग्ध, शीतल, कान्तिजनक, मधुर, कफकारक, बलकारक, नेत्रोंको हितकारी, धातुवर्द्धक, केशवर्द्धक, और पित्तनाशक है ।

निम्बतैलगुणाः ।

निम्बतैलंकिञ्चिदुष्णंतिक्तंकृमिकफापहम् ।
कुष्ठंव्रणंवातपित्तंचार्शोज्वरंतथा ॥
शोफोदररक्तरुजंकफंपित्तज्वराञ्जयेत् ॥ (नि० र०)

अर्थ—नीमका तेल—किंचित्, गरम, कडवा तथा कृमि, कफ, कोढ, घाव, वातपित्त, पित्त, बवासीर, ज्वर, सूजन, उदररोग, रुधिररोग, कफ और पित्तज्वरनाशक है ।

शिग्रुतैलगुणाः ।

शिग्रुतैलंचकटुकंचोष्णमुक्तंचपिच्छिलम् ।
त्वग्दोषंचव्रणंवातंकफंकण्डूञ्चनाशयेत् ॥
शोथनाशकरंचैवमुनिभिःपरिकीर्त्तितम् ॥ (नि० र०)

अर्थ—सँजिनेका तेल—चरपरा, गरम, पिच्छिल, तथा त्वचाके दोष, व्रण, वात, कफ, कण्डू, और सूजनको दूर करे है ।

ज्योतिष्मतीतैलगुणाः ।

ज्योतिष्मत्याःस्मृतंतैलंवामकंतिक्तकंमतम् । अत्युष्णंसारतीक्ष्णंपित्तलंस्मृतिबुद्धिदम् । मेधाकरंलेखनंचरसायनमतम् । अग्निदीप्तिकरंवातंत्रिदोषंचकफंजयेत् ॥ (नि० र०)

अर्थ—मालकांगुनीका तेल—वमनकारक, कडवा, अत्यन्त गरम, सारक, तीक्ष्ण, पित्तजनक, स्मरणशक्ति और बुद्धिदायक, मेधाजनक, लेखन, रसायन, अग्निप्रदीपक, वात, त्रिदोष और कफनाशक है ।

विभीतकतैल गुणाः ।

अक्षतैलंस्वादुशीतंवृष्यंकेश्यंगुरुस्मृतम् ।
कान्तिप्रदंकफकरंवातंपित्तंचनाशयेत् ॥ (नि० र०)

अर्थ-बहेडेका तेल--स्वादिष्ट, शीतल, वीर्य्यवर्द्धक, केशोंको हितकारी, भारी, कांतिजनक, कफकारी तथा वात और पित्तहारी है ।

हरीतकीतैलगुणाः ।

हरीतक्याःस्मृतंतैलंशीतलंतुवरंमधु ।
कटुपथ्यंसर्वरोगनानात्वग्दोषनाशनम् ॥ (नि० र०)

अर्थ--हरडका तेल-शीतल, कषेला, मधुर, चरपरा, पथ्य तथा सर्वप्रकारके रोग और नानाप्रकारके त्वचाके दोषोंको दूर करे है ।

कोशाम्रतैलगुणाः ।

कोशाम्रतैलतिक्तस्यादम्लंबल्यंचमाधुरम् ।
पथ्यंरुचिकरंचैवपाचकंचसरंमतम् ॥
कृमिकुष्ठव्रणानांचनाशकंपरिकीर्तितम् । (नि० र०)

अर्थ-कोशमकी गुठलीका तेल—कडवा, खट्टा, बलकारक, मधुर, पथ्य, रुचिकारक, पाचक, सारक तथा कृमि, कुष्ठ और व्रणको दूर करे है ।

कर्पूरतैलगुणाः ।

शीतांशुतैलमाक्षेपशमनंवायुनाशनम् । स्वेदनंशूलहृच्चोग्रज्वरघ्नंकफनुत्परम् ॥ आमवातेतथाध्मानेज्वरेचशिरसोगदे । दन्तरोगेचभग्नेचद्वैपेयंपरियुज्यते ॥ (आ० सं०)

अर्थ-कपूरका तेल—आक्षेपको शान्ति करनेवाला, वातविनाशक स्वेद अर्थात् पसीनेको लानेवाला, शूलनाशक, उग्रज्वर और कफको हरनेवाला है तथा आमवात, आध्मान, ज्वर, शिरोरोग, दन्तरोग और भग्नरोगमें कपूरका तेल देनाचाहिये ।

अन्यच्च ।

कर्पूरतैलंकटुकंचोष्णंपित्तकरंमतम् ।
दंतदार्ढ्यप्रदंचैवकफवातविनाशकम् ॥ (नि० र०)

अर्थ-कपूरका तेल—चरपरा, गरम, पित्तकारक, दाँतोंको दृढकरनेवाला और कफ वातविनाशक है ।

त्रपुषादितैलगुणाः ।

त्रपुसैर्वारुकूष्माण्डचारबीजादितैलकम् ।
केश्यंकफप्रदंशीतंमधुरंगुरुचस्मृतम् ॥
वांतिकृद्वातपित्तस्थनाशनंपरिकीर्तितम् ।

अर्थ-खीरे, ककडी, पेठा और चिरोंजी आदिका तेल -केशोंको हितकारी, कफकारी, शीतल, मधुर, भारी वमनकारक और पित्तनाशक है ।

भल्लातकतैलगुणाः ।

भल्लाततैलंकटुकंस्वादुचोष्णंचपित्तलम् । तिक्तंतीक्ष्णंचतुवरमूर्ध्वाधोमार्गशोधकम् ॥ त्रिदोषंचकृमीन्मेहंमेदंशुक्रंकफंतथा । अर्शवातंचकुष्ठञ्चकण्डूंचैवविनाशयेत् ॥ गुणास्तुम्बरकस्यापितलस्यैतेबुधःस्मृताः ।

अर्थ-भिलावेका तेल--चरपरा, स्वादिष्ठ, गरम, पित्तकारक, कडवा, तीक्ष्ण, कषेला, अधोर्ध्व दोषको शोधनेवाला तथा त्रिदोष कृमि, प्रमेह, शुक्र, कफ, ववासीर, वात, कोढ और खुजलीको दूर करे है तुम्बुरुके तेलके गुणभी इसीके समान जानने ।

त्रिवृत्तैलगुणाः ।

त्रिवृत्तैलंतुशीतंस्याद्वातपित्तकफापहम् ।

अर्थ-निसोथके बीजोंका तेल-शीतल और वात ,पित्त, कफनाशक है ।

देवदारुतैलगुणाः

तैलन्तुदेवदारोस्तुकटुतिक्तंकषायकम् ।
व्रणशुद्धिकरंवातकृमिकुष्ठविनाशकम् ॥

अर्थ-देवदारुका तेल-चरपरा, कडवा, कषेला, व्रणशोधक तथा वात, कृमि और कुष्ठनाशक है ।

रालतैलगुणाः ।

सर्जतैलंतुविस्फोटकुष्ठदद्रुविनाशकम् ।
कृमीन्कफंचवातंचनाशयेदितिकीर्त्तितम् ॥

अर्थ-रालका तेल-विस्फोट, कुष्ठ, दद्रु, कृमि, कफ और वातविनाशक है ।

आम्रतैलगुणाः ।

आम्रबीजभवंतैलंसुगंधिमधुरंमतम् ।
रूक्षंकिञ्चित्पित्तलंचतिक्तंचविशदंमतम् ॥
कफवातहरंचैवमुनिभिःपरिकीर्त्तितम् ।

अर्थ-आमकी गुठलीका तेल-सुगंधि, मधुर, रूखा, किंचित् पित्तकारक, कडवा, विशद और कफवातनाशक है ।

मधूकतैलगुणाः ।

मधूकतैलंमधुरंपिच्छिलंतुवरंमतम् ।
कफपित्तज्वरंचवदाहंपित्तंचनाशयेत् ॥
पलाशपाटलायास्तुतैलस्यैतेगुणामताः ।

अर्थ-महुवेका तेल-मधुर, पिच्छिल, कषेला तथा कफ, पित्त, ज्वर, दाह और पित्तको दूर करे है । पलाश और पाडलके तेलके गुणभी इसीके समान जानने ।

वन्दातैलगुणाः ।

वन्दाकतैलंमधुरंगुरुःकटुरसंमतम् ।

अर्थ-वंदाका तेल-मधुर, भारी और कटुरसान्वित है ।

अंकोलतैलगुणाः ।

अंकोलतैलंवातघ्नंमभ्यङ्गात्त्वग्रुजापहम् ।
कफनाशकरंप्रोक्तंपूर्ववैद्यैर्महर्षिभिः ॥

अर्थ-अंकोलका तेल-वातनाशक इसको मलनेसे त्वचाके रोग दूर होवे हैं और कफ नाशक है ।

दंतीतैलगुणाः ।

दन्त्यास्तैलंस्वादुकेश्यंलेपनात्सर्वकुष्ठहम् ।
वातहंप्राशनेनैवपित्तस्यास्त्रस्यनाशकम् ॥

अर्थ-दंतीका तेल-स्वादिष्ठ, केशोंको हितकारी, लेपकरनेसे सर्वप्रकारके कुष्ठोंको नष्टकरे है, पीनेसे वातको हरे और रक्तपित्तनाशक है ।

पुत्र जीवकतैलगुणाः ।

पुत्रजीविभवंतैलंकफवातविनाशकम् ।

अर्थ-जियापोताका तेल-कफवातविनाशक है ।

त्रायमाणतैलगुणाः ।

त्रायमाणभवंतैलंसर्वव्याधिविनाशकृत् ।

अथ· त्रायमाणका तेल--सर्वरोगनाशक है ।

शंखिनीतैल गुणाः ।

शंखिनीसम्भवंतैलंतीक्ष्णंतिक्तंकटुस्मृतम् । रक्तपित्तकरं चैवसारकंचमतंलघु ॥ कृमिकुष्ठार्शमेहघ्नंकफवातहरंपरम् । शुक्रमेदहरंप्रोक्तंपूर्ववैद्योत्तमैःपुरा ॥ (इ० र०)

अर्थ--शंखिनीका तैल--तीक्ष्ण, कडवा, चरपरा, रक्तपित्तकारक, सारक, हलका तथा कृमि, कोढ, बवासीर, प्रमेह, कफवात, शुक्र, और मेदनाशकहै ।

पुन्नागतैल गुणाः ।

पुन्नागतैलंकटुकंसरंतिक्तंचलेखनम् ।

पित्तलंवातरक्तघ्नंदाहनाशकरंमतम् ॥

अर्थ--पुन्नागका तेल--चरपरा, सारक, कडवा, लेखन, पित्तकारक, वातरक्तनाशक और दाहको दूर करे है ।

कपित्थतैल गुणाः ।

कपित्थतैलंतुवरंस्वादुचाखुविषापहम् ।

अर्थ कैथके बीजोंका तेल--कषेला, स्वादिष्ठ और मूसेके विषकोहरे है !

खसखसतैलगुणाः ।

खसबीजस्यतैलन्तुबल्यंवृष्यंगुरुस्मृतम् ।

स्वादुशीतंकफकरंवातनाशकरंमतम् ॥

अर्थ--खसखसका तेल--बलकारक, वीर्य्यवर्द्धक, भारी, स्वादिष्ठ, शीतल कफकारक और वातविनाशक है ।

नारिकेलतैल गुणाः ।

नारिकेलभवंतैलंरसेपाकेमधुस्मृतम् ।

बल्यंकेश्यंवातहरमुष्णंनेत्ररुजापहम् ॥

अर्थ--नारियलका तेल–रस और पाकमें मधुर, बलकारक, केशोंको हितकारी, वातनाशक, गरम. और नेत्ररोगनाशक है ।

पीलुतैल गुणाः ।

पीलुतैलंसरंचोष्णंकुष्ठवातक्षतापहम् । शोथंपित्तरुजंकण्डूं

गण्डमालांविनाशयेत् ॥ अंत्रवृद्धिंरक्तदोषंनाशयेदितिच-स्मृतम् । अम्लवेतसतैलस्याप्येतएवगुणामताः ॥

अर्थ-पीलुका तेल-सारक, गरम, तथा कोढ, वात, क्षत, सूजन, पित्त-रोग, कण्डू, गंडमाला, अन्त्रवृद्धि और रुधिरके दोषोंको दूर करे है अमल-बेतके तेलके गुणभी इसीके समान जानने ।

शिंशपादितैल गुणाः

शिंशपागरुगण्डीरनिर्गुण्डीसरलादिजम् ।
तैलंतुतुवरंतिक्तकटुकंवातरक्तजित् ॥
विषकण्डूवातकफकुष्ठदुष्टव्रणाञ्जयेत् ।

अर्थ-सीसों, अगर, गण्डीर, निर्गुण्डी और सरलादिकका तेल-कषेला, कडवा, चरपरा, तथा वातरक्त, विष, खुजली, वात, कफ, कुष्ठ और दुष्टव्र-णको नष्ट करे है ।

पृथ्वीकादितैल गुणाः ।

पृथ्वीकानीपजीमूतहस्तिकर्णार्कमूलजम् । काम्पिल्लकचतै-लन्तुतीक्ष्णंपाकेकटुस्मृतम् ॥ सरमुष्णचतिक्तंचलघुकुष्ठ कफापहम्मेहमूर्च्छामदकृमिनाशनंपरमंमतम् ॥ (रत्नाकर)

अर्थ-पृथ्वीका (हिंगुपत्री) जोमूत (देवदाली) मूली, हस्तिकर्ण, पलाश, नीप (कदम्ब) और कवीलेका तेल-तीक्ष्ण, पचनेमें चरपरा, सारक, गरम, कडवा, हलका तथा कोढ, कफ, प्रमेह, मूर्च्छा, मद, और कृमिको दूर करे है ।

तैलंस्वयोनिगुणकृद्वाग्भटेनाखिलंमतम् ।
अतःशेषस्यतैलस्यगुणाज्ञेयाःस्वयोनिवत् ॥

अर्थ-वाग्भटने सर्व तेल स्वयोनि अर्थात् जिस २ औषधीसे जो २ तेल उत्पन्न होता है वह उसीके समान गुणकरे है ऐसा कहा है इसीसे जो तेल इस ग्रन्थमें नहीं कहे गये उनके गुण अपनी २ योनिके समान जानना ।

अवगाहनयुक्ततैलगुणाः ।

स्नेहोऽवगाहनेयुक्तःशरीरेबलमाहरेत् ।
शिरामुखैरोमकूपैर्धमनीभिश्चतर्पयेत् ॥

अर्थ-प्रथम तेलको मलकर पीछे जलसे स्नानकरे इसप्रकार करनेसे शरीरमें बल बढता है तथा शिरामुख, रोमकूप और धमनीनाडियोंके द्वारा तृप्तिकारक है ।

शिरसितैलमर्द्दनगुणाः ।

नित्यंस्नेहार्द्रशिरसःशिरःशूलंनजायते । नखालित्यंनपालित्यंनकेशाःप्रपतन्तिच ॥ दृढमूलाश्चकृष्णाश्चभवन्तिच घनायताः । इन्द्रियाणिप्रसीदन्तिसुदृग्भवतिलोचनम् ॥

अर्थ-जो मनुष्य प्रतिदिन मस्तकमें तेल मलते हैं, उनके शिरशूल नहीं उत्पन्न होता है तथा केशोंकी अल्पता, पक्कता और केश नहीं पतन होते हैं और दृढ मूलसहित, काले और सघन केश होजाते ह तथा इन्द्रियोंमें प्रसन्नता और नेत्रोंमें सुदृष्यता उत्पन्न होती है ।

कर्णतैलपूरणगुणाः ।

कर्णप्रपूरणान्नित्यंनमन्यानहनुग्रहाः ।
नोच्चैःश्रुतिर्नबाधिर्य्यंनकर्णेवातजारुजः ॥ (राजवल्लभ)

अर्थ-जो मनुष्य कर्णमें नित्यप्रात तेल डालते हैं-उनके मन्यास्तम्भ, हनुग्रह, कानसम्बन्धी ऊंचा सुनना आदि दुःसाध्यरोग, बधिरता और कानमें वातादिरोग उत्पन्न नहीं होते हैं ।

मर्द्दनेतैलगुणाः ।

" घृतादष्टगुणंगुरु "

अर्थ-शरीरमें मलनेसे तेलमें घीकी अपेक्षा आठ गुण अधिक हैं ।

तैलंनसेवयेद्धीमान्यस्यकस्यचयद्भवेत ।
विषसात्म्यगुणत्वाच्चयोगेतन्नप्रयोजयेत ॥

अर्थ-बुद्धिमान् पुरुषको चाहिये कि, जिस तिसके दिये हुये तेलको सेवन नहीं करे और उसमें विषकी समानता होनेसे विना विचारे किसी योगमें भी प्रयोग नहीं करे ।

इति श्रीशालिग्रामनिघण्टुभूषणे तैलवर्गः समाप्तः ॥ १८ ॥

अथ अर्कवर्गः ।

अथातःसंप्रवक्ष्यामिकेवलार्कगुणंप्रिये ।

अर्थ-इसके उपरान्त केवल अर्कोंके गुण कहता हूं ।

हरीतक्यर्कगुणाः ।

हरीतक्याःशूलकृच्छ्रकामलानाहनाशनः ।

अर्थ-हरडका अर्क-शूल, मूत्रकृच्छ्र, कामला और आनाह रोगनाशक है।

विभीतकार्कगुणाः ।

विभीतकस्यतृट्छर्दिकफकासविनाशनः ।

अर्थ-बहेडेका अर्क-तृषा, वमन, कफ और खाँसीको हरे है।

आमलक्यार्कगुणाः ।

आमलक्यास्त्रिदोषास्रपित्तमोहंविनाशयत् ।

अर्थ-आमलेका अर्क--त्रिदोष, रक्तपित्त और मोहनाशक है।

नागरार्कगुणाः ।

शुण्ठ्याविबन्धामवातशूलश्वासबलासहृत् ।

अर्थ- सोंठका अर्क- मलबद्धता, आमवात, शूल, श्वास और कफनाशक है।

आर्द्रकार्कगुणाः ।

आर्द्रकस्यज्वरंदाहंहरेद्रुच्यग्निदीतिकृत् ।

अर्थ--अदरखका अर्क--ज्वर और दाहको हरे है, रुचिकारक अग्निप्रदीपक है।

पिप्पल्यर्कगुणाः ।

पिप्पल्याःश्वासकासामवातार्शोज्वरशूलहृत् ।

अर्थ--पीपलका अर्क--श्वास, खाँसी, आमवात, बवासीर, ज्वर और शूलको नष्ट करे है।

मरीचार्कगुणाः ।

मरीचकःश्वासकृमीन्हरेत्सर्वान्गदानपि ।

अर्थ--कालीमिर्चका अर्क--श्वास, कृमि और अन्यान्य सर्व रोगोंको नाश करे है।

पिप्पलीमूलार्कगुणाः ।

ग्रन्थिकस्यप्लीहगुल्मकफवातहरःपरः ।

अर्थ- --पीपरामूलका अर्क--प्लीहा, गुल्म, कफ और वातविनाशक है।

चव्यार्कगुणाः ।

चव्यार्कोऽत्यन्तरुचिकृद्विशेषाद्गुदजापहः ।

अर्थ--चव्यका अर्क--अत्यन्तरुचिकारक और विशेषकरके गुदारोगनाशक है।

गजपिपल्यर्कगुणाः ।

अर्कस्तुगजपिप्पल्यावातश्लेष्माग्निमान्द्यनुत् ।

अर्थ-गजपीपलका अर्क-वात, कफ, और मंदाग्निनाशक है ।

चित्रकार्कगुणाः ।

चित्रकस्याग्निकृत्कासग्रहणीकफशोषहा ।

अर्थ-चीतेका अर्क—अग्निजनक तथा खाँसी, संग्रहणी, कफ और शोषको [हरता] है ।

यमान्यर्कगुणाः ।

यमान्याःपाचनोरुच्योदीपनः शुक्रशूलहृत् ।

अर्थ-अजवायनका अर्क--पाचक, रुचिकारक, दीपन तथा शुक्र और [शूल]नाशक है ।

अजमोदार्कगुणाः ।

अजमोदोद्भवोवातकफहावस्तिशोधनः ।

अर्थ-अजमोदका अर्क-वात कफनाशक और वस्तिशोधक है ।

पारसीकयमान्यर्कगुणाः ।

पारसीकयमान्यास्तुग्राहीपाचकमादकः ।

अर्थ-खुरासानी अजवायनका अर्क-मलरोधक, पाचक और मदकारक है ।

जीरकार्कगुणाः ।

जीरकस्यतुसंग्राहीगर्भाशयविशुद्धिकृत् ।

अर्थ-जीरेका अर्क-ग्राही और गर्भाशयशोधक है ।

कृष्णजीरकार्कगुणाः ।

कृष्णजीरस्यचक्षुष्योगुल्मच्छर्द्यतिसारजित् ।

अर्थ-कालेजीरेका अर्क--नेत्रोंको हितकारी तथा गुल्म, वमन और अति[सार]को दूरकरेहै ।

कारवीजीरकार्कगुणाः ।

कारव्याबलकृच्चार्कोज्वरघ्नःपाचनःसरः ।

अर्थ-कलौंजीका अर्क बलकारक, ज्वरनाशक, पाचक और सारक है ।

धान्यकार्कगुणाः ।

धान्यकस्यतृषादाहवमिश्वासत्रिदोषजित् ।

अर्थ-धनियेका अर्क-तृषा, दाह, वमन, श्वास और त्रिदोषनाशक है ।

शतपुष्पार्क गुणाः।

मिश्याज्वरानिलश्लेष्मव्रणशूलाक्षिरोगहृत्।

अर्थ-सौंफका अर्क-ज्वर, वात, कफ, व्रण, शूल, और नेत्ररोगनाशक है।

मिश्रेयार्कगुणाः।

मिश्रेयायावह्निमान्द्ययोनिशूलकृमीन्हरेत्।

अर्थ-सोयेका अर्क-मन्दाग्नि, योनिशूल, और कृमिनाशक है।

ज्वालामरिचार्कगुणाः।

ज्वालामरीचकस्यापस्मारभूतत्रिदोषनुत्।

अर्थ-लालमिर्चका अर्क-अपस्मार, भूत व त्रिदोषनाशक है।

मेथिकार्कगुणाः।

मथिकायाःश्लेष्मवातज्वरामकफनाशनः।

अर्थ-मेथीका अर्क-श्लेष्म, वात, ज्वर, आम और कफनाशक है।

वनमेथिकार्कगुणाः।

वनमेथ्याःसर्वरोगान्हरेत्कुञ्जरवाजिनाम्।

अर्थ-वनमेथीका अर्क-हाथी और घोडोंके सर्वरोगोंको हरे है।

चन्द्रसूरार्कगुणाः।

चन्द्रसुरस्यहिक्कासृग्वातहृत्पुष्टिवर्द्धनः।

अर्थ-हालोका अर्क-हुचकी, रुधिरविकार और वातनाशक है तथा पुष्टिवर्द्धक है।

हिंग्वर्कगुणाः।

हिङ्गुनःपाचनोरुच्यःकृमिशूलोदरापहः।

अर्थ-हींगका अर्क-पाचन, रुचिकारक तथा कृमि, शूल और उदररोग-निवारक है।

वचार्कगुणाः।

वचायावह्निवमिकृद्विबन्धाध्मानशूलहृत्।

अर्थ-वचाका अर्क-अग्निजनक, वमनकारक तथा विबंध, आध्मान और शूलको हरे है।

पारसीकवचार्कगुणाः।

पारसीकवचायास्तुभूतोन्मादबलंहरेत्।

अर्थ-खुरासानी वचका अर्क-भूतोन्माद और बलनाशक है।

कुलिञ्जनार्कगुणाः ।

कुलिञ्जनस्य स्वरकृद्धृत्कण्ठमुखशोधनः ।

अर्थ-कुलिञ्जनका अर्क--स्वरको शुद्ध करनेवाला तथा कण्ठ और मुख-शोधक है ।

स्थूलग्रंथिवचार्क गुणाः ।

स्थूलग्रन्थिवचस्यार्कोविशेषात्कफकासहृत् ।

अर्थ-स्थूलग्रन्थिवचका अर्क-विशेष करके कफनाशक है ।

द्वीपान्तरवचार्क गुणाः ।

द्वीपान्तरवचायास्तुहरेच्छूलंफिरङ्गकम् ।

अर्थ-चोपचीनीका अर्क--शूल और फिरङ्गरोगनाशक है ।

हपुषार्कगुणाः ।

हपुषायाहरेत्प्लीहंविषमोहश्चदारुणम् ।

अर्थ-हाऊबेरका अर्क-प्लीहा, विष, और दारुणमूर्च्छाको हरे है ।

क्षुद्रवपुषार्कगुणाः ।

वपुषायाःसमीरार्शोग्रहणीगुल्मशूलहृत् ।

अर्थ-छोटेहाऊबेरका अर्क-वात, ववासीर, संग्रहणी, गुल्म और शूल-नाशक है ।

विडङ्गार्कगुणाः ।

विडङ्गस्योदरश्लेष्मकृमिवातविबन्धनुत् ।

अर्थ-वायविडङ्गका अर्क-उदररोग, कफ, कृमि, वात और विबंधनाशकहै ।

तुम्बुरोरर्कगुणाः ।

तुम्बुरोर्गुरुताश्वासप्लीहागुल्मकृमीन्हरेत् ।

अर्थ--तुम्बुरुका अर्क--शरीरका भारीपन, श्वास, प्लीहा, गुल्म और कृमिको दूर करे है ।

वंशलोचनार्कगुणाः ।

वंशलोचनजस्तृष्णाक्षयश्वासज्वरान्हरेत् ।

अर्थ--वंशलोचनका अर्क--तृष्णा, क्षय, श्वास, और ज्वरको हरे है ।

समुद्रफेनार्कगुणाः ।

समुद्रफेनजःशीतोरेचकःकफहृत्परः

अर्थ- समुद्रफेनका अर्क--शीतल, दस्तावर और कफनाशक है ।

जीवकार्कगुणाः ।

जीवकोत्थःशुक्रकफबलकृच्छीतलःसमः ।

अर्थ-जीवकका अर्क-शुक्र, कफ, और बलकारक और समशीतल है।

ऋषभकार्कगुणाः ।

आर्षभःपित्तदाहास्रकासवातक्षयापहः ।

अर्थ-ऋषभकका अर्क-पित्त, दाह, रुधिरविकार, खांसी, वात और क्षयको क्षयकरे है ।

मेदार्क गुणाः ।

सुनामेदोद्भवार्कस्तुदृश्यःस्तन्यःकफावहः ।

अर्थ-मेदका अर्क-नेत्रोंको हितकारी, स्तनोंमें दूध करनेवाला और कफकारी है ।

महामेदार्कगुणाः ।

महामेदोद्भवःशीतोरक्तवातज्वरप्रणुत् ।

अर्थ-महामेदाका अर्क-शीतल, तथा वात, रक्त और ज्वरनाशक है।

काकोल्यर्कगुणाः ।

काकोल्याःशुक्रलःशीतोपित्तशोषज्वरापहः ।

अर्थ--काकोलीका अर्क--शुक्रजनक, शीतल तथा पित्त, शोष और ज्वरनाशक है।

क्षीरकाकोल्यर्क गुणाः ।

क्षीरकाकोलिकाजातोबृंहणोदाहवातहा ।

अर्थ--क्षीरकाकोलीका अर्क--पुष्टिकारक, तथा दाह और वातविनाशकहै।

ऋद्ध्यर्क गुणाः ।

ऋद्ध्याबल्यस्त्रिदोषघ्नोरक्तपित्तविनाशकः ।

अर्थ--ऋद्धिका अर्क-बलकारी, त्रिदोषनाशक, और रक्तपित्तनाशकहै।

वृद्ध्यर्कगुणाः ।

वृद्ध्यागर्भगतःशीतःक्षतकासक्षयापहः ।

अर्थ- वृद्धिका अर्क--शीतल तथा क्षत खांसी और क्षयरोगनाशकहै ।

मधुकार्कगुणाः ।

मधुयष्ट्याकेशकरःस्वर्य्यःपित्तानिलास्रजित् ।

अर्थ--मुलेठीका अर्क--केशोंको उत्पन्न करनेवाला, स्वरको उत्तमकरनेवाला तथा पित्त, वात और रुधिरके विकारोंको हरे है ।

जलमधुयष्ट्यर्कगुणाः ।

जलयष्ट्याविषच्छर्दितृष्णाग्लानिक्षयापहः ।

अ०-जलमुलेठीका अर्क--विष, वमन, तृषा, ग्लानि और क्षयरोगनाशक है।

काम्पिल्लार्कगुणाः ।

काम्पिल्लस्यविरेकीस्यान्मेहनस्यविकारनुत् ।

अ०-कवीलेका अर्क--विरेचक और मूत्रविकारनिवारक है।

आरग्वधार्कगुणाः ।

आरग्वधस्यपित्तास्रवातोदावर्त्तशूलहृत् ।
कण्डूमेहश्वासकासकृमिकुष्ठज्वरापहः ॥

अ०-अमलतासका अर्क--रक्तपित्त, वात; उदावर्त्त, शूल, कण्डू, प्रमेह, खाँसी, कृमि, कोढ और ज्वरनाशक है।

भूनिम्बार्कगुणाः ।

भूनिम्बस्यतृषाकुष्ठज्वरव्रणकृमिप्रणुत् ।

अ०-चिरायतेका अर्क--तृषा, कोढ, ज्वर, व्रण और कृमिनाशक है।

वत्सार्कगुणाः ।

भद्रमानस्तुपित्तास्रकृमिवीसर्पकुष्ठनुत् ।

अ०-इन्द्रजौका अर्क-रक्तपित्त, कृमि, विसर्प और कुष्टको नष्ट करे है।

मदनफलार्कगुणाः ।

मदनोत्थश्छर्दनेनचतुर्थज्वरकादिहृत् ।

अ०-मैनफलका अर्क--वमनकारक और चातुर्थिक (चौथिया) ज्वरनि-
है।

रास्नार्कगुणाः ।

रास्नोद्भवःसमीरास्रवातशूलोदरापहः ।

अ०-रास्नाका अर्कः-वातरक्त, वातशूल और उदररोगनाशक है

नागभिन्नार्कगुणाः ।

नागभिन्नोद्भवाभोगीलूताद्याखुविकारहृत् ।

अ०-नाकुलीका अर्क--सर्प, मकडी और मूसे आदिके विषको हरे है।

माचिकार्कगुणाः ।

माचिकाजस्तुपित्तास्रपक्वातीसारहालघुः ।

अ०-मोईयेका अर्क--हलका, रक्तपित्त और पक्वातिसारनाशक है।

तेजस्विन्यर्कगुणाः ।

तेजस्विन्याःश्वासकासकफहृद्वह्निदीपनः ।

अर्थ—तेजबलका अर्क—श्वास, खाँसी और कफनाशक है तथा अग्निप्रदीपक है ।

ज्योतिष्मत्यर्कगुणाः ।

ज्योतिष्मत्यावान्तिकरोवह्निबुद्धिस्मृतिप्रदः ।

अर्थ—मालकांगुनीका अर्क—वमनकारक तथा अग्नि, बुद्धि और स्मरणशक्तिवर्द्धक है ।

कुष्ठार्कगुणाः ।

कुष्ठस्यहन्तिवातास्रकासकुष्ठमरुत्कफान् ।

अर्थ—कूठका अर्क—वातरक्त, खाँसी, कोढ, वात और कफनाशक है ।

पौष्करार्कगुणाः ।

पौष्करस्यारुचिश्वासान्विशेषात्पार्श्वशूलनुत् ।

अर्थ—पोहकरमूलका अर्क—अरुचि, श्वास और विशेषकरके पसवाडेकी पीडाको दूर करे है ।

क्षीरिण्यर्कगुणाः ।

हेमाह्वायारेकवान्तिकरःकण्डूविनाशनः ।

अर्थ—स्वर्णक्षीरीका अर्क—विरेचक, वमनकारक और कण्डूनाशक है ।

शृङ्ग्यर्कगुणाः ।

शृङ्गीहरेदूर्ध्ववातहिक्कातृष्णाक्षयज्वरान् ।

अर्थ—काकडाशिंगीका अर्क—ऊर्ध्ववात, हिचकी, तृषा, क्षय और ज्वरनाशक है ।

कट्फलार्कगुणाः ।

कट्फलोत्थःश्वासकासप्रमेहार्शोऽरुचिंहरेत् ।

अर्थ—कायफलका अर्क—श्वास खाँसी, प्रमेह, बवासीर और अरुचिको दूर करे है ।

भार्ग्यर्कगुणाः ।

भार्ग्याहरेत्कफश्वासपीनसज्वरमारुतान् ।

अर्थ—भारंगीका अर्क—कफ, श्वास, पीनस, ज्वर और वातविनाशक है ।

पाषाणभेदार्कगुणाः ।

पाषाणभेदजोयोनिरोगहृच्छ्वासगुल्महा ।

अर्थ-पाषाणभेदका अर्क-योनिरोग, श्वास और गुल्मनाशक है।

धातक्यर्कगुणाः ।

धातकीजस्तृषासारविषकीटविसर्पजित् ।

अर्थ-धायके फूलोंका अर्क—तृषा, अतिसार, विष, कृमि और विसर्प-नाशक है।

समङ्गार्कगुणाः ।

माञ्जिष्ठजोविषश्लेष्मरक्तातीसारकुष्ठहा ।

अर्थ-मजीठका अर्क--विष, श्लेष्म, रक्तातिसार और कुष्ठनाशक है।

कुसुम्भार्कगुणाः ।

कुसुम्भजोवर्णकरोरक्तपित्तकफापहः ।

अर्थ-कसूमका अर्क—वर्णको सुन्दर करनेवाला तथा रक्तपित्त और कफनाशक है।

लाक्षार्कगुणाः ।

लाक्षाजःकृमिवीसर्पव्रणोरःक्षतकुष्ठहा ।

अर्थ-लाखका अर्क-कृमि, विसर्प, व्रण, उरःक्षत और कुष्ठनाशक है।

हरिद्रार्कगुणाः ।

हरिद्रायामेहशोथत्वग्दोषव्रणपाण्डुनुत् ।

अर्थ-हलदीका अर्क-प्रमेह, सूजन, त्वचाके दोष, व्रण और पाण्डुरोग-नाशक है।

आरण्यहरिद्रार्कगुणाः ।

आरण्यकहरिद्रायाःकुष्ठवातास्रनाशनः ।

अर्थ-वनहलदीका अर्क--कोढ, वात और रक्तविकारविनाशक है।

कर्पूरहरिद्रार्कगुणाः ।

कर्पूरकहरिद्रायाःसर्वकण्डूविनाशनः ।

अर्थ-कपूरहलदीका अर्क-सर्वप्रकारके कण्डूनाशक है।

दारुहरिद्रार्कगुणाः ।

दार्व्याविशेषतोलेपान्नेत्रकर्णस्यरोगनुत् ।

अर्थ-दारुहलदीका अर्क—विशेष करके लेप करनेसे नेत्ररोग और कर्ण-रोगको हरे है।

रसाञ्जनार्कगुणाः ।

रसाञ्जनोद्भवोनेत्रविकारव्रणदोषनुत् ।

अर्थ-रसाञ्जन अर्थात् रसौतका अर्क-नेत्रविकार और व्रणदोषनिवारक है।

अवल्गुजार्कगुणाः ।

बाकुच्याःकृमिविष्टम्भपाण्डुशोफकफापहः ।

अर्थ-बापचीका अर्क-कृमि, विष्टम्भ, पाण्डु, सूजन और कफनाशक है।

चक्रमर्दार्कं गुणाः ।

प्रपुन्नाटस्यहन्त्येवकण्डूदद्रुविषानिलान् ।

अर्थ--चकवडका अर्क--खुजली, दाद, विष और वातविनाशक है।

अतिविषार्क गुणाः ।

विषजोदीप्तिकार्य्यर्कःकफपित्तातिसारहा ।

अर्थ- अतीसका अर्क-अग्निप्रदीपक तथा कफ, पित्त और अतिसारनाशक है।

लोध्रार्क गुणाः ।

लोध्रजःशीतलोग्राहीचक्षुष्यःकफपित्तनुत ।

अर्थ--लोधका अर्क-शीतल, मलरोधक, नेत्रोंको हितकारी तथा कफ और पित्तनाशक है ।

बृहत्पत्रार्कगुणाः ।

बृहत्पत्रोद्भवोनेत्र्योज्वरातीसारशोथहृत ।

अर्थ-पठानीलोधका अर्क--नेत्रोंको हितकारी, ज्वर, अतिसार और सूजनको हरे है ।

भल्लातकार्क गुणाः ।

भल्लातकोद्भवोहन्याज्ज्वरोदरकृमिव्रणान् ।

अर्थ-भिलावेका अर्क-ज्वर, उदररोग, कृमि और व्रणनाशक है।

गुडूच्यर्क गुणाः ।

गुडूच्यादीपनःश्वासकासपाण्डुज्वरापहः ।

अर्थ--गिलोयका अर्क--दीपन, तथा श्वास, खाँसी, पाण्डुरोग और ज्वरको हरे है ।

बिल्वार्क गुणाः ।

बैल्वःश्लेष्महरोबल्योलघुरुष्णश्चपाचनः ।

अर्थ--बेलका अर्क—कफनाशक, बलकारक, हलका, गरम और पाचक

काश्मर्य्यर्कगुणाः ।

गाम्भारीजोभ्रान्तितृष्णाशूलार्शोविषदाहनुत् ।
कुम्भेरका अर्क--भ्रान्ति, तृषा, शूल, बवासीर, विष और दाह
क है ।

पाटलार्क गुणाः ।

पाटल्याश्छर्दिशोफास्रतृष्णादाहारुचीर्हरेत् ।
अर्थ--पाडलका अर्क--वमन, सूजन, रुधिरविकार, तृषा, दाह और
चिनिवारक है ।

अग्निमन्थार्क गुणाः ।

अग्निमन्थोद्भवः शोफकृमिपाण्डुबलासनुत् ।
अर्थ--अरणीका अर्क--सूजन, कृमि, पाण्डु और कफनाशक है ।

श्योनाकार्क गुणाः ।

श्योनाकजस्तुगुल्मार्शःकृमिहृद्रुचिदीप्तिकृत् ।
अर्थ--श्योनाकका अर्क--गुल्म, बवासीर और कृमिनाशक और
दीपक है ।

शालिपर्ण्यर्क गुणाः

शालिपर्ण्याःक्षतकृमिज्वरच्छर्द्यतिसारहा ।
अर्थ--शालिपर्णीका अर्क--क्षतरोग, कृमि, ज्वर, वमन और अतिसार
रक है ।

पृश्निपर्ण्यर्कगुणाः ।

पृश्निपर्ण्याज्वरश्वासरक्तातीसारदाहहृत् ।
अर्थ-पिठवनका अर्क--ज्वर, श्वास, रक्तातिसार और दाहनाशक है ।

बृहत्यर्कगुणाः ।

वार्त्ताक्याज्वरवैरस्यमलारोचकशूलहा ।
अर्थ--बृहती अर्थात् कटाईका अर्क--ज्वर, मुखकी विरसता, मलदोष,
चि और शूलनाशक है ।

श्वेतकण्टकार्य्यर्कगुणाः ।

कण्टकार्य्यागर्भकरःपाचनःकफकासहा ।
अर्थ--सफेद कटेरीका अर्क--गर्भकारक, पाचन तथा कफ और खाँसीको
करे है ।

कण्टकार्य्यर्कगुणाः ।

कण्टकार्य्यादीपनश्च श्लेष्मशोफरुजापहः ।

अर्थ-कटेरीका अर्क--अग्निदीपक तथा श्लेष्म और सूजनको दूरकरैहै

गोक्षुरार्कगुणाः ।

गोक्षुरस्याश्मरीमेहकृच्छ्रहृद्रोगवातहा ।

अर्थ-गोखरूका अर्क-पथरी, प्रमेह, मूत्रकृच्छ्र, हृदयरोग और वात-विनाशक है ।

जीवन्त्यर्कगुणाः ।

जीवन्त्याः सारहन्नेत्र्योदोषत्रितयनाशनः ।

अर्थ--जीवन्तीका अर्क-नेत्रोंको हितकारी तथा त्रिदोष और अतिसार-नाशक है ।

मुद्गपर्ण्यर्कगुणाः ।

मुद्गपर्ण्याःशोफदाहग्रहण्यर्शोऽतिसारहृत् ।

अर्थ-मुगवनका अर्क-सूजन, दाह, संग्रहणी और अतिसार निवारकहै।

माषपर्ण्यर्कगुणाः ।

माषपर्ण्याःशुक्रकरोवातपित्तज्वरास्त्रजित् ।

अर्थ—मषवनका अर्क—शुक्रजनक तथा वात पित और रुधिरके दोषोंको दूर करे है ।

श्वेतैरण्डार्कगुणाः ।

पञ्चांगुलोद्भवःशूलशिरःपीडोदरापहः ।

अर्थ—सफेद अण्डका अर्क—शूल, शिरकी पीडा और उदररोगनाशकहै।

रक्तैरण्डार्कगुणाः ।

रुबुकोत्थोद्भवःश्वासकासकुष्ठाममारुतान् ।

अर्थ—लाल अंडका अर्क-श्वास, खाँसी, कोढ और आमवातनाशक है।

मन्दारार्कगुणाः ।

मन्दारजोवातकुष्ठकण्डूव्रणविषापहः

अर्थ-मन्दारका अर्क—वात, कुष्ठ, कण्डू, व्रण और विष विनाशकहै।

अर्क्यर्कगुणाः ।

अर्क्यर्कःप्लीहगुल्मार्शःश्लेष्मोदरकृमीन्हरेत् ।

अर्थ=आकका अर्क=प्लीहा, गुल्म, बवासीर, श्लेष्म, उदररोग और कृमिनाशक है ।

वज्र्यर्कगुणाः ।

वज्रीजोलेपतोहन्याद्व्रणशोफोदरव्रणान् ।

अर्थ–वज्री (एकप्रकारका सेहुंड) का अर्क–लेपसे व्रण, सूजन और रोगनाशक है ।

सातलार्कगुणाः ।

सातलोत्थःकफानाहपित्तोदावर्त्तशोफहा ।

अर्थ-सातलाका अर्क–कफ, आनाह पित्त, उदावर्त्त और सूजनको हरे है

लांगल्यर्कगुणाः ।

लाङ्गल्यालेपतोहन्याच्छोफार्शोव्रणरोगहत् ।

अर्थ–कलिहारीके अर्कका लेप करनेसे सूजन, बवासीर और व्रणको है।

श्वेतकरवीरार्कगुणाः ।

करवीरोद्भवोनेत्रशोफकुष्ठव्रणापहः ।

अर्थ-सफेद कनेरका अर्क–नेत्ररोग, सूजन, कोढ और व्रणविनाशक है ।

रक्तकरवीरार्कगुणाः ।

चण्डातोत्थस्तुविषहृद्भक्षणेलेपनेसुहृत् ।

अर्थ–लाल कनेरका अर्क–भक्षण करनेमें विषनाशक और लेप करनेमें उपकारी है ।

धत्तूरबीजार्कगुणाः ।

धत्तूरजोहरेल्लेपाद्यूकाकृमिविषादिकम् ।

अर्थ–धतूरका अर्क–लेपकरनेसे यूका, कृमि और विषदोषनाशक है ।

वासार्कगुणाः ।

वासोद्भवोज्वरच्छर्दिमेहकुष्ठक्षयापहः ।

अर्थ-अडूसेका अर्क–ज्वर, वमन, प्रमेह, कोढ और क्षयरोगनाशक है ।

पर्पटार्कगुणाः ।

पार्पटोहन्तिपित्तास्रभ्रमतृष्णाकफज्वरान् ।

अर्थ-पित्तपापडेका अर्क–रक्तपित्त, भ्रम, तृषा, कफ और ज्वरको हरे है ।

निम्बार्कगुणाः ।

निम्बजःश्रमतृट्कासज्वरारुचिवमिप्रणुत् ।

अर्थ-नीमका अर्क–श्रम, तृषा, खाँसी, ज्वर, अरुचि और वमनविवारक है ।

महानिम्बार्कगुणाः ।

महानिम्बोद्भवोगुल्ममूषिकाविषनाशनः ।

अर्थ—बकायननीमका अर्क गुल्म और मूषेके विषको हरे है।

पारिभद्रार्कगुणाः ।

पारिभद्रोऽनिलश्लेष्मशोफमदकृमिप्रणुत् ।

अर्थ—फरहदका अर्क-वात, श्लेष्म, शोफ, मेद और कृमिविनाशक है।

काञ्चनारार्कगुणाः ।

काञ्चनारोगण्डमालागुदभ्रंशव्रणापहः ।

अर्थ—कचनारका अर्क-गण्डमाला, गुदभ्रंश और व्रणविनाशक है।

कोविदारार्कगुणाः ।

कोविदारस्तुपित्तास्रप्रदरक्षयकासहा ।

अर्थ-लाल कचनारका अर्क- पित्त, रुधिरविकार, क्षय औरखाँसीको हरे है

रक्तशोभाञ्जनार्कगुणाः ।

शोभाञ्जनार्कोरुचिकृच्छुक्रलोग्राहिदीपनः ।

अर्थ—लालसैंजिनेका अर्क-रुचिकारक, शुक्रजनक, मलरोधक और दीपन है।

श्वेतशोभाञ्जनार्कगुणाः ।

मधुशिग्रूद्भवोहन्याद्विद्रधिश्वयथुकृमीन ।

अर्थ—मधुशिग्रु वा सफेद सैंजिनेका अर्क-विद्रधि, सूजन और कृमिरोगनाशक है।

शिग्रुजार्कगुणाः ।

शिग्रूजोविषहन्नेत्र्यस्तस्याच्छिरोर्तिहृत ।

अर्थ—सामान्यसैंजिनेका अर्क--नेत्रोंको हितकारी, विषविनाशक और इसका नासलेनेसे शिरकी पीडा दूर होती है।

गिरिकर्ण्यर्कगुणाः ।

गिरिकर्ण्याः कर्णशूलशोफव्रणविषापहः ।

अर्थ—कोयलीका अर्क-कर्णशूल सूजन, व्रण और विषविनाशक है।

सिन्धुवारार्कगुणाः ।

सिन्धुवारोद्भवोहन्तिशूलशोफाममारुतान् ।

अर्थ—सम्हालुका अर्क-शूल, सूजन और आमवातनाशक है।

निर्गुण्ड्यर्कगुणाः ।

निर्गुण्ड्यर्कोदरेज्जन्तुव्रणकुष्ठारुचिंलघुः ।

अर्थ-निर्गुण्डीका अर्क-हलका तथा कृमि, व्रण, कोढ और अरुचिनाशक है।

कुटजार्क गुणाः।

कौटजोदीपनःशीतः कफतृष्णामकुष्ठजित्।

अर्थ-कुडेका अर्क-दीपन, शीतल तथा कफ, तृषा, आम और कुष्ठनाशक है।

करञ्जार्क गुणाः।

कारञ्जःकफगुल्मार्शोव्रणकृमिरुजापहः।

अर्थ-करंजका अर्क-कफ, गुल्म, बवासीर व्रण और कृमिरोगनाशक है।

घृतकरञ्जार्क गुणाः।

घृतकारञ्जकोभेदीवातार्शःकृमिकुष्ठजित्।

अर्थ-घृतकरंजका अर्क-भेदक तथा वात, बवासीर, कृमि और कुष्ठनाशक है।

करञ्जार्क गुणाः।

कारंजोवान्तिवातार्शःकृमिकुष्ठप्रमेहजित्।

अर्थ-करंजुयेका अर्क-वमन, वात, बवासीर कृमि, कोढ और प्रमेहनाशक है।

श्वेतगुञ्जार्क गुणाः।

उच्चटार्कःकेशकरोवातपित्तकफापहः।

अर्थ-सफेद घुघुचीका अर्क-केशोंको उत्पन्न करनेवाला तथा वात, पित्त और कफनाशक है।

रक्तगुञ्जार्क गुणाः।

गुञ्जायाहरतेश्वासमुखशोषश्रमज्वरान्।

अर्थ-घुघुचीका अर्क-श्वास, मुखशोष, श्रम और ज्वरनाशक है।

शूकशिम्ब्यर्क गुणाः।

कपिकच्छूद्भवोवृष्योबृंहणोवाजिकर्म्मकृत्।

अर्थ-कौंछका अर्क-वीर्य्यवर्द्धक, पुष्टिकारक और वाजीकरण है।

मांसरोहिण्यर्क गुणाः।

मांसरोहिण्युद्भवस्तुवृष्योदोषत्रयापहः।

अर्थ-मांसरोहिणीका अर्क-वीर्य्यवर्द्धक और त्रिदोषनाशक है।

चिह्रकार्क गुणाः।

चैह्वःकुर्य्याद्धातुपुष्टिंतत्फलंमारयेज्जनान्।

अर्थ—चिहकका अर्क-धातुपुष्टिकारक और इसका फल प्राणनाशक है।

वेतसार्क गुणाः।

वेतसोहरतेदाहंशोथार्शोयोनिरुग्व्रणान्।

अर्थ—वेतका अर्क-दाह, सूजन, ववासीर, योनिरोग और व्रणविनाशक है।

जलवेतसार्क गुणाः।

जलवेतसजोग्राहीशीतोवातप्रकोपनः।

अर्थ—जलवेतका अर्क-मलरोधक, शीतल और वातप्रकोपक है।

हिज्जलार्क गुणाः।

हिज्जलार्कस्तुहरतेचराचरविषंस्फुटम्।

अर्थ—समुद्रफलका अर्क-स्थावर और जंगम दोनों प्रकारके विषोंको हरैहै।

अंकोटार्क गुणाः।

अङ्कोटकस्यशूलामशोथग्रहविषापहः।

अर्थ—अंकोलका अर्क-शूल, आम, सूजन, अंगग्रह और विषविनाशक है।

बलार्कगुणाः।

बलार्कोग्राहिवातास्रपित्तास्रक्षतनाशनः।

अर्थ—खिरंटीका अर्क-मलरोधक, वातरक्त, रक्तपित्त और क्षतनाशक है।

अतिबलार्क गुणाः।

अतिपूर्वाबलार्कस्तुमूर्च्छामोहहरःपरः।

अर्थ—कंघीका अर्क-मूर्च्छा और मोहनाशक है।

लक्ष्मणामूलार्क गुणाः।

लक्ष्मणार्कन्तुयासेवेद्वन्ध्यापिलभतेसुतम्।

अर्थ—लक्ष्मणाके अर्कको बाँझ स्त्रीभी सेवन करे तो पुत्रवाली होती है।

स्वर्णवल्ल्यर्कगुणाः

स्वर्णवल्ल्याःशिरःपीडांत्रिदोषान्हन्तिदुग्धदः।

अर्थ—स्वर्णवल्लीका अर्क- शिरकी पीडा और त्रिदोषनाशक है तथा दुग्धदायक है।

कार्पास्यर्कगुणाः।

कार्पास्यर्कः कर्णसंस्थःकर्णरोगान्विनाशयेत्।

अर्थ—कपासका अर्क–कानमें डालनेसे कानके रोगोंको हरे है।

वंशार्कगुणाः ।

वंशजःकफपित्तघ्नःकुष्ठघ्नोव्रणशोषजित् ।

अर्थ—बाँसका अर्क--कफ, पित्त, कोढ, व्रण और शोषनिवारक है ।

नलार्कगुणाः ।

नलार्कोवस्तियोन्यार्त्तिदाहपित्तविसर्पहृत् ।

अर्थ—नलका अर्क--वस्तिकी पीडा, योनिकी पीडा, दाह, पित्त और विसर्परोगनाशक है ।

पाण्डयर्कगुणाः ।

पाण्योजयेज्ज्वरच्छर्दिकुष्ठातीसारहृद्रुजः ।

अर्थ—पाण्डीरका अर्क--ज्वर, वमन, कोढ, अतिसार और हृदयरोगनाशक है ।

शरपुंखार्कगुणाः ।

शरपुंखोद्भवःप्लीहगुल्मव्रणविषापहः ।

अर्थ—सरफोंकेका अर्क--प्लीहा, गुल्म, व्रण और विषनाशक है ।

दुरालभार्कगुणाः ।

यवासजोमदभ्रान्तिपित्तहृत्कुष्ठकासहृत् ।

अर्थ—जवासेका अर्क--मत्तता, भ्रम पित्त, कोढ और खाँसीको हरे है ।

मुण्डयर्कगुणाः ।

मुण्डीजोऽत्यन्तबलकृत्प्लीहमोहानिलार्त्तिजित् ।

अर्थ—मुण्डीका अर्क-अत्यन्त बलकारक तथा प्लीहा, मोह और वातरोगनाशक है ।

अपामार्गार्कगुणाः ।

अपामार्गभवश्छर्दिकफमेदोऽनिलापहः ।

अर्थ—चिरचिटेका अर्क-वमन, कफ, मेद और वातविनाशक है ।

रक्तापामार्गार्कगुणाः ।

आरक्तापामार्गभवोधातुस्तम्भनकारकः ।

अर्थ—लालचिरचिटेका अर्क-धातुस्तम्भक है ।

कोकिलाक्षार्कगुणाः ।

कोकिलाक्षभवःशीघ्रंसेकाच्छोथंनिवारयेत् ।

अर्थ—तालमखानेका अर्क--सेक करनेसे शोफको हरे है ।

अस्थिसंहारिकार्कगुणाः ।

अस्थिसंहारिकायास्तु भग्नसंधानकृत्स्थिरः ।

अर्थ—अस्थिसंहारकाका अर्क-टूटेहुए हाडोंको जोडनेवाला है।

कुमार्य्यर्कगुणाः ।

कुमारिकायाग्रन्थ्यग्निदग्धविस्फोटकाञ्जयेत् ।

अर्थ—घीकुआरका अर्क-ग्रन्थि, अग्निदग्ध और विस्फोटनिवारक है।

पुनर्नवार्कगुणाः ।

पुनर्नवायाःश्वेतायाःसर्वनेत्रामयापहः ।

अर्थ—विषखपरेका अर्क-सर्वप्रकारके नेत्ररोगनाशक है ।

रक्तपुनर्नवार्कगुणाः ।

पुनर्नवायारक्तायाग्राहीपित्तास्रनाशनः ।

अर्थ—सांठका अर्क--मलरोधक और रक्तपित्तनाशक है ।

प्रसारिण्यर्कगुणाः ।

प्रसारिण्यावातहरोवृष्यःसन्धानकृत्सरः ।

अर्थ—पसरनका अर्क-वातविनाशक, वृष्य, व्रणनाशक और सारक है।

शारिवार्कगुणाः ।

शारिवायावह्निमांद्यकासामयविनाशनः ।

अर्थ—सरिवका अर्क--अग्निमान्द्य और कासरोगनाशक है ।

भृङ्गराजार्कगुणाः ।

भृङ्गराजस्यदन्त्योऽर्कःकेश्योरुच्यःशिरोर्तिहा ।

अर्थ—भँगरेका अर्क-दांतोंको हितकारी, केशोंको सुंदरकरनेवाला, रुचिकारक और शिरोरोगनाशक है ।

शणपुष्प्यर्कगुणाः ।

शणपुष्पीलतायास्तुह्यर्कःपित्तकफान्तकः ।

अर्थ—शणपुष्पी, पटशनका अर्क -पित्त और कफनाशक है ।

त्रायन्त्यर्कगुणाः ।

त्रायन्त्यर्कःशूलविषविलेपिज्वरनाशनः ।

अर्थ—त्रायमाणका अर्क--शूल, विष और विलेपकज्वरनाशक है ।

मूर्वार्कगुणाः ।

मूर्वायामेहहृद्रोगकण्डूकुष्ठज्वरापहः ।

अर्थ-मूर्वाका अर्क-प्रमेह, हृदयरोग, कण्डू, कुष्ठ और ज्वररोगनाशकहै ।

काकमाच्यर्कगुणाः

काकमाच्यानेत्रहितश्छर्दिहृद्रोगनाशनः।

अर्थ-मकोयकाअर्क-नेत्रोंको हितकारी तथा वमन और हृदयरोगनाशकहैं ।

काकनासार्कगुणाः ।

काकनासाभवोवाम्यःशोफार्शःश्वित्रकुष्ठहृत् ।

अर्थ-काकनासा (कौआठोडी) का अर्क-वमनकारक, तथा सूजन बवासीर, और श्वित्रकुष्ठनाशक है ।

काकजंघार्कगुणाः ।

काकजंघोद्भवोहन्यात्ज्वरकण्डूविषक्रिमीन् ।

अर्थ-काकजँघा (मसी) का अर्क-ज्वर, कण्डू, विष और कृमिरोगनाशकहै ।

नागाह्वार्कगुणाः ।

नागाह्वायाहरेच्छूलंयोनिदोषवमिक्रिमीन् ।

अर्थ-नागबला गंगेरनका अर्क-शूलरोग, योनिदोष, वमन और कृमिरोगनाशक है ।

मेषशृंग्यर्कगुणाः ।

मेषशृंग्याःश्वासकासव्रणश्लेष्माक्षिशूलहा ।

अर्थ- मेढाशिंगीका अर्क-श्वास, खांसी, व्रण, कफ, नेत्ररोग और शूलनाशक है ।

हंसपद्यर्कगुणाः

हंसपद्याहन्तिलूताम्भूतरक्तव्रणान्विषम् ।

अर्थ—हंसपदीका अर्क—मकडीका विष, भूतोन्माद, रक्तव्रण और सबप्रकारके विषोंको हरे है ।

सोमवल्ल्यर्कगुणाः ।

सोमवल्ल्यास्त्रिदोषघ्नःक्षीरकृच्चरसायनः ।

अर्थ—सोमलताका अर्क—त्रिदोषनाशक; क्षीरजनक और रसायनहै ।

आकाशवल्ल्यर्कगुणाः ।

आकाशवल्याःशीतोऽर्कःपित्तश्लेष्मामनाशनः ।

अर्थ-आकाशवेलका अर्क—शीतल तथा पित्त, कफ और आमनाशक है ।

पातालगरुडार्कगुणाः ।

पातालगरुडीजोऽर्कोवृष्योवातगदापहः ।

अर्थ-छिरहिंटेका अर्क-वीर्य्यवर्द्धक, और वातरोगनाशक है ।

वन्दाकार्कगुणाः ।

वन्दावृक्षोद्भवोऽर्कस्तुविषरक्षोव्रणापहः ।

अर्थ-वंदाका अर्क-विषदोष, रासक्षबाधा और व्रणविनाशक है।

वटपत्र्यर्कगुणाः ।

वटपत्रभवश्चोष्णो योनिमूत्रगदापहः ।

अर्थ-वटपत्रीका अर्क-गरम तथा योनिरोग और मूत्ररोगनाशक है।

हिंगुपत्र्यर्कगुणाः ।

हिंगुपत्र्याविबन्धार्शोश्लेष्मगुल्मानिलापहः

अर्थ-हिंगुपत्रीका अर्क-विबंध, बवासीर, श्लेष्म, गुल्म, और वात रोगनाशक है ।

वंशपत्र्यर्कगुणाः ।

वंशपत्र्याःपाचनोष्णोहृद्बस्तिगदसंघहत् ।

अर्थ-वंशपत्रीका अर्क-पाचन, गरम तथा हृदयरोग और वस्तिरोग नाशक है।

मत्स्याक्ष्यर्कगुणाः ।

मत्स्याक्ष्यर्कोग्राहिशीतःकुष्ठपित्तकफास्रजित् ।

अर्थ-मच्छेछीका अर्क-मलरोधक, शीतल तथा कोढ, पित्त, कफ और रुधिरके दोषोंको हरे है ।

सर्पाक्ष्यर्कगुणाः ।

सर्पाक्ष्यारोपणःसर्पवृश्चिकादिविषापहः ।

अर्थ-गंडिनीका अर्क-व्रणको भरनेवाला तथा सर्प और वृश्चिकादिके विषको हरनेवाला है ।

शङ्खपुष्प्यर्कगुणाः ।

शंखपुष्प्याविषहरःकान्तिस्मृतिबलाग्निदः ।

अर्थ-शंखपुष्पीका अर्क-विषनाशक तथा कान्ति, स्मरणशक्ति, बल और अग्निकारक है ।

अर्कपुष्पार्कगुणाः

अर्कपुष्पाकृमिश्लेष्ममेहपित्तविकारहा ।

अर्थ—अर्कपुष्पीका अर्क—कृमि, श्लेष्म, प्रमेह और पित्तरोगनाशक है।

लज्जालुकार्क गुणाः।

लज्जालुकायाभगरुग्रक्तपित्तातिसारहृत्।

अर्थ—लज्जालुका अर्क—योनिरोग, रक्तपित्त और अतिसाररोगनिवारक है।

अलम्बुषार्क गुणाः।

अलम्बुषासम्भवोऽर्कःकृमिपित्तकफापहः।

अर्थ—अलम्बुषा (लज्जालुभेद) का अर्क—कृमि, पित्त और कफनाशक।

दुग्धिकार्क गुणाः।

दुग्धिकायाःकफकरोवृष्यःस्तम्भीकृमिप्रणुत्।

अर्थ—दुद्धीका अर्क—कफनाशक, वृष्य, स्तम्भक और कृमिनाशक है।

भूम्यामलकार्क गुणाः।

भूम्यामल्याःकासतृषाकफापाण्डुक्षतापहः।

अर्थ—भुइंआमलेका अर्क—खाँसी तृषा, कफ पाण्डु और क्षतरोगनाशक है।

ब्राह्म्यर्क गुणाः।

ब्राह्म्याबुद्धिप्रदश्चार्कःषण्मासाभ्यासतः कविः।

अर्थ—ब्राह्मीका अर्क—बुद्धिवर्द्धक, इसको छः महीने सेवन करनेसे कवि हो जाता है।

ब्रह्ममण्डूक्यर्क गुणाः।

ब्रह्ममण्डूकजःपाण्डुविषशोफज्वरान्हरेत्।

अर्थ—ब्रह्ममण्डूकीका अर्क—पाण्डु, विष, सूजन और ज्वरनाशक है।

द्रोणपुष्प्यर्क गुणाः।

द्रोणपुष्प्याज्वरश्वासकामलाशोफजन्तुहृत्।

अर्थ—द्रोणपुष्पीका अर्क—ज्वर, श्वास, कामला, सूजन और कृमिरोग-नाशक है।

सूर्य्यमुख्यर्क गुणाः।

सूर्य्यमुख्युद्भवःस्फोटयोनिरुक्कृमिपाण्डुहा।

अर्थ—सूर्य्यमुखीका अर्क—विस्फोट, योनिरोग, कृमि और पाण्डुरोग नाशक है।

वन्ध्याकर्कोटक्यर्क गुणाः।

वन्ध्याकर्कोटकीजातःसर्पदंशव्रणापहः।

अर्थ—बाँझककोडेका अर्क—सर्पविष और व्रणविनाशक है।

मार्कंडिकार्क गुणाः ।

मार्कण्डिकायाद्दुर्गंधविषगुल्मोदरापहः ।

अर्थ—मार्कण्डिका (एक प्रकारका ककोडा) का अर्क-दुर्गंध, विष, गुल्म और उदररोगनाशक है ।

देवदाल्यर्क गुणाः ।

देवदाल्याःशूलगुल्मश्लेष्माशोंवातजित्सरः ।

अर्थ—देवदालीका अर्क-शूल, गुल्म, श्लेष्म, बवासीर और वातनाशक है तथा दस्तावर है ।

धत्तूरार्क गुणाः ।

ग्राहीधत्तूरजःशीतोवह्निकृद्व्रणदाहहा ।

अर्थ—धतूरेका अर्क-मलरोधक, शीतल, अग्निजनक तथा व्रण और दाहनाशक है ।

गोजिह्वार्क गुणाः ।

गोजिह्वाजामेहकासव्रणसारज्वरापहः ।

अर्थ—गोभीका अर्क-प्रमेह खाँसी, व्रण, अतिसार और ज्वरनाशक है ।

नागपुष्प्यर्क गुणाः ।

नागपुष्प्याःसर्वविषसर्वग्रहनिवारणः ।

अर्थ—नागदमनीका अर्क-सर्वप्रकारके विष और सर्वप्रकारके ग्रहदोष-निवारक है ।

बिल्वतर्व्यर्क गुणाः ।

बैल्वतर्व्योमूत्रघाताश्मरीयोन्यनिलार्त्तिजित् ।

अर्थ—बेलतरीकाअर्क-मूत्राघात, पथरी, योनिरोग और वातविनाशक है ।

छिक्कन्यन्यर्क गुणाः ।

छिक्कन्यावह्निरुचिकृदर्शःकुष्ठकृमिप्रणुत् ।

अर्थ—नाकछिकनाका अर्क-अग्निकारक, रुचिजनक तथा बवासीर, कोढ और कृमिनाशक है ।

कुकुन्दरार्क गुणाः ।

कौकुन्दरोज्वरंरक्तंमुखशोषंकफंहरेत् ।

अर्थ—कुकुरोंदेका अर्क-ज्वर, रुधिरविकार, मुखशोष और कफनाशक है ।

सुदर्शनार्कगुणाः ।

सुदर्शनार्कश्चात्युष्णःकफशोफास्रवातजित् । (इ० लङ्कानाथः)

अर्थ—सुदर्शनका अर्क—अत्यन्त गरम तथा कफ, सूजन, रुधिरविकार और वातनाशक है

इति श्रीशालिग्रामनिघण्टुभूषणेऽर्कवर्गः समाप्तः ॥ १८ ॥

अथ मधुवर्गः ।

मधुनामानि ।

माक्षिकंमधुचक्षौद्रंपवित्रंकुसुमासवम् ।
भृङ्गवातंसारघंचपित्र्यंपुष्परसोद्भवम् ॥

अर्थ—माक्षिक, मधु, क्षौद्र, पवित्र, कुसुमासव, भृङ्गवात, सारघ, पित्र्य, पुष्परसोद्भव (माक्षीक, पुष्पासव, पुष्परसाह्वय, माध्वीक, वरटीवांत मकरन्दरस)।

संस्कृतभाषामें	मधु, माक्षिक ।
हिन्दीभाषामें	मधु, सहत ।
बंगभाषामें	मधु, मौ ।
मराठीभाषामें	मध ।
गुजरातीभाषामें	मध ।
कर्णाटकीभाषामें	जेनतुप्प ।
तैलिङ्गीभाषामें	तेनी ।
अंग्रेजीभाषामें	हनी । Honay
लेटिन्भाषामें	मेल । Mel
फारसीभाषामें	शहद, अगबीन ।
अरबीभाषामें	असलुल् नहल् ।

मधुसामान्यगुणाः ।

शीतंकषायंमधुरंलघुस्यात्सन्दीपनंलेहनमेवशस्तम् ।
संशोधनंवाव्रणशोधनञ्चसंरोपणंहृद्यतमञ्चबल्यम् ॥
त्रिदोषनाशंकुरुतेचपुष्टिंकासक्षयेवाक्षतजेचछर्द्याम् ।

हिक्काभ्रमेशोषणपीनसानांरक्तप्रमेहेश्वसनेतिसारे ॥
रक्तातिसारेचसरक्तपित्ततृण्मोहहृत्पार्श्वगदेऽपिशस्तः ।
नेत्रामयेवाग्रहणीगदेवाविषेप्रशस्तंमधुह्यल्पवातलम् ॥

(इतिहारीतसंहितायाम्)

अर्थ--मधु (सहत) शीतल, कषेला, मधुर, हलका, अग्निप्रदीपक, चाटनेमें उत्तम, संशोधक, व्रणको शोधनेवाला घावको भरनेवाला, हृदयको हितकारी, बलकारी, त्रिदोषहारी, पुष्टिकारी तथा खाँसीमें, क्षयमें, क्षतमें, छर्दीमें, हिक्कारोगमें, भ्रममें, शोषमें, पीनसरोगमें, रक्तप्रमेहमें, श्वासमें, अतिसारमें रक्तातिसारमें, नेत्ररोगमें संग्रहणीमें और विषरोगमें हितकारी है और कुछेक वातकारक है ।

अन्यच्च ।

मधुशीतंलघुस्वादुरूक्षंस्वर्य्यंचग्राहकम् । चक्षुष्यंलेखनंचाग्निदीपकंव्रणशोधकम् ॥ नाडीशुद्धिकरंसूक्ष्मंरोपणंमृदुवर्णकृत् । मेधाकरंचविशदंवृष्यंरुचिकरंमतम् ॥ आनन्दकृच्चतुवरंचाल्पवातप्रदंमतम् । कुष्ठार्शकासपित्तघ्नंरक्तदोषकफापहम् ॥ मेहक्रिमिमदग्लानितृष्णावान्त्यतिसारनुत् । दाहंक्षतंक्षयंमेदंक्षयंहिक्कांत्रिदोषकम् ॥ आध्मानवातंचविषंमलवन्धंचनाशयेत् । सर्वमेवव्रणानांतुरोपणंशोधकंमतम् ॥ अस्थिसन्धानकृत्तत्तुतप्तश्चविषवन्मतम् । उष्णद्रव्यैश्चोष्णकालेभक्षितंतापदायकम् ॥ (नि० र०)

अर्थ-मधु-शीतल, स्वादिष्ठ, रूखा, स्वरको शुद्धकरनेवाला, ग्राही, नेत्रोंको हितकारी, लेखन, अग्निप्रदीपक, व्रणशोधक, नाडीको शुद्धकरनेवाला, सूक्ष्म, रोपण, मृदु, वर्णकारक, मेधाजनक, विशद, वृष्य, रुचिकारक, आनन्दजनक, कषेला, अल्पवातकारक, तथा कोढ, बवासीर, खाँसी पित्त, रुधिरविकार, कफ, प्रमेह, कृमि, मद, ग्लानि, तृषा, वमन, अतिसार, दाह, क्षतक्षय मेद, क्षय, हिचकी, त्रिदोष, आध्मान, वायु, विष और मलबद्ध-

...क है । सर्वप्रकारके मधु-व्रणोंको भरनेवाले, शोधनेवाले, टूटेहाडोंको ...वाले हैं, यह गरम किया हुवा, अथवा उष्णकालमें उष्ण द्रव्योंके साथ ...हुवा विषके समान सन्तापको करता है ।

मधुजातिभेदाः ।

पौत्तिकंभ्रामरंक्षौद्रंमाक्षिकंछात्रमेवच ।
आर्घ्यमौद्दालकंदालमित्यष्टौमधुजातयः ।

...–पौत्तिक, भ्रामर, क्षौद्र, माक्षिक, छात्र, आर्घ्य औद्दालक और ...ह आठ मधुकी जाति हैं ।

एतेषां लक्षणानि ।

...लामक्षिकाज्ञेयामहत्यल्पाचसाद्विधा । महतीपुत्तिका- ...नीस्वल्पाक्षुद्रेतिकथ्यते॥ मध्यमामक्षिकानीलामक्षिके- ...भिधीयते । पुत्तिकाभ्रमरक्षुद्रामक्षिकासम्भवंमधु ॥ पौ- ...कादुच्यतेछात्रंवरटीछत्रसम्भवम् । तपोवनेजरत्कारोरा- ...मयुतरूद्भवम् । औद्दालकन्तुवल्मीककारिकीटविनि- ...तम् । दालमित्यभिनिर्दिष्टंवृक्षकोटरकीटजम् ॥

...–पिंगलवर्ण मक्खी बृहत् और क्षुद्र इन भेदोंसे दोप्रकारकी है, तहां ...क्खी पुत्तिका और क्षुद्र मक्खी क्षुद्रानामसे कही जाती है । मध्यम ...वाली नीले रंगकी मक्खी मक्षिकानामसे कही जाती है । पुत्तिका, ...क्षुद्रा और मक्षिका नामवाली मक्खियोंसे पौत्तिकादि चार प्रकारके ...उत्पत्ति होती है अर्थात् पुत्तिकानामवाली मक्खीसे पौत्तिक, भ्रमर ...क्खीसे भ्रामर, क्षुद्रासे क्षौद्र और मक्षिकासे माक्षिक नामवाले मधुकी ...होती है । वरटी नामवाले जो कीडे हैं उनके छत्तोंसे उत्पन्न हुवा जो ...को छात्र, जिस वनमें जरत्कारु ऋषिने तप किया है उसमें जो महु- ...हैं उन वृक्षोंमेंसे जो उत्पन्न हुवा मधु उसको आर्घ्य, वल्मीककारी ...बनाये हुये मधुको औद्दालक और वृक्षोंकी कोटरोंमें जो कीडे रहते ...मधुको दाल कहते हैं ।

एतेषां लक्षणानि ।

माक्षिकंतैलवर्णस्याद्घृतवर्णन्तुपौत्तिकम् ।

क्षौद्रंकपिलवर्णस्याच्छ्वेतंभ्रामरमुच्यते ॥

अर्थ—माक्षिक मधु तेलवर्ण, पौत्तिक घृतवर्ण, क्षौद्र मधु कपिलरंग और भ्रामर मधु सफेद रंगका होता है।

एतेषां गुणाः।

पौत्तिकंतेषुवीर्य्योष्णंकषायानुरसान्वयात्। वातासृक्पित्तकृद्भेदिविदाहिमदकृन्मधु ॥ पैच्छिल्यात्स्वादुभूयस्त्वाद्भ्रामरंगुरुकीर्त्तितम्। क्षौद्रंविशेषतोज्ञेयंशीतलंलघुलेखनम् ॥ तस्माल्लघुतरंरूक्षंमाक्षिकंप्रवरंस्मृतम्। श्वासादिषुचरोगेषु प्रशस्तंतद्विशेषतः ॥ छात्रंश्वित्रक्रिमिहरंरक्तपित्तहरंगुरु। आर्घ्यंचक्षुष्यमायुष्यंकफपित्तामवातजित् ॥ औद्दालकंकषायोष्णंकटुकुष्ठविषापहम्। दालंकफहरंरूक्षंदीपनंछर्दिमेहनुत् ॥

अर्थ-पौत्तिकमधु-उष्णवीर्य्य, किंचित्कषेला, वातवर्द्धक, रक्तपित्तजनक भेदक, मदकारक और मधुर है। भ्रामरमधु पिच्छिल, स्वादिष्ठ और भारी है। क्षौद्रमधु-अतिशयशीतल, हलका और लेखन है। माक्षिकमधु-अत्यन्त हलका, रूखा, सर्व मधुओंमें श्रेष्ठ और श्वासादिरोगोंमें हितकारी है। छात्र मधु-श्वित्र (कोढ) कृमि और रक्तपित्तरोगनाशक तथा भारी है। आर्घ्य मधु-नेत्रोंको हितकारी, आयुवर्द्धक, तथा कफपित्त और आमवातरोगनाशक है। औद्दालकमधु-कषेला, गरम, चरपरा, कोढ और विषविनाशक है। दालमधु-कफनाशक, रूखा, दीपन, वमन और प्रमेहनाशक है।

नवपुराणमधुगुणाः।

बृंहणीयंमधुनवंवातश्लेष्महरंपरम्।
पुराणंलघुसंग्राहिनिर्दोषंस्थौल्यनाशनम् ॥ (रा. व.)

अर्थ-नवीनमधु-पुष्टिकारक और वातकफनाशक है। पुराना मधु, हलका मलरोधक, दोषरहित और स्थूलतानाशक है।

मधुनःशर्करायाश्चगुडस्यापिविशेषतः।
एकसंवत्सरेतत्तुपुराणत्वंस्मृतंबुधैः ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-मधु, खांड, और गुड यह तीनों एक वर्ष व्यतीत होनेपर पुराने होते हैं ऐसा भावमिश्रने कहा है।

पक्कापक्कमधुगुणाः ।

दोषत्रयहरंपक्वमामम्लंत्रिदोषकृत् ॥ (रा. व.)

अर्थ-पक्कामधु-त्रिदोषनाशक और कच्चामधु-खट्टा और त्रिदोषजनकहै।

मधुनःशीतस्यगुणाधिक्यम् ।

पुष्पादपिरसंसविशाभ्रमरादयः । गृहीत्वामधुकुर्वन्तित-त्तगुणवन्मधु ॥ विषान्वयात्तदुष्णातुद्रव्येणोष्णेनवास-उष्णार्तस्योष्णकालेचस्मृतंविषसमंमधु ॥ (भा. प्र.)

अर्थ-विषैल भ्रमरादिक विषैले फूलोंसे रसको इकट्ठा करके शहत है, वह शहत शीतल रहनेपर गुणदायक होता है, विषयुक्त रहनेसे यह किया अनेक अवगुणकारक है, एसेही उष्णकालमें अथवा के साथ वा उष्णतासे पीडित मनुष्योंको मधु विषके समान कारी है।

सिक्थकनामानि

मयनंतुमधूच्छिष्टंमधुशेषंचसिक्थकम् ।
मध्वाधारोमदनकमधूषितमपिस्मृतम् ॥

अर्थ-मयन, मधूच्छिष्ट, मधुशेष, सिक्थक, मध्वाधार, मदनक, मधूषित, , शिक्थ, शिक्थक, मधुज, मधुसम्भव, मादन, काच, त्रिघस, , मोदन, मक्षिकामल, क्षौद्रेय, पीतराग, स्निग्ध, माक्षिकज, क्षौद्रज, माक्षिकाश्रय, मधूत्थित)

सं०	मधूच्छिष्ट।		मोतदर, मैनामु।
हिं०	मोम।	अं०	एल्लोवेक्स।
बं०	मोम।	लै०	सिराआल्वा।
म०	मेण।	फा०	मोमेजर्द।
गु०	मिण।	अ०	शया।

अस्यगुणाः ।

मदनंमृदुसुस्निग्धंभूतघ्नंव्रणरोपणम् ।
भग्नसन्धानकृद्वातकुष्ठवीसर्परक्तजित् ॥(भा. प्र.)

अर्थ-मोम-कोमल, स्निग्ध, भूतबाधाको हरनेवाला, व्रणको भरनेवाला, भग्नसन्धानकारक, तथा वात विसर्प और रुधिरके विकारोंको हरे है।

अन्यच्च।

सिक्थकंपिच्छिलंस्वादुकटुस्निग्धंमृदुस्मृतम्।अस्थिसंधिकरंव्रण्यंवातकुष्ठविसर्पनुत् ॥ रक्तदोषंवातरक्तंभूतदोषंच नाशयेत्। स्फुटितस्याङ्गलेपेनत्वचःसंधिकरंमतम् ॥

अर्थ-मोम-पिच्छिल, स्वादिष्ट, कटु, स्निग्ध, नरम, अस्थिसन्धानकारक, व्रणको हितकारी, तथा वात, कोढ, विसर्प, रुधिरविकार, वातरक्त, भूतबाधा और लेप करनेसे फटी हुई त्वचाको आराम करे है।

इति श्रीशालिग्रामनिघण्टुभूषणे मधुवर्गः समाप्तः॥ १९ ॥

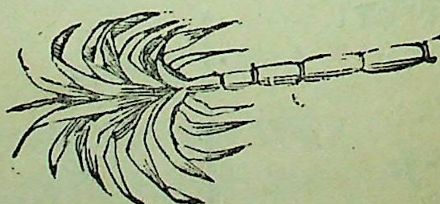
अथ इक्षुवर्गः।



इक्षुनामानि।

इक्षुर्दीर्घच्छदःप्रोक्तस्तथाभूरिरसोऽपिच।
गुडमूलोऽसिपत्रश्चतथामधुतृणःस्मृतः ॥

अर्थ-इक्षु, दीर्घच्छद, भूरिरस, गुडमूल, असिपत्र, मधुतृण, (मधुयष्टि, विपुलरस, गुडदारु, रसालु, कोशकार, इक्षुर, असिपत्रक, पयोधर, कर्कोटक, वंश, कान्तार, सुकुमारक, अधिपत्र, वृष्य, गुणतृण, मृत्युपुष्प, गुडदा, गण्डीदी, खड्गपत्रक, गुडकाष्ठ, तृणाधिप)



संस्कृतभाषामें	इक्षु।
हिन्दीभाषामें	ईख, गन्ना, गांडा, पौंडा, ऊष।
बङ्गभाषामें	आक, कुशिर।
मराठीभाषामें	ऊस।
गुजरातीभाषामें	शेरडी, शेरडीनुं मूल।

कर्णाटकीभाषामें	कबु, कब्बिनमेरु ।
तैलिङ्गीभाषामें	चिरकु ।
अंग्रेजीभाषामें	श्युगरकेन । Sugar Cane
लैटिन्भाषामें	सेक्करं आलत्र । Saccharum Officenarum सेक्करं आफिसीनेरं ।
फारसीभाषामें	नेशकर ।
अरबीभाषामें	कसूबुस शक्कर ।

इक्षुसाधारणगुणाः ।

इक्षवोरक्तपित्तघ्नबल्यावृष्याःकफप्रदाः ।
विपाकेमधुराःस्निग्धागुरवोमूत्रलाहिमाः ॥

अर्थ-ईख-रक्तपित्तनाशक, बलकारक, वीर्य्यवर्द्धक, कफकारी, पचनेमें मधुर, स्निग्ध, भारी, मूत्रजनक और शीतल है ।

सितेक्षुगुणाः ।

स्निग्धश्चसन्तर्पणबृंहणश्चसंजीवनःस्वादुरसःश्रमघ्नः ।
वृष्यश्चपित्तास्रशमंनयेच्चह्यंतर्विदाहीकफकृत्सितेक्षुः ॥

अर्थ-सफेद ईख—स्निग्ध, तृप्तिकारक, पुष्टिकारक, संजीवन, स्वादिष्ठ, श्रमनाशक, वृष्य, रक्तपित्तको शान्ति करनेवाली, शरीरके भीतरकी दाहको करनेवाली और कफकारक है ।

कृष्णेक्षुगुणाः ।

तद्वत्सुकृष्णोहिभवेद्गुणैश्चवृष्योभवेत्तर्पणदाहहंता ।
सक्षारकिञ्चिन्मधुरोरसेनशोषापहर्त्ताव्रणशोफकर्त्ता॥(हा. सं.)

अर्थ--काली ईख--व काले गन्ने-गुणोंमे सफेद ईखके समान हैं, वीर्य्यवर्द्धक, तृप्तिकारक, दाहनिवारक, क्षारयुक्त, मधुररसान्वित शोषनाशक और व्रण, तथा शोफजनक हैं ।

रक्तेक्षुगुणाः ।

रक्तेक्षुःशीतलःपाकेमधुरोमृदुवृष्यकः । बलकान्तिप्रदश्चैवधातुवृद्धिकरोगुरुः ॥ तुवरःपित्तदाहघ्नोवातविस्फोटनाशकः । मूत्राघातंमूत्रकृच्छ्रंरक्तदोषंचनाशयेत ॥ (नि. र.)

अर्थ-लालईख--शीतल, पाकमें मधुर, मृदु, वीर्य्यवर्द्धक, बलकारक, कान्तिजनक, धातुवर्द्धक, भारी कषेली, तथा पित्त, दाह, वात, विस्फोट, मूत्राघात, मूत्रकृच्छ्र और रुधिरके विकारोंको दूरकरेहै ।

इक्षुभेदाः ।

पौण्ड्रक भीरुकश्चापिवंशकःशतपोरकः । कान्तारस्तापसेक्षुश्चकाण्डेक्षुः सूचिपत्रकः ॥ नैपालोदीर्घपत्रश्चनीलपोरोऽथकोशकृत । इत्येताजातयस्तेषांकथयामिगुणानपि ॥

अर्थ--पौण्ड्रक, भीरुक, वंशक, शतपोरक, कान्तार, तापसेक्षु, काण्डेक्षु, सूचिपत्र, नैपाल, दीर्घपत्र, नीलपोर, कोशकृत्, यह ईखकी जातिहै । अब इनके गुणोंको कहताहूं ।

पौण्ड्रकभीरुकयोर्गुणाः ।

वातपित्तप्रशमनोमधुरोरसपाकयोः ।
शीतोबृंहणोबल्यःपौण्ड्कोभीरुकस्तथा ॥

अर्थ-पौण्ड्रक और भीरुकनामवाली ईख-वातपित्तनाशक, रस और पाकमें मधुर, शीतल, पुष्टिकारक और बलवर्द्धक है ।

कोशकारगुणाः ।

कोशकारोगुरुःशीतोरक्तपित्तक्षयापहः ।

अर्थ-कोशकारनामवाला गन्ना-भारी, शीतल तथा रक्तपित्त और क्षयरोगनाशक है ।

कान्तारेक्षुगुणाः ।

कान्तारेक्षुर्गुरुर्वृष्यःश्लेष्मलोबृंहणःसरः ।

अर्थ-कान्तारनामवाला गन्ना-भारी, वृष्य, कफकारी, पुष्टिकारक और सारक है ।

दीर्घपोरवंशकयोर्गुणाः ।

र्घपोरःसुकठिनःसक्षारोवंशकःस्मृतः ।

अर्थ-दीर्घपोरवाली ईख-कठिन औरा वंशक ईख-क्षारयुक्त है ।

शतपोरकगुणाः ।

शतपर्वाभवेत्किञ्चित्कोशकारगुणान्वितः ।
विशेषात्किञ्चिदुष्णश्चसक्षारःपवनापहः ॥

अर्थ—शतपोरक नामवाली ईख–किंचित् कोशकारईखके समान गुण-वाली है, विशेषता यह है कि, किंचित् गरम, क्षार और वातनाशक है ।

मनोगुप्ता गुणाः ।

मनोगुप्तावातहारीतृष्णामयविनाशिनी ।
सुशीतामधुरातीवरक्तपित्तविनाशिनी ॥

अर्थ—मनोगुप्तानामवाली ईख–वातविनाशक, तृषारोगनाशक, शीतल, अत्यन्त मधुर और रक्तपित्तविनाशक है ।

तापसेक्षु गुणाः ।

तापसेक्षुर्भवेन्मृद्वीमधुराश्लेष्मकोपना ।
तर्पणीरुचिकृच्चापिवृष्याचबलकारिणी ।

अर्थ—तापसेक्षु–नरम, मधुर, श्लेष्मप्रकोपक, तृप्तिकारक, रुचिजनक, वीर्यवर्द्धक और बलकारक है ।

काण्डेक्षु गुणाः ।

एवंगुणैस्तुकाण्डेक्षुःसतुवातप्रकोपनः ।

अर्थ—काण्डेक्षुके गुण तापसेक्षुके समान हैं और विशेषकरके वातको कुपित करे है ।

सूचीपत्रनैपालीदीर्घपत्रनीलपोराणांगुणाः ।

सूचीपत्रोनीलपोरोनैपालोदीर्घपत्रकः ।
वातलाःकफपित्तघ्नाःसकषायाविदाहिनः ॥

अर्थ—सूचीपत्र नीलपोर नैपाल और दीर्घपत्र यह चारोंप्रकारकी ईख–वातकारी, कफपित्तकारक, कषली और दाहजनक है ।

इक्षुमूलादि गुणाः ।

इक्षुमूलोतिमधुरोमध्येमधुरएवच ।
ग्रंथौत्वच्यग्रभागेच्चविज्ञेयोलवणोरसः ॥

अर्थ—ईखके मूलमें मधुररस और मध्यभागमेंभी मधुररस तथा ग्रन्थि, त्वचा और अग्रभागमें लवणरस रहता है ।

बालयुवावृद्धेक्षुगुणाः ।

बालइक्षुःकफंकुर्यान्मेदोमेहकरश्चसः ।
युवातुवातहृत्स्वादुरीषत्तीक्ष्णश्चपित्तनुत् ॥

रक्तपित्तहरोवृद्धः क्षतहृद्बलवीर्य्यकृत् ।

अर्थ—बाल अर्थात् कच्ची ईख कफकारी, मेदजनक प्रमेहकारक, युवा अर्थात् कुछ २ पक्की और कुछ २ कच्ची ईख-वातनाशक, स्वादिष्ठ, किंचित् तीक्ष्ण और पित्तनाशक है। बुद्ध अर्थात् पक्की ईख-रक्तपित्तनाशक, क्षत-निवारक और बलवीर्य्यकारक है।

दन्तनिष्पीडितेक्षु गुणाः ।

दन्तनिष्पीडितस्येक्षोरसः पित्तास्रनाशनः ।
शर्करासमवीर्य्यःस्यादविदाहीकफप्रदः ॥

अर्थ—दाँतोंसे चूसी हुई ईखका रस-रक्तपित्तनाशक, शर्कराके समान वीर्य्यवाला, दाहरहित और कफकारी है।

अन्यच्च ।

वृष्यःशीतोस्रपित्तंशमयतिमधुरोबृंहणःश्लेष्मकारी स्निग्धो हृद्यःसरश्चश्रमशमनपटुर्मूत्रवृद्धिं करोति। मेदोवृद्धिंविहन्याच्छमयतिचमलंतर्पणश्चेंद्रियाणां दंतैर्निष्पीड्यसाक्षादमृतमयरसोभक्षयेदिक्षुदण्डः ।

अर्थ—दाँतोंसे चूसी हुई ईखका रस-शीतल, रक्तपित्तनिवारक, मधुर, पुष्टिकारक, कफकारक, स्निग्ध, हृदयको हितकारी सारक, श्रमको हरनेवाला, नमकीन, मूत्रवर्द्धक, मेदवृद्धिको शान्ति करनेवाला, त्रिदोषनाशक, इन्द्रियोंको तृप्ति करनेवाला और अमृतोपम है।

अपिच ।

दन्तैर्निपीडितरसोरुचिकृद्गुरुश्च संतर्पणोबलकरःकफकृच्छ्रमघ्नः । विष्टम्भकृच्चरुधिरस्यतथैवपित्तदोषं निहंति सकलंवमनञ्चशोषम् ॥

अर्थ—दाँतोंसे चूसी हुई ईखका रस--रुचिकारी, भारी, तृप्तिकारी बलकारी, कफकारी, श्रमहारी, विष्टम्भकारी, रुधिरके दोषोंको दूरकरनेवाला, पित्तको हरनेवाला वमननिवारक और शोषहारक है।

यन्त्रनीष्पीडितेक्षुरसगुणाः ।

मूलाग्रजन्तुजग्धादिपीडनान्मलसंकरात् ।

किञ्चित्कालंविधृत्वाचविकृतिंयातियान्त्रिकः ॥
तस्माद्विदाहीविष्टम्भीगुरुःस्याद्यान्त्रिकोरसः ।

अर्थ-ईखकी जड और अगला भाग जो कीडोंसे खाया हुवा होता है और गांठ ये सब कोल्हूमें पेली गई हों उनके मैल आदिके मिलनेसे तथा कुछ अधिक समयतक रखा रहनेसे वह कोल्हूका पिला हुवा रस बिगड-जाता है अर्थात् खट्टा होजाता है वह दूषित रस-दाहजनक, मलवर्द्धक, और भारी होता है ।

पर्य्युषितेक्षुरसगुणाः ।

रसःपर्य्युषितोऽङ्गष्टोह्यम्लोवातापहोगुरुः ।
कफपित्तकरःशोषीभेदनश्चातिमूत्रलः ।

अर्थ-ईखका बासी रस-अच्छा नहीं होता खट्टा, वातनाशक, भारी, कफपित्तकारक, शोषजनक भेदक और मूत्रजनक है ।

इक्षुपक्वरसगुणाः ।

पक्वोरसोगुरुःस्निग्धःसुतीक्ष्णःकफवातनुत् ।
गुल्मानाहप्रशमनोकिञ्चित्पित्तकरःस्मृतः ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-ईखका पक्का अर्थात् अग्निपै औटाया हुवा रस-भारी, स्निग्ध, तीक्ष्ण, कफवातनाशक, गुल्म और अफारेको हरनेवाला तथा कुछेक पित्तकारक है ।

इक्षुविशेषगुणाः ।

भक्षितोभोजनात्पूर्वंचेक्षुःपित्तस्यशामकः ।
भोजनोत्तरकालेचभक्षितोवातकोपनः ॥
भोजनेभक्षितश्चासावतिजाड्यकरोमतः । (नि० र०)

अर्थ-भोजनसें पहिले भक्षणकरी हुई ईख-पित्तनिवारक है । भोजनसे पीछे खाई हुई ईख-वातको कुपित करे है और भोजनके मध्यमें खाई हुई ईख अत्यन्त जडताकारक है ।

इक्षुरसविकाराणां गुणाः ।

इक्षोर्विकारास्तृड्दाहमूर्छापित्तास्रनाशनाः ।
गुरवोमधुराबल्याःस्निग्धावातहराःसराः ॥

वृष्यामोहहराःशीताबृंहणाविषहारिणः ।

अर्थ-इक्षुविकार अर्थात् ईखके रसके बनाये हुए पदार्थ-तृषा, दाह, मूर्च्छा, रक्तपित, वात, मोह और विषको हरै है, भारी, मधुर, बलकारी, स्निग्ध, सारक, वीर्य्यवर्द्धक, शीतल और पुष्टिकारकहै ।

फाणितलक्षणगुणाश्च ।

इक्षोरसस्तुयःपक्वःकिञ्चिद्गाढोबहुद्रवःसएवेक्षुविकारेषुख्यातःफाणितसंज्ञया॥फाणितंगुर्व्वभिष्यंदिबृंहणंकफशुक्रकृत् । वातपित्तश्रमान्हन्तिमूत्रवस्तिविशोधनम् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-कुछेक गाढा और बहुत पतला ऐसे पकाये हुए ईखके रसको फाणित कहते हैं, फाणित-भारी, अभिष्यन्दी, पुष्टिकारक, कफकारी, शुक्रजनक तथा वात, पित्त, श्रम इनको दूर करे है और मूत्र तथा वस्तिशोधक है ।

मत्स्यण्डीलक्षणं गुणाश्च ।

इक्षोरसोयःसंपक्वोघनःकिञ्चिद्द्रवान्वितः ।मन्दंयत्स्पन्दतेतस्मात्तन्मत्स्यण्डीनिगद्यते ॥ मत्स्यण्डीभेदिनीबल्यालघ्वीपित्तानिलापहा । मधुराबृंहणीवृष्यारक्तदोषापहामता ॥

अर्थ-ईखका रस जो पकायाहुवा गाढा कुछ पतला और थोडा पिघलता है इसलिये इसको मत्स्यण्डी कहते हैं । मत्स्यण्डी=भेदक, बलकारक, हलकी, वातपित्तकारक, मधुर, पुष्टिकारक, वीर्यवर्द्धक, और रुधिरके दोषोंको हरेहै ।

गुडनामानि ।

गुडःस्यादिक्षुसारस्तुमधुरोरसपाकजः ।
शिशुप्रियःसितादिःस्यादरुणोरसजःस्मृतः ॥

अर्थ=गुड, इक्षुसार, मधुर, रसपाकज, शिशुप्रिय, सितादि अरुण, रसज (खण्डज, द्रवज, सिद्ध, मोदक, अमृतसारज, इक्षुरसकाथ, गण्डोल, मधुबीजक, गुल स्वादुखण्ड स्वादु)

गुडलक्षणम् ।

इक्षोरसोयःसंपक्वोजायतेलोष्ठवद्दृढः ।
सगुडोगौडदेशेतुमत्स्यंडश्चैवगुडोमतः ॥ (भा. मि०)

अर्थ-ईखके रसको पकाकर मट्टीके डेलेके समान दृढ करलेवे। उसको गुड कहते हैं। किन्तु गौडदेशमें मत्स्यण्डीको गुड कहते हैं।

संस्कृतभाषामें	गुड।
हिन्दीभाषामें	गुड।
बंगभाषामें	गुड।
मराठीभाषामें	गूळ।
गुजरातीभाषामें	गोल।
कर्णाटकीभाषामें	होसवेल्लद इेलरु, जुनोहलेयवेल्ल।
तैलिङ्गीभाषामें	वेल्लमु।
अंग्रेजीभाषामें	ट्रीकलमौलासीस। Treacle-Molasseas
फारसीभाषामें	कंदेसिया।
अरबीभाषामें	कंदअस्वद।

गुडगुणाः।

गुडोवृष्योगुरुःस्निग्धोवातघ्नोमूत्रशोधनः।
नातिपित्तकरोमेदःकफक्रिमिबलप्रदः (रा. व.)

अर्थ-गुड-वीर्य्यवर्द्धक, भारी, स्निग्ध, वातनाशक, मूत्रशोधक, अत्यन्त पित्तकारक नहीं तथा मेद, कफ, कृमि और बलकारक है।

पुरातनगुडगुणाः।

पित्तघ्नःपवनापहोरुचिकरोहृद्यस्त्रिदोषापहः
संयोगेनविशेषतोज्वरहरःसन्तापशांतिप्रदः।
विण्मूत्रामयनाशनोग्निजननःकण्डूप्रमेहान्तकृत
स्निग्धःस्वादुरसोलघुःश्रमहरःपथ्यःपुराणोगुडः॥ (रा.नि.)

अर्थ-पुराना गुड-पित्तनाशक, वातविनाश, रुचिकारक, हृदयको हितकारी, त्रिदोषनाशक और किसीके साथ विशेष करके ज्वरनाशक, सन्तापको शान्ति करनेवाला, मल और मूत्ररोगनाशक, अग्निप्रदीपक, कण्डूनाशक, प्रमेहनिवारक, स्निग्ध, स्वादुरसान्वित, हलका, श्रमनाशक और पथ्य है।

नूतनगुडगुणाः।

गुडोनवःकफश्वासकृमिकरोग्निमान्द्यकृत। श्लेष्माणमाशुवि

निहन्तिसदार्द्रकेणपित्तंनिहन्तिचतदेवहरीतकीभिः। शुण्ठ्या समंहरतिवातमशेषमित्थंदोषत्रयक्षयकरायनमोगुडाय। भा०प्र०

अर्थ-नवीनगुड-कफ, श्वास, और कृमिको उत्पन्न करे है तथा मंदाग्निजनक है। सदैव अदरखके साथ सेवन किया हुवा गुड-कफको हरता है, हरडके साथ सेवन किया हुवा गुड--पित्तको दूर करता है और सोंठके साथ खाया हुवा गुड-सर्व वातके दोषोंको नष्ट करता है अतएव हे त्रिदोषविनाशक गुड! तुमको नमस्कार है।

अन्यच्च।

नूत्नोगुडोमधु-क्षारोगुरुश्चोष्णश्चसंमतः। रक्तरुक्पित्तदोषाणामहितोमूत्रशोधनः॥ वृष्यः स्निग्धः सरःप्रोक्तः कृमिमेदकरो मतः। शुक्रमज्जामांसरक्तकारकश्चाग्निदीपनः॥ पित्तलोभेदकोवातश्वासकासकफापहः। सशुद्धोरक्तकफकृत्स्वादुःस्निग्धश्चवातहा।मलमूत्रेयथामार्गप्रवर्तयतिचांजसा। सचैकहायनोरुच्यःपथ्यश्चाग्निप्रदीपकः॥ मूत्रविष्ठाशुद्धिकरोहृद्यःस्वादुश्चपौष्टिकः। रसायनोलघुःस्निग्धो वृष्योमेहश्रमापहः॥ त्रिदोषपाण्डुसन्तापपित्तवातापहो मतः। संयोगेनज्वरहरस्त्र्यब्दजीर्णोलघुःस्मृतः॥ सर्वदोषहरःश्रेष्ठःपुराणेषुचउत्तमः। अरिष्टादिषुयोज्यःस्यादूर्ध्वेहीनगुणःस्मृतः॥ (नि० र०)

अर्थ-नवीनगुड-मधुर, खारी, भारी, गरम, रक्तरोगी और पित्तरोगियोंको अहितकारी है, मूत्रशोधक, वीर्य्यवर्द्धक, चिकना, कुछ कुछ दस्तावर कृमिकारक, मेदजनक, शुक्र, मज्जा, मांस और रक्तकारक है. अग्निप्रदीपक, पित्तजनक, भेदक तथा वात, श्वास, खाँसी और कफनाशक है, शुद्ध किया हुवा गुड--रक्तकारक, कफकारी. स्वादिष्ठ, चिकना, वातनाशक और मलमूत्रको यथामार्ग प्रवर्त्तानेवाला है; एकवर्षका पुराना गुड रुचिकारक पथ्य, अग्निप्रदीपक मूत्र और मलको शुद्ध करनेवाला, हृदयको हितकारी, स्वादिष्ठ, पुष्टिकारक, रसायन, हलका, स्निग्ध, वृष्य तथा प्रमेह,

..त्रिदोष, पाण्डु, सन्ताप, पित्त और वातनाशक है, और किसीके योगसे ज्वरनाशक है, तीनवर्षका पुराना गुड-हलका, सर्वदोषनाशक, उत्तम, ..प्रकारके पुराने गुडोंमें श्रेष्ठ है; इसको अरिष्टादिकोंमें डालना चाहिये। ..वर्षसे अधिक पुराना गुण हीनगुणवाला होजाता है।

गुदामयेकामलशोषमेहेगुल्मामयेपाण्डुहलीमकेच ।
वातेसपित्तासृजिराजरोगेरुचिप्रदोरोगहरोगुरुःस्यात् ॥
कासेशोषेगुडःश्रेष्ठश्चान्यत्रापिहितोमतः ।
योगयुक्तोविशेषेणहितोगुणगणालयः ॥ (हा० सं०)

अर्थ-गुड--गुदारोग, कामलारोग, शोष, प्रमेह, गुल्मरोग, पाण्डुरोग, ..मक, वात, रक्तपित्त और राजरोगको हरेहै तथा रुचिको उत्पन्न करेहै। ..और श्वासरोगमें गुड हितकारीहै। और अन्यान्य रोगोंमेंभी हितकारक ..र किसी अनुपानके साथ नानाप्रकारके रोगोंको हरनेवाला है।

खण्डनामानि ।

खण्डेरसोद्भवाशुक्लासुपिष्टापाण्डुरातथा ॥

अर्थ--खण्ड, रसोद्भवा, शुक्ला, सुपिष्टा, पाण्डुरा, (पंशुलका)।

संस्कृतभाषामें	खण्ड ।
हिन्दीभाषामें	खांड ।
बंगभाषामें	खाँड ।
मराठीभाषामें	साखर ।
गुजरातीभाषामें	खांड ।
कर्णाटकीभाषामें	मालखंड ।
तैलिङ्गीभाषामें	पांचदारा
अंग्रेजीभाषामें	श्युगर । Sugar
लैटिन्भाषामें	साक्कोरम । Sacoharum
फारसीभाषामें	शक्कर ।
अरबीभाषामें	शक्कर ।

खण्डगुणाः ।

वातपित्तहरंशीतंस्निग्धंबल्यंमुखप्रियम् ।
चक्षुष्यंश्लेष्मकृच्चोक्तंखंडंवृष्यतमंमतम् ॥

अर्थ—खांड वातपित्तनाशक, शीतल, स्निग्ध, बलकारक, सुखप्रिय, नेत्रोंको हितकारी, कफकारी और वीर्यवर्द्धक है।

अन्यच्च।

वातंनिवारयतिपित्तमपाकरोति तृष्णांछिनत्तिविनिहन्ति चमोहमूर्च्छाम् ॥ शोषंविघट्टयतितर्पयतीन्द्रियाणि शीतःसदासमधुरःखलुशुद्धखण्डः ॥

अर्थ—खांड--वातनिवारक, पित्तहारक, तृषानाशक, मोह, मूर्च्छा और शोषको हरनेवाली, इन्द्रियोंको तृप्त करनेवाली, शीतल और मधुर है।

गुडखण्डगुणाः।

गुडखण्डश्चमधुरःसितश्चवातपित्तहा।
किञ्चिच्छीतगुणोपेतोबल्योवृष्योरुचिप्रदः॥

अर्थ—गुडकी खांड अर्थात् शक्कर मधुर, सफेद, वातपित्तनाशक, किंचित् शीतगुणयुक्त, बलकारक, वीर्यवर्द्धक और रुचिकारक है।

शर्करानामानि।

शर्करामीनाण्डीशुक्लासिताचवालुकात्मजा।
अहिच्छत्रातुसिकताशुद्धाशुभ्रासितोपला॥

अर्थ—शर्करा, मीनाण्डो, शुक्ला, सिता, वालुकात्मजा। अहिच्छत्रा, सिकता, शुभ्रा, शुद्धा, सितोपला, (शुक्लोपला, शार्क, श्वेता, मत्स्यण्डिका, गडोद्भवा)।

संस्कृतभाषामें	शर्करा।
हिन्दीभाषामें	बूरा, मिश्री, बतासे, कंद।
वंगभाषामें	चिनी मिछरी।
मराठीभाषामें	पिठीसाखर, खडीसाखर।
गुजरातीभाषामें	शाकर।
कर्णाटकीभाषामें	गुडगुडातुगीतु।
तैलङ्गीभाषामें	फाटिकेपांचादारा।
अंग्रेजीभाषामें	प्युरिफाईड श्युगरकेंडी। Purified Sugor Candy
लैटिन्भाषामें	साक्करम् प्युरिफिकिटम्। Sacekarum Purifiecatum
फारसीभाषामें	खडीशक्कर नबात।
अरबीभाषामें	सक्करे अबियद।

शर्करागुणाः ।

शर्करा शीतवीर्य्या च विपाके मधुरा सरा ।
दाहतृट्छर्दिमूर्च्छास्रक्कृमिकोपविनाशिनी ॥ (गणनि०)

अर्थ शर्करा (बूरा), शीतवीर्य्य, विपाकमें मधुर, सारक तथा दाह, वमन, मूर्च्छा, रुधिरविकार और कृमिरोगको नष्ट करे है ।

मूर्च्छामोहतृषास्यशोषशमनी दाहज्वरध्वंसिनी श्वासच्छर्दिमदात्ययक्लमहरी हृद्या च सन्तर्पणी । क्षीणे रेतसि पावके च विषमे क्षीणे क्षते दुर्बले दुर्वातेपि च रक्तपित्तजगदे सेव्या सदा शर्करा ॥ इक्षुजेषु विकारेषु सर्वेष्वपि मनोहरा । समस्तरोगशमनी तवराजाख्यशर्करा ॥ (सुषेणदेव.)

अर्थ मिश्री-मूर्च्छा, मोह और तृषाके शोषको शान्ति करनेवाली, ज्वरनाशक, श्वास, वमन, मदात्यय और क्लमको हरनेवाली, हृदयको हितकारी, तृप्तिकारक, तथा क्षीणवीर्य्य, विषमाग्नि, क्षीण क्षत दुर्बल, वातक और रक्तपित्तरोगमें सदैव सेवन करनी चाहिए। सर्व प्रकारके विकारोंमें तवराजशर्कराश्रेष्ठ और सर्व प्रकारके रोगोंको शान्ति करनेवाली है।

अन्यच्च ।

शर्करा मधुरा शीता बल्या वृष्या सरा मता । स्निग्धा कफकरी क्षयं कासं तृषां जयेत् ॥ विषदोषं मदं श्वासं मोहं मूर्च्छां वमिं तथा । अतिसारं रक्तदोषं पित्तं वातं कृमींस्तथा ॥ भ्रांतिदाहश्रमं चार्शं नाशयेदिति कीर्त्तिता । यथा यथा च धौता स्यात्तगुणकरी मता ॥ खण्डोपला च चक्षुष्या स्निग्धा धातुविवर्द्धिनी । मुखप्रिया च मधुरा शीता वृष्या बलप्रदा ॥ सरेन्द्रियतर्पणकरी लघ्वी तृष्णाविनाशिनी । क्षतं क्षयं रक्तपित्तं मोहं मूर्च्छां कफं तथा ॥ वातं पित्तं च दाहं च शोषं चैव विनाशयेत् पौण्ड्रेक्षुजा शर्करा तु स्निग्धा हितकरी मता ॥ वृष्या क्षतक्षयं चैव श्रयं चैवारुचिं जयेत् । वंशेक्षुसम्भवा बल्या चक्षुष्या धातुव-

र्द्धिनी ॥ रूक्षाचमधुराचैवश्यामेक्षूणांबलप्रदा। श्रमघ्नीत-र्पणीरुच्यारसेक्षूणांचशीतला ॥ स्निग्धाकांतिकरीप्रोक्ता रक्तेक्षोःपित्तनाशिनी। (नि० र०)

अर्थ-शर्करा-बूरा-चीनी-मधुर, शीतल, बलकारक, वीर्य्यवर्द्धक, सारक, स्निग्ध, कफकारक, तथा क्षय, खाँसी, तृषा, विषविकार, मद, श्वास, मोह, मूर्च्छा, वमन, अतिसार, रुधिरविकार, पित्त, वात, कृमि, भ्रम, दाह, श्रम, और बवासीरको दूर करे हैं। यह जितनी २ अधिक सफेद होगी उतनी २ ही अधिक गुणवाली है। मिश्री व कन्द-नेत्रोंको हितकारी, स्निग्ध, धातुवर्द्धक, मुखप्रिय, मधुर, शीतल, वीर्यवर्द्धक बलकारक, सारक, इन्द्रियोंको तृप्त करनेवाली, हलकी, तृषानाशक तथा क्षत, क्षय, रक्तपित्त, मोह, मूर्च्छा, कफ, वात, पित्त दाह, और शोषको हरनेवाली है। पुण्ड्रकादि ईखोंकी-बूरा—स्निग्ध, हितकारी, वीर्य्यवर्द्धक, क्षतक्षय, क्षय और अरुचिको हरे हैं। वंशक नामवाली, ईखकी खांड—बलकारी, नेत्रोंको हितकारी, धातुवर्द्धक, रूखी, और मधुर है। कालीईख की चीनी—बलकारक, श्रमनाशक, तृप्तिकारक, रुचिजनक है। रसेक्षुनाम-वाली ईखकी चीनी शीतल, स्निग्ध और कान्तिजनक है। लालईखकी बूरा—पित्तनाशक है।

लसीकादीनामुत्तरोत्तरंनैर्मल्यादिनागुणवत्त्वमाह ॥

लसीकाफाणितगुडंखण्डमत्स्याण्डकासिता।
निर्म्मलालघवोज्ञेयाःशीतवीर्य्यायथोत्तरम् ॥
यथायथैषांनैर्मल्यंगुणवत्स्यात्तथातथा। (रा० व०)

अर्थ-लसीका (सीरा), फाणित (राब), गुड, खांड, चीनी और मिश्री यह क्रमसे निर्मल है, हलकी और शीतवीर्य्य अर्थात् सीरेसे राब, राबसे गुड, गुडसे खांड, खांडसे चीनी और चीनीसे मिश्री-निर्मल, हलकी और शीतवीर्य है इनमें जो जो अधिक निर्मल होती हैं उन उनके ही अधिक गुण जानने।

यावनालशर्करानामानि।

यावनालीहिमोत्पन्नाहिमानीहिमशर्करा ॥
क्षुद्रशर्करिकाक्षुद्रागुडजाजलबिन्दुजा ॥

[illegible]-यावनाली, हिमोत्पन्ना हिमानी, हिमशर्करा, क्षुद्रशर्करिका, क्षुद्रा, [illegible], जलबिन्दुजा ।

तद्गुणाः ।

क्षुद्रातुशर्कराकिञ्चिदुष्णातिक्तातिपिच्छिला ।
स्निग्धाचमधुरारुच्यासरादाहविनाशिनी ॥
वातपित्तंरक्तदोषंनाशयेदितिकीर्तिता । (नि० र०)

[illegible]-यावनालशर्करा (सीरेखिस्त) किञ्चित् गरम, कडवी, अत्यन्तपि-[illegible] स्निग्ध, रुचिकारक, सारक, दाहनाशक तथा वात, पित्त और रुधि-[illegible]षोंको हरे है ।

यवासशर्करागुणाः ।

यवासशर्कराशीतारसेस्वाद्वीकषायका ।
वृष्यातिक्ताचमधुराभ्रमंपित्तंतृषांजयेत् । (रा० नि०)

[illegible]-यवासशर्करा (तुरंजबीन)-शीतल, स्वादिष्ठ, कषेली, वीर्यवर्द्धक, [illegible], मधुर तथा भ्रम, पित्त और तृषानाशक है ।

अन्यच्च ।

[illegible]सशर्कराज्ञेयाबृंहणीपित्तहारिणी।ज्वरहृद्दीपनीशीतारेच-[illegible]पुरातनी ॥ नार्य्याश्चापन्नसत्वायादुर्बलस्यतथाशिशोः।
[illegible]नार्थंप्रयोज्येयंक्षीणस्य[illegible]थविरस्यच ॥ (आ० सं०)

[illegible]-यवासशर्करा (तुरंजबीन)-पुष्टिकारक, पित्तनाशक, ज्वरहारक, [illegible]दीपक, शीतल और यह पुरानी दस्तावर है । गर्भवती स्त्री, दुर्बल [illegible], क्षीण और वृद्धमनुष्योंको इससे दस्तकराने चाहिये ।

मधुशर्करागुणाः ।

[illegible]जाशर्करावल्याशुर्वीवृष्याचशीतला । मधुरातर्पणीरू-[illegible]तुवराछेदकातथा॥ पाकेस्वाद्वीवमिंदाहंपित्तंचअतिसार-[illegible]म् । रक्तपित्तंतृषांपित्तंकफंचैवविनाशयेत् ॥ (नि० र०)

[illegible]-मधुकी खांड-बलकारक, भारी, वीर्य्यंक, शीतल, मधुर, तृप्तिकारक, [illegible], कषेली, छेदक, पचनेमें स्वादिष्ठ तथा वमन, दाह, पित्त, अतिसार, [illegible], तृषा, पित्त और कफको दूर करे है ।

पुष्पशर्करागुणाः ।

पुष्पोद्भवाशर्करातुस्वाद्वीहृद्याचशीतला । गुर्वीपित्तरक्तदोषंनाशयेदितिकीर्त्तिता॥ यावन्त्यःशर्कराःप्रोक्ताःसर्वादाहप्रणाशनाः । रक्तपित्तप्रशमनाश्छर्दिमूर्च्छातृषापहाः ॥

अर्थ-पुष्पशर्करा अर्थात् फूलसे बनाई हुई चिनी-स्वादिष्ट, हृदयको हितकारी, शीतल, भारी, पित्त और रुधिरके विकारोंको हरे है । जितनी प्रकारकी चीनी हैं वे सर्व प्रकारकी दाहनाशक, रक्तपित्तको शान्ति करनेवाली तथा वमन, मूर्च्छा और तृषाको हरनेवाली हैं ।

इति श्रीशालिग्रामनिघण्टुभूषणे इक्षुवर्गः समाप्तः ॥ २० ॥

अथ सन्धानवर्गः ।



काञ्जिकनामानि ।

**काञ्जिकंकञ्जिकंकाञ्जीकुण्डलंकुण्डगोलकम् ।
धान्यमूलंधान्ययोनिः कुल्माषंकुल्माभियुतम् ॥**

अर्थ--काञ्जिक, कञ्जिक, काञ्जी, कुण्डल, कुण्डगोलक, धान्यमूल, धान्ययोनि, कुल्माष, कुल्माभियुत, (आरनालक, सौवीर, कुल्माष, अभिषुत, आवन्तिसोम, धान्याम्ल, कुञ्जल, सिद्धजल, सिद्धसलिल, कांचिक काञ्चिका, भक्तवारि, तुषाम्बु, सन्धान, गृहाम्ल, महारस, तुषोदक, शुक्तचुक्र, धातुघ्न, उन्नाह, रक्षोघ्न, सुवीराम्ल, पङ्कवारि, वीर, अभिषव अम्लसारक) ।

काञ्जिकलक्षणं गुणाश्च ।

संधितंधान्यमण्डादिकाञ्जिकंकथ्यतेजनैः।काञ्जिकंभेदितीक्ष्णोष्णंरोचनंपाचनंलघु ॥ दाहज्वरहरंस्पर्शात्पानाद्वातकफापहम् । माषादिवटकैर्यत्तुक्रियतेतद्गुणाधिकम् ॥ लघुवातहरंतत्तुरोचनंपाचनंपरम् । शूलाजीर्णविबंधामनाशनंबस्तिशोधनम् (भा. प्र.)

अर्थ-धान्यादिकोंके मांडको कुछ दिनों धरा रहना देवे उसको कांजी

...ते हैं। कांजी--भेदक, तीक्ष्ण, गरम, रोचन, पाचक, हलकी शरीरमें ...नेसे दाह और ज्वरको दूर करे और पीनेसे वातकफको हरे है। उडद ...के वडोंकी बनाई हुई कांजी अधिक गुणवाली है। हलकी, वातनाशक, ...न, पाचन, तथा शूल, अजीर्ण, विबन्ध और आमनाशक और बस्ति... ...क है।

निषेध।

...षमूर्छाज्वरार्तानांभ्रमकेदुर्विषार्दिते । कुष्ठानांरक्तपि-...नांकाञ्जिकंनप्रशस्यते ॥ पाण्डुरोगेराजयक्ष्मण्यथशोफा-...षुच । क्षतक्षीणेपरिश्रांतेमन्दज्वरनिपीडिते ॥ नरेनैव ...तंप्रोक्तंकाञ्जिकंदोषकारकम् ॥ (हारी० सं०)

...र्थ—शोष, मूर्च्छा, ज्वरसे पीडित, भ्रम, विषसे पीडित, कुष्ठ, रक्तपित्त, ...डुरोग, राजयक्ष्मा, सूजनसे पीडित, क्षतक्षीण, मार्गचलनेसे थकेहुए और ...ज्वरसे पीडित मनुष्योंको कांजी हितकारी नहीं किन्तु दोषकारी है।

कांजिकविशेष गुणाः।

शूलवातार्दितानान्तुतथाजीर्णविबन्धिनाम्।
श्रेष्ठंप्रोक्तंतथाम्लञ्चगुणाधिक्यंनरेषुच ॥ (हारी. सं.)

...र्थ—शूल और वातसे पीडित तथा अजीर्ण और विबन्ध रोगवाले ...योंको कांजो अत्युत्तम है और अनेक गुण करे है।

अन्यच्च।

...तनंमृन्मयंकुम्भंकटुतैलेनलेपयेत् । निर्मलंचजलंतस्मि-...जिकाजाजिसैन्धवम् ॥ हिंगुविश्वानिशाचैवओदनंवंशप-...त्राः। औदनस्यकुलित्थानांजलंवटकखांडवम् ॥ सर्वंत-...स्मिन्निधायाथमुद्रांदत्वादिनत्रयम्। रक्षयित्वाततोवस्त्रगा-...लितंकाञ्जिकंमतम् ॥ तद्भेदकंवास्तिशुद्धिकरमुष्णंचतीक्ष्ण...कम्। रुच्यमम्लंपाचकंचलघुलेपेचदाहकम् ॥ ज्वरनाशकरं-...प्रोक्तंतत्पीतंकफवातहम् । शूलंशोथंभ्रमंदाहंमूर्छांपित्त-...ज्वरंतथा ॥ अजीर्णाध्मानविट्स्तम्भानामनाशकरंमतम्।

काञ्जिकेसंस्थिताश्चैववटकारुचिदामताः ॥ शीताःकफकरादाहशूलाजीर्णविनाशकाः । नेत्ररोगेहितानोक्ताऋषिभिःपाककोविदैः । (इति रत्नाकरे)

अर्थ—प्रथम कोरा मट्टीका घडा लेकर उसके भीतर तथा ऊपर तेलका लेप करदे फिर उसमें निमल स्वच्छ जल भर देवे उस जलमें राई, जीरा सैंधानोंन, हींग, सोंठ, हलदी, भात, बांसके कोमल पत्ते कुलथीके भातका जल और बडोंके टुकडे यह सब पदार्थ डालकर मुख बंद करके तीनदिन तक बंद किया रक्खा रहने देवे इसके उपरान्त खोलकर वस्त्रसे छानले इसको कांजी कहते हैं। वह कांजी भेदक, वस्तिशोधक, गरम, तीक्ष्ण, रुचिकारक, खट्टी, पाचक, हलकी, इसका लेप करनेसे-दाह और ज्वर दूर होता है और यह पीनेसे कफ, वात, शूल, सूजन, भ्रम, दाह, मूर्च्छा पित्तज्वर, अजीर्ण, आध्मान और मलस्तम्भको दूर करे है। कांजीमें पडे हुए बडे-रुचिकारक, शीतल, कफकारी, दाह, शूल और अजीर्णनाशक हैं और नेत्ररोगोंमें हितकारी नहीं है।

तुषोदकलक्षणं गुणाश्च ।

तुषोदकंयवैरामैःसतुषैःशकलीकृतैः ।
तुषाम्बुदीपनंहृद्यंपाण्डुक्रिमिगदापहम् ॥
तीक्ष्णोष्णंपाचनंपित्तरक्तकृद्वस्तिशूलनुत् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ—कच्चे तुषसहित जवोंको कूटकर भिजोदे जब उसमें खट्टापन होजाय तब वह तुषोदक हो जाता है। तुषोदक-दीपन, हृदयको हितकारी पाण्डु और कृमिरोग दूर करे, तीक्ष्ण, गरम, पाचक तथा रक्तपित्तकारक और वस्तिकी पीडाको हरे है।

अन्यच्च ।

तुषोदकवातपित्तहरन्तुरक्तपित्तकरंप्रभेदकंच ।
विपाचनंस्याज्जरणंक्रिमिघ्नमजीर्णहन्तृकटुकंचपाके ॥ (हा० सं०)

अर्थ—तुषोदक-वातपित्तनाशक, रक्तपित्तकारक, दस्तावर, पाचन, कच्चे अन्नको भस्म करता है, कृमिनाशक, अजीर्णनिवारक और पचनेमें चरपरा है

सौवीरनामानि ।

सौवीरकंसुवीराम्लंयवोत्थंगोधूमसम्भवम् ।

यवाम्लजंतुषोत्थंचतुषोदकश्चापिकीर्त्तितम् ॥

अर्थ—सौवीरक, सुवीराम्ल, यवोत्थ, गोधूमसम्भव, यवाम्लज तुषोत्थ, तुषोदक।

अस्य लक्षणं गुणाश्च ।

सौवीरन्तुयवैरामैःपक्वैर्वानिस्तुषैःकृतम् । गोधूमैरपिसौवीरमाचार्य्याःकेचिदूचिरे ॥ सौवीरन्तुग्रहण्यर्शःकफघ्नंभेदिदीपनम् । उदावर्त्ताङ्गमर्दास्थिशूलानाहेषुशस्यते ॥ (भा. प्र.)

अर्थ-कच्चे वा पक्के जौओंके तूर अलग करदेवे, फिर उसकी कांजी बनावे उस कांजीको सौवीर कहते हैं। कोई वैद्य कहते हैं कि कच्चे अथवा पक्के गेहूंसे सौवीर बनाई जाती है। सौवीर-संग्रहणी, बबासीर और कफनाशक दस्तावर, दीपन तथा उदावर्त्त, अंगका टूटना, अस्थियोंमें पीडा और अफारेमें हितकारी है।

अन्यच्च ।

सौवीरकंचाम्लरसंकेश्यंमस्तकदोषजित् ।
जराशैथिल्यहरणंबल्यंसन्तर्पणंपरम् ॥

अर्थ—सौवीर-खट्टी, केशोंको हितकारी, मस्तकरोगनाशक, जरा और शिथिलताको हरनेवाली, बलकारी और तृप्तिकारक है।

आरनाललक्षणंगुणाश्च ।

आरनालंतुगोधूमरामैःस्यान्निस्तुषीकृतैः ।
पक्वैर्वासंधितस्तत्तुसौवीरसदृशंगुणैः ॥ (भा. प्र.)

अर्थ—विना तूरके कच्चे गहूँको भिजोकर आरनाल नामवाली कांजी बनाई जाती है। वा पक्के गहूँसे बनाई हुईको भी आरनाल कहते हैं। आरनालके गुण सौवीरके समान जानने ।

आरनालकगुणाः ।

जातंयवाम्लंकटुकंविपाकेवातामयश्लेष्महरंसरक्तम् ।
पित्तप्रकोपंकुरुतेसभेदिविदूषणंपित्तगदासृजश्च ॥

अर्थ-जौसे बनाई हुई कांजी-पचनेमें कटु, वातनाशक, कफनिवारक, रक्त और पित्तको कुपित करनेवाली, दस्तावर और रक्तपित्तको दूषित करे है।

सन्दीपनंशूलहरंरुचिप्रदंगोधूमजातंक्कथितंकषायम् ।

सन्दीपनंस्याज्जरणंकफघ्नंसमीरदोषंहरतेततोऽपि ॥ (हा. सं.)

अर्थ—गेहूँसे बनाई हुई कांजी-अग्निको दीपन करनेवाली, शूलको हरनेवाली, रुचिको करनेवाली, कषेली, भोजनको भस्म करनेवाली, कफनाशक और वातके विकारोंको हरे है।

धान्याम्ललक्षणं गुणाश्च ।

धान्याम्लंशालिचूर्णश्चकोद्रवादिकृतंभवेत् ।
धान्याम्लंधान्ययोनित्वात्प्रीणनंलघुदीपनम् ॥
अरुचौवातरोगेषुसर्वेष्वस्थापनेषुच ।

अर्थ—शालिधानोंके चूर्ण अथवा कोदोंके चूनसे जो कांची बनाई जाती है उसको धान्याम्ल कहते हैं। धान्याम्ल-प्रीणन, हलकी, अग्निप्रदीपक तथा सर्वप्रकारके वातरोग और अरुचिरोगमें देनी चाहिये।

शिण्डाकीलक्षणं गुणाश्च ।

शिण्डाकीराजिकायुक्तैःस्यान्मूलकदलद्रवैः ।
सर्षपस्वरसैर्वापिशालिपिष्टकसंयुतैः ॥
शिण्डाकीरोचनीगुर्वीपित्तश्लेष्मकरीस्मृता ॥

अर्थ—मूलीके पत्तोंके रसमें राई डालकर जो कांजी बनती है उसको शिण्डाकी कहते हैं। अथवा सरसोंके रसमें शालिधानोंका चून डालकर जो कांजी बनाई जाती है उसको भी शिण्डाकी कहते हैं। शिण्डाकी-रुचिकारक भारी और पित्तकफकारी है।

शुक्तलक्षणं गुणाश्च ।

कन्दमूलफलादीनिसस्नेहलवणानिच । यत्रद्रव्येऽभिषूयन्ते तच्छुक्तमभिधीयते ॥ शुक्तंकफघ्नंतीक्ष्णोष्णंरोचनंपाचनं लघु । पाण्डुक्रिमिहरंरूक्षंभेदकंरक्तपित्तकृत् ॥

अर्थ कंदमूल और फलादिकमें नोन और तेल डालकर जो द्रव्य बनाया जाता है उसको शुक्त अर्थात् सिर्का कहते हैं। सिर्का-कफनाशक, तीक्ष्ण, गरम, रोचन, पाचक, हलका, पाण्डु और कृमिरोगनाशक, रूखा, दस्तावर और रक्तपित्तकारक है।

सन्धानलक्षणं गुणाश्च ।

कन्दमूलफलाढ्यंयत्तुविज्ञेयमासुतम् ।

तद्रुच्यंपाचनंवातहरंलघुविशेषतः ॥

अर्थ- कन्दमूल, फलादिकोंमें राई आदिका चूर्ण डालकर जो द्रव्य बनाया जाता है उसको आचार कहते हैं । आचार- रुचिकारक, पाचक, वातनाशक और विशेषकरके हलका है ।

मद्यनामानि ।

मदिराप्रसवाहालाचपलाचहलिप्रिया ।
अमृतावीरामेधावीमाधवीकापिशायनी ॥

अर्थ-मदिरा, प्रसवा, हाला, चपला, हलिप्रिया, अमृता, वीरा, मेधावी माधवी, कापिशायनी (सुरा, मद्य, परिश्रुता, वरुणात्मजा, गन्धोत्तमा, इरा, कादम्बरी, परिस्रुता कश्य, प्रसन्नेरा, माणिका, कपिशी, गन्धमादिनी, मत्तोय, मद, कपिशिका, वारुणी, मत्ता, सीता, कामिनीप्रिया, मदगन्धा, माध्वीक, मधु, सन्धान, आसव, मदनी, सुप्रतिमा, मनोज्ञा, विधाता, मोदनी, हली, गुणारिष्ट, सरण, मधुलिका मदोत्कटा, महानन्दा, सीधु, मैरेय, वनवल्लभा, कारक, तत्त्व मदिष्ठा, परिप्लुता, कल्य, साधुरसा शुण्डा, शारहूर, माद्वीक, मदना, देवसृष्टा, कापिश, अब्धिजा, कल्या, मधूल) ।

संस्कृतभाषामें	मदिरा, मद्य,
वंगभाषामें	मदिरा, मद् ।
गुजरातीभाषामें	दारू ।
मराठीभाषामें	मद्य, दारू ।
हिन्दीभाषामें	मदिरा, (दे) दारु शराब ।
कर्णाटकीभाषामें	शरे, साराइ ।
तैलिङ्गीभाषामें	कल्लु, ।
अंग्रेजीभाषामें	वाइन ।
फारसीभाषामें	शराब ।

साधारणमदिरागुणाः ।

मद्यंसाधारणंसूक्ष्मंसारकंदाहकंकटु । सुस्वादुतिक्तंचरसे पाकेम्लंचलघुस्मृतम् ॥ अग्निदीतिकरंरुच्यंहृद्यंचोष्णंकषायकम् । तीक्ष्णंविकासिचमतंमूत्रलंतुष्टिकृन्मतम् ॥ मलोत्सर्गकरंनाडीवस्तिशुद्धिकरंमतम् । बल्यंपुष्टिकरं

स्वर्य्यंप्रतिभाकारकंमतम् ॥ आरोग्यकारकंवर्ण्यंरक्तदूषण-कारकम् । आनाहंचकफंवातंशूलंचैवविनाशयेत् ॥ विष-शोकार्त्तपुरुषेस्वल्पाग्नौचहितावहम् । सात्त्विकैःपुरुषैःपीतं गीतहास्यादिकारकम् ॥ राजसैर्भक्षितंचेत्स्यात्साहसादि-करंमतम् । तामसैर्भक्षितंतच्चनिद्रालस्यादिकारकम् ॥ बलं कालंचसंज्ञात्वापीतंतदमृतोपमम् । अन्यथाभक्षितंचेत्स्या-द्विषवच्चापकारकम् ॥ अतीवमादकंतच्चदुर्गंधिविरसंगुरु । कृमिजुष्टंचातितीक्ष्णंघनंमृदुचदाहकम् ॥ दुष्टभाण्डास्थितं नूतमनूद्यमपिचिक्कणम् । उष्णमुष्णपदार्थैस्तुमिश्रितंमलि-नंतथा ॥ तीक्ष्णद्रव्यैर्युतंतच्चनगृह्णीयान्नरःक्वचित् । स्त्रीद्वि-षैवतद्ग्राह्यंबुद्धिभ्रंशकरंयतः ॥ नि० र०)

अर्थ—साधारण मदिरा—सूक्ष्म, कुछ कुछ दस्तावर, दाहजनक, चरपरी, स्वादिष्ठ, कडवी, रस और पाकमें खट्टी, हलकी, अग्निको दीपन करनेवाली, रुचिको उत्पन्न करनेवाली, हृदयको हितकारी, गरम, कषेली, तीक्ष्ण, विकासी, मूत्रकारक, तुष्टिकारक, मलको निकालनेवाली, नाडी और वस्ति को शुद्ध करनेवाली, बलवर्द्धक, पुष्टिकारक, स्वरको शुद्ध करनेवाली, प्रभा-को उत्पन्न करनेवाली, आरोग्यताको देनेवाली, वर्णको सुन्दर करनेवाली, रुधिरको दूषित करनेवाली तथा अनाह, कफ, वात और शूलनाशक है विषसे विह्वल हुए, शोकसे पीडित हुये और मन्दाग्निवाले मनुष्योंको हित-कारी है। सात्विक मनुष्य इसको पीनेसे गीत और हास्यादिको करे है रजो-गुणयुक्त पुरुषोंको यह पीहुई साहसादि गुणोंको उत्पन्न करे है और तमोगुण-युक्त पुरुषोंको पीहुई निद्रा और आलस्यको करनेवाली है। बल और काल का विचार करके यह पीहुई अमृतके समान गुण करे है। अन्यप्रकार सेवन की हुई विषके समान सन्तापको करे है और अत्यन्त नसीली, दुर्गन्धयुक्त विरस, भारी, कीडेपडी हुई, अत्यन्त तीक्ष्ण, गाढी, मृदु, दाहक, बुरे वरतन में रक्खी हुई, नवीन, अप्रिय, चिकनी, गरम, गरम पदार्थोंसे मिली मलिन और तीक्ष्ण द्रव्योंसे मिली हुई ऐसी मदिरा, कभी नहीं पीनी

चाहिये। और स्त्री तथा ब्राह्मण तो इसको कभी भी नहीं पीवें कारक यह है कि, इसके पीनेसे बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है।

अरिष्टलक्षणं गुणाश्च ।

पक्वौषधाम्बुसिद्धंयन्मद्यंतत्स्यादरिष्टकम् ॥
अरिष्टंलघुपाकेनसर्वतश्चगुणाधिकम् ॥
अरिष्टस्यगुणाज्ञेयाबीजद्रव्यगुणैःसमाः ॥

अर्थ—जो पकी औषधियोंके काढेसे मदिरा बनाई जाती है उसको अरिष्ट कहते हैं। अरिष्टनामवाली मदिरा लघुपाकी होनेसे सर्वप्रकारकी मदिराओंसे गुणोंमें अधिक है। अरिष्ट जिस २ वस्तुसे बनता है उसी २ वस्तुके समान उस अरिष्टके गुण जानने।

अन्यच्च ।

अरिष्टंदीपनंहृद्यंतुवरंपाचनंलघु । सरंचकटुकंचैवपित्तवातकफापहम् ॥ कुष्ठगुल्मार्शशोषघ्नंशोफसंग्रहणीहरम् । पाण्डुंप्लीहांचोदरंचज्वरशूलंकृमीन्क्लमम्॥आनाहंनाशयेत्प्रोक्तंसर्वमद्यैर्गुणाधिकम् ॥

अर्थ—अरिष्ट-दीपन, हृदयको हितकारी, कषेली, पाचक, हलकी, सारक, चरपरी तथा पित्त, वात, कफ, कोढ, गुल्म, बवासीर, शोष सूजन, संग्रहणी, पाण्डुरोग, प्लीहा, उदररोग, ज्वर, शूल, कृमि, क्लम और अफारेको दूर करनेवाली है तथा सर्वमद्योंमें अधिक गुणवाली है।

सुरालक्षणं गुणाश्च ।

शालिषष्टिकपिष्टादिकृतंमद्यंसुरास्मृता ।
सुरागुर्वीबलस्तन्यपुष्टिमेदःकफप्रदा ॥
ग्राहिणीशोथगुल्मार्शोग्रहणीमूत्रकृच्छ्रनुत ।

अर्थ—शालि और साठीधानोंकी पीठीसे जो मदिरा बनाईजातीहै उसको सुरा कहते हैं, सुरा-भारी, बलकारक, स्तनोंमें दूधको उत्पन्न करनेवाली, पुष्टिकारक, कफजनक, मलरोधक तथा सूजन गुल्म, बवासीर, संग्रहणी और मूत्रकृच्छ्ररोगनाशक है।

वारुणीलक्षणं गुणाश्च ।

पुनर्नवाशिलापिष्टवारुणीविहितामता ।

संहितैस्तालखर्जूररसैर्यासापिवारुणी ॥
सुरावद्वारुणीलघ्वीपीनसाध्मानशूलनुत् ।

अर्थ—पुनर्नवाको शिलपर पीसकर जो मदिरा बनाई जाती है उसको वारुणी कहते हैं । किसीके मतसे ताल और खजूरादिके रसमें जो मदिरा बनाई जाती है उसको वारुणी कहते हैं । वारुणी मदिराके गुण सुराके समान हैं विशेष करके हलकी तथा पीनस, आध्मान और शूलको निर्मूल करे है ।

अन्यच्च ।

वारुणीपौष्टिकीहृद्यातीक्ष्णादुग्धप्रदामता । लघ्वीचश्लेष्मलाशूलकासवांतिविबन्धहा ॥ आध्मानंपीनसंश्वासंमूत्रकृच्छ्रंचनाशयेत । गुल्मंचार्शोनाशयतीत्येवमुक्तांचिकित्सकैः॥

अर्थ—वारुणी मदिरा--पुष्टिकारक, हृदयको हितकारी, तीक्ष्ण, दुग्धजनक हलकी, कफकारी तथा शूल, खाँसी, वमन, विबन्ध, अफारा, पीनस, श्वास, मूत्रकृच्छ्र, गुल्म और बवासीरको हरे है ।

सीधुलक्षणं गुणाश्च ।

इक्षोःपक्वैरसैःसिद्धःसीधुःपक्वरसश्चसः । आमस्तैरेवयःसीधुःसचशीतरसःस्मृतः ॥ सीधुःपक्वरसःश्रेष्ठःस्वराग्निबलवर्णकृत । वातपित्तकरःसद्यःस्नेहनोरोचनोहरेत । विबन्धमेदःशोफार्शःशोफोदरकफामयान् ॥ तस्मादल्पगुणःशीतरसःसंलेखनःस्मृतः ।

अर्थ—पके हुये ईखके रससे जो मदिरा बनाई जाती है उसको सीधु कहते हैं और जो कच्चे ईखके रससे मदिरा बनाई जाती है उसको शीतरस कहते हैं; पके ईखके रससे बनाई हुई सीधुनामवाली मदिरा-श्रेष्ठ, स्वर अग्नि बल और वर्णको करनेवाली, तत्काल वातपित्तकारक, स्निग्ध, रोचन तथा विबन्ध, मेद, सूजन बवासीर, शोफोदर और कफरोगोंको नष्ट करे है, शीतरस नामवाली मदिरा सीधुसे कुछ अल्पगुणवाली और लेखन है ।

अन्यच्च ।

सीधुःकषायाम्लकमाधुरोवासन्दीपनोमेदमलापमर्दः ।

आमातिसारानिलपित्तशूलश्लेष्मामयार्शोग्रहणीगदघ्नः (हा. सं.)

अर्थ-सीधुनामवाली मदिरा कषेली, खट्टी, अग्निप्रदीपक, मद और मलको ...नेवाली तथा आमातिसार, वात, पित्त, शूल, कफरोग, बवासीर और ग्रहणीको दूर करनेवाली है।

गौडीमदिरागुणाः।

तीक्ष्णोष्णामधुरागौडीवातघ्नीबलपित्तकृत ।
कान्तितृप्तिकरीपथ्यावह्निकामप्रदीपनी ॥ (आ० सं०)

अर्थ—गौडी अर्थात् गुडादिसे बनाई मदिरा—तीक्ष्ण, गरम, मधुर, वातनाशक तथा बल, पित्त, कान्ति और तृप्तिकारक, पथ्य, अग्नि और कामको दीपन करनेवाली है।

अन्यच्च।

गौडीकषायामधुराम्लशीतासन्दीपनीशूलमलापहंत्री ।
हृद्यात्रिदोषंशमयत्यजीर्णपाण्ड्वामयार्शःश्वशन निहन्ति। (हा सं.)

अर्थ-गौडी मदिरा-कषेली, मधुर, खट्टी, शीतल, अग्निप्रदीपक, शूल और मलको हरनेवाली, हृदयको हितकारी, त्रिदोषनाशक तथा अजीर्ण, पाण्डुरोग, बवासीर और श्वासविनाशक है।

माध्वीमद्यगुणाः।

माध्वीसुरातुमधुराकिञ्चिदुष्णाकषायका । तीक्ष्णालघ्वी
हृद्याचरूक्षाचच्छेदनीमता ॥ पित्तंवातंचपाण्डुञ्चकामलां-
प्रमेहकम् । गुल्मंचार्शःप्रतिश्यायंविषंकुष्ठञ्चनाशयेत् ॥

अर्थ-माध्वीनामवाली मदिरा-मधुर, किञ्चित् गरम कषेली, तीक्ष्ण, हलकी, हृदयको हितकारी, रूखी, छेदक तथा पित्त, वात, पाण्डुरोग, कामला, प्रमेह, गुल्म, बवासीर, प्रतिश्याय, विष और कुष्ठको नष्ट करे है।

अन्यच्च।

माध्वीकंशीतलाम्लंमधुरमपितथास्यात्कषायोष्णकञ्च
हन्यातिपित्तामयार्शःश्वसनमपितथाचातिसारंप्रमेहान् ॥
शूलानाहोपमर्दंजरयतिसकलंदीपयत्याग्निसात्म्यं
तस्माद्वातामवातंवमनमपितथाहन्तिसर्वांश्चरोगान् ॥

अर्थ-माध्वीक मदिरा- शीतल, खट्टी, मधुर, कषेली, गरम तथा पित्तरोग, बवासीर, श्वास, अतिसार, प्रमेह, शूल और आनाहको दूर करे है, सर्व वस्तुओंको पाचनकरनेवाली, अग्निको दीपन करनेवाली तथा वात, आम और वमनको हरनेवाली है तथा सात्म्य ह।

पैष्टीमद्यगुणाः ।

पैष्टीसन्दीपनीरुच्याकफकृद्वातनाशिनी ।
पित्तलापाण्डुरोगाणांकारिणीबहुधामता ॥ (हा. सं.)

अर्थ--पैष्टी मदिरा--अग्निको दीपन करनेवाली, रुचिको करनेवाली, कफकारी वातनाशक, पित्तकारक और पाण्डुरोगको उत्पन्न करे है।

अन्यच्च ।

पैष्टीसुरातुमधुरातीक्ष्णाम्लाकटुकागुरुः ।
दीपनीस्तन्यकफदामेहपुष्टिकरीमता ॥ (नि० र०)

अर्थ--पैष्टी मदिरा-मधुर, तीक्ष्ण, खट्टी, चरपरी, भारी, दीपन, स्तनोंमें दूधको करनेवाली, कफकारी तथा प्रमेह और पुष्टिको करनेवाली है।

इक्षुभवमद्यगुणाः ।

मद्यंतुचैक्षवंशीतंमदकृच्चसमीरितम् ॥
यवमद्यंस्तम्भकंचरूक्षंचैवतुदीपकम् ॥
मोहकंचाग्निजनकंवृष्यंवातकफापहम् ॥

अर्थ--ऐक्षव मदिरा-शीतल, मदकारक और जौकी मदिरा स्तम्भक, रूखी, अग्निप्रदीपक, मोहकारक, अग्निकारक, वीर्य्यवर्द्धक और वातकफ नाशक है।

सर्ववृक्षभवमद्यगुणाः ।

सर्ववृक्षभवंमद्यंशीतलंगुरुमोहनम् ।
बल्यंवृष्यंचहृद्यंचतृष्णासन्तापनाशकम् ॥

अर्थ--सर्ववृक्षोंकी मदिरा--शीतल, भारी, मोहन, बलकारक, वृष्य, हृदयको हितकारी तथा तृष्णा और सन्तापनाशक है।

द्राक्षामदिरागुणाः ।

द्राक्षासुरातुमधुराश्रेष्ठास्निग्धारुचिप्रदा । विशदादीपनील-

षीकिञ्चिदुष्णाबलप्रदा ॥ पुष्टिकृल्लेखनीवर्ण्याशुक्रलाचस-
मता । किञ्चित्पित्तकरीमृद्वीवातलाशोषमेदनुत् ॥ क्लेदं
पाण्डुंकफंचार्शःकृमीन्मेहंचकामलाम् । रक्तपित्तंचकुष्ठंच
नाशयेदितिकीर्त्तिता॥विषमंचज्वरंचैवरक्तार्शश्चैवनाशयेत् ।

अर्थ-दाखोंकी मदिरा-श्रेष्ठ मधुर, स्निग्ध, रुचिकारक विशद, अग्निप्र-
द, हलकी, किञ्चित् गरम, बलकारक, पुष्टिकारक, लेखन, वर्णको सुंदर
करनेवाली, शुक्रजनक, सारक, किञ्चित पित्तकारक, मृदु, वातकारक, तथा
शोष, मेद, क्लेद, पाण्डुरोग, कफ, बवासीर, कृमि प्रमेह, कामलारोग, रक्त-
पित्त, कोढ, विषमज्वर और खूनीबवासीरको हरण करे है।

खर्जूरमद्य गुणाः ।

खर्जूरमद्यंशीतंस्याद्रुच्यंवातकरंगुरु ।

अर्थ-खजूरकी मदिरा शीतल, रुचिकारक, वादी और भारी है।

तालमद्य गुणाः ।

श्लेष्मदोषकरावृष्यावातलाश्लेष्मवर्द्धिनी ।
कासहल्लासविध्वंसकरणातालमंडिका ॥ (हा. सं)

अर्थ-ताडकी मदिरा-कफकारी, वीर्यवर्द्धक, वादी, श्लेष्मवर्द्धक तथा
खांसी और हल्लासको हरे है।

आसवलक्षणंगुणाश्च ।

यदपक्वौषधाम्बुभ्यांसिद्धंमद्यंसआसवः ।
आसवस्यगुणाज्ञेयाबीजद्रव्यगुणैःसमाः ॥

अर्थ-जो कच्ची औषधियोंके पानीसे मदिरा बनायी जाती है उसको
आसव कहते हैं। आसवके गुण जिन २ बीज और द्रव्योंसे वह बनाया
जाता है उसीके अनुसार जानने।

सुरासवगुणाः ।

सुरासवस्तीव्रमदोवातघ्नोवदनप्रियः ॥ (चरक०)

अर्थ-सुरासव--तीव्रमदकारक, वातनाशक, और मुखप्रिय है।

अन्यच्च ।

सुरासवःस्नेहनःस्याद्गुरुर्बल्यश्चदीपनः ।

ग्राहकःपुष्टिकृद्दुग्धरक्तमांसकफप्रदः ॥
मेदःकृद्ग्रहणीगुल्ममूत्राघातार्शशोफहृत् । (नि० र०)

अर्थ–सुरासव–स्नेहन, भारी, बलकारी, दीपन, मलरोधक, पुष्टिकारक तथा दूध, रुधिर, मांस, कफ और मेदको हरे है तथा संग्रहणी, गुल्म, मूत्रघातु, बवासीर और सूजनको हरे है ।

गुडासव गुणाः ।

गुडासवःकटुस्तिक्तोबल्यश्चाग्निप्रदीपनः ।
सुस्वादुर्मूत्रलोवर्ण्योबृंहणस्तर्पणोमृदुः ॥
सृष्टविट्कश्चवैप्रोक्तोमुनिभिःसूक्ष्मदार्शिभिः ।

अर्थ गुडासव–चरपरी, कडवी, बलकारी, अग्निप्रदीपक, स्वादिष्ठ, मूत्रजनक, वर्णको सुन्दर करनेवाली, पुष्टिकारक, तृप्तिकारक, मृदु, और मलको करनेवाली है ।

मध्वासवगुणाः ।

मध्वासवोलघुस्तीक्ष्णोमधुरस्तुवरोमतः ।
छेदीरूक्षःप्रतिश्यायकुष्ठमेहविनाशनः ॥

अर्थ–मध्वासव–हलकी, तीक्ष्ण, मधुर, कषेली, छेदक, रूखी तथा प्रतिश्याय, कोढ और प्रमेहविनाशक है ।

द्राक्षासवगुणाः ।

द्राक्षासवःकफकारीरक्तपित्तार्शकुष्ठहा ।

अर्थ—द्राक्षासव—कफकारक तथा रक्तपित्त, बवासीर और कुष्ठनाशक है।

शर्करासव गुणाः ।

शर्करायाश्चासवस्तुपाचकोग्निप्रदीपनः ।
रोचनश्चलघुःस्वादुर्वृष्योवास्तिविकारहा ॥
वातंशोषंनाशयतीत्येवमाचार्य्यभाषितम् ।

अर्थ—शर्करासव–पाचक, अग्निप्रदीपक, रोचन, हलकी, स्वादिष्ठ, वीर्य्यवर्द्धक, वस्तिविकारविनाशक तथा वात और शोषनाशक है ।

जाम्बवासवगुणाः ।

जाम्बवस्यासवश्चापितुवरोग्राहकोमतः ।
वातकोपनकारीचमुनिभिःसमुदाहृतः ॥

अर्थ-जाम्बवासव--कषेली, मलरोधक और वातको कुपित करे है।

मैरेयमद्यगुणाः।

मैरेयकंतुमद्यंस्याद्वृष्यंधातुविवर्द्धकम्। सरंतृप्तिकरंचैवगुरु-तीव्रमदप्रदम्॥ मुखप्रियंचमधुरंकटुप्रोक्तंकफप्रदम्। बलवर्द्धनकृच्चैवमेदोवातकृमीञ्जयेत्॥

अर्थ—मैरेयमदिरा-वीर्यवर्द्धक, धातुवर्द्धक, सारक, तृप्तिकारक भारी, तीव्रमदकारक मुखप्रिय, मधुर, चरपरी, कफकारक, बलवर्द्धक तथा मेद, वात और कृमिको दूर करे है।

नवीनमद्यगुणाः।

नूतनंमद्यसंस्मृतशीतंवातलंपित्तलंतथा।
त्रिदोषजनकंदाहिकफकृद्विशदंगुरु।
अहृद्यंचसरंचैवदुर्गंधिबृंहणंमतम्॥

अर्थ—नवीनमदिरा-शीतल, वातकारक, पित्तकारक, त्रिदोषजनक, दाहकारक, कफकारक, विशद, भारी, हृदयको अहितकारी, सारक, दुर्गंधयुक्त और पुष्टिकारक है।

प्राचीनमद्यगुणाः।

जीर्णमद्यंभ्रामकंस्याद्दीपनंरुचिकृल्लघु। सुगंधिवृष्यंहृद्यंच स्रोतसांचविशोधकम्॥ लवणेनविनासर्वरसैर्युक्तंकफापहम्। वातंकृमीन्सर्वरोगान्नाशयेदितिकीर्त्तितम्॥ (नि० र०)

अर्थ—पुरानीमदिरा-भ्रमकारक, अग्निप्रदीपक, रुचिकारक, हलकी, सुगंधयुक्त, वीर्य्यवर्द्धक, हृदयको हितकारी, स्रोतोंको शुद्ध करनेवाली, लवणरसको छोडकर सर्वरसोंकरके युक्त कफनाशक तथा वात, कृमि और सर्वरोगोंको हरे है।

विधियुक्तमद्यपानगुणाः।

विधिनामात्रयाकालेहितैरन्नैर्यथाबलम्। प्रहृष्टोयःपिबेन्मद्यं तस्यस्यादमृतंयथा॥ किन्तुमद्यंस्वभावेनयथैवान्नंतथास्मृतम्। अयुक्तियुक्तंरोगाययुक्तियुक्तंयथाऽमृतम्॥

अर्थ—मद्यपानकी विधिसे मात्राके माफिक समयपर हितजनक, अन्नोंके

साथ बलाबलको देखके हर्षसहित जो मनुष्य मदिराको पीता है उसके मद्य अमृतके समान गुण करे है, मद्य स्वभावसेही अन्नके समान गुणकारक है, परन्तु अविधिसे जो पीवे है उसके रोगोंको करे है और विधिके साथ जो पीवे है उसके अमृतके सदृश गुणोंको करे है।

सुराप्रयोगविधिः ।

कृशानांरक्तमूत्राणांग्रहण्यर्शोविकारिणाम् ।
सुराप्रशस्तावातघ्नीस्तन्यरक्तक्षयेषुच ॥

अर्थ-कृशशरीरवाले, रुधिर, मूत्र, संग्रहणी और अर्शरोगवाले मनुष्योंको मदिरा, विशेष हितकारी है, सुराको पीनेसे वातरोग, स्तन्य और रक्तक्षय रोग दूर होता है।

मतान्तरे ।

पूर्णेकषायपित्तेचयोगयुक्तासुराहिता । बहुदोषहराचैवश्लेष्म-रोगेविशेषतः ॥ श्रमज्वरातुरेशोषेशोफपाण्ड्वामयेक्षये ॥ मतेःक्रमेऽपस्मारेचपक्ष्मणाश्वभ्रमेषुच ॥ श्रान्तेवाविषपीते-वासर्पदष्टेजलोदरे । रक्तपित्तेतथाश्वासेवारुणीनहितामता ॥ (हा. सं.)

अर्थ-कषेलेपनसे युक्त हुआ पित्त जब पूर्ण होवे तब योगसे युक्त मदिरा हितकारक है बहुदोषोंको हरनेवाली और विशेषकरके कफके रोगोंको नष्ट करे है. परिश्रम, ज्वरसे पीडित, शोष, शोफ पाण्डुरोग, क्षय, बुद्धिकाथकना, अपस्मार, पलकोंका भ्रम, श्रान्त और जिसने विष पीलिया हो उसको सर्पके काटेमें, जलोदरमें, रक्तपित्त और श्वासरोगमें मदिरा हितकारी नहीं है

अथ मद्यानां गन्धनाशनोपायः ।

मुस्तैलवालगदजीरकधान्यकैला यश्चर्वयन्सदसिवाचमभि-व्यनक्ति । स्वाभाविकंमुखजमुज्झातिपूतिगंधं गन्धं चमद्य-लशुनादिभवंचनूनम् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ—नागरमोथा, एलुआ, कूठ, जीरा, धनिया और इलायचीको चर्वण करके जो सभामें बोले हैं उनकी स्वाभाविक मुखकी दुर्गंध दूर होती है

लशुनादिकी भी दुर्गंध दूर होती है यदि मद्यके विशेष गुणदोष देखनेकी इच्छा होय तो "भैषज्यभास्कर" में देखो ।

इति श्रीशालिग्रामनिघण्टुभूषणे सन्धानवर्गः समाप्तः ॥ २१ ॥

अथ संख्यावर्गः ।



क्षारद्वयम् ।

एकःपर्पटकःश्रेष्ठःपित्तज्वरविनाशनः ।

एक पित्तपापडाही पित्तज्वरको दूर करता है ।

सर्जिकायायशूकश्चक्षारद्वयमुदाहृतम् ।
मिलितंतूक्तगुणकृद्विशेषाद्गुल्महृत्परम् ॥

सज्जी और जवाखार दोनों मिले हुए को "क्षारद्वय" कहते हैं यह अपने २ गुणोंको करे हैं और विशेष करके गुल्म रोगको हरे हैं।

द्विकटुकम् ।

पिप्पलीमरिचरूपम् ।

पीपल और कालीमिर्च इनको "द्विकटुक" कहते हैं ।

क्षारत्रयम् ।

सर्जिकाचयवक्षारष्टंकणक्षारएवच । क्षारत्रयंसमाख्यातं क्षारःसचकथ्यते ॥ तत्तिक्तंबलशुक्रामकान्तिशूलोदरा- र्त्ति । वातंगुल्मंकफंचैवनाशयेदितिकीर्तितम् ॥

सज्जी, जवाखार और सुहागा यह "क्षारत्रय" अथवा त्रिक्षार कहे क्षारत्रय--कडवे तथा बल, शुक्र, आम, कान्ति, शूल और उदर हरे हैं और वात, गुल्म तथा कफको नष्ट करे हैं ।

लवणत्रयम् ।

सैंधवंविडंचैवरुचकंचेतिविश्रुतम्।लवणत्रयमाख्यातंतच्च लवणंतथा।। वीर्य्योष्णंदीपनंतीक्ष्णंकफघ्नंपित्तवर्द्धनम् ॥

सैंधानोन, विरियासंचर और संचरलवण यह तीनों मिल हुए वा त्रिलवण कहलाते हैं। लवणत्रय--उष्णवीर्य्य, दीपन, तीक्ष्ण, कफघ्न और पित्तको बढानेवाले हैं ।

त्रिकटु ।

विप्पलीमरिचंशुण्ठीत्रयमेतद्विमिश्रितम् । त्रिकटुत्र्यूषणं व्योषंकटुत्रिकमुदाहृतम् ॥ त्र्यूषणंदीपनंहन्तिश्वासकास गलामयान् । गुल्ममेहकफस्थौल्यमेद-श्लीपदपीनसान् ॥

अर्थ—पीपल, मिर्च और सोंठ इन तीनों औषधी एकत्र मिलीहुई त्रिकटु, त्र्यूषण, व्योष और कटुत्रिक (कटुत्रय, फलत्रिक) कहते त्रिकुटा-अग्निप्रदीप तथा श्वास, खाँसी, गलरोग, गुल्म, प्रमेह, कफ, स्थूल मेद, श्लीपद, और पीनसरोगको दूर करे है ।

कटूषणा ।

पिप्पलीपिप्पलीमूलंविश्वमेतत्रिभिःसमैः ।
कटूषणाचविज्ञेयाबुधैस्त्र्यूषणवद्गुणैः ॥

अर्थ—पीपल, पीपलामूल और सोंठ यह तीनों समान मिलीहुई कटू कहलाती हैं इसके गुण त्रिकुटाके समान जानने ।

त्रिफला ।

पथ्याबिभीतधात्रिणांफलैःस्यात्रिफलासमैः ।
फलत्रिकश्चत्रिफलासावराचप्रकीर्त्तिता ।

अर्थ—हरड, बहेडा और आमका यह तीनों समान मिले हुएको त्रिफ फलत्रिक, वरा (त्रिफली, फलत्रय, फल) कहते हैं ।

मतान्तरे ।

एकाहरीतकीयोज्याद्वौचयोज्यौविभीतकौ ।
चत्वार्य्यामलकान्येवत्रिफलैषाप्रकीर्त्तिता ॥

अर्थ—और किसीके मतसे-एक हरड, दो बहेडे और चार आमले मि हुएको त्रिफला कहते हैं ।

गुणाः ।

त्रिफलाकफपित्तघ्नीमेहकुष्ठहरीसरा ।
चक्षुष्यादीपनीरुच्याविषमज्वरनाशिनी ॥

अर्थ—त्रिफला-कफपित्तनाशक, प्रमेहको हरनेवाला, कुष्ठनिवारक, सा नेत्रोंको हितकारी, अग्निप्रदीपक, रुचिको करनेवाला तथा विषमज्वरनाशक

अन्यच ।

...लामुखरोगघ्नीगलगण्डव्रणापहा । वयसःस्थापकावृ-
...सराहृद्याबलप्रदा ॥ हंतिनाडीव्रणंकण्डूंमेधास्मृतिप्र-
...नी । रसायन्यस्रमेदोजिद्रोपणीक्लेदनाशिनी ॥

...और भी त्रिफला -मुखरोगनाशक, गलगण्डरोगनिवारक, व्रणविना-
...अवस्थास्थापक, वीर्य्यवर्द्धक, कुछकुछ दस्तावर, हृदयको हितकारी,
..., नाडीव्रण, और कण्डुरोगनाशक है, मेधा और स्मरणशक्तिको
...नी, रसायन, रुधिरविकार और मेदरोगको हरनेवाली, व्रणको भर-
...और क्लेदनाशक है ।

मधुरत्रिफला ।

...काश्मर्य्यखर्जूरीफलानिमिलितानितु । मधुरत्रिफला
...मधुरादिफलत्रयम् ॥ मधुरत्रिफलःवृष्याविशदामधु-
...ता । धातुवृद्धिकरीप्रोक्ताकफवातविनाशिनी ॥

...-दाख, कुम्भेर और खजूर यह तीनों मिलीहुई त्रिफला कहलाती
... मधुर फलत्रय मधुरत्रिफला-वीर्य्यवर्द्धक, विशद, मधुर, धातु-
...और कफवातविनाशक है ।

सुगन्धत्रिफला ।

...जातीफलंतथैलाचलवंगफलमेवच ।
...सुगंधत्रिफलाप्रोक्तातृतीयंचफलत्रिकम् ॥

...-जायफल, इलायची और लौंग इन तीनोंको सुगंधत्रिफला और
...त्रिक कहते हैं ।

मतान्तरं ।

...जातीफलंपूगफलंलवंगलतिकाफलम् ।
...सुगंधत्रिफलाज्ञेयासूरिभिस्त्रिफलास्मृता ॥

...-और किसीके मतसे जायफल, सुपारी और लौंग इन तीनोंको
...फला कहा है ।

गुणाः ।

सुगंधित्रिफलावृष्यामुखशुद्धिकरीमता ॥
...हृद्यारुचिकराचैवकफस्यचविनाशिनी ॥

अर्थ-सुगंधित्रिफला-वीर्य्यवर्द्धक, मुखको शुद्धकरनेवाली हृदयको हि-कारी, रुचिकारक और कफको हरे है।

त्रिसुगन्धि।

त्वक्पत्रकैलात्रिसुगन्धिमेतत्प्रकीर्त्तितंवातकफापहारी वृष्यंविषघ्नंचसनागपुष्पंज्ञेयंचतुर्जातकमेतदेव ॥

अर्थ—दालचीनी, तेजपत्र और इलायची इनको त्रिसुगंधि कहते हैं-त्रिगंधि वात और कफनाशक, वीर्य्यवर्द्धक और विषविनाशक है। और तीनोंमें नागकेशर मिलीहुईको चतुर्जातक कहते हैं।

अन्यच्च।

त्वगेलापत्रकैस्तुल्यैस्त्रिसुगन्धंत्रिजातकम् नागकेसरसंयुक्तं चातुर्जातकमुच्यते ॥ तद्द्वयंपाचनंरूक्षंतीक्ष्णोष्णंमुखगंध-हृत्। लघुपित्ताग्निकृद्वर्ण्यंकफवातविषापहम् ॥

अर्थ—दालचीनी, इलायची और पत्रज, यह तीनों समान २ मिलेहु "त्रिजातक" कहते हैं और इसमें नागकेशर मिला दीजाय तो "चातुर्जा[तक]" कहते हैं। त्रिसुगंधि और चातुर्जातक पाचक, रूखे, तीक्ष्ण, गरम, मुख दुर्गंधको हरनेवाले, हलके, पित्तजनक, अग्निकारक, वर्णको सुंदर करने[वाले] तथा कफ, वात और विषविनाशक हैं।

अपिच।

त्रिजातंपित्तलंरूक्षंरुच्यंचाग्निप्रदीपनम्। तीक्ष्णंचोष्णंल-घुवर्ण्यंकटुवृष्यंबलप्रदम् ॥ रसायनंकफंवातंविषंश्वासं-चपीनसम्। स्वरभेदंचकासंचमुखदोषंचनाशयेत् ॥

अर्थ—त्रिजात-त्रिसुगंधि-पित्तकारक, रूखे, रुचिकारक, अग्निप्रदीप[क], तीक्ष्ण, गरम, हलके, वर्णको सुंदर करनेवाले, चरपरे, वीर्य्यवर्द्धक, बल[का]रक, रसायन तथा कफ, वात, विष, श्वास, पीनस, स्वरभेद, खाँसी [और] मुखके दोषोंको हरे है।

मधुरत्रयम्।

घृतंगुडंमाक्षिकंचविज्ञेयंमधुरत्रयम्।
विद्यात्त्रिमधुरंचैवप्रोक्तंवामधुरत्रिकम् ॥

अर्थ—घी, गुड और शहद यह तीनों मिले हुएको मधुरत्रय, त्रिमधुर, त्रिक कहते हैं।

मतान्तर।

सिताघृतंमाक्षिकंवाविज्ञेयंमधुरत्रिकम्।
मधुरत्रितयंचाग्निदीपनंकान्तिकारकम्॥
विषदोषंरक्तपित्तंतृष्णांचैवविनाशयेत्।

अर्थ—और कोई कहतेहैं कि, चीनी घी, और शहत यह तीनों मिलहुये त्रय कहलातेहैं। मधुरत्रय—अग्निप्रदीपक, कान्तिकारक तथा विषविकार, पित्त और तृषाको दूर करैहै।

त्रिसमम।

हरीतकीचशुण्ठीचगुडंचैकत्रमिश्रितम्।
त्रिसमंभाष्यतेसुज्ञैरथवापिसमात्रिकम्॥

अर्थ—हरड, सोंठ, और गुड यह तीनों एकत्र मिले हुएको "त्रिसम" कहते हैं वा "समत्रिक" कहते हैं।

मतान्तर।

हरीतकीचशुण्ठीचगुडूच्येकत्रयोजितम्।
समत्रयंरुचिकरंचक्षुष्यंमलशोधनम्॥
वातंपित्तंनाशयतीत्येवमाचार्य्यभाषितम्।

अर्थ—और किसीके मतसे हरड, सोंठ और गिलोय यह तीनों मिलीहुई "त्रिसम" कहलाती है। त्रिसम—रुचिकारक, नेत्रोंको हितकारी, मलशो-धक तथा वात और पित्तनाशकहै।

त्रिकर्षिका।

नागरातिविषामुस्तात्रयमेतात्रिकार्षिकम्।
त्रिकार्षिकंज्वरंशोथंपित्तंवातंभ्रमंतथा॥
आमंशूलमतीसारंग्रहणींचविनाशयेत्।

अर्थ-सोंठ, अतीस और नागरमोथा यह तीनों मिले हुए "त्रिकार्षिक" कहलाते हैं त्रिकार्षिक ज्वर, सूजन, पित्त, वात, भ्रम, आम, शूल, अतिसार और संग्रहणीको हरे है।

त्रिसिता ।

गुडोत्पन्नाचमधुजाहिमोत्थेतित्रिधासिता । सितागुडोत्था सस्नेहांवृष्याक्षीणक्षतेहिता ॥ मधुजाशर्कराबल्यागुर्वीवृष्याचशीतला।हिमोत्थाशर्कराकिञ्चिदुष्णातिक्ताचपिच्छला॥

अर्थ ईखकी चीनी, शहतकी चीनी और ज्वारकी खांड यह तीनों "त्रिसिता" कहलाती हैं । तहां ईखकी चीनी-स्नेहयुक्त, वीर्य्यवर्द्धक और क्षीण तथा क्षतवाले मनुष्योंको हितकारी है । शहतकी खांड—बलकारक, भारी, वीर्य्यवर्द्धक और शीतल है । ज्वारकी खांड—किञ्चित् गरम, कडवी और पिच्छिल है ।

त्रिकण्टकम् ।

शुण्ठीगुडूचीदुःस्पर्शात्रिकण्टकमितिस्मृतम् । त्रिकंटकानांक्वाथःस्यात्पित्तज्वरविनाशनः ॥ नेत्ररोगंवमिंचैवमस्तकस्यरुजंतथा ॥

अर्थ--सोंठ, गिलोय और जवासा यह तीनों मिलेहुएको "त्रिकण्टक" कहते हैं. त्रिकण्टकोंका काढा -पित्तज्वर, नेत्ररोग, वमन और मस्तकरोगको दूर करे है ।

कण्टकत्रितयम् ।

दुस्पर्शाबृहतीह्यग्निदमनीतिसमांशकम् । कण्टकात्रितयंप्रोक्तंत्रिदोषभ्रमनाशनम् ॥ ज्वरंपित्तंचहिक्कांचतन्द्रालापंचनाशयेत् ।

अर्थ-जवासा, बडीकटेरी और अग्निदमनी यह तीनों बराबर मिली हुई "कण्टकत्रितय" कहलाती है । कण्टकत्रितय-त्रिदोष, भ्रम, ज्वर, पित्त, हुचकी, तन्द्रा और आलापको हरे है ।

कण्टकारीत्रयम् ।

त्रिकण्टक्षुद्राबृहतीकण्टकारीत्रयंस्मृतम् । कण्टकरीत्रयंतन्द्राप्रलापभ्रमनाशनम् ॥ पित्तज्वरंत्रिदोषंचनाशयेदितिकीर्त्तितम् ।

अथ-गोखुरू, कटेरी, और कटाई इन तीनों एकत्र मिलीहुईको "कण्टकारीत्रय" कहते हैं . कण्टकारीत्रय—तन्द्रा, प्रलाप, भ्रम, पित्तज्वर, त्रिदोष इनको दूर करे है ।

त्रिलोहम्।

स्वर्णरूप्यंतथाताम्रंत्रिलोहमितिकीर्त्तितम्।
त्रिलोहस्यगुणाःप्रोक्ताःपंचलोहसमाबुधैः॥

अर्थ—सोना, चांदी और तांबा यह "त्रिलोह" कहलाते हैं त्रिलोहके गुण पंचलोहके समान जानने।

अञ्जनत्रयम्।

पुष्पाञ्जनंचकालख्यंरसाञ्जनमितित्रयम्।
अंजनत्रयमेताद्धिनेत्रयोःपरमांहितम्॥

अर्थ—पुष्पांजन, कालाञ्जन और रसाञ्जन यह अंजनत्रय कहे जाते हैं, अंजनत्रय-नेत्रोंको परमहितकारी है।

अथोपविषात्रयम्।

निर्विषातिविषाचैवलाङ्गल्युपाविषात्रयम्।
विषात्रयंविषघ्नंचज्वरातीसारनाशनम्॥

अर्थ—निर्विषी, अतीस और कलिहारी यह तीनों उपविष कहलाते हैं। उपविषात्रय विषनाशक और ज्वरातिसार विनाशकहै।

चतुरूषणम्।

त्र्यूषणंसकणामूलंकथितंचतुरूषणम्।
व्योषस्ययेगुणाःप्रोक्ताह्यधिकाश्चतुरूषणे॥

अर्थ-त्रिकुटेमें पीपलामूल मिलानेसे चतुरूषण कहा जाता है चतुरूषणके गुण त्रिकुटेसे कुछेक ज्यादे हैं।

चातुर्जातकम्।

त्रिगंधमेलात्वक्पत्रैश्चातुर्जातंसकेसरम्।
त्रिगंधचचतुर्जातंरूक्षोष्णंलघुपित्ताजित्॥
वर्ण्यंरुचिकरंतीक्ष्णंविश्लेष्मामयाञ्जयेत्॥

अर्थ-इलायची, दालचीनी, पत्रज और नागकेशर यह चारों मिले हुएको चातुर्जातक कहते हैं। त्रिसुगंधि तथा चातुर्जातक रूखा, गरम, हलका, पित्त-नाशक, वर्णको सुंदर करनेवाला, रुचिकारक, तीक्ष्ण, विष और कफरोगको नष्ट करे है।

कटुचतुर्जातकम् ।

एलात्वक्पत्रंमरिचंचतुर्जातंकटुस्मृतम् ।
चतुर्जातंचकटुकंचातुर्जातसमगुणैः ॥

अर्थ-इलायची, दालचीनी, तेजपात और कालीमिर्च इनको कटुचतुर्जातक कहते हैं, कतुचतुर्जातक चरपरा और गुण चातुर्जातकके समान जानने।

चातुर्भद्रकम् ।

नागरातविषामुस्तात्रयमेतत्रिकार्षिकम् । गुडूचीसंयुतंचैवचातुर्भद्रकमुच्यते ॥ चातुर्भद्रंपाचकंस्याज्ज्वरजीर्णज्वरापहम् । त्रिदोषकण्ठरुक्छोथारुचिशूलामनाशनम् ॥

अर्थ-सोंठ, अतीस, नागरमोथा और गिलोय इन चारों एकत्र मिले हुएको चातुर्भद्रक कहते हैं. चातुर्भद्रक-पाचक तथा ज्वर, जीर्णज्वर, त्रिदोष, कण्ठरोग, सूजन, अरुचि, शूल और आमनाशक है।

चतुर्बीजम् ।

मेथिकाचन्द्रशूरश्चकालाजाजीयवानिका । एतच्चतुष्टयंयुक्तंचतुर्बीजमुदाहृतम् ॥ तच्चूर्णभक्षितंनित्यंनिहन्तिपवनामयान् । अजीर्णशूलमाध्मानंपार्श्वशूलंकटिव्यथाम् ॥

अर्थ--मेथी, हालो, कलौंजी और अजवायन इन चारों एकत्र मिलेहुएको चतुर्बीज कहते हैं। इसका चूर्ण नित्य सेवन करनेसे वातरोग, अजीर्ण, शूल, आध्मान, पार्श्वशूल और कटिव्यथाको दूर करे है।

चातुर्थिकगणः ।

आमलक्यभयाकृष्णाचित्रकंचसमंसमम् ।
सामान्यरोगहंताचचातुर्थिकगणःस्मृतः ॥

अर्थ--आमला, हरड, पीपल और चीता इन चारों एकत्र मिले हुएको चातुर्थिकगण कहतेहैं यह अजीर्णादिरोगनाशक है।

बलाचतुष्टयम् ।

महाबलाचातिबलाबलानागबलातथा ।
बलाचतुष्टयंशीतंमधुरंबलकांतिकृत् ॥
स्निग्धंग्राहीसमीरास्रपित्तास्रक्षतनाशनम् ।

अर्थ—सहदेई, कंघी, खिरेंटी और गंगेरन इन चारों एकत्र मिलीहुईको बलाचतुष्टय कहते हैं, बलाचतुष्टय-शीतल, मधुर, बलवर्द्धक, कांतिजनक, स्निग्ध, मलरोधक तथा वातरक्त, रक्तपित्त और उरःक्षतरोगनाशक है।

कटुग्रंथिचतुष्कम्।

कटुग्रंथिचतुष्कंतुशुण्ठीलशुनमार्द्रकम्।
पिप्पलीमूलसंयुक्तंवातव्याधिहरंपरम्॥

अर्थ—सोंठ, लहसुन, अदरख और पीपरामूल यह चारो एकत्र मिले हुएको कटुग्रन्थिचतुष्क कहते हैं। कटुग्रन्थिचतुष्क--वातरोगनाशक है।

चतुस्समम्।

जातीफलंत्रिदशपुष्पसमन्वितञ्चजीरंञ्चटङ्कणयुतंचरकेन चोक्तम्। चूर्णानिमाक्षिकसितासहितानिलीढाआमाति-सारमखिलंगुरुहन्तिशूलम्॥

अर्थ—जायफल, लौंग, जीरा और सुहागा इन चारोंको चतुस्सम कहते हैं। इस चतुस्समका चूर्ण बनाकर उसमें मिश्री और सहत मिलाकर सेवन करनेसे आमातिसार और शूलरोग नष्ट होता है।

पंचकोलम्।

पिप्पलीपिप्पलीमूलंचव्यंचित्रकनागरम्।
एकत्रमिश्रितैरेभिः पंचकोलकमुच्यते॥

अर्थ—पीपल, पीपरामूल, चव्य, चीता और सोंठ यह पांचों एकत्र मिले हुए पंचकोल कहे जाते हैं।

पंचकोलंरसेपाकेकटुकंरुचिकृन्मतम्।
तीक्ष्णोष्णंपाचनंश्रेष्ठंदीपनंकफवातनुत्॥
गुल्मप्लीहोदरानाहशूलघ्नंपित्तकोपनम्।

अर्थ—पंचकोल-रस और पाकमें चरपरा, रुचिकारक, तीक्ष्ण, गरम, पाचक, दीपन, कफवातनाशक तथा गुल्म, प्लीहा, उदररोग, अनाह और शूलनाशक है और पित्तको कुपित करे है।

द्वितीयपंचकोलम्।

पथ्याजमोदारुचकमत्युग्रंविश्वभेषजम्।
समभागानिचैतानिद्वितीयंपंचकोलकम्॥

पंचकोलंद्वितीयंतुपाचकंदीपनंस्मृतम् ।

अर्थ—हरड, अजमोदा संचलनोंन, हींग और सोंठ यह सब औषधी बराबर मिलीहुई द्वितीय पंचकोल कहलाती हैं। द्वितीय पंचकोल पाचक और अग्निप्रदीपक है।

पंचत्वक् ।

वटीवटोदुम्बरवेतसानामश्वत्थवृक्षेणसमन्वितानाम् ।
त्वक्पंचकंपंचमहीरुहाणामितिव्रणघ्नंश्वयथुघ्नमेतत् ॥

अर्थ—वड, नदीवड, गूलर, वेंत और पीपल इन पांचोंकी छाल एकत्र मिली हुईको पंचत्वक् कहते हैं-यह व्रणविनाशक और सूजनको दूर करे है

मतान्तरे ।

न्यग्रोधोदुम्बराश्वत्थपारीषप्लक्षपादपाः ।
पंचैतेक्षीरिणोवृक्षास्तषांत्वक्पंचवल्कलम् ॥
त्वक्पंचकंहिमंग्राहिव्रणशोफविसर्पजित् ।

अर्थ—किसीके मतसे-वड गूलर, पीपल, पारिसपीपक और पाखर इन पांचों क्षीरीवृक्षोंकी एकत्र मिली हुई छालको पंचत्वक् वा पंचवल्कल कहते हैं, त्वक्पंचक-शीतल, मलरोधक तथा व्रण, सूजन और विसर्परोगको नष्ट करे है।

पंचपल्लवाः ।

पल्लवाःक्षीरिवृक्षाणांहिताःपित्तातिसारिणाम् ।
कषायाःस्तम्भनारूक्षाःफलंतेषान्तुवातकृत् ॥

अर्थ—पंचक्षीरीवृक्षोंके पत्तोंको पंचपल्लव कहते हैं, यह पंचपल्लव पित्तातिसारवाले रोगियोंको हितकारी हैं, कषाय, स्तम्भक, रूक्ष और इन वृक्षोंके फल वातकारक हैं।

अन्यच्च ।

पंचक्षीरिद्रुपत्रंतुशीतंस्वादुचतिक्तकम् । तुवरंस्तम्भकंग्राहिलेखनंकफवातनुत् ॥ वातरक्तंमलस्तम्भमाध्मानंचातिसारकम् । नाशयेत्पित्तरोगंचलघुप्रोक्तंमनीषिभिः ॥ तेषांफलंतुविष्टम्भिग्राहकंगुरुतूवरम् । अम्लंचमधुरंवृष्यंरक्त-

पित्तविनाशनम् ॥ कफवातंचहल्लासंशोषंवातंचगुल्मकम् । अरुचिंश्वासकासौचनाशयेदितिकीर्त्तितम् ॥ पक्कंगुणाधिकंज्ञेयमितिपूर्वैर्निरूपितम् ॥

अर्थ—पंचक्षीरी वृक्षोंके पत्ते -शीतल, स्वादिष्ठ, कडवे, कषेले, स्तम्भक, ग्राही, लेखन, कफवातनाशक तथा वातरक्त, मलस्तम्भ, आध्मान, अतिसार और पित्तरोगको नष्ट करे हैं और हलके हैं, इनके फल--विष्टम्भकारक, मलरोधक, भारी, कषेले, खट्टे, मधुर, वीर्य्यवर्द्धक तथा रक्त, पित्त, कफ वात, हल्लास, शोष, वातगुल्म, अरुचि, श्वास और खाँसीको नष्ट करेहैं, इनके पक्के फल--अधिक गुणवाले हैं ।

पंचागम् ।

त्वकपत्रफलमूलानिपुष्पाण्येकस्यशाखिनः ।
पंचाङ्गमितिबोद्धव्यं प्राज्ञैरेकत्र मिश्रितम् ॥

अर्थ--एकवृक्षके पत्र, फल, मूल, छाल और फूल इन सब एकत्र मिलहुए-को पंचाग कहते हैं ।

निम्बपंचांगम् ।

निम्बस्यपुष्पफलत्वकपत्रमूलंचपंचकम् ।
पंचनिम्बमितिख्यातंसर्वकुष्ठहरंपरम् ॥

अर्थ--नीमके--फूल, फल, छाल, पत्ते और मूल इन सब एकत्र मिले हुओंको पंचनिम्बक कहतेहैं, पंचनिम्ब -सर्वकुष्ठरोगनाशक है ।

अस्यगुणाः ।

पंचनिम्बन्तुतुवरंतिक्तंशीतंमधुस्मृतम् । लघुज्वरहरंकुष्ठपित्तनाशकरंमतम्॥वातरक्तंचकण्डूतिंदाहंमेहंविषंज्वरम् । वातंचनाशयेदेतदितिपूर्वैर्निरूपितम् ॥

अर्थ--पंचनिम्ब--कषेले, कडवे, शीतल, मधुर, हलके तथा ज्वर, कोढपित्त, वातरक्त, कण्डू, दाह, प्रमेह, विष, ज्वर, और वातको दूर करे हैं ।

अपिच ।

निम्बवृक्षस्यपंचाङ्गंरक्तदोषहरंपरम् ।
पित्तंकण्डूंव्रणंकुष्ठंदाहंचैवविनाशयेत् ॥

अर्थ-पंचनिम्ब अर्थात् निम्बपंचांग--रुधिरके दोषोंको हरनेवाला तथा पित्त, कण्डू, व्रण, कोढ और दाहको दूर करे है ।

क्षारपञ्चकम् ।

पलाशमूलकक्षारौयवक्षारःसुवर्चिका ।
तिलनालोद्भवक्षारःक्षारसंयुक्तपञ्चकम् ॥
क्षारपञ्चकगुल्मार्शोग्रहणीकृमिनाशनः ।

अर्थ--ढाकका खार, मूलीका खार, जवाखार, सज्जी और तिलोंकी नालका खार यह पांचों मिलेहुए क्षारपंचक कहलाते हैं क्षारपंचक -गुल्म, बवासीर, संग्रहणी और कृमिरोगनाशक है ।

लवणपञ्चकम् ।

सैन्धवंरुचकंचैवविडमौद्भिदमेवच । सामुद्रेणसमायुक्तंज्ञेयं लवणपंचकम् ॥ लवणानांपंचकंतुशोषणंचरुचिप्रदम् । मलातुलोमकंदाहिनेत्र्यंवातंकफंहरेत् ॥ शूलंचनाशयत्येवमुक्तंपूर्वैर्मनीषिभिः ।

अर्थ--सैंधानोन, संचल अर्थात् कालानोन, विरियासंचरनोन, औद्भिद और समुद्रनोन यह पांचों मिलेहुए लवणपंचक कहलाते हैं । लवणपंचक--शोषण, रुचिकारक, मलको अनुलोमन करनेवाले, दाहजनक, नेत्रोंको अहितकारी तथा वात, कफ और शूलको नष्ट करेहै ।

लघुपञ्चमूलम् ।

शालिपर्णीपृश्निपर्णीवार्त्ताकीकण्टकारिका । गोक्षुरःपञ्चभिश्चैतैःकनिष्ठंपञ्चमूलकम् ॥ पञ्चमूलमिदंह्रस्वंबृंहणंबलवर्द्धनम् । कषायतिक्तकंनातिशोष्णंसर्वदोषजित् ॥

अर्थ--शालिपर्णी (सालवन), पृश्निपर्णी (पिठवन), कटाई, कटेरी और गोखुरू यह पांचों मिले हुए लघुपंचमूल कहलाते हैं । लघुपंचमूल-पुष्टिकारक, बलवर्द्धक, कषेला, कडवा, न अत्यन्त शीतल और न अत्यन्त गरम और सर्व प्रकारके दोषोंको दूर करे है ।

महत्पञ्चमूलम् ।

बिल्वश्योनाकगम्भारीपाटलागणिकारिका । एतन्महत्प-

च्छमूलसंज्ञकंसमुदाहृतम् ॥ पंचमूलंमहत्तिक्तंकषायंकफ वातनुत् । मधुरंश्वासकासघ्नमुष्णंलघ्वग्निदीपनम् ॥

अर्थ—बेल, स्योनापाठा, कुम्भेर, पाढल और अरणी यह पांचों एकत्र मिलेहुए महत्पञ्चमूल कहे जाते हैं । महत्पंचमूल कडवा, कषेला, कफवातनाशक, मधुर, श्वास और खाँसीको हरनेवाला, गरम, हलका और अग्निदीपक है ।

मध्यमपंचमूलम् ।

बलापुनर्नवाशूर्पपर्णावेरण्डमेवच । एकत्रयोजितैनैवस्यान्मध्यपंचमूलकम् ॥ मध्यमंपञ्चमूलन्तुवृष्यंवातकफापहम् । किञ्चित्पित्तकरंप्रोक्तंपूर्वाचार्यैश्चसूरिभिः ॥

अर्थ—खिरैंटी, पुनर्नवा (साँठ) मुगवन, मषवन और अंड इन पांचों एकत्रमिले हुओंको मध्यमपंचमूल कहते हैं । मध्यमपंचमूल—वीर्य्यवर्द्धक वातकफनाशक और किञ्चित् पित्तकारक है ।

बलाख्यपंचमूलम् ।

निशामृतामेषशृङ्गीगोपवल्लीविदारिका । एतासाचैवमूलन्तुबलाख्यंदोषनाशकम् ॥ बलाख्यंपञ्चमूलन्तुभेदकंचप्रकीर्त्तितम् । शोफज्वराणांशमनंपूर्वाचार्यैरिहोदितम् ॥

अर्थ—हलदी, गिलोय, मेंढाशिंगी, सारिवा और विदारीकंद इन पांचोंके मूलको बलाख्यपंचमूल कहते ह । बलाख्यपंचमूल—भेदक, तथा सूजन और ज्वरको शांति करे है ।

जीवनपंचमूलम् ।

जीवकर्षभकौवीराजीवन्तीचशतावरी । जीवनीयमिदंप्रोक्तं चतुर्थंपंचमूलकम् ॥ जीवनंपंचकंवृष्यंचक्षुष्यंधातुवर्द्धकम् । बल्यंदाहंकफंपित्तंज्वरंतृष्णाञ्चनाशयेत् ॥

अर्थ—जीवक, ऋषभक, बडीशतावर, जीवन्ती और शतावर इन सब एकत्र मिलीहुईको जीवनीयपंचमूल कहतेहैं । जीवनीयपंचमूल—वीर्य्यवर्द्धक, नेत्रोंको हितकारी, धातुवर्द्धक, बलकारक तथा दाह, कफ, पित्त, ज्वर और तृषाको दूर करे है ।

तृणपंचमूलम् ।

शरेक्षुदर्भकाशानांनलस्यमूलमेवच ।
सौश्रुतश्चरकंचैवतृणाख्यंपञ्चमूलकम् (सु०)

अर्थ—शर, ईख, दाभ, काँस और नल इन पांचोंके मूलको तृणपंचमूल कहते हैं इसीप्रकार सुश्रुत और चरकमें भी कहा है ।

अन्यच्च ।

कुशःकाशःशरोदर्भइक्षुश्चेतितृणोद्भवम् ।
पञ्चतृणमिदंख्याततृणजंपञ्चमूलकम् ॥ (च.)

अर्थ--कुशा, काँस, सरपता, दाभ और ईख इन पांचोंके मूलको तृण· पंचमूल कहते हैं ऐसा चक्रदत्तमें लिखा है ।

अन्यच्च ।

शालीक्षुकुशकाशैःस्यात्च्छरेणतृणपञ्चकम् ।
एषांमूलंतृषादाहपित्तासृङ्मूत्रसङ्गहृत् ॥

अर्थ-शालि, ईख, कुश. काँस और सरपता इन पांचोंके मूलको तृणपंचमूल कहते हैं ऐसा वैद्यकनिघण्टुमें लिखा है । तृणपंचमूल--तृषा, दाह, रक्तपित्त और मूत्रके रुकनेको दूर करे है ।

अस्य गुणाः ।

तृणानांपंचमूलन्तुपित्तज्वरतृषापहम् ।
रक्तदोषाम्लपित्तश्चस्त्रीरोगंरक्तपित्तकम् ॥
प्रमेहंनाशयेदेतदितिसुज्ञैर्निरूपितम् ।

अर्थ-तृणपंचमूल-पित्तज्वर तृषा, रक्तविकार, अम्लपित्त, स्त्रीरोग, रक्त· पित्त और प्रमेहरोगको हरे है ।

गोक्षुरादिपञ्चमूलम् ।

गोक्षुरोबदरीचेंद्रवारुणीकासमर्दिका । गोक्षुराद्यंपञ्चमूलं शिरीषेणसमन्वितम् ॥ गोक्षुरादिकपञ्चानांमूलंकुष्ठार्श-नाशनम् । वृष्यंवातंकफंगुल्मंव्रणंचामश्चनाशयेत् ॥

अर्थ-गोखुरू, बेरी, इन्द्रायण. कसौंदी और शिरस इन पांचोंके मूलको गोक्षुरादिपंचमूल कहते हैं । गोक्षुरादिपञ्चमूल-कुष्ठ, बवासीर, वात, कफ,

...म, व्रण और आमको दूर करे है तथा वीर्य्यवर्द्धक है।

पञ्चमहाविषाणि।

...गौरपाषाणकश्चैवतालकश्चमनःशिला। वत्सनाभस्यसर्पस्य- महापञ्चविषाणिच॥ महाविषाणिपञ्चैवमादकानितथापुनः। ...सद्यःप्राणहराण्येवशुद्धानिह्यमृतंजगुः॥

...अर्थ-शंखिया, हरिताल, मनशिल, वत्सभाव और सर्पका विष यह पांच ...विष हैं। पंचमहाविष-मदकारक और तत्काल प्राणोंको हरनेवाले हैं ...शुद्ध किये हुए और युक्तिके साथ सेवन किये हुए अमृतके समान ...कारक हैं।

पञ्चोपविषाणि।

...अर्कक्षीरंस्नुहीक्षीरंतथालाङ्गलिकापिच। धत्तूरकोहयारिश्च ...पञ्चैवोपविषाणिच॥ उपपूर्वंपञ्चविषंमादकंप्राणहारकम्। ...शोधितंतत्तुबलदंवीर्य्यवृद्धिकरंपरम्॥

...अर्थ-आकका दूध, थूहरका दूध, कलिहारी, धतूरा और कनेर यह ...उपविष कहे जाते हैं। पंचउपविष-मदकारक, प्राणहारक यही शुद्ध ...हुये-बलकारक और वीर्यवर्द्धक हैं।

पञ्चगव्यम्।

...गोमूत्रंगोमयंक्षीरंदधिसर्पिस्तथैवच। समंयोजितमेकत्रपंच- ...गव्यमितिस्मृतम्॥ पञ्चगव्यंदेहशुद्धिकरंकफविनाशनम्। ...अजीर्णापस्मृतिज्वरंभूतबाधाश्चनाशयेत्॥

...अर्थ-गायका मूत्र, गोबर, दूध, दही और घी यह पांचों बराबर एकत्र ...हुएको पञ्चगव्य कहलाते हैं। पञ्चगव्य-देहशोधक, कफनाशक, तथा ...जीर्ण, अपस्मार, ज्वर और भूतबाधाको दूर करे है।

पञ्चमाहिषम्।

माहिषाम्बुदाधिक्षीरंसाभिघारंचतद्रसः। तत्पञ्चमाहिषंज्ञेयंतद्वच्छागलपञ्चकम्॥

अर्थ-भैंसका मूत्र, गोबर, दूध, दही और घी इनको पंचमाहिष कहते हैं ...प्रकार छागलपंचक जानना।

सुगन्धपञ्चकम् ।

कुंकुमागरुकर्पूरकस्तूरीचन्दनानिच ।
महासुगन्धमित्युक्तोनामतोयक्षकर्दमः ॥

अर्थ—केशर, अगर, कपूर, कस्तूरी और चंदन यह पांचों बराबर एकत्र मिलहुएको यक्षकर्दम और सुगन्धपंचक कहलाते हैं ।

स्याद्यक्षकर्दमःशीतःसुगान्धिःकान्तिदायकः ।
त्वग्दोषंचशिरोरोगंविषचैवविनाशयेत् ॥

अर्थ-यक्षकर्दम-शीतल, सुगन्धि जनक, कान्तिकारक तथा त्वचाके रोग, शिरोरोग और विषके विकारोंको हरे है ।

सुगंधपञ्चकंशीतंरक्तपित्तकफाञ्जयेत् ।
पीनसंमुखदौर्गन्ध्यहरंरक्तरुजञ्जयेत् ॥

अर्थ-सुगन्धपंचक-- शीतल, रक्तपित्तनाशक, कफहारक तथा पीनस, मुखकी दुर्गन्धता और रुधिरके विकारोंको हरे है ।

अम्लपञ्चम् ।

कोलदाडिमवृक्षाम्लचुक्रिकाचाम्लवेतसः । पञ्चाम्लकः समुद्दिष्टःसचोक्तश्चाम्लपञ्चकः ॥ फलाम्लपञ्चकंरुच्यंकफकृत्कासकारकम् । तिक्तंजाडचकरंचैवविष्टम्भशूलवातनुत् । शुक्रगुल्मार्शसांनाशंकरोपीतिबुधाजगुः ॥

अर्थ--बेर, अनार, विषांबिल, चूका और अमलवेत यह अम्लपंचक हैं । अम्लपंचक--खट्टे, रुचिकारी, कफ और खाँसीको उत्पन्न करनेवाले, कडवे, जडताकारक तथा विष्टम्भ, शूल, वात, शुक्र, गुल्म और बवासीरको दूर करे है ।

द्वितीयफलाम्लपञ्चकम् ।

बीजपूरकजम्बीरनारंगंचाम्लवेतसम् । फलैःपञ्चाम्लकःख्यातस्तिंतिडीसहितःपरः ॥ फलाम्लपंचकंचान्यच्छोफकृन्मदकारकम् । विष्टम्भशूलगुल्मार्शःशुक्रवातविनाशनम् ॥

अर्थ-विजोरानीम्बु, जम्भीरीनींबु, नारंगी, अमलवेंत और इमली यह दूसरा फलाम्लपंचक है । दूसरा फलाम्लपंचक-शोफकारक, मदजनक, तथा विष्टम्भ, शूल, गुल्म, बवासीर, शुक्र और वातविनाशक ।

पंचगणः।

पृष्टिपर्णीबृहत्यौचविदारीगोक्षुरस्तथा।
गणानांपंचकंप्रोक्तंप्लीहानाहप्रमेहजित्॥
भगन्दरंपाण्डुरोगंकुष्ठशूलोदरंजयेत्।

अर्थ—पिठवन, कटेरी, कटाई, विदारीकंद और गोखुरू यह पांचो एकत्र मिले हुये पंचगण कहलाते हैं। पंचगण–प्लीहा, आनाह, प्रमेह, भगन्दर पाण्डुरोग, कुष्ठ, शूल और उदररोगको दूर करे है।

पंचसमम्।

शुण्ठीहरीतकीकृष्णात्रिवृत्सौवर्च्चलंतथा।
इतिपंचसमंनामचूर्णज्वरहरंपरम्॥

अर्थ—सोंठ, हरड, पीपल, निसोथ और कालानोन इन पांचोंको समभाग मिलेहुये पंचसम कहे जाते हैं, पंचसमका चूर्ण–ज्वरनाशक है।

द्वितीयपंचसमम्।

आमलसैन्धवचित्रकपथ्यापिप्पलिचूर्णमिदंज्वरहारि।

अर्थ—आमला, सैंधानोन, चीता, हरड और पीपल यहभी पंचसम कहे जाते हैं इनका चूर्णभी ज्वरनाशक है।

पंचांगलेपः।

पुनर्नवादारुशुण्ठीसिद्धार्थाञ्छिग्रुमेवच।
पिष्ट्वाचैवारनालेनप्रलेपःसर्वशोथहा॥

अर्थ—पुनर्नवा, दारुहलदी, सोंठ, सरसों, सहिंजना इन पांचोंको कांजीमें पीसकर लेप करनेसे सर्व प्रकारकी सूजन दूर होती है।

पंचभृङ्गः।

देवदालीशमीभृङ्गीनिर्गुण्डीसतमालकः।
पञ्चभृङ्गभवःक्वाथोरोगिस्नानेप्रशस्यते॥

अर्थ—देवदाली, शमी (छोंकर), अतीस, निर्गुण्डी और तमाल इन पांचोंके पत्तोंके काढेसे रोगीके लिये स्नान करना उत्तम है।

पंचमूत्रम्।

गोजाविकामहिषीणांमूत्रंगर्दभकस्यच।
पंचमूत्रंकटूष्णञ्चशोधनंवृष्यमीरितम्॥

अर्थ—गाय, बकरी, भेड, भैंस और गधा इन पांचोंके मूत्रको पंचमूत्र कहते हैं। पंचमूत्र-चरपरा, गरम, शोधन और वृष्य है।

पंचबीजम्

राजिकाचाजमोदाचजीरकंखसबीजकम् । कुबेराह्वयुतंचैव पंचबीजमुदाहृतम् ॥ मेथीज्योतिष्मतीबीजंयवानीस्थूलजीरकम् । इक्षुरेणसुसंयुक्तंद्वितीयपंचबीजकम् ॥ पञ्चबीजंग्रहणिकांकण्डूतिंचाग्निमान्द्यकम् । वातंशोफंचैवविषूचींश्वासकासकम् ॥ शीतरोगंचामशूलंनाशयेदितिकीर्तितम् ॥

अर्थ—राई, अजमोद, जीरा, खसखसके दाने और अजवायन यह सब एकत्र मिले हुए पंचबीज कहे जाते हैं। मेथी, मालकांगनी, अजवायन, कलौंजी और तालमखाना यह सब एकत्र मिले हुए द्वितीयपंचबीज कहलाते हैं। पंचबीज-संग्रहणी, कण्डू, मंदाग्नि, वात, सूजन, कफ, विषूचिका, श्वास, खाँसी शीतरोग और आमशूल इन सब रोगोंको हरे है।

पंचसिद्धौषधयः।

तैलकन्दःसुधाकन्दःक्रोडकन्दोरुदन्तिका । मत्स्याक्षीसहिताःपंचसिद्धौषध्यःप्रकीर्तिताः ॥ सिद्धानांचौषधीनांतुपंचकंरोगनाशनम् । रसस्यभस्मकरणेप्रोक्तंपूर्वभिषग्वरैः॥

अर्थ—तेलकंद, सुधाकंद, क्रोडकंद, रुदन्ती और मत्स्याक्षी यह पांचो औषधी एकत्र मिलीहुई पंचसिद्धौषधी कहलाती हैं। सिद्धौषधीपंचक पारेको भस्म करनेवाला और अनेक प्रकारके रोगोंको नाशकरनेवाला है।

पंचरत्नानि ।

कनकहीरकनीलंपद्मरागश्चमौक्तिकम् ।
पञ्चरत्नमिदंप्रोक्तमृषिभिःपूर्वदर्शिभिः ॥

अर्थ—सोना, हीरा, नीलम, पद्मराग और मोती इन पांचोंको पञ्चरत्न कहते हैं।

पंचसूरणाः।

श्वेतश्चवनजश्चैवचित्रदण्डस्तृतीयकः ।
अत्यम्लपर्णीमालाख्यःसूरणःपञ्चधास्मृतः ॥

अर्शोघ्नंपंचकंसर्वार्शानाश्चैवविनाशनम् ॥

अर्थ--जमीकंद, जंगलीजमीकंद, चित्रदंडकंद, अत्यम्लपर्णी और माला-द यह पंचसूरण कहलाते हैं । पंचसूरण--सर्वप्रकारके अर्शरोगनाशक हैं ।

पञ्चपित्तानि ।

वाराहछागमाहिषमत्स्यमायूरपित्तकम् ।
पञ्चपित्तिरूयातं सर्वेष्वेवाहि कर्म्मसु ॥

अर्थ--सुअर, बकरा, भैंस, मछली और मोर इनके पित्तोंको पञ्चपित्त कहते हैं । इनको सर्व कर्म्मोंमें प्रयोग करना चाहिये ।

औषधीपंचामृतम् ।

गुडूचीमुशलीशुण्ठीत्रिकण्टकशतावरी । तत्पंचकंत्वौषधी-जंपञ्चामृतमुदीरितम् ॥ पञ्चामृतंत्वौषधीजंतुष्टिपुष्टिबलप्र-दम् । वीर्य्यवृद्धिकरंचैवप्रोक्तंपूर्वमनीषिभिः ॥

अर्थ--गिलोय मुशली, सोंठ, गोखरू और शतावर इन पांचों औषधी एकत्र मिलीहुईको औषधीपंचामृता कहते हैं । औषधीपंचामृत-तुष्टिकारक, पुष्टिकारक, बलवर्द्धक और वीर्य्यवर्द्धक है ।

पञ्चामृतम् ।

दुग्धंसशर्करंचैवघृतंदधितथामधु ।
पञ्चामृतमिदंप्रोक्तंविधेयंसर्वकर्मसु ॥

अर्थ-दूध, मिश्री, घी, दही और शहत इन पांचों मिलेहुय पदार्थोंको पञ्चामृत कहते हैं । यह पञ्चामृत सर्व कर्मोंमें प्रयोग करना चाहिये ।

षड्रसाः ।

रसाःस्वाद्वम्ललवणातिक्तोषणकषायकाः । षड्द्रव्यमाश्रिता-श्चैवतद्रसषट्कमुच्यते ॥ मधुरादिरसाःषड्वैचाग्निदीप्तिक-रामताः । पौष्टिकालघवश्चैववातनाशकरामताः ॥

अर्थ-मधुर, अम्ल,लवण, तिक्त कटु और कषाय इन छहों रसोंको षड्रस कहते हैं । यह मधुरादि षड्रस-अग्निप्रदीपक, पुष्टिकारक, लघु और वातवि-नाशक है ।

क्षारषट्कम् ।

क्षाराणितिललाङ्गल्योमाषापामार्गयोस्तथा ।

मौष्ककंकौटजंचैवक्षारषट्कंविनिर्दिशेत् ॥
क्षारषट्कंवातगर्भगुल्मरक्तरुजापहम् ।

अर्थ-तिलोंकी नालका खार, कलिहारीका खार, उडदका खार, चिरचिटेका खार, मोखेका खार और कुडेका खार इन-सबको क्षारषट्क कहते हैं। क्षारषट्क-वात, गर्भ, गुल्म और रुधिरके विकारोंको हरे है।

षड्षणम् ।

पञ्चकोलंसमरिचंषड्षणमितिस्मृतम् ।
पंचकोलगुणंतत्तुरूक्षमुष्णंविषापहम् ॥

अर्थ--पंचकोलमें काली मिर्च मिलानेसे षडूषण कहा जाता है। षडूषणके गुण पंचकोलके समान जानने । पंचकोल-रूखा, गरम और विषविनाशक है।

सुगन्धषट्कम् ।

जातीफलंलवङ्गञ्चकर्पूरंपूगवालकम् ।
सुगंधषट्कमेतद्धिसकंकोलमुदाहृतम् ॥
सुगन्धषट्कंरुचिकृद्धृद्यंदाहविनाशकृत् ।

अर्थ--जायफल लोंग, कपूर, सुपारी, सुगन्धवाला और कंकोल यह सब एकत्र मिलीहुई औषधियोंका सुगन्धषट्क कहलाता है। सुगन्धषट्क- रुचिकारक हृदयको हितकारक और दाहविनाशक है।

महासुगन्धषट्कम् ।

कालागरुचकस्तूरीकपूरःश्वेतचंदनम् । कंकोलंचादिगन्धाच महादिषट्सुगंधकम् ॥ महासुगधिषट्कंतुवृष्यंचैवसुगन्धिकृत । भूतबाधांकफंदाहंनाशयेदितिकीर्त्तितम् ॥

अर्थ- काली अगर, कस्तूरी, कपूर सफेदचंदन, शीतलचीनी और नकुलकंद यह सब एकत्र मिलेहुये महासुगन्धषट्क कहलाता है। महासुगन्धषट्क-वीर्य्यवर्द्धक; सुगंधिकारक तथा भूतबाधा. कफ और दाहको दूर करे है।

प्राणहरषट्कम् ।

पूतिमांसंस्त्रियोवृद्धाबालार्कस्तरुणंदधि

प्रभातेमैथुनंनिद्रासद्यःप्राणहराणिषट् ॥

अर्थ-सडाहुवा मांस, वृद्धा स्त्री, भादोंकी धूप, तरुणदही, प्रभातकालमें मैथुन और निद्रा यह छः वस्तु तत्काल प्राणोंको हरनेवाली हैं ।

प्राणकरषट्कम् ।

सद्योमांसंवरंचान्नंबालास्त्रीक्षीरभोजनम् ।
घृतमुष्णोदकेस्नानंसद्यःप्राणकराणिषट् ॥

अर्थ-ताजा मांस, नवीन अन्न, बाला स्त्री. क्षीरका भोजन, घृतयुक्त भोजन और गरमजलसे स्नान करना यह छैः वस्तु तत्काल प्राणोंको करनेवाली हैं ।

सप्तोपविषाणि ।

अर्कक्षीरंस्नुहीक्षीरंलांगलीकरवीरकः । गुञ्जाहिफेनोधत्तूरः सप्तोपविषजातयः ॥ सप्तोपविषवर्गोयंसवरःपरिकीर्त्तितः । अयुक्त्यासेवितश्चायंमारयत्येवनिश्चितम् ॥

अर्थ-आकका दूध, थूहरका दूध, कलिहारी, कनेर, चौंटली, अफीम और धतूरा यह सात उपविषकी जाति हैं । सप्तउपविष वर्ग-अत्यन्त श्रेष्ठ है और अनेक कार्य्यामें लिया जाताहै । यह अयुक्तिके साथ सेवन कियाहुवा मनुष्यको मार देवे है ।

शरीरस्थसप्तधातवः ।

रसासृङ्मांसमेदोऽस्थिमज्जाशुक्राणिधातवः ॥

अर्थ-रस, रुधिर, मांस, मेदा, अस्थि, मज्जा और शुक्र यह शरीरमें रहनेवाली सात धातुहैं ।

सुवर्णादिसप्तधातवः ।

स्वर्णरूप्यश्चताम्रश्चरङ्गंयशदमेवच । सीसंलोहश्चसप्तैतेधातवोगिरिसम्भवाः ॥ वलीपलितखालित्यकार्श्यबल्यज्वरापयान् । निवार्य्यदेहंदधतिनृणांतद्धातवोमताः ॥

अर्थ-सोना, रूपा, तांबा, रांग, जस्त, सीसा और लोहा यह पर्वतसें उत्पन्न होनेवाली सात धातु हैं । यह सातधातु- देहमें वलिका पडना, बिनासमय बालोंका धवल होजाना, मस्तकमेंसे बालोंका गिरजाना, कृशता, निर्बलता, वृद्धावस्था और रोगोंको दूर करके देहको धारण करती हैं इसीकारण इनको धातु कहते हैं ।

शरीरस्थधातूद्भवधातवः ।

स्तन्यंरजोवसास्वेदोदन्ताःकेशास्तथैवच ।
ओजश्चसप्तधातूनांक्रमात्सप्तोपधातवः ॥

अर्थ-दूध, रज, वसा (चर्बी), स्वेद (पसीना), दांत, केश और ओज यह क्रमसे सातधातुओंकी उपधातु हैं अर्थात् रससे दूध, रक्तसे स्त्रीका रज, मांससे चर्बी, मेदासे पसीना, अस्थिसे दांत, मज्जासे केश और शुक्रसे ओज उत्पन्न होता है ।

सप्तोपधातवः ।

स्वर्णजंस्वर्णमाक्षीकंतारजंतारमाक्षिकम् । तुत्थंताम्रभवंज्ञेयंकंकुष्ठंवङ्गसम्भवम् ॥ रसकोजसदाज्जातोनागात्सिन्दूरसम्भवः । लोहाज्जातंलोहकिट्टमेतेसप्तोपधातवः ॥

अर्थ-स्वर्णसे सुवर्णमाखी, रूपेसे रूपामाखी, ताँबेसे नीलाथोथा रांगसे कंकुष्ठ, जस्तसे खपरिया, शीसेसे सिंदूर और लोहेसे लोहकिट्ट उत्पन्न होती है इसप्रकार यह सातधातुओंकी सात उपधातु हैं ।

सप्तसन्तर्पणम् ।

द्राक्षादाडिमखर्जूरैर्मर्दिताम्बुसशर्करम् ।
लाजाचूर्णसमध्वाज्यंसप्तसन्तर्पणंस्मृतम् ॥

अर्थ-दाख, अनार, खजूर यह तीनों चीनीके सरबतमें मिलहुये और इनमें खीलोंका चूर्ण मिलाहुवा तथा घी और शहद सहित यह सप्तसन्तर्पण कहाजाता है ।

मतान्तरे ।

द्राक्षादाडिमखर्जूरकदलीशर्करान्विता ।
समध्वाज्यंचपित्तघ्नंसन्तर्पणमुदाहृत ॥

अर्थ-किसीके मतसे दाख, अनार, खजूर, केला, शर्करा, मधु और घी यह पित्तनाशक और सन्तर्पण है ।

सप्तविधक्वाथः ।

क्वाथःसप्तविधश्चोक्तःपाचनःशोधनोमतः । क्लेदनःशमनश्चैवदीपनस्तर्पणस्तथा ॥ शोषकश्चैकभेदस्तुगुणास्तस्य ब्रवी-

मिते । अर्द्धांशःपाचनश्चोक्तोरव्यंशःकोष्ठशुद्धिकृत् ॥ चतुर्थांशोघर्म्मकारीत्वष्टांशोरोगनाशनः । षष्ठांशश्चाग्निजनकः षोडशांशस्तुशोषणः ॥ पञ्चमांशस्तृप्तिकारीमुनिभिःपरिकीर्त्तितः ॥

अर्थ-काथ सात प्रकारका होता है, जैसे-पाचन १ शोधन २ क्लेदन ३ शमन ४ दीपन ५ तर्पण ६ शोषक ७ तहां जो काढेका जल जलकर आधा रहगयाहो उसको अर्द्धांश कहते हैं। अर्द्धांश काथ पाचन है । जिसका पानी जलकर बारहवाँ भाग शेष रहजाय उसको रव्यंश कहते हैं । रव्यंश काथ कोठेको शुद्धि करे है जिस काढेका जल जलकर चौथा भाग बाकी रहजाय उसको चतुर्थांश कहते हैं । चतुर्थांशकाढा--पसीनेको लानेवाला है जिस काढेका जल जलकर आठवाँ भाग शेष रहजाय उसको अष्टांश कहतेहैं। अष्टांश काथ रोगनाशक है। जिसका जल जलकर छठा भाग बाकी रहाहो उसको षष्ठांश कहते हैं। षष्ठांश काथ अग्निजनक है। जिसका पानी जलकर सोलहवाँ भाग बाकी रहजाय उसको षोडशांश कहते हैं । षोडशांश काथ शोषक। और जिस काढेका जल जलकर पांचवाँ भाग बाकी रहजाय उसको पंचमांश कहते हैं पंचमांश काढा तृप्तिकारक है।

सप्तोपरत्नानि ।

वैक्रांतःसूर्य्यकान्तश्चन्द्रकान्तस्तथैवच ।
कर्पूरकःस्फटिकश्चपेरोजाख्यश्चकाचकः ॥
सप्तोपरत्नगणितामणयोलोकविश्रुताः ॥

अर्थ--वैक्रांत, सूर्य्यकांत, चंद्रकान्त, कपूर, स्फटिक, फ़िरोजा और कांच यह सात उपरत्न हैं।

अष्टधातवः ।

हिरण्यंरजतंकांस्यंताम्रंसीसकमेवच ।
रङ्गमायसरैत्यश्चधातवोष्टौप्रकीर्तिताः ॥

अर्थ-सोना, चांदी, कांसा, तांबा, सीसा, रांग, लोहा और पीतल यह आठ धातुहैं।

मतान्तरे ।

सुवर्णरजतंताम्रंलोहंकुप्यश्चपारदम् ।
वंगश्चसीसकश्चैवअष्टौदेवसुसम्भवाः ॥

अर्थ--और किसीके मतसे सोना, चांदी, तांबा, लोहा, जस्त, पारा रांग, और सीसा यह आठ धातु देवोंसे उत्पन्न हैं ।

अष्टविधचिकित्सा ।

शल्यंशालाक्यकायश्चतथाबालचिकित्सितम् ।
अगदंविषतन्त्रश्चभूतविद्यारसायनम् ॥
वाजीकरणमेवेतिचिकित्साष्टाविधास्मृता ।

अर्थ-शल्य, शालाक्य, काय, बालचिकित्सा, अगद विषतंत्र, भूतविद्या, रसायन और वाजीकरण ऐसे चिकित्सा आठ प्रकारकी है ।

अष्टगंधाः ।

कर्पूरंचंदनंमुस्ताकुङ्कुमंदेवदारुच ।
रोचनाकेसरोशीरगंधाष्टकमुदाहृतम् ॥

अर्थ—कपूर, चंदन, नागरमोथा, केसर, देवदारू, गोरोचन, नागकेसर और खस यह गंधाष्टक अर्थात् अष्टगंध है ।

अष्टवर्गः ।

जीवकर्षभकौमेदेकाकोल्यौवृद्धिऋद्धिके । अष्टवर्गोऽष्टभिर्द्रव्यैःकथितश्चरकादिभिः ॥ अष्टवर्गोहिमःस्वादुर्बृंहणःशुक्रलोगुरुः । भग्नसन्धानकृद्बल्यःशरीरबलवर्द्धनः ॥ वातपित्तास्रतृड्दाहज्वरमेहक्षयप्रणुत् ॥

अर्थ-जीवक, ऋषभक, मेदा, महामेदा, वृद्धि, ऋद्धि, काकोली और क्षीरकाकोली यह आठ औषधी एकत्र मिली हुई अष्टवर्ग कही जाती है । अष्टवर्ग-शीतल, स्वादिष्ट, पुष्टिकारक, शुक्रजनक, भारी, भग्नसन्धानकारक, बलकारक, शरीरवर्द्धक बलको बढानेवाला तथा वात, पित्त, रुधिरविकार, तृषा, दाह, ज्वर, प्रमेह और क्षयरोगको दूर करे है ।

अष्टवर्गप्रतिनिधयः ।

मेदाभावेअश्वगन्धामहामेदेचशारिवा ।
जीवकर्षभकाभावेगुडूचीवंशलोचना ॥
ऋद्धयभावेबलादेयावृद्धयभावेमहाबला ।

अर्थ—मेदाके अभावमें असगंध, महामेदाके अभावमें शारिवा, जीव- के अभावमें गिलोय, ऋषभकके अभावमें वंशलोचन, ऋद्धिके अभावमें खेटी और वृद्धिके अभावमें सहदेवी देनी चाहिये ।

अष्टमंगलघृतम् ।

वचाकुष्ठंतथाब्राह्मीसिद्धार्थकमतापिच । सारिवासैन्धवश्चैव पिप्पलीघृतमष्टमम् ॥ सिद्धंघृतमिदंमेध्यंपिबेत्प्रतिदिनेदिने। दृढस्मृतिःकुमाराणांपिबतामष्टमङ्गलम् ॥

अर्थ—वच, कूठ, ब्राह्मी, सरसों, सारिवा, सैंधव, पीपल और घी इन सबके द्वारा सिद्ध कियेहुये घृतको अष्टमंगलघृत कहते हैं इस घीको जो बालक प्रतिदिन पीते हैं उनकी मेधाको वृद्धि होती है और स्मरण- शक्ति दृढ होजाती है ।

नवधातवः ।

हेमताराग्नागश्चताम्रवङ्गेचतीक्ष्णकम् ।
कांस्यकंकान्तलोहश्चधातवोनवकीर्त्तिताः ॥

अर्थ—सोना, चांदी, पीतल, सीसा, ताँबा, रांग, लोहा, काँसा और कान्तलोह यह नवधातु हैं ।

नवरत्नानि ।

माणिक्यमुक्ताफलविद्रुमाणितार्क्ष्यंचपुष्पंभिदुरंचनीलम् ।
गोमेदजंचाथविदूरकंचक्रमेणरत्नानिनवग्रहाणाम् ॥

अर्थ—माणिक, मोती, मूँगा, पन्ना, पुखराज, हीरा, नील, गोमेद और वैदूर्य यह क्रमसे नवग्रहोंके नवरत्न हैं ।

क्षारदशकम् ।

शिग्रुमूलकपलाशचुक्रिकाचित्रकार्द्रकसनिम्बसम्भवैः ।
इक्षुशेखरिकमोचिकोद्भवैःक्षारपूर्वदशकंप्रकीर्त्तितम् ॥

अर्थ- सहिंजना, मूली, ढाक, इमली, चीता, अदरख, नीम, ईख, चिरचिटा और केला इन दश वृक्षोंके क्षारको क्षारदशक कहते हैं ।

दशांगधूपः ।

मधुमुस्तंघृतंगंधोगुग्गुलागरुशैलजम् ।
सरलःसिह्लसिद्धार्थंदशांगोधूपउच्यते ॥

अर्थ--शहत, नागरमोथा, घी, गंधक, गूगल, अगर भूरिछरीला, धूपसरल, शिलारस और सरसो इन सबको एकत्र कर दशांगधूप बनाई जाती है ।

दशमूलम् ।

उभाभ्यांपंचमूलाभ्यांदशमूलमुदाहृतम् ।
दशमूलंत्रिदोषघ्नंश्वासकासाशिरोरुजः ॥
तन्द्राशोथज्वरानाहपार्श्वपीडारुचीर्हरेत् ॥

अर्थ—लघु और बृहत्पंचमूल दोनोंको मिलाकर दशमूल होता है. दशमूल-त्रिदोषनाशक तथा श्वास, खाँसी, शिरोरोग, तन्द्रा, सूजन, ज्वर, आनाह, पसलियोंकी पीडा और अरुचिको दूर करे है ।

दशमूत्रम् ।

हस्तिमहिषोष्ट्रगवाजमेषाश्वगर्दभमानुषमानुषी-
णांदशानांमूत्रम् ।

अर्थ—हाथी, भैंस, ऊंट गाय, बकरी, भेड, घोडा, गर्दभ, मनुष्य और स्त्री इन दश प्राणियोंके मूत्रको दशमूत्र कहते हैं ।

इति श्रीशालिग्रामवैश्यविरचिते निघण्टुभूषणे संख्यावर्गः समाप्तः ॥ २२ ॥

॥ इति पूर्वार्धं समाप्तम् ॥

॥ श्रीः ॥

शालिग्रामनिघण्टुभूषणे ।

उत्तरार्द्धम् ।



मंगलाचरणम् ।

स्वात्मस्थितःसर्वगतःसमस्तव्यापारवेदीविनिवृत्तसंगः ।
वृद्धकालोऽप्यजरोवरेण्यःपायादपायात्पुरुषःपुराणः॥

अनूपादिवर्गः ।

देशस्तुत्रिविधोज्ञेयोह्यनूपोजांगलस्तथा ।
साधारणोविशेषेणज्ञातव्यास्तेमनीषिभिः ।

अर्थ—अनूप, जांगल और साधारण इस भेदोंसे देश तीन प्रकारके हैं सो ये देश बुद्धिमानों करके जानना चाहिये ।

अनूपदेशका लक्षण ।

नदीपल्वलशैलाढ्यःफुल्लोत्पलकुलैर्युतः । हंससारसकारण्डचक्रवाकादिसेवितः ॥ शशवराहमहिषरुरुरोहिकुलाकुलः । प्रभूतद्रुमपुष्पाढ्योनीलसस्यफलान्वितः ॥ अनेकशालिकेदारकदलीक्षुविभूषितः । अनूपदेशोज्ञातव्योवातश्लेष्मंमयार्त्तिमान् ॥

अर्थ–जिसमें नदी. तलैया और पर्वत अधिकहों तथा जो फूले कमल और कुमुदोंके समूहसे संयुक्त होय, हंस सारस, जलमुर्गी और चकवादि पक्षियोंके सेवितहो; खरगोस, सूअर, भैंसा, रुरू, और रोहि, इनके समूहसे व्याकुल होय, बहुतसे वृक्ष और पुष्पोंसे युक्त होय, हरी दूब और फलोंसे परिपूर्ण होय और जो अनेक प्रकारके शालिधानोंके खेतोंसे केला और ईखआदिवृक्षोंसे सुशोभित होय अर्थात् यह सब जिसमें होय उसको अनूपदेश कहते हैं अनूप देश–वात और कफके रोगोंको उत्पन्न करता है ।

अन्यच्च ।

बहुतरशुभनद्यश्चारुपानीयपुष्टास्सरससरउपेताशाद्वलासारभूमिः । हरितकुशजलानांशालिकेदाररम्यादिनकरकरदीप्तिंवाञ्छतेयत्रलोकः ॥ गुरुमधुररसाढ्याभातिचक्षुःसदार्द्राविविधजनितवर्णाःशालिगोधूमयूषाः । मधुरसविमुक्त्यामानवानांप्रकोपीभवतिकफसमीरःस्यात्तदानूपदेशः ॥

अर्थ-जिसमें निर्मल और मनोहर जलवाली बहुतसी नदी हौंय तथा जिस देशकी पृथ्वी हरीदूब और रसवाले वृक्षोंसे अच्छादित होरही हो, हरी कुशा और जलसे भरेहुए हैं शालिधानोंके खेत, उन खेतोंसे विभूषित होरहीहै भूमि जिसकी और जिस देशके लोक सूर्यकी किरणोंकी अभिलाषा करते हैं, जहां भारी मधुर रसान्वित और निरंतर हरी ईख होती है, जहां नानाप्रकारके रंगके शालिधान और गोधूमादि होते हैं और जहां मधुर रसको भक्षण करनेसे कफ और वात कुपित होते हैं, उस देशको अनूपदेश कहते हैं हिन्दी-खादर, तराई ।

जांगलदेशलक्षणम् ।

आकाशशुभ्रउच्चश्चस्वल्पपानीयपादपः । शमीकरीरबिल्वार्कपीलुकर्कन्धुसंकुलः ॥ हरिणैणर्क्षपृषतगोकर्णखुरसंकुलः । सुस्वादुफलवान्देशोवातलोजांगलःस्मृतः ॥

अर्थ-जो देश आकाशके समान स्वच्छ और ऊँचाहो जिसमें अल्पजलहो, बहुत थोडे वृक्ष हौंय और शमी, करील, बेल, आक. पीलु और वेरी जिसमें अधिकतासे होय तथा हरिण, एण, रीछ, चीता, रोझ और गर्दभादि, पशुओंसे जो देश भरा हुआ हो जिसमें स्वादिष्ठ फल उत्पन्न हों उस देशको जांगल देश कहते हैं, जांगल देश--वातकारक है ।

अन्यच्च ।

खरपरुषविशालाःपर्वताःकण्टकीर्णादिशिदिशिमृगतृष्णाभूरुहाःशीर्णपर्णाः ॥ अतिखररविरश्मीपांशुसम्पूर्णभूमिःसरसिरसविहीनःकूपकारम्भकर्षः ॥तदनुविरससस्याहारिणो गोमहिष्यः प्रभवति रसमांसेरूक्षभावश्चसम्यक् ॥

न्यक्॥पुनरपिहिमवाहंशालिसस्यंनचेक्षुर्भवतिरुधिरपित्तं-कोपमाशुह्युपैति ॥

अर्थ—जिसमें तीक्ष्ण और कठोर पहाड स्थित हैं तथा कंटकोंसे व्याप्त होरही है दिशा जिसकी, जिसमें बिनाही जलके मृगोंको जल प्रतीत होवे, जहां फटेहुये पत्तोंवाले वृक्ष अधिकतर होते हैं, जहाँ सूर्यकी धूपसे अत्यन्त गरम हुए रेतेसे पृथ्वी परिपूर्ण होरही है, जहाँ सरोवर और कुओंका पानी नीरस होकर सूखता जाता है, जहाँ नीरसधान खानेसे हाथी, गाय, भैंस, इत्यादि पशु अधिक प्रसन्न नहीं होते, जहाँ रस और मांसमें रूक्षता उत्पन्न होती है, जहाँ शीतल पवन, शालिधानोंके खेत और ईख नहीं होती है. और जहाँ रक्त और पित्त कुपित होता है उसको जांगलदेश कहते हैं। हिन्दी- कटैर खुस्कदेश ।

साधारणदेशका लक्षण।

उभयगुणयुतंवानातिरूक्षंनस्निग्धं नचखरबहुलंचेच्चाभितः कण्टकाढ्यम ॥ भवतिचजलकीर्णनातिशीतंनचोष्णंसम-प्रकृतिसमेतंविद्धिसाधारणश्च ॥

अर्थ—जहाँ अनूप और जांगल इन दोनों देशोंके लक्षण मिलतेहों, जहाँ न तो अत्यन्त रूक्षता होवै और न अधिक स्निग्धता होवै, जहाँ तेज और कांटे अधिक न होवैं, जो चारों ओर पानीसे भर रहाहो जिसमें न अत्यन्त शीत होवै और न अत्यन्त गरमी होवै समान प्रकृतिवाला हो उसको साधारण देश कहते हैं।

अन्यच्च।

यत्रद्वयोरपिचलक्षणयोर्निवेशो गोधूममाषचणकाभिधया-वनालैः॥ योराजितःसममलोजनसौख्यदायी साधारणः सगदितोखिलवैद्यराजैः॥

अर्थ-जिसमें अनूप और जांगल दोनों देशोंके लक्षण मिलते होंय, जहाँ गेहूँ, उडद, चनें और ज्वार उत्पन्न होते होंय और जिसमें सरदी, गरमी समान हो उसको साधारण देश कहते हैं।

अथ क्षेत्रभेदाः।

क्षेत्रभेदंप्रवक्ष्यामिशिवेनाख्यातमंजसा ।

ब्राह्मंक्षात्रंचवैश्यीयंशौद्रंचेतियथाक्रमात् ॥

अर्थ--अब महादेवके कहेहुए क्षेत्रभेदको कहताहूं- ब्राह्मक्षेत्र, क्षात्रक्षेत्र, वैश्यक्षेत्र और शौद्रक्षेत्र इन भेदोंसे क्षेत्र चार प्रकारका है सो यथाक्रमसे जानना ।

ब्राह्मक्षेत्रका लक्षण ।

मायोदर्भपलाशवारिबहुलंयत्रार्जुनामृत्तिका ।
ज्ञेयंतत्प्रथमंद्विजातिसुखदंद्रव्यंतदुत्थंभवेत् ॥

अर्थ--जिसमें कुशा और पलाशके वृक्ष अधिक हों, जो क्षेत्र जलसे परिपूर्ण हो जहाँकी मृत्तिका सफेद हो उस क्षेत्रको ब्राह्मक्षेत्र कहते हैं। ब्राह्मक्षेत्रके उत्पन्न हुए द्रव्य ब्राह्मणोंको सुखदेनेवाले हैं ।

क्षात्रक्षेत्र ।

ताम्रभूमिवलयंभूधरंयन्मृगेन्द्रमुखसंकुलंकुलम् ।
घोरघोषिखदिरादिदुर्गमंक्षात्रमेतदुदितंपिनाकिना ॥

अर्थ- जिसका रंग ताम्रवर्ण हो, और जो पर्वत, सिंह और मृगादिकोंके समूहसे संयुक्तहो तथा भयंकर शब्द करनेवाले पशु पक्षी और खैर आदिके वृक्षोंसे परिपूर्ण हो उसको ' शंकर ' ने क्षत्रियक्षेत्र कहा है ।

वैश्यक्षेत्र ।

शातकुम्भनिभभूमिभास्वरंस्वर्णरेणुनिचितंनिधानवत्।
सिद्धकिन्नरसुपर्वसेवितंवैश्यमाख्यदिदमिन्दुशेखरः॥

अर्थ--जिसका रंग सोनेके समान पीतवर्ण हो। जिसकी मृतिकामें सुवर्णके कणसे मिलेहों, एवं सिद्ध, किन्नर और देवादिकों करके जो सेवित हो उसको ' शंकर ' ने वैश्यक्षेत्र कहा है ।

शूद्रक्षेत्र ।

श्यामस्थलाढ्यंबहुसस्यभूतिदंलसत्तृणेर्बब्बुलवृक्षवृद्धिदम् ।
धान्योद्भवैःकर्षकलोकहर्षदंजगादशौद्रंजगतौवृषध्वजः ॥

अर्थ- जिस पृथ्वीका रंग श्यामवर्ण हो, जिसमें नाना प्रकारकी घासें उत्पन्न होती हो जहाँ तृण और बबूरके पेड बहुत होवें, तथा जो नाना प्रकारके धान्योंके उत्पन्न होनेसे किसानोंको आनंद देनेवाली हो उस पृथ्वीको वृषध्वज (शंकर) ने शूद्रक्षेत्र कहा है ।

चतुर्विधक्षेत्रोद्भवद्रव्यगुणाः ।

द्रव्यंक्षेत्राद्रुदितमनघंब्राह्मतःसिद्धिदायिक्षत्राद्यु थंवलिपलितजिद्विश्वरोगापहारि ॥ वैश्याज्जातंप्रभवतितराधातुलोहादिसिद्धौशौद्रादेतज्जनितमखिलव्याधिविद्रावकंद्राक् ॥

अर्थ-ब्राह्मणक्षेत्रसे उत्पन्न हुए द्रव्य सिद्धिदायकहैं । क्षत्रियक्षेत्रसे उत्पन्न द्रव्य वलि और पलित तथा संसारके रोगोंको हरनेवाल होते हैं । वैश्य से उत्पन्न हुए द्रव्य धातु और लोहादिकी सिद्धिमें लियेजाते हैं और क्षेत्रसे उत्पन्न हुए द्रव्य सर्वप्रकारके रोगोंको हरनेवाले हैं । इन उपरोक्त ण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र इन चारों क्षेत्रोंसे उत्पन्न हुये द्रव्य क्रमसे ण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्रोंको हितकारी हैं ।

अन्यच्च क्षेत्रभेदाः ।

ब्रह्माशक्रःकिन्नरेशस्तथाभूरित्येतेषांदेवताःस्युःक्रमेण । प्रोक्तास्तत्रप्रागुमावल्लभेनप्रत्येकंतेपंचभूतानिवक्ष्ये ॥

अर्थ-ब्रह्मा, इन्द्र, कुबेर और पृथ्वी यह ऊपर कहेहुए ब्राह्मादि क्षेत्रोंके से-देवता हैं ऐसा शिवने कहा है यह प्रत्येक क्षेत्र पंचभूतोंसे पांच प्रका-र है उसको कहता हूं ।

पार्थिवक्षेत्र ।

पीतस्फुरद्वलयशर्करिलाश्मरम्यंपीतंयदुत्तममृगंचतुरस्रभूतम् । प्रायश्चपीतकुसुमान्वितवीरुदादितत्पार्थिवंकठिनमुद्यदशेषतस्तु ॥

अर्थ-जो क्षेत्र पीलेरंगके गोल कण और पाषाणोंसे शोभित हो तथा स क्षेत्रकी पृथ्वीका रंगभी पीतवर्णहो और जिस क्षेत्रमें वृक्ष लताभी े फूलवाले हों तथा जिसकी भूमि कठिन हो उसको पार्थिवक्षेत्र कहते हैं।

आप्यक्षेत्र ।

अर्द्धचन्द्राकृतिश्वेतंकमलाभंदृषच्चितम् । नदीनदजलाकीर्णमाप्यंतत्क्षेत्रमुच्यते ॥

अर्थ-जो क्षेत्र अर्धचन्द्राकार हो, जिसका वर्ण सफेदकमलके समान हो और जो पाषाणोंसे संयुक्त हो, नदी नदादि जलाशयोंसे व्याप्त हो उसको आप्यक्षेत्र जानना ।

तैजसक्षेत्र ।

खदिरादिद्रुमाकीर्णभूरिचित्रकवेणुकम् ।
त्रिकोणंरक्तपाषाणंक्षेत्रंतैजसमुत्तमम् ॥

अर्थ--जो क्षेत्र खदिरादिकके वृक्षोंसे परिपूर्ण हो, जिसमें अनेक चीतेके और बाँसके वृक्षहों, जिसका आकार तिकोना हो और जिसमें लाल पाषाण हों उसको तैजसक्षेत्र कहते हैं ॥

वायवीयक्षेत्र ।

धूम्रस्थलंधूम्रदृषत्परीतंषट्कोणकंतूर्णमृगावकीर्णम् ।
शाकैस्तृणैरंचितरूक्षवृक्षकंप्रकारयेत्तत्खलुवायवीयम् ॥

अर्थ--जिस क्षेत्रका रंग धूसर हो तथा जो धूएँके रंगके पाषाणोंसे संयुक्त हो और जिसके छःकोने हों जिसमें मृगादिपशु, शाक और तृण अधिकतासे हों. और जिसमें रूखे वृक्ष हों उस क्षेत्रको वायवीय क्षेत्र कहते हैं ।

आन्तरिक्षक्षेत्र ।

नानावर्णवर्त्तुलंतत्प्रशस्तंप्रायःशुभ्रंपर्वताकीर्णमुच्चैः ।
यच्चस्थानंपावनंदेवतानांप्राहक्षेत्रंत्रीक्षणस्त्वांतरिक्षम् ॥

अर्थ--जिस क्षेत्रका रंग नानाप्रकारका हो, जो क्षेत्र गोलहो, तथा जो श्वेतपर्वतोंसे आकीर्ण और ऊँचा होवै और जिसमें देवतादि वास करते हों उसको महादेवने आंतरिक्षक्षेत्र कहा है ।

पंचविधक्षेत्रोद्भवद्रव्यगुणाः ।

द्रव्यंव्याधिहरंबलातिशयकृत्स्वादुस्थिरंपार्थिवं
स्यादाप्यंकटुकंकषायमखिलंशीतंचपित्तापहम् ।
यत्तिक्तंलवणंचदीप्यमरुचिंचोष्णंचतत्तैजसं
वायव्यंतुहिमोष्णमम्लमबलंस्यान्नाभसंनीरसम् ॥

अर्थ--पार्थिवक्षेत्रमें उत्पन्न होनेवाले द्रव्य – रोगनाशक, अत्यंत बलकारक, स्वादिष्ठ और स्थिर होते हैं । आप्यक्षेत्रमें उत्पन्न होनेवाले द्रव्यं चर्परे, कषैले, शीतल और पित्तनाशक होतेहैं । तजस क्षेत्रके उत्पन्न होनेवाले द्रव्य- कडवे, नमकीन, अग्निको दीपन करनेवाले, वातनाशक और गरम होते हैं । और

यवीय क्षेत्रमें उत्पन्न होनेवाले द्रव्य-शीतल, गरम, खट्टे और अबलकारक ते हैं। आंतरिक्ष क्षेत्रमें उत्पन्न होनेवाले सब द्रव्य नीरस होते हैं ।

पांचक्षेत्रोंकेदेवता ।

ब्रह्माविष्णुश्चरुद्रोस्मादीश्वरोथसदाशिवः।
इत्येताःक्रमतःपंच क्षेत्रभूतादिदेवताः ॥

अर्थ-ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र, ईश्वर और सदाशिव ये क्रमसे पाँच क्षेत्रोंके ंच देवता हैं ।

वृक्षोत्पत्तिः ।

जित्वाजवाद्दरिसुसैन्यमिहाजहारवीरःपुरायुधिसुधाकलशं गरुत्मान् ॥ कीर्णैस्तदाभुविसुधाशकलैःकिलासीवृक्षा-दिकंसकलमस्यसुधांशुरीशः ॥

अर्थ-पूर्वकालमें जिससमय बलवान् गरुडजीने सर्वदेवसेनाको संग्राममें जीतकर अमृतके कलशको शीघ्रतासे छीनाथा उससमय जो अमृतकी बूँदें कलशमेंसे पृथ्वीके भागोंमें गिरीं उन्ही बूँदोंसे यह सब वृक्षादिक उत्पन्न ए और इन सबका स्वामी चन्द्रमा हुआ ।

वृक्षोंकेब्राह्मणादिभेद ।

तत्रोत्पन्नास्तूत्तमेक्षेत्रभागेविप्रीयाद्दौविप्रुषोयत्रयत्र । क्षोणीजादिद्रव्यभूयंप्रपन्नास्तास्ताःसंज्ञाबिभ्रतेतत्रभूयः॥ एवंक्षेत्रानुगुण्येनतज्जाविप्रादिवर्णिनः। यदिवालक्षणंवक्ष्याम्यमोहायमनीषिणाम् ॥

अर्थ-ब्राह्मणादिक्षेत्रोंमें उत्पन्न हुए द्रव्य-ब्राह्मण, क्षत्रियक्षेत्रोंमें उत्पन्न ए द्रव्य-क्षत्रिय, वैश्यक्षेत्रोंमें उत्पन्न हुए द्रव्य-वैश्य और शूद्रक्षेत्रमें उत्पन्न ए द्रव्य-शूद्र कहलाते हैं। ऐसे प्रत्येक क्षेत्रके अनुसार वृक्षोंके ब्राह्मणादि हैं उनमें वैद्यकोकदाचित् भ्रम न होजावे इसकारण उनके लक्षण कहताहूँ।

तल्लक्षणानि ।

किसलयकुसुमप्रकाण्डशाखादिषुविशदेषुवदंतिविप्रमेतान्। नरपतिमतिलोहितेषुवैश्यं कनकनिभेषुसितेतरेषुशूद्रम् ॥

अर्थ-जिसके पत्र, पुष्प, दण्डी और शाखादि बडे होंय, उसको ब्राह्मण-जातिका वृक्ष कहते हैं। जिसके पत्र पुष्प प्रकाण्ड और शाखादि लाल

होवें उसको क्षत्रिय जातिका वृक्ष जानना। और जिसके पत्र पुष्पादि पीले होवैं उसको वैश्य तथा जिसके काले होवैं उसको शूद्रजातिका जानना।

ब्राह्मणादिवृक्षोंकोयोजनेकीविधि।

विप्रादिजातिसंभूतान्विप्रादिष्वेवयोजयेत्।
गुणाढ्यानपिवृक्षादीन्प्रातिलोम्यंनचाचरेत्॥

अर्थ-ब्राह्मण जातिके वृक्ष ब्राह्मणोंको देवै, क्षत्रियजातिके क्षत्रियोंको वैश्य जातिके वैश्योंको और शूद्र जातिके शूद्रोंको देवै। अधिक गुणवाले वृक्षोंकोभी प्रतिलोभ (उलटा) न करै, अर्थात् ब्राह्मण जातिके वृक्षोंको क्षत्रियादिकको और क्षत्रियादिके वृक्षोंको ब्राह्मणवैश्यादिकोंको शूद्र-ब्राह्मण और क्षत्रियको और शूद्र जातिके वृक्षोंको ब्राह्मणादिको न देवै।

अथौषधिनिर्णयश्चतुर्विधः।

किंचिद्दोषप्रशमनंकिंचिद्धातुप्रदूषणम्।
स्वस्थवृत्तौमतंकिंचित्त्रिविधंद्रव्यमुच्यते॥

अर्थ-कोई औषधि वातादिक दोषोंको शान्त करनेवाली कोई रसादिक धातुओंको दूषित करनेवाली और कोई औषधि नीरोग प्राणियोंको हितकारक है, ऐसे इस संसारमें जितने द्रव्य हैं वह सब तीन प्रकारके जानने।

तत्त्रिविधं यथा।

द्रव्यंतुत्रिविधंप्रोक्तंजाङ्गमौद्भिदपार्थिवम्॥

अर्थ-फिर वही द्रव्य जंगम औद्भिद और पार्थिव इन भेदोंसे तीन प्रकारक हैं।

जंगमद्रव्य।

मधूनिगोरसाःपित्तंवसामज्जासृगामिषम्।
विण्मूत्रचर्मरेतोऽस्थिस्नायुःशृंगखुरानखाः॥
जंगमेभ्यःप्रयुज्यन्तेकेशालोमानिरोचनाः।

अर्थ-शहत, गोरस, पित्त, चरबी, मज्जा, रुधिर, मांस, विष्ठा, मूत्र, त्वचा, वीर्य्य, हड्डी, नसैं, सींग, खुर, नख, केश, रोम और गोरोचन (गोलोचन) ये पशु मनुष्य और पक्ष्यादि चलते हुए जीवोंसे उत्पन्न द्रव्य व्यवहारमें आते हैं इनको जंगमद्रव्य कहते हैं।

पार्थिवद्रव्यम्।

सुवर्णसमलाःपंचलोहाःससिकतासुधामनःशिलाले।
मणयोलवणंगैरिकांजनेभौममौषधमुदिष्टम्॥

अर्थ-सोना, चाँदी, तांबा, जस्त, रांग, सीसा, लोहा, शिलाजीत, बालू, सोनामाखी, खपरिया, मुदार्सिंग, मनशिल, हरिताल, हीरादि नवरत्न, रत्न, सैंधवादिलवण, गेरू, खरियामट्टी, कसीस, सुर्मा इत्यादि पार्थिव अर्थात् ये ओषधी पृथ्वीकी खानोंमेंसे निकलती हैं इसकारण इनको भौम औषध कहते हैं।

औद्भिदद्रव्यम्।

वनस्पतिर्वीरुधश्चवानस्पत्यस्तथौषधिः।
फलैर्वनस्पतिःपुष्पैर्वानस्पत्यःफलैरपि॥
ओषध्यःफलपाकांताःप्रतानैर्वीरुधस्मृतः।

अर्थ-धरतीको फोडकर जो द्रव्य निकलै उसको औद्भिदद्रव्य कहते हैं और उस औद्भिदकी चार जाति हैं, वनस्पति १ वीरुध २ वानस्पत्य ३ और औषधि ४ जिनपै विना फूलकेही फल लगैं उनको वनस्पति तथा पादप कहते हैं, जैसे-वड, पीपल इत्यादि। और जिनपै फूल लगकर फल आते हैं उनको वानस्पत्य तथा शाखी कहते हैं। जैसे-आम, जामुन इत्यादि। और जो फल आनेके पश्चात् सूखजाते हैं उनको औषधि कहते हैं। जैसे-गेहूँ, जौ आदि। और जिनकी वल चलती है उनको वीरुध कहते हैं।

अन्यच्च।

ओषध्यःपंचधाख्यातालतागुल्माश्चशाखिनः। पादपाःप्रसराश्चेतितेषांवक्ष्यामिलक्षणम्॥ गुडूच्याद्यालताःप्रोक्तागुल्माःपर्पटकादयः। आम्राद्याःशाखिनोज्ञेयावटाश्वत्थादिपादपाः॥ कंटकार्यादिकाःसर्वाःप्रसराइतिकीर्त्तिताः।

अर्थ-लता, गुल्म, शाखि, पादप और प्रसर, इन भेदोंसे औषधि पाँच प्रकारकी हैं सो उनके लक्षण कहता हूँ गिलोय, पान, सोमवल्ली, अपराजिता, स्वर्णवल्ली इत्यादि वीरुध अर्थात् लता हैं। पित्तपापडा आदि गुल्म जानने, आम आदि शाखी जानने, वडपीपल इत्यादि पादप जानने, कटेरी आदि प्रसर जाननी।

अथ वृक्षादीनां पुंस्त्वादिकथनम्।

स्त्रीतापुंस्ताक्लीबताचद्रुमादौज्ञेयायुक्त्यालक्षणंतद्वदामि।

अर्थ--वृक्षादिकोंमें स्त्री पुरुष और नपुसंक, ये तीन भेद हैं, उनके लक्षण आगे कहता हूँ।

स्निग्धंदीर्घंपेलवंचित्तहारिपुष्पाद्यंचेत्स्त्रीमतासाभिषग्भिः।

अर्थ–जिनके पुष्प फलादिक स्निग्ध, दीर्घ, कोमल और मनोहर होवैं, वह स्त्रीजातिके वृक्ष जानने।

नोदीर्घानातिह्रस्वाःकिसलयसुमनःस्कंधकाण्डादयश्चेत
स्थूलाःपारुष्यभाजस्तइहनिगदिताःपूरुषावैद्यवर्य्यैः॥

अर्थ--जिनके पल्लव, पुष्प, स्कन्द, काण्ड आदि न तो अत्यंत दीर्घ होंय और न अत्यन्त ह्रस्व होंय तथा स्थूल और दृढ होवैं उनको पुरुषजातिके वृक्ष जानने।

पुंसोवध्वाश्चलिंगंमिलतिचयदिवाक्लीबतासाभिधेया
स्वंस्वंस्वेस्वेनियुक्तंगदिजनफलदंभेषजंतत्कृतंच॥

अर्थ--जिनमें पुरुष और स्त्री दोनोंके लक्षण मिलते होंय उनको नपुंसकजातिके वृक्ष जानना स्त्रीजातिके वृक्ष स्त्रियोंको, पुरुषजातिके पुरुषोंको और नपुंसकजातिके नपुंसकोंको देने चाहिये, इसप्रकार करनेसे रोगियोंको फलकी प्राप्ति होती है।

द्रव्यंपुमान्स्यादखिलस्यजंतोरारोग्यदंतद्बलवर्द्धनञ्च।
स्त्रीदुर्बलास्वल्पगुणागुणाढ्याःस्त्रीष्वेवनपक्कापिनपुंसकंस्यात्॥

अर्थ–सर्व पुरुषजातिकी औषधि--आरोग्यताजनक और बलको बढानेवाली है, स्त्रीजातिकी औषधि दुर्बल और अल्पगुणवाली तथा स्त्रियोंको अधिकगुण करनेवाली है और नपुंसकजातिकी औषधि किसीकोभी हितकारी नहीं है ऐसा निघण्टुचूडामणिमें लिखा है।

वृक्षादीनांक्षुत्पिपासादिकथनम्।

क्षुत्पिपासाचनिद्राचवृक्षादिष्वपिलक्ष्यते।
मृज्जलादानतस्त्वाद्येपर्णसंकोचतोंतिमा॥

अर्थ–भूँख, पियास और निद्रा यह वृक्षादिकोंमें भी पाई जाती है, क्योंकि

मिट्टी खाते, और पानी पीते हैं जो उनको मिट्टी और पानी न मिले तो नष्ट हो जाते हैं अर्थात् सूखजातेहैं रातको वृक्षोंके पत्ते सकुच जाते और सबेरेको खिल जाते हैं, इसकारण वृक्षादिकोंमें निद्रा पाई जाती है।

वृक्षादीनांपंचभूतात्मकत्वकथनम् ।

यत्काठिन्यंसाक्षितिर्योद्रवांभस्तेजस्तूष्मावर्द्धतेयत्सवातः ।
यच्छिद्रंतन्नभःस्थावराणामित्यतेषांपंचभूतात्मकत्वम् ॥

अर्थ-वृक्षोंमेंभी मनुष्योंकी तरह पंचभूत रहते हैं वृक्षोंमें कठिनता पृथ्वीका भाग है, गीलापन जलका भाग है, उष्णता अग्निका अंश है, वृक्षोंकी वृद्धि वायुका विभाग है, और वृक्षोंमें जो छिद्र होते हैं वह आकाशका अंश है।

वृक्षादीनां परोपकारः ।

मूलत्वक्सारनिर्य्यासनाडिस्वरसपल्लवाः ।
क्षाराःक्षीरफलंपुष्पंभस्मतैलानिकंटकाः ॥
पत्राणिशुंगाःकंदाश्चप्ररोहाश्चोपकारकाः ।

अर्थ-मूल, त्वक, सार, निर्य्यास, नाड, स्वरस, पल्लव, क्षार, क्षीर, फल, पुष्प, भस्म, तैल. कंटक, पत्र, अंकुर और कंद यह सब वृक्षोंके अंग उपकार करनेवाले हैं इसकारण वृक्ष परोपकारी हैं, मनुष्य तो कोई परोपकारी होते हैं परन्तु वृक्ष तो प्रायः सबही परोपकारी होते हैं अतएव जो मनुष्य परोपकारी नहीं होते वह वृक्षादिकोंसे भी जड हैं। (इ० भो० रा०) सब अंग्रेजी ग्रन्थोंसे वृक्षोंका विशेष विवरण लिखते हैं। सब वृक्ष स्त्री और पुरुष इन भेदोंसे दो प्रकारके हैं; वृक्षोंके पुष्प ऋतु हैं, फल संतान हैं वृक्षोंके सन्तान स्त्रीवृक्ष और पुरुषवृक्षके संयोगसे होती है ऐसा अंग्रजी ग्रन्थोंमें लिखा है परन्तु संस्कृतके ग्रन्थोंमें नहीं। एकदल और द्विदल इन भेदोंसे वृक्षकी दो जाति हैं, एकदल जातीके वृक्षमें उत्पन्न होतेही एक पत्ता निकलता है उसमें सीधी हुई एक शिरा होतीहै और तिर्छी शिरायें अधिक नहीं होती, एकदल अन्तर्वर्द्धक है। इसकी उत्पत्ति फलफूलादिके भीतरसे होती है, और इसमें शाखा नहीं होती। द्विदलवृक्षमें उत्पन्न होनेके समय प्रथम दो पत्र निकलते हैं इन पत्रोंमें तिर्छी नसें अर्थात् शिरायें अधिकतासे होती हैं, इससें उत्पत्तिक्रिया डालियोंमेंसे अंकुरोंके फूटनेसे होती है और कलमेंभी बहुधा

बांधी जाती हैं । एकदलको अंग्रेजीमें "मोनिकोटी लीडोनस" और द्विदलको "काईकोट लेडोनस" कहते हैं । अंतर्वर्द्धकको "एडोजीनस" और बाह्य, वर्द्धकको "एफजोजीनस" कहते हैं । एकदल वृक्ष, केला नारियल, ज्वार बाजरा इत्यादि धान्य जानने । द्विदल वृक्षोंके बीजोंकी दो दालें होती हैं। एकदल जातीके वृक्षकी दो दाले नहीं होतीं । ये ही वृक्ष स्त्री पुरुषकी भाँति संगमसे फलरूपी संतानको उत्पन्न करते हैं, जैसी संतान वृक्षोंसे उत्पन्न होती हैं, तैसी पशु पक्षी अथवा मनुष्योंसे नहीं होतीं, जैसे एकवृक्षसे करोड बीज उत्पन्न होते हैं, तैसेही पत्ते, कन्द, मूल, डंठलादिसेभी वृक्ष उत्पन्न होते हैं । वृक्ष जिसप्रकार नरनारीसे सन्तानको उत्पन्न करते हैं सो कहते हैं। जब वृक्ष अपनी उमरमें आता है, तब उसकी डंडीके अग्रभागमें कोपलपर पुष्पोंका वेष्टन दिखाई देता है, उसको अंग्रेजीमें "केलीफ" कहते हैं। उस कलीफकी कली नीले रंगकी होती है, ढाकके फूलकी काली होती है जब वह कली उमरमें आवे तो वेष्टनको उघाडकर प्रफुल्लित हो बाहर फूल रूप दिखाई देती है । उसमें कोषभी होता है और पंखडी अलग २ दिखाई देती है । पुष्पकोशको अंग्रेजीमें "कोरोला" कहते हैं कमलादि पुष्पोंमें वेष्टन नहीं होता, उन फूलोंमें ऊपरकी पंखडिये खरेरी नीले रंगकी होती हैं इसको रोलाके भीतर नरनारी रूपसे तंतु होते हैं उसमें नरतंतुको अंग्रेजीमें "ष्टेमन" कहते हैं और नारी तंतुको "पिष्टल" कहते हैं नर तंतुओंके ऊपर रजसी लगी रहती है—जिसे संस्कृतमें पराग अथवा पुष्पराज कहते हैं। अंग्रेजीमें "पोलन" कहते हैं । नारीतंतु खुक्कड होता है, उसका मुख खुला हुवा होता है जिसको योनि कहते हैं, अंग्रेजीमें "ष्टिग्मा" कहते हैं, नारीतंतु जिस स्थानसे उत्पन्न होते हैं उनको गर्भाशय कहते हैं अंग्रेजीमें "ओवरी" और लैटिनमें "डिस्क" कहते हैं । ष्टिग्मा व ओवरीके मध्य जो मार्ग होता है उसको अंग्रेजीमें "स्टाइल" कहते हैं स्टाइलमें छोटे २ वीर्य्यकण होते हैं, जिनको अंग्रेजीमें "फोल्लिला" कहते हैं। नरकेशरमें जो पुष्परज होती है वह पवनके द्वारा उडकर ष्टिग्मामें भीतर जाय वहांसे ओवरीके भीतर जाकर गर्भबाँधती है, यह नरकेशर व नारीकेशर एक २ पुष्पमेंभी होती हैं और पृथक् पुष्पमेंभी होती है उसका संयोग पवनसे अथवा पतंगादि जीवोंसेभी होता है, पतंगादि नरकेशरवाले पुष्पोंमें जाकर नारीकेशरवाले फूलोंमें जाते हैं व उनके शरीरमें लगाहुवा पुष्परज नारीकेशरके मुखमें जाकर गर्भ-बंधनका कारण होता है ।

इसप्रकार बहुत दूरसेभी संयोग होजाता है एकवर्गके वृक्ष समीप होनेसे रसे नरपुष्पका रज नारीतंतुओंमें जानेसे संकर जातिके वृक्ष उत्पन्न होते । इसप्रकार एक जातिके नरनारी आदि मिश्रितवर्गकी प्रथम संज्ञा अंग्रेजीमें "रेनंक्युलेसी" लिखी है । इसप्रकार सर्व वर्ग बाँधे हैं । तैसेही वृक्षोंके तोंके द्वारा वृक्षोंके गुण शोधक नामोंसे वृक्षोंके नाम लैटिनभाषामें लिखे हैं । उदाहरण टीफोलिया अर्थात् तीन पत्तोंका "राइक बुधिआई" अर्थात् "राइकवुर्धका" "गोतेलग्राण्डि फ्लोरा" बडे फूलका "मलटीफ्लोरा" छोटे फलका, "यूनीफ्लोरा" छोटे फूलका, "थिसिलिफ्लोरा" फल आदिका नाम कल्पित किया है । वृक्षवृक्षमें स्त्री पुरुष जातिके पृथक् २ फूल हों तो उन्हें अंग्रेजीमें "मोनीष्यस" कहते हैं अलग २ वृक्षोंमें नरनारी जातिके पुष्प होंय तो उन्हें अंग्रेजीमें "डारष्यस" कहते हैं । एकवृक्षमें हो अथवा अलग २ वृक्षोंमें नरनारी जातिके पुष्प होंय तो उन्हें अंग्रेजीमें "डारष्यस" कहते हैं । एकवृक्षमें हो अथवा अलग २ वृक्षमें हो तो इन दोनोंको "पोलीगोम्मा" कहते हैं । अपुष्प क्षुपको "क्रिपटोगेम्या" कहते हैं ।

अथ नक्षत्रवृक्षाः ।

अथवक्ष्यामिनक्षत्रवृक्षानागमलक्षितान् ।
पूज्यानायुष्यदांश्चैववर्द्धनात्पालनादपि ॥
विषद्रुधात्रीतरुहेमदुग्धाजम्बूस्तथाखादिरकृष्णवंशाः ।
अश्वत्थनागौचवटःपलाशाःप्लक्षस्तथाम्बष्ठतरुःक्रमेण ॥
बिल्वार्जुनौचैवविकंकतोथसकेसराःशम्बरसर्ज्जवंजुलाः ।
सपांनसार्काश्चशमीकदम्बास्तथाम्रनिम्बौमधुकद्रुमःक्रमात् ।
अमीनक्षत्रदेवत्यावृक्षाःस्युःसप्तविंशतिः ।
अश्विन्यादिक्रमादेषामेषानक्षत्रपद्धतिः ।
यस्त्वेतेषामामजन्मर्क्षभाजांमर्त्यःकुर्याद्भेषजादीन्मदांधः ।
तस्यायुष्यं श्रीकलत्रंचपुत्रंनश्यत्येषां वर्द्धतेवर्द्धनाद्यैः ॥

अर्थ–अब नक्षत्रोंके वृक्षोंके नाम और लक्षण कहताहूँ जो अपने जन्मके नक्षत्रके वृक्षको पूजता है, सींचता है और पालता है उसके आयुकी वृद्धि होती है । नक्षत्रवृक्षनाम–१ अश्विनी–कुचला २ भरणी–आमला ३ कृत्तिका–

गूलर, स्वर्णक्षीरी—सत्यानासी ४ रोहिणी—जामून ५ मृगशिर—खैर ६ आर्द्रा-कृष्णागरु ७ पुनर्वसु--बाँस ८ पुष्य--पीपल ९ आश्लेषा--नागकेशर १० मघा--वड ११ पूर्वा-ढाक १२ उत्तरा--पाखर १३ हस्त-पाढ १४ चित्रा-वेल १५ स्वाती-अर्जुन १६ विशाखा--विकंकत (रामबबूर) १७ अनुराधा--पुन्नागवृक्ष १८ ज्येष्ठा-लोध १९ मूल--साल २० पूर्वाषाढ--जलवेंत २१ उत्तराषाढ-पनस २२ श्रवण-आक २३ धनिष्ठा--शमी २४ शततारका--कदम्ब २५ पूर्वाभाद्रपदा-आम २६ उत्तराभाद्रपदा-नीम २७ रेवती-महुवेका वृक्ष । जो मनुष्य मदान्ध होके अपने जन्मनक्षत्रके वृक्षको औषधादिके काममें लाता है, उसकी आयु, लक्ष्मी, स्त्री और पुत्रादिक नष्ट हो जाते हैं और जन्मनक्षत्रके वृक्षको जल आदिके द्वारा बढानेसे आयु-आदिकी वृद्धि होती है ।

आग्नेयाविंध्यशैलाद्याः सौम्योहिमगिरिःस्मृतः ।अतस्तदोषधा निस्युरनुरूपाणि हेतुभिः ॥। अन्येष्वपिप्ररोहंति वनेषूपवनेषुच ।

अर्थ—विंध्यादिक पर्वत उष्ण हैं और हिमालय पर्वत शीतल है । इस कारण विंध्यादिककी औषधि उष्णवीर्य्य और हिमालयपर्वतकी औषधि शीतवीर्य्य होती हैं । पर्वतोंके अतिरिक्त वन उपवनादिकमें भी उत्पन्न-होनेवाली औषधि अपने क्षेत्रोंके अनुसार वीर्यवान् होती हैं ।

औषधिके लेनेमें मुहूर्तविचार ।

भैषज्यंसल्लघुमृदुचरेमूलभेद्वचंगलग्ने शुक्रेन्द्वीज्येविदिचदिवसेचापितषांरवेश्च ॥ शुद्धेरिष्फेद्युनमृतिगृहेसत्तिथौनोजनेभे ।

अथ—लघु चर और मूलनक्षत्रोंमें, शुक्रवार, चंद्रवार, गुरुवार, बुधवार और सूर्य्य यह द्विस्वभालग्न [मिथुन, कर्क,धन, मीन] में हो और शुक्रादि वारोंमें लग्नसे १२--७--८ गृह पापोंसे हीन होय तो ऐसे शुभकालमें औषधिको ग्रहणकरना देना और बनाना श्रेष्ठ है ।

औषधिलेनेकी विधि ।

यतध्वमुत्खातशुचिप्रदेशजाद्विजेनकालादिकतत्त्ववेदिना । यथायथंचौषधयोगुणोत्तराःप्रत्याहरंतेयमगोत्वरानपि ॥

अर्थ—प्रथम पृथ्वीको झाड बुहारकर साफकरके कालादितत्त्वको जाननेवाला ब्राह्मण, औषधिका कौनसा अंग लिया जायगा इसको विचारकर पर्वतादिकोंमें भी छिपीहुई औषधियोंको ग्रहण करे ।

औषधिग्रहणमन्त्राः ।

स्वभारण्येचएकान्तेप्रभातेमंत्रयुक्तितः। संग्राह्यमौषधंसिद्धं-नोदेद्धवतिकाष्ठवत् ॥ ॐनमस्तेऽमृतसम्भवेरसवीर्य्यविव-र्द्धिनि । बलमायुश्चमेदेहिपापान्मेजहिदूरतः ॥ येनत्वांखन-तेब्रह्मायेनत्वांखनतेभृगुः । येनवेन्द्रोऽथवरुणस्तेनत्वामुप-चक्रमे ॥ तेनाहंखनयिष्यामिमन्त्रपूतेनपाणिना । ॐआत-पेतेमाम्रियततेजोवीर्य्योऽन्यथाभवेत् ॥ अत्रैवतिष्ठकल्याणि ममकार्यकरीभव ॥ ममकार्य्येभूतेसिद्धेततःस्वर्गं गमि-ष्यसि । ॐह्रींचण्डेन्द्रंफट्स्वाहा ॥ अनेनमन्त्रेणानुसंयुत-मातपेत्रिदिनंशुष्कानिहितवीर्य्यधृग्भवेत् । अर्कपुष्यायांसर्वा-औषध्यउत्पाट्यन्ते ॥

अर्थ-स्वभावसे वनके एकान्त स्थानमें प्रभातके समय जाकर मंत्रयुक्तसे औषधको ग्रहण करे तो कार्य्यकी सिद्धि होती है, नहीं तो औषधि काठके समान जाननी । "नमस्तेऽमृतसम्भवे" इत्यादि । इस मंत्रको पढकर औषधिको उखाड लेवे और जो पत्र पुष्पादिक लेने होय तो वहभी इसी मंत्रको पढकर लेवे, फिर उस औषधिको लेकर तीन दिन धूपमें सुखादेवे इसप्रकार करनेसे औषधि अत्यन्त वीर्य्यको धारण करनेवाली होजाती हैं प्रायः पुष्यार्कयोगमें सब प्रकारकी औषधि उखाडी जातीहैं ।

औषधिउखाडनेकी विधि ।

गृह्णीयात्तानिसुमनाःशुचिःप्रातःसुवासरे । आदित्यसम्मुखो-मौनीनमस्कृत्यशिवंहृदि ॥ साधारणधराद्रव्यंगृह्णीयादुत्त-राश्रितम् ।

अर्थ-औषधि लानेके लिये प्रातःकाल उठकर स्नानआदिसे शुद्धहो शुभदिन वनमें जाकर सूर्य्यके सन्मुख उपस्थितहो मौनको धारणकर शंकरको हृदयमें नमस्कारकर साधारण भूमिमें उत्पन्न हुई, ऐसी औषधिको उत्तर दिशाकी ओरको मुखकरके उखाडे ।

दुष्टऔषधि ।

वल्मीककुत्सिताऽनूपश्मशानोषरमार्गजाः ।

जन्तुवह्निहिमव्याप्तानौषधं कार्य्यसाधिका: ॥

अर्थ-बाँबी, बुरीजमीन, अनूपदेश, (खादर) श्मशानभूमि, ऊषर जमीनमें और मार्गमें उत्पन्न होनेवाली औषधि और जो कीडोंकी खाई हुईहो, अग्निसे दग्ध हुईहो, जिसको सरदी लगीहो, लूंकीमारी, ऐसी औषधि कार्य्यको सिद्ध करनेवाली नहीं होती, इस कारण इसको नहीं लेवे।

औषधसंग्रह अथवा रखनेकी विधि।

धूमवर्षानिलक्लेदैःसर्वर्त्तुष्वनभिद्रुते ।
ग्राहयित्वागृहेन्यस्येद्विधिनौषधसंग्रहम् ॥

अर्थ-धुँआ, वर्षा, पवन और सरदी इनसे रहित तथा जिसमें किसी प्रकारसे किसी तरहका विकार उत्पन्न न हो ऐसे उत्तम स्थानमें औषधियोंको भलेप्रकारसे रक्खे।

प्लोतमृद्भांडफलकशंकुविन्यस्तभेषजम् ।
प्रशस्तायांदिशिशुचौभेषजागारमिष्यते ॥

अर्थ-कपडेकी थैलियोंमें, टुकडोंमें मिट्टीकी हांडियोंमें इमरतबानोंमें, मटकियोंमें, मलसोंमें, मलसियोंमें, सकोरोंमें; कटोरोंमें, प्यालोंमें, शीशियोंमें, बोतलोंमें, शीसोंमें, डिब्बोंमें, डिब्बियोंमें तख्तोंपै, अलमारियोंमें; कीलोंपै, खुंटीपै और मेखोंपै औषधी रखनी चाहिये और जिसमें सब औषधि रक्खीहों वह औषधी मंदिर अर्थात् औषधालय पूर्व अथवा उत्तर दिशा तथा उत्तम स्थानमें बनना चाहिये।

अतिस्थूलजटायाःस्युस्तासांग्राह्यास्त्वचोध्रुवम् । गृह्णीयात्सूक्ष्ममूलानिसकलान्यपिबुद्धिमान् ॥ महान्तियेषांमूलानिकाष्ठगर्भाणिसवतः । तेषांतुवल्कलंग्राह्यंह्रस्वमूलानिसशः ॥ न्यग्रोधादेस्त्वचोग्राह्याःसारःस्याद्बीजकादितः । तालीसादेस्तुपत्राणिफलंस्यात्त्रिफलादितः ॥ क्वचिन्मूलंक्वचित्कंदःक्वचित्पत्रंक्वचित्फलम् । क्वचित्पुष्पंक्वचित्सर्वंक्वचित्सारःक्वचित्त्वचः ॥ चित्रकंसूरणंनिम्बोवासाचत्रिफलाक्रमात् । धातकीकंटकारीचखादिरःक्षीरपादपः ॥

अर्थ-लम्बी और स्थूल जडवाले वृक्षकी छाल लेवे, छोटीजडवाले वृक्षका सर्वांग लेवे, जिनकी जड बडी और चारों ओर छाल लिपट रहीहै उनका वकल लेवे, छोटी जडवाले वृक्षोंका पंचांग लेवे; वड इत्यादि वृक्षोंकी छाल लेनी चाहिये, विजयसारादिका सार तालिशादिके पत्र और त्रिफला-दिके फल लेने चाहिये । किसीका मूल, किसीका कन्द, किसीके पत्ते, किसीका फल, किसीका फूल, किसीका पंचांग, किसीका सार और किसी वृक्षकी छाल लेनी चाहिये । चीतेकी छाल, सूरणका कन्द, नीम और अडूसे आदिके पत्र, त्रिफलेके फल, धायके फूल, कटेरी इत्यादिका पंचांग, खदिरादिका सार और दूधवाले वृक्षोंकी छाल लेनीयोग्य हैं ।

क्वचिन्निंबस्यगृह्णीयात्पत्राभावेत्वचामपि ।
बालंफलंतु बिल्वस्यपक्कमारग्वधस्यच ॥

अर्थ--कहीं नीमके पत्ते न मिलें तो वहाँ छालभी लेलेवै, बेलका कच्चा फल और अमलतासादिका पक्का फल लेना चाहिये ।

अंगेनुक्तेजटाग्राह्याभागेऽनुक्तेऽखिलंसमम् ।
पात्रेऽनुक्तेमृदःपात्रंकालेऽनुक्तेत्वहर्मुखम् ॥

अर्थ-जहाँ औषधिका कोई अंग नहीं कहा होय वहाँ औषधिकी जड लेनीचाहिये, जहाँ तोल नहीं कहीहुई होय वहाँ सब औषधि समानभाग लेवे. जहाँ बासन नहीं कहा होय वहाँ मट्टीका बासन लेवे, जहाँ काल नहीं कहा होय वहाँ प्रातःकाल समझना ।

नवान्येवहियोज्यानिद्रव्याण्यखिलकर्मसु । विनाविडंगकृ-ष्णाभ्यांगुडधान्याज्यमाक्षिकैः ॥ पुराणंतुप्रशस्तंस्यात्तांबू-लंकाजिकंतथा । शुष्कंनवीनद्रव्यंतुयोज्यंसकलकर्मसु ॥ आर्द्रंतुद्विगुणंयुंज्यादेषसर्वत्रनिश्चयः। गुडूचीकुटजोवासा-कूष्मांडश्चशतावरी॥अश्वगंधासहचरःशतपुष्पाप्रसारिणी। प्रयोक्तव्याःसदैवार्द्राद्विगुणानैवकारयेत॥वासानिंबपटोल-केतकबलाकूष्मांडकेंदीवरी वर्षाभूकुटजाश्वकन्दसहिताः साप्तातिगंधामृताः॥ ऐन्द्रीनागबलाकुरंटकपुराक्षत्रामृतास-

वैंदा साद्राएवतुनकचिद्द्विगुणिताःकार्येषुयोज्याबुधैः ॥ घृतंतैलंचपानीयंकषायंव्यंजनादिकम् । पक्त्वाशीतीकृतं चोष्णंतत्सर्वस्याद्विषोपमम् ॥

अर्थ-सब कर्मोंमें सम्पूर्ण औषधि नवीन लेनी चाहिये, किन्तु वायविंडग, पीपल, गुड, धान्य, घी और मधु, ये सब पुराने लेवे अर्थात् नवीन न लेवे। पान और काँजी पुरानी लेनी चाहिये सूखी और नवीनद्रव्य सब कार्योंमें लेवे, गीली औषधी मात्रासे द्विगुनी लेवे, ये सर्वत्र निश्चय है । असगंध, पियाबाँसा, सौंफ और पसर ये औषधी नित्य गीली लेवे, किन्तु द्विगुणी कदाचित् न लेवे । बाँसा, नीम, पटोलपत्र, केतकी, खिरैटी, पेठा, नीलेकमल, शतावरी, सोंठ, इन्द्रजौ, कन्द, पसरन, गिलोय, इन्द्रायण, गंगेरन, पियाबाँसा, सौंफ और आमले ये सब द्रव्य गीले होनेपरभी वैद्य द्विगुणे न डाले. घी, तैल, जल, क्काथ, और भोजनकी वस्तु इन सबको एकबार पकाकर ठंढे होनेपर फिर गरम न करै यदि गरम करै तो विषके समान अपकारी हो जातेहैं ।

द्रव्यलक्षण ।

सूक्ष्मास्थिमांसलापथ्यासर्वकर्म्मणिपूजिता । क्षिप्ताम्भसि निमज्जेद्याभल्लातकयस्तथोत्तमः ॥ वराहमूर्द्धवत्कंदोवाराहीकंदसंज्ञकः । सौवर्चलंतुकाचाभंसैन्धवंस्फटिकप्रभम् ॥ सुवर्णच्छविकंज्ञेयंस्वर्णमाक्षिकमुत्तमम् । इंद्रपुष्पप्रतीकाशामनोह्वाचोत्तमामता ॥ श्रेष्ठंशिलाजतुज्ञेयंप्राक्षिप्तंनविशीर्य्यते।तोयपूर्णेकांस्यपात्रेप्रतानेनविवर्द्धते ॥ कर्पूरस्तुवरः स्निग्धएलासूक्ष्मफलावरा । श्वेतचंदनमत्यन्तंसुगन्धिगुरुपूजितम् ॥ रक्तचन्दनमत्यंतंलोहितंप्रवरंमतम् । काकतुण्डनिभःस्निग्धोगुरुःश्रेष्ठोऽगुरुर्मतः॥ सुगंधिलघुरूक्षञ्च सुरदारुवरंमतम् । सरलंस्निग्धमत्यर्थंसुगंधिचगुणावहम् ॥ पीताप्रशस्तातुज्ञेयादारुनिशाबुधैः। जातीफलंगुरु स्निग्धंसमंशुभ्रांतरंवरम् ॥ मृद्वीकासोत्तमाज्ञेयायास्याद्गो-

स्तनसन्निभा । करमर्दफलाकारामध्यमासाप्रकीर्तिता । खंडंतुविमलंश्रेष्ठंचंद्रकांतसमप्रभम् ॥ गव्याज्यसदृशंरुच्यंगंधंमधुत्तरंमतम् ॥

अर्थ—हरड छोटी और बहुत गूदेवाली श्रेष्ठ होती है। जलमें डालनेसे डूबजावे वह भिलावा श्रेष्ठ होता है। वाराहके मस्तकके समान वाराहीकंद उत्तम होता है। काँचके समान कालानोन उत्तम होता है। स्फटिकमणिके समान निर्म्मल और प्रभावाला सैंधानोन उत्तम होता है। सोनामाखी सोनेके समान पीली उत्तम होती है। मैनशिल इंद्रपुष्पके सदृश श्रेष्ठ होती है। जो गिरनेसे नहीं फटे तथा जलसे भरे हुये काँसीके बासनमें गेरनेसे तारसे तारसे छोडे वह शिलाजीत उत्तम होता है। कपूर चिकना और कषेला उत्तम होता है। इलायची छोटे फलवाली उत्तम होती है। सफेद चंदन अत्यन्त सुगंधिवाला और भारी उत्तम होता है। लाल चंदन अत्यन्त लाल श्रेष्ठ होता है। अगर कौवेके मुखके समान स्निग्ध और भारी उत्तम होती है। देवदारु सुगंधिवाली, हलकी और रूखी अच्छी होती है। सरल अत्यन्त चिकनी और सुगंधित उत्तम होती है। दारुहलदी अत्यंत पीली उत्तम होती है। जायफल भारी, चिकना, गोल और जो तोडनेसे सफेद निकले वह उत्तम होता है। दाख गौके स्तनोंकी आकृतिवाली श्रेष्ठ होती है और करोंदेके फलके समान आकारवाली दाख मध्यम जाननी। खांड–चंद्रकांतके समान धवल और निर्म्मल उत्तम होती है। शहत गायके घीके समान रुचिकारक और सुगंधिवाला उत्तम होता है।

स्वभावसे श्रेष्ठ।

शालीनांलोहितःशालिःषष्टिकेषुचषष्टिकाः । शूकधान्येष्वपियवोगोधूमःप्रवरोमतः ॥ शिम्बीधान्येवरोमुद्गोमसूरश्चाढकीतथा । रसेषुमधुरःश्रेष्ठोलवणेषुचसैंधवः । दाडिमामलकंद्राक्षांखर्जूरंचपरूषकम् । राजादनंमातुलुंगंफलवर्गेषुशस्यते ॥ पत्रशाकेषुवास्तूकंजीवन्तीपोतिकावरा । पटोलं फलशाकेषुकंदशाकेषुसूरणम्॥एणःकुरंगहरिणौजांगलेषुप्रशस्यते । पक्षिणांतित्तिरिर्लावोवरोमत्स्येषुरोहितः ॥

हरिणस्ताम्रवर्णःस्यादेणःकृष्णतयामतः । कुरंगस्ताम्रउद्दिष्टोहरिणःकृत्तिकोमहान् ॥ जलेषुदिव्यंदुग्धेषुगव्यमाज्येषुगोभवम् । तैलेषुतिलजंतैलमैक्षवेषुसिताहिता ॥

अर्थ-शालिधानोंमें लालशालिधान, षष्टिकधानोंमें साँठीधान, शूकधानोंमें जौ और गेहूं, शिम्बीधानोंमें मूंग, मसूर और अरहर रसोंमें मधुर रस, लवणोंमें सैंधानोंन, फलोंमें अनार, आमला, दाख, खजूर, फालसा, खिरनी और बिजोरा, पत्रशाकोंमें-बथुआ, जीवन्ती, पोईका साग, फलशाकोंमें परवल, कंदशाकोंमें जमीकंद, जंगली जीवोंमें काला, लाल और चितकबरा हिरन, पक्षियोंमें तीतर और लवा, मछलियोंमें रोहू, जलोंमें दिव्यजल, दूधोंमें गायका दूध, घृतोंमें गायका घी, तेलोंमें तिलका तेल और इक्षुविकारोंमें मिश्री उत्तम है । तामेके रंगके हिरनको हिरन कहते हैं, काले रंगके हिरनको एण और कुछेक लाल हिरनको कुरंग कहते हैं ।

स्वभावसे अश्रेष्ठ (बुरे) ।

शिम्बीषुमाषान्ग्रीष्मतौलवणेष्वोषरंत्यजेत् । फलेषुलकुचंशाकेसार्षपाणांहितंमतम् ॥ गोमांसंग्राम्यमांसेषुनहितंम हिषीवसा।मेषीपयःकुसुम्भस्यतैलंत्याज्यंचफाणितम्॥

अर्थ-शिम्बीधानोंमें उडद, ऋतुओंमें ग्रीष्मऋतु, निमकोंमें खारीनोन, फलोंमें बडहर, सागोंमें सरसोंका साग, ग्राम्यमांसोंमें गायका मांस, चर्बियोंमें भैंसकी चर्बी, दूधोंमें भेडका दूध, तेलोंमें कसूमका तेल और इक्षुविकारोंमें राब त्यागने योग्य है ।

उपयोगविरुद्ध ।

शाकाम्लफलपिण्याककुलत्थलवणामिषैः ।
करीरदधिमांसैश्च प्रायः क्षीरं विरुध्यते ॥

अर्थ—शाक, खट्टेफल, तिलोंकी खल, कुलथी, निमक, मछली, बाँसके कले, दही और मांसके साथ दूध भक्षण करना निषेध है ।

प्राणहारीचहारीतोहरीद्रालवणैःकृतः ।

अर्थ-हलदी और निमकके साथ हारीत पक्षीका मांस खाना विषके समान है ।

रुवोस्तैलेनसंभृष्टंविषंमायूरमाहिषम् ॥

अर्थ-अंडेके तेलमें भुना हुआ मोरका मांस और भैंसका मांस विषके समान अपकारी है ।

वराहवसयाभृष्टाबलाकातुहरत्यसून् ।

अर्थ-सूअरकी चरबीसे भुना हुआ बलाका पक्षीका मांस भक्षण करनेसे शीघ्र ही प्राण नष्ट होते हैं ।

संयुक्तासैववारुण्याकुल्माषैश्चविरुध्यते ।

अर्थ--बलाका पक्षीका मांस मदिराके साथ अथवा कुल्माषके साथ भक्षण करना संयोग विरुद्ध है ।

अविंकुसुम्भशाकेनमत्स्यतैलैःकणांत्यजेत् ।

अर्थ-भेडका मांस कसूमके सागके साथ तथा मछलीके तेलके साथ पीपल नहीं खानी चाहिए ।

माषैरिक्षुविकारांश्चकांजिकस्तिलशष्कुली ।

अर्थ-उडदोंके साथ, इक्षुविकार (गुड, खांड, बुरा, मिश्री इत्यादि) और कांजीके साथ तिलशष्कुली खानी निषेध है ।

कपोतःसार्षपेभृष्टोघृतंकांस्येदशाहगम् ।

अर्थ-सरसोंके तेलमें भुना हुआ कबूतरका मांस नहीं खाना चाहिये और कांसीके पात्रमें दश दिनका रक्खाहुआ घी खाना निषेध है ।

विषंघृतसमंक्षौद्रंमधुनागगनाम्बुच ।

अर्थ-बराबर भाग शहत और घी मिलाकर पीनेसे तथा सहतके साथ वर्षाके जलको पीनेसे विषके समान अपकार करे है ।

मूलकंमाषयूषेणमधुनानचभक्षयेत् ।

अर्थ-उडदोंके यूषके साथ अथवा मधुके साथ मूली नही खानी चाहिये ।

नारिकेलजलनापिकर्पूरंनैवभक्षयेत् ॥

अर्थ-नारियलके जल (दूध) के साथ कपूर भक्षण करना अनुचितहै ।

एकत्रसर्वमांसानिविरुध्यन्तेपरस्परम् ॥

अर्थ- सर्व प्रकारके मांस एकत्र मिलाकर खाने नहीं चाहिये अर्थात एक प्राणीके मांसके साथ दूसरे प्राणीका मांस मिलाकर नहीं खावे ।

औषधी लेनेमें संकेत ।

लवणंसैन्धवंप्रोक्तंचंदनंरक्तचन्दनम् । चूर्णलेहासवस्नेहाः साध्याधवलचन्दनैः ॥ कषायलेपयोःप्रायोयुज्यतेरक्तचन्दनम् । अन्तःसंमार्जनेज्ञेयाह्यजमोदायवानिका॥ बहिःसंमार्जनेसैवविज्ञातव्याजमोदिका । पयःसर्पिःप्रयोगेषुगव्यमेवहिगृह्यते ॥ शकृद्रसोगोमयकोगोत्रंगोमूत्रमुच्यते ।

अर्थ-जहां लवण लिखा है वहां सैन्धवलवण लेना चाहिये और चन्दनके स्थानमें लालचन्दन लेवै, परंतु चूरण अवलेह-आसव और तेल, इनमें सफेद चन्दन डालै, काढा और लेपादिकमें लाल चन्दन लेव, अंतःसंमार्जन (जो भक्षण करनेसे उदरको शुद्ध करै) औषधियोंमें अजमोदके जगह अजवायन लेनी चाहिये और बहिः सम्मार्जन (जो शरीरके ऊपर लगानेसे शरीरको शुद्ध करै) औषधियोंमें अजमोदकी जगह अजमोदही डाले, जहां केवल दुग्ध और घृत लिखा है वहां गायका दूध घी लेवै, जहां शकृद्रस (गोबरका रस) लिखा है वहां गायके गोबरका रस लेवै, जहां केवल मूत्र लिखा है वहां गोमूत्र लेना चाहिये ।

प्रतिनिधि

चित्रकाऽभावतीदन्तीक्षारःशिखरिजोऽथवा । अभावेधन्वयासस्यप्रक्षेप्यात्दुरालभा ॥ तगरस्याप्यभावेतुकुष्ठन्दद्याद्भिषग्वरः मूर्वाभावेत्वचाग्राह्याजिंगिनीप्रभवाबुधैः ॥ अहिंस्राया-अभावेतुमानकन्दःप्रकीर्तितः । लक्ष्मणायाअभावेतुनीलकंठशिखामता ॥ बकुलाऽभावतोदेयंकह्लारोत्पलपंकजम् । नीलोत्पलस्याभावेतुकुमुदंदेयमिष्यते ॥ जातीपुष्पंनयत्रास्तिलवंगंतत्रदीयते । अर्कपर्णादिपयसोह्यभावेतद्रसोमतः। पौष्करमावतःकुष्ठन्तथालांगल्यभावतः । स्थौणयकस्याभावेतुभिषग्भिर्दीयतेगदः ॥ चविकागजपिप्पल्यौपिप्पलीमूलवत्स्मृते ।

भावेसोमराज्यास्तुप्रपुन्नाटफलंमतम् ॥ यदिनस्याद्दारु-
निशातदादेयानिशाबुधैः । रसांजनस्यभावेतुसम्यग्दार्वीप्र-
युज्यते॥सौराष्ट्राभावतोदेयास्फटिकातद्गुणाजनैः । तालीस-
पत्रिकाभावेस्वर्णतालीप्रशस्यते ॥ भार्ङ्ग्यभावेतुतालीसंकंट-
कारीजटाऽथवा । रुचकाभावतोदद्याल्लवणंपांशुपूर्वकम् ॥
भावेमधुयष्ट्यास्तुधातकींचप्रयोजयेत्।अम्लवेतसकाभावेचु
दातव्यमिष्यते ॥ द्राक्षायदिनलभ्येतप्रदेयंकाश्मरीफलम् ।
गोरभावेकुसुमंबंधकस्यमतंबुधैः ॥लवंगकुसुमंदेयंनखस्याभा-
वेःपुनः । कस्तूर्य्यभावेकंकोलंक्षेपणीयंविदुर्बुधाः ॥ कंकोल-
स्याप्यभावेतुजातीपुष्पंप्रदीयते । सुगंधिमुस्तकंदेयकर्पूराभा-
वेबुधैः कपूराभावतोदेयंग्रन्थिपर्णविशेषतः । कुंकुमाभावतो-
देयात्कुसुम्भकुसुमंनवम् ॥ श्रीखण्डचन्दनाभावेकर्पूरंदेयमि-
ष्यते । अभावेत्वेतयोर्वैद्यःप्रक्षिपेद्रक्तचन्दनम् ॥ रक्तचन्दनका-
भावेनवोशीरंविदुर्बुधाः । मुस्ताचातिविषाभावेशिवाभावेशिवा-
ना ॥ अभावेनागपुष्पस्यपद्मकेशरमिष्यते । मेदाजीवककका-
कोलीऋद्धिद्वंद्वेऽपिवाऽसति ॥ वरीविदार्य्यश्वगंधावाराहीश्चक्र-
मात्क्षिपेत् ॥ वाराह्याश्चतथाभावेचर्म्मकारालुकोमतः ॥ वराही-
कंदसंज्ञस्तुपश्चिमगष्टिसंज्ञकः । वाराहीकंदएवान्यश्चर्मकारालु-
मतः ॥ अनूपसंभवेदेशेवराहइवलोमवान् ॥भल्लातकासह-
स्तुरक्तचन्दनमिष्यते । भल्लाताभावतश्चित्रंनलश्चैक्षोरभावतः॥
स्वर्णाभावतःस्वर्णमाक्षिकंप्रक्षिपेद्बुधः। श्वेतंतुमाक्षिकंज्ञेयंबुधैः-
जतवद्ध्रुवम् । माक्षिकस्याप्यभावेतु ... त्स्वर्णगैरिकम् ।
स्वर्णमथवारौप्यंमृतंयत्रनलभ्यते ॥ तत्रकान्तेनकर्माणिभि-

षक्कुर्य्याद्विचक्षणः । कान्ताभावेतीक्ष्णलोहंयोजयेद्वैद्यसत्तमः॥अभावेमौक्तिकस्यापिमुक्ताशुक्तिंप्रयोजयेत् । मधुयत्रनलभ्येततत्रजीर्णगुडोमतः ॥ मत्स्यंडयभावतोदद्युर्भिषजःसितशर्कराम् । असंभवेसितायास्तुबुधैःखंडंप्रयुज्यते ॥ क्षीराभावेरसोमौद्गोमासूरोवाप्रदीयते । अत्रप्रोक्तानिवस्तूनियानितेषुचतषुच ॥ योज्यमेकतराभावेपरंवैद्येनजानता ।

अर्थ-चीतेके अभावमें दन्ती अथवा चिरचिटेका खार, धमासेके अभावमें जवासा, तगरके अभावमें कूठ, मूर्वाके अभावमें झिंगनीकी छाल अहिंस्राके अभावमें मानकन्द, लक्ष्मणाकन्दके अभावमें मयूरशिखा, मौलसिरीके अभावमें कुमुद लालकुमुद और कमल, नीलेकमलके अभावमें कुमुद (नीलोफर), जायफलके अभावमें लौंग, आक इत्यादिके दूधके अभावमें आकआदिके पत्तोंका रस, पुष्करमूल और कलिहारीके अभावमें कूठ और थूनेरके अभावमें कूठ, जिस स्थानमें पीपरामूल न होय वहां चव्य और गजपीपल, वापचीके अभावमें चकवडके बीज, दारूहलदीके अभावमें हलदी, रसौतके अभावमें दारूहलदी, गोपीचंदनके अभावमें फिटकरी, तालीशपत्रके अभावमें स्वर्णतालीश, भारङ्गीके अभावमें तालीसपत्र वा कटेरीकी जड, कालेनोनके अभावमें पांशु लवण लेवे, मुलठीके अभावमें धायके फूल, अमलवेतके अभावमें चूका, दाखके अभावमें कुंभेरका फल; दाख और कुम्भेरके अभावमें दुपैरियाका फूल, नखद्रव्यके अभावमें लौंग, और कस्तूरीके अभावमें शीतलचीनी, शीतलचीनीके अभावमें जायफल और कपूरके अभावमें सुगंधमोथा वा गठिवन, केशरके अभावमें कसूमके नवीन फूल, श्रीखण्डचन्दनके अभावमें कपूर, केसर और चन्दनके अभावमें लालचन्दन, लालचन्दनके अभावमें नवीन खस, अतीसके अभावमें नागरमोथा, हरडके अभावमें आंवला, नागकेशरके अभावमें कमलकेसर, मेदा और महामेदाके अभावमें शतावर, जीवक और ऋषभकके अभावमें बिलाईकन्द, काकोली और क्षीरकाकोलीके अभावमें असगंध, ऋद्धि और वृद्धिके अभावमें वाराहीकन्द, और वाहरीकन्दके अभावमें चर्मकारआलू लेवे वाराहीकन्दको पश्चिममें गृष्टि कहते हैं । चर्मकारआलूभी वाराहीकाही भेद है ये सजल स्थानोंमें उत्पन्न होते हैं इसके ऊपर सूअरके रोम समान रोम होते हैं, भिलावेके अभावमें लालचंदन ?

...ता, इखके अभावमें नल, सोनेके अभावमें सोनामाखी, चांदीके अभा-वमें रूपामाखी, सोनामाखी और रूपामाखीके अभावमें स्वर्णमेरु सोने और रूपेकी भस्मके अभावमें कान्तलोहेकी भस्म, कान्तलोहेके अभावमें तीक्ष्ण लोह, मोतीके अभावमें मोतीकी सीप, सहतके अभावमें पुराना गुड़, मिश्रीके अभावमें सफेद चीनी सफेदचीनीके अभावमें सफेद खांड और दूधके अभावमें मूँगका अथवा मसूरका रस लेवे। यहां कही हुई प्रतिनिधि एकके अभावमें उसकी दूसरी वस्तु मिलानी चाहिये।

रसवीर्य्यविपाकाद्यैःसमंद्रव्यंविचिन्त्यच । युंज्याद्विविधम-न्यच्चद्रव्याणांतुरसादिवत् ॥ योगेयदप्रधानंस्यात्तस्यप्रति-निधिर्मतः । यत्तुप्रधानंतस्यापिसदृशंनैवगृह्यते ॥ व्याधेर-युक्तंयद्द्रव्यंगणोक्तमपितत्त्यजेत् । अनुक्तमपियुक्तंयद्योजये-त्तद्रसादिवित् ॥

अर्थ-किसी योगका कोई द्रव्य न मिले तथा उसकी प्रतिनिधि नहीं नहीं है तो उस औषधिके वीर्य्य और विपाकादिके तुल्य वैद्य अन्य औष-धिको समझकर प्रयोगमें डाले। इस प्रतिनिधिके ही ऊपर न रहे। जो औषधि प्रयोगमें अप्रधान है उसकी प्रतिनिधि दूसरी औषधि डाले, और जो प्रधान है अर्थात मुख्य औषधि है उसकी प्रतिनिधि दूसरी औषधि न डाले, जैसे कि, मरिचादिगुटिकामें पीपल जवाखारादि अप्रधान औषधि इनके बदलेमें दूसरी प्रतिनिधि गेरे किन्तु प्रधान मरिचके अभावमें प्रतिनिधि न लेवे, जो प्रयोगमें कही हुई औषधि रोगमें अपकारी है उसको उस योगमेंसे निकालदेवे और जो औषधि रोगको दूर करनेवाली है, किंतु वह उस योगमें नहीं है तो भी रसादिवित् वैद्य उस योगमें मिला देवै।

द्रव्यांतर्गतपदार्थाः।

रसोवीर्यंविपाकश्चज्ञातव्यास्तेतियत्नतः । रसस्तुमधुरादिःस्याद्वीर्यंकार्येसमर्थता ॥ परिणामेगुणाढ्यत्वंविपाकइतिसंज्ञितम् ।

अर्थ-द्रव्योंमें रस, वीर्य्य और विपाक इनको यत्नपूर्वक जानना चाहिये मधुरादिकको रस कहते हैं, जो कार्यमें समर्थता करै उसको वीर्य्य और जो परिणाममें गुणोंको करै उसको विपाक कहते हैं।

द्रव्येरसोगुणोवीर्यंविपाकःशक्तिरेवच । पदार्थाःपंचतिष्ठंति-स्वस्वकुर्वन्तिकर्मच ॥ रसाःस्वाद्वम्ललवणतिक्तोषणकषाय-काः ॥ षड्द्रव्यमाश्रितास्तेचयथापूर्वबलावहाः । तत्राद्यामारुतंघ्नंतित्रयस्तिक्तादयःकफम् । कषायतिक्तमधुराः पित्तमन्ये तुकुर्वते ॥ येरसावातशमनाभवंतियदितेषुवै । रौक्ष्यलाघव-शैत्यानिनतेहन्युःसमीरणम् ॥ येरसाःपित्तशमनाभवंतियदि-तेषुवै । तीक्ष्णोष्णलघुताचैवनतेतत्कर्मकारिणः॥ येरसाः श्ले-ष्मशमनाभवंतियदितेषुवै । स्नेहगौरवशैत्यानिनतेहन्युः-कफंतदा ॥

अथ-रस गुण, वीर्य, विपाक और शक्ति ये पांच पदार्थ द्रव्यमें रहतेहैं और ये अपने २ कार्यांको करते हैं, स्वादु, अम्ल, लवण, तिक्त, कटु और कषेला ये छः रस द्रव्योंमें रहते हैं, और इसमें एकसे दूसरा बलहीन है अर्थात् स्वादुरससे अम्लरस, अम्लरससे लवणरस लवणरससे तिक्तरस, तिक्तरससे चरपरारस और चरपरेसे कषेलारस निर्बल है। स्वादु, अम्ल, और लवण ये तीनों रस वातनाशकहैं और तिक्त, कटु, कषेला ये तीनों रस कफको हरतेहैं तथा कषेला, तिक्त और मधुररस पित्तको शमन करते हैं, शेषके अम्ल, कटु और कषाय ये तीनों रस पित्तकारक हैं जो रस वातको दूर करनेवाले हैं, किन्तु उनमें रूक्षता, लघुता और शीतलता ये तीनों गुण होवैं तो वह कदापि वातको दूर नहीं करसक्ते। जो रस पित्तको शान्त करनेवाले हैं जो उनमें तीष्णता, उष्णता और लघुता ये तीनों गुण होवैं तो वह पित्तको नष्ट नहीं करसक्ते ऐसेही जो रस कफको शमन करनेवाले हैं यदि उनमें स्निग्धता, गुरुता और शीतलता ये तीनों गुण होवैं तो कदापि कफको दूर नहीं करसक्ते।

क्षारःकषायःपवनप्रकोपीमधुरोऽथतिक्तःकफकोपनश्च ।
कट्वम्लकौपित्तविकारकारिणौकट्वम्लकौवातशमौप्रदिष्टौ॥
पित्तस्यनाशीमधुरःसतिक्तःकटूकषायौशमनौकफस्य ।
अन्योन्यमेतच्छमनंवदन्तिपरस्परंदोषविवृद्धिमन्तः ॥

अर्थ-लवण और कषेला रस वातको कुपित करेहै, मधुर और कडवा रस कफको कुपित करनेवालाहै, चरपरा और खट्टारस पित्तको कुपित करता है और वातको शमन करता है, मधुर और कडुवा रस पित्तको दूर करेहै, चरपरा और कषेलारस कफको शमन करेहै और परस्पर दोषोंको बढानेवाले परस्परमें मिलेहुए दोष शमन करते हैं।

मधुरःश्लेष्मलःप्रायोजीर्णाच्छालियवादृते। प्रायोम्लंपित्तजनकंदाडिमामलकादृते॥ अपथ्यंलवणंप्रायश्चक्षुषोन्यत्र सैंधवात्। तिक्तंकटुकभूयिष्ठमवृष्यंवातकोपनम्॥ ऋतेमृतापटोल्यांशुण्ठीशुष्काद्रसोनतः कषायःप्रायशःशीतःस्तंभनश्चाभयांविना॥

अर्थ-पुराने चावल, जौ गेहूँ, मूग, सहत, मिश्री और जगली जीवोंके मांसको छोडकर जितने मधुर रसवाले पदार्थ हैं सब पित्तको करते हैं, सैंधव लवणको छोडकरके सम्पूर्ण लवण अपथ्य और नेत्रोंको अहितकारीहैं, गिलोय और परवलके सिवाय जितने कडवे पदार्थ हैं सब अवृष्य, वातको कुपित करनेवाले हैं, सोंठ, अदरख और लशुनको छोडकर जितने चरपरे पदार्थ हैं अवृष्य और वातको कुपित करनेवाले हैं, हरडको छोडकर जितने कषेले पदार्थ हैं प्रायः सबही शीतल और स्तम्भक हैं।

मधुररसवर्णनम्।

मधुरंगौल्यमित्याहुरिक्ष्वादौचसलक्ष्यते॥ स्वादुःस्तन्यरजसांचबलकृद्वीर्यप्रदस्तृप्तिदः प्रात्हृद्यांरसनांकरोतितदनुश्लेष्मप्रकोपप्रदः। पित्तानांदमनः श्रमोपशमनोवृष्योनराणांनःक्षीणानांक्षतपाण्डुनेत्रविरुजांहंताभवेन्माधुरः॥

अर्थ—मधुर, गौल्य (गोल, रसज्येष्ठ, गुल्म, स्वादु, मधूलक) ये सब मधुररसके पर्याय हैं, मधुररस इक्ष्वादिकमें रहताहै, मधुररस स्तनोंमें दूधको करनेवाला, बल पुष्टिको करनेवाला, वीर्यजनक, हृदयको और जिह्वामें तृप्तिको करनेवाला, किंचित् कफको कुपित करनेवाला, पित्तको दमन करनेवाला, श्रमको शमन करनेवाला तथा क्षीण, क्षत, पाण्डु और नेत्ररोगवाले मनुष्योंको हितकारीहै।

मधुरःपिच्छिलःशीतोधातुस्तन्यबलप्रदः ।
चक्षुष्योवातपित्तघ्नःकुर्यात्स्थौल्यमलकृमीन् ॥

अर्थ-मधुररस-पिच्छिल, शीतल, धातु, स्तनोंमें दूध और बलको बढानेवाला, नेत्रोंको हितकारी, वातपित्तनाशक तथा स्थूलता, मल और कृमिरोगको करनेवाला है।

मधुरस्तुरसश्चिनोतिकेशान्वपुषःस्थौल्यबलौजवीर्यदायी ।
अतिसेवनतःप्रमेहशैत्यंजडतामांद्यमुखान्करोतिदोषान् ॥

अर्थ--मधुररस-केशोंको सुन्दर करनेवाला, शरीरको स्थिरता देनेवाला तथा बल, ओज, वीर्यको देनेवाला है, यदि इसको अधिक सेवन किया जाय तो शीतलता, जडता, मन्दाग्नि, मुखरोग और प्रमेहादि रोगोंको उत्पन्न करे है।

अन्यच्च ।

सोऽतियुक्तोज्वरश्वासगलगंडादिरोगकृत् । (रा. व.)

अर्थ-यदि इसको अधिक सेवन किया जाय तो ज्वर, श्वास, गलगंडादि रोगोंको उत्पन्न करता है ।

अम्लरसवर्णनम् ।

अम्लस्तुचिंचाजंबीरमातुलुंगफलादिषु ।
अम्लोष्णोंतर्बहिःशीतोरुच्यःपित्तकफास्रदः ॥
विबधानाहदृष्टिघ्नोदंताक्षिभ्रूनिकोचकः ।

अर्थ-अम्लरस--इमली, जम्भीर और मातुलुंगादि फलोंमें होता है, अम्लरस-गरम, बाहर अर्थात् स्पर्श करनेसे शीतल, रुचिकारक, पित्त, कफ और रुधिरको कुपित करनेवाला तथा विबंध, अनाह और दृष्टिको नष्ट करनेवाला और दाँत, नेत्र, भौंहको सकुचानेवाला है ।

अन्यच्च ।

अम्लाभिधःप्रीतिकरोरुचिप्रदःप्रपाचनोयंमृदुतांचयच्छति ।
भ्रांतिंचकुष्ठंकफपांडुतांचकाश्यंचकासंकुरुतेतिसेवितः ॥

अर्थ--अम्लरस-प्रीतिकारक, रुचिजनक, पाचक और मृदुताको करनेवाला है। इसको अधिक सेवन किया जाय तो भ्रान्ति, कुष्ठ, कफ, पाण्डुता और कृशताको करे है।

अन्यच्च ।

सोऽतियुक्तोभ्रमंकुर्यात्तृड्दाहतिमिरज्वरान् ।
कण्डूपाडुत्ववीसर्पशोथविस्फोटकुष्ठकृत् ॥ (भा.प्र.)

अर्थ--इसका अधिक सेवन किया जाय तो भ्रम, तृषा, दाह, तिमिर, ज्वर, कण्डू, पाण्डुता, वीसर्प, शोथ, विस्फोट और कुष्ठरोगको उत्पन्न करेहै ।

लवणरसवर्णनम् ।

लवणस्तुवरःप्रोक्तःसैंधवादिषुदृश्यते ।
लवणःशोधनोरुच्यःपाचनःकफपित्तहा ॥
पुंस्त्ववातहरःकायशैथिल्यमृदुकारकः ।

अर्थ-लवणरस सैंधवादिक पदार्थोंमें देखा जाता है, लवणरस-शोधन रुचिकारक, पाचक, कफपित्तनाशक, पुरुषतानाशक, वातहारक तथा शरीरमें शिथिलता और मृदुताको करनेवाला है ।

अन्यच्च ।

लवणोरुचिकृद्रसोनितांतंपचनःस्वादुकरश्चसारकश्च ।
अतिसेवनतोजरांचपित्तंशितिमानंचददातिकुष्ठकारी ॥

अर्थ--लवणरस रुचिकारक, पाचक, स्वादिष्ठ, सारक है इसको अधिक सेवन करे तो जरा, पित्त, और कोढको करै है ।

अपिच ।

सोतियुक्तोक्षिपाकास्रपित्तकोष्ठक्षतादिकृत् ।
वलीपलितखालित्यकुष्ठवीसर्पतृट्प्रदः ॥

अर्थ—इसको अधिक सेवन करनेसे नेत्रपाक, रक्तपित्त, कोढ और क्षतादिरोग उत्पन्न होते हैं, शरीरमें वलीका पडना, कोढ, विसर्प और तृषा यह सब उत्पन्न होते ह ।

तिक्तरसवर्णनम् ।

तिक्तन्तुपिचुमन्दादौव्यक्तमास्वाद्यतेरसः ।

अर्थ-कडवारस-नीम चिरायतादिमें रहता है तथा यह रस प्रायः गुण और बेस्वाद होता है।

तिक्तः पित्तकफापहोज्ज्वरहरःकुष्ठादिदोषापहःशीतोरक्तगदापहःश्रमहरोरुच्योनसंक्लेदनः। जिह्वाकंठविशोधनोभवति-तदाहापहोरोचनो वक्रोल्लासकरःप्रकुष्ठकथितोनिम्बादिकेस्वादधृक्॥

अर्थ-कडवारस-पित्त और कफको हरनेवाला, ज्वरको दूर करनेवाला, कुष्ठादि रोगोंको नष्ट करनेवाला, शीतल, रुधिरके विकारोंको दूर करनेवाला श्रमनाशक, रुचिकारक, क्लेदकारक, जिह्वा और कंठको शुद्ध करनेवाला, दाहनाशक, रोचन और मुखको प्रसन्न करनेवाला है।

अन्यच्च।

तिक्तःशीतस्तृषामूर्च्छाज्वरपित्तकफाञ्जयेत्। कृमिकुष्ठविषोत्क्लेददाहरक्तगदापहः॥ रुच्यःस्वयमरोचिष्णुःकंठस्तन्यविशोधनः। वातलोऽग्निकरोनासाशोषणोरक्षणोलघुः सोऽतियुक्तःशिरःशूलमन्यास्तम्भश्रमार्तिकृत। कम्पमूर्च्छातृषाकारी-बलशुक्रक्षयप्रदः॥

अर्थ-कडवारस-शीतल, तृषा, मूर्च्छा, ज्वर, पित्त, कफ, कृमि, कोढ, विष, उत्क्लेद, दाह, रुधिरविकार इनको दूर करे है, स्वयं अरुचिकारक होनेपरभी अरुचिवाले मनुष्योंको रुचिको उत्पन्न करे है, कंठ और स्त्रीके दूधको शोधे है, वातकारक, अग्निप्रदीपक, नासाको सुखानेवाला, रूखा और हलका है। कडवेरसको अधिक सेवन करनेसे-शिरःशूल, मन्यास्तम्भ श्रम, कम्प, मूर्च्छा और तृषारोग उत्पन्न होताहै तथा बल और शुक्रका नाश होता है।

कटुरसवर्णनम्।

कटुस्तुपिप्पलीमूलेमरिचादौसलक्ष्यते॥ नेत्रस्राववहोमुखंविदहतेकर्णाक्षिज्वालोद्वहन् बीभत्संकुरुतेश्रमंविदधतेरूक्ष-

श्चतीक्ष्णोभृशम् । अग्निश्चोत्पथतेक्ष तंविदहतेक्षीणस्यश-
तोनच वातंवर्द्धयतेकफंप्रहरतेरौद्रः कटुर्योरसः ॥

अर्थ-चरपरारस-पीपलामूल और मिरचादिमें रहता है ! चरपरारस—
नेत्रोंमेंसे पानी टपकावे, मुखको जलावे, कानोंमें झलाझलाहट करे, नेत्रोंमें
ज्वाला उत्पन्न करे, भयंकरपनेको प्रगट करै, रूखा, तीक्ष्ण, अग्निको उत्पन्न
करे, क्षतको दहन करनेवाला, क्षीण मनुष्योंको अहितकारी, वातको बढाने-
वाला, कफको हरनेवाला और रौद्रस्वरूप है ।

अन्यच्च ।

कटुरुष्णश्चतीक्ष्णश्चविशदोवातपित्तकृत । श्लेष्महल्लघुराग्ने-
यःकृमिकण्डूविषापहः ॥ रूक्षःस्तन्यहरश्चापिमेदःस्थौल्यापक-
र्षणः । अश्रुदोनासिकास्याक्षिजिह्वाग्रोद्वेगकोमतः ॥ दीपनः
पाचनोरुच्योनासिकाशोषणोभृशम् । क्लेदमेदोवसामज्जा-
शकृन्मूत्रोपशोषणः ॥ स्रोतःप्रकाशकोरूक्षोमेध्योवर्चोविबन्ध-
कृत । सोतियुक्तोभ्रान्तिदाहमुखताल्वोष्ठशोषकृत ॥ कंठादि-
पीडामूर्च्छांतर्दाहदोबलकान्तिहृत ।

अर्थ-चरपरारस-गरम, तीक्ष्ण, विशद, वातपित्तकारक, कफनाशक,
हलका, आग्नेय, कृमिनाशक- खुजलीको हरनेवाला, विषके विकारोंको दूर
करनेवाला, रूखा, स्तनोंमें दूधको सुखानेवाला, मेदा और स्थूलताको हरने-
वाला, आँसुओंको उत्पन्न करनेवाला, नासिका, मुख, नेत्र और जिह्वाको
उद्वेग करनेवाला, दीपन, पाचन, रुचिकारक, नासिकाको सुखानेवाला,
क्लेद, मेद, वसा, मज्जा, विष्ठा और मूत्रको सुखानेवाला, स्रोतोंको प्रका-
शित करनेवाला, रूखा मेधाजनक और मूलरोधक है । इसको अधिक सेवन
करनेसे भ्रान्ति और दाह उत्पन्न होता है। तथा मुख,तालु, ओष्ठ यह सुखजाते
हैं कंठमें पीडा उत्पन्न होवे, तथा बल और कान्ति नष्ट होवेहै ।

कषायरसवर्णनम् ।

कषायस्तुवरःप्रोक्तःसतुपूगीफलादिषु ।

अर्थ—कषाय, तुवर (तूवर, कुवर) यह कषायरसके पर्याय हैं। कषायरस सुपारी आदि पदार्थोंमें होता है।

कषायोरोपणोग्राहीस्तम्भनःशोधनोहिमः।
कफशोणितपित्तघ्नोजिह्वाजाड्यकरोलघुः॥

अर्थ—कषेलारस—व्रणको भरनेवाला, मलको रोकनेवाला, स्तम्भन, शीतल तथा कफ, रक्तपित्तको दूर करनेवाला, जिह्वामें जडताको करनेवाला और हलका है।

मतान्तरम्।

कषायःशोषणःस्तम्भीव्रणपाकार्त्तिनाशनः।
कफशोणितपित्तघ्नोरूक्षःशीतोगुरुस्तथा॥

अर्थ—कषेलारस—शोषण, स्तम्भक, व्रणपाककी पीडाको दूर करनेवाला, कफनाशक, रुधिरके विकारोंको हरनेवाला, पित्तनिवारक, रूखा, शीतल और भारी है।

अन्यच्च।

कषायनामानिरुणद्धिशोफंवर्णंतनोदीपनपाचनश्च।
सत्वापहोसौशिथिलत्वकारीनिषेवितःपांडुकरोतिगात्रम्॥

अर्थ—कषेलारस-सूजनको करे, वर्णको विगाडदेवे, दीपन, पाचन, सामर्थ्यको नष्ट करे, शिथिलताको उत्पन्न करे और इसको अधिक सेवन किया जाय तो शरीरमें पांडुता उत्पन्न होती है।

अथ द्वन्द्वरसः।

कटुःकषायश्चकफापहारिणौमाधुर्य्यतिक्तावपिपित्तनाशनौ।
कट्वम्लसंज्ञौचरसौमरुद्धराविथंचद्वन्द्वौसकलामयापहौ॥

अर्थ—चरपरा और कषेलारस—कफको, मधुर और कडवारस पित्तको, चरपरा और खट्टारस वातको दूर करे है, इसप्रकार दो दो रस मिलेहुये सर्वप्रकारके रोगोंको हरे हैं। इन छः रसोंमें एकमें एक मिलनेसे अनेक भेद हो जाते हैं सो कहते हैं।

मिश्रितरसके ६३ भेद।

मधुरोम्लंकटुस्तिक्तःकटुस्तुवरइत्यपि ।
क्रमादन्योन्यसंकीर्णानानात्वंयांतिषड्रसाः ॥

अर्थ—मधुर, अम्ल, चरपरा, कडवा, नमकीन और कषेला यह छः रस एक दूसरेके साथ मिलनेसे नानाप्रकारके भेदोंको प्राप्त होते हैं और उनके गुणभी पृथक् २ हो जाते हैं, वह सब नीचे लिखते हैं।

सामान्येनात्रनिर्दिष्टागुणाःषड्रससम्भवाः । रसानांयोगत-स्तुस्यादन्यएवगुणोदयः ॥ संयोगाद्विषतांयातिसममाज्ये-नमाक्षिकम् । अमृतंतुविषंयातिसर्पदष्टस्यवैयथा ॥

अर्थ—ये सामान्यतासे छः रसोंके गुण कहे हैं, किन्तु रसोंके मिलनेसे उनमें और औरही गुण उत्पन्न हो जाते हैं, जैसे घृत बराबर भाग सहत मिलानेसे विष हो जाता है जिसप्रकार अमृतरूप जो दुग्धादि पदार्थ हैं वे साँपके डसनेसे विषरूप हो जाते हैं।

रसानांसंयोगाःसप्तपंचाशद्भवन्ति ।
कल्पनात्तुत्रिषष्टिधाभवन्ति ॥

अर्थ—रसोंके संयोग सत्तावन५७ हैं और कल्पना करके त्रेसठ६३जानने

तद्यथा।

षट्पंचकाःषट्पृथग्रसाःस्युश्चतुर्द्विकौपंचदशप्रकारौ । भेदास्त्रिकाविंशतिरेकमेवद्रव्यंषडास्वादमितित्रिषष्टिः ॥

अर्थ—पाँच पाँच रसके मिलनेसे छः भेद होते हैं, और छः अलग २ रस हैं और चार चार रसोंके मिलनेसे पंद्रह भेद होते हैं और दो दोके मिलनेसे भी पंद्रहभेद होते हैं और तीनतीन रसोंके संयोगसे भी बीस भेद होते हैं और छहोंरसोंका स्वादवाला एक ऐसे त्रेसठ ६३भेद कहे हैं।

दोदोके संयोगसे १५	पांचपांचके संयोगसे ६
चारचारके संयोगसे १५	पृथक २ रस ६
तीनतीनके संयोगसे २०	एकमें छहोंमिले हुये १

इस प्रकार सब मिलकर ६३ भेद होते हैं।
अब इनको समझनेके लिये नीचे कोष्टक लिखा है।
रसोंके ६३ भेद जाननेके लिये नीचे यंत्र लिखते हैं।

१ मधुराम्लौ	२ मधुरलवणौ	३ मधुरतिक्तौ
४ मधुरकटुकौ	५ मधुरकषायौ	६ अम्ललवणौ
७ अम्लतिक्तौ	८ अम्लकटुकौ	९ अम्लकषायौ
१० लवणतिक्तौ	११ लवणकटुकौ	१२ लवणकषायौ
१३ तिक्तकटुकौ	१४ तिक्तकषायौ	१५ कटुकषायौ
१६ मधुराम्ललवणाः	१७ मधुराम्लतिक्ताः	१८ मधुराम्लकटुकाः
१९ मधुराम्लकषायाः	२० मधुरलवणतिक्ताः	२१ मधुरलवणकटुकाः
२२ मधुरलवणकषायाः	२३ मधुरतिक्तकटुकाः	२४ मधुरतिक्तकषायाः
२५ मधुरकटुकषायाः	२६ अम्ललवणतिक्ताः	२७ अम्ललवणकटुकाः
२८ अम्ललवणकषायाः	२९ अम्लतिक्तकटुकाः	३० अम्लतिक्तकषायाः
३१ अम्लकटुकषायाः	३२ लवणतिक्तकटुकाः	३३ लवणतिक्तकषायाः
३४ लवणकटुकषायाः	३५ तिक्तकटुकषायाः	३६ मधुराम्ललवणतिक्ताः
३७ मधुराम्ललवणकटुकाः	मधुराम्ललवणकषायाः	३९ मधुरलवणतिक्तकटुकाः
४० मधुरलवणतिक्तकषायाः	४१ मधुरलवणकटुकषायाः	४२ मधुरतिक्तकटुकषायाः
४३ मधुराम्लतिक्तकटुकाः	४४ मधुराम्लतिक्तकषायाः	४५ मधुराम्लकटुकषायाः
४६ अम्ललवणतिक्तकटुकाः	४७ अम्ललवणकटुकषायाः	४८ अम्लतिक्तकटुकषायाः
४९ अम्ललवणतिक्तकषायाः	५० लवणतिक्तकटुकषायाः	५१ मधुराम्ललवणतिक्तकटु०
५२ मधुराम्लवणतिक्तकषायाः	५३ मधुराम्ललवणकटुक०	५४ मधुराम्लतिक्तकटुकषायाः
५५ मधुरलवणतिक्तकटुक०	५६ अम्ललवणतिक्तकटुक०	५७ मधुराम्ललवणतिक्तकटु०
५८ मधुर	५७ अम्लः	६० लवणः
६१ तिक्तः	६२ कटुः	६३ कषाय;

मित्ररसौ।

अन्योन्यंमधुराम्लौलवणाम्लौकटुतिक्तकौचरसौ। कटुलवणौचस्यातांमित्ररसोतिक्तलवणौच॥

अर्थ-मधुर और अम्लरस आपसमें मित्र हैं लवण और अम्लरस मित्र हैं, कटु और तिक्तरस मित्र है, कटु और लवणरस मित्र हैं, तिक्त और लवणरस मित्र हैं।

परस्परविरुद्धरसौ।

लवणमधुरौविरुद्धावथकटुमधुरौचतिक्तमधुरौच साधारणःकषायःसर्वत्रसमानतांधत्ते॥

अर्थ-लवण और मधुररस परस्पर शत्रु अर्थात् विरुद्ध हैं, कटु और मधुर रस विरुद्ध हैं, तिक्त और मधुररसभी विरुद्ध हैं, और कषेला रस साधारण है ये सबके साथ साधारणपनेसे वर्त्ताव करे है।

अथ गुणाः।

गुरुर्लघुस्तथास्निग्धोरूक्षस्तीक्ष्णइतिक्रमात्। भूनभोवारिवातानांवह्नेरेतेगुणाःस्मृताः॥ गुरुवातहरंपुष्टिश्लेष्मकृच्चिरपाकिच। लघुपथ्यंपरंप्रोक्तंकफघ्नंशीघ्रपाकिच॥ स्निग्धंवातहरंश्लेष्मकारिवृष्यंबलावहम्। रूक्षंसमीरणकरंपरंकफहरंमतम्। तीक्ष्णंपित्तकरंप्रायोलेखनंकफवातनुत्॥

अर्थ-गुरु, लघु, स्निग्ध, रूक्ष और तीक्ष्ण, ये क्रमसे भूमि, आकाश, जल, वायु और अग्निके गुण हैं। तहां गुरुपदार्थ वातनाशक कफ और पुष्टिकारक और देरमें पचे है। लघुपदार्थ अत्यंत पथ्य, कफनाशक और शीघ्र पचे है। स्निग्धपदार्थ वातहारक, कफहारक, वीर्य और बलको बढावे है। रूक्षपदार्थ वातकारक और कफहारक तीक्ष्णपदार्थ लेखन और कफवातनाशक हैं।

सुश्रुतेतुगुणाएतेविंशतिर्नात्रदर्शिताः।

अर्थ-इसीप्रकार सुश्रुतमेंभी वीस गुण कहेहै, वह यहाँ ग्रंथ बढनेके भयसें नहीं दिखाये।

---

१ शीतोष्णस्निग्धरूक्षमंदतीक्ष्णगुरुलघुपिच्छिलविशदश्लक्ष्णपरुषकठिनमृदुद्रवसांद्रस्थिरसरस्थूलसूक्ष्माविंशतिः।

॥ अथ गुणप्रस्तावाद्दीपनादयोगुणाः ॥

पचेन्नामंवह्निकृद्यद्दीपनंतद्यथामिसिः । पचत्यामंनवह्निंच कुर्याद्यत्तद्धिपाचनम् ॥ नागकेशरवद्विद्याच्चित्रोदीपनपाचनः । नशोधयतियद्दोषान्समान्नोदीरयत्यपि ॥ समीकरोतिविषमान्शमनंतद्यथाऽमृता । कृत्वापाकंमलानांच भित्त्वाबंधमधोनयेत् ॥ तच्चानुलोमनंज्ञेयंयथाप्रोक्ताहरीतकी । पक्तव्यंयदपक्त्वैवश्लिष्टंकोष्ठेमलादिकम् ॥ नयत्यधःस्रंसनंतद्यथास्यात्कृतमालकम् । मलादिकमबद्धं यद्बद्धंवापिंडितंमलैः ॥ भित्त्वाऽधःपातयतियद्भेदनंकटुकीयथा । विपक्वंयदपक्वंवामलादिद्रवतांनयेत् ॥ रेचयत्यपितज्ज्ञेयंरेचनंत्रिवृतायथा । अपक्वंपित्तश्लेष्माणंबलादूर्ध्वंनयेत्तयत् ॥ वमनंतद्धिविज्ञेयंमदनस्यफलंयथा । स्थानाद्बहिर्नयेदूर्ध्वमधोवामलसंचयम् ॥ देहसंशोधनंतत्स्याद्देवदालीफलंयथा । दीपनंपाचनंयत्स्यादुष्णत्वाद्वशोषकृत् ॥ ग्राहीतच्चयथाशुंठीजीरकंगजपिप्पली । रौक्ष्याच्छैत्यात्कषायत्वाल्लघुपाकाच्चयद्भवेत् ॥ वातकृत्स्तंभनंतत्स्याद्यथावत्सकटुंटुकौ । श्लिष्टान्कफादिकान्दोषानुन्मूलयतियद्बलात् ॥ छेदनंतद्यथाक्षारामरिचानिशिलाजतु । धातून्मलान्वादेहस्यविशोष्योल्लेखयेच्चयत् ॥ लेखनंतद्यथाक्षौद्रंनीरमुष्णंवचायवाः । यस्माद्द्रव्याद्भवेत्स्त्रीषुहर्षोवाजिकरंहितत् ॥ यथाश्वगंधामुसलीशर्कराचशतावरी । यस्माच्छुक्रस्यवृद्धिःस्याच्छुक्रलंहितदुच्यते ॥ यथानागबलाद्याःस्युर्बीजंचकपिकच्छुजम् । दुग्धंमाषाश्चभल्लातफलमज्जामलानिच ॥ एतानिजनकानिस्यूरेचकानिचरेतसः । प्रवर्त्तिनीस्त्रीशुक्रस्यरेचनंबृहतीफलम् ॥ जातीफलं

स्तंभकंस्यात्कालिंगंक्षयकारिच । रस यनंतुतज्ज्ञेयंयज्जरा व्याधिनाशनम् ॥ यथाहरीतकीदंतीगुग्गुलुश्चशिलाजतु । पूर्वव्याप्याखिलंकायंततःपाकंचगच्छति ॥ व्यवायितलथा भंगाफेनंचाहिसमुद्भवम् । संधिबंधांस्तुशिथिलान्यःकरोति विकाशितत् ॥ विशोष्यौजश्चधातुभ्योयथाक्रमुककोद्रवौ । बुद्धिंलुंपतियद्द्रव्यंमदकारितदुच्यते ॥ तमोगुणप्रधानंचय-थामद्यंसुरादिकम् । व्यवायिचाविकाशिस्याच्छ्लेष्मच्छेदिम-दावहम् ॥ आग्नेयंजीवितहरंयोगवाहिस्मृतंविषम् ॥ निज-वीर्येणयद्द्रव्यंस्रोतोभ्योदोषसंचयम् । निरस्यतिप्रमाथि-स्यात्तद्यथामरिचंवचा ॥ पैछिल्याद्गौरवाद्द्रव्यंरुद्ध्वारसवहाः शिराः । धत्तेयद्गौरवंतत्स्यादभिष्यंदियथादधि ॥ विदाहि द्रव्यमुद्गारमम्लंकुर्यात्तथातृषाम् । हृदिदाहंचजनयेत्पाकंग-च्छतितच्चिरात् ॥ गृह्णातियोगवाहिद्रव्यंसंसर्गिवस्तुगुणान् । पच्यमानंयथैतन्मधुजलतैलाज्यसूतलोहादिः ॥

अर्थ-अब प्रसंगवश दीपनपाचनादि गुणोंके लक्षण कहते हैं। जो पदार्थ आम (कच्चे) को पकावै नहीं परंतु अग्निको प्रदीप्त करे वह दीपन कहाताहै जैसे कि-सौंफ। जो पदार्थ कच्चेको पकावे परन्तु अग्निको दीपन नहीं करे उसको पाचन कहते हैं। जैसे कि—नागकेशर । जो अग्निको दीपन करता है और कच्चेको पकाताहै उसको दीपन पाचन कहतेहैं। जैसे कि-चीता। जो पदार्थ तीनों दोषोंको शुद्ध नहीं करता अर्थात् ऊंचे तथा नीचे मार्गमें नहीं लेजासक्ता समान दोषोंको बढाता नहीं और विषम हुए दोषोंको सम करता है वह पदार्थ शमन कहाता है। जैसे कि, गिलोय। जो पदार्थ कच्चे वातपित्त और कफको पकाकर वायुके बन्धनको भेदन करके नीचे लेजाताहै अर्थात् मलोंको गिरा देता है वह पदार्थ अनुलोमन कहाता है जैसे कि-हरड। जो पदार्थ कोठेमें चिपटे हुए पकानेयोग्य मल, कफ और पित्त हैं उनको विना पकायेही नीचे लेजाय वह स्रंसन कहाताहै जैसे कि-अमलतास। जो वातादि दोषोंसे बँधेहुये मल मूत्रको अलग अलग करके गुदद्वारसे

बाहर निकालै उसको भेदन कहते हैं। जैसे कि, कुटकी। जो पदार्थ अधपके अथवा कच्चे मलको द्रवरूप (पतला) करै और नीचेको गेरै वह पदार्थ रेचन कहाताहै जैसे कि -निसोथ। जो पदार्थ कच्चे पित्त, कफ तथा अन्नके समूहको मुखके मार्गसे बाहर निकाले वह पदार्थ वमन कहाताहै जैसे कि, मैंनफल। जो पदार्थ मलके समूहको अपने स्थानसे बाहर निकाले अथवा नीचे या ऊपर लेजाय वह पदार्थ देहशोधन कहाताहै जैसे कि- देवदाली। जो पदार्थ अग्निको दीपन करनेवाला,कच्चेको पकानेवाला और गरम होनेसे द्रवतारूप (गीलेपन) को सुखानेवालाहै वह द्रव्यग्राही कहाताहै जैसे कि-सोंठ, जीरा और गजपीपल जो पदार्थ रूक्ष, शीतल, कषेला और लघु-पाकी होनेसे वायुको उलटा करनेवाला होय वह पदार्थ स्तम्भन कहाता है जैसे कि--कुडा और सोनापाठा। यह नीचे जानेवाले मलादिकको रोककर रखताहै इसलिये स्तम्भक कहाताहै। जो पदार्थ शरीरमें चिपटे हुए कफा-दिकदोषोंको बलात्कारसे उखाडडाले वह पदार्थ छेदन कहाताहै जैसे कि जवाखार, आदिखार, कालीमिरच और शिलाजीत। जो पदार्थ देहक धातुओंको अथवा मलको सुखाकर दुर्बल करै वह पदार्थ लेखन है जैसे कि, मधु, उष्णजल, वच और इन्द्रजौ। जिस द्रव्यके प्रयोग करनेसे स्त्रीके साथ रमनेका उत्साह होय वह द्रव्य वाजीकरण कहाता है जैसे कि--अस-गन्ध, मुसली, मिश्री (चीनी) और शतावर। जिस द्रव्यसे वीर्य्यकी वृद्धि होय वह द्रव्य शुक्रल कहाता है जैसे कि, नागबला आदि और कौंछके बीज। दूध, उडद, भिलावेंकी मींग और आमले ये अपने प्रभावसे, शीघ्रही रसादिकको उत्पन्न करके वीर्य्यको प्रगट करतेहैं और वीर्य्यकी अधिकता होनेपर उसकी प्रवृत्ति करतेहैं। स्त्रीवीर्यको प्रवर्त्तानेवाली.कटेरीका फल बीर्यका रेचक, जायफल वीर्य्यका स्तम्भन करनेवाला और तरबूज (इन्द्रजौ) वीर्य्यका क्षय करतेहैं। स्त्रीका स्मरण कीर्त्तन, दर्शन, संभाषण स्पर्श, चुम्बन, आलिंगन और मैथुन यह सम्पूर्ण क्रियाएँ वा एकही क्रिया वीर्यको प्रवर्त्ताने (निकालने) वालीहैं। जो पदार्थ जरा और व्याधिका नाश करनेवाला होय वह पदार्थ रसायन कहाता है जैसे कि, हरड, दन्ती, गूगल और शिलाजीत। जो पदार्थ प्रथम सम्पूर्ण शरीरमें व्याप्त होकर पश्चात् पाक अवस्थाको प्राप्त होय वह पदार्थ व्यवायी कहाताहै जैसे कि, भांग और अफीम। अन्यद्रव्य परिपाकको प्राप्त होकर अपना

गुण करते हैं और व्यवायी द्रव्य तो कच्चेही अपने गुणोंसे सम्पूर्ण शरीरमें व्याप्त होकर पीछे पकते हैं । जो द्रव्य सम्पूर्ण शरीरमें रहनेवाले वीर्यमेंसे ओजको सुखाकर शरीरकी सन्धियोंके बंधनोंको शिथिल करते हैं । उनको विकाशी जानना, जैसे सुपारी और कोदों । जो द्रव्य अधिक तमोगुणवाला और बुद्धिका नाश करनेवाला होय वह मदकारी अर्थात् मादक द्रव्य कहाता है जैसकि, मदिरा आदिका जो पदार्थ व्यवायी, विकाशी, कफ नष्ट करनेवाला, करनेवाला, अग्निका अधिक अंशयुक्त, प्राणनाशक और योगवाही होय वह वह पदार्थ विष कहाता है जैसे कि, वत्सनाभ और शकुक आदि । वत्सनाभ आदि द्रव्य सम्पूर्ण शरीरमें व्याप्त होकर पकते हैं इसलिये व्यवायी हैं । ओजको सुखाकर संधियोंके बंधनोंको शिथिल करनेवाले हैं इसलिये विकाशी हैं । तमोगुणका भाग अधिक होनेसे बुद्धिका नाश करके मद करनेवाला है, अग्निका अधिक अंशयुक्तक है और जिस पदार्थके साथ मिलकर उसके गुणोंको ग्रहण करनेवाला होनेसे योगवाहीभी है । जो द्रव्य अपनी शक्तिसे स्रोतोंसे दोषोंके समूहको निकाले वह द्रव्य प्रमाथी कहाता है जैसे कि, मिरच और वच । जो पदार्थ रसको बहानेवाली शिराओंको पिच्छिल और भारीपनसे रोककर शरीरमें भारीपन करता है वह पदार्थ अभिष्यन्दी कहाता है जैसे कि, दही । जिस द्रव्यके खानेसे खट्टी डकार आवैं, प्यास लगे, हृदयमें दाह होय वह पदार्थ विदाही कहाता है, इस द्रव्यका पाक बहुत देरसे होता है । जो द्रव्य अपने साथ मिली हुई वस्तुओंके गुणोंको ग्रहण करै वह पदार्थ योगवाही कहाता है जैसे कि, सहत, तेल, घी, पारा और लोहा आदि ।

अथ वीर्यम् ।

मृदुतीक्ष्णगुरुस्निग्धलघुरूक्षोष्णशीतलम् ।
वीर्य्यमष्टविधंप्राहुःशीतोष्णंद्विविधंपरे ॥

अर्थ—मृदु, तीक्ष्ण, गुरु, स्निग्ध, लघु, रूक्ष, उष्ण और शीतल इन भेदोंसे वीर्य्य आठ प्रकारका है और किसी किसीके मतसे उष्ण और शीत इन भेदोंसे वीर्य्य दो प्रकारका है ।

उष्णशीतवीर्य्ययोर्गुणानाह ।

उष्णःपित्तकरोबल्योवातश्लेष्महरोलघुः ।
शीतलःपित्तहाबल्यःकफवातकरोगुरुः ॥

अर्थ—उष्णवीर्य्य-पित्तकारक, बलवर्द्धक, वातकफनाशक और हलका है। शीतवीर्य्य--पित्तनाशक, बलकारक कफकारक और भारी है।

अन्यच्च।

यच्छीतवीर्य्यंगुरुपित्तहारिद्रव्यंनृणांवातकरंतदुक्तम्। यदुष्णवीर्य्यंलघुवातहारिश्लेष्मापहंपित्तकरंचतत्स्यात्।

अर्थ—जो द्रव्य शीतवीर्य्य हैं वह सब भारी, पित्तहारी और वातको करनेवाले हैं, जो द्रव्य उष्णवीर्य्य हैं वह सब हलके, वातविनाशक, कफनाशक और पित्तको उत्पन्न करे हैं।

रसानांवीर्य्यभेदमाह।

रसाःकट्वम्ललवणाउष्णवीर्य्यायथोत्तरम्॥
तिक्ताकषायमधुराः शीतवीर्य्यायथोत्तरम्॥

अर्थ—कटु, अम्ल और लवण यह तीनों रस यथाक्रमसे उष्णवीर्य्य है अर्थात् चरपर रससे खट्टा रस और खट्टे रससे लवण रस अधिक उष्णवीर्य्य है, तिक्त, कषाय और मधुर यह तीनों रस यथाक्रमसे शीतवीर्य्य हैं अर्थात् तिक्तरससे कषेला रस और कषेल रससे मधुररस अधिक शीतवीर्य्य हैं।

अथ विपाकः।

जाठरेणाग्निनायोगाद्यदुदेतिरसांतरम्। रसानांपरिणामान्तेसविपाकइतिस्मृतः॥ विपाकस्तुत्रिधाप्रोक्तःस्वाद्वम्लकटुकात्मकः। मिष्टःपटुश्चमधुरोह्यम्लोम्लंपच्यतेरसः॥ कषायकटुतिक्तानांपाकःस्यात्प्रायशःकटुः। श्लेष्मकृन्मधुरःपाकोवातपित्तहरोमतः॥ अम्लस्तुकुरुतेपित्तंवातश्लेष्मगदापहः। कटुःकरोतिपवनकफपित्तंचनाशयेत्॥ विशेषएषरसतोविपाकानांनिदर्शितः।

अर्थ—जठराग्निकरके जो रस उत्पन्न हो और फिर उस रसके पकनेपर जो परिणाम होता है उसको 'विपाक' कहते हैं। विपाक तीन प्रकारका है, मधुर, नमकीन और अम्ल, मधुर औरअम्ल रसवाले पदार्थोंका विपाक मधुरही होता है, अम्लपदार्थोंका अम्ल होता है. तथा कटु, तिक्त और कषेले रसोंका विपाक चर्पराही होता है, मधुर विपाकवाले द्रव्य कफको उत्पन्न

करे हैं और वातपित्तको दूर करे हैं। अम्लविपाकवाले द्रव्य पित्तको उत्पन्न करे हैं और वातकफको हरे हैं। और कटुविपाकवाले द्रव्य वातको उपत्पन्न करेहैं और कफपित्तको दूर करे हैं। विशेषकरके यह विपाक रसोंसे दर्शाया है।

प्रभाव ।

रसादिसाम्येयत्कर्मविशिष्टंतत्प्रभावजम् । दन्तीरसाद्यैस्तुल्यापिचित्रकस्यविरेचनी ॥ मधूकस्यचमृद्वीकाघृतंक्षीरस्यदीपनम् । प्रभावस्तुयथाधात्रीलकुचस्यरसादिभिः ॥ समापिकुरुतेदोषत्रितयस्यविनाशनम् । क्वचित्तुकेवलंद्रव्यं कर्मकुर्यात्प्रभावतः । ज्वरंहन्तिशिरोबद्धासहदेवीजटायथा ॥

अर्थ-औषधीके रस, गुण, वीर्य और विपाकमें जो गुण होवें उनसे अलग अपने प्रभावसे जिस गुणको करै उसका नाम प्रभाव है, जैसे दन्ती और चीता दोनों रस वीर्यविपाकादिमें समानभी हैं, किन्तु दन्ती रेचक हैं और चीता नहीं, इसको प्रभाव कहतेहैं। जैसे महुआ और दाख रसादिकमें समान हैं, पर दाख दस्तावर है। दूध और घी रसादिकमें समान हैं, परन्तु घी अग्निको दीपन करेहैं। आमला और बडहर गुणोंमें तुल्य हैं, किन्तु आमला त्रिदोषनाशक है कहीं कहीं केवल द्रव्य प्रभावसेही कार्य करता है, जैसे सहदेवीकी जडको मस्तकमें बांधनेसे ज्वर दूर होताहै, ये प्रभावज गुण जानने।

इति श्रीशालिग्रामनिघण्टुभूषणेऽनूपादिवर्गः समाप्तः ॥ २१

अथ मिश्रवर्गः ।

ब्राह्मेमुहूर्तेउत्तिष्ठेत्सुस्थोरक्षार्थमायुषः ।
शरीरचिन्तांनिवर्त्यमैत्रंकर्म्मसमाचरेत् ॥

अर्थ-सुस्थ मनुष्य आयुकी रक्षाके लिये ब्राह्ममूहूर्त्तमें उठे, फिर शरीर सम्बन्धीय चिन्ता (मलमूत्रादित्याग) से निर्वर्त्य अर्थात् निबटकर हितको करनेवाले कार्य्योंको विचारे।

स्वभावतःप्रवृत्तानांमलादीनांजिजीविषुः ।
नवेगान्धारयेद्धीरःकामादीनान्तुधारयेत् ॥

अर्थ-जीवनकी इच्छा करनेवाले धीर मनुष्यको चाहिये कि, स्वभावसे आयेहुये मलमूत्रादिके वेगको धारण नहीं करे, क्योंकि इनको धारण करनेसे अनेक प्रकारके विकार उत्पन्न होकर नानाप्रकारके रोगोंको उत्पन्न करते हैं और जो धारण करे तो कामादिके वेगोंको धारण करे, क्योंकि कामादिके वेगोंको धारण करनेसे संसारके रोगोंसे छूटकर उत्तम सुख (मोक्ष) को प्राप्त होताहै ।

पादमलमार्गाणां शौचगुणाः ।

मेध्यंपवित्रमायुष्यमलक्ष्मीकविनाशनम् ।
पादयोर्मलमार्गाणांशौचाधानमभीक्ष्णशः ॥

अथ-दोनों पाँव और मलके मार्ग सदैव साफ रखने चाहिये, क्योंकि इनको साफ रखनेसे मेधाकी वृद्धि होती है, पवित्रता उत्पन्न होतीहै, आयु बढतीहै और अलक्ष्मीका नाश होता है ।

उषःपानगुणाः ।

कासश्वासातिसारज्वरवमथुकटीकोष्ठकुष्ठप्रकारान् मूत्राघातोदरार्शःश्वयथुगलशिरःकर्णनासाक्षिरोगान् । येचान्येवातपित्तक्षयजकफकृताव्याधयःसन्तिजन्तोस्तांस्तानभ्यासयोगादपनयतिपयःपीतमन्तेनिशायाः ॥

अर्थ-जो मनुष्य प्रतिदिन प्रभातके समय उठकर जलपान करतें हैं उनके खाँसी, श्वास, अतिसार, ज्वर, वमन, कटिरोग, कोष्ठरोग, अनेक प्रकारके कुष्ठरोग, मूत्राघात, उदररोग, बवासीर, सूजन, गल, मस्तक, कर्ण, नासिका और नेत्ररोगादि तथा वात, पित्त, क्षय और कफसे उत्पन्न हुए सर्वप्रकारके रोग दूर होजाते हैं ।

नासिकया जलपानगुणाः ।

विगतघननिशीथेप्रातरुत्थायनित्यं पिबतिखलुनरोयोघ्राणरन्ध्रेणवारि । सभवतिमतिपूर्णश्चक्षुषाताक्ष्र्यतुल्योवलिपलितविहीनःसर्वरोगैर्विमुक्तः ॥

अर्थ—जो मनुष्य मेघरहित रात्रिके अन्तमें नित्य नासिकाके द्वारा जल पीते हैं, वे मनुष्य पूर्ण बुद्धिमान्, गरुडके समान नेत्रोंवाले और वलीपलितरहित होजाते हैं तथा सबरोगोंसे छूटजाते ह ।

दन्तधावनविधिः ।

प्रातर्भुक्त्वाचमृद्वग्रंकषायकटुतिक्तकम् ।
भक्षयेद्दन्तधवनंदन्तमांसान्यबाधयन् ॥

अर्थ—प्रातःकालमें कषाय, कटु और तिक्तरसवाले वृक्षोंके कोमल अग्रभागको लेकर उसके द्वारा इस प्रकार दतौन करै कि, जिससे मसूढे न छिलजायँ ।

मतान्तरम् ।

केप्यत्रकरवीरार्ककरञ्जबकुलासनान् ।
दन्तकाष्ठार्थमन्येतुसर्वान्कंटाकिनोविदुः ॥

अर्थ—कोई कोई वैद्य कनेर, आक, करंज, मौलसिरी और सालकी लकडीके द्वारा दतौन करना चाहिये ऐसा कहते हैं और कोई कोई सर्व प्रकारके काँटोंवाले वृक्षोंकी दतौन करनी चाहिये ऐसा कहते हैं ।

निषिद्धं यथा ।

गुवाकतालहिन्तालखर्जूरैःकेतकीमतैः ।
नारिकेलेनताड्याचनकुर्य्याद्दन्तधावनम् ॥

अर्थ—सुपारी, ताल, हिन्ताल, खजूर, केतकी, नारियल और ताडी (पत्रवृक्ष) इन सब वृक्षोंकी दतौन नहीं करनी चाहिये ।

दन्तधावने दिङ्निर्णयः ।

मृत्युःस्याद्दक्षिणास्येनपश्चिमास्येनचामयः ।
पूर्वास्येनौत्तरास्येनसम्पदोदन्तधावनात् ॥

अर्थ—दक्षिणकी ओर मुख करके दतौन करनेसे मृत्यु, पश्चिमकी ओर मुखकरके दतौन करनेसे रोग और पूर्व तथा उत्तरकी ओर मुखकरके दतौनकरनेसे सम्पदाकी वृद्धि होती है ।

दन्तकाष्ठव्यवहारनिषिद्धजनाः ।

अर्दितीकर्णशूलीचदन्तरोगीनवज्वरी ।
शोषीकासीचमूर्च्छार्त्तोदन्तकाष्ठंविवर्जयेत् ॥

अर्थ—अर्दितरोगी, जिसके कानमें शूलहो, दन्तरोगी, नवीन ज्वरवाला, शोषरोगवाला, कासरोगी और मूर्च्छारोगवाले मनुष्योंको दतौन नहीं करनी चाहिये।

जिह्वालेखनगुणाः।

जिह्वानिर्लेखनंरौप्यंसौवर्णंताम्रमायसम्। तन्मलापहरंशस्तंमृदुश्लक्ष्णंदशांगुलम्॥ निहन्तिवक्त्रवैरस्यंजिह्वादन्ताश्रितामयम्। आरोग्यंरुचिमाधत्तेराद्योदन्तविशोधनम्॥

अर्थ—चांदी, सोना, तांबा अथवा लोहा इनकी नरम और निर्मल दश अंगुल लंबी जीभी बनाकर उसके द्वारा जिह्वाको घिसै, इसप्रकार करनेसे मुखकी विरसता, सर्वप्रकारके जिह्वा और दन्तरोग नाश होते हैं। आरोग्य और रुचिकी वृद्धि होती है दन्त शुद्ध हो जाते हैं।

चक्षुर्धावनविधिः।

दन्तमूर्ध्वमधोघृष्ट्वाप्रातःसिञ्चेच्चलोचने।
तोयपूर्णमुखस्तेनदृष्टिराशुप्रसीदति॥

अर्थ—प्रथम दांतोंके ऊर्ध्व और अधोभाग घिसकर फिर मुखमें जल भरकर उस जलसे नेत्रोंको सींचे इससे नेत्रोंमें प्रसन्नता उत्पन्न होती है।

गण्डूषगुणाः।

गण्डूषमपिकुर्वीतशीतेनपयसामुहुः। कफतृष्णामलहरंमुखांतःशुद्धिकारकम्॥ सुखोष्णोदकगंडूष-कफारुचिमलापहः। दंतजाड्यहरश्चापिमुखलाघवकारकः॥ विषमूर्च्छामदार्त्तानांशोषिणांरक्तपित्तिनाम्। कुपिताक्षिमलक्षीणरूक्षाणांसनशस्यते॥

अर्थ--तदनन्तर ठंडे पानीसे कुल्ले करे, इससे कफ, तृषा और मुखका मल दूर होजाता है एवं भीतरसे मुख शुद्ध होजाता है उष्णजलके द्वारा कुल्ले करनेसे कफ, अरुचि, मल और दांतोंकी जडता दूर होती है। विष, मूर्च्छा और मदसे व्याकुल हुए, शोष रोगवाले, रक्तपित्तरोगी, नेत्ररोगी, जिनका मल क्षीण होगया हो और रूखेशरीरवाल मनुष्योंको कदापि गरमपानीके द्वारा कुल्ले नहीं करने चाहि

मुखप्रक्षालनगुणाः ।

मुखप्रक्षालनंशीतपयसारक्तपित्तजित् । मुखस्यपिडिकाशोषनीलिकाव्यंगनाशनम् ॥ कुर्य्याद्वापिकदुष्णेनपयसास्यविशोधनम् । कफवातहरंस्निग्धंमुखशोषविनाशनम् ॥

अर्थ-शीतलजलके द्वारा मुखको धोनेसे रक्तपित्त, मुखकी पिडिका, मुखशोष, निलीका और व्यंग (झांई) दूर होती है । कुछ कुछ गरम जलसे मुखको शुद्ध करे इससे कफ वात दूर होकर स्निग्धता उत्पन्नहोती है और मुखशोष दूर होता है ।

अंजनधारणगुणानाह ।

नेत्रमंजनसंयोगाद्भवत्यमलतारकम् ।
दृष्टिर्निराकुलाभातिनिर्मलश्चन्द्रमायथा ॥

अर्थ-नेत्रोंमें अंजन लगानेसे नेत्र निर्मल तारेयुक्त होजाते हैं अर्थात् आँखों के तारे साफ होजाते हैं, दृष्टि स्थिर और चन्द्रमाके समान निर्मल होजाती है ।

रात्रौजागरितःश्रान्तश्छर्दितोभुक्तवांस्तथा ।
ज्वरातुरःशिरःस्नातःकदाचिन्नतदाचरेत् ॥

अर्थ--रातमें जागाहो, थकाहुआहो जिसको वमन हुई हो, ज्वरसे व्याकुल और जिसने शिरसे स्नान कियाहो, इतने मनुष्योंको कदापि अंजन नहीं लगाना चाहिये ।

कंकतीगुणाः ।

कंकतीकान्तिजननीकण्डूघ्नीमूर्द्धरोगजित् ।
केशप्रसादनीकेश्यारजोजन्तुमलापहा ॥

अर्थ-कंकती--कंघी, कंघा आदिसे बालोंको काढना कान्तिजनक, कण्डूरोगको हरनेवाला, शिरोरोगको दूर करनेवाला तथा रज, जुयें और केशोंके मलको दूर करेहै, केशोंको बढानेवाली और केशोंको हितकारी है ।

उष्णीषधारणगुणाः ।

उष्णीषशिरसाधार्य्यंप्रभातेलघुनित्यशः ।
केश्यंचक्षुष्यमायुष्यंरजःशीतोष्णवारणम् ॥

अर्थ--प्रतिदिन प्रभातके समय बारीक वस्त्रकी हलकी पगडी धारण करे पगडी-बालोंको हितकारी, नेत्रोंको हितकारी तथा धूल, शीत, और गरमीको दूर करती है।

श्मश्रुनखादिच्छेदनगुणाः।

पञ्चरात्रान्नखश्मश्रुकेशरोमाणिकर्त्तयेत्।
पौष्टिकंबल्यमायुष्यंशौचंरूपविराजनम्॥
केशश्मश्रुनखादीनांकृन्तनंसंप्रसादनम्।

अर्थ-पांच पांच दिनके पश्चात् नख, डाढी, केश और रोमोंको कटवातारहै अर्थात् हजामत बनवातारहै। बाल, डाढी, मूँछ और नखादिको कतरनेसे शरीर कांतिवान् होता है, पुष्टि, धन और आयुकी वृद्धि होती है तथा इससे पवित्रता और सुन्दरता उत्पन्न होतीहै।

उत्पाटयेत्तुलोमानिनासायांनकदाचन।
तदुत्पाटनतोदृष्टेर्दौर्बल्यंत्वरयाभवेत्॥

अर्थ-नाकके बालोंको कदापि न उखाडे, क्योंकि नाकके बाल उखाडनेसे दृष्टि कम होजाती है।

प्रभातद्रष्टव्याः।

वैद्यःपुरोहितोमंत्रीदैवज्ञोऽत्रचतुर्थकः।
प्रभातकालेद्रष्टव्यानित्यंस्वाश्रियमिच्छता॥

अर्थ-ऐश्वर्यकी इच्छा करनेवाले मनुष्योंको प्रतिदिन प्रभातके समय वैद्य, पुरोहित, मंत्री और दैवज्ञ (सिद्धान्तवेत्ताज्योतिषी) का दर्शन करना चाहिये।

अग्निसेवनगुणाः।

अग्निर्वातकफस्तम्भशीतवेपथुनाशनः।
आमाभिष्यन्दशमनोरक्तपित्तप्रकोपनः॥

अर्थ--अग्निको सेवन करनेसे वात, कफ, स्तम्भ, शीत और कम्प तथा आम और अभिष्यन्द नाशको प्राप्त होते हैं तथा रक्तपित्त कुपित होते हैं।

धूमहिमगुणाः।

धूमःपित्तानिलौकुर्यादवश्यायःकफानिलौ।

अर्थ-धूमको सेवन करनेसे पित्त और वायुकी वृद्धि होती है और हिमको सेवन करनेसे कफ और वात बढती है।

शिशिरगुणाः।

शिशिरंशीतलंरूक्षंवृष्यंवातप्रकोपनम्।

अर्थ-शिशिर अर्थात् ओ-शीतल, रूखी, धातुवर्द्धक और वातको कुपित करनेवाली है।

कुज्झटिगुणाः।

रूक्षातमोगुणप्रायाकुज्झटिःकफपित्तला॥

अर्थ-कुज्झटिका (कौल, कुहर, कुहासा) रूखा, तमोगुणयुक्त और कफ-पित्तकारक है।

छत्रगुणानाह।

छत्रंवर्षातपरजोवातावश्यायनाशनम्।
वर्ण्यंदृष्टिकरंबल्यंगुप्त्यावरणशंकरम्॥

अर्थ-छत्र-छाता वा छत्री-वर्षा, धूप, धूल, वायु और ओसको दूर करै है तथा वर्ण और दृष्टिको बढानेवाली, बलकारक, मंगलजनक, पिशाचादि बाधाको दूर करनेवाली और मनुष्योंका आवरण है।

वृष्टिगुणानाह।

वृष्टिर्निष्यंदिनीशीतानिद्राश्लेष्मबलप्रदा॥
मलापहारिणीवायुदायिनीवह्निवारिणी॥

अर्थ-वर्षा-कफादिकको टपकानेवाली, शीतल, निद्रा, श्लेष्म और बलको बढानेवाली है, मलनाशक, वायुवर्द्धक और मन्दाग्निकारक है।

आतपगुणानाह।

आतपःकटुकोरूक्षःस्वेदमूर्च्छातृषावहः।
दाहवैवर्ण्यजननोनेत्ररोगप्रकोपनः॥

अर्थ-सूर्यकी धूप-चरपरी, रूखी तथा पसीना, मूर्छा, दाह, विवर्णता और नेत्ररोगोंको उत्पन्न करे है।

छायागुणानाह।

छायादाहश्रमस्वेदहरामधुरशीतला॥

अर्थ-छाया-दाह, श्रम और पसीनेको दूर करनेवाली है तथा मधुर और शीतल है।

अन्यच्च ।

छायातमोऽस्रपित्तातनिहन्यात्स्निग्धशीतला ।
विशेषतोवटच्छायाबलवर्णप्रसादिनी ॥

अर्थ-छाया-तम, रुधिरविकार और पित्तकी पीडाको शान्त करे है स्निग्ध और शीतल है विशेषकरके बडकी छाया बलकारक तथा वर्णको प्रसन्न करनेवाली है

यष्टिधारणगुणानाह ।

स्खलतःसंप्रतिष्ठानंशत्रूणाञ्चविरोधनम् ।
अवष्टम्भनमायुष्यंभयघ्नंदण्डधारणम् ॥

अर्थ-लाठीका धारण करना-स्खलितपद प्रतिष्ठापक और शत्रुविरोधक है तथा बलवर्द्धक और भयनाशक है।

अन्यच्च ।

यष्टिधारणमुत्साहस्थैर्यविष्टम्भवीर्य्यकृत ॥
रक्षःसर्पादिभयजिद्विशेषात्स्थाविरेमतम् ॥

अर्थ—लाठीका धारण-उत्साह, स्थिरता, विष्टम्भ और वीर्यको उत्पन्न करे है और राक्षस तथा सर्पादिकके भयको दूर करेहै, एवं बुढापेमें हितकारीहै।

अथ व्यायामगुणाः ।

व्यायामोहिसदापथ्योबलिनांस्निग्धभोजिनाम् । सचशीते वसन्तेचतेषांपथ्यतमोमतः॥ सर्वेष्वृतुषुसर्वैर्हिमत्यैरात्महितार्थिभिः । शक्त्यर्द्धेनचकर्त्तव्योव्यायामोहंत्यतोऽन्यथा ॥ कुक्षौललाटेग्रीवायांयदाघर्मःप्रवर्त्तते । शक्त्यर्द्धंतंविजानीयाद्यावदुच्छ्वासमेवच ॥ लाघवंकर्मसामर्थ्यंस्थैर्यंक्लेशसहिष्णुता । दोषक्षयोग्निवृद्धिश्चव्यायामादुपजायते ॥ व्यायामंकुर्वतोनित्यंविरुद्धमपिभोजनम् । विदग्धमविदग्धंवानिर्दोषंपरिपच्यते ॥ नचव्यायामसदृशमन्यत्स्थौल्यापकर्षणम् । नचव्यायामिनंमर्त्यमर्दयन्त्यरयोबलात् ॥ नचैनंसहसाक्रम्यजरासमधिगच्छति । व्यायामक्षुण्णगात्रस्यप-

द्यामुद्वर्तितस्यच ॥ व्याधयोनोपसर्पन्तिवैनतेयमिवोरगाः। वयोबलंशरीरंचदेशंकालमथापिच ॥ समीक्ष्यकुर्याद्व्यायामंयुक्त्याशक्त्याचबुद्धिमान् । रक्तपित्तीक्षयीशोषीकासीश्वासीक्षतातुरः ॥ भुक्तवान्स्त्रीषुचक्षीणोव्यायामंपरिवर्जयेत् । वातपित्तामयीबालोवृद्धोजीर्णीचतंत्यजेत् ॥ अतिव्यायामतःकासोरक्तपित्तप्रतानकः । श्रमःक्लमःक्षयस्तृष्णाज्वरश्छर्दिश्चजायते ॥

अर्थ--स्निग्धपदार्थ भक्षण करनेवाले और बलवान् मनुष्योंके लिये व्यायाम (कसरत) करना शीत और वसन्तऋतुमें ही हितकारी है परन्तु अपना हित चाहनेवाले मनुष्य सब ऋतुओंमें आधी शक्तिके अनुसार कसरत करें इससे अधिक कसरतका करना मनुष्योंको नष्ट करदेता है। आधी शक्ति उसको कहते हैं जिसमें कोख, माथा और गर्दनसे पसीना निकलने लगे और श्वास शीघ्र आने जाने लगे। कसरत करनेसे शरीरमें लघुता, कार्य्यमें सामर्थ्य, स्थिरता और क्लेशसहिष्णुता (क्लेशका सहलेना) उत्पन्न होती है। दोष (वातपित्तादि) क्षय होते हैं, अग्नि बढती है, नित्य कसरत करनेवाले मनुष्य विरुद्ध वस्तु, विदग्धाजीर्णकारक पदार्थ, अथवा उत्तम पदार्थ, जो कुछभी खाले वह सब दोषरहित होकर पक जाती है, स्थूलताका नाश करनेकेलिये कसरतके समान दूसरी कोई वस्तु नहीं है। शत्रुलोग कसरत करनेवाले मनुष्यपर एकाएकी चढाई नहीं करसक्ते तथा उस मनुष्यको अचानक बुढापा नहीं आसक्ता। जिस प्रकार सर्पोका समूह गरुडपर चढाई नहीं करसक्ता उसी प्रकार रोगोंका समूहभी उस पुरुषपर जिसने कसरत करके अपना शरीर सुखाया है आक्रमण नहीं करसक्ता, बुद्धिमान् मनुष्योंको चाहिये कि, आयु,बल,शरीर,देश,काल इन युक्ति और शक्तियोंका भलीभांतिसे विचारकर कसरत करें रक्तपित्त, क्षय, शोष, खाँसी,श्वास और व्रणरोगी और भुक्तवान् तथा मैथुन करनेसे क्षीण होगये अंग जिनके यह सब कसरत न करें। वातपित्तरोगी, बालक (सोलह वर्षपर्यन्त) बूढा (सत्तर वर्षसे पीछे), अजीर्णरोगी इन सब मनुष्योंको कसरत नहीं करनी चाहिये। अत्यंत कसरत करनेसे रक्तपित्त, खाँसी, श्रम, थकावट, क्षय, प्यास, ज्वर वमनादिरोग उत्पन्न होते हैं।

अपिच ।

सामर्थ्यंसकलक्रियासुलघुतामंगेषुदीप्तिंपरामग्नेःपाटवमिन्द्रियेषुलघुतांछेदंपरंमेदसः।उत्साहंमनसःशरीरदृढतांशान्तिबलाव्यापदांव्यायामःशिशिरेवसन्तसमयेकुर्याद्धिमेसेवनम्॥वातामयःपित्तरुजान्वितश्चबालोतिवृद्धोतिकृशोतिजीर्णः । मन्दानलःस्निग्धरसान्नवर्ज्याव्यायामकालेषु विवर्जनीयाः॥ स्थाल्यां यथानावरणाननायांनघट्टितायांनचसाधुपाकः। अनाप्तनिद्रस्य तथानरेन्द्रव्यायामहीनस्यनचान्नपाकः॥

अर्थ--व्यायाम (कसरत) का करना सब कार्य्योंमें सामर्थ्य, शरीरमें हलकापन, देहमें प्रकाश, अग्निको दीपन, इन्द्रियोंमें लघुता, मेदाका नाश, मनमें उत्साह, शरीरमें दृढता, दुःखोंकी शान्ति और बलको करे है। व्यायाम-शिशिर और वसन्तऋतुमें करनी चाहिये। वात और पित्तरोगी, बालक, अत्यंत वृद्ध, अत्यंत कृश और अधिक जीर्ण हुई मन्दाग्निवाला और स्निग्ध भोजन न करनेवाला, इन सबको व्यायाम नहीं करनी चाहिये। जिस प्रकार बटलोईके मुखपर पात्र नहीं ढकनेसे तथा उसको करछीसे नहीं चलानेसे अन्न अच्छेप्रकारसे नहीं पकता है उसी प्रकार हे राजन्! निद्रा और व्यायाम रहितका अन्न अच्छे प्रकार नहीं पकता है।

अंगमर्द्दनगुणानाह ।

संवाहनंश्रमहरंवृष्यंनिद्रासुखप्रदम् ।
मांसासृक्त्वक्प्रसन्नत्वंकुर्याद्वातकफापहम् ॥

अर्थ-शरीरको मर्द्दन करना-श्रमनाशक, धातुओंको पुष्ट करने वाला, निद्रा और सुखको देनेवाला, मांस, रुधिर और त्वचाको निर्मल करनेवाला तथा वातकफनाशक है।

शरीरघर्षणगुणमाह ।

उद्धर्षणंदृष्टिकरंकण्डूकोष्ठविनाशनम् ।
तेजनंत्वग्गतस्याग्नेःशिरामुखविरेचनम् ॥

अर्थ-शरीरको घिसनेसे दृष्टि बढती है तथा कण्डू और कोष्ठरोग दूर होता है, त्वचामें स्थित जो अग्नि उसके तेजकी वृद्धि होती है और शिराओंमें सुखकी वृद्धि होती है।

पथभ्रमणगुणमाह ।

अध्वा मेदःकफस्थौल्यसौकुमार्यविनाशनः

अर्थ—पथभ्रमण करनेसे मेद, कफ, स्थूलता और सुकुमारता नष्ट होती है

अतिभ्रमणगुणाः ।

यत्तुचंक्रमणंनातिदेहपीडाकरंभवेत् ।
तदायुर्बलमेधाग्निप्रदमिन्द्रियबोधनम् ॥

अर्थ-जिस भ्रमण करनेसे शरीरमें क्लान्ति उत्पन्न न होवै उस भ्रमणसे आयु, बल, मेधा और अग्निकी वृद्धि होती है और इन्द्रियोंमें प्रफुल्लता उत्पन्न होती है।

पादुकाधारणगुणाः ।

पादत्रधारणंवृष्यमौजस्यंचक्षुषोर्हितम् ।
सुखप्रचारमायुष्यंबल्यंपादरुजापहम् ॥

अर्थ—पादुकाधारण अर्थात् जूतेके पहिरनेसे वीर्य्य और ओजकी वृद्धि होती है, नेत्रोंको हितकारी, गमनके समय सुखकारी, आयु और बलवर्द्धक तथा पावोंकी पीडाको दूर करे है।

अधारणेदोषायथा

पादाभ्यामनुपानद्भ्यांनृणांचंक्रमणंसदा ।
अनारोग्यमनायुष्यमिन्द्रियघ्नमदृष्टिकृत् ॥

अर्थ-सर्वदा विनाजूतेके भ्रमणसे अर्थात् नंगे पाँवों फिरनेसे आरोग्यता, आयु, इन्द्रिय और दृष्टिशक्ति नाश होती है।

हस्त्यादिगमनगुणाः ।

हस्त्यश्वरथदोलाद्यैर्भ्रमणंवातकोपनम् ।
स्थितीकरणमंगानांबल्यंवह्निविवर्द्धनम् ॥

अर्थ-हस्ती, अश्व, रथ और डोलाआदिमें चढकर भ्रमण करनेसे वात कुपित होती है, सम्पूर्ण अंग स्थिर होते हैं, बल बढता है और जठराग्नि बढती है।

विश्रामगुणाः

विश्रामोबलकृत्स्वेदश्रमनुत्सौस्थ्यदःशुभः ॥

अर्थ- विश्राम अर्थात् आराम करना--बलकारक तथा स्वेद, श्रम इनको दूर करनेवाला और सुस्थता तथा मंगलजनक है ।

पादप्रक्षालनगुणाः ।

पादप्रक्षालनंप्रादमलरोगश्रमापहम् ।
दृष्टिप्रसादनंवृष्यंरौक्ष्यप्रीतिवर्द्धनम् ॥

अर्थ-पाँवोंको धोनेसे पैरोंका मैल, पैरोंका रोग और श्रम दूर होता है, दृष्टिशक्तिको प्रसन्न करे हैं, वीर्य्यवर्द्धक, रूक्षतानाशक, और प्रतिवर्द्धक है ।

प्रागवातगुणानाह ।

प्राग्वातोमधुरःक्षारोवह्निमांद्यकरोगुरुः । वैरस्यगौरवोष्णाशाग्निकरोप्स्वौषधीषुच ॥ भग्नेऽपीष्टःक्षताद्येषुस्रावश्वयथुरोगकृत् । सन्निपातज्वरश्वासत्वग्दोषार्शोविषक्रिमीन् कोपयेदामवातश्चधनसंघातकारकः ॥

अर्थ--पूर्वदिशाकी पवन अर्थात् पुरवाई हवा-मधुर, खारी, मदाग्निकारक, भारी, औषधि और जलमें विरसता, गुरुता और उष्णता करनेवाली भग्न और क्षतादि रोगोंमें हितकारी, नासास्राव, सूजन, सन्निपातज्वर, श्वास, त्वचाके विकार, बवासीर, विष, कृमि और आमवातादि रोगोंको बढाने वाली और मेघको संचय करे है ।

तथाच ।

शीतोऽतिमाधुर्य्यगुणःप्रयुक्तोवातप्रकोपीबलकृद्विशेषात् ।
वाताधिकानांव्रणशोफिनांचप्राचीप्रवृत्तःपवनोनशस्तः ॥

अर्थ-पूर्वदिशाकी पवन-शीतल, अत्यंत मधुरतायुक्त, वातको कुपित करनेवाली, बलकारक यह वायु जिनके शरीरमें वात अधिकतर होवे तथा व्रण शोफरोगवालोंको अहितकारी है ।

आग्नेयपवनगुणाः ।

किञ्चित्सतिक्तोमधुरान्वतःस्यात्कफःसमीरोद्भवरोगकारी ।
सुशीतलःशोफवतांव्रणानांशस्तोनचाग्नेयसमीरणश्च ।

अर्थ-अग्निकोणकी पवन-कुछ २ कडवी, मधुररसान्वित, कफ और वातसे उत्पन्न हुये रोगोंको करनेवाली. शीतल और सूजन युक्त व्रणों अहितकारी है ।

दक्षिणमारुतगुणाः ।

दाक्षिणोमारुतोबल्यश्चक्षुष्यःसस्यघातकः। मधुरश्चविदाहीचकषायान्तरसोलघुः ॥ रक्तपित्तप्रशमनोनचमारुतकोपनः। गण्डूपदादिकीटानांजनकः प्राणकारकः ॥

अर्थ-दक्षिणदिशाकी पवन-बलकारक, नेत्रोंको हितकारी, खेतीका नाश करनेवाली, मधुर, दाहजनक, अन्न और पानीमें कषेले रसको उत्पन्न करनेवाली, हलकी, रक्तपित्तनाशक, परंतु वातको कुपित करनेवाली नहीं है, गण्डूपदादि कीडोंको उत्पन्न करनेवाली और आयुवर्द्धक है ।

ग्रन्थान्तरे ।

तिक्तःकषायोमधुरोतिमन्दःसुगंधसंशीतगुणैः प्रकृष्टः ।
वदन्तिसंज्ञांमलयानिलेतिप्रकृष्टरामाजनचित्तहारी ॥
मनोभवस्यप्रकरोमरुत्स्यात्कफोद्भवःसम्भवतिप्रचारः ।
नचातिशीतोनतथोष्णकोवाशुभश्चयाम्यांप्रभवःसमीरः ॥

अर्थ-दक्षिण दिशाकी पवन--कडवी, कषेली, मधु, अत्यन्त मंद, सुगंध, शीतल, मलयानिलसंज्ञक अर्थात् मलयाचलकी पवन स्त्रियोंके चित्तको हरनेवाली, कामदेवको दीपन करनेवाली, कफसे उत्पन्नहुये रोगोंको करनेवाली, न अत्यन्त शीतल, न अत्यन्त उष्ण और शुभहै ।

नैर्ऋत्यमारुतगुणाः ।

रूक्षोष्णवातप्रशमःसमीरःकट्वम्लपित्तासृजिदोषकारी ॥
प्रशोषणोदेहबलस्यवायुःकफान्वितोनैर्ऋतिकःसमीरः ॥

अर्थ-नैर्ऋत्यकोणकी पवन--रूखी, गरम, वातको शांत करनेवाली, चरपरी, खट्टी, पित्त और रुधिरको कुपित करनेवाली, मनुष्योंके देहके बलको शोषणकर्त्ता और कफसंयुक्त है ।

पश्चिमपवनगुणाः ।

पश्चिमोऽग्निवपुर्वर्णबलारोग्यविवर्द्धनः । कषायःशोषणःस्वच्छोरोचनोविशदोलघुः ॥ अपांलघुत्ववैशद्यशैत्यवैम-

ल्यकारकः । सर्वद्रव्येष्वभिव्यक्तप्रभावरसवीर्य्यकृत् ॥ व्रणसंरोपणस्त्वच्योदाहशोथतृषापहः ॥

अर्थ-पश्चिमदिशाकी पवन-अग्नि, शरीर, वर्ण, बल और आरोग्यताको बढानेवाली है, कषेली, शोषण, स्वरको सुधारनेवाली, रुचिकारक, विशद, हलकी, निर्मल जलमें लघुता, श्वेतवर्णता, शीतलता और निर्मलताकारक है, सर्वद्रव्योंमें व्यक्तप्रभाव रस और वीर्य्यजनक है व्रणको सुखानेवाली, त्वचाको सुन्दर करनेवाली तथा दाह, सूजन और तृषाको हरनेवाली है।

वायव्यपवनगुणाः ।

वायव्यजातोमरुतःप्रशस्तःकषायसंशुष्कगुणप्रसन्नः ।
करोतिवातस्यवशंनराणांशस्तोनानिंद्योव्रणशोफिनाश्च ॥

अर्थ-वायव्यकोणकी पवन-श्रेष्ठहै, कषेली और शुष्कगुणवाली है, मनुष्योंको पवनके वश करतीहै, व्रणशोफवालोंको हितकारी है, निंदित नहीं है।

उत्तरवायुगुणाः ।

औत्तरोमारुतःस्निग्धोमृदुर्मधुरएवच।कषायान्नरसःशीतः सर्वदोषप्रकोपनः॥क्षीणक्षतविषार्त्तानांहितोदाहतृषापहः ।

अर्थ-उत्तर दिशाकी पवन-स्निग्ध, मृदु, मधुर, अन्न और जलमें कषायरसको उत्पन्न करनेवाली, शीतल, सर्वदोषोंको कुपित करनेवाली तथा क्षीण, क्षत और विषसे पीडित मनुष्योंको हितकारी, दाह और तृषाको हरनेवाली है।

मतान्तरम् ।

स्वादुःकषायश्चकफप्रकोपीवायुःकुबेरस्यदिशःप्रवृत्तः ।
करोतिमेघागमनंजलस्यशीतोनचोष्णोनचनिन्द्यएषः ॥

अर्थ-उत्तर दिशाकी पवन-स्वादिष्ठ, कषेली, कफको कुपित करनेवाली, सजलमेघोंको लानेवाली, शीतल, न निन्द्य और न गरम है।

युगुणाः ।

शीतोतिगौल्यःकफवातकोपंकरोतिचशानदिशःप्रवृत्तः ।
शस्तश्चनासौव्रणशोफकासक्षयेतथाश्वासविकारिणाश्च ॥

अर्थ-ईशान दिशाकी पवन-शीतल, अत्यन्तगौल्य, कफवातको कुपित करनेवाली तथा व्रण, सूजन, खाँसी, क्षय और श्वासरोगवालोंको हितकारक नहीं है ।

नीहारादिसंयुक्तवायुगुणाः ।

शीताधिकःसनीहारःसविद्युत्स्तनयित्नुवान् ॥

अर्थ-तुषार अथवा वर्फ-विजली और मेघसंयुक्त पवन-अत्यन्त शीतल है ।

विष्वग्वायुगुणाः ।

विष्वग्वायुरनायुष्यःप्राणिनांनैकदोषकृत् ।
सर्वर्त्तुलिंगकोहन्ताहृद्योत्पातपुरःसरः ॥

अर्थ-विष्वग्वायु अर्थात् घूमता हुआ बवूला प्राणियोंकी आयुनाशक, त्रिदोषकोपक, सबऋतुओंका लक्षणकारक, प्राणनाशक और हृदयमें उद्वेग उत्पन्न करे है ।

व्यजनानिलगुणाः ।

मूर्च्छास्वेदतृषादाहश्रमघ्नोव्यजनानिलः ॥

अर्थ-पंखेकी पवन-मूर्च्छा, पसीना, तृषा, दाह और श्रमनाशक है ।

तालपत्रवायुगुणाः ।

तालपत्रकरम्भायादलस्यव्यजनोहिमः । मधुरोऽतिश्रमघ्नः स्यादार्द्रत्वात्कफकोपनः ॥ निद्राकरःप्रीतिकरःशोकरोगविकारहा । दाहपित्तश्रमग्लानिनाशनोभ्रमशान्तिकृत् ॥

अर्थ-ताडके पत्ते और केलके पत्तोंके पंखेकी पवन-शीतल, मधुर, अत्यन्त श्रमनाशक, आर्द्रपनसे कफको कुपित करनेवाली, निद्राजनक, प्रीतिकारक, रोगशोकादिको दूर करनेवाली तथा दाह, पित्त, परिश्रम, ग्लानि और भ्रमको दूर करनेवाली है ।

अन्यच्च ।

तालवृन्तभवोवातस्त्रिदोषशमनोलघुः ॥

अर्थ-ताडके पंखेकी पवन-त्रिदोषनाशक और हलकी है ।

वंशव्यजनवायुगुणाः ।

वंशव्यजनजोवातोरूक्षोष्णोवातपित्तदः ॥

अर्थ-बांसके पखेकी पवन-रूखी, गरम और वातपित्तकारक है ।

अन्यच्च ।

वैणवंव्यजनंतन्द्रानिद्राकरणमेवच ।
रूक्षोऽतिकषायरसोनचवातप्रकोपनः ॥

अर्थ-बाँसके पंखेकी पवन--तन्द्रा और निद्राको उत्पन्न करे है, रूखी अत्यन्त कषेली और वातको कुपितकरनेवाली नहीं है ।

उशीरमूलादिव्यजनगुणाः ।

उशीरमूलरचितव्यजनंशिखिपिच्छकः ।
व्यजनेनसुगंधःस्यान्मन्दशीतगुणात्मकः ॥
ग्लानिमूर्च्छाभ्रमशोषविसर्पविषदर्पहा ।

अर्थ-खस और मोरके परोंसे बनाये हुये पंखेकी पवन- सुगंधिकारक, मन्द, शीतल तथा ग्लानि, मूर्च्छा, भ्रम, शोष, विसर्प, विष इनको दूर करे है ।

वालव्यजनवायुगुणाः ।

वालव्यजनमौजस्यंमक्षिकादीन्व्यपोहति ॥

अर्थ--चमरचमरी आदिकी वायु ओजवर्द्धक और मक्खीआदिको दूर करे है ।

मयूरपक्षादिनिर्मितव्यजनवायुगुणाः ।

मायूरावस्त्रजावैत्रावातादोषत्रयापहाः ॥

अर्थ--मोरके पक्ष, वस्त्र और वेंतके पंखेकी पवन--त्रिदोषनाशक है।

ऋतुविशेषेवायु गुणाः ।

शिशिरपूर्वकृद्वायुराग्नेयोहेमन्तेमरुत । वसन्तेदक्षिणोवायुर्ग्रीष्मेनैर्ऋत्यकस्तथा ॥ वर्षासुपश्चिमोवायुर्वायव्यःशरदिस्मृतः । शिशिरेचहेमन्तेचकथितश्चोत्तरोऽनिलः ॥ अपराह्णेवर्षांवदन्तिनिपुणास्तस्मिन्निशीथेशरत्प्रोक्तःशैशिरिकस्ततोहिमऋतुःसूर्योदयादग्रतः । मध्याह्नेचतथावदन्तिनिपुणाग्रीष्मोऋतुःस्यात्ततो [illegible]वासन्तःकथितोऋतुस्तुमुनिभिःपूर्वापराह्णेसदा ॥

अर्थ—शिशिरऋतुमें पूर्वकी पवन उत्तम है, वसंतऋतुमें दक्षिणकी पवन, ग्रीष्मऋतुमें नैर्ऋत्यकोणकी पवन, वर्षाऋतुमें पश्चिमकी पवन और शरद ऋतुमें वायव्यकोणकी पवन उत्तम है। शिशिर और वसंतऋतुमें उत्तरकी पवनभी श्रेष्ठ है। दिनके तीसरे पहरको वर्षाऋतु, अर्धरात्रि शरद्ऋतु, आधीरातके पश्चात्को शिशिरऋतु, सूर्योदयके समयको हेमंतऋतु, दुपहरके समयको ग्रीष्मऋतु और दिनके पूर्वभागको वसंतऋतु कहते हैं।

अभ्यंगगुणाः ।

वातव्याधिंहरतिकुरुतेसर्वगात्रेषुपुष्टिंदृष्टिमन्दामपिवितनुतेवैनतेयोपमांच । निद्रांसौख्यंजनयतिजरांहतिशक्तिंविधत्तेधत्तेकांतिंकनकसदृशींनित्यमभ्यंगयोगात् ॥

अर्थ—सदैव शरीरमें तेलको मलनेसे वातरोग दूर होता है, सम्पूर्ण अंग पुष्ट होता है, गरुडके समान दृष्टि होजाती है, निद्रा और सुख उत्पन्न होता है, बुढापा दूर होता है, शरीरमें शक्ति उत्पन्न होती है और सुवर्णके समान वर्ण होजाता है।

पादाभ्यंगगुणाः ।

पादाभ्यंगोऽथनिद्राकृच्चक्षुष्यःपादरोगहा । चक्षुषप्रातरध्वद्वशिरपादगतेनृणाम्॥अतश्चक्षुःप्रसादार्थीपादाभ्यंगसमाचरेत् ।

अर्थ-पांवोंमें तेलको मलना-निद्रा जनक नेत्रोंको हितकारी, पांवोंके रोगोंको हरनेवाला है। नेत्रोंके दोनों छिद्रोंमें जो दो शिरा हैं वह दोनों शिरा पावोंमें लगी हुई हैं इसकारण पावोंम तेलको मलना नेत्रोंको हितकारी है अतएव नेत्रोंका हित चाहनेवाले मनुष्य सदैव पावोंमें तेलका मर्दन करें।

अभ्यंगवर्जितजनाः ।

वर्ज्योऽभ्यंगःकफग्रस्तस्नानसंशुद्धाजीर्णभिः ॥

अर्थ—कफग्रस्त, स्नानादिसे शुद्ध हुवा और अजीर्णरोगवाले मनुष्यको तेलादिका मर्दन करना निषेध है।

अवगाहनयुक्ततैलगुणाः ।

स्नेहोऽवगाहनेयुक्तःशरीरेबलमाहरेत् ॥

अर्थ-शरीरमें तेलको मलकर जलमें डूबकर स्नानकरनेसे शरीरमें बल उत्पन्न होता है।

तैलमर्दन विधिः ।

शिखामुखैरोमकूपैर्धमनीभिश्चतर्पयेत् ॥

अर्थ-शरीरमें इस प्रकारसे तेलको मले कि, जिससे बालोंकी जडमें रोमकूपोंमें और शिराओंमें तेल प्रवेश होजाय ।

शिरसितैलमर्दनगुणाः ।

नित्यंस्नेहार्द्रशिरसःशिरःशूलंनजायते।नखालित्यंनपालित्यंनकेशाःप्रपतन्तिच॥दृढमूलाश्चकृष्णाश्चभवन्तिचघनायताः । इन्द्रियाणिप्रसीदन्तिसुदृग्भवतिलोचनम् ॥

अर्थ-जो मनुष्य रोजरोज तेलसे शिरको मलते हैं, उनके शिरमें शूलरोग कदापि उत्पन्न नहीं होता है, तथा केशोंकी अल्पता पकता और केश पतित नहीं होते हैं और केश दृढमूलयुक्त, कृष्ण और अत्यन्त सघन होजाते हैं इन्द्रियोंमें प्रसन्नता और नेत्रोंमें सुदृश्यता उत्पन्न होती है ।

कर्णतैलपूरणगुणाः ।

कर्णप्रपूरणान्नित्यंनमन्यानहनुग्रहाः ।
नोच्चैःश्रुतिर्नबाधिर्य्यंनकर्णेवातजारुजः ॥

अर्थ-जो मनुष्य प्रतिदिन कानोंमें तेल डालते हैं उनके मन्यास्तम्भ, हनुग्रह, ऊंचा सुनना, बधिरता और वातसे उत्पन्नहुए कर्णरोग नहीं होते हैं ।

उद्वर्त्तनगुणाः ।

उद्वर्त्तनंवातहरंकफमेदोनिलापहम् । स्थिरीकरणमंगानांत्वक्प्रसादकरंपरम् ॥ उद्वर्त्तनंहरिद्राद्यैःकण्डूवैवर्ण्यरौक्ष्यजित् । तिलेनोद्वर्त्तनंकण्डूरौक्ष्यत्वग्दोषनाशनम् ॥

अर्थ-तेल लगानेके पश्चात् उबटन करना, वातरोग, कफ, मेद और वायुको दूर करे है, शरीरमें स्थिरता और त्वचामें निर्मलता करे है, हरिद्रादिकके द्वारा उबटन करनेसे-कण्डू, विवर्णता और रूक्षता नाश होती और तिलोंके द्वारा उबटन करनेसे-खुजली, रूखापन और त्वचाके विकार नष्ट होते हैं ।

अन्यच्च ।

स्यादुद्वर्त्तनमंगकांतिजनकंमेदःकफालस्यजित् ।

अर्थ-उबटन-शरीरमें कान्तिजनक तथा मेद, कफ और आलस्यको दूर करे है।

मुखप्रलेपगुणाः।

मुखलेपाद्दृढंचक्षुःपीनोगंडस्तथाननम्।
कान्तमव्यंगपिडकंभवेत्कमलसन्निभम्॥

अर्थ-मुखपर लेप करनेसें नेत्र पुष्ट होते हैं, कपोल दृढ होतेहैं और मुख कान्तिसंयुक्त झाँई और मुहासे रहित तथा कमलके समान निर्मल होजाताहै।

अथ स्नानगुणमाह।

स्नानंपवित्रमायुष्यंश्रमस्वस्वेदमलापहम्।
शरीरबलसन्धानंकेश्यमोजस्करंपरम्॥

अर्थ-स्नान करनेसे शरीरमें पवित्रता उत्पन्न होतीहै, आयुकी वृद्धि होतीहै तथा परिश्रम, पसीना और मैल दूर होता है, बल बढताहै, केशोंकी और तेजकी वृद्धि होती है।

उष्णाम्बुनास्नानगुणमाह।

उष्णाम्बुनाधःकायस्यपरिषेकःसुखावहः। तेनैवतूत्तमाङ्गस्यबलघ्नंकेशचक्षुषोः॥विनिहन्तिशिरःस्नानंतृष्णातालुवास्यशोषणम्।मलोष्णपिडिकाकण्डूशिरोरोगांश्चपित्तजान्॥

अर्थ-उष्ण जलसे आधे शरीरको धोनेसे सुखकी वृद्धि होती है और गरम पानीके द्वारा शिरसे स्नान करनेसे केशोंका और नेत्रोंका बल कम होताहै तथा तृष्णा, तालुशोष, मुखशोष, कुपितमल (वातपित्त और कफका कुपित होना) शरीरकी गरमी, पिडका, कण्डू, मस्तकरोग और पित्तसे उत्पन्न हुए रोग दूर होतेहैं।

तथाच।

नैर्मल्यंवपुषःकरोतिकुरुतेनिष्पापमूर्त्तिपरां पुण्यंवर्द्धयति त्वचंरचयतेवर्णप्रभांकोमलाम्। कंडूंहन्तिरतिश्रमंविघटयत्यंगेषुसौख्यप्रदं शुक्रौजोबलवर्द्धनंरतिकरंस्नानंसुखोष्णांभसा॥

अर्थ-सुखसहित उष्णजलसे स्नान करनेसे-शरीर निर्मल होता है, पाप

दूर होताहै, पुण्यकी वृद्धि होती है, त्वचाका रंग उत्तम होताहै, वर्ण, कान्ति और कोमलता उत्पन्न होतीहै, खुजली दूर होतीहै, रतिका श्रमनाश होताहै, अंगोंमें सुख उत्पन्न होताहै, वीर्य, ओज और बलकी वृद्धि होतीहै और शक्ति उत्पन्न होती हैं ।

द्रव्यविशेषेणस्नानगुणमाह ।

मधुकामलकैःस्नानंपित्तघ्नंतिमिरापहम् ।
स्नानंवचाघनैरिष्टंश्लेष्मघ्नंतिमिरापहम् ॥
स्नानंकृष्णतिलैश्चापिचक्षुष्यमनिलापहम् ।

अर्थ-मुलैठी और आमलेको मलकर स्नान करनेसे पित्त और तिमिररोग दूर होताहै, वचा और नागरमोथेको मलकर स्नान करनेसे कफ और तिमिर-रोग नाश होताहै, काले तिलोंको मलके स्नान करनेसे नेत्रोंकी दृष्टि बढती है और वायु नष्ट होताह ।

स्नानस्यविशेषगुणमाह ।

अस्नातस्यशरीरस्यउष्मासर्वांगगोचरम् ।
स्नानेनैकत्वमायातितेनदीप्यतिपावकः ॥

अर्थ-नहीं स्नानकरनेसे-अग्न्याशयमें स्थित अग्नि सर्वांगमें फैल जातीहै, वही अग्नि स्नानकद्वारा एकत्रित होकर मनुष्योंकी अग्नि दीपन होतीहै ।

स्नाननिषिद्धजनाः ।

स्नानमर्दितनेत्रास्यकर्णरोगातिसारिषु ।
आध्मानपीनसाजीर्णभुक्तवत्सुचगर्हितम् ॥

अर्थ-अर्दित, नेत्र, मुख और कर्णरोगमें, अतीसार, आध्मान, पीनस, अजीर्णादि रोगोंमें तथा भोजनके अंतमें स्नान करना निषेध है ।

शरीरमार्जनगुणाः ।

दौर्गन्ध्यंगौरवंकण्डूंकच्छूंमलमरोचकम् ।
स्वेदबीभत्सतांहन्तिशरीरपरिमार्ज्जनम् ।

अर्थ-वस्त्रादि से शरीरको मार्जन करनेसे-दुर्गंधता, भारीपन, खुजली कच्छू, मल, अरुचि, पसीना और घृणा दूर होतीहै ।

वस्त्रधारणगुणाः ।

कौशेयौर्णिकवस्त्रंचरक्तवस्त्रंतथैवच । वातश्लेष्महरंतत्तुशी-

तकालेविधारयेत्॥मेध्यंसुशीतंपित्तघ्नंकषायंवस्त्रमुच्यते । तद्धारयेदुष्णकालेतत्रापिलघुशस्यते ॥ शुक्लंतुशुभदंवस्त्रं शीतातपनिवारणम्।नचोष्णंनचवाशीतंतत्तुवर्षासुधारयेत्। यशस्यंकाम्यमायुष्यं श्रीमदानन्दवर्द्धनम् ।त्वच्यंवशीकरं रुच्यंनवनिर्मलमम्बरम् ॥ कदापिनजनैःसद्भिर्धार्य्यंमलिनमम्बरम् । तत्तुकण्डूकृमिकरंग्लान्यलक्ष्मीकरंपरम् ॥

अर्थ रेशमी, ऊनी, और लाल रंगके वस्त्र--वात और कफको दूर करे हैं इस कारण इनको शीतकालमें पहिरना चाहिये। लाल, पीले आदि मिश्रित रंगके बारीक वस्त्र पवित्र, शीतल और पित्तको दूर करे हैं इनको ग्रीष्मकालमें पहिरे इनमें जहांतक होसके बहुत महीने पहिरे। सफेद वस्त्र--मंगलकारक, शीत और धूपको दूर करनेवालेहैं । न यह गरमहैं और न यह शीतलहैं इस कारण वर्षाऋतुमें धारण करना चाहिये। नवीन और निर्मल वस्त्र-यशको देनेवाले, कामदेवको बढानेवाले, आयुको बढानेवाले, लक्ष्मीको देनेवाले, आनन्दवर्द्धक, त्वचाको उत्तम करनेवाले वशीकरण और रुचिकारक हैं। श्रेष्ठ पुरुष कभीभी मलिन अर्थात् मैले वस्त्रोंको नहीं पहिने, क्योंकि इनको पहिननेसे-खुजली, कृमिरोग, ग्लानि और अलक्ष्मी अर्थात् दरिद्रता आती है ।

रत्नाभरणधारणगुणाः ।

धन्यंमाङ्गल्यमायुष्यंश्रीमद्व्यसनसूदनम् ।
हर्षणंकाम्यमौजस्यंरत्नाभरणधारणम् ॥

अर्थ-रत्नाभरणका धारण- धन, मंगल, आयु और लक्ष्मीवर्द्धक है। व्यसननाशक तथा हर्ष, काम और ओजवर्द्धक है।

गुर्वादेरर्चनगुणाः ।

स्वर्ग्यंयशस्यमायुष्यमलक्ष्मीकविनाशनम् ॥
धनधान्यकरंनित्यंगुरुदेवद्विजार्चनम् ॥

अर्थ--गुरु और देवादिका पूजन-स्वर्ग, यश और आयु को देनेवाला है । अलक्ष्मीनाशक तथा धन और धान्यवर्द्धक है ।

दर्पणगुणाः ।

दर्पणंश्रीमदायुष्यंपापोपशमनंपरम् ।

अर्थ--दर्पणमें मुख देखनेसे-लक्ष्मी और आयुकी वृद्धि होती है तथा पापका नाश होता है।

लेपनगुणाः।

प्रीत्योजोवर्द्धनंवृष्यंस्वेददौर्गंध्यनाशनम्।
तन्द्रातापोपशमनंश्रमघ्नमनुलेपनम् ॥

अर्थ--शरीरमें सुगंधादि वस्तुओंका लेप करनेसे--हर्ष, ओज और वीर्य्यकी वृद्धि होती है तथा पसीना, दुर्गंध, तन्द्रा, ताप और श्रम दूर होता है।

अन्यच्च।

अनुलेपस्तृषामूर्च्छादुर्गंधस्वेददाहजित्।
सौभाग्यतेजस्त्वग्वर्णप्रीत्योजोबलवर्द्धनः ॥
सस्नानानर्हलोकानामनुलेपोऽपिनोहितः ॥

अर्थ-चंदनादिका लगाना, तृषा, मूर्च्छा, दुर्गंध, पसीना और दाहको दूर करे है. सौभाग्य, तेज, त्वचाका वर्ण, प्रीति, ओज और बलवर्द्धक है जिनको स्नान करना निषेध है उनको चंदनादिकाभी लगाना निषेध है।

पुष्पादिधारणगुणाः।

सुगंधिपुष्पपत्राणांधारणंकांतिकारणम्।
पापरक्षोग्रहहरंकामदंश्रीविवर्द्धनम् ॥

अर्थ-सुगंधित पुष्पपत्रादिका धारण-कांतिजनक, पाप, राक्षस और ग्रहबाधाको दूरकरनेवाला, कामोद्दीपन, और लक्ष्मीको बढानेवाला है।

भोजनादौलवणार्द्रकादिभक्षणगुणाः।

भोजनाग्रेसदापथ्यंजिह्वाकंठविशोधनम्। अग्निसंदीपनंहृद्यं लवणार्द्रकभक्षणम्॥ आयुर्घृतेगुडेरोगोमृत्युर्लीनोविदाहिषु। आरोग्यंकटुतिक्तेषुबलंमांसेपयःसुच ॥

अर्थ-भोजनसे पहिले सैंधवनिमकके साथ अद्रखका खाना सदैव पथ्यहै, जिह्वा और कंठको शुद्ध करेहै, हृदयको हितकारी और अग्निप्रदीपक है। भोजनसे पहिले घृतभक्षण करनेसे आयुकी वृद्धि होतीहै,गुण खानेसे रोग उत्पन्न होतेहैं, दाहजनक पदार्थ खानेसे मृत्यु होती है, कटु और तिक्तरसके पदार्थ खानेसे आरोग्यता उत्पन्न होती है, मांस और दूध खानेसे बलकी वृद्धि होती है।

क्रमादन्नादीनांगुणाधिक्यमाह ।

अन्नादष्टगुणंपिष्टंपिष्टादष्टगुणंपयः ।
पयसोऽष्टगुणंमांसंमांसादष्टगुणंघृतम् ॥
घृतादष्टगुणंतैलंमर्दनान्नतुभक्षणात् ।

अर्थ–अन्न, पिष्टक, दुग्ध, मांस, घृत इनके उत्तरोत्तर आठगुण अधिक हैं अर्थात् अन्नसे आठगुण अधिक पिट्ठीमें हैं, पिट्ठीसे आठगुण अधिक दुग्धमें हैं, दुग्धसे आठ गुण अधिक मांसमें हैं, और मांससे आठगुण अधिक घृत खानेमें हैं और घी की अपेक्षा आठगुण अधिक तेलमें हैं, परन्तु तेलमें आठगुण अधिक मर्दन करनेमें हैं खानेमें नहीं ।

आहारगुणाः ।

आहारःप्रीणनःसद्योबलकृद्देहधारकः ।

अर्थ–आहार तृप्तिकारक, तत्काल बलजनक और देहकी रक्षा करनेवाला है ।

आहारे दिङ्निर्णयः ।

आयुष्यंप्राङ्मुखोभुंक्तेयशस्यंदक्षिणामुखः ।
श्रियंप्रत्यङ्मुखोभुंक्तेऋतंभुक्तेह्युदङ्मुखः ॥

अर्थ–पूर्वकी ओर मुख करके आहार करनेसे आयुकी वृद्धि, दक्षिणकी ओर मुखकरके आहार करनेसे यशकी प्राप्ति और पश्चिमकी ओर मुखकरके आहार करनेसे सम्पदाकी प्राप्ति होती है । उत्तरकी ओर मुख करके आहार करनेसे सत्यकी प्राप्ति होती है । इसकारण उत्तरकी ओर मुख करके आहार करै ।

भक्षणविषयेअन्नादीनांपरिमाणमाह ।

कुक्षावन्नेनभागौद्वावेकंपानेनपूरयेत् ।
वायोःसंचरणार्थञ्चचतुर्थमवशेषयेत् ॥

अर्थ–आहारके समय–उदरके दो भाग अन्नसे भरे, एकभाग पीनेकी वस्तुओंसे भरे और बाकीका एकभाग वायुके विचरनेके लिए रहने देवे ।

आचमनगुणाः ।

दन्तान्तरगतञ्चान्नंशौचेनैवाहरेच्छनैः ।
कुर्य्यादनिर्गतंतद्धिमुखस्यानिष्टगंधताम् ॥

अर्थ-भोजन करनेके समय जो अन्न दाँतोंमें घुसजाता है, वह अन्न आचमनके द्वारा धीरे धीरे निकाल देवे; जो आचमनके द्वारा दांतोंसे अन्न बाहिर नहीं निकालते उनके मुखमें दुर्गन्ध आने लगती है।

भोजनान्तेकर्त्तव्यता।

भुक्त्वापाणितलंघृष्ट्वाचक्षुषोर्यदिदीयते।
अचिरेणैवतद्वारितिमिराणिव्यपोहति॥

अर्थ--भोजनके अन्तमें हाथमें हाथ घिसकर नेत्रोंमें लगानेसे यह जल नेत्रोंके तिमिररोगको दूर करे है।

भुक्त्वाचम्यकरंवामंदत्वाकुक्षौततःपठेत्। भुक्तंमाहेन्द्रहस्तेनवैश्वानरमुखेनच॥ गंडूरस्यचकंठेनसमुद्रस्यचवह्निना। वातापिर्भक्षितोयेनपीतोयेनमहोदधिः॥ यन्मयाखादितंपीतंतदगस्त्योजरिष्यति।

अर्थ--भोजन करनेके पश्चात् आचमन करके कोखमें वामहाथ धरके "भुक्तंमाहेन्द्र, इत्यादि" इस मन्त्रको पढै तो भोजन शीघ्र जीर्ण होजाता है।

सुखासीनःक्षणंतिष्ठेद्यावन्नलभतेसुखम्।

अर्थ-फिर थोडी देरतक आराम करे जबतक सुख न हो।

भुक्त्वापादशतंगत्वावामपार्श्वेणसंविशेत्।
एवञ्चाधोगतंचान्नंसुखंतिष्ठतिजीर्य्यति॥

अर्थ-भोजन करनेके पश्चात् सौ कदम धीरे धीरे चले, फिर बाँइ करवटसे सो रहै तो अन्न पाकस्थानमें जाकर जीर्ण होजाता है।

भोजनान्ते उपवेशनादिगुणाः।

भुक्त्वोपविशतस्तुन्दंशयानस्यवपुर्भवेत्।
आयुश्चंक्रममाणस्यमृत्युर्धावतिधावतः॥

अर्थ--भोजनके अंतमें उपवेशन अथवा शयन करनेसे स्थूलताकी वृद्धि, धीरे २ चलनेसे आयुकी वृद्धि और दौडनेसे मृत्यु होती है।

ताम्बूलगुणाः।

ताम्बूलंकटुतिक्तमुष्णमधुरंक्षारंकषायान्वितं

वातघ्नंकृमिनाशनंकफहरंदुःखस्यविच्छेदनम् ।
स्त्रीसम्भाषणभूषणंधृतिकरंकामाग्निसंदीपनं
ताम्बूलेनिहितास्त्रयोदशगुणाःस्वर्गेपितेदुर्लभाः ॥

अर्थ-पान-चरपरा, कडवा, गरम. क्षारगुणयुक्त, मधुर, कषेला, वातविनाशक, कृमिनाशक कफहारक, दुःखोंको दूर करनेवाला, स्त्रीसंभाषणके विषय आभूषण, धारणशक्ती और कामको बढानेवालाहै, यह १३ गुण पानमें विद्यमान हैं सो स्वर्गमें भी दुर्लभ हैं ।

पूगफलगुणाः ।

शुष्कमग्निकरंपूगंकषायंमधुरंपरम् ।
पक्वन्तुवातलंरूक्षंभेदनंकफनाशनम् ॥
गुर्वभिष्यंदिमधुरंतोयधृग्वह्निनाशनम् ।

अर्थ-सूखी सुपारी अग्निवर्द्धक, कषेली और मधुरयुक्त है । पक्की सुपारी-वातवर्द्धक, रूखी, भेदक और कफनाशक । कच्चीसुपारी-भारी, क्लेदजनक, मधुर और मंदाग्निकारक हैं ।

ताम्बूलपत्रगुणाः ।

ताम्बूलपत्रंतीक्ष्णोष्णंकटुवातकफापहम् ।
पित्तकृत्स्रंसनंवृष्यंवह्निकृद्वस्तिशोधनम् ॥

अर्थ-ताम्बूलपत्र-तीक्ष्ण, गरम, चरपरा, वात-कफनाशक, पित्तकारक, स्रंसन, वीर्य्यवर्द्धक अग्निजनक और वस्तिशोधक है ।

पर्णमूलादिगुणाः ।

पर्णमूलेभवेद्व्याधिःपर्णाग्रेपापसम्भवः ।
जीर्णपर्णंहरेदायुःशिरावह्निंविनाशयेत् ॥

अर्थ-पानकी जडको खानेसे-नानाप्रकारके रोग उत्पन्न होते हैं, पानके अग्रभागको भक्षण करनेसे पाप उत्पन्न होता है और जीर्णपानको भक्षण करनेसे आयु क्षीण होती है और शिरा अग्निका विनाश करती है ।

चूर्णगुणाः ।

चूर्णंसमीरणश्लेष्ममेदोहरमुदाहृतम् ।
अर्थ-चूना-वात, कफ और मेदनाशक है ।

शंखचूर्णगुणाः ।

शंखचूर्णंकटुक्षारमुष्णंकृमिहरंपरम् ।

अर्थ-शंखका चूना-चरपरा, क्षार, गरम और कृमिनाशक है।

खदिरगुणाः ।

खदिरःकुष्ठवीसर्पमेहपित्तकफापहः ।

अर्थ-कत्था-कोढ, वीसर्प, प्रमेह, पित्त और कफनाशक है।

एलागुणाः ।

एलामूत्रविबन्धघ्नीतृट्छर्दिकफवातजित् ।

अर्थ-इलायची- मूत्रविबन्धनाशक तथा तृषा, वमन, कफ और वातनाशक है।

लवंगगुणाः ।

आध्मानानाहशूलघ्नंलवंगंपाचनंलघु ।

अर्थ-लौंग -अफारा, आनाह और शूलनाशक है, पाचक और हलकी है।

जातीफलगुणाः ।

जातीफलंतृषाछर्दिशूलघ्नंवातपित्तजित् ।

अर्थ-जायफल-तृषा, वमन, शूल और वातपित्तनाशक है।

जातीकोषगुणाः

जातीकोषोलघुस्तृष्णातोददौर्गन्ध्यजिन्मतः ।

अर्थ-जावित्री-हलकी-तृषा, वेदना और दुर्गंधको दूर करे है।

कर्पूरगुणाः ।

कर्पूरंशीतलंपाकेचक्षुष्यंकफनाशनम् ।
पक्वकर्पूरतःप्राहुरपक्वंगुणवत्तरम् ।

अर्थ-कपूर-पचनेमें शीतल, नेत्रोंको हितकारी और कफनाशक है। पक्के कपूरसे कच्चा कपूर अधिकगुणवाला है।

पूगस्य बालमध्यादिभेदेन गुणामाह ।

आदौपूगंविषंघोरंद्वितीयेभेदिदुर्ज्जरम् ।
तृतीयादिषुपातव्यंसुधातुल्यंरसायनम् ॥

अर्थ-कच्चीसुपारी-विषके समान अहितकारी है, मध्यम अवस्थाकी सुपारी-भेदक और दुर्जर है और सूखी सुपारी--अमृतके समान हितकारी

और रसायन है, इसकारण प्रथम और द्वितीय अवस्थाकी सुपारीको त्याग कर तृतीय अर्थात् शुष्कसुपारी भक्षण करनी चाहिए ।

तामूलभक्षणनिषेधः ।

ताम्बूलमहितंप्रोक्तंशरीरेरूक्षदुर्बले ।
ज्वरास्यशोषेपित्तास्रमदमूर्च्छाक्षिरोगिषु ॥

अर्थ--रूक्ष, दुर्बल, ज्वर, मुखशोष, रक्तपित्त, मद, मूर्च्छा और नेत्ररोगवाले मनुष्योंको ताम्बूल भक्षण करना नहीं चाहिये ।

ताम्बूलस्यानुपयोगगुणाः ।

ताम्बूलानुपयोगात्स्याच्छ्लेष्मापित्तानिलान्वितः
देहदृक्केशदन्ताग्निश्रोत्रवर्णबलक्षयः ॥

अर्थ--ताम्बूल नहीं खानेसे-मनुष्योंके कफ, पित्त और वातका कोप होता है तथा देह, नेत्र, केश, दन्त, अग्नि, कर्ण, वर्ण और बलआदिका नाश होता है ।

अध्ययनादिगुणाः।

सतताध्ययनंवादःपरतंत्रविलोकनम् ।
सद्विद्याचार्यसेवाचबुद्धिमेधाकरोगणः ॥

अर्थ--निरन्तर शास्त्रका अध्ययन--शास्त्रार्थ,उत्तमशास्त्रोंका दर्शन, सद्विद्याका ग्रहण और गुरुकी सेवा यह सब मनुष्योंकी बुद्धि और मेधाको वढाते हैं ।

बुद्धिगुणमाह ।

शुश्रूषाश्रवणंचैवग्रहणंधारणंतथा ।
ऊहापोहोथविज्ञानंतत्वज्ञानंचधीगुणाः ॥

अर्थ-गुरुजनोंकी शुश्रूषा, गुरुके वाक्योंको श्रवण करना, गुरुके वचनोंको ग्रहण और धारण करना तथा तर्कका मीमांसाजनक ज्ञान और ईश्वरविषयका ज्ञान यह छः बुद्धिके गुण हैं ।

सद्योमांसादिगुणाः ।

सद्योमांसंनवान्नंचबालास्त्रीक्षीरभोजनम् ।
घृतमुष्णोदकंचैवसद्यःप्राणकराणिषट् ॥

अर्थ-तत्कालका मांस-नवीनअन्न-बालास्त्री-क्षीरभोजन-घृत और उष्ण जल यह छः तत्काल प्राणजनक हैं ।

पूतिमांसादिदुर्गुणाः ।

पूतिमांसंस्त्रियोवृद्धाबालार्कस्तरुणंदधि ।
प्रभातेमैथुनंनिद्रासद्यःप्राणहराणिषट् ॥

अर्थ-दुर्गन्धितमांस-वृद्धास्त्री, भादों और क्वारकी धूप, पांच दिनका दही, प्रभातके समय मैथुन और निद्रा ये छः तत्काल प्राणनाशक हैं।

वयोभेदे नारीणां बालादिकथनम् ।

बालेतिगीयतेनारीयावत्षोडशवत्सरम् । तस्मात्परंतुतरुणीयावत्स्यात्त्रिंशतंभवेत् ॥ ततऊर्ध्वंभवेत्प्रौढायावत्पंचाशतंपुनः । वृद्धाततःपरंज्ञेयासुरतोत्सववर्जिता ॥

अर्थ-सोलहवर्षकी स्त्रीको बाला, सोलहवर्षके बाद तीस वर्षतककी तरुणी, तीस वर्षसे पचास वर्षतककीको प्रौढा और पचास वर्षसे अधिक उमरवालीको वृद्धा कहते हैं। वृद्धानारी रतिक्रियामें वर्जित है।

बालादिस्त्रीसंसर्गगुणाः ।

बालातुप्राणदाप्रोक्तातरुणीप्राणधारिणी ।
प्रौढाकरोतिवृद्धत्वंवृद्धामरणमादिशेत् ॥

अर्थ-बालास्त्रीके साथ मैथुन करनेसे बलकी वृद्धि होती है। तरुणीस्त्रीके साथ मैथुन करनेसे बलकी रक्षा होती है, प्रौढा स्त्रीके साथ मैथुन करनेसे वृद्धता आती है और वृद्धास्त्रीके साथ मैथुन करनसे मृत्यु होती है।

बालादिभेदे मैथुनकालनिर्णयः ।

निदाघशरदोर्बालाप्रौढावर्षावसंतयोः ।
हेमन्तेशिशिरेयोग्यानवृद्धाकापिशस्यते ॥

अर्थ-ग्रीष्म और शरदऋतुमें बालास्त्रीके साथ, वर्षा और वसंतऋतुमें प्रौढास्त्रीके साथ, हेमन्त और शिशिरऋतुमें तरुणीके साथ मैथुन करैं, किन्तु वृद्धास्त्रीके साथ किसी ऋतुमें मैथुन न करैं।

मैथुननिषेधः ।

नर्त्तेचषोडशाद्वर्षात्सप्तत्याःपरतोनच ।
आयुष्कामोनरःस्त्रीभिःसंयोगंकर्त्तुमर्हति ॥

अर्थ-आयुकी अभिलाषा करनेवाले मनुष्य सोलहवर्षसे कम सत्तर वर्षसे अधिक आयुवाली स्त्रीसे मैथुन नहीं करैं।

मैथुनकालनिर्णयः।

त्रिभिस्त्रिभिरहोभिश्च सेवेत प्रमदां नरः ।
सर्वेष्वृतुषु ग्रीष्मे तु पक्षान्मासाद्व्रजेद्बुधः ॥

अर्थ-बुद्धिमान् मनुष्य वर्षा, शरद्, हेमन्त, वसन्त और शीत ऋतुमें तीन दिनके बाद मैथुन करै और ग्रीष्मऋतुमें पंद्रह दिन अथवा एक महीनेके अंतरसे मैथुन करैं।

अतिमैथुनगुणाः ।

ग्लानिकम्पोरुदौर्बल्यं धात्विन्द्रियबलक्षयः ।
क्षयवृद्ध्युपदंशाद्या जायन्तेऽतिव्यवायतः ॥

अर्थ-अत्यन्त मैथुन करनेवाले मनुष्योंके शरीरमें ग्लानि, कम्प घुटनोंमें दुर्बलता होती है । धातु, इन्द्रियबल इनका क्षय होता है और राजयक्ष्मा वृद्धि तथा उपदंशादिरोग उत्पन्न होते हैं ।

सन्तानोत्पत्तिकालंनिर्दिशन्नाह ।

पंचपञ्चाशतो नारी सप्तसप्ततितः पुमान् ।
द्वावेतौ न प्रसूयेते प्रसूयेते व्यतिक्रमात् ॥

अर्थ-पचपन वर्षकी स्त्री और सतत्तर वर्षका पुरुष, ये दोनों सन्तानको उत्पन्न नहीं करसक्ते, कारण यह है कि, पचपन वर्षकी स्त्रीके रजमें और सतत्तर वर्ष आयुवाले पुरुषके वीर्य्यमें सन्तानको उत्पन्न करनेवाली शक्ति नष्ट होजातीहै, परन्तु पचपन वर्षसे कमकी स्त्री और सतत्तर वर्षसे कमका पुरुष सन्तान उत्पत्ति करसक्ते हैं ।

सुखशय्याशनगुणाः ।

सुखशय्याशनं सेव्यं निद्रापुष्टिधृतिप्रदम् ॥
श्रमानिलहरं वृष्यं विपरीतमतोऽन्यथा ॥

अर्थ--सुखशय्या और उत्तमद्रव्यका भोजन-निद्रा, पुष्टि और धीरजको बढाते हैं, श्रम और वातनाशक तथा वीर्य्यजनक हैं और इससे विपरीत शय्या और विपरीत भोजन विपरीतगुणकारक हैं ।

भूमिशय्यागुणाः ।

भूशय्याऽनिलपित्तघ्नी बृंहणी शुक्रवर्द्धिनी ।

अर्थ—पृथ्वीमें सोना- वात और पित्तनाशक, पुष्टिकारक और शुक्र-वर्द्धक है ।

खट्वापटशय्ययोर्गुणाः ।

खाटातुवातलाप्रोक्तापटोरूक्षोऽतिवातलः ।

अर्थ—खाटपर सोनेसे वात बढती है और पटशय्यापै सोनेसे रूक्षता और वात बढाती है ।

ज्योत्स्नागुणाः ।

ज्योत्स्नाकषायमधुरादाहास्रुक्पित्तनाशिनी ।

अर्थ—ज्योत्स्ना (चांदनी) कसेली और मधुर, तथा दाह और रक्तपित्त नाशक है ।

अन्धकारगुणाः ।

तमोभयावहंतिक्तंदृष्टितेजोवरोधनम् ।

अर्थ—अन्धकार-भयकारक, कडवा, दृष्टिशक्ति और तेजको रोकनेवाला है ।

मैथुनगुणाः ।

व्यवायोधातवपचयंकुरुतेरत्यपत्यदः ।

अर्थ—मैथुन-धातुनाशक रति और सन्तान देनेवाला है ।

अतिमैथुनगुणाः ।

अतिव्यवायाज्जायन्तेश्वासकासज्वरादयः ।

अर्थ-अत्यंत मैथुन करनेसे-श्वास, कास और ज्वरादि रोग उत्पन्न होतेहैं ।

मैथुनाकरणगुणाः ।

असेवनान्मेहमदोग्रन्थिरग्नेश्चमार्दवम् ।

अर्थ-मैथुन नहीं करनेसे-प्रमेह, मेद, ग्रन्थि और मंदाग्नि उत्पन्न होती है ।

परिमितमैथुनगुणाः ।

स्मृतिमेधायुरारोग्यपुष्टीन्द्रिययशोबलैः ।
अधिकानाशुजरसोभवन्तिस्त्रीषुसंयताः ॥

अर्थ—नियमानुसार मैथुन करनेसे-स्मरणशक्ति, अभ्यासशक्ति, आयु, आरोग्य पुष्टि, इन्द्रियशक्ति, यश और बल इनकी वृद्धि होती है और नियमानुसार मैथुन करनेवाला मनुष्य शीघ्र वृद्धताको नहीं प्राप्त होता है ।

निद्रागुणाः ।

निद्रातुसेविताकालेधातुसाम्यमतन्द्रिताम् ।

पुष्टिवर्णबलोत्साहानग्निदीप्तिंकरोतिच ॥

अर्थ-नियमानुसार निद्रा लेनेसे--धातुकी समता, तन्द्रानाश, पुष्टि, वर्ण, बल, उत्साह और अग्नि दीपन होती है ।

रात्रिजागरदिवास्वप्नयोर्गुणाः ।

रात्रौजागरणंरूक्षंस्निग्धंप्रस्वपनंदिवा ।
कफमेदोविषार्त्तानांरात्रौजागरणंहितम् ॥
दिवास्वप्नंचतृट्छूलहिक्काजीर्णातिसारिणाम् ।

अर्थ--रात्रिमें जागनेसे शरीरमें रूक्षताकी वृद्धि और दिनमें सोनेसे शरीरमें स्निग्धताकी वृद्धि होतीहै, इस कारण; दिनमें सोना और रात्रिमें जागना अनुचित है । किन्तु कफ, मेद और विषग्रस्तरोगियोंको रात्रिमें जागना हितकारक है, तथा तृष्णा, शूल, हिक्का, अजीर्ण और अतिसाररोगवालोंको दिनमें सोना हितकारक है ।

दिवावायदिवारात्रौनिद्रासात्मीकृतातुयैः ।
नतेषांस्वपतांदोषोजाग्रतांवाविधीयते ॥

अर्थ--जिनको दिनमें निद्रा लेनेका और रात्रिमें जागनेका अभ्यास है उनको दिनमें निद्रा और रात्रिमें जागनाही उचित है ।

हेमन्तशिशिरकृत्यम् ।

शीतेशीतानिलस्पर्शसंरुद्धोबलिनांबली । पक्ताभवतिहेमन्तेमात्राद्रव्यगुरुक्षमः ॥ सयदानेन्धनंयुक्तंलभतेदेहजंतदा । रसंनिहंत्यतोवायुःशीतःशीतेप्रकुप्यति ॥ तस्मात्तुषारसमयेस्निग्धाम्ललवणान्रसान् । उदकानूपमांसानांमेध्यानामुपयोजयेत् ॥ बिलेशयानांमांसानिप्रसहानांभृतानिच ।भक्षयेन्मदिरांसीधुंमधुचानुपिबेन्नरः ॥ गोरसानिक्षुविकृतीर्वसांतैलंनवौदनम् । हेमन्तेऽभ्यस्यतस्तोयमुष्णञ्चायुर्नहीयते ॥ अभ्यंगोत्सादनंमूर्ध्नितैलंजेन्ताकमातपम् । भजेद्भूमिगहस्वोष्णमुष्णंगर्भगृहंतथा ॥ शीतेसुसंवृतंसेव्यंयानंशयनमासनम् । प्रावाराजिनकौशेयप्रवेणीकुथकास्तृतम् ॥ गुरूष्ण-

वासादिग्धाङ्गोगुरुणाऽगुरुणासदा । शयनेप्रमदांपीनां विशालोपचितस्तनीम् ॥ आलिंग्यागुरुदिग्धाङ्गींसुप्यात्समन्मथः । प्रकामञ्चनिषेवेतमैथुनंशिशिरागमे ॥ वर्जयेदन्नपानानिलघुनिवाततलानिच । प्रवातंप्रमिताहारमुदमंथंहिमागमे ॥ हेमन्तेशिशिरेतुल्येशिशिरेऽल्पंविशेषणम् । रौक्ष्यमादानजंशीतंमेघमारुतवर्षजम् ॥ तस्माद्धैमन्तिकःसर्वःशिशिरविधिरिष्यते । निवातमुष्णन्त्वधिकशिशिरेगृहमाश्रयेत ॥ कटुतिक्तकषायाणिवाततलानिलघूनिच । वर्जयेदन्नपानानिशिशिरशीतलानिच ॥

अर्थ-हेमन्तऋतुमें शीतल पवनके चलनेसे मनुष्यके शरीरकी उष्णता बाहर नहीं निकलती इसकारण इस ऋतुमें बलवान् मनुष्योंकी पाचकाग्नि अत्यन्त प्रबल होकर बहुत भोजन और भारी पदार्थोंको पचानेको समर्थ हो जातीहै, ऐसेही जो प्रबल अग्नि उचित नियमसे पकानेकी वस्तु न पावे तो वह शरीरकी रस धातुका क्षय करना आरम्भ करती है,रसक्षयके हेतुसे शीतल वायु कुपित होनेके कारण,इस ऋतुमें स्निग्ध,द्रव्य,,अम्ल और नमकीन पदार्थ, पवित्र जल, अनूप देशके जीवोंका मांस और प्रसहजातिके जीवोंका मांस भक्षण करे तथा सीधुनामक मदिराको पीकर फिर सहत पीवे हेमन्तऋतुमें दूध, इक्षुविकार, वसा, तेल और नवीन चावलोंका भात भक्षण करना चाहिये । हेमन्तऋतुमें गरम करके जल पीवे, इससे मनुष्योंकी आयु नष्ट नहीं होती । इस ऋतुमें अभ्यंग, उत्सादन (हलदी आदिका मलना) जेन्ताक (एक प्रकारका स्वेद) आदिका व्यवहार है । ईंटोंके अथवा मृत्तिकाके बनेहुए उष्ण गृहमें अथवा उष्ण गर्भगृहमें वासकरना चाहिये । इस ऋतुमें कम्बल, चर्म्म (पोस्तीन आदि) रेशमीन प्रवेणी और विचित्र कम्बलआदिसे भलीभाँति ढकीहुई सवारी (अश्वादि) सेज पहिने और आसनको व्यवहार करे । सदैव मोटा और गरम कपडा पहिने अगरको घिसकर गाढालेप करे । शयन करनेके समय मद पीकर कामयुक्त जिसके चित्तसे मोटी ताजी, उठेहुए स्तनवाली, अगर आदि सुगन्धियें जिसके शरीरमें लगरही हैं, ऐसी तरुणी स्त्रीके साथ लेटकर आलिंगन करे और

इच्छानुसार मैथुन करके फिर सो रहै। इस ऋतुमें हलके, वातवर्द्धक भोजन और पानीय अर्थात् पीनेके द्रव्य, प्रबल वायु, अल्प आहार और उदमन्थ (जलमें घोले हुवे सत्तू) त्यागदेवे। हेमन्त और शिशिर ऋतु दोनों समान हैं. अंतर केवल इतनाही है कि, शिशिर ऋतुमें आदान जात (इस ऋतुमें सूर्यके द्वारा शरीरके चिकने पदार्थ ग्रहण किये जाते हैं) रूखापन, मेघवायु और वर्षासे उत्पन्न हुवा शीत अधिक होता है, इसकारण हेमन्त कालके आचार व्यवहार शिशिर कालमें आचरण करे। इस ऋतुमें वायुरहित उष्ण गृहमें रहना चाहिये और चरपरे कडवे, कसेले रसवाले द्रव्य, वातको बढानेवाले द्रव्य, हलके द्रव्य, और ठंडे खानेके पदार्थ और पीनेके द्रव्य त्यागदेवे।

वसन्तकृत्यम्।

हेमन्तेनिचितःश्लेष्मादिनकृद्भाभिरीरितः। कायाग्निंबाधतेरोगांस्ततःप्रकुरुतेबहून्॥ तस्माद्वसन्तेकर्म्माणिवमनादीनिकारयेत्। गुर्वम्लस्निग्धमधुरंदिवास्वप्नञ्चवर्जयेत्॥व्यायामोद्वर्त्तनंधूमंकवलग्रहमंजनम्। सुखाम्बुनाशौचविधिंशीलयेत्कुसुमागमे॥ चन्दनागुरुदिग्धाङ्गोयवगोधूमभोजनः। शारभंशाशमैणेयंमांसंलावकपिंजलम्॥ भक्षयेन्निगदंसीधुंपिबेन्माध्वीकमेववा। वसन्तेऽनुभवेत्स्त्रिणांकाननानांचयौवनम्॥

अर्थ—हेमन्तऋतुमें संचित हुवा कफ सूर्य्यकी तीक्ष्ण किरणोंसे चलायमान होकर देहकी अग्निको मंद करता है इसकारण वसन्त ऋतुमें बहुत प्रकारके रोग उत्पन्न होते हैं, अतएव वसन्तऋतुमें कफके दूर करनेको वमनादि क्रियाकरे। इसऋतुमें भारी, खट्टी, तथा मधुर रसवाली वस्तु और दिनमें सोना छोडदेवे। व्यायाम, उबटन, धूमपान, कवलग्रहण(अदरख आदिके रसके कुल्ले करना) आँखोंमें अंजन लगाना, कुछेक गरम जलसे शौचादि क्रियाकरना, यव, गोधूम, शरभका मांस, खरगोशका मांस हिरनका मांस, लवेका मांस, और चातकका मांस भक्षण करना, और सीधु या माध्वीक नामक मदको पीना ठीक हे इसऋतुमें बनोंकी और स्त्रियोंके यौवनकी सुन्दरता बढती है।

ग्रीष्मकृत्यम् ।

मयूखैर्जगतःसारंग्रीष्मेपेपीयतेरविः । स्वादुशीतंद्रव्यास्निग्धमन्नपानंतदाहितम् ॥ शीतंसशर्करंमन्थंजाङ्गलान्मृगपक्षिणः । घृतंपयःसशाल्यन्नंभजन्ग्रीष्मेनसीदति ॥ मद्यमल्पंनवापेयमथवासुबहूदकम् । लवणाम्लकटूष्णानिव्यायामश्चात्रवर्जयेत् । दिवाशीतगृहेनिद्रांनिशिचन्द्रांशुशीतले ॥ भजेच्चन्दनादिग्धाङ्गःप्रवातेहर्म्यमस्तके । व्यजनैःपाणिसंस्पर्शैश्चन्दनोदकशीतलैः सेव्यमानोभजेतास्यांमुक्तामणिविभूषितः । काननानिचशीतानिजलानिकुसुमानिच॥ ग्रीष्मकालेनिषेवेतमैथुनाद्विरतोनरः ।

अर्थ—ग्रीष्मऋतुमें सूर्य्यकी किरणोंसे पृथ्वीके सर्व स्निग्ध पदार्थ सूख जाते हैं इसकारण इस ऋतुमें स्वादिष्ट, शीतलद्रव्य और स्निग्धगुणवाले भोजन और पीनेके द्रव्योंका व्यवहार करना चाहिये। इसऋतुमें बूरा मिला- हुवा तक्र, जंगली पशु और जंगली पक्षियोंका मांस, सांठीके चावलोंका भात खावे दूध पीवे, जिनको मदिरा पीनेका अभ्यास है वह थोडीसी या बहुतसा जल मिली हुई मदिरा पीवें परन्तु जिनको मदिरा पीनेका अभ्यास नहीं है, उनको इस ऋतुमें मदिरापान अयोग्य है ग्रीष्मऋतुमें लवण, खट्टे और चरपरे रसके पदार्थ, उष्णवस्तु और व्यायाम (कसरत) करनी छोडदें। शरीरमें चन्दन लगाकर दिनके समय हवादार शीतल घरमें और रात्रिके समय पवन और चंद्रमाकी किरणोंसे संयुक्त छत्तपर शयन करे। जब दुपहरको प्रचंडसूर्य्यकी गरमीसे शरीर तप्तहोजाय तो चन्दनके जलको पंखेपर छिडककर शीतल वयारस और दासदासियोंका हाथ छूनेसे, सावधान होनेके पीछे मणिमुक्ता धारणकर आराम करना चाहिये। फिर मैथुनसे निबटकर शीतल पुष्पवाटिका, शीतलजल और शीतल सुगन्धियुक्त पुष्पोंका व्यवहार करे।

वर्षाकृत्यम् ।

आदानदुर्बलेदेहपक्ताभवतिदुर्बलः । सवर्षास्वनिलादीनां दूषणैर्बाध्यतेपुनः ॥ भूबाष्पान्मेघनिस्पन्दात्पाकादम्लाज्ज-

लस्यच । वर्षास्वग्निबलेक्षीणेकुप्यन्तिपवनादयः ॥ तस्मात्साधारणःसर्वोविधिर्वर्षासुचेष्यते। उदमन्थंदिवास्वप्नमवश्यायंनदीजलम् ॥ व्यायाममातपञ्चैवव्यवायञ्चात्रवर्जयेत् । पानभोजनसंस्कारान्प्रायः क्षौद्रान्वितान्भजेत्।व्यक्ताम्ललवणस्नेहंवातवर्षाकुलेऽहनि ॥ विशेषशीतेभोक्तव्यंवर्षास्वनिलशान्तये । अग्निसंरक्षणवतायवगोधूमशालयः पुराणाजांगलैर्मांसैर्भोज्यायूषैश्चसंस्कृतैः । पिबेत्क्षौद्रान्वितंचाल्पंमाध्वीकारिष्टमम्बुवा ॥ माहेन्द्रंतप्तशीतंवाकौपंसारसमेववा । प्रघर्षोद्वर्त्तनस्नानगन्धमाल्यपरोभवेत्॥लघुशुद्धाम्बरंस्थानंभजेदक्लेदिवार्षिकम् ।

अर्थ–आदान कालमें देहकी दुर्बलताके हेतुसे अग्निभी दुर्बल होजातीहै, यह दुर्बलाग्नि वर्षाकालमें वातादि दोषोंकरके अधिक दुर्बल हो जाती हैं इसऋतुमें पृथ्वीमेंसे वाफ उठती है, मेघ गरजते हैं जलका अम्ल पकजाताहै और अग्निका बल न्यून होनेसे त्रिदोष कुपित होते हैं इस कारण इसऋतुमें साधारण विधिका आचरण करना चाहिए वर्षाकालमें मट्ठेमें जल मिलाकर पीना, दिनमें सोना, हिम और नदीके जलको सेवन करना, कसरत करना, धूपमें बैठना और मैथुन करना, यह सब छोडना चाहिए इस ऋतुमें पानी और भोजनमें सहत मिलाकर सेवन करना चाहिये और वर्षायुक्त दिनोंमें अत्यन्त शीत होय तो वायुको शान्त करनेके लिये अम्ल और लवण रस तथा स्नेहयुक्त द्रव्य भक्षण करै । अग्निकी रक्षा करनेको पुराने जौ, गेहूँ, सांठीके चावल और जङ्गली पशुओंके मांसका भक्षण, शोधित यूष, मधुयुक्त थोडीसी माध्वीक मदिरा अथवा अरिष्ट पान करै मेघजल वा तप्तशीतल जल (जो जल गरम होकर शीतल किया होय,) या कूपजल या सरोवरका जल पान करै, इस ऋतुमें शरीरका घर्षण, उबटन, स्नान, चन्दनादि सुगंधित द्रव्य और पुष्पोंकी मालाका धारण, हलके और शुद्धवस्त्रका पहरना और क्लेदरहित स्थानमें वास करना चाहिये ।

शरत्कृत्यम् ।

वर्षाशीतोचितांगानांसहसैवार्करश्मिभिः । तप्तानामाचितं

पित्तंप्रायःशरदिकुप्यति॥ तत्रान्नपानंमधुरंलघुशीतंसतिक्तकम् । पित्तप्रशमनंसेव्यंमात्रयासुप्रकांक्षितैः ॥ लावान्कपिञ्जलानेणानुरभ्राञ्छरभ्राञ्छशान् । शालीन्यवांश्चगोधूमान्सेव्यानाहुर्घनात्यये ॥ तिक्तस्यसर्पिषःपानंविरेकोरक्तमोक्षणम् । धराधरात्ययेकार्यमातपस्यचवर्ज्जनम् ॥वसांतैलमवश्यायमौदकानूपमामिषम्। क्षारंदधिदिवास्वप्नंप्राग्वातश्चात्रवर्जयेत्॥ दिवासूर्यांशुसंतप्तंनिशिचन्द्रांशुशीतलम् । कालेनपक्वंनिर्दोषमगस्त्येनाविषीकृतम् ॥ हंसोदकमितिख्यातंशारदंविमलंजलम् । स्नानपानावगाहेषु शस्यतेतद्यथामृतम् ॥ शारदानिचमाल्यानिवासांसिविमलानिच । शरत्कालेप्रशस्यंतप्रदोषेचेन्दुरश्मयः ॥

अर्थ-वर्षाकालमें उस कालका शीतसे संचित हुआ पित्त शरद् ऋतुमें सूर्यकी किरणोंसे सन्तापित हो (अनुबंधरूपसे वात और पित्तभी कुपित होते है) कुपित होताहैं इस कारण पित्तको शमन करनेके लिये क्षुधातुर मनुष्य मधुर, शीतल, हलका और कडवा अन्न तथा पीनेके द्रव्य यथोचित मात्राके अनुसार सेवन करै और लवा, कपिञ्जल (सफेद तीतर,) एण (कालाहिरण), मेढा, शरभ और खरगोसआदि जीवोंका मांस, साँठीक चावलोंका भात और जौ, गेहूँ खावै । पित्तको शान्त करनेके लिये तिक्तरसयुक्त घृत (पञ्चतिक्त घृतादि), पीना चाहियें जो तिक्त घृतके पीनसे पित्त शान्त न होवै तो जुल्लाबकी औषधियोंको सेवनकर पित्तको शान्त करे। फिर इससेभी शान्त न होवै तो रक्तमोक्षण (फस्त) कराना चाहिये। इस ऋतुमें शरीरको धूप न लग दे, तथा वसा (चरबी) तेल; हिम, जल और अनूपदेशके जीवोंका मांस, खार, दही, दिनका सोना और प्रबल पूर्वदिशाकी वायुका सेवन छोड देना चाहिये। वष समय मेघ वर्षनेसे जल नवीन हो जाते हैं । वह इस जलके साथ विषैले पदार्थ मिल जाते हैं और जलका अम्ल पकजाता है जब शरद ऋतुमें यह जल स्वभावसे पक जावे और अगस्त्यके उदयसे विष रहित होजाय तब उसको लेकर

सारेदिन सूर्यकी धूपमें और रातभर चंद्रमाकी किरणोंमें रखकर शीतल करे इसजलको 'हंसोदक' कहते हैं। शरत् ऋतुमें स्नान, पान और कुल्ला करनेको हंसोदकही श्रेष्ठ है तथा अमृतके समान है, इस ऋतुमें पुष्पोंकी माला तथा निर्मल वस्त्रोंको धारण करना चाहिये और प्रदोष (रात्रि) कालमें चंद्रमाकी किरणोंको सेवन करना चाहिये।

अथ ग्रंथकर्त्तुर्वंशवर्णनम्।

चन्द्रान्वयेमाथुरवैश्यवर्य्यआह्लादगोत्रोद्विजवृन्दसेवी।दान्तः सुशीलःशिवभक्तियुक्तोविद्यानिधिःसर्वकलाप्रवीणः ॥यस्य-आसीत्पुराधर्म्मविदांवरिष्ठःश्रीबालमुकुन्दःकरुणाकरश्च । यस्यप्रतापीबहुपुण्यकारीबभूवगोवर्द्धनदासपुत्रः ॥ हरिय-शराजोहरिजनभक्तःसुजनसुधर्म्मीविदितसुपुत्रः । गोपाल-दासस्तनयोबभूवयोमेश्वरस्तस्यकुलेमहात्मा ॥ विज्ञान-युक्तःप्रथितप्रबोधो महाजनःसर्वगुणैकसिन्धुः । तस्यसुतः पुरुषोत्तमदासोबुद्धियुक्तःकथितोगुणशीलः ॥ कोविदरत्न-महाजनसेवीसज्जनसंगरतोबिनयीच । मोतीरामइतिख्यात स्तनयस्तस्यधार्म्मिकः॥तत्सुतःपद्मनेत्रोभूत्समृद्धोधार्म्मिको वशी।घनश्यामदासनामातस्यपुत्रोगुणाग्रणीः। सीतारामश्च विख्यातस्तस्यपुत्रःप्रतावान् । विनिर्मितोयस्यविशालकूपः प्रवर्ततेपट्टरगंजमध्ये। अशीतिहस्तस्यमुखंविलोक्यमतिर्भव-त्येवतुदीर्घिकायाः॥ नतत्समोन्यःकूपोस्तिमुरादाबादपत्तने । अद्भुतोदर्शनीयश्चकीर्तिर्जागर्त्तिभूतले । तस्यपुत्रास्त्रयश्रेष्ठा दिल्सुखराययमहार्द्धिमान । मध्यमोरामजीरामोहरिभक्तोम-हाशयः ॥ कनीयान्सत्यवान्वाग्म्यानंदरूपश्चविश्रुतः ।तस्य पुत्रोमहानस्त्रःशालिग्रामोव्यजायत ॥तेनासौनिर्म्मितोग्रन्थो भिषजानांसुखावहः । सर्वलोकोपकारायज्ञानायचशुभाशुभ

मू॥शाकेवसुक्षितिवसुक्षितिसम्मितेब्देआषाढशुक्ल विमलातिथिपञ्चदश्याम् । वारेभृगौसमगमत्परिपूर्णतां वै ग्रन्थोनिघण्टुशिरभूषणनामधेयः ॥

अर्थ–चन्द्रवंशीय माथुरवैश्य महाश्रेष्ठ आह्लादगोत्रमें अनेक सज्जन हुए, उनमें ब्राह्मणोंके सेवक, परमचतुर, सुशील, शिवभक्तियुक्त, विद्यानिधान, सर्वगुणोंमें प्रवीण, धर्म्मज्ञजनोंमें श्रेष्ठ, करुणासिंधु श्रीबालमुकुन्दजी पहिले हुए, जिनके बडे प्रतापी और पुण्यकारी गोवर्धनदासजी हुए, उनके हरिभक्तोंके भक्त हरियशराय हुए, जो बडे महात्मा और मनुष्योंमें धर्म्मात्मा विख्यात हुए उनके महायोगेश्वर गोपालदासजी पुत्र हुए जो बडे विज्ञानी सब बातोंके जाननेवाले, महापुरुष, सम्पूर्ण गुणोंके सागर थे उनके सुत महाबुद्धिमान्, गुणज्ञ और शीलवान्, पंडितोंमें रत्न, महात्माओंके सेवक, सज्जनोंकी संगतिमें रहनेवाले, नीतिवान् पुरुषोत्तमदास हुए उनके महाधर्म्मात्मा मोतीरामजी हुए उनके पुत्र धर्म्मपरायण और जितेन्द्रिय कमलनयन हुए, उनके पुत्र गुणियोंमें अग्रगण्य श्रीघनश्यामदास हुए, उनके पुत्र संसारमें विख्यात और महाप्रतापी सीतारामजी हुए, जिन्होंने षट्परगंजमें बहुत बडा कुआ बनाया जिसके ८० हाथके मुखका विस्तार देखकर यह जान पडता है कि, यह कोई बडा सरोवर है मुरादाबादमें इस कुएके समान दूसरा कुवा नहीं है, यह एक अद्भुत और देखने योग्य वस्तु है, जिसकी आज प्रशंसा हो रही है (यह चौंडे कुवेके नामसे प्रसिद्ध) है उन सीतारामजीके महाबुद्धिमान् तीन पुत्र हुए, जिनमें ज्येष्ठ दिलेराम, मध्यम रामजीदास, जो बडे हरिभक्त और महायशस्वी थे और छोटे सत्यवान् आनन्दरूप खुसालराय विख्यात हुए उनका पुत्र महानम्र मैं शालिग्राम

---

१ आनन्दरूप जो खुशालरायनामसे विख्यातहुए उनका वृत्तान्त यह है, संवत् १८६० में एक मीरखां नामक म्लेच्छ अपनी चतुरंगिनी सेनासहित मुरादाबादपर चढ आया, उस समय चौधरी खुशालराय (जो कि, बडे तेजस्वी और प्रतापवान् मुरादाबादमें मुख्य थे) उन्होंने अनेक प्रकारके भोजन सम्पूर्ण सेनाके वास्ते और अश्वादिकके लिये दाना, घास इत्यादि सामग्री पहुँचाई और नगरको लूटसे बचाया, उस समय मेरे पिता आनन्दरूपजीकी १५ वर्षकी अवस्था थी, उन्होंने भी बहुत कुछ मिष्टान्नआदि सामग्री मीरखांको भेट की, उस समय मेरे पिताजीसे लोक कहने लगे कि, आपने भी खुसालकी समता करी तुमभी दूसरे खुसालराबहो उस दिनसे सब नगरनिवासी खुसालराय कहने लगे, इस कारण वह खुसालरायनामसे विख्यात हुए ।

हुआ मैंने वैद्योंको ३ सुख देनेवाला सर्व संसारके उपकारके लिये और शुभाशुभके जाननेके लिये यह ग्रंथ बनाया है शके १८१८ आषाढ सुदी पूणमासी शुक्रवारको यह " निघण्टुभूषण " समाप्त हुआ ॥

इति श्रीमाथुरवैश्यवंशोद्भवकविकुलकुमुदकलानिधिशालिग्रामवैश्यकृते शालिग्रामनिघण्टुभूषणे उत्तरार्द्धे मिश्रवर्गः समाप्तः ॥ २ ॥

शुभमस्तु ।

समाप्तोऽयं ग्रन्थः ।



श्रीहरिः ।

अथ परिशिष्टभागः ।

मायाफलनामानि ।

मायाफलंमाइफलंचमाइकाछिद्राफलंमायिचपंचनामकम् ।

अर्थ—मायाफल, माइफल, माइका, छिद्राफल और मायि (मायुक, केशरञ्जन, शिशुभेषज).

संस्कृतभाषामें	मायाफल ।
हिन्दीभाषामें	माजूफल ।
वंगभाषामें	माइफल ।
गुजरातीभाषामें	मांयां ।
मराठीभाषामें	मायफळ ।
अंग्रजीभाषामें	गाल्लनट्ट । Gallant
लैटिन्भाषामें	करकस् इन्फेक्टोरिया । Quarcus infectoria
फारसीभाषामें	माजुसू ।
अरबीभाषामें	आप्स समरतुल तुरफा ।

मायाफलगुणाः ।

मायुकंशीतलंरूक्षंकषायंलघुदीपनम् ।
विपाकेकटुकंग्राहिकफपित्तहरंपरम्॥ (शो. नि.)

अर्थ—माजूफल-शीतल, रूखा, कसेला, हलका, अग्निप्रदीपक, पचनेमें चरपरा, मलरोधक और कफपित्तनाशक है ।

अन्यच्च ।

उष्णंमायफलंप्रोक्तन्तीक्ष्णंशैथिल्यनाशकम् ।
प्रशस्तंवातहृत्प्रोक्तंपूर्वैर्नैघण्टकारकैः ॥ (नि० र०)

अर्थ—माजूफल-गरम, तीक्ष्ण, शिथिलतानाशक, प्रशस्त और वातविनाशक है ।

अन्यच्च ।

मायाफलंवातहरंकटूष्णकंशैथिल्यसंकोचककेशकार्ष्ण्यदम् ।

अर्थ—माजूफल-वातनाशक, चरपरा, गरम, शिथिलताको संकुचित करनेवाला और केशोंको काला करनेवाला है । (रा० नि०)

विवरण। माजूके वृक्ष वनोंमें होते हैं, आकृति सरूके समान होती है, इसके फलोंमें मक्खीके समान नीले रङ्गके कीडे घुसजाते हैं और उन फलों का रस निकालकर फलोंको खुक्ल कर देते हैं उसमें अपने बच्चे रखते हैं जिस प्रकार अण्डेमें जीव बढता है इसीप्रकार इसमें जीव बढताहै, पूर्ण होनेपर निकल जाता है, इसकारण सब फल काणे होते हैं जो फल काणे नहीं होते उनमें मरा हुआ जीव निकलता है। यह वास्तवमें फल नहींहोता किन्तु वृक्षमें ही फलसे दीखते हैं इसकारण इनकी छाल और बीज नहीं होते।

समुद्रफलनामानि।

समुद्रनामप्रथमंपश्चात्फलमुदाहरेत्।
समुद्रफलमित्यादिनामवांच्यंभिषग्वरैः॥

अर्थ-समुद्रफल, (अब्धिफल, उदधिफल, सिन्धुफल, अम्बुधिफल इत्यादि।

संस्कृतभाषामें	समुद्रफल।
हिन्दीभाषामें	समुद्रफल।
मराठीभाषामें	समुद्रफल।
गुजरातीभाषामें	समदरफल।
कर्णाटकीभाषामें	समुद्रकरकाया।
तैलिङ्गीभाषामें	व्यारङ्गचेट्टु।
लैटिन्भाषामें	व्यारङ्गटोनिया एक्युटेंग्युला।

Barringtonia Acutangula
व्या० रेसिमोसा। B. racemosa

समुद्रफल गुणाः।

फलंसमुद्रस्यकटूष्णकारिवातापहंभूतनिरोधकारि।
त्रिदोषदावानलदोषहारिकफामयभ्रान्तिविरोधकारि। (रा०)

अर्थ-समुद्रफल-चरपरा, गरम, वातविनाशक, भूतबाधाको दूर करनेवाला, त्रिदोष, दावानलदोष, कफरोग और भ्रान्तिको हरनेवाला है।

अन्यच्च।

समुद्रस्यफलंचोष्णंतिक्तंचैवत्रिदोषजित्। वातंचभूतबाधांचकफंभ्रान्तिंशिरोरुजम्॥ दोषंदावानलाख्यंचनाशयेदितिकीर्तितम्।जलेनघृष्ट्वापीतंचेत्कृमिनाशकरंपरम्॥नि० र०)

अर्थ-समुद्रफल-गरम, कडवा, त्रिदोषनाशक तथा वात, भूतबाधा, कफ, भ्रान्ति, शिरोरोग और दावानलाख्य दोषोंको दूर करे है। इसको जलमें घिसकर पीनेसे कृमिरोग दूर होता है।

विवरण। इसके वृक्ष कोंकणदेशकी ओर अधिकतासे होते हैं, इस वृक्ष पर डोरे आते हैं उन डोरोंमेंसे तीन धारवाल वडी इलायचीके समान फल निकलते हैं। उनको समुद्रफल कहते हैं।

ब्रह्मदण्डी नामानि।



ब्रह्मदण्डचजदण्डीचकण्टपत्रफलाचसा॥

अर्थ-ब्रह्मदण्डी, अजदण्डी, कण्टपत्रफला।

संस्कृतभाषामें	ब्रह्मदण्डी।
हिन्दीभाषामें	ब्रह्मदण्डी, (उटकटारा)।
वंगभाषामें	छागलदाँडी, वामनदाँडी।
मराठीभाषामें	ब्रह्मदण्डी।
गुजरातीभाषामें	ब्रह्मदण्डी, तलकण्टो।
कर्णाटकीभाषामें	ब्रह्मदण्डी।
अंग्रेजीभाषामें	थिस्टल। Thistle
लैटिन्भाषामें	ट्रिकोलीपीसूग्लेवररिना। Tricholapsis glaberrina

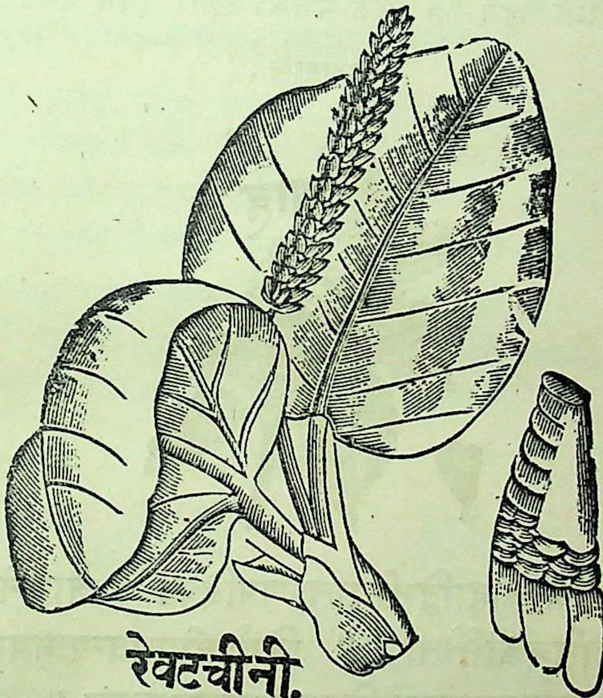
ब्रह्मदण्डीगुणाः।

ब्रह्मदंडीभवेदुष्णातिक्ताकफविनाशनी।
वातरोगश्चशोफंचनाशयेदितिकीर्त्तिता॥ (नि०र०)

अर्थ-ब्रह्मदण्डी-गरम, कडवी, कफनाशक तथा वातरोग और सूजन को दूर करे है।

विवरण । इसका क्षुप होता है, इसके पत्ते और फलोंपर कांटे होते हैं यह प्रायः जंगलमें अधिकतासे होती है ।

रेवट्टचीनीनामानि ।



रेवटचीनी.

रेवट्टचीनीचपीताचगंधिनीपीतमूलिका ।

अर्थ–रेवट्टचीनी, पीता, गंधिनी पीतमूलिका (पीतमूली) ।

संस्कृतभाषामें	पीतामूली ।
हिन्दीभाषामें	रेवत (ट्ट) चीनी ।
वंगभाषामें	रेउचीनी ।
मराठीभाषामें	रेवाचीनी ।
अंग्रेजीभाषामें	रुबर्ब ।
लैटिन्भाषामें	रेइरेदिक्स ।
फारसीभाषामें	रेवन ।
अरबी भाषामें	रावन ।

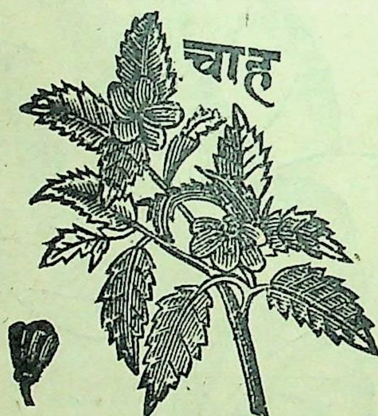
रेवट्टचीनीगुणाः ।

रेवट्टचीनीकटुस्तिक्ताबल्यासामृदुरेचनी ॥
दन्त्यजीर्णमतीसारंवह्निमांद्यमरोचकम् ॥
विट्संगंशीतपित्तश्चदुष्टव्रणविरोहिणी ।

अर्थ-रेवद्चीनी-चरपरी, कडवी, बलकारक, मृदुरेची तथा अजीर्ण अतिसार, मंदाग्नि, अरुचि, विड्बंध, शीतपित्त और दुष्टव्रणको दूर करे है।

विवरण। रेवद्चीनीका क्षुप होताहै, जड अर्थात् कंद पीले रंगका होताहै इसीको रेवद्चीनी कहते हैं। इसके सत्तको उझारे देवन कहते हैं।

चाहनामानि।



चाहंतुचविकाचाहाद्वितीयातूष्णपत्रिका । जायतेदक्षिणदेशेसाचाहेतिप्रकीर्त्तिता ॥ निर्गुण्डीपत्रवत्पत्रापरद्वीपादिहागता । अपरातृणचाहेतितृणरूपासुराष्ट्रजा ॥

अर्थ-चाह, चविका, चाहा। यह नाम चाहके हैं। दूसरे प्रकारकी चाहके नाम उष्णपत्रिकादि हैं। चाह दक्षिणदेशमें उत्पन्न होती है, चाह इसनामसे सर्वत्र प्रसिद्ध है। इसके पत्ते निर्गुण्डीके पत्तोंके समान होते हैं और यह दूसरे द्वीपसे आई है अर्थात् पहिले हिन्दुस्थानमें नहीं होतीथी। और एक तृणचाह होती है जिसको संस्कृतमें तृणचाह, तृणरूपा और सुराष्ट्रजा कहते हैं।

संस्कृतभाषामें	चाह।
हिन्दीभाषामें	चाः।
वङ्गभाषामें	चाह।
मराठीभाषामें	चहा।
गुजरातीभाषामें	चा।
अंग्रेजीभाषामें	टी। Tea
लैटिन्भाषामें	थियाचीनेनसीस्। Theaehinensis
फारसीभाषामें	चाखताई।

चाहगुणाः ।

तीक्ष्णोष्णातुवराचाहादीपनीपाचनीलघुः । कफपित्तहरीचैव किंचिद्वातप्रकोपिनी ॥ द्वितीयातृणरूपायासुसुगंधासुराष्ट्रजा । ज्वरघ्नीपाचनीहृद्याकफकासनिवर्हणी ॥

अर्थ—चाह-तीक्ष्ण, गरम, कषेली, अग्निको दीपन करनेवाली, पाचक, हलकी, कफपित्तनाशक और कुछेक वातको कुपित करनेवाली है। दूसरी तृणरूप, सुगंधित और सुराष्ट्रदेशमें जो उत्पन्न होती है वह तृणचाह ज्वरनाशक, पाचक, हृदयको हितकारी तथा कफ और खाँसीको दूर करे है।

विवरण । चाहा पहिले चीन आदि देशोंसे आतीथी किन्तु अब भारतके अनेक भागोंमें चाहकी खेती अधिकतासे होनेलगी है। हमारे भारतवासियोंको भी देखादेखी चाहका अधिक शौक बढने लगा है।

तमाखुनामानि ।



तमाखुःक्षारपत्राचकृमिघ्नीधूम्रपत्रिका ।

अर्थ—तमाखु, क्षारपत्रा, कृमिघ्नी, धूम्रपत्रिका (वज्रभृङ्गी, ताम्रकुट्टिक)

संस्कृतभाषामें	क्षारपत्रा ।
हिन्दीभाषामें	तमाखु ।
वंगभाषामें	तमाकू ।
मराठीभाषामें	तम्बाखु ।
गुजरातीभाषामें	तमाकु ।

अंग्रेजीभाषामें	इंडियनटोबाको । Indian tabacco
लैटिन्भाषामें	नकोटिनाटोबाकं । Nicotiana tbbacum
फारसीभाषामें	तम्बाकु ।
अरबीभाषामें	तम्बाक ।

तमाखुगुणाः ।

तमाखुःपित्तलस्तीक्ष्णश्चोष्णोवस्तिविशोधनः । मदकृद्भ्रामकस्तिक्तोदृष्टिमांद्यकरःसरः ॥ वामकःकटुकोरुच्योवातस्यानुविलोमकः।कफकासश्वासवातकोष्ठवातकृमीञ्जयेत्॥ दंतशुक्रदृष्टिरुजोलिक्षायूकादिकान्गदान् । वृश्चिकादिविष शोथंनाशयेदितिकीर्तितः ॥

अर्थ—तमाखु–पित्तकारक, तीक्ष्ण, गरम, वस्तिशोधक, मदकारक, भ्रमकारक, कडवा, दृष्टिको मंद अर्थात् कम करनेवाला, सारक, वमनकारक, चरपरा, रुचिकारक, वातानुलोमक तथा कफ, खाँसी, श्वास, वात, कोष्ठवात, कृमिरोग, दंतरोग, शुक्रदोष, दृष्टिरोग, लीख, जूँ, वृश्चिक आदिका विष और सूजनको दूर करे है।

विवरण । तमाखुके क्षुप सर्व देशोंमें होते हैं।

ईषद्गोलनामानि ।

ईषद्गोलंस्निग्धबीजंश्लक्ष्णजीरश्चकीर्त्तितः ॥

अर्थ—ईषद्गोल, स्निग्धबीज, श्लक्ष्णजीर (स्निग्धजीरक, श्लक्ष्णजीरक)

संस्कृतभाषामें	ईषद्गोल ।
हिन्दीभाषामें	ईसबगोल ।
मराठीभाषामें	इसबगोल ।
गुजरातीभाषामें	उथमुंजीरु ।
तैलङ्गीभाषामें	इस्पगुल ।
अंग्रजीभाषामें	ईस्पगुलसीड । Isphagl Seed
लैटिनभाषामें	प्लेन्टेंगोइस्पगुल्। Plantango isphagula
फारसीभाषामें	इस्पगुल ।
अरबीभाषामें	बजरकतूना ।

ईषद्गोलगुणाः ।

ईषद्गोलंपरंवृष्यंमधुरंग्राहिशीतलम् ।

पिच्छिलंतुवरंकिंचिद्वातकृत्कफपित्तहृत् ॥
रक्तातीसारास्रपित्तंनाशयेदितिकीर्त्तितम् ।

अर्थ ईसबगोल-अत्यन्तपुष्टिकारक, मधुर, मलरोधक, शीतल, पिच्छिल, कषेला, किंचित् वातकारक, कफपित्तविनाशक, रक्तातिसार और रक्तपित्तनाशक है ।

विवरण । ईसबगोल खेतोंमें बोयाजाताहै इसके क्षुप होतेहैं ईसबगोल किसीप्राचीन ग्रंथमें नहीं लिखा केवल मोरेश्वरकृत वैद्यामृत और निघंटुसंग्रहमें लिखाहै मालूम होताहै कि, यह प्रथम यूनानी चिकित्साकी पुस्तकोंमेंसे अनुभव करके लिखागयाहै ।

सुधामूलीनामानि ।

अमृताजीवनीजीवासुधामूल्यमृतोद्भवा ।
प्राणदाप्राणभृत्प्रोक्तावीरकंदामताबुधैः ॥

अर्थ-अमृता जीवनी, जीवा, सुधामूली, अमृतोद्भवा, प्राणदा, प्राणभृत् और वीरकंदा ।

संस्कृतभाषामें	सुधामूली ।
हिन्दीभाषामें	सालममिश्री ।
मराठीभाषामें	सालंमिश्री ।

सुधामूलीगुणाः ।

दीपनीतुसुधामूलीशुक्रकृद्बलवर्द्धनी । रक्तदोषहरीहृद्याकामसंजननीपरा ॥ रसायनीपरंवृष्यावयःस्थापुष्टिदामता । (आ.सं.)

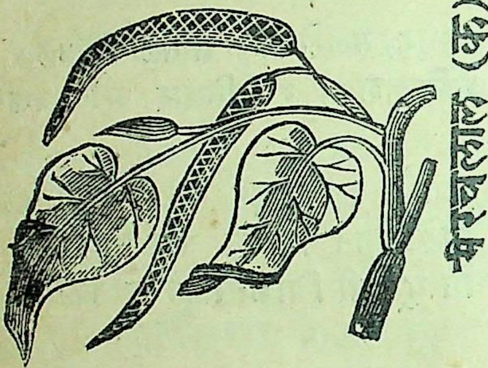
अर्थ-सालममिश्री-अग्निप्रदीपक, शुक्रजनक, बलकारक, रक्तदोष निवारक, हृदयको हितकारी, कामदेवको उत्पन्न करनेवाली, रसायन, अत्यन्त वीर्य्यवर्द्धक, अवस्थास्थापक, और पुष्टिकारकहै ।

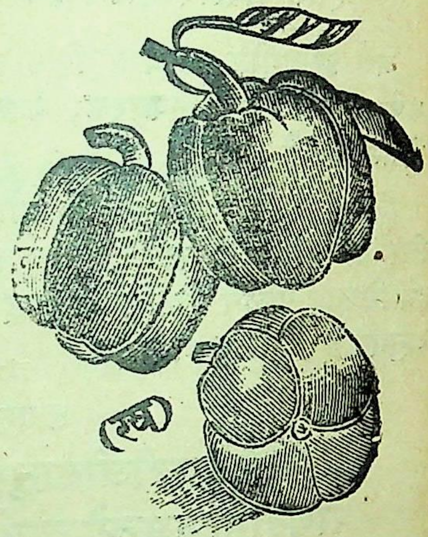
विवरण । सालममिश्री हिमालय और तिब्बत आदि पर्वतोंपर उत्पन्न होती है कन्द सफेदरंगका होता है । दूसरी सालममिश्री काबुल-बलखबुखारा आदि देशोंसे आती है । और अनेक धूर्त्त आलू, प्याज, लहसुन, अरबी आदि कंदोंके द्वारा कृत्रिम सालममिश्री बनाकर बेचते हैं ।

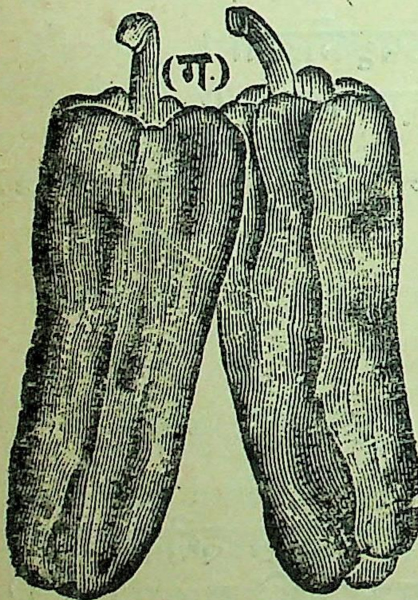
रक्तमरिचनामानि ।

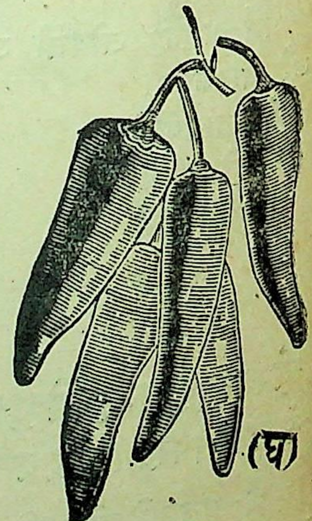
कटुवीरोज्ज्वलातीक्ष्णातीव्रशक्त्यजडेतथा ॥

अर्थ-कटुवीरा, उज्ज्वला, तीक्ष्णा, तीव्रशक्ति, अजडा (कुमरिच, रक्तमरिच,)









संस्कृतभाषामें	कटुवीरा ।
हिन्दीभाषामें	लालमिरच ।
वंगभाषामें	लंकामरिच, झाल ।
मराठीभाषामें	लालमिरची ।
औत्कलीभाषामें	नोकोमरिच ।
अंग्रेजीभाषामें	कायअपेपर ।
लैटिन्‌भाषामें	कापूर्सिवाक्से
फारसीभाषामें	फिल्फिलेसुर्ख ।

कटुवीरागुणाः ।

कटुवीराग्निजननीबलासघ्नीचदाहिनी । हन्त्यजीर्णविषूचीश्चव्रणंक्लिन्नंसुदारुणम्।तन्द्रांमोहंप्रलापश्चस्वरभेदमरोचकम्॥

अर्थ—लालमिरच—अग्निप्रदीपक, बलासनाशक, दाहजनक, तथा अजीर्ण, विषूचिका, दारुण और क्लिन्न व्रण, तन्द्रा, मोह, प्रलाप, स्वरभेद और अरुचिको दूर करे है ।

विवरण । लालमरिचके क्षुप मकोयके क्षुपके समान होते हैं, फूल सुफेद रंगके आते हैं फल अपक्व अवस्थामें हरे और पकनेपर पीले होकर लाल हो जाते हैं । मिरच छोटी बडी देशी, देशान्तरीय अनेक प्रकारकी होती है ।

वनकुलत्थनामानि ।

कुलत्थादृक्प्रसादाचप्रोक्तारण्यकुलत्थिका ।
कुलानीलोचनहिताचक्षुष्याकुम्भकारिका ॥

अर्थ—कुलत्था, दृक्प्रसादा, अरण्यकुलत्थिका, कुलानी, लोचनहिता, चक्षुष्या, कुम्भकारिणी (कुलत्थिका, कुल्माष, कुरुबिल्वक, काननोत्था चिपिटा-

संस्कृतभाषामें	कुलत्था ।
हिन्दीभाषामें	वनकुलथी, चाक्षु ।
वंगभाषामें	वनकुलथी ।
मराठीभाषामें	रानकुलीथ, रानहुलगें ।
गुजरातीभाषामें	चमेडथ, आंख्यनुभरण ।
कर्णाटकीभाषामें	कएणकुटकीनबीज ।
अंग्रेजी भाषामें	फोरलीव्डकेशिया । Four leved cassia
लैटिन्भाषामें	केशियाएवसस् । Cassiaasbus
फारसीभाषामें	चश्मक् ।
अरबीभाषामें	चश्मिझज् तश्मीज ।

अस्य गुणाः ।

वन्योद्भवःकुलित्थस्तुकटुस्तिक्तश्चशीतलः।व्रणरोपणकारीचचक्षुष्योऽर्शविनाशकः ॥ कफशूलविषस्फोटकडूहिक्काविनाशकः।नेत्ररोगमलस्तम्भमाध्यानंचविनाशयेत् ॥
(नि० र०)

अर्थ-चाक्षु (कुलित्थ)-चरपरी, कडवी, शीतल, व्रणको भरनेवाली, नेत्रोंको हितकारी, बवासीरको दूर करनेवाली तथा कफ, शूल, विष, स्फोट, कण्डू, हिक्का, नेत्ररोग, मलस्तम्भ और आध्मान रोगको हरनेवालीहै ।

विवरण । वनकुलथीके क्षुप वनमें होतेहैं । फूल कोयलके समान लगतेहैं इसके ऊपर फली आती हैं दूसरे प्रकारकी वनकुलथीका क्षुप छत्तासा होताहै ।

माहाराष्ट्रीनामानि ।



महाराष्ट्रीचांचराष्ट्रीचतीक्ष्णामरहट्टिकामता ॥

अर्थ-महाराष्ट्री, राष्ट्री, तीक्ष्णा, मरहट्टिका ।

संस्कृतभाषामें	महाराष्ट्री ।
हिन्दीभाषामें	मरेठी ।
मराठीभाषामें	मराठी ।
गुजरातीभाषामें	मरेठी ।
अंग्रेजीभाषामें	पेनिरोयल Pennyroyal
लैटिन्भाषामें	मेन्थाप्युलेजियं MenthaPulegium
फारसीभाषामें	बाबुनेगाउ ।
अरबीभाषामें	उकहोवान ।

महाराष्ट्रीगुणाः ।

महाराष्ट्रीकटुस्तीक्ष्णासोष्णावातकफार्तिहृत् ॥ (शो. नि.)

अर्थ-मरेठी-चरपरी, तीक्ष्ण, गरम तथा वात और कफकी पीडाको दूर करतीहै ।

विवरण । मरेठीके बडे २ क्षुप होतेहैं, पत्ते तुलसीके समान और इसमें नीले तथा लाल रंगके डोरे लगतेहैं यह अकरकरेके समान होतीहै ।

कीटमारीनामानि।



कीटारिःकीटमारीचभृंगीकीटकहातथा ॥

अर्थ-कीटारि, कीटमारी भृङ्गी, कीटकहा।

संस्कृतभाषामें कीटमारी।
हिन्दीभाषामें कीडामारी।
मराठीभाषामें किडामार।
गुजरातीभाषामें कीडामारी।
तैलिङ्गीभाषामें गीरीदागुटापा।
अंग्रेजीभाषामें बेक्टीएटेडबर्थवर्ट Bracteab Birthwort
लैटिन्भाषामें एरिष्टोलोचियाब्रेकटीका Aristoloehia bracteata

अस्या गुणाः।

वातश्लेष्मज्वरहरासंध्यस्थिनिप्रसारिणी ॥

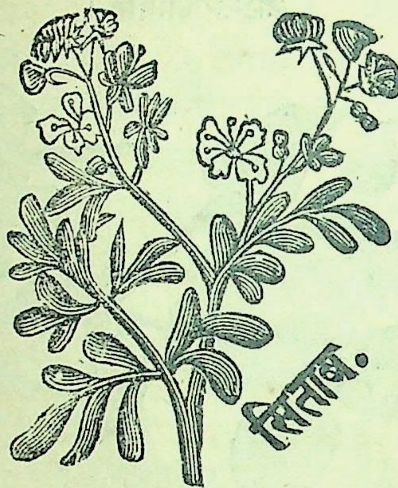
अर्थ-कीडामारी-वातकफज्वरनाशक, तथा संधि और अस्थियोंको फैलानेवाली है।

विवरण। कीटामारीके क्षुप होतेहैं विशेष करके खेतोंमें उत्पन्न होजातीहै, इसपर डोरे आतेहैं, वह डोरे कच्ची अवस्थामें हरे रंग और रेखायुक्त होतेहैं। पकनेपर उनमेंसे अपने आप फटकर काले रङ्गके बीज निकलते हैं।

सर्पदंष्ट्रानामानि।

सर्पदंष्ट्रापीतपुष्पागुच्छपत्राविषापहा ॥

अथ-सर्पदंष्ट्रा, पीतपुष्पा, गुच्छपत्रा, विषापहा।



संस्कृतभाषामें सर्पदंष्ट्रा ।
हिन्दीभाषामें सिताव ।
मराठीभाषामें सताप ।
गुजरातीभाषामें सताब ।
अंग्रजीभाषामें कोमनरु । Commonrne
लेटिन्भाषामें रुटाग्रेवियोलेन्स Ruta Graveeolabs
फारसीभाषामें इस्पंद ।
अरबीभाषामें हरमल ।

सर्पदंष्ट्रागुणाः ।

सर्पदंष्ट्रासराचोष्णातिक्ताकफविनाशिनी ।
वातनाशकरीप्रोक्ताविचारज्ञैश्चिकित्सकैः ॥ (नि.र.)

अर्थ-सिताव-सारक, गरम, कडवी, कफनाशक और वातको हरने- वाली है ।

विवरण । सितावक क्षुप बाग, पुष्पवाटिका और घरगमलोमें मनुष्य लगालेते हैं । सिवाय निघण्टुरत्नाकरक और किसी प्राचीन ग्रन्थमें सिताब नहीं है ।

उष्ट्रकंटनामानि ।

उष्ट्रकंटोथकण्टालुः करमादनएवसः ॥

अर्थ-उष्ट्रकण्ट, कण्टालु, करमादन (उत्कंटक, कण्टफल, शृगाल,शुन- काशन, तीक्ष्णाग्र, वृत्तगुच्छ, मुखदंतरुजापह, उत्कटोत्कट)

संस्कृतभाषामें उष्ट्रकंट ।

हिन्दीभाषामें	ऊँटकटीर ।
मराठीभाषामें	उटकटारा, उतांटी ।
गुजरातीभाषामें	उत्कंटो, शूलियो ।
अंग्रजीभाषामें	थिस्टल । Thistle
लैटिन्भाषामें	एकिनोपूस एकीनटस् ।Echinops echinatus

अस्या गुणाः ।

उत्कण्टकःकटुस्तिक्तःकफवातहरोलघुः ।
तन्मूलपानतःस्त्रीणांशीघ्रप्रसवकारकः ॥ (शो. नि.)

अर्थ–ऊँटकटीरा–चरपरा, कडवा, कफवातनाशक, हलका, इसकी जडको जलमें पीसकर पीनेसे स्त्रियोंके शीघ्र प्रसव होजाता है ।

अन्यच्च ।

उत्कंटारुचिदाचोष्णातिक्तावृष्याप्युदाहृता । मूत्रकृच्छ्रंपित्तवातंमेहंतृष्णांचहृद्रुजम् ॥ विस्फोटकंनाशयतिबीजमस्यास्तु शीतलम् । वृष्यंतृप्तिपरंचवमधुरंचप्रकीर्त्तितम् ॥

अथ–ऊँटकटीरा–रुचिकारक, गरम, कडवा, वीर्य्यवर्द्धक तथा मूत्रकृच्छ्र, पित्तवात, प्रमेह, तृषा, हृदयरोग और विस्फोटकको दूर करे है । इसके बीज–शीतल, वीर्य्यवर्द्धक, तृप्तिकारक और मधुर हैं ।

विवरण । ऊंटकटेरीके क्षुप होते हैं, इसके पत्ते और फलोंमें कांटे होते ह । इसकी डालियोंमें तीक्ष्ण अणिवाले कांटेयुक्त डोरे लगते हैं । हमारे देशमें कोई कोई अजान वैद्य सत्यानासी कटेरीकोही ऊंटकटीरा गाते हैं ।

नखरञ्जकनामानि ।

तिमिरःकोकदंताचद्विवृन्तोनखरंजकः ।

अर्थ—तिमिर, कोकदंता, द्विवृन्त, नखरंजक (मेदिका, रागगर्भा, रंजका, नखरंजिनी, सुगंधपुष्पा, रागांगी, यवनेष्टा) ।

संस्कृतभाषामें	नखरंजक ।
हिंदीभाषामें	मेहदी ।
वंगभाषामें	मेदी ।
मराठीभाषामें	मेंदी ।
गुजरातीभाषामें	मेदी ।

तैलिङ्गीभाषामें	गोरंटम् ।
अंग्रेजीभाषामें	हेना । Henna
लैटिन्भाषामें	लॉझोनिया आल्बा । Lansonia alba
फ़ारसीभाषामें	हिना ।
अरबीभाषामें	हिन्नाअकान् काफलयुन ।

अस्या गुणाः ।

रक्तरंगादाहहंत्रीवान्तिकृच्छ्लेष्मकुष्ठहा ॥
बीजमस्याग्राहकंतुशोषकंचप्रकीर्त्तितम् ॥
भूतग्रहाणांदोषंचज्वरंचैवविनाशयेत् ।

अर्थ—मेंदी-दाहनाशक, वमनकारक, कफ और कोढको दूर करे है। इसके बीज-मलरोधक, शोषक तथा भूतबाधा, ग्रहदोष और ज्वरको दूर करे हैं।

विवरण। मेंदीके वृक्ष बागोंमें बोए जाते हैं, पत्ते छोटेछोटे होते हैं, मेंदीके फूल मौरके समान, छोटे सफेदरंगके और सुगंधियुक्त होते हैं इसके पत्तोंको पीसकर हाथपांवपर लगानेसे लाल होजाते ह तथा गरमी और हाथपांवादिकी दाह दूर होजाती है। कितनेक देशी वैद्य इसके बीजोंको रेणुका कहते हैं।

अन्धपुष्पीनामानि ।

अंधपुष्पीचरोमालुगोंलोमीदार्विकापिच ।
अधोमुखाधेनुजिह्वाअधःपुष्पीचसप्तधा ॥

अर्थ—अंधपुष्पी, रोमालु, गोलोमी, दार्विका, अधोमुखा, धेनुजिह्वा, अधःपुष्पी (अवाक्पुष्पी, सुरसा, गंधपुष्पिका)

संस्कृतभाषामें	अंधपुष्पी ।
हिन्दीभाषामें	अंधाहुली, औंधाहुली ।
वंगभाषामें	चोरहुली ।
मराठीभाषामें	पाथरी ।
गुजरातीभाषामें	उंधाफुली ।
लैटिन्भाषामें	ट्राइकोडेस्माइंडिकं । Trichodesma indicum

अस्यागुणाः।

अन्धपुष्पीचचक्षुष्यागूढगर्भापकर्षिणी ॥

अर्थ-अंधाहुली-नेत्रोंको हितकारी और गूढगर्भको अपकर्षण करनेवाली है।

विवरण-अंधाहुलीका क्षुप होता है उसकी डंडी कुछ ललाईलिये होती है, पत्ते लम्बे गोल और रोमयुक्त होते है, फल असमानी रंगका और नीचेको रहता है।

दण्डोत्पलनामानि।

दण्डोत्पलेसहदेवाविषमज्वरनाशिनी। दण्डोत्पलात्रिधाप्रोक्तापुष्पवर्णप्रभेदतः। गोवन्दनीदेवसहापीतदंडोत्पलं स्मृतम्। रक्तदण्डोत्पलाप्राहुर्विश्वदेवातथापरा ॥ श्वेतदंडोत्पलंप्रोक्तंदंडोत्पलाचदेविका।

अर्थ-दण्डोत्पला, सहदेवा और विषमज्वरनाशिनी यह साधारण दण्डोत्पलके नाम है। दण्डोत्पल पुष्पोंके भेदसे तीनप्रकारका है। पीत, रक्त और श्वेत, गोवन्दनी, देवसहा, (गंधवल्ली, सहदेवी. सह) यह पीलेदण्डोत्पलके नाम हैं। विश्वदेवा, (सहदेवा) यह लालदण्डोत्पलके नाम हैं। दण्डोत्पला देविका यह सफेद दण्डोत्पलके नाम हैं।

संस्कृतभाषामें	सहदेवा, दण्डोत्पला।
हिन्दीभाषामें	दण्डोत्पल तीनप्रकारका।
वंगभाषामें	हानिपोलाडानकुनी, दुंडकलस।
मराठीभाषामें	ओसारी।
गुजरातीभाषामें	शदरडी। (Ageratnm Conyzoides)
लैटिन्भाषामें	वरनोनियासाई निरिया। Vernonia Cineria.

त्रिविधदण्डोत्पलगुणाः।

दण्डोत्पलंक्षयश्वासकासजिद्वह्निदीपनम् ॥

अर्थ--तीनों प्रकारके दंडोत्पल-क्षय, श्वास और खाँसीको दूर करे हैं तथा अग्निको दीपन करे है।

विवरण। दण्डोत्पलक क्षुप प्रायः अनूप देशमें होते हैं, फूल सफेद, पीला, लाल और किसी किसीपे कालरंगकाभी आता है, पत्ते रानतुलसीके

समान होतेहैं, दण्डोत्पलकी टोपी बनाकर शिरपै धारण करनेसे ज्वर दूर होता है।

रुदन्तीनामानि ।

स्याद्रुदंतीस्रवत्तोयासंजीवान्यमृतस्रवा ।
रोमांचिकामहामांसीचणपत्रीमधुस्रवा ॥

अर्थ-रुदंती, स्रवत्तोया, संजीवनी, अमृतस्रवा, रोमाञ्चिका, महामांसी चणपत्री, मधुस्रवा (सुधास्रवा)

संस्कृतभाषामें	रुदन्ती ।
हिन्दीभाषामें	लाणा (पु) रुदन्ती, रुद्रवन्ती ।
मराठीभाषामें	रुदन्ती, ।
गुजरातीभाषामें	पलियो ।
कर्णाटकीभाषामें	अलुगुणि ।
लैटिन्भाषामें	क्रेसाक्रेटिका Cressa Cretica

रुदन्तीगुणाः ।

रुदन्तीकटुतिक्तोष्णाक्षयक्रिमिविनाशिनी ।
रक्तपित्तकफश्वासमेहहारीरसायनी ॥ (रा. नि.)

अर्थ-रुदन्ती-चरपरी, कडवी, गरम, रसायन तथा क्षय, क्रिमि, रक्तपित्त, कफ, श्वास और प्रमेहनाशक है।

अन्यच्च ।

रुदन्तीवह्निकृद्वृष्यापित्तघ्नीचरसायनी ॥ (रा. व.)

अर्थ-रुदन्ती-अग्निजनक, वीर्य्यवर्द्धक, पित्तनाशक और रसायन है।

विवरण। रुदन्तीके बहुत छोटे २ क्षुप होते हैं, यह क्षुप प्रायः खारी भूमि और जलके समीप उत्पन्न होते हैं, पृथ्वीपर फैल जाते हैं, पत्ते चनोंके पत्तोंके समान होते हैं इसपै ओस पडनेसे जलके बिन्दु टपकते हैं उन जलके बिंदुओंसे नीचेकी पृथ्वी भीगी रहती है इसकारण इसको रुदंती कहते हैं।

चिरपोटानामानि ।

चिरपोटादीर्घपत्राकुंतलीतिक्तकामता ॥

अर्थ-चिरपोटा, दीर्घपत्रा, कुंतली, तिक्तका (पर्पोटी, रक्तहंत्री, फलाम्ला, ज्वरकारिणी)

संस्कृतभाषामें चिरपोटा ।
हिन्दीभाषामें पनसोखा, पटकोना, चिरपोटन (प०)
मराठीभाषामें चिरपोटाणी ।
गुजरातीभाषामें पपोंटी ।
लैटिन्भाषामें फाईसेलिस् मिनीमा Physalis Minima P. Indica
अरबीभाषामें काकनुज् ।
अरबीभाषामें हबुलबुहल्याहुदहबअल्काकद ।

अस्या गुणाः ।

चिरपोटाहिमारूक्षाभेदिनीश्वासकासजित् ।

अर्थ–पनसोखा--शीतल, रूखा, भेदक तथा श्वास और खाँसीको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

पपोंटीपानलेपाभ्यांरक्तविद्रावणीध्रुवम् ।
तस्याःपक्वफलंपित्तश्लेष्मलंज्वरकारिच ॥

अर्थ--चिरपोटेके पत्तोंको पीसकर लेप करनेसे रक्तद्रावण होता है, इसके पके फल पित्त, कफ और ज्वरको उत्पन्न करनेवाले हैं ।

विवरण । इसके क्षुप होते हैं, इसमें बडे २ बोदने लगते हैं उनके भीतर सफेद रंगके फल होते हैं वह फल कच्ची अवस्थामें कडवे और पकनेपर खट्टे तथा मीठे होजाते हैं ।

कुरण्डिकानामानि ।

कुरण्डिकाक्षेत्रभूषाकुरण्टीक्षेत्रनाशिनी ॥

अर्थ--कुरण्डिका, क्षेत्रभूषा, कुरंटी, क्षेत्रनाशिनी (विकट, सकुरण्ड)
संस्कृतभाषामें कुरण्डिका ।
हिन्दीभाषामें कुरंडवृक्ष (दादमारि० दे०)
मराठीभाषामें लघुकुरंडिका, थोरकुरण्डिका ।
गुजरातीभाषामें नानोआगियो, मोटोआगियो ।
लैटिन्भाषामें एमानियाबेसिकेटोरिया । Ammania Vesicatoria

कुरण्डिकागुणाः ।

कुरण्डिकासरारुच्यागुर्वीचाग्निप्रदीपनी । नाशिनीकफवातानांवैद्यैस्तुपरिकीर्त्तिता ॥ बृहत्कुरंडिकाशीतापाकेमाध्वी-

कटुःस्मृता । तिक्ताक्षाराचरुक्षाचसरावृष्याजडामता ॥ वातलपित्तलावस्तौवातकारिकफापहा । रक्तदोषंमूत्रकृच्छ्रं-नाशयेदितिकीर्त्तिता ॥ (नि. रा.)

अर्थ--कुरण्ड- सारक, रुचिकारक, भारी अग्निप्रदीपक तथा कफ और वातको दूर करे है । बडा कुरण्ड--शीतल पचनेमें मधुर, चरपरा कडवा, क्षार, रूखा, सारक, वीर्य्यवर्द्धक, जड, वातकारक पित्तजनक, वस्तिमें वातकरने-वाला तथा कफ, रुधिरविकार और मूत्रकृच्छ्रको दूर करे है ।

विवरण । कुरण्ड प्रायः घरबाहर खेतबागोंमें अधिकतासे होताहै फूल सुफे-दरंगका आता है ।

कुम्भिकानामानि ।

कुम्भिकावारिपर्णीचवारिमूलीखमूलिका ।
आकाशमूलीकुतृणंकुमुदाजलवल्कलम् ।

अर्थ -कुम्भिका, वारिपर्णी, वारिमूली, खमूलिका, आकाशमूली, कुतृण, कुमुदा, जलवल्कल (श्वेतपर्णा, अशकुम्भी, पानीयपृष्ठज, कुम्भी, वारिमूली, खली, पर्णी, पृश्नी, वारिकर्णिका, दलाढक, वारिकर्णि) ।

संस्कृतभाषामें	कुम्भिका, वारिपर्णी ।
हिन्दीभाषामें	जलकुम्भी, कुम्भी (काई) ।
वंगभाषामें	पाना, टोकापाना ।
मराठीभाषामें	जलमंडवी ।
गुजरातीभाषामें	जलकुम्भी ।
कर्णाटकीभाषामें	हांवलं ।
तैलिङ्गीभाषामें	तुटिकूर ।

कुम्भिकागुणाः ।

वारिपर्णीहिमातिक्तालघ्वीस्वाद्वीसराकटुः ।
दोषत्रयहरीरूक्षाशोणितज्वरशोषकृत् ॥

अर्थ-जलकुम्भी–शीतल, कडवी, हलकी, स्वादिष्ठ, सारक, चरपरी, त्रिदो-षनाशक रूखी तथा रुधिरविकार और ज्वरको दूर करे है ।

विवरण । जलकुम्भी अर्थात् काई प्रायः बडे छोटे सब तालाबोंमें जलके-ऊपर हरे पीले रंगकी पडी होती है ।

शैवालनामानि ।

शैवालंजलनीलीस्याच्छैवलंजलजंचतत् ॥

अर्थ- शैवाल, जलनीली, शैवल, जलज (शेपान, शेवाल, शिवल, शेपाल, जलनीलिका, जलनील, अम्बुचामर, जलकुन्तल, मंजुल, सैवाल, शेबाल, वारिचामर, सलिलकुण्डल, हठपर्णी, अम्बुताल, जलशूक, जलाश्चन, अरक, जलकेश, कावार, जलपृष्ठजा)

संस्कृतभाषामें शैवाल ।
हिन्दीभाषामें सिवार ।
बंगभाषामें शैओयाला ।
मराठीभाषामें शवाळ ।
गुजरातीभाषामें शेवाल, लील ।
तैलिङ्गीभाषामें नाचु ।
कर्णाटकीभाषामें हांवळ ।
लैटिन्भाषामें सिरटोफाइल सबमस ।Searatophyllum Submersum
फारसीभाषामें पशमेंदरा, जामेंगूक, नबाल ।
अरबीभाषामें तुहलब ।

शवालगुणाः ।

शैवालंशीतलंस्निग्धंसन्तापव्रणनाशनम् ॥

अर्थ–सिवार–शीतल, स्निग्ध तथा सन्ताप और व्रणको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

शैवालःशीतलःस्निग्धस्तिक्तःस्वादुर्लघुःपटुः । सरःसन्तापव्रणजिज्ज्वरपित्तत्रिदोषहा । रक्तदोषस्यशमनोविज्ञेयश्चचिकित्सकैः ॥

अर्थ–सिवार–शीतल, स्निग्ध, कडवी, स्वादिष्ठ, हलकी, नमकीन सारक तथा सन्ताप, व्रण, ज्वर, पित्त, त्रिदोष और रुधिरके विकारोंको दूर करेहै ।

विवरण । सिवारभी जलके ऊपर बालोंसी आच्छादित रहती है । यह कईक प्रकारकी होतीहै सिवार इस देशमें चीनी साफ करनेसें विशष करके काममें ली जाती है ।

अत्यम्लपर्णीनामानि ।

अत्यम्लपर्णीतीक्ष्णाचकण्डूरावल्लिसूरणा ।

वल्लीकरवडादिश्चवनस्थारण्यवासिनी॥

अर्थ-अत्यम्लपर्णी, तीक्ष्णा, कण्डूरा, बल्लिसूरणा, करवडबल्ली, बनस्था, अरण्यवासिनी।

संस्कृतभाषामें	अत्यम्लपर्णी ।
हिन्दीभाषामें	रामचना (खटुआ)।
मराठीभाषामें	कडमडवल्ली, आम्बटवेल ।
गुजरातीभाषामें	खाट खटूववेल्य ।
कर्णाटकीभाषामें	हेग्गोली ।
लैटिन्भाषामें	वाईटीस पेंटाफाईला Vitis pent aphylla

अस्या गुणाः ।

अत्यम्लपर्णीतीक्ष्णाम्लाप्लीहशूलविनाशिनी ।
वातहृदीपनीरुच्यागुल्मश्लेष्मामयापहा ॥ (रा. नि.)

अर्थ-अत्यम्लपर्णी-तीक्ष्ण, अम्ल, अग्निको दीपन करनेवाली, रुचिकारक, तथा प्लीहा, शूल, वात, गुल्म और कफ इनरोगोंको दूर करै है।

विवरण-बडी बेल होती है, पत्ते जिमीकन्दके समान एक डण्डीमें पांच पाँच होते ह, फल करोंदके समान झुमकोमें लगते हैं इस वेलके पत्ते डण्डी सब खट्टी होती है।

मखान्ननामानि ।

मखान्नंपद्मबीजाभंपानीयफलमित्यपि ॥

अर्थ-मखान्न, पद्मबीजाभ, पानीयफल ।

संस्कृतभाषामें	मखान्न ।
हिन्दीभाषामें	मखाना ।
वंगभाषामें	मखाना ।
मराठीभाषामें	मखाणे ।
गुजरातीभाषामें	मखाना ।
दे०	गीलागिच ।
लैटिन्भाषामें	युर्यलोफेरोक्स । Furyeli ferox

मखान्नगुणाः ।

मखान्नंपद्मबीजस्यगुणैस्तुल्यंविनिर्दिशेत ॥ (भा. प्र.)

अर्थ—मखानेके गुण कमलगट्टेके समान हैं ।

विवरण—मखाने कमलगट्टोंको भूनकर बनाये जाते हैं इस कारण इसके गुण कमलगट्टेके समान जानने ।

मर्यादवल्लीनामानि ।



मर्य्यादामारवल्लीचसागरामन्मथापिच ।
युग्मपत्रारक्तपुष्पातथासागरमेखला ॥

अर्थ—मर्य्यादा, मारवल्ली, सागरा, मन्मथा, युग्मपत्रा, रक्तपुष्पा, सागरमेखला ।

संस्कृतभाषामें	मर्य्यादालता ।
हिन्दीभाषामें	मरजादवेल ।
दक्षिणीभाषामें	दोपाचीलता ।
वंगभाषामें	छगलंकुरी (ढा०) ।
कोकणीभाषामें	मर्य्यादावेल ।
गुजरातीभाषामें	मरजादवेल्य ।
लैटिन्भाषामें	आईपोमिया बिलोब । Ipomoea biloba

अस्य गुणाः ।

मर्य्यादवाल्लिकाशीताग्राहिणीसारकागुरुः ।
पाककालेचोषणास्याद्वातलागर्भकार्षिणी
विषूचिकांचशूलंचवान्तिचामंचनाशयेत् । (नि०र०)

अर्थ—मरजादवेल-शीतल, मलरोधक, सारक, भारी, पचनेमें चरपरी, वातकारक, गर्भको अपकर्षण करनेवाली तथा विषूचिका, शूल, वमन, और आमको दूर करे है।

विवरण। मरयादवेल प्रायः अनूपदेशमें अर्थात् नदीके निकट अधिकतासे होती है, इसके पत्ते अश्मन्तकवृक्षके समान दो दो एकत्र होते हैं, फूल लाल होता है।

झिल्लनामानि।

झिल्लोरक्तापहोनीलःसुझिल्लोमृदुपत्रकः॥

अर्थ—झिल्ल, रक्तापह, नील, सुझिल्ल, मृदुपत्रक।

संस्कृतभाषामें झिल्ल।
हिन्दीभाषामें झिल।
मराठीभाषामें सुरकुट।
गुजरातीभाषामें झिल्य।
लैटिन्भाषामें इंडिगोफोरा पोसिफ्लोरा। Indigofera pausiflora

अस्य गुणाः।

झिल्लोवातास्रकंहन्तिशितवीर्य्योऽग्निदीपनः।

अर्थ—झिल्ल वातरक्तको दूर करनेवाला, शीतल और अग्निको दीपन करनेवाला है।

विवरण-झिलका क्षुप होता है, इसकी छाल लाल रंगकी होती है, पत्ते बहुत छोटे होते हैं, फूल लाल होता है, फली छोटी होती है।

एकवीरनामानि।

एकवीरोमहावीरःसकृद्वीरः सुवीरकः।
एकादिवीर्य्यपर्य्यायोवीरश्चषड्विधाह्वयः॥

अर्थ—एकवीर, महावीर, सकृद्वीर, सुवीरक, एकादिवीर्य्यपर्य्याय, वीर।

संस्कृतभाषामें एकवीर।
हिन्दीभाषामें एकवीर।
मराठीभाषामें असाणा।
गुजरातीभाषामें एकलकंटो।
कर्णाटकीभाषामें गंडुविक।
लैटिन्भाषामें ब्रायोडेलियामोण्टेना। Briodelia montana

एकवीरगुणाः ।

एकवीरास्मृतातिक्ताचात्युष्णावातहामता ।
पक्षाघातंपृष्ठकटीशूलंचैवविनाशयेत् ॥ (नि. र.)

अर्थ—एकवीर वृक्ष-कडवा, अत्यन्त गरम, वातनाशक तथा पक्षाघात, पृष्ठ और कटिशूलको दूर करेहै ।

विवरण-एकवीरके जंगलमें बडे बडे वृक्ष होते हैं, इसमें बडा, मोटा और अलग २ एक एक काँटा होताहै, पत्ते पाखरके समान होते हैं, फल छोटे छोटे झुमखोंमें लगते हैं ।

कंथारीनामानि ।

कंथारीकंथरीकंथादुर्धर्षातीक्ष्णकण्टका ।
तीक्ष्णगंधाक्रूरगंधादुःप्रवेशाष्टधाभिधा ॥

अर्थ-कंथारी, कंथरी, कंथा, दुर्धर्षा, तीक्ष्णकण्टका, तीक्ष्णगंधा, क्रूरगंधा, दुःप्रवेशा (अहिंस्रा, जालि, गृध्रनखी, कंथारिका, क्रूरकर्म्मा, वक्रकंटकी, कन्या, कपालकुलिका, अम्लफला, गुच्छगुल्मिका)

संस्कृतभाषामें	कंथारी ।
हिन्दीभाषामें	कंथारी, कंतार ।
मराठीभाषामें	कंथार ।
गुजरातीभाषामें	कंथार ।
कर्णाटकीभाषामें	कांतरु ।
लैटिन्भाषामें	केपेरिस सिपिएरिया ।

अस्या गुणाः ।

कंथारीदीपनीरुच्याकटूष्णातिक्तकामता ।
रक्तदोषंकफवातग्रन्थिरोगंचनाशयेत् ॥
स्नायुरोगंचशोफंचनाशयेदितिकीर्त्तिता । (नि. र.)

अर्थ--कंथारी-अग्निदीपक, रुचिकारक, चरपरी, गरम, कडवी तथा रुधिरविकार, कफ, वात, ग्रन्थिरोग, स्नायुरोग और सूजनको दूर करे है ।

विवरण कंथारी तीन चार जातिकी होतीहै एक हरी डंडीकी होतीहै इसके पत्ते गोल होतेहैं, फूल सुफेद रंगके और सुफेद केशरयुक्त होतेहैं, फल छोटे छोटे चनेके बराबर होते हैं ।

आरिनामानि ।

आरिःसदानिकोद्दालाज्ञेयाखदिरपत्रिका ॥

अर्थ--आरि, सँदानिका, उद्दाला, और खदिरपत्रिका (बल्लिखदिर, स्वादिखल्लरी)

संस्कृतभाषामें आरि ।
हिंदीभाषामें आरी खैरबेल ।
मराठीभाषामें आरई वेल्याखेर आराटी ।
कर्णाटकीभाषामें सीगुरी ।
गुजरातीभाषामें खेरवेल्य ।
लैटिन्‌भाषामें एकेश्यापिनेटा । Acacia Penata

अस्या गुणाः ।

आरिःकषायकटुकातिक्तारक्तार्त्तिपित्तजित् ।
त्रिदोषघ्नीरसेपाकेचाम्लोष्णानिलकासहा ॥ (रा. नि.)

अर्थ--आरी–कषेली, चरपरी, कडवी रस और पाकमें अम्ल गरम, तथा रुधिरविकार, पित्त, त्रिदोषवात और खांसीको दूर करे है ।

विवरण । आरीकी वेल होती है, इसपै–कांटे होते हैं, पत्ते छोटे छोटे खैरके समान होते हैं, फली चपटी नीली रंगकी होती है, फूल तन्तुयुक्त कीकरके फूलके समान होते हैं ।

भ्रमरच्छल्लीनामानि ।

भृंगाह्वाभ्रमराह्वाचक्षीरद्रुर्भृंगमूलिका ॥
उग्रगंधाचभृंगत्वक्छल्लीभ्रमरछल्लिका ॥

अर्थ--भृंगाह्वा, भ्रमराह्वा, क्षीरद्रु, भृंगमूलिका, उग्रगधा, भृंगत्वक्, छल्ली, भ्रमरछल्लिका ।

संस्कृतभाषामें भ्रमरछल्ली ।
हिंदीभाषामें भमरछल्ली ।
मराठीभाषामें भ्रमरखाली ।
गुजरातीभाषामें भमरछाल्य ।
कर्नाटकीभाषामें उप्पुशके ।
लैटिन्‌भाषामें हाईमोनोडिक्टियं एक्सेलसं Hyruonodictyon Axoel (Sum)

अस्या गुणाः ।

भृंगाह्वाकटुकाचोष्णातिक्तारुच्याग्निदीपनी ।
कण्ठ्याचसर्वदोषघ्नीप्रोक्तापूर्वैर्भिषग्वरैः (नि. र.)

अर्थ--भ्रमरछल्ली--चरपरी, गरम, कडवी, रुचिकारक, अग्निको दीपन करनेवाली, कण्ठको हितकारी और सर्वदोषनाशक है ।

विवरण । भ्रमर, शालीक वृक्ष बडे २ जंगलमें होतेहैं, पत्ते वादामके समान होतेहैं, फली अत्यन्त पतली आतीहै इसकी लकडी सफेद रंगकी और अत्यन्त श्रेष्ठ होतीहै प्रायः इसकी लकडीके तलवारके म्यान बनाये जातेहैं ।

अजगंधानामानि ।

तिलवन.



अजगंधाबस्तगंधाखरपुष्पासुगंधिका ।
काबरीबर्बरागंधातुंगीपूतिमयूरिका ॥

अर्थ–अजगंधा, बस्तगंधा, खरपुष्पा, सुगंधिका, काबरी, बर्बरागंधा, तुंगी, पूतिमयूरिका, (अविगंधा, अविगंधिका, ब्रह्मगर्भा, ब्राह्मी)

संस्कृतभाषामें	अजगंधा ।
हिन्दीभाषामें	तिलवन ।
मराठीभाषामें	कानफोडी ।
गुजरातीभाषामें	तळवणी ।
कर्णाटकीभाषामें	नीलवणी ।
तैलिङ्गीभाषामें	वामिंटा, अजगंधि ।
मला०	काखेला, पावक्का ।
लैटिन्भाषामें	जिनेन्ड्रोप्सीसपेंटाफिला Gynandropsis-pentaphylla

अजगंधागुणाः ।

अजगंधाकटूष्णास्याद्वातगुल्मोदरापहा ।
कर्णव्रणार्तिशूलघ्नीपीताचदंजनहिता ॥ (रा. नि.)

अर्थ-तिलवन--चरपरी, गरम, तथा वात, गुल्म, उदररोग, कर्णरोग व्रण, और शूलको दूर करे है । इसमें पीली तिलवन अंजनमें हितकारी है ।

विवरण । तिलवन वनबाग जंगल आदिमें होतीहै यह दो प्रकारकी है, एकपर सफेद फूल और दूसरीपर नीलपीत मिश्रित रंगके फूल आतेहैं दोनोंमें फली आतीहैं बीन काले रंगके निकलते हैं ।

वृद्धदारुकनामानि ।

वृद्धदारुकआवेगीजन्तुकोदीर्घवल्लरी ।
वृद्धाःकोटरपुष्पीस्यादजांत्रीछगलांत्रिका ॥

अर्थ-वृद्धदारुक, आवेगी, जन्तुक, दीर्घवल्लरी, वृद्ध, कोटरपुष्पी, अजांत्री, छगलांत्रिका (ऋक्षगंधा, छगलांत्री, जुंग, ऋष्यछगलांत्री, छगला अंत्री, झुंगा, छगली, जुंगक, श्याम, वृष्यगंधा, दीर्घबालुका, छागलांत्रिका वृद्धकोटरपुष्पी)

जीर्णदारुनामानि ।

जीर्णदारुर्द्वितीयास्याज्जीर्णाफंजीसुपुष्पिका ।
अजरासूक्ष्मपत्राचविज्ञेयाचषडाह्वया ॥

अर्थ-जीर्णदारु, जीर्णा, फंजी, सुपुष्पिका, अजरा और सूक्ष्मपत्रा ।

संस्कृतभाषामें	वृद्धदारु, जीर्णदारु ।
हिन्दीभाषामें	विधारा, कालाविधारा ।
वंगभाषामें	वितारक, वीजतारक, विद्धडक ।
मराठीभाषामें	श्वेतबरधारा ।
गुजरातीभाषामें	वरधारो ।
लेटिन्भाषामें	रोरियासेंटलोइ डजि । Roureasantaloi (Des)
कर्णाटकीभाषामें	एरडुमुष्ठे ।
तेलिंगीभाषामें	चद्रपुडी ।

द्विविधवृद्धदारुगुणाः।

वृद्धदारुद्वयंगौल्यंपिच्छिलंकफवातहृत्।
बल्यंकासामदोषघ्नंद्वितीयंस्वल्पवीर्य्यदम् (रा० नि०)

अर्थ-दोनों विधारे-गौल्य, पिच्छिल, कफवातनाशक, बलकारक, तथा खाँसी और आमदोषको दूर करे हैं। इनमें दूसरा विधारा अल्पवीर्य्यवाला है

अन्यच्च।

साधारणोवृद्धदारुःकटुस्तिक्तःकषायकः। रसायनोष्णो मधुरोमेध्यःस्वर्य्यःसरोग्निदः॥ कान्तिधातुकरोबल्योरुच्यःपुष्टिकरोलघुः। उपदंशंपांडुरोगंक्षयंकासंप्रमेहकम्॥ वातरक्तंचामवातंवातंशोफंकफंजयेत्।(नि०र०)

अर्थ-विधारा--चरपरा, कडवा, कषेला, रसायन, गरम, मधुर, मेधाजनक, स्वरको शुद्ध करनेवाला, सारक, अग्निप्रदीपक, कान्तिजनक, धातुजनक, बलकारक, रुचिकारक, पुष्टिको करनेवाला, हलका (तथा उपदंश, पांडुरोग, क्षय, खाँसी, प्रमेह, वातरक्त, आमवात, वात, सूजन और कफको दूर करनेवाला है।

विवरण-विधारा समुद्र शोषके समान जानपडता है क्योंकि, समुद्रशोष और विधारेके फूल, पत्ते, वेल, काण्ड आदिमें कुछभी अन्तर नहीं दीखता। इसी कारण कितनेक वैद्य विधारा और समुद्रशोषको एकही मानते हैं। विधारा दो प्रकारका होताहै एक वृद्धदारु, दूसरा जीर्णदारु, जीर्णदारुको फंजी कहतेह फंजीके गुणदोष आगे लिखेहैं।

समुद्रशोषगुणाः।

समुद्रशोषःसम्प्रोक्तोवातलोग्राहकोमतः।
अतिपित्तकरश्चैवकफकृच्चमतोबुधैः॥ (नि०र०)

अर्थ-समुद्रशोष-वातकारक, ग्राही, अत्यन्त, पित्तकारक और कफके उत्पन्नकरनेवाला है।

समुद्रपुष्पगुणाः।

समुद्रपुष्पंतुवरंमधुरं शीतलंमतम्।
रक्तदोषंकफंपित्तंकामलांचविनाशयेत्॥
गर्भिणीकष्टशमनंमुनिभिःपरिकीर्त्तितम्।

अर्थ-समुद्रफूल--कषेला, मधुर, शीतल तथा रुधिरविकार, कफ. पित्त, कामला और गर्भिणीके कष्टको दूर करे है, समुद्रशोष और समुद्रफूल यह दोनों विधारेके ही भेद हैं।

फंजिकानामगुणाश्च ।

फञ्ज्यांतुफंजिकापद्माह्यजांत्रीचापराजिता । फंजीतुशीतलावृष्याग्राहकातुवराकटुः ॥ ऊषणामधुराबल्यास्निग्धाकफकरागुरुः । विष्टम्भकारिणीवातपित्तहृद्रोगकासहा ॥क्लेशामदोषशमनी इतिपूर्वभिषग्वराः । (नि०र०)

अर्थ-फंजी-शीतल, वीर्य्यवर्द्धक, मलरोधक, कषेली, चरपरी, गरम, मधुर, बलकारक, स्निग्ध, कफकारक, भारी, विष्टम्भकारक तथा वात, पित्त, हृदयरोग, खाँसी, क्लेश और आमदोषको दूर करे है।

विवरण। फंजीकी वेल खेतकी बागपर लगादेते ह, फल समुद्रशोषके समान होते हैं,। पत्तेभी समुद्र शोषके समान किन्तु कुछ छोटे होतेहैं इसके पत्तोंके पतोडे बनाते हैं।

संस्कृतभाषामें	फंजी, फंजिका, पद्मा, अजांत्री, अपराजिता ।
हिन्दीभाषामें	फंजी ।
मराठीभाषामें	फांजी ।
गुजरातीभाषामें	फांग्य ।
लैटिन्भाषामें	हिविया आर्नेटा।

वेल्लतरुनामानि ।

वेल्लतरुर्दीर्घमूलोवीरद्रुर्बहुवारकः ॥

अर्थ--वेल्लतरु, दीर्घमूल, वीरद्रु, बहुकारक । (क्षुधाकुशलसंज्ञक, वीरवृक्ष, कृच्छ्रारि)

संस्कृतभाषामें	वेल्लतरु ।
हिन्दभाषामें	वरवेल, बिल्वान्तर
मराठीभाषामें	वेल्लतूर ।
तैलिङ्गीभाषामें	वेणुतुरुचेद्दु ।
कर्णाटकीभाषामें	ओडंडू ।
तामिलीभाषामें	विडात्तर ।
लैटिन्भाषामें	डेस्मान्थस् सिनरियस् ।

अस्य गुणाः ।

वेल्लतरुस्तु कटुकः पथ्यश्चोष्णोग्निदीपनः। रसेपाकेचातिक्तः स्याद्ग्राहकोवातरोगहा ।मूत्रकृच्छ्राश्मरीसंधिशूलघ्नोयोनि रोगहा । मूत्रघातस्यशमनऋषिभिः परिकीर्तितः॥ (नि.र.)

अर्थ-वेलंतर-चरपरा, पथ्य, गरम, अग्निप्रदीपक, रस और पाकमें कडवा, मलरोधक, वातरोगनाशक तथा मूत्रकृच्छ्र, पथरी, संधिशूल, योनिरोग और मूत्राघातरोगको दूर करे है ।

विवरण । वेलन्तरके वृक्ष मारवाडदेशमें तथा नर्मदानदी और चर्म्मण्वती आदि नदियोंके तटपर होते हैं, इसपर कांटे होते हैं, पत्ते छोंकरके समान छोटे २ होवे हैं, फूल पांचों रंगके आते हैं ।

कर्कटनामानि ।

कर्कटः कार्कटः कर्कः क्षुद्रधात्रीसमः स्मृतः ।
क्षुद्रामलकसंज्ञश्चपोक्तः कर्कफलश्चषट् ॥

अर्थ-कर्कट, कार्कट, कर्क, क्षुद्रधात्री, क्षुद्रामलकसंज्ञ, कर्कफल, (गांगेरुक कर्कटक, मृगलेंडक, तोदन, क्रन्दन, मृगविट्सदृश)

संस्कृतभाषामें	कर्कटफल ।
हिन्दीभाषामें	गंगेरुवा, काठआमला ।
वंगभाषामें	काठ आमला ।
मराठीभाषामें	कुडकां काकणां ।
गुजरातीभाषामें	करपटां ।
कर्णाटकीभाषामें	बालिगे ।
लैटिन्भाषामें	गेरुगा पिनेटा। Garugapindatta

अस्या गुणाः ।

तोदनंग्राहकंचाम्लंलघूष्णंचाग्निदीपकम् । पित्तलंचफलं चास्याःपक्वन्तुमधुरंमतम्॥ स्निग्धंचतुवरंप्रोक्तंकफवातहरं स्मृतम् । गांगेरुकतुतुवरमम्लंचोष्णंगुरुस्मृतम्॥रक्तपि-त्तकफकरंसारकंवातहारकम् । पक्वंगांगेरुकफलंरुचिरंच गुरुस्मृतम् ॥ वातरक्तहरांपित्तनाशकंमुनयोजगुः ॥ (नि०र०)

अर्थ—काठआमला-मलरोधक, खट्टा, हलका, गरम, अग्निप्रदीपक और पित्तकारक है। इसके पकेफल-मधुर, स्निग्ध, कषेले और कफवातनाशक हैं दूसरे प्रकारका काठआमला-कषेला, खट्टा, गरम, भारी, रक्तपित्तकारक कफकारक, सारक वातविनाशक है। इसके पक्क फल-रुचिकारी भारी, वातरक्तहारी और पित्तको नष्ट करनेवाले हैं।

विवरण। काठआमलेके वृक्ष प्रायः पर्वतोंपर अधिकतासे होते हैं, पत्ते पंक्तिवार होते हैं; फल आमलेके समान बहुत छोटे २ होते हैं।

किंकिणीनामानि।

किंकिणीव्याघ्रघंटीचगोविंदीकटुकन्दरी ॥

अर्थ—किंकिणी, व्याघ्रघंटी गोविंदी, कटुकंदरी. (ग्रन्थिल, व्याघ्रपाद, वर्त्तल, व्याघ्रनखी, कृशांगी, कंटकलता, कारंभा, तापसप्रिया)

संस्कृतभाषामें	किंकिणी।
हिन्दीभाषामें	किंकिणी।
मराठीभाषामें	वाघंटी।
गुजरातीभाषामें	वागाटी।
अंग्रेजीभाषामें	थोर्नीकेपरब्रश। Thornycaperbrush
लैटिन्भाषामें	केपेरिस् होरिडा। Gappsris Aorrida

अस्या गुणाः।

किंकिणीतुवरातिक्तापित्तश्लेष्महराहिमा।
तत्फलंवातलंत्वामंपक्वंस्वादुत्रिदोषजित् ॥ (म०नि०)

अर्थ-किंकिणी-कषेली, कडवी, पित्तकफनाशक और शीतल है। इसके कच्चे फल-वादी और पक्के फल त्रिदोषनाशक हैं।

अन्यच्च।

व्याघ्रघंटापित्तलोष्णारुच्यांविषकफापहा।
फलंचास्यास्तुतिक्तोष्णंविषूचीकफवातजित्।
त्रिदोषहारिणीप्रोक्तावैद्यशास्त्रविशारदः ॥ (निर०)

अर्थ- किंकिणी-पित्तकारक, गरम, रुचिकारक तथा विष और कफनाशक है। इसके फल-कडवे, गरम तथा विषूचिका, कफ, वात और त्रिदोषनाशक हैं।

विवरण । किंकिणीके वृक्ष वन और पर्वतोंपर होते हैं । इस वृक्षपर बेरीके समान बांके कांटे होते हैं, फल लम्बे, गोल और बीचमें गांठदार होते हैं फलका मध्यमभाग हिंगोटके समान होता है ।

गोरक्षीनामानि ।

गोरक्षीसर्पदंडीचदीर्घदंडीसुदंडिका ।
चित्रलागंधबहुलागोपालीपंचपर्णिका ॥

अर्थ-गोरक्षी, सर्पदंडी, दीर्घदंडी, सुदंडिका, चित्रला, गंधबहुला, गोपाली, पंचपर्णिका ।

संस्कृतभाषामें	गोरक्षी ।
हिन्दीभाषाम	गोरखइमली ।
मराठीभाषामें	गोरखचिंच ।
गुजरातीभाषामें	रुखडो ।
लैटिन्भाषामें	एडन्सोनिया डिजिटेट ।
अरबीभाषामें	हवहबु ।

अस्या गुणाः ।

गोरक्षीमधुरातिक्ताशिशिरादाहपित्तनुत् ।
विस्फोटवान्त्यतीसारज्वरदोषविनाशिनी ॥ (रा. नि.)

अर्थ-गोरखइमली--मधुर, कडवी,शीतल तथा दाह, पित्त, विस्फोट,वमन, अतीसार और ज्वरको दूर करे है ।

विवरण । इसका बडा वृक्ष होता है एक डण्डीमें सेमलके समान पांच २ पत्ते होते हैं, फूल बडा और सफेद कमलके समान होता है, फल तोंबी अथवा तोरईके समान आते हैं ।

पातालतुम्बीनामानि ।

गर्त्तालाबुचभूतुम्बीदेवीवल्मीकसम्भवा ।
दिव्यतुम्बीनागतुम्बीशक्रचापसमुद्भवा ॥

अथ--गर्त्तालाबु, भूतुम्बी, देवी, वल्मीकसम्भवा, दिव्यतुम्बी, नागतुम्बी, शक्रचापसमुद्भवा ।

संस्कृतभाषामें	पातालतुम्बी ।
हिन्दीभाषामें	पातालतोम्बी ।

गुजरातीभाषामें	पातालतुम्बडी ।
मराठीभाषामें	नागतुम्बी ।
लैटिन्भाषामें	बोविस्टास्पिसिस् । Bovista sp eicces

भूतुम्बीगुणाः ।

भूतुम्बीकटुकातिक्ताविषदोषविनाशिनी । प्रसूतिकादोषसम्भूतातिसारहरापरा ॥ दंतबंधंज्वरंशोथंसस्वेदंसप्रलापकम् । जयेदात्मप्रभावेणह्यचिंत्यावस्तुशक्तयः ॥

अर्थ--भूतुम्बी--चरपरी, कडवी, विषदोषविनाशक तथा प्रसूतके समयका अतिसार, दाँतोंकी जडता और सूजन, स्वेद तथा प्रलापयुक्त ज्वरको दूर करे है ।

विवरण । पातालतुम्बी खेतोंमें और कैरोंमें होतीहै इसपर बहुत बारीक और पीले रंगके छींटेवाले विच्छूके डंकके समान कांटे होते हैं, फांदेके बीचमें तोम्बीके समान पातालतुम्बी होती है । इसमें अनेक चमत्कारिक गुणहैं जो कि, अन्य औषधियोंमें नहीं देखे जाते ।

हेरंबनामानि ।

हेरम्बःखरपत्रःस्यात्कंटकीदंतधावनः ।

अर्थ–हेरम्ब, खरपत्र, कंटकी, दंतधावन ।

संस्कृतभाषामें	हेरम्ब ।
हिन्दीभाषामें	हेरंब–वज्रदंती ।
मराठीभाषामें	दातूणी, हेरंबवृक्ष ।
गुजरातीभाषामें	वज्रदंती ।
लैटिन्भाषामें	एपिकार्पस ओरीएण्टेलीस । EpiearpusOrientalis

अस्य गुणाः ।

हेरम्बवृक्षःकफहावातनाशकरोमतः ।
हेरम्बवृक्षमूलंतुप्रोक्तंवांतिकरंबुधैः ॥

अर्थ–हेरम्बवृक्ष--कफनाशक और वातको दूर करे है । हेरंब वृक्षकी जड वमनकारक है ।

विवरण । इसका बडा वृक्ष होताहै, पत्ते बेरीके समान होतेहैं, इसकी दतोन करते हैं ।

वृश्चिकानामानि।

वृश्चिकानखपर्णीचापिच्छिलाप्यलिपत्रिका।

अर्थ-वृश्चिका, नखपर्णी, पिच्छिला, अलिपत्रिका (दुस्पर्शा, धूम्रपुष्पा, दहना, नक्रदंष्ट्रिका, सर्पदंष्ट्री, विषघ्नी, सूतवल्लभा)

संस्कृतभाषामें	वृश्चिका।
हिन्दीभाषामें	विछवाघास।
वंगभाषामें	विछुटी।
मराठीभाषामें	आग्या, विचवा।
कर्णाटकीभाषामें	इंगुले, माससा, होत्रगोत्रे।
तामिलीभाषामें	कायचोरी।
तैलिंगीभाषामें	दुलगादि।
तु०	पच्चीरंगी।
मल०	कोसादुवा।
गुजरातीभाषामें	खाजवणी।

लैटिन्भाषामें जिरार्डिनिया हिटरोफाईला Gvrardmia heterophylla.

अस्या गुणाः।

वृश्चिकापिच्छिलाम्लास्यादंत्रवृद्ध्यादिदोषनुत्॥ (रा. नि.)

अर्थ-विछवा-पिच्छिल, खट्टी और अंत्रवृद्ध्यादि दोषनाशक है।

अन्यच्च।

वृश्चिकालीतुबल्यास्यात्तिक्ताकटीविबन्धनुत्।
हृद्याचोष्णावस्तिशुद्धिकारिणीरक्तपित्तहा॥
अरोचकंनाशयतीत्येवमाहुर्मनीषिणः।

अर्थ--विछवा-बलकारक, कडवी, चरपरी, विबन्धनाशक, हृदयको हितकारी, गरम, वस्तिशोधक, रक्तपित्त और अरुचिको दूरकरेहै।

विवरण। विछवा कईप्रकारका होताहै, इसके वेल क्षुप और वृक्ष होतेहैं। इसपर कौंछके समान रुंआ होताहै।

तुवरनामानि।

तुवरःसागरोद्भूतःकुष्ठहाऽलसकापहः॥

अर्थ--तुवर, सागरोद्भूत, कुष्ठहा, अलसकापहा।

संस्कृतभाषामें	तुवर ।
हिन्दीभाषामें	तवरक ।
मराठीभाषामें	तीमर ।
गुजरातीभाषामें	तवरियां चेरियां ।
लैटिन्भाषामें	एविसिनीया टामेटासा Avicenia tomentosa

तुवर गुणाः ।

तुवरस्तुवरश्चोष्णोरसेपाकेचतिक्तकः ।
कफव्रणकृमीमेहकुष्ठज्वरविनाशनः ॥
आनाहमर्शशोफंचनाशयेदितितंजगुः । (नि. र.)

अर्थ--तुवर-कषेला, गरम, रसमें और पचनेमें कडवा, तथा, कफ व्रण, कृमि, प्रमेह, ज्वर, आनाह, बवासीर और सूजनको दूर करे है ।

विवरण । इसके वृक्ष समुद्र और नदियोंके तट पर होते हैं, फल इमलीके समान होते हैं इसके फलको पशुओंको देनेसे दूध अधिक बढ जाता है ।

एरण्डचिर्भिटनामानि ।



एरण्डचिर्भिटोवृक्षश्चिर्भिटानालिकादलः ।
वातकुम्भफलःप्रोक्तःसचैवमधुकर्कटी ॥

अर्थ—एरण्डचिर्भिटवृक्षको चिर्भिटा और नलिकादल कहते हैं। इसके फलोंको वातकुम्भफल और मधुककर्कटी कहते हैं।

संस्कृतभाषामें	वातकुम्भ।
हिन्दीभाषामें	अंडखरबूजा पोपैया।
मराठीभाषामें	पोपेया।
गुजरातीभाषामें	पोपयो, एरंडकांकडी, झाडचीभडी।
तैलिङ्गीभाषामें	पोपडचेट्टु।
अंग्रेजीभाषामें	पेपो। Papaw
लैटिन्भाषामें	केरिकापापैया। Caricapapaya
कर्णाटकीभाषामें	पप्पलसु।
तुर्कीमें	वप्पागाई।
तैलिङ्गीभाषामें	वोप्पई।
मला०	पप्पायम्।
तामिलीभाषामें	पप्पाई।

अस्यगुणाः।

वातकुम्भफलंग्राहिकफवातप्रकोपनम्।
तत्पक्वंमधुरंरुच्यंपित्तनाशकरंगुरु॥

अर्थ - अंडखर्बूजा-मलरोधक, कफ और वातको कुपित्त करे है, पक्का अण्डखर्बूजा-मधुर, रुचिकारक, पित्तनाशक और भारी है।

अन्यच्च।

मध्वेरण्डफलंपक्वंकिंचित्तिक्तञ्चमाधुरम्।
वृष्यंकफकरंहृद्यमुन्मादस्यविनाशकम्॥
मर्गोध्हरंचैवस्निग्धंवातविनाशनम्।

अर्थ-पक्का अंडखर्बूजा-किंचित्, कडवा, मधुर, वीर्य्यवर्द्धक, कफकारी, हृदयको हितकारी, उन्मादरोगको हरनेवाला, वध्मरोगको विनष्ट करनेवाला, स्निग्ध और वातविनाशक है।

विवरण। अंडखर्बूजेके वृक्ष प्रायः अंडके समान होते हैं। बल्कि यह अंड काही भेद है। पत्तेभी अंडकेसे होते हैं किन्तु यह वृक्ष बहुत लम्बे और सीधे होवे हैं। फल बडे २ लम्बे और गोल तीन चार एकत्र लगते हैं।

क्षुद्रबादामनामगुणाश्च ।

बदामःक्षुद्रसंज्ञस्तुक्षुद्रबीजोम्लमाधुरः ।
तुवरोग्राहिपित्तघ्नःशिशिरःकफशुक्रकृत् ॥

अर्थ—क्षुद्रबादाम और क्षुद्रबीज यह दो नाम देशी बादामके हैं ।
देशीबादाम-खट्टा, मधुर, कषेला, मलरोधक, पित्तनाशक, शीतल, कफ तथा शुक्रको करे है ।

विवरण । देशीबादामके वृक्ष प्रायः बाग और वन सर्वत्र होते हैं, पत्ते बराबर शाखाओंमें दोनों ओर होते हैं, फल अपक्व अवस्थामें हरे और खानेमें कषेले तथाखट्टे होते हैं और पकजानेपर लाल तथा मधुर होजाते हैं ।

संस्कृतभाषामें	क्षुद्रबादाम ।
वंगभाषामें	क्षुद्रबादाम ।
हिन्दीभाषामें	देशीबादाम ।
मराठीभाषामें	हिरवा बदाम ।
गुजरातीभाषामें	बदाम लीली ।
कर्णाटकीभाषामें	नतवदं ।
तैलिङ्गीभाषामें	वदम ।
अंग्रेजीभाषामें	आमण्ड । Almond
लैटिन्भाषामें	टरमिनेलियाकेटापा । Term manalias catappa

काम्बोजीनामगुणाश्च ।

कांबोजिन्यांचकाम्बोजीबहुपुष्पाबहुप्रजा ।
काम्बोजीग्राहिणीवातशोफरक्तविभेदकृत् ॥

अर्थ—काम्बोजिनी, काम्बोजी, बहुपुष्पा और बहुप्रजा यह काम्बोजीके संस्कृत नाम हैं ।

काम्बोजी—मलरोधक तथा वात, सूजन और रुधिरके विकारोंको दूर करे है ।

विवरण । इसका बडा वृक्ष होता है, पत्ते आमलेके पत्तोंकी समान होते हैं, इसकी शाखा लम्बी लम्बी होती हैं. फल गोल और अपक्व अवस्थामें हरे होते हैं और पकनेपर काले होजाते हैं ।

संस्कृतभाषामें	काम्बोजी ।
हिन्दीभाषामें	कम्बोई ।
बंगभाषामें	काम्बोजी ।
मराठीभाषामें	चिफली ।
गुजरातीभाषामें	खेडा कम्बोई ।
लाटिन्भाषामें	फाईलेन्थस् मलटीफ्लोरस् । Phylanthus Multi Florus
	फाइलेन्थस् रेक्टिक्युलेटस् । Phylanthus Recticuletus

अथ निर्विषीनामानि ।

निर्विषापविषाचैवाविविषाविषहापरा ।
विषहंत्रीविषाभावाह्यविषाविषवैरिणी ॥ (रा. नि.)

अर्थ-निर्विषा, अपविषा, विविषा, विषहा, विषहंत्री, विषाभावा, अविषा विषवैरिणी यह निर्विषीके नाम हैं ।

संस्कृतभाषामें	निर्विषी ।
हिन्दीभाषामें	निर्विषीघास ।
बंगभाषामें	निर्विषीघास ।
मराठीभाषामें	निर्विषी कचऱ्या सारखें झाड असतें ।
गुजरातीभाषामें	निर्विषी ।
कर्णाटकीभाषामें	निविषी ।
फारसीभाषामें	जदवार ।
लाटिन्भाषामें	डेल्फिनियं डिनुडेटं Delphineum-Denudatum

अस्या गुणाः ।

निर्विषीकटुकाशीताव्रणरोपणकारिणी ।
कफवातंरक्तदोषंविषंचैवविनाशयेत ॥

अर्थ—निर्विषी-कटु, शीतल, व्रणको भरनेवाली तथा कफ, वात, रुधिर-विकार और विषको नष्ट करे है ।

विवरण । निर्विषीघास मोथेकी समान होती है यह प्रायः हिमालय, हिमाचल, काश्मीर और केदार आदि पर्वतोंपर अधिकतासे उत्पन्न होती है,

इसका कंद अतीसकी समान होता है. यह सांप बिच्छू आदि अनेक प्रकारके विषोंको दूर करे है।

अथ नागजिह्वानामगुणाश्च ।

नाहौचनागजिह्वाख्यातिक्तपत्राक्षितौक्षुपः । कृमिहृत्क्षारकर्म्माचतथामभिजकः स्मृतः ॥

अर्थ—नाहु, नागजिह्वा. तिक्तपत्रा, क्षितौक्षुप, कृमिहृत, क्षारकर्म्मा अ मभिजक यह नागजिह्वाके नाम हैं।

संस्कृतभाषामें	नागजिह्वा ।
हिन्दीभाषामें	छोटा किरायता ।
वंगभाषामें	नागजिह्वा ।
मराठीभाषामें	तानवडीचें झाड ।
गुजरातीभाषामें	मामेजवो ।
लैटिन्भाषामें	हिपियन् ओरिएण्टल् । Hipian orientale

गुण—नागजिह्वा (छोटा किरायता) कटु, अत्यन्त तिक्त तथा कृमि वातरोग और ज्वरको दूर करे है।

विवरण। छोटे किरायतेके प्रायः चौमासेमें अनेक क्षुप उत्पन्न होजाते पत्ते अंगुलीकी समान लम्बे और पतले २ होते हैं, फल छोटे छोटे गो आते हैं।

अथ माकन्दीनामानि ।

माकन्दीबहुमूलाचमादिनीगंधमूलिका । एकविंशतिमूली चश्यामलागिरिकंदका ॥ मायिनीगिरिवर्य्याचगिरिमध्या गिरिप्रिया । वराहेष्टागिरिमतीवर्त्तीचतुर्दशाभिधा ॥ (रा. नि.

अर्थ-माकन्दी, बहुमूला, मादिनी, गंधमूलिका, एकविंशतिमूली, श्यामला गिरिकन्दका, मायिनी, गिरिवर्य्या, गिरिमध्या, गिरिप्रिया. वराहेष्टा, गिरिमती और वर्त्ती यह नाम हैं।

संस्कृतभाषामें	माकन्दी ।
हिन्दीभाषामें	माईमूल ।
वंगभाषामें	माद्राणी ।
मराठीभाषामें	मायमूले माईनी-मोगिनी-मायिणी ।

गुजरातीभाषामें गरमर।
कर्णाटकीभाषामें मागिणी।
लैटिन्भाषामें कोलेन्सबोर्ब्रुटस्। Colens 'Bor Brutus'

अस्या गुणाः।

माकन्दीमधुरातिक्ताकटुकादीपनीपरा।
रुच्यालपवातकृत्पथ्याजठरामयनाशिनी॥

अर्थ—माकन्दी-मधुर, तिक्त, कटु, अग्निप्रदीपक, रुचिकारक, अल्पवातकारक, पथ्य और उदररोगको दूर करे है।

अन्यच्च।

मायिनीतिक्तकातीक्ष्णामधुराग्निप्रदीपनी। रुच्याबलकरी चैवप्लीहवातकफान्जयेत्॥ गुल्मोदरानाहशीतज्वरनाशकरीमता। कन्दस्तुपाकेमधुरोनिकाशीपाण्डुशोफजित्। कृमिप्लीहापाण्डुगुल्मसंग्रहण्युदरार्शजित्॥ (नि० र०)

अर्थ—माई-तिक्त, तीक्ष्ण, मधुर, अग्निप्रदीपक, रुचिकारक, बलकारक तथा प्लीहा, वात, कफ, गुल्म, उदररोग, आनाह और शीतज्वरको नष्ट करे हैं। इसका कन्द-पाकमें मधुर, विकाशी तथा पांडुरोग और सूजनको दूर करे है तथा कृमि, प्लीहा, पांडु, गुल्म, संग्रहणी उदररोग और बवासीरको दूर करे है।

विवरण। माकंदी-खेत और बागोंमें बोई जाती है, इसके क्षुप होते हैं, नीचे अंगुलीके समान जड होती है, इसकी डंडी और कन्दी दोनोंका शाक बनाते हैं।

झुल्लपुष्पनामगुणाश्च।

झुल्लपुष्पंज्वलत्पुष्पःकृच्छ्रहालघुवृक्षकः।
पीतपुष्पःपंक्तिपत्रस्तथालज्जालुकः स्मृतः॥
झुल्लपुष्पःस्पृष्टमूत्रोमूत्रकृच्छ्रहरःपरः।

अर्थ—झुल्लपुष्प, ज्वलत्पुष्प, कृच्छ्रहा, लघुवृक्षक, पीतपुष्प, पंक्तिपत्र और लज्जालुक यह संस्कृत नाम हैं।

संस्कृतभाषामें जलपुष्प।
वंगभाषामें झलई।

मराठीभाषामें	झरेर ।
गुजरातीभाषामें	झरेर ।
लैटिन्भाषामें	वाइंओफिटंसेन्संटिवम् । ByophytnmSensatioum

गुण—जलत्पुष्प-मूत्रजनक और मूत्रकृच्छ्ररोगको दूर करे है ।

विवरण । इसका छोटा क्षुप होता है, फूल पीला आता है, लज्जावंतीके समान इसके पत्तेभी मनुष्यके स्पर्शसे तत्काल सिकुड जाते हैं ।

अथ ओखराडीनामगुणाश्च ।

औखराड्यांभिस्सटाचतडागमृत्तिकोद्भवा ।
भिस्सटाभस्मतैलेनसंयुतामरिचैर्युता ॥
मस्तकेपरितोलेपाद्व्रणान्हन्तिचिरोत्थितान् ॥

अर्थ—ओखराडी भिस्सटा और तडागमृत्तिकोद्भवा यह नाम हैं ।

संस्कृतभाषामें	ओखराडी ।
वंगभाषामें	ओषड ।
मराठीभाषामें	ओखराड्य ।
गुजरातीभाषामें	आखराड्य ।
लैटिन्भाषामें	मोल्युगोहिटी । MolluGohirta

गुण—इसकी भस्म बनाकर तेल और कालीमिरचोंके चूर्णके साथ मिलाकर शिरपर लेप करनेसे बहुत दिनोंके व्रण दूर होजाते हैं ।

विवरण । इसके छत्ते होते हैं, विशेषकरके जिस नदी या तालाबका जल सूख जाता है उसमें यह अधिकतासे होता है, इसमें बीज अधिक होते हैं, यह अनेक प्रकारके रोगोंमें अनुपान विशेषके साथ प्रयोग किया जाता है, मूत्रके रुकनेपर अथवा मूत्रकृच्छ्रमें यह अत्यन्त हितकारी है, इसको पीसकर शिरपर लगानेसे शिरकी खुजली, दाद, शोष और व्रण दूर होजाते हैं ।

झावुकनामगुणाश्च ।

झावुकःपिचुलोझावुरफलोवहुग्रन्थिकः ।
झावुकःकटुकस्तिक्तःमूत्रकृच्छ्रविनाशकः ॥

अर्थ—झावुक, पिचुल, झावू, अफल और बहुग्रन्थिक यह झाऊके संस्कृत नाम हैं ।

संस्कृतभाषामें	झावुक ।

हिन्दीभाषामें झाऊका वृक्ष।
बंगभाषामें झाऊगाछ।
मराठीभाषामें झावू, तिलच्यावृक्षभेद।
गुजरातीभाषामें झावू।

विवरण-झाऊके वृक्ष-प्रायः नदियोंकी रेतीमें होते हैं, पत्ते सरूके समान होते हैं, किन्तु सरूके माफिक लम्बे और सीधे नहीं होते, पेड झाडे-दार होते हैं, इसकी लकडी बहुत गांठदार और दृढ होती है, इसमें छोटे २ अनेक फल होते हैं।

राजाद्रिनामगुणाश्च।

राजाद्रिःस्याद्राजगिरिर्ज्ञातव्याराजशाकिनी ॥

संस्कृतभाषामें राजाद्रि, राजगिरि और राजशाकिनी यह नाम हैं।
हिन्दीभाषामें कलगाघास।
बंगभाषामें राजशाक, कलईशाक।
मराठीभाषामें राजगिरा।
गुजरातीभाषामें राजगरो।
कर्णाटकीभाषामें डोलगेदो निएरडु।
फारसीभाषामें अंगोझा।
अरबीभाषामें हमाहम।

गुणाः।

लघुराजगिरःप्रोक्तःकफकृत्सारकोगुरुः। निद्रालस्यकरःपथ्यःसारकश्चेतिशीतलः ॥ मलावष्टम्भकरणोरुचिदोतिगुरुःस्मृतः। पित्तनाशकरश्चैवऋषिभिःपरिकीर्तितः ॥

अर्थ-छोटा राजगिर-कफकारक, सारक, भारी, निद्रा और आलस्यको उत्पन्न करनेवाला, पथ्य, सारक, अत्यन्त शीतल, मलावष्टम्भकारक, रुचिकारी, भारी और पित्तनाशक है।

विवरण। इसके बडे २ क्षुप होते हैं, इसकी डण्डी मोटी होती है, इसके कच्चे पत्तोंका शाक बनाते हैं इसके बीजोंका फलाहार करते हैं।

सप्तपुत्री (कोशातकी) नामानि।

लघुकोशातकीग्राम्यासप्तपुत्रीस्मृताबुधैः ॥

अर्थ-लघुकोशातकी, ग्राम्या और सप्तपुत्री यह नाम हैं।

संस्कृतभाषामें	सप्तपुत्री ।
हिन्दीभाषामें	सतपुतीतोरई ।
वंगभाषामें	सातपुती ।
मराठीभाषामें	सातपुती ।
गुजरातीभाषामें	झुमखडां ।

अस्या गुणाः ।

सप्तपुत्रीशीतलास्याद्धृद्यापाकेकटुःस्मृता ।
स्निग्धापित्तविषंकासंज्वरंवातञ्चनाशयेत् ॥

अर्थ–सतपुतीतोरई–शीतल, हृदयको हितकारी, पचनेमें कटु, स्निग्ध तथा पित्त, विष, खांसी, ज्वर और वातको नष्ट करे है ।

विवरण । सतपुती तोरईकी वेल भी तोरईके समान होती है, पत्ते भी तोरईके समान होते हैं, फल कन्दूरीसे कुछ मोटे और परवलके समान गुच्छोंमें सात सात लगते हैं ।

वनप्सानामानि ।

वनप्सासूक्ष्मपत्राचनीलपुष्पाज्वरापहा ॥

अर्थ–वनप्सा, सूक्ष्मपत्रा, नीलपुष्पा और ज्वरापहा यह गुलवनप्साके नाम हैं ।

संस्कृतभाषामें	वनप्सा, पुष्पवनप्सा ।
हिन्दीभाषामें	गुलवनप्सा ।
वंगभाषामें	वानप्सा ।
मराठीभाषामें	वनप्सा ।
गुजरातीभाषामें	वनप्सा ।

अस्या गुणाः ।

वनप्साकटुतिक्तोष्णाशीतज्वरनिवारणी ।
कासश्वासहराबल्यावातपित्तकफापहा ॥

अर्थ--वनप्सा--कटु, तिक्त, गरम, शीतज्वरनाशक, खांसी और श्वासको हरनेवाली और त्रिदोषको दूर करे है ।

विवरण । वनप्सा प्रायः पर्वतोंपर होती है, इसके क्षुप छोटे २ कालापन लिये कुछ हरे अथवा धूसर रङ्गके होते हैं, फूल सपेद और नीलेरङ्गके आते हैं । कितनेक वैद्य त्रायमानको वनप्सा कहते हैं सो त्रायमानलता और वनप्साकी कुछ भी आकृति नहीं मिलती ।

आलुकनामगुणाश्च ।

आलुकंस्वादुकन्दश्चम्लेच्छकन्दंसुकन्दकम् ।

अर्थ—आलुक, स्वादुकन्द, म्लेच्छकन्द और सुकन्दक यह आलूके संस्कृत नाम हैं ।

संस्कृतभाषामें	आलुक ।
हिंदीभाषामें	आलू ।
बं०-गु-म०	सर्वभाषाओंमें प्रायः "आलू" इसी नामसे प्रसिद्ध है ।
अंग्रेजीभाषामें	पुटैटो । Potato

अस्य गुणाः ।

आलुकंस्निग्धमुष्णञ्चवृष्यंवातकफापहम् ।
दीपनंरुचिदंहृद्यंमधुरंग्राहिशोथनुत् ॥

अर्थ—आलू-स्निग्ध, गरम, वृष्य, वातकफनाशक, अग्निप्रदीपक, रुचिकारक, हृदयको हितकारी, मधुर, मलरोधक और सूजनको दूर करे है ।

विवरण—आलू अर्वाचीन कन्द है, इसको हिन्दोस्तानमें आये हुए, अनुमान एकसौ वीस १२० वर्षसे अधिक नहीं हुए, पहले अमेरिकामें होताथा पश्चात् यह यूरोप आदि देशोंमें आया अब संपूर्ण भारतवर्षमें आलूकी खेती अधिकतासे होती है, यह सपेद और लाल इन भेदोंसे दो प्रकारका है । पर्वतोंपर आलू बहुत वडा और अधिक स्वादिष्ठ होता है ।

अथ पुष्पगोभीनामानि ।

पुष्पगोभीस्वादुशाकामध्यपुष्पाबृहद्दला ॥

अर्थ—पुष्पगोभी, स्वादुशाका, मध्यपुष्पा, बृहद्दला (पीतपुष्पा और पुष्पशाका) यह नाम पुष्पगोभीके हैं ।

संस्कृतभाषामें	पुष्पगोभी ।
हिंदीभाषामें	फूलगोभी, गोभीका फूल, गोभी ।
वंगभाषमें	गोभी ।
मराठीभाषामें	गोभी ।
अंग्रेजीभाषामें	कालीफ्लावर । Cauli flaweer

अस्या गुणाः ।

पुष्पगोभीगुरुस्वाद्वीवातशोफप्रकोपनी ।
मधुराग्राहिणीबल्यावह्निमांद्यकरीमता ॥

अर्थ—फूलगोभी-भारी, स्वादिष्ठ, वात और शोथको प्रकुपित कर मधुर, मलरोधक, बलकारक और अग्निको मन्दकरे है ।

पत्रगोभीगुणाः ।

पत्रगोभीसरारुच्यावातलामधुरागुरुः ।

अर्थ—पत्रगोभी-सारक, रुचिकारक, वातकारक, मधुर और भारी

ग्रन्थिगोभीगुणाः ।

ग्रन्थिगोभीमहाबल्यादुर्जराग्राहिशीतला ।

अर्थ—गांठगोभी-अत्यन्त बलकारक, बहुत देरमें पचनेवाली, म और शीतल है ।

विवरण । गोभी पहले यूरोप आदि अन्य देशोंमें होतीथी कि समस्त हिन्दोस्तानमें होनेलगी है । अनुमान गोभीको हिन्दोस्तानमें साठ ६० वर्षसे अधिक नहीं हुए । पहले जब गोभी भारतमें आई इसको बहुत कम मनुष्य खाते थे, बहुतसे मनुष्य इसको प्रथम प्याज, जमके माफिक घृणाकी दृष्टिसे देखते थे किन्तु अब गोभी उत्तम गिनी जाती है ।

फूलगोभी, मूत्रगोभी (वंदगोभी, करम कल्ला) और गांठगोभ भेदोंसे यह तीन प्रकारकी होती है ।

इति श्रीशालिग्रामनिघण्टुभूषणे परिशिष्टभागः समाप्तः ।

श्रीशंकरः । शुभमस्तु । कल्याणमस्तु ।



पुस्तक मिलनेका ठिकाना—
खेमराज श्रीकृष्णदास,
"श्रीवेंकटेश्वर" स्टीम्-प्रेस--बंबई

